# OUEDATESLIP GOVT. COLLEGE, LIBRARY

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DTATE	SIGNATURE
		1

अद्यांजित-शंक जिल्हिती अद्योजित-शंक शिक्षिक अद्योजित-शंक शिक्षिक अद्योजित-शंक शिक्षिक अद्योजित-शंक शिक्षिक अद्योजित-शंक अद्याजित-शंक अद्याजित-

सम्पादक

देशभाभ अपारभाभ संश्रापाल जैन

રાસ્તા સાફિલ્પ મંકળ-પ્રજાસન

## श्रद्धांजलि<sup>®</sup>श्रंक

#### 메르네 - 쉐롤 वार्षिक मूल्य ४) ] िएक प्रति का ॥)

## लेख-सूची

₹.	सरदार पटेल	महात्मा गांधी	' १
₹.	अन्तिम श्रद्धांजिल	नेताओं के उद्गार	7
₹.	सरदार की खरी बातें	सरदार वल्लभभाई पटेल	, 12
٤,	भारत का सरदार	हरिभाऊ उपाध्याय	ધ
٧.	विनोदी सरदार	श्री विष्णु प्रभाकर	৩
Ę.	"दयामय, मंगल-मंदिर खोलो"	श्री वियोगीहरि	٠
૭.	योगिराज को श्रद्धांजलि	नेताओं,के उद्गार	११
ረ.	अरविन्द-वाणी	श्री अरिवन्द	१२
₹.	सूर्यास्त !	हरिभाऊ उपाध्याय	१४
٥.	श्री अरविन्द का महाप्रयाण	डा० इंद्रसेन	१७
ጷ.	ठक्करवामा को श्रद्धांजलि	नेताओं के उद्गार	२०
₹.	दोनबन्धु ठक्करबापा	यशपाल जैन	२१
₹.	हिन्दी साहित्य सम्मेलन कोटा-अधिवशन	विशेष प्रतिनिधि	र्र
٧,	कसौटी पर	. समीक्षा	२६
ч.	क्या व कैसे ?	सम्पादकीय .	२७
			,

## मण्डल की दो नवीनतम पुस्तकें

## भागवत-धर्म

अथवा

जीवन की कृतार्थता

भागवत में ज्ञान, इतिहास, काव्य और कल्पना सवका मिश्रण है। सर्वजन-मुलभ और लोकोपयोगी वनाने की दृष्टि से भी भागवतकार ने अन्य पुराणों के जैसा रूप इसे दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में भागवत के ११ वें स्कन्य का अनुवाद एवं टीका व्यक्ति। व समाज की उन्नति की दृष्टि से की गई है। प्रस्तक क्या है, ज्ञान का भण्डार है। अन**्**श्री हरिभाऊ उपाध्याय पुष्ठ ४००

> अजिल्द ५॥) सजिल्द ६॥)

सर्वोदय-तत्त्व-दर्शन

इस पुस्तक में सर्वोदय-तत्व-दर्शन की विधिवत् व्याख्या है 'बौर अहिंसा की परम्परा, सर्वोदंय के आध्यात्मिक तथा नैतिक सिद्धान्तों और मनोवैज्ञानिक मान्यताओं का वर्णन है। इसमें जीवन-मार्गः तथा काति-सावन के रूप में अहिंसा की प्रतिंद्या और अहिसक राज्य-व्यवस्या का विवेचन है। प्रामाणिक सामग्री के आचार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई यह पुस्तक अपने ढंग का पहला प्रकाशन है। ले०-डा० गोपीनाय घावन] पिट्ड ४२५

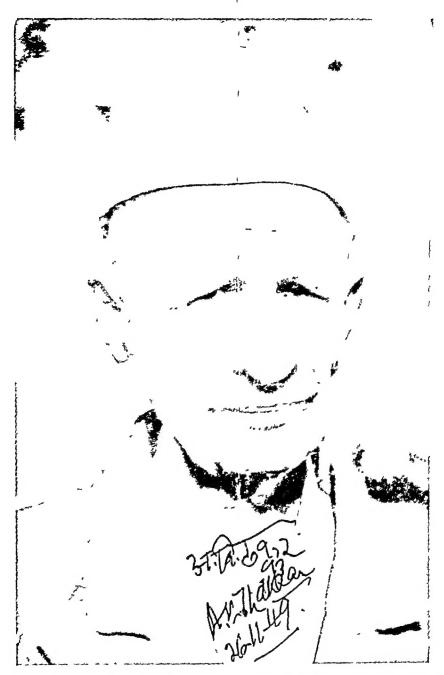
मृत्य : सजिल्द ७)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली





जम : ३१ असू० १८७५] फर्मेयोगी सरवृष् िदेहत : १५ दित.



जन्म : २४ नव० १८६९ ] दीनवन्धु टक्करवापा [ देहांत : १९ जन० १९५

### पाठकों से निवेदन

प्रिय बधु,

सप्रेम बदे। पिछले अक में अपनी सूचना ने अनुसार हम लाग जनवरी-अक को 'प्रावृतिन चिनित्सा' विशेषान के रूप में ही प्रकाधिन करना चाहते थे, लेकिन इधर तीन महापुरपो का निपन हो आने के बारण हमें यह जन ध्यदांजिल के रूप में निवालने थे हु खद करीय का पालन सरना पढा है। योगिरान अरिक्ट, सरदार वरूकमाई पटल और दानवपू उत्तर तथा सीनों की ही अपने अपने क्षेत्र में हमारे देश थे लिए महत्वपूर्ण देन रही है। 'जीवन-साहित्य'-परिवार वी और दे हम तीनों दिवनत आत्माओ को अपनी ध्यदाजिल अवित करते है।

'शाइतिक चिकित्सा' वन जब मार्च में प्रवाशित होगा । उसके लिए हमें बहुत सुन्दर और उपयोगी सामग्री प्राप्त हो रही है। वेन्द्रीय सरकार के यह-मन्नी धी जफनतीं राजगोराणचार्य, बार कुसरजन मुतर्जी, बार कुरन्य समझ हार उहार कमें, बार कुरन्य का सामग्री राजगोराणचार्य, बार कुरन्य कमा, में राजगोराणचार्य, बार कुरन्य कमा, में राजगोराज्य राजगोराज्य राजगोराज्य राजगोराज्य राजगोराज्य राजगोराज्य राजगोराज्य होगई है। बहुतों ने किसा है मि भेज रहे हैं। इनके अतिरिक्त महारमा गांधी, लुई कूने, एके होण कुरूट आरि भी राजगोराज्य मित्र के स्वाप्त में स्वाप्त करने हम की एक ही चीज होगी। वाडको को उसके लिए एक महीना अधिक प्रतीक्षा ररनी हागी, इसना हमें सेंद हैं।

जिन पुराने माहको का नये साल ने लिए चवा प्राप्त होगया है या जो इस महीने से नये पाइक मने हैं, उनकी सेवा में हमन कपने निरुप्त के कानुसार 'पाषी शयदें 'मेंट-सक्कर मेजना आरम नर दिया है। जिन बमुखो ने अभी तक 'चदा न येवा हो वे ') तत्वाल भेव देने में हमा करें, जितसे एक अमूब्स उपहार से वे चित्त न रहे। 'वायदें 'की मुख्यता और उपयोगिता के थियय में कुछ कहना हमारे लिए आवस्यन नही है। हम इतना हो कहना चाहते हैं कि इस उपहार को आप हमेंचा अपने पास नहेन कर रखें। अायदें जानवाल कहन कुछ नम हान-टिकट लगावर मेजी जा रही है, जिसस पुरिश्त पहुंच जाय। येवा अभी मेज कर गांगी-हायदी का उपहार प्राप्त नर सनत हैं।

जिन बजुओ का चया हुमें प्राप्त नहीं हुआ है, उनकी सेवार्मे 'प्राकृतिक विकित्सा' अक्त बीठ पीठ द्वारा मेंजा जायगा। अवद्या यह होगा कि रुपये मनीआंडर से मज दिये जाय।

कृपाव । द्वी

यश्याम र्रोप

उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा विहार प्रातीय सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाहमेरियों तथा उत्तर प्रदेश की प्राम प्रचायतों के लिए स्टीप्टत

## जी व न - सा हि त्य

वर्ष १२

जमपरी १९५१

প্ৰম



वहिंसक नवरचना वा मासिक

C

### सरदार पटेल

महात्मा गांधी

जिस सरदार के सेनापित्तव में आपने इस प्रतिज्ञा का सुन्दर पालन किया उसीके सेनापितित्व में आप यह भी करें। ऐसा स्वार्थ-त्यागी सरदार आपको और नहीं मिलेगा। यह मेरे सने भाई क समान हैं। किर भी इतना प्रभाण पत्र उन्हें दते हुए मुझे जराभी सकीच नहीं होता।

×

बल्लमभाई जैसे नाम के पटेल हैं, वैसे ही उनेनी साल मी हैं । बारडोली की विजय प्राप्त कर उन्होंने अपनी साल को नायम रनना । (बिजयी बारडोली, पूळ ४२६)

सरदार बुक्लभमाई पटेल के साथ रहना मेर लिए एक वहे सौभाग्य की वाल थी। में उनकी बेमिसाल बहादुरी से भली भाति परिचित था। लेकिन थिछ १६ महीने में उनके साथ रहने का जैसा मौभाग्य भिला वैसा पहले कभी नहीं मिरा। अपने जिस प्रम की उन्होंने नुस पर वर्षा की, उससे मुझे अपनी स्वेहमयी मा का स्मरण हो आया। में इस बात की करापि पटी जानता था कि उनमें मा के जैसे गुण हैं। वारखीली और खेटा के किसानों के जिए उनकी जिसती सावधानता और उल्कण्डा रही, उस में कभी नहीं मूल, सकता। ('सरदार पटेल'से)

सरदार सीधी बात बोरुने वाले हैं। वे बोलते हैं तो कड़वी लगती हैं। वह सरदार की जीभ में हैं। मैने उनसे कहा कि आपकी जीभ से कोई बात निकली कि काटा होगई। तो उनकी जीभ ही ऐसी हैं, दिल वैसा नहीं हैं। उसवा में गवाह हूं। (१३ वनक्सी १९४८)

# श्रंतिस श्रद्धाञ्जलि

"सरदार पटेल की पार्थिव देह चली गई है; किन्तु उन्होंने देश की जो सेवाएं की हैं, उनके रूप में वे सदैव अमर रहेंगे।" —(राष्ट्रपित) राजेन्द्रप्रसाद

"हम सब तथा सारा देश जानता है कि यह एक बड़ी कथा है। इतिहास उसे अपने अगणित पृथ्ठों पर अंकित करेगा और उन्हें नवभारत के निर्माता और संगठन-कर्ता के नाम से पुकारेगा।"—जवाहरलाल नेहर

"असली वल्लभभाइ आज हमसे विछुड़ गये हैं।... परन्तु वह महान स्फूर्ति, साहस और आत्मशक्ति के अवतार थे। हम यह न सोचें कि वे नहीं रहे। हमारे परिचित वल्लभभाई के चले जाने पर भी सच्चे वल्लभभाई सदा जीवित रहेंगे।" —च॰ राजगोपालाचार्य

"सरदार पटेल की मृत्यु का समाचार सुन कर मुझे वड़ा दु:ख हुआ और गहरा घक्का लगा। कुछ वर्ष पूर्व जब में केबीनट मिशन के साथ भारत गया था तो में उनके दृढ़ चरित्र, इंमानदारी तथा देशभित से बड़ा प्रभावित हुआ था।" — (लार्ट) पेथिक लारेंस

"गुजरात का सिंह और भारत का सरदार अब नहीं रहा ।...वे महात्माजी के दाहिने हाथ थे।" — अनन्तज्ञयनम आयंगर

"एक शानदार जिन्दगी की दास्तान ख़त्म हो गई। जिस दुनिया में हम चलते-िकरते हैं, उसमें वह दास्तान ख़त्म हो गई है, मगर दिमागों और दिलों की दुनिया में वह दास्तान हमेशा जिन्दा रहेगी और याद की जायगी।" —(मौलाना) अदुलकलाम आज़ाद

"एक सच्चा क्षत्री हमारे वीच से उठ गया। भारत का एक ऐसा सेनानी, जो अपने इरादे, साहस और संगठन-क्षमता के लिये प्रसिद्ध था, हमारे वीच नहीं रहा।" —रंगनाय रामचन्द्र दिवाकर

"वे एक महान संगठनकर्ता तथा कभी न झुकने वाले योद्धा थे।''...मेरे लिये यह एक राष्ट्रीय ही नहीं, विलक व्यक्तिगत हानि भी है।'' —(आचार्य) कृपलानी

"वे पुरुपों में सिंह थे। वे वज्र के समान कठोर, साथ ही फूल के समान कोमल थे।"

— एन० वी० गाडगिल

"मैं तो विविध विचारों के व्यक्तियों को आकर्षित करने तथा प्यार की रेशम-डोरियों से उन्हें बांध रखने के मानवीय गुणों के कारण उनकी सराहना करूंगा।" — श्रीप्रकाश

"मैंने उन्हें परीक्षा के अन्धकारमय तथा विजय के आशामय अवसरों पर देखा है। वे न अन्धकार में विचलित हुए और न आशा उनका गांभीर्य नष्ट करने में सफल हुई।" —आसफ्अली

''सरदार पटेल की मृत्यु एक राष्ट्रीय विपत्ति है।'' — मायव श्रीहरि अणे

"वे नवभारत के निर्माताओं में से एक थे। उनकी मृत्यु से भारत का एक पुत्र खो गया।" —िल्याकतअली खां

### सरदार की खरी वातें

''हम ऐसा स्वराज्य चाहते हैं, जिसमें सैवडो बादमी मुखी रोडी के अभाव में मरने न हो जिनमें प्रधीना वहा कर पैदा क्या हुआ अनाज किसाना के भवनों के मह में से छीनकर बिदेश न भेज दिया जाता हो: जिसमें लोगा को कपडे के लिए पराये देश पर आधार न रखना पहता हो, जिसमें जनता की इञ्जल की रक्षा या उसका लड़ना विदेशियों की मर्जी पर न हो, जिसमें स्वराज्य की घारासभा का अध्यक्ष विदेशी 'विव' या चोगान पहनता हो. और जिसमें स्वदेशी (गाधी) टोपी पहनने पर नौकरी छूटने का डर न हो। स्वराज्य में स्वदेशी क्यडा पहनता ही जनता का स्वामाविक धर्म माना जायगा । हमारे स्वराज्य में बोडे-से विदे-शियों की मुविधा के लिए विदेशी भाषा में राजकाज नहीं होगा । हमारे विचार और दिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नही होगी। हमारे विद्यालयों, के वानाय विदेशी नही होंगे। राज्य था वामवाज जमीन और आसमान के बीच प्रवीतल से सात हजार कुट ऊच से नहीं होगा। स्वराज्य में ऐसी हालत नहीं होगी कि महान देशमबनो की स्वतन्त्रता तो भले ही खतरे में हो, परन्त शरावियो की आजादी की रक्षा करने के लिए लास चिन्ता रायी जाय । हमारे स्वराज्य में यह नहीं होगा कि घर में पैदा होने वाली महए जैसे खाने वे काम आने वाली चीज पर नियत्रण रखा जाय और सरकार उस महए की दाराव बनावर उसका ब्यापार कारती हो । इतना ही नहीं; बल्कि लाखो रूपये की हिहस्ती नी शराब विदेश से आजादी ने साम नहीं आ सकेगी। स्वराज्य में देश की रक्षा के लिए इतना की बी सार्व नहीं होना हि देश का जिस्की रसकर दिवाला निकालन की नीवत आये। स्वराज्य में हमारी भीज भाडें की टहटू नहीं होगी । उसका उपयोग हमें गुलाम बनाने और दूसरी जातियों की स्वत-त्रता नध्ट करने में नहीं होगा। बड़े अपसरीं और छोटे नौकरों के वेतन में आकाश पाताल का अस्तर नहीं होगा। इसाफ अत्यन्न महुगा और लगभग असमव-सा नही होगा।

और इन सबसे विशेष बात तो यह हागी कि जब हमारा स्वराज्य होगा तब हम अपने देश में और विदेशों में भी जहाँ-सहा हुतवारे नहीं जायेंगे।" (१–६–१९२१)

"जिस दिन सरकारी दक्तर में किसान इज्जत और जायरू वाला माना जायगा. उसी दिन उसकी तकदीर परटेगा। बाज तो सरकार जगल में घमने-बाले पागल हाथी की तरह मदोन्मस हो गई है, जो अपनी चपेट में थाने वाले हर किसी का कुचल डालता है। पागल हाथी मद में यह मानता है कि जब मैने घर-बीता की भारा है तो मेरे सामने मच्छर की चया गिनती ? में मच्छर को समताता ह वि इस हाथी को जितना चाही धुमने दे और बाद में भौका देखकर उसके कान में पूस जा ! इतनी यकित वाला हाथी भी कान में यस जाने पर तहप-तडपकर सुइ पढाडकर जमीन पर लोटने लगता है। मध्छर शद है, इसलिए उसे हायी से दरना ही चाहिए, एसी बात नहीं है। मिटटी के वह घड़े से असरय ठीकरिया बनती हैं, फिर भी उनमें से एक ही टीवरी मिद्दी के सारे घडे को फोडने वे लिए वाफी होती है। घडे से ठीकरी क्सिलिए डरे ? वह घडे को अपने जैसी ठीक-रियादना सनती हैं। फूटने वा दर विसी का रखना चाहिए तो उस घडे का ! ठीकरियों की क्या हर हो सर्वता है ?

' "इस बस्ती पर अगर किसी नो सीना तानपर चलने का अधिकार है तो वह घरती से घनपान्य पैदा करनेवाळे किसान नो ही हैं।

''क्लिक र कर कुर कुछ उज्जेष और कारिक की कार्ते सार्व, इसमें मुझे समें शादी हैं। और में सीचवा हूं कि किसानी नो गरीब और कमझी र न रहने देकर सोचे खेट करू और उना सिर करके चरने बाके बना दूं। इतना करके मरूना को अपना जीकर सफल मानुमा।" (सन् '२८ के मायणा से) 'भीत तो एक ही वार आती है, कई मर्तवा नहीं और वह करोड़पति या गरीव किसीको भी नहीं छोड़ती। तो फिर उसका क्या डर? हम मौत का डर छोड़कर निर्भय वन जायं।" (२९-६-१९३०)

"सरकार हमारे सिर तोड़ेगी, मगर याद रिवए कि वह हमारा दिल नहीं तोड़ सकती। गीलियों से हमारे दिल छलनी हो जायेंगे, मगर ऐसी कोई गोली नहीं बनी जो आत्मा को छेद सके।" (सन् ३० के सत्याग्रह मे)

"हमारी इस लड़ाई में कभी हार नहीं हुई है। हम न कभी हारे और न हारेंगे; क्यों कि हमारी लड़ाई की बुनियाद सत्य पर है। हम अपने देश की आजादी चाहते हैं। अगर हम इंग्लैंड पर राज्य करनं की या और किसी प्रदेश की मांग करते तो दूसरी बात थी। हम तो अपना ही हक मांग रहे हैं।

"हमारा युद्ध अलग है। अहिंसा उसकी वृनियाद है। आजकल विज्ञान का विकास हो गया है। उसके अणु-वम की संहार-शक्ति इतनी अधिक वढ़ गई हैं कि उससे दस लाख आदमी थोड़ी-सी देर में खत्म हो जाते हैं। संहार-शक्ति के कारण जीते हुए देश भी आज घवराहट में पड़ गये हैं।" (२४-९-१९४५)

"हमारे देश की प्राचीन परम्परानीं का हमें जो उत्तराधिकार मिला है, वह हमारे लिए गर्व की चीज है। यह तो एक संयोग की वात है कि कुछ लोग रियासतों में रहते हैं और कुछ लोग ब्रिटिश भारत में। हमारे देश की उच्च परम्पराओं और संस्कृति के हम सब बराबरी के हिस्सेनार हैं। हम सबके हित-संबंध ललग-अलग नहीं हैं। इतना ही नहीं, हम सब एक ही खून और एक ही भावना के यंत्रन में बंधे हुए हैं। कोई हमें अलग-अलग दुकड़ों में बांट नहीं सकता। कोई हमारे बीच ऐसी स्कावटें पैदा नहीं कर सकता, जिन्हें दूर न किया जा सके। इसलिए में कहता हूं कि हम एक-दूसरे से अलग हो जायं, इस ढंग से संधियां करने के बनाय एक सभा में मित्रों की तरह बैठकर अपना विधान तैयार करें, इसमें हमारी धोभा है। में

अपने मित्र राजाओं और उनकी प्रजाओं को निमन्त्रण देता हूं कि मैत्री और सहयोग की भावना से विधान-सभा में बाइए। हम मिल-जुलकर सबके कल्याण के लिए मातृभूमि के चरणों में बैठकर वफादारी के साथ अपना विधान तैयार करने की कोशिश करें।"

(५-७-१९४७)

"राजा महाराजाओं से मैं कहता हूं कि वक्त आने पर आपको प्रजा के कहे अनुसार करना है। जिन राजाओं के साथ प्रजा नहीं होगी, वे अपने आप खत्म हो जायेंगे। मैं उनसे कहता हूं कि १५ तारीख तक जो भारतीय संघ में आगया वह आ गया, बाद में दू भरी तरह हिसाब होगा। आज जो शतें मिलती हैं वे फिर नहीं मिलेंगी। इसलिए राज्य सम्हालना हो तो अन्दर वा जाइए। बाज की दुनिया में अकेला रहना मुश्किल है। जब तेज आंधी आती है तब अकेला पेंडु गिर जाता है। मगर जो दूसरे पेड़ों के समूह में होता है. वह वच जाता है। आप भी, रामचन्द्रजी और अशोक-जैसों के वंशज हैं। परन्तु आजकल आप अंग्रेज अधिकारियों के छोटे-छोटे चपरासियों को भी सलाम करते हैं। आपको अभी तक विश्वास नहीं होता कि १५ अगस्त को अंग्रेज चले जायेंगे । परन्तु जब वे जायेंगे और आपको स्वतन्त्रता की हवा लगेंगी, तब आपके हृदय खुलेंगे।" (११-८-१९४७)

"अब कांग्रेस का काम पूरा होता है। हमारा जीवन-कार्य पूरा होता है। जब लोकमान्य का देहाल हुआ तब चौपाटी के मैदान में हमने प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उसके बाद लाहौर-कांग्रेस में रावी के किनारे कांग्रेस के इस झंडे के नोचे आजादी के लिए प्राण देने की प्रतिज्ञा की और निश्चय किया कि हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, सब एक होकर रहेंगे। वह निश्चय हम पूरी तरह नहीं निमा सके, इसलिए आज जित्ना आनन्द होना चाहिए उतनीं नहीं हो रहा है। मगर इतना समझ लेना चाहिए कि अब विदेशी हमारे बीच में किसी तरह की फूट नहीं डाल सकेंगे। यह बहुत बड़ी बात है।" (११-८-१९४७) "हमारे कथे दुवंस है और बोझ वडा वजनी है। अगर दूसरे लोग उस भार का हमसे के सके तो हमें बड़ी सुनी होगी; किन्तु उन्हें पहले वह प्रमाणित करना होगा कि वह उस भार को उठा सकते हैं। अप यह से यह सोचते हो कि अप निर्देश उपायों से स उस भार को हमसे ले लेंगे तो वे गलती पर है। उन्हें चतरदायी होना पढ़ेगा।" (४ जनवरी १९००)

"में वी इतना ही कहुमा नि आप छोग अपने आइमियों को समझाइये नि उनशें सरनार तो सिर्फ धना पाइनी हैं कि ने निहायत ईमानदारों और जुशों के साथ अपना सार्त्य पानन नरें। यह ध्यून स्पय्ते दिन अपने क्तंव्य मा पाछन करने में जो आनन्द आता है वह उसका सच्चा पुरस्कार है। सरकार और जनता की शास्त्रिक सेवा को सेकार नहीं आती।... सरपार के मित्रों ति सा छोटे-से छोटे क्यंबारी... कर्मा के सिर्मा के सामार पर अपना राज नहीं सरकार पुरिका-राज के सामार पर अपना राज नहीं करा सक्वी। वह तो जनसाभारण की इच्छा और सहुयोग से ही सासन कर सकनी है। (१३ १-१५९०) "धरकार वो चर्जी ही है। अगर आप उससे जुनाव हारा मा ऋजिन हारा बदक सनत हैं। किन्तु पुल्सि पर हमले मा वम-मान वी नियामी नहीं। यह खब ता पागलों का सिद्धान्त और नाम हैं।...में आपनों चेतामा देता मा कि समर म नारवाहमा बद्द न हुई हो आप आपकों जो नामरिक सामदी हैं, वह भी गुम्ब हो नामगी।"

(१६ जनवरी १९५०)

' लिणिन नोघ और माबुक्ता में कुछ वर गुनरता बहुत साक्षान है, समर बढाये हुए क्दम को वापस नेना और एम बार की हुई लिंत को दुस्ता करना बहुत म्हिन होता है।.. हरकीमत पर हुमें शास्त्र और स्वस्म नायद एतना है।" (१० फरवरी १९५०)

"जब जब भारत स्वतन्त्र रहा, उसकी स्वतन्त्रता को रातरा सनस त्यादा दोस्तो ॥ हुआ है और दुरमनो से कम। इसकिए आप कोमों को बहुत सावमानी से काम करने की आवरयक्ता है।" (अन्तिम सन्देश)

E)

#### भारत का सरदार

हरिभाऊ उपाघ्याय

कल के पीछे परेशान होनेवाले आदर्शवादी नहीं थे। आदर्श को वे देखते या समझते नहीं थे, सो वात नहीं; परन्तु वे मानते ये कि मुख्य वात यह है कि हम जाज क्या करें और जो कुछ करना है, वह कैसे करें? आज का काम यदि कर न पाये और कल की चिन्ता में ही ड्वे रहे तो कल कभी आने वाला ही नहीं है, ऐसी उनकी मान्यता थी। वे कठोर शासक और दृढ़ अनु-शासक थे। राजनीति के खिलाड़ी थे, उसके दांव-पेंच में उन्हें पछाड़ना आसान नहीं था। फिर भी वे गांबीजी के आदर्शों को सही मानते थे। अपनी शक्तिभर उनका पालन भी करते थे। जितना मानते थे उतना पालते भी थे। गांघीजी के आदर्शों से बढकर उनकी श्रद्धा गांघीजी की सचाई, दृढ़ता, वहादुरी, निर्भयता पर अधिक थी। इवर उनकी ऐसी घारणा हो गई थी कि आजादी मिली तो गांघीजी के नेतृत्व में, किन्तु देशका शासन उनके सिद्धान्त से नहीं चल सकता । देश उनकी उच्च नीति पर चलने लायक नहीं हुआ। किन्तु उनका यह विश्वास अवश्य था कि अन्त में संसार को आना पडेगा गांचीजी के वताये रास्ते पर ही। यही कारण है जो गांघीमार्गी सरदार से अपने को दूर अनुभव करने लगे थे। लेकिन सरदार जिस बात को ठीक मान लेते थे उस पर दृढ़ता से चलने में किसी से डरते या दवते नहीं थे। न ऐसे वाद-विवादों में ही पड़ते थे, अपना काम करते चले जाते थे। इससे कई लोग उनपर विगडते और झल्लाते थे।

सरदार जैसे कार्य-कुशल ये वैसे ही ईट का जवाब पत्यर से देने में भी नहीं चूकते थे। इसमें न वे जिन्ना से चूकते थे, न चिंचल से, न स्टैलिन का लिहाज रखते थे। उनपर जादू यदि किसी का चला तो गांधी-जी का। गांधीजी को वे वसभर 'ना' नहीं कहते थे। बरसों तक वे गांधीजी के 'डिट्टो' समझे जाते रहे; किन्तु 'ना' कहने पर गांधीजी भी चुप साध छेते ये। ऐसा दुर्दमनीय व्यक्तित्व उनका था। यद्यपि उनका स्वभाव एकतंत्री पद्धित के अधिक अनुकूल था फिर भी जनतंत्र के साँचे में अपने को ढालने का वे भरसक प्रयत्न करते थे। जिसने उन्हें अपना विरोधी या शत्रु माना वह पछताता रहा है और जो उनके मित्र तथा सहयोगी-मंडल में आगया वह सदैव भाग्यवान रहा है।

संयमी ऐसे कि युवावस्था में ही विधुर हो जाने के वाद दूसरा विवाह नहीं किया, जबिक उनकी विरादरी में उसकी पूरी-पूरी छूट थी, और उज्ज्वलता के साथ अपने विधुरपन को निवाहा भी । वाप-दादों की जो कुछ जमीन-जायदाद थी वह सब भाइयों को देदी, अपने लिए उनके पास तनभर कपड़े के सिवा कुछ नहीं था । कांग्रेस के कार्यकर्ता रहने की अवस्था में जो वेद्यभूषा थी वही भारत का उपप्रधान मंत्री होने की अवस्था में भी रही—खादी अपनी लड़की मणिवहन के कते मूत की, चिट्टी-पत्री हाथ के कागज पर।

वे एन मौके पर हमको छोड़ गये। आगामी चुनाव सिर पर हैं। कांग्रेस उनके पीछे निःशंक थी। अब सब एक-दूसरे का मुंह देख रहे हैं। हमारी जिम्मे-दारी स्पष्ट है। कांग्रेसियों ने यदि अपने-अपने अन्तः-करण साफ कर लिये, अपनी क्षूद्रताएं छोड़ दीं, पिछले कटू अनुभवों को भूलने और नया इतिहास लिखने की क्षमता पैदा कर ली, तो सरदारश्री के अवसान से हमने काफी शिक्षा लेली, ऐसा कहा जायगा। उस स्थिति में सरदारश्री की आत्मा को भी ऐसा लगेगा कि उसने उनके शरीर को छोड़कर अच्छा ही किया, नहीं तो वह हमें 'कपूत' की श्रेणी में गिने विना नहीं रहेगी। वापू की आत्मा तो हमें क्षमा भी कर देगी; क्योंकि वे राष्ट्र-पिता थे; परन्तु सरदार की आत्मा हमें दण्ड दिये विना नहीं रहेगी, क्योंकि वे शासक व कैन्टन थे।

0

"सरदार की कठोर और गम्भीर आकृति उस लोहे की तस्तरी की तरह है, जिसमें देश-भिवत, ईमानदारी, मृदुता और आकर्षण-शक्ति के कीमती रत्न छिपे हुए हैं।"

### विनोदी सरदार

थी विष्णु प्रभाव र

सरतिर बस्तममाई एटेल का जो रूप सारार के सामने रहा है। यह वेसे बाहे किना हो गीरवाली रहा हो, परन्तु वह उनके सम्पूर्ण अ्वविदाय को प्यक्त नहीं करता। निस्मन्देह वे महान् भोदा, विज्ञाल स्वरंगात्रक और सफल सामक के, परन्तु साम हो वे वह विनोधे में, इसमें में वेई करेंद्र होही हैं। सामन्त्रमा सोग इस सात को स्वीकार करने को तीवार महाता को स्वरंग कर करने ने तीवार मही होते। अभी उत्त दिन एक बन्धु सरदार का रोचक पिहास का रहे थे। मिंधी गम्मीर राजवैतिक बचाँ के दौरान में गीलाना वाजाद ने कहा— 'हा! मही हाता तह सहात के सहा— 'हा! सहात के सहा— 'हा! मही हाता तह सहान— 'हा! सहात के सहा— 'हा! सहात के सहात के सहात के सहात के सहात के सहा कर सहात के सहा कर सहात के सहा कर सहात के सहा के सहा कर सहा कर सहा कर सहा कर सहा कर सहात के सहा कर सहा कर सहा कर सहा सहा कर सहा कर सहा कर सहा सहा कर सहा कर

इस पर सरदार योले--"अवतन मौलावन्स, अल्लाबन्स और खुदाबन्स का नाम तो मुना या। यह सौदा ससल्लीवन्स नहा से आ गया ?"

गाधीजी का विनोद तो लोक प्रसिद्ध है, परश्त सर-दार की हासबृति जनना ने सामने नहीं बाई। यहां तक कि होती के अवसर पर मग की तरग में जब उपाधियाँ बाटी जाती थी तब भी उनके भाग्य में 'हेबी टेंक' जैसी भारी उपाधिया ही होती थी। बैसे भी प्राय उनका हास्य टैक से कम भारी नहीं हाता था। राजनीतिक दाव पेंचा में उनकी परिहास-भावना को तीखे व्यय, एक विपैले चात्यं (Wit) में परिवर्तित कर दिया था। इसी कारण जनता उन्हें पट व्यवकार तो मानती थी, परन्तु विनोदप्रिय मी है, यह नहीं जानती थी। उसने लिए यह बात कि सरकार बाल्क की तरह हस सकते थे. मार्च्यंजनक थी। सत्य यह है वि शरायत से परिहास करने में वे जतने ही जुराल ये जिसने विरोधी को विपेश बात्यं से पराजित बरने में । इसके अतिरिक्त खनके स्थम में, चाहे वह कितना ही बट्चमो न हो, एक दुवंल मनुष्य की दुर्भावना, जिसे उपहास-वृत्ति कहा जा सकता है, नहीं थी। सरदार दूसरा पर हस सकते ये तो अपने को भी इसी का पात्र बना सकते थे। उनकी हास्य प्रवृत्ति बहुत बुछ स्वामी दयानन्द सरस्वती के समान थी। उनमें मुक्तहास भी या और

क्रव्यम भी, पर सन्वेग का समाव उनमें कभी नहीं पामा गया । सन्वेग के समाव में विनोद को स्मरान की हसी कहा जा सकता है।

सदार की जिस भनर विद्योह निरासत में मिला पा सदी भगर बिनोद-बृति भी जनकी पैनिक सम्मित सी । सभापित पटेल के मजान काफी लोनिम हैं। सरसार बन स्कूल में बढ़ते से तब उनने कामाणक में एक सार जह बिना निश्ची अपराध के पाड़े हिक्सने की तजा दी। मत्कममाई ने सून तो हिन्सा, पर वे ऐसा दण बहा माननेवाले से ? बनले दिन स्कूल आने पर अध्यापन ने युदा—"पाई लागे ?"

बल्लमभाई ने जवाब दिया—"नी, लाया तो था; पर वे पाठचाला के द्वार पर दस्ती तुडाकर भाग गए।" इस बूरीले परिहास से निस्सन्वेह जन्यायक तिल-

मिला चठे होगे। गुजराती में पाडे पहाडे को भी कहते है और भैंस के बच्चे को भी।

एक बार बुख व्यक्ति गांधीजी से मिलने आए। मार्ग में सरदार मिल वये। पूछा-"कहा जारहे हो ?"

उन्होंने जवाब दिया-'गाधीजी से मिलने।" सरदार-'क्यो 7"

वे-"ब्रह्मचर्यं पर कुछ वातें करनी है।"

सरवार-' अदे सहाध्यं पर गाथी से क्या कार्ते करोगे। उसके चार बेटे हैं। सब विवाहित हैं। खूद उसकी गली जिन्दा है। यह बहायुर्व की क्या जाने ' वहायुर्व की बात मुक्ति करो। सेरे केवल हो बच्चे हैं। बहुत पहले जैसी बली घर गई थी, तब से सेने दूसरी घादी नहीं। की। बहायारी में है।"

द्यारात वूर्ण विनोद ना सबसे रोषक उदाहरण बाजू की कमोटीबाला है। घटना इस प्रकार बताई जाती है। स्वयाधह-सप्ताह बुक होने बाला था। इसिटए विवाईमी बुक बप्ती थी। महादेवभाई ने बाजु से पूछा-"धीवन की तात कैसी हैं? आपत किनी बार देटी हैं?"

बापू ने उत्तर दिया, 'जतन करना भाता हो तो

कुछ भी न टूटे। शंकरलाल ने मेरे पास से ली कि टूटी। काका ने मुझसे ली कि टूटी; लेकिन मेरी तो कई दिन चलती रहती है। यह तो जतन का काम है। देखों तो यह लंगोटी पहनता हूं। उसे संमाल-संभाल कर पहना करता हूं। और किभी के पास होती तो कभी की फट जाती।"

वल्लभभाई सुन रहे थे। उसी क्षण बोल उठे-"यह तो ऐसे लगता है कि जैसे पहनते ही न हो, और खूंटी पर सम्हालकर रख छोड़ी हो।"

वारडोली सत्याग्रह के अवसर पर सरकार ने मनुष्यों को ही वन्दी नहीं वनाया था, भैसों को भी जेल-खाने भेजा था। वहां अन्यकार में रहत-रहते काली भैसें कुछ-कुछ सफेद हो गईं। उन्हें देखकर सरदार ने कहा—"यह तो मड़ामड़ी वन गई है।" अर्थान् अंग्रेजीं की जेल में रहते-रहते ये काली भैसें भी मडाम (अंग्रेजी में 'नारी' को कहते हैं) जैसी वन गई है।" इस परिहास में अट्टहास के साथ एक गहरी शरारत भी है; पर निर्दोष शरारत। ऐसी निर्दोष जैसी इस वात में—

वापू सोडे का प्रयोग वहुत करते थे। खाने की प्रत्येक वस्तु में उसे डालते थे। इसलिए जब कभी कोई बड़चन आ उपस्थित होती और सरदार की सलाह ली जाती तो वे सरल भाव से कह देते थे, ''सोड़ा डालों न।"

वापू सुवह-शाम नीवू पीते थे। नीवू गरमी में महंगे हो जाते हैं। इसिटिए वापू ने सरदार से कहा कि नीवू के स्थान पर इमली का प्रथीग किया जाय। जेट में उसके झाड़ भी बहुत हैं।

वापू की वात मुनकर नरदार हंस पड़े। बोले—
"इमली के पानी से हिंड्डयाँ गल जाती हैं, बादी हो जाती
हैं। गांधीजी ने कहा—"और जमनालालजी पीते
हैं सी!"

वल्लभभाई वोले—''जमनालालजी की हिंद्यों तक पहंचने का इमली के लिए गस्ता ही नहीं है।"

कभी-कभी सरदार का तक-पूर्ण उत्तर उनकी प्रत्युत्पन्नमित का वड़ा मधुर परिचय देता था। किसी आलोचना में 'गांधी की रचनात्मक गफलतें' ये शब्द आए। महादेवभाई ने बापू से पूछा—"रचनात्मक गफलतें कैसी होती होंगी?" सरदार सुन रहे थे। एयदम

वोले-''आज तुम्हारी दाल जल गई थी--ऐसी ।'' वापू खिलंखिला परें।

निरुत्तर कर देने वाले, सचोट पर सारगित व्यंग से पूणं, उनके हास-परिहास का विशेष परिचय महादेव-भाई की उन डायरियों से गिल सकता है, जो उन्होंने यरवड़ा कारावास के दिनों में रखी थीं। गांधीजी से लोग विचित्र-विचित्र प्रश्न पूछा करते थे। उन दिनों सरदार भी वापू के मंत्री पद पर पहुंच गए थे। पत्र पढ़-पढ़ कर उन्हें सुनाया करते थे। एक भाई ने पूछा था—"हम तीन मन की देह लेकर घरती पर चलते है और वहुत-सी चींटियां कुचली जाती है। यह हिंसा कैसे रक सकती है?" सरदार ने तुरन्त कहा—"इसे लिख दीजिए कि पैर सिर पर रख कर चले।"

किसी के पत्र में देखा कि स्त्री कुरूप हैं, इसलिए पसन्द नहीं, तो तुरन्त बापू से कहने लगे—"लिखिए न कि अखिं फोड़ कर उसके साथ रहे, फिर कुछ कुरूप नहीं दिखेगा।" एक आदमी ने अपने को फिर दुवारा शादी करने का आग्रह करने वाले की यह दर्लाल दी थीं कि 'उसने मुझ पर उपकार किया है और उस तीन लड़कियों की शादी करना है। जाति में वरों की कमी है, इसलिए मूझसे आग्रह करना है।' वन्लभभाई बोले—"तब तीनों ही लड़कियों से ब्याह करले तो क्या बुः। है?"

एक आलोचक भाई ने वापू को खुली चिट्ठी लिखी। उसके अन्त में लिखा— "आपके जमाने में जीने का दुर्भाग्य प्राप्त करनेवाला।" वापू कहने लगे——"कही इसे क्या जवाब दिया जाय?"

बल्लभभाई बोरि—"कहिए कि जुहर खाले।" बापू — 'नहीं, ऐसा नहीं। यह वयों न कहें कि मृद्ये जहर दे दो ?"

वल्लभगई—"मगर इससे उसके दिन कहां पल्टेंगे? थापको जहर दे दें तो जाप गए जार उसे फांसी की सजा मिले तो उसे भी जाना पड़ेगा, तब फिर बापके ही साथ जन्म लेने का भाग्य में बदा रहेगा। इससे तो यही बच्छा कि वह खूद जहर पाले।"

बच्चों की जैंकी शरारत से पूर्ण हैंसी और विरोधी को कुचल देने वाला व्यंग, दोनों के वे एक समान स्वामी ये और इसीने साम वे अपने ना भी हैंदी का पांच बनाना जा उसे। निक्षी ने अन्तर वी निर्मेण्या की झौरी ऐसे ही अवसरा पर मिल्ला है। परवदा जेल में बापू वे साम दहते हुए सरदार ने

सस्यतः वा अभ्यास गरू दिया था। फिरती वे वात-बारमें सहरत का प्रयोग बारने रूत । भोले पारव की भांति प्रवते---"महादेव . विमरित नया हाती है ? औरसप. वह मक्ते हैं ती राज. वनो नहीं और विद्वानः वयों नहीं ? यासासि हरतेयाल क्यो शिया, यश्त्राणि बयों नहीं ?" पभी मए रण्ड सीसवे और स्पना प्रयोग करते । दहर टोप्पि को 'मात सायी 'बहते। "यह तुम्हें शीमा नहीं देशा" इमने लिए बहते-"इदं म धोष्ठाम मस्ति । 'पैशा' के िए क्षाचींद्र गहरे,

भी कुछ साद कर

#### मरदार की जीवन-सांजी

३१ अन्त्रवर १८७५ गणरात प्रांत के शंतर्गत खेडा जिले के ररमतद नामर पाम में जाय। बचपन गडियाद में, शिक्षण पेंटलाद, बढ़ीदा और नहियाद में। मंदिन ने बाद डिस्ट्रिक्ट फीडर होतर १९०० से गोधरा में बनालत । १९१० तन बोस्तर भीर आनद आदि स्वानी में बशानत अवटी धमकी । इसी बीच गणा नामर पाम में सबेरबा के साथ विवाह । १९०५ में प्रबन पुत्र शहाभाई पटेल, बनतर पुत्री मणिवरून 💼 जन्म। १९०८ में पानी की माय । १९१० में बेरिस्टरी के लिए इस्लैंब्ड सबे। प्रयम धेगी में बैरिस्टरी पास की । १९१४ में ग्रहमदाबाद में बरासत शर की । १९१५ में बहमसाबार व्यक्तिसर्विटी के सरस्य, १९१६ में गांधीजी के सम्पर्ध में आये। १९१७ में लंबर सस्यापह में भाग । १९२१ में अहमदाबाद कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष । १९२२ में बोरसंड तथा १९३२ में भावपुर शल्डा सरवापह का मेंत्रव । १९२४ से २८ तक अष्टमदाबाद व्यनिसर्पतिटी के अध्यक्त, १९२७ में गुजरात जल प्रत्य के समय सेवा-कार्य, १९२८में बारकोली सायापह ने 'सरदार'। १९३० में गांधे जी की डांडी-यात्रा से वहते रात नामर पान में गिरवनारी । १९३१ में बरांबी-बांधेत के अध्यक्ष । १९३२-३४ खेल में, १९३५ में कांचेस पार्लावेंटरी मोई के अध्यक्ष । १९४० में व्यक्तिगत सत्यावह में पूत गिरवनारी, १९४१ में बीमारी के कारण केंच से रिहाई, १९४२ की ८ मगरन की चिर परहे ल्यो। १९४५ में लुटे । १९४६ में अनरिम तरशार क्षतने पर यह एवं राज्य-मत्री, १९४७ में भारत सरकार ₹ जय-प्रधान मंत्री, एक-सचिव और राज्यमंत्री । दो वर्ष के सन्दर केती राज्यों को विष्येन कर अलक्द आरम का निर्माण । १५ दिगम्बर १९५० को सबरे ९-३७ घर अवगान ।

इस मनार शुद्ध-अमुद्ध भयागा द्वारा अपना सस्कृत-आन अनट नरन और यापू तथा महारेवभाई को हमाते इसाने पेट में बस्त द्वारों में सरवार कभी नहीं बनते गें। जनवा हास्य अहां बोबन प्रदासी

जहां वीयन प्रदासी

जिर्णों से लवाण्य

गरा रहता था

वहां भाषव्यक्ता

पढा पर वह

विरोधी की कुतल
देन बाला विय
मराबाम भी बा

जाना था। परवदा जैल में एक दिन बटा के शास्त्र ने विधा रियो की चर्चा याने पर बहा---'रपर्द रीहित हा भाषात्र है कि हम १६ लास क्यमे रात इत भिया-रियों पर नर्ष वरत है---यानी दार में दत है। नवा इत्तरा द्वारा चपवाम नहीं ही #F71 3"

> वाशयमाई---''हो, पर इससे भी प्यादा भी बाहुवां पर सर्वे वरण है।''

सेते उत्तरा प्रयोग करते का आपुर रहत । एक दिन कियी बात पर पापू से दिनाद करते करते थेलें — अरुता सी तिसिने । बात सो प्राप्तमित करते थेलें है ना। किर एक दिन पूर्णने रूपे — गर्न-सने के बाने सनिवार हैं ? काटर वहा लगे—'में समाग नई।'' यात्रमाईवाले—'नियावहाशिमां, ये विभावत से इतने सब बातू ही अल्यू है तरी वे वता सुरेतां से अक्षा यह बार्ग्स ले

# 'दयामय, मंगल-मंदिर खोलां...'

श्री वियोगीहरि

शरीर छोड़ने से दस-बारह दिन पहले शाम को रोग-शैया पर लेटे-लेटे सरदारधी अपनेबाप बीरे-घीरे गूनगुना रहे थे—

'दयामय, मंगल-मंदिर खोलो...'

् डाक्टर नाथामार्ड पटेल ने मजाक के सुर में कहा—

"ऐसा आसान नहीं मंदिर का खुळना। एक नहीं, दो-दो ताले दरवाजे पर लगे हुए हें!"

"अरे, दो तो क्या, दस ताले भी टूट जायेंगे और मन्दिर का द्वार खुल जायेगा।" सरदारश्री ने हंसते हुए डाक्टर की बात को उसी वक्त काट दिया और वैसे ही फिर भजन की उसी कड़ी को गुनगुनाने लगे—
'दयामय, मंगल-मंदिर खोलो...'

दयामय प्रभु के मंगल-मंदिर में प्रवेश पाने के लिए वे कितने ही दिनों से आतुर थे। असल में तो, वापू के सिघार जाने के बाद सरदार के जीवन में वैसा रस नहीं रह गया था।

ऐसे ही, एक दिन और उन्होंने हँसते हुए कहा था, "स्टेशनों पर कई मुसाफिर एक-दो आने टिकटबाबू को दे देते हैं तो टिकट उन्हें विना तकलीफ के तुरत मिल जाता है। इसी तरह, मालूम होता है, वहाँ भी लाँच लेकर टिकट देते हैं। देखते-देखते मेरे कितने ही साथी टिकट कटा-कटाकर चले गये, पर में तो लाँच देनेवाला नहीं।"

इसी तरह सरदार, वीमारी के दिनों में भी, हंसते-हंसाते रहते थे; पर, यहां रोग-जर्जरित देह में बंचे रहना उन्हें इचर अच्छा नहीं लगता था।

सरदार वड़े-वड़े मोचों पर लड़े और उन्होंने वड़े-ही-बड़े काम किये। मन चाहता था—पर शरीर काम नहीं दे रहा था—िक उनके हाथ से देश का और भी कुछ भला हो। उनके मानस-चित्रपट पर नारत के सलावा चीन, तिब्बत और नेपाल की नर्स्वारें घूमती रहती थीं। पर जो-जो करना चाहते थे, कर नहीं पाते थे और जो नहीं चाहने थे ऐसी कितनी ही वातें हो जाया करती थीं। वेबत थे। विना कुछ मला काम किए कल नहीं पड़ता था। इसलिए लाचारी का जीना अच्छा नहीं लगता था। फिर भी कई महीनों से, कई दिनों से, जिद्दों रोग के साथ वीरता-पूर्वक लड़ते आ रहे थे।

पेट में असहा पीड़ा होती थी, फिर भी कभी वेचेनी नहों दिखाई। कभी कुछ कहा तो इतना ही कि पेट पर जैसे करीत चल रहा है, पर उफ तक नहीं करते थे। मौत भी वेचारी चकराती रही होगी कि इस अजीव से शिकार को किस तरह झपट कर पकड़ें!

उस दिन भी वह वहादुर सरदार शिकारी मृत्यु की छाया तलें कई घंटे वड़े शांतभाव से सोता रहा। अंत में घक्का देता हुआ वह मगल-मंदिर के अंदर घुस ही गया। दयामय का द्वार खुल गया था।

सरदार वन्लभभाई को किसी ने 'लीह पुरुष' कहा और किसी ने भारत का 'विस्मार्क'। उपमा देने या तुलना करने में एक प्रकार का रस आता है, फिर वह उपमा या तुलना ठीक-ठीक वैठती भी हो या नहीं। प्रशंसक और निन्दक दोनों ही अपनी-अपनी रुचि के अनुरूप उपयुक्त-अनुपयुक्त सन्दों का मुक्त प्रयोग करते है। सरदार को भी क्या-क्या नहीं कहा गया। पर उन्होंने तो स्तुति और निन्दा दोनों की सदा उपेका ही की।

असल में तो वे एक वमित्मा पुरुप थे। बहुत उन्हा-पोह में न पड़कर जिसे वे धर्म-विहित कार्य समझते उस पर दृढ़ रहना उनके साधु जीवन का मूलमंत्र था। युद्धि निश्चयात्मक थी, इसलिए किसी भी निर्णय पर पहुंचने में देर नहीं लगती थी। मित्रता की तो अंततक निवाही। जो संकल्प बांवा उसे पूरा किया। अपनी वात पर से कभी हटे नहीं। दुनिया की आलोचना की परवा नहीं की।

हृदय कोमल और फूल-सा विकसित । इतनी बड़ी सत्ता पर आरूड़, पर उसके प्रति मोह नहीं । पैसे को भी सदा तुच्छ ही समझा।

ऐसे ये वे सरदार—याने, धमितमा पुरुष । प्रभू के मंगल-मंदिर का द्वार तो ऐसे भवत पुरुष के लिए शानि-पूर्वक खुलना ही चाहिए था, और दयामय पिता ने उसे अपनी गोद में उठा लिया।

### योगिराज को श्रद्धांजलि

"पुरातन बाल के ऋषियों वे समान निर्मीक विचार के थीअरकिंद वर्षेठ पूर्व भी ये। उन्होंने बास्त्रों ने अध्ययन नो अपनी अधिरत साधना नी नमोटी पर चताया। भारत उननी म्मृति को सचिन रखेगा और उन्हें अपने ऋषि-मनियों नी श्रेणी में प्रतिष्ठित बरके उनकी पत्रा वरेगर ।" --(राप्टपरि) राजेन्द्रप्रसाद

"ये एक महान व्यक्ति ही नहीं थे, वित्व एक सस्या वन गये थे । पूरानी पीड़ियों ने लोग जनको भारतीय स्वतंत्रता की एक जलनी हुई मजाल के रूप में बाद करते हैं। ये हमारी पीड़ी में श्रेष्ठनम दिचारको में थे और उनके वियोग ने हम मदैव इसी रहेंगे।" - नगहरलाल नेहरू

"उनवी मृत्यु से भारत का एक बीर विशिष्ट पुत्र खीगवा है, आध्यात्मिक जगत से एक —बस्तमभाई प्रदेश विश्यान सिद्ध उठ गया है।"

"श्री अरबिन्द की मृत्यु से भारत ने आज अपना एव प्रमुख नागरिक, महान पथ-प्रदर्शन श्रीर एक महानतम ब्यक्ति सो दिया। --देलातनाथ शादज्

"यह वर्तमान युग में महानाम युद्धिवादी ये और जीवन में लिए एए यहन बडी द्यापित। राजनीति और दर्शन की जन्होंने जो सेवा की उसे मारत रभी नहीं भलेगा। दर्शन और धर्म के दौय में उन्होंने जो अमरय वार्ष विया, उसके लिए समार उनका सदा परणी रहेगा।"-सर्वयन्ती राषाप्रणन्

"थी सर्विन्द भारत में राजनैतिक जागरण के अग्वाजो में से थे 1...जिन सन्तो और अवियों को समय-गयब पर जन्म देने का सीमान्य भारत की बाप्त है, उनमें में एए सत बठ गया । उनका दिव्य जीवन दुनियाभर में मनुष्यों के विचारों का पय-प्रदर्शन करता रहेगा।"

'युनिया का एक महानतम व्यक्ति उठ गया। .. अपनव इस समार का अस्तिय है, पामिक पय-प्रदर्श व के रूप में उनकी कृतियां अमर नहेंगी ।"

····श्री अरुविन्द ने राजनैतिक स्वाधीनना को एक नई दिया प्रदान की और जब सारा की स्वाधीना। की आमा एरमात्र युषठी-मी ज्योति थी, तभी उन्होंने देश के लिए अपना सबर्छ त्याय दिया था ।...इतनी महान् आत्मा के एवाएक निपन से कुछ गोपा-गोपा-गा -- पर्देशमा मा० मुशी मत्यस होता है।'

"...थी जर्गवन्द ही प्रयम मारतीय ये, जिन्होंते भागत का निरूप देग िया था और चननी स्वाधीनता के लिए जपने दग में बाम दिया।" --विधानका राप

"...श्री बर्रावन्द भी मन्यु से मुझे अपार मोन हुआ है । दुनिया दम गण्ड में गमय उनमें बाध्यातिमक पय-प्रदर्शन की बाशा कर रही थी। -- हंगा बेरूना

# अर्विन्द-वाणी

### योग

मानसिक प्रकृति और मानसिक विचार सांत की चेतना पर आधारित है, अति मानसिक प्रकृति अपने मूल स्वभाव से ही अनन्त की चेतना एवं शक्ति है। अति मानसिक प्रकृति प्रत्येक वस्तु को एकत्व के आवार से देखती है और सभी चीजों पर, वड़ी-से-बड़ी अनेकता और विषमता पर भी, जो चीजें मन के लिए घोर-से-घोर विरोध रूप हैं उनपर भी, उस एकत्व के प्रकाश से विचार करती है। इसका संकल्प, इसका विचार-भाव, समवेदन, एकत्व के उपादान से निर्मित है। इसके कर्म उस आधार पर प्रकृत होते हैं। इसके विपरीत मानसिक प्रकृति नानात्व या भेद को मूल मान कर चलती और उसीसे विचार-अवलोकन, संकल्प-अनुभव तथा समवेदन करती है और उसका एकता-संबंधी ज्ञान केवल परिक-ल्पित एवं कृतिम है। जब वह एकत्व अनुभव करती है तव भी उसे सीमा तथा भेद के आधार पर स्थिति हो कर एकत्व के भाव से कर्म करना होता है। परन्तु अति मानसिक दिव्य जीवन मूलगत, स्वतः स्फूर्ति एवं स्वभाव-सिद्ध एकता का जीवन है।

इस योग का अर्थ केवल ईश्वर की प्राप्ति नहीं, वित्क वह आभ्यन्तर और वाह्य जीवन का परिपूर्ण उत्सर्ग और आमूल परिवर्तन है, जिससे उसमें भगवच्चे-तन्य व्यक्त हो और वह स्वयं भगवत्कर्म का एक अंग हो।

#### लच्य

जब हम 'जानने' से पार हो चुकेंगे तब हमें यथार्थ ज्ञान होगा। तकं सहायक या और तकं ही बाधक है।

जब हम संकल्प करने से पार हो चुकेंगे तब हमें शक्ति प्राप्त होगी। प्रयत्न सहायक था और प्रयत्न ही बाधक है।

जब हम सुखोपभोग करने से पार हो चुकेंगे तब हमें आनंद प्राप्त होगा। इच्छा सहायक घी और इच्छा ही वाषक है।

जव हम व्यक्ति-भाव से पार हो चुकेंगे तव हम

वास्तविक 'पुरुष' होंगे । अहम्भाव सहायक था और अहम्भाव ही वाघक है।

जव हम मनुष्य-पने से पार हो चुकेंगे तब हम वास्तिविक 'मनुष्य' वनेंगे। पशुभाव सहायक था और पशुभाव ही वाघक है।

तर्कणा को व्यवस्थित अन्तःस्फुरणा में परिणत कर दो; तुम सर्वाश में प्रकाश हो जाओ। यह सुम्हारा छक्ष्य है।

प्रयत्न को आत्म-शिवत के एकरस और महान् प्रवाह में परिणत कर दो; तुम सर्वाश में चेतन शिवत हो जाओ। यह तुम्हारा लक्ष्य है।

भोग को एक रस और निविषय हर्पातिरेक में परिणत कर दो; तुम सर्वाग में आनन्द हो जाओ। यह तुम्हारा लक्ष्य है।

विभनत व्यक्ति को विश्व व्यक्ति में परिणत कर दों; तुम सर्वाश में दिव्य हो जाओं। यह तुम्हारा लक्ष्य है।

पगुको गोपाल में परिणत कर दो; तुम सर्वांश में 'कृष्ण' हो जाओ यह तुम्हारा लक्ष्य है।

## मनुष्य अर्थात् पुरुप

परमेश्वर प्रकृति की बोर झुकना नहीं छोड़ सकता है और नाही मन्ष्य ईश्वरत्व के प्रति अभीष्मा करने से इक सकता है। यह तो सान्त बोर बनन्त का नित्य सम्बन्ध है। जब वे एक-दूसरे से विमुख होते हुए प्रतीत होते हैं तो यह उनका और भी प्रगाड़ मेल से मिलने के लिए पीछ हटना होता है।...

परमेश्वर और प्रकृति एक वालक और वालिका के समान हैं जो कि एक दूसरे के साथ खेलते हैं और प्रेम करते हैं। दृष्टिगोचर हो जाने पर वे एक-दूसरे से छिपते और भागते हैं ताकि उनको किर सोजा जाय, पीछा किया और पकडा जाय।

मनुष्य वह परमेश्वर है जिसने अपने आपको प्रकृति-शक्ति से छिपाया हुआ है ताकि वह उस शक्ति को संघर्ष द्वारा, आग्रह से, जबदैस्ती से और आस्चर्यमय उपलब्धि के रूप में मा मके, परमेश्वर वह विश्वयाधी श्रीर विश्व से अंबा उठा हुआ परात्पर मनुष्य है, जिमने अपने आपकी मानकीय रूप में विश्वमान अपने ही स्थाननस्य से जिलाया हुआ है।

पम् मनुष्य है जो कि बालोबाली साल के बेव में है जीर पार टामो पर खहा होता है। इनि मनुष्य है जो जानी मनुष्यता में निकास को और मुख्य-नुहता रेंग हो। यहां तक कि जह महात के साविस्तित रूप भी अपने गठन-गरिहा पार्ट मनुष्य ही। है। सभी वस्तुए भनुष्य है, पुरुष है।

वयोषि, मनुष्य से हम वया अभिप्राय केते हैं? एक अज और अधिनाची आत्मा को अपने ही करनो से यने हुए मन और सरीर में वास कर रहा है।

ग्रन्त

मनुष्य और परमेश्वर के मिलने का मतलब सदा पही हो सरका है कि ईश्वरीय दिख्या का मनुष्यक्त के अग्वर स्थार व प्रवेश हो जाय तथा मनुष्य हैस्वरीय दिख्यता के अग्वर अपने आप का पूरी करह निमन्त्रक कर दे।

किन्तु वह आरम-निमन्त्रन आरम विनास के रूप बानहीं हैं। इस सब स्पेन और आवेश, दुन और उन्हास का परिचाम उब्हेंद नहीं हैं। यदि यही इसका अन्त होना होता सो यह सोक कभी प्रारच्य ही न

हमा होता ।

" और इन सारी बात वा अन्त वना है? मानो सन् अनने आपका और काने सन किन्द्रीं वा इन्द्रता त्याद के तके और इतनो सन बूदें एक इन्द्रे का स्वाद से सने तैया इसकी अध्येक बूद अपने आपने तौर पर सहने सनु-छाते वा त्याद के सने, ऐसे ही परमेश्वर और मानवीय आश्या और इस विशव वा सन्द्र होगा !

त्रेस साहि हवर है, सानव समीत है, एक्ति सामार है, मान मानत है, वह सनम समीता उनका रक्तिया और सीता है। कभी हन केवल प्रार्थित्व बेतुरे देखों की सानते हैं जो उनते ही समक्द है, हिन्दी कि उनकी समम्बद्ध सहात् होती। केदिन हम एक दिन समार हो दिन्य कन्यामनय सानकों के समूह-समीत तक पहुच आएगे।

बन्धन

स्वनन्तरा सता का नियम है, मता के सुपय एकना के स्वरूप में बीर यह महित की गुम स्वामिनी है। अधीनना, उम सत्ता में विद्यान प्रेम का नियम है जो सता की अनेवडा में स्थिन अपनी आन्य आस्थात्रा के रोल में मेंबा करने के लिए अपनी आरो क्षेत्रस्था और कर देनी है।

जब स्वनन्त्रता बचनी में माम करता है और धरीनता मेम का नहीं, किन्दु गीति का नियम बन जानी है तब यह होता है कि बन्तुओं का साथ स्वकार किहा और विका ही जाता है और जीवन के साथ आन्ता के व्यवहारा में अनुत का आधिपाय ही जाना है।

हा जारा है।
स्वाप्त सोसा-सप्तन-रहित पाजा द्वारा भावी
है, क्योति यही हसारा बास्तिक स्वरूप है। इस
एक्ता में तरत को हम अपन अपनर प्राप्त कर सकते
है तया हमारी सीका को भी अप्य सबके साथ प्रश्व
स्मापित करने अनुस्त कर नकते हैं। यह दिसिध
अनुस्ति आल करना ही अहानि में आप्या ना समय
प्रयोदन हैं।

धर्म

खमार तीन प्रशाद की कान्तियों में परिवित्र है। स्पूल, भीतिक और बीजिट प्रवल परिणामी की पैटा करती हैं। नैतिक और बीजिट कान्ति का श्रीक सरविक्ष ध्यादक है और अपने फलो की दृष्टि में यह बहुत है। समुद्र हैं, परन्तु साध्यानिक कार्तन महान की में का बीचा हैं।

यदि इस विशिष परिस्तेन का पानसर मुर्गे सन्दार्श में एक्किय हो गर्छ ती बहुत निर्देश कर में होने क्यों। लेकिय सावस्तारी के मन और परीर आते हुर मप्पादिकता के मक्त सन्दार की मार्ग में पूरी कार पारण करी कर गर्भ। उन्नी बहुत हुए बिगर बाग है भेर में पूर्ण कर प्राप्त मार्ग मार्ग सामा प्राप्त हिंग हो भाग है। मार्ग मार्ग मार्ग कर बीबी को बोकर एक प्रोह्मण कर निकाम के निर् भी हमारे क्षेत्र की बहुत-सी वौद्धिक और शारीरिक जुताई की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक धर्म ने मानवजाति को सहायता पहुंचायी है। पैगनिज्म ने मनुष्य के अन्दर सीन्दर्य के प्रकाश को विकसित किया है, उसके जीवन की विशालता और उच्चता को बढ़ाया है और बहुमुखी पूर्णता के उसके उद्देश्य को उन्नत किया है। ईसाइयत ने उसे दिव्य प्रेम और दयालुता व सहदयता का कुछ दर्शन कराया है। वौद्ध धर्म ने उसे अधिक जानी, अधिक विनीत और अधिक पवित्र होने का एक उत्कृष्ट मार्ग दिखाया है। यहदी धर्म और इस्लाम ने इसे धार्मिक भाव से किया में सच्चे होना और ईश्वर के प्रति उत्कट भिवत वाला होना सिखाया है। हिन्दू धर्म ने उसके आगे वड़ी-से-बड़ी और गहरी आध्यारिमक संभावनाओं को खोल दिया है। एक वड़ा काम सिद्ध हो जायगा, जब ये सब ईश्वर-दर्शन परस्पर आलिगन कर लेंगे और अपने आपको एक दूसरे के प्रतिरूप वना लेंगे। पर वीद्धिक सिद्धान्तवादिता अहंकार मार्ग में वावक है।

सभी घमीं ने बहुत-सी आत्माओं को बचाया है, पर समग्र मनुष्यजाति को आध्यात्ममय बनाने में अभी तक कोई समर्थ नहीं हो सका है। इसके लिए तो किसी सम्प्रदाय या मत की आवश्यकता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दिशा में आत्म-विकास प्राप्त करने को एक स्थिर, सतत और सर्वांगणीय प्रयत्न की अपेक्षा है।

वाज हमें संसार में जो परिवर्तन दिखायी देते हैं वे अपने आदर्श और उद्देश्य में बौद्धिक, नैतिक और भौतिक हैं। आध्यात्मिक क्रान्ति अपने अवसर की प्रतीक्षा में है और इस बीच में वह केवल कहीं- कहीं अपनी लहरों को उछालती है। जवतक यह नहीं या जाती, दूसरी क्रान्तियों का मतलव समझ में नहीं या सकता और तवतक वर्तमान की घटनाओं की सब व्याख्याएं और मनुष्य की भविष्य सम्बन्धी सव कल्पनाएं व्यर्थ हैं; वयोंकि यह उस आध्यात्मिक क्रान्ति का स्वरूप, शक्ति और परिणाम ही है जो हमारी मानवजाति के अग्रिम चक्र की निश्चित करेंगे।

# सूर्यास्त !

हरिभाक उपाध्याय

श्री अरिवन्द इतनी जल्दी देह छोड़ देंगे, इसकी स्वप्न में भी किसीने करवना न की होगी। एक ही दिन पहले तो देह की अमरता के विषय में हम अरिवन्द-आश्रम के कुछ साधक भाइयों से वातचीत कर रहे थे। श्री अरिवन्द ने अपने यौगिक या आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर शरीर के जड़ अणुओं को भी चेतनायुक्त, चेतनामय करने की संभावना वताई है। यह कितनी ही अद्मृत क्यों न हो, समझ में आने जैसी वात है— इसकी हम लोग चर्चा कर रहे थे। श्री अरिवन्द ने जो सिद्धि प्राप्त की है, उसकी पहुंच अभी यहांतक नहीं हुई है, शायद वह इस दिशा में प्रयत्नशील है— यह वात भी चली थी। मन और प्राण में तो वह अति-मानस को अवतरित कर पाये हैं, जिसके वल पर वह

मनुष्यजाति का रूपान्तर करने का मार्ग पा गये हैं;
किन्तु शरीर की जड़ इंद्रियों में उनका प्रवेश नहीं कर
पाये हैं। कुछ लोगों को यह आशा भी थी कि श्री
अरिवन्द इसी शरीर में उसे सिद्ध कर सकेंगे; किन्तु
परमात्मा को लोला विचित्र है। दूसरे ही दिन मुबह
हमें यह स्तिम्भत कर देनेवाला संकेत मिला कि जाओ,
श्री अरिवन्द के अन्तिम दर्गन कर लो। मैं समझा, आज
शायद किमी कारण से श्री अरिवन्द ने पांचवीं वार
दर्शन देना पसन्द किया हो। (सिद्धि प्राप्त होने के वाद
वे वर्ष में कुल चार वार ही साधकों और भक्तों को
दर्शन दिया करते थे।) रास्ते में उनके कुछ शिष्य मिले,
जिनके चेहरों पर सदैव की भांति मुस्कराहट व शांति
छाई हुई थी। किन्तु जव उनके दर्शन की अभिलापा

हों-देशा और गाम ही

दारीर में निरचलता

देगीतो में सप्त रह

गया। एक विज्ञाती के

सटके की तरह दिसाय

में अस्तिम दर्शन का

सर्च रादम गया । दिवर्

यह नया देश रहा ह---

इतना सापने का भी

शामध्ये मन-विद्य में न

एक यन्त्र की तरह

उनरो अन्तिम प्रणाम

करने कमरे ने बाहर

निक्ला की कुछ शण

बाद ऐसा मालूम हमा

मानों कीई साना देख

रहे हैं। यो असमाई

पुराणी के कमरे में गया

शोबट कुछ मित्रो के

साम इम तरह बातें

कर रहेथे, सामा मुख

हमादी गही ! मृतने

बहुत इसरर यागें की ।

यह श्री अरविद्व ने साग

सावकों में हैं। उन्होंत

कहा, थी सर्रावन्द का

रह गया ।

और उत्स्वता से उनके कमरे के द्वार सक पहचा की एक सबी चौको पर उनके भवद धरीर को बिट स्टेन्स हुआ, चनकी दिव्य गीर मुखाइति को परम धार्तिमय, उनकी बांगों को मुंदा हुआ-मानी गहरी नीद के रहे

नीवन-मांकी

यी अरविन्द का जन्म १५ अगस्त १८७२ को बलकारी में हजा था। जनकी शिक्षा वेश्वित में हुई। भारत लौटने पर वह बड़ौदा बालेज में बाइस जिमीपल नियन्त होगमे । अपने विद्यार्थी-जीवन में भी वह बर्ट प्रतिमाशाली थे। अध्यापन-कार्य करते थे, पर उनका हरप किसी इसरी चीज की स्रोज में या। बह रास्टीय मांदोलन में सक्तिय भाग तेने लगे और पट ही दिनों में प्रथम अंगी के नेना माने जाने रूपे। उन्हीं दिनों उन्होंने 'बन्देशालरम' का प्रकाशन आरम क्या। उनकी बाणी तथा लेपानी में बहा श्रोध था। सरकार में उनपर म्हरमा चलाया । मई १९०८ से अंग्रेल १९०९ तह अलीपुर जेल में रहे। यह समय उनशे निए अध्यारम-शान में जिला-बीला का छा। बहने है कि वहीं उन्हें

देश्वर के दर्श में हुए । सन् १९१० में भी अरबिन्द पांडीचेरी में मार्च और तक्ती निरंतर योग-सायना में संलान रहे । १९१४ में भी मानाजी पांडीयेरी में आई। तबने मही हैं भीर आधम की स्पवस्था करती है।

सन १९१४ में भी अरवित्र में 'आर्थ' पत्रिवा वा प्रशास मारम रिया ।

२४ मदम्बर, १९२६ को उन्हें थीन में निद्धि प्राप्त हुई भेषोग तथा भागव-जीवन की अध्य लगस्याओं पर उन्होंने वह महावयुर्व पुरनके निली है, जिनमें 'साइक डिवाइन' ( 'दिम्च अविन' ) तथा 'एसेन आन गीना' ('गोना पर निर्देष') बहुत प्रसिद्ध है ।

५ शिमाबर १९५० को शांत्र के बेंद्र बाबे देशन ।

नहीं दिव सरा. यह चरा गया। इसमें बया बात है ? इस बायय के कुछ बादय चन्होंने भाग कहे।

इस अवस्थित बावस्मिन वस्त्रात पर बाधम के साधक माई-बहना ने जो अदमत शाहि, धैये अवि-

घण्या दिलाई यह धी शर्वाट की शिक्ष संघर साधना के सबदा द्वीरव थी। श्री सामाजी का संदेश ब्राया कि गवरी भीजन कर हेना पाहिए. विभारी मुखा न रहना षाहिए । गोरपुटा-अनिषि-गृह की क्यार-स्पापिका यहन ने पहा विगय नाम कोट की म पिर परेगा, यो भी सदा की भौति सह रिमत के साथ। इसका हमारे हाइय पर बहुन प्रमाय पदा । दुसरी साधिना बहुत में बहुत मापट शिया शि माप लेग कुछ या हाँ। साने घर से पाव रोडी देनें रगी। उहारे एक खापारण पटना की तरह दो रेकर हमी यात्रधीत की । इपर दर्नियों एक एक करके उनके बारि में बारे थे। उदर राषण रात रागाह ने उनका सुनापि स्थल मैदार करने में रग

घरीर छट गया। जनका रहा राम दूबरे छरीरों से होता । जीवण्या परमान्या से दूर होयया हैं । ही पामने को बिटाने के लिए बीवारवा विद्याची ताओं है समर्थं कर प्राहे। बी अर्रावाद ने बहुत हद तक इसवें सिद्धि प्राप्त की की-मारे की मजिल में उनका घरीर

रहे थे । पाषडी की सटसट या सनामन की आवाज के बाराश दन में बड़ा गापकों और मानियों में गे हिंगी का एक ग्रस्ट नहीं सुनाई पहला मा । इत्ती प्राप्ताति देन सुनय में दुलन होशे हैं। कुछ बहने मापसे बह"- कहीं कोने में चुपचाप आंसू वंहा रही थीं या सिसक रही थीं। यह सारी व्यवस्था आन्तरिक यौगिक अनुशासन और आव्यात्मिक बल तथा विकास की ही निर्देशक थी। सारे जगत का शिक्षित समाज जहां इस महान घटना से थरी उठा होगा वहां आश्रमवासियों की यह कर्त्तव्य-परायणता या समर्पणभाव अपनी एक अलग ही शान रखता है।

श्री बर्विन्द का जीवन एक विकट और महान् साधना का जीवन रहा है। १९०५ ६ के राष्ट्रीय जीवन के मंथन में से एक राष्ट्रीय नेता की जगह आज वह एक महान् आध्यात्मिक सिद्ध के रूप में जगत् को मिले। ऐसे तेजस्वी, प्रभावशाली, क्रियाशील व्यक्ति का लगातार ४० साल तक तमाम जागतिक प्रवृत्तियों से अपने को सर्वथा अलग रखकर, वार-वार के जोरदार आवाहनों के प्रभावों को दूर रखकर, एक स्थान में विलक एक मकान में अपने को बन्द कर रखना मामूली साधना नहीं है। फिर वह निष्क्रिय जीवन में विश्वास नहीं रखते थे। अकर्म में कर्म को देखने वाले सिद्ध थे। गांधीजी जागतिक तुफानों में खेलनेवाले आत्मस्य पुरुष थे तो श्री अरविन्द समस्त जागतिक प्रभावों से अलिप्त रहकर आन्तरिक तूफानों पर विजय प्राप्त करनेवाले सिद्ध पुरुप थे। उच्च और दिन्य जीवन के लिए, जगत में दिन्य जीवन के अवतरण के लिए वह प्रारंभ से ही कृतनिइचय माल्म होते थे। कवि, विद्वान, विचारक, लेखक, दार्शनिक, साधक, सिद्ध, वह क्या-क्या नहीं थे? भारत की तथा संसार की प्रधान एवं महान् घटनाओं और प्रश्नों के प्रति सजग रहते थे और उनके कई साधकों के मत में संसार की विकट समस्याओं को अपने अध्यातम-वल से प्रभावित करने में, घटनाओं का रुख मोड़ देने में समर्थ और सफल हुए थे। उन्होंने जो ठाना वह अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। उन्हें यह विश्वास होगया था कि मानवजीवन का स्तर ऊंचा उठाने के लिए जिस शनित या सिद्धि की जरूरत है वह उन्हें प्राप्त होगई है। उसके वल पर अपने इसी सिद्धिदिवस पर वहें बात्म-विश्वास के साथ उन्होंने संदेश दिया है। अतिमानस एक सत्य है और उसका आगमन स्वभावसिद्ध वस्तु की तरह अपरिहायं है।

वाज भारतवर्ष अपने, कम-से-कम वाज तो, वन्तिम महापुरुष को खो बैठा है। आध्यात्मिक जगत का सूर्य अस्ताचल को चला गया। वापू गये—गुरुदेव पहले ही चल वसे थे-रमण महर्षि गये, सारे आध्यात्मिक जगत की आंखें श्री अरविन्द की ओर देखने लगी घों। वह भी चले गये ! इसमें ईश्वर का क्या संकेत है, क्या संदेश है ? मेरे साथ भाई वोरकर, (महाराष्ट्र के उच्च कोटि के कवि तथा गोआ के स्वतंत्रतासंग्राम के एक निष्ठावान नेता) सारी दक्षिण यात्रा में रहे। दोनों इस नतीजे पर पहुँचे कि अवतक जगत महापुरुषों के वल-भरोसे चला। अब भगवान की यह इच्छा मालूम होती है कि वह अपने पांचों के वल चले। महापुरुषों ने जो आदर्श सामने रख दिया, अपने जीवन व मरण से जो मार्ग खोल दिया, उससे लाभ उठाकर चलता चला जाय । वोरकरजी ने कवि की भाषा में कहा-ये महापुरुप समुद्र की ऊंची उठी हुई लहर की तरह ऊपर उठकर हमको आगे वढ़ा गये, अब नीचे विखरकर अपनी शिवत, स्फूर्ति, जीवन, जनता को देकर उसमें लीन हो गये। उनकी दिव्यता से जनता का घरातल और मानव-जाति का स्तर कंचा उठेगा। वैसे भारतवर्ष में एक के वाद एक महापुरुष आये हैं। उनका तांता ट्टा नहीं है। एक अपना काम कर जाता है और दूसरा उसके आगे की मंजिल के लिए आजाता है। भगवान के इस अनु-ग्रह से हम निराश वयों हों ?

वापू के जाने के बाद मेरे मन में यह प्रश्न कई वार उठा है कि वापू तथा अरिवन्द के संदेश में वया सचमुच कोई भेद है ? हर बार मुझे यह उत्तर मिला कि मूलत: दोनों का संदेश एक ही है, भगवान की उपलब्धि। बापू ने अपने सामने तो यही लक्ष्य सदैव जीता-जागता रक्खा; पर जनता के लिए उसकी ओर संकेतमात्र कर दिया करते थे, जब कि श्री अरिवन्द ने जितने जोर से उसे अपने लिए पकड़ा उतने ही वल के साथ उसे नंसार के सामने भी रक्खा। दोनों के स्वभाव, संस्कार के अनुसार इस एक ही परम सन्देश ने उनके जीवन तथा उपदेश में भिन्न-भिन्न रूप ग्रहण किया। यही स्वामा-विक भी था। उस भिन्नता में से उसमें समाविष्ट एकता को देखने की प्रवृत्ति हमारी होनी चाहिए। मुझे तो यह स्पष्ट रूप हो दिलाई देता हूँ वि मुददेव बा भी सन्देय बोई अलग नहीं था। बन्जि सारे महापुरवा वा सदेव मूल रूप में एवं हो जाता है—यह भी दर्ग मूले हो रहा है। जननी मोजनामों भीर वामेवमों की निवस्ता मा निप्रतामों बी आन्तिय एकता पर वह देवर हुमें सारे मानव-पामा में एक प्रचला एकी थाहिए।

लय नया वरें ? - यह प्रस्त चठा। ही है। इत्तवा चठता भी मिहियत हैं। है। विपय निष्ठा और बक वे साम साबिय बरवा से मिहियत गत्वाय की और दिना देशे पालते वर्षों एक निष्य के पालते की हैं। यह नहीं स्तर्भ पृथ्येत, गांधी और लरीवाद में देह बहते पल जाय, उगसे विचालत न होते हुए साने बहते पल जाय। अगा तथा मानज जानि वा बण्याम, मानज, विकास, मानज स्वीत सिंद हुए माने सहसे सिंद हुए साने बहते पल जाय। अगा तथा मानज जानि वा बण्याम, मानज, विकास में स्तर्भ मानज, विकास मानज, व्यवस्था मानज, विकास मानज, विकास की सिंद हुमारे अपने दिगी भी मुक्त नेना, व्यवस्था मानजेया, जाया भी प्रहुष दिग्या है तो जाना वरदहरू जाती तरह हुमारे महात पर राग हुआ हुमनो मिलेया, जिला तरह हि जीदिन अवस्था में हुम देशने से, शोशी अधिक प्रसास के साम ।

जिसने मानवजाति को दिव्य बनाने का, वर्नमान भिन्न स्तर से बढ़ार करने सकत स्नर पर साने का बंद्धा उठावा, विसमें निरत्नर पालीस वर्ष भी एकान साधना के द्वारा उसीरे किए नाम विद्या, उत्तरो सास्मा में शानित या मदर्गात ने किए प्राप्ता मरनेवाले हम भीन ? और जिन साधमा में अपूर्व शानित मा निर्मा प्राप्ता अनुभव विद्या, उन्हें सानवना दम मा भी हमें भूग अधिकार हैं ? बदावन मानारी मा देह हैं उतना अर्थाव्य आध्या ने साधम ता उनमें गीर में निरिच्त है, और मानारी पर ता सारे माल्या मा वोग छोड़ मर स्वय जी सर्थाव्य निस्थित से ली अब हम भी मानाजी ने बारे में विद्यार बर्पायों नीन ? हमें तो महामाल ना एक स्त्रीर सर्वार ने सम्म में स्वर्थ कर देता रहता है, बी इस सम्म साथ सारहा हैं :

> मुख या यदि या दु.ग्रं त्रिय या यदि याऽत्रियम ।

प्राप्तमप्राप्तमुवागीत

हृदयेनापराजित ॥ इत तसाम विस्तियो में ते सवशान गाएन हो नग हमें दिगो, उगोरे लिए हमारा जीवन, हमान्य मरण, सब हुए है। इतनी तमास प्रवृत्तियों और कृतियों हमें पर हमें प्र सारेची विकेट अरला 'भे-मेग' नाम ! जो साथ मेरे।"

#### श्री श्रारविन्द का महाप्रयाण

**४१०** इन्द्रसेन

मायण के लिए गुरदेव उनने धर्मक होते हैं, मनवान के सावाद महिनिय तथा स्थानका होते हैं। एन्होंकी विज्ञानीया और गहरावा होते हैं करोंकी विज्ञानीया अभि नहरा होते चन्या में मुक्त होता है तथा आध्यानाथ करता है वे बह मनार जनमें बहुऐसा मेंस सनुभव करता है जो बह मनार मह में दिनी अन्य में नहीं करता। देखाया जावल के लिए सायशावर्या में मूह का विछोह दूसर हा जावला।

धीन्नरिवाद वे गरीर छोड़ देने का अपन नमा-बार नापवयमं तथा सामान्य अन्ता के लिए नमान रूप में भारी पद्या था। यह बात दिशों की कल्पना में भी नभी। मां इसे मुनकर प्रथम शाबिरकण ही नहीं हुआ। जनक मार्थे का शीम जरा यांच नहीं है। यस ठवनक में हुने तथ्य मन में स्वीनार करने में भी समर्थ नहीं हो गांधे । तब राखार ट्रोक्ट मध्य मानका यहा नव हदा जीर बुद्धि व्ययनापूर्वक पूछने रागे कि सारित यह हमा बची भीर केरी है

जनता में मासान्य क्या में देश और जानि है एक महानु नेता क्या क्यांच और मोगी के देहरवागन वर दूश महान्य क्या द्वां जनते जीवन य कार्य का क्या क्यांच क्या और देश ना क्यांच प्राप्त ही सीजर्शकर की, देन क्यांचन करन् है। जनका जीवन नागर के हिन्दून में महानु कार्य, प्राप्त हाता, हात्या विद्या होया सम्प्राप्त की तर्व और प्रभाव के कारण विशेष उच्च स्थान रखता है। उनके ग्रंथ भी सामान्य वीद्धिक रचना नहीं हैं। वे सब बाध्यात्मिक अनुभव की उपज हैं और उन्होंने अपूर्व रूप में भारतीय संस्कृति को हमारे लिए पुनरुज्जीवित कर दिया है। आज के समय में उनके व्यक्तित्व तथा ग्रंथों से देश और संसार में जो आध्यात्मिक जिज्ञासा प्रसारित हुई है वह भारत तथा संसार के लिए विशेष महत्व की वस्तु है। जनता ने श्री अरिवन्द के इस सव विस्तृत कार्य तथा प्रभाव का चिन्तन कर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अपित की है और दिवंगत आत्मा के लिए मंगलकामना की है।

परन्तु साधकवर्ग तथा वे जो श्री अरविन्द के विशेष आध्य।तिमक ध्येय तया कार्य से परिचित हैं श्री अरविन्द के देहावसान में एक विकट समस्या अनु-भव करते हैं। वे महमूस करते हैं कि श्री अरिवन्द अपनी मुक्ति-मात्र के लिए साधना नहीं कर रहे थे। अपने साधकों की मुक्ति भी उनका लक्ष्य नहीं था। उन्होंने तो स्पष्ट रूप में अनुभव किया था कि मन से उच्चतर एक अतिमानस 'तत्त्व है जो पृथ्वी स्तर पर अनिवार्य रूप में प्रकट होना है। वे वतलाते हैं कि जड़, प्राण शौर मन के विकास-कम की स्वाभाविक परिपूत्ति अतिमानस में होगी। मन अत्यन्त अपूर्ण वस्त् है। यह मानव की सामान्य चेतना का अन्तिम रूप नहीं हो सकता। पशु की चेतना से वर्तमान मानव-चेतना विशालतर है; परन्तु यह भी वस्तुओं के वाह्य रूपों को ही ग्रहण करने में समर्थ होती है। सत्य को साक्षात् रूप में अनुभव करनेवाली पूर्णतर चेतना मानव का स्वाभ।विक घ्येय बीर लक्ष्य है और यह पृथ्वी स्तर पर मानव-चेतना में एक दिन चरितार्य होनी चाहिए। श्री अरविन्द यह भी बतलाते थे कि यह चेतना योग की प्रगाह एकाग्रता द्वारा शीवतर भी सिद्ध की जा सकती है। वही वास्तव में उनका घ्येय था। इस घ्येय को वे अपने जीवन-काल में ही पूर्ण करने की आशा रखते थे। इस संबंध में उन्होंने दो-एक अपने पत्रों में काफी स्वष्ट कृप में कहा है कि यह कार्य अभी पूरा होना है।

इस प्रकार के कुछेक प्रकरणों के आधार पर श्री अरिवन्द के आध्यात्मिक अनुयायियों ने यह आशा बना ली थी कि जबतक उनका काम पूरा नहीं होता तयतक श्री अरविन्द निश्चित रूप से उनके बीच उपस्थित रहेंगे। इसके अतिरिक्त अतिमानस की शक्ति से वैसे भी व्यक्ति को 'यथाइच्छा जीवन-काल' प्राप्त हो जाता है। अतः इन अनुयायियों ने श्री अरविन्द के देहावसान पर विशेष घक्का अनुभव किया। वे गम्भीर रूप में सोचने लगे कि यह क्यों हुआ और कैसे हुआ ?

श्री अरिवन्द ने अतिमानस, इसके अवतरण तथा अवतरण के मार्ग की किठनाइयों तथा विघन-वाघाओं की निष्पक्षभाव में वैज्ञानिक दौली से व्याख्या की हं। अतिमानस की सत्ता तथा इसके अवतरण की अवस्य-म्माविता के वारे में उन्होंने पूर्ण निरचय से लिखा है। परन्तु अवतरण के लिए कभी तारीख नहीं वांधी थी; क्योंकि उसके लिए अनेक अवस्थाओं की अनुक्तता चाहिए।

अतिमानस के संबंध में वे कहते हैं, "मैं इसे (अतिमानस को) ऊपर से अपनी चेतना पर प्रकाशित होते लगातार अनुभव करता हूं और में यही यत्न कर रहा हूं कि उपयुक्त अवस्थाएं पैदा की जायं जिससे पूर्ण व्यक्तित्व को अपनी स्वाभाविक शक्ति के प्रभाव में छे छें।" यही उनका परम करणीय कमें बन गया था। अतिमानस को मानव के मन, प्राण और शरीर में अवतरित करना, इस अवतरण द्वारा उन्हें रूपांतरित करना ही उनके आध्यात्मिक कार्य का लक्ष्य या। आरोहण द्वारा भगवान् तथा आत्मा की प्राप्ति खूब कंचे आध्यात्मिक लक्ष्य हैं, परन्तु उनका कहना या कि इससे मानव को अपने संपूर्ण जीवन में भगवान् का स्पर्ग प्राप्त नहीं होता । जवतक व्यक्तित्व के सभी अंगों का दिव्योकरण न किया जाय, निम्न प्रकृति उच्च प्रकृति में परिवर्तित न हो जाय, तवतक मानव का भगवान के साथ पूर्ण मिलन, जैसा समाधि तथा चिन्तन में वैसा ही कमें तथा व्यवहार में सिद्ध नहीं होता। यह सिद्धि तभी हो सकती है जबकि अतिमानस तत्व की शक्ति को हम अपने शरीर के भौतिक तत्व तक में उतार छायं और फिर उसीसे अपने विचार-

१लैंटसं आव श्री अरविन्द, २, पुट्ठ ७३,

विवार में तया त्रिया-किया में अनुभाषित हो।

इस बदारण की प्रतिया के बारे में थी अर्थवद ने गुब पिस्तार से लिया है। एक जबह वे बनताते हैं, "यह यवनरण वयने बाग्ये कुछ उन्होंदल तथा मोजने की पीम नहीं। यह एक प्रतियोज, कुछी नथीं में सीमित, दिकाण प्रतिया है यो याँचाल प्रतृति को अपने प्रदा को उन्हेंस देशों है। यह कार्य सारे जब्द पर एकडम नहीं क्या वा सामा, बन्ति बन्य ऐसे नया की तरह यह एहते हुछ कुने हुए सामारों में करना होना है और फिर उसे विस्तुन क्या जाना है। हमें (थी अर्पिक्ट और माजानी) पहले पर साने अपर करना है और फिर पानियनेतना के प्रतिनिधि क्य उन सामार्थी पर यो हमारे पास एक होंगी (कहें, पहल देश)

सी सरविष्य इस नार्य नी विद्यादयो तथा सने स्मार वी विद्यान्तायाओं को बार-बार जनता देने रहे हैं। धरीर के भीतिक भाग में प्रनाध पहुंचानों के हुने सा विदेश के भीतिक भाग में प्रनाध पहुंचानों कर हुने सा विदेश कर नार्य उन्होंने वहा है, "सचेतन में प्रनाध पहुंचाना महा नदिन नाम है।" परन्तु पह नाम निर्म निका प्रपृत्ति ना करावर एमक नहीं। वारतक में मन बीर प्राण के शेव कर होति न तर में धर्म के रही थी। यह एक स्वप्तत मानिक निमति भी भीर इसे अधिकृत नरने में ही शो अधिकृत नरने में ही शो अधिकृत नरने में ही शो अधिकृत न

सो बर्रावर वे जीवन नी मानिक गति उनका बास्मासिक सरवा गृहस्वाक था । वे चटनाओं के सीते में नहीं आर्थ में ने बातों के के दिन महीं को सीते में नहीं आर्थ में ने बातों के के दिन सहार में एक बातों के बारत मुझ्य बेडन बनता की गतियान मातिया होते हैं। वे जिस सीसे उन्हीं पर किया निया करते में माने सीक्षणनाम में उनका प्रधान कर्य, दिन से पहले हैं। माने सी माने सी मातिया की सीते मातिया माति

उनका महात्रवाण अवस्य ही अचेतन में अधिमान-सिक प्रकाश के अधनरण-सद्भी एक अभिवाद घटना थी, वह मानव-स्थानर के महान भारत के लिए वित यो तया अतिमानस के दिश्य तथ्य के दिए वरिदान या। इसरे अतिस्तित उनरे प्रयाण मा दूसरा अर्थ हो नही सहता । उनहा सारा जीवन ही गरमीर मध्यारिमश्यत तथा आश्य-निवेदन था. महाप्रयाण का महावर्भ के उस परम आहम निरेदन ही हो सासा है। घरन्त क्या इस आत्म-निवेदन में अतिमानम के अवतरन का कार्य रक जायगा या पीमा पह जायगा है बाँद मध्य मामान्यनया भी जीवन का सन्त नही हाती. विस्ति नवे और अधिक विश्वाम जीवन का सामन होती हैं तो यो अरविन्द जैसे बा मवेला के लिए सी यह रिसी तरह भी बाधा या दशवद नहीं वर गर्दी, बन्ति शरीर पर अधिमानस ने एक प्रयोग से भी भन्-यव प्राप्त हवा वह मावी नार्य ने लिए जरूर ही सही-यत होगा, और त्या पना कि यह आमन मार्था कार्य ने लिए शायद अनिवार्य हो गया था।

यह इस विदर्शाय दुवें जि सहित है तो से भी वर्तिय सब भी बही ब्रासिय है जो में भीवत-मर रहे हैं और यह अप्तास के यसरव में हो तो में भीवत-मर रहे हैं और वर्क प्यास के स्वरास में होता अविवास है तो में बर्क प्यास की सिरामंड्रा के लिए वरपूरत खेन में वर्कन प्यास में हो उपता है, वर्कन खना आपम हो हो उपता है, वर्कन हिंच उद्देशित के प्रमास की स्वरास किया है। व्यास हिंच उद्देशित के प्रमास की स्वरास है। व्यास है। व्यास हिंच देशित है। वर्कन हिंच है। वर्कन है के प्रमास की प्रमास की प्रमास की प्रमास है। वर्कन है के प्रमास की प्रम

भर मह हुन पर निमंद बाजा है कि हम बनहें ग्रांच सबस मारिका संबंध कोहे, उनने पदभारीन प्रांच को बीट एक पदभारीन वा दूबड़ा मीर सम्पाद की ग्रांच महानदस करें, बदशक बहु महाने दिया राग, बहु महिमानस, मारकबेटना में प्रीमिटन न ही बाद।

## ठकरवापा को श्रदांजलि

''ठक्करवापा असाधारण कार्यकर्ता हैं। वे निरहं-कारी और नम्म हैं। वे प्रशंसा के भूखे नहीं हैं। उनका काम ही उनका एकमात्र सन्तोष और मनोरंजन हैं। वुढ़ापे के कारण उनके उत्साह और जोश में कोई कमी नहीं आई हैं। वे खुद ही एक संस्था

नौजवानों के लिए एक नम्ना है।

"...ठक्कर वापा जबसे काम में पड़े, न कभी आराम किया और न चैन लिया।

''ठनकरवापा के जीवन का मिशन अस्पृश्यों और दिलतों की सेवा करना रहा है।...'स्व' से अधिक उन्होंने

हैं। वे अपने जीवन के मिशन में जो शक्ति लगाते हैं उसे देख कर उनके आस-पास के नीजवान भी शरमा जाते हैं।"

--मो. क. गांधी

''ठक्करवापा निधन से भारत ने अपना एक और अनुरक्त सपूत और सेवक खो दिया, जिसकी स्थान-पूर्ति संभव नहीं। उन्होंने गरीवों की सेवा के लिए. चाहे वे मजदूरों में हों, चाहे हरिजनों या आदिमजातियों में. अपना जीवन अपित कर दिया था। अतः भारत के दरिद्रनारा-यण ने उनके देहावसान से अपना सच्चा वापा खो दिया ।...अपने

### ठक्करवापा की जीवन-भांकी

२९ नवम्वर सन् १८६९ को भावनगर के एक लोहाणा परिवार में जन्म, १८८६ में मैट्रिक पास किया। १८८७ में पूना-इंजीनियरिंग कालेज में भरती, १८९० में एल० सी० आई० परीक्षा में उत्तीणं। १८९१ से ९९ तक जी० आई० पी० रेलवे (काठियावाड़), बढ़वान और पोरवंदर में नौकरी। १८९९ से १९०२ तक पूर्वी अफीका, में युगाण्डा रेलवे में और १९०४-५ सांगली राज्य में इंजीनियर के रूप में कार्य। १९०५ में बम्चई म्युनिस-पैलिटी के रोड इंजीनियर नियुक्त हुए। १९०६ में पत्नी का देहान्त, १९०८ में दूसरा विवाह। १९०९ से १९१३ तक विभिन्न समाज-सेवी संस्थाओं के संचालकों से संपर्क और दीन-दिलतों की सेवा की प्रेरणा। १९१० में दूसरी पत्नी का भी देहान्त। १९१३ में पिताजी का स्वगंवास। १९१४ में सर्वेन्ट्स ऑव इंडिया सोसायटी के आजीवन सदस्य वने।

१९१४ से अन्त समय तक दीन-दिलतों की अनयक सेवा।

१९ जनवरी १९५१ं की रात को ८-२० पर देहान्त। हमेशा सेवा को महत्व दिया है।

''उन्हें अपनी पीढ़ी का महापुरुष मानने में हमें सदा गौरव का अनुभव होगा और अगली पीढ़ी उनके उदा-हरण से सदैव प्रेरणा और मार्ग-दश्नेन प्राप्त करेगी।"

—वल्लभभाई पटेल
"भारत की दिलत
जातियों में नवजीवन
के ठक्करवापा एक
प्रमुख निर्माता थे। उन
जैसे संत का मुकावला
कर सके, ऐसा आज कोई
भी तो नहीं बचा है।"
—च. राजगोपालाचार्य
"ठक्करवापा के
देहावसान से मानवता
का एक मूक निसस्वार्य
सेवक, हरिजनीं का

पीछे वह एक अनुकरणीय और स्पृहणीय आदर्श छोड़ गये हैं।"

—राजेन्द्रप्रसाद

"ठनकरवापा के लिए, जांत-पांत और प्रान्त-प्रान्त का कोई भेद नहीं था। सारे हिन्दुस्तान में जहां कहीं दुःख हुआ, जहां कहीं आफत आई, वहीं वे पहुंच गये। इसलिए उनका जीवन हिन्दुस्तान के मुखिया और बादिवासियों का रक्षक चला गया।<sup>5</sup>
— जगजीवन राम

"पूज्य ठक्करवापा के देहावसान से गोखले और गांघी की श्रृंखला की एक और विल्क अंतिम कड़ी टूट गई।"—वियोगीहरि

"वे स्वयं प्रकाशमान् हैं और उन्होंने अनेकों को सेवा और त्याग का प्रकाश दिखावा है।" —महादेवनाई

#### दीनवन्धु ठक्करवापा

यशपाल जैन

पुण्यस्त्रीर ठाररकार का स्वास्थ्य वेंद्र इधर
मुश्यस्त्रीर वरुष नहीं था, फिर भी आता।
महीं पी वि उन जैमा भागवान व्यक्ति जनावात
उठ जावगा। कई बार हृदय का दौरा हुआ, आधा
की ज्योति घर होगई, छिन कमेंगोगी बापा में हार
महीं मानी और मोन की मुगीती देने हुए ओवन वें असिम बाग कर गेला के कार्य में जुठ रहें। अभी वो ही दिन पूर्व ही मालूम हुआ बादि बापा में वंदो वर मूजन आ गर्द हैं, जो गुम धिन्ह नही था, पर किंदुओं आहि किलाने हैं गाया में युगीत्री का तमाला में कर रहें हैं तो मेरा हुदय गद्दगर् हो गया। निर्वय ही ऐते क्रेंट व्यक्ति की स्वानी शोद में मेरेने हुए मृत्यु भी कार्या की होगी।

मारा ना जीवा जराष्ट्र तरस्या ना जीवन रहा था।
सुरू ने हुए वरी में हुप उन्हें हुनीनियर ने हन में भारत
में और पूर्वी अरोशा में नाम चरने हुए थान है। बहु
मानी बाद ने जीवन की तैवादी थी। इसीनियर वा
काम बिगरे को बाराना और नवे को निर्माण करना
होता है। बाराना में रामम के बहे तह निर्माण करना
होता है। बाराना और रामम के बहे तह निर्माण करना
बही नाव दियाना और यहन अच्छी तरह ने। हुनारे राष्ट्रीय
बीरन ने बीड़ को हुर करने जो नया जीवन प्रधान
करने में निए उन्होंने अयन परिध्या दिया। देह नहीं
करते हैं निए उन्होंने अयन परिध्या दिया। देह नहीं
करा होते हैं, और बाम नही दे हही है, पर बाधा की
विभाव करें ने हैं अरों काम नही दे हही है, पर बाधा की
विभाव करें ने सुरू के अयाना पहन के हैं है कि साम

बाता में देश की मूल्लून कुशहें को देशा और उह देश करने में बानी गारी पालन लगा है। कब्स को तो समी उहारे हैं, दिन बाता मोर्स को पाट कर मन-कुशी में बोर मंगमगार्ज़ के जाता है बहु महान पुष्य और पात का मार्स होता है। माला के हिस्सों, मार्डि-बाहियों एक मार्ज स्वापत्रीयन दिला कार्ति के लिल्लु मार्गों बारा मरवार के मेंने देशहुल थे। गार्शिन होता। की मिरी अवस्था से उठाया, जन्हें छाती से एगाया, जनने प्राप फूरि और अपने पैरी चरने में रिए घडा बर दिया।

विवामी वर्ष को बायु बाना थान के जमाने में बहा बठिन बाम है। उन्नते भी बठिन काम है उस उम् उत्त काम बच्चे की दामता कनाम रचना । यह महान् नायक के निर्देश तमब है। बाया ने घरना बीयम प्रमु के काम के निर्देश व्यक्ति कर दिया था। इसी में असू ने बन्तिक साग तक दम देवाशनी को कार्यमान बारों रागा।

जहां ने भी सेस गाँपुरार आर्थ, उनप्रथाण वहीं पहुरे। बादू ने एक बार उन्हें लिगा वा कि जय काल होता है, सुम 'पवन-चेप' से दौरक्य आर्थे हो। ऐसी वी बादा की कर्मटात और सेस के लिए लगत।

नपमुन हमारा बहा दुर्माण है कि हमारे मार्ग-हमें बहुने एर-एन नरहे हमें किएहने जा रहे हैं। धादम यह हमने के लिए कि हम वर्ग्द्र मान्या नरने हे जिस्से अधिकारी है और उनकी मेशामा में हमने क्या सीरता है, दिनका अपने को लैयार दिया है। बाधा को अपना नरने के अधिकारी हम तभी होन जब हम उनके अधूर कार्य के पूरा कमने के लिए हमाज्यकर हाकर उसमें जुट आपने। उत्तरकारा वा काम मीव का काम या, लिमकी अवस्थी के किए कोई भी द्वार-राज अधिक दिन कि मी साम्यो । कच्चे द्वारिका भीर दूरानी बाधा इस नाम की आधी तरह से जाने में। इसीविश्व उर्दाने वार्गीय हमें लिए भारत की नीव में। इसीविश्व उर्दाने वार्गीय स्में लिए भारत की नीव में। वहान काम आपना हमाने

बारा ने निपत्त में आह हरितना, कारिनातिमों ब्राहि नह सकत न्या न्या । सहना ना प्रावद है नहीं निहाब नका हमा, जहां नामा में भगते हुत नहां आहे महारा न दिया है। अपने ऐसे 'बाग' भी ना कर आहे ने अनाप महाना करें की स्वाधारिक ही है। बाग का नहांक परिच कला नाता, जित्न जनकों नेशा चारत में हरिहान में नव्यक्तियों में निर्मा जपदों।

"बारा वी सेवा ने हिन्दोस्तान को बढ़ाया है।" -को. क. गांधी

## हिन्दी साहित्य सम्मेलन कोटा-अधिवेशन

### विशेष प्रतिनिधि

गत दिसम्बर में २६ से २९ ता० तक कोटा में एक मेला हुआ। वह मेला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक उत्सव के रूप में हुआ था। ४० वर्षों से वह भारत के निसी-न-किसी कोने में प्रतिवर्ष होता है। उसका महत्व है। सम्मेलन एक शक्तिशाली संस्था के रूप में देश के सामने रहा है। यह देश की भाषा का प्रहरी वन कर आया । भाषा के रूप में वह देश की वाणी वना । उसे देश के अनेक महाप्राण महात्माओं, महा-पूरुपों, विद्वानों, सावकों और कर्मयोगियों का सहयोग मिला। वावजूद अनेक असंगतियों के उसे सफलता भी मिली - वह सफलता जिस पर कोई भी संस्था गर्व कर सकती है। यद्यपि उसने साहित्य का कोई विशेष हित-साधन नहीं किया, पर यह मानना पड़ेगा कि उसने साहित्य के शरीर अर्थात् भाषा की रक्षा करने का अनयक प्रयत्न किया। उसके कर्णधारों में जहां सरस्वती के मुक साधक ये वहां देश की नैया के खिबैया भी थे। उन सबके नाम विश्व-विश्वत हैं। उनका तप फला-फला, राष्ट्रको राष्ट्रवाणी मिली। अपने इतिहास में सम्भवतः पहली वार समुचे भारत को, राजनीति के क्षेत्र में ही सही, एक भाषा-भाषी होने का भौरव मिला। आनेवाले युग के इतिहासकार इस गीरव को अभूतपूर्वं कहेंगे, उन्हें कहना पढ़ेगा।

जिस सम्मेलन को इतनी सफलता मिली उसकी शिवत की याह कौन ले सकता हैं? कोटा-सम्मेलन में यहुत से लोग उसी शिवत के प्रति श्रद्धा प्रदिशित करने पहुंचे थे। पर उनके अचरज का िक काना नहीं रहा जब उन्होंने देखा कि सम्मेलन की शिवत आकोश और घृणा की शिवत है। आकोश और घृणा कायर के अस्त्र होते हैं। सम्मेलन अवतक विद्रोह में से शिवत पाता रहा था, पर विद्रोह का कारण जैसे ही समाप्त हुआ वैसे ही उसकी शिवत भी खोखली हो गई। रचनात्मक कार्य के लिए जिस शिवत और साधना की पूंजी की आवश्यकना होती है वह उसे नहीं मिली, मिल भी नहीं सकती थी। उसके लिए नए प्रकार के साधकों

की आवश्यकता होती है। वे साधक उसके प्रांगण से दूर हैं और जो इनेगिने उसके पास थे भी उन्हें हमने इस बार वहां बहुत ही उदासीन और चिन्तित पाया। वे जैसे वहां थे ही नहीं, जैसे हाजिरी देने को गए और लौट आए। सचमुच इस अधिवेशन में उनके दिल को ठेस लगी होगी। प्रत्येक समझदार व्यक्ति के हृदय को ठेस लगनी चाहिए।

हमें सम्मेलन की आन्तरिया राजनीति से यहां कोई सम्बन्ध नहीं है ।। हम उसकी चर्चा नहीं करेंगे, पर जिस रीति से इस अधिवेशन में कार्य-संचालन हुआ वह सरस्वती के वरद पुत्रों को लजाने वाली तो थी ही, राजनीति के खिलाड़ियों के लिए भी शोभनीय नहीं थी । जहां तक स्वागत-समिति का सम्बन्ध है वहां तक सव ठीक ही था। बृटियां थीं और कहां नहीं होतीं; पर जिस रीति से, जिस स्नेहमयी सद्भावना से जन लोगों ने कार्य किया उससे सम्मेलन के कर्णचार बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनके नाम गिनाना गात्र शिष्टाचार की वात है; पर उनके नेता श्री बुद्धसिंह वापना ने जिस स्नेह बार सोहार्द का परिचय दिया वह बहुतीं को बहुत दिनों तक याद रहेगा। कुछ लोग ऐसे मेलों में पुरानी मित्रता दृढ़ करने तथा नई मित्रता स्थापित करने जाया करते हैं। उनकी दृष्टि से भी यह अधिवेशन बुरा नहीं था। स्थानीय साहित्यिकों का एक दल वहां निरन्तर उपस्थित रहता था। उनमें सर्वश्री रामचरण महेन्द्र, राजेन्द्र सक्सेना, जगदीय 'पलायनवादी' आदि कुछ भाई अब मात्र स्यानीय ही नहीं रहे हैं। आगत महान्यावों में सर्वंथी रामवृद्ध येनीपुरी, आरसीप्रगाद सिंह, महाराजकुमार टा० रचुवीरसिंह, वियोगीहरि, भदन्त आनन्द कोसल्यायन, प्रभाकर माचवे, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, देवेन्द्र सत्यायीं, चन्द्रीवली पाण्टे. वेहव वनारमी, विष्णु प्रभाकर, टा० सुघीन्द्र, कुमारी कंचनलता सब्बरवाल, राधादेवी गोयनका, गोपालप्रसाद व्यास, प्रो॰ वयोध्याप्रसाद, रामनाथ मुमन, प्रभृदयाल मित्तल बादि का एक स्थान पर इकट्ठा होना किसी भी

स्थिवेशन की गफलता का प्रमाण हो सकता है। बुख नाम स्यृति से जार गए ह पर एव नाम है, जिसका इस गूपी में जानवृक्ष कर नहीं दिया गया है। बैस सा ने राजी में भी बहा बनेक व्यक्ति से । कांग्रेस के प्रधान दहनती, मेन्द्रीय गरकार के राज्य-मत्री दिवासरजी, राज-म्यान के तालालीन प्रधान मधी श्री ही राजाल शास्त्री, बादा-नरेश, समाजवादी नेना को जबप्रवासनारायण, सेट गोविग्ददास आदि के नाम बिराय उन्हेम्दनीय हैं, पर जिस नाम नी हम चर्चा बर रने हैं बहु है इस मनियेशन के समापि थी जयवन्द्र विदालगार का । थी जयपन्द्र विद्यालकार भारत के प्रसिद्ध इनिहासकार है। जबतप हम जनने मही मिले थे, केवल उनकी प्रतिशे द्वारा बनसे परिशय प्राप्त निया था. तवतक हमारे मन में उनके प्रति अगाध खडा थां: पर प्रयम मार यनग गिरने पर यह खडा हिमी और इन ४-५ दिनी में तो हमें ऐसा लगा जैसे हमारे सामने भारत मा एक मनस्यी इतिहासकार नहीं है, बहिक कीय और मारीय की भारत प्रतिमा जात्यित है। अपने मावय में, सार्थजनिश अपना गं,ध्टें, मनत नी वार्ता में नहीं भी वे अपने बाक्षीय के प्रवाह की नहीं दीए खरे ।

यह एक दुनान्त घटना थी। हमारे व्यक्तिया वियारों का कोई मृत्य नहीं है, पर पूर्ति को स्मरम रहे बही गंहमरण है, इमलिए हम अपने मनोमाबी बी स्पन्त करने पर थिवश है। उनके सिद्धान्तों को छेकर हम विवाद नहीं करेंगे । चन्हों ने सररार पर जो आक्षेत्र रिए उनने विषय में भी कुछ नहीं कहता है। सरकार गलती बरती है तो उत्तरी आलोचना होनी ही बाहिए। गोपीजो अब गरी है, पर इमना जागय यह नहीं है कि अब उनसे मतभेद नहीं ही सरता। जनतत के बन में मनभेद को प्रकट करना जानजान अधिकार है, पर रूप बरी है जिस महार में और जिल रोगि से यह सब हमा यह रिग्री भी उत्तरशिव्य की बासव गरने मा रे म्परित का गरुपा के जिल् रिकी भी तरह जानतीय मृति है। गांधीकी तो सब जानात रूप है, गरनार मलाहर है। पर जिले भूतपूर्व मनार्पंत्र से जहाने सामे न मा मार सम्मान, बन्हों से सम्मान्यमा बिन ब्रहार पेठ मार् उसने बाद सबी ध्वरिता थी

दुस हुआ । परीक्षाबोर्ड को तकार सबसे अधिक विजय्हावाद हुआ । हैदराबाद-अधिवेशन में कार्पर स्वर्ष के बाद सम्मापन से पराधाबाई का निर्माण श्या था। बहुत है, इसी विमाय म निन्ही छोगां का स्थार्थ था । इसकी सरयता या अगम्यता की अमागित करने के लिए हमारे पास म तो साधन है बोर न स्वान: पर हम इनका अध्यय जानते है कि बोई के पद्मानिया में मर्वथी टरनवी, थीतारायन चतु-वेंदी तथा चन्द्रपता पांटे आदि महानुसाद ये । शहत है.बॉर्ड ने अपना काम यही नगरता और निष्ठा से रिया उसने बार्च सनातन में मलतिया भी हुई, पर ९-१० माह के व पराठ में परीक्षा-वाई जैनी महत्वा के बार्य पर राम नहीं बनाई जा सरती, पर हैदराबाद वा परा-जित दर ता बोई वो भग वस्ते पर तला हआ था। उनके बनियोगों में एवं प्रमुख अभियोग यह या वि बोर्ड के सदस्य अपना लिसी या प्रकारित प्रस्तकें परीक्षाओं में लगा रहे हैं। इस दक्त की और से भी सम्बेलन के कई अधिशास्त्रि। वर यही अभियोग स्माया गया था । यह बटी मजेदार पर राज्यात्रनर स्थिति भी । हमें इससे काई सम्बन्ध नहीं है। पर पत्रशारा की गैसरी में समारति के हीन सामने बैटरर जब हमने उन्हें कार्य-समापन करते देशा ता तम पश्चित रह गए। समापति दक यदा के लोगों की बोहते का ठीक समय नहीं दें। बै वर दुनरे पश बाजे में समय पड़ी देशना मर जाते थे । यहाँ कर नहीं, उन्हें नये-नये प्लाइन्ड बताउँ थे । बह दनमा मध्य प्रसाम या । एवं बराहरण दे। सहा विकित पछ का साथ देने यारे क्यांत दक्ता पक मीविकाद दानों बेस रहे थे । ती। मिन्ह ना समन था। परा हो बारें पर रिमी स्वरित ने समापति का ब्यान ब्राह्मित दिया, पर गमाप्तियो में यस म्यादि को उरेला में लिक्क दिया और धर्मानी की बोल्ने ना वराम्या मनव दिया। यह धमशि रेड पर तब विशी तरह मुख्यादर बाहाने बहा कि यम मां दतने मानी इव ने बोर रहे में कि में पड़ी देशना ही मूर पना। ऐने एक से अधिक उदाहरा दिये जा नकी है। इसके अतिरिका के अपने जिल्लान मादण में शा भई से मंदिर तह सरनार का केंग्ले गहै, पर विशेषी देश के लेंगा

तया अपने पूर्व सभापति श्री चन्द्रवली पाण्डे को कुछ मिनट नहीं दे सके। उनके इस रुख को देख कर विरोधी दल 'वाक आउट' कर गया और तव जो वे चाहते थे वह सर्वसम्मति से पास हो गया। बोर्ड को तोड़नेवाले दल ने किस प्रकार मत संग्रह किया, इसके वारे में अनेक कथाएं सूनने को मिलों। वे लोग कुछ मित्रों को वरवस जनको फीस व मार्ग-व्यय अपने पास से देकर ले गए। स्वयं एक प्रतिष्ठित साहित्यिक ने यह वात हमें वताई थी। यह भी सुनने में आया कि एक सज्जन को विरोधी दल ने झुठा तार देकर घर लीटने को बाध्य किया। ऐसे ही अनेक अनुचित कार्यं वहां देखने और सुनने में आए । इस स्थिति से व्यथित होकर अहिन्दी भाषाभाशी प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने जिस करण भाषा में अपना विरोध प्रकट किया और कहा कि''आप तो लड़ते हैं; पर हानि हमारी होती है, राप्टु-भारती के पूजारी हम क्या करें।"-वह प्रत्येक समझदार व्यक्ति को रुला देने वाली थी। तब ऐसा लगता या कि वे लोग सम्मेलन की मृत्यु पर फातिहा पढ़ रहे हैं। सचमुच वह सम्मेलन का अंत्येण्डि-संस्कार या।

स्वयं वोर्ड भंग करने के पक्षपातियों ने सभापति के उपेक्षा तयां पक्षपात-पूर्ण व्यवहार को अनुचित कहा है। उनके एक मित्र ने, जो स्वयं प्रसिद्ध लेखक और सम्मेलन के एक कर्णधार हैं, उनके आक्रोश और कोष से दुखी होकर हमसे कहा—मला सम्मेलन के मंच से इन वातों के कहने का क्या लाभ ? हमारे एक पत्र-कार मित्र में, जो वैसे एक प्रसिद्ध लेखक हैं, सारी स्थिति को समझकर एक वड़ा सारगिनत वावय कहा था--''इस आदमी (श्री जयचन्द्र विद्यालंकार) ने पच्चीस वर्ष की कमाई तीन दिन में खो दी।" इस एक वानय में कोटा-अधिवेशन की कहानी आ जाती है। एक वन्धु कहते सुने गए कि उनको सभापति बनाना सफल हुआ बीर कम-से-कम निर्वाचन में प्रमुख योग देने वाली पार्टीके लिए तो जयचन्द्र नहीं बने, इतनी नैनिकता का परिचय उन्होंने अवश्य दिया। इन शब्दों का अयं सभी समझ सकते हैं।

परिपदों की कहानी में कोई विशेषता नहीं है। वह एक तमाशा है, जो प्रतिवर्ष होता है। दो घंटे का

का समय, कुछ सम्बन्धित व्यवितयों की उपस्थिति, स्वागत मंत्री तथा सभापति का छपा हुआ भाषण, एक-दो वक्ताओं का लेख पड़ने या भाषण देने का प्रयत्न, कभी-कभी संघर्ष फिर घन्यवाद और उसके पश्चात् समाप्ति । विज्ञान और दर्शन परिपद में तो लोगों ने आने का भी कष्ट नहीं किया था। दर्शन परिपद् सम्मेलन के समाप्त हो जाने पर अगले दिन हुई घी। हां, शेप तीन परिपदों में कुछ जान दिखाई दी। राष्ट्रभाषा परिषद् के सभापति भारत सरकार के राज्यमंत्री श्री दिवाकर थे । इस कारण उपस्थिति संतोपजनक थी । उनका भाषण व्यवहार-कुशलता का प्रमाण था। जो लिखा था उससे वाहर भी वे वोले और सुन्दर बोले। तथ्य की बातें कहीं; लेकिन इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं हुआ। हां, स्वागतमंत्री का भाषण भी प्यारा और सुन्दर या। साहित्य-परिपद् के समापति श्री वेढवजी ने दो नई विचार घाराओं को समझने का और सन्तूलन रखने का प्रयत्न किया। स्यान उनका भारतीय आदर्शनाद की ओर या। सब मिला-कर उनका प्रभाव संतोपप्रद था। समाज-शास्त्र परिपद के सभापति श्री जयप्रकाशनारायण थे। उन्हें अगर परि-पदों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता तो वें कभी भी इस पद को स्वीकार न करते। उनका भाषण भी लिखित था, पर वे बोले मौखिक ही और सुन्दर बोले। यद्यपि वे वव यक गए हैं तो भी उनकी बात जनता ने बांति से सुनी । उन्होंने समाजगास्य को समझाने और उस पर साहित्य निर्माण करने के लिए कुछ ठोस सुझाव रखे। स्वागतमंत्री का भाषण लम्या और विद्वता-पूर्ण था। मीलिचन्द्रजी तो कहीं भी और किसी भी विषय पर बोल सकते हैं। वे तीनों परिपदों में बोले।

कोटा में पत्रकार सम्मेलन भी हुआ, परन्तु पं० वनारसीदासजी चतुर्वेदी के न आ सकते के कारण वह विना दूल्हे की वारात जैसा रह गया। एक दिन रात को सम्मेलन के बाद १२-१ दर्जे तक कुछ पत्रकारों ने उस रहन को पूरा किया। पत्रकारों में दिल्ली के सर्वश्री मुकुटविहारी वर्मा, रामगोपाल विद्यालंकार, कृष्णचंद्र विद्यालंकार, मायवजी, अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार, शम्मूनाष तिवारी, गोपालप्रसाद व्यास, कानपुर के श्री जयदेव गुप्त और त्रिवेदीजी, मेरठ वे' थी। विद्यम्बरसहाय प्रमी, श्री राजेन्द्रशवर भट्ट स्था अन्य बनेव दन्यु ये। गवने स्न भा दिन्दी पत्रकार सम्मेलन को पुनजाबित करने मा निर्णय किया और उनके लिए एक समिति बना दी।

स्तागा समिति गी आह से आगत अभ्यागतो के मनोरजा में लिए लोग मोता कवि सम्मेजन तथा 'पामायनी' ये छापा जमिनय वा प्रबन्ध दाः। वदि-सम्मेला तो नेयल स्पानीय होतर रह गया था। लाह-गीत प्रदर्शन, जिसमें हाडोनी रायायण ने बुछ दुश्य दिलाये गये थे, गुन्दर थे । 'बायामनी' वा छावा समि-मय एक गयल और सुन्दर प्रयक्ता था । एक विजयदर्शनी भी क्षर्र थी । दसरे समोजण महोदय न बढे प्रयश से मये और प्रात कलाकारा के चित्र वहां जुटाये में। शांति निवेतन के आधार्य, राजन्यान के प्रनिद्ध और उपते हुए गणायद, दिली में सब हुए निवशाद सभी को यहाँ देगा आ संयता या ।

राजस्थार सरनार की बार से प्रशासन विमान में भी राजेन्द्रशंकर भट्ट में जिस सोह और सीजन्य से पत्रशारी मा अवला अस्त्रात पर बनाए जानेवाट विद्न बन्तारम बांधी ना दिलाया यह एन तरह से अम्मेलन भी बटता से स्टान देवना की दूर करने यात्रा या। या पिरोध वटा मध्र और त्रिय गा। राजस्यान ने सीन्दर्य, इसकी वरी, पांचल में प्रवाह, पुराहन के अनेक भागवराय मन्दिरा और भवश को देशकर गारी पीका हमी गाद में पश्वित्त हा गई। ये बोध शिश दिन पूर्ण होंगे उप दिए ७०००० गिरोबाट विज्ञानि प्रशास से मानस्थात का की दर्भ जन-मन सर प्रदेशा । सिनाई ने बांध से ३,००,००० एवा स्मि में निवाह का अनुसार है। ये मनी योजनाए अभी

बारम्भिन रूप में हैं, पर बुछ भी हो बोटा-विधिवन मूद जाएगा और धायद वहां भी पर्ना भी दूर हा जाए, पर वहां की प्रकृति और यहां की स्वायत गमिति के सन्दार, मौहार्द और बनेह को हम कभी करी भूरोंगे। के बात उहीं हाणों में, उब हम उनहें सम्पर्द में रहे हम एहा की म यनावापासके थे। सवत उननी हो देर क लिए हा इस अधिवान को बारतविक अधी में नेता कर सदत है। सदे वे उन दाशा में हमन ब्ताग ग्रह शाबा जिनमा हम भी जयकाद विद्यालकार के समाप्रतिस्य में हाने वाले अनेशा मध्याना में नहीं या गर्वेग ।

और यन्त में हम उन अने र वन्य-वान्यवा को की मर, त्रिन्दोने अपनी रामश्ता, विनीय प्रियता और विन्धदिया से सम माहरकी सम्मेयत को मयुर मियत में परिवर्गित कर दिया था। यद्या कुछ छिछोरे साहियान वे बटा भी अनयम ना प्रदर्शा निया. परापु स्वाया समिति के प्रयान थी बुद्धनिष्ट बापना की बादावता. राजन्यान गरनार के प्रशासन बादीगर श्री राजे इतकर महुवे सीजाप विग्र के प्रसिद्ध रेपा या रामवृश बेनीपुरी के निर्मण अहतान, थी अबाहर वाचरे तथा थी बन्दैरायल विश्व प्रभारत है। गरी पर वस्तियवत सम्मति को एम अपने समृतिपट स बर्मा नहीं विशासबंग। बुछ नाम और है, यर वे दाने अपने हैं कि दनकी समृति हम अपने तण ही रतना भारतेंगे, और यद्या एवं बार शिर ग्रभागी की बा नाम लेतर काई भा हमें उस कड़ा। का हरा करने की भागा नहीं दता, तो भी हन जन में दो रथर गणा पार्नेग---वे नही: पर उन्हों विद्वता और सामग्र हमें दिय है। वर्तारा हम स्मृति में समाग्र पार् है। हमें याणा है वै हमें निराण नहीं करेंगे।

[ इस वर्ष ३० जनवरी, १६४१ को स्मामी विवेदानस्ट की वर्ष-गाँउ है।]

श्यमन्त्र मनार को प्रकृत की जारायरता है। यह प्रताय केंबत भारत के पाय है। लेकिन गर प्रसारा आयुन्होने, एए-सारट अब सा स्यांगादि में नहीं है; वि क बार रविस धर्म की को आन्मा है-उमरी महानशात्री भी, सर्वीका आध्वातिमा मन्यको, लिखाओ में है। इसलिए प्रमु ने मानपन्यात्रि मो तमाम उत्ररक्तर के बावजूद आजवन मुक्कान क्या है। जाब कर समय आ क्या है। -- किकार



['जीवन-साहित्य' में समीक्षा के लिए हमारे पास स्वेच्छा-पूर्वक बहुत सी पुस्तकों भेजी जाती हैं। उनमें से चुनी हुई पुस्तकों पर हम स्वतंत्र रूप से अपने विचार प्रकट करने का प्रयत्न करते हैं। जो पुस्तकों छूट जाती हैं, उनके विषय में हमारी लाचारी मानी जानी चाहिए। इस समय हमारे पास निम्न-लिखित पुस्तकों आई हुई हैं। इनमें से कुछ पर हम आगामी अंकों में विस्तार से चर्चा करेंगे। —सम्पादक

- १. दार्शनिक विचार-छे॰राजा वलदेवप्रसाद विरला ही॰ लिट॰-प्रका॰-विरला संस्कृत कालेज, लालघाट वनारस ।
- २. आत्म-चिन्तन—ले॰ मार्कस वारेलियस—अनु॰ चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य—प्रकाशक—हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, मूल्य १), कपड़े की जिल्द २)
- ३. इंसपेक्टरसाहब ले०गोपाल अ० भूपनारायण दीक्षित – प्रकाशक, शर्मन पेपर मार्ट, इटावा मृत्य १।) ।
- ४. स्मृति कण—ले० श्री सीताराम सेक्सरिया, प्रका० अधिनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता, मूल्य १॥)
- ५. संघर्ष और समर्पण (उपन्यास) ले० सन्हैयालाल ओझा एम० ए०, प्रकाशक राजहंस प्रकाशन दिल्ली, मृत्य ५॥।)
- ६. पशु और मानव (उपन्यास)——ले० बाल्डस हक्सले, अनु० रणजीत प्रिन्टर्स एन्ड पिन्लशर्स, चांदनी चौक दिल्ली, मूल्य ३॥)।
- ७. पुखराज(कहानी संग्रह)—ले० हरिश्चन्द्र कैला प्रका०, विद्या मन्दिर लि०, नई दिल्ली, मुख्य ३।)।
- ८. न्याय (कहानी संग्रह)—ले॰ दीपसिंह वङ्गूजर 'दीपक', प्रकाशक, अजमेर कोआपरेटिव प्रिन्टर्स एन्ड पव्लिश्त रिमिटेड, अजमेर। मृत्य १।)
- ९. वंदिक साहित्य—ले० पं० रामगोविन्द, विपाठी-प्रका० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ४)
- १०. मिलन यामिनी (कविता)—ले० श्री वच्चन प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ४)।

११. वन्धनों की रक्षा (लघु कथा)-ले॰ आनन्दमोहन अनस्थी, प्रका॰-लोक चेतना प्रकाशक, जबलपुर, मृ. १)

१२. गांबीजी के जीवन प्रसंग—सं व चन्द्रशंकर शुक्त प्रकार वोरा एन्ड कम्पनी पहिलशसं लि व बम्बई मृत्य ६)

१३. ज्ञान चीसर—प्रकाशक कला निकेतन, चावड़ी बाजार, दिल्ली मृल्य III)

१४. वैज्ञानिक पाक-प्रणाली—प्रकाशक-ग्रामधोग कार्यालय, मुजफ्करपुर। मूल्य।)

१५. नियोजित अर्थ-व्यवस्था का गांधीमार्ग-लेखक जे. सी. बुमारप्पा-प्र. उपरोक्त मृत्य ।=)

१६. हिन्दू समाज की वुनियादी कमजोरो--ले॰ रमाचरण-प्रकार् उपरोक्त, मूल्य १)।

१७. डाक्टर वर्मा के शिवाजी—हे० श्री बुवनारायण सिंह, प्र० सत्यश्रकाणन, नीवस्ता, आगरा।

१८. Writers in Free India—दी पी. ई. एन. आल इंडिया सेंटर, वम्बर्ट ६, मूल्य ६)

१९. केवलज्ञान प्रश्न चूड़ामणि—नेमिचंद जैन ज्योतिपाचार्यं, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी। मूल्य ४)

२०. गांधी-गीता-प्र० राजहंस प्रका. दिल्ली मृ. २)

२१. हर्षचरित (पूर्वार्द्ध) प्रकाशक-संस्कृत भवन कठीतिया, पो. काझा (पुर्णिया) २॥)

२२. लघुसिद्धांत कौमुदी (पूर्वार्ड) हि. व्याख्या छेखक व प्रका. भीमसेनशास्त्री प्रभाकर, गांधीनगर, दिल्ली ४॥)

२३. पालि पाठमाला-छे० भिसुधर्मरक्षित प्रगा॰ महाबोधि सभा, सारनाथ मू० १)

## 'जीवन-साहित्य' की फाइलें

'जीवन-साहित्य' की सन् १९४६, '४८, '४९ और '५० की कुछ फाइलें हमारे स्टाक में शेष है। सिजित्द के लियें ठाक-सर्च सिहत ५) और अजित्द के लिये ४) भेजकर मंगा सकते है। विश्व-शान्ति अंक १॥), जमनालालस्मृति अंक ॥), कांग्रेस-अंक ॥) की भी कुछ प्रतियां प्राप्य हैं। — व्यवस्थापक

# 'पिरेता व केंग्रेश ?

सच्ची श्रद्धांजलि

थात के जाने के बाद सरदार पटेल नवा थी मेहरू ने मिलरर मारत की बायडोर समाल खनी थी, दृइना और प्रनिष्ठा में गाय । अब सरदारथी परे गये और अकेने नेहरूजी पर तारा बोडा क्षा गया। यद्यपि राजाजी जैसे बुगड तथा तपेहुए बुद्धिशाली अनुभवी व्यक्ति ग्रहारा देने वे लिए निस् गर्ये हैं, फिर भी सरदारथी का जाना हम सब भार-सीयों के तिए, सामगर कांग्रेसियों के लिए, महान थाःम-निरीक्षण का अवसर देशा है। मुझे हमारे वृत्तिस्तिति राजपि टम्डनजी का यह ऐतान बहुन आया नि सरदारथी के पाशिक श्राद्ध के अवगर पर हम सब बारम निरीक्षण वरें। शर्वे के नेहरूजी या राजाजी या और विशी पर जिम्मेदारी छोड़कर हम निद्दिन्त नहीं रह सबसे। यह जिल्मेदारी से छूट मामना है। भाजारी मिलने का मनीया हो यह होना चाहिए या हि प्रायेक भारतवासी हुएं व उम्लास से फूल उठता और हमारे राष्ट्रनैता हतारों वर्षनी आयु भोगते । इसके बिगरीत हमने देगा कि आजादी मिलने के बाद से ही बारू भगवान से प्रापंता करने छये थे हि नहीं गनार से वठा के और सरदारथी भी इचर-उघर बहुने छो थे कि मुझे तो बागू के साम हो जाना था, बार रह गया। श्चर जीने में नोई ल्ट्स नहीं। आदि-आदि। इनका वया नारण है ? वभी हमने इत पर बुछ क्षोपा है ? मेरा हृदय तो दमका एक ही उत्तर देता है कि हम अपने महान भेगाओं के योग्य नहीं साबित हुए । अपनी गठनियों को, क्रियों को, क्रमतीरियों को न देलकर हुमने सदैव अपने वहीं को, नेताओं की, कीना है। सच्चे दिल है। उनका साथ नहीं दिया है, उनके हाद मबब्त नहीं क्षित्रे हैं। हमादे मार्बबनिक बीउन में बह बोमारी ही पुन गई है और बहदनहरी जा रही है कि मानी बुराई देमना नहीं और दूसरी के गते पह जाना; भागी विभाग और संसदियों की जिम्मेदारी दुवरी

पर घोप देना। बुराई किसमें नहीं हैं और गल्डी हिसमे नहीं होती? यल श्री दराता और गुपरवानी एक बात है, उसका बहाता तेकर दूसरे को टीप पत्रक्रे घनीटना गिराना, बानाम करना दूसरी यान है। यदि हमें अपना राष्ट्र सबम्ब बनाना है तो अपनी गर्जनियों का पहल देपने की और दूसरे की पृटियों की अपने जीवन के बकात में देखने की बबति हमें सदानी होगी, नहीं तो हम बोरे निन्दन और मिनागन प्रय-तियो दे व्यक्ति बनदर रह आयगे। कोई विधानक रचनात्मर या गुजनामर काम न कर प'येंग। अब हमारे देश के सानने मुख्यन, सुबना मक और रचना-श्मर काम ही बाकी रहा है।

कार्यस दे बन्दर भी छोटे-छोटे बूप वन गये है भौर सनने बारहे हैं। अधिकास तो यह आगामी बुनारों में बाता या बपने सावियों का स्थान गुरशिय इसने-अपनी राजनीतर महारवाशीसाओं की सिद्धि की दिटि और मादना से बने हैं और जबनक इन अविनामा की गिद्धि के लिए हम सामन गृद्धि पर जोर न देंगे, में सनमं का ही कारण बनते परेंगे। अब्दन तो बादेस जैसी एक पार्टी या संगठन में, जो एक आदर्श और नीति को रेन्द्र बनी है, ध्वन्तियों के आपार पर पूप बन्दी एक रोग का हो 'श्राम है. किर भी यह नायु में रहता जा सनता है, यदि हम क्शस्त्रमण, सहयायण या समाद्रमण मणभेशी भीर सगर्धे को गोमे, सरस व भारत तरीकों ने सुरुताने भीर मिटाने के लिए दुइप्रजित हो। श्रीवर्णेष, ग्रन-प्राप, शुट-सन, द्रशाय प्रमुखाय और अना में सुन्हारा है। करके बाम बनाने या निकण्याने की जो प्रवृति और पत्रव रही है, उसे हम मध्य पर नियम्बित में बर महे थी हमें बाबी यावित का हाम ही-हाम होता दिवाई परेता । मा बहुत धरणेहन, निरोत्ता, बिलन, मनन और वदीन के बाद मेरी यह निश्चित नाय हुई है कि कांद्रेस के कर्नवारों का मूक्त प्रमान पर होना चाहिए कि कहीं भी अगुद्ध साधनों को प्रोत्साहन न मिले और जो लोग गृद्ध साधनों के हामी हैं उनके हाथ हर तरह मजबूत किये जांय।

आजादी मिलने के बाद से सरदारशी का मुख्य प्रयत्न देश को संगठित करने, एक सूत्र में पिरो देने का रहा था। इस प्रयत्न में उन्हें बहुतांश में सफलता भी मिली, लेकिन पूर्णतया नहीं। उसे पूरा करने का दायित्व अब हम सब पर आगया है। इस दिशा में हम ईमानदारी के साथ कदम उठावेंगे, मजबूती से चलेंगे, तभी सरदारशी की आत्मा को शांति मिलेगी और वही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हटुंडी, ५. १. '५१

### श्री अरविन्द की देन

श्रीअरविन्द के प्रति मेरा आकर्षण अपने विद्यार्थी जीवन से ही रहा है। १९०५-६ में लाल-वाल-पाल यह त्रिम्ति भारत की राष्ट्रीय देवता जैसी थी, जिसके प्रभाव से शायद ही कोई युवक उन दिनों वचता था। फिर भी श्री अरविन्द उन्हीं दिनों एक स्वतन्त्र नक्षत्र की तरह अपनी विशेषता से चमकते थे। इनकी भूमिका कोरी राजनैतिक या राष्ट्रीय नहीं, उससे गहरी आध्यात्मिक थी, यह उन दिनों भी प्रकट होता था। केवल राजनैतिक अधिकार—स्वतन्त्रता—पा लेने से मनुष्य-जाति का उद्धार नहीं हो सकता, यह वे मानने लगे थ। राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिए भी भौतिक शक्ति को वे अपूर्ण मानने लगे ये और दिव्य या आध्यात्मिक वल पाने के लिए छटपटा रहे थे। उन दिनों जीवन के कई विषयों पर जो मूलगामी विचार उन्होंने प्रकट किये थे उन्हींके आधार पर उनका आगे का जीवन वना है, उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई है। जेल में उन्हें कुछ ऐसे यौगिक या आध्यात्मिक अनुभव हुए-आसपास के तथा सामनेवालों लोगों में उन्हें श्रीकृष्ण (ईश्वर) के दर्गन होने लगे, जिससे उन्हें कहीं एकान्त में जाकर एकाग्र साधना करने की प्रेरणा हुई और वे पांटिचेरी चले गये। लगभग २० वर्ष की एकान्त सावना के वाद उन्होंने २४ नव० १९२६ को घोषित किया कि वे अपनी साधना में सफल हो गये है और अब उन्हें मनुष्य-जाति या मानव को ऊपर उठाने का काम गुरू करना

हैं। उसके वाद से पांडिचेरी में श्री अरिवन्द आश्रम का संगठन होने लगा। उन्होंने तत्कालीन सावकों से यह भी कहा कि अब आगे का काम मैं एकान्तवास द्वारा ही करूंगा, प्रत्यक्ष कार्य श्रीमाताजी के द्वारा सम्पन्न होगा। माताजी एक फ्रेंच मिहला हैं जो उन्होंकी तरह दिच्य जीवन की सावना में उनकी सहयोगिनी रहीं और सिद्धि में भी उनकी समकक्ष मानी जाती हैं। श्रीअरिवन्द के शरीर-पात के बाद तो अब वही उस आश्रम की अधि-एठावी और सावकों का अबलम्बन हैं।

थी अरविन्द की विद्वत्ता, प्रतिभा, राष्ट्रभिवत, साधना सब एक-से-एक बढ़कर थी; किन्तु सबसे अधिक प्रभाव मेरे मन पर उनकी दृढ्निष्ठा और एकाम साघना का है। जीवन और संसार के तमाम व्यामीहों, आग्रहों, खिचावों और वलों के प्रभाव से अपने को दूर रखकर एक मकान, बल्कि एक कमरे में बरसों अपने को रोके रखना इस बीसवीं सदी में मामुली बात नहीं है। फिर उनकी सावना या योग निष्कर्मता की शिक्षा नहीं देता। उनका जोर इस वात पर है कि जीवन की ईव्वर-समपित करके कर्म करो । अपने को ईव्यर के प्रति उत्तरीत्तर खोलते जाओ और तुम ईश्वरी जीवन को प्राप्त करते जाओगे । ईश्वरी जीवन प्राप्त करने के दो मार्ग हैं: एक, व्यक्ति नीचे से ऊपर उठकर ईश्वर की कक्षा में पहुंचे । दूसरे, ऊपर से ईरवर की शक्ति, छपा अनुग्रह या चेतना व्यक्ति पर बरसे। पहली किया का नाम उन्होंने आरोहण व दूसरी का अवरोहण किया है। प्राचीन भारतीय बाचार्यो की भाषा में कहें तो पहली किया को वेदान्ती साधना, दूसरी को तान्त्रिक साधना कह सकते हैं। किन्तु भी अरविन्द ने अपनी साघना और सिद्धि के लिए नये स्वतन्त्र शब्द तथा नाम निर्माण किये हैं। अपनी साधना को उन्होंने 'पूर्ण योग' नाम दिया है और उसकी प्रकिया के उपक्रम में उन्हें 'अति-मानस' नामक एक तत्व उपलब्ध हुआ है। उनका कहना है कि इस समय जगत् में मानव के अन्दर हम जट्, प्राण, मन तीन तत्वों का आविभीव देखते हैं। जड़ से गरीर का ढांचा बना है, प्राण से गरीर में चलन-बलन होता है और मन से प्राण तया शरीर के अनेक व्यापार संचालित होते हैं। किन्तु इन तीनों तत्वों के आधार

या सहयोग से मनुष्य-जानि का नी विकास अवनक हुआ है वर नामी नहीं है। इसन मानव अपूरा शह मान, रह गया है। उसना विनाम बनी हाना है, तथा बह बाज के राग-इथ, बिहार, बण्ह-युक्त जीवन म कव रार पर उठ सबेगा। उमर जिला महत्त्व बादन मुखी सनुष्ट, प्रसम्, नहा हो सरता । विकास कहा आग ब त्रम बा या सन्य बा नाम उत्हार अतिमानमें निया ह। मानव को इस अनिमानस स्तर पर एउँ उना है, बाज की तरह नीर मा न स्तर पर नहीं रहना है। अर्थान मन **की जगह ध**निमन सं उस जीवन के समाय व्यापार सञ्चातिन बरता है। यह अनियानम दैन्यरा या चेतन क्षाय में निवन का है या उनकी कानिका है। यह दायर भी दिश्यना या चरन मलाका हा । बच्ला है । इस स्विति को प्राप्त कर लेते पर मनुष्य सदा ईश्वराधिमून होशर रहेगा। ब्राह्मी स्विति सं इसकी तुल्ला की जा सकता है। इस स्विति में रत्न हुए म्लूब आ नाम नरेगा यह निरंचय ही भाज न राग द्वय युन्त मनुष्य की अपना अधिक गुद्ध, निविकार, निकाद, तजीमय हामा । मानव भी एते और स्तर पर पहुँचाना ही श्री अरथिय अपन भीवत वा एथ्य माति य । एतिन प्रथनक उहीन स्वन् अनिमास अय दा प्राप्त नहा वर लिया त्यनव इस नाय ना पुर पहीं निया था। -४ पत्रवर ना सनका सिद्धिदिवन इसीकी उपपन्धि के सक्ताप्य में मताया जन्ता है।

या अरबिन्द की निधि का इति-शा सही तहा हो जाति । वे यह भी प्रयान कर रहे ये कि सदर्य कर अस्त्र पेतन्य होता में अस्त्र पेतन्य हो जाये । सारा सदीर पानम्य होतक, हुमरे नाता में सदीर अरदामर हाजाय । कर्ड ह यह सावन कार कर रामें सारदा थी कि नरीर उनक कर मा क्रम का माना निकास के उस्ता पान होन्या या बा बा सरिवार न हम नरार का नम्ये बाग में मानवर उस उन्योग मित्र नावद दुवर हिमी नरीर में प्रयान हम निया भी हो।

था अरविष्य र जीवन भीर मरण व ना का छ देग हमारे गिए विष्यारागेव और यहागाव हैं। प्रमुख मारि को ऊँवे रहार पर से जान का प्रयाग करा। निरस्य ही एक को दर्जें का एक्स हैं और जा राण मनाज का नव रर्वता में शिल्यस्पी जी है उनका समय में सान जैखा है। सामकर य छाग ता उन बहुत जानी समझ लो बहिएक समाप का रचना करना चाटा है वयांनि एसा रचना सभी हा सहता है जब माध्य जाति वास्तर कथा हो। श्री अरविद गण्डव या निद्धि का गृह सौगिक आध्यात्मिक, कहकर नित्य औषत से उम दूर समझना और इन प्रामा र इर बाना दिसा प्रकार उचित नहां है । मनुष्य-जीवन निरंद विवासणी प ६। इतिहास इतका सामी है। भौतिक बरा से हमन बहुत बाम जिया है और दिशासरी जिला में बाल बढ़ हैं। तमास मौतिक परितयो क सूर में या आपन चेपन ाबिर मरी हुई है उनका आविद्यार व ग्ना, उस प्राप्त बरता चनगं बाम लना, मानव-आवन का उससे लाभ पर्वेचारा—यह सर थया किया की समझ में च आरता पाहिए ? भौतिक सचित्रसाथ लिए ता जात वसान्यस ब्यवसाध्य उपबर्ण यात्र बादि पाणिए जयशि आर्मिश या चेनन गरिंग प्राप्त बारन व निए बेबल एकाय संप्यना ।

ग पात्रा निस सन्य या ईन्सर पहा बरन ये और जिल्ही प्राप्ति व लिए सहिता छ प्राप्ता म, यहा मा उसस मिल्डी चुल्थी याउ है थी अर बाद का अविमानग तन्त्र । दाना का मुल है रिश्व में स्थित या स्थाप्त र्वत य । दोना चनाक जपानक च । इन तरह है । ला दोता क सन्ति तक दूबर गामित्र नहीं या। अभि व्यक्तिया बाल्य-अल्य भी वन्ति माना येपा रणता है कि महापुरयो न खदा मूला भिन्न नहां हाउ। पश्चिमीत के बतुतार उत्तरी अभिव्यक्ति कुछ अलग बरह बहा बाजा है। इस निश्चापर जारदेशर हम ल्य दूसर संख्य पढते हें कीर गमाव व पाग तथा तान का बारणबना है जबकि गुण्या परचा पर बार दन सहस्य समाध्य में स्पायक्र बर्ग, गाँ एक्सा पैदा बरते हु, वा कि स्मार का बरन गय 🖊 । आरन, थी अरशिक व प्रति बयस बद्धान्त्रति वरि करो हुए क्षात्र हम इस राज का समान व दहम कर रहा मात्रमान बरें। तथा करह हा हम उस महाराष्ट्र की भाग् दत कं सुक्ष कृतिस बनन का द्वार कर गरा है। तमा हर मयबान् क हाः बरमन क मधिरारी हा गकर है। **-₹** ₹ नद भिन्नी, ९१ ५१

## स्वाधीनता-दिवस

२६ जनवरी को हम लोग प्रतिवर्ष स्वाधीनता-दिवस मनाते हैं। यह क्रम लगभग वीस वर्ष से चला आता है, जविक हमारे स्वाचीनता-संग्राम के इतिहास में प्रथम वार, रावी के तट पर, शपथपूर्वक यह प्रतिज्ञा ली गई थी कि हमलोग भारत को आजाद करके ही मानेंगे। वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। विदेशी सत्ता यहां से हट गई और हमारे शासन की वागडोर हमारे हाथ में आ गई। इसी शुभ तिथि को आज से एक वर्ष पूर्व भारत को 'सम्पूर्ण प्रभृत्व सम्पन्न गणतंत्र राज्य' घोपित किया गया था। निस्सन्देह यह दिन हम सब के लिए एक महान राष्ट्रीय पर्व है। लेकिन खुशी मनाने और गीरव अनुभव करने के साथ-साथ यह दिन हमें हमारे कर्तव्य का भी बोध कराता है। भारत विदेशी सत्ता के वंधन से मुक्त हुआ अवश्य; लेकिन सच्ची बाजादी बभी हमसे कोसों दूर है। आज देश में कैसी विपम परिस्थिति का हम लोगों, को सामना करना पड़ रहा है, कैसी-कैसी कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ रहा है, उस सबकी याद करके दिल दहल उठता है। अन्न-संकट हमारे सिर पर खड़ा है, हजारों लोग खानाबदोशों का-सा जीवन विता रहे हैं, काश्मीर का मामला अभी तक लटका हुआ है, ये तथा और बहुत से ऐसे मसले हैं जिन्होंने हमारी आजादी का मजा किरकिरा कर दिया है। जवतक देश का एक भी अदिमी भूखा-नंगा या विना घर के रहता है तवतक यह नहीं कहा जा सकता कि हमें वास्तविक अर्थ में आजादी मिल गई है। २६ जनवरी जहां ग्लामी के अध्याय की समाप्ति की मूचक है। वहां वह देश के नवनिर्माण के कर्त्तव्य की बोधक भी है। गुलामी के दुलरिणाम हम देख चुके हैं और अब हमारा हित इसीनें हैं कि हम अपने प्रयत्न से देश को इतना सशकत और संगठित बना दें कि कोई भी उसकी जड़को न हिलासके। यदि ऐसान हुआ तो हमारी कमजोरियां हमें खा जायंगी। इस कटू सत्य को बैसे तो हम हमेशा ही याद रक्खें, लेकिन २६ जनवरी को खाजादी के' उल्लासयुक्त स्मरण के साथ तो अवस्य ही । नई दिल्ली, १०-१-५०

### तीस जनवरी !

३० जनवरी भारत के ही नहीं, सारे संसार के इतिहास में एक चिरस्मरणीय तिथि वन गई है। इसी विधिनिर्मित तिथि को, आज से तीन वर्ष पूर्व, विश्व की महानतम विभूति का हमसे विछोह हुआ था-उस विभूति का, जिसके विषय में आइंसटीन ने लिखा था कि आगे आने वाली पीढ़ियां मुस्किल से विद्वास करेंगी कि इस घरती पर कभी हाड़-मांस का ऐसा पुतला चला था। समूची मानवता की सेवा के लिए इस महापुरुप ने अपनी जीवन-साधना का क्षण-क्षण व्यतीत किया और अवसर आने पर इसी महान उद्देश के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध की सभी प्रवृत्तियां इस युग-पुरुष के प्रभाव मे व्याप्त रही हैं और एक समय हमने वह देखा है जब इस विञ्चवंद्य पुरुप के कण्ठ से स्वर निकलते ही करोड़ों के स्वर उसमें मिल गये थे, जिथर उसके पग उठे थे, उबर ही अगणित लोग चल पड़े थे।

जिस वेमिसाल तरीके पर गांधीजी ने भारत को आजादी दिलवाई, उसके लिए देश के कोटि-कांटि जन उन्हें याद रक्खेंगे; लेकिन समूची मानवता को उन्होंने जीवन की जो नई दिशा सुझाई, उसके लिए सारी दुनिया उन्हें चिरकाल तक याद करेगी।

आज हममें से अधिकांग गांधीजी के बताये मागं से विचलित हो गये हैं। हमारा मुंह दूसरी और हो गया है। स्पण्टतः इसका कारण यह है कि गांधीजी ने जो रास्ता बताया था वह कठोर सायना का रास्ता था, और कठोर साधना का जीवन बहुत दूर तक बिरले ही चला पाते हैं। मानव कमजोरियों का पुंज हैं और सहज ही प्रलोभनों के चक्कर में आ जाता है। यहां बजह है कि गांधीजी के आंख ओझल होते ही लोग अपनी निष्ठा और साधना पर दृह नहीं रह सके।

३० जनवरी को हम बापू और उनकी दीर्घकालीन सेवाओं को अपनी श्रद्धांजिल अपित करते हैं। लेकिन हमारा यह कार्य बहुत कुछ एक रुढ़ि का रूप घारण करता जा रहा है। बापू का सच्चा स्मरण, सच्ची श्रद्धांजिल उनका नाम लेना नहीं, उनका काम करना है। स्वतन्त्र भारत में 'रामराज्य' स्वापित करने की सापूर्व कराना की थी। इसी करपना का मनं मप देने में लिए वे १२५ वर्ष जीवित रहना चारन थै। देशिन मगदान को बहु मञ्दरन था। बापूता अपना नाम नर गए--अपना नाम ही नहीं, माधारण ध्यक्ति जिल्ला कर सकता है उसते मोयुना अधिक रेबिन किर भी उनगा 'रामराज्य का स्वय्न पूरा हाना है। उद्ये प्रतापरना, न करना हम लागो पर निमंद है। भाज हमारे चारो बोर अधशार-ही-अधकार दिगाई दैता है, परन्तु हिम्मत हारने या निराध हाने न बाम नहीं बरेगी। ३० जनवरी का हम आग्म निरोक्षण ना दिन मानें। अपनी बमजारिया ना देशें और उहें दूर वरने का प्रवस्त करें। अपनी निष्ठाका संबद्ध रग पर हम समस्टि के हित में अपना हिन मानकर

विना उसके कल्याण भी नहीं है । ३० जनवरी ना 'सर्वोदय दिवश' नहा गया है, जो ठीर ही है। गांधीओं ने लिए समना उदय अमीष्ट या, और सम्मी आजादी का मतत्व भी वही हारा चाहिए। जबतन गरीव-अभीर, पासर पासित, शीपन पाधित, श्रीर अपनीय मादिशा भेद-माव रहना तत्रनव 'रामराज्य' की कथना साहार रूप धारण नहीं बर सरेगी और बापू नी आस्ता ध्यमित रहेगी।

-40

भारें तो अपनार के दूर हाते देर म लगगी। आज की

परिस्पिति में यह सब गौरीशकर की भोटी पर चढ़ने

वे समान बठिन जरूर लाना है, पर स्मरण रहे वि

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कियर ?

मई दिन्छी, ११-१-५१

सदा की मानि इस बार भी सम्मेलन का वादिक मिपरेशन द्वा और समान्त होनवा। बोई निर्धेष माजना वसरे देश के सामने नहीं रखी। हिन्दी के राष्ट्र-भाषा कर जाते के कार देश अवने मार्ग-प्रदर्भन की बारा **पर रहा या। इसके विषयीत उसे मिला आत्रीय और** भीषा मध्येला मरकार की संजय रेगे, या बता ती सम्प्रामे आउँ हैं, पर वह स्वय दल्व दी या दिर निरियमा का विकार क्ला रहे, यह निराम अनुक्ति है। अभी समय है हि सम्मेटा के क्लाबार युग की रियति और उग्रही मांग को श्रमते बीर माना की प्रमृति तथा साहित्य-निर्माण की बाद क्षा क्षाप

उठावें। अच्छे कामों थे लिए कभी देर नहीं हाती। वा मूछ बाटा-अधिवेशन में हवा बर सम्मन्त की साब रशने बाला नरी है। उनसे विराधियों हो यह विराहा। सबस पहिला नाम जो गम्मेलन के सामन है बहु है कोय-निमीण का । सरकार का मुद्र दर्भ विना वह विद्वाना का देशर पारिभाविक शहा की और ध्यान देतो वह एक ठाम मेवा हाई।। इस बार्य के सिए उने वामा का अचिन बहबारा कर लगा पाहिए। जिस परीक्षा योज को एकर सम्मेलन में दण्यादी की दृष्टिन बाब दब बोट रही है, उसरा अलग रहता ही थेवररर है। इसी प्रकार साहिय विमाण का काम एक दूसरे विभाग का गाँपा जा गणना है। तीनरा स्मिम साहि-त्यिको के दिला की देलभार वर गकता है। सम्मेरन नाम वे अनुषय अपनव साहित्य का काई हिन माधन मही। बर सहा है। बह गरने है हि बण गर वर गान्नामा को समन्या मुरुपने में रुगा हजा था, पर श्राव हो यह समस्यात्राय गरूप मुद्दी है। इमलिए अत्र गरमला की

हवाब, बैन भारतीय सब में साम्य है। यह कीई विश्या रुपरेखा नहीं है, माप दिया गुगाने श्री थाप है। करना इतना ही है सि सम्बेजन की धर गम्भीत्या से सार्व क्ये शिवाच का समझ स पाहिए। य लियो दने से रिमी की वरित नहीं, हानशा ही प्रकट होती है। नई दिन्दी, ११-१-५१, -- 170 E0

साहि य और साहि यहारा या आर ध्यान दना चाहिए।

य क्मिरा सम्मान ने ही अब हुय, पर होते सई-

टहरवापा भी गये !

बार रात (१९ जन ) वरे ८-२० पर धवर रकापा का देहान हो गया। बारा बंसे बुछ दिशे में बीमार में, रिट भी किमी को भी करतता ने भी कि यह महरवाण कानी जन्दी पते जायाँ । टरकरवाला का समया जीवा स्थाप श्रीर रूपम्या का भी दन पा। जिने तमारे देग में दीन और दिन्त की मात्रस सामानी कृष्य ने देगा नाज था. बात ने टासि येश शाबीश उग्रश और बीवर के बन्धि शहर हरू उत्तरे हिंगू रामें करा रहे। जरों से भी देशकी दुशर बार्स, बारा मा मोतूर। उन्दरमृत्ये भाग्य वा एक शहार नेपक पढ ह्या। दीन्तदेव बालाको स्मीपती हमारी प्रदायि । -- पर

# धर्मद्रत

का

#### आगागी विशेपांक

वृद्ध-जयन्ती के शुभावसर पर 'धर्मदूत' का एक महत्वपूर्ण विशेपांक आगामी अप्रेल मास में प्रकाशित होगा। इसमें कला, इतिहास, धर्म, दर्शन और पुरातत्व-सम्वन्धी गवेपणपूर्ण अधिकारी विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे।

#### इस विशेपांक में पढिये

वौद्ध संस्कृति की अमर कहानियां, वौद्ध विभूतियों के निर्मल जीवन-चरित, वौद्ध दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, भारत के उत्थान के साधन, भगवान बुद्ध के अमर सन्देशी

वार्षिक शुल्क के ३) भेजकर तत्काल ग्राहक वन जाइये।

**ट्यवस्थापक** 

'धर्मदूत", सारनाथ (वनारस)

# भारतीय ज्ञानपीठ काशी के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

शेरो-शायरी—श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय मृ० ८)
 (उर्व के सर्वोत्तम १५०० शेर और १६० नज्म)

२. मुक्तिदृत—( एक पौराणिक रोमांस ) मृल्य ५) श्री वीरेन्द्रकुमार एम. ए. ( ग्राञ्जना पवनञ्जय की पुण्य-गाथा )

 पथ-चिह्न—[संस्मरण] श्री शांतिप्रिय द्विवेदी मृ०२)
 (स्वर्गीया विहन के पिवत्र संस्मरण ग्रांर सुग-विश्लेपण)

थ. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां— डा॰ जगदीशचन्द्र एम. ए. (चीसट लीकिक, धार्मिक ग्रार ऐतिहासिक कहा-नियों का संग्रह । व्याख्यान तथा प्रवचनों में उदा-हरण देने योग्य । )

प्र. जैन शासन—(जैन धर्म का परिचय करानेवाली मृत्य ४।-)

इ. कुन्दकुन्दाचार्य के तीन रतन— मृल्य २)[ एक ग्राघ्यात्मिक निधि ]

७. हिन्दी बीन साहित्य का संचिप्त इतिहास—
 श्री कामताप्रसाद बैन मृल्य २॥।=)

[ शेप प्रकाशनों के लिए सृचीपत्र मंगाइये ]

ज्ञानोद्य [ अमण संस्कृति का अग्रद्त मासिक ]

वार्षिक मृल्य ६)

एक प्रति ॥=)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुगड रोड, वनारस सिटी

राष्ट्रभाषा दिन्दी का सचित्र सांस्कृतिक मासिक पत्र

#### विकम

(संपादक तथा संचालक-पूर्यनारायण ज्याम)

हिन्दी का चाँभेड मानिक 'जिनम' ही है, जिनहा शता महारावाओं से लेकर देशके गर्यवायास्य समाज सक समान रूप से प्रवेश है ।

'जिसम' ये आरंभिन' १६ पृथ में महीने भर वी महरकृष्णं परनाओं वर निविधवापूर्ण, मीजिन, छत्तृष्ट क्रीर निर्मी के एवं रास्थ प्रिचार समीनेत वहते हैं। सभी दिहानों से हिन्दी का 'मार्टने रिस्टू' नह बर इतनी प्रयोग की है।

रारणाहित्य, विज्यदात्य, चुनीकुई बहिता चौर कहानी यर दिवार प्रेटेस वंबाहन यहं नमत मागिक गाहित्य का मुन्दर परिचय किसने की बहानी कियाना है। अर्थ का समाज समाज कार्य के से को स्थान करणा करते विज्यों कार्य करते हैं की

यदि खार घरान मादन नहीं है तो चालिन माइन वन आहने, मित्रों ना बनाहने चीर परिवार के जान-वर्षन में लिए 'शिनम' को चाइन होतार बीजिये। वार्षित मूत्रन ६) ६०, एक प्रीर ॥०), नमूना पुत्रन नहीं।

कियोग आनकारी के लिये लिखियों:

व्यवस्थापक-विक्रम कार्यालय, उज्जीन (मालगा)

द्सरे वर्ष में

मार ती

गुबने स्वामन हिया !

गत पर्य १४) २० पार्षिक मूल्य था। यक प्रति वा १) २०-द्यय १६४९ जनवरी से यक्तम कम, ६) २० पार्षिक मनादर प्रवेच-गतार व

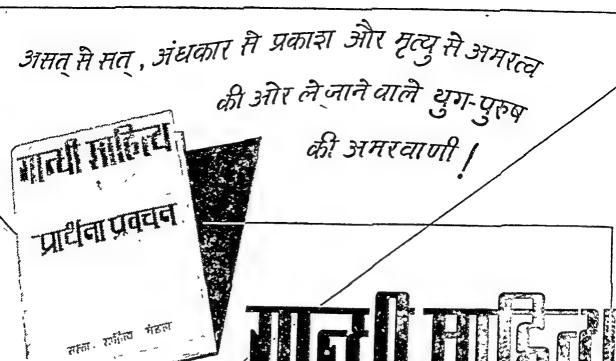
: ह्योंत्रेश शर्मा : : वि. मा. बुलवर्गी : : झॉन इविडया स्पिटर, नि., नागुर-१ :

'मारती' समस्त प्रास्तीय (अलप्रतिवीय) साहित्य, बचा और समृति वा प्रति-निपित्य करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रयोग्धिन विन्तनन्त्रधान मविष मागिक पत्रिका है।

भारत के राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्रमगदत्री ने, प्रान्तों के नाम्यपालों ने, मृत्य-सूम्य मित्रयों ने और हिन्दी के लग्नप्रतिष्ठ माहित्यकारों ने इस मागित पित्रका के प्रकासत की मुक्तकठ से सराहता की है। सर्वधी जैनेन्द्र, बनारमीदाम बनुवेंदी, उदयाकर सट्ट, रामवृक्ष बेनीपुरी, धीराम दार्मा, कन्ह्रैयानग्रह मृत्यी, साहेकर, क्व० साने गुरुबी, मागननात

षतुर्वेदी, अदेर आनद बीग चायन आदि ने 'भारती' वा स्वागर विया है। 'भारती' वर प्रत्येर अंव अनूठा, पठनीय और दर्शनीय है। १९५० वो २६ जनवरी से इतवा नियमित प्रवासन सुरू हुआ। प्रतिमान नगमय १०० पुष्ट।

्रा प्रभाव स्थापन करावा के प्रभाव के कार्य के क कार्य के मार्थ के कार्य भारित कार्य के विकास कार्य कार्य कार्य के किया के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य



'सस्ता साहित्य मंडल' ने इस प्रन्यमाला के प्रकाशन का विशेष आयोजन किया है। इसके अन्तर्गत राष्ट्रियता महास्त्रा गांधी का संपूर्ण साहित्य हिन्दी में लगभग पच्चीस जिल्दों में प्रकाशित होगा। हिन्दी में इतना यदिया, प्रामाणिक और मस्ता साहित्य आज तक किसीने भी प्रकाशित नहीं किया। सभी भाग पठाय, मननीय और संब्रहणीय है।

#### सम्मतियां :--

ध्याचार्य विनोवा। "पुस्तक अल्पमोटी और दृहुगुणी है।"

राष्ट्रपति हा॰ राजेन्द्रप्रसाद । " (मंडल का यह) प्रशंतनीय सार क्षावश्यक संगत्य है।"

प्रकाशित पस्तर्के

- (१) प्रार्थना-प्रवचन-१-३) (२) प्रायना प्रवचन-२ २॥)
- (३) गीना-माना ४) (४) पंद्रह अगन्त मं बाद २)
- (५) धर्मनीति २) (६) द०अफीका का गरवाहर आ
- (७) मेरे ननकालीन (प्रेस में) (८) प्रार्थना-प्रवचन-६ (प्रेस मे)

परी योजना तथा अन्य पुस्तकों के लिए मण्डल का बड़ा स्चीपत्र मंगाकर देखने की कृपा करें।

सस्ता साहित्य मंडल , नई दिल्ली

श्रद्धांजलि-श्रंक अहिंसक नवरचना का मासिक

### श्रद्धांजिल श्रंक

## वार्षिक मूल्य ४) ] जिल्लि - शिल्टि [ एक प्रति का ॥)

### लेख-सूची

		,	
₹.	सरदार पटेल	महात्मा गांची 🔑 🦳	
₹.	अन्तिम श्रद्धांजिल	नेताओं के उद्गार	
₹.	सरदार की खरी बातें .	सरदार वल्लभभाई पटेल ुर्धा	
٧,	भारत का सरदार	हरिभाक उपाष्याय	
ч.	विनोदी सरदार	श्री विष्णु प्रभाकर	
ξ,	"दयामय, मंगल-मंदिर खोलो"	श्री वियोगीहरि	٤,
<b>v</b> .	योगिराज को श्रद्धांजलि	नेताओं के उद्गार	۶
۷.	अरविन्द-वाणी	श्री अरविन्द ''	१
९.	सूर्यास्त !	हरिमाज उपाध्याय	१
٥.	श्री अरविन्द का महाप्रयाण	डा॰ इंद्रसेन ् <sup>V<sup>1</sup></sup>	१
१.	ठक्करवापा को श्रद्धांजलि	नेताओं के उद्गार 🕧 💛	ঽ
₹.	दोनवन्धु ठक्करवापा	यशपाल जैन	२
₹.	हिन्दी साहित्य सम्मेलन फोटा-अधिवशन	विशेष प्रतिनिधि	्२
۲.	कसौटी पर	समीक्षा	ં ર
ч.	क्याव फैसे?	सम्पादकीय	ą
	*		

### मण्डल की दो नवीनतम पुस्तकें

### भागवत-धर्म

अयवा

#### जीवन की कृतार्थता

भागवत में ज्ञान, इतिहास, काव्य और कल्पना सबका मिश्रण है। सर्वजन-मुलभ और लोकोपयोगी बनाने की दृष्टि से भी भागवतकार ने अन्य पुराणों के जैगा रूप इसे दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में भागवत के ११ वें स्कन्य का अनुवाद एवं टीका व्यक्ति व समाज की उन्नति की दृष्टि से की गई है। पुस्तक क्या है, ज्ञान का भण्डार है।

अनु०-श्री हरिभाऊ उपाध्याय ] [पृट्ठ ४००

मृ≂य

वजिल्द ५॥) : सजिल्द ६॥)

### सर्वोदय-तत्त्व-दर्शन

्यास्या है और अहिंसा की परम्परा, सर्वोदय के आध्यात्मिक तथा नैतिक सिद्धान्तों और मनोवैज्ञानिक मान्यताओं का वर्णन है। इसमें जीवन-मार्ग तथा कि ति साधन के रूप में अहिंसा की प्रतिष्ठा और अहिंसक राज्य-व्यवस्था का विवेचन है। प्रामाणिक सामग्री के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने लिगी गई यह पुरतक अपने लंग का पहला प्रकाशन है। लेल—टा० गोपीनाय धावन] [पृष्ठ ४२५ मृत्य: सजिहद ७)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

#### पाठकों से निवेदन

त्रिय वधु,

सप्रेम वदे। पिछले वन में अपनी मूचना ने अपुतार हम लाग बनवरी-अन मो 'प्राप्तिक विक्तिमा' विशेषांक के रूप में ही अक्षाधित करना चाहते था, लेकिन इधर शीत महापुरपा ना निषा हो जाने के नारण हमें यह अब श्रद्धांत्रक्ति के रूप में निकालने के इ सह मत्तीमा का पालन करना पढा है। यागिशात अरबिन्द, सरदार बन्लममाई पटल और दानवय टररास्मापा सीना नी हो अपने-अपने शव में हमारे दश के लिए महाबपूर्ण दर रही है। 'बीवन-साहित्य'-परिवार की बार म हम तीनो दिवनत आत्माओं का अपनी श्रद्धांबाड सर्गित करते है :

'प्रार्शिक विकित्ता' वक वब वार्च में प्रकाशित होता । उनके लिए हमें बहुत मुदर और उपयोगी सामग्री प्राप्त हो रही है । वेन्द्रीय गरवार के गृह मंत्री थी चत्रवर्ती राजगापाणायायं, दा० कुलरजन मृत्यंत्री, दा० तुराद्वप्रनाद ग्य, दा० कृथ्य वर्मा, प्रा० रामचरण महेन्द्र, दाव में सक्ष्मण गर्मा, दाव जदाराबार नदा, दाव भागवन, दाव राज सादि-आदि अनेन स्यातिप्राप्त विद्वानों एवं सुप्रसिद्ध प्राकृतिक विकरशका की रचनाएँ प्राप्त होगई है। बहुतों ने लिसा है कि भेज रहे हैं। इनके अभिरिक्त महारमा गांधी, सई कुन, एको न जस्ट आदि की रचनाए भी इस अंक में रहेंगी। निस्सदेह विश्ववाक अपन देग की एर ही भीज हागी। पाठको की उसके लिए एक मठीना अधिक अनीशा करती हागी, दगका रमें सेंद है।

जिन पुराने बाहुका का नवे लाल के लिए बदा आप्त होतवा है या जो इस महीने से नये बाहर बने हैं, उन्हीं सेना में हमने अपने निरुष्य के अनुसार 'राया-दायरी' भेंड-वरूप भैतना आरम कर दिया है। जिन अपना ने सभी तक वदान भेजा ही वे वे) तकाल भे ब देने की क्या करें. जिससे एक अमस्य छाडार में ये क्यिन न रहें। 'हायरी' की गुण्यरता भीर उपयोगिना ने विषय में मूछ बहना हमारे लिए आबरयक नहीं है। हम दतना ही बहना चाहते हैं कि इस उपहार की बाद हमेगा अपने वास सहेब कर रखेंप । शामरी जारबरायर बार बाम बाय दिवट लगाकर भेजी जा रही है, जिससे सुरक्षित पहुँच आया। बैरग नहीं के हो छहा रिन की क्या करें। जो छोन बुलाई से बाहर है, वे भान याँ का चादा सभी भेज कर लांधी शावधी का उत्हार शाला कर सकते हैं।

बित बंपबो का यहा हमें प्राप्त नहीं हवा है, उनकी गवामें 'प्राकृतिक विक्रिणा' **ब्रह की करों के दूरार चोदा, जाएगार ६ व्हराया यह होगा कि रायरे महीवार्धर के घोट दिये जा**य है

क्यामधी

य राया य प्रेश

उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा विदार भानीय सरकारी द्वारा रहनीं, कालेजों य लाहमेरियों तथा उत्तर प्रदेश की प्राप्त पंचायतों के लिए स्नीटन

### जी व न - सा हि त्य

यर्प १२ ::

जनवरी १९५१

क्षंक



अहिंगर नवरचना वा मासिक

O

#### सरदार पटेल

महारमा पश्चि

जिस सरदार के सेनापतिस्य में आपने इस प्रतिज्ञा का सुन्दर पालन विमा उत्तीये सेनापतिस्य में आप यह भी वर्षे। ऐसा स्वार्थ-स्थापी सरदार आपको और नहीं निलेगा। यह मेरे समें भाई के समान है। किर भी इतना प्रमायन्यत्र उन्हें देने हुए मुझे जरा भी सकोच नहीं होता।

बल्लमभई जैसे नाम ने पटेल हैं, बैसे ही उननी सारा नी हैं। बारहोती को विजय प्राप्त क्रम उन्होंने अपनी सारा की नामम स्वता । (क्रमणे बारहोत्री, कुछ ४२६)

सरदार वालमभाद पटेल के साथ रहता मेरे लिए एक वह सीभाव की बात थी। में उनकी बेमिसाल बहादुरी से मली माति परिचित था। लेकिन विद्यत्त हैं क्ष्मिती में उनके साथ रहते का जेमा गौमाम्य मिला बैना पहुरे कभी नहीं मिला। अवने जिम प्रेम की उन्होंने मूस पर वर्षा की, उससे मूसे अवनी क्लेंट्सपी या का स्मरण हो आया। में दस बात को कराति नहीं जानता था कि उनमें मों के जैसे मुख हैं। बारदीली और गोडा के किमानों के लिए उनकी जिल्मी सायधानता और उत्तरका रही, उसे में कभी नहीं मूल मनता। ('सरसार क्टेन'ते)

सरदार सीपी बार बोलने बारे हैं। वे बोर्ड हैं हो बहरी रफ्ती हैं। वह सरदार की जोम में हैं। मेरे उनसे कहा कि आदरी जीम से कोई बार निकड़ी कि कोडा होगई। तो उनकी जोम ही ऐसी है, दिए बेगा मही हैं। उसदा में फबाह हूं। (१३ वनकी १९४८)

### श्रंतिम श्रद्धाञ्जलि

"सरदार पटेल की पार्थिव देह चली गई है; किन्तु उन्होंने देश की जो सेवाएं की हैं, उनके रूप में वे सदैव अमर रहेंगे।" —(राष्ट्रपित) राजेन्द्रप्रसाद

"हम सब तथा सारा देश जानता है कि यह एक बड़ी कथा है। इतिहास उसे अपने अगणित पृथ्ठों पर अंकित करेगा और उन्हें नवभारत के निर्माता और संगठन-कर्ता के नाम से पुकारेगा।" —जबाहरलाल नेहरू

"असली वल्लभभाइ आज हमसे विछुड़ गये हैं।... परन्तु वह महान स्फूर्ति, साहस और आत्मशक्ति के अवतार थे। हम यह न सोचें कि वे नहीं रहे। हमारे परिचित वल्लभभाई के चले जाने पर भी सच्चे वल्लभभाई सदा जीवित रहेंगे।" —च० राजगोपालाचार्य

"सरदार पटेल की मृत्यु का समाचार सुन कर मुझे वड़ा दु:ख हुआ और गहरा धक्का लगा। कुछ वर्ष पूर्व जब में केवीनट मिशन के साथ भारत गया था तो में उनके दृढ़ चरित्र, ईमानदारी तथा देशभिनत से वड़ा प्रभावित हुआ था।" — (लार्ड) पेयिक लारेंस

"गुजरात का सिंह और भारत का सरदार अव नहीं रहा ।...वे महात्माजी के दाहिने हाथ थे।" — अनन्तशयनम आयंगर

"एक शानदार जिन्दगी की दास्तान ख़त्म हो गई। जिस दुनिया में हम चलते-िफरते हैं, उसमें वह दास्तान ख़त्म हो गई है, मगर दिमागों और दिलों की दुनिया में वह दास्तान हमेशा जिन्दा रहेगी और याद की जायगी।" —(मौलाना) अबुलकलाम आज़ाद

"एक सच्चा क्षत्री हमारे वीच से उठ गया। भारत का एक ऐसा सेनानी, जो अपने इरादे, साहस और संगठन-क्षमता के लिये प्रसिद्ध था, हमारे वीच नहीं रहा।" —रंगनाय रामचन्द्र वियाकर

"वे एक महान संगठनकर्ता तथा कभी न झुकने वाले योद्धा थे।''...मेरे लिये यह एक राष्ट्रीय ही नहीं, विलक व्यक्तिगत हानि भी है।'' —(आचार्य) कृपलानी

"वे पुरुपों में सिंह थे। वे वज्र के समान कठोर, साथ ही फूल के समान कोमल थे।" — एन० बी० गाटगिल

"मैं तो विविध विचारों के व्यक्तियों को आकर्षित करने तथा प्यार की रेशम-डोरियों से उन्हें बांध रखने के मानवीय गुणों के कारण उनकी सराहना करूंगा।" —श्रीप्रकाश

"मैंने उन्हें परीक्षा के अन्वकारमय तथा विजय के आशामय अवसरों पर देखा है। वे न अन्यकार में विचितित हुए और न आशा उनका गांभीर्य नष्ट करने में सफल हुई।'' —आसफ्अलो

''सरदार पटेल की मृत्यु एक राष्ट्रीय विपत्ति है ।'' — माध्य श्रीहरि अणे

"वे नवभारत के निर्माताओं में से एक थे। उनकी मृत्यु से भारत का एक पुत्र स्रो गया।" —िल्पाकतअली सां

#### सरदार की खरी वातें

"हम ऐमा स्वराज्य चाहते हैं, जिसमें सैन डॉ आदमी मुनी रोश के अवाद में बरने न हो; जिसमें पशीना बहा कर पैदा किया हुआ बनाज किमानो के बच्चो के मह में से धीनगर विदेश न भेज दिया जाता हो: जिसमें लाया को बपडे के निए पराये देश पर आधार न चयना पहना हो; जिसमें जनना की इञ्जत की रक्षा या प्रमा सदना विदेशियों की मर्जी पर न हो। जिसमें स्वराज्य की घारानमा का अध्यक्त विदेशी 'विन' या षीमा ग पहनता हो, श्रीर जिसमें स्वदेशी (वाधी) दोनी पहनने पर गौररी छटने वा दर न हो। स्वराज्य में स्वदेशी नगडा पहनना ही अनुजा का स्वामाविक पर्म भागा जायगा। हमारे स्वराज्य में बोडे-से विदे-शियों की मुनिया के लिए विदेशी भाषा में राजकान नहीं होगा। हमारे विचार और शिक्षा का बाध्यम विदेशी मापा नहीं होगी। हमारे विदालकों के आचार्य विदेशी मही होंगे। राज्य का बायबाज जमीन और भागमान के भीष पश्चीतल है। मात हजार कट ऊचे से महीं होगा। स्वराज्य में ऐसी हालत नहीं होगी कि महान देशभानी भी स्वतान्त्रता तो मले ही सनरे में हो. परन्त रात्रवियों की माजादी की एका करने के लिए साम निना रंगी जाय । हमारे स्वराज्य में यह महीं होगा कि घर में पैदा होने वाली यहए जैंगे साने है भाग बाने वासी चीड वर निवंत्रण रना दाय और मरकार उस महार की गराव बनावद सनका स्थापार करती हो। इतना ही नहीं; वन्ति लायी दाने की हिट्रही की पाराब विदेश में माजादी के साथ नहीं आ सरेची । स्वराध्य में देश की रक्षा के लिए इतना की वी नर्भ नहीं होगा कि देश को दिखी उनकर दियाश निशासने की मीवन बाये । स्वराज्य में हमारी कीव भारे की टटट नहीं होगी। उनका खाबीय हमें गुलाम बनाने और हुमरी जातियों की स्वयन्त्रता मध्य करने में नहीं होता। बढ़ें बदनरों और छोटे नीहरी के बेरन में बारास पातात का मन्तर नहीं होना । इनाक भारता महता और समयम अध्यय-छ। नहीं होता।

कोर इन मबसे विशेष बात तो गह होगी कि जब हमारा स्वराज्य होगा तब हम अपने देता में और विदेशों में भी जहाँ-तहां दुववारे नहीं जायेंगे।" (१~६~१९२१)

"जिस दिन सरकारी दश्तर में किसान इरवर और बावरू वान्य माना वायगा. उमी दिन उमुदी तक्दीर परटेगी। साथ तो गरकार जगल में पमने-वाले पायल हायो की तरह मदान्यस हो गई हैं. जो अपनी चपेट में आने वाले हर दिनी की कुपल दालना है। पायत हायी सर में यह सानता है कि जब भैने गर-चीतो की बारा है ता मेरे नामने मक्छर की क्या गिननी है में सच्छर को समझाता ह कि इस हाया को जितना वाही यूमने दे और बाद में भीका देसकर उपके कान में बुग्र ना ! इतनी गरिन बाला हायी भी बान में धुग जाने पर तक्ष्य-भव्यक्र संह पछाडवार अमीन पर लोटने समना है। मध्यर बाद है, इमिलिए उसे हाथी से हरना ही चाहिए. एंसी बान नहीं है । बिटटी के बढ़े घट में असरय शीवरियां बन हो है, किर भी उनमें ने एक ही टीकरी मिट्टी के सारे पढ़े को फोड़ने ने जिए काफी होती है। पड़े से टीवरी विमन्ति हरे ? बहु पहुँ को अपने भेंगी दीक-श्यिवना सकती है। पूरने का दर किसी की रखना चाहिए हो उम पह को ! टीवरियों को बया हर हो घरता है ?

"हत परती पर सगर विधी को गीना शालार जनने का अधिकार है तो यह घरती में सनपाम पैस करने को देवितन को हो है।

शिरेशान दर कर हुन सहस्ये और सारिय की कार्ते मार्च, दमंगे मूर्त गर्म आहि हूं। और में होत्रण हुं दि दिनाओं को गर्भव और नम्मी र महरे देवर सीर्य गर्म कर और ऊपा दिर करने पान्ये मार्ग महा हुं। इतना करने मत्या हो मान्या ग्रीहन गर्फ मानुग।" (वन् '२८ के माल्या हो) "मीत तो एक ही बार आती है, कई मर्तवा नहीं और वह करोड़पित या गरीब किसीको भी नहीं छोड़ती। तो फिर उसका क्या डर? हम मीत का डर छोड़कर निर्भय बन जायं।" (२९-६-१९३०)

"सरकार हमारे सिर तोड़ेगी, मगर याद रिवए कि वह हमारा दिल नहीं तोड़ सकती। गोलियों से हमारे दिल छलनी हो जायेंगे, मगर ऐसी कोई गोली नहीं वनी जो आत्मा को छेद सके।" (सन् ३० के सत्याग्रह मे)

"हमारी इस लड़ाई में कभी हार नहीं हुई है। हम न कभी हारे और न हारेंगे; क्योंकि हमारी लड़ाई की बुनियाद सत्य पर है। हम अपने देश की आजादी चाहते हैं। अगर हम इंग्लैंड पर राज्य करने की या और किसी प्रदेश की मांग करते तो दूसरी वात थी। हम तो अपना ही हक मांग रहे हैं।

"हमारा युद्ध अलग है। अहिंसा उसकी वृतियाद है। अजिकल विज्ञान का विकास हो गया है। उसके अणु-वम की संहार-भित्त इतनी अधिक बढ़ गई है कि उससे दस लाख आदमी थोड़ी-सी देर में खत्म हो जाते हैं। संहार-भित्त के कारण जीने हुए देश भी आज यवराहट में पढ़ गये हैं।" (२४-९-१९४५)

"हमारे देग की प्राचीन परम्पराओं का हमें जो उत्तराधिकार मिला है, वह हमारे लिए गर्व की चीज है। यह तो एक संयोग की बात है कि कुछ लोग रिया-सतों में रहते है और कुछ लोग प्रिटिश भारत में। हमारे देग की उच्च परम्पराओं और संस्कृति के हम सब बराबरी के हिस्तेबार हैं। हम सबके हिन-पंबंध अलग-अलग नहीं हैं। इनना ही नहीं, हम सब एक ही गून और एक ही भावना के अंबन में बंधे हुए हैं। कार्र हमें अलग-अलग ट्कड़ों में बांट नहीं सकता। कोर्र हमारे बीच ऐसी क्लावटें पैदा नहीं कर सकता, जिन्हें दूर न किया जा नके। इसलिए में कहता है कि हम एक-दूसरे से अलग हो जायं, इस ढंग ने संधियां करने के बनाय एक सभा में मित्रों की तरह बैठकर अपना विदान तंबार करें, इसमें हमारी घोभा है। में

अपने मित्र राजाओं और उनकी प्रजाओं को निमन्त्रण देता हूं कि मैत्री और सहयोग की भावना से विधान-सभा में आइए। हम मिल-जुलकर सबके कल्याण के लिए मातृभूमि के चरणों में बैठकर वफादारी के साथ अपना विधान तैयार करने की कोशिश करें।"

(4-6-8586)

"राजा महाराजाओं से मैं कहता हूं कि वक्त आने पर आपको प्रजा के कहे अनुसार करना है। जिन राजाओं के साय प्रजा नहीं होगी, वे अपने आप खत्म हो जायेंगे। मैं उनसे कहता हूं कि १५ तारीख तक जो भारतीय मंघ में आगया वह वा गया, वाद में दू भरी तरह हिसाव होगा। आज जो धार्ते मिलती हैं वे फिर नहीं मिलेंगी। इसलिए राज्य सम्हालना हो तो अन्दर आ जाइए। आज की दुनिया में अकेला रहना मुश्किल है। जब तेज आंधी आती है तब अकेला पेड़ गिर जाता है। मगर जो दूसरे पेड़ों के समूह में होता है, यह यच जाता है। आप भी, रामचन्द्रजी और अशोक-जैसों के वंशज हैं। परन्तु आजकल आप अंग्रेज अधिकारियों के छोटे-छोटे चपरासियों को भी सलाम करते हैं। आपको अभी तक विश्वास नहीं होता कि १५ अगस्त को अंग्रेज चले जायेंगे । परन्तु जब वे जायेंगे और आपको स्वतन्त्रता की हवा छगेगी, तब आपके हृदय खुलेंगे।" (११-८-१९४७)

"अब कांग्रेस का काम पूरा होता है। हमारा जीवन-कार्य पूरा होता है। जब लोकमान्य का देहान्त हुआ तब चीपाटी के मैदान में हमने प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उसके बाद लाहौर-कांग्रेस में रावों के किनारे कांग्रेस के इस लंटे के नीचे आजादी के लिए प्राण देने की प्रतिज्ञा की और निश्चय किया कि हिन्दू, मुसलमान, पारको, ईसाई, सब एक होकर रहेंगे। वह निश्चय हम पूरी तरह नहीं निभा सके, इसलिए आज जितना बानन्द होना चाहिए उतना नहीं हो रहा है। मगर इतना समझ लेना चाहिए कि अब दिदेशी हमारे बीच में कियी तरह की फूट नहीं टाल सकेंगे। यह बहुन बड़ी बात है।" (११-८-१९४७)

"हमारे क्षे दुवंल हैं और बोज बड़ा बजनी है। थगर दूगरे लोग उस भार को हमसे छ सकें तो हमें यही ग्राहिती; बिन्तु इन्हें बहुछे यह प्रमाणित बरना होगा कि यह उस भार को उटा सहते है। अगर वे यह मीपने हो नि अन्य निन्ही उपायों से वे उम भार की हमसे लें लों को वे गलती पर है। उन्हें उत्तरदायी होना पहेगा।" (४ जनवरी १०००)

"भै तो इनना हो कहगा कि आप छोग अपने मादिमियो को गमगाइये कि उनका सरकार तो निर्फ रतना पाहनी है कि वे निहायन ईमानदारी और खबा के साप अपना करें भ्यत्यान करें। यह ध्रुव साय है कि अपने नर्सध्य का पालन करने में जो आतन्द माना है वह उनका सच्या पुरस्तार है। संस्वार और जना की बारप्रविक सेवा वभी बेबार मही जानी !... सरवार के मतिया तथा छोटे-स-छोटे वर्मवादी तक को यह समझ लेना चाहिए कि कोई भी अञानन्त्री राररारपुलिम-राज के आधार पर अपना राज नहीं यहा सकती। वह दो जनसामारण की इच्छा और सहयोग में ही शासन बार सक्ती है। (१३ १-१९५०)

"सरकार नो चननी ही है। सगर आप उनवे वसन्तुष्ट है तो उसे धुनाव द्वारा या त्रान्ति द्वारा बदल सबने हैं । बिन्तु पुलिम पर हमले या बम-पाति की निद्यानी नहीं। यह सब का पाणलों का सिद्धान्त और वाम है।...मैं आपनो भेताननी देखा 🛙 कि लगर य कारवाइया बन्द न हुई तो क्षात्र जापको जो नागरिक आजादी है, वह भी गायव हो जायगी।"

(१६ जनमरी १९५०) ' टापिक कोय और माद्कता में बुछ कर गुजरना बहुत आसान है, सबर बढ़ाये हुए बदम को बादस लेना और एवं बार की हुई शति की दुवरा करना

बहुत मृत्रिल होता है।...हर शीमा पर हमें शान्ति और सबम कायम रताना है।" (१० फरवरी १९५०) "जब जब भारत स्वतन्त्र रहा, उसकी स्थतन्त्रता

को गत्य सबने रशदा दोग्नो से हुआ है और दुःस्तो से बन । इमिटिए आप छाया को बहुत सायपानी मे काम करने की आवरपकता है।" (सन्तिम सन्देश)

#### भारत का सरदार

सरदार पटेल का स्थाल बाने ही १९१८ में लेकर सदन्त का भारत का गारा राष्ट्रीय इतिहास एक विचार की तरह गामने का जाता है। संदा जिने के एक रिसान का बेटा, महमदाबाद का एक होनहार, चत्र, मनवता बेरिस्टर, जिट गायी की आधी में मानवाला मगहपोगी बीर विकाही और वन में बारडोली ना ही नहीं, सारे भारत का बरदार, नियुत्र राजनीतिक, दह रशक, गवकी समात कर के भवतियाना बजुर्ग-यह सर्थेत में हमारे मरदास्थी का उत्तरीसर उन्ना व भाग शोबत है। समनी-सम बोलहर, समनो सम धौड-पा बर के एक बार बेटें हुए, टेलिटोन से या मामुध गुरेगा और बारेगा में सारे भारत के कार्यन-मयडन भी व दासन की बागशीर बादने बांडे, अनेक साजा-

महाराजाओं की जाद की तरह एक बाग्दे के नीचे साने बाने मरदार की भारत कई वीदियों तक बाद रक्तेया । उनका यह नता यह शक्ति भारत के होतहार बच्चो की सदियों कुक स्माति देशी रहेगी । बाह के मल जाते के बाद सरकार हो ऐसी दानित थे, बिनने 'हाँ' बहने में भीवों के दिल यम उटने में और 'मा' बहने से क्या बैंड जाति थी-वित्य मरदार के 'ना' में तो ित कीर संदर्ध था: विवे वाहाने पराया गार विवा बस बह अपनी भेर नहीं समाचा था। सम्दार के इस बीचय कर में मह हरते वें; परना भी उनहीं तीर में बला दक्षा उथे दिशाही नहीं, माना का स्नेहर बाग्यक्त उन्हें जिल्हा दाह वे मुख्य, साम्यक्ति नेता दें। आब की समस्या का हण्यरों में शायश्य से ।

कल के पीछे परेशान होनेवाले आदर्शवादी नहीं थे। बादर्श को वे देखते या समझते नहीं थे, सो वात नहीं; परन्तु वे मानते थे कि मुख्य वात यह है कि हम आज क्या करें और जो कुछ करना है, वह कैसे करें ? बाज का काम यदि कर न पाये और कल की चिन्ता में ही ड्वे रहे तो कल कभी वाने वाला ही नहीं है, ऐसी उनकी मान्यता थी। वे कठोर शासक और दृढ़ अनु-शासक थे। राजनीति के खिलाड़ी थे, उसके दांव-पेंच में उन्हें पछाडना असान नहीं या। फिर भी वे गांधीजी के बादशों को सही मानते थे। अपनी बक्तिभर उनका पालन भी करते थे। जितना मानते ये उतना पालत भी थे। गांबीजी के आदर्शों से बढकर उनकी श्रद्धा गांधीजी की सचाई, दृढ़ता, बहादुरी, निर्भयता पर अधिक थी। इधर उनकी ऐसी घारणा हो गई थी कि आजादी मिली तो गांधीजी के नेतृत्व में, किन्तू देशका शासन उनके सिद्धान्त से नहीं चल सकता। देश उनकी उच्च नीति पर चलने लायक नहीं हुआ। किन्तु उनका यह विश्वास अवश्य या कि अन्त में संसार को आना पड़ेगा गांधीजी के बताये रास्ते पर हो। यही कारण है जो गांबीमार्गी सरदार से अपने को दूर अनुभव करने छगे थे। हेकिन सरदार जिस बात को ठीक मान लेते थे उस पर दृढ़ता से चलने में किसी से टरते या दवते नहीं थे। न ऐसे वाद-विवादी में ही परते थे, अपना काम करते चले जाते थे। इससे कई लोग उनपर विगड़ते और झल्लाते थे।

सरदार जैसे कार्य-कुगल ये वैसे ही ईट का जवाव पत्यर से देने में भी नहीं चूकते थे। इसमें न वे जिन्ना से चूकते थे, न चिंचल से, न स्टैलिन का लिहाज रखते थे। उनपर जादू यदि किसी का चला तो गांधी-जी का। गांधीजी को वे वसभर 'ना' नहीं कहते थे। वरसों तक वे गांधीजी के 'टिट्टो' समझे जाते रहे; किन्तु 'ना' कहने पर गांधीजी भी चुप साथ लेते थे। ऐसा दुर्दमनीय व्यक्तित्व उनका घा। यद्यपि उनका स्वभाव एकतंत्री पद्धति के अधिक अनुकूल या फिर भी जनतंत्र के सांचे में अपने को ढालने का वे भरसक प्रयत्न करते थे। जिसने उन्हें अपना विरोधी या बात्रु माना वह पछताता रहा है और जो उनके मिन्न तथा सहयोगी-मंडल में आगया वह सदैव भाग्यवान रहा है।

संयमी ऐसे कि युवावस्था में ही विघुर हो जाने के वाद दूसरा विवाह नहीं किया, जबिक उनकी विरादरी में उसकी पूरी-पूरी छूट थी, और उज्ज्वलता के साथ अपने विधुरपन को निवाहा भी । वाप-दादों की जो कुछ जमीन-जायदाद थी वह सब भाइयों को देदी, अपने लिए उनके पास तनभर कपड़े के सिवा कुछ नहीं था। कांग्रेस के कार्यकर्ता रहने की अवस्था में जो वेद्यभूषा थी वही भारत का उपप्रधान मंत्री होने की अवस्था में जो वेद्यभूषा थी वही भारत का उपप्रधान मंत्री होने की अवस्था में भी रहीं—खादी अपनी लड़की मणिवहन के कते नूत की, चिट्टी-पत्री हाथ के कागज पर।

वे ऐन मौके पर हमको छोड़ गये। आगामी चुनाव सिर पर हैं। कांग्रेस उनके पीछे निःशंक घी। अब सब एक-दूसरे का मुंह देख रहे हैं। हमारी जिम्मे-दारी सपट है। कांग्रेसियों ने यदि अपने-अपने अन्तः-करण साफ कर लिये, अपनी धृद्रताएं छोड़ दीं, पिछले कटु अनुभवों को भूलने और नया इतिहास लिखने की समता पैदा कर ली, तो सरदारश्री के अवसान से हमने काफी शिक्षा लेली, ऐसा कहा जायगा। उस स्थित में सरदारश्री की आत्मा को भी ऐसा लगेगा कि उसने उनके शरीर को छोड़कर अच्छा ही किया, नहीं तो बह हमें 'कपूत' की श्रेणी में गिने बिना नहीं रहेगी। बापू की आत्मा तो हमें सभा भी कर देगी; क्योंकि वे राष्ट्र-पिता थे; परन्तु सरदार की आत्मा हमें दण्ट दिये बिना नहीं रहेगी, क्योंकि वे शासक य कैप्टन थे।

"सरदार की कठोर और गम्भीर आकृति उन छोहे की तस्तरी की तरह है, जिसमें देश-भिवत, ईमानदारी, मृदुता और आकर्षण-शिवत के कीमती रतन छिये हुए हैं।"

-सरोजिनी नायब्

#### विनोदी सरदार

थी विष्यु प्रभाक्तर

मारदार यहरायमाई पटेल का जो हा सक्षार ने गामने रंग है कह बेंग काहे क्लिया हो मोरवामाली रहा हो; परानु यह उनने मानूज क्यांकार को व्यान मही करा। निस्तारेह वे महान् बोटा, विज्ञान महायायक और सफल सामक ने, वरन्तु साव हो वे बाट विजोशे में, इसमें भी कोई करेह नहीं हैं। साधा-रमवास कोग हम भाग के स्थोकार करने को तीयार महीं होने। सभी उन दिन एक क्यां सरदार का रोषक पहिला क्यांक्र पें। विभी मानीर राजनीयिक वर्षों के दौरान में मीशाना सामार ने बहा—'हां! यह हम सी सम्बन्धित हों!"

इस पर सरदार बोले--"अवनक मौजावना, अरुताबन्य और गुदाबन्स ना नाम तो मुना था। यह चौचा समस्तीबन्य नहां से आ गया ?"

गांपीजी का विनोद को लोग प्रसिद्ध हैं; परम्य सर-दार भी हामवृत्ति अनुता ने सामने नहीं बाई। यहा तक कि होती के अवसर पर भंग भी तरत में जब उगाधियाँ बादी जानी थी तब भी उनके भाग्य में 'हेवो टेंब' बैसी भारी उपाधियां ही होती वी ! वेसे भी प्राय: उनका हास्य हैक के बम भारी नहीं होता था। राजनीतिर दांव वेवीं में उनकी परिहात-भावना की वीने स्थम, एक विधेते मातुर्थ (Wit) में परिवर्तित कर दिया या। इसी नारण अनेता उन्हें कर स्थाकार तो मानती थी, परन्त विनीद्याप भी है, यह नहीं जानती थी। उसने लिए मह यात कि सरकार बारक की तरह हम सकी थे, बाइपर्वंत्रनर भी । सन्य यह है कि सरास्त्र से परिहास करने में वे जाने ही कुशार में जितने विरोधी की बियें रे कानुवें से परादित करने में । इते अतिरिक्त उनके सार में, चारे बह बिगना ही बह बनी न हो. एक द्वंत मनुष्य की दुर्भाता, जिसे उत्हण-वृति बहा जा सरवा है, मही की शनरवार दुमना पर हत सको में सो बार्ने की भी हमी का पात जना सकते थे। उनकी हास्य प्रकृति बहुत कुछ स्थामी दराज्यह मुरस्क्षी के गमान की । चनके मुक्तहत्त्व भी का और

न्रस्था भी, पर सन्वेग का अभाव उनमें कभी नहीं पाया गया । सम्बेग के अभाव में विनोद की स्मर्जान की हसी बहा जा सकता है।

सरवार की निज बनार विद्योह विनामन में निला पा वर्गी बनार विदोद-बृति भी उनरी वैजित सम्मित थी। मेमाजीन पटेल के मच्चान कार्य तो जोति है। सरकार कर बहुत में यहने से तह उनने सम्मित्त में एक बार उन्हें बिजा विभी अपराध के पाड़े लियते नी भवा दी। नारूपमाई ने मून नी लिया; पर थे ऐसा दक्त बहुत में वात वाले से अपने दिन हरूल आने पर सम्मादन में पूछा—" पाड़े ताथे ?"

बन्छममार्दे ने जलाव दिया--"मी, लाया ही पा; पर वे पाठसाला ने द्वार पर रागी गुहार र माग गए।" इस बुटीले परिहास से निहसन्देह मध्यापर दिल-मिना उठे होंग । गुजराती में पाई पहाई नो भी बहुई

मिला उठे होता। युवराती में पाड़े पहाड़े को भी कहते हैं और भेन के बब्दे को भी।

्ष बार कुछ व्यक्ति गांधीजी से मिल्डे आए। मार्च करकर किस को । यहा-"क्टो अपने को रे"

में सरदार मिल गये। पूछा-"बही जारहे हो ?" उन्होंने जबाब दिशा-"बाधीजी ही मिलने !" सरदार-"बर्धे ?"

वे-"बह्यवर्षे पर कृष्ठ बातें करनी है।"

सररार-"वर ब्रायर्च पर गांधी ग ब्या बार्ने वरोगे। उनके भार बेटे हैं। सब बिमालि हैं। मूट उनकी मानी जिला है। बहु ब्रायर्च की ब्या जाने । ब्रह्मचं की बात मूली करों। मेरे देनन हो बर्ध हैं। बहुत पर्छे वेश पानी मर गई थी, तह में मैंने दूतरी गांदी नहीं बी। ब्रायारी में है।"

यसरत पूर्व विशेष का नारंत शेवन व्याप्ता बाहु की महाशिक्षणा है। प्रत्या हम बकार कराई बाही हैं। कार्यार-माशिह पुरू होने बाला का । इक्षीप्त विशाई की तुरू बननी थी। यह देवसार ने बाह से पूर्ण-भीवन की तांत्र वेगी हैं। बादी दिल्ली बार हुटी हूँ?"

बाद वे उत्तर दिया, "अउन करना बाता हा तो

कुछ भी न टूटे। गंकरलाल ने मेरे पास से ली कि टूटी। काका ने मुझसे ली कि टूटी; लेकिन मेरी तो कई दिन चलती रहती है। यह तो जतन का काम है। देखों तो यह लंगोटी पहनता हूं। उसे सभाल-संभाल कर पहना करता हूं। और किमी के पास होती तो कभी की फट जाती।"

वल्लभभाई सुन रहे थे। उसी क्षण बोल उठे— "यह तो ऐसे लगता है कि जैसे पहनते ही न हो, और मूंटी पर सम्हालकर रख छोड़ी हो।"

वारटोली सत्याग्रह के अवगर पर सरकार ने मनुष्यों को ही वन्दी नहीं वनाया था, भैंगो को भी जेल- पाने भेजा था। वहा अन्यकार में रहने-रहते काली भैंसें कुछ-कुछ सफेद हो गईं। उन्हें देखकर सरदार ने कहा—"यह तो मड़ामड़ी वन गई है।" अर्थान् अंग्रेजों की जेल में रहने-रहते ये काली भैंसें भी मटाम (अंग्रेजों में 'नारी' को कहते हैं) जैसी वन गई है।" उन पिन्हास में अट्टहास के साथ एक गहरी घरारत भी है; पर निर्दोप शरारत। ऐसी निर्दोप जैमी इम वात में—

वापू सोडे का प्रयोग बहुन करते थे। याने की प्रत्येक वस्तु में उसे टालते थे। इसलिए जब कभी कोई अड वन बा उपस्थित होती और सरदार की सलाह ली जानी तो वे सरल भाव में कह देने थे, ''मोटा टालों न।"

वापू मुबह-शाम नीवृ पीते थे। नीवृ गरमी में महंगे हो जाते हैं। इसिटिए वापू ने मरदार में कहा कि नीवू के स्थान पर इमटी का प्रयोग किया जाय। जेल में उसके झाड़ भी बहुत है।

वापू की वात मुनकर सरदार हम पड़े । बोले— "इमली के पानी से हिंदुयाँ गल जाती है, बादी हो जाती है। गांघीजी ने कहा—"और जमनालालजी पीते है सो !"

बल्लभभाई बोले—''जमनालालजी की हिंद्दयों तक पहुंचने का इमली के लिए रास्ता ही नही है।"

कभी-कभी मरदार का तर्क-पूर्ण उत्तर उनकी प्रत्युत्पन्नमति का वड़ा मधुर परिचय देता था। किभी आलोचना में 'गांधी जी रचनात्मक गफलनें' ये घटद आए। महादेवभाई ने वापू में पूछा—''रचनात्मक गफलतें कैसी होती होंगी?'' सरदार मुन रहे थे। एक्दम

वोले-''बाज तुम्हारी दाल जल गई थी--ऐसी ।'' वापू खिलखिला पडे ।

निरुत्तर कर देने वाले, सचीट पर सारगिंत व्यंग से पूर्ण, उनके हाम-परिहास का विशेष परिचय महादेव-भाई की उन टायियों में मिल सकता है, जो उन्होंने यरवटा कारावाम के दिनों में रखी थीं। गांधीजी से लोग विचित्र-विचित्र प्रदन पूछा करते थें। उन दिनों सरदार भी वापू के मंत्री पद पर पहुंच गए थे। पत्र पढ़-पढ़ कर उन्हें सुनाया करते थे। एक भाई ने पूछा था— "हम तीन मन की देह लेकर घरती पर चलते हैं और वहुत-भी चीटियाँ कुचली जाती हैं। यह हिंसा कैसे एक सकती हैं?" सरदार ने तुरन्त कहा—''इसे लिख दीजिए कि पैर सिर पर रख कर चले।"

किसी के पत्र में देखा कि स्त्री कुरूप है, इसलिए पसन्द नहीं, तो तुरन्त वापू से कहने लगे—"लिखिए न कि आँखें फोड़ कर उसके साथ रहे, फिर कुछ कुरूप नहीं दिग्नेगा।" एक आदमी ने अपने को फिर दुबारा यादी करने का आग्रह करने वाले की यह दलील दी थीं कि 'उसने मुझ पर उपकार किया है और उसे तीन लड़कियों की यादी करना है। जानि में वरों की कमी है, इसलिए मुझसे आग्रह करता है।' वल्लभमाई बोले—"तब तीनों ही लड़कियों से ब्याह करले तो क्या वृग है?"

एक आलोचक भाई ने वापू को खुली चिट्ठी लिखी। उसके अन्त में लिखा— ''आपके जमाने में जीने का दुर्भाग्य प्राप्त करनेवाला।" वापू कहने लगे——''कहो इसे क्या जवाब दिया जाय ?"

वत्लभभाई बोले—"कहिए कि जृहर पाले।" वापू— 'नहीं, ऐसा नहीं। यह क्यों न कहें कि मुझे जृहर दे दो ?"

वल्लभभाउ-"मगर इसमे उसके दिन कहां पलटेगे? आपको ज़हर दे दें तो आप गए और उसे फांसी की सजा मिले तो उसे भी जाना पड़ेगा, तब फिर आपके ही साथ जन्म लेने का भाग्य में बदा रहेगा। इसमे तो यही अच्छा कि वह सुद जहर साले।"

बच्चो की जैसी शरास्त से पूर्ण हेंसी और विरोधी को कुचल देने वाला व्यंग, दोनों के वे एक समान स्वामी ये और इमीरे माम वेजरने को भी हुँगी का पात्र बनाना कानने थे। जिभी के जातर की निमंत्रता की जीकी ऐसे ही अवकरों पर मिल्लो है। यरवडा जेल में कायू के साथ रहते हुए सन्दार ने हम प्रकार गुरू-जगुद्ध प्रयोगा हारा अपना छाहूच-रान प्रकट करने और बायू तथा महादेवमाई हो हमाने हुमाने पेट में बट हारने में गरहार कमी नहीं बसते थे। उनका हमाय उहा आवन-प्रवासी

संस्थान का अस्थाम सुरः निया या । पिरती वे यात-यात में शस्त्र का प्रयोग करने लग । ਮੀਤੇ ਗਲਤ ਵੀ भानि प्रधते--धमहादेव . 48 विभिन्ति नया होती है ? औरनुप: बह मक्ते हैं सो हाजः नयो नहीं और विद्वानः नहीं ? बामांसि श्योग दृश्तेमाल शिया, यश्त्राशि वयों नहीं ?" व भी नए धव्य सीखते शीर बनका प्रयोग बरते । स्ट्रार टोरियी की 'आव-हायी' बहुतै। "यह स्रहें शोभा नही देना" इसके लिए करते--- "इइं म ग्रीभाग वस्ति।" 'सेशा' के लिए 'कृतायोऽही बही,

जो कुछ साद कर

#### सरदार की जीवन-मांकी ३१ अब्रुडर १८७५ नृष्ठरात प्रति के सतर्पत सेंद्रा तिरे के करमसर नामक दाम में जन्म। इस्पन महिपाद में, शिक्षण पेरलार, बडौरा और नहियाद में। मेरिन ने बाद हिस्ट्नर प्लीहर होनर १९०० से गोपरा में बनालन । १९१० तर बीरसर भीर आनर आदि स्पानों में बसायन अध्यो बम्ही। इसी बीच गणा नामर पान में हाबेरबा के नाय विवाह । १९०५ में प्रयम पुत्र शाद्धाभाई पटेल, सनतर पुत्रो मणिबरून बा खाम । १९०८ में परनी को माय । १९१० में बेरिस्टरी के लिए ड्रांसैक्ड वर्षे । प्रथम श्रेणी में बेरिन्टरी वाम श्री । १९१४ में महमहाबाद में बनानत हार की । १९१५ में अनमदाबाद ध्यतिगर्यन्तिं के सदस्य, १९१६ में गांधीओं ने सम्पर्क में लाये। १९१७ में लोहा शत्यायह में माय । १९२१ में अन्यशाबाद कांग्रेस के स्वापतास्थल । १९२२ में बोरसर तथा १९३२ में नागपुर शच्छा सन्याप्तर का मैन्स्य : १९२४ से २८ तक ब्रहमहाबाद स्वनिवर्पतिही के बावल, १९२७ में गजरान जल-प्रस्त के समय सेवा-कार्य, १९२८में बारहोती सायाप्रह के 'सरवार' । १९६० में योधीकी की बोडी-यात्रा से " बृत्ते रात नामर प्राम में विरक्तारी । १९३१ में करांची-रांदेत के अध्यक्त । १९३२-३४ और में, १९३५ में कांग्रेस वार्कामेंटरी बोर्ड हे अध्यक्त । १९४० में ध्यक्तियत सामायह में पुतः वित्यतारी, १९४१ में बीमारी के कारण जेल से रिहाई, १९४२ की ८ मगरन को फिर वह है वये। १९४५ में छुटे। १९४६ में अनितम सरकार बसने पर गार एवं शास्त्र-मंत्री, १९४७ में भारत सरकार के उप-प्रयान मंत्री, गर-शश्चिव और शांत्रवर्मको । दो वर्ष के सन्दर देशी राज्यों को विकीन कर अन्तरह मारत का निर्माण । १५ दिगम्बर

नहीं भावन-प्रश्लेश विकास स्वास्ति हिला है। यह महीं भावरपत्रना गरने पर बर्द विरोधी की कुपल देने बाग बिप-मगावाम बन्दा पारा विपन्ता पारा

यरवा नेत में एक दिन बरां ने हारार में दिना-रियों भी वर्षों चलनेतर ना— 'नाई दीहिया ना स्वादा है हि हुक दें भाग दरवे चेत्र हम दिन्यानी हान में दें हैं हैं। बाद हमी हैते हैं हैं। बाद हमी हुन्या उनसान नहीं हो। सहसा हमी हुन्या

वस्त्रमनाः— "ही, पर श्रमी भी श्याद्या तो काष्ट्रमा यर सर्व करो

ते हैं उनका प्रयोग करने को शापुर रही । एक दिन कियी काउ पर शादु में दिनाड करते करने की रे—कल्डा को लिगिये। शाद की पारवर्गी नियो की गाँचे हैं जा दिर एक दिन पूर्व लये—गर्न-गर्न के माले गनिकार हैं है

१९५० की सबंदे ९-३७ पर अवमान ।

ह्याहर कहते लगे—' मैं नमाग नहीं।" बारामवाई बेरे—-'क्या क्या देशों, में क्या पी से इनके सब हात्र ही आए हैं ते हैं है क्या मुदेशों से बक्त कहें जाएंगे ?"

## 'दयामय, मंगल-मंदिर खोलो....'

#### श्री वियोगीहरि

शरीर छोड़ने से दस-बारह दिन पहले शाम को रोग-शैया पर लेटे-लेटे सरदारश्री अपनेआप धीरे-धीरे गुनगुना रहे थे—

'दयामय, मंगल-मंदिर खोलो...' डाक्टर नायाभाई पटेल ने मजाक के सुर में कहा— "ऐसा आसान नहीं मंदिर का खुलना। एक नहीं, दो-दो ताले दरवाजे पर लगे हुए हैं!"

"अरे, दो तो क्या, दस ताले भी टूट जायेंगे और मन्दिर का द्वार खुल जायेगा।" सरदारश्री ने हंसते हुए डाक्टर की बात को उसी वक्त काट दिया और वैसे ही फिर भजन की उसी कड़ी को गुनगुनाने लगे—
'दयामय, मंगल-मंदिर खोलो…'

दयामय प्रभु के मंगल-मंदिर में प्रवेश पाने के लिए वे कितने ही दिनों से आतुर थे। असल में तो, वापू के सिधार जाने के बाद सरदार के जीवन में वैसा रस नहीं रह गया था।

ऐसे ही, एक दिन और उन्होंने हँसते हुए कहा था, "स्टेशनों पर कई मुसाफिर एक-दो आने टिकटबाबू को दे देते हैं तो टिकट उन्हें बिना तकलीफ के तुरन्त मिल जाता है। इसी तरह, मालूम होता है, वहां भी लांच लेकर टिकट देते हैं। देखते-देखते मेरे कितने ही साथी टिकट कटा-कटाकर चले गये, पर मैं तो लांच देनेवाला नहीं।"

इसी तरह सरदार, वीमारी के दिनों में भी, हंसते-हंसाते रहते थे; पर, यहां रोग-जर्जरित देह में बंधे रहना उन्हें इयर अच्छा नहीं छगता था।

सरदार बड़े-बड़े मोचों पर छड़े और उन्होंने बड़े-ही-बड़े काम किये। मन चाहता था—पर बारीर काम नहीं दे रहा था—िक उनके हाथ से देश का और भी कुछ भला हो। उनके मानस-चित्रपट पर भारत के खलावा चीन, तिब्बत और नेपाल की तस्वीरें घूमती रहती थीं। पर जो-जो करना चाहते थे, कर नहीं पाते थे और जो नहीं चाहते थे ऐसी कितनी ही बातें हो जावा करती थीं। वेयस थे। विना कुछ मला काम निए कल नहीं पड़ता था। इसलिए लाचारी का जीना अच्छा नहीं लगता था। फिर भी कई महीनों से, कई दिनों से, जिद्दी रोग के साथ वीरता-पूर्वक लड़ते आ रहे थे।

पेट में असहा पीड़ा होती थी, फिर भी कभी वेचेनी नहीं दिखाई। कभी कुछ कहा तो इतना हो कि पेट पर जैसे करौत चल रहा है, पर उफ़ तक नहीं करते थे। मौत भी वेचारी चकराती रही होगी कि इस अजीव से शिकार को किस तरह झपट कर पकड़ूं!

उस दिन भी वह वहादुर सरदार शिकारी मृत्यु की छाया तले कई घंटे बड़े शांतभाव से सोता रहा। अंत में घवका देता हुआ वह मंगल-मंदिर के अंदर घुस ही गया। दयामय का द्वार खुल गया था।

सरदार वल्लभभाई को किसी ने 'लीह पुरुप' कहा और किसी ने भारत का 'विस्माक'। उपमा देने या तुलना करने में एक प्रकार का रस आता है, फिर वह उपमा या तुलना ठीक-ठीक वठती भी हो या नहीं। प्रशंसक और निन्दक दोनों ही अपनी-अपनी रुचि के अनुरूप उपयुक्त-अनुपयुक्त शब्दों का मुक्त प्रयोग करते है। सरदार को भी क्या-क्या नहीं कहा गया। पर उन्होंने तो स्तुति और निन्दा दोनों की सदा उपेक्षा ही की।

असल में तो वे एक घर्मात्मा पुरुप थे। बहुत कहा-पोह में न पड़कर जिसे वे घर्म-विहित कार्य समझते उस पर दृढ़ रहना उनके साधु जीवन का मूलमंत्र था। बृद्धि निश्चयात्मक थी, इसलिए किसी भी निणंय पर पहुंचने में देर नहीं लगती थी। मित्रता की तो अंततक निवाही। जो संकल्प बांधा उसे पूरा किया। अपनी बात पर से कभी हटे नहीं। दुनिया की आलोचना की परवा नहीं की।

ह्दय कोमल और फूल-सा विकसित । इतनी वड़ी सत्ता पर आरूढ़, पर उसके प्रति मोह नहीं । पैसे को भी सदा तुच्छ ही समझा ।

ऐसे थे वे सरदार—याने, धर्मात्मा पुरुष । प्रमु के मंगर्ल-मंदिर का द्वार तो ऐसे भक्त पुरुष के लिए शान्ति-पूर्वक खुल्ना ही चाहिए था, और दयामय पिता ने उसे अपनी गोद में उठा लिया।

#### योगिराज को श्रद्धांजिल

"पुरान नार ने ऋषियों ने समान निर्भाव विचार ने श्रीअरविन्द नर्मठ पुरत भी थे। उन्होंने साहशों ने अध्ययन नो अपनी अविन्त साधना नी नगीटी पर चढाया। भारा उनकी स्मृति मो सिवन ररोगा और उन्हें अपने ऋषि मृतियों नी श्रेणी में प्रतिष्ठित नरने उनकी पूजा मरोगा।"
—(राष्ट्रविन) राजेश्यनार

"पे एक महान व्यक्ति ही नहीं थे, बिल्म एक सस्या वन गये थे। पुरानी पीडिमों में लोग उनको भारतीय स्वनन्नता को एक जलनी हुई मनाल के रूप में बाद करते हैं। वे हमारी पीडी में श्रेष्टनम विचारको में ये और उनके वियोग महम सईव दुनी रहेंगे।"—जनाहरलाल महरू

"उनदी मृत्यु से मान्त का एक बीर विशिष्ट पुत्र स्तोगया है, आध्यासिम जगत ने एर विस्मात सिद्ध उठ गया है। — वस्त्रमार्थ बटेन

"श्री अरविन्द भी मृत्यु से भारत ने आज अपना एव प्रमृत नागरिक, महान पय-प्रदर्शन और एव महानतम व्यक्ति सो दिया। —स्नानिकार

"यह बर्तमान युग में महानतम बुद्धिवादी ये और जीवन ये रिए एव प्रहुत बड़ी तरित । राजनीति और दर्शन की जहीने जो सेवा की उसे नारत क्यी नहीं भूरेगा । दर्शन और धर्म के क्षेत्र में उन्होंने जो जमूल्य कार्य दिया, उसके रिए समार उत्तरत सदा ऋणी रहेगा । '—सर्वक्सी सावाहरून्

'दुनिया का एक महानतम व्यक्ति उठ गया। जवता इस समार वा अन्तिय है, धार्मित पर-प्रदर्शन के रच में उनकी हतियों असर रहेंगी।'' —की० थी० निर

" में श्री अरविन्द ने राजीतिन स्वाधीता। को एक नई दिया प्रशान भी और जब भारत को स्वाधीता। की छाता। एक्मात्र धूधतीनी ज्योति भी, तभी उन्होंने देग के लिए अपना सबदुछ स्वाय दिया। था। इतनी महान् आत्मा के एकाएक तिथन से कुछ सोया-गोया-ना मृत्युत्त होता है। ' -क्ट्रेनाचन मार कुली

"...थी अपनिष्द ही प्रयम भारतीय थे, जिन्होंने भागत का भविष्य देस दिया सा और उनकी स्वामीता। में दिए अपने देव से काम विमा।" --विमनक एव

".. श्री अरबिन्द की मृजु में नूनों बनार ग्रीक हुआ है। दुनिया इस सक्ट के समय उनमें आत्यान्सिक पर्यन्प्रदर्शन की आशा कर रही थी।" - १मा केटन

### अरविन्द-वाणी

#### योग

मानसिक प्रकृति और मानसिक विचार सांत की चेतना पर आधारित है, अति मानसिक प्रकृति अपने मुल स्वभाव से ही अनन्त की चेतना एवं शक्ति है। अति मानसिक प्रकृति प्रत्येक वस्तु को एकत्व के आधार से देखती है और सभी चीजों पर, बड़ी-से-बड़ी अनेकता और विपमता पर भी, जो चीजें मन के लिए घोर-से-घोर विरोध रूप हैं उनपर भी, उस एकत्व के प्रकाश से विचार करती है। इसका संकल्प, इसका विचार-भाव, समवेदन, एकत्व के उपादान से निर्मित है। इसके कर्म उस आवार पर प्रकृत होते हैं। इंसके विपरीत मानसिक प्रकृति नानात्व या भेद को मूळ मान कर चलती और उसीसे विचार-अवलोकन, संकल्प-अनुभव तथा समवेदन करती है और उसका एकता-संबंधी ज्ञान केवल परिक-ल्पित एवं कृतिम हैं।ेजब वह एकत्व अनुभव करती हैं तव भी उसे सीमा तथा भेद के आधार पर स्थिति हो कर एकत्व के भाव से कर्म करना होता है। परन्तु अति मानसिक दिव्य जीवन मूलगत, स्वतः स्फूर्ति एवं स्वभाव-सिद्ध एकता का जीवन है।

इस योग का अयं केवल ईरवर की प्राप्ति नहीं, विक्त वह आभ्यन्तर और बाह्य जीवन का परिपूर्ण उत्सर्ग और आमूल परिवर्तन है, जिससे उसमें भगवच्चे-तन्य व्यक्त हो और वह स्वयं भगवत्कर्म का एक अंग हो।

#### लच्य

जब हम 'जानने' से पार हो चुकेंगे तब हमें यथार्थ कान होगा। तक सहायक था थीर तक ही बादक है।

जब हम संकल्प करने से पार हो चुकेंगे तब हमें भिक्त प्राप्त होगी। प्रयस्त महायक या और प्रयस्त ही बावक है।

जब हम नुखोपभोग करने से पार हो चुकेंगे नव हमें आनंद प्राप्त होगा। इच्छा सहायक थी और इच्छा ही बाबक है।

जब हम ध्यक्ति-भाव से पार हो चुकेंगे तब हम

वास्तविक 'पुरुष' होंगे । अहम्भाव सहायक था और अहम्भाव ही वाधक है।

जव हम मनुष्य-पने से पार हो चुकेंगे तब हम वास्तविक 'मनुष्य' वनेंगे। पशुभाव सहायक या और पशुभाव ही वावक हैं।

तर्कणा को व्यवस्थित अन्तःस्फुरणा में परिणत कर दो; तुम सर्वांश में प्रकाश हो जाओ। यह सुम्हारा छक्ष्य है।

प्रयत्न को आतम-शिवत के एकरस शीर महान् प्रवाह में परिणत कर दो; तुम सर्वाश में चेतन शिवतं हो जाओ। यह तुम्हारा छक्य है।

भोग को एक रस और निविषय हर्पातिरेक में परिणत कर दो; तुम सर्वांश में आनन्द हो जाओ। यह तुम्हारा लक्ष्य है।

विभवत व्यक्ति को विश्व व्यक्ति में परिणत कर दा; तुम सर्वांश में दिव्य हो जाओ। यह तुम्हारा छक्ष्य है।

पगुको गोपाल में परिणत कर दो; तुम सर्वांश में 'कृष्ण' हो जाओ यह तुम्हारा लक्ष्य है।

### मनुष्य अर्थात् पुरुप

परमेश्वर प्रकृति की ओर झुकना नहीं छोड़ सकता है और नाही मन्ष्य ईश्वरत्व के प्रति अभीष्मा करने से एक सकता है। यह तो सान्त और अनन्त का नित्य सम्बन्ध है। जब वे एक-दूसरे से विमुख होते हुए प्रतीत होते हैं तो यह जनका और भी प्रमाढ़ मेल से मिलने के लिए पीछ हटना होता है।...

परमेश्वर और प्रकृति एक वालक और वालिका के समान हैं जो कि एक दूसरे के साथ खेलते हैं और प्रेम करते हैं । दृष्टिगोचर हो जाने पर वे एक-दूसरे से छिपतें और भागते हैं ताकि उनको फिर खोजा जाय, पीछा किया और पकड़ा जाय।

मनुष्य वह परमेश्वर है जिसने अपने आपको प्रकृति-शिनत से छिपाया हुआ है ताकि वह उस शिनत को संघर्ष द्वारा, आग्रह से, जबदंस्ती से और आश्चर्यमय उपलम्पि ने रूप में पासने, परमेदार वह विदास्थापी भौर विदेव से ऊषा उठा हुआ परा पर मनुष्य है, जिसन अपने आपनो मानवीय रूप में विद्यमान अपने ही

व्यक्तिस्य से डिपाया हुआ है।

पमु मनुष्य है जो कि बालांबाकी शाल ने वेच में है और पार दाना पर सदा होता है। कृषि मनुष्य है जो समी मनुष्यता में विवास नी बोर मुख्यानुद्रता रंग रहा है। यहां तक नि जद प्रकृति के अधिवासित कर भी अपने गठन-रहित सारोर में मनुष्य ही है। सभी नत्त्रए मनुष्य है, पुरुष है।

नयाहित मनुष्य से हम नया लिनियाय केते हैं ? एक अब और श्रीमनाती लाग्मा जो लपने ही सत्वी से बने हुए मन और शरीर में बात कर रहा हैं।

अन्त

मनुष्य और परमेशकर के मिलने का मतलब सवा गरी हो सकता है कि ईश्वरीय दिश्यता का मनुष्यता के अपनर स्वार क प्रवेश ही जाय तथा मनुष्य देखरीय दिष्यता से अपनर अपने आप का पूरी सरह निमाजन कर दें।

िननु यह आगम-निमन्त्रन आरव विनास के कर का नहीं हैं। इस तब स्तीन और आवेत, दुस और तक्सात का परिमास उक्तेद्र नहीं हैं। देदि यही देसरा अस्त होता होता हो। यह नेल बच्चे प्रारम्भ ही न हमाहोता।

"भीर इस सारी बात वा अन वता है? मानों मधु अरने आपका और अरने अन्य बिटुओं का इन्दुका त्याद के तने और इतको तब बूदें एक दूसरे वा स्वाद ते तक तवा इतकी अर्थक बूद अपने आपने तीर पर गार्थ मधु-ताने वा स्वाद के तके, ऐसे ही परनेवार और आपबीय आपमा और इन विश्व वा मनत होगा।

मेन सारि रदर है, बारूद गरीत है, प्रशिष्ट भागात है, बात गायत है, यह मान्य गरीया उत्तरा रचिद्या मोर बाता है। बभी हम केश प्रारंभिय मेनुरे रदरों को जाती है जो उन्ते ही यवजर है, बितानी दि उत्तरी स्वत्रस्ता महेल् होगी। नेदिन हम एक दिन मयान हो। दिन्य काचायन जानारा ने समृह-सगीत तक पहुच आयमें।

#### बन्धन

स्थनन्त्रता सत्ता वा नियम है, सत्ता वे समय एकता वे स्वस्य में और यह महित वो गुम स्वामिनी हैं। अधीनमा, उन सत्ता में विष्णमा प्रेम वा नियम हैं जो सत्ता की अधिकाम में स्थित अपनी अस्य आस्थाओं वे संख्ये में सेवा वरने वे लिए द्यानी आरकी स्वेच्छ्या औरा वर देनी हैं।

जब स्वान्तता वस्त्री में नाम नरती है और व्यक्तिना प्रेम ना नहीं, दिन्तु प्रीम ना निदम बन जानी हैं ठब यह होता है नि बन्तुओं ना साद स्पमाव विज्न और दिन्हा हो जाता है और धीवा ने छाप बारना के ज्यहरा में अनृत ना आधिपत्य ही जाना है।

हश्यानना योमानाचन-रित्य एनता द्वारा आदी है, नयोगि यही हमारा बारायिक रचकप है। इस पंत्रा के तर की हम अपन अन्दर प्राच कर सक्ते हैं तथा देशनी शीला को यो आया मनते च्या एन एक क स्मारित करके मानुक्त कर सकते हैं। यह दिक्षिय अनुभूति प्राच करता है। प्रश्ति में आग्या का सम्ब अनुभाव है।

घर्म

समार तीन मनार की नृतियों से परिविध है। स्मून, मौतन, बार्रेज सबल परिणामों को पैदा करती है। नितित और बोर्डिज नान्ति का सेव मन्यविध ध्यारक है और अपने पना की दृष्टि से यह बहुन है सनुद्ध है, परन्तु आध्यानिक नार्तिन महान बोर्डा का बोगा है।

वि इस विविध परिवर्तन का परकार पूर्व बहुए इस प्रेसिक्स हो गरे तो कार्य बिक्टुल निर्देश कर्म में होने क्या । लेकि कार्यकर्ता के बन ब्रोस कर्मीर कर्ज हुए कार्याणिकता है परक प्रवाह को कर्म में पूर्व नहरू प्रास्प बही कर गरेते। उससे बहुर कुछ बियार बाया है के प्रकृत करायणिक का क्या हुन हुए साथ करायणिक बीशो को बोक्ट एक क्षेत्रामा कल निरामने के निर्दे बीशो को बोक्ट एक क्षेत्रामा कल निरामने के निर्दे भी हमारे क्षेत्र की वहुत-सी वीद्धिक और शारीरिक जुताई की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक वर्म ने मानवजाति को सहायता पहुंचायी है। पैगनिज्म ने मनुष्य के अन्दर सीन्दर्य के प्रकाश को विकसित किया है, उसके जीवन की विकालता कीर उच्चता को बढ़ाया है जीर बहुम्खी पूर्णता के उसके उद्देश्य को उन्नत किया है। ईसाइयत ने उसे दिव्य प्रेम और दयालुता व सहदयता का कुछ दर्शन कराया है। बौद्ध धर्म ने उसे अधिक ज्ञानी, अधिक विनीत और अधिक पवित्र होने का एक उत्कृष्ट मार्ग दिखाया है। यहूदी वर्म और इस्लाम ने इसे धार्मिक भाव से किया में सच्चे होना और ईश्वर के प्रति उत्कट भिवत बाला होना सिखाया है। हिन्दू धर्म ने उसके आगे वड़ी-से-बड़ी और गहरी आध्यात्मिक संभावनाओं को खोल दिया है। एक बड़ा काम सिद्ध हो जायगा, जब ये सब ईश्वर-दर्गन परस्पर आलिगन कर लेंगे और अपने आपको एक दूसरे के प्रतिरूप वना लेंगे। पर वीद्धिक सिद्धान्तवादिता अहंकार मार्ग में वावक है।

सभी घमीं ने बहुत-सी आत्माओं को वचाया है, पर समग्र मनुष्यजाति को आध्यात्ममय बनाने में अभी तक कोई समर्थ नहीं हो सका है। इसके लिए नो किसी सम्प्रदाय या मत की आवश्यकता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दिशा में आत्म-विकास प्राप्त करने को एक स्थिर, सतत और सर्वांगणीय प्रयत्न की अपेक्षा है।

आज हमें संसार में जो परिवर्तन दिखायी देते हैं वे अपने आदर्श और उद्देश्य में वौद्धिक, नैतिक और भौतिक हैं। आध्यात्मिक क्रान्ति अपने अवसर की प्रतीक्षा में है और इस वीच में वह केवल कहीं-कही अपनी लहरों को उछालती है। जवतक यह नहीं आ जाती, दूसरी क्रान्तियों का मतलव समझ में नहीं आ सकता और तवतक वर्तमान की घटनाओं की सव व्याख्याएं और मनुष्य की भविष्य सम्बन्धी सव कल्पनाएं व्यर्थ हैं; क्योकि यह उस आध्यात्मिक कान्ति का स्वरूप, शक्ति और परिणाम ही है जो हमारी मानवजाति के अग्रिम चक्र को निश्चित करेंगे।

### सूर्यास्त!

हरिभाऊ उपाध्याय

श्री अरिवन्द इतनी जल्दी देह छोड़ देंगे, इसकी स्वप्न में भी किसीने कल्पना न की होगी। एक ही दिन पहले तो देह की अमरता के विषय में हम अरिवन्द- लाश्रम ने कुछ सावक भाइयों से वातचीत कर रहे थे। श्री अरिवन्द ने अपने यौगिक या आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर शरीर के जड़ अणुओं को भी चेतनायुक्त, चेतनामय करने की संभावना बताई है। यह कितनी ही अद्मुत क्यों न हो, समझ में आने जैसी बात है— इसकी हम लोग चर्चा कर रहे थे। श्री अरिवन्द ने जो सिद्धि प्राप्त की है, उसकी पहुंच अभी यहांतक नहीं हुई है, शायद वह इन दिशा में प्रयन्नशील हैं— यह दान भी चली थी। मन और प्राण में तो वह अतिमानस को अवनरित कर पाये है, जिसके वल पर वह

मनुष्यजाति का स्पान्तरं करने का मार्ग पा गये हैं; किन्तु रारोर की जड़ इंद्रियों में उनका प्रवेश नहीं कर पाये हैं। कुछ लोगों को यह बागा भी थी कि श्री अरिवन्द इसी शरीर में उसे सिद्ध कर सकेंगे; किन्तु परमात्मा को लीला विचित्र है। दूसरे ही दिन सुबह हमें यह स्तिम्मत कर देनेवाला संकेत मिला कि जाओ, श्री अरिवन्द के अन्तिम दर्शन कर लो। में समझा, आज गायद किनी कारण से श्री अरिवन्द ने पांचवी बार दर्शन देना पसन्द किया हो। (सिद्धि प्राप्त होने के बाद वे वर्ष में कुल चार वार ही साधकों और भवतों को दर्शन दिया करते थे।) रास्ते में उनके कुछ शिष्य मिले, जिनके चेहरों पर नदैव की भांनि मुस्कराहट व शांति छाई हुई थी। किन्तु जब उनके दर्शन की अमिलापा

और उत्मुक्ता से उनके कमरे के द्वार तक पटुका तो एक लगी बीकी पर उनके मध्य धारीर की बिट लेटा हुआ, जनकी दिश्य गौर मुनाकृति को परम शानिमय. उनकी आंधों को मुंदा हुमा—मानो गहरी नींद छ रहे

हो-देशा और गाय ही शरीर में निश्वलना देवी तो में सप्त रह गया। एवं विजली वे झटने की सरह दिमाग में अन्तिम दर्शन का अर्थ सदर गया। दिवर यह नमा देश रहा हु---इतना साधने ना भी शामध्यैमन-बृद्धिर्मे स

रह गमा। एक यन्त्र की तरह उनको अन्तिस प्रणास बारके समारे ने बाहर निकला हो इन्छ शय बाद ऐसा मालूग हुआ मानों कोई सपना देन रहे है। थी अमनाई पुरापी के कमरे में गया तो यह कुछ मित्रों वे साम इस तरह बावें कर रहेथे, बाना कुछ ह्याही न हो ! मुझ उ बरत हस्तर बानें की ! यह थी अरबि द वे गाम मापरी भे हैं। उन्होंने बहा, थी बर्रावस्य का शरीर सुष्ट नया । जाना रहा बाम इसरे गरीसें

नहीं दिक सका, बह घरा गया। इसमें क्या बात है ?

इस बायन में नुष्ठ बायन उन्हाने मुझसे महै। इम अरुन्दिन बारुन्सिए यग्रपातः पर बाध्य हे

जीवन-भांकी थी अर्थित्य का जन्म १५ लगस्य १८७२ को क्लक्से में हुआ था। उनकी शिक्षा के स्थित में हुई। भारत लोटने पर वह बड़ीस काठेज में बाइस जिमीपल नियन्त होगये । अपने विद्यार्थी-जीवन में भी वह बहे प्रतिमात्राली में । अध्यार्गन-वार्व बस्ते में, पर उनरा हृदय रिप्ती दूसरी चीज की सोज में था। वह राष्ट्रीय श्रोदोलन में सब्दिय भाग छेने छन्। और पूछ ही दिनों में प्रथम घेणी के नेना माने आते रुगें। उन्हीं दिनों उन्होंने 'बन्देशतरम' सा प्रशासन बारम स्थित: उनशी बामी तथा सेमनी में बड़ा भीत्र था। सरदार में उत्तर मुक्तमा चलाया । मई १९०८ से सप्रेल १९०९ तक अलीपुर जेल में रहे । यह समय उनरे निष् अध्यात्म-कान में शिक्षा-बीक्षा का चट्टा। कट्टने है कि यही उन्हें द्विवर के दर्शन हुए।

शन १९१० में भी अरबिन्ड पांडीबेरी में आये और सबसे निरंतर योग-सायता में सत्रात रहे । १९१४ में भी बानाजी पांडीवेरी में बाई। सबने वहीं हे और श्राधम की स्वतस्या करती है।

क्षत १९१४ में भी अर्रायन ने 'आयं' प्रतिका का प्रशास मार्ग दिया।

३४ नथम्बर, १९२६ को उन्हें थोग में निक्रि प्राप्त हुई । योग तथा मानव-शीवन की अन्य समन्याओं पर बाहोंने को महाबपूर्व पुरनके लियो है, बिनमें 'शाइफ दिवाहन' ( 'दिश्य जीवा' ) तथा 'एसेज आन योना' ('मोना पर निर्देष') बहुत प्रसिद्ध हैं ।

५ हिमाबर १९५० को राजि के केंद्र बच्चे देतान ।

साधक भाई-बहुनो न जो अर्मुत हाति, धेर्य, अवि-भेजना दिनाई बह धी अरविन्द की शिक्षा संघा शाबना के सर्वषा सोस्य थी। यीमानाजी का पेदरा क्षाया कि सहरो मोत्रन कर तेना चाहिए, विधीयो भूगान रहना पाहिए । गोन्युहा-विनिध-गृह की क्यर-रेशायका यहन ने बहा कि सब काम रोज की म विक चलेगा, छो भी गदा की मानि मद रिमत के नाप। इनका हेवारे हृश्य पर बहुत मधाय गदा । दूगरी माधिका बहन से बहुत आपह दिया वि आप रभ्य बुछ मा छै। भाने मर से याव दोड़ी देने रिभी। बाहाने एक साधारण घटता की लिंग्ट प्रयोगेक्ट हमा बाउपीय की । इपर दानियाँ एक एक करके उत्ते समरे में बाते थे. स्पेर राष्ट्र मोत सपाई ने उनका समाबिक्यण

तैशह बरने में हर रहे थे । बादडों की गटक्ट मा सक्यम ही आधान है। ने होगा । जीवणमा परमान्या ते दूर हान्या है । देव बाराबा उन रेड्डा रायको सीर फर्नडरों में से रिमी फामने को निटाने के लिए जीवरूमा विरामी 🖽 में है का एक राज्य नहीं एताई पहारा मा ४ इंग्ली बाराना है। संघर्ष कर रहा है। यो मर्शनाइ ने बहुत हुद तन इत्याँ हैं। सबब में दुर्वम होती है। हुए बहरें मन्दर्भ कही-विद्य प्राप्त की यी-साथे की संजित में उनका गरीर

कहीं कोने में चुपचाप आंसू वहा रही घी या सिसक रही घीं। यह सारी व्यवस्था आन्तरिक यौगिक अनुशासन और आध्यात्मिक वल तथा विकास की ही निर्देशक घी। सारे जगत का शिक्षित समाज जहां इस महान घटना से घर्रा उठा होगा वहां आश्रमवासियों की यह कर्त्तव्य-परायणता या समर्पणभाव अपनी एक अलग ही शान रखता है।

श्री बरविन्द का जीवन एक विकट और महान् साधना का जीवन रहा है। १९०५ ६ के राष्ट्रीय जीवन के मंथन में से एक राष्ट्रीय नेता की जगह आज वह एक महान् आध्यात्मिक सिद्ध के रूप में जगत् को मिले। ऐसे तेजस्वी, प्रभावशाली, क्रियाशील व्यक्ति का लगातार ४० साल तक तमाम जागतिक प्रवृत्तियों से अपने की • सर्वया अलग रखकर, बार-बार के जोरदार आवाहनों के प्रभावों को दूर रखकर, एक स्यान में विलक एक मकान में अपने को वन्द कर रखना मामूली साधना नहीं है। फिर वह निष्किय जीवन में विश्वास नहीं रखते थे। अकर्म में कर्म को देखने वाले सिद्ध थे। गांधीजी जागतिक तूफानों में खेलनेवाले आत्मस्य पुरुष ये तो श्री अरिवन्द समस्त जागतिक प्रभावों से अलिप्त रहकर आन्तरिक तूफानों पर विजय प्राप्त करनेवाले सिद्ध पुरुष ये। उच्च भीर दिव्य जीवन के लिए, जगत में दिव्य जीवन के अवतरण के लिए वह प्रारंभ से ही कृतनिश्चय मालूप होते थे। कवि, विद्वान, विचारक, लेखक, दार्शनिक, सायक, सिद्ध, वह क्या-त्या नहीं ये ? भारत की तथा संसार की प्रधान एवं महान् घटनाओं और प्रस्तों के प्रति सजग रहते ये और उनके कई साधकों के मत में संसार की विकट समस्याओं को अपने बह्यात्म-वल से प्रभावित करने में, घटनाओं का रुख मोड़ देने में समर्थ बीर सफल हए ये। उन्होंने जो ठाना वह अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। उन्हें यह विश्वास होगया था कि मानवजीवन का स्तर ऊंचा उटाने के लिए जिस रानित या सिद्धि की जरूरत है वह उन्हें प्राप्त होगई है। उसके वल पर अपने इसी सिद्धिदिवस पर वड़े बात्म-विश्वास के साथ उन्होंने संदेश दिया है। अतिमानस एक सत्य है और उसका आगमन स्वनावसिद्ध वस्तु की तरह अपरिहार्य है।

बाज भारतवर्षं अपने, कम-से-कम बाज तो, अन्तिम महापुरुप को खो बैठा है। आध्यातिमक जगत का सूर्य अस्ताचल को चला गया। वाषु गये-गृहदेव पहले ही चल वसे थे-रमण महीं। गये, सारे आध्यातिमक जगत की आंखें श्री अरविन्द की ओर देखने लगी थीं। यह भी चले गये ! इसमें ईश्वर का क्या संकेत है, क्या संदेश हैं ? मेरे साथ भाई बोरकर, (महाराष्ट्र के उच्च कोटि के कवि तथा गोआ के स्वतंत्रतासंग्राम के एक निष्ठावान नेता) सारी दक्षिण यात्रा में रहे। दोनों इस नतीजे पर पहुँचे कि अवतक जगत महापुरुपों के वल-भरोसे चला। अब भगवान की यह इच्छा माल्म होती है कि वह अपने पांवों के वल चले। महापुरुपों ने जो बादशं सामने रख दिया, अपने जीवन व मरण से जी मार्ग खोल दिया, उससे लाभ उठाकर चलता चला जाय। वोरकरजी ने कवि की भाषा में कहा-ये महापुरुष समुद्र की कंची उठी हुई लहर की तरह अपर उठकर हमको आगे बढ़ा गये, अब नीचे बिखरकर अपनी शिवत, स्फूर्ति, जीवन, जनता की देकर उसमें लीन हो गये। उनकी दिव्यता से जनता का घरातल और मानव-जाति का स्तर कंचा उठेगा। वैसे भारतवर्प में एक के वाद एक महापुरुप आये हैं। उनका तांता टूटा नहीं है। एक अपना काम कर जाता है और दूसरा उसके आगे की मंजिल के लिए बाजाता है। भगवान के इस अनु-ग्रह से हम निराश क्यों हों ?

वापू के जाने के बाद मेरे मन में यह प्रश्न कई वार उठा है कि वापू तथा अरिवन्द के संदेश में क्या सचमुच कोई भेद हैं ? हर वार मुझे यह उत्तर मिला कि मूलतः दोनों का संदेश एकं ही है, भगवान की उपलब्धि। वापू ने अपने सामने तो यही लक्ष्य सदैव जीता-जागता रक्खा; पर जनता के लिए उसकी ओर संकेतमात्र कर दिया करते थे, जब कि श्री अरिवन्द ने जितने जोर से उसे अपने लिए पकड़ा उतने ही वल के साथ उसे मंसार कें सामने भी रक्या। दोनों के स्वभाव, संस्कार के अनुसार इस एक ही परम सन्देश ने उनके जीवन तथा उपदेश में भिन्न-भिन्न क्ष्य ग्रहण किया। यही स्वाभा-विक भी था। उस भिन्नता में से उसमें समाविष्ट एकता को देखने की प्रवृत्ति हमारी होनी चाहिए। मुझे तो यह  राष्ट रूप से दिमाई देता है कि गुबदेव का भी सन्देश कोई अलग नहीं था। बन्नि सारे मट्रापुरुषों का सदेश मूल रूप में एक हा जाना है—यह भी दर्भन पहत हो गई। है। उतकी बोजनाओं और कार्यक्रमों की विविधना था जिल्लाओं की आस्तरिक एकता पर कर देकर हमें मारे मतक-स्थाय में एक्यूकरा कारी वाहिए ।

अब बचा करें रे-बहु प्रश्न उठता ही हैं। इनवा उत्तर मी जिन्दिन हैं। हैं। अधिक जिन्छा और वाज के साथ साबित करना है निरियत गत्युच्य की ओर विना रहे चलते चारों। एक नहीं अनेच गुरुदेव, नांधी और अर्दिन्द के देह पहने चले जाय, उनमें विचलिन न हाते हुए झाने बहुते चले जाय। अमान तथा मानव जानि का बण्यान, मनल, दिकास, मोहा, वृष्टेना साब हमीने सिद्ध होगा। यहि हमने करने दिशी भी गृह, नेना, वयदर्शन दाना स्पाद हमने करने दिशी भी गृह, नेना, वयदर्शन दान सर्वेद समारे महत्व पर दान हुआ हमना विलेशा, जिस तरह हमारे महत्व पर दान हुआ हमना विलेशा, जिस तरह हि भीदिन अवस्था में हम देखी थे, सो भी

जिसारे मानवजाति को दिश्य क्याने का, वर्गमान निम्न त्यर है। स्वतार करके स्वत पर साने का में ड्रा उठाया, तिमने निरत्नर पाणेग या में मी एमान गोपना ने द्वारा उसीर हिण माम निया, उनसे सामा गोपना ने द्वारा उसीर हिण माम निया, उनसे सामा गोपना पाण्या मामान में सिल मामान में स्वी अपूर्व मानि मामान में मिल के स्वापना से सामान मामान परिवार सामान मामान परिवार सामान मामान परिवार सामान मामान माम

गुर्न वा यदि वा हुन्धं द्रियं वर यदि वार्जप्रयम् । प्राप्तमप्राप्तमुपामीन

हुयमैनाशराजिन' ॥ हन तमाम बिमूनियों में से भगवान ना एक हो नन हमें थिने, तमोरे लिए हमारा जीवा , हमारा मरण, वब हुछ है। हनको बताम प्रवृत्तियों और कृतियों से हमें सन्देव बिल-''अरएग' भी-मेरा' नाए ! जी ताब मेरे।"

#### श्री श्ररविन्द का महाप्रयाग

हा० इन्द्रशे

सावर के लिए मुद्देश उपने महंग्य होते है, समस्य के सावान् अवितिय तथा स्थानाथ होते हैं। उन्होंनी विज्ञानीया और महान्यानुषा में बहु अन्य सम्याती सुन्द होता है तथा आन्य-ताथा बरना है। उनसे बहु देगा देग अन्यात है जो बहु मना भद्र में दिनी अन्य में नहीं बरना । स्वमान्याः नाथवं के लिए सायवाबन्या में गृह का विशोदः दूनर हा जागमा !

योजर्शान के ग्रहीर छोड़ देने का प्रथम नथा-पार गायकवर्ष ठेवा गायान्य जनता के लिए नथान का में भारी यक्ता था। यह बात किनी की कल्पना में भी नथी। सदा की मुक्कर प्रथम ना दिख्या ही नहीं हुना । जननक भावा का सोध चरा ग्राम्सही हो गेवा तकशक के इते लग्य कर में रवीलार करने में भी समयं नहीं हो पायें। जब लगार होतर तथ्य मागता पहा तक हदर भीर बुद्धि स्परमापूर्वक गूछरे लगें कि स्मातर प्रकृता पत्रों भीर केंग्रे ?

जनना ने सामाज कर में देश और जाती वे गृह मार्ग्नु नेता हवा कार्य भोर देशों ने देशमान वर्ष हुंसा अनुस्व दिया हवा जाते. जीता व नार्य का नेवर कर कार्य का नेवर कर के भागा और तेम्बा गीत्र माना। प्राथम ही बीजर्सकर के भागा और तेम्बा गीत्र माना। प्राथम ही जिल्हा की ही जावन कार्यु है। जनका जावन मार्ग्स के हिंदूल में मार्ग्स मार्ग्स के प्रदेश कर होता लगा कार्यों कर निर्देश और उत्तर, तमारा विद्वाला ना सामार्थिक निर्देश और

प्रभाव के कारण विशेष उच्च स्थान रखता है। उनके ग्रंथ भी सामान्य वीद्धिक रचना नहीं हैं। वे सव वाध्यात्मिक अनुभव की उपज हें और उन्होंने अपूर्व रूप में भारतीय संस्कृति को हमारे लिए पुनरुजीवित कर दिया है। आज के समय में उनके व्यक्तित्व तथा ग्रंथों से देश और संसार में जो आध्यात्मिक जिज्ञासा प्रसारित हुई है वह भारत तथा संसार के लिए विशेष महत्व की वस्तु है। जनता ने भी अरिवन्द के इस सव विस्तृत कार्य तथा प्रभाव का चिन्तन कर उन्हें अपनी श्रद्धांजिल अपित की है और दिवंगत आत्मा के लिए मंगलकामना की है।

परन्तु साधकवर्ग तथा वे जो श्री अरविन्द के विशेष आध्यात्मिक ध्येय तथा कार्य से परिचित हैं श्री अरविनद के देहावसान में एक विकट समस्या अनु-भव करते हैं। वे महसूस करते हैं कि श्री अरविन्द अपनी मुक्ति-मात्र के लिए साधना नहीं कर रहे थे। अपने साधकों की मुक्ति भी उनका लक्ष्य नहीं था। उन्होंने तो स्पव्ट रूप में अनुभव किया या कि मन से उच्चतर एक अतिमानस तत्व है जो पृथ्वी स्तर पर अनिवार्य रूप में प्रकट होना है। वे वतलाते हैं कि जड़, प्राण गौर मन के विकास-क्रम की स्वाभाविक परिपूर्ति अतिमानस में होगी । मन अत्यन्त अपूर्ण वस्तू है। यह मानव की सामान्य चेतना का अन्तिम रूप नहीं हो सकता। पणु की चेतना से वर्तमान मानव-चेतना विशालतर है; परन्तु यह भी वस्तुओं के बाह्य रूपों को ही ग्रहण करने में समर्थ होती है। सत्य को साक्षात रूप में अनुभव चरनेवाली पूर्णतर चेतना मानव का स्वामाविक घ्येय और लक्ष्य है और यह पृथ्वी स्तर पर मानव-चेतना में एक दिन चरितार्य होनी चाहिए। श्री अरिवन्द यह भी बतलाते थे नि यह चेतना योग की प्रमाद एकाग्रता हारा शीवृतर भी सिद्ध की जा सकती है। वही बास्तव में उनका ध्येय था। इस ध्येय को वे अपने जीवन-काल में ही पूर्ण करने की आज्ञा रखने थे। इस नंबंध में उन्होंने दो-एक अपने पत्रों में काफी स्पष्ट रूप में कहा है कि यह कार्य अभी पुरा होना है।

इस प्रकार के कुछेक प्रकरणों के आधार पर श्री अरिवन्द के आध्यात्मिक अनुयायियों ने यह आशा बना ली थी कि जवतक उनका काम पूरा नहीं होता तवतक श्री अरिवन्द निश्चित रूप से उनके बीच उपस्थित रहेंगे। इसके अतिरिक्त अतिमानस की शक्ति से वैसे भी व्यक्ति को 'यथाइच्छा जीवन-काल' प्राप्त हो जाता है। अतः इन अनुयायियों ने श्री अरिवन्द के देहावसान पर विशेष धक्का अनुभव किया। वे गम्भीर रूप में सोचने लगे कि यह क्यों हुआ, और कैसे हुआ?

श्री अरिवन्द ने अतिमानस, इसके अवतरण तथा अवतरण के मार्ग की किठनाइयों तथा विघ्न-वाधाओं की निष्पक्षभाव में वैज्ञानिक शैली से व्याख्या की हं। अतिमानस की सत्ता तथा इसके अवतरण की अवश्य-म्माविता के बारे में उन्होंने पूर्ण निश्चय से लिखा है। परंन्तु अवतरण के लिए कभी तारीख नहीं बांधी थी; क्योंकि उसके लिए अनेक अवस्थाओं की अनुक्लता चाहिए।

अतिमानस के संबंध में वे कहते हैं, "मैं इसे (अतिमानस को) उत्पर से अपनी चेतना पर प्रकाशित होते लगातार अनुभव करता हूं और में यही यत्न कर रहा हूं कि उपयुक्त अवस्थाएं पैदा की जायं जिससे पूर्ण व्यक्तित्व को अपनी स्वाभाविक शक्ति के प्रभाव में ले लें।" यही उनका परम करणीय कर्म वन गया था। अतिमानस को मानव के मन, प्राण और शरीर में अवतरित करना, इस अवतरण द्वारा उन्हें रूपांतरित करना ही उनके आध्यात्मिक कार्य का लक्ष्य था। आरोहण द्वारा भगवान् तथा आत्मा की प्राप्ति ख्व कंचे आध्यात्मिक लक्ष्य हैं, परन्तु उनका कहना था कि इससे मानव को अपने संपूर्ण जीवन में भगवान् का स्पर्श प्राप्त नहीं होता । जवतक व्यक्तित्व के सभी अंगों का दिच्यीकरण न किया जाय, निम्न प्रकृति उच्च प्रकृति में परिवर्तित न हो जाय, तवतक मानव का भगवान् के साय पूर्ण मिलन, जैसा समाधि तथा चिन्तन में वैसा ही कमं तया व्यवहार में सिद्ध नहीं होता। यह सिद्धि तभी हो सकती है जबकि अतिमानस तत्व की शवित को हम अपने दारीर के भौतिक तत्व तक में उतार लायं और फिर उसीसे अपने विचार-

श्लैटसं बाव बी वरविन्द, २, पृट्ठ ७३,

विवार में तया त्रिया-त्रिया में अनुप्राणित हो ।

इस अवनरण मी श्रीका के बारें में को अर्थवन्त ने सुब विस्तार से लिया है। एक जबह वे बनावन है, "यह अवनरण अपने आपमें कुछ उच्छोगाल तथा मोत्रवें में चीन नहीं। यह एम गीन्त्रील, कुछेन क्यों में गीमिन, विकास प्रतिकाह को बनेबाल अहर्तत को अपने सदस में पहण करने इसने निम्म तन्त्री में अपने तरत को उवेल देती हैं। यह कार्य मारे से प्र पर एक्टम नहीं क्या जा सरना, बन्नि अन्य एवे त्रमों भीतरह यह पहले कुछ चुने हुए साचारी में करना होना है और फिर उसे विस्तृत किया जाता है। हमें (सी अर्थियन और माराजी) पर्श्य मा जबर सामगें पर यो हमारे पात एक होने भी क्या जन सामगें पर यो हमारे पात एक हमें हैं। (बहों एक ८२)

श्री अर्थाव्य इस वार्य वी व्यक्ति ह्यां तथा जनेर प्रशाद में विक्रम-सामाओं का बार-बार काउन देने देहें है। मारीद के प्रीतिक आग में प्रशास पहुंचाना के हैमेसा विशेष विक्रम क्षतानों थें। एक जगह उन्होंने बहा है, "अमेतन में प्रशास पहुंचाना महा कठिन नाम है।" परन्तु मर नाम दिशे बिना प्रश्नीत का क्षाम प्रमान नरी। चारना के में ने जह जाती है से का पर होक्द उनकी छापना जमें के जह जीविक तह मे समर्थ के देशे थीं। यह एक क्षामा मार्थिक दियां में और हो अध्यक्ति करने में हो यो अपिकर ने करने जीवन की विक्रि है।

भी बर्रावर के भीवन की मानिक गाँउ उनका साम्मासिक सद्या गुरुवरवाद था । वे घटनाओं वे भोने में नहीं आते थे । वे आते में हे जनता में वि जनता की घटनाओं के सारण हुए वेचन करने जी मानिक प्रतिवादियों है। वे किए सीमें पर्शी कर दिया परते में। समने सीमानिक मार्च की वाद की प्रतिवाद करने जनता स्थान नार्च, विशेषकर करने जनता स्थान नार्च, विशेषकर करने जनता स्थान करने हुए हैं। वाद की सीमानिक करने मुद्द की परा है। वाद की सीमानिक करने में बीच जनता सीमानिक करने मानिक सीमानिक करने सीमानिक क

उनका महाप्रयाण खबरय ही अपेतन में धाउमान-सिर प्रकाश के अवतुरक्ष-मवधी एक अनिकार्य घटना यो, बह मानव-श्यानर के महानु आदर्श के लिए बनि यो तया अतिमानम् वे दिश्य सन्य के निए वित्रदान या। इसके अभिश्वित उनके प्रचा का दूसरा अर्थ हो नहीं सरता । उनका सारा जीवन है। एम्भीर बाध्यारिमर यम तथा आगम-निवेदन था, महाप्रयान का महारमें केवल परम आन्य निरेदन ही हो छाता है। परन्तु बया इस आत्म-निवेदन से अतिमानन के अवतरण का कार्य हक आयया या गीमा पढ़ आयगा ? यदि मृश्य सामान्यनया भी जीवन ना बन्त नहीं होती. विस्त नवे और अधिक विकत्ति नीया का साधन हाती हैं तो भी अधिकद अंक्षे आ मदेला के रिए तो यह स्था तरह भी बाचा या दशावद नहीं बन सन्थी, बन्ति यहीर पर अतिवानम ने एक प्रयोग में जो जन्-भव प्राप्त हमा वह माबी कार्य के लिए जरूर ही गहा-वर होता, और नया पता रि यह सामय मानी नार्य ने लिए शावद अनिवार्य हो गया या।

सह हुन विद्यागतुर्वन वह नकी है कि यदि यो सर्वानः सब भी बही सर्वानः हैं जो ये जीवन-मर रहे हैं और यह साराव के समराव में होना स्वित्यार्थ है तो ये स्वरंग स्पेत्र की स्वित्यार्थना ने गिए सब भी जन्द परवत्तीत है, और उनने मन्त के निए उपयुक्त योग भी उनका साना साराव हो हो उनका है, मही उन्होंने दुनने कम्म से जी हक साराव पर विद्यान में हैं, हो होना होना हम कारच और भी जन से हैं, क्योंकि सी माताबी, जिस्होंने सेक्टन-मर उनके गाम दसी से मही क्या सी सर्वानः ने स्वरंग पर पर स्वरंग कर रही हैं हमा सी सर्वानः के स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग मही सर्वानः के स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग महा स्वरंग हो स्वरंग से स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग से स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग से स्वरंग स्वरंग से स्वरंग स्वरंग स्वरंग से स्वरंग स्वरंग से स्वरंग से स्वरंग से स्वरंग से स्वरंग स्वरंग से स्वरंग स्वरंग से से स्वरंग से स्वरंग

सद यह हुन पर निर्मेष करता है कि हम जनके हाद बबरा माधिक संख्या कोहें, जनने एक-हार्यन प्रान्त करें स्मेर एक यद प्रदर्शन सा दृष्णा सोन गर्वकार के हाद अनुसार करें, जनक वह सहन्य हिम्म नगर, बहु महिमानक, सानकलना से डॉफ्टिन न ही बाद ।

### ठकरवापा को श्रद्धांजिल

''ठक्करवापा असाधारण कार्यकर्ता हैं। वे निरहं-कारी और नम्म हैं। वे प्रशंसा के भूखे नहीं हैं। उनका काम ही उनका एकमात्र सन्तोष और मनोरंजन हैं। बुढ़ापे के कारण उनके उत्साह और जोश में कोई कमी नहीं आई है। वे खुद ही एक संस्था नौजवानों के लिए एक नमूना है।

"...ठक्कर वापा जबसे काम में पड़े, न कभी आराम किया और न चैन लिया।

''ठक्करवापा के जीवन का मिशन अस्पृदयों और दिलतों की सेवा करना रहा है।...'स्व' से अधिक उन्होंने

हैं। वे अपने जीवन के मिशन में जो शक्त लगाते हैं उसे देख कर उनके आस-पास के नीजवान भी शरमा जाते हैं।"

--मो. क. गांघी

, ''ठक्करवापा के निधन से भारत ने अपना एक और अनुरक्त सपूत और सेवक खो दिया, जिसकी स्थान-पूर्ति संभव नहीं। उन्होंने गरीवों की सेवा के लिए, चाहे वे मजदूरों में हों, चाहे हरिजनों या आदिमजातियों में. अपना जीवन अपित कर दिया था। अतः भारत के दरिद्रनारा-यण ने उनके देहावसान से अपना सच्चा वापा खो दिया ।...अपने

#### ठक्करवापा की जीवन-क्तांकी

२९ नवम्बर सन् १८६९ को भावनगर के एक लोहाणा परिवार में जन्म, १८८६ में मैट्रिक पास किया। १८८७ में पूना-इंजीनियरिंग कालेज में भरती, १८९० में एल० सी० आई० परीक्षा में उत्तीणं। १८९१ से ९९ तक जी० आई० पी० रेलवे (काठियावाड़), बढ़वान और पोरवंदर में नौकरी। १८९९ से १९०२ तक पूर्वी अफीका, में युगण्डा रेलवे में और १९०४-५ सांगली राज्य में इंजीनियर के रूप में कार्य। १९०५ में वम्बई म्युनिस-पैलिटी के रोड इंजीनियर नियुक्त हुए। १९०६ में पत्नी का देहान्त, १९०८ में दूसरा विवाह। १९०९ से १९१३ तक विभिन्न समाज-सेवी संस्थाओं के संचालकों से संपर्क और दीन-दिल्तों की सेवा की प्रेरणा। १९१० में दूसरी पत्नी का भी देहान्त। १९१३ में पिताजी का स्वगंवास। १९१४ में सर्वेन्ट्स ऑव इंडिया सोसायटी के आजीवन सदस्य वने।

१९१४ से अन्त समय तक दीन-दिलतों की अनयक सेवा।

१९ जनवरी १९५१ की रात को ८–२० पर देहान्त। हमेशा सेवा को महत्व दिया है।

''उन्हें अपनी पीढ़ी का महापुरुष मानने में हमें सदा गौरव का अनुभव होगा और अगली पीढ़ी उनके उदा-हरण से सदैव प्रेरणा और मार्ग-दशंन प्राप्त करेगी।"

—वल्लभभाई पटेल
"भारत की दिलत
जातियों में नवजीवन
के ठक्करवापा एक
प्रमुख निर्माता थे। उन
जैसे संत का मुकावला
कर सके, ऐसा आज कोई
भी तो नहीं बचा है।"
—च. राजगोपालाचार्य
"ठक्करवापा के
देहावसान से मानवता
का एक मूक निसस्वार्य
सेवक, हरिजनों का

पीछे वह एक अनुकरणीय और स्मृहणीय आदशं छोड़ गये हैं।" ·

—-राजेन्द्रप्रसाद

"ठक्करवापा के लिए, जांत-पांत और प्रान्त-प्रान्त का कोई भेद नहीं था। सारे हिन्दुस्तान में जहां कहीं दुःख हुआ, जहां कहीं आफत आई, वहीं वे पहुंच गये। इसलिए उनका जीवन हिन्दुस्तान के मुखिया और आदिवासियों का रक्षक चला गया।"
— जगजीवन राम

"पूज्य ठक्कृरवापा के देहावसान से गोखले और गांघी की श्रृंखला की एक और विक्क अंतिम कड़ी टूट गई।"—वियोगीहरि

"वे स्वयं प्रकाशमान् हैं और उन्होंने अनेकों को सेवा और त्याग का प्रकाश दिखाया है।" —महादेवनाई

#### दीनवन्ध्र ठक्करवापा

यशपाल जैन

पुण्यस्त्रीर ठाररवाश का स्वाम्ध्य वैसे इधर बाफी दिनों से अच्छा नहीं था, पिर भी अस्त ,नहीं भी नि उन जैसा प्राप्तान स्पन्ति अनामास उठ जायगा । वर्द बार हृदय का दौरा हुआ, जाना . वी प्रयोति मद होगई, लेकिन वर्मपानी बापा ने हार नहीं मानी और मीत को चनीती दत हुए जीवन क अन्तिम क्षण तुर सेवा के काय में जुट रहे। अभी दा ही दिन पूर्वही मालून हुआ थारि बापा वे पैरा पर मूजन आ गई है, जो गुम चिन्ह नहीं या, पर विद्ठी आदि लियाने या नार्य दुरशायित तत्त्ररता से बर रहे हैं तो मेरा हृदय गद्गेर हो गया। निदलय ही ऐसे बमेंठ व्यक्ति का अपनी बोद में लेडे इस मृत्

भी छवा गई होगी। · बारा मा जीवन अमण्ड तमस्या ना जीवन नहा या। गुरू के बूछ वर्षों में हम उन्हें इबीनियर के रूप में भारत में और पूर्वी अफीना में काम करते हुए पांत है। बर मानी बाद में जीवन की सैवारी थीं। इनीनियर का नाम विगडे को बनाना और नये का निर्माण करना ्होश है। बारा ने लगभग ४० वप हर दि स्थार्थ भाव से बही बाम सिया और बहुत अध्ही तरह में । हमारे राष्ट्रीय जीवन के कोड़ को दूर करते उसे सबा बीका प्रदान मरने ने लिए उन्होंने अयम परिचम शिया। देह नही यल रही है, अर्थि दाम नहीं दे रही है, पर बारा की विधान नहां ! मापारणाया ८० वर्ष की आयु में शीन कर्म-क्षेत्र में अवदान बहुब देत है, देशिन बाता ने तिए उनना नाम ही विधाम था।

बापाने देश की मूलमूत बुगई का देशा और उत्ते दूर करते में मानी मारी वर्णत लगा दी। अवी बा तो सभी उठाते हैं, जेविन जा निसे बो सरह बर मन-बुदी से और प्राप्ततापूर्वक उठाया है कर नशन् पुष्प और यम का मानी होता है। भारत के ट्रिक्कों, मार्ट-वातिया एवं सन्य तपारियतं दिन्तं वानियो के लिए मानी बाता मयबार् व भेदे देवपूर्ण व । उन्यु नेद्राण्याको

विश अवस्था ने उठाया, उन्हें छाती से लगाया, उनमें प्राप्त करें और अपने वैशा चटने के लिए सदा बर दिया। वियामी वर्ष की आयु पाता आत के तमाने में बड़ा कठिल काम है। उसमें भी कठिन काम है उस एम् तर काम करने की शमता बनाये रसना । यह महान गायत के लिए ही समय है। बापा में धाना जीवन प्रम के काम के लिए सपित कर दिया था। इसीने प्रमन्देश-तिम दाण तथ इस संवातनी की कार्यक्षम बनाव सामा।

बहां सभा सेवा नी पुतार आई, टक्सरबास वहां पहुचे। बारू ने एव यार उन्हें लिगा दा हि जब काम होता है, तुम 'पयन-येग' छे दौरकर आहे हो। हेनी की बारा की वर्मटा। और नेवा में लिए लगन ।

सबम्ब हमारा बडा दर्भाग्य है कि हमारे मार्ग-दर्शन सर्वे एक-एक करने हमता विल्डा जाररे है। शायद यह देलने के लिए कि हम उन्हें भएना बहते के वित्तते अधिकारी है और उनकी गेवामा गे हमने बना सीला है, रिनवा अपने को नैवार विया है। शापा को अपना करते के अधिकारी हम तभी हाने अब हम उपने बमुरे नार्य को पुरा करने से लिए क्रामतमा हाकर उसमें बट बायने । टक्करवापा का काम मीम का बाब बा, जियही मजबूजी के दिना कोई भी देना-रत अधिक दिन दिक नहीं यकती । सभी धनीनियर और दुर्श्यों बागर इन सम्य को अम्मी तरह से जाती से । इसी(क्ल उन्हाने चारीम वर्ष तर भारत भी नीय का पुत्रमा करन का प्रदान हिंगा।

बास के नियन ने बाद हरियना, मादिवानियीं साहि का गुक्त करा तथा । सारत का रायद ही कीई बाता देवा हारा, बहा बचा ने अपने इन देवांगी की महारा न दिना हो। याने एने 'बार' भी छ का साप्र व बनाव मण्युत करें ना स्वामाविक हो है। बागा का नदहर राधेर चना यदा, रेहिन प्रनड ग्रहण मारत है इतिहुन्तु में स्वर्णांत्रसें में लिये जनसी ।

"बारा की सेवा ने हिन्दोन्तान को बडाया है।" — मो. क. बीची

## हिन्दी साहित्य सम्मेलन कोटा-ऋधिवेशन

#### विशेष प्रतिनिधि

गत दिसम्बर में २६ से २९ ता० तक कोटा में एक मेला हुआ। वह मेला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक उत्सव के रूप में हुआ था। ४० वर्षों से वह भारत के निसी-न-किसी कोने में प्रतिवर्ष होता है। उसका महत्व है। सम्मेलन एक शक्तिशाली संस्था के रूप में देश के सामने रहा है। वह देश की भाषा का प्रहरी वन कर आया । भाषा के रूप में वह देश की वाणी बना। उसे देश के अनेक महाप्राण महात्माओं, महा-पुरुषों, विद्वानों, साधकों और कर्मयोगियों का सहयोग मिला। वावजूद अनेक असंगतियों के उसे सफलता भी मिली -वह सफलता जिस पर कोई भी संस्था गर्व कर सकती है। यद्यपि उसने साहित्य का कोई विशेष हित-सावन नहीं किया, पर यह मानना पड़ेगा कि उसने साहित्य के शरीर अर्थात् भाषा की रक्षा करने का अनयक प्रयत्न किया। उसके कर्णधारों में जहां सरस्वती के मुक सावक थे वहां देश की नैया के खिवैया भी थे। उन सबके नाम विश्व-विश्वत हैं। उनका तप फला-फला, राष्ट्रको राष्ट्रवाणी मिली। वयने इतिहास में सम्भवतः पहली वार समूचे भारत को, राजनीति के क्षेत्र में ही सही, एक भाषा-भाषी होने का गौरव मिला। आनेवाले युग के इतिहासकार इस गौरव को अभ्तपूर्व कहेंगे, उन्हें कहना पड़ेगा।

जिस सम्मेलन को इतनी सफलता मिली उसकी चितित की याह कीन ले सकता है? कोटा-सम्मेलन में बहुत से लोग उसी यक्ति के प्रति श्रद्धा प्रदक्षित करने पहुंचे थे। पर उनके अचरज का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने देखा कि सम्मेलन की खित आकोश और घृणा की यक्ति है। आकोश और घृणा कायर के श्रस्त्र होते है। सम्मेलन अवतक विद्रोह में से शक्ति पाता रहा था, पर विद्रोह का कारण जैसे ही समाप्त हुआ वैसे ही उसकी यिन भी चोखली हो गई। रचनात्मक कार्य के लिए जिस यिन और साधना की पूंजी की आवश्यकता होती है वह उसे नहीं मिली, मिल मी नहीं सकती थी। उसके लिए नए प्रकार के साधकों

की आवश्यकता होती हैं। वे सावक उसके प्रांगण से दूर हैं और जो इनेगिने उसके पास ये भी उन्हें हमने इस वार वहां वहुत ही उदासीन और चिन्तित पाया। . वे जैसे वहां ये ही नहीं, जैसे हाजिरी देने को गए और लौट आए। सचमुच इस अधिवेशन में उनके दिल को . ठेस लगी होगी। प्रत्येक समझदार व्यक्ति के हृदय को ठेस लगनी चाहिए।

हमें सम्मेलन की आन्तरिक राजनीति से यहां कोई सम्बन्ध नहीं है।। हम उसकी चर्चा नहीं करेंगे, पर जिस रीति से इस अधिवेशन में कार्य-संचालन हुआ वह सरस्वती के वरद पुत्रों को लजाने वाली तो थी ही, राजनीति के खिलाड़ियों के लिए भी शोभनीय नहीं थी । जहां तक स्वागत-समिति का सम्बन्ध है वहां तक सव ठीक ही था। त्रुटियां थीं और कहां नहीं होतीं; पर जिस रीति से, जिस स्नेहमयी सद्भावना से उन लोगों ने कार्य किया उससे सम्मेलन के कर्णधार बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनके नाम गिनाना मात्र शिष्टाचार की वात है; पर उनके नेता श्री बुद्धसिंह वापना ने जिस स्नेह और सौहार्द का परिचय दिया वह वहतों को बहुत दिनों तक याद रहेगा। कुछ लोग ऐसे मेलों में पुरानी मित्रता दृढ़ करने तथा नई मित्रता स्थापित करने जाया करते हैं। उनकी दृष्टि से भी यह अधिवेशन बुरा नहीं था। स्थानीय साहित्यिकों का एक दल वहां निरन्तर उपस्थित रहता था। उनमें सर्वश्री रामचरण महेन्द्र, राजेन्द्र सक्मेना, जगदीश 'पलायनवादी' आदि कुछ माई अव मात्र स्थानीय ही नहीं रहे हैं। आगत महानुभावों में सर्वेशी रामवृद्ध वेनीपुरी, बारसीप्रसाद सिंह, महाराजभुमार टा॰ रवृवीरसिंह, वियोगीहरि, भदन्त वानन्द कौसल्यायन, प्रभाकर माचवे, कन्हैयालाल मिश्र प्रमाकर, देवेन्द्र सत्यार्थी, चन्द्रीवली पाण्टे, वेटव वनारसी, विष्णु प्रभाकर, डा० सुघीन्द्र, कुमारी कंचनलता सब्बरवाल, राघादेवी गोयनका, गोपालप्रसाद व्यास, प्रो॰ अयोध्याप्रसाद, रामनाय मुमन, प्रमुदयाल मित्तल वादि का एक स्थान पर इकट्ठा होना किसी भी

संधिवेशन की सफलना का प्रमाण हो सबता है। कुछ नाम स्मृति से उतर गए ह पर एक नाम है. जिसका इस गुर्वा में जानवड़ा वर नहीं दिया गया है। बैसे ता नेताओं में भी वहा अनेक व्यक्ति थे। कार्यस के प्रधान दंह रजी, केन्द्रीय सरकार के राज्य-मंत्री दिवानरजी, राज-र्रवान के नत्नालीन प्रधान मनी श्री ही शलाल हास्त्री. मोदा-नरेश, समाजवादी नेना थी जबप्रशासनारावण, सेठ गोबिग्ददास मादि के नाम विशेष जरेशनीय हैं: पर जिस नाम को हम चर्चाकर रहे हैं वह है इस मनिवेशन के समापनि थी अवस्य विद्यालकार का । थी जयपन्त्र विदालकार भारत है। प्रसिद्ध रजिलायकार है। जबतर हम चन्ते गृही मित्रे थे, देवल जनशी प्रतरी द्वारा बनते परिचय प्रान्त रिका चा. तहनव हमारे मन में उनरे प्रति अगाय खडा थो: पर प्रयम धार उनते मिलने पर बह शका हिनो और इन ४-५ दिनों में तो हुमें ऐंगा लगा जैसे हमारे सामने भारत मा एक मनस्यी इतिहासगार नहीं है, बन्दि जी ३ और मात्रीम की सारार प्रतिमः जास्यित है। अपने भाषण में. सार्थमनिक ब्रावश गोर्थ्डर सवस की बार्ना में कडी

विषारों वा बोई मध्य मही है, पर धनि जो स्मरण रहे परी संस्मरण है, इमितए हम अपने मनीमाबी की म्यस्य करने पर विषया है। उनने सिद्धान्तों की से रूर हम विवाद नहीं करेंगे । चन्होंने सरकार पर जो आक्षेत रिए उनने थिया में भी नुछ नहीं नहना है । सरकार गलती राजी है तो पसरी आठोपना होनी ही चाहिए। गांपीयो सब मही है, पर इमना सामय यह नहीं है नि सब उनसे मतभेद नहीं हो सहना। बनतंत्र के यग में मनभैद को प्रकट करना जन्मजात मधिकार है. पर दाग बही है जिस भागा में भीर जिस रीति से यह गर हमा बर दिसी भी उत्तरशिवा की मनुभव करने याने व्यक्तिया सस्या के लिए कियी मी तरह यीमनीय न्दी हैं। गापीबी तो सब बाराय रूप हैं, मररार सत्ताहरू हैं; पर जिन मृत्यूर्व समार्गंड से उन्होंने ' गुम्मेलन का भार गुम्माता, उन्हींके गांव बदवन्द्रवी जिन प्रशार पेरा माए, उसने जानः सभी ध्वनिश्वा की

भी में अपने बाकोश के प्रकार को नहीं दौर सके।

यह एक द सान्त घटना बी। हमारे स्पन्तितन

इ.स. हआ । परीक्षाबोर्ड को लेगर सबसे यधिक बिनव्हाबाद हुआ । हुँदराबाद-अधियेशन में पाफी सपर्य के बाद सम्मेजन ने परंत्राबाद का निर्माण विया था। बढ़ते है, इसहे निर्माण में किसी होगी का स्वार्थ या । इनकी रखना या क्रमस्यना को अयागित करने के लिए हमारे पाम न सी साधन है और न स्थानः पर हम इतना जवाद जानते है कि बोर्ट ने पदामिया में सर्वधी टहनजो, श्रीनारायम चन्-वेंदी तथा चन्द्रवना पांटे बादि महानमात से । बहुत हैं.बोई ने प्रयमा काम वही तहारता और निर्दाश में किया उसरे कार्य सचारन में गलतिया भी हुई, पर ९०१० मार के अन्वकाण में वरीधा-काई जेती मध्या के जाये पर राव नहीं बनाई जा सम्ती, पर हैदराबाद का पश-बित दत ता बोई यो भग गरने पर तुला हुआ था। उनके अभियोगों में एक प्रमशः अभियोगः बार का दि बाई के महत्त्व अपनी लिमी या प्रकाशिन परमधे वरीसाओं में लगा रहे हैं। इस दल की भोर से भी बार्नेहन ने कई अधिवारियों पर वही अभियाग रागवा नवा या । यह बड़ी सर्वेदार पर लाजाजनर स्पिति वी । हमें इससे नाई सुम्बन्य नहीं है। पर पत्रकारी की गैसरी में सभागति के टीक सामने बैटकर जब हमने उन्हें कार्य-र्श्वाटन वरते देगा वो हम परित रह गए । समापति एक पता के लोगों की बोलने का ठीक समय नहीं देते ये, पर इसरे पक्ष व को ने समय पड़ी देवता मूल जाते थे। यही तक नहीं, उन्हें नये-मये व्याहरूट बड़ाई थे। यह उत्ता नान प्रधान या । एक बशाहरण दें। सता विक्रिय पश का साथ देने बादे क्यान दक्ता पं मीतिबाद धर्मा बोछ रहे में । तीन मिनट का समय बार पुरा ही जाने पर रिगी ब्यस्ति में नमापति का ध्यात सामाजिम विया, पर गुमार्गातीयी में यस ध्यति का द्विता से जिस्सा दिया और समीती सी बीएने का वरा-पूरा समय दिना । तब धर्माती बैठ गए तब विशी तरह मन्द्रगण्य उन्होंने बहा कि धर्मात्री पतने गणी बद से बोर गरे में कि मैं बड़ी देशना ही मूल न्या। रेक्टर के अधिर प्रशास्त्र दिये जा एको है। उसने ब्राहिश्वित के अपने अस्तिम मापन में रहा मारे से मंदित तह तरकार का को "ने रहे, पर दिरोगी दल के नेता

तया अपने पूर्व सभापति श्री चन्द्रवली पाण्डे को कुछ मिनट नहीं दे सके। उनके इस रुख को देख कर विरोधी दल 'वाक आउट' कर गया और तव जो वे चाहते थे वह सर्वसम्मति से पास हो गया। बोर्ड को तोडनेवाले दल ने किस प्रकार मत संग्रह किया, इसके वारे में अनेक कथाएं सूनने को मिलों। वे लोग कुछ मित्रों को बरवस उनकी फीस व मार्ग-व्यय अपने पास से देकर ले गए। स्वयं एक प्रतिष्ठित साहित्यिक ने यह वात हमें वताई थी। यह भी सुनने में आया कि एक सज्जन को विरोधी दल ने झुठा तार देकर घर लीटने को बाध्य किया। ऐसे ही अनेक अनुचित कार्य वहां देखने और सुनने में आए । इस स्थिति से व्यथित होकर अहिन्दी भाषाभाशी प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने जिस करुण भाषा में अनना विरोध प्रकट किया और कहा कि" आप तो लड़ते हैं; पर हानि हमारी होती है, राष्ट्र-भारती के पूजारी हम क्या करें।"-वह प्रत्येक समझदार व्यक्ति को रुला देने वाली थी। तब ऐसा लगता था कि वे लोग सम्मेलन की मृत्यु पर फातिहा पढ़ रहे हैं। सचमुच वह सम्मेलन का अंत्येष्ठि-संस्कार था।

स्वयं वोई भंग करने के पक्षपातियों ने सभापति के उपेक्षा तथा पक्षपात-पूर्ण व्यवहार को अनुचित कहा है। उनके एक मित्र ने, जो स्वयं प्रसिद्ध लेखक और सम्मेलन के एक कर्णवार हैं, उनके आक्रोश और कोंघ से दूखी होकर हमसे कहा-भला सम्मेलन के मंच से इन वातों के कहने का क्या लाभ ? हमारे एक पत्र-कार मित्र ने, जो वैसे एक प्रसिद्ध लेखक हैं, सारी स्थिति को समझकर एक वड़ा सारगिभत वाक्य कहा था--''इस आदमी (श्री जयचन्द्र विद्यालंकार) ने पच्चीस वर्षः की कमाई तीन दिन में खो दी।" इस एक वाक्य में कोटा-अधिवेशन की कहानी आ जाती है। एक वन्धु कहते मुने गए कि उनको सभापति बनाना सफल हवा और कम-से-कम निर्वाचन में प्रमुख योग देने वाली पार्टीके लिए तो जयचन्द्र नहीं बने, इतनी नैनिकता का परिचय उन्होंने अवश्य दिया। इन शब्दों का अर्थ सभी समझ सकते हैं।

परिपदों की कहानी में कोई विशेषता नहीं है। वह एक तमाशा है, जो प्रतिवर्ष होता है। दो घंटे का

का समय, कुछ सम्बन्धित व्यवितयों की उपस्थिति, स्वागत मंत्री तथा सभापति का छपा हुआ भाषण, एक-दो वक्ताओं का छेख पढने या भाषण देने का प्रयतन, कभी-कभी संघर्ष फिर घन्यवाद और उसके पश्चात समाप्ति । विज्ञान और दर्शन परिषद में तो लोगों ने आने का भी कष्ट नहीं किया था। दर्शन परिपद् सम्मेलन के समाप्त हो जाने पर अगले दिन हुई थी। हां, शेप तीन परिपदों में कुछ जान दिखाई दी। राष्ट्रभाषा परिषद् के सभापति भारत सरकार के राज्यमंत्री श्री दिवाकर थे। इस कारण उपस्थिति संतोपजनक थी । उनका भाषण व्यवहार-कुशलता का प्रमाण था। जो लिखा था उससे बाहर भी वे बोले बौर सुन्दर वोले। तथ्य की वातें कहीं; लेकिन इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं हुआ। हां, स्वागतमंत्री का भाषण भी प्यारा अीर सुन्दर था। साहित्य-परिषद् के सभापित श्री बेढवजी ने दो नई विचार धाराओं को समझने का और सन्तुलन रखने का प्रयत्न किया। स्थान उनका भारतीय आदर्शवाद की ओर था। सब मिला-कर उनका प्रभाव संतोषप्रद था। समाज-शास्त्र परिपद् के सभापति श्री जयप्रकाशनारायण थे। उन्हें अगर पिर-पदों की वास्तिधिक स्थिति का ज्ञान होता तो वे कमी भी इस पद को स्वीकार न करते। उनका भाषण भी लिखित या, पर वे वोले मौखिक ही और मुन्दर वोले। यद्यपि वे अब बंक गए हैं तो भी उनकी बात जनता ने शांति से सुनी । उन्होंने समाजशास्त्र की समझाने और उस पर साहित्य निर्माण करने के लिए कुछ ठोस मुझाव रखे। स्वागतमंत्री का भाषण लम्बा और विद्वता-पूर्ण था। मौलिचन्द्रजी तो कहीं भी और किसी भी विषय पर बोल सकते हैं। वे तीनों परिपदों में बोले।

कोटा में पत्रकार सम्मेलन भी हुआ, परन्तु पं० वनारसीदासजी चतुर्वेदी के न आ सकने के कारण वह विना दूल्हे की वारात जैसा रह गया। एक दिन रात को सम्मेलन के बाद १२-१ वजे तक कुछ पत्रकारों ने उस रस्म को पूरा किया। पत्रकारों में दिल्ली के सर्वश्री मुकुटविहारी वर्मा, रामगोपाल विद्यालंकार, कृष्णचंद्र विद्यालंकार, मायवजी, अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार, ' शम्मूनाथ तिवारी, गोपालप्रसाद व्यास, कानपुर के श्री : 29 :

जमरेष गुप्त और त्रिवेशकी, मेरठ ने थी विद्युम्भर महाब प्रेमी, श्री राजेन्द्रशंतर अट्ट तथा अन्य अनेन उन्यू व । मुक्ते अ. मा. हिन्दी पत्रभार सम्मेलन की पुनर्जीवित बचने मा निर्णय निया और उसके टिएएन समिति बना हो ।

स्वापन त्रामित नी खोर से बाता अस्पानता है मनोरंजन के लिए त्यान गांता, निक सम्मन्त नवा 'वापामानं' के छाया अभिनय का बावन्य पा। कार-मोल सम्बेत हो बेहत रामित है होर रह गया था। कार-मोत प्रदर्शन, जिसमें हाथीजी रामायण के कुछ दूरव दिसाये गये थे, गुरुद के 'कायामाने' का छाया अभिन्य पह तक्त की तुन्दर प्रयत्न था। एक विश्वप्रदर्शन की हुई थी। उत्तर्श क्षीत्रक महोद्य से बठे अस्पत के नाये बार पुराते का सम्बाधित के अस्पत की नाये बार पुराते का सम्बाधित की की हुई थी। उत्तर्श क्षीत्रक महोद्य से बठे अस्पत के नाये बार पुराते का सम्बाधित की सम्बाधित की सम्बाधित की सम्बाधित की सम्बाधित की स्वाप्त की स्वाधित की सम्बाधित की सम्बाधित की सम्बाधित की स्वाधित की सम्बाधित की स्वाधित है। स्वाधित है स्वाधित है स्वाधित है। स्वाधित है स्वाधित की स्वाधित है स्वाधित है। स्वाधित स्वाधित है स्वाधित है स्वाधित है। स्वाधित स्वाधित स्वाधित है। स्वाधित स्वाधित

प्रारम्भिक कर में है, पर कुछ भी हो बोटा-नियितन मून जाएगा और धायद यहां की नदुम भी दूर हो जाए, पर बहुन की बादन में इंद हो जाए, पर बहुन की बादन हो की स्वार मिति के सरकार मीहित के सरकार मीहित के सरकार मीहित के सरकार में मुद्र की किया हो की स्वार के स्वार में मुद्र की मित्र के हो हो की मित्र के स्वार में है हम मुद्रों की मत्त्र को साम के स्वार में मित्र कर किया में हमा उनना बुछ थाना किया में हमा उनना बुछ थाना किया में किया की स्वार की

और अन्त में हम उन अनेश बन्ध-बाम्पनों को बैसे मुलं, जिल्होंने अपनी रियत्ता, विनोद-विवास और जिन्धदिनी से उस माहरीनी सन्मेनन की मधुर मितन में परिवर्णिकर दिया था। यदी कुछ छिछीरे साहिषिता ने वहां भी अनयम का प्रदर्शन किया. परन्तु स्वायत गमिति के प्रयान की बद्धमित बापना की आभीयना, राजन्यान गरनार ने प्रशासन आफीनर थी राजे द्वारा भट्ट के गीजन्य, दिहार के प्रसिद्ध लेगर भी रामवृत बेनीपूरी के निर्मंत्र सहराय, भी प्रभारत माधवे नया थी कर्तवाचार मिथ प्रभाक्त की बारी पर युविषयुक्त सम्मति की एम ज्ञाने समुतिगढ से बाओ नहीं सिटा गरेंगे। बूछ मास और है, पर ये इनते अपने हैं कि उनहीं स्मृति हम अपने नक ही इसना भारते. और यद्या एक बार विर सभापित्री वा नाम क्षेत्ररकार्रभी हमें उस बहुताकी हुए करने की आ जा नहीं देगा, तो भी हन अन्त में दो गगर नर्ना चाहँगे-वे नहीं: पर उनशे विद्वता और माधना क्षे विष है। इमी हा हम क्ष्मीत में गर्ना ग्रामी है। हमें सागा है, वे हमें निराण नहीं बरेंने ।

\*

#### [दस यर्प ३० जनवरी, ११%१ की स्वामी विवेद्यानन्द की वर्ष-गांठ है।]

"ममरा मनार को प्रकास की साबर्धनाता है। वह प्रकास केवल मारण के पास है। लेकिन बह प्रकास आहु-दोने, एल-काट अपका क्योगादि में नहीं है। बीक बाल्वीवक पर्म को ओ आसा है— उनकी महान्त्राओं की, सर्वोक्त आध्यात्मक गण्य की, विद्याओं में है। इमलिए असू ने मानव-जानि की समाम उस्टकेर के बावजुद आवत्रक मुरक्षित रुगा है। आज बह ममय आ गया है।" —िक्सेक्सर

# काभेटी पार

['जीवन-साहित्य' में समीक्षा के लिए हमारे पास स्वेच्छा-पूर्वक बहुत सी पुस्तकों भेजी जाती हैं। उनमें से चुनी हुई पुस्तकों पर हम स्वतंत्र रूप से अपने विचार प्रकट करने का प्रयत्न करते हैं। जो पुस्तकों छूट जाती हैं, उनके विषय में हमारी लाचारी मानी जानी चाहिए। इस समय हमारे पास निम्न-लिखित पुस्तकों आई हुई हैं। इनमें से कुछ पर हम आगामी अंकों में विस्तार से चर्चा करेंगे। —-सम्पादक ]

- १. दार्शनिक विचार-छे॰राजा वलदेवप्रसाद विरला ढी॰ लिट॰-प्रका॰-विरला संस्कृत कालेज, लालघाट वनारस ।
- २. आत्म-चिन्तन—ले० मार्कस आँरेलियस-अनु० चकवर्ती राजगोपालाचायं-प्रकाशक-हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, मूल्य १), कपड़े की जिल्द २)
- ३. इंसपेक्टरसाहब—ले०गोपाल-अ० भूपनारायण दीक्षित-प्रकाशक, शर्मन पेपर मार्ट, इटावा मूल्य १।) ।
- ४. स्मृति कण—ले॰ श्री सीताराम सेक्सरिया, प्रका॰ आवृतिक पुस्तक भवन, कलकत्ता, मूल्य १॥)
- ५. संघर्ष और समर्थण (उपन्यास) ले० सन्हैयालाल कोझा एम० ए०, प्रकाशक राजहंस प्रकाशन दिल्ली, मूल्यं ५॥।)
- ६. पशु और मानव (उपन्यास)——ले॰ बाल्डस हनसले, अनु॰ रणजीत प्रिन्टसं एन्ड पव्लिशसं, चांदनी चीक दिल्ली, मूल्य २॥)।
- ७. पुखराज (कहानी संग्रह)—ले॰ हरिश्चन्द्र कैला प्रका॰, विद्या मन्दिर लि॰, नई दिल्ली, मूल्य ३।)।
- ८. न्याय (कहानी संग्रह)—ले॰ दीपसिंह वड़गूजर 'दीपक', प्रकाशक, अजमेर कोआपरेटिव प्रिन्टसं एन्ड पब्लिश्सं लिमिटेड, अजमेर। मूल्य १।)
- ९. वंदिक साहित्य—ले॰ पं॰ रामगीविन्द, विपाठी-प्रका॰ भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ४)
- १०. मिलन यामिनी (कविता)—ले० श्री वच्चन प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ४)।

११. वन्धनों की रक्षा (लघु कथा)-ले॰ आनन्दमोहन अवस्थी, प्रका॰-लोक चेतना प्रकाशक, जवलपुर, मू. १)

१२. गांबीजी के जीवन प्रसंग—सं व चन्द्रशंकर शुक्ल प्रका० वोरा एन्ड कम्पनी पव्लिशसं लि० वम्बई मूल्य ६)

१३ ज्ञान चौसर—प्रकाशक कला निकेतन, , चावड़ी वाजार, दिल्ली मूल्य ॥।)

१४. वैज्ञानिक पाक-प्रणाली—प्रकाशक-ग्रामद्योग कार्यालय, मुजफ्फरपुर। मूल्य 1)

१५. नियोजित अर्थ-व्यवस्था का गांधीमार्ग-छेखक जे. सी. कुमारप्पा-प्र. उपरोक्त मूल्य ।=)

१६ हिन्दू समाज की बुनियादी कमजोरी——ले० रमाचरण—प्रका० उपरोक्त, मूल्य १)।

१७. डाक्टर वर्मा के शिवाजी—ले॰ श्री धुवनारायण सिंह, प्र० सत्यप्रकाशन, नीवस्ता, आगरा।

१८. Writers in Free India—दी पी. ई. एन. आल इंडिया सेंटर, वम्बई ६, मूल्य ६)

- १९. केवलज्ञान प्रश्न चूड़ामणि—नेमिचंद जैन ज्योतिपाचार्य, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी। मूल्य ४)
  - २०. गांची-गीता--प्र० राजहंस प्रका. दिल्ली मू. २)
- २१. हर्पचरित (पूर्वार्द्ध) प्रकाशक-संस्कृत भवन कठीतिया, पी. काझा (पूर्णिया) २॥)

२२. लघुसिद्धांत कोमुदो (पूर्वाद्धं) हि. व्याख्या लेखक व प्रका. भीमसेनशास्त्री प्रभाकर, गांधीनगर, दिल्ली था।

२३. पालि पाठमाला-छे० भिक्षुधर्मरक्षित प्रका० महाबोघि सभा, सारनाथ मू० १)

#### 'जीवन-साहित्य' की फाइलें

'जीवन-साहित्य' की सन् १९४६, '४८, '४९ और '५० की कुछ फाइलें हमारे स्टाक में शेष्रहैं। सिजित्द के लिये डाक-खर्च सिहत ५) और अजित्द के लिये ४) भेजकर मंगा सकते हैं। विश्व-शान्ति अंक १॥), जमनालालस्मृति अंक ॥), कांग्रेस-अंक ॥) की भी कुछ प्रतियां प्राप्य हैं। —स्यवस्थापक

### निर्या व वीजी व

सच्ची श्रद्धांजलि

बादू में जाने के बाद सरदार पटेल नवा धी नेहरू ने मिठवर भारत की बागडार समाल रक्षी थी, दृदना और प्रनिष्ठा ने साथ । अव सरदारथी षते गये और अनेते नेहरूजी वर सारा बात मा गया। यद्यपि राजाओ जैस कुलल सवा नपेहुए मुद्धिसाली अनुभवी व्यक्ति सहारा देने के लिए मिल गर्य है, फिर भी सरदास्थी या जाना हम एव भार-धीयों में लिए, सासवर बांधेसिया के लिए, महान बारम-निरीक्षण का अवसर देता है। मुझे हमारे क्षिसाति राजिपं टण्डनजी का यह ऐलान बहुत भाषा रि सरदारशी के पाधिक धाद के अवसर पर हम सब बारम-निरीक्षण करें। अवेले शहकती या राजानी या और शिशी पर जिम्मेदारी छ।इवर हम निदियन नहीं रह सबते। यह जिम्मेदारी से एट मागना है। आनादी मिलने का नदीजा ती यह होना चाहिए या नि प्रायेन भारतवासी हवे व जल्लास स फल उठवा कीर हमारे राष्ट्र-नेताहजारों वर्ष की बाय जानन। दारे बिगरी हमने देगा कि आआदी मिलने के बाद से ही मार भगवान ने प्रार्थना बारने एने वे नि महे समार स वडा के और सरदारधी भी इचर-उपर बहुने रूपे ये हि मुसे तो बापू के साम ही जाना था, मगर रहणया। अव जीने में बोई लुटर मही। श्रादि-मादि। इसका बया बारण है ? कमी हमने इस पर हुए सो स है ? मेरा हृदय सी दशका एक ही जतर देता है कि हम सपने महान् मेताओं के योग्य नहीं साबित हुए । अपनी गरातियों की, कमियों को, कमजोरियों की म देशकर हमने सर्देष क्याने बड़ी की, नेपाओं की, कीमा है, सक्येदिन से जनवा साथ नहीं दिया है, जारे हाय मजबूत नहीं दिये हैं। हमारे सार्वजनित भीता में यह बोमारी ही पून गई है और जह पहटनी का रही है कि भागी बुराई दसना नहीं और दूसरा के लेले यह जानाइ अपनी बामिया और सराविया की जिम्मेदारी दूसरी

पर पार देता। मुराई विश्व निर्मा नहीं है और गण्यो हिंगमें नहीं हैंगी? पण्डी बातना और गुप्यमाना एव बान हैं, जयाना बहाना हेवर दूसरे वो होता पव्यक्ते पारीहमा गिरामा, बस्ताम बर्गा हुतरी बाठ है। यदि हमें अपना राष्ट्र मयमूच बनाना में हो अगमें गण्डियों का पहल देतक की और हमरे की गृहियों की कार्यों की जान के बनाम में रमने की बहुति हमें पहारों हमी, नहीं वा हुव कोर निरुष्ट और दिनामन प्रदु-विया के स्थीत बनार रह आयमें। कोई वियायक रप्यास्तर या गुननास्तर काम न वर वायने । अब हमारे देश के सामने मुक्तन गुननामन और रपना-स्ता वा से बानी रहा है।

वांबेस के अन्दर भी छादे-छोटे सूप का समें है और यनने जारहे हैं। अधिकांश तो यह आशाधी बनावा में मात्रा या बपने साथिया का स्थात गुरक्षित रशने-प्रपनी राजनीतिक महारवाकादाक्री की जिल्ल की दिव्ह और भादना से बने हैं और जहनर इन बाबनाओं की गिढि के लिए क्ष्म गायन गढि पर बोर न देंगे. य अन्ये काही कारण करते प्रहेंगे। अध्यक्त ता बायेग नेती एव पार्टी मा मंग्टन में. भी एक सादर्श भीर नीति को लेकर बड़ा है, व्यक्तियों के आधार पर युव बन्दी एक रोग का ही 'लक्षण है, किर भी वह नाम में रनका जा तरता है, बाद हम श्वानिकार, सहयायन या समावतन मनमेटी और शवशें को गीये, सरछ व शाह दक्षीकों में मुल्लान और बिटाने के लिए दहर्यक्रम हों। दोवनीय, छाउन्याय, शठ-मृत्व, द्वराव प्रमणाव बीर मन्त्र में गण्डारानी वाले बाम बाति या निराध्येत्र की दी प्रवृति और पक्ष रही है, प्रेम हम मनव पर नियोत्त्रप्र म कर भके ही। हतें अपने यक्ति का हाम है। हाम होता दिगाई वहेवा । अतः बण्यः संबंधीरण, निरोत्ताः, विश्वतः, मनतः बोर समोग ने बाद मेरी यह विधियत राम हुई है कि बाह्येत के बर्गधारी का मृत्य प्रचल में हाता

चाहिए कि कहीं भी अगुद्ध साघनों को प्रोत्साहन न मिले और जो लोग शुद्ध साधनों के हामी हैं उनके हाथ हर तरह मजबूत किये जांय।

आजादी मिलने के बाद से सरदारथी का मुख्य प्रयत्न देश को संगठित करने, एक सूत्र में पिरो देने का रहा था। इस प्रयत्न में उन्हें बहुतांश में सफलता भी मिली, लेकिन पूर्णतया नहीं। उसे पूरा करने का दायित्व अब हम सब पर आगया है। इस दिशा में हम ईमानदारी के साथ कदम उठावेंगे, मजबूती से चलेंगे, तभी सरदारथी की आत्मा को गांति मिलेगी और वही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजिल होगी। हटूंडी, ५. १. '५१

#### श्री अर्विन्द की देन

श्रीअरविन्द के प्रति मेरा आकर्षण अपने विद्यार्थी जीवन से ही नहा है। १९०५-६ में लाल-वाल-पाल यह त्रिमूर्ति भारत की राष्ट्रीय देवता जैसी थी, जिसके प्रभाव से शायद ही कोई युवक उन दिनों वचता था। फिर भी श्री अरविन्द उन्हीं दिनों एक स्वतन्त्र नक्षत्र की तरह अपनी दिशेपता से चमकते थे। इनकी मुमिका कोरी राजनैतिक या राष्ट्रीय नहीं, उससे गहरी आध्यात्मिक थी, यह उन दिनों भी प्रकट होता था। केवल राजनैतिक अधिकार—स्वतन्त्रता—पा लेने से मनुष्य-जाति का उद्घार नहीं हो सकता, यह वे मानने लगे थ। राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिए भी भीतिक शक्ति को वे अपूर्ण मानने लगे ये और दिव्य या आध्यातिम्क वल पाने के लिए छटपटा रहे थे। उन दिनों जीवन के कई विषयों पर जो मूलगामी विचार उन्होंने प्रकट किये ये उन्हींके आधार पर उनका आगे का जीवन वना है, उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई है। जेल में उन्हें कुछ ऐसे यौगिक या आध्यात्मिक अनुभव हुए-आसपास के तथा सामनेवालों लोगों में उन्हें श्रीकृष्ण (ईश्वर) के दर्शन होने लगे, जिससे उन्हें कहीं एकान्त में जाकर एकाग्र साधना करने की प्रेरणा हुई और वे पांडिचेरी चले गये । लगभग २० वर्ष की एकान्त सावना के बाद उन्होंने २४ नव० १९२६ को घोषित किया कि वे अपनी साधना में सफल हो गये हैं और अब उन्हें मनुष्य-जाति या मानव को ऊपर उठाने का काम शुरू करना है। उसके वाद से पांडिचेरी में श्री अरिवन्द आश्रम का संगठन होने लगा। उन्होंने तत्कालीन सावकों से यह भी कहा कि अब आगे का काम में एकान्तवास द्वारा ही कहंगा, प्रत्यक्ष कार्य श्रीमाताजी के द्वारा सम्पन्न होगा। माताजी एक फ्रेंच महिला हैं जो उन्होंकी तरह दिन्य जीवन की सावना में उनकी सहयोगिनी रहीं और सिद्धि में भी उनकी समकक्ष मानी जाती हैं। श्रीअरिवन्द के शरीर-पात के वाद तो अब वही उस आश्रम की अधि-ष्ठात्री और साधकों का अवलम्बन हैं।

श्री अरविन्द की विद्वत्ता, प्रतिभा, राष्ट्रभिवत, सावना सव एक-से-एक बढ़कर थी; किन्तु सबसे अधिक प्रभाव मेरे मन पर उनकी दृढ़निष्ठा और एकाप्र साघना का है। जीवन और संसार के तमाम व्यामोहों, आग्रहों, खिचावों और वलों के प्रभाव से अपने को दूर रखकर एक मकान, बल्कि एक कमरे में बरसों अपने की रोके रखना इस वीसवीं सदी में मामली वात नहीं है। फिर उनकी साधना या योग निष्कर्मता की शिक्षा नहीं देता। उनका जोर इस बात पर है कि जीवन को ईश्वर-समर्पित करके कर्म करो। अपने को ईश्वर के प्रति उत्तरोत्तर खोलते जाओ और तुम ईश्वरी जीवन को प्राप्त करते जाओगे । ईश्वरी जीवन प्राप्त करने के दो मार्ग हैं: एक, व्यक्ति नीचे से ऊपर उठकर ईश्वर की कक्षा में पहुंचे । दूसरे, ऊपर से ईश्वर की शिवत, कृपा अनुग्रह या चेतना व्यक्ति पर वरसे। पहली किया का नाम उन्होंने आरोहण व दूसरी का अवरोहण किया है। प्राचीन भारतीय आचार्यो की भाषा में कहें तो पहली किया को वेदान्ती साधना, दूसरी को तान्त्रिक साधना कह सकते हैं। किन्तु श्री अरविन्द ने अपनी साधना और सिद्धि के लिए नये स्वतन्त्र शब्द तथा नाम निर्माण किये हैं। अपनी सावना को उन्होंने 'पूर्ण योग' नाम दिया है और उसकी प्रक्रिया के उपक्रम में उन्हें 'अति-मानस' नामक एक तत्व उपलब्ध हुआ है। उनका कहना है कि इस समय जगत् में मानव के अन्दर हम जड़, प्राण, मन तीन तत्वों का आविभीव देखते हैं। जट से शरीर का ढांचा बना है, प्राण से शरीर में चलन-बलन होता है और मन से प्राण तथा झरीर के अनेक व्यापार संचालित होते हैं। किन्तु इन तीनों तत्वों के व्याघार

या सहयोग से मनष्य-जाति का जो विकास अवदाक हवा है यह बाफी नहीं है। इसमे मानव अधरा, शह. सन्प, रह गया है। उमरा विनाम सभी होना है, नमी बह बाज के राग-देव, विशार, बलह-यका जीवन से ऊच स्तर पर उठ सुबेगा । उसके जिला मानव-जीवन सुखी सन्तुष्ट, प्रसन्न, नहीं हो सरता । विकास के इस बाये में अस का या सरव का नाम उन्होंने 'बतिमानस' दिया है। मानव को इस अनिमानस स्तर पर पहुँचना है, आब की तरह कोरे मन के स्तर पर नहीं बहना है। अर्थान मन की जगह अतिसन से उसे जीवन व तवाम व्यापार सम्बाहित बरना है। यह अतियानस ईश्वरी वा चेतन सरव के नियद का है या उसकी कोटि का है। यह ईस्वर की दिध्यना या चेनन-सत्ताको स्पर्ध करता है। इस स्थिति की प्राप्त कर लेते पर मत्या नदा ईश्वराधिमूत होसर रहेगा। ब्राहमी स्पिति से इसकी तुलना की जा सरकी है। इस स्पिति में रहने हुए मनुष्य जो काम करेगा यह निरुचय ही आज के राग द्वेप युक्त मनुष्य की अपेक्षा मधिश शुद्ध, निविवार, निर्देग्ड, तेत्रीमप होगा । मानव को ऐसे कॅपे स्नर पर पहुँचाना ही थी वरविष्ट अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं । लेबिन अवनक उन्होंने स्वतः अतिमानसं तस्य को प्राप्त नहीं कर शिया तवतक इस कार्य की गुरू नहीं विया था। २४ नववर की उनका शिद्धिदिवन इसीकी उपलब्धि के उपाद्य में मनावा जाता है।

धो बरिबार हो निक्कि हो इनिन्यो बही नहीं हो बाजी। वे यह भी प्रथन नह रहे ये हि चारीर है वह अनु चेनतम हो नाये। सारा चरीर पेनमम होनवे, हुए दे वादों में चरीर अवदानर होनाय। नहुने हैं, वह साहित नार हर नमने कारही हो हि न दौर उनके के। या बन हो नभात न सहा और उन्ना चान होत्या, मा यो अवदिवर ने इस चारीर हा उनके योग्य न मानकर उने चारीर सामक हुमरे हिनी रुपोर में मेदेश नह हिन्या। मो हो।

यो अर्थावर वे जीवन बीर मरन दोनों वा करेग हमारे लिए विवारणीय और पहारीय है। बनुस्तवार्धि को ऊँप स्तर पर के जाने वा प्रदान वरना निरुप्त हैं। एक ऊँचे दर्वे वा लस्य हैं और यो लोग समाय दी नव-रचना में दिलवर्शा रेडे हैं उनकी समझ में आने जैमा है। सासवर वे स्रोग तो उमे बहुत जन्दी समग्र रेगे, जो शहसन सभाज को रचना करना चारते हैं: वर्षोंकि ऐसी रचना तभी हो सह दी है जर मनध्य-आहि मास्तर अवाहो। यी सर्गवन्त्र में स्टा मा निद्वि का 'गुड', 'योनिक', 'बाध्यारिमक्ष', कर कर किरा जीवन म उन दूर समझना और इन गामी में हर आता हिमी बरार उपित नहीं है । मनुष्य-जीवन निरंप विशानशील है। इतिहास इसरा साली है। मौतिक वनी से हमने बहुत बाम रिया है और विश्वामरी दिया में आगे बहे हैं। तमाम मौतिक शक्तियों के यह में जो अनना चेतन याचा मरी हुई है उसका आविदशार ब नना, उने प्राप्त बरना, उनमें बाम हेना, मानव-प्रीदन को उसमें लाभ पर्देवाना-पृष्ट सुर वयो विशी की समझ में न आना पाहिए ? मौतिक यशियों के लिए ए जाने क्या-स्था ध्वतमाध्य उपहरण, यन्त्र साहि चाहिए। अपनि सारिमह या चेत्रन शनिन मान्त बारने ने दिए बेयल एकाप्र सापना ।

गांपी की विसे गन्य या ईश्वर महा गरी ये और जिमकी बार्षि में हिए बहुरिय छुटपुरा हे में . गरी पा उनने मिल्ली-बल्ली बाल है श्री झर बन्द का अविमानन क्षण होता का मूल है विदेश में स्थित में। स्थापन चैतन्य । दोनो उमेरि उमानव थे । इस तरह देरें ती दोनों का गरेस एक-उनरे से भिन्न नहीं था। अभि-व्यक्तिया अन्य-अलग्री; अन्ति मुसे तो ऐसा समहा है कि महापरपो के सन्देश महता निम्न नहीं होते। पुरिन्यिति ने सनुपार उनशी अभिन्यश्रि पूछ अन्य तरह से हो जाता है। इस निम्ना पर और देशर हम हर-दूसरे से शह पड़ी है और गमात्र के भाग तथा बात का बारण बना है, बर्दक मन्पर एरना पर बार देने व हम वमात्र में वायत्रवन्त, मेर, एक्या पैदा काते हैं, वो कि मेमार का बदल गण्य है। भारत, थी अर्थित के प्रति भारती यदानकी मौरा परो हुए बाज हम इप साथ को समझने व प्रत्य कानी नाप्रयान करें। ऐसा करते ही हम उस महापुरण की महान् देन के साथे करिए बतने का दावा कर एक है। गुर्मी हम मणकान की कृता बरमने के मंत्रिकारी ही गकी है। नई दिम्मी, ९ १, ५१ -F. T

### स्वाधीनता-दिवस

२६ जनवरी को हम लोग प्रतिवर्ष स्वाधीनता-दिवस मनाते हैं। यह कम लगभग वीस वर्ष से चला बाता है, जबिक हमारे स्वावीनता-संग्राम के इतिहास में प्रथम बार, रावी के तट पर, शपथपूर्वक यह प्रतिज्ञा ली गई थी कि हमलोग भारत को बाजाद करके ही मानेंगे। वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। विदेशी सत्ता यहां से हट गई और हमारे शासन की वागडोर हमारे हाथ में आ गई। इसी शुभ तिथि को आज से एक वर्ष पूर्व भारत को 'सम्पूर्ण प्रभ्तव सम्पन्न गणतंत्र राज्य' घोषित किया गया था। निस्सन्देह यह दिन हम सब के लिए एक महान राष्ट्रीय पर्व है। लेकिन खुशी मनाने और गौरव अनुभव करने के साथ-साथ यह दिन हमें हमारे कर्तव्य का भी बोध कराता है। भारत विदेशी सत्ता के बंधन से मुक्त हुआ अवश्य; लेकिन सच्ची आगादी अभी हमसे कोसों दूर है। आज देश में कैसी विपम परिस्थिति का हम लोगों की सामना करना पड़ रहा है, कैसी-कैसी कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ रहा है, उस सवकी याद करके दिल दहल उठता है। अन्न-संकट हमारे सिर पर खड़ा है, हजारों लोग खानावदोशों का-सा जीवन विता रहे हैं, काण्मीर का मामला अभी तक लटका हुआ है, ये तथा और बहुत से ऐसे मसले हैं जिन्होंने हमारी आजादी का मजा किरकिरा कर दिया है। जवतक देश का एक भी अदिमी भूखा-नंगा या विना घर के रहता है तवतक यह नहीं कहा जा सकता कि हमें वास्तविक अर्थ में आजादी मिल गई है। २६ जनवरी जहां गुलामी के अन्याय की समाप्ति की मूचक है वहां वह देश के नवनिर्माण के कत्तंत्र्य की बोबक भी है। गुलामी के दुष्परिणाम हम देख चुके हैं और अब हमारा हित इसीमें है कि हम अपने प्रयत्न से देश की इतना सशकत और संगठित बना दें कि कोई भी उसकी जह को न हिला सके। यदि ऐसा न हुआ तो हमारी कमजोरियां हमें खा जायंगी। इस कटू सत्य को वैसे तो हम हमेगा ही याद रक्बें, लेकिन २६ जनवरी को बाजादी के उल्लासयुक्त स्मरण के साय तो अवश्य ही। नई'दिल्ली, १०-१-५०

## तीस जनवरी !

३० जनवरी भारत के ही नहीं, सारे संसार के इतिहास में एक चिरस्मरणीय तिथि वन गई है। इसी विविनिर्मित तिथि को, आज से तीन वर्ष पूर्व, विश्व की महानतम विभृति का हमसे विछोह हुआ था-उस विभूति का, जिसके विषय में आइंसटीन ने लिखा या कि आगे आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से विश्वास करेंगी कि इस घरती पर कभी हाड़-मांस का ऐसा पुतला चला था। समुची मानवता की सेवा के लिए इस महापुरुष ने अपनी जीवन-साधना का क्षण-क्षण व्यतीत किया और अवसर आने पर इसी महान उद्देश्य के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इस शताब्दी के पूर्वार्ट की सभी प्रवृत्तियां इस युग-पुरुष के प्रभाव से व्याप्त रही हैं और एक समय हमने वह देखा है जब इस विश्ववंद्य पुरुष के कण्ठ से स्वर निकलते ही करोड़ों के स्वर उसमें मिल गये थे, जिघर उसके पग उठे थे, उबर हो अगणित लोग चल पड़े थे।

जिस वेमिसाल तरीके पर गांधीजी ने भारत को आजादी दिलवाई, उसके लिए देश के कोटि-कोटि जन उन्हें याद रक्खेंगे; लेकिन समूची मानवता को उन्होंने जीवन की जो नई दिशा सुझाई, उसके लिए सारी दुनिया उन्हें चिरकाल तक याद करेगी।

वाज हममें से अधिकांग गांधीजी के वताये मार्ग से विचलित हो गये हैं। हमारा मुंह दूसरी और हो गया है। स्पण्टतः इसका कारण यह है कि गांधीजी ने जो रास्ता वताया था वह कठोर साधना का रास्ता था, और कठोर साधना का जीवन बहुत दूर तक विरले ही चला पाते हैं। मानव कमजोरियों का पुंज हैं और सहज ही प्रलोमनों के चक्कर में आ जाता है। यहीं वजह है कि गांधीजी के आंख आंझल होते ही लोग अपनी निष्ठा और साधना पर दृष्ट नहीं रह सके।

३० जनवरी को हम वापू और उनकी दीर्घकाठीन सेवाओं को अपनी श्रद्धांजिठ अपित करते हैं। ठेकिन हमारा यह कार्य बहुत कुछ एक रूढ़ि का रूप धारण करता जा रहा है। वापू का सच्चा स्मरण, सच्ची श्रद्धांजिठ उनका नाम ठेना नहीं, उनका काम करना है। स्वतन्त्र भारत में 'रामराज्य' स्थापित करने सी बापूने कन्यनाकी थी। इसो कम्पना का मुख रूप देने में लिए वे १२५ वर्ष जोतित रहना चाहत भे। टेविन भगवान को वह भज़रन था। बापूता अपना नाम नर गए-अपना नाम ही नहीं, साधारम ध्यन्ति जितना कर सकता है उससे मौगना अधिक. रेबिन किर भी उनरा 'रामराज्य' बा स्वयन वरा हाना है। उसे पुरा बरना, न बरना हम लोगी वह निमंद है। बाज हमारे चारो कोर अवनार-ही-अवनार दिगाई देता है; परन्त्र हिम्मत हारने वा निराण होने के नाम नहीं नरेगा। ३० जनवरी को हम आम निरोधन का दिन मानें। अपनी कमनारियों को देखें और उन्हें दूर करते या प्रवान करें। अपनी निष्ठा का सजबा रग पर एम सम्बद्धि के हित में अपना हित मानकर परें तो अपनार के दूर हाने देर न श्गगी। आज की परिस्थिति में यह सब गौरी सकर की भोडी पर चड़ने के समान कठिन जरूर स्थता है: पर न्मरण रहे रि

विना छत्तरे बहुवाण भी नहीं है।

5 नुनर्वाद की 'त्वांदिय दिवाद' बहु। गया है, वो

ठीत हो है। गांधीकों ने लिए सबना बदुव समीद्य था,
नोद तम्बी आजादी का मत्यन भी बहुं। होना पाहिए।
जबता गरीस-भवीद, गायक गांगित, धोतन-पाबिन,
नोद करनीन सादिना पेट मांब पहेंगा की स्वर्थ 'रामदाज्य' की कपना छात्राद कर बादण नहीं बद सादेगों की दावाद की सादिना पेट मांब पहेंगा हो बद सादेगों की दावाद की आपना स्वर्थित होती।
सादिन सादिन पेट अपन्या सामा

ग**र** दिन्ती, ११-१-५१ हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कियर ?

वस की मार्जि इस बार मी सम्मेनन का बारिय मारियान हुमा भीर समाज शिवा। कीई सियंव बीवना वसने देस में सामने नहीं रसी। दिल्यों के पहने माण बन बाने के बाद देना कमाने मार्गे प्रत्यों के बादा कर रहा था। इसने विचरित की मिला मान्येग और बीच। सामेलन नरकार की स्वया रसे, यह बात की समान में मार्गित, यह वह स्वया कर कार्यों मार्गित हैं। मार्गी समय है हि सामेलन के कार्यार कुल की रिपर्यंत मार्गे हम सामेलन के कार्यार कुल की रिपर्यंत मार्गे कर। सामित की साम मीर मार्ग की उटावें। अच्छे कामो के लिए कभी देर नहीं होती। जा कुछ काटा-अधिनेतन में हुआ वह सम्मेलन की नाक रणने बाला नहीं है। उससे विदेषियों को कल मिलेगा।

सबसे पहिला नाम का सम्मन्त ने मानते हैं सर है नाय निर्माण ना। सरवार ना मून देने दिना यह बिदानों का देना परिसादिन सारा की भार चान दे तो यह एन दोस सेवा हागी। इस कार्य में निल् उन नामों का अनिन बरवारा नर लेना चाहिए। जिल परिसा बोर्ड को लन्न बरवारा नर लेना चाहिए। जिल परिसा बोर्ड को लन्न वर्मान में दलकरी नी दिन्न दें। होंगे अन्तर माहिल निर्माण नहा ही भेदनलर है। होंगे अन्तर माहिल निर्माण नाहि-दिवाल को नीया का बनना है। सोम्मन नाम के समुक्त अवनन साहिए का का सह साहिल-गाम ना नर सका है। वह सन्ते हैं। निर्माण नर सम्मन नी समस्य सुल्डा के लेना हुआ पा, पर साब तो यह समस्य सुल्डा के सेला हुआ पा, पर साब तो यह समस्य साल मुल्डा नुती है। एसिल् अब स्थानन की साहिल सीर नाहिल्यकार हो साह प्रकार चारिए

में विमाय सम्मेनन के ही सम हाते, यह होते सदे रहतत, जेरी भारतीय सथ में साम्य है। यह कोई विमान म्यरेसा नहीं है, मात्र हिमा सुपाने की साम है। कहना हतता ही है हिमामने ना ने सर गमीरण से सपने नवे अधिन का समस्ता पाहिए। गरिन्यों देने में दिमी की स्थित हों, होंगा ही महर होता है।

को शक्ति नहीं, होनार ही प्रकट होती हैं। नई दिस्सी, ११−१-५१, —वि० प्र०

उक्स्वापा भी गये !

बार राउ (१९ यन) को ८-१० वर दार राया सा देशन हो गया। बारा बेंग्र सुर दिसो है मेहार दे, दिस सी बिमो की सी बमार न मी नि बह बहर मानू र न्याँ करी बहे जवमें १ दमकर मानू मानू मानू देश दस्य बीट दान्या का बीटन या। किन हमारे देश सी बीट दान्या की मानवह योगा की हिए में देश साम ए। जाने हे उद्देशों है सा को की उत्तराज्ञ मीर सीवा है बीजिय दाम नक स्वीदे निष्कृत से बहु देश अगों से मी देश की दूसर मार्ट, बारा को मी दूस। दर्ग अगों से मी देश की दूसर मार्ट, बारा को मी दूस। दर्ग अगों से मी देश की दूसर मार्ट, बारा को मी दूस। दर्ग कुमो हो मारत का एक मार्ग के सर सह उत्तर से मार्ट का

### आगामी विशेषांक

वृद्ध-जयन्ती के शुभावसर पर 'घर्मदूत' का एक महत्वपूर्ण विशेषांक आगामी अप्रेल मास में प्रकाशित होगा। इसमें कला, इतिहास, धर्म, दर्शन और पुरातत्व-सम्बन्धी गवेषणपूर्ण अधिकारी विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे।

## इस विशेषांक में पढ़िये

वौद्ध संस्कृति की अमर कहानियां, वौद्ध विभूतियों के निर्मेल जीवन-चरित, वौद्ध दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, भारत के उत्थान के सावन, भगवान बुद्ध के अमर सन्देश।

वार्षिक शुल्क के ३) भेजकर तत्काल ग्राहक वन जाइये।

**व्यवस्थापक** 

'धर्मदूत', सारनाथ (वनारस)

## भारतीय ज्ञानपीठ काशी के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

- शेरो-शायरी—श्री त्रयोध्याप्रसाद गोयलीय मृ० ८) (उर्द के सर्वोत्तम १५०० शेर त्र्यौर १६० नष्म)
- २. मुिक्किटूत—( एक पौराणिक रोमांस ) मृल्य ५) श्री वीरेन्द्रकुमार एम. ए. ( श्रञ्जना पवनञ्जय की पुण्य-गाथा )
- ३. पथ-चिह्न—[संस्मरण] श्री शांतिप्रिय द्विवेदी मृ०२) (स्वर्गीया विहन के पवित्र संस्मरण श्रीर युग-विश्लेषण)
- थ्र. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां— डा॰ नगदीशचन्द्र एम. ए.

- (चौसट लौकिक, धार्मिक श्रीर ऐतिहासिक कहा-नियों का संग्रह। न्याख्यान तथा प्रवचनों में उदा-हरण देने योग्य।)
- क्वेन शासन—(कैन धर्म का परिचय करानेवाली सुन्दर पुस्तक)
   मृल्य ४।-)
- इ. कुन्दकुन्दाचार्य के तीन रतन— मृल्य २)[एक ग्राध्यात्मिक निधि]
- ३) ७. हिन्दी नेन साहित्य का संनिप्त इतिहास— श्री कामताप्रसाद नेन मृल्य २॥।=)

[ शेप प्रकाशनों के लिए सृचीपत्र मंगाइये ]

ज्ञानोद्य [ अमण संस्कृति का अग्रदृत मासिक ]

वार्षिक मृल्य ६)

एक प्रति ॥=)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, वनारस सिटी

राष्ट्रभाषा हिन्दी का मचित्र मांरहतिक सासिक पत्र

### विकम

( मंपाटक तथा मंचालक-मूर्यनारायण व्याम ) हिन्दी रा गरेभेड मानेव 'विका' ही है, विवहा राज महारावधी में लेख देशने गरेनापाण

हिन्दी का गरभंद्र मासेक 'विकाम' ही है, विश्वका राजा महारहणात्री में लेकर देशके गर्यकापारण समान तक समान रूप से प्रवेश है।

ीतका में बारिशिक १६ पूर्व में महीने भर वी महत्त्रपूर्व पठनाओं पर विशिषणापूर्व, मौलिक, कृतुष्ट बीर निर्मोत क्या रास्य विचार समन्तित रहते हैं। सभी विद्वानी में हिन्दी का 'माउन हिन्दू' कह कर देसकी मरोगा की है।

हत्यग्राहित्य, शिष्टहास्य, चुनीहुई करिया क्योन व्हरानी यथ निवार प्रेटक वंबागृत यां ग्रमात माणिक ग्राहित्य का मुन्दर परिषय 'निगम' की अपनी निश्चना है। यदि स्थार अवनक माहर नहीं हैं ता स्थानिक माहक बन जारने, मित्री को बनाइये क्यौर परिपार के ज्ञान पर्यंग के निया 'निगम' को स्थारय दर्शकार कॉलिये। वार्तिक मुक्त की दक्- एक प्रेटिन (क), नम्या

> भिशेष जामधारी के लिये लिग्यि : ध्यपस्थापक—विक्रम कार्यालय, उज्जैन (मालग)

स्तत नहीं ।

इमरे वर्ष में भारती

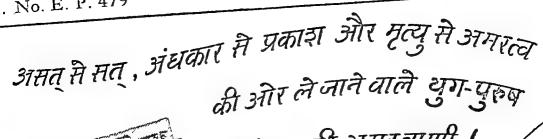
गयने गगन्द विद्या ! भी र तीं गदने न्यागन विद्या ! शत्र पर्य १४) रु० पार्थित सूस्य था, यक प्रति वा १) रु०-द्यय १६४१ जनपरी से यक्त्रम कम, ६) रु० पार्थिक

स्वारर प्रवचनवाहरू : ह्वपंत्रिय समाः : वि. सा. कुलवर्गाः : ऑन हरिहया रिपोर्टर, नि., मानपुर-१ : 'भारती' समस्य भारतीय (अन्तर्शानीय) नाहित्य, बन्या और सन्हरित का प्रक्रि

निधित करनेवाओ राष्ट्रमाणा हिन्दी को प्रगतिमी र बिन्त-प्रधान सवित्र मानिक पवित्रा है।

भारत के राष्ट्रपति कों व्याजेन्द्रप्रमादकों ने, प्रान्तों के याज्यपानी ने, मुक्य-मून्य
मित्रमों ने और हिन्दी के स्वयप्रतिष्ठ साहिन्यकारों ने इस मानिक पत्रिका के प्रकानन की मुक्तकट में सराहता की है। सर्वेधी जैनेन्द्र, बनास्मीदाम बपुबेदों, उदयगकर मट्ट, रामबुद्दा बेनीपुरी, श्रीराम धर्मा, कन्द्रयागत मुन्दों, सोदेवर, इवंद माने गुरुबों, मानकवार

षापुरी, मदा आनद बीनन्यामन आदि ने 'मारती' वा न्यामा विया है। 'भारती' वा प्रत्येत अह अनुद्धा, पठनीय और दर्शनीय है। १९५० वी २६ जनवरी





की अमरवाणी /

'सस्ता साहित्य मंडल' ने इस ग्रन्यमाला के प्रकाशन का विशेष आयोजन किया है। इसके अन्तर्गत राष्ट्रिपता महास्मा गांची का संनूर्ण साहित्य हिन्दी में लगभग पच्चीस जिल्दों में प्रकाशित होगा। हिन्दी में इतना वढ़िया , प्रामाणिक और मस्ता साहित्य बाज तक किसीने भी प्रकाशित नहीं किया। सभी भाग पठ राय, मननीय और संग्रहणीय हैं।



## प्रकाशित पस्तकें

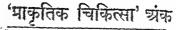
## सम्मतियां :--

ष्ट्राचार्य विनोवा। "पुस्तकं अल्पमोटी और बहुगुणी है।"

राष्ट्रपति हा॰ राजेन्द्रप्रसाद । " (मंडल का यह) (५) धर्मनीति २) (६) ६०अफीका का मन्याण्ह ३॥ ) प्रशंसनीय और आवश्यक संकल्प हैं।"

- (१) प्रायंना-प्रवचन-१-३) (२) प्रायना प्रवचन-२ २॥)
- ४) (४) पंद्रह अगस्त कं बार २) (३) गीता-माता
- (७) मेरे समकालीन (प्रेस में) (८) प्रार्थना-प्रवचन-६ (प्रेन मे)

पुरी योजना तथा अन्य पुस्तकों के लिए मगडल का बड़ा मुचीपत्र मंगाकर देखने की कृषा करें।



[ सिद्धान्त ]

## अहिंसक नेवरचना का मासिक

इन्द्रामाना हो हो

#### हरिभाऊ उपाध्याय मगणल जैन

गरनी प्राष्ट्रतिक चिकित्सा ता रामताम ही है।"

—मा॰ य॰ गापी

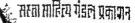
शिरमा-राज्य कृत में काव 'रवस्त्र हुगा वीर्त्स्ट भावन और शावारण विश्वस— यही रक्ष्मे पानी वार है ।" —पी० कीरॉटिस्स

प्रदेशि को हमें बताना नहीं बाहरी वह हम सदानी हमीरे और बाह ने बाह से नहीं जा सकते हैं

श्वी कर्षे प्रशीत की दृष्यानुगार कीर्ने हैं, प्रार
 प्रधान कर समझना काहिए।" —पद्दीकर पुष्ट

प्त-पूर्णाई १६४१ टेड्ड रुपया





# वाषिक मृल्य ४) ] जिल्लि - साहित्य [ इस अंक का १॥)

# 'प्राकृतिक चिकित्सा' विशेषांक

## लेख-द्वची

۶.	प्राकृतिक उपचार	महात्मा गांचा	१०१
₹.	प्राकृतिक चिकित्सा क्या है ?	डाँ० के० लड्मण शर्मा	१०४
₹.	मि <u>ट</u> ी	खलील जिबान	ې ۵ څر
	हम स्वस्थ केंसे रहें ?	श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन	१०७
٧.	प्राकृतिक चिकित्सक कैसा हो ?	श्री बीरुनाई दीक्षित	१०९
	चिकित्सात्रों का मृलाधार एक	श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य	११०
<b>७.</b>	प्राकृतिक चिकित्सा को गांधीली की देन	श्री खुई फिशर	१११
८.	प्राकृतिक चिकित्सा	श्री घनभ्यामदास विङ्ला	११२
٩.	प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली का जन्म और		
	विकास	स्वामी कृष्णानन्द	११३
۶٥.	त्रारोग्य की कुञ्जी	महात्मा गांबी	११७
şş.	मेरे अनुभव	श्री हरिमाऊ च्याच्याय	१३१
	वीमरी में लंघन	पं० जबाहरसाल नहरू	१३३
१३.	प्राकृतिक चिकित्सा का मर्म	डा० कृष्ण दर्मा	१३४
१४.	चिकित्सक वापृ	काका कालेलकर	१३६
<i>ڊ</i> بر	धरती माता का जादूभरा मन्पर्क	श्री एडोल्फ जुस्ट	ي ۽ ج
१६.	प्राकृतिक इलाज	महात्मा भगवानदीन	22.8
ي ۶	समस्त रोगों की मृलभूत एकवा	श्री जटाशंकर नन्दी	१४९
१८.	में तन्दुरुत्त हूं या वीमर ?	श्री लुई कूने	بحرب
१९.	सर्वागीण चिकित्सा-शास्त्र	डा० इंद्रसैन	१६०
રૄ∘.	वन-श्रमण्	श्री दनारसीदास चतुर्वेदी	१६६
२१.	प्राकृतिक जीवन श्रीर चिकित्सा	श्री ब्योहार राजेन्द्रसिंह	१७०
२२.	प्राकृतिक चिकित्सा का मूल सिद्धांत	टा० मुरेन्द्रप्रसाद गर्ग	१७२
२३.	प्राकृतिक चिकित्सा के आचार्य-गांधीनी	श्री रामनारायण च्याच्याय	१७३
२४.	शरीर के लिए भोजन की आवश्यकता	श्री महावीरप्रमाद पोद्दार	१७५
२५.	डाक्टरों का जमयट		168
२६.	<b>इन्द्रती</b> इलान	बाचार्य विनीदा भावे	565
	अमृतात्र और पूर्णात्र	<b>ढा</b> ० आत्माराम कृष्ण भागवत	१८३
	डाक्टरों की दुनिया	विस्तां देनीर	868
२९.	बायु श्रीर श्रारोग्य	टा० कुलरंजन मृखर्जी	364
	प्राकृतिक चिकिसा के चमत्कार	यगपाल जैन	126
	क्या व कैसे ?	सम्पादकीय	१९०
∋ર્.	मंडल की श्रोर मे	मंत्री	803

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्य भदेश तथा निहार राज्य की मरकारों द्वारा क्यूजों, कानेजों व लाइने रियोदधा उत्तरप्रदेश की प्राम्य पंचायों। के लिए म्यीउन

# जीवन साहित्य

अहिंसक नवर्चना का मसिक

ज्न-जुलाई, १६४१ ]



#### प्राकृतिक उपचार

महात्मा गांधी

प्राष्ट्रतिक उपनार मा अर्थ है ऐसे उपनार, जो सनुष्य के लिए पंग्य हो। सनुष्य यानी सनुष्य-साथ। सनुष्य में सनुष्य ना गरीर तो है ही, लेकिन उपमें सन और आत्मा भी है। इसलिए सच्चा पुदरती इत्याज तो रामनाम ही है। सनुष्य ने लिए प्रष्टृति ने इसी को योग्य माना है। कोई भी व्याधि हो, अगर सनुष्य हृदय में रामनाम ले तो उसनी व्याधि नष्ट होनी चाहिए।

जिस चीज का मनुष्य पुनन्स बना है, उसीमें इस्तज दृष्ठें । पुनन्स पृथ्वी,पानी,आकाश -सेज और वासु का बना है । इन पान तस्वी में जो मिल करे मो से । उसके माय राम-नाम नो अनिवार्ष हुए से नस्ता ही रहे ।

'हरिजन सेवड', ३-३-४६ ]

इंटवर की स्त्रुति और मदानार रा प्रभार हर नरह की बीमारी तो रोसने का अच्छे-मे-अच्छा और सम्मे-से-सम्मा इत्यान है, सुझे इसमें जरा भी यह नहीं। अस्त्रोम इस बात का है वि बैब, हतीम और डाक्टर इस मम्बे इन्डाज का उपबोग ही नहीं करते, बस्कि हुआ यह है कि उनकी किनावों में इस इन्डाज की बीट जगह ही नहीं नहीं। और कही है तो उमने जनर-मनर की सक्त अस्तियार करते खोगों को बहम के पुग में बोच्या है। इंटवर की स्त्रुति या रामनाम का बहम में कोई सबय नहीं। यह नी कुटरन का मुनहना मानून है। जो इसरा अम्बर करता है, वह बीमारी में बना रहता है। डाक्टर दोस्तों का यह दावा है कि वे पूरी तरह कुदरती इलाज करने वाले हैं, क्योंकि दवाएं जितनी भी हैं, सब कुदरत ने ही बनाई हैं। डाक्टर तो उनकी मिलावटें भर करते हैं। इसमें क्या बुराई है ? इस तरह हर चीज पेश की जा सकती है। मैं तो कहूँगा कि रामनाम के सिवा जो कुछ भी किया जाता है, वह कुदरत के खिलाफ है। इस मध्यिवन्दु से जितने दूर हटते हैं, उतने ही हम असल से दूर जा पड़ते हैं। इस तरह सोचते हुए मैं यह कहूंगा कि पांच महाभूतों का असल उपयोग कुदरती इलाज की सीमा है। इससे आगे बढ़ने वाला वैद्य अपने इदिगर्द जो दवाएं उगती हों, या उगाई जा सकें उनका प्रयोग केवल भले के लिये करे, पैसे कमाने के लिये नहीं तो वह भी अपने को कुदरती इलाज करने वाला कह सकता है। ऐसे वैद्य आज कहां हैं?

'हरिजन सेवक', १६-४-४६]

मेरा कुदरती इलाज तो सिर्फ गांववालों और गांवों के लिए ही है। इसलिए उसमें खुर्दवीन, ऐक्सरे वगैरह की कोई जगह नहीं। और नहीं कुदरती इलाज में कुनैन,एमिटिन, पेनिसिलीन, जैसी दवाओं की गुंजाइश है। उसमें अपनी सफाई, घर की सफाई, गांव की सफाई और तन्दुरुस्ती की हिफाजत का पहला स्थान है और पूरा-पूरा है। इसकी तह में खयाल यह है कि अगर इतना किया जा सके, हो सके, तो कोई वीमारी ही नहो।

'हरिजन सेवक', १८-८-४६ ]

चालीस वर्ष से भी पहले जब मैंने कूने की 'न्यू साइंस आफ़ हीलिंग' और जुस्ट की 'रिटर्न टु नेचर' नाम की कितावें पढ़ीं तभी से मैं कुदरती इलाज का पक्का हिमायती होगया था।...अव मैं कुदरती इलाज का ऐसा तरीका खोजने की कोशिश कर रहा हूं, जो हिन्दुस्तान के करोड़ों गरीवों को फायदा पहुंचा सके। मैं सिर्फ ऐसे इलाज के प्रचार की कोशिश कर रहा हूं, जो मिट्टी, पानी, धूप,हवा और आकाश के इस्तेमाल से किया जा सके।...दिल से भगवान् का नाम लेनेवाले मनुष्य का यह फर्ज हो जाता है कि वह कुदरत के उन नियमों को समझे और उनका पालन करे, जो उसने मनुष्य के लिये बना दिये हैं। यह दलील हमें इस नतीजे पर पहुंचाती है कि बीमारी का इलाज करने से उसे रोकना वेहतर है। इसलिए मैं अनिवार्यतः लोगों को सफाई के नियम समझाता हूं,यानी उन्हें मन,शरीर और उनके आसपास के वातावरण की सफाई का उपदेश करता हूं।

'हरिजन सेवक', १४-६-४७ ]

हमें अपना यह वहम दूर बणना होगा कि जो कुछ बरना है, उसके लिये परिचम }
पी तरफ नजर दौडाने पर ही आमे अडा जा सबता है। अगर बुदरती इलाज मीगने
के लिए परिचम जाना पड़े तो मै नहीं मानता कि वह इलाज हिन्दुम्नान के वाम का होगा।
यह इलाज तो माने घर में भौजूद है। हमेशा बुदरती इलाज की जलरत भी न रहनी
चाहिए। यह इतनी आसान चोज है कि हर आदमी को उसे मीग्य लेना चाहिए।...यह
सहज ही ममझ में आने लायक है कि पृथ्वी, पानी, आवाश, तेज और वासू के लिये ममुन्दर
पार जाने की जलरत हो ही नहीं मकती। इसरा जो बुछ मीगने को है, वह यही है—गाव
में मौजूद है। देहाती दवाए, जडी-बृदिया, दूसरे देशों में नहीं मिलंगी ....वूने, जुल्द,
फादर बनाइप बगैरह ने जो लिया है, सो मबके लिए है और मत्र जगहों के लिए है। यह
सीधा है। उसे जानना हमारा धमें है। बुदरती इलाज जानने वालों के पाग उमकी
योडी-बहत जानवारी होनी है और होनी चाहिए।

'हरिजन सेयन', २ ६ ४६ ]

मुदाली उपचार वे गर्भ में यह वात रही है वि उसमें यस-मे-सम एवं और यम-मे-सम व्यवसाय होना चाहिए। बुदावी उपचार वा आदर्श ही यह है वि जहा तक सभव हो, उसके माधन ऐसे होने चाहिए वि उपचार देहात में ही हो। गर्भ। जो मापन नहीं है, वे पैदा विसे जाने चाहिए। बुदावी उपचार में जीवन-परिवर्गन थी वात आती है। यह पोई वैद्य वो दी हुई पुडिया होने वी बात मही है और न अलाल जावर सुख हवा को या उसम रहते वी बात है। जो मुपत दवा छेता है, यह सिथुत बनता है। जो पुदाती उपचार करता है। जो पुदाती उपचार करता है। जो पुदाती उपचार करता है जह सिथुत बनता। वह अपनी प्रतिष्ठा उद्याप है और अच्छा बनते वा उपाय पुद ही वर होना है। बह अपने दारीर में में उहर विचान कर ऐसी बोधार करता है। विसे मान चरता है। को मुस्ता बीमार न पह गरे।... मीसम्मी आदि गोमनी पत्र पाना उपचार वा अतिवार्ध अस नहीं है। पद्य माना— युताहार—अवस्य अतिवार्ध अस नहीं है। हमारे है। हमारे देशत हमारी तरह हो क्यार है। हमारे साम-मदसी, पत्र हमारी कर हमारी सरह हो। क्यार मान अप है। हमारे मान-मदसी, पत्र हमारी सरह हो। क्यार मान अप है। हमारे बी समय गार्ग होना है, वह बचवें तो है हो नहीं, बिस्त उसमें मंगी देशतियों को अस्त आदि क्यार नो साम मारे हिन्दुस्तान रो जान होगा है।

'इरिजन मेयर', २६/६]

## प्राकृतिक चिकित्सा क्या है ?

## डॉ० के० लक्ष्मण शर्मा

आधुनिक सभ्यता ने हमें अनेक तरह की सुविधाएं प्रदान की हैं। पहले ये सुविधाएं केवल आनंद के लिये थीं; पर बीरे-धीरे इनके विना हमारा काम चलना कठिन हो गया। इस प्रकार हम कमजोर होते गये और हमारी स्वतंत्रता छिन गई। खोजा जाय तो इस सभ्यता द्वारा प्रदान की हुई शायद ही कोई ऐसी चीज़ हमें मिले जिसे अच्छी कह सकें।

सम्यता के इन्हीं उपहारों में श्रीपधोपचार भी है। यह एक विशेष प्रकार का ज्ञान है जिसे अर्जन करनेवाले डाक्टर एवं वैद्य कहलाते हैं। इस ज्ञान का उपयोग ये लोग अधिकतर धन कमाने में करते हैं। जनता का स्वास्थ्य सुधारने की ओर इनकी विशेष रुचि नहीं होती। इनका संबंध केवल लोगों के रोगों से होता है। कई ईमानदार डाक्टर तो खुले शब्दों में यह स्वीकार भी करते कि हैं उनके शिक्षाकाल में उन्हें स्वास्थ्य-रक्षा के नियम विल्कुल ही नहीं सिखाए गए।

तंदुरुस्त रहने के लिए क्या खाना चाहिए इस विषय का तो ज्ञान डाक्टर-वैद्यों को प्रायः नहीं ही होता। कितने ही साधारण आदमी इस विषय को उनसे अधिक जानते हैं। इसलिए यह कहना अनुचित न होगा कि डाक्टर-वैद्य जनता के अथवा किसी व्यक्ति-विशेष के स्वास्थ्य की रक्षा का भार ग्रहण करने के लिए अक्सर अयोग्य पाये जाते हैं। पर प्रायः सभी को डाक्टर-वैद्यों की दवा पर निर्भर रहना पड़ता है। जो दवा लेते घवराते हैं उन्हें भी वीमार पड़ने पर अपने को डाक्टर-वैद्यों के हाथ में सींपने के सिवा कोई दूसरा चारा नहीं रहता। हमें भालूम ही नहीं कि हम अपनी चिकित्सा कैसे करें? और यह तो हम विल्कुल ही नहीं जानते कि हम अपना जीवन-कम किस प्रकार निर्योग्त करें कि हम वीमार ही न पड़ें।

दूसरी बात यह है कि दवाएं रोग को अच्छा भी तो नहीं करतीं। वे रोग को अच्छा करने का भुछाबा-मात्र देती हैं। रोग से मुक्त होने का अर्थ है रोग से पूर्व जो स्वास्थ्य था वह प्राप्त करना । पर यहां तो डाक्टर —खास तौर से वड़े-वड़े डाक्टर—ही यह स्वीकार करते हैं कि दवाएं सच्चा स्वास्थ्य प्रदान करने मैं सर्वथा असमयं हैं।

इसका प्रत्यक्ष प्रभाव मनुष्य-जाति पर यह पड़ा है कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी वह कमजोर एवं जीवन धारण करने के एकदम अयोग्य होती जा रही है। प्रत्येक वर्ष डाक्टर, वैद्य, दवा की दूकानों एवं अस्पतालों की संख्या वढ़ रही है और उनसे भी तेजी से रोगों एवं रोगियों की संख्या वढ़ रही है। इससे यह निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है कि यदि यही दशा बनी रही तो रोगी और रोगियों की संख्या में वृद्धि ही होती जायगी। जो इस भयावह भविष्य से वचना चाहते हैं उन्हें औपघोपचार की विनाधक राह छोड़कर कोई दसरी राह खोजनी पड़ेगी। यह दूसरी राह रोग-निवारण एवं स्वास्थ्य-रक्षा का वह विज्ञान है जिस प्राछितक चिकित्सा कहते हैं। यह चिकित्सा वहुत ही सरल एवं युक्तियुक्त है। इसके सहारे कोई भी, डाक्टर-वैद्यों से मुक्ति पाकर, अपना चिकित्सक स्वयं वन सकता है।

यदि हम प्राकृतिक चिकित्सा के इतिहास पर गौर करें तो हमें जात होगा कि स्वास्थ्य-रक्षा एवं रोगों के निवारण की इस नैसर्गिक प्रणाली का आविष्कार ईश्वर के इशारे पर चलने वाले कुछ ऐसे आत्मवली व्यक्तियों ने किया था जो रोगों को अच्छा करने के ठेकेदारों की गुलामी से निकल भागना चाहते थे। इन प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों के साहसपूर्ण उद्योगों का ही यह फल था कि स्वास्थ्य-रक्षा एवं रोग-निवारण के सुनिश्चित नियमों —उपवास, जीवनशक्ति, ब्रह्मचर्य, क्षारमय भोजन, जल, वायु एवं प्रकाश के उपयोग—का पता लग सका। इनमें से अधिक चित्रतशील व्यक्तियों ने चिकित्सा के उन मूल तथ्यों की विवेचना की जिनसे प्राकृतिक चिकित्सा को जीवन एवं शक्ति मिली तथा प्रकृति की रोग-निवारक शक्तियों का ठीक उपयोग कर सकना

शन्त हो गया। इतसे से अपना स्पित को अहति की रोग-निवारक पालि का जान अपने क्वास्प्य-मुवार का हुन सोजो गमय हुआ था, बो इनके विशियको के गुन्ताए किसी अकार गुन्ताता ता हुन रहा, उत्ताता ही गया। अपने से अपने क्वास्प-मुदार के प्य का अवस्थित करने के लिए ईक्स से अपने को और उन्ने जो जकाम मिना उससे मान्य स्वास्प स्वास की को राग-मुक्त करने माने मुक्त करने हुए और कि रोगो की हुम नहीं नमें मुक्तिया अकर हुए और कि रोगो की हुम नहीं विवित्या का अपनेस वे अवना की सनाई के निम्म करने नमें।

इस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा व बार म पत्नी बात हम यह जातने हैं कि प्राकृतिक चिकित्सा उस श्रीवन-प्रणाली का दूसरा नाम है जो हमें बाक्टर-वैद्या की गुलामी से सदा के लिए मुक्त करदेती है। को लाग यह समझते हैं वि प्राइतिक चिकित्सा कुछ ऐसी चीज है जिसे कराने के लिए किसी नये विस्म के डाक्टर के यहा जाता होता है अयवा दिसी अस्पताल में जादर भरती होना पडता है, वे गलती पर है । प्राकृतिस विवित्रमा केवल दन बहादुरों के लिए हैं जो अपने स्वाम्बय, गरिक एव जीने की प्रधान जिल्मेदारी अपने कथी पर लेना माहते हैं । प्राष्ट्रतिक विकित्मा में अधविद्यामी की नगह बिना समझे-बुसे अपने को विसी के हवाने नहीं करना होता। इसमें तो स्वयं सबहुठ सीलना-ममझना प्रता है और सीले हुए नियमों को जीवन का विशेष अन बना कर उन पर उमाहपूर्वक प्रीवन-भर वल्ना होता है। अब बब हमने यह देख दिया कि हुमरी पर निमंद

अब बब हमने यह देण निया कि दूसरी पर निर्मार रहतर हम स्वयम नहीं रह समने नव पर्ने-नव अब मी हमें अमिन पर्ने पर्ने कि सिम्मीन से अपने नाम पर्ने की नियमेदारी सनने नाम अमी हों पिए। रोने हमें बेचन हमिनए होंने हैं कि हमें बाता में के नियमें का उल्लेखन दिया है। उस हम बाता आये हैं हिंद नियमों का उल्लेखन दिया है। उस हम बाता आये हैं हिंद नियमों का उल्लेखन हमारान्यों को सिन्दुल नहीं है। हम बन्द बेचन दुर्मिण पाने हैं कोर्सित हमें में नियमों को स्वापनी बाता हमारा वाह स्वापनी स्वाप

प्राहिति विशित्ता क्याती है। बर् इत गवस में भी अन्य विश्तिमा-यनात्त्वा में अदिनीय है। बर बनानी ही रोग स्मान्य-गवसी तिस्ती है उत्तर का (नवी का) पर है। उसने इत तिशान के कारण कर हमारे पर्व का अगहें, स्थायार अगवा मार बेनने की बीज नहीं है।

यहाँ यह बता बतारणत होगा हि प्राहृतिष विशिष्णा में पर्व, नैतितता एव रशास्टर्शवदा हो आरम में गर्बाष्ट्र भाता आता है और ६० प्रशास हा गर्बप हमारी मध्यता, उस सम्बता हो भाग्य है, मिने स्थारे धर्मानारे गर्बिव दिवारत कार्यों ने स्थारित शिया था।

अनर हम बाहितह निक्तिमा को परिमाश के व वाग में करों ना करेंगे कि बाहितह किशिया जुन वर्ष प्रमानी का करों हैं जिस पर क्ले से सके हसास्त्र की प्राणि हार्ग हैं जिस पर क्ले से सके हसास्त्र की प्राणि हार्ग हैं एवं वह न्यायी होता है। हमका आवरण ही रागा से बचने और अनर रोग हैं। जाय ना अने स्वयं मुनह होते का प्रमाग है।

प्राकृतिक विशिया हमें ऐसे विषयी का बात कराती है जा काई अन्य विकिन्स-प्रमाधी नहीं करा वाती । हमें बब साता चाहिए ? बदा माता चाहिए है तिनका साना चाहिए?—यह हमें किंपवन् बतानी है, जिससे हम विषयों के अनुवित भीत से बंद गर है। विवाहियों के लिए यह ब्रह्मवर्ष के उत्त नियमी का निर्देश करनी है जिनका जानना उनके लिए आवश्यक है। बाहतिक विशिष्टमा हमें बताती है हिं हमें रेनी बारु में साम रेना चाहिए और साम बंग रेना नाति ? सह गुरे ने प्रशास एवं बार्ट ने उपयोग निमानी है। यह भी बनाती है हि मैंने भीर श्चिमी कमरत करनी चार्र*ा* हिं हमारा गरीर हमारे प्रचेत नार्व ने उत्तुत्त गरे। यह तमें मह भी बत्ताती है ति हवे तिराणा एवं आणा के शाला में आने मन को दिन प्रकार स्पिट रनना महिए कि हम दिवर की हस के बुद्दिया मारी कर नहें, का कीका को मुलमद बनाने का एकमात्र उराप है।

में बार पर मी बना देना चारता हूं हि मार्गतर चित्रित्रमा निमी एक बारित ने निए नहीं है, यह मार्र परिवार की चीज़ है। इसके उपयोग से बच्चे तक रोग क्या, प्रत्येक प्रकार के भय से मुक्त रहेंगे, क्योंकि निर्भयता ईश्वर में विश्वास से उत्पन्न होती है जो सदाचरण का फल है। रोग-मुक्ति तो बहुत साघारण चीज़ है, इसकी विधि पशु तक जानते हैं बीर उनके पास पुस्तकें एवं उसके शिक्षक न रहने पर भी वे उसके ज्ञान का ठीक एवं सफलतापूर्वक उपयोग करते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में हमें सीये ईश्वर एवं उसकी छुपा पर भरोसा करना होता है, इसके लिए हमें डाक्टर, वैद्य या किसी अन्य पंडे-पुजारी की ज़करत नहीं होती। प्राकृतिक चिकित्सा का विशेषज्ञ हमें प्राकृतिक चिकित्सा का विशेषज्ञ हमें प्राकृतिक चिकित्सा का विशेषज्ञ हमें प्राकृतिक चिकित्सा के विज्ञान एवं उसके

उपयोग की विवि सिखा सकता है, पर उसे हमें डाक्टर-वैद्यों की तरह अपना गुलाम नहीं बनाने देना चाहिए।

प्राकृतिक चिकित्सा के सारे उपदेशों का थोड़े में यह संदेश यह है कि स्वस्य रहने एवं रोगों से मुक्त रहने के लिए प्रयत्न करना अपना कर्तव्य है, पर उस प्रयत्न का फल देना ईश्वर के हाथ में है। इसी आशयको व्यक्त करते हुए भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है:

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेपु कदा च न।'

अर्थात्—"हमें फल की कामना न करते हुए केवल कमें करना चाहिए। फल ईश्वर के हाथ है। वह जो दे वह प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करना चाहिए।"

## मिट्टी

### खलील जित्रान

वड़ी शान-शौकत और वैभव के साथ मिट्टी मिट्टी में से जन्म लेती है। फिर यह मिट्टी वड़े गर्व और अभिमान से मिट्टी के ऊपर चलती-फिरती है।

मिट्टी मिट्टी से राजाओं के लिए राजभवन और लोगों के लिये ऊंची-ऊंची मीनार और सुन्दर-सुन्दर भवन निर्माण करती है। वह अद्भृत पुराण-कथाओं के ताने-वाने बुनती है, कठोर नियम और कानून वनाती है और सूक्ष्म-से-सूक्ष्म सिद्धांतों और दर्शनों की रचना करती है।

जब यह सब कुछ हो चुकता है तो मिट्टी मिट्टी के जंजालों से उकता कर अपने प्रकाश और अंधेरे में से काली-काली भयानक छायाओं, कोमल-कोमल सूक्ष्म कल्पनाओं और मनमोहक मधुर-मधुर स्वप्नों की रचना करती है।

इस श्रम और काम से थक कर जब मिट्टी की पलकें वोझल हो जाती हैं तो फिर मिट्टी की नींद हारी-थकी मिट्टी को फुसलाती है। तब गहरी और शांत निद्रा में संसार की सब वस्तुओं को मिट्टी अपनी पलकों में बन्द कर लेती है।

फिर मिट्टी मिट्टी को सम्बोधन करके कहती है, "देख, मैं ही तेरा आदि हूं और मैं ही तेरा अन्त । तेरा आदि और अन्त सदा मैं ही रहूंगी जबतक कि तारों का अन्त न होगा और चांद-सूरज जल-बुझकर राख का ढेर न हो जायंगे ।"

#### हम स्वस्थ केंसे रहें

#### श्री पुरुपोत्तमदाम टंटन

[जीवन-गाहित्य के पाटन ममकन जानते होग नि कार्यण के अध्यक्ष निवाहित किरासा के प्रवक्ष ममर्थन है। असने क्या जीवन जीवन के जिल्ला के प्रवक्ष ममर्थन है। असने क्या के जीवन के जीवन के जिल्ला के अधिक के मान कि पाटन के प्रवक्ष मान के प्रविद्ध के अपने के प्रवक्ष के प्रवक्ष मान के प्रविद्ध के प्रविद्ध के प्रवक्ष मान के प्रविद्ध के प्रविद्य

प्राहृतिक चिकित्मा प्राहृतिक चीकत का अग है और प्रचानित प्रचानियों से कही अधिक अच्छी है। यह गाणीती के प्रति चिक्त सम्मान प्रदर्गन होता चीड गाणीतमारक-विर्णि की समन्त्र धन-गांधि प्राहृतिक गीवत तथा प्राहृतिक चिक्तिमा के तुनों के प्रचान-वार्षे में गर्च की बाद ।

जब बभी हम बीमार पर जाय हो हमें बननी निवित्तमा प्रश्नित पर छोड़ देती चारिए। भीर हम टीन इस से रहने रहे तो हमें बोदें बीमारी साधारमाज हो नहीं सर्पत्री। हमारी सीन-भीमाई बीमारिया टीन तरह रहते से दह हो महत्ती हैं।

स्ताप्तम १०० वर्ष में दबारमां का मध्येन बहुत का गाँ है, दिनका मदनर परिणाम हुना है। जो स्थान गाँ है में कभी भी स्वच्य नहीं रह गाँ है। मार्टी हो जाने है में कभी भी स्वच्य नहीं रह गाँ है। मेंने साने गारीर पर परीणाम किये हैं। मार्ने पुणे तथा विशो पर भी मैंने परीणाम करने देगा है और मन्त्र में में इस नतीने पर पहुंचा हूं कि बीमार्टियों का मदने महिना दुग्य महिने की सामार्टियों का मदने महिना दुग्य

प्राहरित जीवन के साथ प्राहरित भावन का विषय पतिन्छ गाव प गाता है। बारी में करने अग पर रहा हूं। बेरी गयस में तरे आता है आग हाग पत्रता हुआ अप सन्यान्यात्र के लिए केरी अगात है। प्राहरित कि बार है। प्राहरित कि बार है पर्य गाते के कम को पहारें। यह केरिय है कि अगात में पर्य गाते के कम को पहारें। यह करिया है कि अगात में पर्य गाते के कम को पहारें। यह करिया है कि स्वाहर्त की अगुआ यानें, बुद्धि का उपयोग कर और टीक टीक निरम्य कर; क्योंकि मिक्य उनका है। में इस बात का गईब किरोपी उदा ह कि जैसा किताबों में लिया है वैसा है। मान किया जाय । मेरी राय में बुद्धि का टीक-टीक प्रमोग किया जाय और जो बाद बुद्धि-सम्म एसे बुरी मानी नाय । इतियों में भवन मन होता है और मन में भी प्रकत बुद्धि होती है। में बिक्यियों में निवेदन कम्मा है कि बे पुरानी पद्धित पर आम सूद करन करे। मानी बुद्धि में काड़ के और देनों कि उनके प्रयोगा का ग्रांग पर कम अमर पहना है। उन्हें करियारी नहीं होना चारिए।

इरुटेंड के बारणाह के एत प्रतिव्य बात्रद्र म, किरोने नेवन का बार अग अवेशीन दश्यारंग की पढ़ारें सनुपारण में बिगाया था, बारने अन्त गमय के नगमय यह सम्मति दी थी हि यदि समान दश्यारंग गमुह में फेंड दी वार्षे हो मनुष्यवाहि के निष्यु यह सामकर होता । हिन्तु मनुष्ये हहते बारी अर्णान्यों के निष्यु म्हिताकर

आइतिक विकित्यकों के लिए यह उपित है कि वे यन कमते की इक्ता के बाहित न ही उपित हुए है कि अपहरित विकित्या नरहें है ऐतियों का मीकने के लिए विकास की मानित गया नाहम्बर्ध में मानी हुइनों गुकार लो है।

१९२० में जेन ने भीतर और नार्र रहते हुए मैंने जो नुग्न देशा है तथा जाने जीवन में मेंने जो प्रयोग निय है उनने आचार पर में नट गमता हूं हि हम निना आग द्वारा पकी वस्तुओं से निर्वाह कर सकते हैं। प्रकृति ने मनुप्य-मात्र के लिए कुछ अन्न पदा किये हैं। इन्सान को छोड़ कर और कोई प्राणी आग द्वारा अपना भोजन नहीं पकाता। हाथी, शेर, बैल आदि भारी-भारी जन्तु प्राकृतिक भोजन करते हैं। में पूछना चाहता हूं कि फिर मनुष्य के लिए ही कृतिम रूप से पका हुआ अन्न क्यों आवश्यक हैं? यदि हम अपनी पूरी आयु तक जीना चाहते है तो प्रकृति के अनुसार ही चलें और स्वाभाविक अन्न, फल आदि का सेवन करें।

हमें नमक और चीनी के उपयोग से भी बचना चाहिए। नमक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। उससे प्यास बहुत लगती है। सन २०-२१ में मैने लगभग छः मास के लिए नमक छोड़ दिया था और उस बीच भोजन के जल से अलग जल भी नहीं पिया। बाद में एक मित्र के कहने पर नमक से पका भोजन खा लिया। तब बड़ी प्यास लगती। इस तरह जब-कभी मैं नमक खाता हूं, बड़ी प्यास लगती है।

पानी भी अधिक नहीं पीना चाहिए। उसका प्रभाव दिल पर पड़ता है। दिल को व्यर्थ ही ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। यदि किसी को रक्तचाप (व्लडप्रेशर) की बीमारी हो तो नमक छोड़ देने से वह बहुत-कुछ ठीक हो सकती है। जेल में मेरे एक मित्र को ब्लडप्रेशर था। मैंने उनसे नमक और दाल छुड़वा दी। तीन दिन में ३० अंश ब्लटप्रेशर कम हो गया।

इसी प्रकार चीनी भी हानिकारक है। मने सन २०-२१ में ही चीनी का प्रयोग करना छोड़ दिया था। उस समय तो रमिलए छोड़ी थी कि विलायती चीनी आती थी, लेकिन वाद में इसिलए छोड़ी कि वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। खेत चीनी में कारवोहाइड्रेट तो रहता है; किन्तु साथ के अन्य स्वाभाविक पदार्थ निकाल दिये जाते हैं। लाल शक्कर में तो स्वाभाविक लवण्य होते हैं; लेकिन सफेद करने से वे निकल जाते हैं, जिससे चीनी तंदुरस्ती के लिए हानिकर सिद्ध होती हैं। यदि तन्दुरुस्ती रखना चाहते हो तो गुड़ या लाल शक्कर खाओ या गन्ने का रस इस्तेमाल करो। गन्ने का रस सबसे अच्छा है। गांघीजी ने तो चीनी को मफेद जहर (White Poison) बताया है।

में केन्द्रीयभूत भोजन (Concentrated Food) से भी घवराता हूं। घी नहीं खाता। मूखी रोटी या कच्चे फल आदि का सेवन करता हूं। तिल मुझे वहुत पसन्द है। कुछ लोग कहते हैं कि घी खाने से ताकत आती है। यह तो एक भ्रांत धारणा है।

में दूघ भी नहीं पीता। वह तो बच्चे के लिए होता है। तीन-चार वर्ष की आयु तक माता पालन-पोपण के लिए शिशु को दूध पिलाती है। जो बड़े-बूढ़े दूध पीते हैं वे अस्वाभाविक भोजन करते है। आपने देखा होगा कि यूनानी हकीम प्रायः दूध बहुत से रोगों में बन्द कर देते है। किसी भी दशा में दूध मनुष्य को अधिक नहीं पीना चाहिए।

शहद का प्रयोग भी मुझे अच्छा नहीं मालूम होता। वह तो मक्त्रियों का भोजन है।

किसी रोग को रोकने के लिए टीके लगाना अप्राकृतिक और हानिप्रद है। छूत के किसी रोग के कीटाणुओं
के नाम करने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि मनुष्य के
अन्दर के रोग का सामना करने की शिवत पैदा की जाय।
दवाइयां कीटाणुओं का नाश नहीं करतीं। देखा जाय तो
कीटाणु चारों ओर हैं, अन्दर और वाहर भी। तब हम
किस प्रकार उनके प्रहार को रोक सकते हैं? टीके से
कीटाणु एक बार मर जायेंगे; लेकिन फिर प्रवेश कर
सकते हैं। टीके के प्रश्न पर वैज्ञानिकों को निष्पक्ष भाव से
विचार करना चाहिए। मेरा मानना है कि टीके हानिप्रद
हैं। टीके या तो अज्ञान के फल हैं, या लालच के। वैज्ञानिकों
को स्वार्थलोलुप व्यक्तियों के चक्कर में न आकर स्वतंत्र
हव से सोचना चाहिए। अंध-विश्वासों से किसी बीमारी
का इलाज नहीं हो सकता।

हमें बरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए प्रातःकाल घूप का सेवन करना चाहिए। में सब कपड़े उतारकर प्रातः घूप का सेवन करता हूं। बहुत दिन हुए जब में बीमार पड़ गया था तब पुरी गया था। वहां पर समुद्र के किनारे में प्रातः घूप में बैठता था और समुद्र के जल से स्नान करता था। दबाइयों से तो में घबराना रहा हूं। एक बार में बहुत बीमार पड़ गया। डाक्टरों ने मुझ पर बोलने के बिषय में पावन्दी लगाई। वह ठीक थी। उससे मुजे काम हुआ। मूजमे कारकक्र में सिविक सर्वन ने कहा पा कि में भाषण देता बन्द कर दू तो बाब सार बीर जो राष्ट्रा। यह सन् ३९ की बात है। इन बचों में बीरने का काम सो मुजे बहुत पहा; केडिन में अभी सक जीविन है।

सन् रेभ में भे सहारे तथा था। उन नमय में एक सड़के को भी साय से गया था। उत्तरों जूदी जा गई दो में उमे गोठे बान में लोट देना था। इसके उनगा जबर कई दिन में बहुत हुन्ता हो गया। दिन्न जब लाजा साजनत्तराओं साये उन्होंने आता की कि हुनैन दो। चूरि मेरे सुद्दे से हीं नित्तर यदा, जन, कुनैन का स्पेताल करना ही यदा। सैने उने स्वस्तर दोन्दों सेन हुनेन सार से या तीन दिन निश्त सी। उस से समाज के समीत ही या, उसकी अर्थाय आ पूरी थी। वह समाज ही पता। वसे देगा है कि एए-एक बीमार को बाहर होग है--२० हंग हुनेन प्रतिदिन कई दिसे एक देने हैं, उसने बीमारी चौड़ी देर के लिए दम जाती है, हिन किर समय पाकर उनस साठी है। दमाइमें की पार्टेस में मतने से कोई काम नहीं, उन्हें दारी का ना मा है। होता है। मेरा सुमाब है कि लोग दिस मारे दारायों की होता है। मेरा सुमाब है कि लोग दिस मारे दमाइमें की होता है। मेरा सुमाब है कि लोग दिस मारे दमाइमें का सेन न करे। बहु जि के कार्य मार्ग पर को, मारू-जिक मुद्ध औरन करां। वहां जि के कार्य मार्ग पर को, मारू-जिक मुद्ध औरन करां। वहां के कार्य मार्ग पर को, मारू-जिक मुद्ध औरन करां। वहां के से कार्य मार्ग पर कर मार्ग है।

### प्राकृतिक चिकित्सक वैसा हो ?

#### थी घौरुमाई दीचित

मार्तिक विशिष्मा की मनल्या का मुप्त साधार विशिष्मक के भावरण पर सक्तीका है। किता विशिष्मक पूर, सप्तक्रव जीवा जीनेशाल, साध्य-बंगत की मुपा और स्थान निरुग्त स्वत्यक रनेशा ग्रहेणा जन्मा ही जाना प्रमाव रोग और रोगो पर देखा । एक बार जरतीतांकन में एक ऐमा मरीज भावा को द्रारेसाइ से उकत निमोतिका में त्रेता कर चुना का और जिमे तीन बात्रां में देखार सामा मात्र प्राचीत भीत जिमे तीन बात्रां में देखार सामा मात्र प्राचीत दिया चा कि बहु स्विक्त-नेश्चीपक क्रमोग पर दिविका, सेति की बात्रां में दिवार सुग्न में पुरस्त सामूरी (मार्थाली) अरोने मीटर में सिंद है की बीत्रह की करारीशाला मा पहुंच भीत प्राचेत्त की देखार की इ साध्य ।

प्राणी पर कामे प्रशीकरोज्ञान्दोन के लेन को बीरल जिलाइ देने की आजा दो और उनहीं जगह परम मिट्टी की पट्टी जाने हैं कहा । अनलर इस्तर का माम तरीवा परमार्थे हुए करने कहे, "मरीज को मुक्टुनाम प्रकार कराता और देह पर गरंदर के वार्ती की पट्टी करात कार और देह पर गरंदर के वार्ती की पट्टी कराता हुए कर के पार कार कार कोर के प्रकार की माम मी का प्रशा हुए कर के पर्या । सीच-वीत पट्टी कार हुए का के अगर आग्य का मारदाही रहेगी कार माने कर साम है। "आता के अनुगार विश्वास के माने अस कार कार के अनुगार विश्वास के पर्या आज की कर सहाता है। असाता के अनुगार विश्वास के माने अस की कर सहाता है। असात के माने कर साम के अस कर सहाता है। असात के माने कर साम के अस कर सहाता है। माने अस्तर माने विश्वास के स्वा के स्व के साम के स्व के साम का साम के साम का साम के साम के साम के साम के साम का साम का साम का साम के साम का साम

'रिहमन' भेषज के रिषे, बाल जीत जो जात। बहे-बहे समर्थ भये, ती न बोऊ मरि जात॥ .... 'रिहमन' बहु अंगज बण्त, स्यापि न छाड़न साथ। सम मम बमन अरोग बन, हरि अनाय में नाय॥

## चिकित्साऋों का मूलाधार एक

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

निसगींपचारक जिसे अपनी ही प्रणाली मानते हैं, वह वस्तुतः उन्हीं की प्रणाली नहां है। दूसरे उपचारक भी उसी प्रणाली का अनुसरण करते हैं। प्रकृति ही सदा रोग दूर करती है, इस बात में अपियोपचार की सभी विचार-धाराएं एकमत हैं। शरीर की जी-वनी शक्ति ही बीमारियों को दूर करती है। वर्तमान औषध-विज्ञान के सभी हाक्टर इस सत्य को भली प्रकार जानते हैं कि जीवधारी शरीर अपनी जीवनी-शक्ति के द्वारा ही नीरोग होता है, दवा-दाह से नहीं।

विकित्सा-विज्ञान प्रकृति को सहायता देनेवाले विभिन्न तरीकों को सिखाता है। वह यताता है कि देह को रोग-मुक्त करने की प्रिक्रिया में आने वाली समस्त वाधाओं को दूर करने तथा शरीर के पुनर्गठन के समय उठ खड़े होनेवाले खतरों के विरुद्ध शरीर की किस प्रकार सहायता की जा सकती है। शल्य (Surgical) विकित्सा भी इसका अपवाद नहीं है। वह भी प्रकृति को सहायता देने की इस योजना का ही अनुसरण करती है। सर्वोत्तम विकित्सकों का तो नियम ही होता है कि कम-से-कम औपवियों का प्रयोग करें और शरीर के रग-रेशों की प्राकृतिक प्रवृत्ति को गित-शील बनाने के लिए जो कुछ आवश्यक है उसपर ध्यान केन्द्रित करें। इस दृष्टि से सभी पद्यतियां वस्तुत: प्राकृतिक चिकित्सा हैं।

प्रकृति रोगों को दूर करतो है, अन्य किसी चीज से रोग दूर नहीं होते। इसका अर्थ यह नहीं कि जो कुछ जैसा है, उसे वैसे ही छोड़ दिया जाय। स्मरण रखना चाहिए कि शरीर में कुछ खरावी होती है तभी रोग पैदा होता है। उस अवस्या में शरीर से उस खरावी को दूर करने के लिए थोड़ी-बहुत सहायता की आवश्य-कता होती है। तिनक-सी मदद से बड़ा अन्तर पड़ जाता है और उस मदद का त्याग नहीं किया जा सकता। अब अवस्या कुछ सुधर जाती है, शरीर की प्राकृतिक मित्त अना जोर लगा है तब शोधन-कार्य

की गति वढ़ जाती है।

निसर्गीपचारकों तथा डाक्टरों व दूसरों की चिकित्सा में केवल कुछ अंशों का ही अंतर है। सिखान्त अथवा समस्या को सुलझाने के ढंग में कोई अन्तर नहीं है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, आजकल के सर्वोत्तम डाक्टर तो प्रकृति के मार्ग में कम-से-कम वाधा उपस्थित करते हैं और शरीर की शक्तियों को मदद देने पर ध्यान देते हैं। वे डाक्टर तो निकम्मे होते हैं, जो अत्यिध्यां का प्रयोग कराते हैं। वास्तव में अच्छे डाक्टर तो प्रकृति के कार्य को आरम्भ कराने तथा उसे अच्छी तरह आगे वढ़ाने के लिए जो आवश्यक होता है, वस वही करते हैं।

एक वात और याद रखनी चाहिए। विकास-प्रक्रिया में प्रकृति का कुछ ऐसा स्वभाव वन गया है कि जितना करना चाहिए उससे वह कुछ अधिक कर जाती है। जब शरीर में कहीं घाव हो जाता है या अन्य कुछ गड़बड़ हो जाती है अथवा कोई छूत लग जाती है, तो रक्त में तेजी आ जाती है या सूजन हो जाती है। इससे प्रकृति की चिन्ता बहुत अधिक बढ़ जाती है। तब आवश्यक हो जाता है कि उसकी प्रवृत्ति को थोड़ा दवाकर रक्का जाय, जिससे वह अपनी उचित सीमा का उल्लंघन न करने पावे । बहुत-सी वस्तुएं, जिन्हें डाक्टरी इलाज कहा जाता है, प्राय: वे उपचार होते हैं, जो प्रकृति की उन शोवन-शक्तियों के जोर को कम करने के लिए किये जाते हैं, जिनसे कण्डदायी छज्जण पैदा हो जाते हैं और खतरनाक तक सिद्ध होते हैं, प्रकृति को प्रायः अपने विरुद्ध संरक्षण की आवश्यकता होती है। अच्छे उपचार का अर्थ है प्रकृति को हर तरह की सहा-यता देना, कभी-कभी प्रकृति के विरुद्ध भी।

सभी इलाज प्राकृतिक उपचार हैं। प्रश्न है कि वह उपचार विवेकपूर्ण तथा सुचार है अथवा कि प्रकृति के मार्ग में अनावश्यक हस्तक्षेप है। यदि अनावश्यक हस्तक्षेप है तो वह मिथ्या उपचार है।

## प्राकृतिक चिकित्सा को गांधीजी की देन

श्री लुई फिशार

गार्थात्री कहा करन चरित्र व किना अपारित या अपने मन्यिपया अथवा समात्र पर भार-स्वरूप हूण १२५ वर्ष जीवित रहना चार्त ये। इतने वय तर वर गरीर को केंग्र स्वस्य बनाये कात् / मृत्यूयम उप्तान ममताया हि यह अवन्त निम प्रकार सादुरन्त रह। सन् १९०१ म उन्हान और्याचया का अन्तिय नमन्त्रार रिया और उनर स्थान पर निमगीरचार नियमित आहार विहार का आदत डाणी। इसन भी महर्ग्या काय यह किया कि उत्हान भरान मन्त्रिक का अना सक्त बना निया आ कि दीय नावा हाने की कुआ है। उत्त क्षा पण की विना इचन रसन नेवा करा हुए प्रथ्येक स्पन्तिका अधिक र है कि वह १२५ वर बीवित रह। इनदी उन कामना भी रणना माण्यि । सवान लिए ग्रमाण और पण्ती इच्छान त्याः स अपार आनाद प्रान्त होता है। यह एक ऐसा अमुक्त जिससे जीवन अजर-असर बनना है। उसमें विना अपदा अर्थय द जिल्ह्यान ही नणा आण्या वा अंद्र पारक है हशप-त्याम जीवन प्रशयक है।

अह गणिता ने एक नई पात अभीवार की— निनर्गालार। उन उरान जवन नवनत गिनु का नवाथी। उनर वह बच्चे—गारी, धावाण गार्ड भागा वा विशास जह उराहत भारत ना हवन व भागीता की गुण्यों में मुंहर दिवर राण्ये—मा अपन्यानाहर वाया यात रहे। वक्तात लिनु के लिन उपात एक हरू बनाया जिमक शीत हीरूबों में एक बर वस भी था। गोरीश के बिह्माद राज्ये में एक बर वस भी था। गोरीश के बिह्माद राज्ये मा बन्सा का ह्यानरण में निप्योग्यार का विशिव्य भा। इसीरण विषय हुआ है हुए का पहला क्या सहाहि इस बहा का दिनगीतवार के विश्वविद्यान

त्रित एवं मीतवार (मामवार) वर नोर्पेत त भवरमापु गण आयावत वर छण्ड दिसा । उत्तर सरेवार विस्त-वृक्ष अनुसव हुआ मण यह माबत

मूलना पी कि स दिनी तयर स गरीबा के लिए एक गरमा गरी करन का आगा रहतूं। उटें निम्मीतार को गरीब के नाम र जाना था न कि यर उम्मीद रक्ता कि गरीब जन पाम आगा । इस कुत म एक गिमा निष्त है। बर मा कि 'किमा भाषीज का, महिती बह कि मिमान्या न कही है। नवनक निजान स्पन्न माना जवजह कि यर हुन्हार् मिल्ला और हृद्य का जनावित न करती है। ' गरीजा यवका भाषावानित है। नामान्य

उरात तिमयोगनार का काय गाय म आरम्भ करन का विकार किया । सक्या भारत ना यह है। उरात निया वर्ग है नारा भारत, तिम्मद्र निया म यादित रत्ना है। यह ति किया का का व्य ट्रॉल रुवाल मारस कर दिया। यान निय के निय उन्नरायक गांव में बग यय जहां तान हमार की आराग या—मूता-आन्याहर नेज्ये नाहत पर। का गांवी बहुर साथा व या, अस्या जन्मयुषा, जना क बनाव य नाम और नाहबर या महिन दुन्यान नाही या नाह और नाहबर या महिन दुन्यान

पहल कितामाचार बाह्र मा १० कितान आह ।

हो नी नीवार्य न रुप्त पा चा हा हिएस का मार्थन वा न्यान का हिएस का मार्थन वा न्यान का हिएस का मार्थन आह तुम्ल में हुए महर्ग, हो।

बर रूप भार पानि चा सूच प्रमाप । रुप्तन मार्थे हे रूप हुए महर्ग, हो।

हे प्रमाण किता नाई बीच उनन मार्था हो। हा निवा का हो।

हे प्रमाण मार्था मार्थित और हाई कि जिल्हा मार्था हो।

हे प्रमाण मार्थ्या मार्थित और हाई कि जिल्हा मार्थ्या मार्थित हो।

हे प्रमाण मार्थ्या मार्थित हो। हार्थित हो।

हो स्वा एक मार्थ्या मार्थ्य हो।

हो स्वा एक मार्थ्या मार्थ्य हो।

हो स्वा हो हो।

हो स्वा हो।

हो स्व हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो स्व हो।

हो स्व हो स्व हो स्व हो स्व हो स्व हो।

हो स्व ह

केन्द्रित करने से मिट्टी की पट्टो, वाष्पस्नान और मालिश द्वारा कारगर इलाज के लिए मार्ग तैयार होता है।"

स्वयं गांधीजी में भौतिक वस्तुओं पर विजय पाने की विलक्षण मानसिक शक्ति थी।

अपने वयस्क जीवन में गांबीजी निरन्तर स्वास्थ्य-सम्बन्बी कार्य में लगे रहे और युवावस्था में भी, जबिक उन्होंने मृत्यु-शैया पर पड़े अपने पिता की सेवा-शुश्रूपा स्वयं की । जहां तक उनकी पहुंच हो सकती थी, उन्होंने स्वयं प्रत्येक व्यक्ति की टहल और चिकित्सा की । दूसरों की पीड़ा उन्हें पीड़ित करती थी। दया उनमें अपार थी।

'दि लाइफ त्र्याव महात्मा गांधी' से]

## प्राकृतिक चिकित्सा

श्री घनश्यामदास विङ्ला

प्राकृतिक चिकित्सा का शब्दार्थ क्या है, यह विवाद अप्रस्तुत है। असल में तो जो माने इसके जगत् में माने जाते हैं वही हमें स्वीकृत होना चाहिए और वह यह है कि जो चिकित्सा व्याधि का मुकाबिला दवा से न करके, पानी, भाप, मिट्टी, सूर्य-किरण इत्यादि और खान-पान से करती है वही प्राकृतिक चिकित्सा है। पर मेरा अपना मत है कि यह अर्य संकीर्ण है और इस अर्य को व्यापक करने से ही इस प्रणाली की हम सेवा कर सकेंगे। असल में तो जो उपचार रोगों से लड़ने के लिए प्रकृति को पुष्टि दें, वे सभी उपचार प्राकृतिक चिकित्सा के नाम से पुकारे जाने चाहिए।

वात यह है कि शरीर के भीतर एक उपचारक है जिससे हमारी जान-पहचान कम है और वह यद्यपि टाक्टरों और वैद्यों से कहीं अधिक प्रभावशाली और स्वयं-सिद्ध ज्ञानी है; पर चूंकि हम उसे कम जानते हैं, हम उसके पास न जाकर अक्सर वैद्य-हकीमों के दरवाजे खटखटाना ज्यादा पसन्द करते हैं। यह उपचारक विपजन्य चीजों को शरीर में प्रवेश करने से रोकता रहना है, उनसे लड़कर उन्हें भस्मीभूत कर देता है, या उन्हें निकाल बाहर फेंकता है। हैज़ा, टाइफायड, स्रय के अनिगत कीटाणु बातावरण में फैले रहते हैं; पर वे हरेक को अपना शिकार नहीं बना सकते; क्योंकि इन कीटाणुओं को भी क्षेत्र चाहिए और क्षेत्र का द्वार उन्हें खुला मिलना चाहिए। यदि क्षेत्र का स्वामी सजन है तो वह विजातीय कीटाणुओं के लिए

क्षेत्र का दरवाजा वन्द रखता है। इसलिए क्षेत्र के इसी स्वामी अर्थात् प्रकृति को किसी भी तरह से सहायता देना, उसे वलिष्ट वनाना, इसीका नाम प्राकृतिक विकित्सा होना चाहिए। यह सहायता चाहे हम भाप से दें, या औपिंच से।

पर कभी-कभी हमारी नादानी-भरी छेड़-छाड़ से प्रकृति को सहायता देने के बदले हम उसके लिए परेशानी पैदा कर बैठते हैं। इसलिए कीन-सी चिकित्सा प्रकृति को सहायता देती है और कीन-सी उसके लिए परेशानी पैदा करती है, यह जानना चाहिए। पर यह मामला सहज नहीं। यह तो ज्ञान का विषय है, जो अन्वेपण से और अनुभव से ही आता है। इसलिए 'तत् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया'—नम्प्रता-पूर्वक दिमाग के दरवाजे को खुला रखकर और ज्ञानियों के पास जाकर हमें उस ज्ञान को ढूंढ़ना चाहिए। किसी भी चिकित्सा की महज़ इसलिए कि वह मिट्टी और पानी के दायरे के बाहर है या कि कुनैन और पेनिसिलिन के सामने गंवारू है अवहेलना करना मनुष्य-जाति के प्रति अन्याय है।

ज्यों-ज्यों संसार की प्रगति होगी, ज्ञान बढ़ेगा और नये-नये आविष्कार होंगे, पुराने निर्णय हमें बदलने पड़ेंगे। पर जितना आविष्कार हो चुका है उसमें से कुछ को हमने बेदांत-ज्ञान का अन्त मान कर ग्रहण कर लिया है। इसमें कुछ मजवूरी भी है, वयोंकि जबतक यह सावित न हो कि दूसरी कोई अच्छी प्रक्रिया ईजाद हो पृश्वित बतर सम अनुभूत चीन की अवहेत्रश कैन हो, और अवहेलना करना इटवर्मी भी होगी।

र्रेजा या पेवर का टीसा स्थाना या न स्थाना र एपर कुछ सोगों में मनजेद हैं। एर प्रदि जहाँन का टीसर गहुरवाना देना हो तो टीका स्थाना यह विवाद के याज में डाज्या रोंगी के स्थित स्थाना वहीं वर्ष यह निरिवण करना भी विज्ञान-नेताओं की जिम्मेदारी हैं और विज्ञान करना भी विज्ञान-नेताओं की जिम्मेदारी हैं है। यह भी यहीं हैं कि दीका क्याना ही कर्तक्ष है। यह भी यहीं हैं कि दिक्तान-वेता भी अभी स्थानमूमि की राज में पक्षार काद रहे हैं। मूसिन है कि आगे जारर कई यानें बदल जान, कुछ विवाद भी यहन जाव। पर जवात टीका स्थाना अच्छा माना स्थान होना परिदा!

मूरी बाद है कि आध्यम म एक पागन सिवार ने कई सारिया को काट दिल्या पर स्थापीती ने मामह के साय उन कोरों को इन्बेग्यन केने के निक् वर्षी भेगा से मुग्ने भी गायीतों ने एक बाद निकास मा कि उत्तवान और भीजन-विशित्सा की एक सर्वारा है। इनिक् मुग्ने आररेशन करा नेना करिए। गायीती नेवायम में एक हरनाट भी चलाउं च और आर्डिंग कि निक् नी सुधी ने विकार को ध्यायारणत्यम् द्वाओं ने अति आयह से क्यें जाती ही नकरत होती चाहिए जितती हिं जन-वित्तिशा नी अस्पित हिमाएं के हिंगोरों जन-विजिया मुदेह हो सत्ती है से हिंगी गम्ब भेटिए नी भी आयदमता हो सत्ती है। पाजपाति हहा है: पत्ते बेंबन साम्बार्य मेंने बेंगा पष्ठ ।" यह गाज-मुखी अर्थ सारहें। हिंगी ना तही असूर है तो सिमी सो जहर ।

मेरा सवाल है नि बीवन में मध्यम मार्ग शेव है। अति से बवना भच्छा है, क्वारि सध्यम मार्ग समाहें में कूर नार्ग भटन समाव। जो बीतें सभी अतिरिवा है, उनने रिन्य मध्यम मार्ग हमीरण शेव है नि सम्ब का इस बार्व और दाहिते दोनो और ने पाट गारी है। अदि हम रात्त्रों ने बास बादीया सोर को ही जिद् के साथ पहड़ कर देह आय नी निर मध्य की पहकी से सेनी किस पहड़ कर देह आय नी निर मध्य की पहकी से सेनी किस पहड़ कर देह आय नी निर मध्य की पहकी से

इस मारी बहुत वा मननद हाना ही है हि महीं को स्थीर सन्दुरण रतने के लिए जिस माजा, दिया या श्रीचीं की आसरपराह देवनरा सहसा, विया या स्थापन है और मी माहीस

### प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली का जन्म त्र्योर विकास

सामी षृष्णानन्द

[ प्रारृतिक विदित्सा-प्रदानी यत्रिय है तो पुतनी, तथावि इसका आधुनिक विकास विद्वेष सौ वर्षों के खंदर ही हुव्या है। इसीनित कह अव्यानी प्रार्थन क्षेत्रे कुए भी गतिन है। प्रारृत सेस्स में इसके ब्यावतक के विकास कार्मितान्त्रों के तो किया ही यदा है, इसके उत्तादकों के बोबन पर भी सत्तेन में प्रकार बाना गया है, जिसने लेख उपादेश होने के साथ-माथ शेलक भी हो स्वा है।—सम्मा०]

प्राहरित विशितान्त्रणारी वोई वई प्रचारी नहीं है। इसका अप कमनेत्रम हिसेवेदीय के (४६० में १७३ वर्ष हैना के अपने के पूरी) सबय म हुमा था। धमबग्र ताद हिश्मेदीय की जीवित- बिहिन्मा प्रसानी का जामराश मानते हैं, हे किन सब पूछिये हो समान में उन्हें बोहननार्यना प्राप्तीत दिस्सा के बनुसार शेलाहकार का प्रकार कार्त राजने हैं ही बाग्य कर्मात सिनों सी १ प्रतिहें प्रसार की किया है सिप्ता का अनुसंधान किया, जो प्राकृतिक चिकित्सा के दर्शन की रीढ़ है और जिसे औपयोपचारक रोग की खतरनाक अवस्था कहते हैं।

लेकिन फिर भी यह कहा जा सकता है कि आधुनिक प्राकृतिक चिकित्सा का आंदोलन आज से प्रायः सौ वर्ष पूर्व विसेंज प्रिस्निज् (Vincenz Priesnitz) के समय से हुआ। श्रिस्निज् एक साधारण बुद्धिवाला अशिक्षित किसान था। उसने सन् १८२९ में ग्रेफेनवर्ग में एक चिकित्सा-गृह की स्थापना की। वह एक बड़ा सूक्ष्मदर्शी और अंतर्दृ िट्सम्पन्न व्यक्ति था। वह पहले स्वयं अस्वस्य रहा करना था और अपने को पुनः स्वस्य वनाने के लिए प्रयत्नशील हो रहा था। इसी सिलसिले में उसने ठंडे जल में रोगों के दूर करने की अद्भृत शक्ति का अनुसंधान किया। इसका उसने अपने स्वास्थ्य-गृह के रोगियों पर खुलकर प्रयोग किया।

हालांकि प्रिस्निज् पूरी तीर से जल-चिकित्सा पर ही विश्वास करता था, लेकिन उसने कई तरह के रोगों के दूर करने में आश्वर्यजनक सफलता प्राप्त की। उसका स्वास्थ्य-गृह रोगियों और पीड़ितों के लिए तीर्य-स्थान वन गया। उपचार के लिए सारे मंगार के लोग झंड-के-झंड वहां पहुंचने लगे।

अन्य कई उन्नायकों की भांति प्रिस्निज् को भी काफी विरोध का सामना करना पड़ा। उसकी मफलता को देखकर तत्कालीन पुरातन-पंथी चिकित्सक उसके विरुद्ध हो गये। झूठी निन्दा, अपयम, उपहास, गालियां, यहां तक कि अदालत में कानूनी कारवाई, इन सबका बारी-वारी से उसे सामना करना पड़ा। लेकिन अंतमें इस महान् प्राकृतिक चिकित्मक को अपने विरोधियों पर विजय मिली। इस उत्योइन से प्रिस्निज् की कीर्ति एवं प्रतिष्ठा और वड़ गई। इन विरोधी प्रदर्शनों ने उसके लिए एक प्रकार के विज्ञापन का ही कार्य किया।

उमने अपनी संस्था के समीप के रास्ते के एक पत्थर के खम्भे पर यह अंकित कर दिया था—'तुम्हें धीरज रखना होगा।" इससे यह जाना जा सकता है कि इस साधारण व्यक्ति की कैसी प्रतिभा थी और अपने कार्य में सफलीभूत होने का उसका कितना दृढ़ विश्वास था।

इस वाक्य के द्वारा उसने अपने विरोधियों को शिष्ट शब्दों में चेतावनी दी थी। उसने यह अनुभव किया कि पुरानी वीमारियों को दूर करने का एकमात्र साधन यह है कि शरीर के भीतर की रोग-निवारक शक्ति की तीं ब्र वनाया जाय, जिससे वह गलत भीजन और रहन-सहन के कारण शरीर में एकत्र हुए विप को बाहर निकाल दे। लेकिन यह प्रायः एक ऐसा कार्य है जिसमें अविक समय लगता है तथा इसके लिए वहें चैर्य की आवश्यकना होती है।

### जे. स्क्रॉथ

प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली के दूसरे उन्नायक जांहन स्काँय (Johannes Schroth) का भी जन्म प्रिस्निज़ के जन्म-स्थान से कुछ ही मील की दूरी पर हुआ था। वह एक आस्ट्रियन था। उसने मुख्यतः व्यक्तिगन अनुभव के ही द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त किया। आरंभ में वह केवल घायल कुत्तों तथा घोड़ों का ही उपचार करने का प्रयत्न करता था, लेकिन शोध ही उसने मनुष्यों का भी उसी प्रणाली से इलाज करना गुरू किया। उसकी स्थानीय कीर्ति नेजी के माय दूर तक फैल गई। चेकोस्लोबाकिया के लिण्डेवीज नामक स्थान पर, जहां उसने एक स्वास्थ्य-गृह वोला था, सारे संसार के रोगी पहुंचने लगे।

प्रिस्निज् के संबंध में जो बातें घटित हुई थी उनका सामना स्काथ को भी करना पड़ा । उसके समकालीन टाक्टरों तथा चिकित्सकों ने उसका भी विरोध किया। लगभग २० वर्ष नक उसे घृणिन और अनुचित गालियां सहनी पड़ीं, यहां तक कि उस कार्य के लिए जेल भी जाना पड़ा। आगे चलकर सन् १८४९ में विन्टमवर्ग के ट्यूक ने हस्तक्षेप किया। ट्यूक के पैर में बुरी नरह में जल्म हो गया था और उनकी हालत नाजुक हो गई थी। उस समयके पुरातन-पंथी टाक्टर-वैद्य उसे अच्छा न कर सके। आखिर टाक्टरों ने सलाह दी कि अब उसके अच्छा होने का केवल यही एक उपाय रह गया है कि उसका पैर काट दिया जाय। टमके सिवाय बचने की और कोई आधा नहीं। इसपर ट्यूक ने स्काय की संस्था में पहुंचाये जाने

ने लिये जोर दिया। वहा पहुनने ने नुछ ही महीने बाद ने पूरी मीर से चये और स्वस्थ होकर लोडे।

दगरें बाद उरहाने अपना गोग दूर होने वा पूरा-पूरा विदरण प्रवासित करने समस्त आहिद्वत सना स वितित करवाया। स्वास के उत्तीदको को यह अनुसव हो सवा कि उत्तरे न्यि क्योंच का और अधिक विदोध करना के सार है। बुक्त से सवाद के नवा प्रतिवर्धाण विक्तिसभी में सा स्वास को विदिश्या प्रवासी का सन्तर दिया और उसनी वाहत भी करने हुए।

इपर जिन्तित्र नाक्षा और प्रारंगों ने ग्रीसक त्रज के प्रयोग पर निर्मेर करना या, उपर स्कांव ने गृष्टी के इस में सम-मर्थी के रीम-निवारण प्रमाय का महरव दिया। उसने अपनी प्रमार्थी में सम्बन्धित एक खाहारणास्त्र बनाया। उसकी सारी विकित्सा पत्र खाहारणास्त्र बनाया। उसकी सारी विकित्सा पत्र खाहारणास्त्र बनाया। उसकी सारी विकित्सा

#### पनाइप

न्त्रीय का सम्बानीय आहोता विशित्त एक करियल था, जिस्सा नाम का मेवेन्टियन क्वाहर । कर्म न केवन एक नामन् विशित्तक होता है कि एक शिवत ने नामित्री भी था। ४५ नाम् मे अधिक समय नक एक स्वास्थ्य-मून कराता रहा, जिसमें विश्वत कर्म कर्म के नाम रोगिया का विश्वता की। उसने जाय कर नरम के रामा काइर करने में मनक्या था।

बनारा जर्ग-विहित्सा का बहुत बहा नायवेक तथा उसे प्रधान में तानेबाला ब्यक्ति था। 'जरू-विहित्सा' नामक उपयी पुरतक साव भी बहारक रूप सुदी बाड़ी है। कर रोगी की बीचारी तथा गांगीरक प्रपृति के सनुसार विकित्स प्रकार के नारामान के जरू का प्रधान करना था। अध्यान की सक्तमा में सन् १८९७ में उसकी मृत् हों।

#### भारनॉम्ड रिक्ली

शिन रातासी श्री एवं बन विकिन्सान्यसानी का भाषाने भारतीनक निर्मा (Amold Rickle) सा । उनने बाहिनुसामें देन बाल के टेस्समानासक स्वात पर बायु और पूत की विशिष्ता का नेतट्रिनियक स्वातिक किया । यह सम्बाद्य स्वातिक स्वातिक दिया है। यह सम्बाद्य स्वातिक स्व

ब्राप्ट्रिक विश्विमा क विषय, जितका पर प्रधारित करना था, वित्तवे ठीम है देशका थर नयस एक आह्यवेतका उत्तराग्य था। उपने १,० मार की रूकी आयु गाई थीं और मार ने से पास नक थर करूप और नार्विशत बना रहा।

#### हेनग्नि लेपन

प्राइतिक विकित्सा प्रयानी हा । हर्नास संमेन (Heinrich Lamann) की बर्ग भारिक कथी है। बा॰ हैनरिय अर्थन थे। उत्ताने क्षेत्रहेन (Dresden) में एक स्वास्थाना स्थापित विधा था। सन्दर्भी भाजन करता है प्रसर्वे स्वास्थ्य के लिए आवरवर कीय-कीय में गान होने पाहिए? इसके लिए दूव का मापरण्ड स्थापित करने वाले शार रेनैन ही थे। आहार शिक्षन की उन्होंने की मश्री बरी महादल पहंचाई वह उनका स्वास्थ के लिए आरायक नर्या में सरान्त प्राकृतिक नाया के मारण बा अनुसन्धान था। लेक्टि उन्हाने का पर प्रम नित हिदा है भाषामा और ने बाय में साबे बानेंगारे तसन के अपन्धित प्रशेष से क्या हाति पर्व नकती हें हवा दागर ऑट वीजा सिन्दी मनेंगा की कार है, पुरुषे लिए प्राहरिक विकित्साध्ययांनी निषय ही उनहीं विषय पत्र पहेंची ह

#### मार्ग्

-ज्यादन प्रापृत्य विशिष्टा व स्पेत को प्राप्ता लुई कूने थे। उनका भी जन्म जमंनी में हुआ था। अभी वह केवल २० साल की अवस्था के ही हो पाये थे कि उनका स्वास्थ्य वित्कुल नष्ट हो गया। डाक्टरी चिकित्सा कराकर उनके माता-पिता मर चके थे। पुरातन-पंथी डाक्टरों के इलाज से जव वह ऊव गये तो उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा की शरण ली जिसके वाद शीध ही उनके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। इसका उन पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि वे अब इसके भक्त वन गए। उन्होंने कई साल तक प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली का अध्ययन किया। अनन्तर सन् १८८३ में उन्होंने लियज़िंग (Leipzig) में एक स्वास्थ्य-गृह खोला।

वह जिन तरीकों से रोगियों का उपचार करते थे, उनमें धूप-स्नान, वाष्प-स्नान, किट-स्नान और मेहन-स्नान थे। उनका मुख्य कथन था—"केवल सफाई ही रोग को दूर कर सकती है।" वह रोगी को निरामिप आहार अर्थात् सब्जी और रोटी खाने को बताते। रोगी की परीक्षा के लिये वह मुख्यतः रोगी के चहरे और उसकी गर्दन का निरीक्षण करते। 'नवीन चिकित्सा विज्ञान' (The New Science of Healing) और आकृति-निदान (The Science of Facial Expression)—ये दो उनकी सबसे अधिक प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। इनमें से पहली पुस्तक का संसार की प्रायः सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। लूई कूने का यह सिद्धान्त कि सभी रोगों की जड़ एक ही है अथवा मूल रूप में सभी तरह के रोग समान हैं— आधुनिक प्राकृतिक चिकित्सा की एक आधार-शिला है।

## एडोल्फ जुस्ट

प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली के एक अन्य आचार्य एडोल्फ जुस्ट (Adolf Just) ये, जिन्होंने जर्मनी में हार्ज पर्वत (Harz Mountains) पर 'जंगवार्न' नामक सेनेटोरियम स्वापित किया था। वे मिट्टी के प्रयोग के जन्मदाता हैं। वे नंगे पैर चलने-फिरने पर भी जोर देतेथे ताकि पृथ्वी की प्राणदायक शक्तियों से शरीर का सम्पर्क कायम हो सके। जन्होंने 'प्राकृतिक जीवन की और' (Return to Nature) नामक पुस्तक में यह दिखाया है कि प्राकृतिक रहन-सहन के द्वारा मनुष्य किस प्रकार अपना 'कायाकल्प' कर सकता है। उनका कहना है कि अनुचित रहन-सहन तथा प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने के ही कारण मनुष्य को रोग होते हैं। एडोल्फ जुस्ट टीका लगवाने के विरोधी थै।

## जेम्स सी० जैक्सन

प्राकृतिक चिकित्सा के इतिहास का निर्माण यूरोप में ही नहीं हुआ है। इसे आधुनिक रूप देने में अमरीका का भी हाथ रहा है। प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली के प्रयम अमरीकन उन्नायक जेम्स सी॰ जैक्सन (James C. Jackson) थे। उनका जन्म सन् १८११ में हुआ था। पैतीस साल की अवस्था में वे वीमार पड़े। अमरीका के डाक्टरों ने रोग को असाव्य बताकर जवाब दे दिया। चारों तरफ से निराश होकर वह साइलस बो॰ ग्लीसन (Silas O. Gleason) की, जो प्रिस्निज् के शिष्य थे और जिन्होंने अमरीका में जल-चिकित्सा-गृह खोला था, शरण में आये। वहां पर एक साल के भीतर ही उनकी हालत काफी सुधर गई। उसके बाद वे ग्लीसन के साझीदार वन गये। इसके साथ ही उन्होंने एक मेडिकल कालेज में अध्ययन करना भी आरम्भ किया। वहां से उन्हें डाक्टरी करने का लाइसेंस मिला। वाद में उन्होंने डैन्सविली (Dansvilli) न्यूयार्कं में 'जैक्सन सेनेटोरियम' की स्थापना की। आगे चलकर उसकी गणना अमरीका की सर्व-प्रसिद्ध स्वास्थ्य-संस्थाओं में की जाने लगी। जैवसन ने दवाइयों का वहिष्कार करके जल, विश्राम, वैज्ञानिक व्यायाम, आहार, मानसोपचार तया अन्य प्राकृतिक उपचारों का सहारा लिया। उनका आदर्श वाक्य था: "उचित -रहन-सहन के द्वारा स्वास्थ्य प्राप्त करो।" उनकी मृत्यु ८५ वर्ष की अवस्था में हुई। उनके मरने के वाद उनके पुत्र हा० जेम्स एच० जैक्सन उस सेनेटोरियम को चलाते रहे। अब हाल ही में वह संस्था अमरीका के सुप्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक बरनर मैककेडेन की संरक्षकता में आ गई है।

#### रमेल टी॰ राज

अमेरिका के दूसरे प्राकृतिक विकित्सा के उन्नावक पार रमेल टीर हान ( Dr. Russel T. Trail) थे, बिन्होंने पत्रोरेंग, न्यवार्ग, में हार्श्वित्रक धेशाय-दिश मारिक मी स्थापना भी। बह प्राप्तिक जीवन और रीगीपनार के सम्बन्ध में विश्व-विस्थान पुरुष रेग्यन थें। यद्या उन्ते पुरावन-पूर्वा मेडिक व्यक्त म शिक्षा है। गई थी, सवाधि के अभे कटकर प्राथित बिक्शितक बन गर्ये।

#### जै॰ एच॰ ईलांग

अमेरिका के एक दूसरे बहात बवीरद बाहरिक विशित्मा के आवार्य हा॰ बै॰ एम॰ वैद्याप (Dr. ]. H. Kellong) में जो मिनीवैन (Michigan) के ममार-प्रमिद्ध बेटिल जीव मनेटोरियम के बाहरेक्टर में । त्रन विशिया, मान्यितिया, घप-विशिया मादि अनेश बिश्या भी प्रत्यमें लियने बारे आप दमरे विष्य-बिरवान अमेरिका देखक है।

#### हनरी लिएडम्हार

दा हेनरी जिन्हारार (Dr. Henry Lindlaht) एक इसरे अमेरिकन आवार्य है, जिल्हाने प्रापृतिक विभिन्मा-प्रवाली की विवारणारा और उसके कामी पर निर्मेदारमक प्रभाव हाला है। उन्होंने एक मेमे निद्धारत हा प्रतिपादत दिया, जित्रहा अनुसन्ध भाजनत के सभी प्रारमिक विविध्यव करते हैं ह<sup>ै</sup> आप का बहता था, 'प्रत्येत तीव शेव प्रकृति की शब-निवारण गरिन का परिचायक है।" आपका विस्तान है कि मन्द्र की अपने जीवन में आने चलकर की नगह-सरह की सन्दरनाक बीमारियों का मामना करना पहला । प्रमुख मृत्य कारण यहाँ है कि यह आरम्भ के रोदा को बौर्यापमा और गृहसों के द्वारा दबाने का प्रदर्ग नरता है। उन्होंने प्राष्ट्रीतर विकित्सा हे सबी विकित परुष्त्रों में महनारिता स्पादित करने उसे एक पूर्व दिशान का कर देने में असाधारण कार्य दिया। परा-दिशान (Iridiagnosis) के वे बोरदार सवर्षक थें। बाड़ीने बाले नाम ने विकाली और एनट्टर में दी

मेर्नेटीरियम सोले। 'Indiagnosis' और 'The Philosophy and Practice of Nature Therapentic"-ये उनगी शे प्रनिद्ध प्रमारे है। प्रा॰ तिग्डन्हार पहेडे प्राचीनाची हास्ट्री विकित्सा-प्रचारी के अनुसार राशिया की विकित्सा करने थे। एराएर वह स्वय बीमार पर गये । बीमारी की हाल्य में उन्हें को कड़ अनुभव हुए उतने वे बह समन सुने कि भौतिय विज्ञान और मन्द्र-मार्ग्य उनहीं गरावना पटे-बाने में रिनने अनवन है। अनगर उन्हें विक्रिया का एक नया मार्ग-एक नया शिद्धान्त-मिना और वह या प्राष्ट्रित विश्विमा का मिद्धाग्र ।

#### रिलंडेन

अमेरिका के प्राय: मर्जर प्राप्तितः विशित्सको से हा वे. गुब. दिलहेन (Dr. J. H. Tilden) बा न्यान गरने ऊवा है । चनश बहना है हि उपबार की टीर विधि बर है हि उन आइशो की रोक दिया जाय थी स्थम्प रहने ने निये विचानन है और गीमा अप नि हिंग प्रकार का जीवा स्पतित करना षाहिए। हा । दिलहेन बहे रेगन और विचारन है। उत्तरी गरने अभिद्ध पुरतर 'शिवरा स्थारपा' (Impaired Health) P (

#### येनेडियट लम्ट

अयर यह पर हा: बैनिहिस्ट लस्ट (Dr. Benedict Lust) हे नाम रा प्रशेष न रिया नाम नी प्राकृतिक विशिषा का इतिहास अवसा गृह बावसा । हा। हरद आधार्य साहत ने हिन्स में और अमेरिस के तब अदराद प्रावृतित विविध्यानामानेषी वारेष के उपात में ।

#### थन्य थाचाय

इवी बतार शा शिश (Dower) भीन एन्ट्रेप्ट इहायूक मेर्ड्डन, अमेरिका के मुप्रान्त आशान-शास्त्री, शाक सुम्हत् ही निहात, अधित्वादित के अन्त-दाना और बाइगेर्वेश्वर के सम्पास दान देशियन री वानर (Daniel Palmer) के नान पीरे नहीं का सहते ।

## त्र्यारोग्य की कुञ्जी

### महात्मा गांधी

## शरीर और तन्दुरुस्ती

शरीर की जानकारी के पहले हमें आरोग्य का अर्थ जान लेना चाहिए। आरोग्य का मतलब है तंदुरुस्ती। जिसका शरीर व्याधिरहित है, साधारण काम करने योग्य है, अर्थात् जो विना थके रोज दस-बारह मील चल सकता है, मामूली मेहनत के काम विना थकान के कर सकता है, साधारण खूराक पचा सकता है, जिसकी इंद्रियां और मन सजीव है, वह तंदुरुस्त कहा जायगा।

गरीर पांच महाभूतों से बना है। कवि ने कहा है: छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रिचत यह प्राणि-सरीरा।।

शरीर का व्यवहार दस इंद्रियों और मन द्वारा चलता है। दस इंद्रियों में पांच कर्मेन्द्रियां है और पांच ज्ञानेद्रियां। हाथ, पांव, मुंह, जननेद्रिय और गुदा—पांच कर्मेन्द्रियां है। स्पर्श करनेवाली त्वचा, देखनेवाली आंख, मुननेवाले कान, गंध जाननेवाली नाक और स्वाद या रम को पहचाननेवाली जीभ—ये पांच ज्ञानेद्रियां है। मनके द्वारा हम विचार करते है। कोई-कोई मन को ग्यारहवी इंद्रिय कहते है। इन इंद्रियों के व्यवहार पूरी तरह चलते रहने पर ही मनुष्य तंदुरुस्त कहा जा सकता है। ऐसी तंदुरुस्ती विरले की ही पाई जाती है।

गरीर के अंदर चलनेवाली अद्भुत कियाओं पर ही इंद्रियों का मुख आधारित है। गरीर के सभी अंगों की नियमबद्धता पर शरीर का सही संचालन निर्भर है, किसी भी खास अंग का काम रुका कि गाड़ी अटकी। इनमें भी मेदा, अपना काम ठीक न करे तो समूचा गरीर मांदा हो जाता है। अतः हम कह सकते है कि अपच या बब्ज की ओर से लापरवाह रहनेवाले गरीर-धर्म को नहीं जानते। अनेक रोग इसीमें से पैदा होते हैं। जगत् में मनुष्य उसका ऋण चुकाने यानी उसकी सेवा करने को जन्म लेता है। इस दृष्टि से तो मनुष्य अपने गरीर का संरक्षक (ट्रस्टी) सिद्ध होता है। उसे गरीर का ऐसा जतन करना चाहिए कि वह सेवा-धर्म के पालन में पूरा काम दे सके।

## शरीर के लिए आवश्यक वस्तुएँ

### १ हवा

गरीर के लिए सबसे जरूरी चीज हवा है। इसीसे कुदरत ने हवा को व्यापक बनाया है। इसे हम विना प्रयत्न के पा जाते है।

हम नथुनों द्वारा हवा फेफ हों में भरते हैं। फेफ हें वांकनी का काम करते हैं। वे हवा को छेते और निकालते हैं। वाहर की हवा में प्राणवायु होती हैं। उसके विना आदमी जिंदा नहीं रह सकता। सांस से वाहर निकाली जानेवाली हवा जहरीली होती हैं। यदि वह तुरंन आस-पास फैल न जाय तो हम मर जायं। इसीलिए घर ऐसे होने चाहिए कि उनमें विना किसी क्कावट के हवा आ-जा सके।

किंतु हवा को फेफड़ों में भरने और निकालने की उचित विधि लोग नही जानते। इस कारण जैमी चाहिए वैसी रक्तशुद्धि नहीं होती। हवा का काम रक्तशुद्धि है। किंतने ही लोग मुंह से सांस लेते है। यह बुरी आदत है। नाक में कुदरत ने एक जाली-सी बनाई है, जिसकी वजह से हवा में मिली हुई निकम्मी चीजें अंदर नहीं जा पानी। उसके कारण हवा गर्म भी हो जाती है। मुंह से माम लेने पर हवा अंदर साफ होकर नहीं जाती और न गर्म होती है। ठीक हवा लेने के लिए प्रत्येक मनुष्य को प्राणायाम सीख लेना चाहिए। यह त्रिया जितनी सरल है उतनी ही जमरी है। नियमित जीवन वितानेवाले मनुष्य की सब त्रियाएं स्वाभाविक होती है और उसमे

होनेबारा फायदा अनेक प्रशास की बनाई जानेवाटी। प्रतिपात्रों में नहीं मिलना।

चन्दो-फिरते और मोने नमय मनुष्य मृत् बद रखें मो नार प्रमाय: अरना हाम देशी है। मुदद मृद्द मात दरने के गाय-माय नार भी मात है रही चाहिए। मात हो मेंदरी को निकाल देना चाहिए। उपना मयने अच्छा मायन मात चाही है। जिल्ले ठडा पानी न महा बाय उसे सात में मृत्यून पानी सोचना चाहिए। चुन्तु मा बडोरी में पानी हेक्ट मात में सोचना चाहिए। चुन्तु मा बडोरी में पानी हेक्ट मात में सोच करने हैं। एक मुद्दे में गीयदर दूसरे में निवाल सरने हैं। सक से पानी पी भी मनने हैं।

हवा गुढ़ ही रंगी आवस्यक है, दमलिए राज की आवाग के नींच या बरामदें में गीने की आदड़ कालनी काहिए। हवा में टेड कार्त का मय न रंगे। उच्यादा ठंडी हवा हो तो चुरा अहि। ओड़ा बड़े के अपर नहीं बाना शाहिए। नार के मार्टन बार करें है जार्म हम चार के प्राप्त का समर्थन बार करें हो जार्म हम चार करें भी निम्ती पाहिए। मुद्र कार्न में मनुष्य का दस चुट जाना है। निर्माद करें पह समर्थन के समुख्य का दस चुट जाना है। निर्माद करें कार्य हमें, सी अर्गा हो ती हर करें हमें सी अर्गा हो ती हम करें कार्य हैं।

साधारणतः हमें घर ऐंगी जगह बूबना चाहिए जहां अधिक भीड़ न हो, आल्डाम मंदगी न हो और जहां हमें हवा और प्रसार कारी निकासी ह

२ पानी

आरसी को नहुम्मा बनाए समने के निए निरा इनने नहम परार्थ का उस्तरीय करना वाहिट्रीट कियते हाई मेर पानी देंट में पूर्व जाय। पानी मार होना माहिए। पानी की सुद्धना में घरा होने पर देने उसके कर बीना पानिए। इसका मनक स्टुट्ट हाहि आरसी की अपने पीने का पानी मान कियर पाना पाहिए। अनीनात आरसी पाने केनाम पर स्टूट में पानी नहीं पीने। सो बीज असानी सहुत्य पाने ने नाम पर करने हैं, कर शहुराती के नियम जानने को को मारीम्य की पाहिए करानी काहिए।

मानी को छात्रने की अपर बायनीय है। इससे भी उनसे का कुछ निक्य अपर है। पानी से के पूर्व नहु नी नहीं निकारी। असे नाम के लिए नी पानी को उबालना ही अनिवार्ष है। छनना हमेगा गाफ होना पाहिए विस्ता नहीं।

३ गुगक

गुरार तीन तरह की कही जानी हैं : मोगागुर, गाराहार और विधाहार ।

डाक्टरों ना मत सामशेर ने मियाहार के वस में है। ययदि परिचम में डाक्टरों ना एन ऐता बड़ा समुदाय पैदा हो स्वया है, विमान दूर मन है कि मनुष्य के यारीर वी रचना पर दिनार करने से वह सारहारिंद्र ही करना है। उसने हो मेदा बीट करों में सुने कोर नाजे दोनों फट मा ताने हैं। सूने करों में सुने कोर नाजे दोनों फट मा ताने हैं। सूने करों में यादाम, दिल्ला, जगरोट, विकाशोबा राजादि मानिक हैं। याकाहार का प्रधायत होने हुए भी अनुभव में मुसे सानना पड़ा है कि दूर और दूर से वने पड़ायं महान, दही सादि के वहां हो नकता।

सन्दर-मधिर में हमानु बनानेगां, महमी हेते-यां, बच्ची बानेगां, सार हेनेगां और मधी मी निवालनेगांन पायों भी नक्टन होति है। जामुन महनेगांन तस्त दूर, सान, सान साम पार्ट मों पाए जाते हैं। दून मोन-क्यों तमा साम धारि भी नेवात सामानी में हमा होता है और पह नहने मीन सामाना है। दून और माग भी पुनना में पूर बहु जाता है। साम प्राप्त में मिन स्वान म होने की हारण में भी दूर हमा हो। माना है। जो सामानारी नहीं है जारे हो दूर में बहु। गहागा है। जो सामानारी नहीं है जारे हो दूर में बहु। गहागा है।

पूर्व के स्थित में एक बहुत भाषारत बाह करने हैं कि मत्त्रज निराम हुआ दूर केरर करों होता । कर बहुत कीमरी कीन हैं। करें स्मानकों में तो कर मत्त्रकारे दूर में अधिक सुमानकों होता है। दूर का सुमा दूर गारित की स्मान स्मानकों स्मानिक हमा देवा है। मत्त्रज निराम करने कर पान कुछ से कोई करी करों हमी। सन्देश महत्र व निकाल ले सकनेवाली कोई मञीन अभी तक नहीं वनी है। वनने की संभावना भी कम ही है।

पूर्ण दूध या अपूर्ण दूध के अलावा मनुष्य को जिन दूसरे पदार्थों की आवश्यकता रहती है उनमें दूसरा दर्जा गेहूं, वाजरा, ज्यार, चावल वगैरह अन्नों को दिया जा सकता है।

सभी अन्नों को अच्छी तरह साफ करके. घर की चनकी में पीस कर, बिना छाने काम में लाना चाहिए। उनके छिलके में सत्त्व है और क्षार है। ये दोनो बहुत ही उपयोगी पदार्थ हैं। इसके सिवा, इसमें ऐसी चीज होती है जो बिना पचे निकल जाती है। अपने साथ वह मल को भी निकालती है। चावल का दाना नाजुक होने की वजह से कुदरत ने उसके ऊपर आवरण रखा है, जो खाने लायक नहीं होता। इसलिए घान कूटा जाता है। उसे उसी हद तक कृटना चाहिए कि मिफं ऊपरी छिलका निकल जाय । मशीन की कुटाई में तो उसका कन भी निकल जाता है। इसका कारण यह है कि यदि मगीनवाले कन रखें तो चावलों में तुरन्त लटें (की ड़े) पड़ जाती. है। कारण, चावल के कन में बड़ा मिठास रहता है। गेहू का चोकर या चावल का कन निकाल देने पर सिर्फ स्टार्च रह जाता है। चोकर और कनों के चले जाने पर अन्न का बहुत कीमती हिस्सा निकल जाता है। गेहूं का चोकर और चावल का कन यों पकाकर भी खाया जा सकता है। उसकी रोटी भी वन सकती है। कोंकण में तो गरीब लोग चावलीं का आटा पीस कर उसकी रोटी ही खाते है। चावल के आटे की रोटी, भान से शायद ज्यादा पाचक हो और कम खाकर यथप्ट तृष्ति दे सके।

अपने यहां रोटो को दाल या शाक में डुबोकर खाने का रिवाज है। इससे रोटो ठीक खबाई नहीं जाती। स्टार्चवाली चीजें जितनी खबाई जायं और मुंह की लार के साय जितनी मिलें उतना ही लाम है। यह लार स्टार्च पचाने में मदद करती है। बिना चबाई खुराक में वह मदद नहीं मिल सकती। अतः खुराक को ऐसी शक्ल में लेना लामदायक है कि उसे खबाना पड़े।

स्टार्च-प्रधान अन्न के बाद मांसपेशी गठन करने वाली दाल को दूसरा दर्जा दिया जाता है। विना दाल की खूराक को सब अधूरी मानते हैं। मांसाहारी भी दाल खाता है। यह तो समझ में आता है कि जिन्हें मजदूरी करनी पड़ती है और जिन्हें ज़रूरत-भर को या विल्कुल दूध नहीं मिलता, उनका काम दाल के विना नहीं चल सकता। लेकिन यह कहने में मझे जरा भी हिचिकचाहट नही होगी कि जिन्हें शारीरिक काम कम करना पड़ता है, जैसे कि मुशी, ब्यापारी, वकील, डाक्टर या शिक्षक, और जिन्हें दूध मिल जाता है, उन्हें दाल की जरूरत नहीं है। आम तौर से भी, लोग दाल को भारी खूराक मानते है और स्टार्च-प्रधान अन्न की अपेक्षा बहुत कम मात्रा में लेते है। दालों में उर्द, बाकला (लोविया) बहुत भारी गिनी जाती है, मृग और मसूर हल्की। यह साफ है कि मांसाहारी को दाल की विल्कुल जरूरत नहीं है। वह तो सिर्फ स्वाद के लिए दाल खाता है। द्विदल अन्नों को बिना दले, रात भर भिगोकर अंखुआ निकलने पर चवाकर खाया जाय तो पचने में अपेक्षाकृत आमानी होगी।

खूराक में तीसरा दर्जा शाक और फल को देना चाहिए। शाक और दूध हिन्दुम्तान में सस्ते होने चाहिए। पर ऐसा है नहीं। वह सिर्फ शहरवालों की खूराक समझी जाती हैं। देहात में सब्जी देवयोग से ही मिलती है और बहुन जगह तो फल भी नहीं मिलते। खूराक का यह अभाव हिन्दुस्तान की सभ्यना पर एक बहुन बड़ा धब्बा है। देहाती चाहें तो सब्जी खूब पैदा कर सकते हैं। फलों के पेड़ों के लिए तो कठिनाई अवस्य है, क्योंकि काश्तकारी के कानून सरत हैं और गरीबों को कुचलनेवाल हैं। लेकिन यह विषय से बाहर की बात है।

सब्जी में पत्तीदार माग, जो मिल सके, वह अच्छी मात्रा में नित्य काम में लाना चाहिए। यहां जिस शाक की चर्चा है उसमे स्टार्च-प्रधान शाक नहीं आते। स्टार्च-प्रधान शाकों मे आलू, गंजी (शकरकंद), मूरन (बोल), अरबी गिने गए है। इन्हें अन्न में गिनना चाहिए। दूसरी मन्जियां अच्छी मात्रा मे लेनी चाहिए। नक्षी, होता (अमलेति), महमो, मोबा, हमाटर भारि प्राप्ते की कोई सम्बन्ध नहीं है। उन्हें माप करने अभी तरह भीकर बोडी मात्रा में कब्बा काना पाहिए।

पत्नी में, जो कतुक सिक महें नाते बाहिए। मोनम में आम, जामून, अमनद पत्नीना, अनूर नट्टे-मीटे नीबू, मनरे, मोनबी भादि करी का उनिन उत्त्वात होना बाहिए। पत्न मुझ न्याना अच्छा है। दूप और पत्न मुझ नाने में पूरी नृष्णि हो जानी है। जिनदा नाने मा बत्त जन्दी का है इनको नवेरे निर्देश पत्न नान अवसा है।

बेला अच्छा फाउ है। लेकिन वह स्टाचेमय हाते भी बजह में रोटी बी नजह है। बेला और दूच तथा माजी पूरी सुराव है।

आदर्श को सूराक स बादे बहुत अस स विकार की सकरत है। यह पी-मेल से सूरी होंगी है। ची मिल जाय को तेल की कोई करण नहीं। तेल पास को तेल की कोई करण नहीं। तेल पास के मारि होता है। यह पूर्व को से समझ नुष्यारी नहीं है। सामूनी आदमी को तीन नाला ची मिल जाय मो नाफी समझ साहिए। दूव से ची जनता ही है। जिसे ची सहुता पहारा हो बह उनता तेल है है ना किकारी मिल जाय का ती है।

न्त्रास में जैसे विचलाई वी जरूरन है येग हैं।
गूर-सक्दर की है। यद्याप मीटे क्यों से बहुत मिटाम
सिंत जाता है, किर भी दो-नीत मोला गुरू या यहतर
हेने में हानि तरी हैं। नेवित आजक्य निर्देश राप जो जोर दिया जाता है। नेवित आजक्य निर्देश राप को जोर दिया जाता है यह जीवन नहीं है। महत्र ने सीत हों है वहरी, जर्जनी क्येष्ट्र निराह्य मार्ट मार्ग हों है। यह अनिजय हों है। महत्र स्वाधा मार्ट मार्ग हों हो ने के अनावर कहें में मुझे विच्हुल अतिक्यों हो महत्र होंगी हि निर्माश में स्वाधा मार्ट मन्द्री हो थून अस भी नहीं मिलना, बहा मो व्यवस्थ जो बात मिटाई को है वही घीलोल की है। घील तेल म तर्जी हुई बन्तुए साते की काई आवरप्रका। नहीं है।

के बिक्ता आहं हिनती बाह साता, हम पर भी विवार करना चाहिए। हम बांभी सामें उसे भीपीए कर समझकर साथ स्वाद के लिए ता कभी गहीं। सब स्वाद रहा हा है और रहा भूत में हैं।

उत्तर बनाए हिमाब से बुद्धिशीशी मनुष्य की राज को उक्ति सराह यह हा सकती है

- । तक सर दाय का दुव
- नीन छटार अग्र--पारल गेरू, बाबरा आहि
- र. सन्दर्भ देश छटार पनीशार और असई छटार दुसरी नवनी
  - ४ आणी छटार सम्मानात
  - शीन गाने थी या नाग गाना ग्रामा
  - ६ जीन नों रागद या संस्कर
- वा नावा पन मिने इपि और प्रशिप के अनुनार । रोब दो बढ़े नींद हो ना अच्छा है।

ये सभी कबन कक्षेत्रपति किना पकाई हुई की बा के हैं। नमक का परियाग नहीं दिया है। इकि के अनुसार ऊपर में देना कारिए। पट्टेनी बुका स्म सब्बी में निवोद सकत है, पानी के साप पी नक्षेत्र है।

हमें दिन में दिननी बार नाता नारिए रे भिष्ट लाग नो निर्दे दा ही बार नाते हैं। गांधारातः तीत बार माता बाना है: मुक्त साम पर न्याने में गारे स्वाहर तो और गांध का या रात मा स्मान नयाता बार नाते को बाद बनरत नहीं होती। धारधे में दिन्दी हो सोच बार-बार नाते पहते हैं। यह हानिसाक है। मेरे को आराम की बमरन हातों हैं।

#### श्रनावस्यक वस्तर्ग

#### १ ममाने

नुगह ने प्रस्त मनेने मसाणान नार में हुए नर्रे। नप्रा है। नमह नो समाणी ना नारगार माना ना सहता है, न्योहि नमण के निना गायारण आदमी नुस नाडी नरी सहता। इसणिय प्रेमें 'स्वरण' भी कहा गया है। गरीर को कुछ क्षारों की ज़हरत है, नमक की गिनती भी उन क्षारों में है। ये क्षार याद्य पदार्थी में तो होने ही है। ेलेकिन खुराक अशास्त्रीय रीति से पकाई जाने की वजह से कुछ का परिमाण कम हो जाने पर अलग से भी लेने पड़ते हैं। ऐसा एक अत्यन्त आवस्यक क्षार नमक है 🖟 किन्तु जिनकी आम नीर से जरूरत नहीं है ऐसे कई मसाले स्वाद और पाचनगक्ति बढ़ाने के खयाल से इस्तेमाल किए जाते है। जैमे मिर्च (हरी या मूखी), काली मिर्च, हर्त्दी, धनिया, जीरा, राई, मेथी, हीग इत्यादि । इनके वारे में मेरी राय पचास वर्ष के अपने अनुभव से वनी है कि शरीर को पूर्णस्प से नीरोग रखने के लिए इनमें मे एक की भी ज़रूरत नहीं है। जिनकी पाचनशक्ति विल्कुल कमजोर हो गई है, उन्हें दवा की भांति एक खास वक्त तक विशेष मात्रा में छेने पड़ें तो भले ही लें। लेकिन स्वाद के लिए तो उनका आग्रहपूर्वक निपेध मानना चाहिए। सभी मसाले, नमक भी, अन और तरकारी के स्वाभाविक रस को वर्वाद करने है।

## २ चाय, काफी, कोको

गरीर को इन तीनों में से एक की भी जरूरत नहीं हैं। जो चाय आम तौर से पीई जाती हैं उसमें कोई गुण तो मालूम नहीं हुआ, विल्क उसमें एक बड़ी बुराई होनी है, उसमें टेनिन होना है। टेनिन वह चीज़ है जो चमड़े को कड़ा करने के लिए इस्तेमाल की जाती है। यही काम टेनिनवाली चाय मेदे के लिए करती है। मेदे पर टेनिन का असर होने से उमकी खूराक पचाने की ताकत घट जाती है। इससे अपच (मंदाग्नि) होती है। अगर अच्छे दूध में साफ पानी मिला कर उसे गर्म कर लिया जाय तो यह काम अच्छी तरह सब मकता है। उबलते पानी में एक चम्मच शहद और आधा चम्मच नीवू का रम डालने पर बढ़िया शरवत वन जाता है।

नाय के बारे में जो कहा है वही कमवेश काफी के लिए कहा जा सकता है। उनके लिए तो कहावत है: कफ काटन, वायु हरण, धातुक्षीण, बल्हीन लोह का पानी करे, दो गुग अवगुण तीन।"

जो राय चाय, काफी के बारे में दी गई है वही कोको के बारे में समझनी चाहिए। जिसका मेदा ठीक काम करता है उसे चाय, काफी, कोको की मदद की जरूरत नही रहती। साधारण खूराक में से तन्दुकस्त मनुष्य पूरा संनोप पा सकता है, यह मैं अपने छंबे अरसे के अनुभव से कह सकता हूं।

## ३ नशीली चीजें

नशीली चीजों में, हिंदुस्तान में शराव, गांजा, भांग, तंबाकू और अफीम गिनी जा सकती है। इस देश में पैदा होनेवाले नशों में ताड़ी भी एक है और विदेश से आनेवाले शराबों का तो कोई ठिकाना ही नहीं है। ये सब सर्वथा त्याज्य है।

## व्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य का मूल अर्थ है ऐसी चर्या जिससे ब्रह्म मिले। संयम के विना ब्रह्म नहीं मिलता। संयम में सवमे वड़ी बात इंद्रियनिग्रह है। आमतीर से ब्रह्मचर्य से, स्त्री-संग न करना और वीर्य-संग्रह साघना, यह मतलव लिया जाता है। सब इंद्रियों का संयम करने वाले के लिए वीर्य-संग्रह सहज और स्वाभाविक हो जाता है। स्वाभाविक रीति से जो वीर्य-संग्रह होना है वही इच्छित फल देता है। ऐसा ब्रह्मचारी कोव आदि से मुक्त होता है। यह भी देखा जाता है कि ब्रह्मचर्य पालन के सामान्य नियमों की अवहिलना करके वे केवल वीर्य-संग्रह करने की आशा रखते है। ऐसों को निराजा हुई है और कितने ही तो पागलों में गिनने लायक हो गए। कुछ दूसरे निस्नेज-फातिहीन मिलते है, जो वीर्य-नंग्रह नहीं कर सकते और केवल स्त्रीमंग से वच पाने की सफलता पर अपने को छतार्थ मानने है। स्त्री-संग न करना ही ब्रह्मचर्य की प्राप्ति नहीं कही जा सकती। जबनक स्त्री-संग में रस मीजूद है तबनक ब्रह्मचर्य की प्राप्ति हुई नहीं कह सकते। जो उस रस की जला सकता है उस पुरुष या स्त्री को अपनी जननेद्रियों को

अंतनेवाना मान गरा है। उपनी की रक्षा बहानवे भागीया पर है, पर वहीं महिल नहीं। वान्तविक बहानरिक्षी वार्ता में दिवार में और आवार में एक प्रसारिक्षी वार्ता में दिवार में और आवार में एक प्रसार का प्रभाव प्रचल सरकता है।

ऐसा ब्रह्मधर्य नित्र । वे नाय वे नश्य से या उनके स्पर्ध से स्माट नहीं शाना । ऐसे ब्रह्मधारी वे लिए स्बोन्द्रस्य वर भेद निट-मा जाना है।

पीर्म-मध्य ने विका पूर्ण नारोग्य बनाए रणना समझय गमाना नारिए। जिम पीर्म में दूसरे सनुष्य को पदा करने की शांति है, उस पीर्म को स्वय स्थलन हाने देना पर प्रकार अमान की निमानी है। बीर्म का उत्पंत्र मोग की हिन्द हो, बीर्म ने देन कराना-राति के तिस् हैं। इस तस्य को अभीमानि समझ हैने पर विषयानिक की मुलाइस है। नहीं रह जाने।

बीर्द-गदर में अपने जाने हुए बुद्ध मोटे नियस मगादेगाहः

१--- गमरा बिरास की बड़ विवाद में रहती है. इनिट् दिनारी पर अहम रखना चाहिए। इनहा ख्याच घर है कि मन का सारी न रहते देवर अव्हे और उपयोगी विचारी में भरे रमना चालिए। अयौर प्रम दिस बार्र में लगे हुए हैं अन्ते बारे में वितान करें। नेविन उनमें विन नगर विकास प्राप्त हो, यह सीवें और उत्तर समल करें। विवार और उनका ध्रमत विकास को संकेश । यस बोधीना पटे काम नही होता, मनुष्य यक जाता है, गरीर भाराम पार्या है। रात को नीद न माने पर विवास का हमना होना समय है। तैने मौरा पर स्वा ज्या सापन वप है। भद्यत्वा वित रूप संस्थाय क्या हा, अपरा अनुसर करने की पाररा त्यी हो, उस व्याका हदय में रसरर वर नाम का यह करना । जह करते ही दम्स कोई दिवार यह में न होता वातिए। यह भारती विषेत्र हैं। उसे न पहुंचा जान और अनेक दिशा बागाए दिबार बहाई बाने हैं। तो उनने हार म मान का पड़ाउदेश का किये का । अन में विका

होगी ही, यह निश्चय उसे हो। वित्रय जरूर विदेशी।

2—विचार, बाधी और अध्ययन, विचारी को सात बन्नेबारे होने शालिए । इसिंग्स्ट जो कुछ बांहे, तीठ बर बार्ड । जिसे पीमण विचार महा स्वीद त्यारे मुह से बीमण बाती निवर्णी हो नहीं। । विचय की उत्पानेबारा बद्दा सातित्य पता है, उत्पर्ध और मन का बाते ने हैं। मद्द्य अपना अपने काल से मद्द्य स्पत्नेबारे बयी का आध्यन और मनन करें। सिंग्स आदि की सम्बंध मुझाइत हैं। प्राप्ता है है जो विचारत को सेनन नीं पारता कर विचार को बार्तिबार प्रधी का स्वास केशा।

द—क्सावप है—" येना आसार वेनी कर हा र" यो मन्त्र्य आधारान नही है, सिने गाने से वर्त दिवस नहीं है कर आते विश्वास का नुष्या है। राग्य की न नीरवेबला कर दि दिस्मित हुगोर ने नवा। दे दर्गान्य ना चारिए दि वर युग्यारी। और अधार कीर वे दार्गार काहर के लिए नहीं, बाँच काहर कीर के विश्व हैं। सीर पारी आसार एक्साव के लिए निका है—आने का ग्राह्मण्या सारे दिवस का ग्राम्यान्या—इस प्रकार मा निगने आसा परम विषय बनाया है, वह विकारों के बम नहीं होता। प्रत्येक नती को माता, बहन या लड़की की तरह देखना चाहिए। कोई भी पुरुष अपनी मां, बहन या लड़की पर विकारी वृष्टि नहीं डालता। स्त्री को प्रत्येक पुरुष को पिता, भाई या लड़के की तरह देखना चाहिए।

५—अपने इसर लेखों में मैने अधिक नियम दिए हैं। उन सबका समावेग इस पांचों में होता जाता है। उनका पालन करनेवाले के लिए महान् विकार का जीतना बहुत आमान हो जाना चाहिए। जिसे ब्रह्मचर्य पालन की तीन्न इच्छा है उसे इस पालन को असंभव मान कर अथवा यह मान कर कि करोड़ों में कोई ही इसवा पालन कर सकता है, अपने प्रयत्न को छोड़ नहीं देना चाहिए। जो रम इन नियमों के पालन में है वह किमी इसरी चीज़ में नहीं है। में दूसरी तरह से कहूं तो यों कहना होगा कि जो आनंद सही तरह से निरोगी चरीर भोगना है वह आनंद दूसरी किसी चीज़ में नहीं है। कोई विकारों का गुलाम चरीर निरोगिता नहीं प्राप्त कर सकता।

अब कृतिम उपायों के बारे में कुछ लिखना चाहना हं। भोग भोगते हुए भी कृत्रिम उपायों से मंतानोत्पत्ति रोकने की प्रया पुरानी है। पर पहले वह गुप्त रीति में चलती थी। इस सभ्य युग में इसे ऊंचा स्थान दे दिया गया है ! आंर उपाय भी वाकायदा गढ़े गये है। इस प्रया को परमार्थ की चादर उड़ा दी गई है। इसके हिमायती कहते हैं कि भोगैच्छा एक कृदरती चीज़ है, शायद उसे एक देन के नाम में पुकारा जाता है। उसे दूर करना कठिन और उसर संयम का अंग्रुश रखना मुद्दिकल वनलाया जाता है और कहा जाना है कि यदि संबम के निवा दूसरा उपाय काम में न लाया जाय तो असंख्य स्त्रियों पर संतानीत्यत्ति का बोझ बढेगा और भीग में उतान होनेवाली संतान इस हद तक बढ़ जायगी कि मनुष्य-जाति के लिए इतनी खुराक न मिल सकेगी। इन दो आपत्तियों को रोकने के लिए कृत्रिम उपायों की योजना करना मनुष्य का धर्म हो

जाता है। मुझे इन दलीओं में तथ्य नहीं लगा; क्योंकि इन उपायों की बदौलत आदमी इसरी उपावियां नरीद लेता है। सबसे बड़ा न्कसान तो यह है कि संयम-धर्म के लोग होने का खतरा पैदा हो जायगा। इस रत्न को देव कर चाहे जैसा तात्कालिक लाभ होता हो उससे बचना चाहिए। पर यहां में दलील में नहीं उतरना चाहता। जिनामुओं से मेरी सिफारिय है कि वे मेरी 'अनीति की राह परं पुस्तक मंगाकर उसका मनन करें। फिर उनका हृदय और बुद्धि जो कहे उसके अनुसार चलें। जिन्हें इस पुस्तक के पढ़ने की इच्छा या फुर्सत न हो वे भृत-चुके भी कृत्रिम उपायों के फैर में न पड़ें। भोग के त्याग का ज्वरदस्त प्रयत्न करें और निर्दोप आनंद के जो क्षेत्र हैं उनमें से कुछ चुन लें। सच्चा दम्पती-प्रेम गुद्ध मार्ग से जाना चाहिए, दोनों को ऊंचे चढ़ना चाहिए और ऐसे कार्य खोजने चाहिए कि जिनमें विषय-वासना के मैवन को अवकाश ही न रह जाय। मुद्ध त्याग के थोड़े अभ्यास के उपरांत उसमें प्राप्त होने-वाला रस उन्हें विषय की ओर जाने ही न देगा। कठिनाई आत्मवंचना से पैदा होती है। जिस त्याग की बुनियाद विचार-शुद्धि पर नहीं; बल्कि केवल बाहरी इंद्रियों को रोकने के ब्यर्थ प्रयत्न पर रखी गई है, वह टिकाऊ नहीं होता। विचार की दृदता के साथ आचार का संयम आरंभ हो तो सफलता गिले बिना न रहेगी। स्त्री-पुरुष की जोड़ी विषय-सेवन के लिए कदापि नहीं बनी है।

## नैसर्गिक उपचार के साधन १ पृथ्वी अर्थात् मिट्टी

जिन तस्त्रों से यह मनुष्य स्पी पुतला बना है वहीं नैसींगक उपचार के साधन हैं। पृथ्वी (मिट्टी) पानी, आकाम (अवकाम), तेज (सूर्य) और वायु से यह गरीर बना है। उन साधनों का कम से उपयोग दिखाने की यहां कोशिश की गई है।

भस्ता साहित्य मंदल, नई दिल्ली से प्रकाशित

मन् १९०१ ता सुने कुछ रोग होता तो में शहरते है पाम मी नहीं दौहना था; निहन उनहीं हसामों वा चोहा उपयोग करता था। देवनीय हाक्टर प्राममित्न मेहना में एक-दो चीजें बन बाद थी। वुछ अनुमन मेने एक छोटी अरवात में बाम करने प्राप्त दिया या और कुछ पढ़ कर । मुने साम तिकायन करन की थी। उपनेद निम्म प्रकार 'फुडमार्ट्ट' लेता या दमने कुछ आराम मिनना था, मर कप कोशा वी थी, वुष्ट वृत्ताया नत्या और भी छोटी-छोटी स्थाविया पैदा हो बाती थी। इसने निए दाक्टर बामजीवन सेन्डा वी बनाई दवा मोह' (हाय बाईरड बायरन) और नवन-वामिक्ट दिया मरना। इसाब पर विस्ताम बहुन ही क्या मा द्वारिए लावार हो बानेनर ही लेना था। लेना अपना जी दाना था।

इस बीच मेरे सराक के प्रशंत की आगि ही थे। नैमर्गित उपवारी में मेरा बाफी दिखान या, लेकिन हिनी का सहारा नहीं था। इधर-उधर ने कुछ पहा था, उन्देशभार पर साम तौर ने स्टाव ने पेर-पार से काम चराना था। सुब घुमशा था। इसटिए विनी दिन साद नहीं पहानी पड़ी। यों मेरी नौका क्रममणणी हुई चलारिको । इसी बीच माई थोल्ड ने बुस्ट की स्टिने ट में भर' साम की पुस्तक बसे दी। वर सुद ता ये उरबार गरी बरत में । मुगर में बूछ जुरर के अनुगर चन्द्रे में , पर मेरे स्वाद ने बर परिवित्त में । इसरिय् उन्होंने बह पुन्तक मुत्ते दी थी। उनहीं नाम तीर ने बिहरी पर और दिया गया है। मैंने इसका उपयोग करना नवश्याः स्वत्र म नाप निष्टी को उरेपानी ने गुंपकर पेट्रपर रंगने का क्या गया है। अन्य की गय बीब में क्यारा दिए बिना पेट् पर मिट्टी स्थाने की है, ने बिन मेरे हो। महित बारे में बैंत पुटिस गरी। बारी है, बैंने प्रिय बताबर राजनर पेड़ पर गरी । संबेरे प्रशासी होता मानुस हुई और जोई ही बुरन्त बंधा हुआ मंत्रोत्रक्तर दश्य हुआ। से कर सहक्ष हु हि उम दिन में आक्रमा मैंने 'कुटमाम्द्र' तो मायद है। सुधा हारा होते, मास्यमन्त्रा जान परने पर बाजी हेरी को नैय गीन सोटी मामम के करीय गहेरे के पार लेगा था। मिर्गी

को पर्दी तीत इस भीडी और छ: इस मानी होती है और मोटाई में बाबरे की रोडी ने दूरी या आप इंच मोटी समा की जिए। जुन्द का दावा है कि जहरी है सी। ने बाटे हुएको भी, यदि मिट्टो का गर्छा सीद कर उस में मुलाया बाय तो बहर उत्तर बाता है। उपशा मह दाना नाबित हो या न हो, लेकिन स्वय मेंने और प्रयाग विने हैं उन्हें में वह देना भारता है। सिन्दर्स स मिट्टी की पुन्टिम बापने के अधिकाश में मैने पादश होते देला है। गैक्टो पर मैंने यह प्रयाग किया है। मूर्त माद्रम है कि निरदर्श के अनेव कारण होते हैं। नापारण कर ने यह कहा जा नकता है कि निरदर्व चाहे जिम कारम ने हो, मिट्टी की पुष्टिम माम्बालिक पादश नो पर्यानी ही है। नापारण कोरे को मिट्डी मिटानी है। बहुतेबारे पोड़े पर रशारे के लिए साफ कपशा ल बर उनमें पर्येगनेट ने गड़ानी पानी में भिनीता है और पीड़े को बाफ बाके उत्पार बिहरी की पुल्लिक रपता है। अधिकांश में इसने कोई अब्छे ही ही जाह है। बहा-बहा मेने दगरी बाबमाइस की, बसे गर गरा मिनी है। अगर दश याद मने आती। हरहे या वह के इन मारनेपर बिट्री न्रम सापक्ष पर्मापी है . दिला के इक में भी मैने मिट्टी का लाब प्रशेग विदा है। गेश-बाम में बिन्तु का उत्तर्भ रोज की भीज बन गई है। विशर् मार्ड ने जियन प्रयाज है। मरी है मनदी स्परम्या बर्ग है। हिनीने बारे में यह रूपी बह महाशह हि उसने नी अनुस कामा होता ही है। इपना करा या मकता है कि विमी दलाय में मिन्दी घटकर नहीं है ।

नेत्र कुमार में मिन्दी कर उस्तीम नेद्र और निर्माण में में ने किया है। दानों के मोर निर्माण में मेंने किया है। दानों केमा निर्माण में मेंने किया है। दानों केमा निर्माण में मेंने किया है। देने हो में मेंने किया है। है। हो स्वाप्त में मेंने किया है। है। हो स्वाप्त में मेंने किद्दी का महुन उपनी किया है। कि महुना में मानी किया है। में महुना मेंने किया मे

यह कह सकता हूं कि एक भी वीमार के लिए दवा का उपयोग नहीं किया गया। मिट्टी के सिवा दूसरे नैसर्गिक उपचार भी साथ किये गए।

मिट्टी का उपयोग स्वतंत्रता से 'ऐंटी फ्लोजस्टीन' के बदले सेवाग्राम में हुआ है। उसम थोड़ा सरसों का तेल और नमक मिलाया जाता है। इस मिट्टी को अच्छी तरह गरम करना पड़ता है, इससे वह विल्कुल निर्दोग हो जाती है।

अव यह वतलाना है कि मिट्टी कैसी होनी चाहिए । मुझे पहले-पहल तो अच्छी लाल मिट्टी मिली थी । पानी मिलाने से उसमें से सुगंघ निकलती थी । ऐसी मिट्टी आसानी से नहीं मिलती । वंबई जैसे शहर में तो मुझे किसी भी तरह की मिट्टी पाने में कठिनाई हुई है। मिट्टी चिकनी या विल्कुल रेतीली भी नहीं चाहिए, खादवाली भी नहीं । मुलायम रेशम जैसी होनी चाहिए । उसमें कंकड़ नहीं होने चाहिए। उसे खूव महीन चलनी में छानना चाहिए। विल्कुल साफ़ न हो तो उसे गर्म कर लें। मिट्टी विल्कुल सूखी होनी चाहिए । गीली हो तो उसे यूप में या आग पर सुखा लेना चाहिए। साफ हिस्से पर काम में लाई हुई मिट्टी कुछ सुखाने के वाद अनेक वार काम में लाई जा सकती है। इस प्रकार काम में लाने से मिट्टी का कोई गुण कम हो जाता हो तो मैं नही जानता । मैंने इस प्रकार उपयोग किया हैं और यह नहीं पाया कि उसका कोई गुण कम हो गया। मिट्टी का उपयोग करनेवालों से मैंने सुना है कि जमुना-किनारे मिलनेवाली पीली मिट्टी बहुत गुणकारी है।

समुद्र की साफ, महीन वालू कब्ज़ दूर करने के लिए खाने की वात कूने ने लिखी है। वालू पचती नहीं है, उसे तो खुज्झे की तरह वाहर निकलना ही पड़ता है और वह जब निकलती है तो मल को भी वाहर लाती है। मैंने इस चीज़ का अनुभव नहीं किया। इसलिए जो प्रयोग करना चाहें उन्हें विचारपूर्वक करना चाहिए। एक-दो वार आज़मा देखने में कोई हानि होने की संभावना नहीं है।

## २ पानी

्रेपानी का उपचार परिचित और पुरानी चीज़ है। कुने ने इसका उत्तम उपयोग ढूंढ़ा है।

कूने के उपचारों में मध्यिवन्दु किट-स्नान और घपंण या मेहन-स्नान हैं। उनके लिए उसने खास तौर का टव भी बनाया है। इसकी विशेप आवश्यकता नहीं है। मनुष्य के आकार के अनुसार तीस से छत्तीस इंच का टव ठीक काम देता है। अनुभव से, अगर बड़े की ज़रूरत मालूम हो तो बड़ा लेना चाहिए। उसमें ठंडा पानी भरें। गिमयों में विशेप ठंडा रखने की आवश्यकता है। तुरंत ठंडा करना हो और निमले तो थोड़ी वर्फ डाल लें। समय हो तो मिट्टी के घड़े में ठंडा किया हुआ पानी ठीक काम देता है। टव में पानी पर कपड़ा ढांप कर तेजी से पंखा झला जाय तो पानी को तुरंत ठंडा किया जा सकता है।

टव को दीवार से सटाकर रखें और उसमें पीठ को सहारा मिलने लायक लंबा पटरा रखें जिससे उसका सहारा लेकर वीमार आराम से वैठ सके। रोगी को इस पानी में पैर वाहर रखकर वैठना चाहिए । पानी से बाहर शरीर का जो भाग हो वह ढका रहना चाहिए, जिससे ठंड न लगे। जिस कोठरी में टव रखा जाय उसमें हवा का आवागमन और प्रकाश ज्रूर होना चाहिए। वीमार के आराम से बैठ जाने पर पेडू को एकं मुलायम तीलिए से रगड़ना चाहिए। पांच मिनट में तीस मिनट तक बैठा जा सकता है। स्नान के बाद गीले हिस्से को सुखाकर वीमार को सुला देना चाहिए। यह स्नान तेज़ वुखार को भी उतार देता है। इस प्रकार स्नान छेने में नुक्सान नहीं, लाभ तो प्रत्यक्ष मिलता है। स्नान भूखे पेट ही लिया जाता है। कब्ज़ में भी यह स्नान फ़ायदा करता है। अजीर्ण को दूर करता है। स्नान छेनेवाछे के शरीर में स्फूर्ति बाती है । कब्ज़ के लिए कटिस्नान के वाद यावा घंटा टहलना उचित है। इस स्नान का मैंने खूब उपयोग किया है। यह तो नहीं कह सकता कि सब समय सफलता मिली है, लेकिन १०० म ७५ प्रतिसत सफलता मिली, यह कह सकता हूं।

तेन बुगार की हालन में अपर स्थीन की द्या ऐसी हो कि उसे टब में विशया जा सकता हो, तो इसमें स्वर दोनीन दियी वरूद उत्तर बायगा। महितात का सन्तरा जागा रहेगा।

नैयं वर परवार का भूम उन्हें नाव के अनुवार है। किंतु वह दूरती है, इमिल्ए अमिलिक सनुव्य भी नि रंपनात से उमका उत्तमेंक कर सकता है। बिद दें होने पर उन्हें पानी में नियाया—गीन्य विकास किर पत्तम में कभी कीह होनि नहीं होते। इनमें मिट्टी का उत्तकार पीनेयन की चरमोलिका में बिद्ध कर सनते हैं।

सब पर्यान्तात (नेन्त्र-तान) वे बारे में बाजा पार्मा हूं। जनतेंद्रिय बहुत नाजुर हरिय हैं। उसते उसर की तवा ने सिर्ट में हुए संस्तृत बस्तु हैं। उसरा को से नहीं कर सत्त्राः। इस मान्त्र कथा उसरर कुने ने नहीं हैं कि इंडिय न सिरेपर (पुरुष मना ;तारी पर रम्पा पहारर यानी वेंडिय को नता करते नहीं) मुख्य रमाने से सारी उसने हुए पीरे पीरे रामुडे जाना यह उपवार ना तरीवा कतनामा गया है।

दर में एन ऐसी विवाई रतनी चहिए कि जिन की बठफ पानी की सजह से जस हकी रहे। वैर बाहर रगकर जागर बैठें और ६६४ की शबा के सिरे को पानी के तौलिए से हमते हमते सकें। उस भी और सवरें। तिया संस्की लगनी चाण्टि। इत यांग-नाम लेनेवाने की गांध मिलती है, उमें बाह बिम तर्र की तकतीर हो, उस मनर घाउ ही जाती है। इस स्तान को कृते ने बाटिनतान सा उच्च स्थान िया है। मुते जित्रता अनुमद व टिल्तान का हमा है गुना पर्रंत सान का नरी हुआ है। उनमें सास करूर ती असाही मनता हा मैन उन्हें प्रसार पत भारत्य दिवारे । जिहे वे उत्तर्य देशाण् उहाँ भैव से जारा बाबार पर क्या । इस तर् उनके गीत के बार में सनुभव स वृत्त नहीं रिया संबंध । सबता देवता अयान करके देवना चाहिए। इब आर्थ ता सुभीता न हाता ता संदेश में पता महत्तर हूँ। उना

पर्य उत्तान जिया वा मनता है। याने गांवि हो निनेपी ही। मनुष्य हर इध्य की गर्छ पर बहुत कम स्थान देगा है कहने पर्यन हमन हो यह द्विय नहुन में नाह को हो हो वायकी। कान न नमा जाय हो। मुख्ये को बरनेवाली रक्षा में केल अरका रहा। है। इस संक को निकान देने की पूरी साम्यवका है। इस स्थित के ऐसे बहुत्योग है, इसने क्विय में किछ दलने के स्थाव में गांता मिन्दी है। समाना के बहु स्वत्य और याह हों है है और इस इथिय हारा कर्ये की संवाद न हाने देने का स्थाव सहात है, क्यांक इश्व सनार साम होने हैंने में को वस्ता है। कुल स्थाह साम होने होने

बुने के में दा लाज नहान को कने बाहिए है तीचरा, नुझ बंगा में ऐता ही बचर पैदा बरनेबाज बारर-दारा है। जबर आजा हो अववा निने निया रिची तबह न आड़ो हो, उचके लिए मह दना। उपनारी है।

बारसई वर हो पीन छनी बंदन दिए। हाँ । ये काही बीडे होने चाहिए। उत्तर मीरी गुनी चाहर विद्यारे । बारर की मीटाई मानी नारी के नेंग के स्थान होती चाहिए। उस ठडे पानी में द्वारर सुद निवोद से और बंदा के कार फेमा है। इसार बीमार का बिश मृता दें । संगत्त गिर कवन के बाहर नहिल् पर रखें । विर पर बिला कर निवाहा हुना वीनिया रलें । बीयार का गुरावर फील्स कंबल के निरा का बाहर के बारा आर लोड़ हैं। हाय बाहर के अहर हाते पाहिए। येर भी पुरुत्यरे पारन और रंबन के बहर इस जाने चाहिए जिस्स बाहर की हमा महर न जावण् । इस स्थिति में बीमार का एकता दिना में नहरी कार्न पाहिए । मुकार नमर हमी कर-में। सदेश : टिर्मा बाबार का अवदा राजा वर्णात्। योंद उदर अंदर नव जबन न वरतारा हा ताउप बिनड में क्यों हलाइ प्योक्त जन गण्या है। पर त्र बुबार से सरे आय वर्गतर राग का बादर संस्कृत और परितासदा है। वर्ष बार स

पसीना नहीं आता, लेकिन बीमार सो जाता है। सो जाने पर रोगी को जगाना नृहीं चाहिए । ऊंघ इस वात की मूचक है कि उसे चादर-स्नान आराम देता है। चादर में रखने के बाद रोगी का ज्वर एक-दो डिग्री जुरूर उतर जाता है। रामिपात में पड़े हुए, इबल न्युमोनिया से पीड़ित अपने लड़के को मैने चादर-स्नान दिया है। दिन में तीन बार देने के बाद ज्वर उतर गया और पसीने से सरावोर हो गया । उसके ज्वर ने अंत में टाइफाइड का रूप ले लिया और फिर अठारहवें दिन साफ उतर गया । चादर-स्नान तो बुखार जब १०६ डिग्री तक जाता रहा तवतक दिया । सात दिन बाद इतना तेज ज्वर जाता रहा, न्युमोनिया चला गया और फिर टाइफाइड के रूप में १०३ डिग्री तक पहुंचता । डिग्री के संबंध में, संभव है, मुझे रमरणशक्ति धोखा देती हो । यह उपचार मैंने डाक्टर मित्रों के विरोध करते हुए भी किया था। दवा कुछ नहीं दी थी। आज यह लड़का भेरे चार लड़कों में सबसे अधिक तंदुरुस्त है और सबसे अधिक श्रम करने योग्य है।

यह चादर-स्नान शरीर में अलाई, पित्ती, खसरा, नेनक, खुजली, जो भी हो, सबमें काम देता हैं। मैने इन बीमारियों में चादर-स्नान का खूब उपयोग किया है। शीतला या बोदरी में, पानी में गुलाब रंग लाने भर को परमेंगनेट डालता था। चादर का उपयोग होने के बाद उसे उबलते पानी में डुबोकर पानी गुनगुना रह जाने पर चादर को अच्छी तरह धोकर मुखा देना चाहिए।

रक्त की गित क्षीण हो जाने और पांत्रों में बहुत फूटन होने पर बरफ घिसने से मैने बहुत फायदा होते देखा है। बरफ के उपचार अक्सर गर्मी में बहुत अच्छे लगते हैं। जाड़ों में कमजोर आदमी पर वरफ का प्रयोग करने से जोखिम हो सकती है।

अय गरम पानी के बारे में विचार करेगे। गरम पानी का समझदारी से उपयोग करने से बहुत से रोगों की शांति हो जाती है। प्रसिद्ध दवा, आयोडीन जो काम करती हैं यही काम बहुत कुछ गरम पानी करता है । जहां सूजन होती है वहां आयोडीन लगाई जाती है। उस जगह गरम पानी का तीलिया रखा जाय तो आराम मिल सकता है। कान में दर्द होने पर आयोटीन की बूंदें डाली जाती हैं, उसकी जगह पर गरम पानी की पिचकारी देने से शांति होने की सम्भावना है। आयोडीन के उपयोग में कुछ जोखिम रहती है, पर गरम पानी के उपचार में वह नहीं है। आयोडीन जंतुनाशक (डिसइन्फेक्टेंट) है, वैसे ही गरम अर्थात् उवलता पानी जंतुनाशक है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आयोडीन विशेष उपयोगी वस्तु नहीं हैं । इसकी जपयोगिता के विषय में मुझे जुरा भी शंका नहीं है। पर गरीव आदमी के घर आयोडीन नहीं होती। वह महंगी चीज है और उसे चाहे जिस आदमी के हाथ में, उपयोग के लिए दिया भी नहीं जा सकता। पर पानी तो सभी के यहां होता है।

विच्छू के डंक मारने पर जब दूसरी किसी चीज़ से फायदा नहीं पहुंचता तब टंकवाले भाग को गरम पानी में डुबोकर उसमें रखे रहने से कुछ आराम अवश्य मिलता है।

यकायक जाड़ा लगने पर भाप देने, वीमार के इवर-उचर गरम पानी की बैलियां रखने और ठीक उढ़ा देने से जाड़ा हटाया जा सकता है। सबके यहां रवड़ की बैलियां नहीं होती। शीशे की मज़वूत बोतलें, जिन पर मज़वूत काग लगे हों, गरम बोतल का काम देती हैं। किसी भी धातु की ठीक काग लगी हुई बोतल अच्छा काम दे सकती हैं। घातु की या दूसरी बोतल ज्यादा गरम जान पड़े तो उसे मोटे कपड़े में लपेटना चाहिए।

भाप की शवल में पानी बहुत काम देता है। पर्माना न आने पर वह भाप से लाया जा सकता है। गठिया से पीड़ित, अथवा बहुत वजनवाले के लिए, भाप बहुत उपयोगी वस्तु है।

भाप छेने की पुरानी और सरल-से-सरल रीति: मूंज या सुतली की खाट छेना अच्छा है, छेकिन निवार की खाट भी चल सकती है। योग या कम्बल विला

कर की मार की उनगर मुखा दें। साट के बीचे उदली पानी की पानिस्तां या टोपिए रखें। बीबार मो इस नरह दान के जिल्लाम नवन पारों और यमीन पर छ जाय और बाहर की हवा माट के तीचे न जा गरे। इस नरह क्षांव देने के बाद वनीरी वा हाधी पर बा दबना उटा हैं। इससे बीमार की भाग लगने लगेगी। पुरी भाष न मिलने पर पानी बरलने की अमरन गरेगी। दनरी हाडी में वा वानी उदलते हो स्ता वहा हो उने बारपाई है नाबे स्त हैं। साधारण रूप से अपने दल दह रिबाह है कि पारपाई के नीचे अंगारे रमने हें और अनपर उदाने गानी का बरकार इस रीति से पानी की गरमी बात ज्यादा मिनने की गजाबन रहती है. सेरिन जनमें दर्घटना होते का अने रहता है । एक विनगारी भी उद्देशीर कवल या किमी बीज को पर से सा श्रीमार की जान जोनिय में पट नकी है। इमलिए गरमी शीरन दिलने का लालक छोटकर मेरी बनाई तरहीब को काम में लाना चाहिए।

कुछ लोग ऐसे पानी में पतिया डाटने हैं, जैसे नीम की पनियो । मैंने इसके उपयोग का अनुमव नहीं क्या है। प्रथक उपयोग की भाग का है।

बिनने पैर ठडे हो गए हो, पैरो में पूरत हो, उने पुरते तर गहरें बरान में, हर बरते कारन गरम पानी में दिनी राई डालनर पैरो को नुह निन्हों तर दुवेशर राजा चाहिए। इसने पैर तरम हो जाते हैं, पूरत दिर बारी हैं, राज नीचे जिस आवा है और बीमार को आगाम निज्या है।

जुहास हुआ हो या गरा पर मया हो ता परिसी में प्रस्तरा पानी रणकर समें मा नाक में भार तो जा सहती हैं। पतिनी में एक अनत दारी तथा दने में यह रोटी के हाता भार आराम में तो जा सहती है। यह रोटी कहती की रणती चाहिए। रहर की नभी समाहर यहें रोटी में रणते के जाया आराती होती है।

#### ३. आकारा

हन जानपूर्वक आवास का उपशास कम तै-कम करते हैं, उत्तरा हमें वस-नै-कम हान है। अवता का अर्थ अवकास कर सकी है। दिन में जब बाददान हैं, उत्तर को ओर देगों न हम अपन्य देवा हैं। इस उर्थ आवास करने हैं। उत्तरीत दूसरा देवा हैं। इस उर्थ आवास करने हैं। उत्तरीत दूसरा तम आगवान हैं। इस गुक्त का ऑर-डीर हो मही है। यह जिला हुर है उत्तरा ही हमारे कम्बरित है। हमारे बारों और आदास नहीं तो हम दुस्तर जाय। जहाँ कुछ नहीं हैं बहु महाना है। यह बार नहीं हैं दि दुर-पुर वो आगवानी रम हम देगते हैं क्या सावा । है। आहास नी हमारे पार भी सुक होश है। इस्ता हो नहीं कह हमारे अपन भी हम् हमेश है। इस्ता हो नहीं कह हमारे अपन भी है। विकास

आने जीवन में आकात के गाय मेल नापने के निय मेंने अनेशानेश उत्तापियां घटाई है। घर शी मादगी, बन्त्र की सादगी, रहन-गरन की मादगी को गुरु शब्द में, और अपने जनर सामु होने बासी भाषा में नह ही-उनरीनर नृत्रीन की बदाकर मैंने आसार के माथ गीपा गरबाप बढ़ाया है और यह भी पह नवने हैं कि न्यां-पर्यो यह नवाय बहुता गया हवी-यो मेरा आरोग्य बहुता गया। मेरी शादि वर्षा । सनोप बदा और पन की इक्ता बिन्तृत्र दीनी पह गई। बिगर्ने माशाम के गाम सम्बन्ध कोहा है उनके पान कुछ नहीं है और नव कुछ है। अने में मनुष्य पतने का ही मानिक बनता है जितने का कह रोज चपयोग कर गवता हैं और उसे पदा सकता है । इसिल्यू दगहें दायोग से बह आने बहुता है। शब जोग रोगा करें भी इस आवापम्याची जनत में स्वते दिए स्थान है और विनोको भी तथी अनुभव नहीं होगी।

इंग्लिन् प्रमुख का गोते हा। त्यान धावास के गोर्च होना चाहिए। भोषा, नार्स से क्षणने घर को बोहना घने ही तमें। बरमात से एक सार्या मैना छाया भले ही हो, वाकी हर समय अगणित तारों से जड़ा हुआ आकाश ही उसकी छतरी होनी चाहिए। आंख खुळते ही प्रतिक्षण वह नया दृश्य देखेगा। उसे देखते-देखते ऊनेगा नहीं, उसकी आंखें चींचियाएंगी नहीं, विलक शीतळता प्राप्त करेंगी। तारों का भन्य मंडल घूमता हुआ ही दिखाई देगा। जो व्यक्ति अपने हृदय को साक्षी करके इनके साथ मंत्री जोड़कर सोयेगा वह कभी अपवित्र विचार को स्थान नहीं देगा और शांत निद्रा लेगा।

पर जैसे हमारे आस-पास आकाश है वसे ही हमारे अन्दर भी है। चमड़ी के एक-एक छिद्र में तया हो छिद्रों के बीच में, जहां जगह है वहां आकाश है। इस आकाश की——खाली जगह की——भरने की भी हमें कोशिश नहीं करनी चाहिए। इससे, यदि हम अपना आहार, जितना चाहिए उतना ही हैं तो शरीर में मुक्तता रहेगी।

हमें हमेगा पता नहीं चलता कि कव अधिक अयवा गलत भोजन किया है, इसलिए हफ्ते में या पखनारे में, या जैसी सुविधा हो, उपवास कर लें तो सब घट-बढ़ संभल सकती है। पूरा उपवास न कर सकें तो एक या अधिक समय का खाना छोड़ दंने पर भी फायदा होगा।

## ४ तेज

जैसे आकाश आदि तत्वों के विना, वैसे ही तेज यानी प्रकाश के विना भी मनुष्य का निर्वाह नहीं हो सकता। जितना भी प्रकाश है सूर्य के पास से आता है। सूर्य न हो तो न गरमी हो और न प्रकाश हो। हम इस प्रकाश का पूरा उपयोग नहीं करते, इसीसे पूर्ण आरोग्य नहीं भोगते। जैसे हम पानी में नहाकर साफ होते हैं वैसे ही हम सूर्यस्नान भी कर सकते हैं। निर्वल आदमी जिसका खून कम हो गया है, वह नंगा होकर सबेरे की धूप ले तो उसके शरीर का फीकापन और निर्वलता चली जायगी और जठराग्नि मंद हो तो वह भी जायत हो जायगी। यह स्नान सबेरे चूप तेज़ होने से पहले लेना चाहिए। जिसे खुले शरीर सोने या बैठने से सर्दी लगे वह आवश्यकतानुसार कपड़ा ओढ़कर सोये, बैठे, और जैसे-जैसे शरीर सहन करता जाय, कपड़ा हटाता जाय। नंगे होकर घूम भी सकते हैं। ऐसी जगह पर कि जहां किसी की नज़र न पड़े, यह किया हो सकती है। ऐसी सुविधा के लिए दूर जाना पड़े और उतना समय न हो, तो ऐसी पतली लंगोटी बांधकर कि जिससे गुप्त स्थान ढक जाय, सूर्य-स्नान लिया जा सकता है। इस प्रकार सूर्य-स्नान से बहुत आदिमियों को फायदा हुआ है। क्षय की बीमारी में इसका बहुत उपयोग होता है। सूर्य-स्नान केवल नैसर्गिक उपचारकों का ही विषय नहीं रह गया है। डाक्टरों की देख-रेख में ऐसे मकान वनाए गए हैं कि ठंडी हवा में भी कांच के रक्षण में किरणें मिल सकती हैं।

कितनी ही बार ऐसे घाव हो जाते हैं जो भरते ही नहीं, पर उन्हें घूप देने से वे भर गए हैं।

पसीना लाने के लिए मैंने बीमारों को ग्यारह बजे की जलती हुई घूप में मुलाया है और वे पसीने से नहा उठे हैं। ऐसी धूप में मुलाने के लिए रोगी के सिर पर मिट्टी की पट्टी रखनी चाहिए। उसके ऊपर केले के या दूसरे बड़े पत्ते रखें कि जिससे सिर ठंडा और मुरक्षित रहे। सिर पर तेज घूप नहीं लेनी चाहिए।

### ५ वायु---हवा

पहले चार तत्वों की भांति ही यह पांचवां तत्त्व भी अत्यन्त उपयोगी है। जिन पांच तत्त्वों का यह शरीर वना है, उनके विना मनुष्य दिक ही नहीं सकता। इसलिए वायु से किसीको उरना नहीं चाहिए। हम जहां जाते हैं, वहां घर में वायु और प्रकाश को वन्द करके आरोग्य को जोखिम में डालते हैं। सच तो यह है कि यदि हम वचपन से ही हवा से निर्भय रहना सीखें हों तो अरोर को हवा सहने की आदत हो जाती है और जुकाम, वलगम इत्यादि से हम वच जाते है।

### मेरे यनुभव

#### श्री दृरिभाऊ उपाध्याय

प्राहित विहित्सा ना नाम मैंने आब से ४६ वर्षे पर हे बराने पून्य पत्रामी ने मृह में मुना, जबति मेरी उद्या स्थामण बारद-चौमह नामें नी पी । उन्होंने पूर्व नूरी नी जन-चित्रमा-मान्यची पूर्णना पद्यों पी भीर में उपारी तथा उत्तरी विविद्याना न्यां पर स्थामा दिया करते में । उनते आधार पर में हम सकते की सीन सार्व विद्यास नामे मे

१—रोटी मोटे बाटे की गुक ( बसीम बार ) पवाहर सानी चाहिए । २—गाने-माने कहार आ जादे ती साना बन्द कर देना चाहिए, वर्गात कहार आता पेट कर जाते की निमानी है। ३—वह करने पे कि दल इनना बचा हुआ होना चाहिए कि आव-दान केने की जुकरन न यह। सन्दुरण मनुष्य दे दल का यह सराम यह बनाने थे।

आगिर में वे बीमार हो गये। उन्हें कोरिल हो गया और कर्ल-बिरिमा गरते हुए हो उन्होंने देह छोड़ा। रीती होते वी अवस्था में उन्होंने एकोरियी, आपूर्व-रिन, यूनामी श्वारि गमी हमाज वरवाये। अन्त का प्राहृतिक चिरिता की परण की, हम्मानि उनकी उपम महत्ता तुर्ग पिनी; कांग्रीक शहुदिन विक्लिश वा साज्यात रूरी मिनी; कांग्रिक शहुदिन विक्लिश वा अक्षा करने का हैं।

सारी बार में बदान (१९२६) में पूरव बानू के पान पावरणां नहीं पहना में मन्तर अवार दुन बसराता में रहे। हो, स्वादर पान की बादा अवकात पह गई। हम और उदार दी गएन भी पान राजा या; पर कारकारों में। मजीहा बान में मून दी लग मने रहने को दुन ऐंगी पून बदान में ही राजि हैन राज्ये प्राहित्य बीचन तो हुई, साखारा उदाय प्रीहत भी न निव कहा। बाहू के पाल जाने वे हम पुन में बुत तैसी हो। माई सा पान की दी तरफ हुठ पान तो बसा; पानु के सु वानि निरा, काराय बहुत कुठ नारी में हम बने दर भी, सभी तब नहीं आई। बादू थी स्पन्न बई होगी ने सी, परन्तु उनका सदम और माम बरवे स्वाहम्पन्यती-मन्दर्भी माक्यानी और प्रापनक्ता बहुन बम होगी ने ही होगी। भैने भी नहीं ही ही।

बार् ने पान रहने ने बाद प्राकृतिक विकित्ता-मम्बर्ग्या उनने कई प्रयोगी में जिम्मा निया। कबता अनाब, बच्चे गांग, नीम के पता की चटनी, तेन, मारि प्रयोगी में शामित हुआ। सन्द वे सब गुरुते गर्ने। बाद में १९३२, ३० और ४२ में तीन बार स्वाप्त्य-नुपार ने लिने ब्राष्ट्रतिश वितित्सा ने बयीय मेरे कार विधिवत् हुए । पहला बम्बई में थी गौरीयकर भाई दर्व की देगरेल में : दुगरा बर्चा में स्वय बापुनी भी देलमाल में और शीमग अवमेर जैन में स्वय मेरी गरशक्ता में। तीनी प्रयोगी में मुत्ते लाभ हुआ, परम्युवह बहुत-पूछ छिन भी दया: बवेरि प्राकृतिश विशिगा बारमय में बोर्ट विविरता नहीं है। यह एक जीवन-कांति है, जिसमें मारा जीवन ही। बदल देना पहता है। शेए की निर्मेश बरने के लिए को भारत्यात, रहत-महत बरणनी पहती हैं बह बेजन चिरित्यारात्र तर में निए नहीं, मारे बोबन के लिए बरणनी पहनी है। वह मुससे अवतर मदा के लिए नहीं बदली गई। इसीने उस लाम ने वर्षित छता पहा । श्रीच-वीचे में मन्मापी व नारवारित प्रयोग करना रहता है भीर उनने शान्तारिक नाम भी होता है। भीरे-भीरे निष्टा भी बादी नाती है, यहां तह हि लदमय बाद वर्ष की असम्बाभी भी दिए-हिर कर ब्याय होने की बासा बागी रहती है । हाता-हि मुन्तु का सब सन में विकित नहीं है और दिनी भी सन्द कर बाजादे को सान्ति के नाथ उनका स्कार करने की मन की नैदारी है, दिर भी बर स्मार्टी क्षाबाद ऐसी इच्छा नहीं है । मेरा नराज है हि मन्प्य जिनने अधिक दिन जील है, उपना ही बनका सनुपर बिगाल, अन्य परिचय और बृन्ति गारियम होती मानी

है और वह स्वयं उसके तथा समाज के लिए अमूल्य सम्पत्ति वनता जाता है। इसलिए वह जितने अधिक दिन सुरक्षित रहे, उतना ही सवका कल्याण है।

पहला प्रयोग वम्बई में हुआ था । नमक सत्याग्रह के सिलसिले में जब मैं दुवारा जेल गया तो मुझे जुकाम की काफी तकलीफ थी। जेल में वह बहुत बढ़ गई और नाक में ह्रा-पीला मवाद आने लगा। मुंह का जायका मारा गया और नाक में कुछ वदव्-सी भी आने लगी। जेल से छूटते ही मैं सीवा वम्बई गया। स्वामी कुवलयानंद के आश्रम में, मरीन लाइन पर, पहुंचा । वहां के चिकित्सक ने देखते ही कुछ चिन्ता के स्वर में कहा कि आपका तो सरजिकल केस है, हमारे बूते का नहीं है । आप जल्द ही किसी अच्छे सर्जन को दिखाइए । मैने डा॰ टी॰ ओ॰ शाह को दिखाया। उन्होंने फीरन अस्पताल में भरती होकर आपरेशन कराने की सलाह दी। रोग इस हद तक बढ़ चुका था कि मवाद का असर दिमाग की सीमा तक जा पहुंचा था। सवा घंटे तक आपरेशन की किया चलती रही और अन्त में सर्जन ने कहा कि ७५% तुम्हारी बीमारी हमने ठीक कर दी है ऐसा समझो। २५% जिन्दगी भर बनी रहेगी, वयोंकि मवाद का असर दिमाग तक जा पहुंचा है और दिमाग को छुना खतरनाक है। इसिछिए रोग का कुछ अंग छोड़ देना पड़ा है। साधारण स्वास्थ्य तृम्हारा जितना अच्छा रहेगा, दारीर में जितना वल संचय कर सकोगे और जीवनी-शक्ति बदा सकोगे उतना ही यह रोग दवता रहेगा। अव शक्ति-संग्रह की फिक पड़ी। फिर प्राकृतिक उपाय की ओर ध्यान गया। स्व० जमनालालजी की प्रेरणा से, जो दुखियों के प्रसिद्ध याता थे और मेरे तो बुजुर्ग जैसे थे, उन्हीं के शांताकृत वाले वंगले में थी गौरीशंकर भाई की योजना में दूधकल्प किया गया, जिसमें कुल मिलाकर तीन महीने लगे। बिना किसी औपिष के मैं दिनभर में लगभग चार सेर दूध भैंस का

पी जाया करता था और मेरा वज़न लगभग ११२ पींड हो गया, जो ९९ या १०० पींड रहा करता था। जिन्दगी में पहली वार मेरा इतना वज़न वढ़ा। उन्होंने सात दिन वित्कुल उपवास करवाया। केवल जल पर रक्खा। सात दिन केवल संतरे का रस दिया फिर वर्धमान कम से सिर्फ दूध दिया। उसके वाद उन्होंने भोजन का एक कम वना दिया था और वताया था कि वज़न १०५ से नीचे गिरने लगे तो सावधान हो जाना चाहिए। प्रतिवर्ष एक महीने तक यह दूध-कल्प कर लिया करें, जिसमें तीन दिन केवल जल पर, तीन दिन संतरे के रस पर और शेप दिन वर्धमान कम से दूध पर रहा जाय। मेरे अन्यवस्थित जीवन-कम में यह नहीं निम सका; लेकिन इसका महत्व मेरे हृदय पर अंकित हो गया है।

दूसरा प्रयोग फैज्पुर कांग्रेस के बाद हुआ। उस समय मेरे सारे बदन में खुजली और फोड़ हो गये थे। वैठा भी मुस्किल से जाता था। हलका-हलका बुखार भी रहता था। उसी दशा में पहले से वचनबद्ध होने के कारण भाई खोड़े साहव के साथ मोटर में सारे निमाड़ की यात्रा की । प्राय: एक करवट छेटे-छेटे १०-१२ दिन की पूरी यात्रा समाप्त की। वहां से सीवा वर्वा पहुंचा तो डॉक्टरों न कलोसल मेगनीज के इंजेक्शन दिये और कहा कि तुम्हारे सारे सिस्टम में मवाद हो गया है। फिर एक मलहम तीन दिन तक सारे शरीर में लगाता रहा। उससे फोड़े और खुजली तो ठीक होगई मगर वापू ने राय दी की अब प्राकृतिक चिकित्सा स गरीर को और ठीक करलो । यह किया कूने और जुस्ट की सम्मिलित प्रणाली के अनुसार की गई थी। इससे मेरे शरीर में स्फूर्ति रहने लगी और वह अच्छी तरह काम करने लग गया । इसी दौरान में मुझे फिर ज्वर आगया था । वापू की सलाह के अनुसार केवल मेंथी के पत्ते और टमाटर के सम्मिलित डवाले हुए रस पर सान दिन रहने से वह ज्वर चला गया।

१९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय जेल में एक ओर से दस्त, दूसरी ओर से जुकाम, नीमरी और

में मंद ज्वर का एक साथ दौरा हुआ। दक्षत्रों से में र्तम आगपा। वे महा पर इतनी हावी हो गई थी कि महे यह दर स्या रहनाया कि दवा छोडी नही और में गरम हवा नहीं। एक रोज मेरे मन ने निद्वय कर निया कि मने ही मर जाऊ; किन्तु दवा को मुलामी एक शय भी मंत्र नहीं बरुया । सन बिन्तर नहीं स्वती थीं । अतः मेने दृढ संशरा कर दिया कि अबनक मृत नहीं लगेगी सबवर गाना नहीं साक्षमा । मिन्हें पाब भर दूध बोडो-मी कब्बी गरबी, कब्बे द्यादर और बीडा गड बेने लगा या। योहा प्राणायाम और मुबर-गाम यमने वा निन्त-मिला भी बनाया। वेड पर गर्म और ठडे पानी की घारा भी अरल-बरल कर छोडने लगा। आठ दिन में मुझे मन सगने सगी। किर मैंने क्टिन्नान संबेरे एक मनत और राज को पेड़ पर मिट्टी की पट्टी बोपना गरू करने व्यादान भी बड़ा दिया । इसके पुछ दिन बाद वर्गीना आने सक थ्व में बैडहर तुरम्त ठंडे पानी में स्नान करना गरू किया। यह प्रयोग नवम्बर में गरू करके दिनम्बर के बला तक जान रस्ता। यग साल जाहा भी बहे बडाके का पडा। निरंप ठंडे पानी में स्नान करने बाने भी वर्ष पानी से माराने क्षम गर्य । लेकिन में बराबर ठंडे वानी ने स्नान करता और गंगे पैर पुमता रहा । छाय ही एक यहा हंदा पानी धार बांधकर निरं पर बाल लेता था। साहम जराम होना तो दर, ग्रीक तक नहीं मारी दी । इन्हीं दिनों ज्ञानेरवरी के एड अध्याय को देखकर ध्यान भी शाम दिया था। गुबह बुछ गुले बच्चे बाहाम, मंत्रणनी के कपने दान पहाने तथा थोड़ा दूप छेने का भी प्रयोग दिया। रूपनी सम्बी मौर दूप सारी मात्रा में लिया करता था। दिए योही मोटे बाटे की रोडी

भी देन स्था। क्स मिलाके इसका नवीजा यह हजा कि मेरे साबी बहुन रूपे कि इतनी अच्छी सरहरूनी हमने पहले कमी आपकी नहीं देखी। और मना यह कि मेरे सफेद बाल भी बाते होने लग गर्प । इसके बाद ही अंग्डे के निज्ञान न देने के अपराष में जैन की वीत महीते की बनहाई कोजरी की सजा मिली, जिनमें उपर के बगे की माने-बीने की मुक्तियायें बंद ही गई। वाकी दान-रोटी से बाम पड़ा । पिक्टिमा के लिए बेचन दब, ब्यायाम और ध्यान की निजा के निकार और नोई अवज्यत नहीं रहा। इसमें मन सो जहां ना-वहां रहा, विन्तु वरीर किर बमबोर होगया और दान की निकास भी शरू हो गई । अनः किर टॉस्टरों और दवाओं के चरतर में पढ़ जाना पड़ा। जेल के डॉ॰ मृत्रस्टिन्डेन्ट ने कहा-आपने स्वार्घ्य की हम पर जिम्मेदारी है । इमलिए स्वतुन्त्र निरित्या न करके हमारी ही दी हुई दशाई नेती बाहिएं। इस मुद्दे

पर जनमें लड़ने जैमी निष्ठा महीं थी।
इसने बाद थी मध्य-मध्य पर छोटे-बड़े प्रयोग
हैं है। अब भी दशमों में भारण मी घटनी मार्ग है।
बसी बर्जेंच दियोगिया महिं बीर हार पारेन्द्रस्तार
की ओर देगकर दश्च तेरें रहने वा मत्र होता है। बसी
पूर्व दियोगिया में बीर देगकर गुड़ साया-पिकार,
शैक सात-मान और सम-मान के भारीने रहने की
वर्षन बटती है। इस इंडों के बहु हाइसार होता, नहीं
बहु जा सबता। परन्तु बुल निमा बर मिरी दारि
और दश्नि विशेख की सीर है, ऐसा मुने मार्गित होता
हुना है। उनके जैसी निष्ठा जिस दिया कि सम्मान दे देशा, उन दिन मुझ स्वास्थ्य के गुरुस्त में स्वास्त हैना, वह

### वीमारी में ल्यन

पं• जवाहरमान नेहरू

हरूदुनजान की विजाब ने एवं बारे महेशार बात है. जो नावर शिल्बार सानून हो १ वह निपत्त है हि आपन में जब बारे बीमार पाना पानों बह नुस्त गांत दिन या गयन वह बातवा या। बहुन की। तो नावर वे दौरान में ही मन्त्रे हो जाते में १ लेक्स जयर बीमारी दिन भी वानव वह दिनों क्या तेने में १ एम स्मार्ट में बीमार बहुना अन्त्रों बात नहीं मन्त्री बाते वहीं होते जीद न बातवर कोंगे की ही बसार मात्र नहीं होते। ---(सरक्तित्रम्ण के शिल्कों नी

# प्राकृतिक चिकित्सा का मर्स

डा० कृष्ण वर्मा

प्रकृति स्वयं चिकित्सक है—विश्व, दृश्य जगत, मनुष्य आदि महान् प्रकृति के अंग हैं, जैसे समुद्र और उसके जल की एक बूंद, वास्तव में दोनों एक ही हैं। जवतक ये दोनों सम-मिश्रित रूप में रहते हैं तवतक विकृति नहीं होती। मनुष्य-शरीर जहांतक महान् प्रकृति के नियमानुसार रहता है, उसमें किसी प्रकार की भी वीमारी नहीं होती, अलग होने पर वीमारी का होना स्वाभाविक ही है। मनुष्य-शरीर पंच-तत्त्वों के नियमानुसार प्रकृति से मिला रहेगा तो निर्मल और निरोगी रहेगा और अलग होने से जल-विन्दु के समान विकृत रूप धारण करेगा अर्थान् मलीन, रोगी रहेगा और नष्ट हो जायगा। इसलिए हमारा प्रधान कर्तव्य है कि हम शरीर को सदैव प्रकृति के नियमानुसार रखें, जिससे विकृति से हमेशा वचे रहें।

वृद्धि-भेद से यदि कुछ गलती हो जाय और शरीर-रचना में परमाणुओं से अविच्छिन्न पदार्थ प्रवेश कर जायं, अर्थात् शरीर को जिसकी आवश्यकता नहीं है, वह किसी भी मार्ग, जैसे नाक, मुंह, त्वचा इत्यादि मार्गो से प्रवेश कर जाय तो स्वयं चिकित्सक-प्रकृति उसे निकाल देती है। यदि मुख-मार्ग द्वारा अयोग्य अथवा अप्रमाण मात्रा में कोई खाने-पीने की वस्तु आमाश्य में आ जाये तो प्रकृति उसे निकालने के लिए समस्त वस्तु मुंह की राह निकाल देती है और अगर कहीं आंतों तक पहुंच जाय तो दस्त लगने शुह हो जाते हैं, यदि आंतों में कुछ पदार्थ गिर जाय तो अश्रु आना शुह हो जाता है। नाक में जाने से छींक आना शुह होती है, कंठ में जाने से खांमी आने लगती है, इसी प्रकार की वेकार चीजों को प्रकृति स्वयं अलग कर देती है। यही प्राकृतिक चिकित्सा का सत्य स्वरूप है।

प्राकृतिक चिकित्सा के कर्म--हम ऊपर लिख् आये हैं कि प्रकृति किस तरह स्वयं चिकित्सक है। उसको दूसरे किसी की आवश्यकता नहीं। यदि चिकित्सक कुछ करना चाहें तो वे यही करें कि प्रकृति के कार्य में कुछ क्कावट न डालें और न रोगी को डालने दें। यदि कुछ करना चाहें तो प्रकृति का सेवक होकर उसके कार्य में मदद करें। जैसे कि प्रकृति विजातीय पदार्य (Foreign Matter) को मृंह से निकालने के लिए उलटी करवाती है तो उसकी सहायना के लिए थोड़ा कुनकुना पानी पिलाने से विजातीय पदार्य को वाहर निकालने में सहायक हुआ जा सकता है। अगर दस्त लगते हों तो एनिमा देकर आंतें साफ की जा सकती हैं। इसी तरह आंख, नाक, कान, त्वचा इत्यादि जहां से भी विजातीय पदार्य वाहर निकालने की किया होती हों उनको सहायता ही देनी चाहिए। लेकिन उसके खिलाफ किया करना अनुचित है। वेहतर है कि कुछ करें ही नहीं।

इस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सक को चाहिए कि खुद प्रकृति के नियमों के खिलाफ कोई कार्य न करे थीर न करने की इज़ाजत दे। जो ऐसा करता है वहीं सच्चा प्राकृतिक चिकित्सक है। डा॰ जे. टी. केण्ड (Kent) अपनी 'न्यू रेमेडीज़' नाम की किताय में लिखते हैं कि जो डाक्टर प्रकृति के नियमों को ठीक तरह नहीं समझते अथवा पालन नहीं करते, अपने रोगियों को समझते नहीं और उन नियमों का पालन भी नहीं करवाते, उन पर कोई भरोमा नहीं करना चाहिए।

प्राकृतिक चिकित्सा क्यों ?—प्राकृतिक चिकित्सा एक अमूल्य चिकित्सा-पद्धित है, स्योंकि यह हमारे धन, धमं और प्राणों की रक्षा करती है, स्वतन्त्र और पित्र बनाती है। इन सबसे और ज्यादा मूल्यवान पदार्थ कीन-सा है? प्रकृति की यह एक अमोल देन भी है; क्योंकि इसमें किसी प्रकार के खर्च की आवश्यकता नहीं पड़ती, यह सृष्टि के अनुसार है, सत्य है, सरल है, सर्व-स्थान में, सर्व-काल में सब प्रकार में साध्य है। यह ती हम ऊरर ही लिख चुके हैं कि यह प्रकृति के

तियमानुसार 🕆 ।

प्राप्नतिर चित्रित्सा की न्यत्ति—रहुत न लाग मा राय र ति इना जम जनती यांन समरारा जारिया। महत्रा । एशा वर मदाउ गरा है। प्रापृतिक विशिष्ता का जान प्रकृति के साथ-साथ ही हुमार इसा अनर प्रमाण आय दया (दर वरिष्य रमृति पुराण जाति) म पाय जान र । वायु यस्ति जल परशा और उत्तरा उत्तरित व विपय भ प्राथना व अन्तर दलात पाय जाने है। इसन निद्वाभागिक विषय पश्चिमा देशा मही नथा विश जरो बहा मृष्टि र बने बन महिवया का न्वका नात प्राप्त इता और उत्हार स्य स्थिताम म मध्यता । इत देगन ग "गमा पुरामा दनियम गन्तिम ग सनाम षुष मही निर्णा है। भक्तत्र वर्णन भारत वर वर्ण मना मी जिल्ल हमारे पूरजा के आधार विपाद त्या बार अपन विचार हमारे टिला म बटा टिय । इमान हम गमपार गरे कि इसकी उत्पत्ति वित्यम स हुई है।

प्रावृतित श्रीर श्रवावृतित चिकित्या का अद-प्रावृत्ति विदिशा । व्यादर हम कार रिण आद ह । विनाय नगरीतरण व नियः चतुन्त प्रवृत्ति का विण् स्वय वितारी करणा हार्ग ज्यादा का समाध्याव । विरुक्त ने । और भागावाक ।। हम वर्ग हार्ग हार्म हार्ग हार्

स्रवाहित निर्देश माणा विद्याण है हि सब वा बारणाता ता है ता । वित्त संग्र संग्र है। स्रोत संग्र मां सी निरंग हर है और जो बिगारीत है ता पोर्नी निरंग है। इस तार हे बारों बाहित ही गां कि ह्यार स्रोत है को सब्देश नाहता मह सामा गांग है हिंग सामा निर्देश बाहत है। सामा मां से क्या हमाण बाहता है। है। हिंद है तह तह त्व बिगा को देवा है। इह दा ह या उन्हों मूर्य पान का बन्द का है हित उद्ध बन्धान में क्षिम का का हुए है। अपाहीत विक्तिम के उनावत की का ना उन्हों ना बार्नी अपान प्रिनोशत श्राप्त आहा। पर स्वत कुलात वा या उपापी पान का हाता? इत्ता है नी इन्हें या की श्राप्त का नाम का हाता? मित्र हित्र इस्तात स्वत्य का निज्ञ हाति है

टा नम्स श्रा-दशक्रा गरागिन का विकास गामिकां वह और प्रथानिक।

टा सर प्रोट्टिटिन्स् - दवा रा अपन बाबा सरीव राजीवार तरित तर अन ब्रयान राज

टा भग्य- वास्ति तर वर्ष म्यास्ति । वास्ति पार्या नी भूममा हा ।

दाः पानस्य - दिन्दाः ग्रास्ताः का वागानगत्राष्ट्राः नायसः मारत्यातिका सारताः अस्मान्ययाः

त्रा प्रीय— "बारा भागी दशमाता ४ वरिस शाग्याहर

हा सम्बद्धाः — युद्धाः मार्गाशाः त्रताः इ.सम्बद्धाः वा च्याः साम्बद्धाः साम्बद्धाः वा सम्बद्धाः विकासः

लगार्थाक द्वार स्थाप्त विश्वक लीगाम चाल स्थापित गालका आक्षा भोरतिया मालक स्वत्र का लागा के विश्व स्थापित स्वत्र का लगाया का स्वत्र का स्वत्र के अपना स्वत्र का स्वत्र के स्वत्र का स्वत्र के स्वत्र स्वत्र का स्वत्र के स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य

मिदिन- "म प्रशीय गार ।"

क्षण निसंदूर सम्मान्तर हैया ह सम्मृह सार। संग्रं

मरे बारुमव

रापूर राष्ट्र सीवर हुई गरे भी बा स्रीकार राष्ट्र सफाया सहार गरी का अप्राकृतिक जीवन, दवा और डाक्टरों के घोलें से २१ वर्ष में ही अनेक रोगों का शिकार होते हुए क्षय के चक्कर में आ गया, असंख्य घन और जीवन की वरवादी होते-होते यमपूरी के दरवाजे पर पहुंच चुका था। कदम-कदम के लिए दूसरों के सहारे की जरूरत पड़ती थी। तीन वर्ष में दवा-दारू से जो ऐलोपैथ कुछ न कर सके वह नाममात्र के एक ऐलोपैय, पर वास्तव में नेचरोपैय, ने तीन सप्ताह में प्राकृतिक नियमों का पालन करवा कर कर दिखाया। उससे सब कष्ट दूर हो गये। मेरे दिल में जीवन-आशा की किरण जगमगा उठी। प्रकृति की कृपा से ५१ वर्ष की आयु और वढ़ी। अब मैं ७१ वर्ष में नीरोग भ्रमण कर रहा हं। १९१२ में मेरी पत्नी को टाईफाइड हो गया था। यद्य भें प्रकृति के नियमानुसार नीरोग हुआ था फिर भी दवा और डाक्टरों के चक्कर से जो विचार दूषित हुए थे उससे मैं प्रकृति का अर्थ-विश्वासी था। तीन ऐलोपैथिक डाक्टरों से चिकित्सा कराई। ज्वर १०२ से १०४ तक बना रहना था। खून के दस्त लगते थे, कुछ दिनों के वाद एक तेज दवा पोर्ट-वाइन (शराव) के साथ मिलाकर दे दी गई। पोर्ट-वाइन से उसे नफरत थी। इसीसे दवा और शराव दोनों उल्टो के साथ निकल आये। डाक्टर ने वही द्वारा २ औंस शराव में दी। तीन उल्टियां हुईं। उसमें दवा शराव और साथ में अन्दर का तमाम गन्दा पदार्थ जल्टी ब्रारा वाहर निकल आया। ४ घंटे तक शरीर निर्जीव की भांति पड़ा रहा। कुछ देर वाद जिन्दगी के चिन्ह नज्र आये। द्ववा और डाक्टरों का पास फटकना वन्द कर दिया। परमात्मा के भरोसे प्राकृतिक इलाज करने से २७ वर्ष तक फिर नया जीवन विताया। यदि डाक्टर की इच्छानुसार शराव में दी हुई दवा हजम हो जाती और उल्टी होकर खराव विकार न निकल जाता तो मरीज अवस्य मर जाता। गन्दगी निकल जाने से देह की शुद्धि हो गई। उसीसे मरीज की जान वची । यही प्राकृतिक चिकित्सा का मर्म है। प्राकृतिक चिकित्सा अर्थात् तन-मन की शुद्धि करना।

# चिकित्सक बापू

श्री काका कालेलकर

जब १९३० में वापूके साथ यरवदा जेल में था तब की वात है। उनकी रसोई बनाने के लिए सुपरि-ण्टेन्डेण्ट मेजर मार्टिन ने दत्तीवा नामक एक महाराष्ट्री कैदी को नियुक्त किया था। दत्तीवा को काम तो बहुत नहीं था। बापू के कपड़े घोता था, वकरी का दूध गर्म करके रखता था और ऐसे ही छोटे-मोटे काम कर देता था। वेचारे के पांव में कुछ दर्द था। लंगडाता-लंगडाता सब काम करता था।

एक दिन वापू ने मेजर मार्टिन से बात की । उसने कुछ दवा दी, लेकिन पांव का दर्द नहीं गया । इस तरह करीव एक महीना बीत गया तब वापू ने मेजर मार्टिन से कहा, "अगर इस आदमी की चिकित्सा में करूं तो आपको कोई एतराज़ है ?" मेजर ने कहा—— "विल्कुल नहीं।" वापू ने कहा——"मेरी चिकित्सा में आहार ही मुख्य चीज़ है। अपनी ओर से मैं खास आहार द्ंगा।" इसपर भी मार्टिन ने कहा कि ठीक है।

वापू की चिकित्सा शुरू हुई । पहले तो उन्होंने उसको कुछ दिन के लिए उपवास करने को कहा, एनिमा वगैरा से उसका पेट साफ करवाया और फिर उसे कुछ दिन केवल शाक पर रखा। वाद में आहार में समय-समय पर परिवर्तन करते गए। लंगड़े को अच्छा फायदा हुआ। उसने मुझसे कहा—"वर्षों से इस दर्द से परेशान हूं। अब तो मेरा पैर ठीक हो गया। चलने में ज्रा भी तकलीफ नहीं होती। मुझे खुद को आद्यमं होता है कि अब मैं सबकी तरह कैसे चल सकता हूं।"

### धरती-माता का जादू-भरा सम्पर्क

#### श्री एडोल्फ जुग्ट

ि गृष्टिन चिहित्सा के उम्रावकों में भी पहील्क जुष्ट का बहा महत्त्वपूर्ण स्थान है। जनगी 'सिटने ह नेपर' ('माष्ट्रिक डीमन की खोर') नामक पुलक की, जिसहा एक खप्याप हम यहां है रहें हैं, गांपीजी ने बड़ी असंमा की थी। अस्ति लेख में दिहाल सेराक ने परनी साता के लपके जो उपलोक्ता कर्या है, यह निर्विश्व है ३ उनके इस क्यन से कीन सहमन न होगा—"मगुप्य जब नीग पीय चलता हुन करना, है, घरनी को खपना बेटा वायम मिल जाता है।" पाटकों में हमारा खाहोंग है के बे जुष्ट महोत्य की पूर्ण करें। —सम्बादक]

मण्डी जल का जीव है, यह जल में हो रह और यी गानी है। पात्री का निर्मेट क्यान कायू है। वह आकाम का राजा है। जब वह बाहाम करता है तब बह पेक पर बेटना है, हमेंक िए जमीन बर तो सायर हो कभी उनरता है, होंकिन आदमी बरती पर पण्णा है। यक्तर आदमी ने जूनेचाई नहीं पहने ये सतका यह देशा होता बात बण्णा, सोनो हो हाइन्छा मृद्धी के गीचें सामा में रहता था। पूर्वी और मृद्धी के गीचें सामा में रहता था। पूर्वी और मृद्धी के गामान के उम काल हिनी अकाम भी अक्षम नहीं पत्री थी। महीन यह पार्टी है कि उनता और मृद्ध का यह निरस सम्बन्ध अब भी सार है। प्रश्नि की हम हम्मा पार्टि, विसे सार के

यह जातनारी मूर्त अधिक ने अधिक जाति वो बोर लोहने तथा अपने और अपने गामिया के लाम के लिए धनते निवसी को महर्गा से सामाने की अपन एक धनते की साम के सिलियों में हाशिल हुई । मूर्त आसा है कि लोगों के लिए सह जातनारी काम की होगी। मूर्त देशका रूपन अनुवाद हुआ है कि कपने अवसा तकों पर नमें पेर हर्दना उत्तरा अध्यक्त मार्ग जाता पान एक प्रतास्त्रके नहीं है दिल्ला मूर्ता पानी पार हरूला, बार्ट उत्तर की यूल और धाम विस्तृत लूर्गों ही करी नहीं। बनवानियों एवं थन में बाम करनेवाने समझ्यों के बार होने पान कर्मों नुता स्वारता के साथ करा है कि बंद अध्या और दिन्सी बार पर में नी अरेगा वृत्ती पर मोना

पर हमेगा दश मिल्ला है।

सपित सनुबूत पहना है एवं इसमें उन्ने सपित गरिन भी मिलती है।

षम् और मान्य दाश ही पोषा नी सन्द पूजी ने माना है। उनने दिशास में उनना पूर्णी ने नदस सूद समा। पर पोषा नी नगर नमुझा और मान्य पर अहति ने नियम समान कप ने सानू है। उन्द सारीपित सानन एवं प्राथमित अब भी पूजी से ही मिन्दी हैं।

दग बानवारी वे बाद मेने नमें पांच पूर्ती पर बलने को अधिक महत्व दिया और मूर्त नमें गांव पत्ने का लामदारी तृष ज्यादा-ने-प्रयादा माना में माने लगा । दिर में यह गोचने लगा कि मतुत्व पानी में और अधिक लाम दिना अद्याद में पदाना है। मेरे पहुला काम बहु दिया दि रागिया का बारवार्त पर माना बद करा दिया और यहें तृष्टि भागमान के नीव अवका बाबू पूर्व जारामूर्त गोगामा में मेरी का पुतान या महा विधा कर तृमाने लगा। दश जारा के मोने के मानव के पार्टी के कुछ अधिक नदरीत आए। इस्ते प्रयाद नाम हुआ-नीर स्वारा गावरी और आजद देने वाली मार्ट

हिर बुध रोगी विक्त नते हैं। मुगास पण पर पुष्पत आहर सार्ने लगे। एन समीने गार्न स पुत्ती में सिने लाम पा सार्ने उत्पादमें रामी में दिया। उनने बहुने में आप हुआ दि मेरि पार्ट पार्ट प्रश्नीत एक वार्टे ता उन्ने माने राग्ट मान होर में आह के प्रयत्ति वर्णेंद्या नेनानुनाहरी राग्ट में में किसी या बार्ट हर ने गरे। राष्ट्र का मंत्रे में मनुष्य पर जो पृथ्वी की शक्तियों का प्रभाव पड़ता है वह निस्संदेह आश्चर्यकारी होता है। जिसने इसका कभी अनुभव नहीं किया है उसकी समझ में यह बात आनी कठिन है कि मनुष्य-शरीर पर इसका सोते में कितना तरोताजा करने वाला और शक्ति एवं जीवनदायक असर होता है।

रोगी की पाचन-किया को सुधारना एवं उसे शिवतशाली वनाना प्रत्येक चिकित्सा-पद्धित का पहला काम है। प्राकृतिक नहान एवं वायु और प्रकाश-स्नान से शीच समय पर और साफ होने लगता है, पर पाचन-किया को ठीक करने के लिए ज़मीन पर सोने जैसा दूसरा उपाय नहीं है। धरती पर सोने से शरीर की सुस्ती चली जाती है, चेतना जागती है और आंतें सड़ांघ एवं पुराने कड़े मल को अच्छी तरह निकाल पाती हैं। फलतः शरीर नवजीवन और नई शिवत का अनुभव करता है।

प्रायः सभी पश्, विशेषतया खरहे और हिरन, जब अपने लिए सोने का स्थान बनाते हैं तब पत्ती एवं लकड़ी के टुकड़े वगैरह ज़मीन पर से हटा देते हैं। वे ऐसा निश्चय ही इसलिए करते हैं कि वे पृथ्वी के सीधे संपर्क में रह सकें और पृथ्वी की शक्ति उन पर प्रभाव डाल सके।

एक बार मुझे एक बीमार पालतू बाज़ की गतिविधि का अध्ययन करने का मीका मिला था। उसे
उसके गंदे पिंजड़े के बाहर निकाल दिया था और मेरे
कहने पर लोगों ने उसे बिल्कुल अकेला छोड़ दिया था
कि वह जहां चाहे जा सके। वह तरकारी के खेत में
गया और करमकल्ले की क्यारी में जहां जमीन
मुलायम थी कुछ ज़मीन खुरची और अपने को उसमें
थोड़ा धंसाकर चुपचाप लेटा रहा। कुछ दिनों बाद
वह बाग से लीट आया और हम लोगों ने देखा कि वह
बिल्कुल स्वस्य हो गया है। जबतक वह बीमार रहा
उसने कुछ भी नहीं खाया। इस प्रकार पशु अपने साधारण
जीवन में चलते-दौड़ते वक्त पृथ्वी के संपर्क में रहने
पर भी आराम करते वक्त और वीमारी में पृथ्वी के
अधिक नजदीक और सीधे संपर्क में आने की कोशिश

करता है। प्रकृति ने अपने विछीने में वह जादू-भरी शक्ति भर दी है कि उसके संपर्क में आने पर मनुष्य को अपने जीवन में अधिकाधिक आनंद अनुभव होता है।

पहले मनुष्य प्रकृति के नेतृत्व में, पापरिहत, पिवत्रतम एवं आनंद से पिरपूणं जीवन व्यतीत करता था। वह अवाध रूप से उस स्वर्गीय सुख का उपभोग करता रहता था जिसकी कल्पना प्रत्येक सुसभ्य जाति की स्वर्गसंवंधी कल्पना के अंतर्गत की गई है। पर स्वर्ग के सप की तरह तक ने पृथ्वी पर हमला किया और लोगों को वहकाया कि वे प्रभु के आदेशों की—प्रकृति के नियमों की—जिनकी अनुभूति हमें ज्ञानेंद्रियों-स्पर्शेंद्रियों आदि नैसिंगक वृत्ति एवं विवेक द्वारा होती है, अवहेलना कर अपनी इच्छानुसार मीज और खुशी में संलग्न रहेंगे तभी उनके शरीर, मन और आत्मा, तीनों को पूर्ण आनंद मिलेगा।

तर्क के दुरुपयोग एवं अपमान के फलस्वरूप सर्प के वच्चे विज्ञान का जन्म हुआ। उसने औपध-विज्ञान को ही नहीं, अध्यापन-विद्या, धर्म-शास्त्र, दर्शन एवं न्याय-शास्त्र को भी पैदा किया। मनुष्य को सूखी एवं समृद्ध वनानेवाले प्रकृति के नियमों के पालन की राय विज्ञान कभी नहीं देता । अीपध-विज्ञान तो यह घोषणा करता है कि यदि मनुष्य प्रकृति के अनुकूछ जीवन व्यतीत करेगा तो उसका अहित हुए विना न रहेगा। वह कहता है कि प्राकृतिक भोजन, फल आदि से मनुष्य को पूरी शक्ति तो मिलती ही नहीं, उसका स्वास्थ्य नष्ट होता है और मनुष्य का प्रकाश और वायु के संपर्क में अपने को लाना खतरे से खाली नहीं है। उसकी यह भी मान्यता है कि प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने से जिंदगी के मजे कम हो जायंगे। इसके वाद विज्ञान, शरीर-विज्ञान एवं प्रयोगशाला में किए गये अनेक प्रकार के अन्वेषणों के आघार पर अप्राकृतिक भोजन का एक नुस्ता तैयार करता है, जिसके लिए वह कहता है कि इसे खाते ही शक्ति मिलती है और वह स्वादिष्ट लगता है। इस प्रकार विज्ञान नैसर्गिक वृत्ति का कोई खयाल न करनेवाले स्वास्थ्य-नियमों का

िर्मान करता है। बिजान की दूसरी मानागु अध्यानक, गर्स, दर्मन, स्वावसारक भी ऐसे निवमों का निर्मात करेंगे, कितम मनुष्य की प्रकृति के सक्षकें में अर्जने से वर्षामा जावना और कहा जावना कि उन निवमा पर क्षत्र को मनुष्य अध्याऔर अन्ता करेगा नवा उसे गुरा और नवीच प्रान्त होगा।

हुत प्रसार कितान से के से बंदरण सनुष्य ने जूने पहने और पृथ्वी की गुगद सम्या को छोड़ कर पण्य पर लेटा। उनने कणाना की कि इनने डाग उने कर गुग्या, विभाग और आनन्य किन रहा है, जो प्रहृति उने नहीं हेनी थी। पर तक के इस गुरे, स्मापने और विज्ञा की वस्त्रीची निमायन ने हुरे, स्मापने और विज्ञा की वस्त्रीची निमायन के सम्या में पहार मनुष्य की ने आगम पिला, न अन्तर, म न्याच्या, न गुणी, न मानुष्या, न मोज्या। आगा के विरादीन विने देश और निरामा। प्रहृति के विच्छ पण्योगों से प्रशृति हमी तहह ना बहुमा नेनी है। विवार में देने में में हहा है

"इग प्रकार के जीवन में मनुष्य को शायद कुछ अधिन सनोप दिन जाय, पर जब उसने स्वर्गीय प्रकार से पत-प्रदर्गन देना छोड कर ठकों का वस्त्रा प्रकार से उनने अपने को प्रकार सोहामानी, अनुष्य किया— प्रमुख्य भी अधिक शीक्षणानी और किर उससे पर दिनना भी विकेट नहीं हहा।"

तर एक उक्प प्रतिभाई और धनुष्य के निष् इंदक्क की विशेष देन है, यह सनुष्य इनका नदुष्योग नहीं कर नका और यह शक्ति उनके लिए आसुरी पढ़े और इन्से का कारण कर गई।

भागमा और सारीर वा गण्या और पूर्ण व्याध्य प्रिगम सारीरिक एकित, मानीक व्यव्धात, भागमाथ मान्यांच्या है दिना एक बार किर अस्ते को पूर्ण के गीर्थ गर्क में नामू मनुष्य को और विश्वी नगर जिल्ले का नरी।

यह उपनीद ॥ नहीं की वा सकती कि मनुष्य एकदम क्षका पानना ही सोट देगा और दिन अरू नया पुमेगा। सभी इंग राज्ये की सर्वेक कडिनाहमा को उसे

मुख्याना है। न यही उम्मीद की जा गक्ती है कि कर एकाएक पूर्व क्या ने प्राकृतिक भोजन की अपना लेगा और बेवल पल-मेवे वा ही आहार यहण, करेगा। पर इतना तो यह कर ही सकता है कि हादम नग पांत रहे । इस चलत से जाते में भी बोई तबलीक नहीं होगी, उन्हें लोग नशी और आनद का अनसक बरेंगे । मधे पांच चडना साम्या नहीं हैं । इसमें जीवन बा भानद घटना नहीं, बहना है। मन्त्य जब समें शृंब बलना सुरू बरनाहै, बरनी का अपना बेटा बापम मिल जाना है । मनुष्य वर नृतन श्वास्थ्य और सक्शी नुजी की कर्ण होने छगती है। आप के रोगी, इ.मी. पारी, अन्यायी सनुष्य वा पुनर्निर्माण तभी होता, जह वह नगे पांव चलना, हर रोज बुछ मिनट या घटो के लिए ही नहीं, बरिव हमेशा के लिए शीम लेगा। बुझ में जा काम जह करती है हमारे गरीर में बड़ी काम कुछ अजो में पैर करने हैं। उनके हारा पथ्की हममें शक्ति और प्राणी का सवार नरती है।

ईना नवे पार चलने को बहुत महत्व देते में। बे हवध नवे पांच चलते थे और उन्होंने अपने नित्यों को आजा दें। यो, ''त प्रशंका कोस मत्र मनीट !''

वे जिन्तु जा नये गांव चना चनने थे, ठील ही भंजाते थे कि देना का प्रतिनादित सानद और मूर्विश नवतार प्रकृष को नहीं विभेगी जवतार वह औदन से उन प्राहतिक पद्धति को नती सरवाद्या जिले देवर ने अपने सकते के जीवन हारा गारी मनाद के मायने उग्नियत किया है और जिग्नी मात्र गर्वेचा अपहेनता की जाती हैं। प्रायंत सादीय महिर का मह पहुना नियम होना वालिए कि उनने स्विथानी हमेगा जाने नित्र हैं, हो-कारण कुछ सोन पार्टें।

याँ परनी नर मोने नर मान्य एक बार पूरी तरह गन्या जिया बाद बीर इपका चनन चना दिया बाद तो मनुष्यत्वार्धि गयी गरीर बीर विशेष कर के महरन्यात ने मूचन की जाय । इन विशेष ने पूरत दिलाने म प्राकृतिक न्यान, बादू मोने महामान्यतह, प्राकृतिक मोदन मार्थिक गार्थक होने। करेनुपाने लगी प्रकृतिक देशों में चन्यी नर कोने का चन्यार्थिक ग्ण शीघ्र देखने को मिलता है।

प्रभु ईसा गंदी हवा, विलास, कापुरुपता और नैतिक पतन के गढ़—शहरों से हमेशा दूर रहते थे। वे अधिकतर रेगिस्तान में या पहाड़ों पर रहते थे और अपने उपदेश अधिकतर इन्हीं स्थानों के वासियों को दिया करते थे। यदि किसी दिन वे येक्सलम के मंदिर में उपदेश करते थे तो अपनी रात आलिवस पहाड़ पर ही विताते थे, जहां वे खुली धरती पर सोते थे। प्रकृति की गोद में विश्वाम करते वक्त उनके शरीर पर ओढ़ने के नाम पर केवल एक ढीला-ढाला लवादा ही रहता था।

धरती पर सोना प्रारंभ करनेवालों को दूव से ढकी विद्या जगह चुननी चाहिए, यदि ऐसी जगह न मिले तो ज्मीन पर चटाई विछा कर सोना चाहिए। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि चटाई पृथ्वी की शिक्त को बहुत-कुछ रोक लेगी। पुवाल, ऊन या रुई के गई अथवा कंवल-दरी पर सोने की तो वात ही नहीं सोचनी चाहिए। इनका उपयोग पृथ्वी से संबंध हीने में बहुत वाधा पहुंचाता है। तिकये की भी ज़रूरत नहीं है। ठंडी ताजगी प्रदान करने वाली धरती पर सिर रख कर सोना विशेष लाभदायक है। यदि धरती पर सोने में पहली रात कुछ तमलीफ मालूम हो तो निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

मेंने बराबर देला है कि दो-चार दिन के बाद ही रोगी को उसकी घरती की शय्या अति सुखद प्रतीत होने लगती है। तब वह पृथ्वी पर कोई चीज़ भी विछा कर सोना कभी स्वीकार नहीं करता। बरसात की रात में ओड़ने की चीजों को भीगने से बचाने के लिए में चाहता था कि रोगी अपनी झोपड़ियों में सोवें, पर वे अपनी पृथ्वी-गय्या छोड़ने के लिए बड़ी कठिनाई से तैयार होते थे। कुछ ही दिन घरती पर सो लेने के बाद उसकी कठोरता का भी अनुभव नहीं होता। इससे भी डरने की ज़क्स्त नहीं है कि जाड़े की रातों में जब ओड़कर घरती पर नंगे वदन सोवेंगे तो घरती बड़ी ठंडी लगेगी। बहुत से लोगों को विछावन में सोने की अपेक्षा ज़मीन पर सोने से पसीना

जल्द आता है। पर धरती पर सोना आरंभ करने वालों को, और ऐसे लोगों को भी जिन्होंने प्राकृतिक जीवन व्यतीत कर अपने शरीर को गर्मी को नहीं वढ़ा लिया है, ग्रीष्म एवं वसंत की सो ही ऋतुओं में खुली धरती पर खुले वदन और ज़रूरत हो तो कुछ ओढ़ कर सोना चाहिए।

प्राकृतिक भोजन ग्रहण करने वाले और प्राकृतिक स्नान करने वाले को बहुत कम नींद की ज़रूरत होती है। जिस प्रकार खुली धरती के बजाय कंबल पर सोकर भी धूप-नहान लेने वाले को नींद नहीं आती उसी प्रकार प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने वाला यदि नंगा होकर अधिक गर्भी के दिनों में भी धरती के बजाय विछीने पर सोवे तो भी निद्रा उस पर अधिकार नहीं कर पानी । जिनना ही अधिक हम अपने को धरती पर सोकर एवं अन्य प्राकृतिक नियमों द्वारा प्रकृति के सम्पर्क में लावेंगे उतनी ही कम हमें नींद की ज़रूरत रहेगी और वल तथा ताजगी के लिए नींद की अपेक्षा।

ं मुलाने के लिए प्रायः ग्रोमाइड, मार्किया, अणु के वियों द्वारा नींद की व्यवस्था की जाती है और इतने जोर के झटके से एवं इतनी गहराई से कि बाद में स्वास्थ्य पर उसका बुरा असर स्पष्ट प्रकट होता है। शराव पीने से, अप्राकृतिक भोजन करने से, गरम कमरे में या गरम कपड़े ओड़कर अयवा मोटे गददे-दार विर्छीने में सोने से भी नींद आती है और इस नींद को लोग शक्तिदायक और लाभदायक समझते हैं। पर यह नींद भी इन बाहरी उपकरणों द्वारा शरीर में ढीलापन उत्पन्न हो जाने के कारण ही आती है और निश्चय ही शरीर को नुकसान पहं-चाती है। बेशक वह हानि इतनी नहीं होती कि उसके लक्षण साफ-साफ दिखाई देसकें। फिर भी लोग सोकर उठने पर एक प्रकार की घवराहट और भय का अनुभव करते ही हैं। लेकिन जब लोग घरती पर सोने लगते हैं तब उन्हें नींद थोड़ी ही क्यों न आए, सोकर उठने पर उन्हें कोई अद्रिय एवं कप्टकर अनुभव नहीं होता ।

सात के इतिम जीवन, स्नामुबित उनेत्रना एक गरम विठीने में कारण जो स्नेष स्नामुबित दोईन्य के मनेत सीययों की तरह खरो नहीर को बीटा नहीं कर पारे पूर्व निर्देश मधी तरह देदता नी विट्या आगी उगारे देसा विननीय सबसी जानी बाहिए।

करर मेंने भी कुछ कहा है उससे मेरी इच्छा है यह हमना ही समाने की है कि सदि कोई मानन मानन स्वार्ण परिता पर नामें सोने का अवीस—मनवन मानी की किया अवीस—मनवन मानी की किया अवीस मानन हो और इस मनेवा आहों कि सात मानेवा आहों की से मानन से मा

जिन कोगा ने नेर्ग पैर ट्रूप्पने का दगदा पड़रे तो न ते कर पिता है पै दनकी जिला म करें कि वे करा ट्रूप । मेन और मिल्हान, जनक और बन कारी कसी दूरी में पैठे हुए हैं, जग कोई भी टार्ज सम्मा है।

सर्वेश प्राइतिक जीवन व्यतिन वारी वाला का सवाव उपाने और उनती कार में नाई द्वाली की लोगों की इच्छा होती है, उनते की बारण है। एट्डी बान की यह है कि जो लोग ऐगा बक्ते हैं यह प्राने सम्प्रानांकि जीवन का एवं उपाने माने बानी विश्वतिकां का नैनिक का में बान पट्टा है और प्राइतिक जीवन क्योति वाली काला को हुए साम को देवकर यह देखी होगी है। दुनारे, अपान तिकार समुख्य स्वाहत की अवस्थानिक सीर्ग ला हुनाव करत सानते हैं, मुल्त वालाने के लाद मुनाव करत सानते हैं, मुल्त वालाने के लाद उनमें बापी मानतिब बल होता है न इसने लिए उने प्रोत्माहन अपना मोता ही जिल्ला है मोदणनी नहीं बात यह कि उसे इस मही रातों का समृक्ति मान में नहीं होना को वह इसना अनुमारन कर तहे।

पर वस सोग इस साथ हो अधिवाधित गाफ सोर म वह्यानने लगेंगे और ग्रांति एक बुद्धिसान-पूर्वक जो इस नगड़ स्वाग्रायों कि सेग जमेंगे वस-में-कम विद्वें या सक्त हो दूसरी जह गहरी जमागे जायगी और इसके मार्ग में नाटे विग्रानेशाने की सक्ता भी वस हानी जायगी। तह पूर्णी के आनव और आगण का दरकाओ जिस जागर साज मेंगे लोग हुई, सरहें और गहरें, हिस्त और बाराहिंग्यें, लोगी और विज्यु साहि नानी त्रीशों के लिए मुना है जमें जनार ईस्तर के जिसान मनुष्य को भी यर्गीमाना के जाड़ भरे समने में रहकर साराम वस्त्रें में शुनिया मिक जायगी, जिमने जमें पूर्वी ना गरुवा आनव दिल्या एव जाने काराम्य को आर्मिन मेंग लाग आगर दिल्या एव जाने काराम्य को आर्मिन

कुछ ही दिए हुए कब कुछ स्थाना में स्वास्थ्योप्रति एवं रोय-निवारण के लिए कुछ सीवों का बरफ पर भी मने परि दहन्या भारम बच्ने शा ममापार मना गरा था । माधान्याः गुतनेवाता ने तद इगवा सवाक ही उड़ाबा था। श्रीप नी पतने पांची की जिनका हमेगा ने नाग नवान रता एवं बिटिं हर समय गरम रगने का गान इल्लाम क्या बाता रहा है, इही हुना, खुन्दरी बर्गी एवं गीनवात ही सी बरत के समार्थ में लाने के विधारमाथ से शिशकते थे। क्योन पितको है नहा ने बा हाही कहनी आई है, 'बेटा पांधे को हदेगा धरम रागे ।" और दान्टर गाहर पाश को ठटे वानी में बचाने की गीप जो देश बाए है। इस स्थानार के बाद क्या साम ने नो पाद टर्डने की आध्यमपूर्ण की । पर्दे सन्धव हुआ हि नदे पात दशाला स्वास्थ के लिए तो नव नरह से अप्रार्थ है ही, बीप्रा बनग्ड भी है और तदी ने इस गाँवा प्राप्तिक कालार के त्रस्याच स मान्य के विवासी में बदा परिवर्तन हुआ है।

इसी तरह धरती पर सोने का भी चलन चलेगा।
कुछ दिन तक यह चलन नंगे पांव चलने से बहुत
अधिक कठोर एवं अमानुषीय समझा जायगा।
पर जब लोग इसका प्रयोग कर देखेंगे तब इसके
रोग-निवारण के विशेष गुण से परिचित हो
जायेंगे और यह भी जान जायेंगे कि यह चाल नंगे
पांव चलने की तरह ही निरापद है।

सूर्य-िकरणें रोग-िनवारण में बड़ी लाभकर सिद्ध हुई हैं। यदि रोगी धूप में टहलने के बजाय लेटकर धूप ले तो लाभ बहुत अधिक होता है। इसी तरह धरती पर लेटने पर धरती का असर भी टहलते समय से ज्यादा सीधा पड़ता है। धूप की तरह धरती भी शरीर में रोग-िनवारण की किया प्रारम्भ कर देती है, पर यदि टहलने में या और किसी कार्य में शिवत का व्यय हो रहा हो तो धूप और धरती से शिवत मिलती रहने पर भी शरीर अपने शोधन का कार्य पूरी तेजी से नहीं कर पाता।

जो हो, प्रचलित विचारों का खयाल करके प्रत्येक रोगी को और खास-तीर से चिकित्सालय के निवासियों को खुली धरती पर आराम करना या सोने की राय देते वक्त बहुत सोच-समझ से काम लेना चाहिए। शुरू में एक रात ज़मीन पर और दूसरी रात विछीने में सोना काफी होगा।

जब मैंने अपने चिकित्सालयों में घरती पर सोने का चलन चलाया तो मुझे भी अनेक बहमों का सामना करना पड़ा। किसी को ज्मीन पर सोने का प्रयोग करने की इच्छा ही नहीं होती थी। त्व कई लोगों ने एक साथ बड़े उत्साह से घरती पर सोना आरम्भ किया और इससे प्राप्त लाभों से बड़े प्रसन्त हुए। फिर तो उन्होंने प्रायः सभी को खुली घरती पर सोने के लिए राजी कर लिया। इससे प्रत्येक को जो लाभ हुआ उसे देखकर सचमुच बड़ा आस्चर्य होता था।

नंगे रहने का प्रचार पहले-पहल रिक्लो ने किया

था। वह वायु और प्रकाश संबंधी प्राकृतिक नियमों को पूरी तरह नहीं समझता था और इनकी जानकारी के वगैर भी वह कुछ छोगों को नंगे रहने की राय दे देता था, पर इससे साधारण जनता में इसका चलन नहीं हो सका।

धरती की शक्ति और उसके प्रयोग पर किसी का ज़रा भी ध्यान नहीं गया था। जब मैंने पहले-पहल इसकी चर्चा की तो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, पर शीघ्र ही धरती की शक्ति लोगों के लिए कुतूहल का विषय वन गई और हर जगह इसकी बात बड़ें ध्यान से सुनी जाने लगी।

सचमुच धरती के रोग-निवारक गुण और इससे मिलने वाले अनेक प्रकार के लाभों से बढ़कर दूसरा दिलचस्प और आवश्यक विषय है भी नहीं। पृथ्वी में इसके आदि से ही एक शक्तिशाली प्राण का प्रवाह हो रहा है जिस पर मनुष्य के बनाव-विगाड़ का कोई असर नहीं पड़ सका है। यदि मनुष्य पृथ्वी के सीधे संपर्क में आ जाये तो पृथ्वी मनुष्य को भी अपनी इस सजीव शक्ति से प्रवाहित करने को तैयार रहती है।

हम पृथ्वी से इच्छित शक्ति प्राप्त कर सकते हैं और जो जितना ही अधिक प्राकृतिक जीवन व्यतीत करता है, पृथ्वी से उतनी ही अधिक शक्ति प्राप्त करता है। जब कभी मीका मिले, आदमी को कपड़े पहनकर ही सही, घरती पर बैठ जाना चाहिए। टहलते वक्त या लंबी यात्राओं में खुली घरती पर बैठकर या लेटकर आराम करना चाहिए। पृथ्वी की शक्ति मनुष्य पर उसके कपड़ों के द्वारा भी असर करती है। आप थोड़ी देर के लिए आराम से खुली घरती पर सो जाइए, आप मेरे कथन की सत्यता का अनुभव स्वयं कर लंगे।

उत्ते कित मनोदशा, निरुत्साह और शोक के क्षणों में, हिस्टोरिया का दौरा एवं शरीर में ऐंठन होने आदि की दशाओं अथवा अनेक प्रकार की रोगावस्थाओं में मैंने धरती पर बैठने या लेटने से लोगों को अक्सर शोधता से शांत होते, उनका कृष्ट कटते और उन्हें रोग-मुक्त होते देखा है।

पूजी यदि गीली हो तो हमें इसकी विता करने को जरूरत नहीं है। मीली निद्दी को रोगनिवारक गीत अधिक गरेत होंगी हैं, जिसकी चुटि इस बात में होंगी है कि कई सीमी को इससे मारी-जुक्त हो जाता है। यह पारीद को गुटि आस्प्त होंगे का अध्यक्त असाम है। यह किसी तरह भी इस की कोज नहीं है।

सारी प्रकृति में ही राज के बक्त एक जिरानी गरिन प्रवाहित होती रहती है। यदि भाग राजि के समय जीतन में आये तो प्रतीत होगा है कि बाग संवार के मुक्त प्राय पर्यटक कर रहे हैं। लीव कहते हैं कि पूर्वा दिस में नहीं, राजि को ही बहती हैं। दसमें सह अदाशा लगाया जा महता है कि चनती की गरिन राज को साम तरि में अधिक होती हैं।

मेने अपने विवित्तालय में बराबर ऐसी बोरिया वी है दिनसे लोगों को सत्तरी पर मीता अविवाधिक गुप्दर अनीत हो। अन्त में मेरे पन में बासू के गहें पनका हैने का विवास उदल्ल हुआ। गायाच्या वर्षी गर मोने ने बनाव इन गर सीता ज्यादा आगमदेत

ने होता है। ये घटनी से मुतायम होने है।

चार में आठ इंच भोड़ी बाजू मी तह बोने के जिए बार्डी होंगी है। इस पर कोई भी पतना टाट मा बच्छा बिछाया जा गानता है। इसने पूर्वी की छात्रित्र आज्ज करने में कोई दिनंद बाया नहीं पड़नी और ओड़ना भी खाकरहता है। इसने मीर भी कहिलास हो सकते हैं। निरहाने की और पाप को इंची परिवार मी क्याकर निर्वेश का पाप निष्या आ सनता है।

यदि बालू वा यह विशीना गृथी जगह में लगाश जाय मी लाज और दिगंद हो, वर्गीत मनुष्य के गेन-निवारण में आवाग वा और क्यों है, क्योंत्रिय प्रमुख है के और यह जनाव रावि वो अधिक ग्रामिनुमी रुगाही । गारीभरी रान में आवाग वे महान् गुक्ज ने गीथे वह समूख्य मीचा रुगाही, यह गवित जनते गारीह में जीवन और बन भरती रहती है। आवाग और परनी की साब्जि मिलाकर एक मरान् गीयक गवित बन जाति है।

### प्राकृतिक इलाज

महात्मा भगवानदीन

बह मारी दुनिया और नारा पनारा पुरुष और महीत का अमुता है। पुष्य और महीत जी दिन में मिले जन दिन में स्तृपता नहीं कि कब महीत पुरुष कर नकार हुई और कब पुष्ट महीत पर नकार हुआ। हसारा अनुसान यह है कि पुष्ट और महीत के मिनने के पहने धार ही महीत पुष्ट पर नकार हो बैटी और दिर मारे पनारे में महीत पुष्ट के हुए पूर्व पर्दा पत्री नाम कम है।

प्रहर्ति पूरे तौर ने कह शुरूष को अपने कातू में रमती है तक भी बहु काम गुणी है। अब पुरूष पूरी तरह ने प्रहर्ति को आने कातू में रमता है नव भी प्रहर्ति काम गुणी है। अन्याय तो बह नभी रहती है नव बहु न बस में बाबू में बह पानी है और न बस उमें । यह माया, और बस और सहीत और पुरत का गीत प्रमें हम बर्गे ताने बैड परे ? सिर्फेडम बस्टूमें हि माने में हम माहतिक इनाव पर बार बरना भारते हैं उमने सवाते में मानारी ही।

आहमी जब जन्म लेता है तो जार उनके मा और बाद दिनी जान बीमारी को लिए हुए नहीं है ता बहु पूरा करण देश होता है। मारी उन बड़ा बस बा पूर्व, जाया जा हाति बे पूरे काह में होगा है। ता पूर्व के बहुत के जन्मन में गार्त के दिन में ही पूरव हमेगा कर बीराग बरणा का है कि बर बहुत कर पूरा बाबू ना ले। टीक दुनी काल नहीं वच्चा आदमी के अन्दर बैठा हुआ पुरुष प्रकृति पर कान पाने के लिएं कोशिश करता है और इस तरह से स्वास्थ्य की तराजू का समतोल विगड़ जाता है भीर अस्वस्थता आकर जगह ले लेती है। इसे बोल-चाल में यों समझिए कि बालक मां-वाप की सोह-वत में पड़कर अपनी पूरी स्वस्य इन्द्रियों को कुछ ही दिनों में ऐसा कर लेता है कि वह उसे बोखा देने लगती हैं और फिर उसे धोखा खाने में थानन्द आने लगता है। यह सब होता है पुरुष की मेहनत का फल। वालक के बहा को अगर मां-वाप के घोड़ों ने जगाया न होता और वालक को बालक पर ही छोड़ दिया गया होता तो वह विल्कुल स्वस्य रहता और इतना स्वस्य रहता कि प्रकृति डाक्टरों, वैद्यों और हकीमों को जन्म देने की बात ही न सोचती। पशु-पक्षियों में इसी वास्ते तो प्रकृति ने किसी ऐसे इन्तजाम की बात नहीं सोची। हां, वहां यह बात जरूर है कि प्रकृति पूर्व को पूरी तरह से काब में रखती है। किस जानवर को पया खाना चाहिए, क्या नहीं खाना चाहिए यह आता है, हम इस बात पर विश्वास नहीं करते। हां, उसे यह ज़रूर आता है कि किन हालतों में किस जगह क्या खाकर रहकर कैसे स्वस्य रहा जा सकता है। स्वास्थ्य का सम्बन्ध इस बात से नहीं है कि आदमी की प्राकृतिक खुराक पया है। उसका सम्बन्य तो सिर्फ इस बात से है कि आदमी पैदायश से यह जानता था कि कव, किस जगह उसको प्या, कैसे खाना चाहिए । प्रकृति की खुराक भी प्रकृति है। पर किस हालत में किस वक्त, किस जगह, क्या किस तरह खाना माहिए, यही है प्राकृतिक इलाज।

दूसरी तरह के इलाज के हमारे तमाम तरीकों ने आज तक सिवाय इसके क्या किया है कि हमारे सिर के बाल उड़ा दिए हैं, आंखों पर चइमा लगवा दिया है। गन्दे सड़े मकानों में रहकर नाक खुगबू-बदबू में तमी ज नहीं कर पाती। दांत निकलने के दिनों में दांत उखड़ने लगते हैं। पहले से उम्र

तो बेहद घट ही गई है। पहले जैसे ताकतवर आदमी कहीं देखने को नहीं मिलते। मिजाज वैठिकाने हो गया है। चिढचिढ़ापन बढता जाता है। बर्दाश्त नाम को नहीं रह गई है। यानी इलाज के तरीकों से न हमारा तन स्वस्य रहा है न मन और अगर हम यह भी कह दें कि न मस्तक तो भी वेजा न होगा। मस्तक के लिहाज से हम बड़े बुद्धिमान तो हो गये हैं और ऐसी-ऐसी चीजें सोच निकाली हैं जिससे कोई देखे तो यह कह दे कि अब आदमी ईश्वर के कामों से टक्कर ले लेगा, पर मन स्वस्थ न होने से वह मस्तक ईश्वर से टक्कर लेने के बजाय पड़ौसी के मस्तक से टकरा जाता है और दोनों मस्तक फूट कर प्रकृति के पैरों में जा पड़ते हैं। फिर भी इस इलाज के इतने गीत गाये जाते हैं कि जो इस इलाज के खिलाफ हैं उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती जितनी आवाज भी नहीं रह जाती। हम इन तरह-तरह के इलाजों से अस्वस्य वने, अस्वस्य हैं और अस्वस्य होते जा रहे हैं, पर मान यह रहे हैं कि हम स्वस्य हैं। इसका वया इलाज ? इसके जवाव में ही हम अपनी जिन्दगी की कुछ घटनाएं देना चाहते हैं:

हमारी उम्र दस वर्ष की रही होगी। हमको वीयैया वुलार आने लगा। हमें उबले हुए सिंघाड़े बड़े अच्छे लगते थे और हम यह नहीं चाहते थे कि अपने बुलार की बात कहकर हम सिंघाड़े लाने से रोक दिये जायं। इसलिए आम तौर से हम यह किया करते थे कि जब दो बजे के करीब हमको सर्दी लगती थी तो हम स्कूल से छुट्टी लेकर घर आ जाते थे और लिहाफ ओड़कर पड़ जाते थे। पिताजी कहीं दूर वाहर थे। माताजी आंगन में धूप में बैठी अपने काम में लगी रहती थीं, इसलिए वह यह नहीं जान पाती थीं कि हम बुलार में लेट रहे हैं और हम किसी को बताते थे ही नहीं। यह सिल-सिला एक-दो दिन नहीं, कई महीने चला। हां, जब गर्मियां आ गई तो अपने लेटने के नाटक में हमें कुछ तब्दीली करनी पड़ी और वह तब्दीली हमने

आने तबरवे में बल पर दी। यानी बह कि महेरिया मा जादा लिहाफ से मुख जाता तो है नही, फिर एस मामूठी बादर से ही शाम श्वो न बलाया जाय। बैगा ही हपने निया और हम सरन भी हो गर्ने और मानी पाउ में नाओ नदेश हो, इतना जरूर हुआ नि निपादै मिल्ला बन्द हो भूका था। अब रसप्रस्थि। पर नग्नर आया। वे भी हम वही अच्छी छन्ती थीं। रगभरियां का प्रयोग चल ही रहा वा ति हमारे िगाती बाहर से बा गये और हम पर है गये। पर बहरूमारे ज्वर की आणिरी बारी मी, पर ची तो। मुलार था। यह दूसरी बात है कि वह बम था। पौरत ही हम अलीगड के जाये गये और एवं डाक्टर को दिललाये गये। जिस बना डायटर से देगा, हमें बनार न गा। जनने दवा देने से इन्हार वर दिया भौर कहा वि मुत्रार देखबर दवा दूता । हमादे पिताओं टहर गये। सगर न हमें बुतार आया और म द्रावटर को द्रवादेने का मौका मिठा । अब या सो शास्टर के दर में हमारा क्यार भाग गया । अगद पर यान गय है सो यानगिर इमान भी मार्गाक इलाक में शामित है। या किर हमारी इस भागा। में कि दवा नहीं गाना चाहिए, बनार माग गया । अगर यह बान नच है तो आग्म-मुताब (Auto Sugpestion) भी तो एवं बाइतिश इनाज है। या किद रसमस्या ने बनार भाग गया । भगर यह बात मब है भी गाने-पीने की नव्धीयी भी प्राकृतित इयाज है। माहिर वक्ताने सूद सरावियांद्रर कर दी भीर प्रकृति में धाने आपनी अच्छा कर दिया। असर यह बात सब है ती अपने आहरी प्रश्निपर छोड़ देता ही प्राइतिक इत्याव है । हम उन दिनो दग बरम ने थे। यह सब बानें उन दिनो हमें नहीं मुत्ती। हमता एवं टी बाद जानते हैं कि हम दबाई ने भारते में और इति। बुध तरा से भारते में जैने ष्ट्रा दिन्दी से ।

र्श वर्ष की उसर में एवं बावटन ने बहुत मुद्रामद-दर्मद से बुनेन निष्य दी । उन दिना दुनेन मुनादी एम की बादा बनती की बीट मेरिन्स

न स्टार मेदा जैमी बारीत निमी हुई होती थी। बुखार तो हमारा तीन पहियों में ही घटा गया पर उनके दोनीत दिन के बाद हमें स्वानदीय हमा भीर कर का उपना मिलिमिमा ही पल परा। उपना दर करने की नानित हमारे पहाँगी दोगत ने किमी बैद को बुटाकर एक पाक नैयार कराया, क्रियमें क्येंगे का कुल्ता भी शासित या, जिसको देन भन्त भी बहर भी बोठने हैं। उस पाक के पहले एकड में ही बादू का अनुर दिगाया, पर हा महीने के बाद गणा चटलना और एक तरह की बेंधेनी और आठ महीने वे बाद स्वानदीय का निक्रमिला निष्ट श्री है। गया । शिमीने राज्यह सिथे बिना अपने नाजी साना गुरू दिया और सम्बीभी इतनी ति एक दिन हमारी बहन की यह पूछना ही पत्रा कि दननी क्षम रोडी और सम्बों से तुम्हारी काम किस तुम्ह चेंगा ? हमने उनको अवाद तो ठीव-टीक गर्हा दिया, पर भानी बात पर बढ़े रहे और बाद-मी यानि ने बाद जब हम हर तरह स्वस्य ही ध्ये तर हमते भारत गांग भेद भारत बारा पर गांग दिया । अब अगर सम्बो ज्यादा गाता प्राकृतिक इताब है तो बाद बैसा सात में और अगर सम्बो न्याना हमारे यन की दुइता की निर्फ देंच है और वन की दहना प्राथित इसाब है हो। बार बैसा मान लें और अवर गरभी रहना हमारी उम पुता बी बदर है जो हम अपने बड़ में दवाओं के निर्णाट रमी है और अपर दबाइयों ने मिलाए मन भी यमा ब्राष्ट्रतिक इलाज है तो सार वैना मार लें। हमने अपनी २३ वर्ष की उस उत्तर में भी माहरिक इताब के डाक्टर या जानकार की हैनियत में जाए भी

अन हम तीन बाम ने हुए। एन हुन्हुल के कृत मनिष्णात थे। हुन्हुल में हम जातर थे। लग्डे और एन बैद में। हमहीत हणात का काई नावा हमारे कुरहुस में लग्डे था। हम प्रार्थ नहीं कुरू महो कि हम बाहुतित हमात म प्रार्थ नहीं कुरू महो कि हम बाहुतित हमात म प्रार्थ तहीं कुरू महो कि हम बाहुतित हमात म

न्दी रिया था।

सकते हैं कि हमें गुरुकुल में भी एक बार बुखार आया; पर दवा न डाक्टर से ली, न वैद्य से। बुखार आने पर खाना तो हमने अपने आप छोड़ दिया; पर पानी हमें यों छोड़ना पड़ा कि हमारे गुरुकुल के डाक्टर ने हमसे कहा कि वुखार में पानी नहीं पीना चाहिए और अगर जरूरत हो ही तो एक वक्त में छटांक भर से ज्यादा नहीं और वह भी चाय के चम्मच से। यह थोड़े और चाय के चम्मच से पीने की वात हमें जंची नहीं। हमने डाक्टर से साफ कह दिया कि हमारे लिए यह आसान है कि हम पानी विल्कुल न पियें और हम करेंगे भी यही। वस पानी तो हम जभी पियेंगे जब तुम हमें उतना पानी पीने की इजाजत दोगे जितना हम पीना चाहें। वारह घण्टे हमने पानी नहीं पिया। डाक्टर साहव फिर आये। उन्होंने पानी के बारे में अपनी फिर वही बात दुहराई और हमने भी फिर अपनी पुरानी वात दुह-राई। आखिर डाक्टर ने यह कहा कि आप नीव जितने चाहें खा सकते हैं। हमने यह मान लिया। डाक्टर साह्य चले गये और फिर हम पूरे एक दर्जन नीवू बीज निकाल कर छिलके और जीरे समेत खा गये। रात को जब डाक्टर साहव आये तो उन्होंने हमसे पूछा । हमने कहा--"सिवाय नीव के हमने कुछ नहीं लिया।"

लेकिन जब डाक्टर साहब को छिलके समेत हमारे एक दर्जन नीवू खाने की बात मालूम हुई तो वे मुस्कराये और बोले—'मेंने इनको पहचान लिया और समझ लिया। में अब इनका इलाज कभी नहीं करूंगा।" अब अगर बारह नीवू या जीभर नीवू खा लेना बुखार का प्राकृतिक इलाज है तो वैसा मान लीजिए। या मन की हठ या मन की पक्काहट अगर प्राकृतिक इलाज है तो वैसा मान लीजिए। या अगर दवा खाने से नफरत और उससे बचने की कोशिश प्राकृतिक इलाज है तो वैसा मान लीजिए। हां, इतनी बात जरूर थी अब हम तीस बरस के थे। प्राकृतिक चिकित्सा, मनोविज्ञान, आत्ममुधार पर कई किताबें पढ़ चुके थे और हमारे इस नीवू खाने के

काम में इन कितावों की मदद भी शामिल थी।

इस घटना के दो बरस बाद हमें संग्रहणी हो गई। जिस वक्त संग्रहणी हुई थी उस वक्त हमसे कोई पूछता कि क्या वीमारी है तो हम कभी यह न वता सकते कि संग्रहणी है। संग्रहणी क्या होती है यह हम जानते ही नहीं थे । हमको संग्रहणी है यह वात तो हमने जब जानी जब हकीम अजमल खां साहव ने हमारी नव्ज देखकर हमें संग्रहणी बताई। उस वक्त तो हम इतना ही समझते थे कि टट्टी जाने के बाद हम एकदम बेदम से हो जाते थे और कभी-कभी गश खाकर गिर पहते थे। इस बीमारी को लेकर हम मेरठ पहुंचे । वहां हमें एक हकीम साहव को दिखाया गया । हमने उनका इलाज करने से इस वजह से इन्कार कर दिया कि वह नव्ज देखकर हमारी वीमारी नहीं बता सके। हां, उनका यह कहना जरूर था कि सात दिन उनकी दवा खाने से और उसका असर बताने से वह हमारी बीमारी बता सकते हैं। पर हम इस पर भी राजी न हुए। फिर हम दिल्ली पहुंचे । वहां हमारे मित्र जीहरी जगन्नाथजी हमको हकीम अजमल खां साहब के यहां ले गये। उन्होंने हमारी नव्ज देखी और अपने नायव हकीम की तरफ मुंह करके फारसी अक्षर 'फें' बोला और दूसरे आदमी की नब्ज् देखने लगे। इससे ज्यादा वक्त वे शायद ही किसी मरीज को देते थे। इस पर हमारे मित्र जीहरी जगन्नाथजी, जो हकीम साहब के भी मित्र होते थे, उनसे बोले कि यह अपना मर्ज जाने बगैर आपकी दवा इस्तेमाल नहीं करेंगे । इसके जवाब में हकीम साहव ने न कोई टेढ़ामेढ़ा संस्कृत का शब्द वोला और न फारसी अरबी का और न किसी वीमारी का नाम कहा। विलक वह सब बता दिया जो हमें था । वह साफ बोले कि इन्हें पालाना होने के वाद गशी आ जाती है और वेहद कमजोरी हो जाती है। तब मैने पूछा, "यह क्या बीमारी है?" उन्होंने कहा—"इसे संग्रहणी कहते हैं ।" इसी सिलसिले में में पूछ बैठा कि आप मुझे क्या दवा दे रहे हैं ? वह बोले, "फौलाद।" मैने पूछा--

"कौलाद हिन फल में उदारा होता है ?" वह बोले 'अनार में।" इस वह और मरीज् को देलने छने भीर में भाने बित्र के याब दवा लेकर चटा जाया. पर नम्में की दबाओं से कोई काम न किया। में बहा में मपने बैस बित के पाम इटावा पहेंचा । उन्होंका महमान हथा । दो दिन के बाद मेरी बहुन भी मेरी सेवा के लिए मेरे पान पहुंच नई । बैधनी भगने मित्र तो में ही, वह न माने और उन्होंने विश्वला में कौलाद मिलाकर एक पृहिषा मुझे दें ही मों दी। मैंने के ली और इस तरह से स्वह नाम बह दो पृथ्या बालीन दिन तर मुझे देने रहे। भारीम दिन में में बिस्ट्राल अच्छा हो नवा। नाने के निहास में इन चालीयों दिन मैंने **मिशाय धनार के कोई दूगरी भीत्र नहीं नाई.** यहां तर कि पानी और नमक भी नहीं । बरमान के दिन भी। इटावे में उन दिनों भनार बेहद सम्ना या। चानीन-प्रवास अनार सा जाना या और एक इपर में ज्यादा न वे नहीं होताया । जब में वित्र हुन रवस्य हो गया तो याद नहीं कि विस खिनमिन में एक दिन अपने बंध मित्र के साथ इस बान पर बहन छिड़ गई कि बैदक मण्डी या प्राइतिक विशित्या । बहुत देर बहुम के बाद मेरे वैद नित्र ने आरनी मानिया नीय छोड़ा भीर वह यह कि देखिए, मैने भारती अपनी पृद्धियामाँ छ हिन्तना बस्द अच्छा कर दिया । मैंने अशाब में बहा, ध्वह मापना पुहिया नहीं है बिन्होंने अच्छा स्था; बन्चि यह बेरा परहेत है, जिमने मुझे अच्छा किया।" वह बाँदे, "अच्छी ती क्तर पुढ़ियाओं से ही हुए हैं । हो, जानके पर्टेड वें मेरी पुढ़ियों की मदद की और नवेंद दिन की जगह भार पानीम दिन में ही मण्डे ही रूपे।" में बोटा, "मगर में यह बहूं कि आरबी पुढ़ियों ने मेरी रखी मर भरद नहीं की की बना बात मेरी बात मानने से इत्कार कर देंगे ?" बोड़ो बहुत के बाद में बहा से बड़कर बड़ दिया और गारी पुनियों उनके मामने माक्क रम रो और बागी-फी-बानी पूरी दिना ही।

बद क्यार सारिक मनार संपट्टी का प्राट्टीक

इलाज है तो आप बैशा मान सें। या अगर वह विके मेरेमन की दुइड़ा है तो बैशा मान सें। यदि मन की दइड़ा बाहतिक इलाज है नो बैगा मान सें।

मन् १९२६ में भूते दमा हो गया। दी बरम न दमें ने ज्यादा ओर निया, न मैंने छने मुछ देवाने की बाद मोची। यद '२९ में जब उमने जोर परदा और जब उसे दबाने की जन्दन पढ़ी तो मैं जपने मित्र पं॰ सन्दरकानजो के पान इकाहाबाद या । यह मेरी लहातीफ न देग सके और रिमी बैद के द्वारा मेरे लिए गलिया भग्य की नौ पुड़ियों है माये और मुझे उनके साने पर राजी कर निया ! पहली पहिचा ही ने बाद का अगर किया। हा, इनना जरूर हमा कि जब मैं इसरे दिन गगानी नहां कर कोट रहा या नी दारायब में रूप होने लगी और वह एक कर ही न दे। पाम ही पहिन मृत्रराजात-जी के मित्र जवजावजी वैद रहते थे । वे मुगे बरा ने वर्षे । वह अवानक क्य की कीई करह न जान थाये । बहुन पूछताछ के बाद उनको पदा समाकि वैने कर सनिया की पृथ्या नी थी। यह मुनते ही बह अन्दर दोडे शर्प और आषगाव माँ है आपे और मसे दिना दिया। क्य बन्द हो गई। मैं घर मागया। हिर पृष्टिया अलने लगी। सुब भी सामा जाने समा। तुरुहरून भी होत्या । पछह शेव के बाद नागपुर चना स्था। दवा साने के भाग बर बाद दमें ने किर और पत्रका और अवनी बार का दौरा पहली बार के दौरे ने दल-बीच नुवा नहीं, भी गुवा बीर का बा। बेहर नक्ष्मीय थी। संदर में ऐना वी होता या हि कोई बहर दे दे या होती है मार दे, और उन बस्त दवा ने इतनी मुत्तारा नकता ही बुद्धां की हि नागपुर के मागूर शाक्टर गरे मेरे याग इसा की बोतज निजे केंद्रे में और मैंने दश तेने में इन्हार कर दिया। जब बढ़ बहुत और देने सर्वे तो मैंने पूछा कि आरकी दशा मेरी रण शहतीह को कित्री देर में दूर गर देती? गर बोते, 'मात करे में क्षा मेरी जनाव में गरा, "मार करें में त्री प्रकृति भी इस तकारित की अपने-कार मुक्ते

अलहदा कर देगी, अगर मैं उसका किसी भी तरह मुकावला न करूं—यानी न खाना खाऊं, न पानी पिऊं, न दवा लूं।" डाक्टर साहव बोले, "यह भी ठीक हैं।" और फिर यही हुआ। मैंने दवा नहीं ली। शाम तक अच्छा हो गया, पर उसके बाद पूरे तीन वरस सिवाय सब्जी और फल के कुछ नहीं लिया। सब्जी उवली हुई भी के लेता था, भाप की पकी हुई और कभी कच्ची भी। फलों के लिए तो पकाने का सवाल ही पैदा नहीं होता तीन वरस तक दमें का दौरा नहीं हुआ, इससे हिम्मत बढ़ गई और फिर रोटी-दाल शुक्त करदी।

दो वरस वाद दमे का दौरा फिर शुरू हुआ । इसवार लुई कूने के पानी के इलाज से फायदा उश्रमा और तीन-चार वरस फिर दमे का दौरा नहीं हुआ । उसके वाद फिर दौरा हुआ। इस वार आसनों से काम लिया और इससे भी खूब, सफलता मिली । कुछ दिनों के वाद फिर दाल-रोटी शुरू कर दी।

सन् '४७ की जनवरी में दमे ने फिर जोर से आ दवाया। उत वक्त किसी ने सूंघने की एक पेटेन्ट दवा ला दी। उससे यह नफा हुआ कि जब भी उसे सूंघा जाय, कफ़ निकल जाता था, आराम पड़ जाता था। वस इस आराम देने ने एक आसानी पैदा करदी और मैं उस आसानी का गुलाम वन वैठा। कई महीने इस आसानी में गुज़र गये। न दमा अच्छा हुआ, न तकलीफ़ ज्यादा हुई।

होते-होते प्राकृतिक इलाज के अच्छे जानकार रामनारायणजी दुवे मुझे एटा ले गये और वहां उन्होंने मुझे खूब गर्म पानी में उबाल-उबाल कर केले के धंमें का रस देकर और बकरी के दूध की खीर खिला कर दो-तीन महीने में अच्छा ही नहीं कर दिया, पहलबान भी बना दिया। मगर यह पहलबानी भी दो-तीन महीने से ज्यादा न टिकी।

पहलवानी के बाद जो दौरा हुआ वह भी ऐसी जगह हुआ जहां दोस्तों ने फिर एक मामूली दवा

के लिये मजबूर किया। उससे भी चमत्कारी लाभ हुआ। पर वह भी तीन महीने से ज्यादा न टिका। इस दवा के बाद जो दौरा हुआ वह ऐसी जगह, जहां कोई मुझे दवा के लिए मजंबूर करने वाला न था। इसलिए मैंने फिर अपनी फल-तरकारी खाने की राह पकड़ी और जल्दी ही फायदा होने लगा। इतने में आमों की ऋतु आ गई और आम और दूव ने तो वह फायदा किया कि जो अब-तक किसी ने न किया था। अब मैं पहली अप्रेल सन् '५० से आज (२५ अप्रेल सन् '५१) तक विल्कुल ठीक हूं। दमे की कोई तकलीफ नहीं। चलने-फिरने, दीड़ने-भागने या किसी तरह के काम करने में कोई दिक्कत नहीं। आम तौर से मैं साग-तरकारी और फल खाता हूं, कभी रोटो मिल जाय तो वह भी ले लेता हूं; पर वह मेरे लिए जरूरी नहीं। दूच वहुत कम पीता हूं, घी से परहेज नहीं।

पढ़नेवालों के लिए में एक बात और लिखे देता हूं और वह यह कि तेज दवाओं के खाने के बाद जो दीरे हुये वह बेहद जोर के थे। मामूली दवाओं के खाने के बाद जो दीरे हुए वह मामूली जोर के थे। खाने-पीने की गलतियों से जो दीरे हुए वह शुरू पें एक-दो रोज थोड़ी तकलीक देते थे; पर बाद में तकलीफ देना विल्कुल छोड़ देते थे। हां, कमजोरी पैदा करते थे और काम में अड़चन डालते थे।

इस संक्षिप्त लेख में पढ़नेवालों की बहुत-सी शंकाओं का जवाव शायद न मिले; पर पढ़ने वालों के लिए पंकाओं का जवाव इतना ज़रूरी नहीं है जितना प्राकृतिक चिकित्सा पर श्रद्धा । और श्रद्धा एक ऐसी ताकत है जो ज्ञान को ठीक राह पर लगा देती है । और ठीक राह पर आया हुआ ज्ञान आदमी के रहन-सहन में ऐसी तब्दीली कर देता है जो प्रकृति के उतनी ही अनुकूल होती है जितनी पुरुष के और यह प्रकृति पुरुष का समतोल ही स्वास्थ्य है।

"यदि हर प्रकार की द्वाएं समुद्र में फैंक दी जायं तो मनुष्य-जाति का भारी उपकार हो; किन्तु मछिलयों का तो मरण ही हो जाय।" —(डा०) ओळीवर होम्स

### समस्त रोगों की मूलभृत एकता

थी जटाशंकर नन्दी

भीपपोरपाररां ने मारीरिक अध्यक्षणा के भिमा-भिन्न विग्री में प्रम में पड़कर रोगों के मिना-भिन्न आर्गान नावरण किये हैं, कियु बात्नव में प्रदेश रोग का मून कारण गरीन हैं रोगोंगाइक मारेक राज्य ही है, जा कुरली कानून का मंग करने और क्वान्यताम पड़त-मून ने पैदा होता है। प्राहरिक विकरणा का यह मून-मून निद्धान वैर्षित लोगोंन अस्म के गया गाविल हैं। जुड़ा हैं। रोग को बाहे जो नाम दिवा गया हो, कह निम्न-निर्मित सनुम को नाम दिवा गया हो, कह निम्न-निर्मित सनुम कारों में उन्नान हुना हो।

- (१) ऐना बाहार जो मनुष्य की ब्रह्मि के बनुकूत न हो, बो बाधानी में हुन्म हो जाब उनसे अधिक भाषा में साबा जाय, बिममें नाब पदाबी का अयोग्य मध्य मुंजा हो, अपना जिनमें घोषक सन्व अभि हारा नट्ट हो गये हो।
- (२) अप्राष्ट्रित जीवन और स्वान्ध्यतासक रहत-गहत; तत्त्वाकु, अधीय, काय, कारी आदि साहर पदायों वा स्थान व
- (१) बद्धवर्ष का भय----वीदन-सन्द वीर्व का इक्तपीय।
- (४) विना, भय, योष, गरित में अधिक सारोदित अवका मार्नीमा त्यम, विन्नेटिया का दुरनोग सपया औड समा करतेवाटी और गरिद को जगकर तथा जान नत्त्रों को शीस करने बारी बीकर-वर्षी।
- (५) बधनारकार में आहे आहेरिक स्पृत्ता अवका विरोधका और अवस औषपारवार या एक-विद्या से गरीर की बीवन-गुनित की शुर्वकार्ण हार्यित ह

इस प्रचार की कानुनियति पर कुमार, दया, शद, मरिकान, मधु-प्रमेट अवदा अन्य प्रचार के गोरी इस आधार प्रणा हैं , हिन्तू इस सम्बद्ध में हिन्तिकम से स्थान स्मार्ट की बारे यह है कि प्रणे ही क्रीचरित्रमाकी से सेंग का कार्ट का सम्बद्ध दिस हो और रोपिया को दर्द के बाहूँ दिनने भिन्त-भिन्न चिन्ह प्रतीत होने हों, प्रसा कि हम ऊपर लिए बुके है, समस्य रोपी को एक ही सामान्य कारण होता है।

समस्य रोगो की मसमय प्रता प्रमाणित करने नै किए ही बाहुनिय विदित्यक बगाध्य रीगियो की आस्वर्यत्रनक रीति ने स्वस्य कर मक्ते हैं। रोगी मनुष्य का गरीर माना प्रकार की नरावियों के बाह्य विन्हप्रवट करना है। रोग के अगुनी हुए का ज्ञान न होते के कारण आयुनिक निदान-शास्त्र इन विन्ही का भिन्त-भिन्त रोग मानकर अंगरिन नाम देना है। इनके विपरीत, प्राकृतिक विकिन्तक बौदधीरवारको की भानि उल्हान में नहीं प्रमुख । बह अपने समय का रूपर्यस्थय न करने हुए और रोगी के स्वस्य होने में विपन न शानते हुए मीपा " व्यापि के मूल को पकड़ना है। वह रोग का वार्ग्यक्ष रहस्य समझ कर स्वापि के कारणों की दूर करता है और रोगी को रगायी जय में स्वाय करना है। यो पद्धनि रोगी की इस प्रकार नवस्य कर्ता है, उमी स्थान्य-अवक प्रज्ञति का अनुमान करके यदि गाँगी अस्टिय में अपना जीवन वातीन की, नेश नह स ने बड़ गदा रचन्य पहेगा, वॉन्स दीर्पाय भ्रोतेसा ।

विचार औरपीरवारत रोग के बास, यह और प्रवन्तन कियों में उदेश में पह जाता हैं और अन कियों ने दबा देने ना प्रजान हैं। बहर रोग में उत्पादन कारण में किया में अपकार में ही उत्पादि आहेरित चिरान्यक राग में मुनबूत नारण पर पान देश में और बाहस कियों हों में पात भी करण करी देश औरपास्त्रार बाहस कियों पर अपना नाम स्थान ने जिस के प्रचार में में प्रपाद कारण के उपीत में सीता करी, सीता बारा हाथ है पर देन कारण रोग में बार्गांक प्रवास के असे कारण कारण कारण कारण कर कारण हैं कारण के प्रारं होता है कि रोगोत्यादक कारण ज्ञात न होने से श्रीपद्योपचारक रोग की स्थायी निवृत्ति नहीं कर सकता। उन्टे रोग के चिन्ह दवा देने के गलत प्रयत्न में वह जिन विपैले पदार्थों का उपयोग करता है, उनके हानिकर प्रभाव से रोग गहरा हो जाता है और विशेष द खदायी स्वरूप धारण कर छेता है नया कई बार रोगी की अकाल यम का द्वार देखना पट्ता है। इसका कारण यह है कि औषधोपचारक शास्त्र बाह्य चिन्हों को ही रोग मान बैठना है। उसके दिपरीत प्राकृतिक चिकित्सक बाह्य जिन्हों और उनके भिन्त-भिन्त हुपीं की केवल व्याधि स्थान निदर्शक मानना है। वह इसे प्रकृति का स्वाभाविक रागिनवारक प्रयत्न मानकर निर्दोष समझता है। उसे औषघोषचारक दवाओं और अनावश्यक गस्त्र-किया में दवा देते हैं और गरीर की रीगमुक्त करने की प्रकृति की हितकारी स्वामाविक किया में विष्न डालकर ऐसी स्थायी और भारी हानि कर डालने हैं जिसे कशी नहीं सुधारा जा सकता।

सीभाग्यवा अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष हाक्टरी धंधे में व्यर्तान करने और जन-ममाज में हजारों रोशियों की सफल देख-भाल कर अपने अनुभव में अनेव प्रतिष्ठा प्राप्त टाक्टरों ने जन-कल्याण के उद्देश्य में अपना प्रभावशाली और स्पष्ट अभिप्राय प्रदान किया है। उन्होंने उपरोक्त सत्य को स्वीकार करके जन-समाज की आंखें खोलने का प्रयत्न किया है।

इम प्रकार जन-सेवा के महान् उद्देश्य में विश्ववंद्य उपचारकों ने औपघोपचार का कड़ा विरस्कार किया है।

रोग गरीर का शबु नहीं, जिसका मुकाबला करने की आवश्यकता हो। वह तो शरीर को स्वस्य स्थिति में लाने के मार्ग में विध्न रूप में रोगोत्पादक भीतरी मल-संचय को मिटाने का तीन्न प्रयत्न करनेवाला परन हितैपी मिन्न हैं। यद्यपि भिन्न-भिन्न रोगियों में भिन्न-भिन्न धरीर-व्याधि-दर्शक चिन्ह होते हैं, फिर भी इन मिन्न-भिन्न चिन्हों में सामान्य रूप से धरीर को स्वस्य वनाने की प्राकृतिक क्षियायें ही होती रहती हैं। इस रोग-विनाधक किया के मार्ग में रुकावट डालकर रांग के चिन्हों को द्या देना रोगी को बीमार रखने का मूर्वतापूर्ण प्रयत्न है।

जिस स्थिति को आंपघोपचारक रोग-निवृत्ति कहते हैं, बह तो केवल ब्याधि के बाहरी चिन्हों को दबा देने आर बाट में और भी भयंकर रोग उत्तरन करनेवाला कार्य है।

अीपवीपचारक इस बात में गर्व अनुभव करते हैं कि लोग उन्हें 'रोगों से लड़ने वाले योड़ा' समझते हैं; किन्तु गर्व को इस भावना के कारण ही वे रोग का सत्य स्वरूग नहीं समझ पाने। प्रत्येक इपचारक को रोग का सत्य स्वरूप समझना चाहिए और प्रकृति की रोगमुक्त करने की किया के साथ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कृप में सहयोग देकर उसकी सहायता करनी चाहिए।

संक्षेप में, रोग मनुष्य के आरोग्यनायक रहन-सहन का ही स्वाभाविक परिणाम है। रोग प्रकृति का हितकारी प्रयत्न है। मनुष्य के अज्ञान, विषय-वासना, अतृष्ति और जीवन-घातक दुष्कृत्यों के स्वामायिक परिणामस्वरूप शरीर में होनेवाली विकिया को दूर करने का प्रकृति का परापकारी प्रयत्न ही रोग है। मनुष्य जब इस सत्य को समझ लेगा नो वह रोग के सर्वद्यापी भय से मुक्त हो जायगा।

"मुझे अपने दीर्घकालीन अनुभव, अवलोकन और चिन्तन के फलस्वस्प अन्तःकरण-पूर्वक यह विश्वास हो गया है और उसे प्रकट करते हुए मुझे तिनक भी संकोच नहीं होता कि यदि दुनिया में एक भी डाक्टर और वैद्य, आपिव-विकेता, रसायन-शास्त्री और आपिवि-निर्माता न हो तो इस समय की अपेक्षा मौत कहीं कम हों।" -(डा०) जान्सन

# में तन्दुरुस्त हूँ या वीमार ?

### थी लुई कुने

शास सनुष्यों के स्वास्थ्य की बंधी बसा हूँ उत्तमें हुए आदमी का थी तांदुरस्त हू या बोबार?'
यह बातना कमें हो गया है । रोम-रोम कोर्यों को तांदुरस्ति, तारत और सनुमालि घटती जा एरी
हैं, यह कम किता की बात नहीं है । सारवार जनता के आरोध-मंत्रवर्षी हुए विकारी कर पान है
तरने हैं, तेरिक मन्ने न्वास्थ्य पर हर आरसी की खुद प्यात देश बाहिए। किती और के मरोने
क्वास्थ-आदित की आता करना मारी मूल हैं। मेरा यह घोटी किताके तिमने का मननक यह
है हि सोग विना कियो ग्राव-गुम्ह के अपने न्वास्थ्य की बांच कर ससे। इतमें सार्थ में विनाशे
गेंदुरस्ती की गुप्तारने के उपाय भी बता विशे गए हैं। यह किताब क्रते न्यून १८८५ में निकारी थी,
तब से द्वासी कई आवृत्तियां हो चुटी हैं। इतमें यता बमता है कि सोग अपनी शंगुरुनी के बारे
में बातना बाहते हैं।

मेरी हार्विक इच्छा है कि यह किताब हर पाठन वा प्यान अपने तथा अपने हुटुत्व के स्थाप्त स्थापन हों। —नैतर |

#### बीमारी का कारण

भनुष्य नीरोग उस समय नगता जाना भारित् नव परीर में भिनी तरह की नक्कीक या वैवेती के बिना उनकी प्रतिया अपने कर्कम्य पूरे कर छी हो।

भाग नाने पर बनान आना न्यामाबिन है, नाम कोई बाद नहीं होता, बेबन निवास मोत निहा भी स्वामाबिन इस्ता होती है। नीरीन मनुष्य को धव और विधास दोनों तुन सम निव होते हैं। तारी भीतरी इशियों ने नामें मान हम नाह होते गाने हैं। हमें मान तुन नहीं होता। इशियों में विभी प्रकार की सम्बद्धता उत्पन्न होने पर या बोई बाहगे बोट-बोट-नाने पर ही बना बनाई है। वीं, नावे ने बाद सम्बद्धता सनुष्य भीद नुष्य के मिजिस्न दिसी प्रकार की साहित मनुष्य बारत है। वीं उनके मेंदे में बोई त्यादी होनी भारत, सपसा उनने बनन मुग्छ मार्स है।

गरीर के सब बयों का एक-इसने के साथ ऐसा गहरा सम्बन्ध है कि निर्मा एक अंग के अपना काम

सनीमानि न बण्ने से सारे घरीर पर प्रमुख बुध सबय परवाहें। पारण, जान-पूजी प्राप्त हमते पारीर ने सम्बद्ध सम्पारणर पत्रमें हैं। इसने निज्ञ होता है है प्रमुख विवार का सम्पार है पारीर पर प्रदेश हैं। प्रीर का बोर्ट सेन सम्पार पर मुख्य रूप से नहीं कर पत्रा

अधिक दियों से दरपूर्ड हुए दिवार मां गुर्मा अक्या में मनुष्य के ममुद्र गरिए में प्रत्यात पितर्डित कर देने हैं। आदमी के बेकरे पर से परिवर्डन प्रमु-और अम्मन्ते हैं। बादमें केरे पर सिर्मेट क्या से आतंत्र आग्रा पर्दे हुए प्रसाद को मार्पारण मनुष्य भी भार पत्रा है। यह रोज की समुद्र हो। मिल अक्या में, स्मित्त भी वार शेल की समुद्र में शाहका प्रकारण में, स्मित्तक भी वार शेल में दिन्ह मांशित कर अक्या में, स्मित्तक भी वार शेल में बेंग का का प्रमान मांगि में प्रवाद का का का मार्च की का का का हार बहुव मुद्दिक में विलामा में मार्ग हो। पर मार्ग मार्ग मार्ग

भे लपुरान है हा दोवार ?' नामर पुरदक, दिनका नारांग इन रेन में दिया दया है।

हम रोग-निदान की इसकी अपेक्षा एक सरल विधि पाठकों को बतलायेंगे।

घरीर की वृद्धि और पोपण करनेवाली इंद्रियां अर्थात् फेफड़ा और मेदा हमारे बरीर में सबसे अधिक महत्त्व रखते हैं। साथ ही, य दोनों, रोगी भी शीघ्र होते हैं। जांच के परिणामस्वरूप यह सिद्ध हो गया है कि सारे भीतरी विकारों की जड़ यह मेदा ही हैं। पाचन विगड़ते ही अन्य रोगों का आक्रमण अनिवायं हो जाता है। कम-से-कम भोजन का रस ठीक न वनने का असर तो होता ही हैं। रुधिर का अच्छा-बुरा होना पाचन-किया पर निर्भर है, और बरीर के उचित पोपण के लिए रुधिर का युद्ध होना आवश्यक है।

### उचित पाचन

बहुत कम आदमी ही यह दावा कर सकते हैं कि उनकी पाचन-शक्ति विल्कुल ठीक है । इनकी संख्या उतनी होगी जितनी नीरोग रहकर बुढ़ापे तक जीनेवालों की । यह आश्चर्य की वात नहीं है, व्योंकि लोग मेदे पर जितना जुल्म करते हैं उतना अन्य किसी अंग पर नहीं करते।

मेदे में कोई खराबी होने पर हमें तुरन्त उस पर ध्यान देना चाहिए । उसकी पहचान बहुत ही आसान है । उकार, कै (उल्टी), गले में जलन या मेदे में किसी तरह का भारीपन विकार के निश्चित चिन्ह हैं। पर ये लक्षण जबतक बढ़कर तकलीफ नहीं देने लगते तबतक प्रायः इनकी परवा नहीं की जाती।

हम यहां एक ऐसी पहचान बताना चाहते हैं कि जिससे मेदे का छोटे-से-छोटा विकार भी सहज में जान लिया जा सकता है। मेदे में कोई खराबी न रहने पर सारी पाचनेंद्रियां अपनी-अपनी जगह अपना काम भली-भांति करती रहती हैं। मल का निकास भी जिचत रूप में होता है। आंत का द्वार—मल का निकासद्वार—ऐसी पूबी ने बना हुआ है कि झौच के बाद वहां जरा भी मल लगा रहना चाहिए। यदि कभी वहां मल लगा रह जाय तो सम-मना चाहिए कि बड़ी आंत में मल पहुंचाने के पूबं

काम करनेवाली इन्द्रियों ने अपना काम भली प्रकार नहीं किया है और पाचनेन्द्रियों में कुछ दोप अवश्य हुआ है। जंगली जानवरों का मल और उसके निकास-स्थान को देखकर निश्चित रूप से उनके स्वा-स्थ्य का पता लगाया जा सकता है । यही पहचान मनुष्य के लिए भी है। विल्कुल नीरोग मनुष्य को शीच के लिए जल की कोई जरूरत नहीं होती। मलहार पर मल जरा भी नहीं लगता। जहां मल इस सूरत में आता है वहां यह सवाल ही फजूल है कि मल कितना और कै बार आता है। नीरोग शरीर आवस्यकतानुसार इसका प्रवन्ध खुद कर लेता है। वच्चों पर, जवानों पर तथा सब तरह के लोगों पर वहुत बार आग्माइश करने के बाद में इस निश्चय पर पहुंचा हूं। कभी यह पहचान गलत नहीं निकली। ऐसी सम्पूर्ण शुद्ध पाचन-शवित वाला मनुष्य निस्संदेह दावे से कह सकता है कि मैं नीरोग हैं। उसका समस्त शरीर निर्दोष माना जायगा ।

## अपच के कारण और परिणाम -

इसमें सन्देह नहीं कि अपच अस्वाभाविक रहन-सहन का नतीजा है। छोगों में ज्यों-ज्यों चटोरपन— तेज़ मसाले, झोलदार, चरपरी चीजें तथा मांस-मदिरा की लत बढ़ती जाती है त्यों-त्यों पाचन-शिवत भी विगड़ती जाती है। आज हमें अपने पूर्वजों का सीधा-सादा, सात्त्विक आहार पसंद नहीं आता। जवतक थाली में कई चटपटी चीजें, भांति-भांति के खूब खट्दे-मीठे पदार्य न हों तवतक हमारी रसना तृष्त नहीं होती। पाचनेन्द्रियों पर एक ओर तो इस तरह बोझ डाला जाता है दूसरी ओर चीजों के सत निकाल-निकालकर और उन्हें अनेक ऐसे हमों में बदलकर पेट में पहुंचाया जाता है कि उसे पचाने में मेदे को अधिक मेहनत न पडे।

जैसे शरीर के अन्य अंगों से शक्ति से वाहर अथवा कम काम छेने से वे कमजोर हो जाते हैं, वही हालत मेदे की भी होती है। मेदे की निर्वलता और विकार इतने धीरे-धीरे बढ़ते हैं कि ये उन आदमियों की आदत में दाखिल हो जाते हैं। उन्हें कपर में जरा भी नहीं असरते; पर इसका परिचाम बहुत बरा होता है। अवर मेदे पर किये वए अन्या-भारों का सगर थीरे थीरे न होतर सत्तव के नसे भी संस्कृतस्थाल होता सो मनध्य ग्रीधना से उसे दूर करने का उपाय भी करता। बेबारे येदे पर मपान से ही अत्याचार होने सरू हो बाते हैं। जिन्हें बयपन में माना का कुथ न विलक्त कृतिय विलावटी भाहार मिलता है उनके मेदे को दर्दछा उसी समय से मारम हो जाती है। स्त्री का लगते बच्चे को दय म पिला सकता, क्य दर्भाग्य की बात नहीं है। इसमे स्त्री का रोगी होना साफ माबित होता है। पर कृतिम आहार में मेदे का विवहना की बाद की बात है, अधिकतर बच्चे तो येट ने ही बीमार येदा होते है । रोगी माना पिना की सन्तान नीरोग कहां से होगी <sup>7</sup> बुरे बीज ने अच्छे पण वैने होगे ?

हमें पहले इस क्षिय पर अस दिवार करना चाहिए और तब गरीर ने विकारों को दूर करने के उपाय पर ।

धरीर सप्राइतिक भोजन को धन के समान समझा है भीर बन्धी-ने-जल्दी उसे बाहर निवानने भी कोशिया करता है। यह प्रयन्त कभी के, कभी दन्त और कभी अन्य हवा में प्रकट होता है। यदि गरीर इंग्रे क्याल इंग करह न निशाल मना की मम-गे-मम बह भोदन विना पथे ही बाहर निवष्ट भाना है भीर भाने साथ हिउनर भोदन के अग को भी अभवकी हालत में निवान लाता है। यहत और हितरर, दोनों तरह की गुराक के अग एक साथ बद्दी आंत्र में पहुंची हैं। इससे मनुष्य को उस हित्तकर भोजन के बरा का कुछ लाभ नहीं निल्ला । ऐसा अस पेट से प्राय: प्राइतिक चीति से तिकन जाता है। यर म निरमने की हालत में रशा में मिल्कर शरीर में बना होता है। एवाय बार तो मनुष्य इन बरे परिचामों के भोगने से बच भी जाता है। पर मनुष्य स्वाप्तावित नियमी को बार-बार पर करने याचा त्रापी है।

#### विजातीय द्रव्य

घरीर में बहुत दिनी तर अन्न कृतिक भीजन तया अपने मोजन ने निकानने रहने की साक्ष्य नहीं रह जाती । तब गरीर में विजातीय इस्य जमा होते छवना है । आरम में दिशातीय प्रस्म पेह के पान, मल-मूत्र-याग के स्थानों के निकट इकारत होता है। पिर उनमें निय नया विश्वानीय इस्य मिनवर उनकी मात्रा बढ़ती रहती है और शीख ही मन्दर-ही-अन्दर उसमें एक परिवर्तन होने समता है। उसके रैने बिलरने रूपने हैं और उनमें प्रकोप, या कहिए सइन, पैदा हो जाती है। विज्ञापि इत्य यलवर धरीर में करर तथा नीचे के हिम्मों में चैन्ता है मीर धीरे-धीरे वरीर के जिल्ला जिल्ला हिस्सी में जमा हो बाग्र है। यह इस्त पेडू गे ऊपर गिर तत और इसरी ओर हाथ और पांव की गीमा तक परंच बिना नहीं रहता । उस समय शरीर हुए हर बोगिश ने बाहर निवासना भारता है, यर अधिक बाल तक बह इस निया में समर्थ नहीं होता। इस कीशिश में शरीर पर बहुत ज्याश परीना भारत है, पोड़े पुनियां शादि मन्य दियाए होती है । सुन में यह गरा हाथ-वैशे में होती है। पांद का परीवता-विगरे गम्बन्ध मनाई के लिए ही होता है । बाग्तक में यह रोग का लक्षण है। टेबिन इने इतिम उपायों में रोहने का वन देवन यह होगा कि शरीर में अध्यवस्था बोसी। शरीर की उलेबिन करने बाली परनाएं, जैने आक-निमन ठड, बाहरी चोट, प्रवत्त मनोविकार प्रापादि वा नतीया पाय- यह होता है कि गरीर, बंदों के निर्दे पर जमा हुए दिलागिय हम्म को पूनके सामनि ब्यान की ओर बारण मेजने सदता है। उन्न गयद बह इस्य प्राप: बोडों के पान बाक्य एक बाता है। बह नुबन वा बारण होता है, जो उस्मूबन वारमी ने मदा बोहों ने नीवे की बोर ही प्रकट होगी है। इस शिवा के किनी भी रोगी में यह रमा देग मनते हैं।

दिन जेंगों में विज्ञापि इन्य नमा एता है है

अपना स्वाभाविक कार्य उचित रूप से पूरा नहीं कर सकते। वहां रक्त-प्रवाह में रुकावट होने लगती है और इससे धारीर का पूरा पोषण नहीं हो पाता। जहां विजातीय द्रव्य बहुत ज्यादा जमा हो जाता है वह अंग छूने पर ठण्डे जान पड़ते हैं। उनमें गर्मी लाना बहुत मुश्किल हो जाता है। पहले-पहल धारीर के अग्रभाग—हाथ-पैर ठंडे होते हैं, पर जल्दी ही दूसरे अंगों के हिस्सों में भी इसका असर होने लगता ह।

## आकृति-परिवर्तन

साय ही, विजातीय द्रव्य के कारण दारीर की आकृति में एक अस्वाभाविक परिवर्तन हो जाता है। पर यह प्रायः हर आदमी में होने की वजह से अधिकांग मनुष्यों की इसमें कोई आरचर्य नहीं होता । इन परिवर्तनों से ही मनुष्य मालूम कर सकता है कि उसके शरीर में विजातीय द्रव्य कितना अधिक जमा हुआ है। गर्दन और चेहरा ही ऐसे अंग हैं जिनमें जरा भी परिवर्तन होने पर ताड़ना संभव है। यहां हम शरीर के विल्कुल नीरोग होने के चिन्ह की बात पर पाठकों का ध्यान फिर आकर्षित करते हैं। जब इस चिन्ह से यह जान लिया गया कि शरीर नीरोग है तब पाचनेंद्रियों में सड़े हुए पदार्थ की उपस्थित की रांका ही नहीं की जा सकती। और उनमें नहीं सो फिर शरीर में नहीं है; क्योंकि उन विकृतियों का प्रारम्भ तो वहीं से होता है। लेकिन उस चिन्ह से यदि यह शरीर नीरोग न जान पड़े तो हमें सबसे पहले शरीर की आकृति के परिवर्तन से पता लगाना चाहिए कि शरीर में विजातीय द्रव्य की मात्रा कितनी है। कभी-कभी तो विजातीय द्रव्य इस रूप में होता है कि हर कोई उसे देख सकता है, जैसे गांठों, गिल्टियों इत्यादि के रूप में । ये गांठें आदि शरीर की आकृति के अन्य परिवर्तन की भांति ही धरीर को भीतर से विल्कुल साफ कर देने के बाद अपने आप लुप्त हो जाती है। पर उन्हें कृत्रिम उपायों से दूर करने की चेप्टा करने पर शरीर को हानि पहुंचती है। कारण, उस दशा में वहां का विजातीय द्रव्य शरीर के दूसरे भाग में चला जाता है।

### जीर्ण तथा तीव रोग

जिस मनुष्य के शरीर में विजातीय द्रव्य भरा है उसे जीण रोगों के चंगुल में फंसा ही मानना चाहिए। जिसमें जितना अधिक विजातीय द्रव्य है वह उतना ही अधिक रोगग्रस्त है। विजातीय द्रव्य के संग्रह के, एक के वाद एक होनेवा रे परिणाम से, रोगी को अपने शरीर की स्थिति का वास्तविक ज्ञान होने लगता है।

विजातीय द्रव्य प्रकृपित होने वाली वस्तु है, पर इस प्रकोप का शीध अथवा देर से आरंभ होना वाहरी दवाओं पर निर्भर है। ऋतु-परिवर्तन, प्रकृषित होने की शक्ति रखने वाला भोजन, अथवा अन्य कारणों से प्रकोप का आरंभ हो सकता है। शरीर में विजातीय द्रव्य की अधिकता होने पर यह प्रकोप सारे शरीर में या शरीर के अधिकतर हिस्से में फैल जा सकता है। प्रकीप से गर्मी उत्पन्न होती है। प्रकोप की किया चारों ओर होने पर सारे शरीर को इस गर्मी का अनुभव होता है। इसीको लोग बुखार की गर्मी कहते हैं। प्रकृपित होने पर जब विजातीय द्रव्य तेजी से फैलता है तो गरीर यथायवय उसे वाहर निकालने में पूरी कीशिश करता है। विजातीय द्रव्य निकालने के इस शारीरिक प्रयत्न का नाम ही.बुखार है। इसलिए शरीर में प्रकीप-किया के कारण होनेवाला प्रत्येक तीव ज्वर शरीर की पुन: स्वास्थ्य-प्राप्ति की चेप्टा है । ऐसे ही ज्वर-संबंधी विकार तीव्र रोग कहलाते हैं।

इससे सिद्ध होता है कि शरीर के अपने प्रयत्न म सफलता प्राप्त करते ही ज्वर अपने आप दूर हो जायगा। ज्वर के दूर करने का यही एकमात्र प्राकृतिक उपाय है। यदि ज्वर को कृत्रिम रीति से दवा दिया जाय तो प्रकृपित होने वाला पदार्थ शरीर के भीतर ही रह जाता है और शरीर में जीण रोगों की ज़ड़ अधिक दृढ़ हो जाती है। क्या आपने कभी हम् और स्थान दिया है कि आपना एक दोग्न तो जबर के बाद अपने को अधिक तहुन्का बनना गा है और दूसरा जबर से क्याओधि की पिहायर करना है ? यह बचा ? हमलिए कि बहुने उदाहुन्य में तो जबर को सरीर के भीनर जमा हुआ कुदा निवानने में सपनना मिली और दूसरे में मर्दी।

#### ज्बर और उसके स्प

उन्हर के भिन-भिन्न बाहरी नया के आयार पर दान करी काम पर गये हैं। गी स्तर बच्चा पर भावमण करने बाने रोगा के भी अनेक नाम रस्ते गय है। बच्चों क ग्रारीर म मुचार का बाम करन की ग्रार्स अधिक राजी हैं। इमिल्य स्तरा, लालाका, चेक्स (शीवला) इत्यादि और रोगा के उनके गरीर की सराह हुआ क्यों है। हैंग, दारवाद और वैक्सा भी ये हैं। हैंगा में से हैं। वैता वहले कर आये हैं, इन गबकी उत्याति का कारण एक ही है। पर इतका मिन-नियं का कई बाना पर नियं हैं, विद्यायन रूप बान पर कि ग्रारीर के सराह के स्वामानिक माने के निवद हिताबीय हम्स दिवान कम गांच्याश स्वस्टा हुआ है।

शाय भोटे आदिमया को तीव जबर न होने का बचा कारत है ? यही हि उनका समीर दिवानीय डब्स का अम करना रहना है। गणीने तथा दूनरे माणीं ने स्थात ही हिन्सा निक्त पाना है। रंगे नोग आदा अपने अच्छे खाग्या पर अभिमान करने हैं, क्यांत थीरे भीरे इच्छेट्ट हाने बादे बदार्थ में उन्हें तकणीर नड़ा हाती। नेरिन आगे क्यकर दवा द्वारा दबाये हुँ उचर कांत्र मनुस्ता निमान ही इनकी में मित हु मी है। बहुरालन बन्दी पुरु निक्यनेनाओं सीमारिया बी अर्था स्वीय प्रवृद्ध होते हैं।

#### अन्य विकार "

दम् विज्ञानीय प्रश्नवे महत्रमे वयण वरणका विकार उपयम हाते हैं--जिन्हीं, यूकाम, नामी देनीक्सार नया अबद् नहायी यात्र आहम हाते हैं। बीक्त भारण बाता है। धारणीरे सायमधी किया बर्गा भनाने अपने हैं। जरिए का बोर्स-कार्ट दिस्सा ना बिक्क नष्ट हो जना है। दान सराव बान सरेद सासिर सेंगज हा जाती है। श्रोपा और काना सें अपना नाम अच्छी नग्ह चरने की ग्रावित नहीं रह जाती. अवे और बहरेरन नह की नोबब आ जाती हैं। हाय-पैर, जिनमें विजानीय इस्य अधिकतर जमा होता है. ठडे रहते लगते हैं । इसरे बार प्राय गठिया सामबर आसा हैं । पाचन "बिन दिन दिए शील हानी आती है । अभी नक्त और नभी पनने दस्त आने रूपने हैं। ये दाना नीत्रशे वर्वी व निरण ह । प्रवत्त की सारी जिलाबा से जोना म गर्वी बढ़ जानी है और मण बारर निकानने में महायक आना ॥ रहनेवाना निकास पदार्थ गुरू जाना है और दुसी से चुक्त हा जाना है। जब बाबी दारीहरू यदि का निरा का जार हाता है ता दिना पर्वे पदार्थ भरीर संचनत दर्गा ने सम संबाहर निश्नने हैं। इलीको अदिनार करते है।

#### फेफरों के रोग

दूसरा इतियां की यानि केन्सी में राग का आरक्त प्रकृतित हैनेका के वार्य कमा ही बाने कर ही होना है। इन पार्थों के निकास में रकाक हो। होना है। इन पार्थों के निकास में रकाक हो। होना के वार्यों के निकास में रकाक के वार्यों के निकास है। होने यारि के आरक्ति हो। कार्यों के निकास में रिकास में वार्यों के निकास में रिकास के निकास के वार्यों के निकास के वार्यों के वार्यों

हर आदमी अपने पेजवा की टीक दणा का आद कर माजा है। जब पेजवा नीगो पाने हैं जब हव मूह बहर प्रवाद नक्त माना की है। जब कमी हक मूह माजप करने का क्या होन पद तो जनका पता प्रवाद हमाना कारण क का पा बैकार्स की की है। कारों है। जाक के पता क, लीक्यन बहुत माज होने के कारण हम सांस लेने की रोति का निरीक्षण करके फेफड़ों की दशा का निभ्रांत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। सांस के साधारण रूप में चलने की दशा में केवल इतना ही धान देने की जरूरत है कि हम अपना मुंह बन्द रख सकते है या नहीं और इससे भी अच्छी परीक्षा यह होगी कि हमारी नींद की दशा में दूसरा आदमी देखें कि हमारा मुंह खुला रहता है या बन्द । इसके सिवा मुंह के कम या ज्यादा खुले रहने पर भी बीमारी की कमी या अधिकता का नि:संशय ज्ञान हो सकता है। दीर्घ नीवी मनुष्य प्रायः चलने समय अपना मुंह बन्द रखते हैं। उनके बड़ी उम्र पाने का कारण यही है कि उनके फेफड़े नीरोग होते हैं और उनका साधारण स्वास्थ्य अच्छा रहता है। ज्ञाव उन्हें सांस लेने में कि जनाई होने लगे तो समझ लीजिए कि अब उनके दिन पूरे हो चले।

क्षण भर के लिए भी यह मत मानिए कि मुंह का खुला रहना सिर्फ एक आदत है। यह दया सदा किमी-न-किमी रोग की सूचक होती है और विना इस रोग के दूर हुए, कोशिय के बिना मुंह बन्द नहीं रखा जा मकता।

यदि हम लड़कियों पर इस बात की परीक्षा करें तो हम प्रत्येक लड़की के संबंध में यह जान सकते हैं कि वह पिवत्र मानृ-कतंब्द्र, अर्थान् स्तनों से बच्चों को दूध पिलाने योग्द्र है या उसके योग्द्र होते के लिए उसे पूर्ण चिकित्मा की आवश्यकता है। रांगी फेफड़े वाली स्त्रियां बहुन कम अपने बच्चों की दूध पिलाने योग्द्र होती हैं। दूध पिलाने की अयोग्द्रता का, लोग चाहे जो कारण समझने रहें, लेकिन मुख्य कारण यही है।

# रोगों की एक जड़ है

उपर्युक्त वातों के आवश्यक परिणाम बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और रोगियों की चिकित्मा इन्हीं पर निर्भर है। समग्र भीतरी रोगों का (सिवा बाहरी चोटों के) केवल एक ही कारण हैं और सच पूछा जाय तो नोग भी एक ही है, जो तरह-नरह के स्पों में प्रकट होता है।

# रोग दूर कैसे हो सकते हैं?

वास्तव में तो गरीर अपनी चिकित्सा आप करता है, हमारा काम तो सिर्फ इतना ही होना चाहिए कि हम सब वातों का ऐसा सिलसिला बिठा दें कि उसे आरोग्य-प्राप्ति में सफलता मिले। इस दृष्टि से हमारा काम सिर्फ इतना ही रह जाना है—

- (१) बरीर में प्रकुपित होनेवाले नवीन पदार्थं न जाने देना । (२) ऐसे पुराने पदार्थं को बाहर निकालना । इसके लिए हमें करना यह चाहिए:
- (१) अपना जीवन प्राकृतिक नियमों के अनुसार विताना। (२) इस ओर ध्यान रखना कि शरीर की गंदगी निकालने वाली इंद्रियां अपना काम मजे में कर सकें।

# प्राकृतिक आहार क्या है ?

सव प्रकार के रोगियों के लिए किसी एक ही तरह का भोजन नहीं बनलाया जा सकता। प्राकृतिक भोजनों में से रोगी की दबा के अनुसार कोई भोजन चुन लेना चाहिए। किसी खाद्य या पेय पदार्थ मे टकार आने पर समझना चाहिए कि मेदा उसे स्वीकार नहीं करता । जबतक शरीर स्वीकार न करने लगे उस वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहिए। स्वास्थ्य चाहनेवान्त्रीं को अपना एक मूल सिखांत बना लेना चाहिए कि मेदे पर कभी ज्यादा वोझ न डार्ले—टूंसकर न खायें। इस से पूरा पाचन नहीं हो पाता और अधूरा पचा हुआ। आहार शरीर के लिए सिर्फ कूड़ा है । पुराने रोगी का पेट प्रायः निकल आता है, इसका कारण पेय पदार्थ का अधिक प्रयोग है अथवा पेट में विजातीय द्रव्य का प्रकोप । ऐसे मनुष्यों को अपने भोजन का अन्दाज नहीं रहता। उन्हें चाहिए कि कभी उचित परिमाण स अधिक भोजॐन करने का पूरा खयाल रखें या दूसरा कोई उनपर निर्भाह स्थनेवाला होना चाहिए ।

भोजन के ठोस होने पर सबसे ज्यादा खयाल रखना चाहिए। जो चीजें निगलने के पहले खूब चबानी पड़नी है वे नरल या मुलायम भोजन की अपेक्षा हमेया जल्दी और आसानी मे पचने बाली होगी हैं। सूक पवाने से ही भोजन में मूह भी सार जीवन परिमाण में मिनती है और यही भोजन ने पदाने योग बनाती है। इगी नारण के सन साहार जिन्हें हम जनती अगसी—विना बनती अवन्या में गा सकते हैं। बहुत जन्म पत्ते हैं और हमारे सारीर ने लिए बहुत हिनदर होते हैं। सारे पदाने हुए भोजन पदाने में मारी होने हैं। पर भोजन नोई मी हो जो मूच द्याना बहुत जन्मी है।

शरीर के कड़े की सफाई

अब हम शारीर में जमा हुए गुरे को निकालों सवा बिन्तुल गराई होने सक इस जिला को जारी रसने के गबय में बतलाना चाहते हैं।

शरीर में मन निवानने वाली बार मुक्त इंडियों है—पेन्छने, स्वया (बमवा), मृदा (पागाने वा स्थान) भीर मनेडिय ।

शरीर की गरपी निकारने के लिए इन सबसे पूरा काम कराना काटिए।

फेरु-चु- सह सपना काम प्रारीत में अच्छी हरकन होने पर ही कर गकते हूँ । पूर्व नीरीमना के नियु मुनी हमा में पूरा क्यायाम करा। आक्यक है । दिसानीय इस्य सम्म होने एकने पर शो। आसाधि में सबने मार नहीं गांव केने लगता है।

स्यया—नमड़े की तह के पान जमा हुई गड़गी निकारना ही स्वया का मृत्य काम है।

बनार पर नाम निर्मातन रूप से होता रहता है से तक हिमों स्वरण सीमारी नी मानात नहीं नी सा महर्गी। सेन्ति दिसालय उपने ने नारा राज-मनात में बच्चा पड़ते हैं हवा से नारे में विविक्ता मा मार्थि है। हमें एक मनार मिनिट हूँ हवा में पर्वी पहुंचा कर उपमें किए से नाम नारे की मार्गित होता ने मार्थि है। देशों दे बहुते के लिए पर्वी भीर देशक देशों स्वाप्त है। रक्षा पर भी हा पीलों का सामा मार्ग पहला है। इसने उपने दिन पुन जाने हैं और यह का स वापर्व-मिद्धि ने लिए बालाम्नात में बद्दश्र और नोई उत्ताद नहीं है। मही तीर में लेने पर बाला-स्नात में राजा में नाम नरते नी तानत सा जाड़ी है।

छोटे बच्चा ने लिए एन इमने भी अधिन स्वामा-हिंच जाय है। सारते देगा होगा दि टेइन सारते पर बचने मा ने दिग्दना चार्ट हैं। वच्चों में मात्रा ने धारित की गर्मी में अपना बदन गरन बन्ते की बही इच्छा प्रहाँ हैं। उन्हें ऐमा करना भी चाहिए। निक मात्रा ने हुदद में पवित्र और स्वामावित सार्-स्रेम का निशाम है, बद अपने बचने ने साथ पुणाने और आपने धारीर की गर्मी प्रृथाने का बार्च की समझा में बच्चे गर्मी हाली चाहिए। यदि उमोके धारीर स्वामी स्वयंद गर्मी हाला की आपना की आवाजकार हो। स्वामी स्वयंद मार्ग स्वामा की आवाजकार की स्वयंद्र स्वामा स्वामा है। स्वतं से सार्-सार्ने बच्चे वा पालन करा बच्चे में । वच्चे की सार्मा सार्मा सार्मा स्वामान्य हो उस्लें हुए हुए सा सार्माहत्व वैता वार्मार सार्मा स्वामान्य हुने हुने सार्मा स्वामान्य हुने की सार्मा है।

क्षांत, गुर्ता-मन्त्र के इन बीना भीतरी रचानों पर बार्य-स्थान का समर पड़ता है। पर इसके निवा उन्हें विरोध प्रमायणाणी प्रयोग की आवस्पकता होती है। मोरार अनुसित होनेबाले ब्रह्म अधिनतर उन्हीं मार्गी ने निकार है। इसरे अभी की अपेशा कहत बरेबे बहुँ। बसा बहुते हैं । इसलिए बहु, होया गरो में बन दीना में ठंड पर्याने की कमरत है • इंग्ला गर्या गरूब मीर उनम बराव उदर-नान या मेरन-नान है। विज्ञातीय द्रवर को बाहर निवापने के लिए प्रदर्गनार के समय उन हार्य के मरालंबक रिक्ट रुपान की कपड़े में राहता पहता है। पर, स्था पानी के भीतर ही बन्ता करिए । इसमें ब्राइ: परिया हो बारी हैं, जिन के द्वारा विद्यारीय इध्य गायारण काण की स्रोता विवास में बाहर निवास है । जर बर पाएंका श्पाना में दर्भी मानुस हो हैंने बनान तेने आसिए। समय है, बची-बची पूर्व दिन में राजनीत भार भार बार रेजे वहें और दिसी दिसे दार में गुरुनार चंता

तक लेने पड़ें। इसके लिए नदी का जल सर्वोत्तम होता है क्योंकि यह जमे हुए मल को जल्दी से ढीला कर देता है। अगर भारी जल मिले तो व्यवहार करने के पूर्व उसे कुछ देर पड़ा रहने देना चाहिए।

दन मानों के गुरू करने ही अद्भुत फल होता है। दस्त ठीक आने लगता है। कभी-कभी तो अपर वर्णन किये अनुसार बंबा हुआ, गुदा में विल्कुल लगा न रहने बाला मल निकलता है। कारण, इन स्नानों से आंतों का संचित प्रकृषित होने वाला पदाथ बाहर निकल जाना है। वेकिन बरीर की पूरी सफाई न हां लेने तक नया विकारी द्रव्य जमता जाता है। इसीलिए पूर्ण नीरोग होने तक इस चिकित्सा को जारी रखना चाहिए । विकित्सा कितने दिन करनी चाहिए यह गरीर में जमे हुए विकारी द्रव्य की मात्रा तथा स्नानों के प्रभाव पर निर्भर है। हफ्तों तक और कभी-कभी महीनों या वर्षों तक करनी पड़नी है। जो मनुष्य जन्म के साथ ही रोग लाते हैं उनकी चिकित्मा में सबसे अधिक समय लगता है। पर उन नवयुवकों पर, जो घोड़े ही दिनों से रोग के पंजे में फंसे हैं, इसका असर वहुत ही जल्द होता है। विकित्सा आरंभ करने पर प्राय: उपर्युवत ज्वरों में से कोई एक फूट निकलना है। इससे सफाई का काम बड़ी तेजी से होता है। इसका इलाज भी ठीक उसी ढंग से करना चाहिए। उस ममय, विशेषकर त्वचा को शीख काम में लगाने की चेष्टा करनी चाहिए। पश्चीना निकलते ही जबर तत्काल लोप होने लगता है। हम कह आये हैं कि ज्वर पुनः स्वास्थ्यलाभ की चेप्टा है। विकासी द्रव्यों का बाहर निकालना इसका उद्देश्य है। विकारी द्रव्य वाहर निकलने पर भीतरी प्रकोप और माथ ही गर्मी भी दूर हो जाती है। लेकिन इस बात पर फिर ध्यान दिलाने की आवस्यकता जान पड़ती है कि छोटे बच्चों की दया में तो पसीना लाने के लिए माता की गर्मी ही सर्वोत्तम उपाय है। इसलिए माता को अपने शरीर की गर्मो पहुंचा कर वच्चे की जीवनरक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक तीव रोग में रोगी को काकी पत्तीना छ न। ही हमारी पहली

चेप्टा होनी चाहिए । इस बात पर भी समान रूप से ध्यान देना चाहिए कि अन्य विकारी द्रव्य निका-लनेवाली इंद्रियां भी अपना कार्य उचित रूप से करती रहें। इसीलिए ज्वर में उदरस्नान और मेहनस्नान वारंवार देने की आवश्यकता पड़ती हूं।

ज्वरों में डिप्यीरिया द्यायद सबसे भयंकर गिना जाता है। बच्चों के लिए तो यह कालस्प ही समझा जाता है। शरीर में विजातीय द्रव्य के अविक मात्रा में एकत्र हो जाने पर और सिर में रकावट पाकर लीटते समय सांस की नली तया फेफड़ों में विशेष रूप से जमा हो जाने के कारण, वच्चों पर डिप्यीरिया का आक्रमण होता है। त्वचा के अपना काम प्राय: बंद कर जाने पर ही विजातीय द्रव्य का इतना जमाव होना संभव है। इस लक्षण से, साव-धान माता-पिता पहले से ही बच्चे पर होनेवाले ज्वर के आक्रमण को जान लेंगे। डिप्थीरिया-रोगी के गरीर की उपमा एक ऐसी वोतल से दी जा सकती है जिनमें प्रकृषित होनेवाला— तमीर उठनेवाला तरल पदार्थ भरा हो। उसमें उकान शृह होने से विकारी द्रव्य बोतल के सिरे की बोर जाना चाहता है, क्योंकि वीतल की चहारदीवारी उमे बाहर नहीं जाने देती । यही हालत डिप्थीरिया रोगी की भी होती है । टिप्योरिया के साथ ही प्राय: लालज्वर भी हो सकता है, बयोंकि प्रकीप सारे शरीर में फैल जाता है। ऐसा होना लाभदायक है। इससे कूड़ा वाहर निकलने में त्वचा से भी सहायता मिलती है । ऊपर लिखे अनुमार पसीना लाने का उपाय ज़रूर करना चाहिए। संभव है, वच्चे को पसीना लाने के लिए माता को घंटों उसके साथ विस्तर में लेटने की ज़रूरत पड़े। यह मंभव न हो तो वाष्यस्तान देना चाहिए । उदरस्तान या मेहनस्तान भी बारी-बारी से नीरींग न होने नक देना चाहिए। डिप्यीरिया में प्रायः रोगी का दम घुट जाता है। हमें इसे रोकने की चेप्टा करनी चाहिए। इस भय का कारण जीन पर जमी हुई नफेरी है। पर गले की जलन को बंद कर सकते में रोगी जुरूर वच जायना । बोध पर जबी हुई महेती हूर करने के निष् रोगों को मुद्द में देश पानी घर रणना काहिए। में हुँ में उप पानी के गर्म हो जाने पर किन देश पानी घर नेना पाहिए। यहां कर कि महेती किन इस्ते कि वह हुँ हुँ हैं ने ना यह उपाय जारी रणना चाहिए। इसने रोगी को जायना काम मानुस होना। गोगी की इस पान काहिए। प्राने रोगी को जायना काम मानुस होना। में गोगी की इस पान काहिए। जानी मुंह के मीन्य नक पहुंक नो जीर नहेंदी जानी सह पाननी पहे।

यह चिरिस्सा बहुत छोटे बच्चों को नहीं दो जा गर्दी। उनके निर् मेहन्तनात काफी होगा। उनका ऐसा अध्या असर होता है हि एक ही जाता है। बाद सारी सर्वेदी प्राय: लोग हो जाता है। वर्षा बाजल व्यवस्ता करने में तो सीच कर प्राय: बचने में बहुत ही बच मदेह रहना है। इसिट्स ऐसाजन प्राप्त करने में कोई उत्ताय उटा न दमना चाहिए। उसके अबाद में मदी बाजर निर्माण महिए। उसके अबाद में मदी बाजर निर्माण महिए। और संभव हो सो मूद में, बई चटे पटा उनने देना चारिए।

#### आगःति यिज्ञान

बर्नमान प्रवासित विशिष्टा-विधिया रोग के प्रश्यक्ष प्रकट हा जाने सह कोई उपाय नहीं कर महती, क्योरि प्रदेशक शेवी की न्यय उसका जान न ही बाद तबतर का उसे देन कर बान ही नहीं सकते ! भारति-शिक्षान की वरीयत आज हम ऐसी अकती विवृति में हैं कि एक निविधन का ने बीमारी की बाँड, समया दया हुई दमा तथा समयी आसीनर प्रशास को भनीवादि जान मकी है। हमें रोग के पूर्व बच्च में बढ़ जाने यानी सब मोदी की नजरी में भा बार्ने तम दशना नहा पहला । बोद के असाप्त हो अने नर हमें बाट नहीं देखते पड़ती। अब हमारी ऐसी रिवर्ति है कि इस जब बाहे तिथीत है। में रोग की द्वार का बाद सबते हैं, अतुरव रोगी के स्थ्यं प्रतुपत्र बाने के बहुत पहुँग ही यह बात ही भवता है। दमनिहृत्य द्रव्या करने ही कीय को पुर कार्ने के निष् विविध्या आवेश कर सकते हैं।

इत्रम्भी में बात गराब करने को प्रमान गर्दी होती है।

इसके निवा हुने रोगी की यह दूछने की आवरपकता नहीं नहीं कि भीव कही है, शेव के स्थान क्या है? बस्कि न्वयं हो नन्तान निरिचन पिन्हों ने हम उन्हें पहचान सहते हैं । अपने बाम के निर्हमें क्रियान प्रमुद्धित चितित्साओं की भौति बहुमून्द्र गान्त्री की आवस्त्रका नहीं पहती । परीक्षा के लिए हमारी आंखें ही कारी है। परोशा के ये यक गया हमारे साम रहते हैं और यह कहता कोई गर्वकी बाद न होगी कि यदि सन्त्य इस नकीन किया का कानी प्रस्तान कर के तो उनहीं आंगें उने कभी नदेह या यो वे में न पड़ने देवी। इस प्रकार सम्म हो आने ने परीशा-विधे मंबदी महत्त्वार्ग उप्रति हाँ है। न्त्रियों के युक्त रायों की परोक्षा के लिए तो यह कहन ही अनुष्य उपाय है। अब इन दोवों ने निगृहका-नीय परीक्षा की कोई आवरपत्तना नहीं गही । अब इस पूर्णत्या निश्चित ज्या से वेडा की भीतरी दारा का, स्वानीय परीधा-शिव में जितना संभव है जन ने पत्री अधिक अध्यीतरह ने जान नको है। बहुना नहीं होगा शि सित्रयों तथा दन गोगी बाडी टहरियों को परीक्षानीर्दंश में हिम प्रकार संप्रता का नामना करना पहला था । अब प्रन्ते क्षमने सरकारा मित्र गया है।

बाने मेरेट विचा जा महला है कि जब हुव एक ही गोग भीर उसकी एक हैं। चिनामा मानने हैं में वरिता करवा हो मार्च हैं। होट है, हमारे गाम हिमी ऐसे ऐसी थी, जो आने राम था शहर हमा है, आने पर जमें हमारी मिलाजीति मिला गाद का क्यान करवा हमी है। मार्चारी गरावा में विचाय कर में मारी हमारे महाना में में विचाय कर में मारी हमा पर मारी मार्चार गात नहते हैं। इसलिए समीद नहाम बाद करवा है कि एक्ट मार्चित में में मार्चार हमा है मा हमी। वेबल एक इसी में हमा मार्च हमा है मा हमी। वेबल एक इसी में हमा के मार्च हमा है मा हैं और मेरी चिकित्सा-विधि इस विधा की कुंजी है।

आकृति-विज्ञान की सहायता से हम अस्वस्य शरीर की आकृति के छोटे-से-छोटे परिवर्तन को भी तत्काल जान सकते हैं और इस तरह सारे शरीर अथवा उसके किसी अंग की दशा का निश्चित रूप से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं; क्योंकि इन सारे परिवर्तनों की उत्पत्ति शरीर के एक ही भाग में अर्थात् मेदे से होती है।

कोई तीव रोग प्रकट होने के पहले कुछ समय तक शरीर में दवा हुआ रहता है। इसलिए यह वात व्यान में भी नहीं आ सकती कि पूर्ण स्वस्य मनुष्य पर एकाएक चेचक, हैजा, पेचिश इत्यादि रोगों का आक्रमण हो सकता है। रोग तभी संभव है जब पहले से शरीर में विजातीय द्रव्य भरा हो।

# सर्वांगीरा चिकित्सा-शास्त्र

(एक नए दृष्टिकोण की रूप-रेखा)

डा० इन्द्रसेन

चिकित्सा-शास्त्र अनेक हैं, उनके आघार और सिद्धान्त भी अनेक हैं और सभी का छोटा-वड़ा इतिहास है, लौकिक-अलौकिक सफलताओं का विवरण है, सभी की कुछ-न-तृछ किटनाइयां और कमजोरियां भी हैं। यदि इन अनेक शैलियों में अभी तक उचित समन्वय नहीं हो पाया और मानव के स्वास्थ्य-वर्द्धन तथा रोग-निवारण के लिए एक संगठित चिकित्सा-शास्त्र नहीं वन पाया है तो क्या इसका यह अर्थ नहीं कि हम अभी तक इस शास्त्र के उस वास्त्रविक आघार को उपलब्ध नहीं कर पाये हैं जो कि इन सब शैलियों को उचित हप में समन्वित कर सके?

मानव का विहमुंकी तथा इन्हात्मक मन सहज ही किसी आंदिक सत्य पर इतना मुख हो जाता है कि वह उसे पूर्ण सत्य मान लेता है और अपने सत्यान्वेपण का पूरा आधार बना लेता है। या फिर ऐसी मुखता में तथा ऐसे आधार में ऐसा असंतोप अनुभव करता है कि प्रतिविधा में किसी विपरीत विचार को वह पूर्ण सत्य मानकर चल पड़ता है। दोनों अन्वेपणों में वह सफलता बहुत-कुछ प्राप्त कर लेता है। प्रत्यक्ष ही दोनों वृष्टिकोणों में सत्यांश होते हैं।

परिचमी-विज्ञान तया शेप ज्ञान और इनका गत ४०० साल का विकास व इनकी अनेक गति- विधियां मन के एकांगी तथा क्रिया-प्रतिक्रियात्मक स्वभाव को ख्व प्रदिश्तित करती हैं और यदि आधुनिक पिरचमी ज्ञान-विज्ञान को हम यथार्थ रूप में आंकना चाहते हैं और उससे यथार्थ लाभ उठाना चाहते हैं तो हमें आधुनिक यूरोप की मानसिक-चौद्धिक प्रवृत्ति को भली प्रकार समझ-बूझ लेना होगा।

प्राकृतिक चिकित्सा अत्यन्त सुन्दर और हित-वर्द्धक विज्ञान है, परन्तु यह भी मन-वृद्धि के किया-प्रतिकिया के खेल में से ही उपजा है और इसके स्वभाव में एलोपैयिक चिकित्सा-शैली के प्रति प्रत्यक्ष विरोध और प्रतिक्रिया है। प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी यह तथ्य हमें इसकी यथायं धारणा बनाने में अत्यन्त सहायक ही सकता है, वास्तव में यह इसके लिए अनिवार्य है।

एलोपीयक चिकित्सा-शैली निद्यिय ही अपिधियों के आविष्कार और उनके चमत्कारी प्रभाव के मोह में पड़ गई थी और चिकित्सा-विज्ञान के मौलिक लक्ष्य की भूल गई थी । स्वास्थ्य-वृद्धि और स्वास्थ्य-लाभ की अपेक्षा औषध-चमत्कार उसे मानों अधिक प्रिय हो गया था और यह वृत्ति इस पराकाष्ट्रा तक जा पहुंची थी कि रोग-निवारण केवल लक्षण-परिवर्तन का रूप वन गया था। इसके साथ-साथ अन्यथा सांस्कृतिक रूप में भी यूरोप में कला-कीशल, ऐस्वयं और भोग के कारण ऐंगी वरिस्थिति में आरुवर्ष नहीं, जो बुछ कीया ने यह अनुभव रिया रिआलिर इन बडने रोगा और जीवन को स्वामादिक गरिनयों के हशान का मूल कारण क्या है? उन्होंने यह भी अनुभव किया कि विकित्सा केयत रोग ने लक्षणों को ही दूर करने की जिला कर रही है, यह मुख पारण की तो सोजनी ही नहीं। यह विचारपाग गत् शतासी में प्रकट हुई और अमेती के श्रीमनिद्य प्रवर्श में । वे संपान मेनिक भावनावाने व्यक्ति थे और उन्होंने बाङ्तिक विक्तित को जन्म दिया नया हुने समुद्ध विज्ञान की अवस्था तक पहचा दिया। प्रीक गीतनवाँ जी शि १९२० में बेल्न दिरवेदिदाण्य में प्राप्तिक विकिथ्या के अध्यक्ष निवृक्त हुए और जो माने समय में जर्मनी में प्राहर्तिक विशिष्टमा की परम्परा के अमूल नेता थे, अपने अगिड unt (Der Natur Arzt, niefen faleme) में में मन्द्र के सम्बन्ध में निमने हैं---"प्रीमनिद्य ने प्रकृतिर विशिवा वा मानिकार वही दिया या। इन्होंने ही इनकी आप्ता की अनुसंक दिया और अक्-तिर विदित्या ने प्राचार-प्रमायों की इस प्रतिमा से विकास्त किया कि उनके अनुवादियों को इस किया में कम ही कुछ करने की बाबी पहा ।" (Der Natur Ant, इवरी बिग्द वृत्र ६४%) ।

शीमनिद्रब विमान थे और यह विजना मन्दर तथ्य है नि भाष्ट्रतिक चिकित्सा के आपूर्तिक प्रवर्तक से से । बारनव में वे बिहित्सक से मंदिर रवस्य जीवन के करा-नार ये और लोगों को वे हतस्य नीवन की क्रांग निमाया बरते थे। उन्होंने बाग्नब में प्राकृतिक विकिता की आमा को, जो कि प्राप्त गण्य है, अनमध क्या। उन्होंने अनमव दिया हि प्रष्टित न्ययं ही गरीए की विप्त-वाषाओं को दूर काने का यान करती है, दबाइयां उनका उत्तव नहीं। गरीर की रोगी की दूर करने की रवाभावित शक्ति को प्राप्तित विकास के आचार्यों ने शुब ही अनुभव तिया और यही अनुभृति उनकी प्रधान प्रेरणा बनी । इसी पर उनका माशा शास्त्र स्पित है। मानव का बारीर कैमा अपूर्व मगटन है. इसमें अव-अंग का कैसा गहपोग है, इसकी अर्थन्य जियाए की मिलकर काम करती है। यदि यह स्वान्ध्य नी दरा में प्राकृतिक क्यि और नार्य नुगणना का ऐना बादवर्यजन नम्ना है तो बमा रोग में घट इनग गुर्वेगा भिन्न हो जायता ? बारपप में नहीं। शांत स्वर्ध शायद प्राकृतिक प्रयोग है घरीर में उपस्थित किसी वी दूर करने वा । यह, शाराय में, अद्मुत द्रष्टि थी और देने प्राकृतिक विकित्सा ने गिळ करके दिला दिया । दण्डांत के तौर पर गुजन को लीजिए। बोट लगने अपका जन्म हो जाने से सबन हो जाया करती है। इनका अर्थ बचा है ? दारीर की प्रकृति करां अधिक क्रक भेज गरी है जिससे बहां था सर्वित घरीर-तरब पुर: सर्गटित ही बाद । यह विकता गुन्दर जीव ही रहा है ! बवा बार बाने उत्तवहारा इन प्राष्ट्रीत चरान की नहानत करना चाहेंने अधना इसे शेवना चाहेंनेरेप्रत्यता हो इसकी महाबदा बनना हमारा शाम ही गरता है, म हि देने वसाना या श्रेषना । जिन बारण में यह मराण पैश हुवाई वह दूर हो बाने से यह रेकाः दूर हो जाएगा। ज्वर भी दमी सवार का बार्ड डर प्रभेग है। यह नो कोचन-किया है। इसे दक्षणे की कोशिय करना आपर्द है। और दर्द भी देश बात का गुपक है कि मारीर के नवरित भागमें बुत बाद, बुत विवार है । विदिश्तव बा मध्य तम दोत को इस करता होता वर्णाए

न कि दर्द को। अगर दर्द को दूर कर दिया और दोप वना रहा तो वह ज़रूर किसी और रूप में प्रकट होगा।

प्राकृतिक चिकित्सा की मीलिक अनुभूति, कि प्रकृति में दारीर को स्वस्थ रखने की स्वाभाविक प्रवृति है, खुव सत्य है। रोग विशेष प्राकृतिक प्रयोग हैं, गरीर में उपस्थित विघ्नों को, चाहे वे कीटाणुओं से हो अयवा अन्य कारणों से, दूर करने के, यह भी सुन्दर तथ्य है। हमारे चिकित्सोपचार प्राकृतिक शक्ति को सहायता करने तथा उसे पुन: जाग्रत करने के लिए होने चाहिए, यह भी अत्यन्त सरल और वृद्धिगम्य विचार है। रोग होते क्यों है, इसका समावान भी स्पष्ट है। अप्राकृतिक जीवन से, कृत्रिम जीवन से, गलत आहार-विहार से। रोगोपचार में भी प्राकृतिक चिकित्सा का उध्य जीवन को पुन: प्राकृतिक शैली में लाने का होता है। इसलिए आहार-विहार को ठीक किया जाता है तथा प्राकृतिक शक्ति को पुनः जाग्रत और बढ़ाने के लिए जो सायन काम में लाये जाते हूं वे भी भोजन के बाद जल, बाष्प, वाषु, नूर्यं, व्यापाम, मालिश, विजली, मानसिक प्रेरणा आदि हैं। जड़ी-बूटी भी काम में लाई जा सकती है, परंतु रसायनिक दवाइयां विल्कुल नहीं । विशेष अवस्था में चीरा-फाड़ी का भी प्रयोग किया जा सकता है।

प्राकृतिक चिकित्सा की मीलिक मान्यताएं, प्रत्यक्ष ही, खूब मुन्दर ही और कृतिम जीवन के दोषों को स्सने अच्छी तरह दरमा दिया है; परन्तु इसके आधार को जवतक हम गंभीर दार्यनिक रूप में न जांच लें तवतक हम इसकी यथायं सत्यता को तथा इसके वास्तविक बल को नहीं जान सकते। इसका अंतिम विचार है 'प्रकृति' और हम यहां पूछना चाहते हैं कि इसकी 'प्रकृति' की भावना क्या है? इसने यह शब्द पिन्चमी विज्ञान से लिया है और विशेषकर १९वीं सदी के प्रकृतिवाद से। १६वीं सदी से ही यूरोप अधिकाधिक इस विचारधारा में दृढ़ होता गया है। सारा संसार अणुओं-परमाणुओं के संगठन से बना है, जिसमें एक समय प्राण विकसित हुआ फिर मन। जड़ अणुओं-परमाणुओं तथा प्राण और मन का जगत्

प्रकृति है। परंतु इसका मूल उपादान कारण जड़ तत्त्व है, जो गति द्वारा विभिन्न रूपों में परिवर्तित हो जाता है। मानव-शरीर भी उसी प्रकृति की उपज है और उसीको शक्ति से प्रचालित होता है। परंतु प्राकृतिक चिकित्सा के आचार्य जब प्रकृति का वर्णन करते हैं तो इसे वे आदर्शरूप वतलाते हैं। परंतु वैज्ञानिक दृष्टि से प्रकृति एक विकसनशील तथ्य है और मानव विकसनशील प्राणी । आज न प्रकृति के ही कर्म पूर्ण हैं, न मानव-शरीर की चेप्टा और व्यवहार ही पूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान प्रकृति में भी जो मन और चेतना का प्रभुत्वपूर्ण स्थान है उसके लिए भी उनमें भावना नहीं। उनका आधार अधिकांश में जड़ और प्राणिक प्रकृति है। आज पश्चिमी विज्ञान १९वीं सदी के जड़वाद को छोड़ चुका है। जड़ परमाणुओं की जगह वह विजली के कणों को अंतिम तथ्य मानता है और कुछ वैज्ञानिक तो विजली की शक्ति के आधार में चित्त-शक्ति को मूलाबार मानने के लिए वाबित अनुभव कर रहे हैं। प्राकृतिक चिकित्सा ने अपने प्रकृति के विचार को तदनुरूप परिवर्तित नहीं किया है । मनोविज्ञान ने जो मानसिक शक्ति का शरीर के स्वास्थ्य पर प्रभाव दिखलाया है वह वास्तव में एक बृहत्तर प्राकृतिक यनित का रूप है। फिर यदि हम संपूर्ण मानव व्यक्तित्व को लें तो हमें उसकी आत्मा और आत्मजवित का स्वास्थ्यादि पर प्रभाव भी देखना होगा । और यदि आत्मा मानव-व्यक्तित्व का सर्वोपरि तथा अधिकतम शक्तिशाली तत्व है तब तो प्राकृतिक चिकित्सा के लिए इसकी देन विशेष महत्वपूर्ण होगी। प्रत्यक्ष ही, प्राकृतिक चिकित्मा, जी व्यक्ति की निजी आंतरिक शक्ति प्रचालित करना चाहती है और उस शक्ति हारा उसके जीवन-विकारों को दूर करना चाहती है, भला सबसे बड़ी आंतरिक शनित की उपेक्षा कैने कर सकती है ? विशेषकर भारत की प्राकृतिक चिकित्सार्थंळी तो बिल्कुल ही नहीं कर सकती।

श्री अरविन्द के प्रन्यों को पढ़ते हुए तथा विशेष रूप में, उनके मानव-विकास, अनिमानसिक अवतरण, रोग- युक्त अवस्था तथा मानवीय ध्यक्तिया, उत्तर विचार, उतका निराकरण आदि विध्या पर विचार। को बनने मानने हुए नैराक ने अनुमव क्या कि इनमें किरणामातन के हिए एक विभावनर आधार मीनुद है और कर आधार साथद देग गणना विभिन्न मीन्या का समित्र कर गणना है।

की बर्राबाद भी विकास का मानन है, यद्याप यह विकास, बाग्नव स, एक स्थापन साथेबीस भवता की अभिश्यमित है और जर-नत्त्व बाग बोर मन उस अभिव्यक्ति ने विभिन्न क्षिय न्तर हु। सार विकास में एक दिया और रुदय है और बढ़ है जाना का उन्हरोत्तर बहुना, मुदुह होता, जीवन का अधिहा करना । परस्तुमानव मन विस्थाना अधिम रतर गरी। यह ना बास्त्य में भवमा की अवस्था का धानक है। यह ऐसी बहिमेंकी पतना है जो अन्तर्मकी (स्वप्रेरित और स्वप्रधालित) हो साती है और जिसमें यह प्रधान गति में आ चड़ी है। यन अतियन अयात् पूर्णन स्वस्थित, स्वापिष्ट्रा, स्ववान्ति भतना हाउँ जा रहा है। आज हवारा व्यक्तिन्द गरीर, प्राा और मन वा वहिमनी मनदन है। वह परिस्विति के शाम विचा प्रतिविचा के सम्बन्ध हारा बभा हजा है। हमार व्यक्तिण्य की प्रकृति बाहर प्रकृति से स्वतात मही, वह आग्मा नियत नही, भारमा प्रचानित गरी । अतिमाननिक अवस्था में हमारे व्यक्तिपद को एक उक्क थेगी की आध्यक भवता अधिकृत वरेगी और प्रवारित वरेगी। तर गरीर, प्राप बोर मन रूपा परित हो अपने और सारे स्पन्तित का अनिमानगिक भारता पूर्णेंग अधिकृत वारेगी । तथ मानद म्यान्तर का परिस्तित से मन्द्राम ही बदन अन्यता । बह उसरी पराणीत न रहकर, महाल चेतन मला के रूप में गरीर प्राप्त के नाधन डाम उन पर कर्म करेगा। उस अवस्था में अधिमानस का प्राप अन्तरह गारे व्यक्तिम में स्थाप हो जायना और गरीन क्ष्मत्व में, रोत्मुका हो जायण ह

शेल्युन्द सरीर सभी विकित्ता-सम्बद्धा नार्यो है, यर हू हार्या विकास स्मेर विकास स्मान स्मान विकास को सी सरीवद में ही मिली है और मेरि यह विचार चितिरता नाग्य के लिए आधारमून है तो प्रयुग हो थी अर्थेबद के दर्धन पर जो विकिश्ता नाग्य स्थित होगा उसमें अपूर्व गायना आजावगी।

थी अरविद ना दणन विकास कम में अधिमानिक रत्तर की आर बढ़ते और उसे बाहर कमने की स्वामादिक तथा अनिवार्य रशि मारता है। जिस प्रशार अह-तन्द स मात्र समृत हुआ। और बात में सन वैश है। बन में अनिमन उरम्ब होगा। परन्युमा में अनिमन के बिकाय-जम को तथा इगकी अवस्पाधा को हम अच्छी प्रकार नमजना हामा , बाहि यदि यह त्रम बिदय की अधिवार्य गति है तो हमारे विवित्ना दा प्रम यशित का प्रयास करता काहिए, ए कि किएकी दिला लेकर देवने गाय समये करना । भार बहिर्मणी अपना है यह प्रयान गए में बाह्य जगतु के शब रेम-देन का बारण है। यह उसरे हर रम, गमारि हारा प्रभातिक हाता है आर उमपर ही निर्भर रहता है। परान् मानव-अकरणा में इसमें विकत, मनत तथा किमी अग में शहर व्यवस्थानन का शक्ति पैदा हा आधी है। यह प्रवृति बान्तव म राय सा, अवचेतना का सकेन देनी है और थी अरहिंद निविचन ये दा में नाने हैं कि मानव विदय-प्रकृति व श्वासारिक वर्ग द्वारा हो, उत्तरात्तर पूर्ण अनुवेतना का, अनिमन का विश्वित करना जा रहा है। दुगरे एथ्या में हम गहत ना परिन्दिन निर्मारण तथा पुरुवता ने अप्यासिस्ता तथा स्वतंत्रता का और विक्तित हारश्रे । इतक अर्थ यह हमा कि हममें अन्तर्योता की गरित का गरी है कीर आते में कह हमारे धरीर के रार काशरार का मध्यमा भीर प्रकारित करने व्योगी । यदि विशास कर की यह गाँउ गाउ है और यदि हम इसी बहारता लेना बाटी है ल्या स्वयं भी इसके शहायह बहुता चाहते हैं का हमें भारती विकित्स वें बहुद दश्चपिताका एम करने पर अधिक पिक क्षण देशा चारिए और अवर्षेत्रा वे बाने एरीएर्ट के

द्राची स्थापना बारण्य में माध्यापिक विविधाना-ग्रेमी का बार्ज कारेगी, जिसक रिप्त कमारे पान मार्ग अवकार नहीं । विद्रा भी कार्य-द्रवा मीतिक विवास

विवासी का दर करने का मध्य बहानर आहिए।

श्री अर्रावद और माताजी के अपने शब्दों में हम यहां देते हैं:

"रोग इस यात का चिन्ह है कि शरीर में कहीं कुछ अपूर्णता या श्रृटि है अथवा भौतिक प्रकृति विरोधी गिवतयों के स्पर्ण के प्रति कहीं से खुली हुई हैं, अथवा जैसे कि अधिकतर होता है कि निम्न प्राण या भौतिक मन अथवा किसी प्रकार अन्य स्थान में किसी प्रकार का अंधकार या असामंजस्य है।

"यदि कोई श्रद्धा और योग-शक्ति से या भागवत गरित को अन्दर में उतार लाकर रोग से पूरी तरह छुटकारा पा सके तो यह तो बहुत हो अच्छी वात है। परन्तु एकवारगी ऐसा करना बहुधा संभव नहीं होता, कारण समग्र प्रकृति शक्ति के प्रति उद्वाटित नहीं होती अथवा उसका साथ देने में असमर्थ होती है। हो सकना है कि मन श्रद्धालु हो और शक्ति का साथ दे, किन्तु निम्नप्राण और शरीर उसका अनुगमन न कर सकों । या, यदि मन और प्राण नैयार हों तो यह संभव है कि शरीर साथ न दे बीर यदि साय दे भो तो केवल आंशिक इप से । कारण, एसकी यह आदत है कि यह उन शक्तियों की जो एक विशिष्ट रोग को पैदा करती हैं, पुकार का उत्तर देता है और प्रकृति के जड़ भाग में जो आदत पए जाती है वह एक महा हठीली शवित है। ऐसी अवस्याओं में भौतिक साधनों का बाश्रय लिया जा सकता है--प्रधान साधन के तीर पर नहीं, बल्कि एक महायना के तौर पर अथवा यह ससझकर कि गक्ति की किया के लिए यह एक तरह का स्यूल सहारा होगा । परन्तु तीव और उप आपवियां नहीं, विक ऐसी औषियों का जो शरीर में हलचल मनाये विना लाभ पहुंचाएं।"

(योग के आवार, १९३९, पृ० २५९-२६०)

"रोग पर अंदर से किया की जा सकती और उसे ठीक किया जा सकता है। परन्तु बान यह है कि यह कार्य नदा महज नहीं होता। कारग, भौतिक प्रकृति बहुत अधिक प्रतिरोध किया करती है, को कि जड़त्व का प्रतिरोध होता है। अतः अनयक अध्यवसाय की आवश्यकता होती है। आरंभ में यह प्रयास सर्वथा असफल भी हो सकता है तथा रोग के लक्षण बढ़ जा सकते हैं, परन्तु कमशः शरीर पर तथा रोग-विशेष पर अधिकार दृढ़तर हो जाता है। इसके अतिरिक्त, किसी रोग के आकस्मिक आक्रमण को आंतरिक सावनों से रोक डालना अनेक्षाकृत सहज है, परन्तु शरीर को ऐसा बना डालना कि भविष्य में वह रोग इसमें हो ही न सके, अधिक कठिन है । किसी जोणं रोग का अंतः किया द्वारा उपचार करना और भी अधिक कठिन होता है, वह पूर्ण रूप से हटने के लिए तैयार ही नहीं होता । इसकी ओक्षा गरीर के कमी-कवार के विकार आसान होते हैं। जबतक शरीर पर अधिकार अपूर्ण है तवतक आतरिक शक्ति तो व्यवहार में इस तरह की तथा अन्य अपूर्णताएं और कठिनाइयां बनी ही रहेंगी।"

(योग के आधार, १९३९, पृ० २६३—२६४)

"औषय तो लाचारी का उपाय है, जिनका उपयोग उस समय करना पड़ता है जब कि चेनना कोई भाग शक्ति को ग्रहण हो नहीं करता या अत्यंत क्षणिक रूप ग्रहण करता है।"

(योग के आबार, १९३९, पृ० २६५)

"पूर्ण रोगमुक्तता तो वितमानिसक हपान्तर सं ही उपलब्द होगी। कारण, व्यतिमानिसक स्तर के नीचे की रोगमुक्तता तो बनेक शिवतयों पर एक शिवत-विशेष की किया का परिणाम होती है और यह संतुलन विगड़ जाने से वह खंडित हो सकती है। व्यतिमानिसक स्थिति में वह प्रकृति का धर्म वन जाती है। व्यतिमानिसीकृत शरीर की नई प्रकृति में रोग-मुक्तता स्वामायिक तथा अन्तिनिहत होगी।"

माताजी के बनुसार भी रोग मन-प्राण-परीर में किसी असंनुष्टन, किसी रोक, अन्यकार या दिन्य चेनना के प्रति उन्मुक्तना के बभाव का द्योनक है। ऐसी आम्तरिक स्थिति बाह्य विरोधी शक्तियों को भी निमंत्रित कर ऐती है जो शेय पैदा कर देती है। श्री माताबी कहती है

"तुन्हारी स्थानित स्वयन्या रोग वा वारण ता सननी है जब सही पर बोई प्रतिरोध या विज्ञोह होना है सपका जब नि तुन्हारे स्वन्दर बोई ऐसा माग होता है जो भागवा गरका का प्रत्युक्तर नहीं देता स्वया यहां कुछ ऐसा तस्व भी हो गदनता है जो हम्पापूर्वन और जात-पूम कर विरोधी वाजियों को सन्दर मुला। ही।'

(मानुवाधी, १९४३, पू० ११२-११३)

'त्रहारे गरीर में और उनके आन-पान रोग भी समावनाएं सदा बनी रहती हैं, तुम्हारे अन्दर या तुन्हारे चारी और एक प्रकार की बीमारियों के शीटाणु या शेग-जीवाणु वियमान होते हैं अववा से गुम्हारे बारी और महराते रहते हैं। जो रोग तमको मर्थी से नहीं हुना उनते तुम एताएत जितार नयों हो जाने हो तिम महोगे कि इनका कारण 'बालनकि ना गुरा पढ़जाना है,'हैं; वरन्तु यह प्राणी भी सुन्तो बहु। से आती है ? यह मता में विशे प्रवाद का सतामबस्य होने से, भागवत पश्चित्रों के प्रति यहगरी जडा ना समान होने ने भाजी है। जब तुम उग राश्ति और ज्योति में, जो मुस्टास पारण-धोरण बरनी है, बपने भागको जुदा कर होने हो तब यह मृत्वी आधि है, तब जिनही वैदार गास्त्र रोग के लिए अनुसूत्र क्षेत्र करता है कह सैवार हो जाता है और उस समय कोई-मा शेय ही उसका कायस बडा रेजा है। गरेह, निरम्पाह, विस्ताय का अभाव, निवी स्वार्ष के जिए मनगा से मह चेर कर भानी और पाट माता—में है जो स्थेति और दिन्य गाँवत में तुम्हें अत्रा कर देते हैं और रीत के भाषात को राम पर्वति है। यह है तुन्हारे भौमार पाने वा कारण, संवि कीय के कीटायु।"

( मानुवाकी, १९४३, वृ० ११३)

"गारिकोर प्रिक्ता येथे के दूर करने के

जिए महान् बीयच हैं। जब हम अपने गरीर कें बमुबों में ग्रांजि के आ मध्ये, तभी हम रोगमुक्त हो जायमें।" (मानुकामी, १९४३, पृ० १८-१९)

सपवान् में प्रति उत्सुवन होता और सदा सपिकापिक उत्सुवन होते आता, अपने अन्दर गांति और अपवान्ता एतना और अपने रोतन्योत से पुत्र और गांति व अनुस्तव नरना सामाध्यक्त दृष्टि ने व्हरूप जीवन की प्रयान गाउँ हैं और से सप्तान हु, सारिय गांतिनिक जीवन हम गुगंपर बहुन का देना रहा है और से गुग विद्यी हवतन बहुन का देना रहा है और से गुग विद्यी हवतन

करर के भी अर्रावन्त्र और मानाशी में चयन विषय की बहुत विस्तारतर्वर ध्यात्या नहीं करते, हिर भी जनमें एक दुष्टिकोण काफी स्पष्ट भा गया है और सेराक के विचार में वह एक नमें चिक्तिगा-शास्त्र की, एक समन्वयार्गं, मर्वागीन विशिन्ता-गाहर की क्य-रेला इतित करता है। इस दृष्टिकोग की अपूर्व अनुभृति मनियानम चेतना की है, उस चेतनानार की बिसकी उपलब्धि पर पूर्णंडवा स्वस्य गरीर प्राप्त हो सबका है। थी भरविर इसके लिए सामान्य मानव समादना वे अप में धानशीत थे मीर जिल्लाहर तक उन्हें इल दिया में सरहता प्राप्त हुई की उनके बन पर वे निरम्याप्तर माद में कहते ये कि अधियानम प्राचनाप है और यह मानव की बाप्त होगा और उगरी प्राण्ति के अनेक फर होंने और उनमें से एक होता रोगमुख्य गरीर। शीमनुत्र सरीर की निरिक्त भाषना और इमसी प्राण्य का आध्यानिक गायन विशिशा गारक, दिया और पारा रियर कर देश है। बाहर प्रयोग, चाहे वे दशहयों हो या स्तान, म्यस्ति की विजी अवस्था को आंगरिक चेत्रन-महित के अनिवार्न पुरुष और महाबक के कर में ही बाय में तारे या गड़ी हैं । यदि ऐसे प्रशेषों से स्वतित को चेत्रत-यतित निर्वेत होती है, उपना साम विस्ताम नम होता है, उनके अन्दर विकास और वरापीतस बड़ी हैं,

तो वे प्रयोग उस समय उस व्यक्ति के लिए अनचित कहे जायंगे।

इस दुष्टिकोण में नमन्वित होने के लिए प्राकृतिक चिकित्मा को सब गैलियों से कम परिवर्तित होने की जररत होगी। यह पहले ही व्यक्ति की प्राकृतिक शक्ति पर भरोसा करती है और उसे सवल वनाकर गरीर के विघ्नों को दूर करना चाहती है। परन्तू इसकी प्राकृतिक शक्ति की भावना, वास्तव में प्राणिक है। यह इसे आरिमक बनानी होगी। वह गक्ति अपने आप में एक चेतन शक्ति है। दूसरे इसे यह भी स्वीकार करना होगा कि जब दवाई मन-प्राण की अपनी शक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए वस्ती जाय, रोग के लक्षण को दवाने या दूर करने के लिये नहीं--- और दवाइयों के इस प्रकार के गुण होते हैं और वे इस प्रकार वरती जा सकती है-तो निश्चय ही उन्हें बरतने में दोष नहीं। प्राकृतिक चिकित्सा के अपने साधन भी आज वहुत विस्तृत हो गये है। भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में अधिकांश में हम लुई कूने ( Louis Kuhne ) या एडोल्फ ज्स्ट ( Adolf Just ) की ही चर्चा करने है, विशेषकर पहले नाम की ही। परन्तु जर्मनो को प्राकृतिक विकित्सा की परम्परा के प्रनिद्ध वास्तव में है प्रीसनिद्ज नाम

(Rausse) , शिंडलर (Schindler), हान (Hahn), (Baltzer), रिकली (Rikli), कनाईप (Kneipp) और लाहमान (Lahmann) और इन सबमें एक समन्वयपूर्ण भावना दिखाई देती है। प्राकृतिक विकित्सा का वर्त्तमान रूप अत्यन्त समृद्ध है और वह विविध प्रकार के प्राकृतिक साधनों को काम में लाती है। इन व्यक्तियों के अतिरिक्त भी वहां अनेक ओजस्वी चिकित्सक हुए ह जिन्होंने जल, उपवास, मिट्टी आदि को एकांगी रूप में छेकर एक पूरी चिकित्सा-शैली को विकसित करने का यतन किया है और इन सबकी अपनी-अपनी देने है जो समन्वित प्राकृतिक चिकित्सा में आ गई हैं।

प्रत्यक्ष ही भारत प्राकृतिक चिकित्सा को अधिक विस्तृत वना सकता है। उसके आधार को अधिक मुदढ़ रूप दे सकता है, उसे भौतिक से आध्यात्मिक बना सकता है। वास्तव में उसमें तथा दवाई प्रधान शैलियों में भी समन्वय सिद्ध कर सकता है। उपयुक्त सर्वागीण चिकित्सा-शास्त्र की इंगित रूप-रेखा शायद यह कार्य कर सकती है। परन्तु यहां इसे एक संभावना मात्र ही दिखाया गया है, शोध की एक दिशा ही प्रस्तुत की गई है। इसका फलीभूत होना तो चिरकालीन घोध-कार्य पर निभंर करेगा।

## वन-भ्रमगा

## श्री वनारमीदास चतुर्वेदी

र्कनिया (पूर्व अफीका) की राजवानी नैरोबी में स्यानीय आर्यं समाज के प्रघान लाला लाहोरीराम के यहां ठहरा हुआ या। नैरोबी समुद्र की सनह ने पांच हजार फुट की ऊंचाई पर वसी हुई है और इस कारण वहां काफी मर्दी रहती है। एक दिन एक सज्जन ने आकर कहा, भीनती सरोजिनी नायडू ने यह तय किया है कि नैरोवी में युनाण्या तक की यात्रा रेल के बजाय मोटर में की जाय ! आप भी नैयार हो जारवे !"

मेंने पूछा, "कितने मील की यात्रा है ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "कोई हज़ार मील तो होगी। वनों में चक्कर काटते हुए मोटर जायेगी । तीन मोटरों का प्रवन्य भी हो गया है।"

मैने पूछा, "जब रेल मौजूद है तो ये चक्कर क्यों ?"

उन्त महानुभाव हंसने लगे और वोले, "आप इस बात को क्यों मूल जाते है कि श्रीमती सरोजिनीदेवी कविषित्री है और वनों ने उन्हें प्रेम है, वन-भ्रमण का उन्हें र्गाक है । मार्ग में बड़े मुन्दर प्राकृतिक स्थल दीन्व पड़ेंगे । शायद सिंहों के भी दर्शन हो जायं।"

नदार में न तो वनों के महत्य की समाजा था और न वन-मामा के आजद की कलता ही कर सराता था। में ने गमामा यह भी कवियों के भनमीत्रियंतर का एक हरान है, बरण्या का एक कोक्या है कि रेज के कोजूर होते हुए भी भोटर से बाता की जाय! अञ्चल्या मुद्दों की बहु का-बाता करनी पहीं। बहु घटना जबू १९२५ की है भोर तत को का मामाब्द बजने में भेरे लिए तेनह कर की भोर वार्षों में 1 वन-धमान का बाम्यविक आजन्द बुझ परवर्षों गई १९९८ में निका।

यह बात नहीं कि पूर्व अकीका के बना ने मुझे प्रभा-वित म निया हो। बुसा भी पनी छावा ने नीचे से गुजरती हुई हमारी मोटरें जब बनजदेश में स्थित शिमी शाम में रात के समय पहुनती और वहां के बोड़े से भारतीय रथी-पूरप और बचने पूर्व अकीका की कांग्रेस की प्रेमीडेंड श्रीमती सरोबिनीदेवी के स्थापत के तिये घटो से प्रतीका भारते हुए दीगा पडते ती एक अद्भूत मानन्दमय वातावरण द्वनाप्त हो जाजा । मानुमूमि की बन्दना के बाद स्वागत हाता और पिर श्रीमती गरोजिनीदेवी का धारायवाह भाषण । ऐना प्रचीत होता कि हम अपनी मार्ग्नि में ही विद्यमा है-व्यव्धिये यहां से हुनारो भील दूर। मार्ग में गिर के दर्गन हो न हुए । हां, एक बार बट्ड दूर ने उछ की रहा हमारे अभिकृत मोटर द्वाहबर की अवस्य मुनाई पर्दा भी और उमरे बहा था, 'निम्या, निम्या !' स्वाहिनी भाषा ॥ ( विषे अविषय होग बोल्जे हें ) गिह ना नाम है। हो, जैवरा बट्टन से दील पहेंचे ! एक बार मो थीमडी गरीदिनीदेश ने दिया ने रहाना तर राउ की मोहर ने इमीलिए बाता की भी कि मार्ग में यदि जिह निज बाद हो उगरा शिरार रिया जान है मीटरी में हाइबरा वे आपनाम् बाह्र निये हुए शिकारी बैदा दिये यह थे। भवाब भव और कीपूरण की भावना हमारे हुएव में थी ! मन में मापने थे, 'बरो मा एन है और की हमाग ही रिकार न कर कार्य <sup>177</sup> कार पालों में भरे हुए जरून स ब्रिटे एराची घमण करने का अवसर कभी नहीं मिला हे उस दिवर परिस्थित को क्याना मने। कर सकते, मद्भिष्टमारे तिल्बहुत ही बम नत्स या है मोरन की होग्यी और अपराय में जार्या बातवर नवय बाँबते हैं

और बस्तुतः सनुष्य ही सबसे अधित भयकर प्राती है ! वाहूत की यहरी घोट का मुकाबला भाग कौन पणु कर सबना है !

वता का हमारा वह प्रथम परिचय था और जैगा कि हम स्थित कुरे हैं अभी हमारे बत-प्रेमी बतने में एर सुष और प्रेम था।

विष्ठ ने तेरह बरों में हमन पनामा बाद बन-माना ना बानन्द उदाया है। बहुँ बार मिसारिया ने माय हम होना में भी बेटे हूँ बीद मयमीत नम्न प्रामा ने आसी. भेर बाते हुए बीद मूचू ना धाम नाते हुए भी देया है! पद बन-माना ने धाम निदंद बरों मूच्य ने तेर बुरों हैं हैं बीद मदेशा नियान्त होतर बनों में धूमने ना महत्त्व हमें ना हो गया है।

एन बार हम बहिन्या में थी बुन्दीर नागवनांत्र को में साथ रेपर कार्य निष्ठान्य मुख्य (गेर्ग्ड) भी सेर को निक्ते में दि रूगिरने नाम सेरान्त्रीयर कारी मृत्य कीरा पड़े ! इसो उनारा प्रमानना पीमान्त्रीय पत्र में सित्य का न होगा । बाराह सम्याग मुद्दुम्य कारी की महाने हुकी मुक्त हमें पाने भी निल्य पुत्रे में । थी मुन्दीरां वर्षि में हैं, यह मुक्त हमें रूपि में । थी मुन्दीरां की एक में मुक्त हमें पाने भी हम पुत्रे में । भी मन्दार्मीय मा एक मांगे स्वत्य भरे हम पत्रे ने मूनमों में भी मनमा निया हि हम गोग निरुप्ताय पीन है भीग नर्म में बो बोशीन कोन्य में ये मुग्त दे र मारेगारे हमारी भीर देगारे रहे । इस भी बात्र प्रमासन्त्र के भी मुर्दीरन न्यन पर भागे बढ़ चुने ये भीर रूपायण्य के भी

हिमी जरूर में मधीन ग्रैनुमा या गेर हमने साम एक मुंगे देखा और दमनी साम्या अब भी नहीं हैं है है हो, क्यों सुर, मोसर तथा तील गया के मुक्ते पूर मेरिया और दीने हिंग । अपने पास मेरिया के निक्ते ते मेरि मो अरिया हमन की, पर प्राम्त हम मधीन अपहर हैं। परे। पास्त्री को मोनी का विचार कराना अरेपार हरू असान है पर कैसरमार्गण अपना कीन

क्षण्याच्या कर सामूर झानाइ उगा ने कई बर पूर्व हम क्षणाइ भी रहण्डामा रामुग के नारी हार निवन्व 'तपोवन' का अनुदाद वन्युवर धन्यकुमार जैन द्वारा करा चुके थे। उन दिनों घन्यकुमारजी कुछ अस्वस्थ-से धे। कोई खास वीमारी नहीं थी, चित्त उद्दिग्न रहा करता था। अकस्मात् एक दिन हमने उनसे कहा, "अगर आपका मन छग सके तो गुरुदेव के एक लेख का अनुवाद हमारे लिए कर दीजिये। वह बंगला में है।" पहले तो धन्यकुमारजी को कुछ चिन्ता हुई, क्योंकि 'विशाल भारत' का प्रवन्य-सम्बन्धी कार्य पहले से ही उनके पास बहुत ज्यादा था फिर भी उन्होंने अनुवाद की हामी भर ली। जब 'तपोवन' उन्हें दिया गया तो वे कुछ चौके। वह तो एक पुस्तिका थीं। संकोचवश अस्वीकृति न दे सके; पर उस अनुवाद का उनके मस्तिष्क पर अद्गृत प्रभाव पड़ा। वह तो मानीं उनकी मानसिक बीमारी का एक इलाज ही हो गया। धन्यकुमारजी उस आश्चर्यजनक घटना को अभी तक नहीं भूले और मैं तो भला भूल ही कैसे सकता था। तव से न जाने कितनी बार गुरुदेव के 'तपोवन' को हमने पढ़ा है। 'विष्यवाणी' के 'मधुवनांक' में हमने उसे उद्धत भी किया और फिर पुस्तिका के रूप में छपवा भी लिया हैं। किसी भी बन-प्रेमी के लिए यह पुस्तिका वेद, कुरान या बार्बिल को तरह पवित्र ग्रन्य का काम दे सकती है।

## दु:खों के विनाशक वन

चित्रकृट पर्वत के मनोहर दृश्यों को देखकर भगवान रामचन्द्र ने सीताजी से कहा था—"इस रमणीय पर्वत को देखकर मुझे राज्य का छूटना भी दुःख नहीं देता और गुहुदों से दूर रहना भी मेरे लिए पीड़ा का कारण नहीं होता।"

'ने राज्यं श्रंशनं भद्रे न सुहद्भिर्विनाभवः मनो मे वायते दृष्टा रमणीयऽमिमं गिरिम्।'

आदिकवि वाल्मीकि ने भगवान् के लिये 'निरिवन-प्रियः' (पहाड़ों तथा बनों के प्रेमी) शब्द का प्रयोग किया है और यह बतलाया है कि माल्यवती नदी, मृग-पिश्यों से सेवित बनभूमि और मुन्दर चित्रकूट के सम्पर्क से भगवान को अयोध्या के वियोग का दुःस भूल गया। निस्सन्देह चित्त को निश्चिन्त करने के लिए बन-भ्रमण एक प्रकार की औपिंध है। जगन्माता सीताजी को भी जसते अपूर्व आनन्द प्रान्त हुआ था। "जिन तरु गुल्म अथवा पुष्पशालिनी लताओं को सीता ने पहले कभी नहीं देखा था, उनके बारे में वे राम से पूछने लगीं। उनके अनुरोध से लक्ष्मण उन्हें पुष्प-मंजरी से भरे हुए अनेक प्रकार के पीधे और लतायें ला-ला कर देने लगे। वहां विचित्र वालुका जलयुक्त और हंस-सारसों से मुखरित नदी देख कर जानकीजी मन-ही-मन आनन्द का अनुभव करने लगी।"

इस अवसर पर हमें अमरीकन ऋषि एमर्सन की एक किवता का अंश याद आ रहा है, जिसका आशय यह है कि उपवनों में शारीरिक श्रम करने से उनकी चोट आराम हो जाती है तथा वन में भ्रमण करते हुए उनके घाव पुर जाते हैं।

"All my hurts my garden spade can heal.

A woodland walk, a quest of rivergrapes, a mocking thrush, a wild-rose or rock-loving columbine, salve my worst wounds."

हम स्वयं अपने अनुभव से कह सकते हैं कि दन की स्वच्छ वायु में एक प्रकार का मादक प्रभाव होता है, जिससे क्षत-विक्षत आत्मा को एक प्रकार की नरहम-सी लगती है। वन वस्तुतः शक्ति के केन्द्र हैं। दिमाग को तरोताजा बनाने के लिए और नवीन विनारों के प्रादुर्भीय के लिए किसी वन में पांच-सात मील टहल लेना पर्याप्त हैं। यह अनुभूत प्रयोग है—नुसखा आज्मूदा है। वन के साथ तो रोग की कल्पना ही नहीं की जा मकनी।

पर 'स्वास्थ्य के लिए बन-भ्रमण' इस विनार में ही हमें व्यापारिकता की दुर्गन्य आती हैं। बीमार पड़ते पर ही कोई व्यक्ति अपनी पूष्य माता के निकट जावे, यह विचार कुछ बहुत अच्छा तो नहीं है। सीभाग्य से यह वारणा हमारे वन-भ्रमण के मूल में कभी नहीं रही।

पिछ्छे तेरह-चौदह वर्षों में हमारे जीवन के सर्वोत्तम क्षण वन-भ्रमण में ही बीते हैं। एक बार वेनवा के उद्गम की तलाश में हमें भोषाल के एक ऐसे बन में ने गुज्रना पड़ा, जिसमें शेर तथा रीछ पाये जाते हैं और जब राष्ट्र-खड़ की आवाज़ दूर से मुनाई दो ती हमारे साथी बनरने ने नहाति सायर रीष्ठ आ रहा है। योशास्त्र से गीठ उपर नहीं बाया। छोटो गमय को वन में हम रान्ता ही मूत्र गर्। उस समय स्वर्णेस स्टब्नजकमा सास्त्री हमारे गाय से । घटे देह घटे भटकने ने बाद छोत्त्र नान्त्री पर आ सने।

पवियो स्या रेगानी के साथ वन-सम्मा में अद्भन भानन्द आहा है। स्वर्गीय पानीरामजी ब्यान तथा रवर्णीय शीरुबी को रेटर हमने मगबन की सब सर भी भी और योशे देर के दिए एक बार थी सोहदरादकी रिनेती तथा थी जगदम्बाजनादकी हिनेती भी गाथ में थे। तुगारच्य (ओन्छा के निकट) स कविवर श्री मैशिरीशरणबी गुज के नाम अनेक व्यक्तियर शम व्यक्ति हुए । अपने गरपोगी पन्ध्वर मध्या र जैन नवा जस्दीय . प्रसाद च पुरेंदी को तो हमते बन-ध्रमण में प्राप अस्ते गाय रुत्या है। रिननी ही आयोजनाओं नषा लेगी का समाजा हमें वन में अपने माबियों की बातवीत में मिला है। बरदन बारविवादा में विवासी का जो मान-प्रतिपार हुआ। उनीको हमने अपने सम्यो में दिखिबढ मर दिया है। उदारुग्यामें पत्रकार विद्यालय की नकीम इसी प्रशास के ध्रमन में बती, सन्तरकात प्रवास-अक रिक्षेत्र और बच्ची विकासीट के प्रवणार-करा विकास में था आयोजना का ऑगसोप में स्वीतृत कर जिया।

सिर हम उन मारिय-नेविया या मारिय प्रेवियाँ भी गामा मितान स्थे जिलते साथ बा-समा का आत्मर तर्मने उपासा है में बहु मी में अगर ही बैटेंगी। एत बार में हमें निरटाय कर में चारणान चीर सा डाहु सी बित्र स्थे थे, पर सकता से हमी इर गर्भ और हम तो दनन मंत्रीत से ही। हमी उनने दनना ही बगर, "बार भी मूर्णा पाणी बीत कर जन्में में चीर साइने कार्यि गामें देने भाग भागे हैं। हिंगा वाहिया । पुण्या बाटे गामें देने भाग भागे हैं। हिंगा । पुण्या बाटे

प्राप्ताप ना समय था। बार प्राप्ता ना रहे थे और एक पहना दे करा था। क्यमें मूर्णप्रका उन्हें टीके दिया, बर पुनन ही कब नार मंदे कि मान प्राप्त पत्रका है। इस कोट अर्थ बहु को और मोदी देर बाद ही के कोट भी करत है। यह बीच पदें। एक बार पान की बाही ने जंनती मूझर जोर की आबाब नक्का हुआ किता । बह बाते बड़ा क्या पना बीर हम बाने अपन को ममान कर उन्हें पाव सीट आये। अभी उन दिन दखान के मूत्युट के बक्त टहने जाने हुए जो मूझर की बायब निकट में मुनार की सी हमारी छाड़ी जाने करने मंत्र में साथकी, जिससे बहुट एका ।

उन दिन हम भी रहे थे कि बाहर कुछ जोर की बाबाब नुनाई दी। अंधेने में कुछ दोग नहीं नक्षा, पर बही या एक नैन्द्रमा, जो एक बिटिया के नाथ मेंक कर रहां या। उनके दोनीय जनह पत्रे भी कना दिने थे। बाहर पाने ही वर याग गया। बन के निकट नहते के आनर के माचनाय को सत्ते हैं, उनकी भी हम गूब जानते हैं। न जाने दिननीं बार हमारे आनीयों में और मिशे

न जान रिनर्ती बार हमारे आपनी में और मिशे ने निधन्त्र आंदे ना ध्यम नमने से गडरों से हमें आगाह निवाहि, पर नम्मकत हमारे औपन ना एर आगाह निवाहि, पर नम्मकत हमारे औपन ना एर बाही नम नुसाहि और उपने प्रधोनन पर हम नासू नहीं ना मन्ते।

"The forest is my loyal friend Like God it useth me."

—एममंद

बन मेरा प्रमी सिप है और दिवर की श्वरह कह मर जीवन का उपयोग करना है।"

त्रव परास ना स्थम पुरा साने नो होता है हम उमनी नत्यान में प्रिप पर्य परक्षी ने प्रथम या जितीय मन्त्रार म निराप्ति वर समा नरते हैं—और वर

"दनाश की में तनारा में ट्रं नयीन जीयन की खारा में हूं"

या मुख्यन्ती हमारे मुत्र ने गहना निकल पानी है। अपने निकट का नका वर्ण भीत का ममुक्त हमें

उत्तत ही दिव हा यस है जितना विव 'बार्डेड' मागेवर पोरो नो बाध्यम पोरो ने हो उसकी सुरुवारों 'बार्डेड' जनक असर क्षत्र के पत्त्वता नगरी थी, जो हमारे जिल बायक हैं। किए मी बार्डों केने सुरावित्र पत्तकों ने वित्र हव 'सब्देड' के क्यों है।

हमारी यह जन्मीरक अधिनाता है, कि हम अभी द्विता बहीरत के कराई पात्र का, भी गांच हमार बने : .

मील में है, देखें और कभी अमरीका के यलो स्टोन पाक में भी भूमण करें।

मुना है कि शोघ ही भारत भूमि में चुनावों का तूफान आनेवाला है और उन अनर्गल प्रलापों, धुआंधार स्पीचों तथा फालतू मीटिंगों की कल्पना करके ही हम कांप जाते हैं। कीन उन भलेमानसों को वतलावे कि किसी प्रातःकाल का वन-भ्रमण पार्लामेंट की मेम्बरी से कहीं अधिक गीरवप्रद है और अर्जुन वृक्ष की छाया में विश्राम एम० एल० ए० वनने से अधिक आनन्ददायक

है। निदयों के कलकल निनाद पर सैकड़ों व्याख्यान निछावर किये जा सकते हैं। पदलोलुप अथवा प्रभुता के लिए पागल अहम्मन्य नेता नामवारी जन्तु इस तथ्य को भला क्या समझ सकेगा!

वन-भ्रमण एक कला है और उसकी उपासना करनी होती है।

भारतीय सभ्यता के मूल स्रोत वन में ही रहे हैं और अपनी प्राचीन संस्कृति के पुनरुद्धार के लिए हमें तपोबनों का निर्माण करना होगा।

# प्राकृतिक जीवन श्रीर चिकित्सा

श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह

शरीर हमारे लिए एक साधन के समान है। कोई उमें धर्म का साधन समझता है और कोई सुख का। कालिदास ने उसे धर्म का साधन वतलाया—"अरीर-मायं खलु धर्म-साधनं।" और तुलसीदाम ने उसे मोक्ष का साधन माना है—"साधन घाम मोक्ष कर द्वारा।" पिचम में शरीर मुख्यत: मुख का साधन माना गया है और वैज्ञानिक उपायों से दुःच कम करने और अधिक-से-अधिक मुख बढ़ाने के साधन जुटाये गये हैं। हमारे देश में भी एक समय भोगवाद की प्रधानना थी। उसी ममय काम-मूत्र आदि ग्रंथों की रचना हुई थी जिनमें गारीरिक मुख को अधिक-से-अधिक बढ़ाने के उपाय मुझाये गये थे। इस सबके द्वारा वामनाओं को उत्तेजित करके फिर उनकी तृष्ति के विविध साधन जुटाये गये हैं।

किंतु इन सब मुखों की उपलब्धि और भोगों का उपभोग करने के लिए स्वास्थ्य मबसे पहले आवस्यक हैं। उसी प्रकार धमें और मोक्ष साधन के लिए भी बलवान और स्वस्थ घरीर की आवस्यकता है। उद्देश्य चाहे कोई भी हो, किंतु सबका उद्देश घरीर को स्वस्य और बलवान् रखने का है। अब प्रस्न केवल यह रहा कि उसकी प्राप्ति किम प्रकार् हो? इमी विषय में मतभेद उपस्थित होता है। कुछ लोग प्राकृतिक उपायों से स्वास्थ्य को स्थिर रखना चाहते हैं और कुछ हाजिम या वाह्य उपायों से । कृतिम उपायों से काम छेने वाले लोग भी प्राकृतिक उपायों की उपेक्षा नहीं कर सकते, क्योंकि वहीं सवका मूल है । मूल आधार की छोड़कर केवल कृतिम उपायों से इमारत नहीं खड़ी हो सकती। और यदि खड़ी भी हो जाये तो स्थिर नहीं रह सकती।

प्राकृतिक उपायों में विश्वास करनेवालों में भी दो मन देखने में आते हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि जीवन-यापन के लिए तो अवश्य ही प्राकृतिक उपायों से काम लेना चाहिए, किंतु किसी कारणवण यदि स्वास्थ्य विगड़ जावे तो फिर उसे सुधारने के लिए कृत्रिम उपायों ने भी काम लेना अनुचित नहीं है। वे कृत्रिम उपायों को आपर्धमं ही के रूप में मानते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक जीवन और प्राकृतिक चिकित्सा में दो स्पष्ट भेद हो जाते हैं। यथार्य वात तो यह कि प्राकृतिक जीवन विताने वाले के लिए प्राकृतिक या कृत्रिम किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आमश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। प्राकृतिक जीवन प्राकृतिक चिकित्सा का स्थान ले सकता है। किंतु प्राकृतिक चिकित्सा प्राकृतिक जीवन का स्थान नहीं ले सकती।

इसलिए प्राकृतिक जीवन ही पर हमें विशेष ध्यान देना है। यदि किसी कारण भे उसमें अध्यवस्था उपस्थित हो जावे तो वह प्राकृतिक चिकित्मा से मुख्यवस्थित की जा सकती है। सिद्धांन यह है कि जिन नियमों के अनिस त्रमण सं स्वास्य विगश्ता है उन्हों ने मुवारन सं स्वास्य सुगर भी सत्ता है। अब हमें विवाद करना है ति वे निवस कीन से हैं ? ब्राइनिक जीवन वा अप ना यह है कि हम प्रहित प्रत्यों को हो। जीवन से अपित उन्होंने सहायना के। प्राप्ति के उन्होंने सहायना के। प्राप्ति के स्वास्य में अपित उन्होंने सहायना के। प्राप्ति के विवाद अपित के स्वास्य के प्रवास के स्वास के स्वास

इनमें पहला भरव है पच्छी। हमारे गरीर में सबने अधिक भाग इमीना है। इसके जिनने अधिक सुपर में हम रहत उननी ही अधिक गरित प्राप्त कर सबेंगे । हमारा सम्य बहुत्वाने बाला ओवन इनके गाँउ गे दूर होता चता जा रहा है। पूर्णी में मपर्न में अधिरतर हमारे हाय-पैरही आने हैं; जिन्न हम इनसी जुनो और भौजों में इस प्रकार की करते हैं कि प्रकी के नगर मन्तरं ने अधिकतर विचन ही कहते हैं। हमें यह प्रयान बनना चाहिए वि हम अपने दारीर को बन्तों ने इतना अधिक आष्ठादित न कर गर्ने निवह माहतिक तस्त्री के संदर्भ विभिन्त रह जाते । मीत-उगा का अविन बनाव नरने हुए भी हम आने गरीर की अधिवानी-अधिर नना रनगरने हैं । हमारे उपा देश में अधिराश गमय बन्त्रोगी आवस्पत्ता ही नहीं । भूटी सरवा की भावता में हमें बराहो का गुलाम बना दिया है। उसमे ष्टम महत्त होना है।

हुमारे बर्ग अधिक-मे-अधिक प्राहृतिक जीवत बित्ताना चार्रा है, वे घरती पर गोटने, पानी में नैरने. मुनी हवा में पूसने, पूर में सेन्ने और उन्मुन्त आहात है मीरी विकास करता चाही है। क्षित हम उन्में हत बन्तुओं में विन्न रमता चाहते हैं, मानी के उनके चानु हो और इसका पन हमें बीमारियों ने हम में भीमता पड़ता है। हमें चाहिए कि हम अपने गुने सारीर को अधिक-मे-अधिक पुल्लीमता के हमारे, जुन के बीनक स्मार्ग, बायू के आनन्ददायक महारं, मूर्व की कोसक किस्सों मचा उन्मुल आहात के सर्वत में नाते रहें। इन नको का कमा ही हहारी सरीर का पीपन और सर्वान वन्ता है। बाद्य पहायों की अपेता कहीं अधिक

हमारे घारीर के पोतान के निये पीटिक और हुन्या मोजन तथा उसे पक्षाने के निये क्यायाम की भी आह-ध्यनता है। वह क्यायाम भी मूर्य-ज्ञान, हक्काट्स बाबु और उन्मुक्त आहारा के नीचे होना स्माराण है। वस्न में क्ये यह ध्यायाम और भी स्मिक्त कामदायक गिद्ध होंगे हैं। भोजन के विषय में दनना ही ध्यान रसना पर्यान होगा कि जाने मिन्यू भी पार्ची मन्यों का सरक्रे क्याया है। अधिन की सरेशा मूर्य-ज्ञाना में परे हुर् प्रवाद अधिन कामदायह हो में हैं।

व्यक्तियन सनुसब में मैंने दो बक्त के हुन्ते बोजन, प्रान बान मूनी हुन्त में ज्यानात तथा मूर्य दिएस पारण, गय्या बा मूनी हुन्त में यूमना तथा साताम के नीव मोता स्वाच्या के लिए नामरायत पाया है। युगी प्रवार आह-तिक विविच्या के क्या में विद्यनात, मूर्य दिरण, मिट्टी सी पट्टी आदि जायों की अनेक लोगों के पिर मामरायत पाया है। मेंनी नोग सर्गी प्रवृत्ति और आव्यव्यक्ता के अनुमार परिवर्षन कर इनने माम उद्धा सनने हैं।

"यह नहीं ममझ बैठना चाहिए कि उपवास ही दारोर का स्वास्थ्य और बल स्थामी रूप से ठीक कर देगा। यह तो तसी हो सबता है, जब युक्त आहार, ब्यामाम, ब्यास-प्रस्वास तथा स्वास्थ्य-सम्बन्धी अन्य नियमी का समुचित रूप से पालन हो। उपवास तो केवल विपास पदार्थी को निवास कर और राषात्रस्था को दूर कर स्वास्थ्य के लिए सामै प्रधानन कर देना है।"

---वरनर् मेंगफेंडन

# प्राकृतिक चिकित्सा का मूल सिद्धान्त

डा० सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग

प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणान्धे के स्थान पर प्राकृतिक जीवन-प्रणाली का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त है । इस प्रणाली का इतिहास काफी पुराना है । यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि जीव-जन्तुओं के जन्म के साय-साय इसका भी अभ्युदय हुआ। हां, इतना अवस्य है कि वेदों में इस प्रकार के जीवन द्वारा हमारे पूर्वजों के स्वास्थ्य-सुख आदि का उपयोग करते हुए सकट्रों वर्षों तक जीने का वर्णन मिलता है। वस्तुतः आयुर्वेद का शुद्ध रूप भी प्राकृतिक चिकित्सा ही है। पर तथाकथित सभ्यता की उन्नति के साथ-साथ यह उत्तम प्रणाली प्रायः भूला दी गई। फलतः औषधि-प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ । चिकित्सा एक न्यवसाय वन गया । उपार्जन-वृद्धि ने चिकित्सा-क्षेत्र में अनेक दोष उत्पन्न कर दिये । चिकित्सक जनता को कृत्रिम स्वास्थ्य प्रदान करने छगे और उन्हें स्वास्थ्य के वास्तविक मिद्धांतों के प्रचार की चिन्ता न रही । चिकित्सा अत्यन्त व्ययसाध्य बन गई। श्रीपघोपचार अमीरों का व्यसन वन गया । जनता चिकित्सकों के भरोसे अपनी इन्द्रियों को बेलगाम छोड़ने लगी । अन्त में स्वास्थ्य की दशा दीन-हीन हो गई। स्वास्थ्य के इस संकट-काल में उत्तम विचारकों ने अपनी बुद्धि हारा रोगों के कारणों का सही पता लगाया और हानि-रहित औपघि-प्रणाली का आवि-ष्कार किया । इन्हीं विचारकों में ईसा से ३०० वर्ष पूर्व हेनामेन हुआ था और उसने "समः समं शामयित विषस्य विषमीपधम्' निद्धांत का प्रतिपादन किया ।

पर खेद है कि हैनामेन की प्रणाली भी नितान्त दोप-रहित नहीं थी। उसमें भी बहुत-सी न्यूनताएं थीं। अनएव रोगियों ने दोनों प्रणालियों से ऊवकर अपने मस्तिष्क को स्वास्थ्य प्राप्ति के अधिक उत्तम उपायों को ढूंड़ने में लगाया। उन्होंने जीव-जन्तुओं के रहन-महन का अध्ययन एवं निरीक्षण किया और प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली की पुनर्प्राप्ति की। ये रोगी (महापुरुष) शास्त्रों से

अनिभज्ञ थे। लक्षणों और औपिष्ययों की कियाओं के चक्कर में न पड़ कर उन्होंने स्वास्थ्य, रोग, निदान और उपचार के प्रदनों को सावारण सहज-बुद्धि से हल किया। स्वास्थ्य के लिए गन्दी गलियों की खाक छान कर तपोवनों का आश्रय लिया। उन्होंने पाश्चात्य देशों को संदेश दिया कि यदि सम्यता के नवीन रोगों से रक्षा चाहते हो तो प्रकृति माता की गोद में जाओ और वहीं स्वच्छन्द की डा करो। वस्तुतः इन लोगों ने भारत के प्राचीन संस्कारों की सुन्दर प्रथा को शास्त्र के रूप में फैलाया। इन्हीं लोगों में जर्मनी के श्री प्रिस्निज् सर्वप्रथम हुए। उनके पीछे उनके सात् शिष्य हुए। इस प्रकार इस विद्या का प्रचार होने लगा और धीरे-घीरे इसने वैज्ञानिक रूप धारण किया। भारतवर्ष में गांधीजी जैसे महापुरुषों ने इसे अंगीकार किया और जन-समुदाय के लाभ एवं कल्याण की वस्तु मानकर इसका प्रचार किया।

प्राकृतिक चिकित्सा का प्रमुख सिद्धांत यह है कि प्रकृति स्वयं चिकित्सक है और प्रत्येक तीव रोग जैसे ज्वर, निमोनिया, चेचक, विमूचिका आदि के रूप में वह शरीर की सफाई करती है। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि ये तीव रोग हमारे शबु नहीं, मित्र होते हैं। इनके होने में ही हमारी भलाई है। वात यह है कि आहार-विहारके दोपों से शरीर में दूपित द्रव्य इकट्ठे हो जाते हैं, जिन्हें विजातीय द्रव्य कहते हैं। प्रकृति इस विप को शरीर में वाहर निकालने के लिए ही तीव रोग उत्सन्न करती है।

प्राकृतिक चिकित्सा में रोगों का कारण एक ही माना जाता है और विभिन्न छक्षणों की अछग-अछग प्रकार से चिकित्मा न की जाकर तमाम धरीर को स्वस्थ बना कर एकसाथ सब रोग छीक किये जाते हैं। मान छीजिये, किसी व्यक्ति को ज्वर के साथ खांसी और जुकाम भी है। चिकित्मक मांसी, जुकाम तथा ज्वर के छक्षणों को दूर करने के छिए एक-से नाधन काम में छाता है। माईनिन वितित्या लक्षणों पर विदोध ब्यानन देवन उनके नारण को दूर करती है जिससे के रोग पुन नहीं होने, जबनक कि उन कृति आदनों को फिर से न अपनाया जाय जिनके कारण कि वे लक्षण उत्पन्न हुए से ।

प्राहृतिक विकित्सक जीवानुवाद में विश्वास नहीं रस्ता, स्पर्धि जीवानुवाद में विश्वास नहीं बह इस बाद को मनी मानि समाना है वि वाद की है। जिस प्रताद जरक में पट हुए मुक्त पारित को सा-पीकर मान्त कर हानने के लिए वर्ड के प्यू-क्यों हवत माने है मोर मान्त कर के जाते हैं, वची प्रकार परित में एका इस्त्र की गा-मीकर मान्त कर बातने के निये प्रदाद इस्त्र की गा-मीकर मान्त कर बातने के निये प्रदाद इस्त्र के प्रताद (Kind) के जन्मार जीवान पृत्रों को उत्तर करती है। जन्म वि में नियं प्रीर्थ की प्रताद करती है। उन्हें विर्यंगी प्रीर्थ की प्रताद करती है। उन्हें विर्यंगी प्रीर्थ की प्रताद करती है। उन्हें विर्यंगी प्रीर्थ की प्रताद करती के किए की वृद्धि होती है, कमी नहीं। सन्दर्भा गोग का करता करता है। यह ना वृद्ध प्रीरंग इरित इस्त्र को स्वाद है।

आहार-विहार ने दायों से उत्ताप्त पूर्वोत्त दृष्टित इस्स से शारीर को मुक्त करके स्वत्य बताने के जिए मदत्त दित्तवर्धी, कतुवर्धी, पद्धाराज्य एवं प्रावस्थित की आवश्यका है। प्रावस्थित का कर क्षा करवास है। बस्तुत 'हरपन परमौषधम्' मनाचन सम्य है। पस्य भी सामित्र नाथन है। स्तान, मर्दन, मिट्टी का लेप, गोधा-चार, बायुनीवन, प्रामाधाम, सामन, बिनिय्र प्रकार में तक का प्रयोग, मूर्य-रिपयों का शाम आरि-आरि इस्स भी मरीर को स्वय्य कराया जाता है।

प्राइतिक विविश्या का अनुवादी दूसरी विकित्साप्रमाणियों को एकस्स दुसरा दना है। कह बानता है हि
एक्साब दो किरोपी दिसाओं में नही दोड़ा जा सदना।
अपना विकित्सा-वहींची देखाओं हारा रोग को देखां तथा विकित्सा-वहींची देखाओं हारा रोग को देखां तथा बाह्य कप्राची की धान्त कर देती हैं, जबकि निम्मीत्वाद रोग की बढ़ को हुए करने उसे गड़ा के लिए भया देखा है। इस बढ़ा बाहिन विकित्सा का अन्य प्रमाणियों के साथ बहन वहीं बैठा। प्राप्तित साथनी के साथ-माथ इन्नेसन, रुमारि नहीं दिये जाने काहिन।

ब्राहृतिक विकित्सा एत यह विज्ञात है, जिसे प्रयोक व्यक्ति को मील कर विकित्स को सहायता के दिना, वाद में नाता वाहिए । स्वास्त्र के लिए हुमारे का मृद्द नाकता अववा यह नमारता कि स्वास्त्र को जाता को बस्तु के नमार नगरेश जा सकता है, को मृत्र है । वोई भी प्रकृत या केय पुरिशों में वापकर अववा बोल्ड में भारतर स्वास्त्र प्रदान नहीं कर करता। स्वास्त्र अ प्रतिक क्या के स्वास्त्र जीवन की होन्ती है ।

### प्राकृतिक चिकित्सा के त्र्याचार्य : गांधीजी

भी रामनारायल उपाध्याय

मोधीओ महान् वर्गीतवारी थे। उन्होंने बारने जीवन-मार मारात में बरेव मासूच परिवर्डन विवे । जिम नगह रिमा की परावाच्या घर एड्रेथ हुए 'बमूदब' के युग में उन्होंने हमें माजाइह और सहिमा का दिस्म बनव रिमा, 'विसान और सार्गित' के युग में बागों और बनेक छोड़े आहे हाम-प्रशित्त को सीएटा दिलाई, उन्हों नहु स्थान-विवेद्यान के 'बावारी' युग में उन्होंने हमें इचिम सापनी की स्मेरात वर्गित के मारांग के, 'बन को स्मीरा तु कारास्पर में, पूर्व स्वस्य गहते वा 'ब्राहर्गिज बिहरमा' वा मार्च लोगा मिनाया। अन्होंने न निर्दे मार्गिज विहरणा थी। बात ही बी, महितु स्वय मार्च तथा मार्च परिवार-वर्ती व विद्यों ने अतर मीत्रत पर उपये प्रशास विद्ये मीर वर्ड बार तो नार्च में मेंने भी। बाहित्य विराम के गान्य में अपने अनुस्व निद्यार, नियन और उपरोग पर उपयो बहुद निवार है। उनकी 'अस्तोरम थी दुसी' यो हो महि 'बारोस्पनास्य बी सीमा' बी सीमी मार्गुश स होती। पाठकों से हम आग्रह करेंगे कि वे इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। आगे आने वाली पीढ़ियां सहसा विश्वास नहीं कर सकेंगी कि भारत को आजादी दिलानेवाले इस क्रांति-कारी महापुरुष ने एक साथ इतनी विविध प्रवृतियों में समन्वय कैसे स्थापित किया।

एक शब्द में गांधीजी को भारतीय राष्ट्र का 'चिकि-त्सक' कहा जा सकता है। उन्होंने हमें 'सत्याग्रह' के ज़रिये राजनैतिक मुक्ति, 'चरखे' के ज़रिये 'आर्थिक समानता' 'अस्पृश्यता निवारण' के ज़रिये 'सामाजिक शुद्धि', 'प्रायंना' के ज़रिये 'आध्यात्मिक उत्कपं' और 'प्राकृतिक चिकित्सा' के ज़रिये शरीर और मन से पूर्ण स्वस्थ होने के उपाय बताये हैं।

गांधीजी के जीवन की यह विशेषता रही है कि उन्होंने अपना प्रत्येक विचार सरल-से-सरल ढंग से अकाट्य युक्ति के साथ उपस्थित किया है। प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में भी उनके विचार बड़े ही सरल और युक्तिसंगत हैं। इन चंद वाक्यों में मानों उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा का मूलमन्त्र दे दिया है:

"मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन्हीं पांच तत्वों से संसार बना हुआ है। इन्हीं पांच तत्त्वों को लेकर हमारे शरीर की भी रचना हुई है। इसका यह अयं है कि शरीर को स्वस्य और आरोग्य रखने के लिए इन पांच तत्त्वों की आवश्यकता है। स्वच्छ मिट्टी, स्वच्छ जल, स्वच्छ धूप, स्वच्छ बायु और स्वच्छ आकाश (खुला स्थान) का मिलना हमारे शरीर के लिए अत्यन्त आव-श्यक है। इन तत्त्वों में से एक तत्त्व भी न मिलना हमारे अस्वस्थ होने का कारण होता है। जिम तत्त्व की जिस परिमाण में आवश्यकता है उस तत्त्व का उम परिमाण में मिलना ही हमारे शरीर का स्वास्थ्य है।"

आगे चल कर स्वास्थ्य लाभ के लिए प्राकृतिक चिकित्मा में अपना विश्वास ज़ाहिर करते हुए वे लिखते हैं—"मेरो यह दृढ़ घारणा है कि मनुष्य को दवा लेने की शायद ही आवश्यकता होती है। पथ्य और पानी और मिट्टी के घरेलू उपचारों से ही हजार में से नौ सौ निन्यानवे बीमारियां अच्छी हो सकती हैं।"

मनुष्य के अस्वस्थ होने के कारणों का जिक्र करते हुए उन्होंने लिखा है—"हमारा रहन-सहन किसान के रहन-सहन से, जितना ही अधिक भिन्न होगा, हम उतने ही अधिक रोगी होंगे। मनुष्य को आठ घंटे शरीर-श्रम करना चाहिए और वह ऐसा कि जिसमें मानसिक शक्तियों को भी साफ करने का अवसर मिल सके।"

शरीर और मन का एक-दूसरे से अभिन्न सम्बन्ध रहा है। इसलिए गांधीजी का यह निश्चित मत था—— "स्वस्य शरीर में ही स्वस्य मन का वास होता है। निर्वि-कारी को रोग तो हो ही नहीं सकता।" अतः मानसिक स्वस्थता के लिए उन्होंने 'रामनाम' पर जोर दिया था।

गांधीजी के विचारों का सूक्ष्म विवेचन करते हुए विनोवाजी ने उन्हें मूत्र-रूप से यों रखा है---

- (अ) हमेशा शुद्ध, स्वच्छ, युक्त और मित आहार और विशेष प्रसंगों में अल्पाहार और निराहार।
- (आ) देह, वाणी, मन की शृद्धि और आसपास के सब वातावरण की स्वच्छता।
  - (इ) कुदरत पर प्यार और उसका उन्मुक्त सेवन।
  - (ई) योग्य परिश्रम और विश्रांति की व्यवस्था।
- (उ) अपने की देह से भिन्न जानना, प्राणिमात्र की सेवा में लग जाना और विशुद्ध चित्त से परमेश्वर का निरन्तर स्मरण।

नीचे लिये मूत्र में विनोबाजी ने मानों गांधीजी की ही बान कही है—

"जहां परमेश्वर का नाम, वहां निर्विकारिता, जहां निर्विकारिता वहां पूर्ण आरोग्य।"

"राम की मदद लेकर हमें विकारों के रावण का वध करना है और वह संभवनीय है। जो राम पर भरोसा रख सको तो तुम श्रद्धा रखकर निश्चितता के साथ रहना। सब से बड़ी बात बह है कि श्रात्म-विश्वास कभी मत खोना। खाने का माप रखना। ज्यादा और ज्यादा तरह का भोजन न करना।" हिंदी नवजीवन, २०. १२. १२

#### शरीर के लिए भोजन की व्यावश्यकता

श्री महायीरप्रमाद पोद्दार

सनुष्य-जीवन के निष्य आवस्यक शीलों में मोजन एवं प्रपान स्थान रहा है। दिना गाये आदमी बहुत दिनों दक्त में नहीं गहना। मनुष्य ही नहीं, मनार का प्रचेत आदों हुन्दली दौर में भोजन की आदस्यक्ता का अनुम्यक क्ला है। हुन्दल ने प्राणी को भूत देवार कमा दिवा कि भाजन उनके लिए जक्ती है। यदि भूत न होंगे हो। सायद मनुष्य गान में चंगी। तक अल्प्य करना वंग गरीर की दूसरी जक्तियान ने निष्ठ क्ला है। पत्र महा गरीर की दूसरी जक्तियान ने निष्ठ क्ला है। पत्र महा मेंग का बोधक बन नगा है। जैसे बहुत जाना है— एवंहे रुप्तेमेंने की उचादा भूत नहीं है।" भोजन की आवस्यका दरमानेवाणी एक बहुवन है

> "मूखे भजन न होय गोताना, यह लो कडी यह लो माला।"

तरीर के लिए मोजन की आवस्यकता है। यह जानने के गाय-गाय थोड़े में हमें यह भी जान लेना चाहिए कि यह आवस्परना पैश क्यों होती है ? गरीर को कुछ होगो ने इवन की उपमा दी है, जो गरीर-सम्बाधी सब बानों में मेल न नाउं हुए भी शरीर के काम को समझने के निए निमी हद तर दीन नहीं का गरती है। दोनो में बड़ा क्र यह है कि बहु जह है, यह बेनन है। इंजन की जैने कोयण्यानी की जरूरत होती है, बैसे ही हमारे गरीर के निर्भी, अप्रयानी की जररत है। अप्रयन्द में नाई जा गरने वाणी सब बीजें मा जाती है। जानी के चरीर में और इतन में एक एक और है, इतन में कोयणा-यानी न हाला आय तो बर चनेमा नहीं । एक जनह कुरकार नहा रहेगा। इसमें उनका कोई नुकसन्त नहीं होता, पर चन्न्य शरीर की यह बाप नहीं है। बहु लगा गहुँ या पड़ा गहुँ, उसे जल-पानी बाहिए और बाहिए इसनिए कि उसे मुख सदती है। इयन को बेन ज्यादा हुए के बाने का ब्याश कोरला-पानी बाह्य, देन ही हमारे ग्रागेर ने उनाम नाम नेना हो ती

उसे ज्यादा अप्रत्यानी देना पहता है। बाम के शिवा अप्र-पानी की, बाम के लिए ही नहीं, साम के लादा की तात्वाजित बाम के लिए ही नहीं, साम के लादा की करने और दिले कहने के लिए भी प्रत्यत्त होती है। बच्चे के माना के पर्दे में आते ही उसे माजन की बादायदाना पैदा हो जाती है। पहले बहु अरना भाजन की बादायदाना पैदा हो जाती है। पहले बहु अरना भाजन की बादायदाना पद्म हो अपनी के लिए भाजन की सहर आ जाने पद्म मां अपने जीने के लिए और अरने बच्चे को जिलाने या बाहने के लिए माजन करनी है। दमनिए हुए लोगों मे यह बहु है हि पर्यवत्ती मां की अपना हुए तिजाने बाणी मा को हुना भोजन करना बाहिए। यह मन मन में दिनना का पारी है, दस बहुन में हुल नहीं परंगे। बहु एक अपन तेल वा दिवद ही बहुत में हुल नहीं परंगे। बहु एक अपन तेल वा दिवद ही बहुत में हुल नहीं परंगे। बहु एक अपन

बच्चा मा बा हूप रिये या गाय बा हूप रिये अववा जो और मुद्दार दी जाय, लेरिन हम देगते हैं कि उसके बादे में लिए भीजन बाहिए। बच्चा हुए बदता नहीं जान पदना है, लेरिन तब भी जोगे गुरार चाहिए और गुदार म दीजिये तो बह रोने लगा है, यदि वह यह नहीं समाता कि उसके पार्टिन में लिए भीजन की आवदनाना है। पर भीजन न सिल्ले पर बह रोने लगा है, विशो मसात जगा है कि बच्चा मूंगा है, यानी उसकी माने दी अक्टन है। बच्चे बा रोना मूल बाल माना माना गया है और विगी हर शब यह गही है। जबाद बच्चे में बीलन बीश कि लही आ जाती तबहर के लिए बुसान में उसकी सीजन की पूर्व के लिए रोसर आती आवता जहर बरने की बील दी है।

नोर्ड यह म समसे हिंद बल्पा मूल के निवा और बारणा से शता ही नहीं । उसके पीते के और भी कई बारण होते हैं । यर बायर मुर्ग बारायें मूल की पीते का

एकमात्र कारण मानकर बच्चे के रोने लगते ही दूध पिलाने को ले बैठती है। अगर वह दिन में वीस बार रोये तो वह उमे बीम बार स्ननों से लगाती हैं। इससे बच्चे की आदत विगड़ती है, उसे नुकसान होता है और मां को भी नुकसान होता है; लेकिन यहां इस विषय पर विशेष नहीं कह सकते। यहां तो हम इतना ही वतलाना चाहते हैं कि कोई काम न करते हुए भी बच्चे के शरीर की बाढ़ के लिए भोजन की जरूरत होती है। यों तो बच्चा कुछन-कुछ काम, चाहे वह उपजाऊ न हो, करता ही रहता है, हाय-पैर पीटना रहता है, बदन को हिलाता-डुलाता रहता है, कुछ बड़ा हो जाने पर दोड़ता-भागता भी है। ज्यों-ज्यों वह अधिक काम में लगता है, त्यां-त्यां उमे अधिक भोजन की रहरत होती है। एक तो भोजन की आवश्यकता शरीर वे बढ़ने के लिए हैं। जैसे अगर हमें दीवार बड़ी करनी हो तो हमें उसी मिलदार में ईंट-चुने की जरूरन होती है। छेकिन दीवार पूरी हो जाने पर दीवार बनाने वे लिए जो ईट-चुना लगना था, उसकी जहरत 'खत्म हो गई । हमारा घरीर वीत साल की उन्ध तक बहुता है, पर अन्य प्राणियों में उस अवस्था में बहुत तिभिन्न ग है। तो क्या बरीर पूरा वह जाने पर भोजन बन्द कर दिया जा सकता है ? नहीं, हमारे शरीर में जो कोषा बने है, उनमें में एक बड़ी तादाद में कीण होते रहते है। यदि हम भोजन न करें तो कुछ दिनों में हमारे शरीर के सब कोपा खत्म हो जायेंगे, यानी हम मर जायेंगे। कोपा बिना कुछ काम किये भी छीजते रहते है। यद्यपि काम बाहर दिलाई नहीं देता है, लेकिन शरीर के भीतर काम तो चलता ही रहता है। हम सांस लेते हैं, यही शरीर का एक बड़ा काम है। उसके द्वारा शरीर की काफी छीजन होती है। उस सारी छीजन की पूर्ति के लिए भोजन चाहिए और शरीर में जो कोषाएं हैं, वे सब जीवित रहें, इसके लिए भी। कहा जाता है कि एक पूरे मनुष्य के शरीर में पच्चीस अरव कोपायें हैं । वे सब अपने आपमें स्वतन्य हैं और जीवित है, यानी सप्राण है और उनका कुछ-न-कुछ काम होता रहता है। चाहे हम उसे वाहर अनुमय करें या न करें। उन कोपाओं को जीवित रहने के लिए भोजन चाहिए। शरीर के भोजन के लिए तीन कारण

बने (१) वच्चे से बड़े होने तक के लिए, नया कोपा बनने को। (२) जो कोपा बन गये हैं उनको जिदा रखने को और (३) काम में जो कोपा खत्म हो गये हैं, उनकी जगह नये कोपा पैदा करने को।

जो प्राणी जितना अधिक काम करता है उसके उतने अविक कोपा नष्ट होते हैं और उसे उस हिसाव से अधिक भोजन की आवश्यकता है। अब इससे हमारी समझ में यह बात आ जाती है कि मनुष्य को भोजन की आवश्यकता क्यों है ? उसे भृत क्यों लगती है ? और उसे कितना खाना चाहिए? यह भी एक हद तक समझ में आ जाता है। जैसे एक कहावन है: "चारू सो भारू" पर मनुष्य की शारीरिक शक्ति में फर्क होते हुए भी शक्ति की एक सीमा है कि न वह उसमे ज्यादा काम कर सकता है, न उम हद से ज्यादा खा ही सकता है। हम एक इंजन को या मोटर को तेल टाल कर लाखों मील चला सकते हैं, यद्यपि उसकी भी एक हद है, पर शरीर को जड़ मोटर की 'भांति अधिक खुराक देकर बहुत दिनों तक चौबीसों घंटे काम में नहीं लगाए रह सकते। वह बहुत दिनों तक काम देगा, लेकिन अपनी सीमा में। जो लोग अनाडीपने से इस शरीर का उपयोग करते हैं, वे इसे खराब कर लेते हैं, या जल्द खो बैठते हैं। जैसे इंजन और मोटरों के नियम हैं कि कितना कोयला या तेल डालने पर मोटर कितने मील चलेगी या कितना काम करेगी और वह कोयला और तेल किस किस्म का होगा जो कम या ज्यादा काम देगा, वही चीज इस घरीर के साथ भी है कि किस मोजन से हमारे शरीर की कितनी शक्ति मिल मकती है।

साधारण मनुष्य इस गहराई में नहीं उतरता कि वह कितना खाय, क्या खाय और कैसे खाय? जैसे वह दूसरों को देखकर बोजना या चलना सीख लेता है वैसे ही खाना भी सीख लेता है। जो वह अपने आसपास लोगों को खाते देखता है वही वह भी खाता है। इसलिए देखा जाना है कि एक घर में, एक जानि में, एक प्रांत में, एक मुल्क में

<sup>\*</sup> ज्यादा चारा खानेवाला ज्यादा भार उठायेगा।

पाम-पान नरह का भीजन बहुना है। इनमें कियो ने कियी मिलान से अनुपार कियी भीजन का भुनाब किया हैं। ऐसा नरी प्रतीत होना अगस्य में बनने आये हैं और करने जा रहें हैं। देशा जाना है कि पंजानी बंगान में जाक आरा और कुप-दरी की रूपनी बीत नजान करना है और क्यानी पताब जारत भी मानती और भान सोजा। है। एक तरह में हमें शोगों में पारे हुई आरसी की बदलने की बोगाम नहीं करनी माहिए, बाद उनमें कोई साम नुकारान होता हो तो। भगवान ने मायद यह स्थान रकहर पीना में बहुत है:

"म मुडिभेदं जनपेन् समानाम् कर्वसनिनात्।" यावी वो नितामें जगे हैं, नमें रनने दो। उस्ते महनाको भर। अपना आपरण तीर्षे रक्षां। यही बनाने ने लिए हमरा परण हैं। "जो पत्ते ना से क्षां महामाको भर। अपना मामप्त ना अर्थ "मार्टनील" है। जब यह देना पढ़े कि नहीं स्वरूपमा नहुन विगह गई है तब यह देना पढ़े कि नहीं स्वरूपमा नहुन विगह गई है तब विहान् ने बोल्डे-क्याना वी गुज्यमा है। वानी है। उस सम्बद्ध "यहा यहा हि पसंद्ध मानिक्षीत आपता तो होत कर हर या, उसका अरहन हम मान्य में में से से माम्ये में सोग कुछ भरने हुए सामुम पहने है। हमार्टिप हुछ महते वी ज़करन पड़ गई है। वो हो बोरीन के सामके में सोग कुछ भरने हुए सामुम पहने है। हमार्टिप हुछ महते वी ज़करन पड़ गई है। वो हो बोरीन काल हम जाने हैं। हमार्टिप हुछ महते वी ज़करन पड़ गई है। वो हो बोरीन मान्य पहले हम पहले हो हमार्टिप हुछ महते वी ज़करन पड़ गई है। वो हो बोरीन मान्य पार्टिप एक हम पार्टि है।

मानुम होता है कि भोजन के ग्रन्कप में श्रीन बहुत प्राचीन समय में ग्रष्टतिया बण्ते को आये हैं और इमीतिए प्रायः सभी आशाओं में ओजन से होने बारी हातियों के सम्बन्ध में बहुतकों पाई जाती है।

बया शहरी बचा देहाती, सभी के मन में मह नम्कार जमा हुआ है कि जिनमा ज्यादा नामा जान जनता है। जमारा पायसा है। बीमार पहने पर ही कीम मह परमाह, हमते हैं कि ज्यादा नामा हाजिल्ल है और बहुत में ती नेया भी नहीं करते; बसीकि जान के ताहर, बेंग बीमारी का नाम्याल नामें में प्राच्या नामें बोहते और के सुद भी नामें के दरदरण में क्षेत्र हिंगे हैं। नामें के मान्यल में वहीं में नीमों की माने-सीन नहीं मिल्ला। बेट में न ममाह यह

दुमरी बात है, सेविन अगर मधा मुके तो छोग आज जितना वाने हैं, उसमें दूना भी वाने लगेंगे। लोगों को यह मालम नहीं हैं । यदि यह किसी से दरियाल किया जाय, या नाने के बारे में किमी में नयानान पूछे बार्च कि किपना साना चाहिए, तो यह बहेगा-पेटमर अपना जिन्ही मुख हो । यो नामारण दृष्टि में देला जाय तो दह बात टीन भी है। हम बयो तराज-बाट बांधे किरे और शौरकर शाने की झाट में पड़ें, जबकि कुदरन में हमकी एक पैमाना हमारे शरीर के अन्दर पेट की शक्त में है उन्हा है और दूसरा सामदद भूख के रूप में। ये दोनो चीजें हम चितना नाना नायें यह बतना नवती है और बरोदी को बनवानी भी है। मा के रननों में दूप मौजूद रहना है किर भी बच्चा दूध दीना छोड़ देना है। लेक्नि इस बच्न नीनो का यह पैमाना कुछ बिगरा जान पहना है और गहरवाना का तथा गिलित कहलाने बानों का और अधिक दिगडा माणुम होता है । बहां हो मोगो को यह मारम नहीं है वि पेट होते की बादर में नहीं बना है, बह एक सिल्ही से बनाई जो रवड़ वी थेनी वी ठरह पैलती भी है। जैसे सेरभर पानी भरनेवानी घैडी में दबारुर भरने से दो मेर भी भरा का महता है, बैसे ही हमारे देट की यैनी में भी सापारण भोजन की अरेशा दना मजे से भरा जा सकता है। कमी-कमी की सीमी को गाधारण सनुष्य की अपेता संटगुनी-रागपुनी सुराव नाने देना-मना गया है और बर अन्य आदिमयों ने कोई लक्ष्ये-चौरे भी नहीं होने कि उनका पेट बढ़ा हो । बस वह धीरे-धीरे ज्यादा साते रहते की बादत दान हैते है और बाना पेट बहाने रहते हैं। उप उनके पेट की थैनी पैन आती है तो उसमें ज्यादा गामान मरे दिना उन्हें भेत नहीं परना और प्राप्त, आर्रामयों ने पैट की चेनी का यही हिमाब है । इसलिए उसनी ही लबार-बोटाई और बाम के होते हुए मी कुछ सीय सः सदाक अनाव में काम चला ऐते हैं और इस होत बारत सटाक सेते हैं। अब पेट मरे उतना साता बार्ध कल में बर्जी होने की कारी गुवारम राजी है । रही यस बाधी बाद उसमें मी राफ्टी की क्यी समावता रहती है। बोडा-बोडा करने भूत को कारा-पड़ारा भी

जा सकता है। देखा भी जाता है कि सब परिस्थितियां और दशाएं समान होते हुए भी एक आदमी कम खाता है, दूसरा ज्यादा । भूख के बारे में एक कहावत है, "जितना खाय उतनी भूख, जितना सोए उतनी नींद।" इस पर किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए। सब अंशों में तो नहीं, लेकिन अनेक अंशों में यह कहावत ठीक है।

भोजन के सम्बन्ध में विस्तृत विचार करने का एक कारण ओर भी है। शारीरिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध तो भोजन से हैं हो। आज एक वड़ी समस्या भोजन की कमी की है। कहा जा रहा है कि जितना भोजन हमारे लिए जरुरी है उतना मुल्क में पैदा नहीं होता। ऐसी दशा में भोजन के सम्बन्ध में कुछ विस्तृत विचार करना अनावस्थक नहीं समझा जायगा। भोजन हमको स्वास्थ्य रखने के लिए है। यदि उसी भोजन के कारण हम बीमार पड़ जाते हों तो हमारे लिए यह सीचना ज़रूरी हो जाता है कि हम कहां गलती कर रहे हैं? भोजन विशेपज्ञों का कहना है कि दुनिया के आज के रोगों में भोजन की गलती मुख्य कारण है। अतः यदि स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाय तो यह जानना और वारीकी से जानना ज़रूरी हो जाता है कि हम कितना खायें।

हमें भोजन के सम्बन्ध में यह जानना भी ज़रूरी हैं कि भोजन हमारे शरीर में काम कैसे आता है । विषय बड़ा है लेकिन में संक्षेप में बताने की कोशिश कहंगा। जो कुछ अन्न-पानी हम पेट में डालते हैं उसमें से शरीर अपनी आवस्यकतानुसार हे हेता है और वाकी बचे हुए को पासाने-पेशाब की शक्ल में निकाल बाहर करता है। यदि हम गरीर की आवश्यकता से अधिक भोजन पेट में टाल छेते है तो वह उममें से अपनी ज़रुरत से ज्यादा नहीं ले सकता । न हम पेट में ज्यादा टालकर उसकी जरुरत बड़ा ही सकते हैं। पेट में ज्यादा भोजन डालने से **उसकी जरूरत बढ़ नहीं, बल्कि कम हो जाती है।** अगर शरीर में ज्यादा भोजन की आवश्यकता पैदा करनी हो तो उसमे ज्यादा काम कराना होगा। इंजन में ज्यादा कोयला जलाना हो तो उसे ज्यादा चलाने की जरूरत है। यही बात सरीर के लिए भी लागू होती है। पर इंजन में तो आप उसे खड़ा रखकर भी चाहे जितना कोयला फुंक

डाल सकते हैं। शरीर में यह वात संभव नहीं है। उसे आप बैठकर ज्यादा खिलायेंगे, यानी पेट में ज्यादा भरेंगे तो उसके सब कल-पूर्जे ढीले पड़ जायंगे। इसलिए पैसावालों को मंदाग्नि की अथवा तरह-तरह की शिकायतें वनी रहती हैं; क्योंकि वे शरीर से मेहनत तो करते नहीं और पेट में डालते ज्यादा हैं। ज्यादा के माने सिर्फ तील में ही ज्यादा नहीं समझना चाहिए। प्रायः तो कुदरत यह करती है कि ज्हरत भर का छेकर वाकी को समय पर वाहर फेंक देती है लेकिन बहुत दिनों तक वह यह काम नहीं कर पाती । जैसे किसी घोड़े पर वरावर आवश्यकता से अधिक बोझ लादा जाय तो कुछ समय के बाद उसकी कमर टूट जाती है, वैसे ही मनुष्य का शरीर भी अधिक खूराक का जुल्म अधिक दिनों नहीं सह सकता। यदि पेट को जरूरत से कम दिया जाय तो भी उसे हानि होगी। इसलिए उचित यही है कि न ज्यादा दिया जाय, न कम। कुछ लोगों ने भोजन के सम्बन्ध में एक कहावत कही है, "पेट भरेंके तीने कोन" जिसका मतलब है कि जितनी भूख है उससे आधा तो अन्न खाओ, एक हिस्सा पानी से भरो और एक हिस्सा खाली रक्खो, हवा के थाने-जाने के लिए यानी भूख से कम खाओ।

मनुष्य के मन में यह बड़ा वहम है कि ताकत सिर्फ भोजन से मिलती है। भोजन से ताकत थाने का सम्बन्ध तो है, लेकिन सिर्फ भोजन से ही नहीं। आप किसी मनुष्य को कई दिन खूराक न दें तो उसकी ताकत इतनी न टूटेगी जितनी कि न सोने से टूट जायगी। ताकत आराम से भी मिलती है। सोने से शरीर को पूरा आराम मिलता है। हमें इस रहस्य को जानना चाहिए। जो लोग इन रहस्यों को जानते हैं वे कम खाकर भी जिन्दगी आराम से ग्ज़ारते हैं। न जानने वाले ज्यादा खाते हुए भी दुःख भोगते रहते है। जिन्हें ज्यादा खाने का शौक ही हो उन्हें चाहिए कि वे शरीर से ज्यादा काम करायें। याद रहे कि में शरीर से कह रहा हूं, दिमाग से नहीं!

पढ़े-िलखे लोगों का खयाल है कि दिमाग से काम करनेवालों को कुछ अच्छा खाना मिलना चाहिए। वे कहते हैं कि दिमागवालों को बढ़िया खूराक जैसे घी, दूध, मक्चन, मलाई, बादाम वगैरह मिलने चाहिए। पर ये बात उत्ही दिवास से नाम देनेबाजों नी एक दिवासी उत्तर हैं। बाई भोदन ऐसा नहीं जो धीय दिवास काता हों। यह तो दिवासवारों ने अपने दिव्य उपना माने ना एन रास्मा दिवास है। अच्छा ओर बुछ अधिन भोतन हों उसीको मिनना चाहिए जो धरीर में अधिन अपन करता हो। यह देसा जाता है कि जो धीन वैटे-बैटे अधिया साने गाने हैं, वे अधिनगर रोगी ही बने एहने हैं। धारीन भी उनका वैशोज कर जाता है। आरामनक हों बीचार पहना है और महत्ती का धारीर टूटना जाता है। अपर सरकार हो बीच हों है। उसे चाहिए हिंगी अध्यक्ता की जकार हों बीच हों है। उसे चाहिए हिंगी अधकार करने की कोता करें कि यह रिखान उनट आप । हस्से आरामनक और महत्ती बोर्सों को छात्र होगा।

भीजन के सम्बन्ध में जब आप यह पुछते हैं कि रितना साना चाहिए तो मुझे आप में यह पूछने की जरूरत होगी वि साप गीन-सी बस्त साना जाहते हैं? "एक भीज तील में पाद भर भी साहर उनना ही नाम करेगी जितना कि दूसरी चीन सेर भर नाकर"-इसे मार इबन के सदाहरण में समारें । इबन में लक्की भी जलाई या ग्रापी है और बोबका भी। छवडी चार मन जले. कोयमा एवं मन । काम बरावर होगा । अगर एवडी हम्बी हुई तो चार के बजाय पांच मन में भी उतना ही बाम होगा । इस दृष्टि ने भारतो देखता होगा कि भार बदा और निपना साथ हैं। बहुत छोग या बहा जाय हि अधिकात लोग इस भेद को नहीं जानते और वाने की गमन मित्रदार के कारण बीमार पढ़ जाने हैं। कुछ शीगी ने मन में मूछ भीजों के बारे में सरकार जमें हुए है कि भोजन की से गवन बहिया की में है और इन्हें कर काता. सिनाना पाहिए, बिननी मिन सरे उननी और इसी निजात के अनुसार हमारे भाक के प्रचार मंत्री की मां स्वरीय स्वन्परानीयी थी जवाहरूगाच्यीको बमरा बन्दनको लड्ड मिलाडी थी ! बहुदशी मात्राह इस नरह की गर्जीयों करती रहती हैं । यह स्वात ति सारे, बाना, या में सरीर के लिए पूरा पोपण मौजूद है, स्टाउ है।

रिजना साता बाहिए यह ग्रही-ग्रही बचनाने के

लिए बया साना चाहिए और बचा नहीं, यह बिपय आपरे मामने आना है। पर एक बार हम उगको छोरेंगे। मोपन पर शास्त्रीय दिन्द से विचार करनेवालों ने मोटे तीर पर एवं नरीवा निवाला है जिसे वे बैंकोरी के नाम से प्रवारते हैं । हिन्दीवाली ने अमरा तर्ममा 'उप्पाब' क्या है। उने आप स्थल कप में यो गमतें। और एक गाय को क्लिना चारा-दाना देना चाहिए, वह हम इस बात में अन्दान करते हैं कि वह वित्ती बड़ी है और वित्ता इस देनी है। अगर इस ज्यादा देनेबानी है तो उमे अग्नार अधिक चाहिए । इसी तरह बहनेवाले बच्चों की उनकी उसर के हिमाब में उल्लांग चाहिए। गाम गणनेवाले मजदूरी को उन्हरी महतन के हिमाब में उपमांक चाहिए। टेवल या गही पर बैठ कर काम करने वाने बाबू या नेट को उनके हन्ने काम के अनुसार कम उप्पांक चाहिए। मीच हम यह बना रहे हैं दि दिम तरह ने परिधम न रने बाजों को किनने उप्पांक बाहिए। बार मौधम के हिगाब में भी उपनाब में बुछ बम-बेनी बार मबते हैं। भैने गरमी में बांच गेर पानी की उदाला जाय ही बह एक गेर लक्षी में होगा तो बादे में नवा गर कवडी करेगी , इसी तरह टरी बावहवा में हुछ अधिर उप्पार लग गरने हैं। गर्भवती और दूप तिलावे बाली मां को भी हुछ अधिर उन्मान श्रम मनी हैं । अब यहां मबात यह पैदा श्रोगा हि इस बैंगे जानें हि हिम बस्तु में दितने बणांक है। यह भी कुछ गहन विश्व है । मिर्फ विगी नाम विगेष से पुरारे जाने बाली बीज में एक्से उप्पान नहीं मिहने। कर चीत्र केंगी धरनी में, बेंगी सार देवर और बेंगे बीत में वैदा की गई है इत्यादि बानों पर निर्मेर होगा । पर यह बनाना और जानना भागान नहीं है । भारोप्य-मदिर ने 'आर्च-आहार' नाम की एक पुरुष प्रति है और केन्द्रीयमण्डार की बोट में एक अपेत्री क्लेटिन प्राप्त है. विसे बुलेटिन म॰ २३ वहते हैं। उनमें नाते बारी मर्तर बस्तुओं के बाई लोजे बहत के उत्ताह दिए हैं। ये दोती पुरुषे अपनी मेहतत ने हिमान से माने लिए बाजार निर्मंद करने में महावक हो नकती है। उत्पाक के बारे में एक बात बोर बना दूं कि उत्तरान नाम के रिगान में हो हैं ही, प्रमद, बांचा और स्वी-पुरव भेद ने दिगाब से भी

है। लेकिन यहां हम फिर क्या साना चाहिए पर आ जाते हैं। मान लीजिए कि आपके काम, ढांचे उम्र आदि के हिसाव से अठारह सी उष्णांकों की ज़्हरत है तो यह आपको चौबीस तोला वादाम की गिरी में अथवा आध सेर गेहं में मिल जायगा अयवा ढाई सेर दूधमें । लेकिन क्या केवल ये चीजें खाकर काम चल सकता है ? उप्णांक के साथ भोजन के अन्य तत्वों का विचार करना भी आवस्यक है। वह इस दृष्टि से कि हमारा यह गरीर जिन तत्वों से निर्मित हुआ है वे सब हमको उस खूराक से मिलने चाहिए। जैसे एक इमारत में ईट, चूना, गारा, सीमेंट, लोहा, लकड़ी ये सव चीजें मिलाकर हजार मन लगी है। कोई कहे कि सिर्फ हजार मन लोहा लेकर इमारत खडी की जा सकती है, तो वह गलत होगा, वैसे ही केवल एक चीज से पूरे उष्णांक प्राप्त करना गलत होगा ।

हमारे शरीर में कीन तत्व कितने-कितने हैं और किस खूराक में उनकी मात्रा कितनी है इसके लिए एक अलग लेख चाहिए।

प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सा के टा० केलाग ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'न्यू टाट्-टैटिक्स' में सान तरह के पेशवरोंके लिए, जिनका वजन पीने दो मन के लगभग है, केलिर्सों का नीचे लिसा हिसाव बताया है: दफ्तरी२४४०, मोची२५१०, ठठेरा २९००, रंगसाज २९५०, बहुई ३१०० गिट्टी तोड़ने वाला ४२००, बाराकश (लकड़ी चीरने वाला) ४८००।

साय के खाके में ऊंचाई और वज्न के हिमाब ने मनुष्य के शरीर की उस दशा के लिए केलोरियां बतलाई गई है, जबकि वह बिल्कुल आराम कर रहा हो-

		W.	سى	9	رد ح	P	>	1	ı	!	1	1	1	,	ļ	ļ	I	ļ
तील गोडों में		n	3	$\sim$	₹ %	$\sim$	0	1		1	_	I		1	1	1	ı 	
	33	२२२५	2	مح	2882	90	२०३७	%	४४४४		1	l	-	1	1		-	1
	0	೨ ~	2	°~	3086	3	%	20	2868	9328	1	Ī		Ī	1	1	1	
	288	₩ •~	%	0	2080	\$860	E%58	V	9528	0628	8023	I	1			1	1	
	\$20	2008	0	00	8988	6V	%	2228	\$630	१७७३	१६०१	9838		!		1	1	
	<b>३</b> ०%	3	0/	% % % %	४६२४	22	22,28	ŝ	<b>€</b> のの}	8	7238	0 13 8	8683	1	1	-	1	
	w	%9% %	१९३३	4088	9328	8528	8028	৯১৯৯১	३८०४	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	8238	१६०३	7878	1	1	-	-	
	242	2888	997 <b>%</b>	2228	\$288	१७८२	भेष्रक है	<b>୭</b> ०୭ <b></b>	४०३४	8638	200	3 3 8	% % %	228		1	1	
	883	2428	\$250	१७९५	१५०%	३८०४	7758	0738	१६२२	2748	9278	%०५%	१४७२	६६१	१३९५		-	
4	833	3028	೨	१६०४	0'	000	& 6 6 8	2648	25.78	2648	0 %	or	28	112"	<u> </u>	१३२०	१३८२	
	828	<u>س</u>	w w	112	22.52	Ur	9	-3	8608	\$92.8	१४३३	0° 0° 0°	१३६७	१३३९	8068	१२७३	१२३५	9 9 9 19
	8801		& 60 07 00	, O	. 9 5	2420	600	V	८५४%	2.323	<b>၈၈</b> € &	०३३०	8388	१४८२	१२४५	\$486	مته	9 9 6 5
	0		1	0 E 7 &	٠ ٣	V	<u>بر</u>	× ×	3768	8	3	0	3	१२२६	2288	0588	8838	7000
	22	1	1	% % % %	\$ \$ 3 \$ \$ 3	30%	<b>୬</b> ୭୭୫ ଧ	288	8330	n	8468	१२२६	2888	8888	११३२	8038	3008	90310
	99			1	1		8363	763	. W.	200	222	6850	8838	8803	100%	80×08	2808	0/0
	0,	:	-		1	1	2008	222	0 W	200	~ ~	8008	3702	3036	3000}	828	848	×co
	3	-		-	I	l	6688	, UJ	790	50	V	000		६४३	5000	562	200	191
च हु च्यः ह 8	-	0	) <u>&gt;</u>	9	200	3	09		UY				3	سون س	<u>پر</u>	3	9	>

#### डाक्टरों का जमघट

बारटर ने आकर मरीज की परीक्षा की। परन्तु मर्ज समझ से न आपा। तक एक और बारटर कुताया गया।

्रस्य प्रचार एवं से हुए दी डाक्टर ।

दोनो बात्रटरो में हुआ मनमेद । तब अन्होते परामग्री के लिए एक भीर बाक्टर बुलाया।

यों हुए वा से तीत ।

नीनो शब्दरों में शेवी ना जांचा और तब निया एवं और विशेषत आना चाहिए।

तीन ने हुए बार ।

चारों काक्टरों को यह देनकर बड़ा आस्वर्य हुआ किरोगी अब भी जिन्दा है और तब पाचना काक्टर आमा, नहीं के जिन्दों मरीज को भीजन देने के लिए।

नारसे हुए पाना

पांची बान्टरी ने भरता बात्यव दिनावा और विर एन भारमी और बुलावा एक्नरे द्वारा मरीज की परीक्षा करने के लिए।

यो पांच ने हुए छ ।

छ हो डाक्टरों ने मरीज का स्वांपास भेजों की सैयारी की और एक और डाक्टर बुलाया इमलिए कि अब क्या किया जास ।

🖩 में हए मात्र।

मानो ने मिलकार निरुपय क्या कि आगरेशक की जनका है और तक एक गर्जन युसवाया गया।

सान में हुए बाठ।

आठो क्रेक्टरो ने देना कि गहबड़ी अगर कुछ है तो सरीज की रीड़ में ही है। इसिक् एक स्नायु क्रियेश की महायता बाही।

आउन हुए नी।

मगर वे ती-ते-ती डाक्टर में पुरुष । इमलिए उन्होंने बुलवाई एक डाक्टरती ।

नौ ने हुए दग।

और सब देशी डान्डर सरीज की कारपाई की पेरकर लड़े ही गये और इन गरियान पर पहुंचे कि रोगी का नी असही निकल चुका है।

('माहर्ग टाइम्म' मे)

### कुद्रती इलाज

बाहर से मनुष्य के धरीर को वैद्य तबतक ही मदद दे मकता है जबतक धरीर में ताकत बची हुई होती है। अगर धरीर की ताकत मत्म हो जाती है तो येख बुछ नहीं कर मदना । इमिल्ए हमारा काम यह है कि धरीर का आरोग्य हम अच्छा रहें । उनके लिए हमें गांधीजी ने बताया है कि बुदनी इलाज पर आधार रक्तो । मूर्य-प्रकार, पाती, मिट्टी आदि से रोग अच्छे करना मीत्म देना चाहिए। अजकक तो लोग बहने हैं कि हर गांव में एक दवागाना हो। अभी तक येमा नहीं हुआ है, यह परोध्य को अभी तक येमा नहीं हुआ है, यह परोध्य को अभी तक येमा नहीं हुआ है, यह परोध्य को अभी तक येमा नहीं हुआ है, यह परोध्य को विभाग ने के निमत्त से बाहर जायगा और रोग दम गुना बढ़ेंगे। जरा पहीं मुछ हुआ कि हम दवागानों में दौड़ेंगे, और यह ममझ दों कि एक दफा येख अगर पर में आ जाना है तो फिर वह पर नहीं छोड़ता। चुछ लोग वहने हैं कि फराना डाक्टर हमारा फैंमिली-डाक्टर हैं। याने पर में अने माना-पिना होने हैं येमे वह डाक्टर भी पर ना ही एक स्वाप्त ही इस तरह हर बान में अगर हम गुनाम बनने जायेंगे तो फिर स्वाप्त माहें मा है। इस तरह हर बान में अगर हम गुनाम बनने जायेंगे तो फिर स्वाप्त महते मा है। इस तरह हर बान में अगर हम गुनाम बनने जायेंगे तो फिर स्वाप्त महते मा है।

# अमृतान्न भ्योर पूर्णान

### डा॰ ग्रात्माराम कृष्ण भागवत

सारे संसार का हरएक व्यक्ति चाहे वह घनी हो या निर्धन, जवान हो या बूढ़ा, मदं हो या औरत, कम-से-कम श्रम में श्रिवक-से-अधिक सुख और आराम के लिए पैसा कमाने की कोशिश करता है। लेकिन किमी के घर में पूरे तौर से मानसिक शान्ति, शारीरिक आरोग्य और साम्पत्तिक दृष्टि से तृष्ति हुई हो, ऐसा दिखाई नहीं देना। समय-समय पर कीटुम्बिक व्यक्तियों में किसी-न-किसी विषय पर वैषम्य पैदा होकर गृह-कलह का रूप मामने आ जाता है। हरएक घर के बच्चों में, जवानों में या बुड्छों में, किसी-न-किसी समय पर कुछ-न-कुछ रोग होता ही है। कितनी ही सम्पत्ति या पैसा अथवा सामाजिक या राजकीय ऊंचा दर्जा प्राप्त होने पर भी अथाति बनी रहती है। सच यह है कि हम लोग जीने की कला नहीं जानते और अनेक रोगों को स्वयं ही आमन्दित करते हैं।

राजकीय, सामाजिक और औद्योगिक क्षेत्र में पारनात्य राष्ट्रों में जो कुछ उन्नति दिखाई देती है और जिसका अन्धानुकरण भारतवासी विशेषकर मुशिक्षित लोग कर रहे हैं, उसका नतीजा भविष्य में बया होने बाला है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पादचात्य जीवन का यह नारा आज तेजी से बुछन्द होता जा रहा है---"कम-स-कम श्रम में ज्यादा-स-ज्यादा पैसा कमाना और पैसे के द्वारा भीग-विलास की पराकाष्टा ।" उच्च-रा-उच्च दर्जे का जीवन आर कम-से-कम श्रम इस नारे पर जब राष्ट्र में अमल करने की बात आवेगी तो उस पर उत्साहपूर्वक अमल करने के लिए कितने लोग तैयार होंगे ? सच यह है कि जितना अधिक मिलता है उसमे भी अधिक पाने की इच्छा होती है। फिर यह अभिलापा किन सावनों से पूरी हो, यही समस्या आज सभी राष्ट्रों के सामने उपस्थित है। लेकिन उनको अवतक कोई रास्ता नहीं मिल सका । उनकी दृष्टि भौतिक है, आध्यात्मिक नहीं। इन सब समस्याओं का हल सूत्ररूप में हमें गीता में दिखाई देता है। स्वास्थ्य के हर पहलू पर विचार करते हुए गीता के सत्रहवें अध्याय में कहा गया है—

श्रायुःसत्त्ववलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः । रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या श्राहाराः सात्विकप्रियाः॥

भावार्थ यह है कि जो मानव जीवन-रस-युक्त अमृत की तरह कंद-मूल-फल, साग-सब्जी और तेल-युक्त तिलहन या मूंगफली, नारियल, तिल, आदि और अंकुर-युक्त धान, दाल आदि पौष्टिक चीजें भोजन में इस्तेमाल करता है, उसकी निष्वित रूप से उम्र वड़ती है, सार्त्विक वृति बढ़ती है, शारीरिक वल बढ़ता

है, आरोग्य बढ़ता है, सब तरह का सुख बढ़ता है और जिस-जिस ब्यक्ति के सम्पर्क में वह आता है उस पर उसका प्रेम भी बढ़ता है। ऐसे व्यक्ति के पास कलह, रोग और दारिद्रय कैसे फटक सकते हैं?

इस लेख में हम केवल इस बात पर विचार करेंगे कि वर्तमान परिस्थित में देहाती या शहरी लोगों को

जीवन-प्रदायक आहार कैसे मिल सकता है ?

रसदार चीजों में सब किस्म की साग-भाजी सब तरह के खट्टे-मीठे ताजे पके फल, गन्ना आदि चीजें आती हैं। स्निग्च अर्थात् चिकनाई वाली चीजों में सब प्रकार के तिल, मूंगफली, नारियल, वादाम, पिस्ते, काजू आदि आते हैं। स्थिर अन्न में अंकुरित किये हुए सब तरह के विना पालिश किये चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, मकई आदि अनाज; चना, मूंग आदि द्विदल; दल, आलू, कचालू, कंद, शकरकंद आदि कंद आते हैं, लेकिन ये सब चीजें खाने में स्वादिष्ट, तृष्ति देनेवाली और मीसम के अनुकूल इस्तेमाल करनी चाहिए।

वैसे साधारणतया यही सव चीज हरएक कुटुम्ब में इस्तेमाल की जाती हैं। लेकिन जिस रूप में उनका उपयोग निया जाता है. उसमें बजाय लाम के हानि ही होती है।

दन प्राइतिक पीजी का प्रयोग करने समय उनमें मिनं, सराई, नमर आदि मनाने व गुड-शहर डाटरर शिषहे सप में इस्तियास बारते हैं। बारता तनमे तरह नारह बे शेग वैदा होते हैं।

मेरे विचार में दो प्रकार के भोजन से मन्य्य स्वन्य और दीर्घ-वीवी हो सकता है (१) अमृतान्न, जिनके लिए अग्नि भी जरूरत गही होती, (२) पूर्णांग, जो अमनाप्रको निर्केशाय पर या सदी आग पर पकावर बनाया का प्राहे।

अमृताम और उसके प्रकार

अमृताम म साग-मध्यो, जिसमें हरी पनीवारी साबी, मेली, गांबर ,शलबम, चरदर बादि सभी प्रसार न पतीबाने साम गामिल होते हैं, बाम में लाई जार्ग है। आल, शरानद, जमीबद, अरबी, बाबाल, निपाडा मादि पीने उदालने में ही साने योग्य होती है। सर्गारत भनात, द्वित दाल, निलहन बादि चीवें इकड़ी मिला देने में एक पकामन रूपी औरन आहार बन आता है। सड़े या भीड़े रन और ग्देशर एन और गन्ने में इम्पान के लिए अमन रूप में शक्तर न्रश्तित होती है। ये भी में भागानी से पैदा की जा गरती है और मौमम के अनुवार उनको इन्नेमाण करके उनने राभ उदाया जा गवता है।

पुर्णान्त तैयार करने वा नरीवा

पूर्णात्र सियदी-एव वर्डन में नीचे बहुन्ति अनाज तीन माग, अक्रिन दान एक माग, अक्रिन मूग-कती, या तिल या नारियण विलाहर या एक ही चीन एक भाग बारकर उनमें उपना ही पानी बारना और

उत्तर साथ जात की सामा-प्राप्त गृहती काटकर वितासक पूर्ण म बन जाता है। प्रपृति की दारण में जाने के बाद ने जब कभी मैंने अपने स्वास्थ्य और उसकी मुदालता के लिए मच्चा उपाय जानने की कोशिश की हुँदाव हर बार भैने देशा है कि ये उपाय गर्वेषा प्राप्टितिक होते हैं अर्पात् जो बुस्म जब बिभी मैने प्रपृति में जाना है उनारी

परीक्षा करने पर यह पूर्वतया मृत्य माबिन हुआ है। जब प्रहृति के नियमानुबूछ सभी

मार्थ निये जाने है नय उन नायों की मन्दना की जाँच व्यर्थ है।

सिवडी में ही टाज्यर भागपर एक से दा घटे तर उदारना । बरतन नीने उत्तर मर प्रथम गुरुशी उपर में अटग निवात कर पहुँट तीने की निवरी माना, पीछे सस्त्री । सुरू सुरू में यो शानगर पनिया, हारी या जीरा भादि कथ्या ममाता प्रधान कर नकते हैं। आदा पर जान पर मना रे छोडे बा सको है।

पर्याप्त रोटी-विन प्रशा में गंदी के लिए वो बाद्य विस्ता हो, बोद्य पीनवर और मौगम के अनुसार मिल्ने बाली साग पनी को कर कस पर कम कर आहे में गुप सकत है। उसमें अ*हरित* दाल, निवतन, सापरा आदि हमामदस्य वा मिन पर गारीत बर्ग्ड विष्यादें है आरम्ब में बोडा बन्दा मनाण और नमक-मिन्ने भी दाल सकत है। आहा गणकार एक वाटी में बादा वी था तट स्यार र उस पर आगा ४थ ने एक इच तर बटाई में चैनाहर और दिर दुसरी पानी. उसी आ कार की लेकर उसमें बाहर से लेल या की लपाइर पहली याची पर दवाना जिसमे दोनी याणी अच्छी तरह में बादे ने बित जाय और बीच की हवा बाहर निवन बाप । इस सरह जिल्ही रादी चाहिए उन्हीं धान्या तैयार करने एक बंदे बरनन स. २ द्रव नक पानी दानकर उनमें उननी उसी एक स्मि पर वाल्या रम देश । हर थानी की बोरी में बाबाद व अंतर रहे। एसी कोई भी सोट की रिग रमहर बड़े बॉनपर इत्तान इस प्रतार रम देगा है। अन्दर हवान बागके। एर पॅटेनर दी ददान्ता। वैद्यार होने पर लुटी से बाट बर ठडी होने पर भीवन म परोत्ता और नृष बदा-बदा पर गाता। उनके गाय किमी भी मानत की भाका रहता गरी रहती। उसी बाटे में नवर, मनादे की बनह गृह शास्त्रे भे भैजा

# डाक्टरों की दुनिया

श्री त्रिस्ताँ वेर्नार

एक दिन मेरे एक पुराने दोस्त मुझसे मिलने आए । उनके शरीर में जो क्रान्ति हो गई थी असके कारण में उन्हें सहसा पहचान भी न सका। उनका वह मोटा-ताजा, बादी से फूला हुआ जिस्म देखकर मैने कहा, "दोस्त, पतला होने की कोशिश तुम क्यों नहीं करते?"

"बहुत कोशिश की भैया ! खाना-पीना कम करके देखा, काफी वर्जिश मेहनत कर देखी, फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ । अब तुम ही कोई इलाज बताओ।" उदास स्वर में मेरे दोस्त बोले।

"अच्छी बात है"—कहकर मैंने उन्हें डाक्टर सेन का पता बताया। डाक्टर सेन मुटापा दूर करने में निष्णात थे। उन्होंने मेरे दोस्त को सुबह-शाम टहलना बताया और कुछ कड़वी-मीठी दवाएं भी दीं।

लगभग एक महीने के बाद मेरे दोस्त मेरे पास आएं। उन्हें देखकर मैं बोला, "मित्र, तुम्हारा वात-रोग तो बिल्कुल चला गया मालूम होता है।"

"हां भैया, लेकिन तुम्हारे जीने की सीढ़ियां मैं वड़ी मुस्किल से चढ़ सका। बहुत ज्यादा चलने से मेरे टरानों में वेहद दर्द हो रहा है।"

"ऐसी बात है? तो फिर तुम डाक्टर खन्ना के पाम जाओ। वे बहुत जल्द तुम्हारे टक्कों का दर्द दूर कर देंगे।" मेने उन्हें डाक्टर खन्ना का पता बता दिया। डाक्टर खन्ना ने उन्हें हर रोज चार घंटे तक पांचों पर कीचड़ लगाकर बैठने को कहा। मेरे दोस्त ने दिल लगाकर यह कार्यप्रम दो महीने तक चलाया और आय्चर्य की बात कि उनके टखने बिल्कुल ठीक हो गये और मेरे दोस्त ने बड़ी खुशी से मुझे वह खबर दी। लेकिन उनकी बैठी हुई आवाज मुन कर मैने पूछा "दोस्त, यह तुम्हारी आवाज कैसे बैठ गई?"

"वही तो तुम्हें बताने आया हूं, भैया । लगातार दो महीनों तक गीला कीचड़ पैरों पर रखने से मेरा गला बिल्कुल बैठ गया है।"

मैने उन्हें तुरन्त डाक्टर सिंह के पास भेज दिया। प्रोफेसर होने की वजह से दोस्त को गर्छ के साय हर क्कत काम पड़ता था।

डाक्टर सिंह बड़े तजुरबेकार थे। 'उन्होंने यह

देख लिया था कि गले में रक्त का प्रवाह ठीक ढंग से न होने के कारण गला खराव हो जाता है। इसलिए वे बीमारों को विजली के झटके दिया करते थे। चार महीने तक मेरे दोस्त ने डाक्टर सिंह से इलाज करवाया।

उसके वाद वह चिल्लाते हुए मेरे पास आए। उसके गले में कोई खामी अव नहीं रही थी; लेकिन साथ ही उनके शरीर की ताकृत भी निकल गई थी। विजली के झटकों से उनकी नसों पर वहुत वुरा असर पड़ा था। वह हालत देखकर में उन्हें नुरन्त टाक्टर खरे के पास ले गया। उन्होंने दोस्त को देख-भाल कर दवा दी। उस दवा से मेरे दोस्त की नसें चार महीने में ठीक हो गई; लेकिन दवा से उसकी पाचनशक्ति पर वुरा असर पड़ा और उनका पेट खराव हो गया। तव में उन्हें डाक्टर गुप्ता के पास ले गया। डाक्टर गुप्ता ने उन्हें दृध और फल खानेको कहा और कुछ दवाएं भी दीं।

पंद्रह रोज बाद दोस्त मुझे धन्यवाद देने के लिए आए तो उनका मोटा-ताजा और वादी से फूला हुआ जिस्म देखकर में उन्हें पहचान भी न सका। मुझे उनपर रहम आया और मैं बोला, "तुम्हारी बात इसी तरह बढ़ती गई तो तुम्हारे दिल पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। इसलिए तुम्हें इसका इलाज करना ही होगा।"

"नहीं भैया, अब मुझे माफ करो। जो कुछ है सो ठीक ही है। वरना फिर से मेरे टखने दर्द करने लगेंगे, फिर गला खराब होगा, फिर नसें कमजोर होंगी और वह चक्कर चलता ही रहेगा।"

"अच्छा, इस बार हम डाक्टर सेन के पास न जाकर डाक्टर बोस के पास चलें।" मैने कहा और अपने दोस्त को लेकर डाक्टर बोस के पास चला गया। डाक्टर बोस ने उन्हें घुट्सवारी करने की सलाह दी और कौनसे समय किस रपतार से घोटा दौड़ाना चाहिए, कितनी देर तक घुट्सवारी करनी चाहिए आदि सारी बातें तफसील के साथ समझाई।

आठ ही दिनमें बीमार का वज़न घट गया; क्योंकि दूसरे ही रोज़ वह घोड़े पर से गिर गया और उसकी एक टांग कुचल गई, जिसे काट टालना पड़ा।

वेचारा दोन्त ! अन्०--श्रीपाद जोशी

### वायु श्रीर श्रारोग्य

#### द्याः बुलरंजन मुखर्जी

٠.

यापू को हमारे पारनों में 'प्राच' मना थी नई है।

ग्रन्त जब हमारे परीर में वापू की निया बन्द हो जाड़ी

है तब हमारी मृत्यू हो जानी है। बापू में ने हम वो बोयबन्
बहुत करते हैं वही हमारे परीर में तान और दास्ति उन्याव करता है। यह ताम न रहे सो हम बन और दास्ति उन्याव करता है। यह ताम न रहे सो हम बन बार बहार नहीं गन्ता। यू'हा जनाने के लिये जिम तरह दाय-दाय श्रीपतन् का प्रयोजन है, हमारे परीर को भी उसी तरह श्रीपतन् की आहों। की श्रीवस्तका है। श्रीपतन् के बिना बती या कुन्हा करते ही तरना बायु के बिना भी हम उसीतह हो एवं मिनट से श्रीवस्त नहीं ग्रह मकते । इसी वारण वायू की 'प्राम' करते हैं।

शम शोर बायु प्रहण बनने हैं बयबा नाम हने है प्रया-मन भोरबन् गांवा बनने के लिए ही। देह के भीनर गय हुए गांच के गांव मिन्न बन ओमजन् वर्ग बस्त बस्ता है। गांच भोरवन् की बॉल आरा बस्त के होने पर गांदि के लिए हरण बनने थोरव नहीं होता। दसी हम् बिटामिन आर्र की मारह ही बाद भी एक प्रभाव नाम है।

बायु का यह उपकार हम उसे माम के माय नेकर पार्ष है। देर में बायु के स्था में भी सकेट लाम होता है। नहां पर्य पर बायु का स्था बायु-नान (Alt-bach) क्लाता है। बायु-नान का मूल बहाता है। जब हम मुक्त बायु का छाइ मूल बहाता है। जब हम मुक्त बायु का छाइ कर बाद कपरे में रहतें तनने हे नव हमायी भूख कम हा जाही है। किए जब हम पांधो में जाहर कहा की पूरत बायु में पून्तरिक्त में होते ह नव हमायी जठगा-लित तेत हो जाती है। कार में मुख्य कार्य का एक प्रथान जावन मुनी हमा में हरूता है।

ठडी हवा वे गर्गा में देह के ज्वाबु देने गण्डा, स्वरूप और उद्गीरित हो उटन हैं बैंने और दिनी बताद के नहीं हो सबने। स्वापुनमृह शैह हमारे सांतर का राजा है। स्वापु के द्वारा ही हमारे सारीर के मानी यब सांकान्ति होने हैं। बिना समस्य टारी हका के स्वाप्त ने स्वाप्त समूद उद्दीपन लाग करता है उस नमस नमान्य सारीर का काम सक्तरी तरह से चलने लगता है।

बायु-स्वात बरते हैं पनस्वरूप स्वायु-मयूर्व वे पान्त ही जाते में सांन्यात-पार्शन को भी राज्य पहुच्या है। अतेर सारमी अपनी जरित गायरपार्म में सारायात के रिष्ट् निर्देश स्थाप में प्रमण करने हैं। रुपने भान आप ही मद में उप प्रमण्या का हुए जग उट्या है। अमेरिका में एव पारित्यह हुआ है। उपने बहुन-भी दिनाई निर्मा है। यह जयन में मुगने-पुमने ही अपनी कहानियां की मूस्तम्य बिप्यों का मुन्याव सीच नेना या। उनने बाद अपने पारापार में नीटनन आरब्यंमय पीपना से बहु अपनी कहानियां को पूरी कर प्राल्यां

देना यदा है दि बायु-नात दान्य बनने में पारपोर्टर (Thyroid) और एप्टिन्ट (Adrenal) धियों का साव कह जाता है। उनने गुल्यकर देहें विभिन्न बच उद्दीर्पत लाम बनते हैं। इससे बुदा इस होनी है और देन की सेय प्रियम्भासा बन्दी है।

मुक्त बातु प्राप्त बनने वे पान्यकन देन में जा ओनस्तु प्रीक्ट होता है. बहु देर वे दिया को दान बन प्राप्ता है। इस मीपो को कोई भी रोग कों में हो, देर में गाँवा दिवाक और दूरित दार्थ हैं। उपने मुन कारन है। देर में दूरित गवित पार्थ जब देश हो जोई है तब नभी रोग अच्छे ही जाई है। इसी बारन कारप रणा और गण को स्मार्थ है वस में बाद एक अनमंत्र पार्थ है।

. . .

आवरण यूरोर के शिवित्र स्पानी में चुगरून की बीमार्ग में दलिए रोटियों को सुनी हवा में स्मा आजा गर्मा ने दिनों में रोगी नो जिनता अच्छा रुपे देवट उनना ही नप्या उपने मारीर पर रूपना उदिन है, दिनु मेमाच्छा दिनों में अपना तेन हम स्मानित है, ति रोगी नो पर ने भीतर इस तार से प्रमाना चाहिए दि उपने नमरे में यदेण्ट हुआ ना प्रवेश होना पहें, परना गोगी ने गर्मर में उपना शोना न रुपने पाये। यदि तेन हुवान होनों बर्स्टी ने दिनों में भी गोन मनेतन नमा

पुगत रोग म पीर्श्यां वायु-मान वा अध्यान हाता आवश्यत है। पर्श्व-महत्त्व मोशी देर तह जुनी हवा म रह वह तमसा ममस्य और वायु-मान वहीं शीवता वी बृद्धि वहता बाहिए। अस्त में स्वात वहार वहने नहें वर्ष वा स्वास्थ्य इस तहहें में उद्भत हो बाता है हि सर्वी स्पन्त में स्थित तहु वा अस्तिय स्टी होन पाना।

श्रदशह में अध्या ठटन ने दिनों में बायु-नान करने के समय देह को सर्वेश तब्ब एवं देह के भीतर तुन को गवाप्ति अवस्था में रणना आवस्यत है। ऐसे मेमप यदि बादा लगे अववा गरीर टडा ही बायती अविद्यास प्राप्ती-प्राप्ती देह की हायी ने सन्तन नाहिए। इंग नुसा धर्मन (Dry Friction) नहने हैं। इस नरह पर्यंत करने से खब दही हवा में भी दह नही सर्दर्श अथवा उस दर्श बाय से भी गरीर को मुक्तमान नहीं पहुचना। यूर में टरन कर, कैन-बुद कर भी वायुननात किया जा गक्ता है। बार जिन्ती दही ही दहनी ही बीह-पूर करना आवस्त्र है है सहरे जिए समय बाहर जाकर पुरवाल भादि सेटले हे प्रगासमय भी बार्ड एशार बर बहुत गरीर संध्याद से बहुत नाम होता है। दिनु बायुननान से तमी शाम होता है बबकि बाहर की हवा मुखी, बीइन तथा निर्मेत हो। यदि बानु दुवित हो तो पुमञुम के बीव क्षोपप्रत क्षण नहीं करने । जिस मार्ग ने रका ओपनन् यहा बनना है, बायु द्वािन रहने में उसी मार्ग ने दूरिन बायु भी रहन ने भीतर प्रविन्ट हो जातो है। बाँद बायु द्वािन हुई तो उसने बहुत ने गहन भी द्वािन हो अता है। मुंछ दिनो तन दूरिन बायु ने हरनेमान ने पाइ रेग, बनानि, अनिनास एक स्वयु प्रवार बा पुनसुन-योग हो सकता है। इसिन्ट पूजिन सुक्रा और बस्यु ने हनेसा बकता तथिन है।

माधारणत अनिदिन आये घटे ने जिए नायु-नात बचने में ही बचाने जान होता है, कियु अपन में इसने मिट्ट बच्चे समय निहिष्ट नहीं हैं। दिनती भी देर गठ मुर्चा इस में पह साथ दनना है। अवचा है। घीन छीन बच्च अपन कनुओं में घर ने भीतर पर बच टिन्टिन्स्ट्रिटे अववा अपन बोर्ड बास बचने ने समय भी हमें बहुत बग बचने हैं। धी-म-जपान देवा में दिन्दान सभी समय साथी बचन पर बच बायु-नात दिखा जा गरना है। युगने गीच्यों की दिवसे बम्मी-नय तीन बार आये-आये घटे हैं। जिन्न बाय-नात बचना चाहिए।

बायु-नात के शाय-गाय माँद हवान-प्रकास का न्यायाम भी किया जान तो उनकी उपवित्तिका श्रीक बढ़ जाती है। मुन्त हवा में नुछ दिनो तन हशान-प्रकास का न्यायास करने से महान गरीर नामानिक होता है एक हेंद्र की भेग-निर्देश शासन प्रफेट त्या नाव बढ़ जाती है। बायु-नात ने सुक्य की गाँउ से गाना नाव जात से उन्यों भी नाव होता है।

बायु-नात वा अधिक लाग तब फिल गानता है जब बीवजीव में बायु-तिस्वरित कर निया बाय 1 अनेक गाम बेचन वायु-तिस्वरित में ही देह के भीतर दूरपूर हुएल हैंने की निया तीक होती है और बहुन में रीत अपने होंग बाद हैं।

इन सभी नारणों से हिंदी में यह न्हापत है "तो दवा न, एक हता।" बर्चान् सो बोर्यपर्चों में जो नाज नहीं होणानह एत-सावहवाने हो जाणाहै।

"महरी नीर सर्भेतम विभाग है। मेले समय निर्दृष्टियां सुनी चीर चोड़ने दा दरहा इन्हें-में-इन्हा होना चाहिए। मारी दाड़े पहन दर मोना टीड नहीं। दिन्तुन डी न पहनें ही चीर भी चन्द्रा। नियमित समय पर सोना चीर उठना हाग्रेस्ट विर बहुत सामहायड है।"—रहोरेंस मेटन

# प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार

यशपाल जैन

सन ४० की बान है। मामाजी (हिन्दी के मुप्रसिट साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमारजी) को वंबई हिन्दी विद्यापीठ में दीक्षांत-भाषण देने के लिये वम्बई जाना था। हम लोग सूचना दे चुके थे कि अमुक तारीख को अमन गाड़ी से पहुंच रहे है और वहां सब तैया-रियां हो चुकी थीं। जाने के दो दिन पहले अकस्मात् मामाजी की आंखें दुखने आ गईं और ऐसे जोर से कि हम लोगों को लगा, जाना नहीं हो सकेगा। बड़ी परेगानी हुई, विशेषकर यह सोचकर कि समारोह के विशेष अतिथि के न पहुंचने से संयोजकों तथा विद्यापीठ के विद्यार्थियों और अध्यापकों को कितनी निरागा होगी। दिन भर अंखों को आराम दिया; लेकिन रात होते होते लालामी और दर्द घटने के वजाय और बढ़ गया। उम समय दवा भी कहां से आती? मामाजी ने कहा-"एक काम करो। घर में पीली मिट्टी है। उसकी पट्टी बन करे मेरी आखी पर बाध दो ।" मैं मिट्टो लाया, पानी में सानी और बाजरे की रोटी के बराबर मोटी पट्टी बनाकर दोनो आंखी पर बांध दी। रात भर बंबी रही। सबेरे उठे तो यह देसकर हम लोगों के आश्चर्य और हर्ष का ठिकाना न रहा कि आंगों को रुपये में वारह आने फायदा था। अगल दिन फिर मिट्टी की पट्टी रक्खी और तीमरे दिन जब चले तब तकलीफ मुध्किल से पैसे भर रह गई थी। बहुत से लोगों की आंयें आते देखी है; लेकिन दो दिन में यों अप्रत्याशित रूप से ठीक होते देखने का यह पहजा ही अवसर था।

लगभग तीन वर्ष पूर्व की एक दूसरी घटना है।
मुझे पीलिया हो गया। एक दिन पहले काम पर गया
था। वहीं अफिस में नवीयन विगड़ी। घर लौटा।
अगले दिन आंवें पीली हो गई और पेशाव हन्दी-जैमा आने लगा। घीरे-घीरे पीलाई मारे शरीर पर फैल गई। शहरों में डाक्टरी चक्कर से सीभाग्यशाली ही वच पाते है। मुझे भी देखने के लिए एक के वाद एक, अनेक डाक्टर आये । पेट दवाओं का गोदाम वना और मजे की बात यह कि वीमारी को कोई लाभ नही । जितने डाक्टर आये, सबकी रायें अलग-अलग थी और जब रायें अलग थीं तो दवाइयां भी अलग होनी ही थीं। मेरी पत्नी की छोटी बहन, जो डाक्टर हैं, देखने आई और उन्होंने पैन्सिलिन और विटामिन वी काम्प्लेक्स के इंजैक्शनों का कोर्स दिया । यह सब हो रहा था; लेकिन मुझे साफ दीखता था कि रोग को कांई फायदा नहीं है। पीलाई ज्यों-की त्यों । भूख रत्तीभर नहीं । जो खाता, निकल जाता । जिगर काम ही नहीं कर रहा था। डाक्टरी दवाइयां खाने-खाते जब तंग आ. गया तो मैने विद्रोह कर दिया। दवाइयां तेज होती थीं और तबीयत को विगाड़तीं थीं। एक दिन किसी ने बताया कि इस रोग में मूली और पपीता बहुत फायदेमंद होते है। उन दिनों मुलियां खूद आ रही थी। कच्ची खाना तो जरा मुक्किल या। पत्तों का रस निकल्वाकर योटा-योटा करके पीना शुरू किया । दो-एक दिन में ही मालूम हुआ कि वह तो बड़े लाभ की चीज है। धीरे-धीरे हिन बढ़ी और मैं मूली और पपीता काफी मात्रा में छेने लगा । इस वीच मेरा छोटा भाई एक बादमी को लाया, जिसने कपड़े की पोटली में बंबी एक जड़ी को पानी में रगट़कर वह पानी ह्येली पर रखकर नाक हारा सूंतने को कहा। मैने सूंता। परिणाम यह हुआ कि वार्दस घण्टे तक मेरी नाक मे पानी की वूंदें टपकती रहीं, हल्दी-जैसी पीली । तीसरे-चीये दिन फिर उसने वही जड़ी मुंघाई और सात घण्टे तक फिर पानी टपका। पपीते और मूली का प्रयोग चल ही रहा था। आगे चलकर तो वह प्रयोग इतना वा िक में दिनमर में कमी, जबातकर और रह दिनान मर मरित बाई शेर मूणी शा जाता। विदे मोही देर गुणी हवा में टहना और पेट के जबा मारी होते ही एरिमा के देना। नतीजा यह हुआ हि कुछ ही दिनों में पीत्याई जाती रही और जियर भी धीरे-धीर काम वरने लगा। बानदरी चननर चला होता हो मजबान जाने नितान। पन स्वारा होता, तेज दबाइयों से वैचीन गहती परी और दिन बोन यह समझा है हि आराम ही गरी भीरे दिन बोन यह समझा है जिसासम

सीगरी पटना गा वर्ष की है । हिन्दी के सबीव और प्रसर साहित्यकार श्रदेव वक बनारसीयन मसुरेंदी की मुद्रशी बहुत देवकी का विवाह या। फीरोजाबाद पहचा तो देशना क्या ॥ कि दाडाबी (पनुबंदीजी) नारपाई पर पडे हैं । मालूम हुआ कि अका-सीर्व मार्रहेगवहै । बेर-बा-बेर सब, जा रहा था । यांडा ज्वर भी था। बछ देर बाद सिविन्य सर्जन उन्हें देमने आये । बोल-गान मिनट में डॉप निये देना है। एग्रीने मध्मे अन्दर कर दिए और चने गये। दय विनट बार ही मत्मे किर बाहर निषक आये और तक्कीक जैमी-कीसीमी । मेने बहा--- "दादाओं, मिक्लि सर्जन का इसाब ही आपने नद जिया । आप नहें तो एन इसाज में भी कर छ ।" उन्होंने अनुमति दे दी। बीकी मिरटी मही नारी फिल जाती है। उसमें से चौड़ी-में। सेकर मैने पानी में बानी और पट्टी बनावर रोय-बहत स्थान पर बाध थी। कार ने क्ली मकुतर नेपेट दिया। मिटदी का रसना था कि असा-मी देर में उन्हें चैन पर गया। जलन मात्री रही। भाषा-भाषा यहे बाद दो-नीन पट्टियां बरली वि मरनों का तनाव भी हर ही दवा। रात को पट्टी बांधी हो उन्हें ऐसी बहरी मोद आई हि सोटन की मुधि ही न रही । वहा बारपाई से उठा नही जाना या और वहां अनले ही दिन युवने-करने लगे ! उन्होंने किर डाक्टर को बुनाने का नाम ही नहीं शिया और तीन दिन तक मिट्टी के प्रयोग से ऐसा पादशहमा रिपर्हो सदे—यह हो चनकार हुना है।

गरर के कृषिम जीवन में बात वास्टर और शस्त्री प्रणाय पर सोगों का दलना नहीं। विस्तान

हो बया ह कि बदने वरेल, सस्ते और गॉनया इतान की बोर उनका स्वान ही नहीं काता । बाक्टरो की मन्या उत्तरीतर सानी जाती है, साम ही रोग और रोगियों की। बहुत से छोगों की आभरती का अधिकास भाग बाक्टरों की जैंदों में बाला जाता है। जरा-ना जुनाम हुआ दि दास्टर दे पात भागे गये. पेट में जरा दरें हुआ कि दवा आई। ऐसा प्रतीप होता है. माना डाक्टर शहरी जीवन के अभिन्न अग कन गरे है। लोगों से बभी वर्षा होती है तो भवार उद्यो हुए बहुते हैं-- "अभी, बही मिट्टी-गानी बर्गरार है। रोग दूर होते हैं <sup>211</sup> वर्षी के सप्राष्ट्रतिक रहन-गटन में मिट्टी, यानी मादिने महस्त्र को भूल जाना हवामादिक ही है : सेरिय सोपो को इनना हमरण रलना माहिए वि अवतर वे प्रकृति को अपना विकित्सर मही बताबेंगे और उनने मादेश पर नहीं चलेंगे तबना उन्हें नश्चा स्वास्थ्य और मार्थेन जीवन मिल नहीं सन्ता ।

हमार बेश नियंत देश में आरोग्य-गायन के लिए प्राइतिक विदिश्या ही सर्वोत्तम विदिश्या-प्राामी है। प्राइतिक विदिश्या मानी प्राइतिक रहन-गहन और रोग होने पर कहिन की सहायन में स्वाच्या स्वाच्

मिट्टी, वारी आदि के उत्कार हमारी प्युत्त के बाहर नहीं हैं, बारण दि त्यारे देंग्य बेदल में उनके निवट का गुक्क प्रदान है। यह नित्तर का गुक्क प्रदान है। यह नित्तर हो। वह दि हुन उपने पूर्ण को कुए पाने हैं और उनके हमारा नाता दूर बचा है। बाँद कर नाता पुत्र जुड़ जुड़ जाय को न बेचल हमारा भोता का कर हो। वह जुड़ जुड़ जाय को न बेचल हमारा भोता का कि हमारी अपने उनकी में कर हमारा जी कर हमारा की हमारा जाता हमारा जाता

# 'फिरा व की भे ?

### 'प्राकृतिक चिकित्सा' अंक

इस अंक में हमने प्रयास किया है कि प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान और प्रयोग-सामग्री प्रममें हो जाय। आप दे वेंगे कि प्राकृतिक चिकित्सा के संबंध में भिन्न-भिन्न लोगों ने अपने-अपने अलग-अलग मन प्रकट किये हैं। हमारी राय यह है कि प्राकृतिक चिकित्सा का प्रारंभ इस आधिनक युग में जिस व्यक्ति ने किया है, उनकी व्यारया को प्रधानता देनी चाहिए। इसका यह मनलब नहीं कि दूसरों को नवीन या विशेष अर्य करने का अधिकार नहीं या नवीन प्रयोगों या अनुभवों के प्रकाश में पुरानी व्याल्याएं न बदली जायं । प्राकृतिक चिकित्ना का मीया अर्थ है प्रकृति का अनुकर्ग और प्राकृतिक बस्तुओं का उनके शृद्ध रूप में प्रयोग । प्रकृति ने ऊपर और प्रकृति में ओतप्रोत जो चैनन तत्व है और 'प्राकृतिक' यव्द से जिसका महसा बोध नहीं होता, वह इस चिकित्सा में सबसे प्रवान है, ऐसा हुमें लगता है। मूर्य, चंह, नक्षत्र, बाय, मिट्टी, बनम्पति आदि के हारा हमें जो कुछ जीवन या पोपक सामग्री मिलनी है, वह सब इस चेतन तत्व की ही अभिव्यक्तियां है--नामन्य है। हरी साग-भाजी में जो 'सी विटासिन माना जाता है या सूर्य की किरणों में जो 'टी' विटामिन माना जाना है, यह सब सूर्य की और पेट्-पौबों की उन चेतन गक्ति ने ही प्राप्त होता है । इसी चेतन मित के प्रभाव को गांबीजी और विनोवा 'रामनाम' कहने हैं । इस पर निष्ठा रसकर यदि प्राकृतिक चिकित्ना का अवलम्दन किया जाय नो हमारा भी यह दट विश्वास है कि उसे महमा वैद्य-टास्टरों के चकर में पड़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी । यदि यह अंक इस दिशा में बुछ अंग तक भी पाठकों की ले जा सका

तो हम अपने परिधम को सफल समझ लेंगे।
हटूंडी, १२. ६. '५१. —ह० ड०
पाठकों से निवेदन

विर प्रतीक्षा के बाद 'प्राकृतिक चिकित्मा' विशेपांक पाठकों के हाथों में पहुंच रहा है । इस असाबारण विलम्ब के लिए हम अपने कृपालु पाठकों से क्षमा चाहते हैं । विजेपांक कैमा निकला है, इसका निर्णय तो स्वयं पाठक ही करेंगे ; लेकिन इतना निवेदन हम कर देना चाहते हैं कि इसमें हमने अधिक-से-अधिक उपयोगी सामग्री देने का प्रयत्न किया है। 'प्राकृतिक चिकित्ना' शब्द कुछ भ्रामक है। इससे केवल रोग और उसके दूर करने के लिए एक विशेष ढंग की चिकित्सा का बोच होता है । बन्तृतः प्रकृति के अनुसार इस ढंग से रहना कि रोग हो ही नहीं और यदि हो जाय तो मिट्डी, जल, वायु, नेज और वाकाश, इन पांच महाभूतों की सहायता से दूर कर देना, इस सबके लिए कोई उपयुक्त गब्द हिन्दी में प्रचलित नहीं है। अतः हमें सामान्य रूप से चलन में आने वाले शब्द 'प्राकृतिक चिकित्सा' को ही प्रयुक्त करना पड़ा। पाठक उसे व्यापक अर्थ में समझने की कृपा करें।

कहा जाता है कि रीग के इलाज की अपेक्षा ऐसा उपाय करना अधिक श्रेयस्कर है कि रोग हो ही नहीं। हमारा भी यही मानना है और इस बान पर इस अंक में विशेष रूप से जोर दिया गया है। इसके अधिकांश लेखों में बनाया गया है कि हमारे दीवेजीबी होने के लिए आधारमून मिद्धांन क्या है, प्राष्ट्रानिक रहन-सहन से क्या तात्मवं है और रोग हमारे शरीर में क्यों होने है? यदि हम लोग ये बातें अच्छी तरह में जान लें तो अनेक रोगों ने महज ही में इस नकते है। कुछ लेखों में इस लोकमान्य बारणा को गलन इहनया गया है कि रोग हमारे सतु हैं। तम यह है हि वे हमारे मिन है। बारण विवेहमारे सरीर में सबित निवाबत पदायों एह बिह्मतीय हस्यों को बाहर निवाबते हैं। बन रोगों में हरता नहीं चहिए, म उन्हें दबाना पाहिए, बन्ति दुवित पदावीं को निवानने में प्रशीत की महाया। करतो परिए।

सामधी बड़ जाने के नारण उसे दो सामों में बांट दिवा है। इस निर्मेशी में मुख्यन प्राहिता चित्रिया कि सेद्रारिता एट्टू को दिया गया है। अरावश्रास्ति प्रहृतार केटल अरोक अर में दिये जा रहे हैं। एल प्रशास के में कह के दिला पुरत होता और सीएर ही साहती की नेवा में यहनेया।

जिन विदान लेगाची तथा हिनेच्छु मिनो ने अपनी महण्युमें प्यताभी एव मनगरामणी द्वारा इस अरं वा उपयोगी बनाने में योग दिया है, उनने हम इदय ने सामारी हैं। अरं में यदि हुए अच्छा है तो उपया और उन्होंची हैं। बेगाच चृटियो ने नियो जिननेदारी हमारी हैं। रयानामात्र के चारण जिन सपुनी की गुप्दर दबाएं हम अरं में नहीं जा गरी उनने हम समान्यार्थिं।

पाठको से त्यारा अनुगंग है कि वे इन नवा आगामी अन को मिना कर नहने की कुना करे, ननी उन्हें बाहरिक विकित्ता का पूर्ण किन मिनेता । यदि अन उन्हें पाठ सोता है। हम अनेता करेंसे कि के इनके प्रकार और प्रमार में यह देने की कुना करें। नहीं दिन्ती, २५-६-५%

दादीजी--तपस्या की मूर्ति

अवतर दारीबी वेंटी तरी नवतर मुखे न जाते वसी ऐसा नगा रहा कि जवनालगार्थी एवं नरी है। जिस दिन भी रामाहगारी वा दारीबी ने स्थानत ना बार मिन्य, उस दिन पड़ी ही सहसा मेरे मूह मे निकार पड़ा, "बागाव में भाग जबनालगारी गाता से गये।" जिस मुनाने अमनालगारी वो एक महत्त पुरस् बनाया उनकी मासाह मूर्जि हो मही, उनको जन्म देनेवानी मास जबकर मोहुद है तकार जमना- धावबी मौजुद ही ये और उनके दर्शन करके, उनका आशोर्वाद प्राप्त करके जमनातात्रजी से मिणने का-मा भुग अनुभव होनाथा। मेरे कुटुम्बिगो पर तो उनरा विशेष रनेह और बागन्य रहा । इमलिए ऐगा ही अनुभव हो रहा है वि अपने पर की पद्धाधी शी पत्री गई। गईबार उनकी स्तेह और इलार-मरी मृति भाषी ने सामने आई। जमनालानकी हो प्रायः जवानी में ही बड़े बये, परन्त् उनहीं बुद्दी माना अपने तमाम पूत्री, अपने थोने, एव दामाद की मृत्यू के दूरा की गहन बारती हुई मानों प्रत्यक्ष वास्या है। ९० माल की उस्प तक बैठ रही हो। वे धन्य है, जिन्हें इस बद्धा माना की सेवा-गरिषर्या करने का नौभाग्य मिला रहा और जिनके क्ये पर बढ़ कर उनका शब श्वारान तक पहुंचा ! विछन्ति दिनम्बर में मैं वर्षा में था तब भी में उन्हें बराबन भर्मा बातना देखता या और अपने बते गृत की न जाने रिननी गाहिया उन्होंने अपने क्टिम्बिया और प्रियमनी को भेंट की है। जानकी सैपाबी तो अब कभी मिल्ही है, जमनालानकी की काई-म-कोई बान छेड़े दिया नही रहती। वे उनका जिक्र या गण-गान करके अपने शोह-आर को क्य कर निया करती है, परना दादीशी क्षी यह कला भी नहीं जादनी था और उन्होंने भीवन का सारा क्ट और गोर पुत्रमा बहुत किया। दनकी आत्मा को हमारा प्रजाम ! दनका बारगस्य अब भी गश्चर बरमता रहे।

हरूदी, १२ ६ '५१. — र. उ.

अहिंमा का चमरकार

तो स्नीम विशेषानी को कोगा आदर्शनादी या आप्याप्तवादी मानकर उनहीं प्रतिमा से काहे वस्त्यान होते हो, पान्तु स्वाक्त्यान्त क्षेत्र से उनने आहरित न होते थे, वे उनकी नेत्याना-सामा और उनने कर से बारी व्यक्तिक हुए दीनों है। बारेग और नार्थायद दोनों में हुए हमारे पुर आपने माना सिन ने नार्त से आहे, भी तिलुह सहस्त्रमा के एक नेता है, नगा कि सब्बोनना नहें हैं भी तेत्याना से विशेषा ने भी है। और ती टीक. पहनेतृस्त्री के भी नगरी जा नहीं था। यह तो गांधीजी की ही याद दिलाता है, थीर उन्हें बताया कि सेवा ही करनी है तो विनोवा का अनुकरण करो । खुद पंडित जवाहरलालजी ने उनके काम को सराहा और कहा कि जो काम फौज और पुलिस न कर सकी, वह काम विनोवाजी ने कर दिखाया। यह अहिंसा की शक्ति है। विनोवा जिस आध्यात्मिक भित्ति पर खड़े हुए हैं, उससे ऐसे और भी चमत्कार असंभव नहीं है। अहिसा या आध्यात्मिकता सिवा इसके और कुछ नहीं है कि मनुष्य-भात्र या जीव-मात्र या भूत-मात्र के जीवन में अपना जीवन मिला दिया जाय । गांचीजी की सबसे वड़ी सावना यही यी । विनोवा की प्रकृति उनसे भिन्न है, परन्त् साधना उनसे किसी कदर कम नहीं है; बल्कि इसमें वे उनके योग्य यानी अहिंसा की महत्ता को अधिक चमकानेवाले वारिस सिद्ध हों तो आस्वर्य नहीं। हट्डी, १२. ६. '५१ ---ह० उ० राजनैतिक क्षितिज में

अाचार्य कुपलानीजी, डा. घोष आदि कांग्रेस के गांधीवादी नेताओं के कांग्रेस से हट जाने और एक नया दल निर्माण करने की घटना ने सारे देश में एक हलवल खड़ी कर दी है और लोगों के दिमागों में तरह-तरह की समस्याएं खड़ी हो गई है। जो गांधीजी के अनुयायी है, सर्वेदिय की दृष्टि और विचार-घारा जिन्हें प्रिय है और जो यह मानते है कि पंडित नेहरूजो के नेतृत्व में बनी सरकार गांबीजी के उद्देश्य और कार्यक्रम की पूर्ति भली भांति नहीं कर रही है, उन्हें यह कार्यवाही पसन्द आई है और इस आद्या में कि नया दल गांघीजी के काम की आगे बढायेगा, वे उसका समर्यन करते हैं। कांग्रेस में भी दूसरे ऐसे लोग है, जो भिन्न-भिन्न कारणों से कांग्रेस के . वर्तमान नेतृत्व से असन्तुष्ट है, वे भी इस विच्छेद के समर्यंक है। ऐसे विचार के लोग भी देश में है, जो भाज राजनीति में जवाहरत्यालजी को सबसे बड़ा नेता मानते है और समझते है कि जबतक वे कांग्रेस में है और कांग्रेस से निराश नहीं हो जाते तवतक कांग्रेस से हटना उनको कमजोर बनाना है। साथ ही, कई लोग

यह भी कहते हैं कि कांग्रेस भी तो पूरा-पूरा जवाहर-लालजी का साथ कहां दे रही है। इधर रचनात्मक काम में श्रद्धा रखने वाले लोगों की यह धारणा वनती रही है कि वे व्यापक अर्थ में राजनीति में यानी देश के सुशासन में ज़रूर दिलचस्नी रक्कों और सहयोग दें; परन्तु उस शासन-यंत्र को चलाने के लिए जो दलवन्दी और गुटवन्दियां हो रही हैं, उनसे वे अलग रहें। इन तमाम प्रश्नों और तकों ने कांग्रेसी क्षेत्र में मानसिक उयल-पूथल छेड़ रक्की है।

इन सब समस्याओं पर विचार करके हम इस निर्णय पर पहुंचे है कि इस समय देश में दो नेता सर्व-मान्य हैं। राजनैतिक क्षेत्र में जवाहरलालजी और रचनात्मक क्षेत्र में विनोवाजी । वापू दोनों के नेता थे। उनके ये दो हाथ, अब दो विभिन्न विभागों में अपने-अपने ढंग से अनोला नेतृत्व कर ग्हे हैं। गांधी-वाद या गांधी-कार्यंकम की दृष्टि से हम भी जवाहर-लालजी से निराश-जैसे है; परन्तु हमने पहले ही उनसे ऐसी आशा नहीं रक्खी थी, वावजूद इसके उनमे बढ़कर यहां की राजनीति में प्रभावशाली व्यक्तित्व दूसरे किसी का दिखाई नहीं देता। हमें यह देखकर भी बहुत खुशी होती है कि विनोवाजी और जवाहर-लालजी एक-दूसरे की बहुत कद्र करते है और हम यह आया लगाये हुए है कि जैसे कुछ समय पहले तक भारत की राजनीति नेहरू-सरदार के संयुक्त नेतृत्व में चलती थी, उसी तरह विनोवा-नेहम के सम्मिलित नेतृत्व से देश का भाग्य चमक उठेगा और गांधीजी की बासाएं में दोनों मिलकर अवस्य पूर्ण करेंगे। अतः हमारी यह विनम्र सम्मति है कि रचनात्मक कार्य करनेवाले विनोवा की सम्मति को सर्वप्रधान मानें थीर राजनीति में काम करनेवाले जवाहरलालजी की।

आचार्य कृपलानी और टा॰ घोष की सच्चार्ट, व्याकुलता, लगन, योग्यता पर हमारा बहुत विश्वाम है और यदि यह विच्छेद निरासक्त भाव से हुआ है तो हम इसे एक शुभ शकुन मान सकते हैं; परन्तु दलवन्दी का हमें ऐसा कटु अनुभव है कि जबतक हम नये दल का संवालन कुछ समय तक शदतापूर्वक, संनोपजनक और सरण्डार्श्वर देस न के तकात हवारा मन इस मात ने लिए पाति ही रहना दोगता है वि दनवर्धा ती सुरात्रों से और क्यामीहा से यह बहुते तत करर उटा रह गरेगा। वांचेस ती स्वराज्यक और अबन-मेरी कर ती सोंबाजानी से सम्बद्ध साधीकी-मेरी हिन ती सोंबाजानी से सम्बद्ध नेता तो

भी आरते को वांचित्र से अनन करने पर मनदूर होना पना मा तो दिन्द हुएतो के लिए ऐने प्रमय में जबति गांपीओं भी नहीं हूं, यह विच्छेद हमारे हुएस में आयताल उदल्य दिन्दे दिना नहीं रहूम। हम हुदल ने बाहते हें कि हमारी से आयताल निर्मृत निद्ध हों। हुदुरी, १२.६ '५१ —हु॰ उ०

### मंडल की श्रोर से

यह निशेषांक

'तर्वोदय' और 'विरक्तानी विशेषोत के बाद हम वीदन-मारिय का 'प्राहृतित विविद्या' विशेषोत पाटनो की गंदा में प्रमुख कर गहे हैं। बादि कई बादमा में जितार त्यारा कोई बया गहीं था, राग्वे जिस्त्रने वेदा हो गई है तो भी तमें मन्त्रीय है कि हमने दल देरी का लाग बादमा अध्यापनी-अधिक मुद्दर और सामाणिक मामश्री पाटको को देने का गढ़क प्रदक्त दिया है। हमें पूर्ण दिख्यान है हि बहु बिर्मेषा किया कि किया की क्षार्य और प्रतिन्द्रा को पाट भी हमा

आप ने मीरित यूग में प्राहिति विशिषा है। यात बहुता को विविध बात स्था साम शिव परनु हतो गाय ही यह बात भी कह विविध नहीं है। ति आप के ही बहुन हारहर यह हशीकार करते हैं ति क्षाय सम्बाद क्षार्य प्रदान करते में सबेबा स्थापन है। पूर्वी अस्पा में प्राहित्व विशिष्मा का संप्रातित सम्पद्म अनिवार्ग है। बाता है। वर्ग सम्बाद स्था सम्बाद स्थापन है। हमते स्थाप में सपने दिवार के सिवारी विदान है जिस्होंने औपन सी पाटसाल में अस्पन करने अपने निराणों को निविद्य दिवा है।

सामधी बद्ध बाते के बारण इस अब में 'शाहीतर बिहिरता' वे बेचन श्रीशानिक पहलू को निया है। समने अब में बो गीध ही परिशिय्यक के सब में पाटबों की मिनेगा, स्प्वाहारिक परा बाते देख दिये पर्ये हैं। आणा है पाठक इस बकों को पसाद करेंने।

नरीन प्रकाशन

निम्निनित पुम्तरें छ: मरीने। (जनवरी मे जून) में निरमी है

- १. मर्जेदिय तन्य-नुरान-डा० गोरीनाथ धावन निमिन बहिसर विचारपास की अपूर्व मीमांगा । मुन्द ७ राजा
- आसार्यु धर्म-धी हरिमाङ उपायाय हा
  शीमद्वापया वे देश्वें हराय की मुबीप-गरल और
  आवर्ष काक्या । सृहर (त), गरिहर (त)
- अयापी जमनालालजी-(हरिमाक व्याप्ताव)
  मूनिया डा॰ रानेप्रक्रमाद । पुराय में जमनालाजनी
  के स्वाग और नेपायदी जीवन का गत्रीय विश्वम है ।
  ४८८ पुष्ठ, समिष्ट मून्य ६॥)
- ४. च्याज का रिचार—गांपीत्री के उनी कि ने लिये या बीटे हुए ३६५ मृत्यदान वनने का गणा । मृत्य ६ ज्ञाना ् ।
- अ. वापूके चाधस में—(१रिनाक उपप्याप), बार् के अध्यम और गैंगरें में मपुर, रावद और जिलावद सस्वरम, मृन्य १)
- ६. समदृशी—(क्ट्रपी स्वर्) (त्यो के विधिन्न लेखकों की उनकोटि की करानियों, मृत्य २)
- ७. बापू की सीम-(बाजोपपेपी नेगा का बग्रह), मून्य ॥)

= गांधी-शिवा-रीत माप, मृत्या), (-), (-)

# पुनमु द्रग

इस वर्षं निम्नलिखित 9ुस्तकों के पुनर्मुद्रण हुए हैं:

१. कुळ्जा सुन्द्री (कहानी संग्रह) च० राज-गोपालाचार्य, २)

२. लड़खड़ाती दुनिया (राजनैतिक टेख) पं॰ जवाहरलाल नेहरू, २)

३. गांधी विचार दोह्न (लेख) श्री किशोरलाल मशस्वाला, १॥)

४. डायरी के पन्ते (डायरी) श्री घनस्यामदास विड्ला, १)

४. जीवन-साथना--(निवन्य) टाल्स्टाय, १।)

६. तामिल वेद--(सदुपदेश) ऋषि तिरूवल्लुकर, १॥)

७. दिव्यजीवन (सदुपदेश) स्वेटमार्टेन १॥)

म. ऋहिंसा की शक्ति—रिचर्ड बी० ग्रेग, १॥)

निम्नलिखित पुस्तकें प्रेस में हैं:-

१. विश्व इतिहास की भलक

२. गीता-प्रवचन

३. अनीति की राह पर

# गांधी-साहित्य की आगामी पुस्तकें

गांधी-साहित्य में छ: पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। दो पुस्तकें प्रेस में हैं जो शीघ प्रकाशित होंगी:

१. मेरे समकालीन

२. श्रातम-कथा

### एक नवीन योजना

इसके अतिरिक्त मंडल ने इस वर्ष पुस्तकालयों के लिये पंचवर्षीय योजना वनाई है। इसका नाम 'पुस्तका-लय स्थायी सदस्यता' योजना है। इसका उद्देश्य पुस्तका-लयों की सहायता से सत्साहित्य का प्रचार व प्रसार करना है। यह योजना चालू हो चुकी है। इसका पूरा विवरण मंडल से प्राप्त हो सकता है। ——मंत्री

डा॰ कुलरंजन मुखर्जी द्वारा लिखित

# १. श्रिभनव प्राकृतिक चिकित्सा

हरएक रोग के इलाज में जल, मिट्टी, भाप, हवा, धूप, पथ्य, व्यायाम, आसन, मालिश और उपवास आदि की पूर्ण प्रयोगविधि, इस पुस्तक में दी गई हैं। सर्वत्र उच्च प्रशंसित। 'हिन्दी साहित्य की एक अपूर्व पुस्तक (दैनिक विश्वमित्र)'। ३३६ पृष्ठ, मूल्य-चार रुपया।

# २. देनिन्दन (रोजाना) रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक ढंग से वुखार, जुकाम, पेचिश, दस्त, व्रण, घाव, अनिद्रा, हैजा और वसन्त आदि सभी रोगों की अलग-अलग नई चिकित्सा-विधि दी गई हैं। २५० पृष्ठ। मूल्य तीन रुपया।

> प्राप्तिस्थान— प्राकृतिक चिकित्सालय, ११४/२ वी, हाजरा रोड, कलकत्ता।

#### राष्ट्रभाषा हिन्दी का सचित्र सांस्कृतिक मासिक प्रत

### विकम

#### (मैपादक तथा संचालक-सूर्यनागयण व्याम)

हिंगी का सर्वश्रेष्ठ मानिक विक्रम' ही हैं, विमक्ता राजा-महाराजाओं में हेकर देश के सर्वनाधारण

समाज तर समान रूप से प्रवेश हैं।

'विस्म' ने आरंभिन १६ पूट में महीने घर नी महत्वपूर्ण घटनाओं पर विविधनापूर्ण, मीनिन, उत्हाद और निर्मोन एव स्वयन विचार समन्त्रित सहते हैं अभी विद्वानों में द्विती ना 'मार्क रिस्मू' नह नर हमनी प्रमान नी है।

स्वस्यमाहित्व, निष्डहास्य चुनी हुई स्थिता और सहानी एव विवार-प्रेरस यसामृत एव समान

मातिक गाहित्य का गुन्दर परिचव 'वित्रम' की जननी विशेषता है ।

यदि आप अवनत वाह्य नहीं है तो अवितन वाह्य वन जाइये, सिनो को बनाइये और परिवार के जान कर्यन के लिए 'वित्रम' को अवस्य स्त्रीकार की जिये । वाहिक सून्य ६) ६०, एक प्रति ॥ = ), समूना सून्त नहीं ।

विशेष जानकारी के लिए लिसिये:

व्यास्थापक-विक्रम कार्यालय, उज्जैन (मालग)

#### दूसरे वर्ष में

#### मबन पगन्द शिवा !

भारती

गरने स्वागत विद्या !

रात वर्ष १४) क॰ वार्षिक सून्य था, एक प्रति का १) क०-च्यव १६४१ जनवरी से एउट्स कस. ६) क० वार्षिक

संगादन

मचाउर

: इपेक्सि गर्मा : एत. एत. प्रयागी सुवोधिमह प्रेम निविनलाइन, जागपुर-१ : 'भारती' समन्त वारणीय (जन्दर्जानीय) साहित्य, कना बीर मण्डीन वा प्रतिनिधित्य

करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगतिगोल किनतन्त्रवान नांकर वालिक परिकाई र

भारत ने राष्ट्रपति शाक राजेट्यनप्रसी ने, बान्तों के राज्यसमायों ने, कुछ मूत्र सर्पितों ने और दिन्दी ने नगरतिक माजियनारों ने इत माजिक पत्ति के जराजन की मुक्तके के सराह्या की है। माजिय जेतेचा, क्वास्तीयल चुनुबी, उरस्तापर सद्द, रामनूत वेनीपूरी, धीराम रामी, कर्त्वास्त्रम मुजी, माझिर, स्वक माजे सुदबी, मासनन्त्रत चुनुबी, प्रदंत मन्त्रर कीक्यास्त्र मादि ने भारती का स्वास्त्र दिया है।

भारती का प्रत्येक और अनुष्ठ, पर्वतिक और वार्तिक है। १९६० की २६ जनकारी ने इनका निर्मात प्रकारन स्टबन है। प्रतिकान समस्य १०० एक ६



# त्र्यारोग्य-मन्दिर

में आकर

श्रारोग्य मन्दिर

# श्रारोग्य लाभ कीजिये!

यहां श्रापको प्राकृतिक चिकित्सा के साधन जल, धूप, मिट्टी, वायु, श्रासन, प्राणायाम, मालिश, उपवास, युक्त श्राहार की विधि कराई श्रीर वताई जायगी। सूर्य-किरण-चिकित्सा, दूध-कल्प, विजली, जड़ी-वृटियां श्रीर विचार-शिक्त के प्रयोग से भी श्राप परिचित होंगे। श्रापना स्वास्थ्य लौटाने के साथ-साथ श्रापने कुटुम्बवालों श्रीर इष्ट मित्रों को प्राकृतिक साधनों द्वारा रोगसुक्त श्रीर स्वस्थ रहने की सलाह देने लायक हो जायेंगे।

विशेष जानकारी के लिए

परिचय-पत्र मंगाने की कृपा करें।

संचालक

त्रारोग्य-मन्दिर, गोरखपुर

#### आगामी श्रंक में पढिये १. स्त्री-रोगो की प्राकृतिक चिकित्सा .. डा० बुखरजन म्यर्जी २. मिट्टी में रोग-निवारण श्री भूपनराय मो । दवे ३. एनीमा का उपयोग और लाभ थी आनन्दवदंन ८. प्राप्तिय चिवित्मा और वैज्ञानिक मालिश श्री जनादंनप्रमाद ५. उपवास वच और कैसे ६. विभिन्न रागो की प्राट्रनिय चिकित्मा श्री विद्ठलदाम मोदी. ७. प्राकृतिक चिवित्मा-विधि .. थी पद्मावती शक्ल ८. मिट्टी का रोग-नागक प्रभाव और विधि 🛒 श्री यगलकियोर चौधरी ९. स्वास्थ्य के लिये वसरतें .. श्री गद्रदत्त त्रिपाठी उत्तर-प्रदेश के श्राप्यापरों व निद्यार्थियों के लिए श्रपूर्व श्रवसर परित्र निर्माणकारी परंपका की पदाई का बरा की गरकार द्वारा विशेष मुभीता प्रमुख्या के विवायिया नया अध्यापका का यह जानकर हुई हाला कि करों की भरकार ने अपने यहा के नमन्त्र जुनियर शर्दरकुता की छठी मात्रकी और आठकी कलाला। में महायक पाइय पुस्तका के मन में पहाने के लिए महत्रमा रोधी तथा स्वामी रामतीये की गिलामा की मार-मन पुस्तकें गांधी शिचा : माग १, २, ३ रामतीर्थ संदेश : माग १, २, ३ स्वीतार की है । इस पुस्तका में क्यायिया का अध्यक्षकानु और मेशानाकी नामरिक कराने के जिल अनुमाण गामपी है। गु-रर-जारूपेर छपाई हिर भी मूच बेटर रम । भाग १, १) भाग ३, १-) भाग ३, १=) परि इन पुरुकों ने सम्महित नाम उद्यान नाम है तो प्रापेत सम्मापत हो हारी हिगाश में हिमी गुरू का पताना और प्रश्तेक विदाशी की इन्होंमें में हिमी एह की पहना चरिए। पाने पुरुष विजेताओं और बिले के गांधी बायमा ने प्रतियो नरीड नीरिवर्ष । बरा ने मिने हा तिमें ।

मस्ता - साहित्य - मगडल. नई दिल्ली ।

١.

į

١Į

# सस्ता साहित्य मंडल

### से प्राप्य

# नये प्रकाशन

C

- ?. मेरे समकालीन (महात्मा गाघी) : महात्मा गाघी द्वारा लिखे नेताओं व मामान्य लोकसेयकों के संस्मरण, ५)
- २. श्रेगार्थी जमनालालजी (हरिभाङ उपाध्याय) : सेठ जमनालालजी की रोचक आर प्रमाणिक जीवनी, मजिन्द ६॥)
- ३. भागवत-भर्म (हरिभाऊ उपाध्याय) : भागवत के ग्यारहवे स्कंध या अनुवाद एवं टीका, मादी ५॥), मजिल्द ६॥)
- ४. <u>सर्वोदय तत्य-दर्शन</u> (गोपीनाथ धावन) : सर्वोदय तत्व-दर्शन की विधिवत व्याख्या, सजिल्द ७)
- अत्यादिशी (सग्रह) : हिन्दी के विभिन्न लेखकों की उच्चकोटि की सग्रह कहानियां, २)
- ह. <u>वापू की सीख</u> (महात्मा गांघी) : गांधीजी के आदशों और सिद्धांतों को मुन्दर गैली में समजानेवाक उनके लेखों का वालोपयोगी संग्रह, ॥)
- ७. <u>वापू के त्राश्रम में</u> (हरिभाऊ उपाध्याय) : वापू के आश्रम और संसगं से मधुर, रोचक और जिक्षाप्रद नंस्मरण, १)
- प्राज का विचार (महात्मा गाधी): प्रतिदिन के स्वाध्याय के लिए गांधीजी के मननीय विचार, गांदी ।=), सजिल्द ॥=)
- हैं खारोग्य की बुंजी (महात्मा गांधी) : दारीर की पूर्णरूप से स्वस्य रखने में सहायता देनेदाली विहितीय पुरतक,॥)
- १०. में त्राहुरूस्त हूं या बीमार ? (लुई कूने) : घारीर की जांच करके बिगड़े स्वास्थ्य की बनाने के सम्ब
- ११. प्राकृतिक जीवन की श्रोर (एडोल्फ जुस्ट) : बाज के रोगग्रस्त मानव को शारीरिक सुप बीर शात का मार्ग इतानेवाली पुस्तक, ३)
- १२. जीवन-पराग (विष्णु प्रभाकर) : मानव-जीवन के सनातन मत्यों को सरल-सुबोध धैली में व्यक्त
- १३. में मर्म गा नहीं! (यदापाल जैन): मानव-जीवन की तलस्पर्वी कहानियां और संस्मरण, २॥)
- १८. जनता के जवाहर (बाबूराव जोशी) : जी जवाहरलाल नेहर के जीवन सम्बन्धी बालोपयोगी पुस्तक, III)

'जीवन-साहित्य' के

ग्राहकों को इन सवपर ≡) रुपया कमीशन मिलेगा।

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

च गंबी ज्यास्त्र सारित्य संदल गई दिल्ली द्वारा हिन्दलान् टाइस्म प्रेस, नई दिल्ली में छपकर प्रकाशित ।



## अहिंसक नवरचना का मासिक

11811

दनद्वाद्वाद्वाद्वा

हरिमाऊ उपाध्याय यज्ञापाल जैन

इस यह में पढ़िये स्था गोग वा प्रार्ट्डर विक्ता उपवास वह भोग वस ? वार्ट्डर विक्तिस और वस दिर स्थानस

वार १९ च्यासम्याः आरचन ११६ मिरता संगति जिल्लासम् संनामा को आसान और स्थल

क्षणकारण संसंव कार्यक्रीर इतका विक्रियाः संप्रस्त दूर करत व प्रयाद

श्र रि⊸प्रा

च्हारम् ।

याग्द्र आना

सस्ता साहित्य पंडल प्रकाशन

# वार्षिक मृत्य ४) ] जिल्लि - साहित्य [ इस अद्भ का मृत्य ॥)

### लेख-सूची

१. प्राकृतिक उपचार-पद्धति	श्री एडोल्फ ज <del>ुस्ट</del>	१९७
२. स्त्री-रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा	डा० कुलरंजन मुखर्जी	१९८
३. गर्भवती स्त्रियों के लिए हिदायतें	श्री भिक्षु	२००
४. उपवास: कव श्रीर कैसे	श्री लक्ष्मीनारायण चौथरी	२०१
५. स्वास्थ्य के लिए कसरतें	श्री रुद्रदत्त त्रिपाठी	२०३
६. प्राकृतिक चिकित्सा त्र्योर वैज्ञानिक मालिश	श्री जनादंन प्रसाद	२०६
७. मिट्टी से रोग-निवारण	श्री भूपतराय मो० दवे	२१०
८. मिट्टी किन-किन रोगों में लाभदायक है ?	श्री युगलकिशोर चीघरी	२१२
९. जुकाम दूर करने के लिए त्र्यावश्यक वातें	डा० रैस्मस अल्सेकर	२१४
१०. एनिमा का उपयोग त्र्यौर लाभ	श्री आनन्दवर्द्धन	२१५
११. जलोपचार	श्री पद्मावती गुक्ल	२१८
१२. सामान्य रोग श्रोर उनकी चिकित्सा	थी विट्ठलदास मोदी	२२०
१३. मधुमेह दूर करने के उपाय	स्वामी शिवानंद	<b>२</b> ३२
१४. मलेरिया, हैज़ा, अनिद्रा आदि का इलाज	• • • • •	२३४
१५. क्या व कैसे ?	संपादकीय	२३६

# पारकों से

'जीवन-साहित्य' से आप भलीभांति परिचित हैं। प्रत्येक अंक में जन-साधारण को स्वस्थ, सात्विक एवं सुपाच्य सामग्री देकर जो कुछ यितकिचित सेवा उसके द्वारा हो रही है, आपसे छिपी नहीं है। उसके विशेषांकों की उपादेयता भी आपको विदित है और यह भी आप जानते हैं कि यह उन इनेगिने पत्रों में से है, जो विज्ञापन नहीं छापते।

यदि आप चाहते हैं कि 'जीवन-साहित्य' इसी प्रकार दृढ़तापूर्वक सेवा-पथ पर चलता रहे और उसका सेवा-क्षेत्र व्यापक हो तो उसके ग्राहक वनाने में योग दीजिये। हम आशा करते हैं कि प्रत्येक पाठक कम-से-कम पांच ग्राहक अवश्य वना देने की कृपा करेंगे।

चार रुपये में पांच सी पृष्ठ की उपादेय सामग्री मिलती है, साथ ही मंडल की पुस्तकों पर तीन आना कमीशन।

व्यवस्थापक

सस्ता साहित्य मगडल, नई दिल्ली।

उत्तरप्रदेश, राजन्यान, मध्य प्रदेश तथा बिरार प्रातीय मरतारों द्वारा स्कूलें, कालेजें व लाडमें रियों तथा उत्तरप्रदेश की धान्य पंचायतें के लिए सीप्रज

# जीवन साहित्य

अहिसक नवरच्ना का मासिक



### प्राकृतिक उपचार-पद्धति

थी गडो क जुन्ट

राण होने पर सब लोग चारो जोर से तरह-तरह के अन्नारतिक उपाय और उवार्षे बत राने लगते हैं, पर ये सभी निर्यंग ही नहीं होते, अपने साथ पुछ बुराई भी लाते हैं। इमिन्निए चाहे जैसी भी स्थिति हो, के पन नारहित उपपार का सहारा लीजिए।

अगर मयोगप्रा आजा ने अनुरूप बहुत बल्द मुधार न देगर पडे तो धाति और धैर्य बनाये रम, पबरागर अप्रारृतित उपचारो ना प्रयोग न नरने लगें। अप्रारृतिय उपचारो मे सच्यो मफलता कभी प्राप्त नहीं हो सबनी। न जानने ने रारण हम इनमें अपना बहुत बन्य नुकमान कर लेते हैं।

औषि-विज्ञान सनामन रोग वा होआ है और उसने सबैन दमना आतप पैना रगा है, पर जब हम इन भयनर रोगों से भी छुटनारा पा जाते हैं तो इनसे उसने वा वोई वास्ण नहीं रह जाता। जो हमारी प्राटृतिक उपचार-पद्धति वा अनुवायों है उसने दिमाग से तो सारे साम्य और सनामन रोगों का भय दर हो ही जाना चाहिए। इस भय से बहुत वरा मुक्सान हुआ वरता है।

इसी मरर, एवरण श्राहतिक विधि से स्त्रोग अपने स्वास्थ्य की चिता और औषधे-पचारर वर्ग से मृति लाम कर सकते हैं। इस प्रकार रोगो को अपने स्वास्थ्य पर, जो सर्वाधिक मूल्यान् भौतिक सपनि हैं, पूर्ण अधिकार प्राप्त हो काला है और अयाप्त, उपीदक ओवधोपचारकों की शानता से मृतिक मिर सकते हैं।

मानास्त्राति स्वाचनारुषी बर्मून्य बस्सान के जिस्सानस्य स्थापनं भीर युद्ध रसी स्त्री है। सम्बद्ध पपने दासीर-स्यास्य के सम्बद्ध म स्थान्त्रता प्रान्त के प्रयान नहीं रोगी ?

.

# रत्री-रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा

डा॰ कुलरंजन मुखर्जी

भगवान् ने नारी देह को संतान धारण करने के लिए विशेष तथा उपयोगी बना कर उसकी सृष्टि की है। उसमें मां के पेट में जन्म लेना और फिर जीविन रहना हम लोगों के लिए सम्भव हैं। नारी देह में जिन अंगों की मौजूदगी की वजह से यह सम्भव हैं उन्हीं अंगों के रोगों का नाम है स्त्रीरोग।

जिस्म की और वीमारियां जिस तरह पैदा होती हैं, स्त्री-रोग भी ठीक उसी तरह पैदा होते हैं। जिस्म की जो दूपित अवस्था और-और वीमारियों के लिए जिम्मेदार है, स्त्री-रोगों का कारण भी यही है।

पहले गरीर में कुछ दूषित और जहरीकी चीजें इकट्ठी होती हैं, उसके बाद शरीर में तरह-तरह की बीमारियां पैदा होती हैं। यही जहर देह के विभिन्न बन्तें पर हमला करके विभिन्न अंगों में अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करना है। जब इस जहर के हारा जनतेन्द्रिय पर हमला होता है तभी उसको स्वी-रोग कहा जाना है। लिहाजा यह निर्फ स्थानीय रोग नहीं है। यह सारे जिस्म की बीमारी है। केवल इसका प्रकाश जनतेन्द्रिय में होता है।

स्ती-रोग में नरह-तरह की दवाइयां इस्तेमाल की जाती है। उन दयाओं के द्वारा दर्द कम करने की कोशिय की जाती है या कोई दूसरा तीं प्र (Acute) रिनी-रोग दया दिया जाता है। प्रभी-कभी एक रोगप्रस्त अंग को काट कर अलग कर दिया जाता है। किन्तु रोग को दया देना रोग की चिकित्सा नहीं है। कोई भी बीमारी क्यों न हो, गरीर में इकट्ठी दूपित और जहरीली चीजें ही उसका मूळ कारण है। जब उन्हें शरीर ने बाहर कर दिया जाता है, बीमारी रथायी हम ने अच्छी हो जाती है।

प्रकृति पैकाना, पेशाव, पसीना और सांस के साथ हमेशा शारीरिक विष बाहर करती रहती हैं। जब इनके निकलने के रास्ते साफ रहते हैं तब साधारणनः कोई भी रोग नहीं होता है। बीमार होने पर प्रकृति के इन रास्तों के ज्रिये रोग-विष बाहर करके, सब रोग अच्छे किये जा सकते हैं।

»; sį: sį:

सभी रोगों में पेट साफ, करना रोग का मूल इलाज है; वयोंकि साधारणतः पेट से ही अधिकांश रोग होते हैं। स्त्री-रोगों में पेट को साफ, करने के साध-ही-साथ सभी जनन-यन्त्रों को स्वस्थ करने के लिए प्राकृतिकचिकित्सा में किट-स्नान (Hip-bath) से बढ़कर दूसरी चीज नहीं है। एक विज्यान टाक्टर ने कहा है, "स्त्रीरोगों में किट-स्नान ने बहुत-सी हित्रयों को डाक्टर के नस्तर से बचाया है।" पानी से भरे एक टब के भीतर पैरीं को बाहर करके बैठकर लगातार पेटू को रगड़ना यही किट-स्नान करना कहाता है। यह रनान लेने के पहले धूप-स्नान या व्यायाम करके जरीर को गर्म कर लेना चाहिए और स्नान करने के बाद फिर सूखे तीलिये मे रगड़-रगड़ कर गर्म कर लेना जकरी है।

नीयू के रस के साथ काफी पानी पीना भी लाभ दायक होता है। इससे पेट का बहुत-मा जहर पेशान के साथ बाहर हो जाता है। जल पीने का सबसे अच्छा समय है, सोकर उठने के बाद या खाना साने के एक पंटा पहले तथा जब पेट खाली रहे। प्रतिदिन दो-तोन सेर पानी पीना चाहिए।

स्त्री-रोग में पसीना निकालने के लिए उप्णपाद-रनान (Hot foot-bath) भी बहुत लाभदायक है। दोनों पैरों को गर्म जल में डुबा कर गले नक सारे इसीर को गरम कम्बल ने लपेट देते को उप्णपाद-स्नान करों है। इस समय निर पर भीना सौतिया कोट पर रास्ता पाहिए और पोधे मृत्यूने पानी से मारित को से रास्ता पाहिए बाज रामा को सद्द उपन्याद-कान ने कोम-पून तुल जाने हैं और मारित से पानीना हारा बहुत-ने दूनित परार्थ बाहर निकल जाने हैं। इसके अलाब इसने जराब (Uterus) और विस्कानीय (Ovaries) में प्रमुख मापा में रहत समय होता है, सिमार्थ करनवरण से पान में रहत समय होता है, सी गहरवारी दीर हो जागी है।

देह को विषयुक्त करने के लिए यही प्राहतिक तरीका है। देह का इस तरह दोष-पुता करने के बाद साम रोगों के लिए योडा-मा इसान करने में हो रोग बिट जाते हैं।

बहि-त्वा ने भैन ना तथान रोगा म वाणी गयदा होता है पर नरम-इस बहि-तवा नानी-रोगा वे लिए तो रामवाण ही हैं। गरम पानी ने मरे हुए एक इस में तीन ने आह जियह तक बहि-तवान उरत के बार ही दो ने बार जियह तक ठहें पानी में बहि-त्वान करना। एक ही नमस तीन बार हम नरह बरता पाहिए। गर्म गानी में बैटी ने पढ़ि निय के अपनी तरह थो लेना पाहिए और लाग कर निय में मस्प्रीत तह यो लेना कर लिया पाहिए। ज्वान बर सेता तीतिया निरम्द रक्ता चाहिए। ज्वान बर तेन के बार ठटें पानि ने ज्वान कर लिया पाहिए। बर्चस्ताने की गूजन, जीन्यिक मानिक बाधक बदना, स्थ्य राज, चाहुगित, स्थन घरण और बप्पान दायांदि रोग हमने स्थान कर पाहि

तिहान की बहुत गर्म की या रहा-मात्र की बीमारी हो ता गर्म-ठर्ड वॉट-मात के बहुते स्वीत के केट पर मिट्टी की पुत्रीन्त नेत्रमा आहिए । इसको दिरा में की बार एक करे के निष्ठ कावहार करता काहिए , पुर्गित की गीगी बिट्टी क्षण तक्षर को होनी बाहिए कि उनका तीन-मात्र बालू और एक भाग किंदनी बिट्टी हो। इसको आस्पाइक मोटा और पोहा बहुत करके प्रयोग में लाना चारिए । प्रयोग करने के समय बिट्टी मात्रम की नाट् मुणाव हार्ग वार्टी !

इसरे माथ पेट को सबका बताने के जिए भी विमेष ध्यान देना पाहिए, बडीकि देर को दोषमुक्त बरने वे बाद जब राज्येट वा शश्चिताओं शिया जारा है नव कोई स्त्री-रोग नहीं होता । घर का काम भी एक प्रकार का श्रायाम है। प्रतिदिन स्वापान बरना बहुन असरी है। जिन स्वाधामी या पर के कामों से सहरोड की मानप्रशिक्ष संप्रवृत होती है. स्त्रियों के दिल कही गरने अच्छा श्वामान है। इंगलिए बच्छा देवर, बिगार पर लहार टोड़ों पैर धीर-भीरे तहारच सरीर के मान नवरोग में लाग और फिर पीर-धीर उपारना बना उत्तम ब्यायाम है। निरमपुर्वश घर म शाह लगारा, मनाता गीयाा, सहे होनर रणा थोगा, दुर नदी में बाबर पर पानी का पड़ा गांगा इत्यादि देशारी स्विषा के लिए बहुर सामदायन है। स्विषा की स्वास्थ्य-रक्षा के दिए स्थायाम या गर-कार्य म ने एवं बरना आवस्यत है। जो शारीन लडीस्यां घर ना नाम-नाब नहीं नरती है, उनका रीज स्वाराम विशेषकर तालीर का क्यांग्रस नारना अस्यान आवापन है। नियमपूर्वतः यह-कार्यया स्वापाम सरम नै मेनडेबीठ ९९ स्त्रीन्सेवी य छुण्डाम मिठ गरमा 🐉

दिवार को एक वीमा करती में गात ह्वार स्वी-संवेधारिया में साथ करने द्वार हा गात पर। हिंद्राम ने अधिकार साथ केदरा में कर गाति हैं और इसकी कब्द में करने केद से में बहुत पुर-स्तत होता है। हव करनों में एक आकार दावर की देगरेक में स्विधी के समाद के प्रियम्भिन स्तात्वे का प्रकर्ण किया, जिनमें भारवर्षणान साम हमा ।

सार रक्षता चाहिए कि विधानों को छाटियों कार बाताबरण से समेट्ट चरित्रम कार्ती हैं। पासे एनमें क्वी-रोग बहुत कम पाने जाते हैं, प्राप्त, नहीं के बराबर ।

द्वते माध्याच साधारम स्वास्य पर भी भ्यात त्वता बहुत जुलती है । स्वातात्व विचा चा स्वास्य खराव होता है, ऋतु के समय की स्वास्थ्य-विवि की अवहेलना से । इसलिए इस समय विशेप होिशयारी से रहना चाहिए। उन दिनों खास तीर से ध्यान रखना चाहिए कि किसी तरह ठंडक न लग जाय। एकाएक ठंडक लगने से ऋतुस्राव बन्द हो सकता है। इससे तलपेट में अत्यन्त पीड़ा होती है और अनेक बार जरायु आदि यन्त्रों में सूजन के कारण ज्वर हो जाता है। और वाधक सूल, और व्वेतप्रदर आदि रोग हो जाते हैं। अतः गरतु के समय ड्वकी लगाकर नहाना, ठंडे फर्ग या ठंडे पत्यर पर देर तक बैठना, गरीर की ठंडी अव-स्था में ठंडा पानी पीना, देर तक हवा के झोंके लेना, ठंडे पानी से देर तक कपड़े साफ करना या दूसरे तरीके से गीला कपड़ा पहनकर रहना आदि वन्द कर देना चाहिए।

लेकिन ऋतु के समय सिर धोना और भीने तांलिये से गरीर पोंछना वन्द नहीं करना चाहिए। दिन में एक बार ऐसा करने से गरीर स्निग्ध रहता है और साव जैसे अच्छी तरह साफ होता है, शरीर भी वैसे ही स्वस्थ रहता है।

ऋतु के समय अधिक मेहनत का काम, जिससे यकावट आ जाय, नहीं करना चाहिए। मामूली परि-श्रम से तलपेट का रक्ताधिक कुछ अंग तक कम हो जाता है, इसलिए ऐसे समय घर के हलके काम करते रहना चाहिए। इस अवस्था में स्वी को स्वामी की शैया पर नहीं जाना चाहिए। जबतक स्नाव पूर्ण रूप से बन्द न हो जाय तबतक हमेशा अलग विस्तर पर सोना चाहिए। यह नियम हमारे देश में प्राचीन काल से चला आ रहा है। आयुनिक लड़के-लड़िक्यां इसे कुसंस्कार कह कर उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं; किन्तु वे यह भूल जाते है कि इसके साथ सारे जीवन के स्वास्थ्य का गम्भीर सम्बन्ध है।

भोजन पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। रोगिणी का प्रधान पथ्य होना चाहिए: फल-फूलों का रस, कच्चा साग (Salad), जवाला हुआ साग, जवाले हुए साग का पानी (Vegetable Soup), धारोषण दूध, मटा, वारह घण्टा भीगी हुई किशमिश का पानी और पानी-युवत शहद। भात, रोटी कम करके इन सब खाद्यों पर जितना अधिक रहा जाय. जतना ही अच्छा है। रोगिणी को चाय, काफी, गर्म मसाला, अधिक मसाला, मिटाई, सब प्रकार का दुष्पाच्य भोजन, सड़े हुए खाद्यका भोजन, अनियमित आहार और अत्यधिक आहार हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। स्त्री-रोगों में जपवास बहुत फायदा पहुंचाता है। इसलिए नीवू के रस के साथ पानी पीकर समय-समय उपवास रखने से काफी लाभ होता है।

यथासम्भव रोगिणी को खुली जगह में और सदा प्रसन्न रहना चाहिए; वयोंकि आनन्द के साथ रहना ही प्रकृति की सबसे बड़ी औषधि है।

गर्भवती स्त्रियों के लिए हिदायतें

श्री भिज्ञ

गाता-पिता के, विशेषकर माना के, मानसिक एव शारीरिक स्वास्थ्य पर बच्चों की तन्दुरुस्ती और गुग निर्भर करता है। बाल-विवाह तथा कम आयु में गर्भाधान होने के कारण ही अस्वस्थ बच्चे पैदा होते हैं। जबतक स्त्री-पुरुष पूर्ण स्वस्थ न हों, उन्हें शादी नहीं करनी चाहिए।

गर्भवती रित्रयों को मानिसक झांति रहनी चाहिए। घर का मामूली काम-काज वे करती रहें, लेकिन यका देनेवाले भारी काम उन्हें नहीं करने चाहिए। ऐसी रित्रयों के लिए मंभोग तो एकदम वर्जित होना चाहिए।

गर्भवती स्त्रियों का भोजन पीष्टिक तथा सुपाच्य हो। कब्ज़ उन्हें नहीं होना चाहिए और गिचं-मसाले एवं पेट में हवा पैदा करनेवाले पदार्थों के इस्तेमाल से वर्चना चाहिए।

गर्भवती स्त्री को कोई दवा नहीं लेनी चाहिए। यदि बच्चा पैदा होने में कोई किनाई हो तो उता-वली से काम न लेकर धैयंपूर्वक प्रकृति को कार्य करने का अवगर देना चाहिए। बच्चा जनने के बाद भी कोई दवा देना हानिकारक है। पूर्ण विश्राम तथा हल्की गुराक ही पर्याप्त है। यदि प्रसूति के बाद सफाई ठीक से न हो अथवा दर्व हो तो पेटू पर सेक कर देना चाहिए।

#### उपवास : कव खोर कैसे ?

#### थी सरमीनारायण चौधरी

अगर आर्थी नियम के साथ नाम पिय हो उपवास भरत भी भाई अरूरत नहीं । यह धरीर विना भारत भ भन नहीं गरता। उपवास भी जरूरत सभी हाती है अर्थात आरमी राज्य मीज लाया ह और भूख व ज्यान मिताभूगके हा भारत है। यह सबका मानून ह कि त्रीम कं तथ m हाक्य कट्टनेरे आत्रमा विना जनरत वं भी बहुत सावा संभातन करत है। इसने अनक गमीर नर्रावियां हाती है। छान्नान राग ता हाते हा है। बहुद मानवामा ज"र बुद्दा हा जाता ह और उग्रर्ती आयुभावन हालाती ह। इतना वारण यह है वि शरीर की दाक्त भाजन प्रधान म लगी रहती है और काम ज्याना हो जान ने वादीर व अन्यनी का पुने नगजार परने जाने हु। दोनों बात लराव हु। (१) बदुत साना और (२) जिम न साना चाहिए उन मामा। ऐतिन इत निरादाना एक साम जारी हा भारहती आराम

अनुविद्याभीका म गारीर व अन्तर विकार जमा हो जात है मार्य ही उनके प्रधान म नग्न हुए वन्त्र पुत्र हुँ ए नाम के नाम नग्न और पान रून हैं जिससे निन्न किन जमा वम्मोरी और न्याय आगी है। इस्तिन प्रचान म इन कन्तुमों को आराग मिन्या है। इस आराम के बाँ ने जिस सम्बद्ध हो। गार के भारत प्रधान के बाँ ने जिस सम्बद्ध हो। गार के भारत प्रधान के बाँ ने जिस सम्बद्ध हो। गार के भारत प्रधान के बाँ राज्य निरमान के बाँ सात के निय उत्तर म वी प्रधार स भन्तवाद और राम जिसक जात के बाँ भीरी (भार) का बाँस रिवाद का स्थान भीर (भार) का बाँस रिवाद का स्थान भीर ही। हाज्य भारते स्थान स्थान के स्थान स्थान

पुण्यस्य सम्बद्धाः बण्यान्यस्य मेहिनि

जब मात्र प्यान वा नाम बद्द हो बात्त है वा गरीन व सर्र मी समा तानत बची न ६ शरा विचार निवानत म त्या ना है है थे गाम बहुमा होन त्या है जाभ पर मंद जबर भाग ह यह म बद्द मान ज्या । । । त्या च जब म म त्या हाजा है । यह गब इन बान ना मबुद ह हि गारि सानी नवाई म त्या है । विक पोमाता नहा होना बचानि सोद बस्ता हो। वासाना न होन पर स्व जब्दी है न जिमा ने सहाद मुनाब से हो, पायाना हर इस बस्ता साव ।

वररास में कमनोरी

ा तान से कमनाय होना स्वामास्ति है एतिन मना द्यां बहु ह िन भी स्वी में हर हर मार मार और पूर्व देशे ह बोर दिनसा साम सह हरना तत गुट्ट किए गर्म भारत और उपने नारण बना स्वी मा हा तर रहना है, वे भी नमताये का बहाना करते हुए उत्तराम म हरना मोर भागत है। उत्तराम समनायां वा हर या निकास बुनत-हुए मान स्वाल का बताहर

मुनी जनर माणून होता है और वह इम्मिल हिजार जून न दोराज म क्या जाता है। हिजार ज भग हुआ सा मा परिया म नी जाता है। हिजार ज भग हुआ सा मा परिया म नी जाता है इस्स मुन्दा मानूस हमा है। इस मुनी का प्रस्ता के इस्स मुन्दा मानूस हमा है। इस मुनी का प्रस्ता को जाताब स्टार्ट कि मुनी हमा परिला माने नी मान्य जाताब स्टार्ट कि मुनी हमा परिला माने नी मान्य जाताब स्टार्ट कि मुनी हमा परिला माने नी माने जाताब स्टार्ट कि मुनी हमा परिला माने हमाने माने जाताब स्टार्ट की स्टार्ट की स्टार्ट माने माने का स्टार्ट की स् देखा गया है कि उपवास में पहले दिन भोजन का लालच सताता है और इसरे और तीसरे दिन कमजोरी मालूम होती है, लेकिन अगर एनीमा लिया जाय तो चांथ दिन से ताकत और फुर्नी मालूम होती है। में जानता हूं कि लम्बे उपवास में भी बहुत आदमी अपना मामूली काम-काज और मामूली कसरत करते जाते है। ऐसा ही करना भी चाहिए। अपनी ताकत भर काम जुनर करना चाहिए। क्या उपवास सभी कर सकते हैं ?

तीन (Acute) बीमारी में उपवास करना लाजमी है। तीन बीमारी में गरीर विकारों को दूर करने में जोरों से लगा रहता है। ऐसी हालत में कुछ भी भोजन देकर पचाने की किया को जारी कर सफाई की किया में बाधा टालना पाप बीर जुमें दोनों है। लेकिन हमारे टाक्टर भाई इन दिनों ऐसा ही करते हैं। वे कहते हैं कि रोगी को ताकन बनाये रखना चाहिए। इसीसे इन टाक्टरों की देखरेख और इलाज के होते हुए मामूली बुखार टाइफाइट बीर निमोनिया के रूप में बिगड़ जाता है। मामूली बीमारियों में बहुन से दखेड़े हो जाते हैं और इतनी पेचीदिनयों हो जाती है कि टाक्टर के होग टिकाने नहीं रहते। अगर मई बीमारियों में उपवास कराया जाय और साथ ही एनीमा से पेट साफ रना जाय तो कोई गड़बड़ी न पैदा हो जीर बीमारी भी जल्दी ही दूर हो जाय।

जीणं (Chronic) बीमारियों में भी उपवास जरुरी होता है। उसमें तो लम्बे उपवास की जमरत होती है। उन उपवासों में भी आदमी को अपना मामूली नाम-जाज करते रहना नाहिए। नई बीमारी में जैने कि बुगार में, उपवास और पूरा-पूरा आराम दोनों एकरी होते हैं।

कुछ लोगों के लिए पूरा उपवास अच्छा नहीं होता । दुउटे, वसजोर, वहुत दिन के रोग से दुवते और कमजोर वने मरीज, गर्भवती जीरत और बच्चों से पूरा उपवास नहीं गराना चाहिए। उन्हें हर तीन या चार घटे पर फलों के पतले रस या तरनारियों के रस (सूप) पर रसना चाहिए। सबी रोग से तो दूब और कभी-कभी रोडी भी देना चाहिए। जो मोटा है या दुवला होते हुए भी मामूली तौर पर मजबूत है, वह पूरा उपवास ज़रूर कर सकता है।

#### कितने दिन उपवास किया जाय?

तीन दिन का उपवास सभी कर सकते हैं। इसमें कोई भी खतरा नहीं। कई बीमारियों में तो जबतक रोग दूर न हो जाय या उसकी ताकत न घट जाय तबतक उपवास करना चाहिए। पुरानी बीमारीवाले भी लम्बा उपवास करके अपनी बीमारी दूर कर देते हैं, लेकिन पुरानी बीमारी में लम्बा उपवास किसी अनुभवी चिकित्सक की ही निगरानी में करना चाहिए। जिन्हें कोई ऐसा चिकित्सक न मिले वे पहले तीन दिन का उपवास, फिर ७ से १० दिन तक उचित भोजन। फलाहार अच्छा होगा। फिर पांच दिन का उपवास, फिर १०-१५ दिन उचित भोजन और फिर एक हफ्ते का उपवास करके और इसी तरह भोजन और उपवास का कम जारी रखकर अपने आपको भला-चंगा कर सकते हैं।

हफ्ते में एक दिन का उपवास सभी को करना चाहिए। हमारे यहा एकादगी या और दूसरे-दूसरे मीको के बत इसीलिए हैं कि गरीर को आराम मिले और उसके विकार दूर हों, लेकिन बत के बाद पूरी, हल्वा, मिठाई, रवड़ी जैसी चीजे खाना बुरा है। उसके बाद तो फलाहार या अनाज और सब्जी का मादा भोजन ही ठीक है। मुसलमानों का रोज़ा बढ़े काम का है, अगर वे रात में अण्ड-शण्ड चीजे पेट भरकर और बहुत बार न खाये तो। मैं अपनी इस ७३ साल की उम्म में हर हफ्ने मोमवार-के सोमवार पूरा उपवास करता हं। लम्बे उपवास का तोड़ना

रातरा उपवास में नहीं, उपवास तोंटने में है। लम्बे उपवास के तोंटने में बहुत सावधानी से काम छेना चाहिए। मान छीजिए कि आपने लम्बा नहीं तो निर्फ सान दिन का ही उपवास किया। इसे जब आप तोंटने लगे तो पहले दिन सिर्फ दो बार फल या पतला रस, वह भी एक बार आय पाव से ज्यादा नहीं लीजिए। दूसरे दिन तीन बार रस ही पीजिये। तीसरे दिन आय-

उपयान गोडने के दियों में भी, जबजब नि भारमी मानुजी पुराश पर न आ बाद धुनीमां जिला जारी स्थाना माजिए।

प्रमुक्त किए जगर बोर्ड क्ल मुश्लित सी क्रियमिया को सार-प्रोप घटेगर्स पानी में सियो बर और किर बारहे निवोड बर रण निराज लीकिए। पैटपन का इलाज

यों को सभी रोगों में छोटे या लाखे जाबाम ने पायदा होता है, विनित नेटूनने वा नाम हरात है। बहुत बाता कला में पेट बी धेमी वित्त जाती है। उरवान के दिनों में थेनी मिनुह जाती है, जिनने उरवान के बाद बहुत नहीं खाबा जाता। उपजान के बाद

अगर उपसम से अपने आपने आपने दीन दिया है तो आपने भाहिए हि पिर आप अनुभिन भोजन में बर्षे अबद में है कि उससम एक प्रमाद कर जबर्यन और प्रभावशासी प्रावश्चिम है, जिसने बाद चिर पराने पार में नहीं पहला प्रतिह ।

तो ल्या उपस्था पूरा नहीं कर गरने ये भाव दिन में सीनीन बार कर के रम पीकर ही के-गीर हुनी बा स्वास दह तथा बाकर मानद ही महीने हुन महीने रह तथा की रहें भी पायदा होगा। इन हारतों में भी एशिसा नेपा साहिए।

### स्वास्थ्य के लिए कसरतें

श्री रद्रदन विपाठी

क्ष पीत्रीम पटें में एक पत्ती भी भगी क्यास्थ्य के पितृदेशा नहीं पारते । बोई पूछे नी करते हैं कि समयही नहीं मिलता । इसी कारण कि नमय ने मिलते की जिस्तात न ही कुछ पूरी हुई कन्नदर्श का करते में इस ने में करता, जित पर बाँद की दिल मर में पारह मिल्ट भी मर्ग करें नी वर कारण और मूर्गी रह समय है।

न्यास्य दिश्य भाष्यस्य है द्रण्डे बयाते ही अवस्यक्षा नगें। स्वीवत्त का सम्बद्ध स्थाप्त स्थिते और वार्त सम्बद्ध पद्भाग्य के त्यू महास्य करते के त्या है कि कर स्थाप को। स्थाप्त कार्य करते के त्या या बहुत बनारी है कि होई को हिंद्या स्थाप करते हैं पार्व बहुत बनारी है, सुध्यान और अपनी स्थाप पर रहे। माय है यह भी कमरी है हि पेट बर्ग्यन ना न हो जाद भीर पेट भीर पेडू के अपदर के बहन नूरें अरते-अपने बाम टीक्टीट करें। इत जो बो पूड़ और मुन्दर बाम के लिए ही बूछ क्याना का बाने आरो हिला जाता है।

द्वत कमरनो को कार्य समय दशाय भेते के बोद्द सन्मातितम नहीं है। इस बाद की आदरदरणा जसर है हि दशाय पूर्व, भीत सन्देशको जाद, जिसे कहाँ के कोर्त-कोर्त हका साथत जाय भीत सन्दर्श जाय।

यदि इत तमाना से बाद ही लाम करने की इच्छा हा नाइनमें में हरत का हर गान दानी दान करना करिन्तु कि बाद पात पर नाम, लेकिन बहुत करान के हो । जमान करने मध्य नाफी पोर्गा भी पक्की हो कि आप स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। कसरतों के माय-ही-माथ बदन को रगड़ना भी चाहिए। ऊपरी खाल को रगड़ने से खून का बहाब तेज़ होगा और बदन में चिकनाहट और मुन्दरना आ जायगी।

यदि इन कमरतों में से हरेक एक या दो बार भी हर रोज कर ली जायं तो मनुष्य अच्छी तरह रवस्थ रह सकता है।

#### नं० १

सीधे स्वाभाविक हालन में खड़े हो, पैरों को फैलाओ ताकि दोनों पैरों के बीच में १२ इंच का फामला हो, अपनी बांहों को मामने की नरफ से शिर के ऊपर ले जाकर ऊपर तान दो। इसके साथ ही श्वाम को अन्दर लो, अब कमर में मुइते हुए ऊपर के घड़ को आगे की ओर झुकाओ नािक हाथ की अंगुलियां जमीन को छूने लग जागं मगर घुटने न मुहें। सब सांस बाहर निकाल दो, फिर हाथों को सिर पर पहली हालत में ले जाओ और उमी तरह व्यायाम को २ में ८ बार तक करों। इससे रीढ़ और पेट को बहुन लाभ पहंचेगा।

#### नं० २

जमीन पर सीधे चित लेट जाओ । एक-एक करके पैरों को ऊपर उठाओ । घुटने मुड़ने न पावें और पैर बारीर से ९० टिग्री का कोण बनावें। मुख दिन बाद दोनों को इसी तरह एक साथ धीरे-धीरे उठाओं। यह व्यायाम पेट की मांस-पेशियों की मजबूत बनाता है।

#### नं० ३

परं होकर दोनों हाथों को घुटनों के पीछे ले जाकर पंजाकशी कर लो और इसी हालन में अपने बदन को उपर उठाने की कोशिश करों। फिर बदन को दीला कर दों और फिर उसे हमी प्रकार छपर को उठाओं। इस ब्यायाम को ५ ने १५ बार तक करों। इसमें पीठ का निचला भाग मजबून होता है।

#### नं० ४

मिर के ऊपर बांहों को फैछाने हुए चिन लेट

जाओ। धीरे-धीरे एक पैर को घुटने मे मोड़ कर उठाओं और हाथों को आगे लाकर उसे गुफिया लो नाकि पेट पर दवाव पड़े। हाथों को ढीला कर दो और पैर को फैला लो।

फिर दूसरे पैर से इसी प्रकार पैट पर दवाव डालो। पहले एक-एक पैर से पांच बार व्यायाम कर, फिर उतनी ही बार दोनों पैरों से एक साथ। यह व्यायाम पांचन यन्त्रों के लिए लाभकारी है।

#### नं० ५

दोनों हाथों को कन्धे के बराबर फैलाकर पड़े हो, फिर दोनों पैरों को भी फैला लो। अब कमर में मुड़कर बदन को आगे झुकाओ और बदन पुमाकर एक हाथ में जमीन को छुओ, दूसरा हाथ उसी की सीध में ऊपर की ओर रहे। फिर आगे को झुके हुए ही बदन घुमाकर दूसरे हाथ में जमीन को छुओ। इसी प्रकार चार बार से शुक्क कर दम-पन्द्र ह बार इस ब्यायाम को दुहराओ। इससे हाजमा बढ़ना है, निचली आंतों में हरकन पैदा होती है और जिगर और मसाने पुट्ट होते हैं।

#### नं० ६

इस तरह खड़े हों जैसे दौड़ रहे हों। एक पैर ऊपर उठाओं तो दूसरा हाथ, और इसी प्रकार दूसरा पैर और उसके दूसरी ओर वाला हाथ। इस व्यायाम को साठ-मत्तर बार तक दुहरा सकते हो। यह तमाम बदत के लिए लामकारी है।

#### नं० ७

हाथों को निर के उपर फैलाये हुए चिन छेट जाओ। पैरों को धीरे-धीरे उठाओं और निर के उपर में पीछे के जाकर ज़मीन पर रख दी। इसी बीच में हाथों की वगल में लाकर मीधे-मीधे डाल दी। फिर धीरे-धीरे पैरों को वापम पहली दशा में ले जाओं और हाथों को पीछे की नरफ। इस ब्यायाम को एक में आठ जार तक दुहराओ। इसमें खोतों में हरकत होती है। बट्ज की शिकायनवालों के लिए विशेष लाभकारी है। इस ब्यायाम के मीयने में जरा देर लग सनती है।

हापाको कमर पर राज्य और पैराका भैणासर ग्रंद हा। दाहिनी बार इस मानि झुना सि मार्था पैर अपने ही स्थान पर सीधा रह और दाहिने हाय में जमीत मोजियनी दर हा सबे उपनी दर छुत्रो । इसी प्रकार बाई ओर नी इस दहराओ । दाना बार चार ने बाठ बार तर इन ब्यायाम का दल्लाओं ।

जमीत पर पैरा को बावे पैतारर और दाना हामा का कमर पर श्यक्त बैठ जाओ। उपर क धद गंगीरा और बाच भ रसत हर जिल्ला बंदा पैरा बर गरना हा बनाआ। दाद और बाह दाना अप्त ऐने पाय छ दादर बा। भा ।

अभी पर एर बाजा। पाट स पैरा का बार और आसीर रूपा आर सिर वा ऊपर वा बार बड़ानर हा गरे उटा था। इस स्य बास का २ स १० वार तत्वरो । यत्र पैट के राप्युश और राहक रिप् रामशारी है।

मंब ११

जमान पर पित स्ट नाथा और बाटा का बान m वैश्वदा। वैसाका द्रन्द्र वैश्वद हुए उसर का उद्याभा और उत्तर दाना का गुरु माय राते हुए बढ र बदा दावरा बनामा । या ४ एक सार माएक साम्या रिर दूसरी भाग और जब कुछ बहान माणूम हा कार कर दा ।

R. 95

दीशर का भार पा बार उगा बराव एर प्रकृति वागाने पर सद हा। दीवान की ओर इतना सूत आधारि तुम्सरे स्व दीसण करू दावे। सब ह्या का दब इस का वे हुए सारे बारे असे

का बार बड़ी ताति तुम्हारा करा दिक्य शक्त आया। किर पन्ते की नहां हाज्य में बापम सा जासा। इसा प्रवार इसे एक सामान बार तक दहराओं। यह रीडव लिए सुरीद है। इस कमजार पैटप मा को नहीं करना चाहिए।

70 t3

बमीन पर पर सेर बाधा शाशि हुपेरिया शी जमीत पर क्या क पाम रहें। स्थान भए। हा बाहा कंबर धारे मीरे गिर और बदन कं अपने माग का कार उठाओं। लिस्सा उत्तर उटा हुआ, हुण्या का गीषा और कमरको जनीन संसभा हमा रणा। बदन का बहुओ हाला में लामा मौर द्याग निकाल दा। इत दा स बाठ बारता करा ।

जमीन पर शट जाँका और शया को सिर क पाछ है जाशा। धुरी शुक्त न यात्रें। एगी हारत में बाहा ना भीर उपरी यह का कार उपना हुए इस हरत में न आ जा कि हाथ पैर के अगुटे की परंड ल । स्टिबप्त का पर्णादणा ॥ न जाला । सद की बन्त का बदान हरा हा। तरर रामा हि दारिया गांव बार्चे देर की बाद अरदा ईद व पण्ण पर गा। हिर पट्टी दणा भाषांत्र जाशा । अवशी बाद उठते पर बन्त का दूसरी बार यानी दाणि। तरा हम ल आधा। इन प्रवार हा न न्य ब एता इय ध्रापान ना ? हरी दी 1

क्यायाम हिन्दरा संबंधी श्रीज है, द्वारा गांता करत नियं हत् ब्यायामा ना नेवा नूख हात नरश ही पा FRI PI

्रियाम शस्त्र एप० देश विष ५३ विश राज्यात्रक के बतान हो एक क्रांग मिना की इ. शिक्त दाम निक्र मेन भागा है।}

प्राकृतिक चिक्टि मा में गरम पानी की थैली त्या गनीमा चादि हैंची छोटी दोरी कई पीको मे हाम निया जान है। ये होटेन्सेटे बीजार बड़े हाम है होने हैं। ये मीठे पर मनुत्य हो जा राज्य हते हैं, वह सहत बनारतियों से मही मिनसे हैं। होहिन मेस यह मानना है हि हुदूरने हर राज हो सेना के पामणह सेन मी होना पादिल चीर मर्राजा की उनकी मेहन देगहर रोज में हुए बाम भी देश पाहिए ।

## प्राकृतिक चिकित्सा श्रीर वैज्ञानिक मालिश

श्री जनाद्नप्रसाद

जिस तरह उपवास, जल-चिकित्सा, मिट्टी-चिकित्सा, आन्तरिक स्नान (एनिमा), सूर्यकिरण-चिकित्सा आदि प्राकृतिक चिकित्सा के प्रधान अंग हैं, उसी प्रकार मालिश भी एक प्रधान अंग हैं, व्योंकि यह भी दवा-रहित चिकित्सा (Drugless Healing) की ही एक पद्धति है। प्रचलित यूरोपीय चिकित्सा-पद्धति के प्रवर्तक हिपोक्टीस ने भी इसकी व्यवस्था दी है हालांकि ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि ईसा के कई सी वर्ष पूर्व भी ग्रीस, रूस और मिस्र आदि देशों में स्वास्थ्य-लाभ के लिए इसका प्रयोग किया जाता था।

मालिश को वैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धति न मान कर भी लोग आदिकाल से इसकी उपयोगिता देखते आये हैं और आज भी किसी-न-किसी प्रकार इसे अपनाते हैं। इसकी उपयोगिता आप एक साधारण-सी बात से समझ सकते हैं। छोटे-वड़े सभी घरों में नवशिशु के जन्म-दिवस से लेकर काफी वड़े होने तक प्रतिदिन उसकी तेल की मालिश होती है, जिससे रक्त-संचार के ओपजन की प्राप्ति विशेष रूप से होती रहे। स्त्रियों के उदर-सम्बन्धी रोगों में मालिश का विशेष रूप से प्रयोग होता है। सिर-दर्द इत्यादि में आम तौर से मालिश का ही सहारा लिया जाता है। गैशवावस्था में वच्चे अक्सर चारपाई या पालने मे गिर जाते हैं। कोमल झरीर होने के कारण जब चोट ज्यादा लगती है तो हम किसी डाक्टर की तलाझ नहीं करते, बल्कि नैसर्गिक बुद्धि द्वारा प्रेरित होकर हम भीघ्र ही वच्चे को गोद में लेकर चोट खाये हुए स्थान को यपयपा कर सहलाने लगते हैं। अत्यन्त शारीरिक परिश्रम के फलस्वरूप जव हम थकान अनुभव करते हैं तो कोई दवा या लोशन नहीं लगाते, मालिश द्वारा ही आराम पाते हैं।

छोगों को मालिश का वैज्ञानिक मूल्य छगभग सोलहवीं शताब्दी के अन्त में मालूम हुआ जब शरीर-विज्ञान के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ। चूंकि रक्तसंचरण से इसका विशेष सम्बन्ध है, इसिलए सत्रहवीं सदी में जबिक रक्तसंचरण सम्बन्धी विशेष खोज हुई तो इसे अधिक आदर मिला। पर उन्नीसवीं सदी में पीटर लींग नामक स्वेडन-निवासी हारा इसे पूर्ण वैज्ञानिक रूप मिला, जिसके फलस्यरूप आज के चिकित्सा-जगत् में यह स्वेडिश मालिश (Swedish Massage) के नाम से विख्यात है।

वर्तमान काल में एलोपियक डाक्टरों और सर्जनों ने भी इसे लाभदायक समझ कर अपनाया है; पर आंशिक रूप में। कारण, ये दवा का सहारा अधिक लेते हैं। पर दवा-रहित चिकित्सा होने और मूल सिद्धान्तों की समानता के कारण प्राकृतिक चिकित्सकों ने इसे विशेष रूप से अपनाया है। मालिश और विद्युत्-चिकित्सा द्वारा चिकित्सा करनेवाले चिकित्सकों का एक अलग दल ही है, जिन्हें फिजियोथेरापिस्ट (Physiotherapist) कहते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों के अनुसार रोग विनाशात्मक नहीं, विल्क एक निर्माणात्मक प्रित्रया है। सच तो यह है कि रोग एक मित्र के समान है जो हमारे गरीर की सफाई करता है। गलत आहार-विहार के फलस्वरूप शरीर में विजातीय द्रव्य जब इतना अधिक इकट्ठा हो जाता है कि गरीर के अंगों को अपना काम सुचार रूप से करने में वाथा होती है और रक्त के उचित प्रवाह में किठनाई उपस्थित होती है तो रोग की आवश्यकता होती है। विजातीय द्रव्य के इस संचय से विशेष स्नायुओं पर दवाव पड़ता है और फलस्वरूप दर्व और वीमारी पैदा होती है। चाहे रोगों के लक्षण कितने भी भिन्न और पेचीदे क्यों न हों, उनका कारण सदैव एक ही होता है—आन्तरिक अस्वच्छता, अवरोध। वीस शताब्दियों से अधिक से रोगों के उपचार के लिए औपियविवान को ही एकमात्र सहारा माना जाता रहा है; पर

अत्र धरीरिविज्ञान और रोग-सम्बन्धी बन्नो नी विद्या में आधुनिन अनुस्थानो के आधार पर यह नहा जा सनता है नि धरीर ने अनुस्युक्त समालन ने लिए अवरोध ही उत्तरदायी है।

रोगा का बास्तिका विकित्सक हुगारे अन्दर ही विद्यान है, बाहर नहीं । यह हुगारी धौदनीयिक है। उसे हो । उसे हो है। उसे हम आम्बर विकित्सक कह सकते हैं। उसे में को दूर बहुँ करता है, केंकिन रोग निवारण की अपित उस सनद प्राप्य रोगी के धौवनकल (Vitality) पर निर्मेर है। यह जीवनकल मित्र मित्र व्यक्तियों के सरीर में फित निम्म होता है। धौवनकल का यह बेमिलिन अन्तर मानव सरीर में विवानीय द्रव्य के अवरोप की माना पर निमेर हैं। हम नह सकते हैं सीवनकल जीवनीयिक — विवानीय हव्य को रकावत।

जब स्वय जीवनीशक्ति रोगनामक प्राइतिक प्रविया द्वारा इस रनावट को दूर करन की कोशिश करती है ता यहन-मा जीवनवल काम आना है। तीत्र रोग स्वय उपचार है। लेकिन जीमें और कास्टीटयरानल (Constitutional) रोगो जैसे बोप्टबद्दता, दमा, हदरोग, मधुमह, गठिया, मूलारीय, पक्षाधात, रमेटिज्म तया आर्थराईटीस आदि में जिनम रवावट बहुत अधिक हुआ करती है, बाहरी मदद की आवस्यकता होती ही है क्योदि एसे राग के रोगियों म जीवनज्ञ स्वभावन **रम होता है। यह तभी समय है जबकि रोग-प्रस्त** अवो को पर्याप्त आराम दिया जाय और सामही उन्हे सशक्त भा बनामा जाम । हम उन्हे रागमुक्त तभी कर सकते हैं जबनि हम इन दलावटो का उत्तम सचरण द्वारा शुद्ध रक्त पहुचा वर दूर वर दें। यह कार्य सिन्नय व्यापान से भी बहुत मूछ ही सकता है, पर वे स्वय ही थनान पैदा बरनेवाले और जोवनवल वा हमान करनेवाली हैं। अत ,रोगावस्या में लाभदायक नहीं। इस भार सहायता व्यहिसक प्रणाली से ही दी जानी चाहिए और वैज्ञानिक मालिया इसके लिए बहुत ही उपयुक्त है । कारण, यह भी एक निष्क्रिय व्यायान (Passive Exercise) वे सिवा और दुछ नहीं । यह एक वातिक विज्ञान है और प्रधाननया रवनस्वारण उत्तम कर

देता है। माल्सि का विसेष सम्बन्ध किसी-म-विसी रूप में मार्पोपिया, प्रमान कपो जैस—हृदम, मेदा, छोटी तथा बढी कार्त, फड़रे, यहन तथा पुरें आदि, रानतपरण सर्थान और भागारणवया उतत्तुओंसे हैं, जिन्हें कामल तत्त कहा जाना है।

यदि आग विष्कं अपने हाम के कियो तिया के रक्त को दबा कर उत्तर की ओर भेजें तो आपनो जात होगा कि कुछ सम्यक्षे ठिन्द उस विराद को आप बाली कर देते हैं। पर शीध्य ही आग यह भी देखेंगे कि उसमें किर रक्त को यसाया। यह बहा रक्त तह होना। जिस रक्त को आपने आग बदा दिया वह किर उस रिक्त दिया सें लीट नहीं आना। यह नदा रक्त यमनी से आता है। यह प्राचारणभी वात माल्यि का वैमानिक रीति से समझक के लिए बडे काम की है। एसंदे हम पता किता है कि इस प्रकार रक्त के अपने हुदय की ओर से मा सकता है।

सिया माजिस ने निसी भी दवा सं हम शिरा में
रान को इस तरह दोश कर रनावसरण उतान मही नगा
सनते । सरीर में निसी स्थान पर समें दे । यही एन मानि हम मानिया हारा जमें दूर नर तमने हैं। यही एन मानि एवी निया है, जिसने हारा हमने हैं। यही एन मानि एवी निया है, जिसने हारा हम पारीर में रामतियार नर हुदय मो खाराम दे सनने हैं। इतनी-सी साम तो सामारण माजूम पनती है, पर इस की उपविधात और इश्वा महत्व आप तब समस हमें ग जब आप यह जान गायुरी निकामन ८० फीसरी रोगो ना नारण निसी-न निती दर्जे तम भागवरीय या प्रोग ही होता है। छममम सभी प्रवार के रस्तानवरण, रसास और पायन-सम्बन्धी रागो के होने में पार्थिक स्वरोध की ही प्रधानना रहाँ। है और इसको इर नरने ने लिए मानिया ने उपयोग ना सहत्वपूर्ण स्थान है।

मालिय करान से छोड़ी तथा बड़ी आहें, निगर, बुद्धें, पण्डे तथा हृदय आदि आगे पर विशेष प्रमाव पड़ता है। वे अपना साथ सुवान रूप से करते लगते हैं विश्वसे मलिप्यानग भागी प्रमार होता है। न तो आदो में पहानदा सल सहना है, जिससे अन्तर्विष की उत्तेजना (Auto-intoxication) हो और न मुस्ति एनिड जादि निम ही जरीर में रह माते हैं। ज्लाम-प्रस्वास की जिया गहरी हो जाती है जिससे फेफड़ों को काफी माना में जोपजन मिलता है। दिल और फेफड़ें को काफी माना में जोपजन मिलता है। दिल और फेफड़ें मज़बून होते हैं और जरीर में कुड रनत का संचार होने लगता है। एदम और नारिमां सबल हो जाती है। जरीर का रतस्य दमा में रहना बहुत-फुछ लचा की दमा पर निर्भर है। इसके लिए आवल्यक है कि जसकी नभी बनी रहे और ने अपना काम मुनार रम से कहें। मालिय से सून का दौरान तमा की छमरी सबत तक आ जाता है। हाथों की रमर में लचा की ममी भी मिलती है जिसने लचा करार रहती है।

ऐसा पाया जाता है कि कोमल तंतुओं के विशिष्ट संचालन हारा जीणं और मान्सटीटपृशनल (Constitutional) रोगें। का उपनार तो किया ही जा सनता है, हृद्धियों के निर्माण-कार्य की भी सतेक और जत्तम किया गमा है। हर्द्धी ट्रहने मा जन्य हुन्छी-संबन्धी विकारों में अब यह सामान्य उपचार के समान प्रयुक्त होने लगा है। यह उन "रोगों में ती लाभदायक है ही जिनमें आमतीर पर दवा का प्रयोग होता है, साथ ही ऐसे रोगों में भी जाभदायक है, जिनमें घला किया की अपेक्षा रहती है। ओपनारिक ज्यायाम (Remedial Exercise) और विष्युत-निमित्सा में तो इसका प्रयोग दिनोंदिन तीव्र गति से नव रहा है। गालिक में एस बात का च्यान रमना चाहिए कि मींही सागारण रीति से रगए नहीं दिया जाय; बल्कि समहा-दारों के साथ रोग-गरत अंगों की विशेष अवस्थाओं की देसते हुए गालिस की जाग। प्रारीर के कीमल तंतुओं के निशंप संचालन तारा मालिश के उद्देश निम्नलिनित  $\hat{\mathfrak{g}}'$  :

- (१) रगत और छसिना (Lymph) की गति की उत्तिगत कर शरीर की ऊपरी सतह तक हमें ज्यादा-से-ज्यादा गांता में पहुंचाना ।
- (२) स्नामु के छोरीं (Nerve Endings) को उत्तेजित करना।
  - (३) रनायुओं को आराम पहुंचाना।
  - (४) लाना की फिया को सतेज किया जाना, जिसमें

नह रोमकृषीं हारा मन्दगी बाहर कर सके।

- (५) गरीर के आन्तरिक अंगीं में निपके हुए विकारीं को खुलकर ज्वासादि द्वारा छन्हें बाहर निकालना ।
- (६) तंतुओं के सुज और अप्राकृतिक वृद्धि की पूर करना।
- (७) रनवसनार की मति तील करके जरीरांगीं को अधिक मात्रा में पोपण देना।

मालिश की इस प्रक्रिया में निम्नलिशित छः प्रकार की गतियों अथवा संचालनो का उपयोग होता है:

- (१) भवभवाना (Stroking)
- (२) गूणना (Kneading)
- (२) रागांण (Friction)
- (४) সবিশার (Percussion)
- (५) रपुरण (Vibration)
- (६) सिक्य और निष्क्रिय संतालन (Active and Passive Movements)

मालिय करने के लिए किसी हिशियार या जीजार की भावस्थकता नहीं। आराम से लेटने लायक एक मेज, योग अनुरोजक रील और विषय के विशेष ज्ञान के साथ इस काम में सिद्धहरत क्यवित।

चुंकि दीर्भस्ताराकी किया मालिय का एक आवश्यक अंग है इसके लिए गर्म और हवादार कमरा ही जपपुनत है। तैल की भाति स्निम्म पदार्थी की आवस्यकता होती है; पर यह भी आवस्यक है कि वे दवामिश्रित न हों। त्यना की जपरी सतह पर दवा मालिश कर शरीर में प्रतिष्ट कराने को Inunction कहते हैं जी एक अलग निकित्सा-प्रणाली है। जैतून या तिल के तेल के समान ही कोई अनुत्तेजक सारियक पदार्थ मालिया के लिए उपयोगी है। सरसों का रील जैसा योहा उत्तेजक कक प्रकृति वाले ज्यवितयों या सदी तथा घोषरोग से पीड़ित रोगियों के लिए लाभदायक है। जिन्हें पसीना बीम्ब या अभिक मात्रा में आता है उन्हें भीगे तीलिंगे से पारीर को अन्तरी तरह स्महना लाभदायक है। इस प्रकार के तेज पर्पण से असीर सूब गर्म हो जाता है अतएव गालिय के बाद ठंडे जल का स्तान बहुत लाभदायक है। पर अरीर की गर्मी को बनाये रतने के लिए यह भी

अवस्यन है हि स्तान ने बाद मरीर नो रणजनर धून में बैठनर फिर स मर्म नर किया जाय। इस स्तान ने बाद जा गर्मी रान ने लिए सरीर ना रस्त्रने नी जरूरन हाती है उसने लिए निमी मालिश नरने बाट ब्यान नी आवस्यनना नहीं। किछ अपनी ह्वेलिया ने ही रसड रेना साभदायन होगा। पर साधारणत्या मालिश ना उपयुक्त समय स्नान ने बाद ही होता है, ब्यानि स्वास्थायों ना सरीर ठमा होने ने नारण मालिश नरने बाल ने रारोर से विशेष गर्मी प्राप्त नरता है।

मालिश नरने के स्थान और विधिया से मालिश वरक बाले बा स्थान वम मह व बा नहीं है। सभी तरह के व्यक्ति मालिश नरने के लायक नहीं होते। जिनके हाय-पैर ठठ रहते हैं या स्वीजेत हो या जिनके बार्य या जुरिनव विचार हों वे चित्रित्सक के लिए उपयुक्त नहीं। रोगी व्यक्ति स मालिश नराने से लाम के बढ़ते होनि ही होगी है। बहुत से रोगों के ल्याण स्वास्थ्यार्थों म धीरे-धीर प्रकट होने लगत हैं। मालिश करने वाले में तीन वित्तीय, पूणी का होना अति आवस्यत है। उनहें सबस्त, उत्तार और सन्चित्ति होना चाहिए। उनवा जीवनवल अरपूर हो, हवेलिया कोनल, सूची और साधारण गर्यो लिये हो। एक सबसे प्रधान गुण जो चाहिए वह यह है कि उनके हुत्य में रोगियों को सेवा-आवना हो।

माणिया करते समय सरीर हो बिल्कुट बीला छोड़ देना बाहिए। इसमें माणिया बरनेवाल बा वित्रेष मुविधा भीतालिया करानेवालि को आराम खोर लान होना है। किसी भी बिशेष अग के माणिया म दश-पन्दह मिनट के ज्यादा समय की आवस्त्रकता नहीं होनी। बच्चा के लिए सी इसके भी बोड़ा समय पर्याच है, क्योंकि उनके सरीर सीघू ही गर्म हो जाते हैं। हा, पूरे दारीर की माणिया म आभा चटा या मुठ अधिक समय कम जाना है।

हिन्दू सक्कृति के स्वास्थ्य-नियमों म तेंक-मालिख बीर स्नान को नित्यनमें ना एक प्रधान अग थाना गया है। इसे निनी रोग-विद्योग को चित्रस्ता समय नर नहीं, विन्त स्वास्थ्य नावन रंगने ने लिए निया जाना है। पर साधारण मुखे और तेंक-मालिय म बहुन अन्तर है। तेंक मालित नरन से तेंक नर हुछ बडा रोगमुंगे द्वारा सरीर में प्रविष्ट हो जाना है। गागीरन पानित वा बहा वह परना हूँ बहा ते हैं, भी ग ज्यादा होते का विल्य करता है। तल खान से उनना लाभ नहीं हाना जिनना मास्टिश बरके तेल को रामवृत्यों हाता सरीर म प्रविष्ट बराने से, महा तन नि मदानित ने रोग भी जिनने लिए भी-तेल बहुत हो हानिग्रद है, तेल मास्तिश नर इसवा लाम इला सनते हैं। उदाहरणार्थ, मालिश की एक मिन्या है जो तीन प्रकार से कार्यानिक नी जा सनती हैं

- (१) मूले हायो स माधारण मालिश।
- (२) विसी वसरे के अन्दर तेल मालिश। (३) शुप म लेट कर तेल मालिश।

साधारणनया धृप म तेल मालिश इन तीना विभिया मे छाभदावन है। यहां सिर्फ विटामिन 'डी' ने सम्बन्ध में पाठना का ध्यान आकृष्ट कर देना में आदश्यक समझता ह चिक इसका सर्व-किरणो से पनिष्ट सम्बन्ध है । विटामिन 'डी' की कमी बालक और यदा में दी भिन भिन लक्षण प्रकट करती है। बच्चों म इसकी बमी से हड़डी की विकृति, रक्तहीनता और सुखा रोग प्रकृट होने हैं। यदा में अन्तर्विप की उत्तेजना से मधमेह, रुमेटिज्म, निजराईटीन और ब्राइटस रोग प्रकट होते हैं। तैल की मालिश के साथ धप सेवन करने से विटामिन 'डी' रक्त द्वारा घोधित विया जाना है। रूपभग २० मिनट में इनकी व्यूननम दैनिक अरवश्यक्ताओं की पूर्ति हो जानी है। इस प्रकार इन रोगों की सरया बहुत ही कम कर दी जा सकती है। यह प्रयोग यच्चो के सुलारीम के लिए तो अहिनीय है। हर साल लाखो बच्चे जो इस रोग से अकाल ही बार के गार में चले जाते हैं, उत्तम अधिकाश युवन बाहार के सेवन वे साथ इसका प्रयोग कर दचाये जा सकते हैं । इससे बटकर विद्रामिन 'डी'को प्राप्ति का काई दुसरा साधन और इस रोग की दूमरी चिकित्सा-बिधि का आविष्कार नहीं हुआ है।

गेगोरी निवृत्ति या बचाव ने लिए आल्तरिन स्वच्छा। ना वित्तय आवस्यनता है। मालिस ॥ मल निप्तासक अया ना बल मिलना है और व सरीर को गरगी भन्नी प्रकार दूर कर देते हैं। मालिश से जिस प्रकार रोग दूर कर उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है उसी प्रकार रोग के प्रतिरोध की क्षमता भी बढ़ती है। नस-नाड़ियां स्वच्छ दशा में रहती हैं। अवयव कोमल रहते है और रक्त में लालकणों की संख्या अधिक होती है जो उत्तम स्वास्थ्य का प्रतीक है। ऐसी दशा में मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है स्वस्थ मन में ही सात्विक विचारों का समावेश होता है, मावनाओं की ताज़गी होती है। उसे निभंयता और साहस प्राप्त होता है और मन्ष्य हर समय आशा-वान रहता है।

## मिट्टी से रोग-निवारगा

श्री भुपतराय मो॰ दवे

हमारे आरोग्य-धाम (प्राकृतिक चिकित्सा गृह) में निनिध प्रकार के रोगी चिकित्सा के लिए आते हैं। उनपर मिट्टी का प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया गया है कि मिट्टी से रोग दूर होते हैं।

मिट्टी का मूल्य आंका नहीं जा सकता। मिट्टी अनेक प्रकार से मनुष्य के लिए उपयोगी है। मिट्टी से अनाज पकता है। मिट्टी से अन्य प्रकार के खाद्य पदार्थ पैदा होते हैं। मिट्टी से बहुमूल्य धातुएं, पेट्रोल, धासलेट और अन्य प्रकार के तेल निकलते हैं। इसके अलावा हमारे शरीर के रोगों को दूर करने के लिए मिट्टी अनेक प्रकार से उपयोगी होती है। कारण, हमारा शरीर पांच तत्त्वों से बना हुआ है और उनमें मिट्टी भी एक तत्त्व है। अतः हमें मिट्टी-हपी औषिय की कीमत आंकना सीखना चाहिए।

मिट्टी और कमजोर अंतड़ियां

एक सत्य कथा सुनिये। एक रोगी का रोग किसी भी तरह दूर नहीं होता था। मां-वाप उसे जल-वायु बदलने के लिए आबू ले गये, किन्तु वहां भी उसे आराम नहीं हुआ। अन्त में निराश होकर बम्बई आये। सब प्रकार की चिकित्साओं से यक कर दवा लेना बन्द कर दिया। एक स्नेही मित्र की सलाह से प्राकृतिक चिकित्सा करवाने के लिए उसने 'आरोग्य-धाम' में रहने का निश्चय किया।

मैंने रोगी की शारीरिक परीक्षा करके उसका उपचार प्रारम्भ किया। उसको गत पांच वर्षों से भूख नहीं लगती थी। जो भी भोजन वह करता, उसे खट्टी उकारें आतीं। पेट भारी लगता। सारे दिन वेचैनी रहती और शरीर में एक प्रकार की दुवंलता अनुभव होती। हाथ-पांचों में दर्द रहता। किसी भी किस्म की खुराक में उसे स्वाद नहीं आता था। पेशाव पीला और दुर्गन्थयुक्त। इन सब कारणों से उसे बार-बार दस्त लगते। दिन में छ:-सात मतंबा दस्त आते, फिर भी दस्त पतले और दुर्गन्धपूर्ण होते। दस्त आने के बाद पेट में दर्द होता। घड़ी भर चारपाई पर आराम से पड़ा रहना पड़ता। पेट पर गरम पानी की यैली से सेक करने से राहत मिलती। किन्तु यह स्थिति लम्बे समय से चली आने के कारण रोगी इस रोग से बहुत परेशान हो गया था। उसका जीवित रहने का धैयं जत्म हो गया। जीवन में किसी प्रकार का रस नहीं रहा। ऐसी स्थिति में जीवन कहां तक टिक सकता है ?

सच बात तो यह कि उसकी अंतिष्यां बहुत कमजोर पड़ गईं थीं। जठर की अग्ति मंद हो गई थी। जो भी खाया जाता, वह पचता नहीं था। इस स्थितिमें बार-बार दस्त लगना स्वाभाविक हो था।

## रोगी की चिकित्सा

चिकित्सा गुरु की । सबेरे ताजी छाछ का एक प्याला वह पीता । दो घंटे बाद सन्तरों का रस । दोपहर को पेट पर गीली मिट्टो का लेप । शुरू में दस मिनट, फिर जैसे-जैसे समय बीतता गया, वंस-वंसे प्रतिदिन पांच मिनिट का समय बढ़ाया गया और अन्त में एक घन्टे तक रका जाने लगा । समय गुज़रने के साथ लेप सूखता जाता और मिट्टो विल्कुल सूख जाती । पेट पर से मिट्टो का लेप हटा देने के आय घन्टे बाद ताजी छाछ का एक प्याला दिया जाता । शाम की चार बजे एक

प्याप्त सन्तरे कारम । छाउ और नम को खूब थून-सून कर और आराम से पीने का अस्थान करण्या गया । पेट पर मिट्टा कालेप करने की त्रिया अति नी। पटे बाद होती। मिट्टा के इस प्रयोग करोगी की अतिहासी के टक्कन और आराम पट्टमता। उन्ह नया रक्त मिळता। करनकर दस्तो की सत्या पट्टन लगी।

एकाथ महीने तक उपराक्त प्रशार का तरक पदार्थ सवत करन और भिट्टी का छेप करने में रागी में शारीरिक स्थिति म डोक-डीक सुवार हुना । उमन उपरोक्त प्रकार का गाँग्यम को महीने और चारी ग्या । अब उसकी तकीयन विस्तुत अक्डी है। जैसे जैसे अनीवया में चेतना आती गई, वैसे वैसे छाछ और सन्तरे के रम की माना बढती गई और वेदें गया सावना क्यों पूमने ना ब्यावाम भी सुक्त किया गया, आज रोगी का स्वास्थ्य उनके मित्रा और बुद्दिवया के लिए स्पृतिदायक बन गया। प्राकृतिक चित्रस्ता के जिप्दे उसने अतिह्यों के रोग को हुर नर के स्थस्य ग्रारंग, स्कृति और उत्साह नया उस्लास प्राप्त कर स्थाय गरी, स्कृति और उत्साह नया उस्लास

अब यह रोटी, रा.क-नाजी, दही, छाछ, चावण, वाल, मोसन्बी, नीवू आदि खुरान में से मनता है। सब चीता को मली प्रनार पना मकना है। फलस्कस्य उसे एक-सी दस्त बने हुए नियमिन होने है। मिट्टी ने उपचार से उसनी अनिषया और जठर आदि सदस्त, सबस्य और नेतन बन गये हैं।

#### अनेक रोगो मे रामवाण

नाक में से नक्तीर निर्ता हो, मूह म छाले ही जाने हो, बार-बार कब हा बाता हो, रवनचार (नई कडबेबर) हो, चुलार आता हो घरीर के मिनी मान पर मूजन हो, रक्त कनते हो बचवा महहूणों का रोग हा, आसे जनती हो बचवा विर गम्म रहता हा, इब प्रचार में अनेक रोगों में बीकी मिट्टी को पेट पर केम करने से बूब आराम मिल्या है। दितनी हो बार रोग जब-मूल में नक्ट हा जाता है। मेरा यह वर्षों का अनुमन है।

#### स्त्रियों के रोग

आववन्त्र स्त्रियों नो मासिक धर्म (ऋतु स्वाव)
मवधी अनेन शिनामते रहने लगी है, विशेषनर धोड़े
गमम में मानिन धर्म (ऋतुस्वाव) होना, अतिरिक्त
रवोरस्ने, अत्यक्तिक रवोरस्नेन, लोहिया (प्रतिरिक्त
रवेरस्ने, अत्यक्तिक रवोरस्नेन, लोहिया (प्रतिरिक्त
रवेरस्ना होना), गर्भाष्य में सूजन, प्रदेश को हैय स्वार की विचायकों में पेन पर गोनी मिट्टी का हैय वरने से धालिया लोग होता है।

मिट्टी वे प्रयोग से पूरा फायदा उठाने के लिए आहार-विहार में भी हेर-फेर करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं विया जायया तो मिट्टी के प्रयोग से पूरा लाम नहीं क्लिया।

िनयों को सांविक रखोदकीन होना स्वाभाविक है, दिन्तु कितनी ही निषयों को सह रखोदकीन दग-बारह दिन तक होना रहता है। दसने मारीर से की कामकान निवंजना का जाती हैं। देर पर गीजी निद्दों का रेख दह दे बीस विनिट तक रखने के रखोदकीन बोटे दिनों में बन्द हो नायया। खुराक से परम पदार्थ जैसे बेगन, अबार, मिठाई, खट्टे पदार्थ आदि का सेवन मही करना चाटिए।

#### लेप बनाने की रीति

लग्ध वर्षाण का राति

मिद्दी को सारू करकी, कराया-कर निकाल

झलो। उसने बार एक मिद्दी अपना पीतल के वर्तन

में उसे झालो। पिर स्वच्छ पानी। मिद्दी अच्छा

तरह भीय अस तवतक पानी झलते राहुना चाहिए।

एक-दी यप्टे मिद्दी को भीगने दें। उसके बाद उसना

उपयोग करो। रीटी के लिए गोधकर जैसे आटा

तीवार करते हैं, बैन ही गीली मिद्दी का पिछ

बनाना चाहिए। किर पनन्ट करने के हुक्छे पर गीलो

मिद्दी को केन दिया जाय और कपड़ हुइरा करके

बेडू अच्या पेट पर जवना चहा आवस्यक हो, यहा

रस्व दिया जाए। केण नरने में बाद ठटणी हवा न

सलाने देने के लिए गरम नपटे में बाद ठटणी हवा न

मिट्टी कैसी होनी चाहिए ब्राइ, पीलो, कालो, सभेद बबदा जिस प्रकार की भी मिट्टी सुलभ हो, उसका उपयोग किया जा सकता है। किन्तु सबसे अच्छी काली मिट्टी होती है। खेत की काली स्वच्छ मिट्टी अनेक रोगों में लाभदायक होती है। ऐसी काली मिट्टी न मिल सके तो और किसी प्रकार की मिट्टी काम में ली जा सकती है।

#### याद रिखये

मिट्टी का लेप गुरू में पांच से दस मिनट तक रखा जा सकता है। अनुकूल प्रतीत हो तो थोड़ा-थोड़ा समय बढ़ाया जाय। एक से दो घन्टे तक मिट्टी का लेप रखा जा सकता है। यदि रोगी को अनुकूल पड़े तो चार से छः घन्टे तक रखा जा सकता है। जिसकी शारीरिक स्थिति बहुत कमजोर हो, उसे थोड़े समय नक ही रखना चाहिए। भोजन करने के बाद एक घन्टे पीछे मिट्टी का लेप किया जाय।

मिट्टी का लेप सबेरे, दोपहर, सायंकाल और रात्रि को भी किया जा सकता है। रोगियों को अपनी अनुकूळता और प्रकृति को समझकर करना चाहिए। ठण्ड लगे, कंपकपी हो तो नहीं करना चाहिए या गरम चादर ओढ़कर करना चाहिए। उससे ठण्डी हवा असर नहीं करेगी। मिट्टी का लेप करने के बाद पेट में दर्द हो तो गरम पानी की यैली से सेंक करो।

पुराना कब्ज़ रहता हो तो पहले पेट पर दस मिनट गरम पानी की थैली में मेंक करों और उसके बाद लेप।

मिट्टी के विषय में इतना जान लेने के बाद हम रामञ्ज-वूज कर मिट्टी का प्रयोग करें और रोगमुक्त वनें। मिट्टी में अनेक गुण हैं। उमकी महायता में घरीर में से जहर चूम लिया जाता है। घरीर में में विषेले तत्वों को वाहर निकालने के लिए मिट्टी का यथासंभव उपयोग करके हमको रोगमुक्त होना चाहिए और अन्य लोगों का सहायक बनकर उन्हें रोग से वचाना चाहिए।

मिट्टी मत्यं लोक की परमीपधि है।

## मिट्टी किन-किन रोगों में लाभदायक है ?

श्री युगलिकशोर चौधरी

आज संमार में लाखों तरह की प्रकृति-विरुद्ध कीपधियां प्रचलित हैं, जो भिन्न-भिन्न रोगों की चिकित्सा में काम आ रही हैं। लोग वड़े चाव से उनका उपयोग करते हैं, परन्तु खेद हैं कि उन प्रकृति-विरुद्ध अपिवियों से जनसाधारण को लाभ नहीं होता, उलटा वड़ा ही नुकसान हो रहा है। हम लोग ईश्वर और प्रकृति से अधिक बुद्धिमान बनने की चेट्टा कर रहे हैं। जिस प्रकार अपनी नाभि में बहुमूल्य सुगंधित कस्तूरी रखते हुए भी पय-भाष्ट होकर मृग इवर-उघर भटकता है और परिणाम में दुःख भोगता है उसी तरह आज भूले हुए मानव-समाज को दुःख हो रहा है। मिट्टी जैसी सुलभ, सस्ती, अचूक दवा पास होते हुए भी हम लोग दुर्लभ, महंगी और हानिकर औपवियों के पीछे दोइते हैं और परिणाम में अनेक कष्ट भोगते हैं। इस लेख में संक्षेप में मिट्टी के अद्भुत रोगनायक

प्रभाव और विधि का वर्णन किया जायगा जिसे पढ़कर सर्वेसावारण लाभ उठा सकते हैं। शिर पीडा

सभी प्रकार के सिरदर्द के लिए गीली चिक्नी मिट्टी का लेप करना चाहिए। मुबह-शाम दो बार लगाते रिह्ये। शिरदर्द अवस्य ठीक हो जायगा। कठिन और दीर्घ शिर पीड़ा में जपवास, भोजन मुधार, पेट की सकाई इत्यादि अन्य प्राकृतिक उपचार भी करना आवस्यक हैं। आधाशीशी में भी मिट्टी का लेप होने से दूषित पदार्थ निकल कर आराम होता है। नेत्र पीड़ा

तभी प्रकार की आंख के रोगों में गीली विकनी मिट्टी की पट्टी आंखों पर बांबिये। मिद्दी आंख में न जावे। इससे नेत्रों को बड़ा आराम मिलेगा। फूली, जाला आदिभी दूर होंगे, ज्योति बहुेगी।

#### कर्ण रोग

वर्ष रोगो में भी गोशी विवनी मिट्टी वो राज री जब में और ऊरर से मर देना चाहिए । बन्दर वो पेडायें कुमी आदि और वाज ने जम्म ब्राहि सभी में मिट्टी अरवन्त गुजवारी सिद्ध होंगी । विजन मानलों में बाहार भी स्वामायिक होना जन्मी है। मसुखे कुलनर, जबडे का दर्द

सपूडे क्लना और जबडे वे दर्द में मिट्टी अन्य रोमों को तरह अद्भुत छाम पहुंचाती हैं। मिट्टी से तुम्न दर्द क्य होगा, सूत्र जनेरी। और आस्वर्धमनक जाम होगा। जो पीडाये निगी मी जप्य से टोक नहीं होनी दे मिट्टी में सरलता से जब्धी हो जाती हैं। दान के रोगी में पीली मिट्टी बाहर गाल पर पीडा के स्वान के टीक जगर ज्याह जावे।

गले ओर कंठ की सूजन, पीडा

गुरु और नठकी मुजन, पीका आदि में गीकी मिन्द्री वी पट्टी गठकें बारा तरफ वामनी चाहिल्य देन में कई बार उसे बदनना चाहिल्र । बीज्य आदाम होगा, केंद्रिन आहार केवल दूप चा होना चाहिल्, प्रस्था स्वाची लाम न होगा।

#### फेफडे के रोग और दमा आदि

फेकडे के रोग दमा आदि में अन्य स्वाभावित्र उपवारों के साम-साथ विधिपृषंत्र बरावर सीते पर मिस्ट्री की एस्ट्री बाबी जावे । दक्षते पीडाये दूर हो कर और कर कीटा होतर वाहर गिरेगा और रोगी हुन्ह नहीं पाविंगे।

#### स्त्रियों की स्तन-पीडाये

प्रकृति-विरुद्ध आहार और वच्चा के स्तत बादने आदि बारणा में स्त्रियों वे स्तत पत्र जाते हुं, कृतिया हो जाती हैं, किर जनमें पाव होत्तर मबाद आने रुगता हैं। वेचारी मोली दिवस जनेत प्रवार में पीडार्वे भोगती हैं। प्रकृति विरुद्ध लेत, मरस्य, आपरेगत मित्राय पन सर्वे ने चोई सच्चा लाम नहीं, होता। मीली विननी मिट्टी विधित्रुकंक लगानी चाहिए। दिन में शोबार पट्टी बदल्यों, पाव को ठडे पानी मे भाइये । मिट्टी से पीडा दूर होगी, माव मर जावेगा और सीघ सब प्रवार की स्तन-मीडायें दूर होगी।स्वामार्विक आहार आवदयक हैं।

मलमूत्र वन्द होना, कव्ज आदि

कन्म के रोग को पूरे पेडू पर राजाना मांकी चिननी मिट्टी (पीको या नाको या मूरी बैसी मिके) बायरी चाहिए । पाचनाशित्म बढेगी और सुकल्प बाफ बस्त होगा, टट्टी-पेदाब बन्द होने पर भी भीकी मिटटी पेडू पर वाधी जाते। अनदर रोगी मरते-मरते बच गये हैं।

#### पेट का फोडा, जलोदर

पेट वा कोशा (Cancer of the Stomach)
जैसे भयशर रोगो में भी मिट्टी ने आरवर्षननत्र प्रभाव
दिलामा है। हाल ही में एक पेट के फोडेबाला
गैंगी मिट्टी के प्रयोगो और स्वामाबिक आहार द्वारा
परते में बचा है। विधिपूर्वन मिट्टी के प्रयोगो से अनेव ब्दररोग पेट केंगी।

प्रसव-पीडा, वच्चे का वाहर न आना '

यदि बालण होते समय गर्भनती दुःल पावे और बचना बाहर न आवे तो निषिपूर्वक गीली मिट्टी पेट पर बानी जावे। यदि बचना अन्दर मर भी गया हो तो भी निट्टी वी पट्टी से जीर गोले की तरह बाहर आ अविगा। स्त्री मी जान वक जागगी। जीवित कच्या तो निट्टी की पट्टी से जन्दी बाहर आ जावेगा। चला वैत, हुसीम, डमटर इस सीधी स्त्रामादिक विसि-सा ही पत्रद करेंपे?

#### कोप-वद्धि

स्वभाव-विरुद्ध जीवन से कम्ब आदि होने पर विज्ञातीय इन्य के फीता में जाने से वे पानी में मर जाने हैं, दोगी कष्ट पाता है, आपरेशन रूपो मयकर जाया स्थाम में काना पड़ता है। विश्वित्वक मिट्टी में पट्टी पेट पर और नाय पर सेवाना कराने में मीध्य स्टूराण अच्छा हो जाया। इसमें भी स्वामा-विश्व आहार जादि बन्य उपचार अस्पर जावस्य है।

## एविजमा आदि

व्योची और दाद कैसे दुखदायी रोग हैं। अवसर रोगी उम्र भर दुख पाने हैं। अनेक छेप मरहम आदि व्यर्थ हो जाते हैं। वे ही व्योची, दाद आदि अन्य स्वा-भाविक उपचार, रोशनी और हवा का स्नान, स्वाभा-विक आहार, प्राकृतिक स्नान आदि के साथ वरावर मिट्टी की पट्टी बांघने सेठीक हो जाते हैं। छेखक ने हाल ही में ३० साल के कठिन एविजमा की सफ-लतापूर्वक चिकित्सा की है, जिसे लोगों ने बड़े आइचर्य की दृष्टि से देखा है।

## नासूर, रसोली

नासूर, रसोली आदि वड़े दुसाध्य रोग हैं। वैद्य-हकीमों के पास तो शायद इसकी कोई चिकित्सा ही नहीं है। डाक्टर लोग वार-वार आपरेशन करते हैं; पर बहुमा बेकार। रोगी भयंकर कष्ट उठाते हैं। अन्य स्वा-भाविक उपचारों के साथ-साथ अथवा केवल मिट्टी की पट्टी से ही कठिन-से-कठिन नासूर, रसोली अच्छे हो जाते हैं। क्या ही अच्छा हो कि भारत में इस दैवी चिकित्सा से लोग लाभ उठाने लगें!

## फोड़े-फ़्न्सी, घाव आदि

कठिन से कठिन फोड़े-फुंसी आदि अच्छा करने में तो मिट्टी सचमुच बड़ी ही प्रभावपूर्ण दवा है। विना पीड़ा, बिना खर्च, बिना खतरे के बड़े-बड़े घाव और फोड़े-फुंसी आदि शीघा अच्छे हो जायेंगे।

## बिच्छू, ततैया आदि के काटने में

सभी प्रकार के इंग में मिट्टी का छिप तुरस्त दर्द वन्द कर देगा और मिट्टी शीघ जुहर चूस चेरेगी । रोता हुआ प्राणी हंसने लगेगा।

इसके सिवा सभी रोगों में मिट्टी आइचर्यजनक प्रभाव दिखायेगी। जिस प्रदेश में जैसी मिट्टी मिले वैमी लगाई जावे, छेकिन उसे माफ होना चाहिए। मिट्टी में मिलाने के लिये पानी को गरम नहीं करना चाहिए । मिट्टी से यभी कोई हानि न होगी। मर्दी में इरने की जरूरन नहीं। मिट्टी को अच्छी तरह गाढ़ा सानकर उसकी आध इंच से एक इंच मोटी पट्टी लगानी चाहिए । अपर में गर्म कपड़ा रखकर उसको हल्का बांध देना चाहिए। पट्टी तकलीफ के मारे स्थान को ढक लेवे। एक घंटे के अन्दर या जैसे ही पट्टी गर्म हो। जावे तो। उसे अलगकर उस स्थान को भीगे कपड़े से पोंछ देना चाहिए । अगर पट्टी १०,१५ मिनट में गर्म हो गई हो तो तुरन्त दूसरी पट्टी देनी चाहिए, नहीं तो जरूरत पड़ने पर दो ढाई घंटी के बाद । साधारण हालतों में सुबह-शाम पट्टी देना काफी होगा। बहुत गर्मी के दिनों में ऊपर से गर्म कपड़ा देने की जरूरत नहीं हैं। खाने के भरसक दो घंटी वाद पेडू पर मिट्टी की पट्टी देनी चाहिए ।

मिट्टी बढ़िया साबुन भी है । सौन्दर्य प्राप्ति के लिये धूप में बैठकर सारे शरीर में मिट्टी लगाना चाहिए। फिर ठंडे पानी से स्तान कर लेना चाहिए। चमड़ा नरम और मुन्दर वन जावेगा।

# जुकाम दूर करने के लिए त्र्यावश्यक वातें

डा॰ रैसमस अल्सेकर

- १. पेट को सदा साफ रिखये।
- २. कसरत करके रक्त का संचरन ठीक रिखये और मांस-पेशियों को समकत बनाइय ।
- ३. रातदिन, हर वक्त शुद्ध वायु में रहिए ।
- ४. रोज सारे शरीर की त्वचा को एक वार सूखे मोटे कपड़े से रगटिये, जिससे यह स्वस्थ रहे और स्नान तथा वस्ति के द्वारा उसे स्वच्छ रिवये।
- ५. प्याम को बुझाने के लिए केवल पानी ही पीजिये । चाय, कहवे आदि में दूर रहिये ।

#### एनिमा का उपयोग ऋोर लाभ

श्री ग्रानन्दबर्द्धन

साथारण कब्ब को दूर परने का बहुत सुगम उपाय एनिमा है। उपवास और एनिमा के स्थोध में पार पंक्य दूर निया जा सक्ता है। बहुत से लाग कब्ज को लाइलाज सर्ज क्हते हैं, पर यह मध्त ल्याछ है। इसे बहुत आसानी से दूर किया जा सक्ता है।

एनिमा वस्ति का दूसरारूप है

यूरोप में एनिमा की इजाद का यस कुछ प्रहात के निरीक्षकों ने इस प्रकार किया है कि एक कम्बो क्षोच बाले पत्ती का उन्होंने एक जगह जक ने पास क्षोच से जल के-जेक्स पुता में डालते देखा ! इसक उन्ह बड़ी आत में पानी पहुचाना आवश्यक जान पड़ा और उसी आवश्यकता की पूर्ति के किए एनिमा का आदिफार हुआ।

पर अपने यहा इस नया ना आधर्य लेने की जरूरत नहीं है। वैद्यक में पच-गर्म-स्वेहपान, स्वेदन, समन, विरेचन और वस्ति-में इसना उल्लेख है।

हठयोग मे वस्ति

हुत्योग के यहुक्यों म भी बस्ति एक प्रधान कर्य है। नाभि-पर्यंत पानी म तर्ये होकर या बंध कर नोकी-त्रिया से पुदा द्वारा जल को बड़ी आंदेकर नोकी-त्रिया से पुदा द्वारा जल को बड़ी आंदा परक उप मल मिश्रित जल को बाहर छोड़ देते हैं और जब देत नते हैं कि आन विन्कुल साफ हा नई है, अर्थान् निक्लनेदाल जल का राग ज्यो-का-यो है नव जिया छाड़ दते हैं। इस प्रवार दो-चीन सेर तक जल प्रति सफाई होती है उतनी एनिमा से नहीं हो पानी। एनिमा के प्रदिग्ध हफ्तों मे होनेवाला का समस् एक दिन में हो सकता है, पर इस विशा को जानना तर्ये लिए सम्भव नहीं है। इसने सीचने के जिल कर्ये साम का समय और लगन चाहिए। साम ही सारी र मुख आज और यल भी। रमजार, दन्छ, बड़े पटवा क बादिनया ने लिए इसना सीखना कठिन है। एनिमा क्या है ?

एनिया डिब्बे के प्रस्त ने एर लम्बा बर्तन हार्ती हैं, जिसके साथ चार-गाय फुट लम्बी रवर की एक नभी होगों हैं। डिब्बे के बल्लिम हिस्स में बाहर की ओर एक मुराबदार सिरा निस्का हुआ हाता है। उसी पर वह रवर की नजी कमारी बाती है। रवर की नजी के अनिम सिर एक माने के लिए वो सीम की छोटी-छोटी निज्या मिकनी है, एक बटनदार, इसमें सीधी-सादी। बटनदार को रवर की नजी के अतिम हिस्से में छमा वैदे हैं और इसरी सावी नजी की बटनदार के उनरी माम मा श्वास पनकी नजी के साथ एन फुहारेदार माम मा श्वास पनकी नजी के साथ एन फुहारेदार नजी बीर मिकनी है। वैसे कमा दोनों से निकाला जाता है, लेकिन फुहारेदारी साथ है। लेकिन फुहारेदारी

हुई है। एनिमा लेने की विधि एनिमा के बर्तन को परती से तीन-चार फुट की

जवाई पर टाग कर नली को किसी साफ तेल से बुपड कर पालाने के मुकाम म दो अगुल अन्दर डालना चाहिए।

नजी नो गुदा में बातने के पहले एक बार बाहर ही बटन खोलकर एक-दो वीला पानी गिराकर देख जेना चाहिए कि पानी घरना है न । कमी-कमी बटन पूरा, बादण से न चुमाने से पानी का बहाब ठीक नहीं रहना । यह बाहर पानी नी भार देख जेने से मालूम हो जावमा और एक बार कोल लेने से हवा भी निकल जावमा और एक बार कोल लेने से हवा भी निकल

एक दूसरे यह ॥ भी एनिमा का नाम लिया जा सन्दा है। यह दायने की चोज नहीं हैं। इसरे बीज का भाग एक गेंद की तरह उठा हुआ होना है। इसर-उदर नडी। एक तरफ नी नजी पानी ने बर्तन में रहती है, दूसरी ओर नी बुदा में। मेंद को दसाने-छोटने से वर्नन ना पानी मदा म जायना।

जिन्नवाला एनिया वई नाम आर नई तरह ना

होता है। एनामेल का, कांच का, रवर का। अढ़ाई सेर पानी का अर्थात् चार पिट का एनिमा खरीदना चाहिए।

### एनिमा का जल

एनिमा ठंडे पानी का लिया जा सकता है और गरम का भी। शुरू में लेनेवालों को गरम पानी का लेना चाहिए। अंगुली सहता गरम पानी होना चाहिए। गरम पानी से सफाई अच्छी और शीध्र होती है। पर वरावर गरम पानी का लेने से आंतों के कमजीर होने का डर रहता है। इसलिए गरम पानी का लेनेवालों को भी चाहिए कि गरम पानी निकल जाने के बाद फिर दुवारा पान भर ठंडा पानी ले लें और उसे रहने दें। वह कोई नुकसान नहीं करेगा। आंतों को बल देगा और थोड़ी देर में पेशाव के रास्ते निकल जायगा।

जिन्हें कुछ दिन लगातार एनिमा लेना हो उन्हें कुंए या कल के ताजे पानी का लेना चाहिए। जब गर्मी अधिक हो तो ठंडे का ही लेना ठीक है।

## पानी कितना लेना चाहिए ?

शुरू-शुरू में लेनेवाले एक-दो सेर पानी ले सकते हैं। अभ्यास हो जाने पर पांच सेर तक पानी लिया जा सकता है और अच्छी सफाई के लिए कुछ दिनों तक पांच सेर लेना भी उचित है; पर जबर्दस्ती नहीं, कम-कम से बढ़ाना चाहिए। सम्भव है, सब इतना न ले सकीं। एक एनिमा खाली होने के बाद उसे दुवारा भर लेना चाहिए। बरावर लेनेवालों को ढाई सेर से अधिक नहीं लेना चाहिए, बिक सवा सेर ही।

## कितनी ऊंचाई पर रक्खें ?

एनिमा को तीन फुट से ज्यादा ऊंचाई पर रखना ठीक नहीं। अधिक ऊंचाई से गिरने से पानी की तेजी बड़ जाती है और हाजत जल्दी हो जाती है। आराम से पानी अन्दर जाना चाहिए। अगर पानी जाते समय कुछ असरता मालूम हो ती चुटकी से रवरवाली नली को दवाकर ज़रा देर के लिए पानी रोक देना चाहिए।

### कितनी देर हकें ?

एनिमा लेने के बाद दस-पन्द्रह मिनट तक रुकना चाहिए और लेटकर करवटें बदलना चाहिए। अपने हाथ से पेट को कुछ मलना भी चाहिए। इससे आंत का मैंला घुलने में मदद मिलती है। परन्तु पाखाने में चले जाने से कभी-कभी सिर्फ पानी ही निकलता है, इधर-उधर का चिपटा मल नहीं निकलता।

अगर यह मालूम हो कि एक बार में पूरा मल साफ नहीं हुआ है तो फिर-फिर करके चार-पांच बार तक ले सकते हैं। अगर रोगी कमजोर हो तो एक ही समय में कई बार नहीं दिलाना चाहिए। उसी दिन दूसरे वक्त या दूसरे दिन दिला सकते हैं। पुराना मल एक ही दिन में नहीं साफ हो पाता, हपतों लग जाते हैं और कभी-कभी नो महीनों।

कमजोर रोगी के लिए पानी का बहाव और उसका जोर एनिमा के डिट्ये को ऊंचा-नीचा करके और बटन को कम-ज्यादा घुमाकर अपनी इच्छानुसार किया जा सकता है। पानी से पेट भरा जान पड़े तब भी नली को चुटकी से दबाकर पानी रोक दें तो पानी कुछ आगे बढ़ जायगा, भारीपन कम हो जायगा और आसानी से और पानी ले सकेंगे।

## एनिमा लेने में लेटें कैसे ?

सीधे, पट या करवट से लेट कर कैसे भी ले सकते हैं। जो बहुत कमजोर हें और जिन्हें आंतों का निचला हिस्सा साफ करना है उन्हें इस ढंग से लेना चाहिए कि शरीर का भार घुटनों और बाजुओं पर रहे, या घुटनों और छाती पर।

## कुल पानी न निकालना

कभी-कभी एनिमा का सारा पानी आंत से बाहर नहीं होता, पेट में कुछ गुड़गुड़ाहट भी रह जाती है। इसके छिए कांखने-दवाने की जरूरत नहीं है। पाखाने में दस-बीम मिनट लगाने चाहिए। अगर तब भी कुछ पानी रह ही जाय तो उसमें तनिया भी हर्ज नहीं है।

### उम्म के हिसाव से पानी

एनिमा वरस-दो-चरस के बच्चे से छेकर सा बरस के बूढ़े तक को दिया जा सकता है। यह स्त्री-पुरुष सब के लिए हैं। छोटे बच्चों को पानी थोड़ा दें। जैंग साल भरके बच्चे को पान भर, चार बरस के बच्चे को आध सर, आठ वरस के बच्चे को तीन पाव और और वारह बरस के बच्चे को सेर भर। एनिमा का मल

एनिमा लेने से मल मिला हुआ पताला दस्त हावा। कभी-कभी बीच म गाउँ और गाडा मल भी निकल्ता है। गुरू में अक्सर पानी ही आसा है, फिर मदा पानी और तद मल मिला पानी। लेखक ने अपने इक्कीस दिन के उपवाद में एक ही समय में बराबर दो बार पानिमा लिया और कुछ-म-गुछ मल आता रहा है। मही हालन दुसरे दो सनाइ के उपवाद म रही।

एनिमा कब ले?

एनिमा यो तो साने के दो घटा बाद और एक घटा पहले जब जहरत हो ले सकते हैं। जगर गौक के समय एनिमा लेना चाहे तो जिंचत यह हमग शि पहले शीक हो आहर तब लें। पर जिल्हे जनेव दिन लेने की जकरत हो। जनन किए जनजा है कि साम सेर गरम पानी पी लेना जच्छा रहता है। सोते समय पेट साफ ही जाने से नीद जच्छी आसमी।

एतिमा लेशर नहाने में शोई हर्जनही है।

एनिमा को एक बार पाखाने जाने वी अपेका ज्यादा या कम काम नहीं मानना चाहिए कि उनके रिए बहुत जाच-पडताल की जरूरत हो । दाचर बार नेने के बाद बुढिमान आदमी बुद नव चीने समझ राजें। केने के पहुँचे जो सकाए होगी से सब नेने के बाद दूर हो जायगी।

एनिमा के बाद कमी-क्सी एकाथ दिन बौच नहीं होता या वन होता है। इसमें घबराने की कोई बात मही, बीष्ट्र ही यह टीक हो जाता है। ल्यासार कुछ दिनों एनिमा लेकर छोड़ने पर प्राय यह बात हो जाती हैं।

फब्ज़ की जाँच के लिए एनिमा बहुत सोग कहते हैं, हमें रस्त दोनो क्वा होता है । पर दोनो बका दस्त होना इस बात की निवानी नही है कि उन्ह क्वा नहीं है। जब वह समझते है कि जब बोच साफ़ हो गया है और पेट में सक नहीं है तब उन्ह पीनमा हैनर जाव कर जेनी चाहिए। किन्हें क्वा नहीं है उन्हें जहरी वोई रोम होने की सम्मावना नहीं है। रोगो मे एनिमा

कन्य के बलावा नुवार, 'साधी, 'दमा, निग्दरं, धीडा की दक्षा में भी एनिमा लिया जा सक्ता है। वसतव में जो धमी रोगो में वडी आन मल से दुज्न-इज मरी हो रहती है, जिसे साफ करने के नर राहत मिलती है। बुखार तो ठहे पानी का एनिमा ने से धमेरल एटेंगा। एक्सी हिगरं, जाना बहुत आसान बात है।

मियासी बुकार या क्सि भी तेज बुकार में ज्वर को एक सीमा में रखन में एनिमा से बहुत सहस्रका सिक्छी हैं। इसके लिए ७०°-८०° किगरों के (रारित का ताज देखने बाले धर्मीमीटर से) तिर डेंड तेर पानों का एनिमा ज्यमेणी होमा । पानी को बहुत धोरे-धोरे चढ़ने देना और यथासीका दस-प्रह मिनट रोक्का ही चाहिए। यह पानी निकल जाने पर यदि जबर कम कही जाय तो इक्ना ही पानी कि जो कर कम कही जाय तो इक्ना ही पानी कि और करानी है। पानों को और अध्यक्त देर रोका जा सकता है, पर यदि रोगी को ठडक कमने रूप सो या तो पेडू पर महत्व पानी की बोर अध्यक्त पर सो या तो पेडू पर महत्व पानी की वोक्ष या यही रखनी चाहिए या पानों निकल देना चाहिए। प्राय इसमें बहुत जल्दी ज्यर हवा जात है।

पील्या या काक्षक रोग में—जिसमें सारा धदन पीला पढ जाता है—गरम पानी के एनिमा के बाद ठडे पानी का एनिमा सेना बहुत लाभ करता है।

खात-सुबली के रोगो में एनिमा विशेष उपयोगी है। इसके प्रयोग से त्वचा और गुर्दे कियासील हो जाने हैं, जिससे विकृत पदायों के बाहर होने में मदद मिलनी हैं।

गठिया के रोगी कुछ दिनों लगातार एनिमा रेकर महीनों की चिकित्सा का काम सप्ताही में निकाछ सकते हैं।

हाव-मैर ठडे यह जाने पर गरम पानी ना एनिया जाडू ना-खा अग्रर नरता देखा गया है। पतने दस्तों के आरम्भ होने पर या पेट में दर्द गुरू होते ही एक-दो बार एनिया लेने से जरूर आराम मिल बाता है। पुराने आंव के रोग में ११०°-११५° गरमी के पानी का एनिमा विशेष लाभदायक होता है। कोलन के वाई ओर की पीड़ा में यह एनिमा तुरन्त आराम पहुंचाता है।

यदि पीड़ा बड़ी आंत के निचले हिस्से में हो तो ८०°-९०° डिगरी का ठंडा पानी विशेष लाभदायक होता है।

जब किसी कारणवश मुंह से पानी न लिया जा सके तो गुदा द्वारा पानी पहुंचाने के लिए एनिमा बहुत मुफीद उपाय है। जिन दशाओं म पानी देना बहुत जरूरी हो, हर घंटे एनिमा के द्वारा पावभर पानी दिया जा सकता है।

### एनिमा पर आपत्ति

एनिमा के प्रयोग पर कुछ छोग यह आपत्ति करते हैं कि इसको आदत पड़ जानी है। पर इस आपत्ति में कोई सार नहीं है। यह आपत्ति वही छोग करते हैं जिन्हें इसका ज्ञान नहीं है। भोजन-सुपार और कसरत के साथ-साथ एनिमा कटन की पुरअसर दवा है। पर कुछ लोग ऐसे जरूर हैं जिन्हें भोजन में फेरफार करने के बजाय रोज एनिमा लेना मुविधाननक प्रतीत होता है। इसका रोज लेना भी दवा की अपेक्षा तो अच्छा ही है। पर रोज लेना उचित नहीं है, यद्यपि एनिमा के आज के रूप के आविष्कारक टा॰ हाल ने एक दिन के अन्तर से चालीन वर्ष तक बरावर एनिमा लिया है। बह घोर यक्ष्मा से पीड़ित थे। इसके प्रयोग से उन्होंने अपने को रोग-मुक्त ही नहीं किया, वरन् बढ़िया स्वास्थ्य भी बनाया।

लेखका को खुद को इस संबंध का यथेट जान है।
खुद उसने सैकड़ों बार एनिमा लिया है और सैकड़ों को
दिया है। उसे सब नरह के आदिमयों से काम पड़ा है,
कभी-कभी लेने वालों से और रोज़ लेने वालों में भी।
इससे नुकसान की शिकायत तो कभी किसी ने नहीं की।

## जलोपचार

## श्री पद्मावती शुक्त

प्राकृतिक चिकित्सा के मतानुसार मनुष्य का रोगी होना शरीर में विकारों का बढ़ जाना माना गया है। इसमें राव रोगों की जड़ एक ही चीज़ है। अतः इलाज भी करीव-करीव एक ही है और वह है विजातीय द्रव्य की बाहर निकालना। इस चिकित्या विधि में पानी, मिट्टी और सूर्य की अनुपम शक्ति का व्यवहार होता है और इन्हीं चीजों को हेरफेर कर इस्तेमाल किया जाता है। इनमें सूर्य की शक्ति और पानी के गुण बहुत कम लोगों को मालूम हैं। अगर पानी और मिट्टी का उचित प्रयोग मालूम हो तो तकलीफ़ हो ही नहीं और अगर हो तो मिनटों में गायव की जा सकती है। पानी का ज्यादातर व्यवहार तीन तरह से किया जाता है:

(१) पट्टियों के रूप में (२) स्नान के मूप में

(३) पीने के रूप में । तीसरी आवश्यकता ती

वच्चा-वच्चा जानता है। उसके बारे में कुछ कहना अनावस्यक है सिर्फ इतना कहा जा सकता है कि जब प्यास लगे धीरे-धीरे पानी पीना चाहिए। खाने के एक घंटे पहले या बाद पानी पीना उचिन है। रोग की हालत में पानी पिट्यों और नहानों के रूप में बहुधा इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए स्नान कितने हैं और कैसे करना चाहिए, यह बतलाना बहुत जमरी है। पट्टियां कैसे तैयार करनी चाहिए, कब, कहां और कैसे इस्तेमाल करनी चाहिए आदि की जानकारी भी जहरी है।

#### स्नान

मुल्य रनान तीन हैं: कठि-रनान (Hip bath) मेहन-नहान (Sitz bath) और वाष्प-रनान (Steam bath)

१. कटि-स्नान

कटि स्नान के लिए एक 'टब या उसी प्रकार

के गहरे बर्नेत की आवश्यसता होती है। टब चाहे थातुना हो या मिट्टी का, इससे बोर्ट सत्य नहीं। देशतों में जरा हव जामानी में नहीं मिल सकते वहा मिटटी और पत्यरों की नादों संकाम निश्ल सबता है। पानी जिनना ठंडा हो उनना ही अच्छा है। टब में पानी इतना डालना चाहिए वि बहुन।भिने जाप तक हो । पानी को वर्फन ठडा नहीं करना चाहिए। गर्मी और वरमान मे मुद्दी में रशकर ठड़े पानी वा इस्तेमाल करना ठीक है। टब म बैठकर आदश्यकतान्सार क्यडा ओडकर नहाना चाहिए। एक तन्द्रस्त आदमो के लिए वपदा ओडना जकरी है। पैरा में मोजे आवश्यक है। टव में बाहर पाटा इपर पैर दिसी जगर रखा जा मरता है जिसस वह भीग न सके। पानी स एकाएर बैठने संघटन जाभ हाला है । जना मी देर के रिए ददन गाप उठना है और रोये खरे हो जाने हैं। इसमें बड़ा फायदा हाना है। पेड़ स्नान गरित के अनुसार दस मितट में लेकरआ है घटे तक लिया जासकता है। इसमें पानी स बैठने के बाद सभी के नीचे वड़ी आन के ऊपर एक मोटे तोरिये से यरावर दाहिने से बाये रसडना चाहिए । पेट में मिट्टी की पट्टी लेने के बाद यह स्तान लाभ करता है। इस स्तान को बस्द कारे में जहा घोडी-थोडी माफ हवा भी जानी यह लेना चाहिए।

२. मेहन-नहान

पेडू स्नान के लिए जो टब काम में लावा जाला है उनी में एक तिवाई रख देना चाहिए । टब में पानी इतना चाहिए के वह तिवाई में टक्टराना रहे, पर बैठने नी बजह मीचे नहीं। मानोबताले नीटब के बाहर पैर रखकर निपाई पर बटना चाहिए और मोटे मुन्नथम बच्दे से बार-बान पानी में नियाने हुए बननेटिय को बाता चाहिए। मंत्री नो वपढे से बितना पानी उठा सके उत्तर में नोचे पोना चाहिए। बहुन जोन में रखना ठीड नहीं। नहीं समस् पारीन पर नोई क्या नहीं स्मना

चाहिए । सरीर ना बोई भी भाग भिगोना ठीव नहीं । माभिक वर्ष के समय यह स्नान छात्र मन्द होते वन रोन देना चाहिए। इसके बाद फिंग से शस वरना ठीव है। रागी की उम, प्रक्रित और रोग ने मताविक यह नहान सात मिनट में आधे घटे त्व लिया जा सक्ता है। पानी जितना ही ठक्का होगा उनना ही अधिक और जल्दी फायदा होगा। पुरुषों की इन्द्रिय का थमडा स्रोल कर मलायम क्पडें से ऊपर से नीचे रगड़ना चाहिए। सनना हये लागा के मीबन पर ही रगड़ने से फायड़ा होगा । पेडू और मेहन-नहान के बारे में ये बातें ग्यात में ब्लानी चाहिए ∙ बधे समय में उनहो रोज लेना चाहिए। इनरे आधे घटे पहले या बाद प्रश म्नान करना चाहिए। नहाने ने बाद ठंडा पानी न पाना चाहिए। भोडन के रम से-कम तीन घटे बाद नहाना वाहिए। भोजन सादा और सक्ष्म करना चाहिए । नहाना के बाद थोडी-बहुन कमना करनी बाहिए।

#### ३ वाप्प स्नान

यह दो तरह से लिया जा सकता है। एक तो सारे शरीर का और दूसरे किसी खास अग का । पूरे राप्त स्वान के लिए एक बैन की बुनी हुई कुर्सी या मूज नी बुनी हुई चारपाई नी जरूरत है। उन पर रोगी नो सब क्यडे उनार कर बैठा या लिटा देना चाहिए। धमके ऊपर कम्बल से इस तरह दर देना चाहिए वि बोडी-सी भी भाप बाहर न निकले और उडी इवा भी न लग सके। यदि कुर्सी हो तो एक वरना दो अगीठियो में खौलते हए पानी को नीचे रखना चाहिए। एव वर्तन समर से बुछ ऊपर और दूसरा घटनो के पास रखा जा सकता है। रोगी का ु चेहरा दक्ता नहीं चाहिए । इस स्त'न को इननी देर तक लेना चाहिए जवतक माये पर पसीना न बाजाने। सब पसीना आने पर ठडे पानी में बैठ क्र बोडी देर पेडू नहान और पूरा नहान सर छेना चाहिए। इससे बटा जागम होता है और बहत ही फायदा नण्ता है।

तिसी खास अंग को भाप देने के लिए उस अंग को अंगीठी पर रखे हुए वर्तन के पास कर लेते हैं, जिससे उस अंग से खूब पसीना निकलने लगे। इसके बाद उस अंग की ठंडे पानी से बो डालते हैं। पूरी देह का नहान हफ्ते में एक बार ही लेना अच्छा है। इससे जल्दी लेने के लिए किसी विशेपज्ञ की राय लेना जरूरी है। किसी खास अंग के लिए तो हर रोज भी जरूरत के मुताबिक लिशा जा सकता है।

## पानी की पट्टी

चोट के उन स्थानों में जहां मिट्टी का इस्तेमाल न हो सके पानी की पट्टी लाभ पहुंचाती है। इसमे खून बहुत ही जल्दी बन्द ही जाता है और जलन या लपकन नुरन्त शान्त हो जाती है। पट्टी खूब ठंडे पानी की बनानी चाहिए। एक साफ कमड़े के टुकड़े को लेकर पानी में खूब भिगों कर हलका निचीड़ लेना चाहिए। इस पट्टी को लगाना हो उतके चारों तरफ आठ-दस तह करके जहां लपेट लेना ठीक है। पट्टी जब गरम होने लगे तो बदल डालनी चाहिए। चोट को पूरी तौर से देक लेना मुनासिब है। जाड़ों में पट्टी पर कम्बल का दुकड़ा या फलालैन रख लेना ठीक है।

## गीली चाद्र का वंधन

एक तक्त पर या जमीन पर ही चटाई या कमबल

विछाइये। उसके ऊपर एक गीली चादर कम्बल के ऊपर विछा दीजिये और रोगी को सब कपड़े उतार उस पर लिटा दीजिये। भीगी चादर से सारा शरीर लपेट दीजिये। ऐसा हो जाने पर एक कम्बल ओढा दीजिये। शरीर का कोई भी हिस्सा बिना गीली पट्टी के और उसके ऊपर कम्बल रखे बिना नहोना चाहिए। मुंह जरूर खुला रहना चाहिए। ऐसी हालत में बीस मिनट तक पड़े रहने देना चाहिए। इससे रोगी को पसीना आ जायेगा जिसे गीले तीलिये से पोंछ कर सूखे तीलिये से मुखा देना चाहिए। एक बार इस्तेमाल में आई हुई चादर बिना खूब अच्छी तरह माफ किए हुए और धूप लगे हुए फिर ने प्रयोग में नहीं लानी चाहिए।

## रीड़ की गीली पट्टी

कुछ चादरों को मिला कर पानी में खूब भिगो डालिये और उनकी दो फुट लम्बी और एक इंच चौड़ी पट्टी बनाकर एक कम्बल पर बिछा दीजिये और उसी पर रीढ़ की हड्डी रखते हुए छेट जाइये और कम्बल ओड़ लीजिये। थोडी ठंडक मालूम पड़ेगी और नींद आ जायेगी। आधे घंटे बाद उस पट्टी को हटाकर उस जगह को गीले और सूखे तौलिये से पोंछ डालना चाहिए।

## सामान्य रोग ऋौर उनकी चिकित्सा

श्री विद्वलदास मोदी

#### १. कटज

कब्ज हद दर्जे का परेशान करनेवाला रोग है, पर जितना ही यह अधिक परेशान करनेवाला है उतना ही आसान है इसका जाना, बशतें कि आप इसे हटाने के लिये कुछ करने को सचमुच तैयार हों।

अप तो अपने मामूली कब्जू से पीड़ित होंगे, पर मुझे तो रोज ही ऐसे आदमी मिलते हैं जो आज भूल गये कि उन्हें कभी अपने आप भी बौच होता था। वे हर दूसरे, तीसरे या चौथे दिन दवा छेकर बौच छाते हैं और जो दो-तीन दिन पर शांच होने से संतुष्ट नहीं हैं वे हर रोज रात को रामनाम लेने की तरह कल कटन होने का ध्यान करते हैं और उसे सबेरे हटाने को दबा लेकर सोते हैं। इस नरह रोज कटन और रोज दबा की आदत लोगों में किननी अधिक है इसका अन्दाजा आप इसीसे कर सकते हैं कि संसार में कुल मिला कर जितनी कीमत की दबा और रोगों की विकती है उसमें कई गुना अधिक केवल कटन की विकती है और इसमें हर्र-बहेरा-आंवला, गुलकंद, मुनक्का और उन सिगरेट बीधी, गापी, पास की कीमत नहीं बोडी गई है जिनका उपयोग भी छाग नब्ज दूर करने को किया , जरते हैं। जाननब में अधिकतर जील अपने मारीर की कपन

दास्तव भ अधिकतन नाथ अपन घरोर को क्य-विधि भे बारे म नहीं जानते । क्यन वा कारण नहीं समझते । समयने की कोशिया भी नहीं करत ।

इतना ही नहीं कि करन से घरीर में निर्फ सम्ती छाई रहती है, पेट भारी रहना है सिर में दर्द रहना है महनी बनी गहती है नीय ठीव नही आती, दिमाग उन्ता रहता है, भूप यम एग कर रह जाती है बन्दि करत धरीर में इस जनामा को उत्पत बरने के साव माय अन्य अनेक रोग पैदा बण्ता है। अनेक बया जितन भी रोग हैं प्राय उन मदनी जह म यही रहता है। तभी ता इसे 'सब रोगा की नानी बहत है। रोग को एक विकृति है। कोई भी रोग क्या न हा यह धरीर की विकृति कालभणमात्र है और यस्त्र विद्वति पैदा रस्त संसर्वे ममर्थ है। वैमे, मो मुनिये। आप जो माने ह उनके पाचन एय परिपात के बाद जो कुडा-कचरा-कैट बाकी बचना है उसके शरीर में समय पर मारिज न हाने को ही तो बच्च बहते हैं। यह मर जब समय से नही निवरता तो अन्दर पडा-पडा मडने के सिवा और वया कर सकता है ? वहा सड़ने से बदव् पैदा होती है, मल अधिक दिकार-मय बनता है। उसने गैस निव न्ती है जो जहर का असर रखती है और गैस का स्वभाव है उपर उठना, फैलना। वह सारे बरीर में पहुचने की कोशिंग करती है और सरीर के अग-अग में पहुच कर उनके स्वामाविक कार्यों में बाधर होती है। जब यह भयन र बाधा उनमें लग गई तो पारीर अपना स्वामाविक कार्य कैसे कर सकता है ?

मही नहीं, मळ वा स्थान जो बातें है उनमें चूमने वो बिविज शिला है। पाचन वे बाद बो बचा हुआ सामान दन आतों में आता है वह तरफ रूप में रहना है यानी उसमें पानी होना है। बातों वा दाम दश पानी वो जज्ज वरता एव वर्ष माण को एमा बीला रहने देना है वि उस पर मण्यारन (याने बात वा वह मान वहां मल जानर इस्ट्रा होना है) की मानपेशिया ठीव वाम वर सहं और उसे बाहर निवाल सहं । पर जबनन मन इन आता में पढ़ा रहता है वे इसको नमी जूमनी हो रहती है और मल जब नह जाता है तो अपने हकायान-नुमार उपना जहर भी वे जूमने को मजबूर होनी है और पून कर सून म मिमनो रहती है। इस दूसरी विधि से भी धरीर में जो विष आता है यह रक्त को बिहत करता है और रक्त-सम्बन्धी अनेक रोगो को जम देने के गाय-माय धरीर के सभी अगो के नार्यों को दिविल करता एव उन्हें रोगी बनाया है?

और जब यह चन्न, दिना, महीना ही नहीं, बरिन वर्षों चन्ना रहता है तो फिर घरीर और उमम रहने-बाज दिसाल ने निवम्मे होने में न्या सदेह है।

वका रहना बिन्तुल अस्वाभावित है। बुदरन ने बाता में बह बज दिया है कि वे मल को आमानी में दूर बन्ती रह । वे यह नाय तभी स्वाभावित रूप में नर मनती है जब हम खाद्या को उनके स्वाभाविक रूप में बहुण करें। याद्या में करु तरकारिया, अन और दूध ही ता आते हैं। पर हम इनम स वितना भी अपन स्वामाबिक हप में रेते हैं ? हम फड और ऐसी तरनारियों ना, जिन्ह स्वाभाविक रूप में बहुत सरल्ता से गाया जा सरता है, बहत कम उपयोग करते है या बिल्कुर नहीं बरत । अता की भूसी यानी आट का चोकर, चावल का क्त हम दूर कर देते हैं। दूध का पानी हम जला कर या बिन्दूल निकाल कर खोये या छेने के रूप में इस्तेमाल बरते है मा रमगुल्ला और सदेश बना कर खाते हैं। गर्ने के रम की हम चीनी बनाते हैं मिर्च-मनालों को जिनकी दारीर को बिल्कुल आवस्यकता नहीं है विद्वान स्वाद के वसीमृत होनर खाते हैं। अत यदि आप चाहते हैं नि कृट्य न रहे तो इमका विचार शौचालय में नही, भोजना-त्य में कीजिए । भोजन पर, वह स्वादिप्ट होन के अलावा क्ब्जकारक हैं या क्ब्जनिवारक, इस दृष्टि से भी सोचिए।

तत आप भैदा, महोन आटे की जगह कोंगर समत मोगा आटा साएग, जावल बन समेन ही लग, आपरे भोजन में क्लस्तरकारियों बी मात्रा अत है हुने बजन नी होगी, हम कक्ष्म पा एन उकान का स्थिग। लीजिए इन्दर्भ ने दवा होनहैं। यदि आपन यह मूर फ्रस्ट लिया तो आपने बन्म की बड में नुहासपान पुल कर दिया। यदि आपको कटन बहुत अधिक और पुराना हैं तो गीरा, ककड़ी, गाजर, टमाटर, पालक या पातगोभी फो कच्चा ही उस्तेमाल कीजिए। टिरए नहीं, मैं आपको इन्हें मेर-दो मेर खाने को नहीं कह रहा हूं। चौत्रीय घंटे में केवल एक पाव लें और मो भी केवल एक नहीं, कड़यों को मिला कर लें। किन्ही दो-तीन को छोटा-छोटा काट कर एवं मिला कर उपर में नीवू—नमक टाल कर और उन्हें गाकर देखें। इनके विशिष्ट स्वाद की कल्पना आप उनका उपयोग किए बगैर नहीं कर मकने। केवल एक वार इनका उपयोग करने के बाद ही इनका निरम्कार करने की मोचें।

केवल तीन बार खाएं। यदि आप दिन भर में केवल दो वार भोजन करने है तो और भी अच्छा है और यदि आपकी उम्र चालीस वर्ष में ऊपर है तो मेरी सलाह है कि आप जमर दो बार ही काएं। जब मैं दो या तीन बार खाने को कहता हूं तो उसका अर्थ आप गव्दशः लगाएं। अर्थात् दो या तीन वार के अलावा मुंह में पानी के मिवा कुछ भी न टालें। नव फल कब खायं ? ठीक ही है, लोग तो फलों को घलुवा-घाना समझकर भोजन के घंटे आध घंटे बाद खाते है और इन्हें विना भूख के खाने मे जब नुकसान होता है तब दोप अपनी अक्ल को नहीं, गरीब फलों को दिया जाता है और ऐसे अकलमन्दों द्वारा ही अमन्द से जुकाम, खीरे-ककड़ी मे जूड़ी-ताप, आम से फोड़े-फुंनी और वरवूजे से हैजा होने की वात कही और चलाई जाती है। फलों को भोजन का अंग बनावें, सबेरे का नाय्ना केवल फलों का हो, जी चाहे तो साथ में थोड़ा दूव भी हो सकता है। दोपहर और बाम की भोजन के साय भी कुछ फल रखें और उन्हें भोजन का अंग समझ कर खाएं, दूसरे खाद्यों की उनकी जगह कम करें। एक वात फलों के बारे में आपको और बना देनी है वह यह कि मीसमी फल--आपके घर के इस-पांच कोस की टूरी में पैदा होनेवाल फल--आपको जो फायदा पहुंचाएंगे वह लाभ देने की क्षमता, दूर मे आए, कई दिनों पहले तोड़े, वाने फलों में नहीं है।

बहुत में लोगों को कब्ज केबल टमलिए होता है कि वे पानी बहुत कम पीने हैं। जब ये लोग पानी पीने की आदत डाल लेते है तो उनका कटन फीरन चला जाता है। आप भी जाड़े के दिनों में दो-ढाई गेर और गर्मी के दिनों में ढाई-तोन मेर पानी जरूर पीएं। मवेरे उठते ही, रात को मोते समय, भोजन के एक घंटे पहले और दो घंटे बाद पानी पीना एक बढिया आदत है।

उन आंतों का स्थान जिनमें मल रहना है एवं जिनके अपना कार्य ठीक तरह न कर सकते के कारण कटन होना है, नाभि के तीन ओर है। वह नाभि के दाहिनी ओर नीचे मे ऊपर की ओर आनी है और वहां मे बाएं तरफ बार्ड कोम्य नक पहुंचती है, फिर नीचे की और उनरती है। वहां उनका अन्तिम छोर है, जहां मच इकट्ठा होना रहना है, उस छोर को मलधारक कहने हैं। यहां मल घीरे-घीरे इकट्ठा होकर नमय-समय पर पारिज होना रहता है। इस आंन को सशक्त बनावें। आंन मांसपेशियों की बनी है और आप जानते है कि कसरत प्रत्येक मांनपेशी को नशक्त बनाती है। अतः कुछ ऐसी कसरनें करें जिनका प्रभाव आंतों पर पड़े। टहरुने की कमरत इस कार्य के लिए यथेण्ट प्रभावशाली है। सबेरेः शाम दो-दो या तीन-तीन मील निश्चिन रूप मे टहलकर आप आंतों को वह शक्ति देंगे कि वह अपना काम वही मुगमता से करने लगेगी। इसके माथ ही आंतों को मजबूत बनाने की एक दूसरी तरकीब भी है। वह है उन्हें ठंटक पहुंचाना । एक मोटा-मा तीलिया चौपतं कर छः इंच चौड़ा और एक फुट लम्बा बना लें और ठंडे पानी में भिगोकर और हल्का-सा निचोड़ कर पेडू पर अर्थात् नाभि के नीचे पन्टह-बीस मिनट रखें। इसके बजाय मेर भर मिट्टी ठंटे पानी से लपमी-सी सान कर तीलिए जिननी ही लम्बी-चौड़ी बनाकर ठंडे तौलिए की जगह इस्तेमाल की जा सकती है। कुछ छोगों को इस मिट्टी की पट्टी में अधिक लाभ होता है। ठंटक का इनमें मे कोई भी एक प्रयोग टहलने जाने के पूर्व करें। पहले ठंडक फिर टहल कर गरमी लाने का यह प्रयोग आंतीं को शीघ्र सजग करके उन्हें अपने कार्य में तेजी से प्रवृत्त करता है।

शीच की हाजन की राह न देखें। हाजन ती उन्हें होती है जो हाजन की मुनते है। दिनों तक उमकी न मुनने से सह मद या मुक्त हो जाती है। बत कोई भी समय निश्चित नरके दो बार शीच अवस्य जाय। सीच का जो समय निश्चित करें उत्तरा पालन अरूर करें। सीच न हो तो भी शीचाल्य में दस मिनट अरूर बैठें। भीर-भीरे दोनों बक्त सीच जबस्य होन लगगा। आरम्प में निष्ठी एक बहुन न हो हो चचरावं नहीं। विगदी आहत पीर-भीरे ही बनती हैं।

स्वणदोध, अभिनमस्ता, रस्नामाव, बवाधीर, स्मरण प्रक्तिन ना ह्या, खेत प्रदर, माधिक की अभिय-मितता, सिरदर्द, समरवर्द, दुकंतमा के स्वत्र रोगियां ने स्म विधि को अपनाया है और कम दूर होने ने साय-साय उन्ने उपर्यक्त रोगों से भी मुक्ति मिकी हैं।

#### २ बवासीर

जिन रोगों के नाम पर आज बडी-से-नडी ठगाई कलती है जनमें बजामीर अजगी है।

बबासीर रोग नहीं, रोग वा लखण है। विची वृक्ष को नष्ट वरने के लिए उसे जह वेत उस्तारकर अगर उसने पत्ती को वाटते रहा जाय या वेवल उन्हें नप्ट वरने की कोशिश की जाय तो वया कभी बहु वेड स्तन्त ही सकता है? यही हाल बवासीर म आपरेयन अपना दवा की गरण में जाने से होना है। बवासीर के मस्से या सून आना कोई रोग नहीं है। रोग तो है बहु कारण जिसकी वजह से मस्से पेवा होने हे अपना सुन आता है।

भानें जब साफ नहीं होनी, जब बराबर करव बना रहता है तब आतो में उग्नकी सदन के नारण गरमी बदती हैं। फलस्वरूप या तो आतो की जिल्ली कमजोर, हो जाती हैं किस पर उरा भी सराख कंपते ही तुन जाने लगता है या वहां सुन दक्ट्ट होकर भारे-भीर बच्चोरत पंदा हो जाता है। पहली दबा को सुनी ववासीर करते हैं।

अब आप सोचिए वि आतो में गन्वगी रहने देकर बवासीर से कभी खुट्टी वाई वा सकती हैं ? जबतक कि बाते दिलकुरु साफन रहने रुगे, बदासीर जा सकता है ?

ता बवासीर ना पहला इलाज—याने बवासीर को जड से दूर करने की तरफ पहला कदम उठाना है— कब्ब न रहने देना।

पर बदासीर जिसके ही उसके करन का इलाज साधारण कव्ज के रोगी से बोड़ा भिन्न होता है। क्रम के रोगी का चोकर समेत आटे की रोटी दीजिए, फल-तरकारिया बोडी अधिक खाने को दीजिए, उसका कव्य चला जायगा, पर कई बार बंदासीर के रोगी की तकलीफ इन्ही खाद्यों के प्रयोग से यह जाती है। बई रोगी तो कई खाद्यों के प्रति विशेष सवेदनशील हो जाते है। किसी का ववासीर भिन्डी से बढता है तो किमी का आलु से तो किमी का करेले से। अमरूद से सो प्राय सारे बवासीर के रोगी दूर भागते हैं। जहाइस प्रकार की सिकायत म भोडा सत्य है वहा अधिकतर भाति होती है। यह सही है कि खुनी बबासीर के रोगी की आतें बहुत कोमल हो जाती है और उन पर जरा भी अराज लगने से खुन जाते लगता है। बत बारम्भ में रोगी को मोजन के चनाव में बहुत सजग रहना चाहिए और हमेशा ऐसा मोजन चुनना चाहिए जिसका मल मलायम बने और जो नव्यकारन न हो। ऐसे आयो में गेह का दलिया, चोकर समेत आटे की रोटी, सभी हरी भाजिया-विशेषकर पालक और वयुमा, तरोई, परवल, पातगोभी, मूली, पपीथा, पका केला, खरबुजा, सेव, नारापाती, दूध थेप्ठ है। सभी दालें तो आतो की गरमी को बढ़ाने और नायुकारक होने के नारण कब्ज करती है। मूखे मेवो में किशमिश, मुनवका, अजीर, नारियल अच्छे हैं। इतमें से रोगी नो अपना मोजन जनना चाहिए। उसका भोजन इस प्रकार हो सकता है।

सर्वरे--प्योता या खरबूना या नाशपानी और दुध।

दोपहर-दिलया और कोई पत्तीदार भागी। साम-(१) कोई तरकारी और विश्वमिश या (२) रोटी तरकारी और थोड़ा मुनवका या अंजीर या (३) कोई फल या नारियल या (४) तरकारी और नारियल । (अंजीर, किशमिश, मुनवका एक वार में एक से दो छटांक तक खाये जा सकते हैं। इन्हें उपयोग में लाने के पहले अच्छी तरह घोकर इनके वजन के दूने पानी में वारह घंटे पहले भिगोना चाहिए और पानी समेत इनका इस्तेमाल करना चाहिए)। नारियल की गिरी हरी हो तो आधा पाव तक और सूखी हो तो एक वार में एक छटांक तक ली जा सकती है।

भोजन के इस परिवर्तन से ही कितने ही ववासीर के रीगियों का कटन जा सकता है और उन्हें अपने रोग में वहुत राहत मिल सकती है। पर जिनका रोग पुराना हो गया है अथवा जिनको आंतों की गरमी के कारण मल सूख जाया करता है उन्हें आंतों की मदद के लिए कुछ दिनों तक ईसवगोल का प्रयोग करना पड़ सकता है। इसके लिये या तो प्रत्येक भोजन के साथ ईसवगोल की भूसी चार आने भर की मात्रा से जपयोग करना चाहिए या इतना ही ईसवगोल। (यदि ईसवगोल का इस्तेमाल करना हो तो ईसवगोल को वीस गुने वजन के पानी में वारह से चीवीस घंटे पहले भिगो देना चाहिए।) जब ठीक पेट साफ होने लगे, ईसवगोल की मात्रा कम करते हुए इसका उपयोग वन्द कर देना चाहिए।

ववासीर के रोगी पानी भी कम पीते हैं। उन्हें दिन भर में दो-तीन सेर पानी जरूर पीना चाहिए।

आंतों में बल लाने, मस्सों को सुखाने तथा खून को बन्द करने के लिये मिट्टी का प्रयोग बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। इसके लिये सेर-डेढ़ सेर मिट्टी ठंडे पानी में लगसी-सी सानकर नाभि के नीचे मूत्रेद्विय तक एक कोख से दूसरे कोख तक फैला लेनी चाहिए और आध सेर मिट्टी गेंद-सी बनाकर लंगोट के सहारे गुदाहार पर बांघ लेनी चाहिए, मिट्टी अपने स्थान पर आध घंटे तक लगी रहे। यह प्रयोग दिन में दो बार किया जा सकता है। इसके लिये उपयुक्त

समय सवेरे नारते के डेढ़ घंटे पहले और शाम की भोजन के दो घंटे पहले हैं। मिट्टी के हटाने के बाद यदि शक्ति हो तो दो-तीन मील टहलना लाभकर है।

ववासीर के अधिकांश रोगियों का रोग केवल भोजन सुधार, जल का यथोचित प्रयोग, मिट्टी के उपचार एवं टहलने से जा सकता है, पर कुछ का रोग इतना विगड़ा होता है कि उन्हें विशेष उपचार की जरूरत हो सकती है। वह उपचार है आंतों को कुछ दिनों तक बिल्कुल साफ रखना। इसके लिए रोगी को तीन दिन से सात दिन का उपवास करना पड़ सकता है। तीन दिन का उपवास तो कोई भी कर तकता है, पर एक सप्ताह का उपवास दो-तीन दिन के उपवास के अनुभव के बाद ही करना चाहिए। एक बार तीन दिन का उपवास कर लेने के बाद दूसरा उपवास महीने भर बाद करना उचित होगा। उपवास में सवेरे-शाम सेर डेढ़ सेर गुनगुने पानी का एनिमा जरूर लेना चाहिए । उपवास में रोज दो-तीन सेर पानी पोते रहें। आराम करें। उपवास तांड़ने के लिए पहले दिन किसी तरकारी का या फल का रस दिन में तीन बार पाव-पाव भर की मात्रा में छें, दूसरे दिन इसके बदले तीन बार कोई रसीला फल या तरकारी लें। तीसरे दिन दो बार फल और तीसरी बार थोड़ा दलिया और तरकारी छैं। फिर घीरे-घीरे साधारण भोजन पर आ जायं।

ववासीर से मुक्ति पाने का मतलब है, कब्ज हटाना, शरीर को सशक्त बनाना।

#### ३ रक्तचाप

रक्तचाप की अधिकता के उपचार में प्राकृतिक पद्धित को आश्चर्यजनक रूप में सफलता मिलती हैं और यह सफलता चाप-मापक यंत्र के द्वारा स्पष्ट रूप से देखी भी जा सकती हैं; क्योंकि इसके साथ पक्षपात का कोई प्रश्न नहीं हैं। इस यन्त्र का प्रयोग करने पर प्रगति का ठीक-ठीक मान स्पष्ट होता रहता है। इसलिए उपचार से जो लाभ होता है जस कोई अस्त्रीकार भी नहीं कर सकता। इस रोग की व्यापनता दिनोदिन बडती जा रही है। इसना मुख्य नारण है आधुनिन् युग ना व्यस्त और समयपूर्ण जीवन विसमें लोग धारीर की क्रियाश ना सचावन गरनेवाले नियमों ने पानन पर समुनिक व्यान नहीं है पाते। अगर इस रोग ने उपचार पर विस्त व्यान नहीं है पाते। अगर इस रोग ने उपचार पर विस्त व्यान नहीं है पाते। अगर इस रोग ने उपचार पर विस्त व्यान नहीं है पाते। अगर इस रोग ने उपचार पर विस्त व्यान नहीं है, विरदर्श, विर ना मारी होना, विर ना चनरर, निडिम्माम, पितिकता, नीड सी नमी, मभी-मभी नाम से लून पिरता, चीन में दर्श होना, मीरी-सिक्स मेटनत पर हाफने नमन सारि होना, मारी-सिक्स मेटनत पर हाफने नमन सारि हो ही सारे हैं।

सायारण र दो प्रकार की अवस्थाए इस रांग नी उत्पति ना नारण हुआ वरती है। एव तो वृत्ता वा रीग है जो वृक्ती स विष नो बाहर निनालने ने लिये शरीर को आवश्यक्तानुसार रक्तवाप वडाने को बाध्य बरता है। स्वस्थ अवस्था में ये अग शरीर की त्रियाओ में उत्पन्न होनेवाले विष की स्वतंत्रवाह स छनकर निकल जामें में सहायता प्रदान बारते है। इसरी अद-स्यामें धमनियाना पर्दानहा पढ जाना है जिससे उनकी फैलने की शक्ति कम पढ जाती है और इसके परिणाम स्वरूप उनकी धारणशक्ति कम हो जाती है। रक्त की मात्रा वही रहते हुए स्वान वा सकीच हाने पर रक्त बाप का बढ जाना विल्कुछ स्वामाविक और ऐसी मात है जो सरलता से समझ में आ जाती है। धमनियो का जितना सकोच होगा रनतचाप नी वृद्धि ठीक उसी ल गुपात में होगी। लगातार अधिक कार्यकरने या परेशानियों के कारण भी धमनियों में अधिक तनाव आ जाता है जो रक्तचाप की वृद्धि का कारण होना है।

प्राञ्जितिक विभित्सापदिति की दृष्टि में रक्तवाप की वृद्धि का आवारभून कारण विच्छुक स्पष्ट हूँ। यह निश्चित्र हूँ कि विचार विचार कर रहे हैं वह अपूक्त और अग्निमेजन एव पाचन तथा कोषाणुकों के साम से उत्तरह होनेवार्क विचा का निष्मासन के होने के कारण रखत वे विचालत होने के कारण करते वे विचालत हो नोने का परिणाम है। बहुत दिनो तक सारीर की आवस्यकता

से बंधिन और अवतुलिन बाहार प्रहण नरते रहने भोर बाना, मूत्रायय फ्रेकडा तथा स्वचा स मरु वा पूर्णहप से विकास न हाने पर मरू और विद वे भारीर में हक बाने से विकार का बढना निह्नित हैं।

जिन बुराइयो को दूर करना आवश्यक होता है वे जाय निम्निलिसित होनी है—

१—२वेतसार ( मैदा आदि ) से बनी हुई बोने, बोनी और प्रोटीन (मछली, मास, अडा, रवडी, मलाई आदि) अधिक मात्रा में साना,

२-बार-बार खाते रहना;

३-मादर द्रव्यो रा वधिक सेवन,

४-अपयोप्त व्यायाम, और

५-चिना और परेसानियो आहि को अकारण बनाये रखना।

अपर हो सने को हुछ दिनों तन उपबास पलाया आय नयोनि जवता यारीर की अदस्या भी साधारण बनाने में बहुत सहावन होता है, पर अगर यह समय नहां को पाव से दस दिना तन केवल होरे तरकारिया और मूल-मूली, सावर अलब्स लाहि-स्वान्तर रहा जाय। इसस अत प्रवास कर प्रवास केवल स्थार कर लगा अरहा के लिये आधार वन पायया। अरहान म गाजर, सीरे या अरोद निवी तरहारी का रस लिया जाय और वीपहर हो मोबन केवल सलाव म हो, याम की सिष्ठं उससी हुई तरकारिया साई जाय। मात्रा ठीन उतनी हो रहे जिससे सुधा पिट जाय। विश्वों भी हाल्त में और कोई भीव न साई जाय और पानी के अलाया और नशेह पीव न साई जाय और पानी के अलाया और नशेह पीव न साई जाय और पानी के अलाया और

बहुत से जोगों को यह आहार-कम चलाना तुरू करते पर दो गोजन-नालों के बीच ऐसा मालूम होगा बीस सरीर में चुछ हूं हो नहीं, बह बिल्कुल नि.सन्त हुँ, पर दोनीन दिना में हो यह बान जाती रहेगी। इसे चलाने समय नित्ती मी पिरिस्थित में इसे बोडाएन नहीं लाना चाहिए और दृष्ट सफल्द ने साथ चलाने जाना चाहिए। यह बाहार-कम चिनने दिनों तम चले यह व्यक्तिस्विच की बदस्या पर निर्मर है। जगरपूरे दस दिनों तक चलाया जा सके तो हर तरह से अच्छा होगा। इसका परिणाम देख लेने पर अधिकांश रोगी स्वयं इसकी उपकारिता स्वीकार करेंगे।

मनुष्य जो कुछ करता है उसमें मन का बहुत कुछ हाथ होता है, इसलिए किसी भी व्यक्ति को मन म यह विचार नहीं आने देना चाहिए कि पोपण न मिलने के कारण वह समुचित रूप से काम करने के योग्य नहीं है। इस तरह का विचार विल्कुल गलत भी है; क्योंकि शारीरिक शक्ति में किसी तरह की कमी न होते हुए भी इस मनोभाव के प्रभाव से सचमुच कार्यक्षमता में कमी आ जायगी। इस धारणा के साथ ही अन्य वातों में भी धैर्य और गांति से काम लेना चाहिए।

तरकारी का कम पूरा हो जाने पर दो सप्ताह संतुलित आहार चलाइए। अगर इतने से पर्याप्त लाभ हुआ न दीख पड़े तो फिर पांच दिन केवल तरकारी खाकर रहें और उसके बाद संतुलित आहार चलायें। जिनका रोग काफी वढ़ गया है उन्हें पांच-पांच दिन तरकारी और पंद्रह-पंद्रह दिन संतुलित आहार का कम कई बार चलाना पड़ सकता है। इसमें कोई कितनाई नहीं होती और लाभ के सिवा किसी तरह की क्षति होने की तो संभावना ही नहीं है। अगर किसी प्रकार का संदेह हो तो किसी प्राष्ट्रतिक चिकित्सक से मिलकर उनका निवारण कर लेना चानिए।

रक्तचाप की वृद्धि का मुख्य कारण आंतों, वृक्कों, फेंफड़ों आदि से मल का ठीक तरह से न निकल सकना ही हुआ करता है। इसलिए अगर इस विकार से पूर्णरूप से छुटकारा पाना अभिन्नेत है तो मल निकालनेवाले अंगों को अपना कार्य उचित रूप से करने की स्थिति में लाना आवश्यक है। वहुत से लोगों में तो तरकारी के आहार से ही आंतें अपना कार्य नियमित रूप से करने लोगी, पर इस बात का इतमीनान करने के लिये कि आंतें विल्कुल साफ हो गई हैं, तरकारी का कम चलाते समय रोज शाम को एनिमा ले लिया जाय तो बहुत लाभ होगा। इस रोग की समी अवस्थाओं में आंतों

की किया को साधारण रूप में लाना बहुत आवश्यक होता है।

तरकारी का कम चलाने से वृवकों का कार्य भी बहुत कुछ सुघर जायगा, पर उन्हें तथा वस्ति भाग को शिवत प्रदान करने के लिये त्रकारी का प्रथम कम चलाकर एक मास तक मेहन-स्नान चलाना चाहिए। रवत के ओपजनीकरण के लिये मेहन-स्नान के साथ ही स्वास-सम्बन्धी व्यायाम भी नियमित रूप ने चलाते रहना चाहिए।

त्वचा को किया ठीक करने के लिये शुष्क घर्षण-स्नान और गीले कपटे से बदन रगड़ने का कम भी चलाया जाय। शरीर का विष बहुत कुछ त्वचा से ही निकलता है। इसलिए उसका उचित रूप से कार्य करने योग्य होना बहुत आवश्यक है।

शारीरिक व्यायाम का कम चलाने के सम्बन्ध में कुछ लोगों का यह स्थाल हो सकता है कि इसमें अधिक समय लगा करेगा, पर यह सही नहीं है। सारा कार्य-कम बीस से तीस मिनट तक में पूरा हो जायगा। स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से आधे घण्टे का समय लगना उसका सबंतिम उपयोग माना जाना चाहिए, विशेषकर उस हालत में जबकि स्वास्थ्यलाभ का और कोई उपाय नहीं है।

मुविधानुसार रोज अधिक-से-अधिक टहलने का भी कम चलाना चाहिए, पर इसका आरम्भ तरकारी का कम पूरा हो जाने पर ही होना चाहिए।

#### ४. प्रदर

जिस प्रकार गारीरिक श्रम द्वारा भाजन पैदा करने-वालों को जुकाम कम-से-कम होता है उसी प्रकार भोजन के लिए गारीरिक श्रम पर निर्भर रहनेवाली स्त्रियों को प्रदर कम-से-कम होता है। इमलिए यदि यह कहा जाय कि प्रदर मेहनत से बचने का परिणाम है तो अत्युक्ति नहीं होगी और आज शहर में रहनेवाली प्रत्येक पर्दानशीन स्त्री और ऐसी स्त्री जिसे विना मेहनत किये ही भोजन मिल जाता है, इस रोग से घरी मिलती है। अत इस रोग से बचने और इसे दूर मगाने का पहला उत्ताय है श्रम करना । यह श्रम चक्की-चून्हे मे हो या टेनिस-वैर्डॉमटन खेलकर या नित्य दूर नदी नहाने जाकर या टहलकर । सम्बा लाम एक हो है।

माधारणत मादा पजु नो यह रोग नहीं होना, पर देने जद पास नम और जय बहुत अधिन साने को दिया जाता है तब उसे भी यह रोग आ पेदा है; पर जब उसने चारे में से बाना विदालनर उसे नेवल पात दिया जाता है तब बहु अनावास इस रोग से मुन्न हो जाती है। यह रहस्यपय नहीं है। जस से ही स्क्रेम्मा बनता है जीर हरी पास हमें हुर बर्चा है। ठीन यहा परिगाम मनुष्य के मोजन में परिवर्तन नदिने भी पास्त किया जा सकता है। मोजन में जम, पी, दूप की माजा कम परने और हरी तरकारिया और मोसम ने ताजे कलां की माजा बड़कर इस रोग के जाने में सहायक हुआ जा सनता है। मसाले भी ठीन नहीं है, वे शिल्ली में जनन वैदा करते हैं और रोज दिनमें में सहायक हीने हैं।

प्रदर से मुक्ति पाने को स्वामाधिक उपाय स्वास्थ्य को जरा बताने के एक कार्यक्रम को अपनाना है। स्वास्थ्य को जरात बताने के लिए पहली आवस्थ-

स्वास्थ्य का उन्नत वना का किए हुए जानस्य क्ता अम करने की है। यह अम आप अपनी मुविया के अनुसार उपका आ अनुप्ताक विश्वी भी रूप में कर सक्ती है। में उपजाक अम में प्रकी कताना और अनप्जाक अम में तेजी से टहलना श्रेय्ठ समस्ता हू। कुछ भी क्या आया, पर अन इतना अस्य क्या जाय, कम सैन्यम प्रारी में गर्मी आ जाय। आरम में और जाड़े के दिनों में यह किन होया, पर अम्मास होने पर सरल हो जाया।

श्रम के बाद तुरत ही लान करना चाहिए और स्नान ने बाद पारीर को तीजिय से न बोधकर हाव से रनड-रनट कर ही मुखा लेना चाहिए। इस विधि से लान का लाम बढ़ता है और रवना पर ताक्यी आ जाती है, जसमें मुखी और सुरस्ता, जिसे ठावण्य भी बढ़ते हैं, आ जाती हैं। स्वास्थ्य उन्नत बनाने वयवा प्रदर से मुनित पाने चा दूसरी चीड़ी है नीवन में सुवार 1 सफेर चावल, राल, माल, मलनी ये सभी स्केटमानराम्क है। तम प्रदर को बढ़ाते और टिकाते हैं। बारम में और सदा के लिए भी इंनडे मुनित पा ली जा सकेतो अच्छा है। प्रदर को रोगियों के भीवन में चीचर समेत आटे की रोटी, हरी तरकारिया और ताने फल होने चाहिए। सीरा, बचड़ी, गावर, टबाटर, प्यान, मूली, इरसकल्ला, पालक आदि चच्ची खाई जा सकने लावन सरकारियों को चच्चे ही खाना चाहिए। हुन, रही, भी उत्योगी है, पर हनका उच्चीम सारम में नहीं, भीजन चुमार के कने दो कानो बाद से पाल चरना चाहिए।

युप प्रदर से मुक्ति दिलाने में बहुत सहायक होती है। इसका सेवन नित्य करना चाहिए। किसी एकात स्थान में निर्वस्त्र होनर तथा सिर पर गीला सीलिया रलकर वर्मों के दिनों में संवेदे सात-आठ बजे और जाड़ के दिनों में आठ-नौ बजे पहड़ दीस मिनट एहना चाहिए । सप्ताह में एक बार यह घप-स्नान देज घप में अर्थात दिन ने स्थारह बने से तीन बजे के अदर आध घटे अववा इतनी देर के लिए लेना चाहिए कि पसीना बा जाय। घप स्नान रेते समय गरम पानी पीते रहकर पसीना आने में सहायक हुआ जा सकता है। यदि पतीना अच्छी तरह वा बाय तो धूप स्नान के बाद टडे पानी से अच्छी तरह मल-मल कर नहामा चाहिए। यह समय न हो तो सिर को उड़े पानी से घो लेना बाहिए और सारे घरीर को गीले रूपडे से पोछ डालना चाहिए । पूप का यह विशेष स्तान मोजन के पहले अववा भोजन कर लिया हो सो उसके दो-तीन घटे बाद करना चाहिए।

स्थानीय चिकित्सा ने किए पानी की गई। विग्रेष लागदायक होती है। किसी साफ सफेर वपने की चार-छ तह करके दो बाई इन बोडी और वार-पान इन बडी गई। बनावा चाहिए और दो ठटे पानी के सिगोकर और हत्या नियोक्त करोट के सहारे स्थान पर बाय केनी चाहिए। यह गई। घटेगर लगी रहे, पर सोते समय लगाई जाय तो नींद खुलने तक गद्दी लगी रह सकती है।

यह है वह सीधी और सरल रीति जिसपर चलकर प्रदर नया हो या पुराना उससे आसानी से मुक्ति पाई जा सकती है। साथ-ही-साथ आपको वह स्वास्थ्य मिलेगा और जीवन में वह खुशी पैदा होगी जिसकी कीमत आप उन्हें प्राप्त करने बाद ही लगा सकेंगी।

### ५ स्वप्नदोष

स्वप्नदोष के रोगी समझते हैं कि उनका वीर्य नाश हो रहा है। अतः वे रवड़ी-मलाई, हलवा-पूरी खाकर ही इस कमी को पूरा कर सकते हैं। यह भारी भ्रम है। र्चिता और घवराहट के कारण उन्होंने अपना पाचन विगाड़ लिया है ओर पाचन न भी विगाड़ा हो, तो ये गरिष्ठ चीजें किसी का भी पाचन विगाइने में समर्थ हैं। उनके लिए होना चाहिए अनुत्तेजक, हलका, सूपाच्य और कृब्ज्निवारक भोजन। यह भोजन भी वार-वार नहीं लेना चाहिए । सबेरे फल-दूव, दोपहर और शाम को चोकर समेत आटे की रोटी और यथेण्ट मात्रा में हरी तरकारियां, जिनमें मसाले के नाम पर नमक, वनिया, हलदी, नीरे का प्रयोग किया जाए। भोजन सोने से तीन घंटे पहले ही समाप्त कर लेना चाहिए और जल भी यथेष्ठ पीना चाहिए। जल पीने का वड़िया वक्त है सवेरे उठते ही, सोते समय और भोजन के एक घंटा पहले और दो घंटे वाद।

स्वप्नद्रोप से पीड़ित रोगी एकांत-सेवी हो जाता है। वह लोगों से मिलना-जुलना कम पमन्द करता है। उसे यह आदन छोंड़नी चाहिए। लोगों से मिलना चाहिए, पर वातों का विषय सिनेमा, सेक्स नहीं; राजनीति, दर्शन और साहित्य होना चाहिए। यदि इसकी सुविद्या न हो तो रोज़ एक-दो घंटे रामचरितमानस (रामायण) सरीखे मन को ऊंचा उठानेवाले ग्रंथ का पाठ करना चाहिए।

ऐसे युवक के लिए, सवेरे-शाम टहलना भी ज़रूरी है। टहलने में आदमी अपने को अन्दर से वाहर कर पाता है। चिन्ता-चिता की आग से निकल कर प्रकृति के साथ मिल सकता है। इसके लिए टहलन के नित्य नये रास्ते पकड़ने चाहिए और अपनो बात छोड़ कर दिखाई देनेबाली प्रकृति एवं दूसरे विषयों पर विचार करना चाहिए।

चिन्ता करते-करते इस रोग के कई रोगियों के स्नायु दुर्वल हो जाते हैं। उन्हें घवराहट, चिन्ता, अपीरुप, अकर्मण्यता घर लेती है। इनसे मुक्ति दि जाने के लिए सूर्य-स्नान और ठंडे जल का स्नान बहुन काम करता है। सबेरे टहलकर आकर दस-पन्द्रह मिनट नंगे बदन घूप में रहें और फिर नुरन्त ठंटे पानी से मल-मल कर नहाएं। सबेरे टहलने जाने के पहले दस-पन्द्रह मिनट का मेहन-स्नान भी लिया जा सके तो ठीक रहे। स्नायिक दुर्वलता दूर करने के लिए जल-चिकि:सा के स्नानों में यह बेजोड़ है।

कन्ज़ हो तो पेडू पर मिट्टी की पट्टी का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए सेर-डेढ़ सेर साफ मिट्टी ठंडे पानो से आटे की तरह गुंध कर पेटू पर—नामि से लेकर मूत्रेन्द्रिय तका और दाईं कोख से बाईं कोख तक के न्यान पर—रखनी चाहिए। सोते समय ऐसा करना बहुत अच्छा है। यदि जागते रहें तो मिट्टी की पट्टी आघ घंटे बाद हटा दें। नींद आ जाय तो जब नींद खुले तब हटाएं।

स्वप्नदोप से मुक्ति पाने का कार्यक्रम:

सबेरे पांच बजे उठने पर शौव आदि से निवृत्त हो कर दुबले हों तो दस मिनट का, दोहरा बदन हो तो पन्द्रह मिनट का मेहन-स्नान, फिर उसके बाद घंटे दो घंटे तेजी से बीच-बीच में गहरे सांस लेते हुए टहलना।

सात वजे—दस मिनट तक वूप में रह कर स्नान। साढ़े सात वजे—नाइता कोई मौसमी फल और साथ में पाव डेढ़ पाव गाय का कच्चा या एक उफान तक का गरम किया हुआ दूध।

साढ़े वारह वजे—चोकर समेत आटे की रोटी और पाव डेढ़ पाव हरी तरकारी. जिमके बनाने में उसे केवल उवल जाने दिया जाए और मसाठे में नमक घिनए, हल्दी, जीरे के सिवा किसी अन्य मसाले का उपयोग न किया जाए। पाच बजे शाम-टहरुना ।

छ बन्ने दाम—स्नान के बाद दोपहरवाका भोजनः

नी बजे गत---पेडू पर मिट्टी की पट्टी व्स्वकार भीना।

आशास्त्रित रहें, मन का सुमस्कार करते रह, स्वप्नदोय से शीध्य मुक्ति पाएग।

यह नायंक्रम नेवड स्वप्तदोष से मुक्ति दिलाने म ही ममर्थ नहीं है, इस पर चर बर बाई भी हस्तमंपून तद्काय बन्मोप्या खरावियो गीध्यतन से भी छूट बारा पा सबता है।

हिशयों के द्वेतप्रदर और मानिक की अनियमिनता किए भी यह पार्यक्षम समान रूप से उपयोगी हैं।

#### ६ रक्ताभाव

रक्ताभाव जहां सींदर्भ ना नाशन है वहा स्वास्थ्य-दिनाशक भी और तमाशा यह है कि जब जवानी की अवस्था मे मनुष्य को स्वास्थ्य और सौंदर्य की प्रतिमृति होना चाहिए उसी समय यह रोग अधिनतर होता है। देर तक जागना, विना समझबुझे जो सामने आया. जहा आया खाना, श्रम से निनाराकशी, घराव, चाय सिगरेट के सहारे जानद की वृद्धि की कोशिय, यह **गर** लू, वह कर लूकी हविस से विनाडित एव उत्तेजित मनादिशा के परिणामस्वरूप यह रोग होता है। इसके साथ-साथ आते है मदाग्नि, बब्ज, स्नाय-दौर्बस्य। हुदय की घडनन भी इनकी कभी-कभी बढ जाती है, उपर्ववासू से में पीडित रहते हैं आने के बाद इनका गराजरने रगता है। इस रोग में जहा पुरुषों को रवप्नदीय होने लगता है वहा स्त्रियो वा मासिक रुक जाना है अथवा स्नाव बहुन न्यून एव विवर्ण हाने रगता है।

पता आप अपने शरीर के रकन ने बारे में जानना पाहते हूं ? मुनिए ! रकन देखने को तरह है, पर हमम टीम पदार्थ भी होते हैं डिजन शर्मर, क्या, प्रोटीन एवं प्राइतित कवच शामिल हैं । ह्योग्शानीवन रचन गा विशेष अप है, ह्योजन रक्त की हाली निर्भेर रहनी हैं । वह भोजन हारा रक्त में आए ठौड नी सहायना से अपना कार्य सपादन वरता है। छोड़ कछोरोपिट (इरीतिमा) ना सामी है और हरी पत्तिमा छोड़ नी प्रधान निवासस्यान है।

रक्न ने इस मठन से आप इतना तो समझ ही मये होने कि रक्त की लाली बडाने के लिए मोजन म लीह की विशेष आवस्पता है और दक्ती प्रमान बान है हरे शांच और हरी तत्नारिया । इनके जलावा लोहा चौकर, विश्वमित, गांवर, मुक्का, नारगी, खनुर में भी यचैष्ट मात्रा म मिलता है।

तो आप भोजन में चोनर समेत आटे की रोडी रख बुछ हरे दान, तरनारिया, दूध और बुछ कर हो। बन इतने से आप शरीर में छौह पहुचाने ने कार्य-जम पर छन जाते हैं।

पर शरीर में गया हुआ भोजन पचे इसके लिए कुछ हककी कसरतें भी करनी चाहिए। कुछ न हो तो टहुक ही । कोई भी धम कर, पर करें जकर। इतना नहीं कि आप जोर से चक बास । धम एव अपनी शक्ति पर हमेशा नवर रखें । शक्ति वडने पर ही धम बडावें।

बुछ देर पूप में भी रहना चाहिए। प्रात कालीन पूप में जब वह प्राप्य हो, दस-प्रवह मिनट खुले बदन रहना काफी होगा।

मालिय ऐसे रोगी ने लिए विशेष लाभनर होती है। बाता हो सा गरमी, उटे पानी का एक पड़ा सिर पर डलवाए और वदन पोठ कर मालिय लेना आराज नर दें। ठड़क से रकत के लाल कुणो में बृद्धि हागी और बालिया रक्ता में क्यामी और पर उनके बढ़ते में सहायक होगी। यदि मालिया की मुविधा प्राप्त न हो तो नहाने के बाद क्या जबने रारिर को लाब ने पाच-सात मिनट राजका चाहिए।

सूब सोहरे, जितनी नीर आने उतना जरूर सोहरे। मन को निर्देश्वत रिमिए। बस इतनाना कार्यक्र महै विस पर चल्कर कोई भी अपने सरीर में नृतन रक्त ना निर्माण कर सकता है, रखा का पीटापत सी, सनता है तथा नारि, आज एक स्कृति वा पती वन सकता है। जीणं मलेरिया, खूनी ववासीर, क्षय, उपदंश, रक्त-निलकाओं के फटने, घाय से बहुत-सा खून वह जाने से भी रक्ताभाव की दशा उत्पन्न हो जाती हैं। इस प्रकार पैदा हुआ रक्ताभाव इनसे संबंधित रोगों के दूर होने पर ही जाता है।

### ७ मोटापा

मोटापे का कारण है आलस्यमय जीवन और परि-श्रमवाले कार्यों का न करना। यह रोग पहाड़ पर रहने-वालों में नहीं मिलता और मैदान में भी जिन्हें अपनी रोटों के लिए शारीरिक श्रम पर रहना पड़ता है जनमें यह रोग नहीं पाया जाता। इस रोग की जड़ है काहिकी, निकम्मापन।

मोटापे को हम नारे बरीर का कटन कह सकते हैं।
नाधारण कटन में जिस प्रकार आंतों में मल इकट्ठा
हो जाता है उसी प्रकार सारे बरीर के कटन में रग-रग,
नस-नस में मल इकट्ठा हो जाता है। इसका असर
बरीर की वाहरी सनह पर अधिक दिखाई देता है,
क्योंकि त्वचा छचीछी होती है। इसलिए आसानी मे
बढ़ जाती है और मल को—विजातीय द्रव्य को—स्यान
दे देती है।

इसमें तो सन्देह ही नहीं कि मोटा न होना मोटे से हुक्ला होन से आसान है। यदि मनुष्य अपने भोजन और कसरन की ओर थोड़ा भी ध्यान देता रहे तो मोटा होने की नीवत ही न आए। पर जो मोटे हो गये हैं उन्हें तो इस रोग से जमकर लोहा लेना होगा। इस युद्ध में घीरता, चतुरता एवं दृढ़ना की जहरत होती है। किसी को भी उपवास कराकर बहुत थोड़े समय में दुवला किया जा सकता है, पर बह बुद्धिमानी का काम नहीं है। उसके अनेक खतरे हैं। एकाएक उपवास कराने से बरीर में इकद्या जहर रक्त में प्रवेश कर जाता है जिससे रोगी का सर चकराने लगता है, के होने लगती है और कभी-कभी जबर चढ़ थाता है और भी अनेक कष्ट आ घेरते हैं। अत: ऐसे रोगी को उपवास शुरू में तो बहुत ही कम कराना चाहिए, यदि एपवास कराने की जरूरत दिखाई ही दे तो भी ऐसे

रोगी को फलों एवं तरकारियों के रस पर रमना अधिक लाभकर होता है; क्योंकि मीटे मनुष्य का शरीर सब बस्तुओं के लिए उपवास कर सकता है; पर विटामिन और प्राकृतिक लवणों का उपवास नहीं कर सकता और फल—तरकारियों के रस इन चीजों से भरे रहते हैं।

गुरू में ही यह बता देना ठीक होगा कि मोटापा भगाने के दो ही प्रभावणाणी अस्त्र है। पहला भोजन पर मंयम और दूसरा उचित कसरत । मोटापा एक रोग है और प्रत्येक रोग का कारण होता है खून में खटाई का वढ़ जाना एवं क्षार की कमी । अतः रोगमुक्त होने के लिये यह आवश्यक है कि ऐसे भोजन, जो खूत में खटाई पैदा करते हैं उन्हें छोड़ दिया जाय । गोश्त, मछली, अंडे, मैदा, दाल, घी, छंटे चावल आदि खाद्य खूत में खटाई पैदा करते हैं, गरीर को रोगी बनाने हैं । इनका इस्तेमाल तो स्वस्य रहने की इच्छा रखनेवाले व्यक्ति को भी न करना चाहिए । मिर्च-मसाले भी अच्छी चीज नहीं हैं। इनके सहारे लोग भूख से अधिक भोजन कर जाते हैं।

खून से खटाई को दूर कर खून को शुद्ध बनाने-बाले एवं रोगमुक्त करनेवाले खाद्य हैं सब तरह की हरी तरकारियां, पत्तीदार भाजियां, सब तरह के फल। इसलिए मोटापे के रोगी को फल और तरकारियों को ही अपना मुन्य भोजन बनाना चाहिए। इनमें भी प्रत्येक के गुण-दीय की जान लेना जरूरी है। मोटाप का मुख्य कारण भोजन है। अतः उनके लिए भोजन के हर पहलू को समझ लेना आवश्यक है। खून साफ करने के लिए फलों में सभी रसदार फल, संतरा, अनन्नास, रसभरी, टमाटर आदि सर्वेथेट्ठ हैं और उनसे घटकर हैं सेव, नायपाती, पपीता, खरवूजा, तरवूज-सरीखे ठोस फल । इसके बाद ही और फलों को स्थान मिलना चाहिए । तरकारियों में समी पत्तीदार हरी भाजियां परम उत्तम हैं। सीरा, ककड़ी, लौकी, परवल, तरोई आदि उनसे कुछ ही कम हैं। रोग के दिनों में सभी कंद-मूल त्याज्य हैं, केवल गाजर का उपयोग किया जा सकता है।

इत् खाद्य बस्तुओं के अलावा चिकित्सा शब्द करने के एक दो सप्ताह बाद थोड़ी चौतर संगेत आहे. की रोटी और थोडा मक्खन निकाला हुआ दूघ या मठा भी लिया जा सकता है। यहा यह दूहराना गलत न होगा कि मोटापा दूर करने के लिए मुखे रहने की जरूरत नहीं है। बताई गई खाद बस्तुआ को भर-पेट लाइए । सोच कर इनके आधार पर अनेक आक्रयंक भोजन बनाए जा सकते हैं। सबेरे उठने ही एक नीम का रस पानी में निचोड कर पीजिए। इससे बाप भें स्कृति और ताजगी आएगी । सबेरे वे मारते में कोई रसदार फल लीजिए। दोपहर का बच्ची तरकारियों का सलाद इच्छानुसार खाइए और एक बादो हल्डी चपानिया भी लीजिए । शाम का दा तरह नी पकी तरनारियो और पाव भर मठेना भोजन । तरकारियों के बजाय कोई फल भी लिया जा सकता है। इसके अलावा दिनमें इच्छा हो तो एक-दी धार फल एव सरकारिया का रस भी पिया जा सकता है। दुबला होने के लिए दमाटर, लोकी और खीरे, मच्डी नारस बहुत फायदे मद साबित हुआ है। छोनी और लीरे-नकडी के रस में नीवृता रस और एवं आप तीला शहद मिला देने से बहुत बढ़िया शर्वत बनता है। यदि अधिव भूख लगेतो खीरा-कवडी, दमादर आदिको यो भी साया जा सनता है।

ऊपर बताए गये मोजन-कम से वजन काफी घटेगा बीर सरीर निर्मल होगा। घटने ने लिए गभी उतावला म होना चाहिए। समझ-बुझ कर एक कम की आरम कर दीजिए और निरिचन्त हो जाइए। पहले नजन ज्यादा घटता है, पर पीछे कम । इसी समय नसरत शुरू कीजिए। वजन जब घटता है तब राजवा ढीली पड़ने रुपती हैं। नबस्त से उसमें तमाव उपस्म होगा, वह सिकुवेगी और सरीर में मुघरता आयेगी। पर नसरत अधिन घरने की जकरता नहीं हैं, टहलने के साथ-साय कोई भी हलकी नसरत की जा सबसी हैं। एसी ने खेल में एक ही जगह पर दौडना दुवराने के खियं अच्छी नसरत हैं, वैसे सभी कसरते, जिनमें मासप्रिधी पर तमाब परवा हैं. काम कीहैं।

द्वलाने में लिए भीजन पर नियनण एव नसतत वाफी है, पर यदि नूई कूनेना बनाया हुआ महिन्सान भी मुबद्धनाम रवन-पह्न मिनट के लिए लिया जा सके तो नाम जरती बनेगा। मोहामातो हुए होणा हैं। और भी जितने रोग यदीर में हुगो निकल जायने। नभी-नानी सारे यदीर पर माम भी ली जा सकती है। इसके अभाव में और गर्मी के दिनों में, भूप-स्तान भी उत्तरा ही लाभवर होना है। यदिर का नेवल आप लेकर एक-यो चींड लोग तुरत कम नर वेल है और भीजन आदि के बिना हैर-फैर के इसी के बलपर दुकरा करते हो सारा करते है, पर इसने स्थायी लाग नहीं होता। रीज भाप लेने से नाबी-महल पर सहदा लगा। है और आप लेने के नाबी-महल पर सहदा लगा। है और आप लेने के नाबी-महल पर सहदा लगा। है और आप लेने के नाबी-महल पर सहदा लगा। है और आप लेने के नाबी-महल पर सहदा लगा। है और आप लेने में बाद ही जो प्यास

विश्वी मीसम में भी दुवलाने ना कम आरम्म रिया जासन्ता है, पर यमीं में दुवलाते समय वडा आराम भिलना है।

हुनिया ने अनेन महापुरण और प्रतिनाताती व्यक्ति सम ने शिकार रहे हैं। देखने में आया है कि सम रोगों बहुत स्कूरियोज और मुद्धियाजे होते हैं। समरोग जिस राजरोध भी करते हैं, के चतुक में प्रतानों के प्रतानों के प्रतान कि सम प्रतान कि स

# मधुमेह दूर करने के उपाय

### स्वामी शिवानंद

मचुमेह को अंग्रेजी में डाय्विटीज़ (Diabeties) कहते हैं। शरीर में पोपक तत्वों की कमी होने के कारण तथा पाचक रस के निर्वल होने से, जब शर्करा तत्व का प्राचुर्य हो जाता है तभी इसके परिणामों का पता चल पाता है। मधुमहाकान्त मनुष्य को थकावट का अनुभव तो होता ही है, साथ-ही-साथ उसकी क्षुया में अतिलोलुपता आ जाती है, जिसका परिणाम यह होता है उसका शरीर पाचक तत्व की कमी होने से उस भोजन को विषतुल्य वना देता है। मनुष्य का रक्त शर्करातत्व से ओतप्रोत हो जाता है, जो सदा और सर्वदा वहां उसी माध्यम को लिए रहता है। वैसे तो हम लोगों के मुत्र तथा रक्त का भी परीक्षण करने से कभी-कभी शर्करातत्व प्रतीत होगा, परन्तु इतना निरचय रूप से जानना चाहिए कि जबतक रक्त में शकर अथवा मधुतत्व का निरन्तर संयोग न हो तवतक वह मधुमेह नहीं।

अधिक चिन्ता, मानसिक दुःख, अधिक मीठा लेना, पाचन-प्रणाली का निर्वेल हो जाना, अधिक परिश्रम तथा अतिसंगम को मयुमेह का मृख्य कारण कहा गया है। मानसिक परिश्रम करनेवाले बहुत शीध इसके शिकार हो जाते हैं। जो लोग व्यायाम नहीं करते तथा सदा एक ही जगह बैठे रहते हैं, उनमें यह रोग ज्यादा पाया जाता है। साधारणतया यह रोग ४० से ६० साल के बीच आक्रमण करता है।

इसका आगमन सहसा ही होता है। जब रोगी जानता है कि वह दुवंछता का अनुभव कर रहा है, तभी उसे ज्ञात होता है कि उसे मधुमेह है। रोगी के मूत्रत्याग की मात्रा अधिक हो जाती है और वह कई बार मूत्रत्याग करता है। रात की भी उसे मूत्र-त्याग करने के लिये कई बार जागना पड़ता है। अतः उस में निवंछता की प्रतीति अनिवार्य है। रोगी के मूत्र का

परीक्षण करने से मालूम होता है कि किसी-किसी के मृत्रका रंग हल्का पीला होता है और सेव के समान उसमें गन्य होती है। इस रोग में शरीर की हवचा ढीली और शुष्क-सी हो जाती है । मलरोध का असर रहता है। रोगी को अधिक प्यास का अनुभव होता है। अधिक जल पीने से उसके गरीर के वीर्य का द्रवीकरण होता है, जिसके कारण व्यक्ति कमजोरी और थकावट का अनुभव करता है । इन्द्रिय स्थान में अधिक वुजलाहट होती है, जिसकी प्रतिक्रिया स्वभावतः रोगी के आन्तरिक निर्माण पर पड़ती है। रक्त में मबुतत्व की प्रचुरता के कारण शरीर में सनसनाहट होती रहती है। इस प्रकार मचुमेह के लक्षण संक्षेप में ये हैं: कमानुगत कमजोरी व थकावट का अनुभव, शक्तिपतन, अधिक मूत्र-त्याग नया भोजन में अनिलीलुपता । मधुमेह के रोगी के किसी भी जगह यदि कोई घाव हो जाता है तो उसका भरना प्रायः असम्भव ही होता है। मथुमेह से सभी श्रेणियों के लोग आकात होते हैं।

यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कोई भी रीग विना किसी असाधारण बारीन्क अथवा आध्यात्मिक दोष के नहीं होता। जिस समय मनुष्य प्रकृति के नियमों का पालन करना छोड़ देता है, उसी समय उसकी मानसिक और बारीरिक अवस्था में असमतोल—विपमता आजाती है। मयुमेह कोई असाध्य रोग नहीं है। जिन व्यक्तियों की मानसिक कियात्मकता तथा बारीरिक प्रगति उचित अनुपात से होती है, जो नित्यप्रति आसन-प्राणायाम और बारीरिक व्यायाम का अभ्यास करते रहने हैं, जो भोजन विषयक प्राकृतिक नियमों का पालन करते हैं और किसी भी अवस्था में विषमता लानेवाले पदार्थों का उपयोग नहीं करते और जो देह तथा देहान्तर्गत अन्यान्य अंगानुगत समता को स्थायी रूपसे प्रचलित होने में बाबा नहीं

पहुचाते, वे पहले तो इस रोग से आशान्त होते ही नही। यदि होते भी है तो शोध स्वस्थ भी हो जाते हैं।

इस रोग के रोगों को पनतत्वान्तर्गत कार्वोहायुड्डेट् पदार्थतत्व का सर्वथा त्याग करना चाहिए और चावक सथा मीठी चीजो का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए।

मी, मक्तन, हरी तरकारी जीते परवल, लीकी, तीरा, केले न पूल, पुरि, करेला का उपयोग कायरेमद होता है। गेतु लाजदावक नहीं होता अत चने और गेंद्र मा आटा बराबर अनुपात में लेवर रोदी बनामी चाहिए। मधुमेह के रोमी के लिये यहीं भीजन उपयुक्त भोजन हैं। रोमी को दूध पीने के लिये चीनी वा उपयोग नहीं चरना चाहिए और न सतरा, केला सद्या फलो को ही लेना ठीक होगा।

इस प्रकार रोग के तीन विभाग किये जा तकते हैं। प्रयस्त जबकि रोग ना प्रारम हो। दूवरे जब कि रोग की अवस्था रोगाकान हो गई हो और तीवरों जबकि रोग के अवस्था रोगाकान हो गई हो और तीवरों जबकि रोग कि रोग को हो भीर उसमें गिवन का पूर्णन्या ह्यान हो गया हो। वीवरी अवस्या वही करदर है। इसम विकड़ीया का अवतरण होने हो। हो नी हिम्मस्थान है जो रोगों को अवस्यन वेठमकर होता है। विम्मस्यक्षान के अन्तरण प्रदेश में मभी-मभी हुक्का पाव भी हो जाता है, विसके बारण प्रभा भी मन्दाद में विकल्प नहीं होने पाता। यित बहु पाव दिसी प्रकार मुखा दिया जाय ती मु-अशों म किम्मता आ जाती है। वास्य विभिन्दता है अभी तक यह सम्मत होते देखा गया है। विरस्त वास वीभिन्दता हो अभी वास महानम्मत होते हैं वहा गया है। विरस्त वास वीभिन्दता हो अभी तम यह सामन्य होते हैं वहा गया है। वरन्तु उसकी प्रतिक्रिया भी वास समान्य नहीं होती।

मधुमेह के रोगी वो श्लीसंग का सर्वेवा त्याय कर देना बाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो रोग त्यन्यर दिन जड पण्डता जायगा। उत्तर्क समून दिनान किये सभी मार्गी का अवलम्बन करना पटेगा। सारोरिक और मार्गीसक, होनी बनस्वाओं से सानाता सारी होगी।

रोत की दूसरी जबस्या में रोती में सिट्युता वा अस विवासन और संबच रहता है। वसकी आधीरन राजित सीण होने वस भी परिहार ने जगाये ना प्रमुद्ध विचान अनुपालित कर सचती है। बद रोती को साहिए कि बहु वसवास करना प्रारम्भ करदे। इससे उसने चरीर का विपास निवृत होता जाया। परीक्षा बरने से देसा गया है नि उपनास के दूसरे दिन मूत्र में सकेंटर की माना कम हो जाती है। मंदि रोगि दो दिन यत करें तो तीतरे दिन ममुजद का गिय ठीए हो जाया। इस प्रकार उपनास करते रहने से और साथ-ग्राम परिपर्णतानन विपानी के माकृतिक स्वरूप का साथ्य होने से, रोग को मुख्य का में निमू क दिना जा सकता है। हस हसरी अवस्था म मी क्षी-चान को सर्वधा मितन माना मया है। साथ-साथ माना, माना-व्याना सुनना, चाम और काफी और ताडिका पीना इस अवस्था में सर्वधा माना-व्याना सुनना, चाम और साथ-माना सुनना, चाम भा स्वाच्या है। रोगि को हस्से आवस्था में सर्वधा माना-व्याना सुनना, चाम और साथ-माना ही। रोगी को हस्से आवस्था में सर्वधा माना स्वाच्या स्वाच्

प्रवास अवस्था में रोगी को और भी अधिव सावधान रहना पडता है, व्योंकि तार्ष वह अपनी लारतों को निकरण में नहीं रखेगा तो से नाबू हं बाहर होजी जावणी और फिर वह हुवरी अवस्था में पुण्यता से जा पहुचेगा। अत प्रयम अवस्था तरस्या बाहती है और सावम भी। ज्योंही पता को कि रोग मा प्रहार होजा जा रहा है रमोही सातिरिक विपमतामें का अनुकूल मार्ग खाद दूर करने ना क्यास लीजिय। भीजन में सावधानी, आचार-विचार में समता और पविचता, साधना में दुवता आने से रोगी सीध ही सरस्व ता लाता है।

सखेर मे, यह धेम कितना ही असाध्य बयो न होनवा हो, परन्तु नीचे किसे उनाया से दूर नर तकते हैं मुक्कम—क्षाम्म, उपवास, फिराहार, दर्गे पदार्थ, तथा । हुस्तर—प्यान्य विश्वास, पत्र, सदक्ष सिंह, प्राम्नेना, श्रास्त्र मतन, अनुकूठ विवार और सिंहबार, सत्यादि विग्रमो का पाठन, बहान्ये। सौसरा—जासन, प्राम्नास, यम नियमादि या अनुशीवन और नित्य कर्म की प्रजाता।

उपरोक्त परिचर्या म अवस को प्राकृतिक विधान कहा है, दूसरे को आध्यासिक विधान और सीसरे की योगिक विधान १

# मलेरिया, हेजा, अतिहा आदि का इलाज

मलेरिया

१. खाना वन्द कर दीजिये। मान लीजिए कि एक दिन बीच देकर बुखार आता है। ऐसी हालत में आज से परसों तक कुछ न खाइये। किसी भी हालत में तीन-चार दिनों का उपवास फायदेमन्द होगा।

२. हर तीन या चार घंटे पर गर्म पानी में नीवू का रस निचोड़ कर पीजिये। इससे पेशाव ज्यादा होगा, जिसके साथ विकार निकलेगा, पालाना हो सकता है और खून साक होगा।

३. सुबह-शाम गुन्गुने पानी का एनिमा: पहले सुबह-शाम तीन-चार दिनों तक और फिर सिर्फ एक हो बार और तीन-चार दिनों तक।

४. जब बुखार १०३ डिग्री तक हो जाय और वेचैनी भी ज्यादा हो तो पेडू पर गीला तीलिया, ठंडे पानी से निचोड़ कर रिखये। वह गर्म हो जाय तो जने फिर पानी में निचोड़ लीजिये। बुखार १०२ डिग्री तक आ जाय तो गीला कपड़ा रखना बन्द कर दीजिये।

५. अगर बुखार १०३ टिग्री से ज्यादा हो जाय तो सिर पर भी इकहरी गीली पट्टी रिखये और गमं होने पर उसे तबतक बदलते जाइये जबतक कि बुखार १०२ डिग्री से कम न हो जाय। अगर १०३ डिग्री के पहले ही सिर में वेचेनी मालूम हो तो गीली पट्टी रिखये।

मलेरिया चार से छ: दिन में शक्तिया जाता रहेगा और फिर नहीं आने का । बुखार छूटने के बाद दो दिन सिर्फ दूय और फल के रस पर और फिर दो-तीन दिनों तक फल और दूध पर रहना चाहिए।

वृतार की हालत में या बीच वाले दिनों में बच्चों या कमजोर रोगियों को सन्तरे, अनार, अनन्नास या कंगूर अथवा तरकारियों का रस तीन-तीन चार-चार घंटे पर दे सकते हैं। — उ० ना० चीवरी आंखों का दुखना

जब पेट की गर्मी बढ़ जाने से अखिं दुखने लगती हैं तो इलाज पेट का या पेट और आंख दोनों का होना चाहिए, न कि आंखों का। अगर आप कुछ न खायें तो बहुत अच्छा हो और अगर यह न हो सके तो सिर्फ फल लें जैसे संतरे, अनार, अंगूर, गन्ने, टमाटर, पपीता, जामुन, अनन्नास, सेव, तारापाती, अमरूद भीर आम । केला, कटहल, लीची नहीं । ये फल खाकर या दूध या मठा पीकर ही रहें। इससे पचाने का काम हल्का पड़ जायगा और शरीर की बची हुई शक्ति पेट की गर्मी को दूर करने में लग जाएगी। इस काम में शरीर की कुछ और भी मदद करनी चाहिए और यह मदद ' तमाम पेडू पर अच्छी (चिकनी, पिडोल) मिट्टी की एक इंच मोटी गीली पट्टी, जो मिट्टी को पानी के साथ गूंथने से बनती है, रखने से मिल जाती है। इस पट्टी को एक बार लगभग आब घंटे या ८० मिनट के लिए पेड पर रखना चाहिए। यह पट्टी सुबह और शाम या मुबह, दोपहर और शाम को दी जा सकती है। अगर सुबह और शाम को पट्टी के बाद दो दिन एनिमा भी छे लिया जाय तो बहुत जल्द फायदा हो।

आंखों में बहुत तकलीफ हो तो आंखों पर भी आध-आध्यंटे के लिए दिन में दो-तीन बार मिट्टी की पट्टी बांधिये। पलकों की बन्दकर ऊपर से इस पट्टी की रिखये।

पेडू और आंखों पर की पट्टी के तैयार करने के लिए काफी ठंडा पानी चाहिए। दोनों जगहीं की पट्टी पर हल्का गर्म कपड़ा रखना चाहिए।

---जाननीशरण वर्मा

हेज़ा

हैं जे में नीचे लिखी बातों पर अगल करने से लाभ होगा:

१. जब रोग हो जाय तो सबसे पहले खाना विल्कुल बन्द कर देना चाहिए । जबतक रोग धरीर से निकल न जाय तबतक उपवास करना चाहिए ।

२. भोजन वन्द कर देने के बाद रोगी को जब-जब और जितना .चाहे, पानी में नीवू मिला कर उसे पिलाना चाहिए।

३. पेटू पर मिट्टी की गीली पट्टी आध-आध घंटे के

िण एक एक या सो दो घटे के अलाद पर देता जाहिए।

' ४ रोगी की एक टब में, जियमें ठाउ पानी हो।
विटा देना चाहिए। पेरी की बाहर निकालकर मामूळी
गरम पानी से मरे बर्नन में रकता चाहिए। पेर देते
सी साध्यालयात पाने पाने में इंड बा अनते हैं। यदि
देसी ममम रोगी को प्रसात जाते की हाजब हो दो उते
दुस्ता टब से निवाल लेगा नाहिए। इंड बा अनते हैं। यदि
देसी ममम रोगी को प्रसात जाते की हाजब हो दो उते
दुस्ता टब से निवाल लेगा नाहिए। इंड बा इस हैं। देते
उस ते प्रदेश के प्रदर्श के पुरुटी और १० फिरट के लिए
प्रदेश के प्रदर्श के एक्ट के स्वाद प्रसाद हैं। दो
प्रदेश के प्रदर्श के एक्ट के स्वाद प्रसाद हैं। दो
प्रदेश को पद्देश में पित्री नहाल जाते रचना चाहिए,
जबदक कि रोगी को जदर न हो जाय। जब जबर हो
जाय तो रोगी को आरात के केटाना चाहिए। इसके
प्रपीर के अन्यर की गर्मी निकल जायगी और रोगी की

--बालेस्बर प्रसाद सिंह

#### अनिद्वा

मीद को बुलाने के लिए सोने से तीन घटे पहले भोजन कर लेना चाहिए। 'भोजनाने सतपद गर्डत' (भोजन के बाद सी हम भरना चाहिए) के अनुसार मेर के तक धीरे-धीरे टहलना चाहिए। अपनी म भी एक कहाबन है कि भोजन के बाद एक मील टहलना चाहिए।

जिन्हे अनिदा का रोग एक जीजें रोग की तरह हो गया हैं उन्हें पहले पाज-मान रोज केवल फला- हार बरके और एनिया छेकर कपनो पेट साफ बरना बाहिए। इससे दियाग की गर्मी दूर होगी। फिर छिता फोनन कारम्भ नराना नाहिए। सारे सरीर को तलहवी के राहना, धीटेभीरे दूर तक टहला, मामुले क्सरत, पोमासन (विदोधनर सर्वागानन) देहू और भेहन-स्वान इत्यादि से निदानास ना रोग निरुषय ही दूर होता है।

यदि यह रोग साधारण कारणों से हुआ हो और पुराना न हो तो नीचे विए प्रयोगों में से किसी एक से

लाम होना है-

१ कोने के पहले ठडें पानी से अच्छी तरह नहा लेना, लेकिन भोजन और स्नान में बो-डाई पटें का अन्तर जरूर हो। अगर वकाबट हो वा जाडा हो तो गर्म पानो से नहाना चाहिए।

२ पैरो को वर्ष पानी में १० से २५ मिनट तक रखना। कमजोर लोगों के लिए यह विशेष लागदायक है। पैर पानी में रखने के मनय सारे हारोर को कपड़े से दक लेना चाहिए। पानी वाफी वर्ष हो; पर हतना, नहीं नि पैर चल खाय।

- ३ रीड को गर्न पानी या ठडे पानी में भिगोये कपड़े से पान सात बार अन्छी तरह पोछना।
  - ४ पैर के तलवों में तेल की या भो ही मालिश।
    - ५ लेट जाने पर बदन वा धीरे-धीरे दाका जाना । ---इंदुप्रमा चतुर्वेदी

( पृष्ठ २३६ का शेप )

िछए एव वार्यन म बनाना होगा और उत्त पर अमल बरना होगा। कोरी भानता बयाई हमारी आस्मा भी तो मारी रे नागत मा भन्न के हारा हो अपने बाम बाह्य बस्त में बर सनती हैं। इसी तरह सब्बा को मारीर में निगष्टित किय बिना यह इतवार्य नहीं हो सरसीर में निगष्टित किय बिना यह इतवार्य नहीं हो

इस वार्षकम म मन्छी वात यह होनी बाहिए वि हमारे हारीर की सब क्रियम उत्पादन हो। वेचल आनम्द और मनीरजन के बाम म्बली होते हैं बर्बान "उत्पादन बान बहुनान में परलकी। उत्पादन वार्षे में मनीरजन भी अपने आर हो ही जाता है।

दूसरी बात यह ि यह नाम हम दूसरे की अपेक्षा से न करे। दूसरा क्या करता है, यह अवस्य उपेक्षणीय नटी हैं; किन्तु हम क्या करते हैं, यह हमारे किए, सबसे अधिक यहत्व की बात है। दोष तुम्हारा है या कतका, ऐसी न्यायायीश की याधा बोलने की बजाय दोव मेरा है ऐसी सायक की या सेवक की भाषा बोलनी ज्यादा सही और मौजू होगा। दूसरे कमा नहते और नया करते हैं इससे हम अधिक परेसाल रहते हैं, जबिन हमारी जिता का विषय, हम बचा कहते नया करते हैं, होगा चाहिए।

तीसरी बात यह है कि यदि हम उत्पादक काम को महत्व देंगे तो फिर हमें सत्ता-आप्ति की राजनीति में दिलवस्मी नही हो सबती और उनके लिए दल-बन्दी हमारे ही नज़दीन अमगर होमर रहेगी।

जरणादक कार्य में अब और बहब के उत्पादन की रहें। यदि हम ज्यादा नहीं आरम्भ म इन दोनों कार्यों में लगा विक्त स्था वे तो हम न केवल भारत की जात्मानिक महान् आवस्यकताओं की पुत्ति करेंगे, अभिनु आसुरी बजे की पराजिन करते में भी हमारा बहुत बड़ा योगतान होगा।

हरू डी, २१ ७ ५१

--- হু৹ব্রু



### यह पूरक अंक

'जीवन-साहित्य' के गतांक में दी गई मूचना के अनुसार प्रस्तुत अंक 'प्राकृतिक चिकित्सा' विशेषांक के पूरक अंक के रूप में पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जा रहा है। पिछले अंक में प्राकृतिक चिकित्सा के सैंडान्तिक तथा इस अंक में व्यावहारिक पक्ष की सामग्री दी गई है। उपवास कब, किस प्रकार और कितने दिन का करना चाहिए; स्नान कितनी तरह के होते हैं और किस अवस्था में कीनसा स्नान लेना चाहिए; एनीमा से लाभ, उसके लेने की विधि; मिट्टी की उपयोगिता, विभिन्न रोगों में उसका प्रयोग; वैज्ञानिक मालिण; सामान्य रोगों का घरेलू इलाज, आदि-आदि वातों की जानकारी इस अंक में कराई गई है। वस्तुत: दोनों अंक एक-दूसरे के पूरक हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा की विधियां वैसे वड़ी ही सरल हैं और घर पर की जा सकती हैं, लेकिन फिर भी पाठकों से हम अनुरोध करेंगे कि जटिल या जीर्ण रोगों में इन उपचारों को वे किसी अनुभवी निसर्गोपचारक से परामर्श करके अथवा उनकी देख-रेख में करें। जल्दी में उल्टे-सीधे, अधूरे प्रयोग करने से विशेष लाभ नहीं होता, हानि की ही संभावना रहती है।

इस अंक में हम जनसाधारण के लाभ के लिए खास-खास प्राकृतिक चिकित्सालयों तथा प्राकृतिक चिकित्सा की कुछ प्रामाणिक पुस्तकों की सूची व संक्षिप्त परिचय देना चाहते थे; लेकिन पर्याप्त सामग्री इकट्ठी न होने के कारण उसे अगले अंक में देने का विचार किया है। निसर्गोपचारक वन्युओं से हमारा अनुरोध है कि वे इस सम्बन्य में आवश्यक सामग्री भेजकर अनुग्रहीत करें।

इन दो अंकों में देने के वाद भी बहुत-मी सामग्री हमारे पास शेप रह गई है। कई छेख तो ऐसे हैं, जो हमने आग्रह-पूर्वक प्राप्त किये थे। स्थानाभाव की अपनी विवयता के लिए हम क्षमा चाहते हैं। 'जीवन माहित्य' के अगले अंकों में मुविधानुसार उन महत्वपूर्ण रचनाओं का उपयोग करने का प्रयत्न करेंगे। —य

### अनैतिक तत्वों का मुकावला

इस समय हमारा देश ऐनी विचित्र स्थिति में से गुजर रहा है कि वह नन्दन कानन भी वन सकता है और रोरव नरक भी। अ।जादी मिलते ही जिस पाशवता का नग्न नृत्य हुआ और अब भी तरह-तरह के नैतिक ह्याम के जो दर्शन हो रहे हैं, उनकी प्रेरक शक्तियां देश को नरक की ओर छे जाना चाहती हैं; छेकिन दूसरी ओर जिन शक्ति और शृद्धि के स्रोतों ने गांधीजी के नेतृत्व में हमें आज़ाद कराया, आजादी के बाद देश में उपस्थित कठिन समस्याओं के अच्छे हल निकाले, बावजूद अगुद्ध शक्तियों के, उनकी आवाज चारों ओर से उटती नज़र आ रही है। यह सब लक्षण पृथ्वी पर स्वर्ग को लाने की ओर संकेत करते हैं। इनके वावजूद एक जवरदस्त श्रद्धा हमारे मन में यह है कि गांबीजी जैसी गुद्धात्मा के तप और विल्दान का नतीना यह होंगज नहीं निकल सकता कि देश में आसुरी शक्तियों की विजय हो। श्री अरविन्द की साधना और सिद्धि के सम्बन्ध में भी हमारा यही विश्वास है। जो आनुरी शक्तियां या असा-माजिक या अनैतिक तत्व काम कर रहे हैं उनको परास्त करना ही है; बल्कि हमारे सामने सबसे महत्वपूर्ण कार्य यही है। उनको हम परास्त तभी कर सकते हैं जब हम स्वतः उनके प्रभाव से मुक्त हों और मुक्त रहने का सतत प्रयत्न करने रहें। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारा संघर्ष सबसे पहले हमारे अपने अन्दर हैं । जैसे-जैसे हमारे भीतर संघर्ष कम होता जायगा, हम वाहर के अवांछनीय बलों को पराजित करने में सफल हो सकते हैं। लेकिन कोरी ऐसी भावना रखने से यह काम नहीं होने का। उसके (शेष पृष्ठ २३५ पर)



### ग्रारोग्य-मन्दिर

में त्र्याकर

धारोग्य मन्द्रिर

### त्रारोग्य लाभ कीजिये!

यहां श्रापको प्राकृतिक चिकित्सा के साधन जल, धूप, मिट्टी, वायु, श्रासन, प्राणायाम, मालिश, उपवास, युक्त श्राहार की विधि कराई और बताई जायगी। सूर्य - किरणा - चिकित्सा, दूध-कल्प, जड़ी - वूटियां श्रोर विचार-शिक्त के प्रयोग से भी श्राप परिचित होंगे। श्रापना स्वास्थ्य लौटाने के साथ-साथ श्रापने कुटुम्बवालों श्रोर इष्ट मित्रों को प्राकृतिक साधनों द्वारा रोगमुक्त श्रीर स्वस्थ रहने की सलाह देने लायक हो जायेंगे।

विशेष जानकारी के लिए

परिचय-पत्र भेजने को लिखने की कृपा करें। संचालक

**त्रारोग्य-मन्दिर, गोरखपुर** 

### खुशो के किसी भी सुत्रवसर पर प्रियजनों को देने के लिए

# श्रनुपम भेंट

	१. गांधी-साहित्य	य का	सेट (गांधीजी की पुस्तकें)	
ਲਾਲੰਤਾ ਸ਼ੜਤੜ	(स्तार १)	31	/. \ -== -AG-	

(१) प्रार्थना-प्रवचन (खण्ड १)	₹)	(५) धर्म-नोति	ર)					
(२) प्रार्थना-प्रवचन (खण्ड २)	રાા)	(६) दक्षिण अफीका के सत्याग्रह का इतिहास	(H)					
(३) गीतामाता	૪)	(७) मेरे समकालीन	۷,)					
(४) पंद्रह अगस्त के बाद	ર)	* *	',					
२. गांधी-साहित्य का सेट (गांधीजी के विषय में )								
(१) बापू की-कारावास-कहानी (सुशीला नैयर)		(५) गांधी अभिनंदन ग्रंथ (सम्पादक राधाकृष्णन्)	8)					
		(६) बापू के चरणों में (ब्रजकृष्ण चांदीवाला)	रम)					
(२) राष्ट्रपिता (जवाहरलाल नेहरू)	२॥)	(७) वा, वापू और भाई (देवदाम गांवी)	ш)					
(३) बापू (घनव्यामदास बिङ्ला)	₹)	(-) 3	(II)					
(४) श्रद्धा-कण (वियोगीहरि)	१)	(९) वापू के आश्रम में (हरिभाऊ उपाध्याय)	٤)					
३. महापुरुषों व लोकसेवकों के आत्म-चिरतों का सेट								
(१) आत्म-कथा (गांधीजी)	हा।)	(५) मेरा जीवन-प्रवाह (वियोगी हरि) ४	m)					
(२) आत्म-कथा (राजेन्द्रवावू)	१२)	(६) साधना के पय पर (हरिभाऊ उपाध्याय) ३	u)					
(३) मेरी कहानी (जवाहरलाल नेहरू)	१०)							
(४) प्रवासी की आत्म-कथा (भ० दयाल संन्यासी	() ()	(७) मेरी मुक्ति की कहानी (टाल्स्टाय)	१।)					
४. विनोवा-साहित्य का सेट								
(१) शांति-यात्रा	२॥)		२।)					
(२) विनोबा के विचार (२ भाग)	٧)	(६) ईंगावास्यवृत्ति	٤)					
	٠)		= )					
(३) गोना-प्रवचन	२॥)		ર)					
(४) सर्वोदय विचार	<b>(11</b>		= )					
11 77-	~		,					
५. साहित्य-सृष्टार्क्यों की रचनात्र्यों का सेट								
(१) अशोक के फूल (हजारीप्रसाद द्विवेदी)	₹)	(५) हमारा स्वाबीनता-संग्राम (विष्णु प्रभाकर) १	(H)					
(२) पृथिवी-पुत्र (वासुदेवशरण अग्रवाल)		(६) जीवन-साहित्य (काका कालेलकर)						
(३) पंचदशी (निवंध-संग्रह)	१॥)							
(४) सप्तदशी (कहानी-संग्रह)	(۶)		ξΠ)					

### ये पांचों सेट हमारे यहां से लीजिये।

व्यवस्थापक

सस्ता साहित्य मगडल, नई दिल्ली।



अहिंसक नवरचना का मासिक

RECEIPED

हरिभाऊ उपाध्याय मगणल जैन



सिनम्बर १६४१

याठ धाना

ुसरता साहित्य मंडल प्रकाशन

# वापिक मूल्य ४) ] जिल्लि - शाहित्य [एक प्रति का 11)

### लेख-सूची

१. जय मृत्युखय, जय!	्रेशी रवीन्द्रनाथ ठाकुर	च <b>३</b> ७
२. क्रांतिकारी क्रोपाटिकन	श्री वनारसीदाम चनुवँदी	হ্ ३९
३. स्याम के सांस्कृतिक पृष्ठ	प्रो० रंजन	হ্প દ
४. मोनैको का कैदी	श्री मोपासा	२ ४९
४. भारत की ग्वाच समस्या	श्री रामसिह रावल	হ্দ্ত
६. श्रामों में स्वास्थ्य	श्री भगवतनारायण भागंव	၁့၆့၁
७. सत्य की खोज में	टा० कुलरंजन मुखर्जी	<b>२५</b> ६
<ul><li>नक्क का बोभा</li></ul>	र्श्ना विष्णु प्रभाकर	२५७
<ul><li>कसौटो पर</li></ul>	समालोचनाएं	568
१०. क्या व कैसे ?	सम्पादकीय	<b>२</b> ६४
<ul> <li>श्. भारत की खाद्य समस्या</li> <li>व. प्रामों में स्वास्थ्य</li> <li>सत्य की खोज में</li> <li>तर्क का वेशिक</li> <li>कसौटी पर</li> </ul>	श्री रामिसह रावल श्री भगवननारायण भागंव डा० कुलरंजन मुखर्जी श्री विष्णु प्रभाकर समालोचनाएं	સ્ય સ્ય સ્ય સ્ય

### पाठकों से निवेदन

"जीवन-साहित्य" का प्रत्येक अंक हमारं कार्यालय से सावधानी के माथ भंजा जाना है, फिर भी बहुत से अंक टाक में डधर-उधर हो जाते हैं। हमारे पास ऐसी शिकायनों के अनेक पत्र आते हैं। जिन पाठकों को अंक नहीं मिलता, उनका शिकायत करना स्वाभाविक ही है। इस संबंध में दो बातों का विशेष ध्यान रखने का हम ग्राहकों से अनुरोध करेंगे:

 प्रति महीने के अंत तक यदि उन्हें अंक न मिठे तो टाकखाने मे मालूम करें। यहा मे पता न चेठे तो हमारे कार्यालय को िल्यें। टाकथाने का पत्र साथ में जरूर भेजें।

२. अपनी ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें।

विना इन दो वातों के तत्काल कार्रवाई करने में हमें किठनाई होगी।

यदि अंक न मिले तो महीनों प्रतीका करने की अवध्यकता नहीं है। महीने के अंत में खोजबीन जनर कर लें।

चंदा समाप्त होने पर बहुत से ग्राहक जब नये साल के लिए रुपये भेजते हैं तो किसी दूसरे के नाम में भेज देते हैं। बह रुपया भेजने वाले के नाम जमा होजाना है और पिछले वर्ष के ग्राहक के नाम बी० पी० चली जाती हैं। रुपया भेजने समय ग्राहक कूपन पर पिछले वर्ष की ग्राहक-संख्या लिख दें तो उससे किनाई हल हो जाती है। यदि पता बदलें तो कूपन में उसकी भी भूचना दे दें। ब्यवस्था ग्राहकों के सहयोग से ही सुचार रूप में चल सकती है।

व्यवस्थापक

ंजी व नू - सा हि त्य

नई दिल्ली

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा बिहार प्रांतीय सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाइने रियों तथा उत्तरप्रदेश की प्रान्य पंचायतें के लिए स्वीकत



सितम्बर १६४१



#### जय मृत्युञ्जय, जय !

श्री रवीन्द्रनाय ठाडुर

[रवीन्द्र ठाकुर को 'शिश्तीयें' कविता मे, जिसके कुछ अश का अनुवाद नीचे दिया जा रहा है, जिस महामानव और महान् नेता की कल्पना की गई है, वह गांधीजी को ध्यान में रख कर की गई है। पढ़कर लगता है, जैसे कवि ने समूचे भूत और भविष्य को अपनी आखों के सामने देख लिया होगा। गांधीजी के महाप्रयाण की घटनाओं को देखते प्रतीत होता है कि किव की भविष्यवाणी कितनी ठीक थी।—अनु० ]

क भे गिरि शिक्षर पर ग्रुप्ध निहार की गीरवता में भक्त बंटा हुआ है। उसकी निहायिहीन आखें प्रकार की लोग में आमारा की और लगी हुई है। जब मेप पर्नीमृत हैं और निशायर रक्षी चीरकार करते उसते हैं तब वह कहता है, "भाई, मम न वरो। मनुष्य को महान् जानो।" (केविन) वे (अनुषापी) नहीं सुने । में केविन केविन में मारावित हैं और प्युक्त को सामत् है। उनके छे को सायुवा जारम प्रकारना है। केविन जब से आमात गाते हैं तो प्रन्य कर उठते हैं, 'आई, तुम कहा हो?' उत्तर में के भुत गाते हैं, ''में तुम्हारे पास हीती हैं।' अपकार में के भुत गाते हैं, ''में तुम्हारे पास हीती हैं।' अपकार में के भुत गाते हैं, ''में तुम्हारे पास हीती हैं।' अपकार में के भूत गाते हैं, ''में तुम्हारे पास हीती हैं।' अपकार में के भूत गाते हैं, ''में तुम्हारे पास हीती हैं। 'अपकार में के भीत मान निर्माण निर्माण केविन केविन कीती हैं। 'हिंदा से कर्मिक अन्तरीत महसूर्य के बीर मृतवृष्णा के अधिकार को नेकर मनुमा दिर्पित नेकड खाशा करता वाराया।'

बारल छट गये और पूर्व दिगन्त में सुन्तारा दीस गदा। पूर्व्या की छाती से आराम ना दीघेश्याम निकला। वनन्या परक्य-मर्गर से हिल्लीनिका हो उठा। शासाओ पर पत्ती चहुरू उठे। मस्त ने नहीं, "समय सा गया है।" लोगों ने पूछा, "किसका समय ?" अयाव मिन्म, 'बाबा का।" वे बैठकर सोचते रहे। टेकिन उन्होंने वर्ष नहीं समझा। श्रम्य-अपने मन के अनुसार अर्थ कमा किया। क्या का स्पर्ध पदती के अतर सक पहुंच गया। विश्व-सत्ता के प्रत्येक मूल में प्राणों की चंचलता स्पन्दित हो उठी। न जाने कहां से एक अत्यन्त सूक्ष्म स्वर सबके कानों में कह गया, "सार्थकतां-तीर्थ पर चलो।" यह वाणी जनता के कंठों में एक महत्त प्रेरणा हारा वेगवती हो उठी। पुरुषों ने ऊपर की ओर आंखें उठाईं और स्त्रियों ने हाथ जोड़कर माथा टेक दिया तथा वच्चे ताली वजा कर हंस उठे। प्रभात की प्रथम किरण ने भक्त के ललाट पर सुनहरे रंग का चंदन लगा दिया और सभी वोल उठे, "भाई, हम लोग तुम्हारी वन्दना करते हैं।"

भक्त के पीछे-पीछे उपल-खंड से आकीर्ण निर्मम दुर्गम पय पर विलय्ध और दुर्बल, तरुण और वृद्ध, पृथ्वी पर शासन करनेवाले और आधा पेट खाकर हल चलानेवाले किसान सभी चले। यात्रियों में कोई यका हुआ है, जिसके पैर क्षत-विक्षत हो गये हैं। किसी के मन में कोध है और किसी के मन में सन्देह। हर कदम को वे गिनते हैं और पूछते हैं कि अभी कितना रास्ता और वाकी है। उसके उत्तर में भक्त केवल गान गाता है। मुनकर उनकी भृकुटि तन जाती है; किन्तु वे लौट नहीं पाते। चलने वाले जनसमूह का वेग और अव्यक्त आशा उन्हें ठेले हुए लिए जा रही है। उनकी नींद कम होने लगी और उन्होंने विश्वाम लेना कम कर दिया। एक दूसरे से आगे निकलने की उनमें होड़-सी लग गई। उन्हें भय हुआ कि विलम्ब करने के कारण वे बंचित न रह जायें। दिन-पर-दिन वीतते गए, दिग्मंडल बदलते रहे। अज्ञात का आमंत्रण अदृश्य संकेत द्वारा इंगित करता रहा। उनके मुख का भाव कमशः कठिन होता जा रहा था और उनके कष्ट बढ़ते जा रहे थे।

रात्रि हो गई। यात्रीगण वटवृक्ष के नीचे आसन विद्यानर वैठे। हवा के झोंके से प्रदीप बुझ गया और घोर अन्यकार छा गया, जैसे निद्रा गहरी होकर मूर्छा में परिणत हो गई हो! जनसमूह के बीच से कोई-एक हठात् उठ खड़ा हुआ और अधिनेता की ओर उंगली निर्देश करते हुए बोला, "मिथ्यावादी, (तुमने) हम लोगों को ठगा है।" एक कंठ से दूसरे कंठ में भत्सेना फैलने लगी। स्त्रियों का विद्येप तीव्र हो उठा और पुरुषों का गर्जन-तर्जन प्रवल होने लगा। अन्त में एक साहसिक खड़ा हो गया और प्रचण्ड बेग से उसे (अधिनेता को) मारा। अन्यकार में उसका मुख नहीं दीख पड़ा। एक के बाद दूसरा उठा, प्रहार-पर-प्रहार किया और उसका प्राणहीन शरीर मिट्टी पर लोट गया। रात्रि निस्तब्ध थी। बहुत दूर से झरना का मयुर शब्द क्षीण होकर आ रहा था और हवा में यूथिका की मृदु सुगंघ फैली हुई थी।

यात्रियों का मन शंका से अभिभूत है। स्त्रियां रो रही हैं। पुरुप चिढ़कर उन्हें टांट रहे हैं, "चुप रहो।" कुत्ते भींक उठते हैं, चात्रुक खाकर उनका भींकना वन्द हो जाता है। रात्रि समाप्त होना नहीं चाहती है। अपराध का अभियोग लेकर स्त्रियों और पुरुपों में तीव्र तर्क होने लगता है। सभी चीत्कार करते हैं, सभी गर्जन करते हैं और अन्त में छुरी निकलने की नीवत आ जाती है। उसी समय अन्यकार क्षीण हो गया और प्रभात की किरणों ने पहाड़ की चोटियों पर फैल आकाश को आच्छादित कर दिया। हठात् सभी स्तव्य हो जाते हैं। सूर्य की रिहमयों ने लहूलुहान मृतक के शांत ललाट का स्पर्श किया। स्त्रियां आर्त्त स्वर में अन्दन कर उठीं और पुरुपों ने दोनों हाथों से मुख ढक लिया। कोई अज्ञात भाव से भाग जाना चाहता है, (किन्तु) नहीं भाग पाता। अपनी विल के पास वे अपराध की शृंखला में वंथे हुए हैं। परस्पर एक-दूसरे से पूछते हैं, "हम लोगों को अब कौन रास्ता दिखायेगा?" पूर्व देश का एक वृद्ध वोला, "जिसको हम लोगों ने मार डाला है वही।" सभी निरुत्तर और नतिहार हैं। वृद्ध ने फिर कहा, "सन्देह के कारण हम लोगों ने जसे अस्वीकार किया और कोध में आकर उसका वध कर टाला। अब प्रेम के हारा हम लोग उसे ग्रहण करेंगे, क्योंकि वह मृत्यु हारा हम सभी लोगों में जीवित है, वहीं महा मृत्युंजय है।" सभी उठ खड़े हुए। एक स्वर से सब ने गान किया—"जय, मृत्युंजय, जय!"

#### कान्तिकारी कोपाटकिन

#### श्री वनारसीदास चतुर्वेदी

"जनाय ब्लाडिमिर इलियच (छेनिन), जब आपकी आकाक्षा तो यह है कि हम एक नवीन सत्य के मसीहा वन और नवीन राज्य के सस्यापन, तो फिर आप किस प्रनार ऐसे बीभत्स सरकारी अनाचारी और गैर-मनासिब गव-मेंटी तौर-तरीको को अपनी स्वीकृति दे सकते हैं. जैसे कि किसीके अपराय के लिए उसके नाते रिक्तेदारा को गिरपनार कर लेना<sup>?</sup> इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप जारशाही के विचारों से चिपके हुए है <sup>1</sup> पर शायद उन निरपराध आदिमियो को पकड कर आप अपनी जान की रक्षा करना चाहते हैं। क्या आप इतने अन्धे हो गय है और अपने डिक्टेटरशिप के विचारों के इतने गुलाम वन गये है कि आपको यह बात नहीं सुझती कि आप-जैसे युरोपियन साम्यवाद के अग्रणी के लिए यह कार्य (रुज्जाजनक तरीको द्वारा निरपराधो की गिरफ्तारी) सबंधा अनिधकार चेच्टा है? आपका यह काम भयकर रूप से त्रुटिपूर्ण तो है ही, बल्कि उससे यह भी प्रकट होता है कि आप मृत्यु से हरते हैं, जो सर्वया तुर्वे विहीन बात है । उस कम्युनियम ने विषय म बया कहा जाय, जिसका एक महत्वपूर्ण रक्षक इस प्रकार ईमानदारी की अत्येक भावना को पैरो-तले क्चलता है ?"

यह है उस महरवपूर्ण पनका एक जया, जिसे अपने जीवन के अधिना दियों में ('मृत्यूर्ण दो महोने पूर्व') जैपारिकन ने लेकिन को लिखा था। होने पूर्व') जैपारिकन ने लेकिन को लिखा था। होने पात कर विद्युर्ण मानक में के दिन होने हैं के हैं या निकार के हैं या निकार के हैं या निकार के हैं या निकार परिकेण मानक की दीवारी कर रहे थे। इस शब्दी में उत्तिसची और बीसकी सताब्दि के उस महापुरुष की आराम होने हैं, जियने नमी जन्याय के साम समझात करना मुनासिक न एमझा, जियने साम कर साम सोनी दो पित प्रतिस्ता कर साम समझात करना मुनासिक न एमझा, जियने साम कर साम सोनी मी पित्रवार पर समझा कर है और दिया

और जिसने ईमानदारी तथा अपरिग्रह ना बह दूष्टान्त उपस्थित कर दिया, जिसकी मिसाल ससार के राजनीतिन कार्यकर्ताओं के इतिहास में दुर्लम ही हैं।

#### मत्रित्व बनाम जूतों पर पालिश

जब कैरेन्स्की ने कोपाटकिन से कहा था कि "आप हमारे सरकारी मन्त्रिमडल में जिस किसी पद को चन कीजिये, वही आपको अपित हो जायगा", उस समय कोपाटकिन ने उत्तर दिया धा-"मन्त्रित्व के कार्य की अपेक्षा तो में जता पर पालिश करनेवाले समार का काम अधिक आहरणीय नथा उपयोगी मानता ह । इसी प्रकार दस हजार रूबल की पेंशन के प्रस्ताब को उन्होंने दुकरा दिया और जार के शीत-कालीन महलो के निवास की सर्वया उपेक्षा की। यह तो हुई लेनिन के पूर्व के शासको के समय की वात, स्वय साम्यवादी सरकार के शिक्षा-भन्त्री लनाचरस्की ने जब कोपाटकिन को लिखा---"आप सरकार से डाई लाख रूवल हेकर अपनी विताबो के छापने का अधिकार हमें दे दीजिये," तो कौपाटिकन ने उत्तर दिया-"भैने बभी शासन से पैसा नहीं लिया और न अव ही सरकारी सहायता ग्रहण कर सकता ह ।" यह उन दिनो की बात है, जब कोपाटकिन की बुद्धावस्था के अनुकृप पर्याप्त भोजन भी नहीं मिलता या, जब उनके पास रोशनी की भी कमी थी और कोई सहायक भी नहीं या।

तो किए प्रस्त उठता है कि बादसंबाद को पराकादत दुव्या देनेवाले व्यायदिन अपनी पुरन-पार कैंसे करते थे ? वेह निवाले के ४१ वर्ष उन्होंने अपनी केदनी के वल-बुते पर ही काट दिये। इसमें भी अराजकवादी हेल्डी के उन्होंने एक पंता नहीं कमाया! ये अन्यन्त उन्व कोटि के वैज्ञानिक ये और वैज्ञानिक लेला तथा टिप्पणियों से उन्हें कुछ पबदुरी मिल बाती थी। बडी सरस्ता के साय उन्होंने अपने आत्मचरित में लिखा है—"अगर रूस से पर्याप्त समाचार आ जाते अथवा वैज्ञानिक विषयों पर मेरे नोट स्वीकृत हो जाते तो रोटी-चाय के साथ मक्खन भी मिल जाता, नहीं तो रूखी रोटी पर ही गुजर करनी पड़ती।"

### अद्भुत ञ्रातिथ्य

मुप्रसिद्ध लेखन फैंन हैरिस ने कोपाटिकन के विलायत के दिनों के आतिथ्य का एक अच्छा शब्दिचित्र खींचा है—"कोपाटिकन की धर्मपत्नी सोफी भोजन तैयार कर रही हैं पित के लिए, छोटी-सी पुत्री के लिए और अपने लिए, कि इतने में कोई अतिथि महोदय न जाने कहां से आ टपके! कोपाटिकन ने जल्दी ही भीतर जाकर कहा—"सोफी, जरा साग में थोड़ा पानी मिला देना।" थोड़ी देर बाद एक और अतिथि-देव पधारे और कोपाटिकन को फिर भीतर आकर कहना पड़ा—"कुछ पानी और।" इस प्रकार की किया कई बार करनी पड़ती और सोफी को ढाई आदिमियों के बजाय छ:सात आदिमियों का भोजन करना पड़ता। मेहमानदारी कोपाटिकन के अत्यन्त प्रिय गुणों में से थी और कोई विल्कुल अजनवी आदमी भी उनके घरपर किसी संकोच का अनुभव न करता था।"

संसार में अनेक राजनीतिक महापुरुप हुए हैं और होंगे, पर मिस्तप्क की विशालता, हृदय की उदारता, चित्र की स्वच्छता और जीवन की उच्चता के खयाल से कोपाटिकन का दृष्टान्त प्रायः अनुपम ही सिंख होगा। वैसे प्रारम्भिक तथा यौवन के वर्षों के खयाल से कोपाटिकन के जीवन का सर्वोत्तम वृत्तांत तो उनके आत्मचरित मिमोयर्स आव ए रिवोत्यूशनिस्ट से ही मिल सकता है, पर वह ग्रंथ सन् १८९८ तक का ही है और उसके वाद कोपाटिकन २३ वर्ष और भी जीवित रहे थे। इस कारण उनके एक विस्तृत जीवन-चरित की आवश्यकता थी और उसकी पूर्ति जार्ज वुडकाक और आइवन अवाकुमोविक नाम के दो ग्रंथकारों ने कर दी। (प्रिस पीटर कोपाटिकन' — प्रकाशक वोर्डमैन)

कोपाटिकिन का जन्म सन् १८४२ में हुआ और मृत्यु १९२१ में। उनके जीवन-चरित में तत्कालीन रूस का एक चलता-फिरता चित्र-सा दिखाई देता था। उनका आत्म-चरित इतनी खूवी के साथ लिखा गया है कि वह उन्नीसवीं शताब्दी का सर्वोत्तम आत्मचरित कहा जाता है। श्रोपाटिकिन का जीवन एकांगी न था, वह बहुंअंगीन था। कांतिकारी अराजकवादी तो वे थे ही, पर साथ-ही-साथ संसार के भूगोलवेत्ताओं में भी वे शिरोमणि थे और समाज-विज्ञान के भी जाने-माने आचार्य। रूस तथा यूरोप के सत्तर वर्ष के इतिहास पर भी उनके जीवन से विशेप प्रकाश पड़ता है।

### महात्मा गांधी श्रीर शिंस क्रोशटकिन

कोपाटिकन के इस जीवन-चरित को पढ़ते हुए हमें उनके और गांचीजी--इन दोनों महापुरुपों के जीवन तथा दृष्टिकोण में अद्भुत साम्य प्रतीत हुआ। साधनों की पवित्रता पर वे उतना ही जोर देते थे, जितना कि महात्मा गांची । मेरी गोल्डस्मिय नामक एक यहूदी अराजकवादी ने लिखा है-"जो भी नवयुवक कोपाटिकन से मिलने जाता था, उसकी बात वे वड़ी प्रेमपूर्ण मुस्कराहट और सीम्य भावना से सुनते थे। पर एक बात थी कि यद्यपि प्रत्येक ईमानदार तथा उत्साही युवक के प्रति उनका व्यवहार उदारता-पूर्ण रहता था तथापि साधनों के चुनाव के विषय में काफी कठोरता से काम लेते थे। प्रचार के कुछ ढंगों को कोपाटिकन असहय मानते थे। अनुचित सायनों का जिक्र करते हुए उनका स्वर कठोर हो जाता या और उनकी निन्दा विना किसी लगा-लेस के होती थी। 'चाहे जैसे बुरे-भले साघनों से अपने लक्ष्य की प्राप्ति' इस सिद्धांत से उन्हें घोर घृणा थी और चाहे संगठन का या रुपये एकवित करने का या विरोधियों के प्रति व्यवहार का या दूसरी पार्टियों के साथ संबंध स्थापित करने का, अगर कोई सावनों की पवित्रता को नगण्य मानता, तो वे उसे नफरत की निगाह से देखते ये और उसे गईणीय मानते थे।" श्री जवाहरलालजी का कयन है कि 'सावनों की पवित्रता' पर जोर देकर महात्माजी ने राजनीति की वड़े अंचे घरातल पर ला दिया। संसार की राजनीति की उनका एक खासा दान या और इस विषय में कोपाटिकन उनके अप्रणी ही भे।

शिक्षा, कृषि, यारीरिक थम का महत्व और विकेन्द्री-बरण के सिद्धाती पर ती दोनों महापुरुषों के विचार विन्काल मिलते-जुलते हैं । सन् १८९६ में जब टाइनसाइड ने **कुछ नार्यक्ता एक कृषि-सूच कायम करके खे**ती करना चाहते थे, जोपादिन ने उन्हें एक पत्र लिखन र प्रोत्साहित निया था और साथ ही मार्ग की बाधाओं ने विधय मे भी आगाह कर दिया था। उन्होंने बनलाया था कि छोटे समृह में अक्सर झगडे ही पडते हैं, शहरी कायकर्ताओं के लिए भूमि पर काम करना मुश्किल हो जाता है, पूजी की कमी का खतरा अलग रहता है और सन्यासीपन की भावना गलत रास्तेपर ले जाती है। इसके बाद उन्होने लिखा था-- "यदि कृषि का वार्ष सुमको आकर्षक लगता है तो उसीको ग्रहण करो। तुम्हे उसमें अपने पहले के आदिमयो की अपेक्षा सफलता की आशा अधिक है । वाम-से-कम क्षम्हे सहानभृति मिलेगी ही, और मेरी सहानुभृति तो बरावर तुम्हारे साथ रहेगी।" इसके पहले वे एक पत्र में कोपारिक ने अपने मित्र रोबिन को लिखा था-"वौदिन थम करते-करते मैं तो तग आ चुका हू। अपनी लेखनी के द्वारा जीवित रहना मेरे लिए वठिन हो रहा है। मै उसके बोझ से दबा जा रहा हू । इसके बजाय अगर में साग-सरकारी पैदा करता अथवा अनाज, तो दूसरी की इस सिखा भी सनता था।"

अब कोपादिन के इस पत्र की तुल्ला की जिये महात्माओं के उस पत्र को जा लगी पे पहिलाओं के उस पत्र को अविकीं महात्माओं के उस पत्र की प्रतिकिंग समान्य में १९१२ में लिखा था। उस पत्र की प्रतिकिंग सम प्रकार है—"माई तोतातामत्री," भीरी आकाता यह है कि हम इतने फल और इतनी माओ पैवा करें, जो हमारे लिए पर्यान हो। यदि गो-माता के लिए पास आदि वैद्या करें और आपम के लिए जनात, हो सेवी के पूर्ण आदर्भ को हम पढ़ेथे। लिल में जानता हु कि यह सब मूर्च की जनाता है। सेवी के पह सब मूर्च की जनाता है। सेवी के पह सब स्वार को स्वार के स्वार के स्वार में सबसे मान किया और वार्त मेंने इस यारे में सबसे ज्यादा की है। जया कर, सेनी उन्हीं चीजों से हैं, जो करने ना सवाल मुसकी आपों आप सीनने पर जाया। — व्यापू में दोनों पत्र में किता जाया किया साम है। यो पारिन ने हिप के सिवस में भी अनुस्थान किए थे। जब वे प्रासीसी जेलमें विवस सुमें भी अनुस्थान किए थे। जब वे प्रासीसी जेलमें विवस सुमें भी अनुस्थान किए थे। जब वे प्रासीसी जेलमें

षेतो सरकार ने उन्हें अपने इपि सम्बन्धी प्रयोगों के लिए एक क्षेत्र दे दिया या और ऐमा नहा जाता है नि उन्होंने जो प्रयोग वहा निये, उन्होंने कृषिनजतत् में एक माति हो कर दीं। इन्ही प्रयोगों के आधार पर उन्होंने अपनी सुप्रविद्ध पुरतक 'पील्य, फैक्टरीज एड वर्गेशाएं निली। सुप्रविद्ध पुरतक 'पील्य, फैक्टरीज एड वर्गेशाएं निली। सुप्रविद्ध पुरतक 'पील्य, फैक्टरीज एड वर्गेशाएं निली।

कोपाटकिन के जीवन-चरित के लेखको न लिखा है---"कोपाटविन तथा उनके साथियों के बीच में आतंकबाट पर बराबर मतमेंद रहा ।" स्वय कोपाटकिन ने भी एक जगह लिखा या-"साधारणत यह कहना ठीक होगा नि आतन की प्रतिष्ठा एक सिद्धात के रूप में कर देना मर्खता-पूर्ण है।" इस सम्बन्ध में सन् १८९३ की एक महत्वपूर्ण घटना वहा दी जाती है। कोयले की सानो में हडताल हो गयो थी। विलायत के मजदूर-नेना एक होटल में एकत्र हुए ये और उन्होंने कोपाटिकन को भी निमित्रन किया था। जवतक खान के मजदूरों के कप्टों की वर्षा चलती रही, समी लोग एक-दूसरे से सहमत रहे, पर ज्योही जपायी का विषय छिडा कि कोपाटकित की 'शान्तिविवता'ने मानो भेज पर विस्फोट का काम किया। मजदूर-दल के संभी नेता सरकार के खिलाफ कठोर चपाय काम में लाने के पक्षपाती निकले । इसके विपरीत कोपाटिकन का कहना था कि हमें सत्याग्रह, बीच-बचाब तया प्रचार से काम लेना चाहिए। इस बाद विवाद का नतीजा यह हुआ कि मीटिंग भग हो गई । टामस मैन नामक मजदूर-नेना बार-बार चिल्ला रहे थे-"हमें विष्यम की नीति ना आध्य लेना चाहिए. हमें चीजो की तोड डालना चाहिए, हमें जालिमी की खत्म कर देना चाहिए।" लेकिन ज्योही कुछ शान्ति होती, प्रिस कोपाटकित अपने वैदेशिक लहने में बड़ी विनग्रना से निरतर यही बहते सनाई देते-"मही, बिनास नही, हमें निर्माण करना चाहिए। हमें मनप्यों के हदय का निर्माण करना चाहिए। हमें ईंश्वर के राज्य का निर्माण करना चाहिए।" ये शब्द तो जिल्कुल महात्मा गांधी जैसे ही प्रतीत होते हैं <sup>1</sup> और उन दिनो--१८९३ में--महारमाजी ने दक्षिण अफ्रीका म बनालत के लिए प्रवेश निया ही था।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि शोपाटिशन ने जीवन-वरित के लेखक भी अन्त में इसी परिणाम पर पहचे हैं कि संसार का कल्याण 'संगठित हिंसा' द्वारा नहीं होगा, विलक्त शांतिपूर्वक एक-दूसरे के प्रश्नों को समझने के द्वारा। शासन अथवा 'राज्य' द्वारा नहीं होगा, वरन् पारस्परिक सहयोग के आधारपर स्थित सहस्रों समितियों द्वारा। केंद्रीयकरण द्वारा नहीं, विकेंद्रीयकरण द्वारा! देश का—देश का ही नहीं, संसार का—यह दुर्भाग्य है कि हमारे यहां तुलनात्मक अध्ययन करके संमार के प्रमिद्ध-प्रसिद्ध विचारकों के विचारों का सारांश निकालनेवाले विद्वान् बहुत कम हैं। क्रोपाटिकन तथा गांधीजी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन अत्यन्त आकर्षक है और खास तौर से आज तो, जविक दुनिया चौराहे पर खड़ी हुई है और उसके सामने ठीक मार्ग ग्रहण करने का प्रश्न उपस्थित है, यह विषय और भी अधिक महत्वपूर्ण वन जाता है। एक मार्ग है क्रोपाटिकन तथा गांधीजी का और दूसरा है मार्क्स तथा स्टालिन का।

#### स्फृत्तिंदायक जीवन

महापुरुषों के जीवन-चरितों में अदभुत स्फूर्ति प्रदान करने की सामर्थ्य होती है और इस दुष्टि से कोपाटकिन का जीवन-चरित खासा महत्व रखता है। क्या अजीव मिनेमा-जैसा दृश्य वह हमारी आंखों के सामने ला उपस्थित करता है। एक अत्यन्त प्राचीन और उच्च वंश में जन्म, जारशाही के अत्याचारों का घनघोर अंघकार, गुलामी की प्रथा का दौर-दौरा, आठ वर्ष की आयु में जार के पार्षद वालक, वारह वर्ष की अवस्था में फ्रेंच भाषा का अध्ययन और रुसी राजनीतिक साहित्य में रुचि, अपने बड़े भाई एलेक्जेंडर के साथ हार्दिक प्रेम, फीजी स्कूल में शिक्षा, साइवेरिया की यात्रा-गवर्नर-जनरल के ए. डी. मी. बनकर वहां से त्यागपत्र, फिर मेंट पीटर्सवर्ग के विञ्वविद्यालय में पांच वर्ष तक गणित तथा भूगोल का अध्ययन, क्रांतिकारी दल में मम्मिलित होना, यूरोप की यात्रा और वहां अराजकवादी संस्थाओं का संपर्क, रूस लीट कर कांतिकारी विचारों का प्रचार इत्यादि । इसके बाद का दृश्य ए. जी. गार्डिनर के रक्षाचित्र में देख लीजिये:

"नाटक का पर्दा बदलता है। जार निकोलम की अंधेरी रात दूर हो गई, लेकिन उसके बाद दासत्व-प्रथा बन्द होने के कारण थोड़ी देर के लिए जो उपाकाल आया

था, उसे प्रतिकिया के अंधकार ने ढंक लिया और रूस ंफिर पुलिस के अत्याचारों से कुचलें। जाने लगा। सैकड़ों निरपराघ आदमी फांसी पर लटका दिये गये और हजारों ही जेल में ठेल दिये गये, अथवा साइवेरिया में अपनी कन्न खोदने के लिए निर्वासित कर दिये गये। सारे रूस पर भय और आतंक का माम्राज्य था, छेकिन भीतर-ही-भीतर रूप जाग्रत हो रहा था। रुसी जार एलेक्जेंटर दितीय ने अपने शासन का सूत्र पुलिस के दो जालिम अफमरों की--ट्रेपोफ और शुवालोफ को-सीप दिया था। वे चाहे जिसे फांसी पर लटका देते थे और चाहे जिमे निर्वासित कर देते थे; लेकिन फिर भी वे कांतिकारी गुप्त ममितियों की कार्रवाइयों की रोकने में सफल नहीं हुए। ये समितियां दनादन स्वाधीनता तथा कांति का साहित्य जनसाधारण में बांट रही थीं। इस घोर अञान्तिमय वायुमंडल में भेड़ की खाल ओढ़े एक अद्भृत किसान, अदृब्य भूत की तरह इधर-मे-उधर घुम रहा है। उसका नाम बोरोटिन है। पुलिस के अफसर हाथ मल-मलकर कहते है-- 'वम, अगर हम लोग वोरोडिन को किसी तरह पकड़ पावें तो क्रांति की इस सिंपणी का मुंह ही कुचल जाय-हां, बोरोडिन को और उसके साथी-संगियों को ।' लेकिन बोरोडिन को पकड़ना आसान काम नहीं। जिन जुलाहों और मजदूरों के बीच में वह काम करता है, वे उसके माथ विश्वामघात करने के लिए तैयार नहीं। वे सैकड़ों की संख्या में पकड़े जाते हैं, कुछ को जेल का दंड मिलता है और कुछ को फांसी का, पर बोरोटिन का असली नाम और पता बनलाने के लिये तैयार नहीं।

"मन् १८७४ की वमन्त ऋतु, मंध्या का ममय । मेंट पीटमंवर्ग के मभी वैज्ञानिक और विज्ञान-प्रेमी ज्योग्रा-फिकल मोमाइटी के भवन में महान् वैज्ञानिक प्रिम कोपाटिकन का व्याख्यान मुनने के लिए एकत्रित हुए हैं। फिनलैंड की यात्रा के परिणामों के विषय में उनका भाषण होता है। रूम के 'टाइल्यूवियल' (जलप्रलय) काल के विषय में वैज्ञानिकों ने जो सिद्धांत अवनक कायम कर रखे थे, वे एकके बाद दूसरे खंटित होते जाते हैं और अकाटच तर्क के आधार पर एक नवीन सिद्धांत को स्थापना होती है। सारे वैज्ञानिक जगत् में कोपाटिकन की धाक जम जाती है। इस महापुग्य के मस्तिष्क के विस्तार के विषय

में क्या कहा जाय ! उसका शासन भिन्न-भिन्न जानी तथा विज्ञानों के समचे साम्प्राज्य पर है। यह महान यणिनज्ञ है और भूगमें-विद्या का विशेषज्ञ। वह कलाकार है और ग्रय-कार (बारह वर्ष की आयु में उसने उपन्यास लिखे थे), यह समीतज्ञ है और दार्शनिक । बीस भाषाओं का वह ज्ञाना है और सात भाषाओं में वह आसानी के साथ वातचीत कर सकता है। तीस वर्ष की आय में रूस के बोटी के विद्वारों में---उस महान् देश के कीनि-नाम्भों में त्रिस श्रोपाटकिन की गणना होने समती है। प्रिम श्रोपाटकिन को बाल्याबस्या से फीजी काम सीलना पडा या और पाच वर्ष बाद जब उनके सामने स्थान के चुनाव का सवाल आया, तो उन्होने साइवेरिया को चना था। वहा सुधार की जो स्कीम उन्होने पेश की और आमूर की यात्रा करके एशिया के भूगोल की भद्दी भूको का जिस तरह संशोधन निया, उससे अनकी कीर्ति पहले से ही फैल चकी थी, यर आज तो भौगोलिक जगत में विजय का सेहरा उन्होंके सिर श्राध दिया गया । प्रिस कोपाटिक न ज्योग्राफिकल सोसाइटी के 'फिजीकल ज्योदाफी' विभाग के सभापति मनोनीत किये राये.भाषण के बाद ज्योही गाडी में बैठवर वे बाहर निकले और एक इसरी गाडी उनके पास से गुजरी, एक जुलाहे ने तस गाडी में से उसककर कहा-'मिस्टर बोरोडिन, सलाम।' दोनो गाडिया रोक थी गई । जुलाहे के पीछे से खफिया पुलिस का एव आदमी उस गाडी में से कूद वडा और बोला-'मिस्टर बोरोडिन उर्फ प्रिस कोपाद-किन, मै तुम्हे गिरफ्तार करता हु ।' उस जामूस के इशारे पर पुलिस के आदमी नूद पड़े। उनका विरोध करना ध्यर्थ होता, श्रोपाटकिन पन ड लिये गये । विश्वासघातक जुलाहा दूमरी गाडी में उनके पीछे-पीछे चला।"

(इसके बाद वे किस प्रकार विसे की जेल में डाल दिये गए, वहा उन्हें क्या-क्या याननाए सहनी पडी और वहां से वे निस तरह भाग निवले, इसका अत्यन्त मनोरवक बुतान्त जोपाटकिन ने 'मेमोयर्स' में मिलना है ।)

४१ वर्ष की साधना

सन् १८७६ से लेकर १९१७ तक (४१ वर्ष) कोपाट-क्निको स्वदेश से बाहर व्यतीत करने पडे। कठोर-से-कठोर सायना का यह लम्बा युग केवल उनके जीवन ना ही नही, समार के राजनीतिक इतिहास का भी एक महत्व-पूर्व बन्धाय है । इस बीच में स्विटन रलेंड तथा फास में भी रहे और दो-ढाई वर्ष के लिए उन्हें फासीसी जेन की भी हवा खानी पडी । उनके सभी महत्वपूर्ण ग्रम इसी मन में लिखे गये। इनमें कई तो ऐसे हैं, जिनका विश्व-व्यापी महत्व है, जैसे 'पारस्परिक सहयोग' और 'रोटो का सवाल " बादि। उनके वातिकारी छेखों के भी कई संबह मिन-भिन्न भाषाओं में छपे थे और 'नववनको से दो बानें रे तथा अन्य लेख हिंदी में भी छन चुके हैं।

नोपाटिकन ने ही रुन्दन में सन् १८८६ में 'फ्रीडम' नामक पत्र की स्थापना की, जो अवनक चल रहा है। इसी वर्ष कोपाटकिन के जीवन की एक अत्यन्त इस्लमय घटना घटी, वानी उनके बडे भाई ने साइवेरिया से लौटते हुए रास्ते में आरमधान कर लिया । उन्हें भी देश निकाले ना दड दिया गया था, जिसके अन्तर्गत बारह वर्ष उन्हे माइवेरिया में विनाने पढे थे। जब उनके छटकारे के दिन निकट आये तो उन्होने अपने बाल-बच्चो को पहले ही रूप रवाना कर दिया और फिर एक दिन निराशा से अमिमत . होकर अपने-आप को गोली मार ली। वे महान गणितज्ञ ये-खगोलशास्त्र के बद्भत झाता ये और ज्योतिपशास्त्र के बहे-से-बड़े विद्वानों ने उनकी कल्पनाशील प्रतिमा की बहुत प्रसास की थी। महज आशका के आधारमन उन्ह जारहाती ने देश-निकाले का दह दिया था, जबकि कातिकारी वलो से उनका कोई भी सबन्ध न था। यदि उन्हे स्वाधीनतापूर्वक अपने खगोल-सम्बन्धी अनुसद्यान करने की सविधा होती तो उस शास्त्र की उन्नति में वे किनने सहायक हए होते। पर निरक्श सासको मे भला इतनी कल्पना शक्ति बहा ? तोपाटकिन के हृदय में उनके प्रति अत्यन्त थदा थी। इन दोनो भाइयो ना प्रेमनूर्ण स्पनहार आदर्श था । पर कोपाटकिन ने अपनी इस हृदयनेषक दुर्घटना का जित्र अत्यन्त सयम के साथ केवल एक बाक्य में -क्या है~"हमारी कृटिया पर कई महीने तक द स की घटा छाबी रही ।" प्रेम-कातर जोपाटकिन ने अपनी भाभी तथा भनीज-भनीजियों की यथाशक्ति सेवा की ।

१-२ ये दानो पुस्तके सस्ता-साहित्य-मण्डल स निकली है।

#### क्रोपाटिकन की मनुष्यता

कोपाटकिन की समस्त शिक्षाओं का आधार उनकी मनुष्यता थी। वस्तृतः अराजकतावाद इस विषय में मार्क्स-वाद से सर्वथा भिन्न हैं। मार्क्सवादियों की दृष्टि में व्यक्ति का कोई महत्व नहीं। मार्क्सवादी उसके साथ शतरंज के महरे की भांति व्यवहार करते है और मिद्धांत-मम्बन्धी मतभेद होने पर उसके गरीर तथा आतमा को अलग-अलग कर देने में भी उन्हें संकीच नहीं होता। पर अराजकवादी के लिए मनुष्य वस्तुतः मनुष्य है, जिसके लिए मानों उसका हृदय उमड़ा पड़ता है। साम्यवादी को अपनी 'प्रणाली' की चिन्ता है, जब कि अराजकवादी को 'मन्प्य' की। जब भी कभी अन्याय तथा अत्याचार का प्रश्न आता, कोपाटकिन विना किसी भेदभाव के उसका विरोध करते-चाहे वह अन्याय उनके विरोधी पंथ वाले पर ही क्यों न किया गया हो। उनके शब्द सुन लीजिये-- "हम व्यक्ति की पूर्ण स्वा-धीनता को मानते हैं। हम उसके लिए जीवन की प्रचुरता तथा उसकी समस्त प्रतिभाओं का स्वतन्त्र विकास चाहते हैं। हम उसके ऊपर लादना कुछ भी नहीं चाहते। इस प्रकार हम उस सिद्धांत पर पहुंचते हैं, जिस सिद्धांत को फरियर ने धार्मिक नीति-ज्ञान के विरोध में रखते हए कहा था- 'मनुष्य को विल्कुल स्वतन्त्र छोड़ दो । उसे अंगहीन मत बनाओ, क्योंकि धर्म उसको अपंग--जरूरत से ज्यादा अपंग-वना चुका है।' उसके मनोविचारों से भी मत डरो। स्वतन्त्र समाज में ये खतरनाक नहीं होते।"

प्रिंस कोपाटिकान के ग्रंथों को पढ़ जाइए, कहीं भी कोई क्षुद्र भावना उनमें दिखाई न देगी। कम्यूनिस्ट साहित्य के शान्दिक जंजाल का उनमें नामोनिशान तक नहीं है। कम्यूनिस्ट लोग अर्थ को इतना महत्व देते हैं और नैतिकता को इतना नगण्य मानते हैं कि उनके साहित्य की लू-लपट में किसी भी सहदय मनुष्य की आत्मा झुलस सकती है। कोपाटिकन का साहित्य इसके विल्कुल विपरीत हैं। उसमें नैतिकता की शीतल-मन्द समीर सदा ही वहती रहती है।

फोपाटिकिन के ४१ वर्षीय देश-निकाले के कितने ही किस्से उनके जीवन-चरित में तथा उनके विषय में लिखे संस्मरणों में यत्र-त्य विखरे पड़े हैं, जिनसे उनकी सन्त-प्रकृति पर पूरा-पूरा प्रकाश पड़ता है। एक बार फैंक हैरिस ने उनसे कहा—"आपने देखा, उन अराजकवादियों ने यौवनावस्था में तो खूब काम किया, पर अब वे अर्थलोलुपता के शिकार हो गए हैं!" इस पर कोपाटिकन ने उत्तर दिया—"उन लोगों ने जोशे-जवानी के दिन हमारे अपित कर दिए और अपना सर्वोत्तम हमें भेंट कर दिया। अब इससे अधिक की मांग उनसे हम कर ही क्या सकते हैं?" यह उदारता ही कोपाटिकन के सम्पूर्ण जीवन की कुंजी थी।

विलायत में रहते हुए क्रोपाटकिन की मैत्री वहां के सर्वश्रेष्ठ विचारकों तथा कार्यकर्ताओं से हो गई यो। उनमें से कितने ही उनके प्रशंसक थे। हिडमैन, बरनार्ट शा, लैन्सवरी, एटवर्ड कारपेन्टर, नैविनसन और ब्रेन्सफोर्ट प्रभृति से उनके सम्बन्ध बहुत निकट के थे, और जब कोपाटिकन ७० वर्ष के हुए तो उनकी संवर्दना के लिए आयोजित एक मीटिंग में बरनाई शा ने कहा था-"मुझे तो अब ऐसा प्रतीत होता है कि अब इतने वर्ष तक हम लोग गलत रास्ते पर चलते रहे हैं और कोपाटिकन का रास्ता ही ठीक था।" तपस्वियों तथा विचारकों की विचारघारा बहुत घीरे-घीरे काम करती है। कोपाटिकन ने अपनी वाणी तया लेखनी हारा जो महान कार्य किया, उसने केवल इंगलैंड ही नहीं, फांस, इटली, स्विट्जरलैंड तया यूरोप के अन्य देशों के विचारकों को भी प्रभावित किया और जो विचार उन दिनों नवीन प्रतीत होते थे, वे आज सार्वजनिक वन गए हैं।

#### रूस को वापसी

सन् १९१७ की रूसी कान्ति के बाद कोपाटिकन ने स्वदेश को छोटना उचित समझा। अब वे ७५ वर्ष के ही हो चुके थे, फिर भी उनके मन में युवकों-जैसा उत्साह था। पेट्रांग्रेट में ६० हज़ार आदिमयों ने उनका स्वागत किया और रूसी सरकार के प्रधान कैरेन्स्की भी उनके स्वागतार्थ उपस्थित थे। चूंकि कीपाटिकन का विश्वास किसी भी सरकार में नहीं था, इसलिए उन्होंने कोई संरक्षाये पद ग्रहण नहीं किया। वैसे करेन्सकी के साथ उनके सम्बन्ध अच्छे थे, पर लेनिन के हाथ में सक्ति पहुंचने पर कीपाट-किन सर्वथा उपेशा के ही पात्र बन गए हैं।

#### श्रन्तिम दिन

कोपाटिकन के अन्तिम दिनो की एक ऐसी झाकी गोल्डमैन के आरमचरित 'लिबिंग माइ लाइफ' में मिलती है। उन्होने लिखा है-"कस पहुचने पर मुझे कम्युनिस्ट लोगों ने बार-बार विश्वास दिलाया या कि कोपाटकिन सी बड़े आराम भी जिल्दगी बसर क्र रहे हैं और न उन्हें भोजन-वस्त्र की कमी है और न विसी अन्य बस्तू की । पर जब में कोपाटकिन के घर पहची तो मामला इसके विपरीत ही पाया । कोपाट-किन, उनकी पत्नी सोफी तथा लडकी एलेक्अप्डा तीनो एक कमरे में रहते थे और वह कमरा भी काफी गरम नहीं या तथा पास के कमरें तो इतने ठडे ये कि उनका तापमान यून्य से भी नीचे था। उन्हें जो भोजन मिल्ला था, वह बस जीवित रहने-भर के लिए पर्याप्त था। पर जिस सहयोग-समिति से उन्हें राशन मिलता था, वह ट्ट चुकी थी और उसने मेम्बर जील भीज दिये गए थे। मैले सोफी से पूछा--'गुजर-वसर कैसे होती है ?' उन्होने उत्तर दिया-'हमारे पास एक गाय है और बगीचे में भी कूछ पैदा ही जाता है। साथी लोग भी बाहर से कुछ भेज देते हैं। अगर पीटर (कोपाटकिन) बीमार म होते और उन्हें अधिक पीष्टिक भीजन की जरूरत म होती, तो हम लोगो की गुजर बसर हो जाती।"

जार्ज हैंसबरी इन्हीं दिनों कस वह हुए थे। उन्होंने एमा गोन्डर्मन से कहा था—"मुझे तो यह मान असम्मय दोखती है कि सोनियत सरनार के उच्च पदाधिकारी क्रोपारिनिनकों सहान् श्रेवानिक भी इस प्रकार मुखों मरने देंगे। हम लोग हमकेड में तो इस प्रकार ने जनावार को असहम समझेंगे।"

त्रोपाटिक्न इत दिनो अपनी अन्तिम पुस्तक असर रहेग 'नोतिचास्त्र' लिल रहे ये । किताबों के सरीदने के यहान् और लिए उनवे पास पैसे नहीं थे। क्लाकें या टाइपिस्ट / उच्च है।

रखने की वे ,करपना भी गही कर सकते थे। इसलिए अपने यथ की पाण्डुलिप उन्हें सुद ही तैयार करनी पढ़ती थीं। भोजन भी उन्हें पुष्टिनर नहीं मिछ पाता था, जिससे उनकी कमजीरी बढ़ती जाती थी और एक पुष्ठ दोषक की रोशनी में उन्हें अपने यथ की रचना करनी पढ़ती थी।

जब जोपाटकिन मरणासन्त हुए तो अवस्य लेनिन ने मास्को से सर्वश्रेष्ठ डाक्टर और भोजन इत्यादि की सामग्री भेजी थी और यह आदेश भी दिया था कि शोपाटविन के स्वास्थ्य के समाचार उनके पास बराबर मेर्ज आवें। जीवन के अन्तिम दिनो में जिसे दमघोट वातावरण में रहने के लिए मजबूर किया गया, उसनी मृत्यु के समय इतनी चिन्ता का अर्थ ही क्या हो सकता था । ८ फरवरी, १९२१ की कोपाटकिन का देहान्त हो गया । लेनिन की सरकाद ले सरकारी तौर पर उनकी अल्येध्टि करने वा विचार प्रकट किया, बिसे उनकी पत्नी तथा साथी-सगियो ने तुरन्त ही अस्वीकार कर दिया। अराजक-वादियों के मजदूर संघ के भवन से उनके शब का जलस निकला. जिसमें बीस हजार मजदर थे। सदीं इतनी जोरो की थी कि बाजे तन वर्फ के कारण जम गए । लोग काले क्षत्रे लिए हए थे और बिल्ला रहे थै-'कोपाटकिन ने सगी-सामियों ' को, अराजकवादी बन्धओं को जेल से छोडो ! '

सीवियट सरकार में हिमिनुत्र का छोटा-सा घर निपादिक न की विधवा पत्नी को रहने के हिए और उनका मास्कोबाला मकान जीपादिक के हिए और उनका मास्कोबाला मकान जीपादिक के निपादिक विधादिक ने सिमा अपनी की विधादिक पत्नी को छोटी है। हो है सिमा के प्रतिक पत्नी को छोटी है। हो है सिमा के प्रतिक पत्नी पत

### स्याम के सांस्कृतिक पृष्ठ

प्रो० रंजन

स्याम का घर्म, कला, साहित्य, सामाजिक व्यवस्था और रहन-सहन पड़ोसी देशों के साथ एकता और संयोग के चोतक हैं। एकता के इस क्षेत्र में चीन और भारत के साथ कम्बोडिया और वर्मा की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती । स्याम की संस्कृति और उसके आधुनिक इतिहास का जितनी अधिक गहराई से अनुशीलन किया जायगा, उतनी ही अधिक रुचि उस अध्ययन में बढ़ती जायगी। वाहर से वौद्ध धर्मावलम्बी होते हुये भी स्याम के विषय में यह कह देना कि वहां भारतीय संस्कृति की प्रधानता है, विल्कुल गलत होगा । उपरोक्त सभी देशों की संस्कृतियां स्याम में आकर अपनी विभिन्न-ताओं को छोड़ कर एक नये रूप में विकसित हुई हैं। अतः स्याम में प्रचलित एक देश के सांस्कृतिक अध्ययन के लिए दूसरे देशों की तत्रस्य संस्कृतियों का सम्यक् अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है। यह कहना असंभव ह कि स्याम के सामाजिक जीवन में इस सीमा तक चीनी प्रभाव है, इस सीमा तक भार-तीय। सभी विदेशी संस्कृतियां स्याम देश में जतरते ही एक नया रूप घारण कर लेती हैं। यही अतीत में हुआ और शायद यही भविष्य में । यह नवीन रूप सबसे भिन्न होते हुए भी सबकी विशेपताओं से मुक्त है। तात्त्विक रूप से स्याम की संस्कृति को एक शर्टंद में रखा जा सकता है-वर्म। क्योंकि स्यामी कला, साहित्य एवं परंपराएं सभी वर्म को केन्द्र-विन्दु मानकर ही पल्लवित और विकसित होती रहीं। केवल पिछले कुछ वर्षों से स्याम के सांस्कृतिक दृष्टि-कोण में पश्चिमी प्रमाव के कारण एक अन्त्र हुआ है और आज स्याम के अति उन्नत मागों में आर्य-संस्कृति घर्मनिरपेक्ष हो रही है; परन्तु स्याम के सर्वेसावारण लोगों के लिए वृमें और संस्कृति आज भी एक ही हैं।

पूर्वजों की पूजा के साथ-साथ देववाद(Animism) में स्याम का आदिकाल से विश्वास रहा है और इस-लिए इस देववाद को याईघर्म का पहला पृष्ठ माना जा सकता है । वाद में इस देश में बौढ़ धर्म का प्रचार हुआ और स्याम ने इसे राष्ट्रीय धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया। इसके साथ ही कम्बोटिया के प्रभाव के कारण आर्य छोगों ने एक अंश तक हिन्दू धर्म के कुछ तत्त्वों का भी अपने बौद्ध धर्म में समावेश कर लिया है। इसीका प्रभाव है कि स्याम के प्रसिद्ध बीद्ध मन्दिरों की दीवारों में रामायण और महाभारत सम्बन्धी कथायें लिखित हैं। थाई लोगों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि जिस वर्म या संस्कृति को उन्होंने अपनाया उसे ज्यों-का-त्यों कभी गृहण नहीं किया । स्थान और वातावरण के अनुकूल उसपर अपना रंग चढ़ाकर उसे विल्कुल अपने अनुरूप वना लिया। जब बौद्धवर्म को उन्होंने स्वीकार किया तो अपने देववाद (Animism) के बुनियादी विश्वासी में संशोधन कर उसे बौद्ध धर्म में मिल जाने योग्य वना लिया । इसी प्रकार जब वे हिन्दू धर्म के प्रभाव में आये तो उसे उन्होंने बौद्ध वर्म के पूरक के रूप में ही स्वीकार किया । हिन्दू और बौद्ध धर्म दोनों का स्रोत एक ही था। इसलिए उनके एकरूप होने में कोई बाघा नहीं पड़ी। समय के साय-साय दोनों ही तदाकार होते गये; परन्तु इस अवस्या में भी प्राचीन देववाद के प्रभाव से यह नवीन घमं वंचित नहीं रहा। मच्य स्थाम के लोगों में जहां हिन्दुओं का आज भी काफी जोर है, एक कहावत है "बीद्ध धर्म और हिन्दू वर्म दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।" उत्तरी और उत्तरी-पूर्वी भागों में हिन्दू घर्म कमजोर पड़ गया है और उसके स्थान पर प्राचीन 'देववाद' प्रधान हो गया है, विशेषकर ग्रामीण छोगों के रहन-सहन में। परन्तु इस 'देववाद' में वौद्ध वर्म ने काफी संशोधन कर दिया है।

स्याम में स्वीकृत बौद्ध धमं हीनग्रान पय से सवधित है। परन्तु महायान पथ के कुछ तत्व भी इसमें विद्यमान है। यह प्रभाव कम्बोडिया और मलाया प्रायद्वीप के श्रीविजय साम्प्राज्य के नारण पढ़ा है जहा वि बहत दिनो तक महायान पय की ही प्रधानता थी। उत्तर स्याम में भी महायान-पथ के कुछ लक्षण स्पष्ट हैं, परन्तु यहा यह प्रमान अपने पड़ीसी देश चीन. बर्मा से आया। अध्य स्वाम में अल्पसन्थकों के रूप में कुछ ईसाई भी है. लेकिन ईसाई धर्म ने इस देश में कभी जब नहीं जमा पाई। यहां के ईसाई धर्म ने स्वय एक' नवीन रूप घारण कर किया है। स्थान की इस सास्कृतिक एक नाकी जह इतनी बहरी जमी है कि विदेशी धर्म भी यहा के स्थानीय सक्षणों से तटस्य न रह सके । यहां के राष्ट्रीय जीवन का मुख-स्रोत बाँढ धर्म का सदाधित का है। सदियों के काल-चक्र में नवीन आवदयनताआ को सामने रखकर, इसने अपने विश्वासी और परम्पराओं का निर्माण किया है। बाज प्रदन यह है कि पश्चिम की इस भौतिकवादी सभ्यता के प्रवल देग के सामने स्थाम के ये प्राचीन विश्वास और परंपरा कवतक टिक सकेंगी?

जैसा कि कपर वहा गया है-स्थाप की संस्कृति धमें को केन्द्र मानकर ही जीवित रही है और इसीके पोपण के लिए कला एवं साहित्य की सिप्ट हुई। 'कला कला के लिए' बाली क्टाबत में आज तक यहा किसी को विश्वास नहीं है। इसी बान की ध्यान में रखकर सस्कृति के दो स्थायी चरण कला और साहित्यकी वछ चर्चा आंद्रश्य है । स्यामी कला का प्रधान रुद्य हमेशा धार्मिक प्रवृत्तियों को पुष्ट करना रहा है। स्यान के मन्दिरों की उठी हुई कोणाकार छतें, और रगीन सम्बदार खपरैल स्याम की बालुबला की विशेषताए रही है। इस बास्तुकला का चीनी गृह निर्माण पढिति से बहुत सम्बन्ध है । सोने का पता नडाना, सोने के पानी की कारीगरी एवं अन्य सजावटी कराओं में पूर्वी प्रभाव रुसित होता है । मन्दिरों की छतो पर गावद्म, पनिश्वद दिसरें नम्बोडिया ने हिन्दू मन्दिरी की शिखरों की नकल पर बनी हैं। इस प्रकार की मानदुम छनें स्याम और बर्मा की अपनी विशेषताए है।

बहा तक मृतिकला का सम्बन्ध है। स्याम में इसका जन्म बुद्ध की पातु प्रतिमाए डालने तक ही सीमित था। बाद में स्थाम ने मूर्तिकला में मात और लखान दोना दृष्टियों से काफी कुसरवा प्रान्त की। दृद्ध कला के बुछ नम्में दृष्टरे देशों की इसी कला के नमूनों के साथ सफरवा पूर्वक रखें जा तकते हैं।

स्वामी स्रगीत का आरोह-अबरोह चीनी है। स्थामी स्वामीत में तीच और चीमल का अमान रहता है। सुन्ते बालों को ऐसा कलता है कि एक ही हवर में आदि से अन्तरक कोई चीच गाई मई है। यपिए पेंडानिक रूप में मिस्त्रों के लिए सगीत सरा मना रहा है क्रिन्त में वार्सिक शाबों को चलेलित करने एवं रयोहार और उपलब्ध के बसदों पर इसका उपमोग क्या जाना था।

स्थायी राज्य की उन्नित उन पीमा तक नहीं हो पाई है जिस सीमा तक मारत या पांचमी देखों की। नाह्य-का भी काय कराओं के समान बहुत दिनो तब धर्म की देखा ही करती रही। इस्तिन्य हस देश में स्वतन कार्या नाह्यन्यहों का निर्माण नहीं हो पाय। वेहातों में चन्दी फिरती गाइ-मडिका पून पून कर रामानय या महाभारत से घन्या पून पून कर रामानय या महाभारत से घन्या हिसी प्रधानक को लेकर नाट्य करते दिवलाई देंगे। इस नाह्य-गट्य में याग्यीय नाह्य-संस्ता का भी क्यारियक कारया में याग्येश हुआ है। अभिनेता और अभिनीदियों के कार्य कला और प्रशांत स्वी वीमी रहती है। एक प्रकार की कोमलता और सुन्दर-ता इनकी गति-विधि में रहती है। इसलिए भावुक दिमागों के लिए यह अरुचिकर नहीं हो पाते। इस प्रकार के नाटकों को स्थाम में 'लाखाँन' (Lakhon) कहते हैं। पहले बौद्ध विहारों के आंगनों में उत्सव के समय पर जनता को यह नाटक देखने को मिलते थे। आज तो पश्चिमी नाट्य-कला का प्रभाव मी स्थामी रंग-मंच पर तेजी के साथ वढ़ रहा है। चीनी प्रभाव के कारण दृश्य बदलने की जिया यहां बहुत जल्दी-जल्दी होती है। स्थाम के प्राचीन नाटकों का प्रदर्शन तो यहां सरकारी विभाग 'शिरप-कॉन' हारा किया जाता है। वैसे क्लासिक ड्रामा का सब लोगों में कम चलन रह गया है।

इस प्रकार अभी तक जो कुछ लिखा गया है उससे यह स्पष्ट है कि स्याम की संस्कृति एशिया की दो महान् संस्कृतियों के बीच की सुष्टि है। स्याम एक ओर चीन से प्रभावित हुआ है और दूमरी ओर भारत से। हिन्द-चीन के अनाम-प्रान्त से आगे चीनी सभ्यता दूर दक्षिण में न वड़ सकी और न भारतीय संस्कृति हिन्द-चीन से बागे उत्तर की ओर बढ़ सकी। यहां पर दोनों प्रवल घारायें एक-दूसरे से टकरा कर रक गई और इस प्रकार उनकी गति अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्र में ही सीमित रही । अनामी लोग जो कि रक्त के विचार से इन्डोनेशियन हैं, चीन में वियत क्वीले के नाम से पहले चीन में ही वस गये वे। इन लोगों ने चीनी सभ्यता को बहुत-कुछ अपना लिया था। जब ये लोग फिर हिन्दचीन की ओर आये तो यहां इन लोगों का चंपा (Champa) के हिन्दू चाम-लोगों से सामना हुआ। स्थाम के पूर्वी ओर एक अति शक्तिशाली हिन्दू राज्य (खमेर) कम्बोडिया में या ही और इस कारण चीनी सम्यता न तो पूर्वी तट पर चंपा से बागे वढ़ सकी और न हिन्दचीन के परिचमी भाग में खमेर-राज्य की सीमाओं में वह प्रवेश कर पाई। इस प्रकार दो शक्तिशाली सभ्यताओं ने संयोग और मेल से एक विल्कुल नई सम्यता को जन्म दिया। प्रदेश की भौगोलिक स्थिति भी इस मेल के कार्य में सहायक हुई। जो भी चीनी सभ्यता घाई लोग अपने साय चीन के दक्षिण प्रान्त से लाये उसका प्रसार भी यहां नये रूप में ही हुआ। अपने जल-वायु एवं वाता-वरण के अनुरूप बनाकर ही उसे ग्रहण किया गया। उस प्राचीन विरासत को देश-काल के अनुरूप एक नया जामा पहनाया गया, एक नया स्वरूप दिया गया।

यही कारण है कि आज अपने जीवन के तीर-तरीकों में चीनी और स्यामी बहुत कुछ घुल-मिल सकते हैं; परन्तु वही वात भारतीयों के साथ नहीं हो सकती। स्याम की आवादी में चीनियों की बहुत वड़ी संख्या का होना भी उनके एक-दूसरे में मिल जाने का कारण रहा है। फिर भी स्यामी जीवन में बहुत अंग तक भारतीय सभ्यता का प्रवेश हुआ है। स्याम देश की जल-वायु और प्रच्र उत्पादन ने स्यामी लोगों को काफी बालसी बना दिया है। इसीलिए अवकाश-प्राप्त और मुवियाप्राप्त वर्गों में कला के लिए एक विशेष रुचि रही हैं। खेती और काम से बचे समय का जपयोग या तो घरेलू-वंघों के रूप में या शहरीं में इस कलाके रूप में हुआ। जिस कला का स्याम में प्रचार हुआ वह स्वभाव से भारतीय होते हुए भी व्यवहार में बिल्कुल स्यामी है। संवर्ष शृत्य बौद्ध-वर्म उनके स्वभाव के अधिक अनुकूल हैं। इसीलिए उसे अप-नाने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई । पहाड़ों और जंगलों की एकान्त गोदी में रहते-रहते जनकी राजनैतिक चेतना प्रायः अपने गावों या उपनगरों तक ही सीमित रही। परन्तु मध्य-स्याम के अधिकार में आने के बाद-जो कि एक लम्या-चौड़ा मैदान है-वह सीमित राजनैतिक भावना आज राष्ट्रीय रूप की ओर जन्मुख हो रही है।

मध्य-स्याम के लोगों का रंग और शरीर की वनावट उत्तरी स्यामी लोगों से भिन्न हैं। उत्तरी लोगों का रंग अधिक साफ और कद कुछ अधिक लम्बा होता है। दक्षिण की ओर बढ़ते-बढ़ते लोग अधिक छोटे और गहरे रंग के होते जाते हैं। इसका कारण यह है कि संस्कृति के समान ही युद्ध थाई लोगों का खमेर और मलाई लोगों के साथ रवत-मिश्रण हुआ और एक नई जाति अस्तित्व में आई। इससे शरीर- रचना में तो अन्तर हुआ पर बीढिक दृष्टि से यह नवीन जाति काफी आगे रही। इस प्रकार आज का स्थाम विश्व की शे महान् सस्तृतियों और जातियों का मिलन-स्थल हैं। होनों के मेल और नयोंग से जिस नवींग स्वस्थ की पृष्टि हुई खेंसे ही एक सब्द में स्थामी-सस्तृति और स्थामी जाति कहू सचते हैं। आज के स्थाम के जीवन के सभी पत्नों में कम या अधिव चीन और नारत विद्यान है, पर चीन स्थाम का

शुकाव बंदी तेजी के साथ परिचमी सम्यता की ओर ही रहा है और समय है कि अगर अमरीका का जो बसर वह रहा हैं वही कावम रहा तो घम की छोड़ कर नम्य-चेन्य छहते में आपनी अमरीका का प्रतिक्य ही दिखाई देगा, पर इस प्रमाव को रोकने बाली एक धानित हूं-/मिशुजो का रक'। यह रक दिक और दिमाय के अपनी प्राचीन परपराओं की मी विराहत का रक्षक रखाई और सायद आगे भी रहे।

#### मोनेको का कैदी

श्री मोपासॉ

क्षापमं से बहुतो ने सुना होगा कि मोनैको मुद्देश में एक छोटा-सा आजाद देश है। कम-दे-कम उत्तरी राजधानी मोटकाओं का जाम हो बहुतो को मालून होगा हो। मोटिकाओं ड्रान्या के मालून रहेगा हो। मोटिकाओं ड्रान्या के मालून रहेगा हो। मोटिकाओं ड्रान्या के मालून र जुलारों का अड्डा है। हर गठी-कूचे में जुलारों के अड्डे, उनके पास ही कह्वाकाने और जुला क्षेटने में मत्त जुलारे, हनके अलावा वहा और तुछ होता हो नहीं।

पुराने जमाने की बात है कि एक बार इस राहर में एक जून हो गया। जुझारों का यहर होते हुए मी बहा के रहनेवाओं म मारपीट, बोरी या जून नभी नहीं होता था। इस्तिए जब यह हरवा हो गई हो छोगों को बडा पनशाना छया। हस्या का कारण भी कोई बहुत बडा नहीं था। बात यह थी कि एक आध्यों ने युस्ते में आकर अपनी औरत के कुरहाडी मार दी जिससे वह तस्ता भर में।

जब हाईकोर्ट में यह मुक्टमा पेश किया गया तो मुर्लाजम पर इरजाम सावित हो गया और अदालत ने उसे कसी की सजा दे दी। रिसासत ने बारपाह ने भी यह सजा बहाज स्था, नेनन जब एक दिक्कत पेश जाई। मीजेको में इससे पहले कमी जून नहीं हुजा था, इसलिए वहा फाबी देने वा कोई इन्तजाम नहीं था। किर जलकाद कहा से आता ? चूनाचे मोनैको के बादताह न फास की सरकार से फासी देने नी चीनें और एक जल्लाद मेजने की प्रार्थना की। पोडे ही दिनो में नासीसी सरकार से यह जबाद आमा

"आपकी प्रार्थना भी हम स्थीकार करते हैं और उसके अनुसार काशी देने के औजार और एक ज़क्ताद भेजने को हम तैयार है, लेकिन उसके सर्थ के लिए आप पहले बीस हजार फ्रेंक में दें।"

बील ह्वार पंक का नाम मुतते ही मोनैको ना बादसाह सिटरिटा गया। एक ब्रादमी का सिर घड से करन करने के रिष्ट चील हुजार पंक खर्च भरते को बह बिस्कुछ देवार न या। इसिलए इटरी की सरकार से बही राष्ट्रवास्त की गई। इटली का बादसाह भोगेंको के बादसाह का रिस्तेयार या, इसिरिए यह सोचा गया कि बहु बहुत ज्यादा ऐसा नहीं मागेगा बीर सन्बुच उसने सिर्फ सोलह हुबार फंक में सारा काम कर देने की नेवासी बताई म

टेकिन एक आदमी के लिए सोलह हजार फ्रेन भी बहुत ज्यादा समझे गये और यह तै हुआ नि उसकी सजा को घटा दिया या। उसके जनुसार फिर से जदास्त्र जेंग्रे और उस आदमी नो फासों के बदले आजन्म नरातनाए की सन् दी गई, लेकिन अब और एक दिक्कत पेश आई। सारे देश में एक भी कैदखाना नहीं था और उसे बनाने में बहुत-सा वक्त व पैसा बरवाद होने-वाला था। इसलिए राजमहल के पास ही एक जेलर की नियुक्ति की गई। लेकिन एक साल के अन्दर कैंदी और जेलर के खर्च का बोझ उठाना मोनैको के खजाने के लिए मुश्किल हो गया। तव जेलर को हटा दिया गया और कैदी को ही खुद अपने पर पहरा देने का काम सींपा गया। सोचा यह था कि कैदी भाग जायेगा और वगैर दवा के वीमारी मिट जायेगी । लेकिन कैदी ने भाग जाने की विल्कुल कोशिश नहीं की। उसके दिल में भागने का खयाल भी पैदा न हुआ। वह वड़े मजे में दिन गुजारता था। सवेरे उठकर वह इधर-उधर घूम आता, दोपहर को नहा-घोकर सरकार की तरफ से मिलनेवाला खाना खा लेता, फिर दिन भर जुआरों के अड्डे में जाकर जुआ खेला करता भीर रात को अपनी कोठरी में आकर सो रहता। एक दिनं सरकारी नौकर खाना लाना भूल गया तो कैदी खुद राजमहल में जाकर नौकरों के साथ खाना खा आया। तबसे वह हर रोज महल में ही खाना खाने लगा।

दिन बीतते गये; महीने भी बीत गए। मगर कैदी भाग जाने का नाम तक न लेता था। सरकार चितित हो गई। कैदी विल्कुल जवान था, इसलिए उसके जल्द मर जाने की आशा नहीं थी। अतः फिर अदालत बैठी और कैदी की सजा पर पुनर्विचार होकर उसे देशनिकाले की सजा देने का फैसला किया गया। जब कैदी को यह फैसला सुनाया गया तो उससे रहा न गया और वह भरीयी हुई बावाज में बोल उठा-"हुज्र, गुस्ताखी माफ हो ! लेकिन आप सब लोग बड़े विचित्र प्राणी मालूम होते हैं। आपने पहले मुझे फांसी की सजा वस्त्रो, मगर फांसी पर नहीं चढ़ाया । फिर आजन्म कारावास का दण्ड दिया और मैं वगैर चूंचपट किय उसे भुगत रहा था कि इतने में आपने मेरे जेलर को निकाल दिया । मैं आपसे कुसम खाकर कहता हूं कि जेल से भाग जाने का विचार तक मेरे मन में नहीं आया। अवतक जो भी सजा आपने मुझे दी मेंने उसे खुशी से कबूल किया। लेकिन जाजका आपका फैसला विल्कुल वेरहमी से भरा हुआ है। निर्वासित होकर में कहां जाऊं? क्या खाऊं? में आपका कैदी हूं। अपने देश में आप मेरे साथ जो भी सलूक कीजिये; लेकिन दूसरे देश में आप मुझे मत भेजिये। इतनी ही मेरी आपसे प्रार्थना है।"

कैदी की बात सुन कर न्यायाधीश का भी गला भर आया; लेकिन एक बार फैसला देने के बाद उसे कैसे बदला जा सकता था? ऑखिर बहुत मगृज्-पच्ची करने के बाद यह तै पाया कि कैदी को हर माह सी फैंक का भत्ता देकर देश से निकाल दिया जाय। इस निजय के अनुसार थोड़े ही दिनों में कैदी मोनैको की सीमा के पास किसी देहात में जाकर मजेमें रहने लगा।

अनु०-श्रीपाद जोशी

### भारत की खाद्य समस्या

श्री रामसिंह रावल

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के साथ अंग्रेजों से हमें जो कुछ मिला है, उन वस्तुओं में खाद्य समस्या एक वड़ी ही जटिल और राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण समस्या है। यह समस्या वास्तव में केवल विभाजन का ही परिणाम नहीं, अपितु महायुद्ध की एक हानिकारक देन है, क्योंकि १९३९ के महायुद्ध से पूर्व यह समस्या थी ही नहीं। सारत इस

दिशा में चिर अतीत से सम्पन रहा है। खाद्य सम्बन्धी आंकड़ों को देखने से ये वार्ते ज्ञात होती हैं:

(१) सन् १९३८-३९ में भारत में ४९६ लाख टन अन्न पैदा हुआ। १८ लाख टन चावल वर्मा और स्याम देश से मंगवाये गये, परन्तु ८ लाख टन गेहूं अन्य देशों को भेजा गया।

- (२) सन् १९३९-४० में ५३० सास टन अग्न पैदा हुआ। २७ लाल टन चावल वाहर से ममवाये गये, और ५ लाल टन अनाज अन्य देतों को मेजा गया।
- (३) सन् १९४०-४१ में केवल ५०१ टन अन पैदा हुआ। १७ लाख टन चांवल वाहर से सगवाये गये और ५ लाख टन अन्न बाहर मेजा गया।
- (४) सन् १९४१-४२ में ५१८ लाख टन बन पैदा हुआ । १२ लाख टन बाहर से मणबाया गया और ८ लाख टन बाहर भजा गया।
- (५) १९४२ ४३ में ५३२ लाल टन जन पैदा हुआ और ३॥ लाल टन अग्न विदेशों को भेजी गया।

इन आकडो से स्पाट हो जाता है कि युद्ध से एहले अप की कमी न थी। जापान के साथ मुंद्र छिउने और उसके परिणाम-सक्कर वर्मा के करोबों से हाल से निकल जाने पर देश में कर का अभाव हो गया। इस पर अवेजी ने कट्रोल का रीम लगा दिया। इस समस्या का नम्म लाइक बनाल में उन् एथे में देश की हो लगा कि माने की निकार का मिला कि उस पर कुवितरण ने बनाल के ४५ लाल निर्दोध भारतीयों के प्राप्त के किये। इतनी आहतिया वेने पर भी अधिकारियों ने कुछ नहीं सीजा। यह कमी कोई प्राह्मतिक की वी गही, मानक की मिला बुद्धि की उस्त वी सारतायों से उस पर सारता में नम्म तीन वुद्धि की उस्त वी सारतायों में उस पर सारता में नम्म तीन वुद्धि की उस्त वी सारतायों में सहस्य निवार की नाम ते भी सारता की नमहर लेखा रही सी, परन्तु बताया जा रहा था कि प्राप्त की नमहर लेखा रही सी, परन्तु बताया जा रहा था कि प्राप्त की वस्त है।

लाय समस्या दिन प्रतिदिन भीषण होती गई। देश वा विमाजन होने पर तो यह बहुत ही अपवर हो गई। मानक की उत्तरित अधिन उरनेवाला प्रान्त—पूर्वी वाल, गृह आदि अत की अधिक उत्तरित करनेवाला प्रान्त—पूर्वी वाल, गृह आदि अत की अधिक उत्तरित करनेवाला प्रान्त—पश्चिमी पजान, पाकिस्तान में चले गये, निवधी भारत की खाद समस्या और भी विषया हो गई। अजान स्थिति गह है कि हर वर्ष हम १०० से २०० करोड़ तक स्थाया भारत के बाहर जेन यह है।

प्रश्त यह है कि इस समस्या को हरू कैसे किया जाय ? इस समस्या के हरू होने पर ही देश की उन्नति हो सक्ती है। जो देश अपने अन नी आवश्यक्ता को पूर्ति के लिए दूसरे देशो पर निर्भर हो, वह न तो अपने पैरो पर सडा हो सनता है और न अपनी जनता के रहन-सहन के डण की ऊचा कर सनता है।

इस समस्या को हल करने के अनेक डग है, जिन-में मस्य ये हैं--

१ राजन की समुचित व्यवस्था। आज की कट्रोल-पद्धति के प्रति देशव्यापी असतोप है। अत कट्रोल के दौपी को इर करने की आवस्यकता है।

२ चोरवाजारी समाज होंगी नाहिए। देश की आर्यात से लाम उठानेवाले अनेक स्वामंपरायण व्यक्ति अनाज को बटोर एवते हैं और फिर चोरवाजारी करते हैं। ऐंडे व्यक्तियों के प्रति सरकार का एक बहुत कड़ा होंगा चाहिए। वो मी जनाज का सबह करे, उसे नठोरतम दह विकला चाहिए।

३ 'अधिक अम्र उपवाओ' योजना से उतना लाम नहीं हुआ, जितना कि इस पर सर्च किया जा रहा है। इस योजना ने व्यावहारिक पक्ष पर अधिक व्यान व जोर देना जरूरी है।

' ४ सिचाई के लिए जो योजनाए चल रही है, जन्हें बल्दी-से-बल्दों दूरा करना । राष्ट्रीय सरकार ने देश के मिस्र मिस्र मागों से सिचाई की दृष्टि से गीदयों में बडे-बडे बाब बनाने की बोबना चालू भर दी है। बाघों के दीवार होने पर निवस्य ही अधिक अन उपजाने में सहायता मिल्गी।

५ सबसे महत्वपूर्ण बात बत की मुरक्ता है। जो भी अन्न हमारे पास है, उसमें से एक दाना भी नष्ट होना राष्ट्रीय वपराच माना बाना चाहिए।

६ अप्र के साथ-साथ साव-भाजी तथा अन्य ऐसी ही चीजो को अधिक इस्तेयाल वरके प्रत्येक नागरिक इस समस्या के सुरुझाने में योग दे सकता है।

इस वर्ष इस समस्या ने स्थिता स्वकर रूप धारण निया, इस सब बानते हैं। यदि सचय रहते घरनार समर्ग न हो वर्ष रहे होती तो बिहार की वही स्थिति हुई होती जो सन् १९५२ में बयाल की हुई थी। दिसने सताम की बात है कि जो देख धन-धान्य की दृष्टि से सम्पन्न था, वह हुसरी का मुंहदेखा बन गया। दैवी प्रकोपों के लिए तो हमारी लाचारी है, लेकिन जहां तक आदमी के स्वायं ने इस समस्या को जटिल और जघन्य बनाया है, तदर्थ हम सबको लिजत होना चाहिए। आदमी की स्वायंपरायणता यदि इसी प्रकार बनी रही तो हजार प्रयत्न करने पर भी यह समस्या हल होनेवाली नहीं है।

अव भी समय है कि हम संगठित रूप से कोशिश करके देश को स्वाश्रयी बनावें। दूसरे देशों पर निर्भर रह कर तो हित से अधिक अपना अहित ही करेंगे। देश के नवनिर्माण में अपने पैरों की मज़बूती ही काम आवेगी।

### यामों में स्वारथ्य

श्री भगवतनारायण भागव

[भारत गांवों में वसता है। अतः जवतक गांवों की उन्नति नहीं होगी तवतक देश की उन्नति असंभव है। प्रस्तुत लेख में उत्तरप्रदेश के पंचायत राज के सुयोग्य एवं अनुभवी संचालक श्री भार्गवजी ने ग्रामों के स्वास्थ्य-सुधार के लिए अनेक महत्वपूर्ण वातें वताई हैं। यदि उनके सुझावों को कार्यान्वित किया जासके तो निश्चय ही हमारे ग्रामों का कायाकल्प हो जाय। हम चाहते हैं कि विभिन्न राज्यों के अधिकारी तथा ग्राम-कार्यकर्ता इस लेख को विशेष रूप से पढ़ें।

—सम्पा॰]

इसमें सन्देह नहीं कि जनसाधारण की शक्ति और स्वास्थ्य में परिवर्द्धन करना औपधालयों के खोलने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण प्रदन है। इसी सम्बन्ध में महात्मा गांधी का कथन भी अत्यन्त विचारणीय और व्यवहार में लाने योग्य है। उन्होंने लिखा है:

"मैं चारों बोर यह विचार पाता हूं कि गांवों में अस्पताल होना चाहिए, और नहीं तो कम-से-कम एक डिस्पेंसरी तो होनी ही चाहिए। मैं तो इसकी आवश्यकता विल्कुल नहीं देखता हूं। वहुत से गांवों के निकट ऐसी संस्थाएं हैं तो ठीक है, पर यह चीज़ महत्व देने योग्य नहीं है। जहां अस्पताल होगा वहां रोगी तो टूटेंगे ही। उससे यह अनुमान नहीं निकाला जा सकेगा कि ७ लाख गांवों में ७ लाख अस्पताल हों तो वड़ा उपकार होगा। गांव का दवाख़ाना गांव की झाला होगी और गांव का पुस्तकालय भी वहीं होगा। रोग हर गांव में होते हैं, वाचनालय हर गांव में होना चाहिए, जाला तो होनी ही चाहिए। इन तीनों के लिए अलग मकानों की वात सोची जाय तो जान पड़ेगा कि सारे गांवों की पूर्ति के लिए करोड़ों रुपये चाहिए और वहुत समय

लग जायगा । इसलिए हमें लोक-जिक्षण और ग्राम-सुवार का विचार करते हुए अपने देश की ग्रीबी का ख्याल रखना ही पड़ेगा। इस सम्बन्ध के विचार यदि हमने दूसरे देशों को लूटकर मालदार बनी हुई प्रजा से जवार न लिये होते तो, और हमारे अन्दर सच्ची जागृति पैदा हुई होती तो, गांवों का हप कब का बदल गया होता।"

महात्मा गांधी सदैव इस वात पर जोर देते रहे कि यदि मनुष्यों के विचार पिवत्र हों, उनका जीवन पिवत्र हों, उनके रहन-सहन की विधियां स्वच्छ और युद्ध हों तो रोग फैल ही नहीं सकता है। परन्तु दुर्भाग्यवरा हमारे ग्रामीण माइयों का इस ओर विशेष रूप से नहीं ध्यान गया है और न ध्यान दिलाये जाने के लिये सामूहिक रूप से विशेषता ही दी गई है। इसिए जहां जाइये, वहीं लोग चाहते हैं कि उनके गांव में एक अस्पताल अथवा औपघालय खोल दिया जाय। जब हम अपने राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देते हैं और दूसरी ओर अपने शासन की आधिक स्थिति पर भी दृष्टि डालते हैं तो समस्या कुछ गम्भीर-सी दिखाई देने लगती है। परन्तु मैं तो समझता हूं कि यदि हम लोग स्वास्थ्य-

सम्बन्धी विदेशी प्रणालियो का समावेश अपनी योजनाओं में आवश्यकता से अधिक न करें और बनता के बद्धि-वल और सध-दाक्ति पर अधिक और दें तो समस्या बहुत कुछ अश में और अधिक अल्प काल में मलझाई जा सक्ती है। जहातक राज्य की आर्थिक दशा का सम्बन्ध है, हमें एक ही विमाग पर इच्छि नहीं रखनी हैं, संपित सभी विभागों के सुवाध्य सनालन और सफलता की ओर भी व्यान रखना है। प्रचायतो की स्थापना गाव-गाव में हो जाने के कारण हमारे शासन का रूप और रग ही बदल गया है। यदि हम इस ओर गम्भोरतापूर्वक अपना ध्यान दें तो में समझता ह कि उन सभी शासकीय विभागों का साहसपूर्वन पुनर्सगठन करना होगा जिनका सम्बाध ग्रामीण क्षेत्रों से हैं, क्योंकि जितने भी उन्नति और विकास के कार्य है, चाहे उनका किसी भी विमाय से सम्बन्ध हो. सभी गांव की जनता के द्वारा किये जाने में विशेष और निश्चित सफलता हो सकती है।

ब्रिटिश शासन में हमारे बामो की अत्यधिक चपेक्षा की गई है और ग्रामीणो को पददक्तित करके दीन औन दुली बनाया गया है। अब यह दशा अधिक दिन दिवने नहीं पाएगी, परन्तु यह सत्य है कि ग्रामी में रोगों की रीक्याम अथवा रोगों की विकित्सा के लिए पर्योप्त प्रबन्ध नहीं हैं । इसलिए सबसे पहले हमें बामी की यन्त्रगी की दूर करने के लिए उपयुक्त उपायो का अवलम्बन करना पडेगा और विशेष रूप से प्रामो के स्वास्थ्य वृत्त की खोर ध्यान देना होगा। प्रामी में जिन साधनी से वहा की नाय सद हो, जल शुद्ध हो और शुद्ध तथा पौष्टिक मोजन बाम-बासियों को प्राप्त हो, उनके रहने के लिये स्वास्थ्य के उपयुक्त साधनों से पूर्ण मकान हो और उनके विचारो और व्यवहारों में पवित्रता और संस्थता का आर्विमीव हो, हम सबको इस ओर प्रयत्नदील होना चाहिए। गावो में गन्दगी के अनेक कारण है, जैसे (१) मलमूत्र का खुला पड़ा रहना और सडना,

(१) मलमून का बुधा पड़ा रहना (२) जहा-तहा छोटे-छोटे गड्डो में पानी अरा रहकर सड़ना, (३) मरो के पास कूबा कथरा का जमा होना, (४) जानवरों का गोयर य पैछान कुछा पड़ा रहकर या निद्धी में मिल-मिला कर सहते रहना (५) पानी का ठीक निकास न होने के कारण घरों के आसपास मेर रह कर सहते रहना, (६) घरों में पुर का निकास न होने के कारण कुशा भरा रहना, (७) घरों में पूप न जाने-जाने के कारण कील और अधेरा रहना, (८) मरे हुए जानवरी का खुके में पर रहकर सहना, (६) यहा पानी घरों में, विस्वेयकर वोक में जहा मवेशी काथे जाते हैं, जिनका मुन्न और गोजर उदसे मिल जाता है, मरा रहकर सबना, (१०) अपने यर के बरतनों और कपने को बहुत गन्या रखना, और (११) घर के मीतर, जिसका एक ही दरवाना है, कोई सिककी शंचानी और हवा के आने जाने के किये न हों। विस्ति करी जाने के

उपरोक्त कारणो से अनेक बीमारिया फैलनी हैं. विशेषकर मलेरिया ज्वर । कुओ की सफाई की बोर भी ध्यान देना परमावस्यक है, क्योंकि उसके जल का प्रयोग खाने पीने में ग्राम-निवासी करते हैं। फिर भी उसकी सफाई साल में एक बार भी नही होती है। किसी-किसी गाव में जानवर इत्यादि कुओ में बिर जाते है और किनने ही दिनो तथ निकाले नहीं जाते। सन्दे कपडों का धोदन, जुठे दरतनो के माजन का गन्दा पानी स्नान का गन्दा पानी भी कुत्रों में जाता है। कओ के चारो ओर गड़डे हो जाते है और उनमें यन्दा पानी सडा करता है। पेडो और झाडियो की पतिया उनमें गिर जाती है। किसी किसी कुए में पक्षी और चमवादड रहने के लिये कोटर बना केते है और कभी-कभी उनमें गिर कर मर जाते है। इसी प्रकार हमें धामों के सालाबों की ओर भी व्यान रखना वावस्यक है।

यदि गायो की यह गन्यगी दूर हो जाने और उन कोगों को स्वच्छ जरू और सम्बद्ध बायू प्राप्त करने के लिए ज्याब बतलाये जाय को भीरा पर में वर्गमान रोमों में हे दशाश भी गायों में न रह जायगे और म जनको जोगधियों की जावस्वकता होगी । इसके लिए जावस्थनता है कि स्वास्प्य निभाग की और से अच्छा साहित्य सरल भाषा में तैयार किया जावे और उसका वितरण न केवल गांवों में किया जावे, अषितु पंचायतों के मंत्रियों, इंसपेक्टरों और पढ़े-लिखे पंचों के द्वारा, ग्रामीणों के स्वास्थ्य-वर्द्धन के उपाय और लाभ समझने पर, सभाएं करके वतलाया जावे। मेरा तो यह भी विचार है कि यदि प्रत्येक ग्राम-सभा में स्वास्थ्यवर्द्धक समिति सुचार रूप से काम करने लगे तो भी बहुत सी कठिनाइयां दूर हो सकती हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, वहुत सी गांव-सभाओं ने स्वास्थ्य समितियां वना ली हैं।

स्वच्छ और पौष्टिक भोजन के सम्बन्ध में भी ग्रामीणों को जानकारी करने के लिये साहित्य की और ऐसी ही सभाओं की आवश्यकता है। स्त्रियों को और वच्चों को विशेष रूप से वासी भोजन दिया जाता है। स्त्रियों की दशा वास्तव में ग्रामों में बड़ी दयनीय है और वालकों की स्वच्छता और उनके शृद्ध भोजन के लिए कोई घ्यान दिया ही नहीं जाता है। यदि हमें स्वास्थ्य की समस्या की हल करना है तो सफाई, भोजन और मकानों की आवश्यकता की ओर शासन को शीघ ही ध्यान देना चाहिए। पंचायतों का अपने राज्य में ऐसा अच्छा साधन उपलब्ब है कि जिसके द्वारा हम सब प्रकार के प्रचार और जानकारी के काम वड़ी सुगमता से करवा सकते हैं. यदि शासन के सभी विभागों के कर्मचारियों का व्यवहार उनके प्रति प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण और सहयोगमय हो जावे, जिसका मैंने व्यक्तिगत रूप से प्रायः अभाव पाया है। किसी ऐसी योजना से विशेष लाभ नहीं हो सकता है जिसमें व्यावहारिकता की कमी हो और खर्च की अविकता। कर्मचारियों की संख्या वढ़ाने से ही ग्राम की स्वच्छता और स्वस्थता पर कोई प्रभाव नहीं पड सकता है। में यह मानने को तैयार नहीं हूं कि किसी शासकीय विभाग में निरीक्षक और पर्यवेक्षकों की अधिक-से-अधिक संख्या उस विभाग के सफलता की मूचक हो सकती है। हमें तो ग्रामवासियों के श्रम और समय का समुचित उपयोग करना है और केवल इसी प्रकार हम ग्रामवासियों का उद्धार कर सकते हैं। ग्रामीण

भाइयों को स्वयं अपने कर्तव्य स्वास्थ्य और सफाई के सम्बन्ध में समझने चाहिए। में इस बात को नहीं मान सकता कि एक निरक्षर ग्रामवासी यह नहीं समझता कि साफ-सुथरा रहने से उसको स्वास्थ्य लाभ होगा। वह समझता अवस्य है, परन्तु वह रुढ़ियों के जाल में और आलस्य के अन्यकार में इतना घिरा और फंसा हुआ है कि उसको यह नहीं सूझता कि किन कामों से उसका लाभ होगा और किन से हानि। हमें तो उसको घोर निद्रा से जगाना है, और ऐसा करने के लिये यह आवस्यक है कि हम उन लोगों को उनके कर्त्तव्यों के विषय में शिक्षण दें। इस कार्य के लिए अधिक संख्या में कमंचारियों की आवस्यकता नहीं है। जितना रुपया कमंचारीवर्ग पर व्यय होता है उससे चौथाई भी यदि स्वयं ग्रामवासियों को प्रत्यक्ष शिक्षण देने पर व्यय किया जावे तो चौगुना काम हो सकता है।

यदि स्वास्थ्यवर्षक उपायों की जानकारी कराने और मलेरिया के रोके जाने के उपायों को बतलाने के अतिरिक्त वैज्ञानिक शिक्षण-प्राप्त कर्मचारियों की आवश्यकता हो तो वह शिक्षण पंचायतों के निरीक्षकों को और फिर उनके द्वारा पंचायतीं के मंत्रियों को भी दिया जा सकता है और इसमें न विशेष समय ही लगेगा, न विशेष व्यय ही होगा। यदि हम उस मनोवृत्ति को त्याग कर दें जिसकी निन्दा महात्मा गान्धी के उपरोक्त कथन में है, तो में समझता हूं कि ऐसे सरल उपाय अवस्य ही निकाले जा सकते हैं जिनकी जानकारी प्राप्त कर लेने पर ग्रामीण मलेरिया के शिकार से निश्चयपूर्वक बच सकते हैं। हमें मूल तत्वों के ऊपर ध्यान देना चाहिए, न कि उन उपायों का अवलम्बन करना चाहिए कि जिनका साधन ग्रामीणों को दुस्तर ही नहीं, असम्भव-सा हो जाय। यदि एक मास का शिक्षण समस्त इंसपेक्टरों को एक ही स्थान पर अथवा प्रत्येक कमिश्नरी में दिया जाय और इन इंसपेक्टरों द्वारा मंत्रियों का शिक्षण दूसरे मास में इस सम्बन्ध में करा दिया जाय तो में समझता हूं कि आज से तीसरे मास में ही हमारे राज्य के गांव-गांव में मलेरिया तथा अन्य संकामक और महामारी रोगों को रोकने के

,,

उपायो का आविमीव हो जायगा ।

प्राम-मनाओं ने स्वास्थ्य और सकाई की ओर विशेष ध्यान दिया है और दे रही है। उनको जिन मुविषाओं और शायनों की आवस्यकवा है यदि वे स्वास्था विमाग द्वारा मिलने लगें तो बोडे ही दिनों में हुमारे शामों का स्वस्था बदल जायगा। गांदों में कुर-करकट के हेर वो पहले दिखाई देते थे उनती सम्बाग में और उतने विस्तार में बब नही दिखाई देते । शामों में बुखो की सफाई और मर-मत भी हो रही है, व्युशास्थाओं में सुभार हो रहा है और अधिक कम्म उपवाओं योजना के जनुखार पीटिक भोजन व तरकारी की उपलब्धि में सिधी करा में बढि हो रही है।

मै यह जानता हू कि मच्छरो के कारण अधिक-तर मलेरिया ज्वर फैलता है और मञ्छर प्राय सडे हुए वानी के गड़ड़ों में अधिक उत्पन्न होने है। मद्यपि उद्योग इस बात ना किया जायना कि ऐसे गड्डे देहाती में न रहने पायें, परन्तु सदि रहे भी दो उनमें मच्छर मारने ने छिए अयवा पश्शालाओं में और घूरों से मच्छरों को दूर करने के लिए यह आवश्यन नहीं है कि मैकेनिन ही रखे जाम और मूल्यवान् औपधि का ही प्रयोग किया जाय । चूना देहातो में उपलब्ध होना अधिक कठिन काम नहीं है और यदि चूने का प्रयोग ऐसे गहुश के लिए अयवा कुलो के लिये किया जाय तो वह भी मेरी सम्मति में उसी प्रकार लामदायी हो सकता है जैसे कि अग्रेजी औपिषया। इसी प्रकार यदि नीम की पत्तियों और लक्ष्मियों और चौर की सन्डियो का घुआ निवास-स्थान और पश्-भाराओं के निकट हिया जाय तो उससे निश्चय ही अधिक सस्या में मन्छर नष्ट हो सनते हैं। प्रामों के लिए मरेरिया के सम्बन्ध में एक बनुभूत प्रयोग में बतलाना चाहता ह जो कि श्राय देहातो में ही नही, शहरो में भी सफल हवा है। यदि उस ऋस में जब कि मलेरिया अधिक होता है, ग्रामीणों को बतलाया जाय वि" यदि वे पाच पते तलसी के और ११ दाने नाली मिर्च मिलाकर नित्य प्रातः-साय उपयोग करें तो मलेरिया के कीटाण कट हो जावेंगे और उनके ऊपर मलेरिया का आत्रमण न हो सकेगा। अब समय बदल गया है। हमें केवल विदेशों के बतलाये हुए साधनों का ही अवलम्बन नहीं करना है। द्वामी में अनेक ऐसी पत्तिया और जडी-बृटिया है कि यदि जनका उपयोग क्टियडो दारा वामीयो को बतलावा जाये और उसका प्रयोग कराया जाये तो अनेक रोगो की रोक्याम भी हो सक्ती है और रोगो का नाश भी हो सकता है। महात्मा गाधी प्राकृतिक चिकित्सा की बोर सदा जोर देते रहे। इस सम्बन्ध में उन्होने बहुत कुछ लिखा है । यदि उस साहित्य का भी नहीं प्रकार प्रचार और प्रसार प्रामी में हो सके ती बिना खर्च के बहुत लाम हो सकता है। उनका शहना या कि जिन पार्च तत्वी का शरीर बना हुआ है उन्हों पाच देरतो के उत्यक्त उपयोग से हम सदा स्वस्य और दीर्घजीवी रह सकते हैं।

प्राकृतिक विवित्सा में क्या भी नाममान होता है और अनुप्यूक्त वीपवियों हारा कमी-कभी को उपभीर हानि रोगियों को कठानी पकनी है, उठके भी निरुवणात्मक वचान हो मकता है। इस और साधान ना विशेष व्यान अभी नहीं गया है। दरन्तु इस प्रमाणी के अनुमन्नों को क्यान में राज्ञ है हुए भीर गायों में के प्रस्या अनुमन्ना में सुरुपोग करते हुए यह बात रायोंचित है कि प्राकृतिक वित्त सा हो नहीं, महति ने अनुकृत बाहार-विहार और रहन-सहन को सर्माननाओं ना मो प्रचार होना चाहिए और उनका उपयोग प्रामीजों के ही नहीं, अधिनु सभी कोशों के स्वानहारिक वीवन में स्वानित कथ से निया प्रांग चाहिए।

### सत्य की खोज में

### डा० कुलरंजन मुखर्जी

#### परोपकार

दूसरों की भलाई करना ही अपनी सबसे वड़ी भलाई है। मनुष्य वाहर से जो कुछ पाता है, उसका कुछ भी नहीं रह जाता। भीतर से वह जो कुछ पाता है, केवल वहीं स्थिर रहता है। वह जो कुछ भी वाहर से देता है, अन्तर में सहस्र गुना होकर वहीं उसको प्राप्त होता है।

मनुष्य जब दूसरों के लिए त्याग करता है, दूसरे के लिए श्रम करता है, तो वह अपना ही विस्तार करता है, और जो जितना ही अपने स्वयं का विस्तार कर सका, वह उतना ही महान् है।

मानव जब दूसरे के लिए अपने को भुला देता है, उसी क्षण उसके अन्तर का युग-युग से संचित पाप और मल भस्मीभूत हो जाता है।

दूसरे के लिए स्वयं को जितना ही अधिक व्यया और कप्ट का शिकार वनाया जाता है, अन्तर का उतना ही विकास होता है। पूजा में जितनी ही व्यया, उतना ही आनन्द।

वया भगवान् कहीं मेघ-मालाओं के अन्तराल में छिपे बैठे हैं? नहीं, वह तो इसी आत्मा के रूप में उपस्थित हैं। जब अपने स्वयं का विस्तार करके सभी के भीतर अपने को देखा जाय, तभी मानव के विश्वरूप का दर्शन होता है।

#### धर्म

जिसे धारण कर मनुष्य वचता है, वही धर्म है। इसके भिन्न-भिन्न रूप हैं। धर्म एक नहीं है, जितने मनुष्य हैं उतने ही धर्म भी हैं। लेकिन जिसकी साधना का परम ध्येय ईश्वर है उसीका धर्म सर्वश्रेष्ठ है।

#### कोघ

जिस पर कोच किया जाता है, उसकी अपेक्षा कोच करनेवाले की कम क्षति नहीं होती—शारीरिक, मानसिक, तथा आदिमक सभी दृष्टियों से ।

कोव यों प्रकट तो होता है वड़ी तेजी के साथ, पर

वह दुर्वलता का ही लक्षण है। अपने मन पर संयम का अभाव ही कोघ का प्रधान चिन्ह है।

जो संयमी हैं, उन्हें कोच नहीं आता।

प्रेम के द्वारा ही मनुष्य के मन पर विजय प्राप्त की जाती है। जहां इस प्रकार मन नहीं जीता जा सके, वहां समझना होगा कि हमारे प्रेम में कमी है, उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि विरुद्ध शक्ति पर वह जय प्राप्त कर सके।

#### आलस

जो बुरा है वह समय पाकर भला वन सकता है, किंतु जड़ में चेतना का संचार होना अत्यन्त कठिन है। आलस घीरे-घीरे जड़ता की तरफ खींचता है।

चुपचाप वैठे रहने की अपेक्षा छोटा-मोटा काम करते रहना अधिक अच्छा है।

घ्यान, चिन्तन बड़ी कल्याणकारी चीजें हैं; पर यदि उनके साथ कोई कार्य न रहे, तो बहुधा अनजाने आलस्य घुस आता है।

### उपदेश और अनुष्ठान

जो दूसरों की भलाई करना चाहता है, उसे चाहिए कि पहले अपने को सुधारे। अपने को अच्छा बनाना ही दूसरों को भला बनाने का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

कितने दिनों पहले श्रीकृष्ण आदि महापुरुषों ने एक ज़्योति जलाई, आज भी कोटि-कोटि नर-नारी उसीके प्रकाश से अपना पथ-प्रदर्शन करते हैं।

सदा उपदेश ग्रहण करते रहना चाहिए। मन को हमेशा खुला रहना चाहिए। जो उपदेश ग्रहण नहीं कर सकते, उनके लिये समझना होगा कि उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो गया है।

मनुष्य-जीवन की उन्नति उसकी ग्रहण करने की शक्ति पर निर्भर करती है । केवल थोड़े से सदुपदेशों के अनुरूप अपने जीवन को ढालने से मनुष्य बहुत ऊपर उठ जाता है ।

्र अनुष्ठान ही वर्म का प्राण है। सैकड़ों वर्म-प्रंथों के पढ़ने या दिन-रात धर्म-चर्चा करने से कोई लाभ नहीं होता यदि उसके साध-साथ अनुष्ठान न हो । बढे-बडे सिद्धातो का पोपण करने की अपेक्षा, एक छोटे उपदेख के पालन का महत्त्व जीवन में बहुत अधिक है।

सूख ओर दूख

इन्द्रियों के साथ प्रिम वस्तुओं के सयोग का नाम सुख और अप्रिय वस्तुओं के साथ इन्द्रियों के योग का नाम द्वा है।

सुल दु'ल दोनो मन के दो पहलू है। सुस की मावना रहेगी तो दु स भी रहेगा। मुख-दुस में समदृष्टि रखना ही दू स पर विजय पाने का प्रधान उपाय है। जब मुख की अनुभूति से मन प्रसन्न नहीं हो उठता तब दु ख से मन मलिन भी नहीं होता।

किंतु मुख-दु स पर विजय पाना बडा ही कठिन कार्य है। मुल-दुःख की अनुमृति मनुष्य में स्वकाव से ही है। जब मन उच्च स्तर पर विकसित होता रहना है, तमी निम्न स्तर के मुख-दुःख को पार कर सक्ता है।

भानव जब मुख-दुल को पार कर जाना है तमी वह ज्ञान प्राप्ति का अधिकारी होता है।

पाप-पुण्य

सानन्द की अनुभूति का नाम पुण्य और दुवैलता मय तथा अशान्ति की अनुमृति का नाम पाप है।

अच्छे कामी में आगन्द होता है, इसीलिए बह पुण्य है और बुरे कामों में भय होता है, अशान्ति मिलती है,

दर्बेन्स मा प्रादर्भाव होता है, इसी नारण यह पाप है।

पुष्य कार्यों में आनन्द होता है। इसका अर्थ यह है कि इससे बानन्द-स्वरूप भगवान का हम स्पर्ध-राम करते है । इस बानन्द को जबदंस्ती नहीं लाना होता । यह बानन्द भीतर से प्रवाहित होकर चादनी की तरह चारो तरफ फट पहता है। जो कार्य आनन्द प्रदान नही करता. परलोक म प्रतिदान-स्वरूप जिसकी फल-प्राप्ति की बाशा की जाती है, वह पूज्य नहीं, पुज्यलाम की छलना मात्र है।

पाप की अनुभृति भी अपेशाहत एक ऊची अवस्या है। वह यही प्रमाणित करती है कि मन अभी भी इतना वठोर नहीं हुआ है कि पाप की अनुभूति मध्ट हो जाय, लेकिन बुरे काम करते-करते प्राय मन में इतनी जहता आ जाती है कि उसमें पाप की अनुमृति ही नही होनी।

जन्याय को जबतक मनुष्य अन्याय समझना है तकतक वह बहत ही बच्छा है; पर जब वह अन्याय को ही बच्छा प्रमाणित करता है, तब वह बहुत ही हीन अवस्या को प्राप्त हो जाना है।

वित् पाप जिस प्रकार वर्जनीय है, पुण्यक्ल की आज्ञारस कर काँगै करनामी उसी प्रकार वर्मनीय है। ऐसा पुष्यफल बन्धनकारी होता है। बिना फल की इच्छा रखे हमें बच्छे नाम करने की आदत डालनी चाहिए।

#### तर्कका वोभ

श्री विष्णु प्रमाकर

मंगे पैर, सिर पर विकी के सामान का थाल रले वह रोता हुआ चला आरहा था। उसकारण अवेसाङ्गत काल। या,मुख कुछ सूजा और महा बाखे कीच से भरी हुई , आवाज मोटी 1 उसने कुरता और जाविया-नुमानिकर पहनाया। वह बार-वार कुरते की बाह से आसूपोछ लेता था, पर बासू ये कि स्वर्ते ही नहीं थे। और हां, उसके हाय में एक कमची भी थी जिससे शामद वह थाल की मक्खियां उडाया करता ए।। पर उस समय तो वह सदकुछ भूल कर जोर-जीर सेरी रहा था। .

यह एक स्वामाविक बात यो कि इसके रोने ने छोगों का ध्यान उसकी बोर खीचा। मेरा दिल मीय गया। मैने आवाज देकर अपने पास बुलाया। वह एक शोमना लगाने वाला लडका था। उसके याल में कटे हुये कामनी के ब्रतिरिक्त एक बरतन में मूछ नमकीन सेन,दूसरे में कुछ मीठी पपडी तथा एक ओर शायद गुड में पने सेव रखे थे। इलायचीदाना सी या । एक कटोरदान में कुछ सुले पैने बौर उसीके कपर छोटो तराजू रखी थी।

वह पास आया तो मैंने पूछा—"क्यों रोता है रे ? " उसने सुवकते हुए जवाव दिया, "मेरे पैसे निकाल लिये !"

: २५८:

" किसने ?"

" पता नहीं।"

" कहां रखे थे ? "

" थाल में ।"

अगे की वातों से पता लगा कि दिनभर घूम-घूम कर उसने लगभग दो रुपये का सामान वेचा था। उसमें से एक रुपया दस आने वांच कर उसने अलग रख लिए थे। उस बंधी हुई पुड़िया को किसी राह चलते ने थाल से उचक लिया था। वह वालक था और कोई भी राहगीर उसके थाल में से कुछ भी उठा सकता था।

यही सारी कथा उसने रोते-रोते कह सुनाई और कह कर वह दुगने वेग से रोने लगा। सुनने के बाद हममें से कुछ लोगों ने कंघे उचकाकर दोनों हाथ हिलाये और चल गए। एक राहगीर ने तीवता से नवयुग की नई सभ्यता को कोसना शुरू कर दिया। करुणा के बावजूद मेरे मन मे पहली प्रतिक्रिया अच्छी नहीं हुई। सोचा यह लड़का पूर्त जान पड़ता है। पैसे कहीं रख आया है और अब झूठमूठ लोगों की करुणा का अनुचित लाभ उठाना चाहता है। यह हो सकता है इसका पेशा ही यह है। नई दिल्ली में ऐसे कई लड़के घूमा करते हैं। एक लड़का जाम को अखबार वेचा करता है और रोज फटी जेव दिखा कर रोता हुआ कहता है, "मेरी जेव फट गई, पैसे गिर गए, अब मालिक को क्या दूगां?"

और तब सड़क पर चलने वाले सैकड़ों व्यक्तियों में से कोई-न-कोई ऐसा निकल ही आता है जो उस बालक के करण विलाप से द्रवित हो उठता है और उसे छः आने पैसे दे देता है।

"तो क्या यह भी उसी वालक जैसा है? क्या पह भी पेशेवर है?"

लगता तो ऐसा ही है—मैने अपने आपसे कहा और आगे वढ़ना चाहा; पर तभी मन में तर्क उठा—यह लड़का तो छच्चीस आने उठाये जानेकी वात कहता है और छः लाने और छबीस आने में अन्तर है। फिर उसकी जेव फटी नहीं है। किसी ने उसके थाल में से पैसे उठाये हैं। मैने स्वयं कई लम्बे आदिमयों को छोटे व्यक्तियों या बालकों के सिर पर रखे सामान में से चोरी करते देखा है।

मन कुछ ढीला पड़ा और करणा की पकड़ कुछ गहरी हुई पर तबतक वह बालक दूर जा चुका था। इस बात ने मुझे और भी प्रभावित किया। वह कहानी कह कर रका नहीं, चला ही गया। वह अवस्य सच्चा था, झूठा होता तो गिटगिड़ाता; खड़ा रहता।... नहीं-नहीं, वह सच्चा है। किसी दुण्ट ने उस गरीब की कमाई पर टाका डाला है। बेचारा गरीब बालक, शायद उसका बाप मर चुका है! घर पर उसकी मां उत्सुकता से उसकी राह देख रही होगी। टाके की बात सुनकर वह क्या कहेगी? उसका दिल टूट जाएगा। उन्हें ग्रायद फाका भी करना पड़े।...

वस मेरा मन द्रवीभूत हो उठा। मैने जेव में हाथ डाला, पर तभी में फिर कांपा—''कहीं वह ठग ही तो नहीं हैं! पहुंचा हुआ ठग!"

"वह बालक .. .!"

"वालक तो वट्डों के कान कतरते हैं!"

"नहीं-नहीं"— मेने गरदन को झटका दिया और जब से एक रुपये का नोट निकाल कर उसके पीछे लपका—"कम-से-कम एक रुपया तो उसे देना ही चाहिए।"

वह तबतक गली से बाहर मुख्य सड़क पर आगया था । कुछ अंबरे के कारण और कुछ मोट होने के कारण में उसे ठीक-ठीक देख भी नहीं पा रहा था, केवल उसका रुदन मेरा मार्ग-प्रदर्शन कर रहा था। मैं और तेजी से लपका और कुछ पास आकर चाहा कि पुकार्ल कि तभी देखता क्या हूं कि एक राहगीर उसके पास आकर कुछ पूछ रहा है। मानो मुझे लगा हो कि वह व्यक्ति लड़के के रहे-सहे पैसे छीनने आया है ! मैं आवेश में आकर चिल्ला उठा — "क्यां बात है ?"

राहगीर मुड़ा, बोला — "कुछ नहीं, बाबूजी। वैचारे बच्चे के थाल में से किसी कमबस्त ने पैसे उठा लिये हैं!"

यह सब पलक मारते हो गया और जबतक में उनके पास पहुंचूं, वह व्यक्ति जिस तेजी से आया था ( शेष पृष्ठ २६७ पर )

## हिंगी पर

धर्मे और सस्कृति (निवंध-सम्रह): छक्डन-कर्धा-धी वधनावाल बैन, साहित्य रत्न, प्रकासक-भारत जैन महामध्यत, वर्षा, वृद्ध १४३, मृत्य १।)

जैसा वि सकल्पवत्तों का दावा है, प्रस्तुत स्वह् धर्म और सस्कृति पर अनुसवी सत्तो और विद्वानो ने विकारमूर्क निवारी का सकल्पन हैं। विचारकों में श्री विनोद्या गैसे सत्त, श्री मदाक्वाला जैसे विनत्तक, मठ स्वावानीय जैसे क्यांतिकारी किवारक, श्री जैनेत्वकुमार तथा प्रदन्त आनन्द कीस्प्यायन जैसे मोलिंग और पैनी दृष्टि बाले निवयनार है। इन तथा अन्य लेखकों के दिवार करने के अधिकार पर किसी प्रवार की सका मही हो सक्तों पुरत्तक पढ जाने पर तो,जैसा कि सक्का कर्ती ने कहा है, पाठक को विचान करने वा स्ववस् सिलाई होर लेखकों के प्रति आस्था दृढ होती है।

सनी केली का दृष्टिगोण मीजिन, गुण्या हुमा और प्रानिप्तील हैं। पाठक नह बृद्धि पाठा है और उपले मिस्तिल में को पुमली रेलाए है वे स्पर्ट होती हैं। में माफलाजा ना लेल 'शासन-दृष्टि की मर्यादा' जैते हुमारे लिए एक जेनानी है—"शासन के निर्माता विदान् या सन्त होते हैं। विदान् या सन्त ना निर्माता प्रान्त नहीं होता।" मुल आधार पुरुप है, न कि यथा। 'औ विनोधा ने सेवा के आवार-वर्ष पर प्रकास द्वाला है। विनोधा ने सेवा के आवार-वर्ष पर प्रकास द्वाला है। विनोधा ने सेवा के आवार-वर्ष पर प्रकास द्वाला है। विनोधा ने ने सेवा के सावार-वर्ष पर प्रकास द्वाला है। आनन्दकी में विद्यानी सक्षी वान नहीं—"सभी जगह से आवार के मानव का 'पर्म' है। यन प्रवानावीन ठीक हों। मानवे हैं कि मानव सहित सदा थे एस हैं आव मी एक हैं और सदा एस पहेंगी और वी जेनेल-पूनार का

यह कहना कि जहां भी' प्रधान हूं और दूसरा मेरे प्रयो-जन की व्योक्ता में ही है, वहा का समस्न कर्म सम्ब्राति-मूलक न होने से व्याम और अनिष्ट कर्म है, एक ऐसा कटुनत्व है जिसकी जिपका पातक होगी।

पुस्तक सम्बक्तिय और मननीय है। छपाई-सनाई बच्छी है और मृत्य भी कम है। 'भारत जैन महामण्डल' का यह दावा नि उनका ज्येय सब धर्मी के प्रति समयय साचना है, इस पुस्तक से अच्छी तरह प्रकाशित हो जाता है।

मेरे वापू (काव्य): लेकक-श्री 'तन्मय्' बुकारिया: प्रकाशक-भारतीय ज्ञानपीट, काशी; पट १२०. सजिल्द मृत्य २॥)।

प्रस्तत परनवा में हिन्दी के नवीदिन तहण कवि श्री हिकमचन्द व्यारिया 'तन्मय' को अधिकतर वे कविताए सुरक्षित है जो उन्होने महात्मा गान्धी के निधन पर लिखी थी। यान्धीजी का व्यक्तिय न जाने क्तिने कलाकारी, साहित्यका और कवियो के लिए प्रेरणा का विषय रहा है। उनका बलियान तो जैसे कला और कविता बोना का मृतंरूप वन गया। कवि बहता है कि बाउ के बलिदान के बाद कवि होते हुए भी जीवित रह जाने की जो लग्ना और तज्जन्य रोइन है. वही इस सवह की रचनाओं में शब्द-बद्ध है। दावा बड़ा है. पर कविताओं को पढ़ने पर लगता है कि बड़ा होने पर भी दावे में सार है। कवि की श्रद्धाञ्जलि में अनुमृति है, करपना है, करणा है, प्रेरणा है और है भविष्य के प्रति बट्ट विश्वास । इन कविताओं को पढ कर बहा हदय करणा से रो-रो चठता है. मस्तक करना से झर जाता है, यहा उच्छवासो से मरी छाती सहसा उफन कर पुरार उठती है

एक बात है किन्तु कि यद्यपि चक्र आज उलटा घूमा है, आज मोन मतवाला होकर मूर्त-मुखर पर जा झूमा है; किन्तु सदा गीता का गायक सह न सकेगा इस अनीति को आज या कि कल सिद्ध करेगा ही फिर वह जगकी प्रतीति को किसी रूप में प्रकटित होगा ही कि देर, अंघेर नहीं पर एक बार घरती गूंजेगी ही फिर उसके अमर स्वास से।

कविताएं सचमुच सुन्दर हैं और हृदय को पकड़ती हैं; परन्तु कि गोडसे के प्रति जितना निमंम हो उठा है वह ठीक नहीं है। वह वेचारा कोई एक व्यक्ति थोड़े ही था। वह तो मात्र प्रतीक था। तत्कालीन भारत में वापू के लिए जगह नहीं थी, आज भी नहीं है। जैसा कि किव ने स्वयं कहा है कि हम गोडसे वादियों से बदला नहीं लेंगे—''सौभाग्य-तस्करीं के प्रति भी प्रतिहिंसा दान नहीं होगा।" वह जिचत ही है परन्तु इससे भी वड कर उचित यह है कि हम (किव सहित) इस बात की छोज करें कि गोडसे जिस विचारधारा का प्रतिनिधि था क्या कहीं हम भी तो उसीको वल नहीं दे रहे हैं? मुझे लगता है कि हम दे रहे हैं।

### विश्व की महान् महिलाएं :

लेखिका—श्रोमती शचीरानी गुर्टू : प्रकाशक—युग-प्रकाशन दिल्ली; पृष्ठ २०२ टिमाई:मूल्य ५), सजिल्द ।

श्रीमती शचीरानी गुर्टू इधर जिस दुत गित से आगे आई हैं वह साहित्य के लिए शुभ लक्षण है। यद्यपि जनके साहित्य पर शास्त्रीय अध्ययन की गहरी छाप है (और हम चाहेंगे कि उससे भी अधिक हृदय-मन्थन की छाप हो) तो भी जन्होंने उसे नवीन दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया है, जो स्लाब्य है।

प्रस्तुत संग्रह में २२ नारियों के रेखाचित्र हैं। उनमें ७ भारतीय, ४ अमेरिकन, ३ इंग्लिश, २ चीनी, २ रूसी, तथा एक-एक टर्की, फांस, इण्डोनेशिया, और इटली देश की हैं। यद्यपि उनमें राजनैतिक महिलाएं अधिक हैं तो भी चित्रकार, समाजसेवी, कवियित्री, शिक्षाशास्त्री और वैज्ञानिक महिलाएं भी हैं। हमारा विचार है कि चुनाव और वैज्ञानिक

होना था। जैसा कि भारतीय महिलाओं में लेटी वजीरहसन-जैसी कोई मुस्लिम महिला होती, ईरान मिश्र तथा बरमा की कोई नारी होती तो अधिक अच्छा होता। लेकिन ये सब कमियां (हमारी दिष्ट में) पुस्तक के मुल्य को किसी भी तरह कम नहीं करतीं। वह एक स्तृत्य प्रयत्न है और लेखिका ने परिमित पुष्ठों में अधिक-से-अधिक जानकारी देने की चेप्टा की है। नारी आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे है। वह पुरुप से श्रेष्ठता का दावा कर रही है। उस दावे के जीचित्य पर यहां विचार नहीं करना है: परन्तु इस संग्रह के चरित्रों से यह स्पष्ट हो जाता है-"नारी, जिसने सदैव देना-ही-देना सीखा है, रात हो या दिन, अन्यकार हो या प्रकाश, दुदिन हो या मदिन, अपने स्नेहराग से प्राणों की वत्ती जलाए जीवन के कण्टकाकीणं-पद्य को आलोकित करती रही है।" उसके इस दान में से ही संसार का भविष्य पलता भीर पुष्ट होता है । इसलिए हमें विश्वास है कि श्रीमती गुर्टू की लेखनी से निकले ये चरित्र हिन्दी के पाठकों को नृतन ज्ञान ही नहीं देंगे, नई दिशा भी देंगे; क्योंकि ज्ञान जितना विस्तृत होता है, हृदय उतना ही उदार होता है और हृदय की उदारता जीवन की शतंहै।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान: लेखक—रघुवीरशरण दिवाकर; प्रकाशक— मानव साहित्य सदन, मुरादाबाद; पृष्ठ ४०, अजिल्द, मूल्य ॥)।

प्रस्तुत पुस्तिका में लेखक ने साईसपूर्वक उस अन्याय का उद्घाटन किया है जो अपनी संस्कृति की उच्चता का दावा करनेवाले भारतीय आदिकाल से नारी के प्रति करते आ रहे हैं। पुस्तक पर अध्ययन की छाप है और वह चिकत कर देनेवाले तथ्यों से, जिन्हें झुंठलायां नहीं जा सकता, पूर्ण है। उसे नारी कां पुरुष के प्रति अभियोगपत्र कह सकते हैं। हम मानते है कि यह पुस्तंकं लिखकर लेखक ने समाज की बड़ी सेवा की है और यह आशा करते है कि इसे पढकर पाठको ने हृदय में नई दिशा दिखाने-बाला प्रकाश पैदा होगा । लेखक ने सप्रमाण और तक-सगत होने की परी चेध्टा की है, पर फिर भी हमारा मत है कि यह अध्ययन अध्रा है। मात्र अभि-योगों की क्वी बना देने से, बेशक वे सप्रमाण हो, काम नहीं चलता। जिन ग्रयो का उन्होंने हवाला दिया है वे कब और किन परिस्थितियों में बने, यह पना लगाना और जिस हिन्दू धर्म की बात छेकर छेखक पछा है वह क्तिना प्राचीन है, इसकी लोज करना आवस्यक है। महामारत की घटना प्रानी है, परन्तु वह लिखा तो ईसा के बहुत बाद गया है। वेद बहुत पुराने है, परन्तु उनका वर्गीकरण और लेखन महाभारतवाल में, आज से कोई तीन या साढे तीन हजार वर्ष पूर्व हुआ। उपनिषद् आदि तो उसके भी बाद ने हैं। कहने का सारपर्य यह है कि छेखक को काल और कारण का अध्ययन भी प्रस्तुत करना चाहिए था। पुरुप नारी को इसना हेय बया और कैसे समझने लगा, इसके वैज्ञानिक अध्ययन के विना अभियोगी का कोई मृत्य नही होता। फिर आर्थी से पूर्व द्वाविड और सथाल संस्कृति में नारी का क्या स्थान था ? प्रारम्भिन आर्य लोगो में नारी को नया पद मिला हुआ था ? क्या वैदिक और हिन्दू धर्म एक ही है; ये सब चर्चाए इस प्रश्न से सम्बन्ध रखती है और उन पर आवश्यक विचार होना ही चाहिए था। फिर भी पुस्तक उपयोगी है और बहुतो के लिए

फिर भी पुस्तक उपयोगा है जार बहुत। के । मार्ग-प्रदक्षिका है। हा, मूल्य बुछ अधिक है।

संघर्ष और समर्पण : (उपन्यास) क्षेत्रन— सन्हैयालाल ओसा 'स्नेह', प्रकाशक-ताजहस प्रकाशक दिल्ली ; पुरुत्तास्था ६३३ , स्वित्त्य मृत्य साढे पाल क्ष्मा !

कोंद्राजी नये लेखक है और उन्होंने उपन्यात को नई परिभाषा देने की चेप्टा की है। हम मानते हैं कि लम्बे बाद विवादा और नहीं-कही उना देने बाजी भाषा ने शानबूद उपन्यात सरत, रोजन और अपने को पढ़जा तेने में काफी सफल है। लेखक ने स्वीकार किया है कि वह विधिष्ट धाराओं और उम विधिष्ट व्यक्तियों को नेकर बला है "जो धारवत जीवन का प्रवल स्तोत लेकर तो जवतीर्थ होते हैं; किन्तु बिनवे प्रवाह की दिशा स्पिर होगी है उस इह के प्राप्त को धारवत जीवन की गति में, समाज में प्रचलित धारवाओं के धात-प्रतियात ते उपन्न होता है।"

प्रारम्भ में पढते समय ऐसा छगता है कि उप-न्यास एकदम अस्वामाविक है, परन्तु अन्त में एक बड़े रहस्य का उद्घाटन होता है जो अपने आप में अस्थामाविक होकर भी उपन्यास की अस्थामा-विकता का समाधान करने की चेप्टा करता है और मानना पहेंगा कि वह बहुत कुछ सफल भी होना है । उपन्यास में आतकवादियों की चर्चा है, गप्त समाओ और यहयन्त्रों का वर्णन है: परन्त साय ही उन सबके मानवीय गुग और अवगुणो पर परदा नहीं डाला गया है। भारत से बाहर जो आन्दोलन चला या उसीके कुछ लोग इधर-उघर छिपे पढे है, कोई मल्लाह है. कोई पोस्टर्मन तो कोई गानेवाली । वे सब उच्च आदशों की विद्वतापूर्ण मापा से विद्वता-पूर्ण विवेचना करते है, परन्तु व्यवहार में अधिकतर ने सब स्त्री-यहर के स्वामादिक आकर्षण का शिकार है और एसे कर्म कर बैठते हैं जो उनके उच्च आदशी को कलकित करनेवाले हैं। लेखक ने अग्रेजों के अत्याचार का वर्णन भी किया है। स्त्री-पूरुप के सम्बन्ध की ब्यारया भी की है, मथुरा में हुण्ण की उपासिकाओं की झाकी भी दी है, और भी बहुत कुछ किया है; पर वह सब इतना भारी है नि पाठक उसके भार से दवकर रह जाता है। हा, रहस्य और रोमाच से पुर्ण इस उपन्यास में मानव मनोविज्ञान की दृष्टि से कई सफल चरित्र अनित हए हैं । वे ही इसकी शक्ति हैं। यदि बाद विवाद बीर राजनीति का भूत लेखनी को इतना म अनड लेता तो सम्भव या नि देखन माया, जारती और नीलम को कुछ अधिक प्राणवान बना पाता । टीकू, अवरलाल बीर नवनीत उपन्यास-साहित्य के अमर पात्र वन जाते। लेखक में शक्ति है, यूझ है, कल्पना है; पर वह अभी मोहाविष्ट है। इसीलिए उलझन है। भविष्य में वह विद्वता का मोह छोड़कर मनुष्य की दृष्टि से लिखेगा तो निसन्देह कुछ अमर चित्र दे सकेगा। उससे वहुत आशाएं हैं।

कवीर-वीजक: सम्पादक— हंसदास शास्त्री तथा महावीरप्रसाद, प्रकाशक—कवीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, हरक (वारावंकी), मूल्य ५।।)

जैसाकि नाम से स्पष्ट है, इस पुस्तक में कबीर साहव का बीजक दिया गया है। कबीर-बीजक का कई स्थानों से प्रकाशन हुआ है; लेकिन उन सबमें पाट-भेद पाया जाता है। इसका मुख्य कारण संभवतः यह है कि कबीर की वाणियां मौखिक होने के कारण उनके शिष्यों ने अपनी भाषा के रूप में उन्हें ढाल दिया है। पाठ-भेद का एक कारण यह भी है कि प्रायः सम्पादकों ने कबीर के शब्दों पर ध्यान न रखकर, अर्थ पर रखा है। प्रस्तुत बीजक का संशोधन लगभग २८ बीजक-प्रतियों के आधार पर किया गया है बीर सम्पादकों ने अपनी और से कोई शब्द नहीं गढ़ा।

संत कवीर की 'वानी' आज भी अपना महत्व रखती हैं। सरल तथा सीधी-सादी भाषा में उसमें एक ऐसा संदेश है जो प्रत्येक सांसारिक प्राणी के लिए ग्रहण करने योग्य है। हमें हुए है कि सम्पादक द्वय ने इतना परिश्रम करके यह बीजक हिन्दीभाषी जनता के लिए सुलभ किया। पुस्तक के १२४ पृष्ठों में बीजक है। बाद के पृष्ठों में ५ परिशिष्टों में कमशः बीजक का शब्द-कोप; अंतर्गत कथाएं; संख्या-वाची शब्द, बीजक में आये योग-संबन्धी शब्दों की व्याख्या; रूपक, उलटबांसी तथा प्रतीकात्मक शब्दों के अर्थ दिये गए हैं। कबीर की रचनाओं का अर्थ व उनके संदेश का मर्म समझने के लिए प्रत्येक पाठक को इस पुस्तक का स्वाध्याय करना चाहिए। पुस्तक के सम्पादकों में श्री हंसदास शास्त्री एक कबीर-पंथी मठ के अध्यक्ष तथा श्री महाबीरप्रसादजी कबीर-पंथी मठ के अध्यक्ष हैं। ऐसी दशा में भूमिका-लेखक डा॰ भागीरथ मिश्र के शब्दों में "भाव और विचार-धारा की दृष्टि से ये वानियां साम्प्रदायिक परम्परा से सम्मत होने के कारण महत्वपूर्ण हैं।" अनेक बीजकों तथा कितपय कबीर-पंथी स्थानों की हस्तिलिखित प्रतियों से शब्दों तथा भाषा के रूप-निर्धारण म सहायता लेकर इस बीजक को प्रमाणिकता प्रदान की गई है।

कवीर की 'साखियां' आज भी घर-घर में मुनी जाती है। अच्छा हो यदि इस पुस्तक का एक सस्ता संस्करण भी निकाला जाय। यों पुस्तक का आकार, छपाई आदि के देखते ५॥) मून्य अधिक नहीं है; फिर भी सामान्य पाठक की पहुंच से तो बाहर है ही।

घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा: धर्मचंद सरावगी, प्रकाशक—मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, कलकत्ता मूल्य एक आना।

इस पुस्तक में दांत का दर्द ,आग से जलना, करण, ज्वर, फोड़ा-फुंसी, अतिसार, जुकाम, सिरदर्द, तथा घाव की प्राकृतिक चिकित्सा वताई गई है। यह चिकित्सा इतनी सरल है कि कोई भी घर बैठे कर सकता है। मिट्टी, पानी, एनीमा के साथ-साथ भोजन किस प्रकार का लेना चाहिए, यह भी बताया गया है। पुस्तक किताबी ज्ञान के आधार पर नहीं लिखी गई है; बिल्क लेखक ने अपने तथा अपने परिचार के ऊपर परीक्षण करके लिखी है। पुस्तक उपयोगी है और हम चाहते हैं कि घर-घर उसका प्रचार हो।

### हमारे सहयोगी

हिन्दी में ऐसे विचार-प्रवान साप्ताहिकों का वड़ा अभाव है, जो पार्टीवंदी से ऊपर उठकर जनसाधारण को निष्पक्ष होकर सोचने के लिए विचार-सामग्री दे सकें। हरिजन-सेवक, लोक-सेवक इस दिशा में मार्ग-दर्शक पत्र माने जा सकते हैं। इधर १४ जून, १९५१ से सर्वंश्री हीरालाल शास्त्री तथा प्रेमनरायण माथुर के सम्पादकत्व में जयपुर से 'जीवन-संदेश' नामक

साप्ताहिर पत्र निकलने लगा है । राजस्थान पिछने दिनो काफी राजनैतिक उचल-पुबल रही है और सम्पादकद्वय वहां के पिछले मित्रमण्डल में कमश मध्यमत्री तथा शिक्षामत्री के पद पर रह चुके है। अत यह आशाना होना स्वाभाविक ही है कि धह पत्र दलगत राजनीति से ऊपर रह सकेगा: लेकिन हमारे सामने जो अक है, उन्हें देखने से उन्त आशना बहुत कुछ अशों में निर्मुल हो जानी है। पत्र का सम्पादन विवेक्पूर्वक हो रहा है। सामधिक समस्याओं की चर्चा में कही-कही बाग्रेस तथा शासन-तत्र की आलोचना था गई है, लेपिन वह पायद इसलिए कि काग्रेस व शासन-तत्र में अनेक दोप वस आये है जिन्हें दर किये बिनादेश वाहित नहीं हो सकता। पत्र का वार्षिक शुरुव ६) और एक अक का तीन आ ना है। प्रश्येक अक के प्रथम पुष्ठ पर राजस्थानी भाषा में थी हीरालाल शात्री की एक भावपूर्ण कविता रहती है। हमें प्रसम्नता होगी यदि यह पत्र आगे भी अपने उद्देश्य के अनुसार दल्गत राजनीति से ऊपर रहकर सेवा-पय पर अग्रसर होता रहे !

इभर राणी से एक मासिक पत्र निकलने लगा है 'प्रास-निर्माण' जिसके सत्पादक है थीरामचरिलांख । अपने नाम के अनुबद उसमें भागीपगंगी सामग्री से कारही हैं। पहले वर्ष या पाचवा और छठा अक इस समय हनारे सामने हैं। उनमें वई लेख पठनीय है और जनतामारण ने वह गाम थे हैं। इस प्रचार के नितने भी पत्र निकल अभिनदनीय है, वारण कि भारत गायों में यमग्रा है और निना मांचे थीं। उसार्व ने गायु नी जनति समय नहीं है। पत्र के लेखी के नुनाब में थोडी नहाई और दिसे सी पत्र अधिक उपयोगी वन सकता है। छाई में भी योडे सुवार की मुजाहय हैं। प्राप्ति-स्वीकार

[ 'जीवन-साहित्य' में समोक्षा के लिए हमारे पास स्वेच्छा-पूर्वक बहुत सी पुर हम स्वतंत्र कर से सिकार चुनी हुई पुरतकों पर हम स्वतंत्र कर से सिकार प्रवट करने का प्रमान करते हैं। जो पुरतकों छुट जाती हैं, उनके विषय में हमारी लावारी मानी जानी चाहिए। इस समय हमारे पास निम्मालिता पुरतकों जाई हुई है। इनने से कछ पर हम लागायी का सं विससार से चर्चा करेंगे।

—सन्पदन

- (समालोचना के लिए दो प्रति आता आवश्यन है।) १ स्त्री-पुरुष मर्यादा — लेखक - निशोरलाल मरास्वाला - प्रकार नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद मर्रा॥)
- २ बापू के पत्र मीरा के नाम-अनुवादक-रामनारायण चीपरी, प्रका॰ उपरोक्त मु॰ ४)
- चावरा, प्रकार अपराक्त मृत क)
   रामङ्कष्ण उपनिषद्—कें चनवर्ती राजगोपालाचार्य प्रकार—हिन्दस्तान टाइम्स, नई दिल्ली मृत १॥)
- ४ पुरुष-स्त्री-लेखन-श्री रघुवीरगरण दिवानर प्रकार मानव साहित्य सदन, मुरादाबाद मूल्य २॥)
- ५ भारतीय राष्ट्रीयता नियर ?---- अलन-प्रकाशक उपरोक्त मृ० १)
- ६ सर्वोदय के सिद्धात-प्रकाशक नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदावाद मु० ॥)
- वर्डमान-रचिता-अनूप सर्मा, प्रनाशक-भारतीय झानपीठ, कासी, मू० ६)
- शर ओ सुक्षन-रे॰ अयोध्यात्रसाद गोयलीय, प्रका० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मू० ८)
- गहरे पानी पैठ-लेल-प्रकार-जपरोक्त मुल्ला।
   ज्ञानगगा-लेल थी नारायणप्रमाद जैन, प्रवाधन-उपरोक्त मूल ६)
- ११ यूजन रत्नावर-फूठवर घास्त्री प्रशासर-जैन, सिद्धान्त यथमाला दि ली, मू० ५)
- १२ मुखी भारत-छे॰ श्री प्रकासलाल, प्रका०-जीवन मदिर राजेन्द्रनगर नई दिल्ली, मू० ॥। = )

# 'दिता व विकास ?

### नेहरूजी और टण्डनजी दोनों रहें

पं. जवाहरलालजी के कांग्रेस-कार्यसमिति से इस्तीफा देने के कारण जो नेहरू-टण्डन विवाद खड़ा हो गया है उससे देश में एक हलचल पैदा हो गई है। इसे दो व्यक्तियों का झगडा तो कोई भी समझदार आदमी नहीं कहेगा। दोनों में परस्पर काफी स्नेह और आदर है। दोनों अपने गुणों और सेवाओं के कारण इतने महान भी हैं कि उनके व्यक्तित्व पर हमला करने वाला खुद ही क्षुद्रता को प्राप्त किये विना न रहेगा। कांग्रेस को सुदृढ़ वनाने की दोनों की समान इच्छा होते हुए भी इसमें कूछ सन्देह नहीं कि दोनों के विचारों में कुछ-कुछ अन्तर है और यही असल में इस विवाद का मूल कारण है। यह मतभेद भी सैढान्तिक तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी इस तरह का जरूर है कि जिससे दोनों की गाड़ी एक पटरी पर नहीं चल रही और आज देश के सामने यह समस्या खड़ी हो गई है कि वह नेहरूजी के पीछे चले या टण्डनजी के। वास्तव में हमारा प्रकाश-स्तम्भ या घृव-तारा तो हमारा आदर्श, हमारा लक्ष्य और हमारा सिद्धान्त ही हो सकता है और होना भी चाहिए, परन्तु कई बार राष्ट्र के जीवन में ऐसा संकटकाल आ उपस्थित होता है जब हमें आदर्श और सिद्धान्त के मृतंरूप व्यक्ति का चुनाव करने पर मजवर होना पड़ता है। इस तरह से यदि आज हमें टण्डनजी और नेहरूजी में चुनाव करना पड़े तो नेहरूजी को चुनना ही सब दुष्टियों से उचित रहेगा। परन्तु जहां यह उचित होगा वहां आज की परिस्थितियों में टण्डनजी को कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटने देना भी देश का द्देंव ही कहा जायगा; क्योंकि संकट के समय में सबको साथ छे चलने की मनोवृत्ति ही हमारी नीका को पार लगा सकती है।

नेहरू जी को यह शिकायत है कि उनको प्रसन्न करने

या रखने के लिए प्रस्ताव तो उनकी विचारवारा के पोपक पास कर दिये जाते हैं, परन्तु कांग्रेस-यंत्र के द्वारा उनका पालन नहीं होता। इसलिए वह उस यंत्र में तदनुक्ल परिवर्तन कराना चाहते हैं। टंडनजी के लिए उचित है कि वे सिद्ध करें और नेहरूजी को समझा लें कि उनका यह आक्षेप और शिकायत गलत है। यदि सही हो तो या तो स्वयं ही उस यंत्र को उनके अनुकूल वना दें या उनके सुझाव के अनुसार उसमें परिवर्तन कर दें । उनका यह कहना सही है कि अध्यक्ष को कार्यसमिति वनाने का अधिकार है और उनको अपनी कार्यसमिति से संतोप है। अतः उनको उसमें कोई पिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं मालूम होती। टंडनजी के आत्म-संतोप की दृष्टि से यह ठीक हो सकता है; परन्तू उन्हें जवाहरलालजी को साथ रखना है, उन्हें संतोप दिलाना है। अतः नेहरूजी के लिए जगह खाली कर देना टंडनजी की महानता का मूचक है; परन्तू समय की मांग इससे भी बड़ी है और वह यह कि टंडनजी जवाहरलालजी को आत्मसात कर छैं।

यह न हो सके तो कम-से-कम उन्हें अपने साथ तो रख ही सकें। यह उसी दशा में हो सकता है जब टंडनजी अपने को गांधीजों की स्थिति में अनुभव करें। यदि जवाहरलालजी उनके छोटे भाई के समान हैं तो उनके लिए जवाहरलालजी को इस तरह अपना लेना कठिन न होना चाहिए। "जवाहरलालजी कार्यसमिति से ही तो जाते हैं, कांग्रेस को तो नहीं छोड़ रहे हैं," ऐसी संतोगकी भाग टंडनजी के आसपास से कहीं भी न निकलनी चाहिए। आज जहां हमें एक-एक तिनके को वंटोर कर उसकी मजबून ररसी बनाना है वहां यदि नेहरूजी व टंडनजी जैसे बोर और हाथी को छोड़ना गवारा कर लें तो हम मूर्व ही नहीं, दुर्माणी भी कहे जाएगे और समाज तथा राष्ट्र के सामने दडनीय ठहरने चाहिए। हमारी राय में तो टबनवी यदि विधि-विधान की या तर्क को बन्दियों से उपर उठकर एक सच्चे नेता की माति कांब्रस के इस भीतरी सकट का हल निकाल में जबत हो तो उन्हें तुरन्त सफलता पिक जाएगी। कायेस के अध्यक्ष की इससे कही कसीटी पहले कभी नहीं हुई थी। हम हुस्य से चाहते हैं कि टब्क्जी इससे उत्तीण हो।

अनर्थ की रोक

काग्रेस की भीतरी कमियो और कमजोरियों के कारण देश में जो असम्तोय फैला उसके फलस्वरूप जावार्य क्पलानी की प्रजापादीं का जन्म हवा, थी किदवई तक को निराश होकर कावेस छोड देनी पडी । बनाल. उत्तरप्रदेश में प्रान्तिक आधारपर नई-नई पार्टिया बन चुकी हैं। अब राजस्थान में भी एक जनता फार्टी वनने का समाचार मिला है। जिस तरह अभी जो काग्रेसके क्रणधार है उनकी देश मक्ति और सच्चाई पर शका करना कठिन है, उसी तरह जो बलग होकर नये दल बना रहे है, उनकी बोर भी उगली उठाना आसान नहीं। फिर भी दो वार्तें निश्चित है। एक यह कि काग्रेस अपनी भीतरी कमिया और कमजोरिया दूर करने में सफल नहीं हो रही हैं। दूसरी बोर जो काग्रेस से फुट-कर बाहर निकल रहे है उनके मन में भी केवल काग्रेस के वर्तमान नेतृत्व से असन्तोप ही नहीं, त्रोध भी मालम होता है। सिद्धान्त और नीति की अपेक्षा इस मतभेद का स्वरूप ब्यक्तिगत अधिक मालूम होता है। यह दिखलाता है कि अभी भारतीय समाज में अहिसा का या जननशीय भावना का इतना विकास नहीं हो पाया है कि हमारे मतभेद केवल सिद्धान्त और रीति-नीति पर ही बाघारित रह सकें। हमें इस ओर दृढता से और तेजी से कदम बदाना है। हम खुद इस दिचार से सहमत है कि व्यक्ति से सस्या वडी है और सस्या से आदर्श वडा है। इसलिए आदश की रक्षा के लिए जो सस्या का त्याग करते हैं उनके प्रति हमारे मनमें आदर रहता है; परन्तु जिस तरह काप्रेस के वर्तमान पदाधिकारी कमियो और चुकि हम यह विश्वास करते है कि राजनैतिक दलवन्दियो में अपना समय लोना नृथा है और देश में रचनात्मक सर्वोदयी प्रवतियो को बढाने से ही हमारी बहत-सी विपत्तियों का अन्त होनेवाला है । इसलिए हम कावेस की फट और दलवन्दियों से दू ली होते हुए भी प्रभावित नहीं होते । ऐसे कार्यक्तांओं के लिए हम यह ठीक समझते हैं कि वे काग्रेस के अन्दर की या देश के अन्दर की फट और दलबन्दी की मिटाने का और देश में राष्ट्रीय बातावरण को बढाने का जितना प्रयास कर सकते है करें। पट और दलबन्दियों को बढ़ाने की जिम्मेदारी अपने उपर न लें । सब पक्षनालो को हम ऐलानिया कह दें कि फूट और दलबन्दियों में आप हमको न पसी-टिये । एकता बढाने में और दूसरी रचनात्मक तेवा में हमारा जितना उपयोग करना हो, खुधी से कर सकते हैं। ऐसी दृढता ही हमकी वर्तमान बनयों से रोक सकती है।

योजना आयोग की रिपोर्ट

पत्रवर्षीय योजना-आयोग हमारे सामने आ चुका है। हमारी नसीटी किसी मी मोजना या मनुष्य को नसने की यह है कि वह सर्वोदय के कहातक अनुकूल है ? इस दृष्टि से योजना-आयोग की रिपोर्ट बहुत वसन्तोपजनक है। सर्वोदय की ओर लेजाने में भी वह जल्दी सफल नहीं हो सकती। लेकिन हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि वह वर्तमान राष्ट्रीय सरकार द्वारा नियोजित राप्ट्रीय योजना का आयोग है, न कि सर्वोदय योजना का। इस सीमित क्षेत्र और निश्चित दृष्टि से देवें तो उसके वर्तमान माननीय सदस्य, वर्तमान रिपोर्ट से अच्छी रिपोर्ट नहीं दे सकते थे। जो राष्ट्रीय प्रवृतियों से सन्तोप मान लेते हैं उन्हें उसकी सफलता के लिए सरकार को पूरा सहयोग देना चाहिए। जो सर्वोदयी दृष्टि रखते हैं उन्हें अपनी सर्वोदय योजना को कार्यान्वित करने में अप्रसर होना चाहिए। जब तक सर्वोदयी दृष्टिवाले सदस्यों का बहुमत घारासभा में न हो तवतक उनको भारतीय सरकार से विशेष आशा . न रखनी चाहिए। जितनी सहायता और सहयोग मिल सके उतना गनीमत । जो कसर रह जाती है उन्हें वह प्रत्यक्ष जनसेवात्मक प्रवृत्तियों और उससे प्राप्त शक्ति और सावन के द्वारा पूर्ण करने का प्रयत्न करते रहें।

#### हमारा आशा-दिवस

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के चार वर्ष व्यतीत कर हमने पांचवें वर्ष में प्रवेश किया है। सभ्य कहलाने वाले किसी भी नागरिक के लिए यह एक महान् उत्सव का दिन है। किन्तु कोई भी उल्लास हम आज अपने वीच नहीं देखते। हम सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न गणराज्य के घटक् हैं, यह सोचकर हमें गर्व होता है जरूर; पर हमारी आंखों में वह ज्योति नहीं दिखलाई देती, हमारे दिलों में वह जमंग भी नहीं दिखलाई देती। वास्तव में हमने आजादी का सच्चा स्वाद तो चला ही नहीं। घोर आर्थिक समस्या की चक्की में पिसती हुई जनता के लिए यह सम्भव भी कव है? इस चक्की से जवतक छुट-कारा नहीं मिलता, स्वतंत्रता के उल्लास को हम समझ भी न सकेंगे। आर्थिक दृष्टि से जनता का जीवन-स्तर जैसा पहले या उससे किचनमात्र भी उन्नत नहीं हुआ है, यद्यपि हाल की उन्नति की पंचवर्षीय योजना, कांग्रेस

के चुनाव का घोषणा-पत्र उज्ज्वल भविष्य की बोर देखने के लिए प्रेरित करते हैं। पर योजनाओं बीर घोषणाओं का ठांस लाभ जवतक जनता को नहीं मिलता तवतक उसे सन्तोष नहीं हो सकता।

राष्ट्र के सामने पिछले वर्ष जो समस्यायें थीं, वे अब भी ज्यों-की-त्यों हैं। अब की दृष्टि से हम अभी भी आत्मिनिर्भर नहीं हुए हैं। वस्त्रोत्पादन की गति में कोई प्रगति नहीं, काश्मीर की समस्या जिच वनकर खड़ी है। व्यापारियों के नाजायज लाभ उठाने की वृति में कोई फर्क नहीं। इस प्रकार की और दूसरी नैतिक समस्यायें भी सामने हैं ही।

पाकिस्तान-हिन्दुस्तान के बीच का सम्बन्ध काश्मीर की समस्या को लेकर विगड़ता ही जा रहा है। जब राजिय टंडनजी कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये हमने समझा था कि कांग्रेस की विगड़ती हुई परिस्थिति में सुधार हो जायगा। वह दलवन्दी और नैतिक बुराइयों से ऊपर उठेगी। वह तो दूर रहा कांग्रेसियों की परस्पर बढ़ती हुई फूट ने आज एक नये दल को जन्म दे डाला है। जिस क्षेत्र में देखिये, आज असत्य, अनीति, दुराचार, अनाचार ने प्रवेश पा लिया है। त्याग, तपस्या का समिपत जीवन आज भोग और संचय में अपनी सफलता ढूंढ़ने लगा है, सेवा का बत सत्ता की चका-चींध के आगे धूमिल-सा पड़ रहा है।

इस प्रकार हमारे रामराज्य का आदर्श दिन-पर-दिन दूर होता दिखलाई पड़ता है। सर्वोदय की कल्पना अभी प्रत्यक्ष होती नहीं दिखाई देती, पर सर्वोदयवादी निराशावादी नहीं है। उसे सत्य में निष्ठा है, इसलिए उसका विजय में अमिट विश्वास है। अपनी सामर्थ्य से वह इन कठिनाइयोंके बीच भी मार्ग निकाल लेनेकी आशा करता है। इस दृश्यमान निराशा में लिपी आशा की ज्योति उसे उसी तरह स्पष्ट दिखलाई देती है जैसे शरीर के भीतर लिपी आत्मा की ज्योति प्रज्ञावान को दिख-लाई देती है। शरीर जीर्ण-शीर्ण हो तो भी आत्मा की ज्योति उससे जीर्ण-शीर्ण नहीं हो सकती। इसी प्रकार वाह्य विकारों से इस समय भारतीय वाताकाश जो निराशापूर्ण दिखलाई दे रहा है, वह क्षणिक और ऊपरी. है। भारत की प्रगतिशील नवोन्मेपिनी आत्मा की कथ्ये गति को वह नहीं रोज सक्ती। ~च० कांग्रेस का चुनाव-पन

अ॰ भा॰ काग्रेस कमेटी की मीटिंग पिछले दिनो बगलोर में हुई थी। उसमें जो चनाव घोषणा यत्र स्वीकत हुआ, वह पत्रो में प्रकाशित हो चुका है। यद्यपि कांग्रेस में इस समय कई दल हो गये हैं तो भी कांग्रेसी घोषणा पत्र ने करीब-करीब सभी कांग्रेसी सदस्यों को बोडा बहत सतीप दिया है। मोटे तौर पर इसमें आर्थिक प्रगति को प्राथमिकता दी गई है। उसके लिए योजना निर्माण की भावस्यक बताया गया है। वस्तुओ की कमी देखते हए सन पर नियमण रखना और उनकी कीवल नीचे लाने का निश्चय किया गया है। ग्राम, रामनिवासियो और भूमि-स्थार पर जोर दिया गया है । औद्योगिक क्षेत्र में मिश्रित नीति अपनाने की घोषणा की है। राज्य के असान्त्रदायिक स्वरूप पर जोर दिया है। वह उद्योग की उन्नति करनें की घोषणा की गई है। हालांकि खादी और प्रामोद्योगी पर जो मीन रक्ता गया है जो खटन ने-बाला है। घोषणापत्र में जीवन के प्रत्येव क्षेत्र में गाधीजी की शिक्षाओं पर आपरण करने पर विशेष जीर दिया गया है।

इस प्रकार इस पोपनापत्र को देखते हुए मालून होता है कि पिछले वर्षों में कामेशी सरकार ने इतनी पिशाल पृष्टि के त्राम किया हो जो भी यह आधा मतर्मे पैदा होती है कि विदि इस पोपना पत्र के अनुसार मात्री कामेशी सरकार चले तो राष्ट्र और समात्र की दृष्टि से बहुत लाम हो सक्ता है और खुद कामेश में जो बुराइया पैदा हुई है वे भी दूर हो सकती हैं।

सही दृष्टि से देखें तो आज के प्रजातत्र-पुगर्में इस प्रकार के घोषणा-पत्र का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस पर से हरेक राजकीय दल की कार्य दिशा का पता लगता है और जनता के सामने भी वह मार्ग साफ दिखाई देना है जिसको अपनाये। इस घोषणा-पत्र जितना या उससे भी अधिक लुभावना घोषणा-पत्र दूमरे दलो का मी हो सबता है, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि घोषणा-पत्री के अनुसार आये जाकर बहुत कम काम होता है। जो थोपणा-पत्र निकाले जाते हैं, उनमें से अधिनाश का उहेदय केवल यही रहता है कि चुनाव म ज्यादा बोट मिलें। यह जहेश्य पूर्ण हुआ कि फिर वे दिये हुए आस्वासन भर जाते हैं और जनता को भी काफी निराशा होती है। यह भी होता है कि घोषणा-पत्र के अनुसार स्थापित सरकार काम तो करना चाहती है, लेकिन ऐसी कठिनाइया पैदा हो जाती है कि उस प्रकार चलना उसने लिए असम्भव हो जाता है।

इन वब परिस्थितियों को देखते हुए ऐसा लगता है कि मूल में योपणा-गड़ ना उत्तरा महत्व नहीं है, जितता कि उतने अनुसार काम करने की इ-छा और प्रयत्न का है। विवास और योपणा से भी ज्यादा आचार का महत्व है। तेदनुकूल आचार न ही तो वहे बड़े दिवास और उत्तर अनुसार नाये ऊने योपणा-गड़ का वियोप मूल्य नहीं है। यदि दिवी सरवार को कहीटी पर तौल्या हो सी यही रास्ता है कि हम देरों कि अपने योपणा-यह असुसार वनाये अने उसकी वितनी प्रस्ता है कि हम देरों कि अपने योपणा-यह असुसार वनाये की उसकी वितनी प्रस्ता है।

( पुष्ठ २५८ का शेपाश )

उसी तेजी से भीड में जा मिला। मुडते-मुडते जितना कुछ में उसे देख सुना, उससे पता लगा कि वह कोई गरीव मजदूर था, उसके वपडे येळे वे और पैर नगे।

में अब उस रुब ने बिल्कूल पास आपवा था और वह रुबना चुपनाप देरसारे पैसा को नागज में रुपेट रहा था। में कापा। नीट नो मुट्डी में भीन कर पुछ तरुसी से पूछा, "क्यों रे, पैसे कहा से आए" "वह आदमी दैगया हैं।" "सव?"

"सवं?" 'उसने एक रपयादस आरोदिये हैं।

यह कह पर वह भी आवे वह निया पर मेरे पैर बो जैसे मन्यमन भर के होगए थे। तर्क का बोझ जैसे मूझे घरती में गाड देरहा था। हाम में स्पर्य ना नोट दवाये लज्जित कम्पित देर तक वही खडा रहा।

### पुस्तक विक्रे तात्रों और पुस्तकालयों को विशेष सुविधा

सम्मेलन हारा प्रकाशित निम्नलिखिन पुस्तकों पर भारत के समस्त पुस्तक विकेताओं को ५) रू० से अधिक सूत्य की पुस्तकों पर ३५% तथा पुस्तकोलयों एवं बाचनालयो को २५% कसीशन देना निश्चित हुआ है। डाक वर्च खरीदने बाल को देना होगा ।

वाचनालयों और पुस्तकालयों के संचालकों से निवेदन है कि संवत् २००८ में अपने पुस्तकालयों और वाचनालयों के लिए पुस्तकों का चुनाव करने समय सम्मेलन द्वारा प्रकाशित इन सर्वोत्तम और सर्वोत्रयोगी पुस्तकों का विशेष ध्यान रखे और उपयोक्त कमीशन की सुविधा का लाभ उठावें । पुस्तक विकेताओं को भी इस मुविधा से लाभ उठाना चाहिए । आर्टर देने समय कम-से-कम ५) क० पेशगी भेजने की अवश्य कुपा करें ।

धार्मिक	प्रेमघन-सर्वस्व (प्रथम भाग) ६)	ं बौद्ध साहित्य	
मत्स्य महा पुराण २	, ,,		
वायु पुराण १	🕽 हिन्दी काव्य मे प्रकृति-चित्रण ९)	) ,, (द्वितीय भाग) ७॥)	
पुराणों में गंगा १०	,	., (नृर्वाय भाग) १०)	
तपोभूमि १०	, ,		
आचार्य नायण और मायव	) आदर्श नगर व्यवस्या १०)	अंग्रेजी साहित्य का इतिहास ३)	
साहित्य	च्यथेशा <u>न्त्र</u>	सम्मेलन के रत्न ५)	
गोरववानी इ	) भारतीय ग्राम्य् अयंशास्त्र ७)	सम्मेलन के कार्य-विवर्ण	
शैवाल ३	, ,,,,,	प्रति वर्ष का लगभग १)	
- भोजपुरी ग्राम गीत (प्रयम भाग) ५			
,, ,, (द्विनायभाग) ११	) शरीर विज्ञान शब्दकीष ५)	आँघ्र देशके कवीर श्री वेमना १।।।)	
पता—साहित्य मंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग			

दूसरे वर्ष में

सवने पसन्द किया !

सा र ती

सबने स्वागत किया !

गत वर्ष ४) रु॰ वार्षिक मृल्य था, एक प्रति का १) रु॰-अव १६४१ जनवरी से एकद्म कम, ६) रु॰ वार्षिक

संपादक

संचालक

: ह्यिकेश शर्मा : : एन. एल. प्रयागी सुबोधिसह प्रेस सिविललाइन, नागपुर-१ : 'भारती' समस्त भारतीय (अन्तर्पान्तीय) साहित्य, कला आर मंन्कृति का प्रतिनिधित्व करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगतियोल विन्तन-प्रयान मिचन मासिक पित्रका है।

भारत के राष्ट्रपित टा॰ राजेन्द्रप्रसादजी ने, प्रान्तों के राज्यपालों ने, मुख्य मुख्य मंत्रियों न और हिन्दी के लव्यप्रतिष्ठ साहित्यकारों ने इस मासिक पित्रका के प्रकाशन की मुख्तकंठ से सराहना की है। सर्वश्री जैनेन्द्र, बनारसीदास चतुर्वेदी, उदयशंकर भट्ट, रामवृक्ष बेनीपुरी, श्रीराम शर्मी, कन्हैयाचाल मुख्यी, खांडेकर, स्व॰ साने गुरुजी, मायनलाल चनुर्वेदी, भदंत आनन्द कीमल्यायन कादि ने भारती का स्वागत किया है।

भारती' का प्रत्येक अंक अनूठा, पठनीय और दर्शनीय है। १९५० की २६ जनवरी से इसका नियमित प्रकाशन शुरू हुआ। प्रतिमास छनमन १०० एट ।

#### 'प्राकृतिक चिकित्सा' विशेषांक पर लोकमत

भी किशोरलाल घट मशह्त्वाला (वर्षा)

"अक बढिया है।"

डा॰ वासुदेवशरण अप्रवाल (नई दिल्ली)

"'जीनन महित्य' का 'प्राष्ट्रिक' विकित्मा अक बहुत उपयोगी अनुष्ठान है। गाधीओं के इस पवित्र कार्य को आप आप बढ़ा रहे हैं, यह प्रमनना की आत है। प्राकृतिक विकित्सा के ज्ञान की प्रचार जनता की भारी सेवा है। इस विधि का देस-ध्यास लाभ मिनना पाहिए।"

श्री महाबीरप्रसाद पोदार (गोररापुर)

" 'प्राकृतिक विकित्सा' अक दला। अक्टालगा। आप देखेंग कि आपके और शाहक भी इसे पसंद करेगा।

श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह (जयलपुर)

"'प्राकृतिक चिरित्सा' अक देलकर प्रमन्नता हुई। उपयोगी सामग्री का संग्रह सुचारु रूप से विद्या गुवा है।"

डा॰ गोपीनाथ धारन (लग्जनक)
"'प्राकृतिक विकित्सा' अव 'जीवनसाहित्य' की लोक क-पात्र-साथना के उत्कृष्ट प्रमाप के अनुरूप है।"

ढा॰ छुत्तरंजन सुराजी (कलकत्ता)
"'प्राप्टनिक' विकित्सा' विनेपार म सामग्री का वयन सुचर हुआ है। अक पठनीय एवं सग्रहणीय है। हिन्दुस्तान के प्रायेक घर मे इसका स्थान होना चाहिए।"

श्री हरिशंकर शर्मा (आगरा)

" 'जीवन साहि य' के सभी विशेषात बहुत सुन्दर हाते हैं।"

श्री धर्मचन्द्र सरावगी (कलकत्ता)

"'प्राकृतिक चिक्तिसा' अक यचमुच वडा ही अच्छा अक है। गग्रहणीय है। इसके द्वारा दुनिया

का बहुत कुछ भला हो सबता है।"

श्री उमाशंकर शुक्ल (वर्बा)

"'जीवर-साहिय' के विशयात्र सवार्यता लिए हुए होते हैं और प्राकृतिन विवित्सा विशेषात्र विष्ठने सभी विशयात्रों से वाजी सार रूगया है। यन सुपार्वय सामर्था से पूर्ण है।"

श्री विद्वलदास मोदी (गोररापुर)

आ विद्वारात नारा ('गर्पजुर) '' प्राकृतिक चिक्तिसा' अरु बहुत सुदर है। आपने तो प्राकृतिक चिक्तिसा का एक लघुकोप ही तैवार कर दिया है।''

श्री रामनारायण उपाध्याय (कालमुखी, व्यवहना)

" प्राकृतिक निकित्या जैयो जीवन की जनिवाय आवश्यकता पर, प्रमाणिक वर्ग स, मुन्दर उपयोगी साहित्यक अर निकालने के लिए हार्दिक वधाई! अक बहुन पगद आया।"

श्री देवपतिसिंह (शुद्ररा)

"'प्राकृतिक चिकित्सा' अन बहुद पुनद आया। यह अन उन मन व्यक्तिया की आप साल देया जा आजनक की अपरेजी दवाओं और टास्टरों के पीछे नाकी हैरान होत तथा राष्या सच करन वे बाद भी आरोग लाम नहीं वर पाछ।"

## 'सस्ता साहित्य मगडल'

के

#### चिरप्रतीचित नवीन प्रकाशन

- १. मेरे समकालीन—राष्ट्रिपता महात्मा गांधी द्वारा लिखे २३६ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महापुरुषों तथा सामान्य लोक-सेवकों के मर्मस्पर्शी संस्मरण, जिनमें गांधीजी की पैनी निगाह के साथ-साथ उनके मधुर मानव-इप की भी झाकी मिलती हैं। कुछ संस्मरण तो व्यथा से उनने ओतप्रोत हैं कि पढ़कर आंखों में आंमू आजाते हैं। गांधी-साहित्य की यह सानवीं पुरतक हैं। ५)
- २. बापू के आश्रम में श्री हिन्भाऊ उपाध्याय की इस पुस्तक में गांधीजी के सम्पर्क की अनेक घटनामं संग्रहीत है। ये घटनाएं हमें शिक्षाएं देती है और मुझाती है कि हमारा कर्त्तव्य क्या हे आर एक सच्चे नागरिक के नाते राष्ट्र के उत्थान में हमारा क्या योगदान होना चाहिए। ?)
- ३. श्रेयार्थी जमनालालजी—अत्यंत रोचक और आकर्षक शैली में लिखी महात्मा गांधी के 'पांचवें पुत्र' स्व० जमनालालजी वजाज की जीवनी । श्री हरिभाऊजी को मेठजी के लग्बे सम्पर्क का लाभ मिला था । अनेक म्थानों में दुर्लभ सामग्री इकट्ठी करके वड़े परिश्रम से यह पुस्तक उन्होंने लिखी है। प्रत्येक आत्मार्थी को इसे पड़ना चाहिए।
- थ. सर्वोद्य-तत्व-दर्शन--गन् चालीस वर्षा में जिस मार्ग पर चलकर हमारे दंग ने विदेशी सत्ता से लोहा लिया, उससे मुक्ति पाई और दंग में नई प्रेरणा, नई चेनना फ्की, उसे राष्ट्र के पुनर्सगठन की इस वेला में अच्छी तरह से देखना और समझना है। इस पुस्तक में टा॰ गोपीनाथ धावन ने अत्यंत प्रामाणिक और सुदर ढंग से उसी मार्ग को दिखानवाले गांधीजी के लोक-कल्याणकारी सिद्धान्तों की व्यास्था की है। सर्वोदय की दिशा में कार्य करनेवाले लोगों के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है। ७)
- ४. गांधी-शिचा—(भाग १, २,३) पुस्तक के तीनों भागों में गांधीजी की रचनाओं में से चुनकर वह सामग्री दी गई है, जो युवकों के चरित्र-निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय हैं। पुस्तकों उपयोगी हं, अच्छी छपी हं, मूल्य बहुत सस्ता है और उत्तर प्रदेश के समस्त ज्ञित्र हाईस्कूलों की ६, ३,८ कक्षाओं में सहायक पाठ्य-पुस्तकों के रूप में स्वीकृत होने के कारण हजारों की संस्था में बिक रही हैं।
- ६. रामतीर्थ-सन्देश— (भाग १, २, ३) विद्यार्थियों की दृष्टि से इन पुस्तकों में जीवन को ऊंचा उठानेवाले स्वामी रामतीर्थ के उपदेशों का संकलन किया गया हूँ। ये उपदेश एक साथ स्कृतिदायक, रोचक और शिक्षाप्रद हूं। उत्तर प्रदेश के समस्त ज्ञियर हार्टस्कूलों की उक्त कक्षाओं के लिए ये पुस्तकों भी सहायक पाठ्य-पुस्तकों के रूप में स्वीकृत हूं। ।),।⇒)
- ७. सप्तदर्शी—हिन्दी के सुरुषक श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा सम्पादित इस पृस्तक में हिन्दों के सुपरिचित रुखकों की अपने-अपने ढंगकी सबह कहानियाँ है। आकर्षक श्रीकी, नबीन भाव। पढ कर आपको एक नई दृष्टि प्राप्त होगी।

'मएडल' से प्राप्य

प. काश्मीर पर हमला (श्रीमती कृष्णा महता) इस पुस्तक में काश्मीर पर कवाइलियों द्वारा कियं गण आक्रमण का रोमांचकारी, मर्मस्पर्जी और प्रामाणिक वर्णन है। लेखिका ने उस पाश्चिक अत्याचार को अपनी आंखों से देखा हैं। वर्णन इनन रोचक और हृदयस्पर्जी है कि उपन्यास का-मा रस आता है।

# भीवन साहित्य

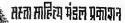
अहिंसक नवरचना का मासिक

व्य--।खरू हरिभाऊ उपाध्याय यशणल जैन



ध्यक्तृत्रर १६५१

व्याठ व्याना



# वापिक म्ल्य ४) ] जिल्लि - २००० हिट्य [ एक प्रति का ॥)

#### लख-सूची

१. युग-पुरुष (कविता)	श्री मुमित्रानन्दन पन्त	<b>ગદ</b> શ્
२ भारतीय संस्कृति की बुनियाद	श्री काका कालेलकर	5 30
३. साहित्य सृष्टा गांधीजी	श्री विष्णु प्रभाकर	ప త్రవ
४ श्रपरिग्रह समाज-रचना का एक श्राधार	हरिभाऊ उपाध्याय	ى ق ت
<ol> <li>गुरुदेव की दृष्टि में महात्मा गांधी</li> </ol>	श्री रामपूजन तिवारी	23%
६ त्र्यर्पार्यह्वाद	र्था रच्चीरघरण दियाकर	२८०
७. संस्कार का ऋर्थ	श्री दुर्गाञंकर केवलराम शारती	266
<ul> <li>चुद्ध शासन के रत्न भइंत महावीर</li> </ul>	भिल्घभंग्धि ।	<b>२८</b> ७
<ul> <li>श्राम्य कर्हानियां स्त्रीर कर्हावतें</li> </ul>	श्रो गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	२९१
१० हरिजनों को व कभी नहीं मूले!	स्व० महादेव देनाई	হ্ণৃহ্
११. कसोटो पर	गमालोचना <b></b> एं	হণ্ট
१२ क्या व कैसे ?	सम्पादकीय <sup>ँ</sup>	<b>२९</b> ६

# 'जीवन-साहित्य' के हिते। षियों से

'जीवन साहित्यों आपका ही पत्र हैं। उसका ध्येय आधिक लाभ उठाना नहीं, बल्कि उपयोगी एवं साहिबक सामग्री देकर जनसाधारण की सेवा करना हैं, लोक-कृचि को ऊंचा उठाना है। अपने इस पत्र के प्रति आपका भी दायित्व है, जिसे आप निम्न प्रकार से पुरा कर सकते हैं:

- १. यदि आप ग्राहक नहीं है तो ४) रु० वापिक शत्क के भेजकर शोधिनिशी घ्र ग्राहक बन जायं।
- २. अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा परिचित्रों को ग्राहक बनावें।
- ३. ऐसे पाठकों के पने भेजें, जो पत्र के ग्राहक बन सकें।
- ४. पत्र के उद्देश्य के अनुकृष रचनाएं भेजें। कृषया इतना ध्यान रखतें कि लेख साफ हो । उपयोग न ही मकने की दशा में वापस भेजने के लिए आवश्यक टिकिट अवश्य भेजें।
- ५. पत्र में जो किमयां दिखाई दें अथवा उसकी सामग्री आदि में आप कोई परिवर्त्तन-परिवर्द्धन चाहते हों तो उसकी सूचना समय-समय पर देते रहें।

च्य*द*स्थापक

### जी व न - सा हि त्य नई दिल्ली

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा पिहार प्रातीय सरकारों हारा स्वूलों, कालेजों व लाइब्ने रियों तथा उत्तरप्रदेश नी प्राम्य पंचायतों के लिए स्वीकृत

# जीवन साहित्य

अहिंसक नवर्वृता का मासिक

ध्यक्तूबर १६५१



#### युग-पुरुष

थी मुभित्रान दन पन्त

प्रथम अहिंसक मानव वन तुम आये हिंस्न घरा पर मनुज-बुद्धि को मनुज हृदय के स्पर्शों से सस्कृत कर <sup>1</sup>

निवल प्रेम को भाव-गगन से निर्मम धरती पर धर जन-जीवन के बाहुपाश में बाध गये तुम दृढतर ।

द्वेप-घृणा के कटु प्रहार सह, करुणा दे प्रेमोत्तर मनज-अह के गत विधान को बदल गये हिंसाहर !

घृणा-द्वेष मानव-उर के सस्कार नही है मौलिक, वे स्थितियों की सीमाएँ है जन होगे भौगोलिक ।

'आत्मा का सचरण प्रेम होगा जन-मन के अभिमुख, हृदय-ज्योति से महित होगा हिंसा-स्पर्धा का मुख !

लोक-अभीप्सा के प्रतीक नव स्वर्ग मर्त्य के परिणय, अग्रदत वन भव्य यग-परुष के आए तम निरुचय ।

ईश्वर को दे रहा जन्म युग-मानय का सघर्षण, , मनुज-प्रेम के ईश्वर, तुम यह सत्य कर गये घोषण !

### साहित्य-सृष्टा गांधीजी

श्री विष्णु प्रभाकर

श्री डी॰ एफ॰ कराका ने अपनी एक पुस्तक के आरम्भ में लिखा है—"गान्धीजी पर कुछ लिखना, कहना तीर्थयात्रा पर जाने के समान है।" इस दृष्टि से उनके लिखे अर्थात् उनके साहित्य की चर्चा करना तीर्थ-यात्रा से भी बढ़ कर होना चाहिए। तब उस पुण्य को कौन छोड़ना चाहेगा? जैसा कि सब जानते हैं गान्धीजी ने बहुत कुछ लिखा है; परन्तु क्या वे साहित्यकार थे? यह एक विचारणीय प्रक्त है।

प्रथम दृष्टि में तो ऐसा लगता है कि अपनी
महानता के कारण वे साहित्य-मृष्टा से अधिक साहित्य
का विषय थे। सन् १९१९ से लेकर आजतक के समूचे
साहित्य पर उनकी छाया पड़ी हुई जान पड़ती है और
आनेवाला साहित्य उनके प्रभाव से मुक्त हो सकेगा
:यह कहना भी प्रायः असम्भव-सा ही लगता है। वस्तुतः
वे जीवन के एक विशिष्ट दृष्टिकोण के प्रणेता थे।
वह दृष्टिकोण जवतक बना रहेगा तवतक उनका
प्रभाव भी साहित्य से दूर नहीं होगा। राजनीति की
भाषा में इसी विशिष्ट दृष्टिकोण को गान्धीमार्ग या
गान्धीवाद कहा जाता है।

पर इसके बावजूद वे साहित्यकार थे। नेता के रूप में नहीं, लेखनी के धनी के रूप में। वे अधिक-तर गुजराती और अंग्रेजी में लिखते थे, इसलिए उन्हीं भाषाओं पर उनका प्रत्यक्ष प्रभाव पट़ा है। गुजराती के विद्वान् उन्हें एक अनुपम गद्य शैलीकार मानते हैं और जब लन्दन से गोलमेज परिपद् के अवसर पर उन्होंने अमेिका के लिये सन्देश ब्राडकास्ट किया था तब अमेरिकाबाले उनकी सरल, मुहाबरेदार पर शक्तिशाली अंग्रेज सुनकर चिकत रह गये थे। यद्यपि दूसरी भाषाओं में उन्होंने नहीं के बराबर लिखा है; पर अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें प्रभावित अवस्य किया है। उनकी शैली को अंग्रेजी का 'विव्लिकल' शब्द ठीक-ठीक व्यक्त करता है। उसकी सरलता, संकेत-प्रियता, संयत विनोदिप्रयता,

सूत्रता और सहज ताकिक गम्भीरता के कारण ही उसमें अपूर्व शक्ति है। सबसे बढ़कर उनकी आत्मीयता के कारण उसमें जो पारदिशता आगई है वह उनकी अपनी चीज है।

गान्घीजी साहित्यकार थे; परन्तु अपने वावजूद अर्थात् वे साहित्यकार वनने नहीं चले थे। उनका लक्ष्य कुछ और ही था। फुलॉप मिलर ने कहीं लिखा है— ''किसी जमाने में वुद्ध के सम्मुख जिस तरह मानव-प्राणी की वेदना अपना घुंघट खोल कर खड़ी होगई थी उसी तरह अब वह गांधी के सामने खड़ी होगई है। इसलिए वे अपनी भावनाएं और शक्तियां ऐसे किसी उद्योग में खर्च नहीं कर सकते जो भूखों को खिलाने में, नंगों की काया ढांकने में और दुखियों को ढाढस वंधाने में प्रत्यक्ष रूप से सहयोग न दे।" इसलिए वे कला, काव्य और साहित्य को उपयोगिता की कसीटी पर परखते थे। कवि ठाकुर को एक वार उन्होंने एक पत्र में लिखा था-''अपनी काव्य प्रतिभा के प्रति सच्चा रहकर कवि आगामी कल के लिये जिन्दा रहता है और दूसरों को भी उस कल के लिये जीवित रहने का आदेश देता है। वह हमारे चिकत चक्षुओं के : सामने उन चिड़ियों के सुन्दर शब्द-चित्र खींचता है जो उपा के आगमन पर महिमा के गीत गाती हुई शून्य में अपने रंगीन पंखों से उड़ान भरती हैं। ये चिड़ियाँ दिन भर का अपना भोजन प्राप्त करती हैं और रात के आराम के वाद आकाश में उड़ती हैं। उनकी रगों में पिछली रात नए रक्त का संचार हो चुका है, पर मुझे ऐसे पिक्षयों को देखने से वेदना भी हुई जो निर्वलता के कारण अपने पंख फड़फड़ाने का साहस भी नहीं कर सकते । भारत के विस्तृत आकाश के नीचे मानव-पक्षी रात को सोने का ढोंग करता है— भूखे पेट उसे वरावर नींद नहीं आती और जब वह सुवह विस्तर से उठता है तो उसकी शक्ति पिछली रात से कम हो जाती है।

लांको मानव-पतियों की रातमर मूख-प्यास से पीडिय एक्सर कामरण करना पड़ता अवना कामूल क्षमों में उन्नेस रहना पदता है। यह अपने अनुभव नी, अपनी समझ की, अपनी बाखो देखी जनक दुखपूर्च अवस्या और कहानी है। कबीर के पीतों ये देख पीडित मानवता की सानवता है सकना अस-प्रव है। यह कन्नाविष मूखी मानवता हांच फैलाकर, जीवन के पंस फक्काविष मूखी मानवता हांच फैलाकर, जीवन के पंस फक्काविष कर, कराह कर केवन एक कीवता मागती है—गीटिक भोजन।"

सन् १९३५ में मुजराती साहित्य-सम्मेलन के बारहर्वे अधिवेशन के समापति के पर से स्कृत साहित्य की निराम करते हुए भी उन्होंने कहा या—''जब में सेवापाम का और वहा में अस्थिपजर लोगों ना खवाल करता हूं तो भूते आपका साहित्य निरयंत्र माणून होने लगता है।''

मिलर की मान्यता वा यह स्वष्ट प्रमाण है, वरन्तु जिन शब्दा में और जिस शक्ति के साथ गान्धीओं ने मली मानवता के लिये 'पौष्टिक मोजन' की माँग की है कविता वा साहित्य क्या कभी उससे ऊचे स्तर पर उठे है ? भ्या साहित्य का लदय इसके अतिरिक्त कुछ और होता है ? युग-युग से महान आत्माओ का जो लक्ष्य रहा है बही "मानव" साहित्य का रूक्य है। महारमा यान्मी ने साहित्य से छायाबाद के स्वप्निल जगत की बहिष्कृत करके मानव के मयार्थ की उसके स्थान पर प्रतिष्ठित किया। उन्होने साहित्य की सच्टि करने का दावा नही किया, अपित साहित्य के तरकाठीन मृत्यांकनी का विरोध किया, परस्तु जिन शब्दी मे उन्हाने अपने विरोध को व्यक्त किया वे ही स्त्रय साहित्य बन गए। गह एक अपूर्व विरोधामास है। उन्होंके शब्दी में इसका रहस्य इस प्रकार है-- कला को जीवन से खेळ मानने मे तो जीवन का स्रोत ही सूख जाएगा। मेरे लिये दो सर्वश्रेष्ठ कलाकार वहीं हैं जो सर्वोत्तम जीवन व्यतीत करता है। जीवन व्यतीत करने की कला ही सर्वेश्वेष्ठ कला है। में कला के प्रति नहीं, कला के घोये बडप्पन या अकड के प्रति आपत्ति उठाता हूं। दूसरे <sup>भ</sup>शब्दो म मैं पूक्टू कि मरे दिचार में कलाक 'मूल्य' शिक्ष हैं। "

जीवन अर्थात् मनुष्य में उनकी इस अगाथ आस्वा का प्रमाण उनकी मानाताओं से भी स्पष्ट हो जाता है। सत्य जीर विह्वा हो अकम ने कुछ मही में । यत्य उनके किये देवता की आरामना का प्रतीक पा और अहिंद्या अनुष्य में उनकी आस्वा का। उनके आनितात वीवन में जो स्वान सत्य का वा वही स्थान अहिंता का उनके सार्वजीवक जीवन में था। अर्थात् अर्थन सार्वजीनक जीवन में उन्होंने एक अर्थ के लिए भी मनुष्य में अवनी सार्या को नहीं व्यान दिया। वे एक बारीयन के नेता में और उस आप्तोकन का क्षक या। स्वराज्य अर्थात् मानव को स्वराज्या। वे जीवन के प्रत्योक क्षेत्र में असमा-लता और वीयय का स्वराचा समानता और समृद्धि का उदय चाहते में ।

जीवन में नो भी सफ़तरा या असफ़तरा जरहें सिकी उदाना कारण उनकी अहिंता अपॉल मनुष्य में आस्पा थी और सत्य तथा अहिंता को इस सम्पर्क साथना के नीरण उनके किसे जीवन को इत्य नहीं रह प्या था। वे जीवन की कहा में पारता है। होग्ये ये और उनकी इस माम्यता के अनुसार 'कि वो अच्छी तरह जीवा जानता है नहीं सच्चा कल्कार है' वे स्वय सक्वे कलाकार वे । इसिलए उन्होंने जब कभी और जो कुछ भी निखा या बीला बही साहित्य वन नेया।

पत्रवार के रूप में जवबा स्वतन्वता-मदाम के एक बवता के रूप में, पत्र-लेखक के वर में या मेंट के समय की बातचीत के रूप में, प्राचैना समा के मायागों के रूप में या अनेक क्षेत्रों में विये वाए प्रयोगों पर जिले गये टेलों के रूप में उत्तका जो भी साहित्य उपकथ्य है वह प्रमाव की दृष्टि से ती द्यांतिकालां हैं हो, परिमाण को दृष्टि से भी विषुठ है और उनको यह पूजी सहज हो उन्हें प्रयम श्रेणों के स्वाच्या में आईतारी हैं।

निस्सन्देह वे कवि, नलाकार या आलोजक नहीं मे, पर आस्मक्या लेखन के रूप में उन्हें कोई पराजित नहीं कर श्वनता। जिस तटस्पता और स्पष्टता के साय उन्होंने अपनी जीवानाया तिसी हैं वह और निसी के लिये सम्भव नहीं है। उसकी गक्ति उनके जीवन की कला में है। इसी कारण उनके दिल में जो कुछ होता था, कह डालते थे छिपाते कुछ नहीं थे। जीवन में यदि कुछ गोपनीय रह जाता है तो आत्मकथा अधूरी है। सत्य और अहिंसा के परीक्षण करनेवाला वैज्ञानिक अधूरी आत्मकथा नहीं लिख सकता।

आत्मकया के अतिरिक्त संस्मरण लिखने में भी वे कुशल थे। 'दक्षिण अफीका के सत्याग्रह इतिहास' आदि इस प्रकार की कई पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं; परन्तू सबसे अधिक सफलता उन्हें अपने सम्पर्क में आनेवाले व्यक्तियों के संस्मरण लिखने में मिली है। जिस प्रकार उन्होंने अपना विश्लेषण करते समय सत्य को नहीं छोड़ा उसी प्रकार दूसरों के बारे में लिखते समय उन्होंने अहिंसा को अपना आचार वनाया है। इसलिए उनके साहित्य में जहाँ उनकी पारदींशनी दृष्टि का चमत्कार है वहां वह मानव के सहज सीन्दर्य-सहानुभूति से भी आप्लावित है। जब कभी उन्होंने किसी के बारे में लिखने के लिये कलम उठाई है, अपनी सरल, सुवोध और मुगठित भाषा में उस वर्ष्य व्यक्ति का मामिक चित्र उतार कर रख दिया है। एक तो अपने जीवन के प्रति निर्दिष्ट वैज्ञानिक दृष्टि-कोण (सत्य) के कारण, दूसरे विभिन्न विचार और व्यवहार के इतने अधिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आने के तथा मानवता (अहिंसा) में अपनी आस्या के कारण उनकी परख बड़ी सही और खरी हो गई थी, और जब दृष्टि पारदर्शी हो जाती है तो वर्णन स्वतः ही सजीव और मार्मिक हो जाता है।

सन् १९२९ में पं० जवाहरलाल नेहक के लिए उन्होंने जो कुछ लिखा था वह थोड़े से अब्दों में एक अपूर्व चित्र हैं—"वहादुरी में कोई उनसे वढ़ नहीं सकता और देश-प्रेम में उनसे आगे कोन जा सकता है? कुछ लोग कहते हैं कि वह जल्दवाज और अधीर हैं। यह तो इस समय एक गुण है। फिर जहां उनमें एक वीर योदा की तेजी और अधीरता है वहां एक राजनीतिज्ञ का विवेक भी है। वह स्फटिक मणि की भांति पवित्र हैं, उनकी सत्यशीलतां सन्देह से परे हैं। वह अहिंसक और अनिन्दनीय योद्धा हैं। राष्ट्र उनके हाथ में सुरक्षित है।"

दक्षिण अफ़ीका के श्री यम्बी नायटू का चित्र देखिए-"उनकी बृद्धि भी बड़ी तीव थी। नवीन प्रश्नों को वे वड़ी फुर्ती के साथसमझ लेते थे। उनकी हाजिर-जवाबी आइचर्यजनक थी। भारत कभी नहीं आये थे, पर फिर भी उनका उसपर अगाध प्रेम था। स्वदेशा-भिमान उनकी नस-नस में भरा हुआ था। उनकी **दृढ़ता** चेहरे पर ही चित्रित थी। उनका शरीर वड़ा मजबूत और कसा हुआ था। मेहनत से कभी थकते ही न थे। कुर्सी पर बैठकर नेतापन करना हो, तो उस पद की भी जोभा बढ़ादें, पर साथ ही हरकारे का काम भी उतनी ही स्वाभाविक रीति से वे कर सकते थे। सिर पर वोझा उठाकर वाजार से निकलने में थम्बी नायडू जरा भी न शरमाते थे। मेहनत के समय न रात देखते, न दिन । कीम के लिए अपने सर्वस्व की आहुति देने के लिए हर किसी के साथ प्रतिस्पर्झा कर सकते थे।"

पर इन शब्द-चित्रों से कोई यह न समझले कि गांधीजी विशेषणों का ही प्रयोग करना जानते थे। वैसे वे जब विशेषणों का प्रयोग करते थे तो दिल खोल कर करते थे; परन्तु गुणों के साथ किसी व्यक्ति की दुवंलता भी उनसे छिपी न रहती थी और अवसर आने पर वे उसी स्पष्टता से उसे भी प्रकट कर देते थे। सत्य का पुजारी व्यक्तित्व का अधूरा चित्रण कर ही नहीं सकता। ऊपर जिन थम्बी नायडू का शब्द-चित्र दिया गया है, उन्हीं के बारे में उसी चित्र में गांबीजी ने आगे लिखा है---"अगर थम्बी नायडू हद से ज्यादा साहसी न होते और उनमें क्रोब न होता, तो आज वह वीर पुरुष ट्रांसवांल में काछलिया की अनुपरियति में आसानी 🗠 से कीम का नेतृत्व गहण कर सकता था। ट्रांसवाल के युद्ध के अन्त तक उनके कोच का कोई विपरीत परि-णाम नही हुआ था, बल्कि तब-तक उनके अमूल्य गुण जवाहिरों के समान चमक रहे थे, पर बाद में मैने देखा कि उनका कोच और साहम प्रवल यत्रु सा*बि*त हुए अर उन्होंने उनके गुणों को छिपा दिया।"

सरोजिनी नायडू का किन उन्होंने एक ही बाक्य में उतार दिया है—"सरोजिनी नायडू काम तो बहुत बढिया कर लेती हैं, मगर सच्ची संस्कृति की कीमत देकर।"

बस्तुत किसी भी व्यक्ति ना टीक-टीक विश्लेषण परने में उन्हें अद्भृत पुरालता प्राप्त थी। वस-मे-वस और तपे-तुले सार्षक हास्त्रों में वर्ष्य व्यक्ति वे अन्दर और बाहर को कागज पर उतार कर रख देते थे—

"सर फिरोजनाह तो मुझे हिमालय जैसे मालून हुए छोदमांन्य समूद नी तरह। गोजले गङ्गा नी तरह। उनमें में नहा सक्ता था। हिमालय पर बढना मुस्किल है, समुद्र में डूबने का भय रहता है पर गङ्गा को मोदी में लेख सबते हैं, उसमें डॉयी पर चडकर तैर सकते हैं।"

लोनमान्य तिलक से उनके मतभेद की बात सब जानते हैं। उनके जीवन-नाल में और मृत्यु के बाद गांधीओं में उन मत-भेदी को कभी कम करके कताने या भुकाने की करता नहीं की, पर इसी नारण वे लोकमान्य का सही मृत्यानन करने में नहीं जिसके। उनको क्षाय पर उन्होंने किसा-

"सोहमान्य बालगङ्गाधर तिलक अब सतार में मही है। यह विश्वात करणा गिंव सालूम होता है नि वे सतार से उठ गए। हम लोगों के समय में ऐता हुरा कोई नहीं, विस्ता जनता पर लोगमान्य वैदा प्रमाल हो। हमारी देवसासियों की उनपर जो सिन और सदा पी वह अपूर्व थी। यह अकारता मय है नि वे जनता के आरास्य देव ये, प्रतिमा ये, उनके यपत हजारी आदिमांगों के लिए नियम और मानूमन्ते ये। पुरुषों में पुरुष-पिंह सगार से उठ गया। केसरी की पीर गर्वेना विलीन हो गई।"

अनुभृति की तींत्रता और वास्त्रिकता का और भी सुन्दर निषण उनके सम्मरणों में हुना है। घट-नाओं और गर्तालाप के हारा उन्होंने वर्षा व्यक्ति स्थानित की बाहुगी और आवरित्म सुन्दतान-कृत्यता भी रेलाओं की हम प्रकार उभार विवा है नि इसके पूर्ण परिपाक के साथ-माथ व्यक्ति का सम्पूर्ण वित्र हृदय पर पत्यर की लीक बन जाता है। क्रम्तूरना गाथी, वालामुन्दरम्, देखनबुदास, जोपालबाबू तथा बासत्ती देवी आदि के मस्मरण इस दृष्टि से बहुत ही सुन्दर बने है।

मों भोषार बार्स ने पार गया। उन्होंने मुझे नीने मे उपर तर देवा। बुछ मुस्तराये और बोरेर— भेरे पार नारकुत ना नाम है। नरोगे ?'

मैने उत्तर दिया-- जरर करना। अपने बन-मर सबकुछ करने ले लिए मैं आपके पास आया ह।"

नवयुवन, सच्चा सेवा-माव इसी को महते है।'
'कुछ स्वयक्षेवन जनके पास खडे थे। उनकी ओर
मुखातिब होकर कहा—'देवते हो इस नवयुवन ने
क्या कहा?"

"किर मेरी ओर देनकर नहा—'ती हो यह चिट्ठियों का देर हैं। देवते हो न सैक्डो आदमी मुक्ते मिलने आया नरते हैं। यब मैं उनसे मिल, या जी होगा फालनू चिट्ठिया हिल्ला करते हैं, उन्हें उत्तर दूर है बन्ने बहुतेरी तो किन्नूल होगी, पर तुम सबको पड जाता। निननी पहुच हिल्ला जरूरी हो उनमी पहुन हिल्ल देना और जिनको उत्तर के किए मुझसे पूछना हो एक लेना।'

"उनके इस विश्वास से मुले वही सुधी हुई। श्री पंपाल मुझे पहचानते न थे। मेरा इतिहास जानने के नाद दो कारकुन का कार से में उन्हें परा समें माकूस हुई, पर मेने उन्हें निर्देशन कर विया—'कहा में और नहा आद । यह काम घींचकर मुझपर तो आपने अह-सान ही किया है, क्योंकि मुझे आगे चलकर कामेस में नाम करता है।

घोषालवान् बोले—''सन पूछी तो यही 'सन्धी' मनोन्हीन है, परन्तु आसनल के नवद्यक ऐसा नहीं भानते, पर में तो काविस को उसके जन्म से जानता है। जक्की स्थापना ननने में मिल हामूम के साथ मेरा मी हाथ या !

"हमदोनो में खासा सम्बन्ध हो गया। दोपहर के खाने ने समय वह मुझे साथ रखते। घोषालदाव के बटन भी 'बैरा' लगाता था। यह देखकर 'बेरा' का काम खुद मैंने लिया। मुझे वह अच्छा लगता। वड़े-बूढ़ों की ओर मेरा वड़ा आदर रहता था। जब वे मेरे मनो-भावों से परिचित हो गये तब अपनी निजी सेवा का सारा काम मुझे करने देते थे। वटन लगवाते हुए मुह पिचकाकर मुझसे कहते—'देखो न, कांग्रेस के सेवक को वटन लगाने तक की फुरसत नहीं मिलती; क्योंकि उस समय भी वे काम में लगे रहते हैं।' इस भोलेपन पर मुझे मन में हंसी तो आई, परन्तु ऐसी सेवा के लिए मन में अरुचि विल्कुल न हुई।''

वासन्ती देवी का, देशवन्धु की मृत्यु के बाद, जो चित्र गांधीजी ने खींचा है, वह एक साथ मानवीय, करुण और यथार्थ है—

"वैधव्य के बाद पहली मुलाकात उनके दामाद के घर हुई। उनके आसपास बहुतेरी बहनें बैठों थीं। पूर्वाश्रम में तो जब में उनके कमरे में जाता तो खुद वही सामने आतीं और मुझे बुलातीं । वैधव्य में मुझे क्या बुलातीं ? पुतली की तरह स्तम्भित बैठी अनेक वहनों में से मुझे उन्हें पहचानना था। एक मिनट तक तो में खोजता ही रहा। मांग में सिन्दूर, ललाट पर कुंकुम, मुंह में पान, हाथ में चूड़ियाँ और साड़ी पर लैस, हंस-मुख चेहरा-इनमें से एक भी चिन्ह मैं न देखें, तो वासन्ती देवी को किस तरह पहचानूं ? जहां मैने अनुमान किया था कि वे होंगी वहां जाकर बैठ गया और गीर से मुखमुद्रा देखी । देखना असह्य हो गया । छाती को पत्यर बनाकर आक्वासन देना तो दूर ही रहा। उनके मुख पर सदा शोभित हास्य आज कहां था? मेंने उन्हें सान्त्वना देने, रिझाने और बातचीत कराने की अनेक कोशिशें की। बहुत समय के बाद मुझे कुछ सफलता मिली ा देवी जरा हंसीं। मुझे हिम्मत हुई और मैं वोला— आप रो नहीं सवतीं। आप रोओगी तो सव लोग रोवेंगे। मोना (वड़ी लड़की) को वड़ी मुश्किल से चुपकी रक्खा है। वेवी (छोटी लड़की) की हालत तो आप जानती ही हैं । सुजाता (पुत्र वयू) फूट-फूटकर रोती थी, सो बड़े प्रयास से शान्त हुई है। आप दया रखियेगा । आपसे अव बहुत काम लेना है ।'

"वीरांगना ने दृढ़तापूर्वक जवाव दिया—'मैं नहीं रोऊंगी। मुझे रोना आता ही नहीं।' "मैं इसका मर्म समझा, मुझे संतोप हुआ। रोने से दुःख का भार हल्का हो जाता है। इस विधवा बहन को तो भार हल्का नहीं करना था, उठाना था। फिर रोती कैसे? अब मैं कैसे कह सकता हु—'लो चलो, हम भाई-बहन पेट भर रोलें और दुःख कम कर लें।'

"वासन्ती देवी ने अवतक किसी के देखते आंसू की एक बूंद तक नहीं गिराई है । फिर भी उनके चेहरे पर तेज तो आ ही नहीं रहा है । उनकी मुखाकृति ऐसी हो गई है कि मानों भारी बीमारी से उठी हों। यह हालत देखकर मैंने उनसे निवेदन किया कि थोड़ा समय बाहर निकलकर हवा खाने चिलए । मेरे साथ मोटर में तो बैठीं; पर बोलने क्यों लगी । मैंने कितनी ही बातें चलाई—वे सुनती रहीं, पर खुद उसमें बरायेनाम शरीक हुई । हवाखोरी की तो, पर पछताई । सारी रात उन्हें नींद न आई। 'जो बात मेरे पित को अतिशय शिय थी वह आज इस अभागिनी ने की। यह क्या शोक है ।' ऐसे विचारों में रात बीत गई ।

"वैधव्य प्यारा लगता है, फिर भी असह्य मालूम होता है। सुधन्वा खीलते हुए तेल के कड़ाह में भटकता या और मुझ जैसे दूर रहकर देखनेवाले उसके दुःख की कल्पना करके कांपते थे। सती स्त्रियो, अपने दुःख को तुम संभाल कर रखना। वह दुःख नहीं, मुख है। तुम्हारा नाम लेकर बहुतेरे पार उतर गए हैं और उतरेंगे। वासन्ती देवी की जय हो!"

भावना की अतिरंजना ने इस करुण चित्र को कितना संग्रक्त बना दिया है; लेकिन जहां उन्होंने अपने युग के महापुरुपों पर लिखा, वहा लुटारु, फकीरी और चार निडर युवक जैसे अनेक साधारण व्यक्तियों को भी नहीं छोड़ा है। ये कुछ बानगी के चित्र हैं। ये चित्र किसी उद्घोषित साहित्यिक के द्वारा नहीं लिखे गए, परन्तु एक ऐसे मानव द्वारा लिखे गए हैं जिसका समस्त जीवन 'जीने की कला' और सत्य के प्रयोग करने में बीता था, जिसने जीना सीखते-सीखते जिलाना सीख लिया था और जो सबसे पहले और सबसे पीछे मात्र मनुष्य था। फिर ऐसा मनुष्य ही मनुष्य को नहीं पहचानेगा तो कौन पहचानेगा ?

#### अपरिग्रह : समाज-रचना का एक आधार

हरिभाऊ उपाध्याय

हम सब लोग जानते हैं कि गाँधीजी अपरिश्रह के हानी थे और मानते ये कि अपरिग्रह के आधार पर ही नवीन समाज रचना की जा सकती है। बाज की समाज रचना शोषण के आधार पर हुई है, अर्थात् श्रमिका को कम-से-कम पारिश्रमिक देवर अधिक से अधिक मुनाफा करना आज के समाज मे अनचित और गैर-नानुनी नहीं समझा जाता । यही दोषण है । इसके विपरीत गाधीजी मानते ये कि अमिक को अपने अस का पूरा फायदा मिलना चाहिए । उसका फायदा उठानेवाली ू धीच की बोई एजनी नहीं रहनी चाहिए। यह सामाजिक न्याय हुआ । इसपर समाज लडा रह सक्ता है, परन्त् समाज आगे वढ सक्ता है अपरिग्रह के बल पर। अर्थात मन्ष्य अधिक धन या सम्पत्ति प्राप्त करने का अधिकारी हो, न्यायानुकूल उसे अधिक सम्पत्ति प्राप्त हुई हो, वो भी वह खुद अपनी आवश्यवता से अधिक सम्पत्ति का या वस्तुओं का सग्रह अपने लिए न करे । यह त्यागवृत्ति बहु समाज के प्रत्येक व्यक्ति में छाना चाहते ये और इसलिए परिम्रह करने और अपरिम्रहका मग करने बालो को उन्होंने चोर कहा है।

जनको इस परिभाया के अनुसार इसमें से बहुठ से चोर सिंढ होंगे और जिसके पास अधिक सम्मादि होंगी या जिल्लियत होंगी, वहीं बडा चोर होगा। किर मी इन स्व चारों के साथ गांधीओं का अव्यवहार स्तेह का, ममता का और सहस्यता का रहता था। आजतक कभी किती धनी-मानी, राजा-रदीत की यह अनुभव नहीं हुआ कि गांधीओं उनसे पूणा करते हैं, उनका जिरस्कार करते हैं, उनका अरमान करना चाहते हैं, लोगों की दृष्टि में उन्हें गिराना चाहते हैं, विके इसके विचरीत जब क्यों प्रमान करना चाहते हैं, लोगों की दृष्टि में उन्हें गिराना चाहते हैं, विके इसके विचरीत जब क्यों प्रमान के नियों ने आधिक या विक्सी दृष्टि तरह की प्रमान की हैं गांधीओं ने मुक्कि से उसकी सराहना की हैं, उसकी कर की अंगालों और शोषण-इति पर सी बोर का प्रहार करते हैं, परन्तु शोषक के प्रति ने स्वय बहुत सहस्य रहते थे। एन रोज बनई में एक धनी मित्र ने कहा, ''हरिमाऊनी, अब हमको गाधीजी की वहत थाद बाती है। हम जानते हैं कि गांधीजी पूजीवाद के घोर श्चत्र है, परन्तु हम पूजीवाली की पास बुलाते थे, छाती से लगाते थे, हमारे घरो में ठहरते थे, हमारे द सो को अनुभव करते थे, हर विठनाई में हमें रास्ता बताते थे। गाधीजी से मेरा बहुत बरसी तक सम्बन्ध रहा। कई बार में उनसे मिला। मैने कभी लादी नहीं पहनी मगर वाधीजी ने कभी इसारे से भी नहीं दर्शाया कि मैं खादी पहन । इतने सहनशील ये वे । यही कारण या कि हम मो उनको इतना मानते ये। अब तो हमको न केवल तरह-तरह से नोचा ही जाता है, बल्कि अपमानित भी क्या जाता है और कृतज्ञता का तो मानी छोप ही हो गया हो।" एक और मित्र ने एक बार कहा था, "पहले ती दान देनेवालों के प्रति कृतज्ञता दर्शाई जाती थी, लेकिन बद तो ऐसा जमाना आगया है कि दान भी लिया जाता है और ऊपर से मार भी पडती है,गालिया भी दी जाती है।" '

आज गाँधीजी का जन्म दिन है। हमें इन प्रसगी का स्मरण करके आत्मशोधन करना है। ससार में घन एक महान् द्ववित हैं। भयवान् का काम भी लक्ष्मीजी के बिना नहीं चलता। यह सही है कि लक्ष्मीजी की भगवान के चरणो में रहना पडता है। इस तरह धन को सेवा और जन-कत्याण के सामने विनीत होकर रहने में ही शीमा और सार्थकता है, परन्तु उसका अपमान और तिरस्कार तो किसी दशा में भी नहीं हो सकता । विनोबानी के शब्दों में हम 'कांचन-मोह-मुक्ति' ना प्रयोग या साधना अवस्य वरें; परन्तु धन का तिरस्कार और धनिको का अपमान कदापि न वरें। धन का तिरस्कार अज्ञानता का सूचक है और धनिको का अपमान असम्यता को। गाधी-अक्त को दोनों से बचकर अपरिग्रह की साधना करनी चाहिए, बर्चात अपना जीवन-निर्वाह जहां तक ही सके स्वयम से करना चाहिए और उससे अधिक जो कुछ धन-सम्पत्ति हमें मिले, उसका अपने को टस्टी समझकर लोव-सेवा और देश-सेवा में विनियोग करना चाहिए ।

# गुरुदेव की दृष्टि में महात्मा गान्धी

श्री रामपूजन तित्रारी

सन् १९३८ में गांघीजी के सम्बन्ध में गुरुदेव ने एक जगह लिखा था, "एक बार में उनके पास ही था जब राजनीति में भाग लेने वाले एक विशिष्ट व्यक्ति, जिन्हें कांग्रेस पार्टी ने अलग कर दिया था, उनसे मिलने आए। दूसरा कोई कांग्रेस का नेता होता तो उनके प्रति अवजा का भाव दिखलाता; लेकिन गांधीजी तो शालीनता की मूर्ति थे। उन्होंने धैर्यपूर्वक बड़ी सहानुभूति से उनकी बातें सुनीं तथा कतई ऐसा नहीं होने दिया कि वह अपने को हीन समझें। मंने अपने अपनी पार्टी से, जिसका कि वह सदस्य है, बड़ा है। इनना ही नहीं, बिक उस मत से भी बड़ा है जिसका कि वह अनुसरण करता है।"

गुरुदेव और गांधीजी विश्व की इन दो महान् विभूतियों को जन्म देकर भारतवर्ष अपने को घन्य मानता है। दोनों भिन्न रुचि के थे, दोनों के संस्कार अलग-अलग थे; किन्तु दोनों शत-प्रतिशत भारतीय-थे। दोनों राष्ट्रवादी थे; लेकिन उनके राष्ट्र की परिधि भू-खंड के एक छोटे-से टुकड़े तक ही सीमित नहीं थी । उनकी राष्ट्रवादिता संकीणं नहीं थी । दोनों ऐसे काल म पैदा हुए जब भारतवर्प में एक नई चेतना का उदय हो रहा या । दोनों ने अपने-अपने ढंग से भारंतीय तथा संसार की समस्याओं पर विचार किया और सब समय वह एकमत नहीं रहे । असहयोग-आन्दो-लन के प्रारम्भिक काल में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के सावनों को लेकर दोनों में गहरा मतभेद हो गया या, लेकिन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध कितना मधुर, कितना स्नेहपूर्ण था, इसका अनुमान एक छोटी-सी घटना से ंलग जाता है । सन् १९३२ को ९ सितम्बर को यरबदा जेल में साम्प्रदायिक निणंय को लेकर गान्वीजी आमरण अनदान करनेवाले थे । इस अवसर पर गान्वीजी ने

गुरुदेव को एक पत्र लिखा था, "प्रिय गुरुदेव, मंगलवार का प्रात:वाल है। तीन वजे हैं। दोपहर से मेरी अग्नि-परीक्षा शुरू होनेवाली है। अगर आप अपना आशीर्वाद भेज सकें तो मुझे बढ़ी खुशी होगी। आप वरावर मेरे सच्चे मित्र रहे हैं; क्योंकि आप स्पष्ट-वक्ता मित्रों में से है और अपने विचारों को खुले तीर पर व्यक्त कर देते ह। . . . . अगर आपका हृदय मेरे इस काम को पसन्द करता हो तो मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूं । इससे मुझे वल मिलेगा । ...स्नेह।" इस पत्र के छोड़ने के पहले ही उन्हें गुरुदेव का तार मिला, "भारत को एकता तथा उसकी सामा-जिक अक्षुण्णता की बनाए रखने के लिए एक अमृत्य जीवन का विलदान श्रेयस्कर है। ....हमारे दुःख से भरे हुए हृदय आपके इस महान् प्रायश्चित को श्रद्धा बीर स्नेह से देखते रहेंगे।" दोनों कितना एक-दूसरे के निकट थे। गुरुदेव अपने को रोक नहीं सके और २४ सितम्बर को गान्धीजी को देखने के लिये पूना पहुंच गए। वे यरवदा जेल में गान्धीजी के पास ही थे जब यह खुबर पहुंची कि गान्धीजी की बात मान ली गई है। गुरुदेव के सामने ही गान्धीजी ने अनशन-भंग किया । गुरुदेव ने उस समय की अपनी पूना-यात्रा का वर्णन स्वयं किया है। जेल के भीतर जाने और गान्धीजी से मिलने का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है-- "वांई बोर सीढ़ी से उटकर, दरवाजा पार कर दीवार से घिरे हुए एक आंगन में मैंने प्रवेश किया । दो कतारों में वने हुए घर दूर तक चले गए हैं। आंगन में एक छोटे आम के पेड़ की घनी छाया में महात्माजी शय्याशायी हैं। दोनों हाथों से महात्माजी ने मुझे अपनी छाती के पास खींच लिया और देर तक वैसे ही रखा। बोले, "कितनी खुशी हुई।"

गुरुदेव ने गांधीजी के सम्वन्व में जहां कहीं भी

लिखा है, सभी स्थलो पर गाधीओं की उस शक्ति का जिन क्या है जिसने सारे देश को एक नई प्रेरणा दी । उन्होने गाधीजी में पूर्ण मानव के दर्शन किए, ऐसे मानव के, जिसे किसी एक विशेष परिधि में नहीं बाधा जा सकता। उन्हें केवल राजनैतिक नेता के रूप में देखना उतना ही गलत है जितना कि अन्य क्षेत्रों में सीमित करना । सन १९३१ ईं० में गायीजी के जन्म दिवस पर शान्तिनिवेतन में आश्रमवासियों के बीच बोलते हुए रवीन्द्रनाथ ने कहा या, मान लें वि हम लोगो की राष्ट्रीय साधना सफल हो चुकी है और बाहर से देखने पर और कुछ करने की वाकी नही रह गया है तथा भारतवर्ष ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है--तो भी आज के दिन के इतिहास का कौन-सा आरम-प्रकाश धूलि के आवर्षण से अपने को बचाकर सिर ऊचा उठाये रहेगा, यही विशेष रूप से देखने योग्य है। इस दृष्टि से जब देखने जाता ह तब समझता ■ कि बाब के उत्सव में जिनको लेकर हम .लोग जानन्द मना रहे है जनका स्थान कहा है तथा जनकी विशिष्टता विस जगह है। सिर्फ राजनैतिक प्रयोजनिमिटि के हिसाद से हम लोग उनका मृत्य नही आकेंगे, किन्तु जिस दढ शन्ति के दल से उन्होंने अज सम्पूर्ण भारतवर्ष की प्रवल रूप से सबेत किया है उसी शक्ति भी महिमा की उपलब्धि हम लोग करेंगे !" और गुरदेव ने उप शक्ति के सम्बन्धि में भी एक दूसरे स्थान पर कहा है, 'वह शक्ति आसुरी शक्ति नही है, इसरो पर विजय प्राप्त कर, इसरो को नीचा दिलाकर वह गौरवशालिनी नही होती। युद ल्प्सा से परिचालित होनेवाले सेवा-नायको की भहम्मत्यना उसरें नहीं है ।' गुस्देव ने उस सनित की स्पष्ट करते हुए वतलया है " महास्मानी यदि बीर पुरुष हेते अथवा लडाई करते तो हम लोग वाज इस प्रकार से उन्हें स्मरण नहीं वरते , क्योंकि लड़ाई करनेवाले क्षो अनेक बीर युरुप तथा बडे-वडे सेनापतियों ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है। मनुष्य वा युद्ध धर्म युद्ध है, नैतिक युद्ध है। धर्म-युद्ध के भीतर भी निष्ठुरता है, यह हम लोगो ने गीता और महामारत में पाया है। इसके भीतर बाहुबल का भी स्थान हैया नहीं, इसे केमर सारतीय तर्क नहीं उठाउगा। केदिन यह बनुवासन कि मर जाऊगा, केदिन माहगा। नहीं और यहीं वरके विकयों होऊगा— एक बहुत बढ़ी बात है, एक महान् सदेश हैं। यह किसी प्रकार की चतुराई कथवा वार्मोद्धार ने लिए दी हुई दुनियदों सीख नहीं हैं। धर्मयुद्ध के साहर जाकर भीतने के लिये नहीं हैं, वर्धन्क हारवर मी जय करने के लिए हैं। अपर्थ-युद्ध में मरना ही पर्यमुद्ध में परने के बाद भी कुछ वय जाता है। इस की दार कर जीत है और मुख् की पार कर अमृत। जिल्होने इस बात की उउटाध्य कर वसने जीवन में इसे उतारा है

'गावी सहराच' किवना में स्वीत्वनाय ने गाधी की की प्रेरणा वे जबबुद राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया है और यांचीजी के नेतृत्व को पूर्णरूप से स्वीकार किया है।

गुरदेव सकीणे राष्ट्रीयता के विरोधी थे। अतएक असहयाय आन्दोलन के प्रारंभिक काल में उन्होंने गांधी-जी को सबेत करना चाहा या और जनसे मनभेद प्रकट किया था। गान्धीओं की राष्ट्रीयता इप संशीर्णता के दलदल में कभी नहीं फंपी और चन्होंने अपने सामने सम्पूर्ण मानव बाति को रखा । उन्होने तरगालीन परिस्थिति की ध्यान में रखनर गान्दीयता पर जोर दिया और उन आ दोण्न को गलामी के पाश में वधी हुई मनुष्य-अति की मुक्ति का एक अध्यम व माना । गृहदेव ने भी भारतवर्षे की स्वतन्त्रता को इसी दिप्ट से देखा था, लेकिन उन्हें भय था कि हमारे देखवाशी गान्वीजी के इस राष्ट्रीय जान्दीलन ना सकीणं अर्थ न के कें और अपने की उप राष्ट्रीयता के दलदल में न फसा दें। इसके सम्बन्ध में गुरुदेव ने स्वय लिखा है- 'वुछ महोना के यूरोप-प्रवास के बाद जब मैं यहा छौटा को मैंने पाया कि सारा देश तत्काल ही स्त्वन्त्रता प्राप्ति का आधा से फडक उठा है। गान्धी तो ने एक ही वर्ष में स्वत कता दिल ने का बादा निया था । जिन तरीको से ऐसा वे करना चाहते थे वे अपने आप में संकीर्ण थे और वे वाह्य उपकरण मात्र थे। इतने वड़े महान् व्यक्ति के आस्वासन ने उन लोगों में भी त्राशा का संचार कर दिया था जो साघारणतया सांसारिक नफे-नुकसान के मामले में स्थिरचित रहते हैं। वे लोग उत्तेजित होकर मुझसे वहस करते कि विशेष मामले में तर्क का प्रश्न ही नहीं उठता, वयों-कि आध्यात्मिक शक्ति में अद्भुत क्षमता होती है और उससे भविष्य में होनेवाली बात को आश्चर्यजनक ढंग से जाना जा सकता है। इसने मेरे मन में गांधीजी के उस र स्ते को चुनने की वृद्धिमता पर सन्देह पैदा कर दिया-एक महान उद्देश्य की प्राप्ति का यह राःता जो युगों के राजनैतिक जीवन की विफलता के कारण हमारे चरित्र में आई हुई कमजोरी को सन्तुप्ट मात्र करता या । ....अतएव यहांके लोगों के अन्य-विस्वास से फायदा उठाने के लिए मैंने गांधीजी को दोपी ठहराया। इससे शीघातिशीघ्र फल की आशा की जा सकती थी, लेकिन इससे तो नोंव ही कमजोर

हो जाने का भय था और इस प्रकार से देश के कर्णवार के रूप में मैंने गांघीजी को समझना शुरू किया ; लेकिन मेरे सीभाग्य से वह यहीं समाप्त नहीं हो गया।" गुरुदेव का यह अध्ययन कहां जाकर पहुंचा वह उन्हों के शब्दों में उद्धत किया जाता है-"भारतवर्ष में और वैसे तो सभी देशों में ऐसे देशभवत हैं जिन्होंने अपने देत के लिये उतना ही वलिदान किया हैं जितना कि गांधीजों ने और कुछने तो उनसे भी अधिक यातनाएं सहीं । धार्मिक क्षेत्र में हमारे देश में ऐसे सायु हैं जिनके घामिक अनुष्ठानों के कष्टों की तुलना में गांधीजी का जीवन आराम का है । लेकिन वे देशभवत केवल देशभवत मात्र हैं, उससे अधिक कुछ नहीं और ये साधु केवल आनुष्ठानिक कसरत करने वाले हैं और ये दोनों अपने गुणों में ही सीमित रह गए हैं; लेकिन यह आदमी (गांधीजी) अपने उन सभी बड़े गुणों से भी बड़ा है।"

# ञ्जपरिग्रहवाद

श्री रघुवीरशरण दिवाकर

अपरिग्रह (अ +परिग्रह) 'अहिंसा' की तरह एक नकारात्मक शब्द है, जिसका अर्थ 'परिग्रह का अनस्तित्व' है और इस अपेक्षा से अपरिग्रह स्वतः व अनिवार्यतः वहां है जहां परिग्रह नहीं है । इस तरह 'अपरिग्रह' का भाव स्वतन्त्र व निरपेक्ष नहीं है, इसकी व इसके विविधं रूपों को जानने के लिए पहले यह जानना अनिवार्य है कि परिग्रह वया है ? परिग्रह को समझना ही अपरिग्रह को समझना है और यही अपरिग्रहवाद को समझने की कुंजी है।

परिग्रह क्या है ?

सूक्ष्म तात्विक दृष्टि से परिग्रह वाह्य जगत् का पदार्थ नहीं, आभ्यंतर जगत् का एक तत्व है। बह एक भाव है; पर शुद्ध नहीं, मिलन भाव है। उसे मन का विकार भी कह सकते हैं। वहीं मूच्छी है, ममत्व है। . उसे आत्म-स्थित विवेक पर आच्छादित अन्वकार भी कहा जा सकता है। वही आत्म-तन्द्रा है, आत्म-निद्रा है। परिग्रह की 'मूच्छा परिग्रहः' परिभाषा का अर्थ भी यही है। इस तरहु भीतरी व्यक्तित्व के या मन-मस्तिष्क के स्वास्थ्य या संतुलन का हनन करनेवाले जितने भी दुर्गुण या विकार-भाव हैं, वे सभी परिग्रह-रूप हैं, मानस-जगत् का सारा मैल परिग्रह है। यों भी कह सकते हैं कि आत्मा की निराकुलता, शान्ति व सुखानुभूति को नष्ट करनेवाले कोघ, मान, माया, लोम, हेप, मोह, अहंकार आदि सभी कपाय, सभी लेश्याएं, सभी असद्-वृत्ति यां परिग्रह ही हैं।

पर परिग्रह का यह सूक्ष्म तात्विक विवेचन हिंसा के विवेचन से अभिन्न ही है। संभवतः असत्य का भी ऐसा ही निरूपण किया जा सकता है। आखिर हिंसा किसी की जान लेना या किसी को मारना-पीटना ही नहीं है। हिंसा के अंतर्गत आत्मा का सारा ही मैल या

विकार आजाला हैं, बयोकि उससे बात्म हनन होता है, व्यक्तिव का हमस होता है, न्युनाधिक मात्रा में तथा किसी-न किसी रूप में 'पर' का ही नही 'स्व' वा भी उत्पीडन होता है। इसी उरह असत्य भी वह सव मुछ है जो आत्मा की उसके वास्तविक स्वरूप के मान मा स्वानुभव से विमुख या विचलित करे, और इस अवेका से सभी दुविचार व मनोविकार असत्य ही है। ऐसी स्थिति में, परिग्रह की पृथक रूप में देखने-समझने क लिए और उस अपेक्षा से अपरिवाह या अपरिवाहकार की विशिष्ट मीमासा करने के लिए यह आवस्यक है कि परिग्रह को, यदि पदार्थ के पीछे परिग्रह का भाव-पक्ष विद्यमान है तो पदार्थ-रूप में ही मा य किया जाय। पचकरव का यह आराय नहीं हैं, न हो ही सबता है, कि परिवह ने हिसा रूप नो अमान्य दहराया बाय। प्रायेक अवस्था में परियह हिंसारमक है, अववा जहा परिवह है वहा अनिवार्य रूप से हिंसा भी है। यहा ती यही अभिप्रेत है कि तस्व-चितन या तारिवक विश्लेषण की इंटि से अथवा सामाजिक एव व्यावहारिक दृष्टि बिन्द् लेकर मुस्पाट रूप से विचारणा व गवेपणा कर सकने की दृष्टि से परिवह और हिंसा का चुटाला न हो जाय, दोनो टकरायेँ नहीं वरन् अपनी-अपनी जगह रहकर एक-दूसरे का स्पर्धांनरण व विश्वदीकरण करते रहें। नीतिविद् परियह की हिंसा से पुथक एवं पाप, हिंसा के ही सदृश्य एक मूल पाप तथा इसी अपेक्षा से अपरिग्रह को अहिंसा की तरह ही एक अलग मलबत मानता आया है। इसल्ए यह पृथकरण सर्वानुमोदित ही है। वर्षारयह को मृल्यत न मान कर शहिनावत का ही अगया अनुवत मान्य किया जाना त्ववात दूसरी थी। पर यह प्यक्करण तभी निअ सनता है जब परिग्रह को माबात्मक ही नही, पदार्था-रमक भी माना जय, और इस तरह परिग्रह को इतना ब्यापक होने से रोता जाय कि वह स्वय हिसा या हिसा का दूसरी सज्ञाही बनकरन रह जाय । इघर यह नियन्त्रण न किया जाय तो उबर फिर अपरियह को अहिंसा बनकर बैठ जाने से कैसे रीना जा सनेगा और तब ती विनार जगत् में, तत्व-चितन व आत्म

निरीक्षण की दुनिया में अराजकता-सी वा जायगी।

यहा हम रस परिभावा पर लाने हैं कि जो पदार्थ लागा से पुरुष्ठी या ममत्व माव लागा है, लचका निस पदार्थ के निर्मात के मन, मित्तक मा लात्मा मैं निकार-भाव प्रवेश करते हैं वह परियह है। इस मत्तव्य के अनुवार परियह न बाह्य पदार्थ ही है और न मूच्यों पमरव-माव ही है, बल्कि वह मूच्यों-मत्तव बाब या विवारमाव हैं जो व्यक्ति बाह्य पदार्थ या विवारमाव के मित एसता है। इस तह हस मन्यव के अक्तांत 'बाह्य परियह' एवं 'अत्रत्य परियह' परियह के मेद नहीं है, अग या अवयब है।

#### सामाजिक दृष्टि

पर परिषह को यह परिभागा औ एकाणी व अपूर्ण ही है, क्योंकि परिषह किस बाए जगत से सम्बन्ध एसता है व्यापन रूप से उसकी अरेसा यह नहीं हैं। इसरे यहतों में नहा जा सकता है कि वैद्यप्तिक दृष्टि से ही यहां काम किया गया है, सामाजिक दृष्टिक नहीं और इसीसिए वो सत्य यहा है, वह अपूरा है।

नि सदेह व्यक्तिवाद एक सत्य है, चिर सत्य है। किसी भी युग में व किसी भी प्रदिस्पित में उसकी नास्तिनता को उपेक्षित नहीं किया जा सकता । पर समाज भी तो व्यक्ति का ही एक प्रत्मित रूप है, बह ब्यक्ति से पथ क नही है। ब्यक्ति समाज का घटक (इनाई) है। वही समाज का जन्मदाता-विधाना है। बनेक व्यक्ति मिलकर अपने सपने व्यक्तिस्य का कुछ बदा एक जगह सप्रहीन करके ही एक बृहद् समाज-व्यक्ति को जाम देते हैं । यह एक आदान-प्रदान-मय ब्यवस्था है, जिसके अनुगंत व्यक्ति अन्ती वैयक्तिक स्वत त्रतानाकृछ अध सपान के हायो में सपता है और मत्य-स्वरूप अपनी श्रेप स्वतन्त्रता में किसा दसरे की ओर से हस्ताईप न होने का आस्वासन व सरक्षण याता है। वास्तव में इर पारस्परिक पराधी-नता का ध्येय वै .ितक स्वतंत्रता ही है। समात्र नि र्राण ने इस साय को हम समझें ता समध्यिवादी विचार-घारा का हम व्यप्टि का विरोधी नही, सहायन व

संरक्षक ही पायेंगे और तब हम यह समझ सकेंगे कि अपरिग्रह की वैयवितक विचारवारा उनके सामाजिक संस्करण की छत्रछ।या में ही सुरक्षित रह नकती है। व्यक्ति में अपरिग्रह की भावना न हो तो समाज में अपरिग्रह की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती; पर समाज की व्यवस्था अपरिग्रहवादी सिद्धांतों पर स्थित न हो तो भी व्यक्ति की अपरिग्रहरत की सावना होना सामान्यतः असंभव ही है। समाज की व्यवस्था, राज्य का संचालन, उत्पादन व वितरण के आधारभूत सिद्धांत या नीति-नियम आदि अपरिग्रहात्मक भावना व विचारवारा पर निर्धारित न हों, परिग्रहवाद, पूंजी-वाद, संग्रहवाद तया तःजन्य अर्थ-वैपम्य का चारों कोर दार-दौरा हो तथा उसके परिणाम-स्वरूप शोषण व पर-अधिकार-हरण का वाजार गर्म हो, तव हम परिग्रहवाद से बचकर नहीं रह सकते। मोहल्छे या पास-पड़ीस में आग लगी हो तो उस आग को वृज्ञाए विना अपने घर को भी भस्मतात् होने से कैसे बचा सकते हैं ? जिस हवा में सांस लें, वह जहरीली हो तो वहां कैसे जीवित रह सकते है ? इस तरह स्वयं अपरिग्रही बनने की समस्या में समाज-व्यवस्था की अयरिग्रह के आधार पर स्थित करने की नमस्या भी आ जाती है. यह एक वस्तुस्थिति है, और इस अपेक्षा से, व्यक्ति की दृष्टि से ही, नहीं, समष्टि की दृष्टि से भी, लघु व्यक्ति के दृष्टिकोण से ही नहीं, वृहद्-समाज-ज्यक्ति के दृष्टिकोण से भी परिग्रह के प्रस्त पर विचार वरना अत्यावय्यक है। जबतक संकीणं वृत्त से निकल कर ऐने व्यापक व विशाल दृष्टि-विस्तार के साय न देखा जायगा परिग्रह का वास्तविक स्वरूप सुन्पष्ट न हो । और न अपरिग्रहवाद के विराट् तत्व क साक्षा कार ही हो सवेगा।

स्तप्टतः जब हम इस अपेक्षा से परिग्रह के प्रवन पर विचार करेंगे तब जहां तक उसके भावपक्ष का सम्ब ध है, हम उन्वेंगे कि वृहद् समाज-व्यक्ति के सारे मनाविकार परिग्रह ही हैं और इस तरह रामृहिक रूप ने समाज—मानव-समाज—के लिए जो भी दुःखदायी विधि-विचान, तियम व कानून है, जो भी मानव-समुदाय

के सुख व कत्याण का हनन करनेवाली व्यवस्थाएं व संस्थाएं है, जो भी बोपण व अधिकार-अपहरण की प्रवृत्तियां है, सभी परिग्रहमुलक है।

यहाँ हम सहज ही इस निष्कर्ष पर आते है कि वहीं पदार्थ परिग्रह नहीं है जो व्यक्ति के मन में विकार-भाव लाये, बल्कि बहु पदार्थ भी परिग्रह ही है जिसके ग्रहण या मंग्रह से जोषण अयवा दूसरों के न्यायोचित अधिकार का अपहरण हो, समाज में विपमता फैंले, एक का अति-लाभ और दूसरे की हानि हो, या समाज में दुःख व अशांति व्याप्त हो। मनोविकार या मूर्च्छाभाव का जहां तक प्रश्न है, वह व्यापक दृष्टि से सामान्यतः यहां है ही। फिर, अहिंसा की ही तरह अपरिग्रह सदाग्यता में हीं नहीं सतर्कता व विवेकपूर्ण यत्नाचार में भी है। अतः . यदि मन में शोषण की दुर्भावना न भी दीखे, परि-ग्रह के भाव-पक्ष की अनुभूति का स्पष्ट आभास अमान्य भी किया जीय, तो भी यत्नाचार के अभाव में परिग्रह है ही। सद्भावना या सदारायता का वहाना, अयवा मंग्रह के वीच जल में कमल की तरह अलिप्त होने या ममत्व-भाव-हीन होने का दावा, परिग्रह का परिग्रहत्व नहीं मिटा सकता, परिग्रह-पाप को अपरिग्रहकृत में नही वदल, सकता । प्रमाद, असावधानी, अविवेक, अयत्नाचार, मृहता, ये सब यहां अपराध-मूलक हैं, परिग्रह-पाप-मूलक है।

#### परिग्रह की परिभापा

अंतर्जगत् व वाह्य -जगत् दोनों की अपेक्षओं से तथा वैयिवतक व समाजिक दोनों दृष्टियों से संतुलित व सामूहिक रूप से विचार करने पर अब हम परिग्रह की परिभाषा इस प्रकार कर सनते हैं—जिस पदार्थ के निमित्त से व्यक्ति में मूर्च्छा-ममत्व-भाव या अन्य विकार-भाव आए, अथवा\* उसका उपयोग, भोगोपयोग, ग्रहण या संग्रह नामूहिक दृष्टि से साज में विपमता-

<sup>\*</sup> यहा यह अभिप्रेत हैं कि इस परिभाषा में बताई गई दोनों गर्ती में से पदार्थ जो भी कोई एक शर्त पूरी करे या दोनों ही शर्तें पूरी करे हर हालत में वह पदार्थ परिग्रह ही है। —लेखक

पूर्ण व्यवस्था, शोषण पर अधिकार-अपहरण, अशानित, दुस, समर्थ व विनास नी प्रवृत्तियो को जन्म दे अथवा गदि वे विद्यमान हो तो उन्हें अकृष्ण वनाए रखे या उन्हें प्रोत्साहित करे, वह धदार्थ परिषह है। हर पदार्थ परिष्रह नहीं हैं

उक्त परिभाषा म सहज ही यह सकेत निहित है कि कोई भी पदार्थ प्रत्येक अवस्था या परिस्थिति में, अथवा उसके उपयोग, ग्रहण या सम्रह की हर स्थिति में, परिग्रह हो, यह आवश्यक नही है । बदाहरणायें जनमार्ग, पर्वत वन, नदी, जलाशय आदि सार्वजनिक स्थान, सहज ही हर किसी के उपयोग में आते है तथा साधारणत इन्हें लेकर मोह-ममस्य की भावना के लिए स्थान नहीं है, साथ ही पथिक या नागरिक के नाते न इनके उचित उपयोग से किसी हा अबि-कार छिनता है और न समाज में अध्यवस्था या विषमता फैलती है। अतः सामान्यत ये परिग्रह नही है। आकारा, बाय, सूर्य, नक्षत्र ये सभी प्रहति के वरदान भी ऐसे ही पदार्थ है। सार्वजनित मस्थाए भी इसी कोटि में आती है। राज्य-द्वारा कर-ग्रहण, जन-हित के कामों के लिए जन-सस्थाओं डारा अर्थ-संग्रह आदि में परिग्रह-भावना होने से तथा जन-हित का विरोध भी वहा न होने से गृहीत या सगृहीत धन-मपित परिग्रह नहीं है । इसी तरह सार्वजनिक ट्रस्ट, दुलियो, पीडिलो या शरणापियो की सहायता के लिए लोले गए कैम्प समाज-सेवियी या शहीदो के स्मारक सादि के लिए सचित निधि, इन्हें परिग्रह नहीं कहा जा सक्ता । बास्तव में जिस पदार्य के प्रति विशेषरूप से अपनेपन की भावना व तज्जन्य मोह-समत्व की सन्भूति न हो, अथवा विश्रेष रूप से परायेपन, उपेक्षा या विद्वेष की भावना भी न हो, उस पदार्थ को परिव्रह की सज्ञानहों दी जा सकती । इस तरह हर पदार्थ परियह नहीं है और जो पदार्थ परिग्रह नहीं है उपयोग, ग्रहण या सग्रह परिग्रह-माप नहीं हैं। यही कारण ह कि जिन महात्माओं ने अपरिग्रह पर निरोप रूप से जीर दिया है यहा तक कि उसे मुल्बत भी माना है, उन्होंने भी पदार्य-ग्रहण का सर्वका निषेष नहीं किया है। उनके अपरिषट्-ग्रत की मान नहीं है कि व्यक्ति वहीं या उतना हो पदार्थ ग्रहण करें निषकों केनर उसना मन मोह-मम्बद, राण-देप, जादि के विकार-भावों से विशुख्य या कर्कृदित नहीं अपना को पदार्थ निजाना 'जावसक' हो, और इस दृष्टि से गृहस्थ तो क्या महा-अपरिषटी सामु या मुनि के पास भी ऐसा पदार्थ रह सकता है।

पर सार्वजनिक स्यान, कोध निधि दृस्ट, सस्या, आदि परिश्रहत्व के बत्त से बाहर ही है, ऐसा नहीं है। इन्हें लेकर भी मोह-ममत्व की भावना हो सकती है। सकीण राष्ट्रीयता व प्रान्तीयता आदि की भावना-ओ ने अतर्गत राष्ट्र या देश तथा प्रान्त आदि परिप्रह ही है। मदिर मस्जिद विरजायर आदि धर्मालय भी परिश्रह है. यदि उनकी आड में कोई स्वार्य साधन होता है, अथवा यदि मानव-मात्र के लिए उनके द्वार न खोल कर वर्ष विशेष द्वारा अहकार-त्रंष्टि या अधर्म-भावना ना आलम्बन उन्हें बना लिया गया है। इसी तरह ट्रस्ट, फण्ड, निधि, कोप आदि का भी उपयोग विशद्ध सार्वजनिक दृष्टि से, पात्रता की अपेक्षा मे, वक्षपात. राग-द्वेष व प्रतिस्पर्धा-ईध्या भाव से न किया जाए, उन्हें किसीभी तरह वे दुस्वार्थकी पूर्तिका साधन न बनाया जाए, अथवा उनके सग्रह मा सचय में अव्यक्त दवाव जोर-बवरदस्ती आदि की जाय, ती वे भी ऐसा उपयोग या सब्रह करनेवाले के लिए परिव्रह ही है । तात्पर्यं यह कि जहां जिस पदार्थं से, चाहे वह पदार्थ सार्वजनिक ही क्यो न हो विशेष आपिक या जन्य निजी स्वार्थ सम्बद्ध है अववा जिसको नेकर मन में विषम भावना है, दुरुपयोग है, अन्याय है, मोह-मर्च्छा है, समाज का बहित है, वह परिव्रह ही है। अपरिग्रहवाद का विराट स्वरूप

'परिग्रह' के इस निरुपण व विरुप्तेपण से सहज ही। अपरिग्रह पर पदा हुआ परदा हट जाता है और अपरिग्रहवाद का एक विराद स्वरूप समक्ष आकर हमें विमोहित कर देता है और हजार मुखा से बार-बार हमें यह आदेश देता है कि परिग्रहवादी व्यवस्था का अंत करो, अपरिग्रह के अधार पर व्यष्टि व समष्टि के जीवन को निर्धारित करो, हर तरह परिग्रह को मिटाओ, परिग्रह की दासता से अपने को मुक्त करो। तब हम देखते हैं कि अपरिग्रहवाद जीवन की एक बड़ी-से-बड़ी साधना है और सचमुच एक ऐसा

आशीवदि है कि यदि वह इस दु:खी व त्रस्त जगत् को मिल जाए तो यहीं स्वर्ग उतर आए। निश्चय ही वह एक सजीव प्रेरणा है, एक महत्तम आदर्श है। एक और अखण्ड मानवता यहां स्वयं प्रतिप्ठित है । सदसद्-विवेकमय वन्युत्व-भाव, सहयोग, समता व स्वपरहित की मावना यहां प्रधान है। अहिमा यहां ओतप्रोत है।

## संस्कार का ऋर्थ

श्री दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री

संस्कृति और संस्कार दोनों अनन्यार्थ शब्द है। प्राचीनों ने संस्कृति शब्द का बहुत उपयोग नहीं किया, परन्तु संस्कार शब्द का पुष्कल और एक से अधिक अर्थ में उपयोग करके उसे महा अर्थवाहक वनाया है।

अब हम् संस्कार शब्द के दो मुख्य अयों का विचार करें। 'योगसूत्र' के व्यासभाष्य में संस्कार शब्द का यह विवरण मिलता है, "वृत्तियां दो प्रकार की हैं, क्लिप्ट और अक्लिष्ट । इन वृत्तियों के कारण अलग-अलग प्रकार के संस्कार पैदा होते हैं और उन संस्कारों से फिर वृत्तियां उत्पन्न होती हैं। इस तरह वृत्ति और संस्कार का यह चक सदा चलता रहता है।" (यो. मू. १-६)

इस वचन से संस्कार शब्द का अर्थ आधुनिक मनोविज्ञान के रज्ञानों और छानों (Dispositions and Traces) के जैसा निकलता है; क्योंकि 'योगसूत्र' के कत्ती ने "प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति" (यो. सू. १-६) नामक पांच वृत्तियां गिनाई हैं और क्लिप्ट तया अक्लिप्ट के रूप में इन वृत्तियों की द्विविवता का स्पष्टीकरण करते हुए "अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेप और अभिनिवेश" (यो. सू. २-३) नामक पांच क्लेश गिनाये हैं। मनोवैज्ञानिक मीमांसा की गहराई में पैठे विना उक्त वचनों का मेल साध कर सोचने से परिणाम यह निकलता है कि योग-शास्त्रोक्त संस्कार पिड में बुद्ध्यात्मक (Cognitive) राग-द्वेप प्रयत्नात्मक (Conative) और सुख-इसादि भावात्मक ( Affective ) तीनों प्रकार के रुझानों (Dispositions) और मन पर पड़ने वाली छापों (Traces, impressions) दोनोंका समावेश होता है। लोगों में भी रुझान और आदत के अर्थ में संस्कार शब्द का उपयोग होता ही है। बीद्ध प्रतीत्यसमुत्पादवाद में संस्कार का उपयोग ऐसे अर्थ में हुआ है।

पर योगभाष्य में संस्कार दो प्रकार के माने गये हैं: (१) वासना-रूप और (२) धर्माधर्म-रूप । संस्कार शब्द का यह वासनामूचक अर्थ भी लोक-व्यवहार में प्रचलित है। साय ही योगभाष्य में यह भी कहा है कि गुभ अयवा ऊंचे संस्कार ऊपर उठाते हैं और अगुभ अयवा हलके संस्कार नीचे घसीटते हैं। ऊपर संस्कार शब्द का छाप, रुझान और वासना-सूचक जो अर्थ बताया गया है, उससे भिन्न चमक या 'पालिश' सूचक एक दूसरा अर्थ भी संस्कार चन्द का है। बातु के बरतनों को चमकाने की किया की संस्कार कहा जा सकता है। लेकिन अब हम देखें कि शिष्ट व्यवहार क्या है। शंकराचार्य कहते हें-

संस्कारो हि नाम संस्कार्यस्य गुणाधानेन वा स्यात् दोपाप-नयनेन वा। (त्र. मू. गां. भां. १-१-४)

सारां यह कि संस्कार दो प्रकार के होते हैं: (१) गुणाधान द्वारा और (२) दोपापनयन द्वारा और इस शंकर-वचन पर टीका करते हुए वाचस्पति मिश्र उदाहरण देते हैं कि "विजोरे के फूल में लाख का रंग सींचने से लाख-जैसे रंग का फल उत्पन्न होता है। यह हुआ गुणाघान द्वारा संस्कार का उदाहरण, और मिलन दर्पण को ईंट अदि के चूर्ण से घिसकर साफ करने पर दर्पण का चमकने छगना दोपापनयन द्वारा संस्कार का उदाहरण है।" मैं नहीं जानता कि विजोरे के फूल का उदाहरण सच है या नहीं; किंतु संस्कार शब्द का यंह

गुणान्तराधान-मूचक अर्थ आयुर्वेद में प्रसिद्ध है। है चरक ने पानी, अग्नि, आवि को गुणान्तराधान का साधन माना है। अग्नि आदि से पानु आदि में चुणान्तराधान की बात आयुनिक विज्ञान को माग्य है ही। मुखेप में, चहना यही है कि सस्त्रार करने योग्य जह-मदाबों को गुणाधान हारा कोर दोय दूर करके, चो दो प्रकार से, सस्त्रारी बनामा जा सन्ता है।

सस्वार दाव्द का अर्थ स्पट बरने के किये वट बस्तु में सत्वार का उदाहरण दिया है, कियु हम दो यहा मनुष्य के स्स्कार का दिवार कर रहे हैं। वैसे, स्नानादि द्वारा परीर की सुद्धि के किये दारीर-सस्कार थाव्द का अयोग होना है, लेक्नि यहा तो सस्वार धाव्द से हमारा हेंदु मनुष्य के मन, बुद्धि, भावना, जहकार जादि वो चमकाने, विकासत करने से हैं।

जन्मना जायते शूद्र सस्कारदिज उच्यते ।

अर्थात् मनुष्य जन्म से द्विज नही होता, द्विज तो वह सस्कार द्वारा बनता है। इस बचन में स्मृत्यकत उपनयनादि सस्वार-यानी उनके हेत् से होनेवाले धास्त्री-क्त कर्म ही विवक्षित है। ऐसा न मानकर हम यह मानें कि उपनवन के बाद प्राप्त बह्मचयें और विद्यार्वन भी विवक्षित है। साराश यह नि मनुष्यादि के एतद्विपयन समग्र निरूपण को विद्याल दृष्टि से ध्यान में हेनर सोवा जाय तो ऊपर के वचन का तात्पर्य यह निवलता है कि स्वभावत मनुष्य पशु अथवा पामर है और सय्कार द्वारा वह सच्ची मानवतावाला अर्थान् सस्कारी मनुष्य बनना है। सस्कार शब्द की इतनी वर्षा से यह स्पष्ट हुआ ही होगा कि सस्कार शब्द का जो चमक या 'पालिस' सूचन अर्थ है वह बाहरी सफाई और शुद्धि वा नहीं, बन्कि मानव-हृदय की उस चमक या शोमा का दोनक है, जिससे मनुष्य की रहन-सहन, भावना, बृद्धि समी कुछ समाज में दीप्त हो उठें। दूसरे शब्दो में, इसे यो नह सकते है, कि जिस शिक्षा से मनुष्य में समान-हितलकी और आध्यात्मिक गुणो का विकास और वृद्धि होती है, उसी

\*"सस्कारो हि गुणान्तराधानमुख्यत । प पुनारम स्वर् दिभि काल प्रवर्ष भाजनादिभिश्वाधीयन्ते । (चरक वि व०१)

को सस्कार कहते हैं। जैसा कि शकरानार्य ने वहां है, मान दोषापनयन या मात्र मुणामान से नहीं, दल्कि सस्कार के लिये दोषापनयन और मुणामान दोनों की आवश्यनता है।

सस्कार संस्ट का यह अर्थ अग्नेजी के 'कम्बर' सब्द के अर्थ से मिलता-जुलता है। लेकिन हम सकर द्वारा विये गए अर्थ को पकड़ कर ही आग बड़े तो मामवित्त के सक्कार द्वारा दूर करने योग्य दोगों का अर्थ होगा, मनुष्य-लीक के मुल से विपटी हुई पशु-ग्रहत क्सामाविक सास्त्राय, जिनमें राग, डेप, मोह और मम मुख्य है तथा अनेक पीड़ियों की अविद्या, मम और राग-प्रेय प्रेरित प्रवृत्तियों के वारण रक्त में मिथी हुई रामर जनों में साधा-रणत पाई जानीवाली आदानें मी है। सरकता के सिमे हम मान कें कि इन दिविष दीयों का अपनयन ही दीयोग-व्यन है और गीता में देशी सम्बद्ध के चप में जिनकी गणना को नाम ही उस प्रकार के दोयानवन और गुणाधान का नाम ही सहसर है, आदसे सलार की इम ब्याच्या से सतीय मानकर हम आगे वहें स

इस प्रकार के सत्यार गुण सत्यार है। साधारणत. सत्कार धव्य का प्रयोग शुण सत्यारों के लिये ही दिया जाता है और वहीं ठीव भी है, वयोंकि जिये ही दिया सत्कार या कुसत्कार कहा जा सकता है, उनमें चित्र की चमताने या उज्ज्वक बताने की क्षाता ही नहीं होती। जिसे बोगवास्त्र म क्लेय वहा पया है, और अन्य पास्त्रों में जिसे दीय माना गया है, उन असिया, मया, राग, देप के उत्पाय नृति और त्यक्षाव का ही योगवास्त्रीय नाम बसुभ सत्यार है।

 भी उसमें पाये जाते हैं। किंतु किसी भी राष्ट्र के श्रेष्ठ विचारकों और द्रष्टाओं का प्रयत्न सदा यही रहता है, कि उच्चतम संस्कार ही आदर्श रूप में प्रतिष्ठित हों।

ऊपर संस्कार का जो विचार किया है, उससे व्यक्ति के संस्कारों का ही अर्थ निकलता है। प्राचीनों के गर्भावा-नादि संस्कार-विचार में यही अर्थ निहित है और यह तो मानी हुई बात है कि बास्त्रोक्न विधि से नहीं, किंतु संस्कार-युक्त शिक्षा द्वारा किसी भी व्यक्ति के जीवन में तेज और चमक पैदा होती है। लेकिन अधिकतर लोगों के जीवन में यह चमक वाहरी ही रहती है। साय ही, यह भी पाया गया है कि तीव्र संवेग-युक्त विशिष्ट व्यक्तियों के चित्त के समूचे प्रदेश में यह चमक या तेज गहराई तक उतर जाता है और उनके चित्त की समस्त भूमिकाओं को प्रदीप्त कर देता है। इस तरह ऊपर हमने जो अर्थ किया है, उस अर्थ के अनुरूप शुभ संस्कारवाले श्रेष्ठ मनुष्यों के प्रत्यक्ष सदाचार-युक्त उदाहरण से, उनके द्वारा दी गई विक्षा-दीक्षा से और क्वचित् किसी उत्तरा-विकार के वल से, उनकी संतान में ये संस्कार न्युनाधिक अंश में प्रकट होते हैं, और चित्त की ऐसी संस्कारशील स्थिति जब किसी समाज में कई-कई पीडियों तक बराबर वनी रहती है और निरन्तर विकसित होती रहती है, तो आगे चलकर वह उस समाज का स्वभाव वन जाती है, और उस दशा में हम उसे उस समाज का संस्कार कहते हैं। इसमें संस्कार जब्द के दोनों अर्थ निहित हैं।

वैसे मनुष्य-जीवन में दो प्रकार से परिवर्तन होते हैं: एक परिस्थित के दबाव के कारण, और दूसरे, मनुष्यों के अपने पुरुपार्थ के कारण। जीवन को टिकाये रखने के लिये परिस्थित के अनुस्प पिवर्तन प्राणि-मात्र के जीवन में होते रहते हैं। मनुष्य भी एक प्राणी है, अतः उसके जीवन में भी परिस्थित के अनुकूल परिवर्तनों का होना स्वाभाविक है। किंतु परिस्थित के ऐसे दबाव से होनेवाले परिवर्तन संस्कार नहीं कहलाते। जब मनुष्य समझ-सोच कर प्रयत्नपूर्वक अपने मन, बुद्धि आदि का विकास करता

है, तो उसका वह विकास ही संस्कार कहा जा सकता है।
यदि कोई व्यक्ति प्रयत्न करे, तो वह अपनी पामरता को
टालकर संस्कारिता प्राप्त कर सकता है और इसके
विपरीत, प्रमादवय अपने उच्च संस्कारों को छोड़ कर
वह पामरता के गर्त में गिर सकता है। महाभारत में
यथार्थ ही कहा है—

प्रमादं वै मृत्युमहं त्रवीभि अप्रमादममृतत्वं त्रवीमि ।

अर्थात्-प्रमाद के कारण उत्पन्न पामरता ही मृत्यु है और अप्रमाद से प्राप्त होनेवाली संस्कारिता ही अमरता है। यह कोई नियम नहीं कि ऐसी संस्कारिता व्यक्ति के जीवन तक ही मर्यादित रहे। जब किसी भी राष्ट्र के समर्थ और प्रतिभागाली द्रष्टा अपनी अपूर्व आपं-दृष्टि से मानव-जीवन को उज्ज्वल और उच्च-तर बनानेवाले आध्यात्मिक, धार्मिक, घील-विपयक और सौंदर्य-विषयक सत्यों का दर्गन करके संस्कार का एक आदर्श उपस्थित करते है तदनुसार उपदेश, शिक्षा और सदाचार द्वारा एक समाज को पामरता से उबार-कर संस्कारी जीवन के मार्ग पर ले जाते हैं, और ऐसे संस्कारी जीवन की नयी दुष्टिरूप फिलासफी से अनुप्राणित कवि, कलाकार, विद्वान्, वैज्ञानिक आदि उस राष्ट्र के श्रेष्ठ मनुष्य अनेकविच विद्याओं और कला-कृतियों का अभूतपूर्व भव्य सुजन करते हैं, तब उस समय सर्जन-समृह को और उसकी अधिष्ठानभूत जीवन-दृष्टि का अनुसरण करनेवाले उस राष्ट्र की जीवन-चर्या को यदि हम संस्कृति\* का नाम दें तो मेरे विचार में वह गलत न होगा।

लेकिन यहां एक बात याद रखनी है कि राष्ट्रीय संस्कृति के इस समग्र विकास में प्रमाण-भूत तत्व तो व्यक्तिगत संस्कारों का ही है। फिर ऊपर संस्कृति विकास का जो कम संक्षेप में मूचित किया है, यह नहीं कहा जा सकता कि संस्कृति का विकास सर्वत्र उसी कम के अनुसार होता है। किंतु यह सच है कि भारत में यह कम स्पष्टरूप से देखा जा सकता है।

<sup>\*</sup> हमारे यहां संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'कल्चर' और 'सिविलिजेशन' दोनों के पर्याय की तरह प्रयुक्त होता है। कुछ लेखक विशेषकर हिंदी के लेखक 'सिविलिजेशन' के लिये अक्सर 'सभ्यता' शब्द का प्रयोग करते हैं।

भिन्न-भिन्न राष्ट्रो में उनके इतिहास के विधिन्न सालों में को सन्द्रितयों प्रचट हुई, वे जन-उन राष्ट्रो की मौतिक परिस्पितियों और ऐतिहासिक बको द्वारा उत्पाम की गयों स्वभावनन्य निवायता के परिकाम स्वरूप, अपनी-अपनी सास विवायताधोबानी रही हो हा वह स्वामाविक ही है। व सास्त्र्रतिक विवायनाए जन-उन राष्ट्रों के व्यावतंत्र स्वशानी-अंसी मानी गई और उन्ह अभिमान की बस्तु समझा गया, बिन्नु सम्लाद के अक्षम-अज्ञा देशों और युगे में वो पैराव्य और सन्त्र महान्या हो गयी, उन्होंने तो स्वय, अहिंग, वाराविक महान्या हो गयी, उन्होंने तो स्वय, अहिंग, वाराविक

सहिष्णुता, सब भूतो के प्रति भागुभाव या आरमभाव, बाध्याय्यिकता, अभय, ज्ञान, विज्ञान आदि देवी सम्पद्-रूप सस्वारो पर हो बांधव और दिया है और विजिन्न सम्हान्यों के अन्तलक में विद्यमान इन उच्च सस्वारा को ही बहुच वरके इस युग वे महापुरंप भी बांखक मानव-बांधि की एक और अजिज सम्हान्य में स्वान के मिन्न स्वत की एक और अजिज सम्हान्य से मानी सुत्र और स्वत यन्त्यांक रहु, इसीम सवार के मानी सुत्र और सानि की आधा निहिन हैं।

अन्०—काशिनाय निवेदी

### बुद्ध-शासन के रतनः भदंत महावीर

भारतीय बुद्ध-शासन के दीवंकालीन इतिहास की अमर कहानियों का न केवल भारत कही प्रत्युत सारे एशिया महाद्वीप के जीवन, राजनीति, संस्कृति, वर्ष, करा, पुरातत्व आदि के साथ एक अभिट और अद्-भत सामजस्य है। भगवान बुद्ध पद-वारिका के रूप से बद्यपि पहिचय में मयुरा और कूर-राष्ट्र की राजधानी शुरूलकोटिठत से आगे नहीं बडे थे, पुरव में कजगला निगम के मुलेलुबन और पूर्व-दक्षिण में सल नवती नदी के तीर को पार नही कर पाये थे, दक्षिण में सुमुमारगिरि आदि विन्ध्यायल के आसपास वाले निगमो तक ही गए ये तथा उत्तर में हिमालय की तलहटी के सायुग निगम और उमीरध्वज पवत से ऊपर जाते हुए नहीं -रिखाई दिए में, तथानि उन्हीं के समय में उनके शिष्यों ने सुनापरान्त प्रदेश के अम्बहुष्ट पर्वंत पर रहते हुए वाणिज्यपाम (सम्मवन वस्वई), समुद्रगिरि, मानुलिनिर, मक्तनाराम आदि में बृद्ध शासन का कापी प्रचार किया या। अर्थक्याचार्यका तो यह भी कहना है कि तयागत भी अत्ने पाच सौ क्रादिमान् भिश्रुओं के साथ वहा ऋदिवल से गए थे। उहींने मार्ग में सत्यबद्ध पक्तवाधी एक परि-द्राजक को भिक्ष सघ में दोला भी दी यी, जिसने

बाद में उस प्रदेश में बुद्ध शासन का पर्याप्त प्रचार किया या । कहते हैं, भगवान बुद्ध ने नमेंदा नदी तथा सरवद्ध पर्वंत की बोटी पर अपने पद विन्ह भी अकित कर दिए थे। तक्षक्षिलाका राजा पक्कसानि भी तथागत के पास आकर प्रविज्ञत हुआ था । न्वालियर, उन्जैन आदि प्रदेशों में महाकारपायन ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया था। स्वय वे उज्जैन क राज्युरोहित के पृत्र थे । उरक्ल (खडीसा) प्रदेश भी बढ शासन स अछ्तान या । कुनक्टवती (वर्तमान क्वेटा) के राजा कप्पिन और उसकी स्त्री ने एक सौ बीस योजन चल्कर धावस्ती में भगवान के दर्शन किए और प्रवृतित हुए । ल्हावासियो हा बहुना है कि तथागत ऋदिवस में सीन बार लगा गए थे। नेपाल का स्वयम्भू पुराण तथागत के वहा पहचने क अनेक प्रमाण उपस्थित करता है। बर्मावासियो ना नहना है कि तपस्स और ने मस्लिक बुद्धभवा में सर्वप्रथम तथागत को भोजन कराया या और शिष्यत्व ग्रहण कर प्रसाद रूप में उनके नेश मागकर बमा है गए ये, जा सम्प्रित बहाके प्रतिब चैत्य स्वेता। पंगोहा में सुरक्षित है। बवन-राष्ट्र के बौदा का विश्वास था नि वर्तमान् इस्लाम के धार्मिक के द्र भवता के कावा

गरीफ का पदचिन्ह तथागत का ही है (यं तत्थ योनकपुरे मृनिनो चपादं) । उस समय इस्लाम वर्म का तो जन्म भी नहीं हुआ था। ऐने ही स्याम देशवासियों का कहना है कि सत्यवद्ध पर्वत उनके यहां है, जहां भगवान् बुद्ध ने जाकर अपने पद-चिन्ह अवित किये थ। जो बुछ भी हो, इतना तो स्पष्ट है कि बुद्धवाल में वृद्ध-शासन भारत की सीमाओं को छांघ नहीं पाग था। किन्तु अशोक-काल में वह संका वर्मा, स्याम, कम्बोज (कम्बोडिया), गान्यार. नैपाल के साथ हिमालय प्रदेश के दक्षिणी पांचों राष्ट्र, काव्मीर, सीरिया, मिन्न, मकदूनिया और एपीरस तक पहुंच गया। धीरे-धीरे कालान्तर में बुढ़-शासन का प्रसाद चीन, तिय्वन, जापान, फारमूसा, वार्ली, मैक्निको, कोरिया, जावा, मुमात्रा, मंगोलिया और साइवेरिया के दिस्तृत प्रदेशों तक पहुंच गया । कावृल से होता हुआ यह अमर मंदेश यारकन्द, दलख, बुखारा, तथा अन्य-समीपवर्ती स्यानों में व्याप्त हो गया; किन्तु परिवर्तनशील संसार के नियमों का व्यतिक्रमण उसके किए सम्भव न था। समय ने बीरे-बीरे जो उसे एक कोर बड़ाया तो दूसरी जोर से समेटना वारम्भ किया । एशिया यूरोप, लक्षीका और लमेरिका में व्याप्त बुद्ध-शानन ने अपनी जन्म-भूमि भारत से अपना प्रभुत्व हटा लिया। यद्यपि लाज विस्व में दो-तिहाई बाढ़ों की ही जनसंख्या है तयापि उसकी जन्मभूमि बाज उसमे शून्य-सी है। इस नमय भारत में जो बौद्ध वास करने हैं, उनकी जनसंख्या टाई लाख से अधिक नहीं है। इनमें भी बंगाल, आसाम, उत्तर प्रदेश, मद्राम, वस्वड और अण्डमान तया वीवानेर के प्रदेशों में ही अधिक बीढ़ वास करते हैं। किन्तु यह संख्या बीढ़ गृहस्थों की है । वौद्ध निक्षु जो बुद्ध-शामन के संरक्षक, नेता एवं प्रचारक होते है, उनकी संस्था अत्यन्त अन्य है।

यदि वंगाल-प्रदेशवासी और वर्मी चीनी, सिंहली, तिब्दती, नेपाली अमेरिकी तथा अन्य बाह्य देशवासी मिक्षुओं को छोड़कर गणना की जाय, तो सारे भारत-वर्ष में आठ से अधिक भिक्षु नहीं हैं। किन्तु यह देखने में बारहा है कि दिन-रात बीट गृहम्यों की संख्या बहती जा रही है और भारतीय शिक्षित नवयुवकों में प्रबच्या की कामना भी प्रवच होतो जा रही है। यह सब उन्हीं दिवगत भदन्त महाबीर की देन हैं, जिन्होंने कि सन् १८५७ के भारतीय स्वातंत्रय-युद्ध के बीर सेनानी बाबू कुंबरसिंह के कन्यों-से-कन्या मिड़ाकर अंग्रेजों के साय युद्ध किया या। उनसे पूर्व भारत में कोई भी बौद्ध मिक्षु न या बीर न भारतवासी ही बौद्ध वर्म की ओर आकियन हुए थे। वेचारे बौद्ध गृहस्य अपने मागं-प्रदर्शक सिक्षुओं के अभाव में अपने सारे वामिक अनुष्ठानों के प्रति उदासीन-से हो गए थे।

भवन्त महाबीर का जन्म सन् १८६३ में विहार प्रान्त के भमुआ स्टेशन से तीन मील दूर हपपुर नामक गांव में हुआ था। उनके वचपन का नाम महाबीर सिंह था। शारीरिक शिवत से भी वे नामानुन्य नम्पन्न थे। एक हट्टे-कट्टे पहलवान और प्रसिद्धि-प्राप्त खिलाड़ी थे। लाठी, गतका, तलवार, भाला-वर्छी आदि चलाने में वे बटे ही निपुण थे। उनका नाम मुनकर बासपास के चारों बीर के टाकू थर-धर कांपने थे। क्या मजाल कि उनके रहते गांव में टाका पढ़ जाय या चोरी हो जाय ? उन्होंने कई बार बनेक डाकुओं को छट्टी का दूध याद करा दिया था। कहते है, उन्होंने एक बार एक चीते को भी मार गिराया था।

उन्होंने अपनी पच्चीस वर्ष की नव-तरणाई में ही अंग्रेजों को अपनी वीरता के अद्मृत चमत्कार दिखाए ये। अग्रेजों के साथ लड़ते हुए बाबू कुंवर्रीसह के बीरमित को प्राप्त होने के बाद जब उनके छोटे माई अमर्गिसह वहीं भाग गए, तब महावीर्रीमह ने देखा कि अब अकेले काम नहीं चलेगा। वे अपने पहल्वान साथियों के साथ दिलण की और बढ़े और इन्दीर होते हुए महास पहुचे। महास में पहलवानों का एक दंगल हुआ. जिनमें महावीर्रीमह को एक हज़ार रुपये पारितां पिक में मिले। वे वहां से लंका की और बढ़े। वहां पहुंचकर वे अपने एक परिचित भारतीय

ब्यापारी के यहा गए, जिसने महावीरीसिंह का बडा वादर-सत्कार किया और अपने यहा सदा रहने के छिए प्रार्थना की।

महावीरसिंह लका में रहते समय प्राय बौद विहारों में जाया करते थे। धीरे-घीरे बौद्ध शिष्टाचार एवं धर्म की स्रोर उनका शकाव होने क्या। वे शिक्ष-क्षों के निर्मल चरित्र और मेवामाव के उस्कप्ट कार्यों से प्रभावित होकर वहां के इन्द्रापभ महास्वविर के पास जाकर प्रवजित हो गए। उनको पूर्व की सारी धारणार्वे बदल गई। वे अब महाबीरसिंह के स्थान पर श्रामणेर महावीर' वन गए। उन्हें अपने जीवन में पर्याप्त सुख और शान्ति की अनु<u>म</u>ृति होने लगी । लका का भिद्युजीवन उन्हें एक अद्मुत एकाग्रता और सबम के साम्राज्य की प्राप्ति जान पड़ने लगा। उन दिनो उन्हे छका के खडाल दायको ने चीवर, पिण्डपात (मोजन), ग्ल्यानप्रत्यय एव शयनासन के साथ नारियल के बगीचों से भी पूजित तथा सम्मानित किया । वे नित्पृह महात्मा जिन्हाने अब रुपया-पैसा भी हाय से छूना स्वाग दिया था, भलाससारिक वस्तुओं से बयोकर लिप्सा रखते ? ,बो-जो बस्तुए उन्हें दान में प्राप्त होती थी, उन्हे वे भिक्षु-सध को सौप दिया बरते थे।

कुछ दिनो तक ये त्या में रहतर अपने पूर एशासम महास्यदिर और कोलम्बो के विधीयय परिवेण के प्रधानामार्थ एव उपनायक हिल्कहुने श्रीसुमाल महास्पविर से परिवागस्थर पन लेकर परमुन पहुने और उसी वर्ष वहा उनकी उपसम्पद्य हुई। उन दिनो धीय-नरेख के परुट जाने ने नारण वार्म में पूर्ण जशान्ति थी, अब यन्दन महाबीर को सीझ ही भारत जोट जाना पड़ा। जब के कलनता पहुने, उन्हे बीढ तीर्थ स्थानों के दर्शन वही का सारामाय पहुने। उन दिनो सारानाम में न कोई सारामाय पहुने। उन दिनो सारानाम में न कोई सारामाय में साब्देश की देंट तक डोकर बनारस बा रही हैं। इस कार्य ने उनके हृदय में आग लगादी। उन्होंने माडीवाजी को बलपूर्वक रोता और एक वरम भी आगे नहीं बढ़ते दिया। उन्होंने अधिकारियों को बतलाया कि सारताय का सब्बहर बौदों का पवित्र तीर्थेस्थान हैं। यही पर लगाया तो मर्मचक-प्रवर्तन किया था। हम बौद्ध यह नहीं देख सकते कि हमारे पूष्प-चान को हिंट जनारी लाय और सबस्त महत्त्व की बोर प्यान न देवर उसके प्राव् किस्त को मिटा दिया जाय। एकत. सारताय के सम्बद्धक को स्वाली के लिए एवं आरमी बैठा दिया गया और सारताय की देशे की रक्षा होने लगी। तब-के किर कोई भी खरीत एवं ईट उक् उठाने का साहत न कर दिया।

भदन्त महावीर सारनाथ ने प्रशीनगर गए। उस समय कुक्षीनगर में थोडी बहुत खुदाई हो चुकी थी। परिनिर्वाण मन्दिर की गुप्तकालीन तथागत की विशाल मृति प्राप्त हो चुकी थी। भूमिस्पर्श-मुद्रा में बैठी हुई भगवान् की मूर्ति एक वृक्ष के नीचे पडी थी। क्रमा व्यसित स्तुप कुशीनगर के अतीत का गौरव बतलाते हुए खडा था। इन सबका दर्शन करके भदन्त महावीर को कशोतवर में एक भिक्ष विहार के निर्माण की इच्छा,हई। वे मतकी अभिलापा मन ही में लिए वन वस्त्र ते लौट गए, किन्तु पुनः सन् १८९० मे वे कञीनगर चले आए और एक पत्तो की झोपडी में रहते श्रमे । बीरे बीरे आसपास के ग्रामीणों से उनका परिचय होगया। कसया के कुछ दकील-मुस्तार भी उनके सहायक हो गए । उन्हीं दिनों कलकते के प्रसिद्ध तेठ श्रीयत खेजारी ने उनके दायकत्व-मार की प्रहण कर हरेक प्रकार से सहायता करनी प्रारम्भ कर दी। श्री खेजारी के ही १५,०००) हपये के दान से कुशीनगर का वर्तमान बौद्ध विहार सन् १९०२ में बनकर तैयार हुआ, जो इस सदी का प्रयम भारतीय बौद्ध विहार है।

भदन्त महावीर के समय में ही प्राय कुशीनगर के खण्डहरों की खुदाई का काम प्रारम्म हुआ। परिनिर्वाण स्तुष उनके सामने ही खोदा गया और उनके सुझाव के अनुसार ही पुनर्निर्माण का विचार हुआ। किन्तु पुरातत्व-विभाग से आज्ञा मिलने में विलम्ब होने के कारण उनके जीवन-काल में वर्तमान् स्तूप का निर्माण न हो पाया। फिर भी इसके शोध एवं निर्माण-वार्य में उनका बहुत बड़ा हाथ था। भूमिस्पंश-मुद्रावाली भगवान् की मूर्ति की मरम्मत उन्होंने स्वयं अपने हपयों से कराई।

क्शीनगर के निकटवर्ती ग्रामीण उन्हें 'मोटे वावा' महा करते ये, वयोकि वे शरीर के मोटे और गिवतमान् ये। जिस वोझ को दस-दस वारह-वारह आदमी मिलकर भी नहीं उठा सकते थे, उसे वे अकेले और एक ही हाय से उठा लिया करते थे। कुशीनगर के वर्तमान विहार के सामने का बड़ा घण्टा जो पांच-छ: आदिमयों के उठाने पर जुमीन भी नहीं छोडता था; उन्होंने अकेले ही उठाकर लटका दिया था। कहते है, पास के एक ब्राह्मण गृहस्य की भैस को उसके स्वामी के अतिरिक्त दूसरा कोई पकड़ नहीं सकता था। ब्राह्मण रात्रि में भैस को खोल देता था, वह रात भर किसानों के खेत चरकर प्रातः घर लौट आती थी। जो उसे पकट्ने का प्रयत्न करता या, उसे वह सीगों के दल उठाकर पटक देती थी। भदन्त महतीर उन्त भैस की चर्ची सुन चुके थे। अकस्मात् एक रात वह भैस खेतों को चरती हुई विहार के पास वाले खेतों में आकर चरने लगी। खेत चरने की आहट पाकर जब वे विहार से बाहर बाए तो भैस देखते ही उनकी ओर दाँड़ी; किन्तु उन्होंने सतर्कतापूर्वक उसके सीगों की पकड़कर नीचे की ओर ऐसा दवाया कि वह वही हांपती हुई बैठ गई। उन्होंने रस्सी मंगाकर उसे वांवा और प्रातः उसके मालिक को बुलाकर उसके हवाले कर दिया। कहते है, उनके इस काम से वह भैस इतना उर गई कि फिर रात में उघर आने का नाम भी नहीं लिया ।

वे प्रवृत्तित होने के दिन से लेकर जबतक स्वस्थ रहे कभी कोठरी के भीतर नहीं सोये। रात्रि में उनकी चौकी विहार के वरामदे में विछती थी और दिन में विहार के बाहर दरगद के पेड़ के नीचे, जहाँ लोग उनके उपदेशों को मुनने के लिए आया करते थे। वे वरगद के नीचे बैठे हुए आगत् श्रोताओ को धर्मीपदेश दिया करते थे।

मदन्त महावीर पापियों का मुह भी नहीं देखना वाहते थे। जिस प्रकार स्वयं निर्मल चिरत्र, संयमी तया तपस्वी थे, वैसे ही लोगों का आदर करना जानते थे। पान के गांव के एक गृहस्य ने अपनी विवाहिता वहन के आभूषण वेचकर पैसे बना लिए थे। इस बात का उन्हें पता लगा। एक दिन उसी गृहस्य को खण्डहर में टहलते हुए पावर उन्होंने उसे बुलाकर कहा, "भाग जाओ, में तुम्हें इस पवित्र खण्डहर में नहीं देखना चाहता, वह महापापी है जो अपनी बहन के आभूषणों को वेच देता है।" उस गृहस्य पर इन दातों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उनके पैरों को पकड़कर भूमि पर गिर पड़ा और क्षमा मांगी। घर जाकर उसने अपनी बहन के लिए पुन: उन्हीं रुपयों से नये आभृषण बनवा दिये।

भदग्त महावीर ने बृद्ध-शासन के भारत में प्रत्यावर्त्तन के लिए जहां विहार की स्थापना की, वहां भिक्षों को बाह्य देशों से बुलाकर, भ,रत में रहने का भी प्रवन्य किया। श्री चन्द्रमणि महास्यविर उहीं के बुलाए और रखे हुए अराकानी भिक्षु है, जिन्होने उनके बाद भारतीय बुद्धशायन के प्रचार में पर्याप्त सहयोग दिया है। भदन्त महावीर ने न केवल कुशीनगर में, अपितु सारनाथ मे भी बृद्ध िहार की स्थापना की । सारनाय में वर्तमान् वर्मी बीढ विहार की प्राचीन इमारत उन्हीं की इति हैं। वंगाली भिक्षु कृपाशरण महास्थिवर आदि को उन्होंने प्रेरित करके लखनऊ आदि स्वानों में बौड़ विहारों के निर्माण का प्रयत्न कराया या । वृद्धगया-मन्दिर के पुनक्द्वार एवं जीर्णेद्धार के लिए भी उन्होंने कम प्रयत्न नहीं किया था। उनके जीवन का एक-एक दिन महत्वपूर्ण कार्यो एवं घटनाओं की विवित्र शृंखला से आवह है। वे जिस परम उद्देश्य को लेकर प्रव्नजित हुए थे, उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। मारतीय युद्ध-शासन के

प्रत्यावर्तन निमित्त उन्होंने जो-जो नार्थ निए वे सव उन प्रारम्भिक दिनों के लिए, महान् एवं निध्न थे।

गन प्रताब्दी में प्रथम उत्तर मारतीय मिल्लु मदन महामीर ने अपने सारे कर्स-मां ना पाकन नर, नूद शासन के अपने नामों का सामादन कर, कर, १९९९, के चैत्र मास में पुत्रन पक्ष को दितीया को परिनर्याण-मृति कुधीनगर में सता के लिए अपनी आर्खे मूद की। उनकी विता उन्हीं ने झारा परिशोधित मूमि पर बनाई गई जौर झारत में बृद्ध-शासन के प्रत्यावर्तक उन महानु, बमर एवं बमिट बृद्ध पुत्र के सदगुणों की परिसूद व्योति बमिन विशा के शाम मिनकर और भी बमक बठी तथा जनके मौतिक घरीर को शर्म करती बहु बानि विशा यह क्रृती हुई उष्यंगामिनी वनी रही— वे झारतीय बृद्ध-शासन के लमर रहन से 1

#### ग्राम्य कहानियां श्रीर कहावतें

श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

हिन्दी राष्ट्र-भाषा स्त्रीनृत हो चुनी है और समुचे मारतवर्ष वी राज-भाषा बनने वासी है। इससे हिन्दी मापा-मारियो ना वर्तव्य वित्ते ही असा में और भी स्विभिन्न वह जाता है। पूर्व दसने कि बहु राष्ट्र भाषा बने, हमारी निम्मेदारी है कि हम सब उसको हर प्रकार से उससे योग्य बनावें।

जब हम साहित्य और शापा के त्रीमक विवास का अध्ययन करते हैं तो स्पष्टतया यह पाते हैं कि जनवरीय मापाओं से ही हमारे साहित्य की अभिवृद्धि हुँहैं हैं, किन्तु इपर हमारो साहित्य की प्रमाति में जनवरीय भागाओं के उपेशा रही। हमी कांग्य हमारो खाब-भागर को की उपेशा रही। हमी कांग्य हमारो खाब-भागर को की सहीत होता है। जवतक साम-मापाओं के विवास समित को प्रमात को में त्रीम साम समी साम समी साम समी साम समी साम समी साम समी में त्राव स्ववहृत ने किया जावेगा सबसक हमारी मापा समीव न वन सकेंगी।

प्रामीन साहित्य में लोक गीत, महानिया, महाबतें, बत्त-स्पाए आदि भएपूर विद्यमान है। इसर विशव पण्पीस-तीस बची से गुरूरात, अवस और बुदेवलड़ में उनको एकित बरने का बाम भी चल रहा है, किन्तु जीस तिरस्ता से यह बागें होना चाहिए पा नहीं हो सबर है। सहयोग और प्रोत्साहन का जमाब ही इसकी सत्तकत्वा के कारण हो सकते हैं।

विदेशी भाषाओं के साहित्य में ठोक-पावाओं सम्बन्धी नितनी ही पुस्तकें मिळती हैं। बन-भाषा में हित्दुस्तानी उपन्धां और गुजराती में 'सीराप्ट्रमी रसभारा' नामक पुस्तकें प्रकातित हो चुकी है। हिन्दी मे विद्यस्थला बापू प्रामो का सुपार परते, प्राम-साहित्य का उद्धार करने और प्रामो में वसने का अकर सदेवा हैते रहे हैं। उन्होंने मजी प्रमार अनुमक कर किया या कि प्रामो में अब भी भारतीय सहकति, गीतो, कहा-जिमी, बहाजतो, उन्त-स्थायों, रीति दिवाओं और परि-पाटियों के रूप में विद्यमान है। पित्यमी सम्मता और बाह्य सम्मक से नितना मूनाय अस्ता रह गया या दिवापर नई रोसानी कही पड़ी, बहुंगा महाजीय सस्कृति की किसी-किसी रूप में हम अब भी पा सन्त हैं। हमारे प्रामनीत जो इसके ज्वलन उदाहरण हैं हैं।

नागरिक और ग्रामीण समुदाय के वीच जो खाई

वन गई है, उसको पाटने के लिये साधारण हिन्दी-भाषा-भाषियों और मुख्यतः साहित्यकों को अग्रसर होना चाहिए। अब तो अपनी राष्ट्रीय सरकार से भी इस सम्बन्ध में सहायता प्राप्त की जा सकती है; किन्तु आवश्यकता यह है कि हम स्वयं स्वावलम्बी वनें, अपनी अयोजनाएं अपने आप बनाकर आगे बढ़ावें। जब हम इतना कर लेंगे तो हमको प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों से भी राष्ट्र-भाषा के उत्यान में अवश्य ही पूरी सहायता मिल जायगी, ऐसी आशा है।

प्राम्य कहानियां केवल प्रामों में ही कही जाती हों, ऐसी वात नहीं हैं। उनका मूत्रपात यद्यपि होता ग्रामों ही से हैं, किन्तु उनका साम्राज्य देश-व्यापी हुआ करता है। उदाहरण के लिये बुन्देलखंड को ही लीजिये। गांव-गांव और घर-घर लड़के-बच्चे संध्या ही से घर की वड़ी-बूढ़ी दादी को घरते हुए और कहानी कहने के लिये आग्रह करते हुए दिखलाई देते हैं। गांवों में अलाय (जलती हुई आग) क्लब का काम देते हैं, शीतकाल में रात्रि का भोजन करने के परचात् और ग्रीप्मकाल में अयाई (वैठने का स्थान) पर ये कहानियां हुआ करती

है। ग्रामीण समाज में कहानीकार और अल्हैत (बाल्हा गानेवाला) श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते है।

बुन्देलखंडी कहानियां रोचक, मार्मिक और इतनी भावपूर्ण होती है कि श्रोतागण मंत्र-मुग्ध की भांति उनको मुनते रहते हैं। केवल एक व्यक्ति हंका (हां, हां) देने के लिए निञ्चित कर दिया जाता है। शेप श्रोतागण दत्तचित होकर मुनते हैं। ये कहानियां प्रायः अद्वं रात्रि तक चला करती है। कभी-कभी कहानीकार उन्हें इतना बढ़ाता जाता है कि तीन-तीन,चार-चार रात्रि में वे समाप्त हो पाती हैं। कुछ-कुछ कहानियां जैसे 'मारंगा सदावृक्ष' 'संत वसन्त' और 'गोपीचन्द भरवरी' ऐसी भी होती हैं जिनमें कहानीकार सस्वर दोहा, चीबोला और कवित्त आदि भी बीच-बीच में गा देते है। इसमे उनकी रोचकता और भी अविक बढ़ जाती है।

ग्राम्य कहावतें खेती-बाड़ी, वर्षा आदि का ज्ञान कराने में ग्रामवासियों को सहायक होती हैं। हमें विश्वास है कि लोक-साहित्य की ओर अधिक ध्यान दिया जायगा और उसकी अमूल्य निधियां, जो गांवों में विखरी पड़ी हैं, विस्मृति के गर्त में विलीन नहीं होने दी जायेंगी।

# हरिजनों को वे कभी नहीं भूले

स्व० महादेव देसाई

सरोजिनी देवी गांघीजी के आशीर्वाद के लिए आई हुई हाल ही में विवाहित जोड़ी को लाई थीं। उस लड़की को गांघीजी तिलक स्वराज्य-फण्ड के जमाने से जानते थे। उसने उस समय बहुत सा रुपया जमा किया था और अपने अधिकतर गहने दे दिये थे।

"तुम्हें वे दिन याद ह न ? तुम्हारी बादी से मुझे ख़ुशी हुई। पर यहां से तुम्ह मुफ्त आशीर्वाद नहीं मिलेगा। तुम्हें पहले हरिजनों को आशीर्वाद देना होगा।"

वह वोली, "किस तरह दूं? आपको चाहिए सो मांग लीजिए।"

"पर मैं कैसे मांगूं ? तुम्हें तो अपने पति की आज्ञा लेनी चाहिए । मुझे तुम दोनों के वीच झगड़ा नहीं कराना है ।"

"हम दोनों के बीच झगड़े की कोई गुंजाइश ही नहीं।" उसने दृढ़तापूर्वक कहा। सारी मण्डली खिल-खिला कर हंस रही थी और उसने अपनी सोने की चूड़ियां गांघीजी के चरणों में रख दीं।

'महादेवमाई की डायरी' माग ३,

# क्रोंशी पर

भारतीयं ज्ञानपीठ, काशी की तीन पुस्तके ज्ञानशीमा : सम्पादक---नागवन जनाद वैन.

पुष्ठ ७५६, सजिल्द, मूल्य ६)

शहरे पानी पेंठ हे॰ अयोध्या प्रसाद गोवलीय पठ २२४, सजिल्द, मृत्य २॥)

पंच प्रदीप विता सग्रह, लेखिना-धान्ति एम० ए०, पृष्ठ ९४, सजिल्द, मूल्य २)

भारतीय मानपीठ, कावी को प्रवासन के क्षेत्र में आपे अभी बहुत दिन नहीं हुए हैं, परन्तु इसी बीच में अपनी कुरिव और सुपडता की छाप उसनें हिन्दी-माठन के मन पर लगा हो है। साहित्य के छड़्य को उसने अपनी दृष्टि से ओहल नहीं, होने दिया है। आज की आजोच्य पुस्तकें हर दृष्टि से पटनीय और मननीय हैं। क्या माठअप और क्या सामग्री, हर दृष्टि से उनकी उपादेयवा स्पटह हैं।

ज्ञान मंगा मोतियों की माला है। माई
नारायय प्रसाद ने संसार के महापुरुषों के ज्ञान, अनुसब और साममा के सार को एक स्थान पर करुद्वा कर दिया है। इन मुस्तियों में शास्त्र सख है। नहीं है साममिक जीवन को जीने की प्रेरणा भी है। दिवारों की विविधता और समता, अनुमव नी व्यापकता और एक एसता, इन सब में सख के एक ही मूल रूप के दर्शन होते हैं और वह एँ मनुष्य बनने नी प्रेरणा। भाम गर्गा उस प्रेरणा से सप्तुर है। इस कोप का हर पर में रहना खतना ही बायस्यह है जितना जम का।

गहरे पानी पैठ उन अमर क्याओं का सबह है जिन्हें भी अयोध्यापताद योषटीय ने गुस्जनी के चरणों में बैठ कर मुना, अयों में पढ़ा और अपने हिये की आंजों से देखा है। ये कथाएं मात्र कारपंतिक

नहीं है, बठोर सत्व है और इस बात का प्रमाण है कि सत्व करना से अद्मुत होता है। ये राव्यित्र एक साथ मानिक, रोवन, उत्तरेर और मपुर है। ये मन्य की बोर्च सोलक है। नहीं, उन्हें तोह जो तरना से अपनिक की कि ती है। इस पी अपने की कि ती है। इस पी अपने की स्वाद की हुए कहानिया दो कि की कि प्राद्धारी का जो की स्वाद की सुन्य का प्राद्धारी का जो की स्वाद की सुन्य का पर्ध की सुन्य का प्राद्ध की स्वाद की सुन्य का प्राप्त की स्वाद की सुन्य सुन्य की स्वाद की सुन्य की स्वाद की सुन्य की स्वाद की सुन्य की स्वाद की सुन्य की सुन्य

पुस्तक एक साथ इतिहास, क्यांसपह और ज्ञान कार्यद्वारहै। जो पठना जानते हैं उन सबको इसे पठना चाहिए।

पंच प्रशीप में नवीदित कविषशी सुषी सान्ति एम॰ ए॰ की विवताए समृशित है। इन विवताओं में भाववाभीयं के साथ अभिव्यक्ति ती दुस्तानां स्पष्ट दिवाई देती है। इनमें मानव के सुब-दुख, आधा-निराध। और कामना-भावना के सुब-दिव है। विवारों नी यहनता और मुस्मना के साथ-साथ दुस्य नो तहपा देनेवाली मामिक्ता से में ओपमीन है। इतमें यवचि मावना का अतिरेक दिखाई देता है, परन्तु जीवन के बठोर तस्य में उतने नेन नहीं मुद विष्टु है। यह रूपा खुम है और हमें आधा दिखाता है कि महादेवी और वचन को परप्पा भागित में वह हाथों में सुर्धिन ही नहीं, स्वस्य भी रहेगी।

भाषा में स्वामाविकता, शक्ति और माधुर्य है,

इसलिए प्रवाह है। यह जब ओर मँजेगी तो प्रवाह और गतिमय होगा ।

लेखिका किवता को ह्दयशुद्धि का साधन मानती है। हमें प्रसन्तता है उनकी रचनाएं इस दावे की पुष्टि करती है। यह कोई कम बान नहीं है। उदाहरण के लिए यह पद देखिये:

यदि प्रणय मुझे देने आया,
अपनेपन के प्रति अहंभाय।
यदि पूर्ण कर रहा वह केवल,
नारी की काया का अभाव।
यदि त्याग, सत्य, जनमन के प्रति,
दे रहा मुझे वह है विरक्ति।
यदि देप, कोध की कीड़ा की,
दे रहा मुझे वह नई यक्ति।
तत्र क्यों न विश्व की नारी को हो सके मान्य मेरा निर्णय।
भेरी सीमा है नहीं प्रणय।

विज्ञान का संद्यिप्त इतिहास : अनुवादक—श्री कृष्णानन्द द्विवेदी, प्रकाशक-युग प्रकाशन, १ फैज वाजार, दिल्ली, पृष्ठ ३०१, मूल्य ६।)

प्रस्तुत पुस्तक सर डैम्पियर की 'ए गार्टर हिस्ट्री आफ् साइन्स' का अनुवाद हैं। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो चुकी है और यह आवश्यक है कि उसका भंडार हर क्षेत्र में भरा-पूरा हो। विज्ञान पर मीलिक पुस्तक लिखने में तो समय लगेगा। तवतक उत्तम ग्रंथों का अनुवाद करना उचित ही नहीं आवश्यक भी है। यह पुस्तक उसी आवश्यकता की पूर्ति-मात्र है।

लेखक की मान्यताओं और निष्कर्षों से किसी को मतभेद हो सकता है पर उसने सृष्टि के आरम्भ में लेकर विज्ञान की प्रगति पर जो प्रकाश डाला है वह उपादेय हैं। न केवल विद्यार्थियों के लिए ही वरन साधारण पाठकों के लिये भी यह उपयोगी है। अनुवादक ने अपने दायित्व को समझा है और मूल पुस्तक की - आत्मा को मुरक्षित रखने का सफल प्रयत्न किया है।

लेखक विज्ञान की गैतानी शिवत से अपरिचित नहीं है। युद्ध निवारण का पक्षपाती है। यह मानता है कि यदि मनुष्य युद्ध का निवारण कर सका तो "परमाणु वम भी अन्ततोगत्वा मानवता के लिए अभियाप नहीं विल्क वरदान भी सिद्ध होगा।" पर यह 'यदि' कितना वड़ा है। एक गांधी उमे न जीत सका। पया अनेक गान्धी एक माध मम्भव है? क्या उनकी अवित एक मानव में मम्भव है? नहीं तो विज्ञान मनुष्य का अबु ही रहेगा, पर आया तो बलवती है। किमी भी अवस्था में निराय होना बोभा नहीं देता।

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद की दो पुस्तकों

वापू के पत्र मीरा के नाम : पृष्ठ संस्या ४००; सजिल्द मूल्य ४)।

स्त्री पुरुप-मर्यादाः छे० श्री फिगोरलाल मगरूवाला, पृष्ठ १८८, मूल्य १॥।)

जैसा कि नाम से प्रकट है प्रथम पुस्तक में महात्मा गांधी ने श्रीमती मीरावेन को जो पत्र लिखे थे वे संग्रहीत हैं। इसमें कुल ३८६ पत्र हैं और वे ३१ दिसम्बर १९२४ से लेकर १९ जनवरी १९४८ तक लिखे गये है।

पत्र-साहित्य का किसी देश के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान होता है। वे समाज और व्यवित की स्थिति को जितना सही चित्रित करते हैं उतना व्यवस्थित रूप से लिखा गया इतिहास कभी नहीं करता। इस दृष्टि से इन पत्रों का मूल्य बहुत अधिक है। वे महात्माजी तथा मीराबेन के २३ वर्ष के अपूर्व सम्बन्ध पर ही प्रकाश नहीं टालते, न उनमें मीत्र एक आध्यात्मिक पिता का अपने ठोकर खाते हुये बच्चे को दिया हुआ अत्यन्त सादा, सीधा और प्रेम-पूर्ण उपदेश है, बित्रा उनमें है उम महत्वपूर्ण युगका पारदर्शी इतिहास, महात्मा के विकसित होते हुए मानवी ह्रदय का मार्गिक चित्र और उनकी ज्ञान-पिपासा का वह स्रोत जो उनकी आध्यात्मिक खोज का आधार है। उनमें वापू की व्यापक और पैनी दृष्टिट मुरक्षित है।

ये पत्र बड़े सरल, सरम और मार्मिक हैं। वे गागर में सागर का सुन्दर उदाहरण है। वे राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है। स्त्री पुरुष-मर्यादा भा विषय भी नाम से स्पट हैं। उसने लेखन मशस्त्रालावी अपने वैद्यानिन और व्यापन दूष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हैं। इस पुस्तन में उनके स्थो-पुरुष में प्रमन्त्र पर लिखे हुए जनेन कैसो ना सपह है। लेखा पर गहन अधिनार, मनुलिन विचारपारा और सालिन मेरणा नी छाए हैं।

यह विषय बहुन कोमल है और उसको समझने थीर समझाने के लिये अपूर्व सथम की आवश्यकता है। साम ही उस पर व्यापक दृष्टि से विचार करना आवरयक है। विद्वान लेखन ने इन वादो ना सपल्या-पूर्वक ध्यान रखा है। उन्हाने बह्यनमें, शील, पर्वा, सहर्दिसा, स्पर्ध, दिवाह का प्रयोजन, लग्नप्रया, मन्तनि नियमन और काम-विकार मभी सम्बन्धित विषया पर समिवत विस्तार से चर्चा नी है और कही मी अनुचित सकीर्णता या आपूनिक उच्छुह्नुलना का समर्थन नहीं विषा है। उन्हाने विषय को समझकर मध्यम मार्च को ग्रहण करने की प्रेरणा की है। वेन सहितता के विरोधी है, न मन्तिन नियमन के। वे उन्ह इस बडे सदाल का कि "स्त्री पुरुष के परिचय स्पर्ग और सम्बोध की मर्यादा क्या होनी चाहिए" एक अग मानने है ·और इस सम्बन्ध में वे परम्बी या परपुरुप के लाय एकान्तवास न करने के नियम का कठोरता से पालन करने के पक्षपाती है।

उन्होने इस पुस्तक म अनेव महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं, अनेक वाबुक लगाये हैं और अनेवां अमा वा निवारण किया है। मबसे बडकर उन्होंने हमें विचार बरने के लिय एक नया दुष्टिकाण दिया है।

पुरुप-स्त्री रे॰ रधुवीरशरण दिवानर, प्रनाशन-मानव साहित्य सदन, मुरादाबाद । पृष्ठ

१७५, मृत्य गा)

प्रस्तुन पुन्तन का निषय थी गरास्वाला की उपरोक्त पुस्तक के समान है और स्टेंबक ने प्राव उन्हों तत्वों पर निचार किया है जो स्वारवालाओं की पुस्तक में हैं। इंग्डिमोण में भी निवोध अन्तर नहीं हैं। हा, दिवार जी ने मही-महा बाजेबपूर्ण साहित्यक सन्दावली बीट संबोधुक्त भाषा ना प्रयोग साहित्यक सन्दावली बीट संबोधुक्त भाषा ना प्रयोग हिया है जो ऐसे नाजुक विषय ने लिये ठीन नहीं है। वैसे उन्होंने मध्यय मार्ग को ही यहण क्रन्ते को मुचना वी हैं। उन्होंने स्वो-पुरुष की ममानना पर जोर देते हुए उनने सम्बन्ध ने वैज्ञानिक लब्धयन ना सुपाव दिया है। कामिश्रास ने हन्ता मानकर उसकी जीवत शिक्षा इस प्रस्त वा बहुत हुद तक हुल कर मिक्षी हैं ऐसी उनकी माल्या है।

पुस्तक विवारोत्तेजक सामग्री से परिपूर्ण है।

उसका प्रमान और दुग्टिकोण स्वस्य है।

ग्रास्त चित्तन हैं हैं — मार्थ ऑरिलियम
अनुवादक — यी पकर्वा प्रकारासावार्य तथा श्रीमति
क्सी देवदास गार्थी, पुट्य स्टब्स र है, मूट्य है।
प्रस्तुत पुस्तक मुप्रसिद्ध रोमन तरवतानी सम्राट् मार्थ
ऑरिलियस की पित्तका ना अनुवाद है। कई वर्ष
पूर्व राजावी ने इसका तथिल में अनुवाद हिसा था।
अब श्रीमती स्वर्मी देवदास गार्थी ने उसका हिसा

न्पानर प्रस्तुत दिया है।

पुस्तद सान का भड़ादा है और जीवन की जिटलपिओं को सामना करने की सिक्त देती है। यह
देन बात को भी प्रमाण उस्तुत करती है कि जीवन
की मूल सस्त्याओं का समाधान विच्ल के समी
भैनीपियों की दृष्टि में प्राप्त एक्सा ही है।

मानर्य वर्षे १६१ से १८० तर रोम साझाग्य का वेखेंखर्थ था। बिंद चन तरकाती समादी में है या विजय परम्परा हमार्ट रेश में राजा जनक ने डाली की । उनकी विचारपारा में भी मद्दून साम्य है। पाइमें में ये विचार दिगी के किये गही लिखे से, वर्ष्य पपने ही मान में उठने बाले तुकान की धाल करने हैं किये गही मान में उठने बाले तुकान की धाल करने हैं किये गही पान मुक्त में किये मान स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त प्रमण्डित मान स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स

हमें विश्वास है इनसे अनेक जिज्ञासुओं का समाधान होता। एक भारतीय के लिये ये विचार नये नहीं है :

१. तुम तो अपनी ही अन्तरात्मा को देला । उते पहचानने का प्रयन्त करो।

(श्रेष पुष्ठ २९९ पर)

# ीया व किरोर ?

गांधी-जयंती

गांधी-जयंती के माने हैं गांधी-विचार की जयंती। गांधीजी के विचारों का आज की भाषा में, एक ही शब्द में, निचोड़ निकालें तो उसके लिए 'सर्वोदय' से अधिक सार्थक शब्द नहीं मिलता । गांघीजी को वैसे 'सत्याग्रह' शब्द बहुत प्रिय रहा है, परन्तु उनके सारे जीवन-आदर्श को सूचित करनेवाला गब्द तो 'सर्वोदय' ही है। सर्वोदय सत्याग्रह की भित्ति पर खड़ा है। सत्याग्रह में सत्य पर जोर अधिक है तो सर्वोदय में अहिंसा पर । सत्याग्रह में व्यक्ति पर अधिक दृष्टि है तो सर्वोदय में समष्टि पर । प्राचीन परिभाषा का अवलम्बन करें तो सत्याग्रह आश्रम-न्यवस्था के समकक्ष हो सकता है और सर्वोदय वर्ण-व्यवस्था के। जो हो, आज भारतवर्ष को, विलक सारे संसार की एक नई समाज-व्यवस्था की जरूरत है, जो प्रत्येक व्यक्ति को और घटक को स्वाश्रयी, साथ ही परस्पर-पूरक बनावे । स्वाश्रयी वनेंगे जीवन में श्रम को प्रतिष्ठा देकर और परस्पर-पूरक वर्नेगे अहिंसा की वृत्ति को अपना कर। अतः यदि हमें गांधी-जयंती सच्चे हृदय से मनाना है तो हमको श्रम की उपासना करनी चाहिए, केवल चर्ला कात कर नहीं, विलक संसार के किसान और मजदूर के जीवन में अपना जीवन मिलाकर, यानी केवल मूत कात और वुन कर नहीं, बल्कि किसान और मजदूर वनकर । किसान और मजदूर वनने के माने यह नहीं हैं कि हम उनकी तरह फूहड़, अपढ़, अनजान वन कर रहें, विलक शिक्षित, ्र. संस्कारवान, मुसग्य श्रमिक वनें और जो श्रमिक हैं: चनको संसार के जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करावें। . हटूंडी, चर्खी दादशी, २७-९-५१

'मण्डल' की रजत-जयंती

साहित्य मण्डलं की नींव डाली और श्रद्धेय डा० राजेन्द्रप्रसाद, काका साहव जैसे पुण्यपुरुषों और घनश्यामदासजी जैसे घनी साहित्यरिसक, श्री महाबीर-प्रसादजी पोहार, देवदासभाई, पारसनायजी, वियोगी हरिजी, जीतमलजी लूणिया आदि जैसे मंजे हुए अनुभवी कर्मियों ने जिसे अवतक पाला-पोसा वह पीवा अपने जीवन के २५ साल पूरे करके २६वें में जाने की तैयारी कर रहा है। पिछले पच्चीस वर्षों का चित्र जब एक साथ सामने खड़ा होता है और आज जब यह आवाज इधर-उधर से कानों में आती है कि हिन्दी में पुस्तक-प्रकाशक और विकेता के रूप में 'सस्ता साहित्य मण्डल' ने अंचा स्थान प्राप्त कर लिया है तो मन को थोड़ा संतीप जरूर मिलता है। इसका मतलव यह नहीं कि 'मण्डल' जो कुछ चाहता है या जो कुछ उसे कर सकना चाहिए था. वह सब उसने कर लिया, मगर इतना मतलव जरूर है कि जो कुछ अवतक हुआ है, वह कार्यकत्ताओं को भविष्य के लिए प्रोत्साहन और हिन्दी-मापी भाई-बहनों से अधिक सहयोग-सिकय और सजीव सहयोग-पाने के लिए काफी है। यह हमारे देश का दर्भाग्य है. हमारी अविकसित दशा का चिन्ह है कि जो कार्य की जिम्मेदारी ले लेता हैं, उसे दर-दर सहयोग और सहायता की भीख मांगनी पड़ती है और जिनकी सेवा होती है, वे उस सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्य के प्रति उतने जागरूक नहीं रहते। बात उल्टी होनी चाहिए कि.जो सेवा या काम चाहते हैं वे अपने उपयोग के लिए कुछ व्यक्तियों पर उसकी जिम्मेदारी डालें और उन्हें हर तरह का सहयोग और सहायता दे कर उनसे वह काम छे छें। अतः यदि 'सस्ता साहित्य मण्डल ने अवतक विविध पुस्तक-प्रकाशन और परम श्रेयार्थी जमनालालजी ने जिम 'सस्ता 'जीवन साहित्य' के द्वारा कुछ उपयोगी सेवा हिन्दी-

ससार की की है तो अब यह होना चाहिए कि इसके विकास के लिए जिस-जिस साधन सामग्री की जरूरत है और जिसकी ओर 'मण्डल' के कर्मचारी समय-समय पर ध्यान दिलाते रहे हैं, वे उसे खुद आगे आकर प्रस्तत कर दें। इसके अनकल वातावरण हिन्दी-जगत में उत्पन्न हो और उसकी कोर हिन्दी-जनत का ध्यान विशेष रूप से आकृषित हो, इसलिए 'मण्डल' ने यह निरुचय किया है कि आगामी मार्च के महीने में मण्डल की 'रजत जय ती' मनाई जाय । उसका कार्य तम बनन पर बाद में भूचित किया जायगा। यह जयती इसलिए भी हम मनाना चाहते हैं कि जिससे हम खुद यह स्पष्टता से देख सकें कि अभी हमें और कितना वास करना बाकी है और अबतक जो बुछ किया है उसमें क्या कसर रही है और अवतन के हमारे सहयोगी रेखको, प्रकाशको, सहायको, प्रोत्साहन-दाताओ को भी यह अवसर मिले कि वे हमारी विभयो की और हमारा घ्यान दिला सकें और आगे के लिए हमारी सेवा का पथ विशेष सुगम और सरल कर सकें।

इस अवसर पर हम 'जीवन-साहित्य' का जिसने पिछले बारह वर्षों से लगमग मून भाव से, बिना तडक-महक ने, हिन्दी के विचार, मावना और कार्य के क्षेत्र में निरतर और अयद सेवा की है, एव विशेषात निकालना चाहते है, जिसमें 'सस्ता साहित्य भण्डल' की अयतक की सेवाओं और गतिविधियो पर प्रकास डालने के अलावा हिन्दी-साहित्य और हिन्दी भाषियो और साहित्यिको की वर्तमान उवलत समस्यात्रो पर भी समुचित रूप से प्रकाश डाला जायेंगा। उसकी योजना हम बाद में जल्दी ही देने नी आशा रखते हैं। आज तो हम इन दोनो विषयो पर सिर्फ पाठनो ना ध्यान ही दिला देना चाहते हैं, जिससे ने इसपर मली माति विचार कर रखें और जब दोनो योजनाए उनके सामने प्रस्तृत हो तो वे फौरन अपना सहयोग देना प्रारम्भ कर सकें। सीच विचार में उनका अधिक समय न जाय । वह काम वे इसके पहले ही कर रक्लें।

एक नया अध्याय

बिसको लोगो ने टण्डन-नेहरू विवाद नहा, उसे इन दोनो महान पुरुषो ने अपनी महानता के अनुकृत ही आपस में निबटा लिया. इससे सारे देश में एक सतोप और उत्साह की रहर फैल गई। खास कर राजवि टण्डनजी ने इस सारे प्रकरण में जिस उच्चता और उदासता का परिचय दिया है तया सस्या हित और देश हित के सामने व्यक्तिगत अल्पनाओं की प्रभाव नहीं डालने दिया और अपने सिर्द्धीन्त पर दढ रहते हए भी अपने व्यक्ति की पीछे रहने दिया. इससे उनके प्रति प्रत्येक का आदर वहे बिना नहीं रहा। टण्डनजी ने चाहे नाग्रेस का अध्यक्ष-पद खोबा हो, परन्तु लोक-इत्य में उनका बासन-खो उनसे मतभेद रखते थे. उनके मन में भी-पहले से ज्यादा ऊचा और मजदल हो गया । हम सब सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को उनके इस उदाहरण से शिक्षा लेनी चाहिए। यदि हम लेंगे सो कोई सदेह नहीं कि इस तरह के हमारे बहुत से विवाद बड़ी शोभा के साथ समान्त हो जायगे । खासकर यह बात कि अध्यक्ष-पद से हटने के बाद फौरन ही टण्डनजी ना नई नाय सिमिति में आना मजर करना और अपने सहयोग का हाथ बढाये रखना, यह उदाहरण हम सबके सामने सदा के लिए जीवा-जागता रहेगा ।

टिनिन इससे प० जवाहराजाल की जिम्मेदारी बेहतहा वह गई है। वे उसको समालने की योगवा और सामता रखते हैं, इसमें कोई सदेह नहीं। परन्तु ज लोवा की मी जिम्मेदारी इसमें कम नहीं है, जो चाहते में कि जवाहराजार अध्यक्ष पद का भार उठावें। जगर जन्होंने अपनी जिम्मेदारी को पूरी तरह से महसूष किया जो नेहरूजों का यह कार्य काल काम्रेस के इतिहास में जवस्य एक स्वया और मुनद अध्याय जोड़ देगा!

हटडी, २७ ९ ५१

शुद्धि और आतम-परीक्षण की आवश्यकता इघर 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग और 'राष्ट्र-भाषा प्रचार-समिति', वर्षा से चौंदाने वाले समाचार

हटूडी, २७ ९ ५१

मिले हैं। उनसे ऐसा मालूम होता है कि दोनों दल-वंदी, गुटवंदी और किसी-न-किसी रूप में भीतरी अशुद्धि के शिकार हो रहे हैं। जो सेवा-संस्थाएं हैं, उनमें अधिकार का प्रश्न क्यों खड़ा होना चाहिए, यह आजतक हमारी समझ में नहीं आया । व्यक्ति की अहंता, सीमित दृष्टि और सदाचार के प्रति उपेक्षा, इनमें से कोई एक या अनेक कारण इन झगड़ों के मूल में हो सकते हैं। सही स्थिति क्या है, यह इतनी दूर कैठे हिं हमारे लिए कहना कठिन है, परन्तु सही मार्ग क्या है, यह हम को स्रष्ट दीख रहा है और यदि सम्मेलन तया समिति के संचालक और कार्यकर्ता थोड़ा भी प्रयास करें तो उनकी भी दीख सकता है। वे परस्पर दोपारोपण और लांछन लगाने की प्रवृत्ति को छोड़ दें या बहुत कम करदें और दोनों जगह जो कुछ खराबी हो रही है, उसकी जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की खुद की कितनी है, यह सोचने लगें तो इसकी कूंजी उनके हाय आ जायगी। जब कोई काम विगड़ता है तो जान में हो या अनजान में, किसी एक ही व्यक्ति के दोप से वह नहीं विगड़ता । लेकिन हम अपने दोप को न ढूंढ कर दूसरे के दोप को देखते हैं और उसी को पकड़े रहते हैं। इससे उसका दोप हम दूर नहीं कर पाते, चाहे उसे हम लोगों की दृष्टि में गिरा भले ही दें, और अपना दोप हम देखना नहीं चाहते, इसलिए वह दूर हो नहीं सकता। दोनों दशाओं में दोनों तरफ के दोप या तो प्रवल होते रहते हैं, या छिपे रहते हैं और हम निरंतर बढ़ी हुई जलझन में फंसते हुए चले जाते हैं, जो कि हमको एक अंघेरी खाई में गिरा कर ही छोड़ती है। ऐसी दशा में हमें रार्जीव टाडनजी की यह सलाह पसंद आई कि सम्मेलन और समिति को दलवंदी का अखाड़ा न वनावें, मगर हम उसमें इतना और जोड़ना चाहते हैं और सो भी कवीर के शब्दों में—

"वुरा जो देखन में चला वुरा न दीखा कोय। जो दिल खोजा आपना मुझता वृरा न कोय॥" हटूंडी, २७. ९. ५१. चुनाव का वुखार

, जब वुसार आता है तो उसका मतलव यह है कि

कुदरत भीतर की बुराई को वाहर लाकर कहती है कि इसे निकालकर फेंक दो। अगर उसकी आवाज हमने नहीं सूनी तो मीत की तरफ इशारा करती है। ऐसा मालूम होता है कि यह चुनाव भी कुदरत की तरफ से बुखार-जैसा ही एक वरदान है। यदि हमने कुदरत की चेतावनो और उसका संकेत न समझा तो यह वरदान की जगह अभिशाप सिद्ध हुए विना नहीं रहेगा । चारों तरफ से कानों में खबरें आ रही हैं कि जितनी भी बुराइयां हो सकती हैं, चुनाव के सिलसिले में लोग वढ़-वड़ के कर रहे हैं। यदि यह सही है तो यह हमारे सार्वजनिक ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन में घुसी हुई सड़ांद को ज़ाहिर करती है। यदि हम सजग हैं तो सावधान होकर कुशल वैद्य की तरह भोतर के विष को हटाकर अपने शरीर और जीवन को शुद्ध और विलष्ठ वना छेंगे। यदि हम मूर्ख हैं तो इस बुखार से फिर सिन्नपात होगा और सिन्नपात से मीत । अच्छी बात तो यह है कि इन चुनावों को हम एक खिलाड़ी की तरह लड़ें। अ। खिर यह चुनाव इसी बात की तो होड़ हैं न कि घारा-सभाओं में जाकर कौन व्यक्ति ज्यादा-से-ज्यादा सच्चाई के साथ देश और जनता की सेवा कर सकता है। यदि यही बात है तो होड़ हमारी अच्छाई और योग्यता में लगनी चाहिए, न कि हमारे झूठे या सच्चे दावों में, या येनकेन प्रकारेण प्रतिपक्षी को हराने या गिराने में। आखिर हमारी परोक्षा हमारी सेवा में होने-वाली है, न कि हमारे द:वों से। इसलिए चृनाव के सम्बन्ध में दो वार्ते अवस्य होनी चाहिए। एक तो यह कि हम मतदाताओं से अपनो योग्यता, अपनी ईमान-दारी और सच्चाई की वावत जो कुछ कहना हो, कहें, न कि प्रतिपक्षी की व्यक्तिगत बुराइयां और दोप सामने लाकर, उभार कर, वायु मञ्डल की गंदा बनावें। दूसरे यह कि गुप्त मतदान (Ballot) की प्रया उड़ा दी जाय। हमारी राय और अनुभव में असत्य, कायरता और बो बाघड़ी, तीनों को प्रोत्माहन देने वाली यह प्रया है । मतदाता वायदा कइयों से करता है और आशाओं और इच्छाओं के विगरीत न जाने किसको मत दे आता है। यह वयों होना चाहिए ? हर

मतदाता में यह साहल बयो न होना चाहिए और हमें
स्थो न उत्पन्न करना चाहिए कि मैं फरा को मत दूँगा,
फता को नहीं ? कोई घर नाम तो है नहीं और घरभी होतों भी जहां वेचत विचार-दान या मतदान का
प्रत्न है, उसमें गुं-तता क्यो ? हम जानते हैं कि जबतक
बैन्द्र प्रया विधिव ह न उठारों जान तवनक हमारे सुझाव
पर जमन होना कठिन है, परन्तु हरएक मनदाता से हम
मह स्थील जकर कर न राग चाहते हैं कि वे जित कियो की
मत हैं, जुके आम में और निहाल या मय से सुठा
धादा विचा से न करें। यदि वे ऐता करें से पुनाब के
सिठ नहें में जो हु ारी मदीमा उन्मीदशार फंला है हम
स्वात हत्ते हैं, उत्जी जब बहुत हद तक कर पायों।
हुद्दी, २७ ९ ९ ९

#### भूमिदान यज्ञ

सर्वोदय-मम्मेलन वे शिवरामगन्ती-अधिवेशन के मुख्य पहले से पूज्य विनोवाओं न जिस महायम का मूचपात किया था, उपका बहुत कुछ अध्यक्ष परू दिना हम लोगा के सामने वा चुका है। खंतको-हबारा एवड मूमि स्वेच्छा से मूचियाने जन लोगो के लिए साम दे दी हैं जिनके यास जमीन महा है। यह निस्थय ही जह का समा है, जो निमोबानों ने उठाया है। हमरा

आगे चलकर बहुत ब्यापक परिणाम निकलेगा। हमारे देश का रूप ही बदल जायगा। दान का अपने आप में महत्व है, लेकिन मुसियान की महत्ता, उनकी परिवरता इसलिए मी अविव है हि वह साधन-सम्पन्न वर्ग की साधन होनो के प्रति सद्भावना और स्थाग-वत्ति की चोत है । इससे पना चलता है कि लोगा का ध्यान अपने गरीव भाइयो की बीर जा रहा है। स्वास्त्य अच्छा न होने पर भी विनोबाओ इस 'यन ने लिए पैदल-यात्रा कर रह है। मगवान से हमारी प्रार्थना है कि विनोदा-जी का यह अनुष्ठान पूग हा। शिवरामपल्ली (हैदराबाद) तक के प्रवास में वह दक्षिण के अनेक स्थाना की पैदर-यात्रा कर चुते हैं और अब उत्तर मारत की यात्रा पर निक्ले हैं। काम उन्होंने बहत ही कठिन उठाया है, लेकिन ध्येय की पवित्रता का देखन सन्देह की युवाइस नही रहती कि उसमें सफल्या नही मिलेगी । दान का हमारे भारतीय जीवन में प्राचीन कार से ही बडा महत्व रहा है। मूनिदान ती बहत हो उज्रष्ट भाना गया है। हम स्पष्ट देख रहे है कि विनावाजी ने इस बन्द्यान से ऑहसर फाउ की दिशा में देश के आये एक नया मा। खलेगा।

(पुष्ठ २९५ वा शेवान)

२ बुराई नाबदलाइसी में है निहम वैसान वर्रेजैसानि बुराई नरने वाले ने निया।

३ जद चेनना-राष्ट्रित चली जाती है तो हुस किस बात का ? नये जीवन और तमे अनुमब से हानि चैसे हो सक्ती है ? नदीनता को मृत्यु वैसे कहा जाय।

४ जो दूमरो के प्रति अन्याय करता है वह अपना बुरा ही करता है। ५ अहनार और दम को छोड़ो । अन्दर तो अहनार हो और बाहर विनय, यह बहुत हो बुरा है।

अनुवाद पुस्तन के अनुरूप सरल और स्पष्ट है। मूल नान्सा रम आता है। मुस्तक हर दृष्टि से मनन करने

योग्य है।

–'सुधील'

-40

विज्ञापन के सर्वोत्तम सायन और हिन्दी के दो अनुठे प्रकाशन

- १. सचित्र मौन-क्या है
- २. व्यापारिक जगत

**}** 

# अगले संस्करण में शीघ्र प्रकाशनार्थ भेजिये

- १. प्रमुख व्यक्तियों की संज्ञिप्त सचित्र जीवनियां
- २. व्यापारिक फर्नी का संनिष्त सचित्र परिचय
- ३. व्यापारिक फर्मों के पते
- विज्ञापन आदि

### नारायगा पिटलिशिंग हाऊस, अजीतमल, इटावा, यू० पी०

चालु वर्ष के संस्करण धड़ाधड़ विक रहे हैं

## दूसरे वर्ष में

सदने पसन्द किया !

# भा र ती

सवने स्वागन किया !

गत वर्ष १४) २० वार्षिक मृत्य था, एक प्रतिका १) २०-स्रव १६४१ जनवरी से एकद्म कम, ६) २० वार्षिक

संपादक

संचालक

: ह्योकेश शर्मा : : एन. एत. प्रयागी सुत्रोवसिंह प्रेस सिवितताइन, नागपुर-? :
'भारती' समस्त भारतीय (अन्तर्शान्तीय) साहित्य, कटा बीर संस्कृति का प्रतिनिधित्व करनेवाटी राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगतिबील विन्तन-प्रवान सचित्र मासिक पत्रिका है।

भारत के राष्ट्रपति डा॰ राजेन्द्रप्रसादजी ने, प्रान्तों के राज्यसालों ने, मुख्य मृख्य मंत्रियों ने और हिन्दी के ब्ल्बप्रतिष्ठ साहित्यकारों ने इस मासिक पित्रका के प्रकाशन की मृक्तकंठ से सराहता की है। सर्वश्री जैनेन्द्र, बनारसीबास चतुर्वेदी, सदयशंकर भट्ट, रामवृक्ष बेनीपुरी, श्रीराम धर्मी, कर्न्द्र्यालाल मृत्यी, खांडेकर, स्व॰ साने गृष्ट्यी, मास्तताल चतुर्वेदी, भदंत जानन्द कौसल्यायन कादि ने भारतीं का स्वागत किया है।

भारती का प्रत्येक अंक अनूठा, पठनीय खीर दर्शनीय है। १९५० की २६ जनवरी से इसका नियमित प्रकाशन शुरू हुआ। प्रतिमास स्रोमग १०० पृष्ठ।

#### 'प्राकृतिक चिकित्सा' विशेषांक

चर

#### पत्रों की सम्मति

प्राकृतिक विवित्तान्यद्विति को समयन वा अन्य विवित्तान्यद्वित्या हो मुण्या म हमना महत्व जानन की पर्याप्त सामग्री 'बीवन माहित्य' के प्राकृतिक विवित्त मां अना य मबहात है। वई विभारता और अनुभवी तोगों के लेख, विवार आदि एक प्रतिष्ठ । ऐसा स्वार्थ भाहित्य इन अना म आ गया है दि उसमें इन सका वा मृत्य पुस्तको विसा हो गया है। एसा माहित्य स्वास्थ्य व लिए उपवाणी और लाभशायक है। इसका सर्वेसाधारण म जुब प्रवार किया जाना चाहित्य।

इस अब ने बई वियोज रूख पड़कर वह आ- रा अधिन दुढ़ हा जानी है वि अधिनारा व्यक्तिया ही सर्वश्रेष्ठ विविस्तन श्रृहति ही है । वयाकि मानव गरार एवं आत्मा की रचना समी के अनुक्ष्य है। निस्मदेह प्रकृति-माना दरिदनारायण की विविस्तन है।

वस्यई] —ईंडियन पी ई एन

प्रस्तुत अन म प्रावृत्तिक विवित्ता-विषयक उन्त है । योशीको को आराध्य की कुकी नामर पुस्तक तथा प्रतिक पारवास्य निमर्गावचारक डा॰ हुई हुन की पुस्तक भी तन्दुरूम हु या बीमार ? का माराध मी इन्त दिया तथा है। अब पठनीय है। आपा सरू और सर्वेशायारण के मयस्त गोग्य है। उन्हों ——साधना (सर्गठी)

पहुँग वह में निदाल-मध्यानी अभिष्टन गढ़ी के बलावा कई सरवानों के प्रश्लावपार-मध्यान अनुभव भी दिये गए हैं, को निज्ञानु पाठवा को प्रदृत्योपचार की बीग बाहुग्ट करने की दृष्टि म निर्मय उत्पर्शनी हैं। दूसरे में उपवाग हो . . . दोनांत्रक समहत्योस्य हैं।

उपमोती है। दूसरे में उपवार हा... दोनांत्रक सग्रह-मोध्य है। वर्षों] —-राष्ट्र-भारती कविषय गर्मो के प्राइतिक उपाय इस वक के लेखा में दियो गए है। प्रत्येव रेख अपने म पूर्ण है

प्रधान इन्हें पहचर पीडिन व्यक्ति अपना उपचार स्वय कर मनना है !....आशा है कि प्रत्येक मा रा व्यक्ति हुए अक में लाभ उठाएगा। बाल्य म नारन वैसे निर्धेय देश के लिए ऐसे उपायों से पीनियत हाना परमावस्यक हैं। मानवन्तत्याण के हिन ऐसे अरु प्रकामिन करने वाले मण्यादको वा कार्य प्रपृत्र है। [मनका]

प्रस्तुत कक प्राइतिक उपचार और महत्ता या समझाने बार हैं। इसके गयी लेख अनुभवी और महान् व्यक्तियों ने लिये हुए हैं! कानपुर] —-सुमित्रा

भीवन माहित्य'न प्रम्तुन जून एव बुलाई र जन घ प्राहृतिन विवित्त्या की छेनर यात्य मन्पारको ने उम विवित्तान ने विजेशज, अनुसदी एवं विद्वान् रेलाना के रेखो ना अतीन मुदर नथन नरने प्रथमनीय नार्य विवाही। ..१४० पृष्ठा ना यह जन बहुत उपयोगी एव घर-यर में स्वत्याग्य है। —-भक्त आरात

### 'मएडल के नवीन प्रकाशन'

- १. मेरे समदालीन—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा लिखे २३६ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महापुरुषों तथा सामान्य लोब-सेवकों के मर्मस्पर्शी संस्मरण, जिनमें गांधीजी की पैनी निगाह के साथ-साथ उनके मधुर मानव रूप की भी झांकी मिलती है। कुछ संस्मरण तो व्यथा से इतने ओतप्रोत हैं ि पढ़कर आंखों में बांसू आजाते हैं। गांधी-साहित्य की यह सातवीं पुस्तक है। ५)
- २. वापू के आश्रम में —श्री हरिभाऊ उपाध्याय की इस पुस्तक में गांधीजी के सम्पर्क की अनेक घटनाएं संग्रहीत हैं। ये घटनाएं हमें शिक्षाएं देती हैं और सुझाती हैं कि हमारा कर्तव्य क्या है और एक सच्चे नागरिक के नाते राष्ट्र के उत्थान में हमारा क्या योगदान होना चाहिए। १)
- ३. सर्वोदय-तत्व-दर्शन—गत चालीस वर्षों में जिस मार्ग पर चलकर हमारे देश ने विदेशी सत्ता से लोहा लिया, उससे मुवित पाई और देश में नई प्रेरणा. नई चेतना फूंकी, उसे राष्ट्र के पुनर्सगठन की इस वेला में अच्छी तरह से देखना और समझना है । इस पुस्तक में डा० गोपीनाय घावन ने अत्यंत प्रामाणिक और सुन्दर ढंग से उसी मार्ग को दिखानेवाले गांधीजी के लोक-कल्याणकारी सिद्धान्तों की व्याख्या की है। सर्वोदय की दिशा में कार्य करनेवाले लोगों के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है। ७)
- ४. गांधी-शिज्ञा—(भाग १, २, ३) पुस्तक के तीनों भागों में गांधीजी की रचनाओं में से चुनकर वह सामग्री दी गई है, जो युवकों के चित्र-निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय हैं। पुस्तकों उपयोगी हैं, अच्छी छपी हैं, मूल्य बहुत स ना है और उत्तरप्रदेश के समस्त जूनियर हाईस्कूलों की ६, ७, ८ कक्षाओं में सहायक पाठ्य-पुस्तकों के रूप में स्वीकृत होने के कारण हजारों की संस्था में विक रही हैं।
  ।),।-),।-)
- ४. रामतीर्थ-सन्देश—(भाग १, २, ३) विद्यार्थियों की दृष्टि से इन पुस्तकों में जीवन की ऊंचा उठानेवाले स्वामी रामतीर्थ के उपदेशों का संकलन किया गया है। ये उपदेश एक साथ स्फूर्तिदायक. रोचक और शिक्षाप्रद है। उत्तरप्रदेश के स स्त जूनियर हाईस्कूलों की उवत कक्षाओं के लिए ये पुस्तकों भी सहायक पाठ्य-पुस्तकों के प में स्वीकृत हैं।
- ६. सत्य के प्रयोग त्राथवा त्रात्म-कथा—इस प्रस्तक में महात्मा गांधी ने उन अनेक प्रयोगों का वर्णन किया है, जो उन्होंने अपने जीवन-काल में किये थे। गांधीजी सत्य के अनन्य उपासक थे। उस दृष्टि से उनके ये प्रयोग प्रत्येक पाठक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। १४ पाइंट टाइप, बढ़िया छपाई, आकर्षक हप-रंग, मुन्दर जिल्द।
- ७. गांधी डायरी (१६४२)—गत वर्ष 'मण्डल' ने प्रथम बार इस डायरी का प्रकाशन किया था। सन् १९५२ के लिए उसका नया संस्करण २ अक्तूबर को गांधी-जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित हो गया है। इस बार सीरमास, मूर्योदय, मूर्यास्त आदि-आदि के साथ-साथ अनेक ज्ञातच्य बातें उसमें और जोड़दी गई हैं। गांधीजी के प्रतिदिन के बचन तथा अन्य सामग्री तो है ही। मजबूत पक्की जिल्द, सुन्दर छपाई। ५० से कम प्रतियां अपने यहां के प्रमुख पुस्तक विकेता में छेलें। अधिक के लिए हमें लिखें। छोटी ११), देवल २॥)

#### 'मण्डल' से प्राप्य

५ काश्मीर पर हमला (श्रीमती कृष्णा मेहता) इस पुस्तक में काश्मीर पर कवाइलियों द्वारा किये गए आक्रमण का रोमांचकारी, मर्मस्पर्शी और प्रामाणिक वर्णन है। लेखिका ने उस पाशिक अत्याचार को अपनी आंखों से देखा है। वर्णन इतना रोचक और हृदयस्पर्शी है कि उपन्यास का-सा रस आता है।

# भावन साहित्य

अहिंसक नवरचना का मासिक

18,10.00

हरिभाऊं उपाध्याय यशपाल जैन



श्चरन्त्रर १६५१

श्राठ श्रान

ू सस्ता साहित्य पंडल प्रकाशन

# वापिक मृल्य ४) ] जीविन - शाहिट्य [ एक प्रनि का ॥)

#### लेख-सूची

₹.	युग-पुरुपं (कविता)	र्था मुमित्रानन्दन पन्त	ಶಕ
	भारतीय संस्कृति की बुनियाद	श्री काका कालेलकर	ين ت
	साहित्य सृप्दा गांधीजी	श्री विष्णु प्रभाकर	ی ن
	अपरिप्रहः समाज-रचना का एक आधार	हरिभाऊ उपाध्याय	ی ت
	गुक्रदेव की दृष्टि में महात्मा गांधी	श्री रामपूजन तिवारी	ى ت
	- त्रपरिप्रह्वार	श्री रघुवीरबारण दिवाकर	24
	संस्कार का अर्थ	श्रो दुर्गाञंकर केवलराम जास्त्री	56
	बुद्ध शासन के रत्नः भदंत महावीर	भिलु धर्मेर्ग्धित	26
	याम्य कहानियां ऋार कहावतें	श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	२९
٥c.	हरिजनों को वे कभी नहीं भूले!	म्ब० महादेव देनाई	20,
	कसोटी पर	<b>समालो</b> चनाए	58
(२.	क्या व कैसे ?	सम्पादकीय	<b>ગ</b>

## 'जीवन-साहित्य' के हितेषियों से

'जीवन माहित्य' आपका ही पत्र है। उसका ध्येय आर्थिक लाभ उठाना नहीं, वित्क उपयोगी एवं माहिवक मामग्री देकर जनमाधारण की सेवा करना है, लोक-रुचि को ऊंचा उठाना है। अपने इस पत्र के प्रति आपका भी दायित्व है, जिसे आप निम्न प्रकार से पूरा कर सकते हैं:

- १. यदि आप ग्राहक नहीं है तो ४) रु० वार्षिक शुल्क के भैजकर शीघातिशीघ्र ग्राहक वन जायं।
- २. अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा परिचित्रों की ग्राहक बनावें।
- इ. ऐसे पाठकों के पत भेजें, जो पत्र के ग्राहक वन सकें।
- ४. पत्र के उद्देश्य के अनुरूप रचनाएं भेजें। कृपया इतना ध्यान रक्ष्यें कि लेख साफ हो । उपयोग न हो सकने की दशा में वापस भेजने के लिए आवश्यक टिकिट अवश्य भेजें।
- ५. पत्र में जो किमयां दिखाई दें अथवा उसकी मामग्री आदि में आप कोई परिवर्त्तन-परिवर्द्धन चाहते हों तो उसकी मुचना समय-समय पर देते रहें।

व्यवस्थापक

## जी व न - सा हि त्य नई दिल्ली

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा विहार प्रांतीय सरकारों द्वारा स्कूलों. कालेजों व लाइब रियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम्य पंचायतों के लिए स्वीकृत

अदिसक नवरवना का मिर्टिक

व्यक्तूबर १६४१



#### युग-पुरुष

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

प्रथम अहिंसक मानव वन तम आये हिस्त धरा पर मनुज-बुद्धिको मनुज-हृदय के स्पर्शों से संस्कृत कर निवल प्रेम को भाव-गगन से निर्मम घरती पर घर जन-जीवन के बाहपाश में वाध गये तुम दढतर ! द्वेप-घुणा के कटु प्रहार सह, करुणा दे प्रेमोत्तर मनज-अह के गत विधान को बदल गये हिंसाहर ! घणा-द्वेप मानव-उर के सस्कार नही है मौलिक, वे स्थितियों की सीमाएँ है जन होगे भौगोलिक ! आत्मा का सचरण प्रेम होगा जन-मन के अभिमुख, हृदय-ज्योति से मडित होगा हिसा-स्पर्घा का मुख<sup>ा</sup> लोक-अभीप्सा के प्रतीक नव स्वर्ग मर्त्य के परिणय.

अग्रदृत बन भव्य युग-पुरुष के आए तुम निश्चय ! ईश्वर को दे रहा जन्म युग-मानव का सघपंण, मन्ज-प्रेम के ईश्वर, तुम यह सत्य कर गये घोषण !

## भारतीय संस्कृति की वुनियाट

श्री काका कालेलकर

लोग कहते हैं कि 'अहिंसा' शब्द अभावरूप है, जैसे 'मोक्ष' शब्द भी अभावरूप ही है। मैं मानता हूं कि इन शब्दों का यह दोप नहीं है, किन्तु गुण है। अगर अहिंसा के लिए भावरूप कोई शब्द रचा हो तो वह है प्रेम या मैत्री। 'प्रेम' शब्द का दुरुपयोग हो सकता है। 'मैत्री' शब्द में वह डर नहीं है। असल में अहिंसा, मैत्री और प्रेम या स्नेह में आत्मीयता का भाव आता है। हम अपना भला चाहते हैं, अपने दोपों को छोटा करके देखते हैं, अपनी मूलों के लिए क्षमा करते हैं और सुधर जाने के संकल्प पर तुरन्त विश्वास करते हैं। जहाँ-जहां हमारे मन में आत्मीयता होती है, वहां-वहां हमारी ये सव वृत्तियां स्वभाविकता से प्रकट होती हैं।

अपने-पराये का भेद भूल कर दूसरों का भी भला चाहना, दूसरों के भले के लिए, आराम के लिए स्वयं कप्ट उठाना और दूसरों के दोपों के प्रति क्षमा-वृत्ति रखना, यही है अहिंसा, यही है मैत्री-भावना। जहां मैत्री-भावना है वहां वदला लेने की इच्छा नहीं होती। जब अमृतसर (पंजाब ) में जनरल डायर ने हमारे लोगों का कत्ल किया और उनको तरह-तरह से पीड़ित और अपमानित किया तव गांधीजी ने सर-कार से न्याय की मांग की; किन्तु साथ ही यह भी कहा कि हम जनरल डायर को सजा नहीं कराना चाहते हैं। गांधीजी ने यह जो नया रुख धारण किया, उसमें कोई आश्चर्य नहीं था; किन्तु सारे राप्ट्र ने कुछ सोचने के वाद उनकी इस वदला न लेने की नीति को तुरन्त मान लिया। इसपर से सिद्ध होता है कि हमारे देश की संस्कृति में अहिंसा गहराई तक पहुंची हुई है। गांघीजी-जैसे समर्थ कर्मयोगी ही लोगों के हृदय में सोयी हुई अहिंसा को जागृत कर सकते हैं।

आज का दिन क्षमा करने और क्षमा मांगने का है। जिन महावीरों ने इस प्रत की, इस रिवाज की और ऐसे दिनों \* की स्थापना की, उनके हृदय में सच्ची और जीवित अहिंसा थी। वे शान्ति के साथ कार्योत्सर्ग कर सकते थे। हम लोग मुंह से अहिंसा का पुरस्कार भी करते हैं और अन्याय करनेवालों को सज़ा भी दिलाना चाहते हैं। इतना ही नहीं, अपितु कई दफे पाप का बदला घोरतर पाप करके ही लेना चाहते हैं।

सारी दुनिया इस दोप में, इस नशे में फंसी हुई है। हिटलर ने राष्ट्रीय पैमाने पर यहूदियों क ध्वंस किया। स्टालिन ने अपने लोगों को आदेश देकर जर्मनों का ध्वंस सिखाया। उसने अपने लोगों से कहा कि जवतक काफी मात्रा में जर्मनों का ध्वंस न कर सकोगे तवतक तुम्हें विजय मिलने की नहीं है।

आज अमेरिका हमसे नाराज़ है; वयोंकि हम रूस का ध्वंस नहीं कर पाते, उसकी ओर तथा चीन देश की ओर शक की निगाह से नहीं देखते। आज चंद लोग हमपर बहुत नाराज़ हैं; क्योंकि हम पाकिस्तान से प्रचारित ध्वंस-धर्म का बदला ध्वंस-प्रचार से नहीं लेते। हमारे पुण्य-पुरुषों ने हमें सिखाया कि ध्वंस का शमन ध्वंस से नहीं होता। वैर से वैर बढ़ता ही है। वैर का शमन अवैर से ही हो सकता है।

हिन्दू संस्कृति की बुनियाद का बचन है—'न पापे प्रतिपाप: स्यात्।' पापी का बदला छेने के लिए हम स्वयं पापी न बनें। मैत्री की दृष्टि से हम सबकी ओर देखें। सबकी ओर यानी मित्र, उदासीन, तटस्य, यात्रु, पापी, अनाचारी, दुराचारी, आततायी और दंभी ऐसे सबकी ओर हम मैत्री भाव से ही देखें और चलें।

<sup>\*</sup> के उपलक्ष्य में १६ सितम्बर १९५१ को दिल्ली के टाउनहाल में आंबोजित सभा में दिया गया भाषण ।

भारत सरकार ने पाकिस्तान के प्रति, अमेरिना और इंगलंड के प्रति, जापान और चीन के प्रति यही भाव रखा है। अपेरिका-चैछ अनेन देख इंग्लंग्ड एम्प् पर मर्छ ही नराज हो, किन्तु वे ग्राम्स पये हैं हि हमारी यह नीति हो थेष्ट नीति हैं पानिस्तान कुछ भी करे, हम उन्हें अस्पाय नहीं करने देये, किन्तु साय-साय उनके प्रति मैंभी-भाव रखेंगे। यथुमाव को न हम छोरेंगे, न भूलेंगे।

भेने अबनक अतरीष्ट्रीय क्षेत्र की वातें को। हमें अपने समाज के अन्दर भी यही शमावृति और मैंबी-भावना कुंड करनी चाहिए। हमारे हाथी किसी का अप्ताद म ही और किसी का, उसने हमारा अप्ताद म ही और किसी का, उसने हमारा अप्ताद किया, इसिएं हम ब्यस न वरें। अप्ताद का प्रतिकार अबस्य करें, किन्तु बदला लेने की बात सीचें तक नहीं।

लेक्नि मेरे मन में शका उठती है कि कान की इस सभा के जैसी समा में इकट्ठा होने से यह काम ही सकेगा?

खंद कोई नई बड़ा क्लाई जानी है तब हम उसे श्रद्धा से के लेते हैं। इसरा चारा ही नहीं रहता है, किन्तु जब कोई पुरानी चवा हमारे सामने रखी जानी है तब हम पूछते हैं कि भ्या ऐसा नोई सबूत है कि इस बचा के सेवन से कोई जावारी रोग-मुक्त हुआ है?

धर्म के जपर्गृष पोप हर साल, बडे दिनो में, मैत्रो-भावना का उपदेश करते हैं और सालित के लिए प्रार्थना करते हैं। उनके उस प्रयास का कही। कुछ स्वर नहीं दील पडता है। हमारे जैन-भाई हर साल सबकी समा करते हैं और सबसे समा की योचना भी करते हैं, लेकिन जन्म समाज की योचना हमारे जैन-भाई अपिक समाजील हैं, ऐसा कोई अनुमब नहीं हैं। साधुओं के बीच भी जो ईंच्या पाई जाती है, यह साबिक्स सकत्यों से और पितक सुत्रों के टटन में इर नहीं होती। धर्म ना रास्ता कमी सस्ता नहीं होता है। आज हम अच्छे विचार व्यवत करके या धुनकर सर्वोष न मार्ने कि हमने आज कुछ किया। च वर कोग तो ऐसा ही भावत है कि हमने आजतक का पाप परचाताप करके थो वाला। अब नया पाप करने की छुट्टो मिल गई।

ऐसा कहरूर भी हम पर्क 'गए है नि बोलने के दिन लाम हो गये हैं। अब भुछ बरना चाहिए। वतत्योहार का दिन का गया, दय बाल्ते हुछ करना चाहिए। वतत्योहार का दिन का गया, दय बाल्ते हुछ करना चाहिए,
हुछ कहना चाहिए। कम-धै-कम एन अच्छा सकत्य
करना चाहिए, ऐसा मोजचन हम इन्द्र होते है।
समा के अल्त में मान लेते है कि हमने हुछ पुष्प
कर्म कि अल्त में मान लेते है कि हमने हुछ पुष्प
कर्म कि सही, दिन्तु आजतक ऐसे जितने भी दिन
मनाये, उदावा नतीना बया हुआ, सी भी सोचना
चाहिए। अल्पर हम अतन्य हुआ, सी भी सोचना
चाहिए। अल्पर हम अतन्य हम सकें ती आज वा
दिन हमने मनाया।

एक बात में हमने अवस्थ प्रगति की है। वह यह कि हम छोटे-छोटे फिरको के बाहर निकले। अच्छी बात मृतने के लिए अच्छा कार्य करने के लिए और अगर हो सके तो जीवन में परिवर्तन करने के लिए हम अपने फिरके में बन्धे नहीं रहते है ! क्पमड्न वृत्ति हमने छोड दी है। अन्य धर्मी लोगो पर हम विश्वास करने लगे हैं। उनके साथ मेलजोल बढ़ा रहे है, उनकी वार्ते सनने को तैयार है। इस तरह हम अपने वत-उत्सव में औरो को बुखाते हैं उसी तरह हमें भी उनके अत-उत्सव में शरीक होना चाहिए । सिर्फ मुसलमानो की बात मै नहीं कर रहा हूं। ईसाई, बहुदी, पारसी जादि सब धर्मों की और सब देश के लोगों के शम नायों महमें शरीक होना चाहिए। दिल्ली जैसे राजधानी के शहर में दुनिया के सब देशों के प्रतिनिधि पायें जाते हैं । यहां हम सबसे भिल सकते हैं, सबके साथ धेत्रीभाव बढा सकते हैं। यह भी कोई छोटो साधना नहीं है ।

## साहित्य-सृष्टा गांधीजी

श्री विष्णु प्रभाकर

श्री डी॰ एफ॰ कराका ने अपनी एक पुस्तक के आरम्भ में लिखा है—"गान्धीजी पर कुछ लिखना, कहना तीर्ययात्रा पर जाने के समान है।" इस दृष्टि से उनके लिखे अर्थात् उनके साहित्य की चर्चा करना तीर्य-यात्रा से भी बढ़ कर होना चाहिए। तव उस पुण्य को कौन छोड़ना चाहेगा? जैसा कि सब जानते हैं गान्धे जी ने बहुत कुछ लिखा है; परन्तु बया वे साहित्यकार थे? यह एक विचारणीय प्रवन है।

प्रथम दृष्टि में तो ऐसा लगता है कि अपनी महानता के कारण वे साहित्य-मृष्टा से अधिक साहित्य का विषय थे। सन् १९१९ से लेकर आजतक के समूचे साहित्य पर उनकी छाया पड़ी हुई जान पड़ती है और आनेवाला साहित्य उनके प्रभाव से मुक्त हो सकेगा यह कहना भी प्रायः असम्भव-सा ही लगता है। वस्तुतः वे जीवन के एक विशिष्ट दृष्टिकोण के प्रणेता थे। वह दृष्टिकोण जवतक वना रहेगा तवतक उनका प्रभाव भी साहित्य से दूर नहीं होगा। राजनीति की भाषा में इसो विशिष्ट दृष्टिकोण को गान्धीमार्ग या गान्धीवाद कहा जाता है।

पर इसके वावजूद वे साहित्यकार थे। नेता के रूप में नहीं, लेखनी के धनी के रूप में। वे अधिक-तर गुजराती और अंग्रेजी में लिखते थे, इसलिए उन्हीं भाषाओं पर उनका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। गुजराती के विद्वान् उन्हें एक अनुपम गद्य शैलीकार मानते हैं और जव लन्दन से गोलमेज परिपद् के अवसर पर उन्होंने अमेरिका के लिये सन्देश ब्राडकास्ट किया था तव अमेरिकावाले उनकी सरल, मुहावरेदार पर शक्तिशाली अंग्रेजो सुनकर चिकत रह गये थे। यद्यपि दूसरी भाषाओं में उन्होंने नहीं के वरावर लिखा है; पर अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने नहीं के वरावर लिखा है; पर अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें प्रभावित अवस्य किया है। उनकी शैली को अंग्रेजो का 'विव्लिकल' शब्द टीक-ठीक व्यक्त करता है। उसकी सरलता, संकेत-प्रियता, संयत विनोदिष्रियता,

सूत्रता और सहज तार्किक गम्भीरता के कारण ही उसमें अपूर्व शक्ति है। सबसे बढ़कर उनकी आत्मीयता के कारण उसमें जो पारदिशता आगई है वह उनकी अपनी चीज है।

गान्धीजी साहित्यकार थे; परन्तु अपने वावजूद अर्थात् वे साहित्यकार वनने नहीं चले थे। उनका लक्ष्य कुछ और ही था। फुलॉप मिलर ने कहीं लिखा है— ''किसी जमाने में बुद्ध के सम्मुख जिस तरह मानव-प्राणी की वेदना अपना घृंघट खोल कर खड़ी होगई थी उसी तरह अब वह गांधी के सामने खड़ी होगई है। इसलिए वे अपनी भावनाएं और शक्तियां ऐसे किसी उद्योग में खर्च नहीं कर सकते जो भूखों को खिलाने में, नंगों की काया ढांकने में और दुखियों को ढाढस वंधाने में प्रत्यक्ष रूप से सहयोग न दे।" इसलिए वे कला, काव्य और साहित्य को उपयोगिता की कसौटी पर परखते थे। कवि ठाकुर को एक वार उन्होंने एक पत्र में लिखा या-- 'अपनी काव्य प्रतिमा के प्रति सच्चा रहकर कवि आगामी कल के लिये जिन्दा रहता है और दूसरों को भी उस कल के लिये जीवित रहने का आदेश देता है। वह हमारे चिकत चक्षुओं के सामने उन चिड़ियों के सुन्दर शब्द-चित्र खींचता है जो उपा के आगमन पर महिमा के गीत गाती हुई शून्य में अपने रंगीन पंखों से उड़ान भरती हैं। ये चिड़ियाँ दिन भर का अपना भोजन प्राप्त करती हैं और रात के आराम के बाद आकाश में उड़ती हैं। उनकी रगों में पिछली रात नए रक्त का संचार हो चुका है, पर मुझे ऐसे पॅक्षियों को देखने से वेदना भी हुई जो निर्वलता के कारण अपने पंख फड़फड़ाने का साहस भी नहीं कर सकते। भारत के विस्तृत आकाश के नीचे मानव-पक्षी रात को सोने का ढोंग करता है- भूखे पेट उसे बराबर नींद नहीं आती और जब वह सुबह विस्तर से उठता है तो उसकी शक्ति पिछली रात से कम हो जाती है। लांसो मानव-पश्चिमों को राजमर मूख-प्यास से पीडित रहुरूर बागरण मरना एकता अववा जानूज सपनो म उत्तर्य रहुग पहता है। यह अपने अनुभव नी, अपनो मामस की, अपनो आशो देशी अकष दुखपूर्ण व्यवस्था और कहानी है। नवीर ने गीतों से इस पीडित मानवता को सान्त्वना से सकना असम्भव है। यह ल्लाविष मूखी मानवता हाप फैलाकर, जीवन के पख फक्का मर, कराह नर केवल एक स्विता मानती है—गीटिंटर मरेका ।"

सन् १९३५ में गुजराती साहित्य-सम्बेलन के बारहर्षे अपियेशन के समाधात के पद से क्षेत्र साहित्य की तिया करते हुए भी उन्होंने कहा चा-- 'चव में सेवाधान का जोते हैं। के निवयंत्र रोगों का सवाठ करता हूं तो मुझे आपका साहित्य निर्यंक मालूम होने लगता है।"

मिलर की मान्यता का बह स्पष्ट प्रमाण है परन्त् जिन शब्दों में और जिस शक्ति के साथ गान्धी जी न भूली मानवता के लिये 'पौप्टिक भोजन' की माँग की है कविता वा साहित्य क्या कभी उससे ऊने स्तर पर उठे है ? श्या साहित्य का लक्ष्य इसके अतिरिक्त कुछ और होता है ? यग-यग से महान आत्माओं का जो लक्य रहा है वही "मानव" साहित्य का लक्ष्य है। महात्मा गान्धी में साहित्य से छायाबाद ने स्वप्निल जगत नो बहिटहरी करके मानव के ग्रंथार्थ को उसके स्थान पर प्रतिस्ठित क्या। उन्होने साहित्यकी सुष्टि वरने वा दावा नही किया, अपित साहित्य ने तत्नालीन मृत्यांकनी का विरोध किया, परन्तु जिन सब्दों में उन्होंने अपने विरोध की व्यस्त किया वे ही स्वय साहित्य बन गए। यह एक अपूर्व विरोधाभास है। उन्हींके शब्दों में इसका रहस्य इस प्रकार है-"कछा को जीवन से श्रेष्ठ भानने मे तो जीवन का स्रोत ही मुख जाएगा। मेरे लिये तो सर्वश्रेष्ठ क्लाकार वही हैं भी सर्वोत्तम जीवन व्यतीत करता है। जीवन व्यतीत करने की कटा ही सबैश्रेष्ठ क्ला है। में कला के प्रति नहीं, क्ला के योये बहण्पन या अकड के प्रति आपित चठाता हू। दूसरे बच्दो म गैय कह कि मेरे विकार व कला ने 'मृत्य' मिन्न है। '

बीवन अर्थात् मनुष्य में उनकी इत आग्राय थास्या का प्रमाण उनकी मान्यताओं ते भी स्पष्ट हो जाता है। सत्य और बहिता से अक्ता वे पुष्ठ नहीं ये। एक्ष उनके किये देवता की आरायना का प्रतोन पा और अहिता मनुष्य में उनकी आस्या का। उनके व्यक्तिगत जीवन में जो स्थान सत्य का था वही स्थान अहिता का उनके सार्वजनिक जीवन में था। अपनि व्यन्ते सार्वजनिक जीवन में जहोते एक शाय के रिक्ट भी मनुष्य में अपनी आस्या की नहीं डिक्टने दिखा। वे एक आदोकन के नेता ये और उस आप्रोक्त का कर प्रदास की नहीं डिक्टने मानव की स्थान वा वे बीवन के प्रदास कीन सम्बाद का

जीवन में जो भी शफ्तता या असम्मन्ता उन्हें मिली उपना कारण उनकी महिमा अर्थात् मनुष्य म आस्या भी और सरस तथा गहिमा की इस सम्पन् सामना के कारण उनके लिये जीवन को रहस नहीं रह नया था। वे जीवन की क्ला में पारमत होगये थे और उनको इस मान्यता के अनुसार 'कि जो अच्छी सरह जीना जानता है यही सच्चा बकान्यर है' थे स्वय सच्चे मन्तरार थें । इसिक्स जुलीने जब मभी और जो कुछ भी लिला या बोला बही साहित्य बन गया।

भवनार के रूप में अथना स्वतन्त्रता-मगाम के एन भवता के रूप में, प्रस-देखक के रूप में या मेंट के समय की नावधीत के रूप में, प्रार्थना समा के भारमा के रूप में या व्यक्तियात सरसाणों के रूप में, आरक्क्या के रूप में या अनेक क्षेत्रों में निये गए प्रयोगों पर लिख गये लेखा के रूप में उनका जो भी साहित्य उपलम्प है बहु प्रभाव की दृष्टि से सी चित्रधाकी है ही, परिमाण की दृष्टि से भी बिपुल है बीर उनकी यह पूजी सहज हो उन्हे प्रथम श्रेणी के देखाने में ला बैठाती है।

निस्सन्देह वे बाँब, नलाकार या आलीवन नहीं थे, पर आत्मवचा लेखक के रूप में उन्हें कोई पराजित नहीं कर सनद्या । जिस तदस्यता और स्पटता ने गाय उन्होंने अपनी औवनगाया लिसी हैं बहु और किसी के लिये सम्भव नहीं है। उसकी शक्ति उनके जीवन की कला में है। इसी कारण उनके दिल में जो कुछ होता था, कह डालते थे छिपाते कुछ नहीं थे। जीवन में यदि कुछ गीपनीय रह जाता है तो आत्मकथा अधूरी है। सत्य और अहिंसा के परीक्षण करनेवाला वैज्ञानिक अधूरी आत्मकथा नहीं लिख सकता।

आत्मकथा के अतिरिक्त संस्मरण लिखने में भी वे कुशल थे। 'दक्षिण अफीका के सत्याग्रह का इतिहास' आदि इस प्रकार की कई प्रस्तकें उन्होंने लिखी है; परन्तु सबसे अधिक सफलता उन्हें अपने सम्पर्क में आनेवाले व्यक्तियों के संस्मरण लिखने मे मिली है। जिस प्रकार उन्होंने अपना विश्लेपण करते समय सत्य को नहीं छोड़ा उसी प्रकार दूसरों के वारे में लिखते समय उन्होंने अहिंसा को अपना आधार बनाया है। इसलिए उनके साहित्य में जहां उनकी पारदिंगनी दुष्टि का चमत्कार है वहां वह मानव के सहज सीन्दर्य-सहानुभूति से भी आप्लावित है। जब कभी उन्होंने किसी के बारे में लिखने के लिये कलम उठाई है, अपनी सरल, सुबोध और मुगठित भाषा में उस वर्ण्य व्यक्ति का मार्मिक चित्र उतार कर रख दिया है। एक तो अपने जीवन के प्रति निर्दिष्ट वैज्ञानिक दृष्टि-कोण (सत्य) के कारण, दूसरे विभिन्न विचार और व्यवहार के इतने अधिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आने के तथा मानवता (अहिंसा) में अपनी आस्था के कारण उनकी परख बड़ी सही और खरी हो गई थी. और जब दृष्टि पारदर्शी हो जाती है तो वर्णन स्वत: ही सजीव और मार्मिक हो जाता है।

सन् १९२९ में पं जवाहरलाल नेहरू के लिए उन्होंने जो कुछ लिखा या वह थोड़े से शब्दों में एक अपूर्व चित्र है—"वहादुरी में कोई उनसे वढ़ नहीं सकता और देश-प्रेम में उनसे आगे कौन जा सकता है? कुछ लोग कहते हैं कि वह जल्दवाज और अधीर हैं। यह तो इस समय एक गुण है। फिर जहां उनमें एक बीर योद्धा की तेजी और अधीरता है वहां एक राजनीतिज्ञ का विवेक भी है। वह स्फटिक मणि की भांति पवित्र है, जनकी सत्यशीलता सन्देह से परे है। वह अहिंसक और अनिन्दनीय योद्धा हैं। राष्ट्र उनके हाथ में सुरक्षित है।"

दक्षिण अफीका के श्री थम्बी नायटू का चित्र देखिए-"उनकी वृद्धि भी वड़ी तीव्र थी। नवीन प्रश्नों को वे बड़ी फुर्ती के साथसमझ लेते थे। उनकी हाजिर-जवावी आश्चर्यजनक थी। भारत कभी नहीं आये थे, पर फिर भी उनका उमपर अगाव प्रेम था। स्वदेशा-भिमान उनकी नस-नस में भरा हुआ था। उनकी दृढ़ता चेहरे पर ही चित्रित थी। उनका गरीर बड़ा मजबूत और कसा हुआ था। मेहनत से कभी थकते ही न थे। कुर्सी पर बैठकर नेतापन करना हो, तो उस पद की भी शोभा बढ़ादें, पर साथ ही हरकारे का काम भी उतनी ही स्वाभाविक रीति से वे कर सकते थे। सिर पर बोझा उठाकर बाजार से निकलने में थम्बी नायडू जरा भी न शरमाते थे। मेहनत के समय न रात देखते, न दिन। कौम के लिए अपने सर्वस्व की आहुति देने के लिए हर किसी के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते थे।"

पर इन शब्द-चित्रों से कोई यह न समझले कि गांधीजी विशेषणों का ही प्रयोग करना जानते थे। वैसे वे जब विशेषणों का प्रयोग करते थे तो दिल खोल ' कर करते थे; परन्तु गुणों के साथ किसी व्यक्ति की दुर्वलता भी उनसे छिपी न रहती थी और अवसर आने पर वे उसी स्पष्टता से उसे भी प्रकट कर देते थे। सत्य का पुजारी व्यवितत्व का अधूरा चित्रण कर ही नही सकता। ऊपर जिन थम्बी नायडू का शब्द-चित्र दिया गया है, उन्हीं के वारे में उसी चित्र में गांधीजी ने आगे लिखा है-"अगर थम्बी नायडू हद से ज्यादा साहसी न होते और उनमें कोच न होता, तो आज वह बीर पुरुष ट्रांसवाल में काछलिया की अनुपस्थिति में आसानी से कीम का नेतृत्व ग्रहण कर सकता था। ट्रांसवाल के युद्ध के अन्त तक उनके कोध का कोई विपरीत परि-णाम नहीं हुआ था, विल्क तब-तक उनके अमूल्य गुण जवाहिरों के समान चमक रहे थे, पर बाद में मैने देखा कि उनका कोध और साहस प्रवल शत्रु सावित हुए और उन्होंने उनके गुणों को छिपा दिया।"

सरोजिनी नायडू ना चित्र उन्होंने एक ही बाध्य में उतार दिया है—"मरोजिनी नायडू काम तो बहुत बढिया कर लेती हैं, मगर सच्ची सस्कृति की कीमन देकर।"

बस्तुत किसी भी व्यक्ति का ठीक-ठीव विस्त्यण वरने में उन्हें अद्भुत नुसकता प्राप्त थी। वमनी-नम और मपे-तुले सार्थव राज्दों में बच्चे व्यक्ति के अन्दर और बाहर को कागब पर उतार कर रख देते थे--

"सर फिरोबसाह तो मुझे हिमालय जैसे मालूग हुए, लोकमान्य समूद की तरह। गोवले गङ्गा की तरह। उसमें में नहां सदना था। हिमालय पर चवना मुस्किल् है. समूद में इबने वा अब रहता है, पर शङ्गा की मोदी में लेल सकते हैं। "

लोबभाग्य निजय से उनवे अवनेद वी आज मब जातते हैं। उनके जीवन माल में और मृत्यु के बाद गापीजों ने उन मन-भेदों को बभो कम करते कराने या मुलाने की पेप्टा नहीं की, पर हमी बारण वे लोहमाम्य वन सही मूच्यलन करने में नहीं सिक्षवें। उनकी मृत्यु पर उन्होंने लिखा—

"लोबसात्य बालगद्वाचर निलब अब सतार में नहीं है। यह विश्वास बरना बटिन मालूम होता है वि वे ससार से उठ गए। इस लोगो वे समय में ऐसा हमा कोई नहीं, जिसका जनता पर लोकमान्य कैना प्रमाद हो। इनारों देगवासियों की उत्तर को मिल और श्रद्धा थी वह लक्ष्में थी। यह अखरम स्वय है वि वे जनता के आराध्य देव में, शितमा थे, उनके वचन हवारी आरोमयों के लिए नियम और बानून-ये थे। पुरामें मुस्त-सिह नसाद उठ गया। वेटारो वी पार मुनेता विलीन हो गई।"

अनुमृति नी तीप्रता और बान्यविष्ठता का और भी मुन्दर निषण उनने सामारणो में हुआ है। घट-माओं और वार्तालाप के द्वारा उन्होंने बच्चे स्विन की बाहुनी और बार्तारन मुक्तरता मुक्सरता में रेखाओं को दम प्रनार जगार दिया है नि इसके पूर्ण परिपार ने सान-साथ व्यक्ति ना सम्पूर्ण वित्र हृदय पर पत्थर की ठीत बैन बाता है। नस्तूरवा गायी, बाळासुन्दरम्, देशवन्युदास, योपाखवान् तथा वासन्ती देशे आदि के सम्प्ररण इस दृष्टि से बहुत ही सुन्दर वने है।

"में घोषाल बाबू के पास गया। उन्होंने मुझे नीचे से उपर तब देखा। कुछ मुस्तराये और बीले---'मेरे पास कारकुन का काम हैं। करोगे ?'

मैने उत्तरदिया—'जरूर करगा। अपने बस-भर सक्कुछ करने के लिए मैं आपके पास आया हू।''

'नवबुबन', सच्चा सेवा-आव इसी दो महने है।'
''कुछ स्वयमेवन उनके पाम खडे थे। उननी ओर मुखातिब होनर कहा--'देखने हो, इस नवबुबन ने च्या कहा?"

"फिर मेरी बोर देवनर नहा—ों हो यह चिट्ठियों का देर हैं। देवने हो न संन्डों आदमी मूसने मिलने आया नहीं हैं। अब देनते मिलू या जो होंगे फालनू चिट्ठिया लिखा करते हैं, उन्हें उत्तर दृं हमों बहुतेरी तो किनुरू होंगी, पर तुम मबको पड जाता। जिनकी पूच फिखना बरनी हो उनने पहुच फिख देना और जिनको उत्तर के लिए मुझमे पूछता हो पछ होना।

"उनके इस किरवास से मुले नदी खुनी हुई। धी पोपाल मुझे प्रचानते न में । मेरा इतिहास लागने के बोद तो कारतुन वा बास देने में उन्हें जरा घर्म मालूम हुई, पर मेने उन्हें निर्मित्त कर दिया—'वहां मे और कहा जाय । यह बोम मीरकर मुझपर तो आपने यह मान ही किया है, बसोकि मुझे आमे परकर कांग्रेस म नाम करता है।

भोपालनाकू बोल- धर पूछो तो यही 'सच्ची मनोकृति हैं, परन्तु आवकल के नवपुक्क ऐसा हैही मानते, पर में तो कालेस को उसके जन्म से जातदा हूं। बतकी स्थापना करने में पि॰ हाूम के साथ मेरा भी हाल था।'

"हमदोनों में साझा सम्बन्ध हो गया। दोपहर के साने के समय वह मुझे साथ रसते। घोषालबादू के बटनभी 'बेरा' ल्याना था। यह देलकर 'बेरा' का याम : २७६ :

खुद मैने लिया। मुझे वह अच्छा लगता। वड़े-बूढ़ों की ओर मेरा वड़ा आदर रहता था। जब वे मेरे मनो-भावों से परिचित हो गये तब अपनी निजी सेवा का सारा काम मुझे करने देते थे। बटन लगवाते हुए मुह पिचकाकर मूझमे कहते—'देखों न, काग्रेस के सेवक को बटन लगाने तक की फुरसत नहीं मिलती; वयोंकि उस समय भी वे काम में लगे रहते है।' इम भोलेपन पर मुझे मन में हंसी तो आई, परन्तु ऐसी सेवा के लिए मन में अरुचि बिल्कुल न हुई।"

वासन्ती देवी का, देशवन्धु की मृत्यु के वाद, जो चित्र गांधीजी ने खीचा है, वह एक साथ मानवीय, करुण और यथार्थ है—

"वैधव्य के बाद पहली मुलाकात उनके दामाद के घर हुई। उनके आसपास बहुतेरी बहने बैठो थी। पूर्वाश्रम में तो जब मैं उनके कमरे में जाता तो खुद वहीं सामने आती और मुझे बुलाती । वैधव्य में मुझे क्या बुलातीं ? पुतली की तरह स्तम्भित वैठी अनेक बहनों में से मुझे उन्हे पहचानना था। एक मिनट तक तो मैं खोजता ही रहा। मांग में सिन्दूर, ललाट पर कुंकुम, मुंह मे पान, हाथ में चूड़ियां और साड़ी पर लैस, हंस-मुख चेहरा-इनमें से एक भी चिन्ह मै न देखं, तो वासन्ती देवी को किस तरह पहचानूं? जहां मैने अनुमान किया था कि वे होंगी वहां जाकर बैठ गया और गीर से मुखमुद्रा देखी । देखना असह्य हो गया। छाती को पत्यर बनाकर आव्वासन देना तो दूर ही रहा। उनके मुख पर सदा शोभित हास्य आज कहां था? मैने उन्हें सान्त्वना देने, रिझाने और वातचीत कराने की अनेक कोशियों की। बहुत समय के बाद मुझे कुछ सफलता मिली ो देवी जरा हंसी। मुझे हिम्मत हुई और मैं बोला—'आप रो नहीं सबती। आप रोओगी तो सव लोग रोवेंगे। मोना (वड़ी लड़की) को वड़ी मुश्किल से चुपकी रक्खा हैं। वेबी (छोटी लड़की) की हालत तो आप जानती ही है । सुजाता (पुत्र वयू) फूट-फूटकर रोती थी, सो बड़े प्रयास ने शान्त हुई है। आप दया रखियेगा। आपसे अब बहुत काम छेना है।'

"वीरांगना ने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया—'मै नहीं रोऊंगी। मुझे रोना आता ही नहीं।' "मैं इसका मर्म समझा, मुझे संतोष हुआ। रोते से दु.ख का भार हल्का हो जाता है। इस विधवा वहन को तो भार हल्का नहीं करना था, उठाना था। फिर रोती कैसे? अब मैं कैसे कह सकता हूं—'लो चलो, हम भाई-वहन पेट भर रोले और दु:ख कम कर लें।'

"वासन्ती देवी ने अवतक किमी के देयते आंसू की एक बूद तक नहीं गिराई है । फिर भी उनके चेहरे पर तेज तो आ ही नहीं रहा है। उनकी मुखाइ ति ऐसी हो गई है कि मानों भारी बीमारी में उठी हों। यह हालत देवकर मैंने उनसे निवेदन किया कि थोड़ा समय बाहर निकलकर हवा व्याने चिल्ए। मेरे माप मोटर में तो वैठीं; पर बोलने क्यों लगी। मैंने कितनी ही बातें जलाई—वे सुनती रही, पर खुद उसमें बरायेनाम शरीक हुई। हवाखोरी की तो, पर पछताई। सारी रात उन्हें नीद न आई। 'जो बात मेरे पित को अतिशय प्रिय थी वह आज इस अभागिनी ने की। यह क्या शोक है।' ऐसे विचारों में रात बीत गई।

"वैषव्य प्यारा लगता है, फिर भी असह्य मालूम होता है। मुधन्वा खीलते हुए तेल के कड़ाह में भटकता या और मुझ जैसे दूर रहकर देखनेवाले उसके दुःख की कल्पना करके कांपते थे। सती स्त्रियो, अपने दुःख को तुम संभाल कर रखना। वह दुःख नहीं, सुख है। तुम्हारा नाम लेकर बहुतेरे पार उतर गए हैं और उतरेंगे। वामन्ती देवी की जय हो!"

भावना की अितरंजना ने इस करण चित्र को कितना संगक्त बना दिया है; लेकिन जहां उन्होंने अपने युग के महापुरुषों पर लिखा, बहा लुट्गर, फकीरी और चार निटर युवक जैसे अनेक साधारण व्यक्तियों को भी नहीं छोट़ा है। ये कुछ बानगी के चित्र है। ये चित्र किसी उद्घोपित साहित्यिक के द्वारा नहीं लिखे गए, परन्तु एक ऐसे मानव द्वारा लिखे गए है जिसका समस्त जीवन 'जीने की कला' और सत्य के प्रयोग करने में बीता था, जिसने जीना सीखते-सीखते जिलाना सीख लिया था और जो सबसे पहले और सबसे पीछे मात्र मनुष्य था। फिर ऐसा मनुष्य ही मनुष्य को नहीं पहचानेगा तो कौन , पहचानेगा ?

#### **अपरिग्रह** : समाज-रचना का एक आधार

हरिभाऊ उपाध्याय

हम सब लोग जानते हैं कि गाँघीजी जपरिग्रह के हामी ये और मानते ये कि अपरिव्रह के आधार पर ही नवीन समाज-रचना की जा सकती है। आज की समाज-रचना द्योपण के आधार पर हुई है, अर्थात् श्रमिको को नम-स-कम पारिश्रमिक देवर अधिक से अधिक मनाफा करना आज के समाज में अनुचित्त और गैर-कानूनी नहीं समझा जाला। यही द्योपण है। इसके विपरीत गांघीजी मानते ये दि श्रमिक को अपने श्रम वा पुरा भाववा मिलना बाहिए। उसका फायदा उठानेवाली बीच की वोई एजेंसी नहीं रहनी चाहिए। यह सामाजिक न्याय हुआ । इसपर समाज खडा रह सबता है, परन्तु समाज आगे वढ सकता है अपरिष्ठह के वल पर । अयात् मन्ष्य अधिक धन या सम्पत्ति प्राप्त करने का अधिकारी हो, न्यायानुरूल उसे अधिक सम्पत्ति प्राप्त हुई हो, तो भी वह खुद अपनी आवस्यवता से अधिक सम्पत्ति का या वस्तुओं ना सग्रह अपने लिए न करे। यह त्यागवृत्ति बहुसमाज के प्रत्येक व्यक्ति में लाना चाहते ये और इसलिए परिग्रह करने और अपरिग्रहका भग करने वालो को उन्हाने चार कहा है।

ने क्हा, "हरिमाऊजी, जब हमको गाधीजी की बहुत याद शाती है। हम जानने हैं कि माधीजी पूजीवाद के घोर शत है, परन्तु हम पूजीवालों को पास बुलाते थे, छाती से लगाने थे, हमारे घरी में ठहरते थे, हमारे दक्षी की अनमव करते थे, हर विकाई में हमें रास्ता बनाते थे। गांधीजी से मेरा बहुत बरसो तक सम्बन्ध रहा। कई बार में उनसे मिला। मैने कभी खादी नहीं पहनी मगर गायीजी ने कमी इशारे से मी नहीं दर्शाया कि मैं सादी पहन । इतने सहनदील ये दे। यही कारण या कि हम भो उनको इतना मानते ये। अब तो हमको न केवल तरह-तरह से नोचा ही जाता है, बल्कि अपमानित भी दिया जता है और बृतज्ञता का तो मानो लोप ही हो गया हो।" एक और मित्र ने एक बार नहां था, "पहले तो दान देनेवालो के प्रति कृतज्ञता दर्शाई जानी थी. लेकिन बन तो ऐसा जमाना बायया है कि दान भी लिया जाता है बौर ऊपर से मार भी पड़ती है गालिया भी दी जाती है।"

आज गाँधीजी का जन्म दिन है। हमें इन प्रसगी का स्मरण करके आत्मशोषन करता है। ससार में धन एक महान् शक्ति है। भगवान का काम भी लक्ष्मीजी के दिना नहीं चलता। यह सही है कि लक्ष्मीजी को मगवान के चरणो में रहना पहता है। इस तरह धन को सेवा और जन-वस्थाण के सामने विनीत होकर रहने में ही शीमा और सार्थक्ता है, परन्तु उसका अपमान और तिरस्कार तो क्सी दशा में भी नहीं हो सकता । विनोबानी के शब्दों में हम 'नौबन-मोह-मृक्ति' का प्रयोग या साधना अवस्य वरें, परन्तु धन का तिरस्तार और धनिको का अपमान कदापिन करें। धन का तिरस्कार अज्ञानता का सुजक है और घनिको का अपमान असम्यता का। गाघी-मनन को दोनो से बचकर अपरिग्रह को साधना **क रनी चाहिए, अर्थात् अपना जीवन-निर्वाह** जहा तक हो सके स्वथम से करना चाहिए और उससे अधिक जो कुछ धन-सम्पत्ति हमें मिले, उसका अपने को दस्टी समझकर लोक-सेवा और देश-सेवा में विनियोग करना चाहिए ।

## गुरुदेव की दिष्ट में महात्मा गान्धी

## श्री रामपूजन तिवारी

सन् १९३८ में गांधीजी के सम्बन्ध में गुरुदेव ने एक जगह लिखा था, "एक बार में उनके पास ही था जब राजनीति में भाग लेने बाले एक विशिष्ट व्यक्ति, जिन्हें कांग्रेस पार्टी ने अलग कर दिया था, उनसे मिलने आए। दूसरा कोई कांग्रेस का नेता होता तो उनके प्रति अवज्ञा का भाव दिखलाता; लेकिन गांधीजी तो शालीनता की मूर्ति थे। उन्होंने धैर्यपूर्वक बड़ी सहानुभूति से उनकी बातें सुनीं तथा कतई ऐसा नहीं होने दिया कि वह अपने को हीन समझें। मेने अपने अपने पार्टी से, जिसका कि वह सदस्य है, बड़ा है। इतना ही नहीं, विलक उस मत से भी बड़ा है जिसका कि वह अनुसरण करता है।"

गुरुदेव और गांधीजी विश्व की इन दो महान् विभृतियों को जन्म देकर भारतवर्ष अपने को धन्य मानता है। दोनों भिन्न रुचि के थे, दोनों के संस्कार अलग-अलग थे; किन्तु दोनों यत-प्रतियत भारतीय-थे। दोनों राष्ट्रवादी थे; लेकिन उनके राष्ट्र की परिवि भू-खंड के एक छोटे-से ट्कड़े तक ही सीमित नहीं थी । उनकी राष्ट्रवादिता संकीर्ण नहीं थी । दोनों ऐसे काल म पैदा हुए जब भारतवर्ष में एक नई चेतना का उदय हो रहा था । दोनों ने अपने-अपने ढंग से भारतीय तथा संसार की समस्याओं पर विचार किया और सब समय वह एकमत नहीं रहे । असहयोग-आन्दो-लन के प्रारम्भिक काल में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के साधनों को लेकर दोनों में गहरा मतभेद ही गया था, लेकिन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध कितना मधुर, कितना स्नेहपूर्ण या, इसका अनुमान एक छोटी-सी घटना से लग जाता है। सन् १९३२ की ९ सितम्बर को यरबदा जेल में साम्प्रदायिक निणंय को लेकर गान्धीजी आमरण अनशन करनेवाले थे । उस अवसर पर गान्वीजी ने

एक पत्र लिखा था, "प्रिय गुरुदेव, गुरुदेव को मंगलवार का प्रात:वाल है। तीन वजे हैं। दोपहर से मेरी अग्नि-परीक्षा गुरू होनेवाली है। अगर आप अपना आशीर्वाद भेज सकें तो मुझे वड़ी खुशी होगी। वाप वरावर मेरे सच्चे मित्र रहे हैं; क्योंकि आप स्पष्ट-वक्ता मित्रों में से है और अपने विचारों को खुले तीर पर व्यक्त कर देते है। .... अगर आपका हृदय मेरे इम काम को पसन्द करता हो तो मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूं । इससे मुझे वल मिलेगा । ...स्नेह ।" इस पत्र के छोड़ने के पहले ही उन्हें गुरुदेव का तार मिला, "भारत की एकता तथा उसकी सामा-जिक अक्षण्णता की बनाए रखने के लिए एक अमृत्य जीवन का विलदान श्रेयस्कर है । . . . हमारे दुःख से भरे हुए हृदय आपके इस महान् प्रायश्चित को श्रद्धा बीर स्नेह से देखते रहेंगे।" दोनों कितना एक-दूसरे के निकट थे। गृरुदेव अपने को रोक नहीं सके और २४ सितम्बर को गान्धीजी को देखने के लिये पूना पहुंच गए। वे यरवदा जेल में गान्धीजी के पास ही थे जब यह ख्बर पहुंची कि गाःधीजी की बात मान ली गई है। गुरुदेव के सामने ही गान्धीजी ने अनशन-भंग किया । गुरुदेव ने उस समय की अपनी पूना-यात्रा का वर्णन स्वयं किया है। जेल के भीतर जाने और गान्धीजी से मिलने का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है-- "वांई ओर सीढ़ी से उठकर, दरवाज़ा पार कर दीवार से घिरे हुए एक आंगन में मैंने प्रवेश किया। दो कतारों में वने हुए घर दूर तक चले गए हैं। आंगन में एक छोटे आम के पेड़ की घनी छाया में महात्माजी शय्याशायी हैं। दोनों हाथों से महात्माजी ने मुझे अपनी छाती के पास खींच लिया और देर तक वैसे ही रखा। वोले, "कितनी खुशी हुई।"

गुरुदेव ने गांधीजी के सम्वन्ध में जहां वहीं भी

लिखा है, सभी स्थलो पर गाधीजी नी उस दानित का जिक क्या है जिसने सारे देश को एक नई प्रेरणा दी । जन्होने गाधीजी में पूर्ण मानव के दर्शन किए, ऐसे मानव के, जिसे विसी एक विशेष परिधि में मही बाधा जा सकता। उन्हें केवल राजनैतिक नेता के रूप में देखना। उत्ना ही गलत है जितना कि अन्य क्षेत्रा में सीमित करना । सन् १९३१ ई० में गाधीजी के जन्म दिवस पर हास्तिनिवेतन में आध्यमवासियों के बीच बोलते हुए स्वीन्द्रनाथ ने कहा था भाग छ नि हम लोगो की राष्ट्रीय साधना सफार हो चुकी है और बाहर से देखने पर और दुछ करने की बाकी नही रह गया है तथा भारतवर्ष ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है-तो भी आज के दिन के इतिहास वा कौन-सा आत्म-प्रकाश धृष्टि के आवर्षण से अपने को वचानर सिर कचा उठाये रहेगा, यही विशेष रूप से देखने योग्य है। इस दृष्टि से जब देखने जाता हू तम समसता ह कि आज के उरसव में जिनको लेकर हम छोग आनन्द .. मना रहे है उनका स्थान कहा है तथा उनकी विशिष्टता निस जगह है। सिर्फ राजनैतिक प्रयोजनिमादि के दिसाव से हम लोग उनवा मृत्य नही आकेंगे, किन्तु जिस दृढ शक्ति के वल से उहीने आज सम्पूर्ण भारतवर्ष की प्रवल रूप से सचेत शिया है उसी शक्ति की महिमा की उपलब्धि हम लोग करेगे। ' और गुरदेव ने उस शक्ति के सम्बन्ध में भी एक दूसरे स्थान पर कहा है, 'वह शक्ति कामुरी शक्ति वही है, दूसरी पर विजय प्राप्त कर, दूसरा का नीचा दिलावर वह गौरयशालिनी नहीं होती । युद्ध-लिप्सा से परिचालित होनेवाले सेना नायको की अहम्मन्यता उसमें नहीं हैं।" गुरुदेव में उस शक्ति को स्पष्ट करते हुए वतस्या है, " महात्माजी यदि वीर पुरुष होते अथवा छडाई करते सो हम लोग याज इस प्रकार से उन्हें स्मरण नहीं करते , क्योंकि लड़ाई करनेवाले तो अनेक वीर पुरुष तथा बड़े-वडे सेनापतियों ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है। मनुष्य ना युद्ध धर्म-युद्ध है, नैनिक युद्ध है। धर्म-युद्ध के भीतर भी निष्ठुरता है, यह हम लोगो ने गीता और महामारत में पाबा है। इसके भीतर वाहुबक का भी स्पान है या नहीं, इसे केगर सारनीय तर्क नहीं उठाज्या। । केविन यह अनुवासन कि मर जाऊगा, लेकिन मारना नहीं और नहीं करके विकसी होऊगा--- एक बहुत बढ़ी बाग है एक महान् बदेश हैं। यह किसी प्रकार की जतुराई बधवा नार्योद्धार के लिए दी हुई दुनियदो सीव नहीं हैं। वस्पुद्ध से बाहर जाकर जीतने के लिये नहीं हैं बर्क हारकर मी जम करने के लिए हैं। अपर्थ-युद्ध में यरना हैं। प्रमेयुद्ध में परने के बाद भी कुछ बच जाता है। हार को पार कर जीत हैं और मुरु को पार कर अमुत। विन्होंने इस बात की उत्तरिय कर अपने जीवन में इसे उतारा है उनकी बात मुतने के लिये हम कीन नाम्य है।"

'याची महाराज' कविना में रवीन्द्रनाय ने गांधी जी की प्रेरणा से उदबुद राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया है और गांधीजों के नेतृत्व को पूर्णकप से स्वीकार किया है।

गहदेव सकीणे राष्टीयता के विरोधी थे। सतएव असहयोग-आन्दोलन के प्रारंभिक काल में उन्होंने गायी-भी को सचेत करना चाहा था और उनसे मनभेद प्रकट किया था। गान्धीयों की राष्ट्रीयता इस सकीणेता के दलदल में कभी नहीं फपी और उन्होंने अपने सामने सम्पूर्ण मानव नाति को रखा । उन्होने सरशालीन, परिस्थिति को ध्यान में रखनर गप्टीयता पर जोर दिया और उन आ दोलन को गुलामी के पाश में बधी हुई भन्ष्य-वाति की मृतिन का एक असम त्र माना । गृहदेव ने भी भारतवर्ष की स्वतन्त्रता को इसी दिन्ट से देखा था, लेकिन उन्हें भय था कि हमारे देशवासी शान्वीजी के इस राष्ट्रीय आन्दोलन का सकी में अर्थन के कें और अपने को उग्र राष्ट्रीयता के दंखदल में न फसा दें। इसके सम्बन्ध में गुरुदेव ने स्वय लिखा है-- 'कुछ महीनो के यूरोप-प्रवास के बाद जब मैं यहां छौटा तो मैंने पाया कि सारा देश सरकाल ही स्वतन्त्रता प्राप्ति की आशा से फडक उठा है। गान्धीजी ने एक ही वर्ष में स्वतन्त्रता दिलाने का वादा क्या था । जिन तधिको से ऐसा वे करना चाहते थे दे

अपने आप में संकीर्ण थे और वे वाह्य उपकरण मात्र थे। इतने बड़े महान् य्यक्ति के आस्वासन ने उन लोगों में भी आशा का संचार कर दिया था जो साधारणतया सांसारिक नफे-नुकसान के मामले में स्थिरचित रहते हैं। वे लोग उत्तेजित होकर मुझसे बहस करते कि विशेष मामले में तर्क का प्रश्न ही नहीं उठता, वयों-कि आध्यात्मिक शक्ति में अद्भृत क्षमता होती है और उससे भविष्य में होनेवाली वात को आश्चर्यजनक ढंग से जाना जा सनता है। इसने मेरे मन में गांधीजी के उस र स्ते को चुनने की वृद्धिम ता पर सन्देह पैदा कर दिया-एक महान् उद्देश्य की प्राप्ति का यह रा.ता जो य्गों के राजनैतिक जीवन की विफलता के कारण हमारे चरित्र में आई हुई कमजोरी को सन्तुष्ट मात्र करता था । ....अतएव यहांके लोगों के अन्य-विस्वास से फायदा उडाने के लिए मैंने गांधीजी को दोपी ठहराया। इससे शीघातिशीघ फल की आशा की जा सकती थी, लेकिन इससे तो नोंव ही कमजोर

हो जाने का भय था और इस प्रकार से देश के कर्णधार के रूप में मैने गांधीजी को समझना गुरू किया ; लेकिन मेरे सौभाग्य से वह यहीं समाप्त नहीं हो गया।" गुरुदेव का यह अध्ययन कहां जाकर पहुंचा वह उन्हीं के शब्दों में उद्भृत किया जाता है-"भारतवर्ष में और वैसे तो सभी देशों में ऐसे देशभवत हैं जिन्होंने अपने दे ा के लिये उतना ही वलिदान किया है जितना कि गांघीजों ने और कुछने तो उनसे भी अधिक यातनाएं सहीं । धार्मिक क्षेत्र में हमारे देश में ऐसे सायु हैं जिनके धार्मिक अन्प्डानों के कप्टों की तुलना में गांधीजी का जीवन आराम का है । लेकिन वे देशभवत केवल देशभवत मात्र हैं, उससे अधिक कुछ नहीं और ये साधु केवल आनुष्ठानिक कसरत करने वाले हैं और ये दोनों अपने गुणों में ही सीमित रह गए हैं ; लेकिन यह आदमी (गांघीजी) अपने उन सभी बड़े गुणों से भी बढ़ा है।"

## ञ्रपरिग्रहवाद

#### श्री रघुवीरशरण दिवाकर

अपरिग्रह (अ +पृरिग्रह) 'अहिंसा' की तरह एक नकारात्मक शब्द है, जिसका अर्थ 'परिग्रह का अनिस्तित्व' है और इस अपेक्षा से अपरिग्रह स्वतः व अनिवार्यतः वहां है जहां परिग्रह नहीं है । इस तरह 'अपरिग्रह' का भाव स्वतन्त्र व निरपेक्ष नहीं है, इसको व इसके विविध रूपों को जानने के छिए पहले यह जानना अनिवार्य है कि परिग्रह क्या है ? परिग्रह को समझना ही अपरिग्रह को समझना है और यही अपरिग्रहवाद को समभने की कुंजी है। परिग्रह क्या है ?

सूक्ष्म तात्विक दृष्टि से परिग्रह वाह्य जगत् का पदार्थ नहीं, आव्यंतर जगत् का एक तत्व है। वह एक भाव है; पर शुद्ध नहीं, मिलन भाव है। उसे मन का विकार भी कह सकते हैं। वही मूच्छी है, ममत्व है। ज्से आत्म-स्थित विवेक पर आच्छादित अन्यकार भी

कहा जा सकता है। वही आत्म-तन्द्रा है, आत्म-निद्रा है। परिग्रह की 'मूच्छा परिग्रहः' परिभाषा का अर्थ भी यही है। इस तरह भीतरी व्यक्तित्व के या मन-मस्तिप्क के स्वास्थ्य या संतुलन का हनन करनेवाले जितने भी दुर्गुण या विकार-भाव हैं, वे सभी परिग्रह-रूप हैं, मानस-जगत् का सारा मैल परिग्रह है। यों भी कह सकते हैं कि आत्मा की निराकुछता, शान्ति व सुखानुभूति को नप्ट करनेवाले कोघ, मान, माया, लोभ, हेप, मोह, अहंकार आदि सभी कपाय, सभी लेश्याएं, सभी असद्-वृत्ति यां परिग्रह ही हैं।

पर परिग्रह का यह सूक्ष्म तात्विक विवेचन हिंसा के विवेचन से अभिन्न ही है। संभवतः असत्य का भी ऐसा ही निरूपण किया जा सकता है। आखिर हिसा किसी की जान लेना या किसी को मारना-पीटना ही नहीं है। हिंसा के अंतर्गत आत्मा का सारा ही मैल या

विकार आजाता है, वयोकि उससे आत्म-हनन होता है, व्यक्तिय का ह्यास होता है, न्यूनाधिक मात्रा में तथा किसी-न-किसी रूप में 'पर' का ही नहीं 'स्व' का भी जत्यीडन होता है। इसी तरह असत्य भी वह सब कुछ है जो आरमा को उसके वास्तविक स्वरूप के भान या स्वानुभव से बिमुख या विश्वलित करे, और इस अपेक्षा से सभी द्विचार व मनोविकार असत्य ही है। ऐसी स्विति में, परिप्रह को पृथक् रूप में देखने-समझने के लिए और उस अपेक्षा से अपरिग्रह या अपरिग्रहकार की विशिष्ट मीमासा करने के लिए यह आवस्यक है कि परिग्रह को, यदि पदार्थ के पीछे परिग्रह का भाव पक्ष विद्यमान है तो पदार्थ-रूप में ही मान्य किया जाय। प्यम्त्य का यह आशय नहीं है, न हो ही सकता है, कि परिग्रह के हिसा-रूप को अमान्य ठहराया जाय। प्रत्येक अवस्था में परिग्रह हिसारमक है, अथवा जहा परिग्रह है वहा अनिवार्य रूप से हिंसा भी है। यहा ती यही अभिन्नेत है कि तरव चितन या दात्विक विस्लेपण की दृष्टि से अपना सामाजिक एव व्यावहारिक दृष्टि बिन्दु लेकर सुरपट्ट रूप से विचारणा व गवेपणा कर सकते की दिट से परिग्रह और हिसा का घुटाला न हो जाय, दोनों टकरायें नहीं बरन् अपनी-अपनी जनह रहनर एक-रूसरे का स्पष्टीवरण व विशदीकरण करते रहे। नीतिविद् परिग्रह को हिंसा से पृथक एक पाप, हिंसा के ही सद्दय एवं मूल याय तथा इसी अपेक्षा से अपरिग्रह को अहिंसा की तरह ही एक अलग मुल्यत मानता आया है । इसलिए यह प्यवनरण सर्वानुमोदित ही है। अपस्मिह को मूलकत न मान कर अहिनावत वा ही अग या अनुवृत मान्य रिया जाता त्रवयान दूसरी थी। पर यह पृथवकरण तभी निभ सकता है जब परिप्रह को मावात्मक ही नहीं, पदार्था-त्मक भी माना जय, और इस तरह परिग्रह का इतना व्यापक होने से रोका जाय कि वह स्वय हिंसा या ित्सा क दूसरी सज्ञाही बनकान यह जाय । इधर बह नियन्त्रण न कियाजाय तो उधर फिर अपियह को अहिंसा बनकर बैठ जाने से कैसे रोता जा सकेगा और तब तो विवार-जगत् में, त्रख-जितन व बात्म- निरीक्षण की दुनिया में अराजकता-सी आ जायगी।

महा हम इस परिमाधा पर आते हैं कि जो पदार्थ बारमा में मूच्छी या ममहब-मान छाता है, अपवा विस पदार्थ के निमित्त से मन, मिस्तान या आत्मा में निवार-मान प्रवेश करते हैं नह परिष्त हैं। इस मन्तव्य के अनुसार परिषह न बाहा पदार्थ ही हैं और न मूच्छी-ममदब-मान ही है, बह्नि वह मूच्छी-ममद भाग या विचारभाग है जो व्यक्ति वाहा पदार्थ वा पदार्थों के प्रति रखता है। इस तरह इस मन्नव्य के अन्तर्गत 'वाहा परिषद' एव 'अतरग परिषह' परिषदे के भेद नहीं है, अग या अवयव हैं।

#### सामाजिक दृष्टि

पर परिग्रह की यह परिमापा भी एकागी व अपूर्ण ही है, क्योंकि परिग्रह किस बाग्न जान से सम्बन्ध एलता है क्याएक क्य से उनकी कोशा साम नहीं है। दुबरे अक्से में बहा जा सकता है कि वैयनिक हैं दि हो यहां काम किया गया है, सामाजिक हैं प्रिट हीं नहीं और इसीक्य जो सत्य यहा है, वह अपूरा है।

नि सदेह व्यक्तिवाद एक सस्य है, चिर सस्य है। किसी भी युग में व किसी भी परिस्थित में उसकी वास्तविकता को उपेक्षित नहीं किया जा सकता । पर समाज भी हो व्यक्ति का ही एक प्रलब्बित रूप है, वह व्यक्ति से प्यक बहो है। व्यक्ति समाज का घटक (इनाई) है। वही समाज का जन्मदाता-विधाना है। अनेक व्यक्ति मिलकर अपने अपने ध्यक्तित्व का कुछ बदा एर जगह सप्रहोन करने ही एक वृहर् समाज-व्यक्ति का जाम दते है । यह एक आदान-प्रदान-मय व्यवस्था है. जिसके आगंत व्यक्ति स नी बैयनितक स्वतः यता का कुछ अश समाज के हायो में संपता है और मृत्य स्वरूप अपनी क्षेप स्वतन्त्रता में किसा दसरे की ओर से इस्त लेप न होने का बाश्वानन व सरक्षण पा ॥ हैं। भास्तव में इा पा स्परिक पराधी-नता वर ध्येय वै ितक स्वतवना ही है। समान नि र्गण के इस सुय को हम साझें ता समस्टिवादी विचार-घारा का हम व्यप्टि का जिराधी नही, सहायक व

संरक्षक ही पायेंगे और तब हम यह समझ सकेंगे कि अपरिग्रह की वैयक्तिक विचारघारा उनके सामाजिक संस्करण की छत्रछ।या में ही सुरक्षित रह सकती है। व्यवित में अपरिग्रह की भावना न हो तो समाज में अपरिग्रह की प्रतिप्ठा नहीं हो सकती; पर समाज की व्यवस्था अपरिग्रहवादी सिद्धांतों पर स्थित न हो तो भी व्यक्ति की अपन्यिहदत की साधना होना सामान्यतः असंभव ही है। समाज की व्यवस्था, राज्य का संचालन, उत्पादन व वितरण के आधारभूत सिडांत या नीति-नियम आदि अपरिग्रहात्मक भावना व विचारधारा पर निर्धारित न हों, परिग्रहवाद, पूजी-वाद, संग्रहवाद तथा तज्जन्य अर्थ-वैपम्य का चारों बोर दोर-दोरा हो तथा उसके परिणाम-स्वरूप शोपण व पर-अधिकार-हरण का वाजार गर्म हो, तव हम परिग्रहवाद से वचकर नहीं रह सकते। मोहल्ले या पास-पड़ीस में आग लगी हो तो उस आग को वृझाए विना अपने घर को भी भस्मसात् होने से कैसे वचा सकते हैं ? जिस हवा में सांस लें, वह जहरीली हो तो वहां कैसे जीवित रह सकते हैं ? इस तरह स्वयं अपरिप्रही वनने की समस्या में समाज-व्यवस्था को अपरिग्रह के आधार पर स्थित करने की समस्या भी आ जाती है, यह एक वस्तुस्थित है, और इस अपेक्षा से, व्यक्ति की दृष्टि से ही, नहीं, समष्टि की दृष्टि से भी, लघु व्यक्ति के दृष्टिकोण से ही नहीं, वृहद्-समाज-व्यक्ति के दृष्टिकोण से भी परिग्रह के प्रक्रन पर विचार करना अत्यावध्यक है। जवतक संकीणं वृत्त से निकल कर ऐसे व्यापक व विशाल दृष्टि-विस्तार के साय न देखा जायगा. परिग्रह का वास्तविक स्वरूप मुन्पष्ट न हो । और न अपरिग्रहवाद के विराट् तत्व क. साक्षा कार ही हो सवेगा।

स्पष्टतः जब हम इस अपेक्षा से परिग्रह के प्रवन पर विचार करेंगे तब जहां तक उसके भावपक्ष का सम्ब च है, हम देखेंगे कि वृहद् समाज-व्यक्ति के सारे मनीविकार परिग्रह ही हैं और इस तरह सामूहिक रूप से समाज—मानव-समाज—के लिए जो भी दुःखदायी विधि-विधान, नियम व कानून है, जो भी मानव-समुदाय

के सुख व कत्याण का हनन करनेवाली व्यवस्थाएं व संस्थाएं है, जो भी शोषण व अधिकार-अपहरण की प्रवृत्तियां है, सभी परिग्रहमुलक है।

यहाँ हम सहज ही इस निष्कर्ष पर आते है कि वही पदार्थ परिग्रह नहीं है जो व्यक्ति के मन में विकार-भाव लाये, वल्कि वह पदायं भी परिग्रह ही है जिसके ग्रहण या संग्रह से जोपण अथवा दूसरों के न्यायोचित अधिकार का अपहरण हो, समाज में विषमता फैले, एक का अति-लाभ और दूमरे की हानि हो, या समाज में दुःग व अयांति व्याप्त हो। मनोविकार या मूच्छाभाव का जहां तक प्रश्न है, वह व्यापक दृष्टि से सामान्यतः यहां है ही। फिर, अहिंसा की ही तरह अपरिग्रह मदाशयता में ही नही सतकंता व विवेकपूर्ण यत्नाचार में भी है। अतः यदि मन में शोषण की दुर्भावना न भी दीखे, परि-ग्रह के भाव-पक्ष की अनुभूति का स्पष्ट आभास अमान्य भी किया जाय, तो भी यत्नाचार के अभाव में परिग्रह है हो। सद्भावना या सदाशयता का वहाना, अथवा संग्रह के बीच जल में कमल की तरह अलिप्त होने या ममत्व-भाव-हीन हीने का दावा, परिग्रह का परिग्रहत्व नहीं मिटा सकता, परिग्रह-पाप को अपरिग्रहवृत मे नहीं बदल प्रमाद, असावधानी, अविवेक, अयत्नाचार, मृहता, ये सब यहां अपराध-मूलक हैं, परिग्रह-पाप-मूलक है। परिग्रह की परिभाषा

अंतर्जगत् व बाह्य -जगत् दोनों की अपेक्षाओं से तथा वैयक्तिक व समाजिक दोनों दृष्टियों से संतुष्टित व सामूहिक रूप से विचार करने पर अब हम परिग्रह की परिभाषा इस प्रकार कर सनते हैं—जिस पदार्थ के निमित्त से व्यक्ति में मूर्च्छा-ममत्व-भाव या अन्य विकार-भाव आए, अथवा\* उसका उपयोग, भोगोपयोग, ग्रहण या संग्रह सामूहिक दृष्टि से सनाज में विपमता-

\* यहां यह अभिप्रेत है कि इस परिभाषा में वताई गई दोनों शर्तों में से पृदार्थ जो भी कोई एक शर्त पूरी करे या दोनों ही शर्ते पूरी करे हर हालत में वह पदार्थ परिग्रह ही है। — लेखक पूर्णे व्यवस्था, सोषण पर अधिनार-अपहरण, अशान्ति हु ख, सपर्यं व विनाश नी प्रवृत्तियों को जन्म दे अयवा यदि दे विद्यमान हो तो उन्हें अझुण्ण बनाए ग्ले या उन्हें प्रोत्साहित नरे, वह पदार्थं परिष्ठह हैं।

हर पदार्थ परिग्रह नहीं है

उक्त परिभाषा म सहज ही यह सकेत निहित है कि कोई भी पदायं प्रत्येक अवस्या या परिस्थिति में, अथवा उसके उपयोग ग्रहण या सम्रह की हर स्थिति में, परिग्रह हो, यह आवश्यन नही है । उदाहरणाय जनमार्ग, पर्वत, वन, नदी, जलाश्चय आदि सार्वजनिक स्थान, सहज ही हर किसी ने उपयोग में आते हैं तया साधारणत इन्हें लेकर मोह-ममत्व की मावका के लिए स्थान नहीं है, साथ ही पथिव या नागरिक के नाते न इनके उचित उपयोग से किसी का अधि-कार छिनता है और न समाज में अध्यवस्था या विषमता फैलती है। अतः सामान्यत ये परिग्रह नही है। आकारा, बायु, सूर्य, नक्षत्र ये सभी प्रद्वति के बरदात भी ऐसे ही पदार्थ है । सार्वजनिक मस्याए मी इसी कोटि में आती है। राज्य द्वारा कर-ग्रहण, जन-हित के कार्यों के लिए जन-सस्याओ द्वारा अर्थ-सम्बद् आदि में परिग्रह-भावना होने से तथा जन-हिन का विरोध भी वहा न होने से गृहीत या सगृहीत घन-मपति परिग्रह नहीं है । इसी तरह सार्वजनिक ट्रस्ट, दुलियो, पीडितो या शरणाधियो की सहायता के लिए लोले गए कैम्प समाज-सेवियो या शहीदो ने स्मारन आदि के लिए सचित निधि, इन्हें परिप्रह नहीं कहा जा सकता । बास्तव में जिस पदार्थ के प्रति विशेषरूप से अपनेपन की भावना व तज्जन्य मोह-समस्त्र की अनुभृति न हो, अयदा विशेष रूप से परावेषन, उपेक्षा या विद्वेष की भावना भी न हो, उस पदार्थ की परिषह की सज्ञानही दी जा सक्ती । इस तरह हर पदार्थ परिग्रह नहीं है और जो पदार्च परिग्रह नहीं है उपयोग, ग्रहण या सग्रह परिवह-पाप नहीं हैं। यही नारण ह कि जिन महात्माओं ने अपरिग्रह पर विशोप रूप से जोर दिया है, यहा तक कि उसे मुख्यत भी बाता है, उन्होंने भी पदार्थ-महण गा स्वया निषय नहीं किया है। उनके अपिरवह-यन की माण यही हैं कि व्यक्ति वही या उतना ही पदार्थ महण करें तिवकते देनर उसना मन मोह-मतन, राय-डेप, आदि के विकार-भावा से विद्युत्प वा चलुमित न हो जबवा जो पदार्थ निताल 'जावरमक' हो, और इस वृष्टि से गृहस्थ तो बया महा-अपिरवही हो, और इस वृष्टि से गृहस्थ तो बया महा-अपिरवही हो, बार इस वृष्टि से गृहस्थ तो वया महा-अपिरवही

पर सार्वजनिक स्थान, कोष, निधि दुस्ट, सस्या, आदि परिग्रहत्व के वृत्त से बाहर ही है, ऐसा नहीं है। इन्हें लेकर भी मोह-ममस्य की भावना हो सबती है। सकीर्ण राष्ट्रीयता व प्रान्तीयता सादि की भावना-ओ के अतर्गत राष्ट्र या देश तथा प्रान्त आदि परिप्रह ही ह। बदिर मस्जिद, विरजाधर आदि धर्मालय भी परियह है, यदि उनकी आड में कोई स्वार्य-साधन होता है. अयवा यदि मानव-मात्र ने लिए उनने द्वार न खोल कर वर्ग-विशेष द्वारा अहकार-तृष्टि या अधर्म-माबना का आलम्बन उन्हें बना लिया गया है। इसी तरह ट्रस्ट, फण्ड, निधि, कोप आदि नाभी उपयोग विशद सार्वजनिक दब्टि से, पात्रता की अपेक्षा से, पक्षपात. राम-देप व प्रतिस्पर्धा ईच्या भाव से न विया जाए, उन्हें किमी भी तरह के दुस्वार्थ की पूर्ति ना साधन न बनाया जाए, अथवा उनके सप्रह या सचय में अनुचित दबाव जोर-जबरदस्ती भावि की जाय, ती वे भी ऐसा उपयोग या समह करनेवाले के लिए परिग्रह ही है । सारपर्ये यह कि जहा जिस पदार्थ से, चाहे वह पदार्थ सार्वजनिक ही क्यो न हो, निशेष आर्थिक या अन्य निजी स्वार्थ सम्बद्ध है, अथवा जिसको लेक्ट्र मन में निषम मावना है, दुरुपयोग है, अन्याय है, मोह-मच्छा है, समाज का अहित है, वह परिग्रह ही है। अपरिग्रहवाद का विराट् स्वरूप

'परिष्ठह' के इस निरूपण व विश्लेषण से सहज ही वर्षारेग्रह पर पड़ा हुआ परता हट जाता है और अपरिषह्वाद का एक विराट् स्वरूप समक्ष आकर हमें विमोहित कर देता है और हजार मुखो से शार-बार हमें यह आदेश देता है कि परिग्रहवादी व्यवस्था का अंत करो, अपरिग्रह के अधार पर व्यिष्ट व समिष्टि के जीवन को निर्धारित करो ,हर तरह परिग्रह को मिटाओ, परिग्रह की दासता से अपने को मुक्त करो। तब हम देखते हैं कि अपरिग्रहवाद जीवन की एक बड़ी-से-बड़ी साधना है और सचमुच एक ऐसा आशीर्वाद है कि यदि वह इस दुःखी व त्रस्त जगत् को मिल जाए तो यहीं स्वर्ग उतर आए। निश्चय ही वह एक सजीव प्रेरणा है, एक महत्तम आदर्श है। एक और अखण्ड मानवता यहां स्वयं प्रतिष्ठित है। सदसद्-विवेकमय वन्वुत्व-भाव, सहयोग, समता व स्वपरहित की भावना यहां प्रधान है। अहिंसा यहां ओतप्रोत है।

## संस्कार का ऋर्थ

श्री दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री

संस्कृति और संस्कार दोनों अनन्यार्थ गव्द है। प्राचीनों ने संस्कृति शब्द का बहुत उपयोग नहीं किया, परन्तु संस्कार शब्द का पुष्कल और एक से अधिक अर्थ में उपयोग करके उसे महा अर्थवाहक बनाया है।

अब हम संस्कार शब्द के दो मुख्य अर्थो का बिचार करें। 'योगसूत्र' के व्यासभाष्य में संस्कार शब्द का यह विवरण मिलता है, "वृत्तियां दो प्रकार की हैं, किलप्ट और अक्लिप्ट। इन वृत्तियों के कारण अलग-अलग प्रकार के संस्कार पैदा होते हैं और उन संस्कारों से फिर वृत्तियां उत्पन्न होती हैं। इस तरह वृत्ति और संस्कार का यह चक्र सदा चलता रहता है।" (यो. मू. १-६)

इस वचन से संस्कार शब्द का अयं आधुनिक मनोविज्ञान के रुझानों और छानों (Dispositions and Traces) के जैसा निकलता है; वयों कि 'योगसूत्र' के कत्तां ने "प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निज्ञा और स्मृति" (यो. सू. १-६) नामक पांच वृत्तियां गिनाई हैं और विलष्ट तथा अविलष्ट के रूप में इन वृत्तियों की द्विविधना का स्पष्टीकरण करते हुए "अविद्या, अस्मिता, राग, हैप और अभिनिवेश" (यो. सू. २-३) नामक पांच वलेख गिनाये हैं। मनोवैज्ञानिक मीमांसा की गहराई में पैठे विना उक्त वचनों का मेल साथ कर सोचने से परिणाम यह निकलता है कि योग-शास्त्रोक्त संस्कार पिड में बुद्यात्मक (Cognitive) राग-द्रेप प्रयत्नात्मक (Conative) और मुख-दुखादि भावात्मक (Affective) तीनों प्रकार के ख्झानों (Dispositions) और मन पर पड़ने वाली लापों (Traces, impressions) दोनोंका समावेश

होता है। लोगों में भी रुझान और आदत के अर्थ में संस्कार शब्द का उपयोग होना ही है। बौद्ध प्रतीत्यसमुत्पादवाद में संस्कार का उपयोग ऐसे अर्थ में हुआ है।

पर योगभाष्य में संस्कार दो प्रकार के माने गये हैं:
(१) वासना-रूप और (२) धर्माधर्म-रूप । संस्कार शब्द का यह वासनासूचक अर्थ भी लोक-व्यवहार में प्रचलित है। साथ ही योगभाष्य में यह भी कहा है कि शुभ अथवा ऊंचे संस्कार ऊपर उठाते हैं और अशुभ अथवा हलके संस्कार नीचे घसीटते हैं। ऊपर संस्कार शब्द का छाप, रुझान और वासना-सूचक जो अर्थ बताया गया है, उससे भिन्न चमक या 'पालिय' सूचक एक दूसरा अर्थ भी संस्कार शब्द का है। श्रातु के बरतनों को चमकाने की किया को संस्कार कहा जा सकता है। लेकिन अब हम देखें कि शिष्ट व्यवहार क्या है। शंकराचार्य कहते हैं—

संस्कारो हि नाम मंस्कायंस्य गुणाधानेन वा स्यात् दोषाप-नयनेन वा। (त्र. सू. शां. भा. १-१-४)

सारांण यह कि संस्कार दो प्रकार के होते हैं: (१) गुणाधान द्वारा और (२) दोपापनयन द्वारा और इस शंकर-वचन पर टीका करते हुए वाचस्पति मिश्र उदाहरण देते हैं कि "विजोरे के फूल में लाख का रंग सींचने से लाख-जैसे रंग का फल उत्पन्न होता है। यह हुआ गुणाधान द्वारा संस्कार का उदाहरण, और मिलन दर्पण को इँट अदि के चूर्ण से घिसकर साफ करने पर दर्पण का चमकने लगना दोपापनयन द्वारा संस्कार का उदाहरण है।" में नहीं जानता कि विजोरे के फूल का उदाहरण सच है या नहीं; किंतु संस्कार शब्द का यह गुणान्तराधान-सूचक अर्थ आयुर्वेद में प्रसिद्ध है ।\* चरक न पानी, अग्नि, आदि को गुणान्तराधान का साधन माना है। अग्नि आदि से धातु आदि में गुणान्तराचान की बात आधुनिक विज्ञान को मान्य हैं ही । सक्षेप में, कहना यही हैं कि सस्कार करने योग्य जड-पदार्थों को गुणाघान हारा और दोप दूर करके, यो दो प्रकार से, सस्कारी बनाया जासकता है।

सस्तार शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये जह वस्तु के सस्कार का उदाहरण दिया है किंतू हम तो यहा मन्ष्य के सस्कार का विचार कर रहे है। वैसे, स्नानादि द्वारा शरीर की शुद्धि के लिय शरीर-सस्कार शन्द का प्रयोग होता है, लेकिन यहा तो सस्कार शब्द से हमारा हेन् मनुष्य के मन, बुढि, भावना अहकार आदि को जमकान विकसित वरने से है।

जन्मना जायते शूद्र सस्वारीद्विज उच्यते ।

अर्थात मनप्य जन्म से दिज नही होना डिज को वह सस्वार द्वारा वनना है। इस वचन में स्मृत्युवन उपनयनादि सस्कार-यानी उनके हेत् स होनेवाले शास्त्रो क्त कर्म ही विवक्षित है। ऐसा न मानकर हम यह मानें कि उपनयन के बाद प्राप्त ब्रह्मचयं और विधार्जन भी विवक्षित है। साराश यह कि मनुप्यादि के एतद्विपयक समग्र निरूपण को विद्याल दृष्टि स ध्यान में लेकर सोचा जाय तो उपर ने अचन का ताल्पर्ययह निकल्ता है कि स्वभावन मनुष्य पशु अथवा पामर है और सस्कार द्वारा बह सच्ची मानवतावाला अर्थात् सस्वारी मनुष्य बनता है। मस्तार शब्द की इननी वर्षा से यह स्पब्द हुआ ही होगा कि सस्कार शब्द का जो चमक या पालिश सुचक अर्थ है वह बाहरी सफाई और सुद्धि का नहीं, विलक मानव-हृदय की उस चमक या श्रीमा ना द्योतक है. जिससे मनुष्य की रहन-सहन, भावना, बुद्धि सभी कुछ ममाज में दीप्त हो उठें। दूसरे शब्दा में, इसे यो वह सकते है, नि जिस शिक्षा से मनुष्य में समाज-हितल्क्षी और आध्यात्मिक गुणो का विकास और वृद्धि होनी है, उसी विभि काल प्रकर्ष भाजनादिभिङ्वाधीयन्ते । (चरक वि अ०१)

को सस्कार कहते हैं। जैसा कि शकराचार्य न वहा है, मान दोपापनयन या मान गुणाधान से नहीं, बल्कि सस्कार के लिये दोपापनयन और गुणाधान दोनो की आवस्यकता है।

सस्कार शब्द का यह अर्थ अग्रेजी के 'करूबर' दान्य के अर्थ से मिलता-जलता है। लेकिन हम शबर द्वारा किय गए अर्थ को पकड़ कर ही आगे वडें तो मानविक्त के सस्कार द्वारा दूर करन योग्य दोपो का अर्थ होगा, मन्द्य-जीवन के मूल से चिपटी हुई पशु-सहज स्वाभाविक वाननाए। जिनमें राग, द्वेप, मोह और भय मत्य है तथा अनेव पीडियो की अविद्या, भय और राग-द्रेप प्रेरित प्रवृत्तिया के कारण रक्त में भिदी हुई पामर जनो मे साधा-रणत पाई जानवाली बादतें भी है। सरलता के लिये हम मान सें कि इन दिविध दोयों ना अपनयन ही दोयाप-नर्यन है और भीता में देवी सम्पद के रूप में जिनकी गणना की गयी है उन और उनके सदश गुणी का चित्त में आधान, गणायान है। इस प्रकार के दोपानयन और गणाधान का नाम ही सस्वार है, आदर्श सस्कार की इस व्याख्या से सतीय मानवर हम आगे बढें।

इस प्रकार के सस्कार शुभ सस्कार है। साधारणत सस्कार शब्द का प्रयोग जुम सस्कारों के लिय ही किया जाता है और वही टीक भी है क्योंकि जिन्ह बद्युम सस्वार या कुसस्वार वहा जा सकता है, उनम चिल नी चमनाने या उज्ज्वल बनाने की क्षमता ही नही होती। जिसे योगजास्य में बेरेश कहा गया है, और अन्य शास्त्रा में जिसे दोष माना गया है, उस अविद्या भय, राग, इप से उत्पन्न वृत्ति और स्वभाव का ही योगशास्त्रीय नाम अशम सस्कार है।

अब मानव-चित्त के विकास की भिन्न मिन भूमिका के अनुसार व्यक्ति में शुगाशुभ सस्कारो का मिश्रण और शुभ सस्वारी में भी उच्च-नीच भूमिना का होना स्वाभाविक है। जहा एक समाज में उच्च भूमिका के शुभ सस्वारोबाले कुछ छोग होते हैं, वहा दूसरे अशुभ सस्कारो से युक्त लोग \*'सस्कारो हि गुणान्तरावानमुख्यते । तेगुणास्तो थान्नि सिन्नकपंद्योच मन्यन देश क्यल वासना भावना- भी उसमें पाये जाते हैं। किंतु किसी भी राष्ट्र के श्रेष्ठ विचारकों और द्रष्टाओं का प्रयत्न सदा यही रहता है, कि उच्चतम संस्कार ही आदर्श रूप में प्रतिष्ठित हों।

ऊपर संस्कार का जो विचार किया है, उससे व्यक्ति के संस्कारों का ही अर्थ निकलता है। प्राचीनों के गर्भाघा-नादि संस्कार-विचार में यही अर्थ निहित है और यह तो मानी हुई वात है कि शास्त्रोक्त विधि से नहीं, किंतु संस्कार-युक्त शिक्षा द्वारा किसी भी व्यक्ति के जीवन में तेज और चमक पैदा होती है। लेकिन अधिकतर लोगों के जीवन में यह चमक वाहरी ही रहती है। साथ ही, यह भी पाया गया है कि तीव्र संवेग-युक्त विशिष्ट व्यक्तियों के चित्त के समूचे प्रदेश में यह चमक या तेज गहराई तक उतर जाता है और उनके चित्त की समस्त भूमिकाओं को प्रदीप्त कर देता है। इस तरह ऊपर हमने जो अर्थ किया है, उस अर्थ के अनुरूप शुभ संस्कारवाले श्रेष्ठ मनुष्यों के प्रत्यक्ष सदाचार-युक्त उदाहरण से, उनके द्वारा दी गई शिक्षा-दीक्षा से और क्वचित् किसी उत्तरा-धिकार के वल से, उनकी संतान में ये संस्कार न्यूनाधिक अंश में प्रकट होते हैं, और चित्त की ऐसी संस्कारशील स्थिति जब किसी समाज में कई-कई पीढ़ियों तक बराबर बनी रहती है और निरन्तर विकसित होती रहती है, तो आगे चलकर वह उस समाज का स्वभाव वन जाती है, और उस दशा में हम उसे उस समाज का संस्कार कहते हैं। इसमें संस्कार शब्द के दोनों अर्थ निहित हैं।

वैसे मनुष्य-जीवन में दो प्रकार से परिवर्तन होते हैं: एक परिस्थित के दवाव के कारण, और दूसरे, मनुष्यों के अपने पुरुषार्थ के कारण। जीवन को टिकाये रखने के लिये परिस्थित के अनुरूप पिवर्तन प्राणि-मात्र के जीवन में होते रहते हैं। मनुष्य भी एक प्राणी है, अतः उसके जीवन में भी परिस्थित के अनुरूष परिवर्तनों का होना स्वाभाविक है। किंतु परिस्थित के ऐसे दवाव से होनेवाले परिवर्तन संस्कार नहीं कहलाते। जब मनुष्य समझ-सोच कर प्रयत्नपूर्वक अपने मन, बुद्ध आदि का विकास करता

है, तो उसका वह विकास ही संस्कार कहा जा सकता है।
यदि कोई व्यक्ति प्रयत्न करे, तो वह अपनी पामरता को
टालकर संस्कारिता प्राप्त कर सकता है और इसके
विपरीत, प्रमादवश अपने उच्च संस्कारों को छोड़ कर
वह पामरता के गर्त में गिर सकता है। महाभारत में
यथार्य ही कहा है—

प्रमादं वै मृत्युमहं व्रवीभि अप्रमादममृतत्वं व्रवीमि ।

अर्थात् -- प्रमाद के कारण उत्पन्न पामरता ही मृत्यु है और अप्रमाद से प्राप्त होनेवाली संस्कारिता ही अमरता है। यह कोई नियम नहीं कि ऐसी संस्कारिता व्यक्ति के जीवन तक ही मर्यादित रहे। जब किसी भी राष्ट्र के समयं और प्रतिभाशाली द्रष्टा अपनी अपूर्व आपं-दृष्टि से मानव-जीवन को उज्ज्वल और उच्च-तर बनानेवाले आध्यात्मिक, धार्मिक, धील-विषयक और सींदर्य-विषयक सत्यों का दर्शन करके संस्कार का एक आदर्श उपस्थित करते हैं तदनुसार उपदेश, शिक्षा और सदाचार द्वारा एक समाज को पामरता से उवार-कर संस्कारी जीवन के मार्ग पर छे जाते हैं, और ऐसे संस्कारी जीवन की नयी दृष्टिरूप फिलासफी से अनुप्राणित कवि, कलाकार, विद्वान्, वैज्ञानिक आदि उस राष्ट्र के श्रेष्ठ मनुष्य अनेकविध विद्याओं और कला-कृतियों का अभूतपूर्व भव्य मृजन करते हैं, तब उस समय सर्जन-समूह को और उसकी अधिष्ठानभूत जीवन-दृष्टि का अनुसरण करनेवाले उस राष्ट्र की जीवन-चर्या को यदि हम संस्कृति का नाम दें तो मेरे विचार में वह गलतंन होगा।

लेकिन यहां एकं बात याद रखनी है कि राष्ट्रीय संस्कृति के इस समग्र विकास में प्रमाण-भूत तत्त्व तो व्यक्तिगत संस्कारों का ही है। फिर ऊपर संस्कृति विकास का जो क्रम संक्षेप में सूचित किया है, यह नहीं कहा जा सकता कि संस्कृति का विकास सर्वत्र उसी क्रम के अनुसार होता है। किंतु यह सच है कि भारत में यह क्रम स्पष्टरूप से देखा जा सकता है।

<sup>\*</sup> हमारे यहां संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'कल्चर' और 'सिविलिजेशन' दोनों के पर्याय की तरह प्रयुक्त होता है। कुछ लेखक विशेषकर हिंदी के लेखक 'सिविलिजेशन' के लिये अक्सर 'सम्यता' शब्द का प्रयोग करते हैं।

भिन्न भिन्न राष्ट्रो में उनके इतिहास के विभिन्न कालो में जो संस्कृतिया प्रकट हुई, वे उन-कन् राष्ट्रो की भीतिक परिस्थितियो और ऐतिहासिक बलो हारा उत्यन्न भी माने समावकन्य विदोधता के परिणामस्वरूप, अपनी-अपनी साथ विद्याला वेचा हो हो, तो वह स्वामाविक ही है। य सारकृतिक विदोधताए उन-उन राष्ट्रों के व्यावतंक रूकणो-अंसी मानी गई और उन्हें अभिमान की वस्तु समझा गया, किंतु ससार के अक्षण-अक्षण देशो और सुना माना गया, किंतु ससार के अक्षण-अक्षण देशो और सुना माना गया, किंतु ससार के अक्षण-अक्षण देशो और सुना माना हो। यो, उन्होंन तो बल, अहिंता, अनावविक

सहिष्णुता, सब मृतो के प्रति भातृमाव या वात्माव, बाध्यात्मिकता, अमय, ज्ञान, विज्ञान आदि देवी सम्पद्-रूप सस्नारो पर ही अधिक जोर दिया है और विजिञ्ज सस्कृतियों के अलस्तरल में विद्यमान इन उच्च सस्कारों को ही प्रहुण करके इस गुग के महापुरंप भी अखिल मानव जाति की एन और अजित सस्कृति की रचना के जिये सत्तव यहादील रहे, स्वीमें ससार के भावी सुख और सानि की स्वामा निहित है।

अन**ः**—काशिनाय त्रिवेदी

#### वुद्ध-शासन के रतनः भदंत महावीर

भिद्य धर्मरिहत

भारतीय बुद्ध-शासन के दीर्थवालीन इतिहास की अमर कहानियों का न केवल भारत के ही प्रत्युत सारे एशिया महाद्वीप के जीवन, राजनीति, संस्कृति, धर्म, कला, पुरातत्व आदि के साथ एक अभिद और अद-भूत सामजस्य हैं। भगवान् बुद्ध पद चारिका के रूप से बद्यपि पश्चिम में मधुरा भीर कुरु-राष्ट्र की राजधानी युस्तकोदिवत से आगे नहीं बढे थे, पुरव में कजगला निगम के मुखेलुबन और पूर्व-दक्षिण में सल ज्वती नदी के तीर की पार नही कर पाये थे, दक्षिण में सुसुमार्गारिश आदि विन्ध्यानल के आसपास बाङ्गे निगमी तक ही गए ये तथा उत्तर में हिमालय की तलहटी के सापुग निगम और उमीरध्वन पदत से ऊपर जाने हुए नही दिखाई दिए थे, तथापि उन्हीं के समय में उनके शिष्यों ने सूनापरान्त प्रदेश के अन्वहृष्ट पर्वत पर रहते हुए वाणिज्ञाम (सम्मवन. बम्बई), समुद्रगिरि, मात्र विदि, मन् लकाराम आदि में बृद्ध-शासन का काफी प्रचार किया था। अर्थनदाचार्य का तो यह भी कट्ना है कि तथागत भी अपने पाच सी ऋदिमान् भिश्वो के साथ वहा ऋदिवल से गए थे। उहोने मार्ग में सत्यबद्ध पर्वतवासी एक परि-ग्राजक को भिक्ष-सध में दोक्षा भी दो थी, जिसने

बाद मे उस प्रदेश में बुद्ध शासन का पर्योप्त प्रचार किया था । कहते हैं, भगवान बुद्ध ने नमेंदा नदी त्या सत्यवद पर्वत की चोटी पर अपने पद चिन्ह भी अकित कर दिए यें। तक्षशिकानाराजा पुषकुसाति भी तथागत के पास आकर प्रकलित हुआ था । ग्वालियर, उज्जैन आदि प्रदेशो में महाकारपायन में बीड धर्म का प्रचार किया था। स्वय वे उज्जैन के राजपुरोहित के पूत्र थे । उत्कल (उडीसा) प्रदेश भी बद्ध शासन से अछता न या । कुनकूटवती (वर्तमान क्वेटा ) के राजा कप्पिन और उसकी स्त्री ने एक सी बीस योजन चलकर शावरही में भगवान ने दर्शन किए और प्रव्रजित हुए । ल्हावासियों का कहना है कि पंचागत ऋदिबल मे तीन बार लका गए थे। नेपाल का स्वयम्भू पराण तथागत के वहा पहचने के अनेक प्रमाण छपरियत करता है। बर्मावासियो का कहना है कि तपस्सु और ने भिल्लक बुद्धगया में सर्वप्रथम तथागत को भीजन कराया था और शिष्यत्व ग्रहण कर प्रसाद रूप में उनके देश मागकर बमा ले गए थे. जो सम्प्रति बहाके प्रशिद्ध चैत्य खेलगों पैगोडा में सरक्षित है। यवन-राष्ट्र के बौद्धों का विश्वास या कि बर्तमान इस्लाम के धार्मिक केन्द्र मक्का के काबा

शरीफ का पदचिन्ह तथागत का ही है (यं तत्य योनकपुरे मुनिनो चपादं) । उस समय इस्लाम धर्म का तो जन्म भी नहीं हुआ था। ऐसे ही स्याम देशवासियों का कहना है कि सत्यवद्ध पर्वत उनके यहां है, जहां भगवान् बुद्ध ने जाकर अपने पद-चिन्ह अंकित किये थ। जो कुछ भी हो, इतना तो स्पष्ट है कि बुद्धकाल में वृद्ध-शासन भारत की सीमाओं को लांघ नहीं पाया था। किन्तु अशोक-काल में वह लंका, वर्मा, स्याम, कम्बोज (कम्बोडिया), गान्धार, नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के दक्षिणी पांचों राष्ट्र, काश्मीर, सीरिया, मिस्न, मकदूनिया और एपीरस तक पहुंच गया। धीरे-घीरे कालान्तर में बुढ-शासन का प्रसाद चीन, तिब्बत, जापान, फारमूसा, वाली, मैक्सिको, कोरिया, जावा, सुमात्रा, मंगोलिया और साइवेरिया के विस्तृत प्रदेशों तक पहुंच गया । कावुल से होता हुआ यह अमर मंदेश यारकन्द, वलख, वुखारा, तथा अन्य-समीपवर्ती स्थानों में व्याप्त हो गया; किन्तु परिवर्तनशील संसार के नियमों का व्यतिक्रमण उसके लिए सम्भव न या। समय ने बीरे-बीरे जो उसे एक ओर बढ़ाया तो दूसरी ओर से समेटना आरम्भ किया । एशिया, यूरोप, अफीका और अमेरिका में व्याप्त बुद्ध-शासन ने अपनी जन्म-भूमि भारत से अपना प्रभुत्व हटा लिया। यद्यपि आज विच्व में दो-तिहाई वौद्धों की ही जनसंख्या है तथापि उसकी जन्मभूमि वाज उससे जून्य-सी है। इस समय भारत में जो बौद्ध वास करते हैं, उनकी जनसंख्या ढ।ई लाख से अधिक नहीं है। इनमें भी बंगाल, आसाम, उत्तर प्रदेश, मद्रास, बम्बई और अण्डमान तथा वीकानेर के प्रदेशों में ही अधिक बौद्ध वास करते हैं। किन्तु यह संस्था बौद्ध गृहस्यों की है । वीद्ध भिक्षु जो बुद्ध-शासन के संरक्षक, नेता एवं प्रचारक होते हैं, उनकी संस्या अत्यन्त अरुप है।

्यदि वंगाल-प्रदेशवासी और वर्मी चीनी, सिहली, तिव्वती, नेपाली अमेरिकी तथा अन्य वाह्य देशवासी भिक्षुओं को छोड़कर गणना की जाय, तो सारे भारत-वर्ष में आठ से अधिक भिक्षु नहीं हैं। किन्तु यह देखने में आरहा है कि दिन-रात बीख गृहस्थों की संख्या बढ़ती जा रही है और भारतीय शिक्षित नवयुवकों में प्रव्रज्या की कामना भी प्रवल होता जा रही है। यह मब उन्हीं दिवंगत भदन्त महावीर की देन है, जिन्होंने कि सन् १८५७ के भारतीय स्वातंत्रय-युद्ध के बीर सेनानी वावू कुंवरसिंह के कन्धों-से-कन्धा भिड़ाकर अंग्रेजों के साथ युद्ध किया था। उनसे पूर्व भारत में कोई भी बीद्ध भिक्षु न था और न भारतवासी ही बीद्ध धर्म की ओर आर्किपन हुए थे। बैचारे बीढ़ गृहस्य अपने मार्ग-प्रदर्शक भिक्षुओं के बभाव में अपने सारे वामिक अनुष्ठानों के प्रति उदासीन-से हो गए थे।

भवन्त महावीर का जन्म सन् १८३३ में विहार प्रान्त के भभुआ स्टेशन से तीन मील दूर रूपपुर नामक गांव में हुआ था। उनके वचपन का नाम महावीर सिंह था। गारीरिक गिवत से भी वे नामानुरूप सम्पन्न थे। एक हट्टे-कट्टे पहलवान और प्रसिद्धि-प्राप्त खिलाड़ी थे। लाठी, गतका, तलवार, भाला-वर्छी आदि चलाने में वे बड़े ही निपुण थे। उनका नाम मुनकर आसपास के चारों और के डाकू थर-थर कांपते थे। क्या मजाल कि उनके रहते गांव में डाका पड़ जाय या चोरी हो जाय? उन्होंने कई वार अनेक डाकुओं को छट्टी का दूध याद करा दिया था। कहते है, उन्होंने एक वार एक चीते को भी मार गिराया था।

उन्होंने अपनी पच्चीस वर्ष की नव-तरुणाई में ही अंग्रेजों को अपनी वीरता के अद्भृत चमत्कार दिखाए थे। अग्रेजों के साथ लड़ते हुए वावू कुंवरसिंह के वीरगति को प्राप्त होने के वाद जब उनके छोटे भाई अमर्रसिंह कहीं भाग गए, तब महावीरसिंह ने देखा कि अब अकेले काम नहीं चलेगा। वे अपने पहलवान साथियों के साथ दिल्प की ओर बढ़े और इन्दौर होते हुए महास पहुचे। मद्रास में पहलवानों का एक दंगल हुआ जिसमें महावीरसिंह को एक हज़ार रुपये पारितं। पिक में मिले। वे वहां से लंका की ओर बढ़े। वहां पहुंचकर वे अपने एक परिचित भारतीय

ब्पापारी के यहा गए, जिसने महाबोर्शनह का बडा आदर-सत्कार निया और अपने यहा सदा रहने के लिए प्रार्थना की। महाबोर्शसह लका में रहते समय प्राय बौढ

विहारों में जाया करते थे। धंतरे-धीरे बौद्ध शिष्टाचार एवं घमें की ओर उनका झुकाव होने लगा। वे भिक्ष-को के निमल चरित्र और सेवामाव के उत्हृष्ट कार्यों स प्रमादित होकर वहा के इन्द्रायम महास्यविर के पास जाकर प्रवर्जित हो गए। उनको पूर्वकी सारी धारणाय बदल गई। वे अब महाशेर्सिंह के स्थान पर श्रामणेर महावीर' वन गए। चन्ह अपने जीवन में पर्याप्त सुख और शान्ति की अनुमृति होने लगी । लका का भिक्षुजीवन उन्हें एक अद्मृत एकाग्रता और सयम के साम्राज्य की प्राप्ति जान पडने लगा। जन दिना उन्हें छका के श्रद्धालु दायको ने चीवर, पिण्डपात (मोजन), ग्ल्यानप्रत्यय एव रायनासन के साथ नारियल के बगीको से भी प्रजित तथा सम्मानित किया। वे निस्पृह महा मा जिन्होंने अब रुपया-पैसा भी हाय से छूना त्यांग दिया था, मलासतारिक वस्तुओं से क्योकर लिप्सा रखते? जो-जो वस्तुए उन्ह दान में प्राप्त होती थी, उन्हे वे भिक्षु-सम को सौंप दिया करते ये।

कुछ दिनो तक वे ठवा में रहकर अपने गूर इहासम महास्पविद और कोतम्बो के विद्योवय परिवेग के प्रधानावामं एव सम्बाधनक एक देनर श्रीमुमाण महास्पविद से परिचयादनक एक देनर पाण्डेचेरी तथा बरुवसा होत हुए छन् '१८८४ में रम्न पहुंचे और उसी वर्ष बहा उनकी उपसम्पवा हुई। उन दिनो मीब-नरेश के पकडे जाने के नारण वर्मा में पूर्ण असान्ति भी, जब घटन महान्ति को सीम ही नारत छोट जाना पढ़ा। जब वे बजनचा पहुंचे, उन्हें बीद सीमें-स्थानों के रखन की इस्ता हुई। वे बुद्धनमा, राजिंगिर और नाउन्दा वे दर्धन बरके सारताय पहुंचे। उन दिनो सारताय में न काई सारताय पहुंचे। वा दिनो सारताय में काई सारताय के सम्बद्धरी की ईट तक डोकर वनारस

जा रही है। इस कार्य ने उनके हृदय में आग उत्तादी। उन्होंने याडीवानों को बलपूर्वक रोगा और एन बरस भी आये नहीं दकने दिया। उन्होंने अधिनारियों की वतल्या कि सारनाय ना सरवहर बीडी ना पवित्र दीकेंस्यान हैं। यही पर तथागत ने घर्मसक-प्रवर्तन निया था। हम बीड यह नहीं देश सकते कि हुगारे पुष्पन्थान की हेंट उजाडी जाप और उसके महाद की ओर प्रधान न देश उसके प्रकृतिकही की मिटा दिया जाया। फल्डा-सारनाय के स्वक्टहर की रखबालों के लिए एक आदमी बैठा दिया गया और सारनाय की इंटो की रखा होने ल्यो। वस-स्व कि स्व प्रदेश प्रधान की इंटो की रखा होने ल्यो। वस-स्व प्रस्त कोई भी क्रांविश एक ईट तक उठाने का साहस

भदन्त महावीर सारनाय से नुशीनगर गए। उस समय क्यीनगर में थोडी बहुत खुदाई हो चुकी थी। परिनिर्वाण मन्दिर की गुप्तकालीन तपागत की विद्याल मृति प्राप्त हो चुकी थी। मूनिस्पर्श-मृद्रा में बैटी हुई भगवान की मृति एक वृक्ष के नीचे पड़ी थी। अचा ध्वसित स्तूप क्षीनगर के अतीत का गौरन बतलाते हुए खडा था। इन सबना दर्शन करके मदन्त महाबीर को कुशीनगर में एक भिन्नु विहार के निर्माण की इच्छा हुई। वे सनकी अभिलाया मन ही में लिए पून वस्त्र से सीट गए, किन्तु पूनः सन् १८९० में वे कुदीनगर चले आए और एक पतो की झौपड़ी में रहने लगे। धीरे-धीरे आसपास के प्रामीणो से जनका परिचय होगया। कसया ने कुछ वकील-मूस्तार भी उनके सहायक हो गए। उन्हीं दिनों करकते के प्रसिद्ध सेठ शीयत खेशारी ने उनके दायकत्व-भार की ग्रहण कर हरेक प्रकार से सहायता करनी प्रारम्भ कर दी। श्री क्षेत्रारी ने ही १५,०००) रुपये के दान से क्ञीनगर का बर्तमान बौद्ध विहार सन् १९०२ में बनकर तैयार हुआ, जो इस सदी का प्रथम मारतीय बौद विहार है।

यदन्त महाबीर के समय में ही प्राय कुशीनगर के सण्डहरोको खुदाई का नाम प्रारम्भ हुआ। परिनिर्वाण स्तूप उनके सामने ही खोदा गया बीर उनके सुप्ताव के अनुसार ही पुनर्निर्माण का विचार हुआ। किन्तु पुरातत्व-विभाग से आज्ञा मिलने में विलम्ब होने के कारण उनके जीवन-काल में वर्तमान् स्तूप का निर्माण न हो पाया। फिर भी इसके शोध एवं निर्माण-कार्य में उनका बहुत बड़ा हाथ था। भूमिस्पंश-मुद्रावाली भगवान् की मूर्ति की मरम्मत उन्होंने स्वयं अपने रुपयों से कराई।

क्ञीनगर के निकटवर्ती ग्रामीण उन्हें 'मोटे वावा' फहा करते थे, वयोंकि वे शरीर के मोटे और शवितमान् थे। जिस वोझ को दस-दस वारह-वारह बादमी मिलकर भी नहीं उठा सकते थे, उसे वे अकेले और एक ही हाय से उठा लिया करते थे। कुशीनगर के वर्तमान विहार के सामने का बड़ा घण्टा जो पांच-छ: आदिमयों के उठाने पर ज्मीन भी नहीं छोड़ता था; उन्होंने अकेले ही उठाकर लटका दिया था। कहते हैं, पास के एक ब्राह्मण गृहस्य की भैंस को उसके स्वामी के अतिरिक्त दूसरा कोई पकड़ नहीं सकता था। ब्राह्मण रात्रि में भैंस को खोल देता था, वह रात भर किसानों के खेत चरकर प्रातः घर लौट आती थी। जो उसे पकड़ने का प्रयत्न करता था, उसे वह सीगों के वल उठाकर पटक देती थी। भदन्त महतीर उनत भैंस की चर्चा सुन चुके थे। अकस्मात् एक रात वह भैस खेतों को चरती हुई विहार के पास वाले खेतों में आकर चरने लगी। खेत चरने की आहट पाकर जब वे विहार से वाहर आए तो भैस देखते ही उनकी ओर दीड़ी; किन्तु उन्होंने सतर्कतापूर्वक उसके सींगों को पकड़कर नीचे की ओर ऐसा दवाया कि वह वही हांपती हुई बैठ गई। उन्होंने रस्सी मंगाकर उसे वांवा और प्रातः उसके मालिक को वुलाकर उसके हवाले कर दिया। कहते हैं, उनके इस काम से वह भैंस इतना डर गई कि फिर रात में उधर आने का नाम भी नहीं लिया ।

वे प्रविज्ञत होने के दिन से लेकर जवतक स्वस्थ रहें कभी कोठरी के भीतर नहीं सोये। रात्रि में उनकी चौकी विहार के वरामदे में विछती थी और दिन में विहार के वाहर वरगद के पेड़ के नीचे, जहाँ लोग उनके उपदेशों को सुनने के लिए आया करते थे। वे वरगद के नीचे वैठे हुए आगत् श्रोताओं को वर्मोपदेश दिया करते थे।

भदन्त महावीर पापियों का मुंह भी नहीं देखना चाहते थे। जिस प्रकार स्वयं निर्मल चरित्र, संयमी तथा तपस्वी थे, वैसे ही लोगों का आदर करना जानते थे। पास के गांव के एक गृहस्थ ने अपनी विवाहिता वहन के आभूषण वेचकर पैसे बना लिए थे। इस बात का उन्हें पता लगा। एक दिन उसी गृहस्थ को खण्डहर में टहलते हुए पावर उन्होंने उसे बुलाकर कहा, "भाग जाओ, मै तुम्हें इस पवित्र खण्डहर में नहीं देखना चाहता, वह महापापी है जो अपनी बहन के आभूषणों को वेच देता है।" उस गृहस्थ पर इन बातों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उनके पैरों को पकड़कर भूमि पर गिर पड़ा और क्षमा मांगी। घर जाकर उसने अपनी बहन के लिए पुन: उन्हीं रुपयों से नये आभूषण बनवा दिये।

भदन्त महावीर ने बुद्ध-शासन के भारत में प्रत्यावर्त्तन के लिए जहां विहार की स्थापना की, वहां भिक्षुओं को वाह्य देशों से बुलाकर, भारत में रहने का भी प्रवन्ध किया। श्री चन्द्रमणि महास्यविर उहीं के बुलाए और रखे हुए अराकानी भिक्षु हैं, जिन्होंने उनके बाद भारतीय बुद्धशासन के प्रचार में पर्याप्त सहयोग दिया है। भदन्त महावीर ने न केवल कुशीनगर में, अपितु सारनाथ में भी वुद्ध दिहार की स्थापना की । सारनाथ में वर्तमान् वर्मी बौद्ध विहार की प्राचीन इमारत उन्हीं की कृति है। बंगाली भिक्षु कृपाशरण महास्यविर आदि को उन्हींने प्रेरित करके लखनऊ आदि स्थानों में बौद्ध विहारों के निर्माण का प्रयत्न कराया या । वृद्धगया-मन्दिर के पुनरुद्धार एवं जीर्णोद्धार के लिए भी उन्होंने कम प्रयत्न नहीं किया था। उनके जीवन का एक-एक दिन महत्वपूर्ण कार्यो एवं घटनाओं की विचित्र शृंखला से आवद्ध है। वे जिस परम उद्देश्य को लेकर प्रव्नजित हुए थे, उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। सारतीय बुढ-शासन के

प्रत्यावर्तन निमित्त उन्होने जो-जो नाथ निए व सव उन प्रारम्भिक दिनो के लिए, महान् एव नठिन थे।

गत राताच्यी ने प्रथम उत्तर मारतीय मिछू भदत्त प्रहावीर ने अपने सारे नर्तन्यो ना राज्य नर, बुद्ध शासन ने अपने नायों का सम्यादन कर, नर् १९१९ कृषेत्र मास में शुक्त एस नी दितीया नो परिनयान-मूमि कुदीनगर में सरा ने छिए अपनी बाखें मुद छी। उननी चिवा जही के द्वारा परिशोधित मृप्ति पर बनाई महें जौर भारत में बुद-धासन के प्रत्यावतंक उन महान, अगर एवं असिट बुद पुत्र के सद्गुणों की परिश्रुद ज्योति अभि विश्वा के साथ मिरकर और भी चमर उठी तथा उनके भौतिक घरीर को स्पर्ध करती बह अपि विश्वा यह कहती हुई उर्ध्वगामिनी बनी रही—ं के भारतीय बुद-शासन के अभर रहन थे।"

#### ग्राम्य कहानियां श्रोर कहावतें

श्री गौरीशक्र द्विवेदी 'शंकर'

हिन्दी राष्ट्र मापा स्वीनृत हा चुनी है और समूच ' मारतवर्ष नी राज-भाषा बनने बाकी है। इससे हिन्दी भाषा-मापियो ना ननंब्य निनने ही अचा में और भी अधिन बढ़ जाता है। पूज इसके नि बह राष्ट्र भाषा बने, हमारी निम्मेदारी है कि हम सब उसनी हर प्रनार से बतने भोग्य बनावें।

जब हम साहित्य और भाषा वे प्रमित्र विदास वा अध्ययन वरते हैं तो स्पष्टतया यह पाते हैं कि जनपदीय भाषाओं से ही हमारे साहित्य की अधिवृद्धि हुई हैं, विन्तु हमर हमारी साहित्य की प्रमाति में जनपदीय प्रमायाओं के जरेसा रही। हो कारण हमारा पट्ट नद्धार स्कीर्थ प्रतीत होना है। उचतव यान भाषाआं वे विदास सहतत होना है। अवतव यान भाषाआं वे विदास सहत की प्रकास में कावर स्थवहत न दिया वायेगा सहतक हमारी भाषा सभीव न यन सकेगी।

पानीण साहित्य म लोज गीत, पहानिया बहावतें, इस्त-क्याए आदि भरपूर विवामन है। इधर विगत पन्नीस-गीस वर्षों से गुजरात, अवय और शुदेन्छड़ म उननो एक्तित बरने वा कार्य भी पन रहा है. निन्तु बेसी तरपता से यह बायें होता पाहिए या मही हो सबा है। सहयोग और प्रोत्माहन वा बमाव ही इसकी असकलता के बारण हो सकते हैं।

विदेशी मापात्रा के साहित्य में छोत-यायाओ सम्बन्धी नितनी ही पुस्तकें मिलती है। बन-नापा में 'हिन्दुस्तानी उपत्रभा' और गुजराती में 'सीराप्ट्रनी रसभारा' नामक पुस्तकें प्रकासित हो चुकी है। हिन्दी में प्रविद्यान में पूर्वी से पावर्ष माग में भी सामनरेस विपाठी ने बाम-गीलो की वर्षा करते हुए अवधी गीनो पर प्रकास बात्ता है, गोरखपुर के चलरोक्जो ने भी 'पाम-गीलाजीक' म उख और के भीना के रूप में अपनी एकनाए प्रकाशित की हैं। पठ शिवसहाय चलुवेंदी देवरी (सागर) ने बुल्केल्खडी बाम-कहानिया नियमित कर से 'मयुनर' में हिन्यी भी। उनकी हुछ कहानियों ना एक समह सम्बद्ध से, दुसरा दिल्ली से प्रकाशित भी हो गया है। भी हप्णा-नन्द गुन्त तथा 'लोक वार्ता परिपद् छलापुर' भी हस दिया में प्रयत्यों हो हम पत्तिवयों के लेकक में भी जियत २० वयों से पत्र-गिकासा, सिमनन्दम प्रमा, विद्योगको और बुल्केल-बैमक में इसकी वर्षा की है। सब समम सा गया है जब सम्मिन्द सिकत से यह वार्ष और भी ली दिया। बहाता आया।

विद्यन्त्य बापू प्रामी का लुमार करते, प्राम साहित्य का उद्यार करने और प्रामा में बहते का अनर सदेश के रहे हैं। उन्हांने क्षत्री प्रकार अनुभव कर किया या कि प्रामों में अब भी मारलीय सम्हन्ति, गीना, क्षा-नियो, कहाबजी, क्ल-क्याओ, रीति विचाना और परि-पार्टिया के रूप में विद्यमान है। परिचमी सम्मता और दाह्य सम्पर्क से जिनना भूमाग अपूरा रह गया या जिसक्षर नई रोमानी वही परी, वहां मारतीय सम्हति की नियीन-विद्यो क्य में हम अब भी पा सन्दे हैं। इमारे प्राम-नीत तो इसके ज्वलन उराहरण है ही।

नागरिक और बामीण समुदाय के बीच जो खाई

बन गई है, उसको पाटने के लिये साधारण हिन्दी-भाषा-भाषियों और मुख्यतः साहित्यकों को अग्रसर होना चाहिए। अव तो अपनी राष्ट्रीय सरकार से भी इस सम्बन्ध में सहायता प्राप्त की जा सकती है; किन्तु आवश्यकता यह है कि हम स्वयं स्वावलम्बी वनें, अपनी अयोजनाएं अपने आपं वनाकर आगे वढावें। जब हम इतना कर लेंगे तो हमको प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों से भी राष्ट्र-भाषा के उत्यान में अवस्य ही पूरी सहायता मिल जायगी, ऐसी आशा है।

ग्राम्य कहानियां केवल ग्रामों में ही कही जाती हों, ऐसी बात नहीं है। उनका सूत्रपात यद्यपि होता ग्रामों ही से है, किन्तू उनका साम्राज्य देश-व्यापी हुआ करता है। उदाहरण के लिये वुन्देलखंड को ही लीजिये। गांव-गांव और घर-घर लड़के-बच्चे संघ्या ही से घर की वड़ी-वृढ़ी दादी को घेरते हुए और कहानी कहने के लिये आग्रह करते हुए दिखलाई देते हैं। गांवों में अलाव (जलती हुई आग) क्लव का काम देते हैं, शीतकाल में रात्रि का भोजन करने के पश्चात् और ग्रीव्मकाल में अयाई (वैठने का स्थान) पर ये कहानियां हुआ करती

हैं। ग्रामीण समाज में कहानीकार और अल्हैत (आल्हा गानेवाला) श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखें जाते हैं।

वुन्देलखंडी कहानियां रोचक, मार्मिक और इतनी भावपूर्ण होती हैं कि श्रोतागण मंत्र-मग्य की भांति उनको सुनते रहते हैं। केवल एक व्यक्ति हूंका (हां, हां) देने के लिए निश्चित कर दिया जाता है। शेष श्रोतागण दत्तचित होकर मुनते हैं। ये कहानियां प्रायः अर्द्ध रात्रि तक चला करती हैं। कभी-कभी कहानीकार उन्हें इतना बढ़ाता जाता है कि तीन-तीन,चार-चार रात्रि में वे समाप्त हो पाती हैं। कुछ-कुछ कहानियां जैसे 'सारंगा सदावृक्ष' 'संत वसन्त' और 'गोपीचन्द भरयरी' ऐसी भी होती हैं जिनमें कहानीकार सस्वर दोहा, चीवोला और कवित्त आदि भी वीच-बीच में गा देते हैं। इससे उनकी रोचकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

ग्राम्य कहावतें खेती-वाड़ी, वर्षा आदि का ज्ञान कराने में ग्रामवासियों को सहायक होती हैं। हमें विश्वास है कि लोक-साहित्य की ओर अधिक घ्यान दिया जायगा और उसकी अमूल्य निधियां, जो गांवों में विखरी पड़ी हैं, विस्मृति के गर्त्त में विलीन नहीं होने दी जायेंगी।

## हरिजनों को वे कभी नहीं भूले

स्त्र० महादेव देसाई

सरोजिनी देवी गांघीजी के आशीर्वाद के लिए आई हुई हाल ही में विवाहित जोड़ी को लाई थीं। उस लड़की को गांधीजी तिलक स्वराज्य-फण्ड के जमाने से जानते थे। उसने उस समय बहुत सा रुपया जमा किया था और अपने अधिकतर गहने दे दिये थे।

"तुम्हें वे दिन याद ह न ? तुम्हारी शादी से मुझे ख़ुशी हुई। पर यहां से तुम्ह मुक्त आशीर्वाद नहीं मिलेगा। तुम्हें पहले हरिजनों को आशीर्वाद देना होगा।"

वह वोली, "किस तरह दूं? आपको चाहिए सो मांग लीजिए।"

"पर मैं कैसे मांगूं ? तुम्हें तो अपने पति की आजा छेनी चाहिए। मुझे तुम दोनों के बीच झगड़ा नहीं कराना है।"

"हम दोनों के वीच झगड़े को कोई गुंजाइश ही नहीं।" उसने दृढ़तापूर्वक कहा। सारी मुद्धली खिल-खिला कर हंस रही थी और उसनें अपनी सोने की चूड़ियां गांघीजी के चरणों में रख दों। 'महादेवभाई की डायरी'

भाग ३,

## **ह** कसोटी पर

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी की तीन पुस्तके ज्ञानगीमा सम्पादक—नागयण प्रसाद जैन पृष्ठ ७५६, सजिल्द, मृत्य ६)

गहरे पानी पैठ हे अबोध्या प्रसाद गोयलीय

पृष्ठ २२४, सजिल्द, मूल्य २॥)

पंच प्रदीप विता सम्रह, लेक्का-सान्ति एम॰ ए॰, पुट्ट ९४, सजिल्द सूल्य २)

भारतीय शानपीठ, वासी को प्रवासन के क्षेत्र में आपे अभी बहुत दिन नहीं हुए हैं, परन्तु इसो बीच में अपनी सुरांच और सुपडता की छाप उसने हिल्यी-माठव के मन पर लगा दी है। साहित्य के रुख्य को उसने बचनी दृष्टि से ओसल नहीं होने दिया है। आज की आलोच्या पुस्तक हर दृष्टि से पठनीय और मननीय है। क्या गटमप और क्या सामग्री, हर दृष्टि से उनकी उपादेयना स्पट हैं।

हान गोगा मोतियों नी माल है। याई नारायण प्रवाद ने सवार के महापूर्वयों ने मान, अनुभव और सापना के सार को एक स्थान पर हक्ट्रा नर-दिया है। इन मुस्तिया में सारका सम हो नहीं है सामिक जीवन को जीने की प्रेरणा भी है। विवादों की विविचता और समना, अनुभव की व्यापनता और एक्सता, इन सब में सख्य ने एक हो मूठ रूप के वर्षन होते हे और बहु मनुष्य बनने नी प्रेरणा। भाग माग' उस प्रेरणा से सप्पर है। इस कोव ना हर पर में रहना उतना हो आवस्यक है वितना अन ना।

गहरे पानी पैठ उन अगर नपाता ना सबह है जिन्हें भी अयोध्याप्रसाद गोमलीय ने मुख्यतो के चरणो में बैठ कर सुना, प्रयो में पडा और अपने हिये की आंको से देसा है। ये कवाए सात्र नाल्यनिक

गहीं हैं, नधीर मत्य हैं और इस बात वा प्रमाण है कि सत्य करवात से अद्भुत होता है। ये राष्ट्रविष्य एवं साय मामिल रोचन, उत्प्रेरल और मधुर है। ये मुख्य की आंचे सोलते ही नहीं, उन्हें स्नेह और करवात है। अपान करवात है। कि मधुर है। ये मुख्य की आंचित से नगहें है। हमार पे छे अपुन की गहरीह और ह्वय को सरसता है। भाषा उनसारों और सैली महत्व हैं, अटिल नहीं। इस सपह की बुछ कहानिया तो करा की दृष्टि से बड़ी मुन्दर कर पड़ी है। उदाहरण के लिए 'विहारीलाल', जिसे हम भूकर नहीं तो वर्षों पहरे 'इस में पड़ा भा मुक्त गहीं को वर्षों पहरे 'इस में पड़ा भा मुक्त नहीं को वर्षों पहरे 'इस में पड़ा भा मुक्त नहीं को वर्षों पहरे 'इस में पड़ा भा मुक्त हम सुक्त नहीं को वर्षों पहरे 'इस मानव का श्रेट कर है। वस ही अच्छा होता दि लेका 'इनर की कमी' ऐसी कुछ कहानियों छोड़ देना।

पुस्तक एक साथ इतिहास, क्यामग्रह और ज्ञान का भडार है। जो पडना जानते हैं उन मबको इसे पडना बाहिए।

पंच प्रदीप में नवीदन कवियमी सुन्नी सानित एम० ए० वी कविताए समझित है। इन विजानों म भाववानभीय ने साय अभिव्यक्ति भी कुमतना स्पट दिवाई देती हैं। इनमें मानव ने सुन्द-दुख, आसा-निराम। और कामना-भावना के सुन्द-है। विचारा की सहनता और मुस्मना ने साथ-साथ हृदय की तक्या देवेबाली मानिकता से में ओमप्रीन है। इनमें याचि मानवा का अनिरेक्त दिखाई देगा है, परन्तु जीवन के कठीर सत्य सा उतने देन नहीं पूर किए है। यह ज्याब मुम्म है और हमें आसा दिकाता है कि महादेशी और वच्चन की परपमा सालित में कहानों में सुर्यका ही नहीं, स्वस्य भी रहेगी।

भाषा में स्वामाविक्ता, शक्ति और माधुर्य है,

टमलिए प्रवाह है। यह जब और मैंजेगी तो प्रवाह और गतिमय होगा ।

लेखिका कविता को हृदयशुद्धि का माधन मानती है। हमें प्रमन्नता है उनकी रचनाएं इस दावे की पुष्टि करती है। यह कोई कम बात नहीं है। उदाहरण के लिए यह पद देखिये:

यदि प्रणय मुझे देने आया,
अपनेपन के प्रति अहमाव।
यदि पूर्ण कर रहा वह केवल,
नारी की काया का अभाव।
यदि त्याग, मत्य, जनमन के प्रति,
दे रहा मुझे वह है विरक्ति।
यदि द्वेप, त्रोध की कीटा की,
दे रहा मुझे वह नई शक्ति।
तब वयों न विश्व की नारी को हो सके मान्य मेरा निर्णय।
भेरी सीमा है नहीं प्रणय।

विज्ञान का संचिष्त इतिहास : अनुवादक—श्री कृष्णानन्द द्विवेदी, प्रकाशक-युग प्रकाशन, १ फैज वाजार, दिल्लो, पृष्ट ३०१, मूल्य ६।)

प्रस्तुत पुस्तक सर टैम्पियर की 'ए बार्टर हिम्ट्री आफ् साइन्स' का अनुवाद है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो चुकी है और यह आवश्यक है कि उसका भंडार हर क्षेत्र में भरा-पूरा हो। विज्ञान पर मौलिक पुस्तक लिखने में तो समय लगेगा। तवतक उत्तम ग्रंथों का अनुवाद करना उचित हो नहीं आवश्यक भी है। यह पुस्तक उसी आवश्यकता की पूर्ति-मात्र है।

लेखक की मान्यताओं और निष्कर्षों से किसी को मतभेद हो सकता है पर उमने सृष्टि के आरम्भ से लेकर विज्ञान की प्रगति पर जो प्रकाश टाला है वह उपादेय है। न केवल विद्यार्थियों के लिए ही वरन माधारण पाठकों के लिये भी यह उपयोगी है। अनुवादक ने अपने दायित्व को समझा है और मूल पुस्तक की आ़त्मा को मुरक्षित रखने का मफल प्रयत्न किया है।

लेखक विज्ञान को शैतानी शक्ति से अपरिचित नहीं है। युद्ध निवारण का पक्षपाती है। वह मानता है कि यदि मनुष्य युद्ध का निवारण कर सका तो "परमाणु वम भी अन्ततोगन्वा मानवता के लिए अभिशाप नहीं विल्क वरदान भी सिद्ध होगा।" पर यह 'यदि' कितना वड़ा है। एक गांधी उसे न जीत सका। क्या अनेक गान्धी एक माध सम्भव है वया उनकी शिवत एक मानव में सम्भव है वहीं तो विज्ञान मनुष्य का शत्रु ही रहेगा, पर आशा तो बलवती है। किसी भी अवस्था में निराश होना शोभा नहीं देता।

### नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद की दो पुस्तकें

वापृ के पत्र मीरा के नाम : पृष्ठ मंग्या ४००, मजिल्द मूल्य ४)।

स्त्री पुरुप-मर्यादा . छे० श्री किशोरलाल मशहवाला, पृष्ठ १८८, मूल्य १॥।)

जैसा कि नाम से प्रकट है प्रथम पुस्तक में महातमा गाधी ने श्रीमती मीरावेन को जो पत्र लिये थे वे संग्रहीत हैं। इसमें कुल ३८६ पत है और वे ३१ दिसम्बर १९२४ में लेकर १९ जनवरी १९४८ तक लिये गये हैं।

पत्र-साहित्य का किमी देश के इतिहान में महत्वपूर्ण स्थान होता है। वे समाज और व्यक्ति की स्थित को जितना मही चित्रित करते हैं उतना व्यवस्थित रूप से लिखा गया इतिहाम कभी नहीं करता। इम दृष्टि में इन पत्रों का मूल्य वहुत अधिक है। वे महात्माजी तथा मीरावेन के २३ वर्ष के अपूर्व सम्बन्ध पर हो प्रकाश नही डालते, न उनमें मात्र एक आध्यात्मिक पिता का अपने ठोकर मात्र हुये वच्चे को दिया हुआ अत्यन्त मादा, सीधा और प्रेम-पूर्ण उपदेश है, विन्त उनमें है उस महत्वपूर्ण युगका पारदर्शी इतिहास, सहात्मा के विकसित होते हुए मानवी हदय का मार्मिक चित्र और उनकी ज्ञान-पिपासा का वह स्रोत जो उनकी आध्यात्मिक खोज का आधार है। उनमें वापू की व्यापक और पैनो दृष्टि मुरक्षित है।

ये पत्र बड़े सरल, सरम और मार्मिक है। वे गागर में सागर का सुन्दर उदाहरण है। वे राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है। स्त्री पुरुष-मुर्यादा का विषय भी नाम से राण्ट है। उसने लेखन मश्रह्मालाजी अपने बैजानिक और व्यापन दृष्टिकोण ने लिए प्रसिद्ध है। इस पुस्तन में उनके रुपो के सम्बन्ध पर लिखे हुए अनेन केशों का समह है। लेखान पर लिखे हुए अनेन विभारपार और सार्विक प्रेषणा नो क्षाय है।

यह विषय बहुत कोमल है और उसको समझने और समझाने के लिये अवर्व समय की आवश्यकता है। साथ ही उस पर व्यापक इप्टि से विचार करना आवश्यव है। बिद्रान लेखर ने इन वालों का सफलना पूर्वन ध्यान रखा है। उन्हान बहाचय बील पूर्वा सहिशक्षा, स्पर्श विवाह का प्रयोजन लग्नप्रया मन्तरि नियमन और काम-विकार सभी सम्बन्धित विषयो पर समिवत विस्तार से चर्चा की है और कही भी अनुवित सकीर्णता या आधुनिक उच्छाह्वलता का समर्थन वही किया है। उन्होने विषय को समझकर मध्यम मान को ग्रहण थरने की प्रेरणा नी है। वेन सहशिक्षा के विरोधी हैं. न सन्तित नियमन के 1 वे उन्हें इस वडे सवाल वा वि "स्त्री पृष्य वे परिचय स्पर्श और सम्मोय भी मर्यादा क्या होनी काहिए ' एक अग मानते है और इस सम्बन्ध में वे परस्त्री या परपृष्प के साथ एकान्तकास व करने के नियम का कठीरता संपालन बारने के पश्चपाती है।

उन्होंने इस पुनन म अनन महायपून प्रस्त उठावे हैं, अनेक शाबुक क्षणाये हैं और अनेना अमा का निवारण किया हैं। सबसे बदनर उन्होंने हम विकारण निजे हैं। तिस्ये एक नया द्वीटनोय दिया हैं। प्रस्त-इसी हैं। प्रमुख्यासारण दिवान हैं।

प्रस्तुत पुस्तन ना विषय श्री सबस्नाजा की उपरोक्त पुस्तक ने समान है और ठेसक ने प्राव उन्हों तत्वों पर जिनार किया है जो मामस्नाजांनी में पुस्तन म हैं। दृष्टिनोंच में भी निरोप अत्तर नहीं है। हा, दिवाकाजी में कही-कहीं बातवाष्ट्रण साहित्यन प्रस्तावाजी और ग्रीडीमुन्त भाषा ना प्रवीव क्बिया है जो ऐसे नाजून निषय के लिये ठीक नहीं है। वैसे जहोंने मध्यम मार्ग को क्षी यहण करने की सूचना वी है। उन्होंने स्त्री पुरुष की समानता पर जोर देते हुए उनने सम्बन्ध के वैज्ञानिक अध्ययन का सुप्ताव दिया है। कामिशसा को हत्वा न सानकर उसकी उनित शिक्षा इस प्रक्त ना बहुत हुद तन हुल कर सकती है ऐसी उनकी सानवता है।

पुस्तक विचारीसेजक सामग्री से परिपूर्ण है।

उसका प्रभाव और दिस्तिगेण स्थस्य है।

न्त्रास्म चिन्ततं है — मार्क्स शरिशियस् अनुवादन — धी चन्नवर्ती राजगोरालावार्यं तथा धीमती स्टमी देवदास गाघी, पुष्ठ सत्या ९३, मूल्य १) । प्रस्तुत पुस्तक मुमसिद्ध रोमन तत्त्वतानी सम्राट मार्क्स

अर्जुत पुरान पुताबक रागन तरकाना तआह मानस अरिकियस की 'विन्तर्ग' का अनुवाद है। कई वर्ष पूर्व राजाबी ने इसका तमिल में अनुवाद किया था। अब श्रीमती कहमी देवतस गांधी ने उसका हिन्दी क्यांतर अस्तत विन्या है।

मुत्तक आन का भडार है और जीवन की जटिल-ताओं का सामना करन की सांक्ति देती हैं। यह इस बात का भी प्रमाण प्रस्तुत करती हैं कि जीवन की मूल जस्माओं का सस्तामान विश्व के सभी मनीयियों की बंदिन मान एकता हो हैं।

मानर्ग सन् १६१ से १८० तन रोम साम्राज्य का सर्वेसती था। बहु जन तरेक्साती समार्ग में से पा सिनती परम्परा हमारे देव मुदाजा जनक ते आली की। उनकी विचारपारा में भी अपून्त साम्य है। मानर्ग में म विचार दिसी के लिये नहीं लिखे में, बर्जू अपने ही मान में उठने बाले तुष्कान की सात्त अपने के लिये उन्हें कोच निष्मा या। इसरिएए उनमें महाने प्रमाण मी है। सहान्मूम्ति और साम-बात बद्भूत सल्य भी है। सहान्मूम्ति और साम-बात बद्भूत सल्य भी है। सहान्मूम्ति और सामित, विकेक और विवास से में विचार एक्छनती है।

हमें विश्वास है इनसे अनेक जिज्ञासुओ का समाधान होगा। एक भारतीय के लिये थे विचार नये नहीं है

१ तुम तो अपनी ही अन्तरात्मानी देखो । उसे पडचानो नाप्रयत्न नरो ।

(शेष पूष्ठ २९९ वर)

# परिता हा ठारी ?

गांधी-जयंती

गांधी-जयंती के माने हैं गांधी-विचार की जयंती। गांधीजी के विचारों का आज की भाषा में, एक ही शब्द में, निचोड़ निकालें तो उसके लिए 'सर्वोदय' से अधिक सार्पक शब्द नहीं मिलता । गांघीजी को वैसे 'सत्याग्रह' शब्द बहुत प्रिय रहा है, परन्तु उनके सारे जीवन-आदर्श को मुचित करनेवाला शब्द तो 'सर्वोदय' ही है। सर्वोदय सत्याग्रह की भित्ति पर खड़ा है। सत्याग्रह में सत्य पर जोर अधिक है तो सर्वोदय में अहिंसा पर । सत्याग्रह में व्यक्ति पर अधिक दृष्टि है तो सर्वोदय में समिष्ट पर । प्राचीन परिभाषा का अवलम्बन करें तो सत्याग्रह आश्रम-व्यवस्था के समकक्ष हो सकता है और सर्वोदय वर्ण-व्यवस्था के। जो हो, आज भारतवर्ष को, विलक सारे संसार को एक नई समाज-व्यवस्था की जरूरत है, जो प्रत्येक व्यक्ति को और घटक को स्वाश्रयी, साथ ही परस्पर-पूरक बनावे । स्वाश्रयी वनेंगे जीवन में श्रम को प्रतिष्ठा देकर और परस्पर-पूरक वनेंगे अहिंसा की वृत्ति को अपना कर। अतः यदि हमें गांघी-जयंती सच्चे हृदय से मनाना है तो हमको श्रम की उपासना करनी चाहिए, केवल चर्ला कात कर नहीं, विलक संसार के किसान और मजदूर के जीवन में अपना जीवन मिलाकर, यानी केवल मूत कात और बुन कर नहीं, विलक किसान और मजदूर बनकर । किसान और मजदूर बनने के माने यह नहीं हैं कि हम उनकी तरह फूहड़, अपढ़, अनजान वन कर रहें, विलक शिक्षित. संस्कारवान, सुसन्य श्रमिक वनें जौर जो श्रमिक हैं. **टनको संसार के जीवन में श्रेप्ठ स्थान प्राप्त करावें।** हटूंडी, चर्खा द्वादशी, २७-९-५१

'मण्डल' की रजत-जयंती परम श्रेयार्थी जमनालालजी ने जिस 'सस्ता साहित्य मण्डल' की नींव डाली और श्रद्धेय डा॰ राजेन्द्रप्रसाद, काका साहव जैसे पुण्यपुरुषों और घनश्यामदासजी जैसे घनी साहित्यरिसक, श्री महावीर-प्रसादजी पोद्दार, देवदासभाई, पारसनाथजी, वियोगी हरिजी, जीतमलजी लूणिया लादि जैसे मंजे हुए अनुभवी कर्मियों ने जिसे अवतक पाला-पोसा वह पीघा अपने जीवन के २५ साल पूरे करके २६वें में जाने की तैयारी कर रहा है। पिछले पच्चीस वर्षो का चित्र जव एक साथ सामने खड़ा होता है और आज जव यह आवाज इघर-उघर से कानों में आती है कि हिन्दी में पुस्तक-प्रकाशक और विकेता के रूप में 'सस्ता साहित्य मण्डल' ने ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया है तो मन को थोड़ा संतोप जरूर मिलता है। इसका मतलव यह नहीं कि 'मण्डल' जो कुछ चाहता है या जो कुछ उसे कर सकना चाहिए या, वह सव उसने कर लिया, मगर इतना मतलव जरूर है कि जो कुछ अवतक हुआ है, वह कार्यकर्ताओं को भविष्य के लिए प्रोत्साहन और हिन्दी-भाषी भाई-वहनों से अधिक सहयोग-सिक्रय और सजीव सहयोग-पाने के लिए काफी है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है, हमारी अविकसित दशा का चिन्ह है कि जो कार्य की जिम्मेदारी ले लेता हैं. उसे दर-दर सहयोग और सहायता की भीख मांगनी पड़ती है और जिनकी सेवा होती है, वे उस सम्बन्ध में अपने कत्तंव्य के प्रति उतने जागरूक नहीं रहते। बात उल्टी होनी चाहिए किं जो सेवा या काम चाहते हैं वे अपने उपयोग के लिए कुछ व्यक्तियों पर उसकी जिम्मेदारी डालें और उन्हें हर तरह का सहयोग और सहायता दे कर उनसे वह काम ले लें। अतः यदि 'सस्ता साहित्य मण्डल' ने अवतक विविच पुस्तक-प्रकाशन और 'जीवन साहित्य' के द्वारा कुछ उपयोगी सेवा हिन्दी-

ससार की की है तो अब यह होना चाहिए कि इसके विकास के लिए जिस जिस साधन-सामग्री की अरूरत है और जिसकी ओर 'मण्डल' के कर्मचारी समय-समय पर घ्यान दिलाते रहे है, वे उसे खुद आ गे आ कर प्रस्तुत कर दें । इसके अनुकुल वातावरण हिन्दी-जगत् में उत्पत्न हो और उसकी ओर हिन्दी-जगत का ध्यान विशेष रूप से आर्थापत हो, इसलिए 'मण्डल' ने यह निरुचय किया है कि आगामी मार्च के महीने में 'मण्डल' की 'रजत जयती' मनाई जाय। उसका कार्य त्रम बनने पर बाद में सचित किया जायगा। यह जयती इसलिए भी हम मनाना चाहते हैं कि जिससे हम खद यह सम्बता से देख एक वि समी हमें बीर वितना नाम न रना बाकी है और अबतक जो कुछ किया है उसमें क्या क्सर रही है और अवतक के हमारे सहयोगी शेखको, प्रकाशको, 'सहायको, प्रोत्साहन-शताओं को भी यह जवसर मिले कि वे हमारी कमियो की छोर हमारा प्यान दिला सकें और जागे के लिए हमारी सेवा का पय विशेष सगम और सरल कर सकें।

इस अवसर पर हम 'जीवन-साहित्य' का जिसने पिछले बारह वधों से लगमग मुक माब से, बिना तडक-भडक के, हिन्दी के विचार, भावना और कार्य के क्षेत्र में निरतर और अधक सेवा की ,है, एक विशेषान निकालना चाहते हैं, किसमें 'सस्ता साहित्य मण्डल' की अवतक की सेवाओं और गतिविधियों पर प्रकाश हाएने के बलावा हिन्दी-साहित्य और हिन्दी मापियो और साहित्यिको की वर्तमान ज्वलत समस्याओ पर भी समुचित रूप से प्रवाश डाला जायेगा। उसकी योजना हुम बाद में जल्दी ही देने की आदा रखते है। बाज ती हम इन दोनो विषयो पर सिर्फ पाठको ना ध्यान ही दिला देना चाहते हैं, जिससे ने इसपर मली साति विचार कर रखें और जब दोनो योजनाए उनके सामने प्रस्तुत हो तो वे फौरन अपना सहयोग देना प्रारम्भ कर सकें। सीच विचार में उनका अधिक समय न जाय । यह काम वे इसके पहले ही कर रक्लें।

हदूडी,-२७ ९ ५१ -

एक नया अध्याय

जिसको लोगों ने टण्डन-नेहरू दिवाद कहा, उसे हैन दोना महान् पुहयो ने अपनी महानता के अनुक्छ ही वापस में निबटा लिया. इससे सारे देश में एक षेतीय और उत्साह की लहा फैल गई। खास कर राजींप टण्डनकी न इस सारे प्रकरण में जिस उच्चता भीर उदासता का परिचय दिया है तथा सस्याहित और देश-हिन के सामने व्यक्तिगत अल्पताओं की यमाव नहीं डालने दिया और अपने सिद्धान्त पर दुढ रहते हुए भी अपने व्यक्ति को दीखे रहने दिया, इससे उनके प्रति प्रत्येक का बादर वर्डे बिना नहीं रहा । टण्डनजी ने चाहे भाग्रेस का अध्यक्ष-'द खोवा हो, परम्तु कोव-हृदय में उनका आसन---त्रो उनसे मतभेद रखते थे , उनके मन में भी--पहले से <sup>प्</sup>यादा ऊचा और मजबूत हो गया । हम सब सार्वजनिक कार्यक्ताओं को उनके इस उदाहरण से शिक्षा लेनी बाहिए। यदि हम लेंगे तो कोई सदेह नहीं कि इस परह के हमारे बहुत से विवाद वही शोमा के साथ प्रमाप्त हो जायगे । खासकर यह बात कि अध्यक्त पद पे हटने के बाद फौरन ही टण्डनजी का नई कार्य समिति में आना मजुर करना और अपने सहयोग का हाय बढाये रेखना, यह उदाहरण हम सबके सामने सदा के लिए

जीता-जागता रहेगा।

लेतिक दुससे प॰ जवाहरूलाल की जिम्मेदारी
लेतिक दुससे प॰ जवाहरूलाल की जिम्मेदारी
केतिक दुससे है। वे उसकी समालने की योगता
जित काता रखते हैं, दसमें कोई स्वेह नहीं। परन्तु
जिन लोगों की भी जिम्मेदारी हसमें कम नहीं है, जो
जाहते में कि जवाहरूलावजी अध्यय-पद का मार
प्रति में कि जवाहरूलावजी अध्यय-पद का मार
प्रति में मार उन्होंने अपनी जिम्मेदारी की पूरी तरह
में महसूस निया तो नेहरूची का यह कार्य कान कांग्रेस
में इतिहास में जवस्य एक नया और मुन्दर अध्याव
भीड़ देशा।

हेट्डी, २७ ९ ५१

शुद्धि और आत्य-परीक्षण की आवश्यकता इपर 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग और 'राष्ट्र-भाषा प्रचार-समिति', वर्षा से बौंकाने वाले समाबार मिले हैं। उनसे ऐसा मालूम होता है कि दोनों दल-वंदी, गुटवंदी और किसी-न-किसी रूप में भीतरी असुद्धि के शिकार हो रहे हैं। जो सेवा-संस्थाएं हैं, उनमें अधिकार का प्रश्न क्यों खड़ा होना चाहिए, यह आजतक हमारी समझ में नहीं आया। व्यक्ति की अहंता, सीमित दुष्टि और सदाचार के प्रति उपेक्षा, इनमें से कोई एक या अनेक कारण इन झगड़ों के मूल में हो सकते हैं। सही स्थिति क्या है, यह इतनी दूर बैठे हुए हमारे लिए कहना कठिन है, परन्तु सही मार्ग क्या है, यह हम को स्वष्ट दीख रहा है और यदि सम्मेलन तया सिमति के संचालक और कार्यकर्ता योड़ा भी प्रयास करें तो उनको भी दीख सकता है। वे परस्पर दोवारोपण और लांछन लगाने की प्रवृत्ति को छोड दें या बहुत कम करदें और दोनों जगह जो कुछ खराबी हो रही है, उसकी ज़िम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की खुद की कितनी है, यह सोचने लगें तो इसकी कुंजी उनके हाय आ जायगी। जब कोई काम विगड़ता है तो जान में हो या अनजान में, किसी एक ही व्यक्ति के दोप से वह नहीं विगड़ता । लेकिन हम अपने दोप को न ढूंढ कर दूसरे के दोप को देखते हैं और उसी को पकड़े रहते हैं। इससे उसका दोप हम दूर नहीं कर पाते, चाहे उसे हम लोगों की दृष्टि में गिरा भले ही दें, और अपना दोप हम देखना नहीं चाहते, इसलिए वह दूर हो नहीं सकता। दोनों दशाओं में दोनों तरफ़ के दोप या तो प्रवल होते रहते हैं, या छिपे रहते हैं और हम निरंतर वढ़ी हुई जलझन में फंसते हुए चले जाते हैं, जो कि हमको एक अंघेरी खाई में गिरा कर ही छोड़ती है। ऐसी दशा में हमें रार्जीप टण्डनजी की यह सलाह पसंद आई कि सम्मेलन और समिति को दलवंदी का अखाड़ा न वनावें, मगर हम उसमें इतना और जोड़ना चाहते हैं और सो भी कवीर के शब्दों में-

"बुरा जो देखन मैं चला बुरा न दीखा कीय। जो दिल खोजा आपना मुझसा बुरा न कोय॥" हट्ही, २७. ९. ५१. चुनाव का बुखार

जब बुंखार आता है तो उसका मतलव यह है कि

कुदरत भीतर की बुराई को वाहर लाकर कहती है कि इसे निकालकर फेंक दो। अगर उसकी आवाज हमने नहीं सुनी तो मीत की तरफ़ इशारा करती है। ऐसा मालूम हाता है कि यह चुनाव भी कुदरत की तरफ से बुखार-जैसा ही एक वरदान है। यदि हमने कुदरत की चेतावनी और उसका संकेत न समझा तो यह वरदान की जगह अभिशाप सिद्ध हुए विना नहीं रहेगा । चारों तरफ से कानों में खबरें आ रही हैं कि जितनी भी युराइयां हो सकती हैं, चुनाव फे सिलसिले में लोग वढ़-यढ़ के कर रहे हैं। यदि यह सही है तो यह हमारे सार्वजनिक ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन में घुसी हुई सड़ांद को ज़ाहिर करती है। यदि हम सजग हैं तो सावधान होकर कुबल वैद्य की तरह भीतर के विष को हटाकर अपने शरीर और जीवन को शुद्ध और विलय्ड बना छेंगे । यदि हम मूर्ख हैं तो इस बुखार से फिर सिन्नपात होगा और सिन्नपात से मौत । अच्छी बात तो यह है कि इन चुनावों को हम एक खिलाड़ी की तरह लड़ें। आखिर यह चुनाव इसी वात की तो होड़ हैं न कि धारा-सभाओं में जाकर कौन व्यक्ति ज्यादा-से-ज्यादा सच्चाई के साथ देश और जनता की सेवा कर सकता है। यदि यही नात है तो होड़ हमारी अच्छाई और योग्यता में लगनी चाहिए, न कि हमारे क्षूठे या सच्चे दावों में, या येनकेन प्रकारेण प्रतिपक्षी को हराने या गिराने में। आखिर हमारी परीक्षा हमारी सेवा में होने-वाली है, न कि हमारे दावों से। इसलिए चुनाव के सम्बन्घ में दो वातें अवस्य होनी चाहिए। एक तो यह कि हम मतदाताओं से अपनी योग्यता, अपनी ईमान-दारी और सच्चाई की वावत जो कुछ कहना हो, कहें, न कि प्रतिपक्षी की व्यक्तिगत वुराइयां और दोप सामने लाकर, उभार कर, वायु-मण्डल को गंदा बनावें। दूसरे यह कि गुप्त मतदान (Ballot) की प्रया उड़ा दी जाय। हमारी राय और अनुभव में असत्य, कायरता और घोखाघड़ी, तीनों को प्रोत्साहन देने वाली यह प्रया है । मतदाता वायदा कड्यों से करता है और आशाओं और इच्छाओं के विपरीत न जाने किसको मत दे आता है। यह क्यों होना चाहिए ? हर

मतदाता में यह साहस बयो न होना चाहिए और हमें क्यो न इत्पन्न करना चाहिए कि मैं फला को मत दुगा, फला को नहीं ? कोई घरू काम तो है नही, और घरू भी हो तो भी जहा केवल विचार-दान या मतदान का प्रश्न है, उसमें गुप्तता क्यो ? हम जानते है कि जबतक बैलट-प्रमा विधिवन् न चठारी जाय तवतक हमारे स्झाव पर अमल होना कठिन है, परन्त हरएक मतदाता से हम यह अपील जरूर करना चाहते है कि वे जिस किसी को मत दें, खले आम दें और लिहाज या भय से झठा षायवा किसो से न करें। यदि वे ऐसा करें तो चुनाव के सिलसले में जो इपरी गदनिया उम्मीदवार फैलाने है या फैला सकते हैं, उसकी जह बहुत हद तक कट जायगी। हट्डी, २७ ९ ५१ 

भूमिदान यज

सर्वोदय-सम्प्रेलन वे शिवरामपत्ली-अधिवेशन के कुछ पहले से पूज्य विनोबाजी न जिस महायज्ञ का सूत्रपात किया या, उसका बहुत कुछ प्रत्यक्ष फल इन दिनी हुम लोगो के सामने आ चुना है। सैकडो-हजारो एकड मूमि स्वेच्छा से भूपतियों ने जन छोगों के लिए दान दे दी है, जिनके पास जमीन नहीं है। यह निश्चय ही जह का काम है, जो बिनोवाजी ने उठाया है। इसका

नागे चलकर बहुत व्यापक परिणाम निकलेगा। हमारे देश का रूप ही बदल जायमा। दान का अपने आप में महत्व है, लेकिन भूमिदान की महत्ता, उसकी पवित्रता इसलिए भी अधिक है कि वह साधन-सम्पन्न वर्ग की साधन हीनो के प्रति सद्माथना और ध्याग-वृत्ति की चीतक है। इससे पता चलता है कि लोगो का ध्यान अपने गरीय माइयो की ओर जा रहा है। स्वास्थ्य अच्छा न होने पर भी बिनोबाजी इस 'यज्ञ' के लिए पैदल-यात्रा कर रहे है। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि विनोबा-जी का यह अनुष्ठान पूर्ण हो। शिवरामपरुषी (हैदराबाद) तक के प्रवास में वह दक्षिण के अनेक स्थानी की पंदल-यात्रा कर चुके हैं और अब उत्तर-मारत की यात्रा पर निक्ले हैं। काम उन्होंने बहुत ही कठिन उठाया है, लेकिन ध्येय की पवित्रता की देखते सन्देह की गजाइस नहीं रहती कि उसमें सफलता नहीं मिलेगी। दान का हमारे भारतीय जीवन में प्राचीन काल से ही बड़ा महत्व रहा है। भूनिदान तो बहुत ही तरहच्ट माना गया है। हम स्पष्ट देख रहे है कि विनोबाजो के इस अनुष्ठान से अहिसक कार्ति की दिशा में देश के आगे एक नया मार्ग खुलेगा।

(पृष्ठ २९५ का श्रीपास)

२ बुराई ना बदला इसी में है कि हम बैसान करें जैसा कि बराई करने वाले ने किया।

३ अब चेन्ता-शनिन चली चती है तो द स निस बात ना ? तये जीवन और नये अनभव से हानि कैसे हो सक्ती है ? नवीनता को मृत्यु कैसे कहा जाय।

४ जो दूसरो के प्रति अन्याय करता है वह अपना

५ अहकार और दम को छोडो । अन्दर ती गहकार हो और बाहर विनय, यह बहुन ही बुरा है।

अनुवाद पुस्तक के अनुरूप सरल और स्पष्ट है। मूल वा-सा रस वाता है । पुस्तक हर दृष्टि से मनन करने योग्य है।

—₹°

बुरा है। करता है।

विज्ञापन के सर्वोत्तम साधन श्रीरं हिन्दी के दो श्रनूठे प्रकाशन

- १. सचित्र मौन-क्या है
- २. व्यापारिक जगत

के

## अगले संस्करण में शीघ्र प्रकाशनार्थ भेजिये

- १. प्रमुख व्यक्तियों की संन्तिप्त सचित्र जीवनियां
- २. व्यापारिक फर्मी का संनिप्त सचित्र परिचय
- ३. व्यापारिक फर्मों के पते
- ४. विज्ञापन स्त्रादि

## नारायगा पव्लिशिंग हाऊस, अजीतमल, इटावा, यू० पी०

चालू वर्ष के संस्करण धड़ाधड़ विक रहे हैं

# दुसरे वर्ष में

सवने पसन्द किया !

भा र ती

सवने स्वागत किया !

गत वर्ष १४) रु० वार्षिक मूल्य०था, एक प्रतिका १) रु०-ग्रव १६४१ जनवरी से एकदम कम, ६) रु० वार्षिक

संपादक

संचालक

: हृपीकेश शर्मा : : एन. एल. प्रयागी सुवोधसिंह प्रेस सिविललाइन, नागपुर-१ : 'भारती' समस्त भागतीय (अन्तर्प्रान्तीय) साहित्य, कला और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगतिशील चिन्तन-प्रधान सचित्र मासिक पत्रिका है।

भारत के राष्ट्रपति डा॰ राजेन्द्रप्रसादजी ने, प्रान्तों के राज्यपालों ने, मुख्य मुख्य मंत्रियों ने और हिन्दी के लब्बप्रतिष्ठ साहित्यकारों ने इस मासिक पित्रका के प्रकाशन की मुक्तकंठ से सराहना की है। सर्वेशी जैनेन्द्र, वनारसीशस चतुर्वेदी, उदयशंकर भट्ट, रामवृक्ष वेनीपुरी, श्रीराम शर्मा, कन्हैयालाल मुन्शी, खांडेकर, स्व॰ साने गुष्जी, माखनलाल चतुर्वेदी, भदंत आनन्द कौसल्यायन आदि ने 'भारती' का स्वागत किया है।

भारती' का प्रत्येक अंक अनूठा, पठनीय और दर्शनीय हैं। १९५० की २६ जनवरी से इसका नियमित प्रकाशन शुरू हुआ। प्रतिमास लगभग १०० प्रष्ठ।

#### 'प्राकृतिक चिकित्सा' विशेषांक

#### पत्रों की सम्मति

प्राकृतिक चिकित्सा-यद्वति को समझने और अन्य चिकित्मा-यद्वतिया की नुरुना में इमका महत्व जानने की पर्याप्त सामग्री 'बीवन माहित्य' के 'प्राञ्चितक विकि मा' अको में सम्रहीत है। कई विशेषणी और अनुमदी लोगों के लेख, विचार आदि एक्च विए हैं। एसा स्थायी माहिय इन अका में आ गया है वि उसन इन अको का मृत्य पुस्तको जैसा हा गया है। ऐसा माहित्य स्थास्थ्य क लिए उपयागी और लामदायक है। इसका सबसाधारण म सब प्रचार किया जाना चाहिए। इदोर 1

---लोक-सेपक

इस अक्ष के कई विशेष रूच परकर यह आस्या अधिक दंढ हा जाती है कि अधिकाश व्यक्तिया की सर्वेशेष्ठ विकित्सन प्रकृति ही है नयोकि मानव गरीर ग्व आत्मा की रचना उसी के अनुरूप है। निस्मदह प्रकृति-माता दरिद्वनारायण की चिक्तिसक है। बम्बईी ---इंडियन पी ई एन

प्रस्तृत अक म प्राकृतिक-चिकित्सा-विषयक रूप के । गाँधीजी की आरोग्य की कुछी नामक पूम्तक तथा प्रसिद्ध पाश्चारय निमर्गोपचारक डा० लुई कुने का पुस्तक 'मै तन्द्रस्त ह या बीमार ? का माराश भी इसम दिया गया है। अन पठनीय है। भाषा मरफ और सर्वेसाधारण के समझने योग्य है।

बस्बई ]

--साधना (मराठी) पहुर अब में मिद्धान्त सम्बन्धी अधिकृत लेखा के बकाबा कई सम्बन्धी के प्रकृत्यीपचार-मृत्यन्त्री अनभव भी दिये गए हैं, जा जिलामु पाठकों को घहत्योपचार की और शहुष्ट करने की दिन्ट म विशय

उपयोगी है। इसरे में उपचार हैं।...-दोनीअक नगह योग्य हैं। वर्षा ]

---राष्ट्र-भारती

कनियय रोगो व प्रावृतिक उपाय इस अक के लेखा म दिये गए है । प्रत्येक लेख अपने म पूर्ण है अर्थान इन्हें पढ़कर पीडित व्यक्ति अपना उपचार स्वयं कर नकता है।....आशा है कि प्रत्यक माना क्यविन इस अक म लाम उठाएगा। वास्तव में नारत जैसे निर्धन देश के लिए ऐसे उपायों से परिवित हाना परमाबद्यक है । मानव-बरुपाण के हिन ऐसे अब प्रकाशित बचने बाठे सम्पादको का बार्य स्तृत्य है । --प्रदीप शिमला र

प्रस्तुत अब प्रावृतिक उपचार और महता को समयाने बादे हैं। इसके मभी देख अव्यक्षी और महान व्यक्तियों के लिखे हुए हैं। —सुमित्रा कानपुर 1

'जीवन साहित्य' के प्रस्तुत जून एव जुलाई के अब में प्राकृतिक विकित्सा की लेकर यांग्य सम्पादको ने उस चिकित्सा प विद्योवज, अनुमत्री एवं विद्वान लेखका के लखा का अनीव सुन्दर नयन करन प्रशासनीय नार्य निया है। ..१४० पृथ्ठो वा यह अब बहुत उपयोगी एव घर घर में रखन यांच है। –भक्त भारत व-दावन]

### 'मएडल के नवीन प्रकाशन'

- १. मेरे समदालीन—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा लिखे २३६ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महापुरुपों तथा सामान्य लो नेसवकों के मर्नरपर्शी संस्मरण, जिनमें गांधीजी की पैनी निगाह के साथ-साथ उ.के मधुर मानव रूप की भी झ की मिलती है। कुछ संस्मरण तो व्यथा से इतने ओतप्रोत हैं कि पढ़कर अलों में आंसू आजाते हैं। गांधी-साहित्य की यह सातवीं पुस्तक हैं। ५)
- २. वापू के आश्रम में —श्री हरिभाऊ उपाध्याय की इस पुस्तक में गांधीजी के सम्पर्क की अनेक घटनाएं संग्रहीत हैं। ये घटनाएं हमें निक्षाएं देती हैं और मुझाती हैं कि हमारा कर्तव्य क्या है और एक सच्चे नागरिक के नाते राष्ट्र के उत्यान में हमारा क्या योगदान होना चाहिए। १)
- ३. सर्वोदय-तत्व-दर्शन—गत चालीस वर्षों में जिस मार्ग पर चलकर हमारे देश ने विदेशी सत्ता से लोहा लिया, उससे मृत्रित पाई और देश में नई प्रेरणा नई चेतना फूंकी, उसे राष्ट्र के पुनर्सगठन की इस वेला में अच्छी तरह से देखना और समझना है । इस पुस्तक में डा॰ गोपीनाथ घावन ने अत्यंत प्रामाणिक और सुन्दर ढंग से उसी मार्ग को दिखानेवाले गांधीजी के लोक-कल्याणकारी सिद्धान्तों की व्याख्या की है। सर्वोदय की दिशा में कार्य करनेवाले लोगों के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है। ७)
- ४. गांधी-शिज्ञा— (भाग १, २, ३) पुस्तक के तीनों भागों में गांधीजी की रचनाओं में से चुनकर वह सामग्री दी गई है, जो युवकों के चरित्र-निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय हैं। पुस्तकों उपयोगी हैं, अच्छी छपी हैं, मूल्य बहुत साला है और उत्तरप्रदेश के समस्त जूनियर हाईस्कूलों की ६, ७, ८ कक्षाओं में सहायक पाठ्य-पुस्तकों के रूप में स्वीकृत होने के कारण हजारों की संख्या में विक रही है।।,।-),।-)
- ४. रासतीर्थ-सन्देश—(भाग १, २, ३) विद्यार्थियों की दृष्टि से इन पुस्तकों में जीवन को कंचा उठानेवाले स्वामी रामतीर्थ के उपदेशों का संकलन किया गया है। ये उपदेश एक साथ स्फूर्तिदायक रोचक और शिक्षाप्रद है। उत्तरप्रदेश के समस्त जूनियर हाईस्कूलों की उक्त कक्षाओं के लिए ये पुस्तकों भी सहायक पाठ्य-पुस्तकों के रूप में स्वीकृत हैं।
- ६ सत्य के प्रयोग त्राथवा त्रात्म-कथा—इस प्रस्तक में महात्मा गांधी ने उन अनेक प्रयोगों का वर्णन किया है, जो उन्होंने अपने जीवन-काल में किये थे। गांधीजी सत्य के अनन्य उपासक थे। उस दृष्टि से उनके ये प्रयोग प्रत्येक पाठक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। १४ पाइंट टाइप, बढ़िया छपाई, आकर्षक रूप-रंग, मुन्दर जिल्द। ५)
- ७. गांधी डायरी (१६४२)—गत वर्ष 'मण्डल' ने प्रथम बार इस डायरी का प्रकाशन किया था। सन् १९५२ के लिए उसका नया संस्करण २ अक्तूबर को गांधी-जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित हो गया है। इस बार सीरमास, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि-आदि के साय-साथ अनेक ज्ञातच्य बातें उसमें और जोड़दी गई हैं। गांघीजी के प्रतिदिन के बचन तथा अन्य मामग्री तो है ही। मजबूत पक्की जिल्द, मुन्दर छपाई। ५० से कम प्रतियां अपने यहां के प्रमुख पुम्तक विकेता से लेलें। अधिक के लिए हमें लिखें। छोटी १।), टेबल २॥)

### 'मण्डल' से प्राप्य

मः काश्मीर पर हमला (श्रीमतो कृष्णा मेहता) इस पुस्तक में काश्मीर पर कवाइलियों द्वारा किये गए आक्रमण का रोमांचकारी, मर्मस्पर्शी और प्रामाणिक दर्णन है। लेखिका ने उस पाश्चिक अत्याचार को अपनी आंखों से देखा है। वर्णन इतना रोचक और हृदयस्पर्शी है कि उपन्यास का-सा रस आता है।



### अहिंसक नवरचना का मासिक

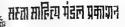
द्धार्थालेक

हरिभाऊ उपाध्याय यशामल जैन

#### इम अरु क विशेष लख

योति पेमी तुभी कि असर हा गढ़ गाड़ी एक पेराम्बर जीउन की यहराई म , जहा मींटर्य और अस शाड माड पता " -आवार्य ने मी बुसारणा नगजर्या और गुरु भत्ति

नतम्बर १६५१ स्राट स्नाना



# वापिक मूल्य ४)] जिल्लि - शाहित्य (एक प्रति का ॥)

### लेख-सूची

१. कांग्रेस की जिस्तेदारी	महात्मा गायी	३०१
२. ज्योति ऐसी वुभी कि ग्रमर होगई!	श्री विष्णु प्रभाकर	505
३. गांघी : एक पेंगम्बर	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	\$ 64
<ol> <li>जीवन की गहराई में</li> </ol>	हरिमाऊ उपाध्याय	305
४. जहां सोन्दर्य छोर श्रम साथ-साथ चलते हैं!	प्रो० रजन	इ १०
६. ऋाचार्य जे० सी० कुमारप्पा	टा० ओमप्रकाश गृप्ता	E 9 8
७. तपश्चर्या ख्रोर गुरु-भक्ति	श्री यदुनाथ धने	≘१७
<ul><li>चिचारों पर नियन्त्रग्</li></ul>	श्री लालजोराम गुगल	इ००
६. मधुकरी	नकलन	358
१०. कसोटी पर	समालोचनाए	555
११. क्या व कैसे ?	मम्पादकीय	270

# संत विनोवा

के

# स् मि - दा न - य ज्ञ

को

## सफल बनाने में भरसक सहयोग दीजिये।

- यदि आपके पास ज्मीन है तो सामर्थ्य के अनुसार उसका कुछ अंग उन्हें अवश्य भेंट कीजिये।
  - यदि जमीन नहीं है और धन है तो जमीन ख़रीद कर दे दीजिये।
- चित्र उतने भी साधन नहीं हैं तो विनोवाजी के साहित्य का अच्छी तरह से अध्ययन करके उनकी विचार-धारा को लोगों में फैलाइये।

विनोवाजी की हिन्दी की सब पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं और प्रवास में विनोवाजीं की पार्टी के साथ भी प्राप्य हैं।

सरता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा विहार प्रातीय सरकारी द्वारा स्कूली, कालेजी व लाइनेरियों तथा उत्तरप्रदेश की भान्य पत्तायतों के लिए स्वीकृत

# जीवन साहित्य

अहिसक नवरवना का मासिक



#### कांग्रेस की ज़िम्मेदारी

महात्मा गायी

काग्रेस देश की सबसे पुरानी राष्ट्रीय राजनैतिक सस्या है। उसने कई व्यक्तिक लडाइयो के बाद आजारी हासिल की है। उसे मरने नहीं दिया जा सकता। उसका खारमा केवल तभी हो सकता है, जब राष्ट्र का खारमा हो। एक जीवित सस्या या तो जीवित प्राणी की माति लगातार बढ़ती रहती है, या मर जाती है। काग्रेस ने विस्मासी आजारी तो हासिल कर ली है, मगर उसे अभी माली आजारी, सामाजिक आजारी और नैतिक आजारी हासिल करनी है। ये आजारियाँ चूकि रचनात्मक है, कम उत्तेजक है और भड़कीली नहीं है, इसलिए उन्हें हासिल करना राजनैतिक आजारी से ज्यादा मुश्किल काम है। जीवन के सारे पहलुओं को अपने में समा लेनेवाला रचनात्मक कार्य करोडो जनता के सारे अगो की शक्ति को जगाता है।

काग्रेस को उसकी आजादी का प्रारंभिक और जरूरी हिस्सा मिल गया है, लेकिन उसकी सबसे कठिन मजिल आना अभी वाकी है। '''अभी कल तक काग्रेस वैजाने देश की सेविका थी।''' अगर वह सत्ता हडपने के व्यर्थ के झगडों में पडती है तो एक दिन वह देखेंगी कि वह कही नहीं है। मगवान को धन्यवाद है कि अब वह जन-सेवा के क्षेत्र की एकमात्र स्वामिनी नहीं रही।

मई दिल्ली, २७ जून १६४८ ]

# ज्योति ऐसी बुक्षी कि अपर हो गई!

श्री विष्णु प्रभाकर

२४७८ वर्ष पूर्व का एक दिवस।

कार्तिक मास की सघनतम अमा भारत के रंगमंच पर प्रवेश कर चुकी थी। किसी अज्ञात की प्रेरणा से आकाश-दीप मुक्त भाव से मुस्कराने लगे थे। आलोक और अन्य-कार का वह अपूर्व मिलन या और उस अपूर्व मिलन की वेला में एक दिव्य ज्योति अमृतवर्षा कर रही थी। ...

घीरे-घीरे अमा का अन्तिम प्रहर आ पहुंचा । उस पुनीत स्वर से एक अनुपमेय माधुर्य, एक अद्भुत गाम्भीर्य झरने लगा, स्तव्य-शांत जगत ने सुना—

"जैसे पतझड़ में ऋतु की रातों के बीत जाने पर वृक्ष का पत्ता पीला होकर झड़ जाता है वैसे ही यह मनुष्य का जीवन है। न जाने कब झड़ जाय! इसिलए हेगीतम, क्षण भरभी प्रमादन कर।

"चिरकाल के वाद भी इस मनुष्य का जन्म पाना अत्यन्त दुर्लभ है; क्योंकि पूर्व कर्मों के विपाक प्रगाढ़ होते हैं। हे गीतम, अण भर भी प्रमाद न कर।

"जैसे कमल शरतकाल के निर्मल पानी को भी नहीं छूता, उससे अलिप्त रहता है, उसी तरह तू भी संसार से आसक्ति दूर कर, सब प्रकार के संकुचित मोह-बन्बनों को छेद डाल। गौतम, एक क्षण भी प्रमाद न कर।

"तू महान् संसार-समुद्र को तैर चुका है, अब किनारे आकर (मनुष्य-जन्म पाकर) क्यों अटक रहा है ? उस पार जाने की जितनी भी हो सके, शी घ्रता कर । गौतम, क्षण भर भी प्रमाद न कर।"

यहीं आकर सहसा वह स्वर शांत हो गया। विश्व-वीणा के तार जैसे तीव्रता से झंकृत हुए और फिर शनै:-शनै: मीन होने लगे। मीन और वाचा का, तमस और ज्योति का अन्तर मिटने लगा। तभी प्रकृति में एक नि:शब्द स्वर गूंज उठा:

"प्रभु मीन हुआ चाहते हैं।"

''कौन प्रभ?"

"श्रमण महाप्रभु निग्गंठ नायपुत्र वर्षमान महावीर।" "वर्षमान महावीर!"—दिशाएं प्रतिघ्वनित होने ों—"वर्षमान महावीर! अज्ञान और अन्यकार

लगीं—"वर्षमान महावीर ! अज्ञान और अन्यकार पर अहिंसा और अनेकांत की प्रस्थापना करने वाले तीर्थेङ्कर!"

अमा ने अवगुण्ठन उठा दिया । निःशब्द प्रकृति वाचाल हो उठी । नीलाम्बर की तारिकाएं लास्य नृत्य में रत हो गईं और तब देखा जगती ने—"उपा नव प्रमात का संदेश लिये उसके आंगन में प्रवेश कर रही है।"

अस्तित्वेर चक्र तले, एक बार बांबा परे

पाव कि निस्तार। (रिव ठाकुर)

यह उस समय का दृश्य है जब तीस वर्ष तक निरन्तर घूम-घूम कर अपने सिद्धांतों का प्रसार करने के बाद जैन धर्म के अन्तिम तीर्थ द्धार भगवान महावीर अन्तिम बार पावापुरी में पवारे थे। वहीं पर उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम उपदेश दिये थे। उपदेशों की इस अखण्ड धारा का अन्तिम उपदेश उन्होंने कार्तिक-अमावस्या के अन्तिम प्रहर में दिया और किर चिर मीन में समा गए।

सीर उनके मीन होते ही—

"विरोधिता जीवन मुप्रभात में,

जागी विहंगाविलि-सी सभी प्रजा।

चतुर्दिशा चारु निनाद यों उठा,

'जिनेन्द्रकी जै,' जै जैन धर्म की।"

(अनूप शर्मा)

कहते हैं, तब काशी और कीशल नरेशों तथा मिल्ल और लिच्छिव संघ के शासकों ने उस पुनीत निर्वाण के उपलक्ष में दीपोत्सव किया था। उस उत्सव द्वारा मानों उन्होंने व्यक्त किया—"यद्यपि यथार्य ज्ञान का प्रकाश अब संसार में नहीं रहा है, तथापि पी-द्गलिक (जड़-द्रव्य) प्रकाश अपना विकास दिखना रहा है। मानो उन्होंने घोषणा की—"भगवान महाबीर का ज्ञान सवनतम अमा को पुणिमा के प्रकाश में पकट सकता है।

उस दिन वह अमा एडी आलोकित हुई कि आज तक होती चली आ रही है। असस्य दीपो का ताज पहने वह मितवर्ष उसी मृहुने में, उसी लिथि में, माना मगनान महाबीर के उसी अंतिम उपदेश को बोहरागी हुई जानी है

> समयम् गोयम मा पनावए । (क्षण मात्र भी प्रमाद न कर)

( ? )

और फिर माल-चक्र चलता रहा । युगो ने करवर ली। शताब्दिया बीत गईं।

एक दिन सहसा भारत के आगन में फिर कुछ विश्वय हुलचल मनती दिलाई दी। वही कार्तिक माम <sup>1</sup> वही सपनतम अमा का दिवस <sup>1</sup>

अजमेर के एक मनान में एक सन्यासी मू नू-तैया पर नेटा हैं। उसके सारे शरीर पर बिव ने छाने उनर आपे हैं। व्यास तीज गति के वल रही हैं। उसी का कमे-कमी रोक कर वह ध्यान भन्म हो जाना है। गवनी में मीर मरे जीर हृदय में वेदना समेटे अनक भन्न दयर-उपर खड़े हैं। चन्ही में से एक मनन खाने बनता है। अवदढ़ कफ से पूछना है, "आपना चित कैसा है?"

"अच्छा है। भालोक और अमकार का मिलन है।"

"आप कहा है ?"

"ईश्वरेच्छा में।"

भवन मौन हो गये। अब सत्यासी ने मृदु स्वर में पूछा---"तुम्हारी क्या अभिकाषा है?"

भक्त ने उत्तर दिया--"हमारी एकमात्र अभिकाया यही है कि आम अच्छे हो भाग।"

मुतकर भन्यासी वा कण्ड कहमा और स्तह से भर आया। सामर इककर उन्होंने कहा—"बता। इस सरीर का और बया मणा होगा? जो मला है वह विस्ताल मला रहेगा। सरीर वासही वर्ष है। इसके लिये सोक मत करो।"

प्राण कहें सुन काया भेरी, तुम हम मिलन न होय । तुम सम मीत बहुत हम कीना सग न लीना कीय । यह कह कर सन्यासी ने मानो वियानिवल की तैयारी शरू कर दी।

करने सिमार सजन अलवली साजन के घर जाना होना। न्हाले, घोने, सीस गुवा ले, किर न वहा से आना होता।

प्रीतम जब सामने ही तो किसी का बीच में खड़ा होना कैसे यहा जा सकता है। सन्यासी ने कहा—"सब लोग सामने से हटकर मेरे पी है खड़े हो जाए।"

मन्त्र लोग पीछे खडे हो गए।

सन्यासी बोले—"सब द्वार खोल दो। प्रकाश की आने दो।"

श्रीनम से भिजने की किरती उतावजी है। भश्ती ने सब द्वार और रोजनदान लोज दिने । लेकिर प्रिय-मिलन ने लिये द्वान महुत्तें भी तो देना जाता है। संपाती

उस बात को कैंपे मू रुपे ? पूडा — "आज कौन-सा दिन है ? कौन-पी तिथि हैं" कौन-

सापक्ष है ? "

मश्र वोने—"मावन्, जान कृष्णसा का करू और सुश्चात का आरम्ब है। निधि जना है। बार माज है।"

यह सुनकर सन्याक्षी का मन किन जडा। जन्होंने वृष्टि उठा कर दीवारों की वैषा, छ क मी वेषा, विषम समी मही आपा था। चही प्रशिक्षा दिवाना है यह मोतन, सन्याक्षी मनोच्चार द्वारा उतका आवाहन करने को। उतकी उपासना की, सबुर स्वर में गायनी का पाठ किया—

मरण तुलाको---रेकाको, तुहसम ताप पुत्राको।

अंग्रम् पू. जुम आओ, सीच आओ और मेरी बिरहा-निक हो बात करो- पुकरति कुकारते समावी समारिस्य हो गये। अहा बाना अतक हो आगी है बहा मौगे मुस्ति-ताता जनकर आता है। कुछ यग बार सन्याती ने नेत्र उचाहे। सबूर कण्ड में कहा- है द्यानम, हे सर्व-चित्रमान, तेरी मही इच्छा है, तेरी मही इच्छा है परमात्मदेव! तेरी इच्छा बूणे हो। आहा! तेने अच्छी जीठा की!

यह कहकर उन्होने करवट ली, श्वास की कुठ क्षण

रोका और फिर 'ओम्' के उच्चारण के साथ उसे मुक्त कर दिया। ज्योति ज्योति से जा मिली। जीवात्मा प्रियतम से मिलकर पूर्णकाम हो गया।

उस समय संध्या के ६ वज रहे थे सन् । १८८३ के अक्तूबर मांस की ३० तारीख थी और वे संन्यासी थे आयं समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती । निरन्तर १५ वर्ष तक भारत में फैले अज्ञान और अन्वकार से संघर्ष करने के वाद जब वे राजस्थान की ओर मुड़े तो किसी अज्ञानी ने उन्हें विष दे दिया। मानों उसने कहा—"भारत की आत्मा में जड़ता का जो विष रम रहा है उसे उतारने के लिये तुम्हें यह विष पीना होगा।

नीलकण्ठ के देशवासी ने उस विष को हंसते-हंसते पिया और फिर—

शंकर दिया बुझाय दिवाली को देह का। कैवल्य के विशाल वदन में मिला गया। तब मानों उसका वह एक जीवन-दीप लक्ष-लक्ष दीपों में प्रज्वलित हो उठा।

( ३ )

तेईस वर्ष वाद!

दीवाली—सदा आनेवाली दीवाली—िकर आई। देहरी राज्य में भिलिंग गंगा के ऊंचे किनारे पर स्थित सिमलमू भवन में एक युवा संन्यासी ठहरा हुआ था। उसके नेत्रों में अपूर्व तेज था। उसके मुख पर एक दिव्य मुस्कान थी। उस दिन वह एक लेख पूरा करने में लगा हुआ था। वह अन्त तक आ पहुंचा था। कुछ पेंसिल, कुछ स्थाही से उसने लिखा—

"को मीत! वेशक उड़ा दे इस जिस्म को; मेरे और सरीर ही मुझे कुछ कम नहीं। सिर्फ चांद की किरणें, चांदी की तारे पहनकर चैन से काट सकता हूं। पहाड़ी नदी-नालों के भेस में गीत गाता फिल्ंगा, वहरे-भञ्जाज (आनन्द के महासागर) के लिवास में लहराता फिल्ंगा। में ही बादे खुझ आराम (मनोहर वायु) और नसीमे मस्ताना गाम (प्रातःकालीन समीर की मस्ती) हूं। मेरी यह मूरते सेलानी (मनमौजी मूर्ति) हर वक्त रवानी में रहती है। इस रूप में पहाड़ों से उतरा, मुरझाते पौवों को ताजा किया, गुलों (फूलो) को हंसाया, बुलबुल को रूलाया,

दरवाजों को खटखटाया, सोतों को जगाया, किसी का आंसू पोंछा, किसी का घंघट उड़ाया। इसको छेड़, उसको छेड़, वह गया, वह गया, वह गया। न कुछ साथ रखा, न किसी के हाथ थाया।"

्यह लेख या या मस्ती का आवेग ? लिखते-लिखते वह स्वयं मस्त हो उठा। चल पड़ा गंगा की ओर। पैर में चोट थी, पर जब मस्ती छा जाए तो दिल की चोट भी भर जाती हैं। उसने लेख को किनारे पर रखा और कूद पड़ा मुरसरि की धार में। वह अवसर गाया करता था—

गंगा तुझपर में वलिहारी जाऊं,

हाड़-चाम सब तार के फैंकूं, फूल-बताशे-लाऊं।
मन तेरे बन्दन को दे दूं, बुढ़ी धार बहाऊं।
चित तेरी मछली बन जाबे, अहम गुहा में दबाऊं।
पाप-पुण्य सारे मुलगा कर तेरी ज्योति जगाऊं।
नुझमें पढूं तो तू बन जाऊं, ऐसी डुबिक लगाऊं।
पण्डे जल यल पवन दशोंदिक, अपने रूप बनाऊं।
रमन करूं सत्वारा मांहि, तब ही राम कहाऊं।

वस वह रमन करने चल पड़ा। वह वेदान्त का दिलदादा था। उसका नाम था 'रामतीय'—हां, स्वामी रामतीयं, जिसने अट्ठाईस वपं की अल्पायु में ही संन्यास ले लिया था, जो संसार से 'तू' और 'में' का भेद मिटाने के लिये संसार को छोड़ चुका था, जो देश और विदेश हर कहीं 'अहम् ब्रह्मोऽस्मि' की पुकार लगाता फिरता था, वही राम 'मां गंगे' की गोद में जा पहुंचा। छाती मर जल में खड़े होकर डुवकी लगाई और फिर 'तू' और 'में' का भेद मिट गया। 'वह गया, वह गया। न कुछ साय रखा, न किसी के हाथ आया।' वे भंवर में जा पहुंचे। वहीं उनका प्रीतम था। आत्मा उसमें लय हो गई। बरीर कुछ देर वाद कपर आया और तेज धारा में वहने लगा।

उस दिन कार्तिक की वही सघनतम अमा यी और उसी दिन क्यों ? उनका जन्म भी तो उसी अमा के दिन हुआ था। उसी अमा के दिन उमने संन्याम लिया था। अद्भुत प्रेम था उसे उस अमा से जैसे उस अंघकार में से वह प्रकाश की खोज किया करना था, जैसे उस अन्यकार में ही उसका प्रीतम था। अन्यकार का अन्त ही तो प्रकाश . है। उसकी आयु भी तथा थी ? कुछ तेंद्रीख बर्द की । पर उसी अल्पकाल में उमने विस्व के प्रापेक प्राणी को आस्वस्त करते हुवे कहा ----

> पुढ बुढ सू निविकार है, निष्वलन सू ओनार हैं।

और अमा के असस्य दीप एक बार फिर एक तेजीमय दीप्ति से जनमंगा चठे । छहराती हुई दोषशिक्षाओं ने मानो गाया

जहा में बहले ईमा, सूरते खुरशीद जीते हैं। इबर दूबे उबर निकले, उबर दूबे इबर निकले।

### गांधी : एक पैगृम्वर

भी रघुवीरशरण दिवाकर

जो लोग गाधी को हिन्दू सत के रूप में देखकर सिर नवाते हैं या भारतीय राष्ट्र का कर्मघार होने के नाने ही चनका लोहा मानते है, वे गांधी के साथ न्याय नहीं करते है। कराना-जन्य जातीयता के छोटे भावों को वयश **फैरी भी सकीण व सुठी मगोदाओं को लेकर गांधी** को मान देना एक विडम्बना है। गाधी जस धरातल पर कडे है, जहांवची नहीं, खुली दृष्टि ही पहुच सरवी है। हिंदू, मुसलमान और ईसाई नी नहीं, हिन्दस्तान, पाकिस्तान और इंग्लिस्तान की नहीं, बेल्कि मानव-मान की दृष्टि से, अखिल विश्व की अपेक्षा से ही गांधी का मृत्य आका जा सकता है। गावी अव्ययन की पुटठ-भूमि एक और अखण्ड मानवता न होकर कोई भी समुदाय विशेष होगा सो ययार्थ का साक्षात्कार न ही सकैगा। किर दृष्टिका सर्वाञ्जीण होना भी आवस्मक है। राज-नौति का चरमा चढावर गांधी की देशने में कीई सार महीं है। अर्थनीति के युत्त में विरे रहकर भी गायी मा बिराट दर्शन कर सकना असम्भय है। गावी सम्प्रदाय-गत चहार-दीवारियों से बाहर है। राष्ट्र की सीमाओं से भी परे हैं। वैसी भी संशीर्णनाओं या बोळी मर्य दाखा में हम उन्हे नही बाध सकते । वे मानव है, महामानव है और इसी भव्य रूप में वे परम वन्दरीय हैं।

पर गाथी महामानव ही नहीं, पैयम्बर भी हैं। पैगम्बर चिरले ही होने हैं। यह एक बहुत ही उसी— सबसे ऊनी—पदनी हैं। यह एक बहुत से 'जावी— मों उन्हें यह पदनी देने के किए तैयार भही हैं। वे उन्ह महामा प्रान्ते हैं, पैगम्बर महों। पर यहा पुरिश्वोप ही

पैगम्बर गाधी

है। पैनम्बर का यथार्ष स्वरूप हुम समझ ही और उसे केकर फैजी हुई भान्त धारनाओं को पूर हटा दें तब हम देखों कि गात्री एक पैनम्बर ही नहीं, बहिक अपने बग के अकेले और निराले पैनुम्बर हैं।

पैगम्बर कीत?

कुछ लोगो को यहा तक यलनफडमी है कि पैगम्बर होने के लिए वे यह जरूरी नहीं समझते कि ध्यक्ति विकास की उच्च थेगी पर हो या महात्मा हो। उनकी धारणा है कि पैगम्बरपन एक तरह नी पहिनाई है, जीवन-गुद्धि से उसका अनिवार्य सम्बन्ध नहीं हैं। पर सच तो यह है कि पैयम्बर वही है जिसका सारा जीवन ही एक पैगाम हो। पहिन और पैगम्बर में बड़ा अन्तर है। पंडित बद्धि व तर्न का चमत्कार दिवागा है, पैयम्बर उससे भी परे अपनी पैनी दृष्टि शहतकर, बुद्धि की ही नहीं, हृदय की भी आलो से, दूर तक देवकर, मानद-जीवन के अधकारपूर्ण स्थानी को विवेक की प्रकाध-किर्ण से आलीकिन करता है। पैसम्बर मूल प्रणेना है, मुल रचयिता है। पहित सम्पादक है अथवा दीनाकार या समालीचक है। पैगम्बर प्रतिपादन करता है। पर्वित विश्लेषण करता है। पडित जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाता है, हवा में उड़ना है, बार की खाल निवालता है, पर पंतुम्बर जमीन पर चलता है, घरती की बात कहता है, सीधी सादी भाषा और गुल्झी हुई शैली में जीवन का सुमावर व बल्याणवारी सन्देश देता है और बात से काम ज्यादा करता है। इस तरह पैग्रम्बर पण्डित से बहुत कवा है। वह मानवयमाज को एक नई प्रेरणा, एक जग-मगाता प्रकाश, एक पैनी दृष्टि और एक मौलिक विचार

देता है। वह एक मनुष्य है, और मनुष्य कोई भी हो, वह भूलों से धारा देनेवाला महामानव है। पंग्म्बर महाम नव है और होना भी चाहिए; पर हर महामानव पंग्म्बर हो यह जल्री नहीं है। मूत्र-ल्प में कह सकते हैं कि पंगम्बर महापंडित—महामानव है।

### मानव-समाज की निधि

एक वात और है। पैग्म्बर न किसी देश की वपीती है और न किसी जाति या सम्प्रदाय का ही उस-पर एकाधिकार है। वह मानव-समाज की अमूल्य निधि है। वह 'कापी राइट' नहीं है कि कोई दल या संस्था उसे ख्रीद ले। वह तो नूर्य है, जिससे हर कोई प्रकाश व शक्ति ले सकता है। वह चांद है जो हर किसी को शीतलता प्रदान करता है। वह चांद है जो हर किसी को शीतलता प्रदान करता है। वह दहना हुआ अरना है जिसका स्वच्छ जल पीकर कोई भी अपने अन्तर की प्यास बुझा सकता है। वह खुली वायु है, खुला आकाश है। वह अखिल विश्व का है। जो भी उसे अपनाए, वह उसी का ह।

### महाकाल की सम्पदा

बहुत्-से लोगों की यह बारणा है कि प्राचीन काल में ही पैगम्बर हुए या हो सके थे। पर 'प्राचीन' एक सापेक्ष शब्द है। जिसे वे प्राचीन कहने हैं, अपने समय में वह नवीन था। आज जो नवीन है, भविष्य में वही पुराना वतनेवाला है। अतः महावीर बीर बृद्ध पुराने ही नहीं, नए भी हैं। इसी तरह मार्क्स बीर गांबी नये ही नहीं हैं, पुराने भी हैं। फिर, नई हो या पुरानी, मिट्टी मिट्टी है, से,ना सोना है। काल-भेद को लेकर द्रव्य-भेद करना वेईमानी है। भूनकाल को गीरव के साथ देखने और वर्तमान पर नाक-भी सिकोड़ने के पीछे सत्य नहीं, प्राचीनता का मोह है। भूत में ऐसी सामग्री अवश्य है जिसपर गर्व किया जा सके; पर वहीं ऐती सामग्री भी है जिसपर लज्जा भी आनी चाहिए। यही वात वर्तनान को छेकर है। यही भविष्य के सम्बन्ध में समझना चाहिए। अतः भूतकाल अच्छा हो अच्छा था और उसने ही पैग्म्वर पैदा करने का ठेका ले रखा था, इस घारणा की तह में अन्यश्रद्धा है।

दूसरी ओर कुछ लोगों का मत है कि पुराने पैग्म्बर आज वेकार हैं। अब नए पैग्म्बर से ही काम चल सकता है, इसका अर्थ यह हुआ कि उनका माना हुआ नया पैग्म्बर कल जब पुराना होजायगा तब वह भी बेकार हो जायगा। पैग्म्बर कोई खिलीना नहीं है कि जब भी जैसी अपनी रुचि या आदश्यकता हो, बैसा गढ़ लिया जाय। पैग्म्बर कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। हर किसी युग में उन्हें हूं इना या नित-नये पैग्म्बर की तलाश करना व्ययं है।

सच यह है कि 'पैगम्बर' को लेकर नए-पुराने का यह विचार-भेद निःसार है। पैगुम्बरपन के मूलभाव या ययार्थ स्वरूप से उसका कोई मेल नहीं है। यह ठीक है कि पैगम्बर अपने समय की व अपने चारों और की परिस्थितियों व समस्याओं को अंशक्षित रखकर ही अपना पैगाम देता है और उन सीमाओं में रहकर ही अपने व्यक्तित्व की गरिमा का परिचय दे पाता है; पर यह उसका दोप नहीं, विलक्ष मानवीय जीवन की प्रकृत सीमा का ऐसा अनिवार्व वन्यन है जिसमें बंधे विना कोई भी जीवधारी नहीं रह सकता। मनुष्य का दुर्भाग्य है कि वह इस वस्तुस्थिति को न देखकर पैगाम को एक कालविशोय के पिजरे में बन्द कर देना चाहता है। वास्तव में पंगम्बर अपने युग का आलम्बन लेकर जो सन्देश देता है, वह उस. युग के लिए ही नहीं, अनन्त भिविष्य के लिए हैं, महाकाल के लिए हैं। जरूरत है पैगान को परिस्थितियों को अनेक्षा से देखने की, पैगाम की दिशा समझने की। वृथा सन्तीप व अन्धविश्वास-जन्य जड़ता के साथ पैगाम की एक अटल, अवाधित तथा पूर्ण सत्य न माना जाय, उसके वाहरी ढांचे या शरीर-मात्र को ही नहीं, ज्ञान-चक्षुओं से उसके प्रागीं पर भी दृष्टि डाली जाय तया उसे चारों और से विरी हुई व स्थिर जलराजि नहीं, सत्ता प्रवाहशील जलघारा समझा जाय तो हम देखेंगे कि पैग्म्बर कालिक्सेप की नहीं, महाकाल की सम्पति. है। वह महाकाल के नभ-मण्डलका एक जाज्वल्यमान मांगलिक नक्षत्र है।

पैगम्बर-एक मनुष्य

पेगम्बर को लेकर प्राय छोगो की यह घारणा है कि वह एक पूर्णपुरप ही हो सकता है। उनकी राय में पैयम्बर मुलो से परे है। मानव जीशन का सम्प्रण बादरों पैगम्बर में होना ही चाहिए ऐसी उन्हें अपेशा है। पर यहा मूल में हो भल है। कोई व्यक्ति हर प्रकार से आ मां जीवन नहीं बिता सनता है। अधिव से-अधिक असका जीवन काल्पनिक पर्ण खादरी जीवन का एक छोटा-सा मश हो दन सकता है। मनुष्य का शरीर मन्त्य का मन और मनुष्य का मस्तिष्क ही ऐसा है कि वहा पूर्णता नहीं मानी जा सकती। आ म-सुद्धि की पर्णता के आदर्श की शिरोधार्य करके भी यह मान्य नहीं किया जा सकता कि यन और मस्ति-क पर, जो ह शरीर के ही अग है, निर्भर रहने हुए कभी ऐसी स्थिन क्षा सरेगी जब विकास---मन-मस्तिष्क का अनवरत परिभाजन-एक जायगा, जीवन का स्पादन व सतत परिवर्तन बन्द हो जायगा। ऐसी स्थिति की नरपना करमा जीवन की नहीं अडता की कल्पना नरना है। षहा जीवन है, वहां विकास है और जहा विकास या पर्ण रह की और बदने की यति है, बहा अपूर्णता है ही। पर छन्दि रूप से पूर्णना मान भी ली जाय तो भी उपयोग की दिन्द से हरिंगज उसे नहीं माना जा सबता। आखिर, उपयोग साम जिंक परिस्थिति व झावक्यक्ता पर निर्मेर हैं। कोई भी व्यक्ति हर परि-स्थिति में तथा प्रत्येक आवश्यक्ता की अपेक्षा से आवश्य कर सके या सदेश दे सके, यह नितान्त असमय है। सभी पैग्रस्वरों ने मानव-समाज के सम्मक्ष उच्चतम मानश्रीय आदर्श रखें हैं, पर उनमें ही क्तिनी विभि-भताए है ? इसालिए कि समी ने कराना-वात के पूर्ण मानव व्य बतत्व के अलग-अलग पहलू ही दिखाए हैं और मही दैनर भी सकते थे। बास्तव में हर पैगम्बर अवनी विशेष परिस्थिति में तथा अपना छोटी सो थाय में सत्त की एक झाका ही दिला सकता था। सत्य अनुन है, चिर-शोब्य है। पूर्ण-परिपूर्ण सत्य न कभी किसी के परले पड़ा है, न पड़ेगा। व्यक्ति, चाहे कितना ही महान हो, सत्य की एक झलक मर देख

सकता और दनियाको दिला सकता है। अत. हर पैग्रम्बर से कुछ विशेष प्रेरणाए ही लेसकते है और यही ठीक भी है। ईसा ने बल्दान का जो उदाहरण प्रस्तृत विया, बुद्ध और महाबीर नहीं कर सके, बंशोंक उन्हें अविक सिंह ण लोगा में बाब करने को अवसर मिला या। जिस तरह बद और महावीर ने भीग विलास व ऐरवर्ष पर लान मार कर, गृह-स्य ग कर, यह प्ररणा दी कि पत्नी तथा परिवार से समाज कवा है, मोह से कर्तं व्य वडा है। ईसा परिवार विहीत होने के नारण इस तरह की परोक्षा न दे सके । महाबीर और बद से जन-बल्याण के रिष्ट घर-बार छोडना सी वा जा सहता है तो मुहम्बद में संपत्नी ह रहते, हुए सेवा और त्याप का पाठ पढ़ा जा संकता हैं। पराधीनना की खजीरो में जरुडे दीन हीन सारत का कर्णधार गांधी जिस विद्रोह व सवपं की महान पुण्यमंत्री चनित का विश्कोट कर सका, महावीर और बुद्ध आदि के लिए कैसे समद था? राजकीय वैभव के बीच जन्में और एले राम और कुछा जा उदाहरण रत सके ग्ररीव घराने में बीर जगही प्रदेश में जन्म रेनेवाली एक गडरिए की सतान--मुहम्मद-वैता उदाहरण कैते रख सक्ती थी ? मतका यह कि किसी भी व्यक्ति से मानव जीवन के लिए सव तरह की प्रेरगाए नहीं की जा सकती। जीवन एवं बहुत ही उल्झी हुई पट्ली है। इसके आहेब पहलू है। इसे लेकर असल्य प्रशासाडें हाते रहते हैं। साथ ही तरह-तरह की परिस्थिति शे में यह पहेली नमे-नमे रूप रेकर सामने आती है। ऐसी हारत में हम एक ही व्यक्तिको समन्त अदर्शीका जमनलें, साधी प्रेरगाओं का स्रोत मान लें, विसी और की सरफ नजर न डार्डे सो कैने काम चल सक्ता है ? किर्सो जोदन एकानी चन जायगा, उसने सन्तन न रहेगा।

इन बन्तुर्व यदि की और प्यान न देने का ही यह परिणाम है नि कुछ कोम पैग्रस्वर विशेष के बाढ़े-यहन बिनारों की आलोबना करफे, जनकी कुछ नृदियों या मुगे को प्रकाश सह कर, कह बैडते हैं कि यह कैसा पैग्यवर हैं? पर यह पदिव खतान है। पैयम्बर आविद दुनियां से परे नहीं है। पैगम्बर ने कभी भूल न की हो, कभी ग़लत कदम न उज्या हो, यह ज़रूरी नहीं है। संच यह है कि पैगम्बर अपनी ग़लतियों के वावजूद पैगम्बर है। महाव़ीर, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद बादि सभी से ग़लतियां हुई थीं; पर किर भी वे पैग़म्बर थे;क्योंकि अपने जीवन से, अपने तिद्धान्तों से, वे दुनिया को ऐसी देन दे गए जो सदा ही भविष्य को प्रेरित करती रहेगी, अनन्त युग तक मानव का पय-प्रदर्शन करती रहेगी। ईमा ने सेवामय जीवन विजाते हुए, न्याय का पक्ष लिया, डोंग बीर दंभ को नग्न रूप में प्रकट किया, मानव-समाज को नई स्फूर्ति व उमंग दी और परिणाम-स्वरूप जब दुःस्वार्थी व दुप्ट सत्ताघारियों ने उन्हें क्रास पर लटकाया तव भी वे अंतिम क्षण तक अत्याचारियों के प्रति मन में दुर्भावता न लाए, विलक्ष ईरवर से उनके लिए क्षमा-याचना करते-करते गए। कैती दिञ्य-ज्योति यहाँ जल रही है! फिर, उन्हों ने भ्रमवश, परिस्थितियों से विवश होकर अथवा अनुमूति की गहन ना को लेकर **छोई गलत दावा किया हो या कोई गलत वात कही** 

हो तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वे पैग़म्बर नहीं थे । इसी तरह मुहम्मद ने, असंस्य देवताओं की पूजा के नाम पर हद दरजे गिरे. हुए, बुत-परस्ती में ढूवे हुए बीर वुरी तरह आपस में लड़ते हुए जंगली व खूंखार क़बीलों को भाईचारे का, सहिष्णुता व प्रेम का संदेश दिया, इन्सानियत का पाठ पड़ाया अौर इसके डिए *उन्होंने यातनाएं* सहीं, गालियों व अपमानों के कड़वे घूंट पिर, ईंट-पत्यर की बीछारें झेलीं और अंत में वादशाह वनकर भी फ़कीर का-सा जीवन विताया । कीर्न कह सकता ह कि इस मानवश्रेष्ठ का जीवन एक जलती हुई मशाल नहीं है ? ऐसा नहीं है कि उनसे भूलें नहीं eर्दुई । यही नहीं, गलत दावे भी उन्होंने किए; पर किर भी वे पैग़म्बर थे, यह संदेह से परे है। यही वातें महावीर और बुद्ध को लेकर हैं। गांधी भी इसी कोटि में आते हैं। उनसे भू हें हुई हैं, गहतियां हुई हैं। उन्होंने अपनी गलतियों को माना भी है। भूल होने पर उन्होंने प्रायश्चित किया है, उसे सुधारा भी है। पर किर भी वे पैग्रम्बर हैं।

# जीवन की गहराई में

### हरिभाऊ उपाध्याय

'साबना के पय पर' १ में मैंने अपने अहिसा-संबंधी कुछ अनुभव लिखे हैं। उन्हें पढ़कर कई मित्रों ने आग्रह किया कि अपने और अनुभव भी लिखूं। खास कर मेरे पुराने नित्र पं० सुखलाल जी (प्रसिद्ध जैन विद्वान) ने कहा कि आपके अनुभव व्यावहारिक दृष्टि से बड़े काम के हैं, और भी ऐसे अनुभव लिख डालिए। उनके जैसे साबुमना के सुआव से मैं इस और अविक प्रवृत्त हो रहा हूं।

'सात्रना के पैंथ पर' १९४५ में प्रकाशित हुई। उसके वाद मेरा जीवन एक खास दिशामें मुड़ा है। 'भारत छोड़ो' आन्दो कन-मंबंधी जेल-जीवन में सन्तों के चरित नथा आध्यात्मिक और दार्शनिक साहित्य अधिक पढ़ा। उससे मन पर समर्थ रामदास की यह उक्ति भलीभांति अंकित होगई—पहिले ते हरिस्मरण, दूसरे ते राजकारण—अर्थात् जीवन में प्रथम स्थान भगवान को और दूसरा राजनीति को मिलना और रहना चाहिए। वैसे राजनीतिक क्षेत्र में रहते हुए भी जीवन में भगवान् का अधिष्ठान तो था ही; परन्तु उसका नंबर दूसरा था। यह मुझे अपनी भूल मालूम हुई। मगवान् के अधिष्ठान के मानी हैं सज्जनता, सचाई का अधिष्ठान। राजनीति के मानी हैं कार्य-सफलता को प्रथम स्थान। जब कार्य-सिद्धि पर दृष्टि रखते हैं तो साधन-शुद्धि को ढीला करने के

१ 'सस्ता साहित्य मण्डल' द्वारा प्रकाशित ।

अवसर आ जाते हैं, इस लोग या मौह की रोकना बडा कठिन हो जाता है। यदि कार्य-सिद्धि का बाग्रह छोड देते हैं तो फिर 'अन्यावहारिक' आवर्शवादी' 'हवाई' 'सब्नी' की पवित में बैठाये जाते हैं जो कुम्य मापा में 'अयोग्य' के पर्यापवाची-असे हैं। मुझे अनुमवो ने बताया कि यदि जीवन की भित्ति मजबूत नहीं है, भूछ गहरी नहीं है तो कोरी व्यावहारिक सफलता का हिशाब हमें दूर तक नहीं से आ सकता। वे सफलताए जाहिरा तौर पर भले ही 'देश-सेवा' 'समाज हित' में खप जानी हो, हमारी होहरत भी वड जाती हो, परना हुमारा असली जीवन उसमे अछूता रह जाता है। बडे-बड़े काम हाथ से हो जाने पर भी हमारा जोवन ऊवा उदा हुआ नहीं पाया जाता; बल्कि कई बार तो बिर गया दिलाई देता है। अल यह जरूरी है कि हमारी सफलताओं का मेल हमारी जीवन-सुद्धि या आरबोन्नति से हो। मुझे अनुभव ने बताया कि यह तभी हो सकता है जब कार्य-सिद्धि का आधार और परिणाम जीवन-शदि हो। शदि से ही सिदि समन है, बल्कि शदि का ही दसरा नाम 'सिद्धि' समझना चाहिए। स्वतन रूप से 'सिद्धि' का विशेष मृत्य नहीं हैं। जो भीतर से 'शाद्वि' है, वही बाहर से 'सिद्धि' दीखती है । इस स्थिति को ही मैने रामदास की पूर्वोक्त उनित में प्रतिबिध्वित पाया है।

मेरे इस विश्वास का मतलन यह नहीं है कि मैं थीवन मुद्धि या मगवान के अधिप्यान के निकट पहुंच गया हूं । दगका इतना ही नर्च है कि जीवन में इसे प्राथमित्ता देने लगा हूं । और जबसे यह मुद्धि उदस हुई तमसे में अनुभन करता 🎬 कि भगवान् की विशेष क्या मृत्या हुई हैं। विश्वामी-अस्त्या में शायद स्वाधी समर्ताम के क्रियो ज्यास्थान या लेस में मेंने इस बायय मुद्धा मृत्य प्रायम-

- (१) जो यह भागते हैं कि 'मगनात् हैं', उनके धार्मिक जीवन की शुरूआत हुईं, ऐसा धानना चाहिए।
- (२) जो मनवान् को कहते हैं कि 'वह हैं' वे धार्मिक जीवन की द्वारी मजिल पर है।

- (३) जो कहते हैं कि 'तू हैं' वे तीसरी मजिल पर है। और
- (४) जो नहते हैं कि 'मैं हू' या 'जो में हू वही तू हैं और तू हैं वहीं में हूं वे आखिरी मजिल पर हैं।

तमी से मेरे हृद्य में धामिक जीवन का महत्य यकित होगया था । वाद में जब गाणीजों में मयवानु का वर्ष किया 'सत्य' या 'शस्य की ध्याक्या को मणवानु का वर्ष किया 'सत्य' या 'शस्य की ध्याक्या को मणवानु तव एक नवा प्रनास आया मालून हुगा । स्वार में जो कुछ बत्य है वह मणवान् ही है, ससार का जो कुछ बत्य है वह मणवान् है। जिसे हम मणवान्, देवद, वह बावि कहते हैं वह सावित्र है क्या ' तो बुढि यही उत्तर देवी है कि जो अनिम बास्तिवन्ता है, को अन्त में बत्त है वही मणवान् है। यह सत् एक केन्द्र में भी स्थित है और सारे विकड़ में भी ध्यान्त है। चौक-क्य से केन्द्र में दिवत है और बहाक्य से मिश्व में ध्यान्त है। जबसे यह सत्य समस में स्थान सहस्य की सायना ही देवद की सावना मालूम होने क्या । सत्य की सावना ही देवद की सावना मालूम होने क्या । सत्य

मैने कहा है कि अहिंसा मुझे अपने हृदय का धर्म जैसा मालूम होता है। जैसे बच्चा माँ की गोद पाने के लिए सहज भाव से उसकी सरफ सपटता है ऐसा मझे बहिसा को देवकर लगता है, परन्तु सत्य बद भी कुछ डरावना लगता है। उसकी मखरता मन को अल्साती हुई लगती है । बुद्धि सो मानती है कि सत्य नग्न है, वही उसकी प्रतिष्ठा, द्यन्ति, महत्ता और विशेषता है, परन्तु मन के सस्कार उसकी नग्नता में वीमत्सता का अक्तीलता का अनुभव करते हैं। मेरी युद्धि यह कहती है कि जो शरीर से, मन से, युद्धि से मण रह सकता है वही सत्य-रूप या ईश्वर रूप है। जवनक मन या बुद्धि यह सावधानी का सक्त करती है कि 'ठोग क्या कहेंमें ?', 'छोग बुरा तो नही मार्नेगे?' "यद्यपि शुद्ध लोकविरुद्ध न वरणीय नावरणीयम्" तथ तक शुद्ध सत्य का पूर्ण प्रभाव हमपर नहीं है, लोनाचार के विवेक का है। सामाजिक और लोकिक दृष्टि से विवेक का बहुत महत्व है, परन्तु में महां 'सत्म' के

स्वरूप का दर्शन कर रहा हूं, विवेक के स्थान का निर्णय नहीं।

अहिंसा कितनी ही प्रिय हो, जवतक सत्य में उग्रता रहती है तग्रतक हम सत्य से तो दूर हुई हैं, सच्चो अहिंसा भी हाथ लगी है या नहीं, इसमें सन्देह होने लगता है; क्योंकि जो रमणीयता, सुन्दरता, आकर्षण अहिंसा में लगता है, वही, विक उससे वड़कर सत्य में, भगवान में लगना चाहिए। घर का वड़ा-वूड़ा मान्य, आदरणीय, पूज्य होते हुए भी उरावना लगता है; परन्तु अपनी पत्नी प्रायः सदैव मोहक और रमणीय लगती है। सत्य मेरे लिए घरके वुजुर्ग की तरह है और अहिंसा अबोज्जिनी की तरह। सामाजिक विवेक या लोक-मयीदा और लोक-भावना का आदर करनेवाला सत्य मेरे मन में स्थान पा चुका है, मेरा प्रयत्न भी उसकी रक्षा का रहता है; परन्तु च्युति के प्रसंग भी अभी आते रहते हैं। गृद्ध या नग्न सत्य अभी पहुंच के परे मालूम होता है।

सत्य को समझ लेना उतना कठिन नहीं है, जितना उसको निशहना, उसका पालन करना। 'दूसरे को नुकसान या दुःख न पहुंचने देना', यह खयाल इसमें सबसे बड़ी हकाबट डालता हुया मालूम होता है। निजो यद्यपि नहीं तो भी अपने प्रिय कार्य को हानि का उर भी लगता रहता है। दो लड़नेवालों में जब समझीता या मेल कराने का प्रयत्न करते हैं तब सत्य की अक्षरशः रक्षा करना बहुत कठिन लगता है। एक ने जो बात हृदय खोलकर अपने या दूसरे के बारे में कही है, वह -ज्यों-की-त्यों दूसरे से कहने में स्पष्टतः विवेकहीनता मालूम होतो है और उससे ठीक उसी कार्य की हानि होने की सम्भावना रहती है जिसे हम सिद्ध करना चाहते हैं। कई वार जानते हुए भी 'नहीं जानते,' ऐसा दिखाना पड़ता है। व्यवहार में सत्य-पालन का कोई राजमार्ग नहीं दीख पड़ता और कई बार मौन रहना उचित मालूम होता है। मौन रहना भी सर्वया सत्यानुकूल ही होगा-ऐसा नहीं कह सकते। जो बात है या हुई है, उसके विपरीत यदि असर सामने वाले पर हुआ तो हमारा वह मीन या भाषण दोनों सत्य के विरोधी हुए। इस तरह बृद्धि से सत्यासत्य का निणंय और पालन महा कठिन मालूम होता है। सत्य-वृत्ति का विकास करना ही एक-मात्र मार्ग दीखता है। इससे कठिन अवसरों पर मार्ग अपने-आप सूलने लगता है। जितना सत्य का विकास हमारे अन्दर हुआ होगा, उतना ही सत्य-पालन से होने बाली जाहिरा हानि सहने का बल हमें मिलता जायेगा या वह हानि हमें हानि नहीं मालूम होने लगेगी।

'वापू के आश्रम में' संस्मरण-माला पूरी होने पर भाई यशपालज़ी ने जोर दिया कि 'जीवन साहित्य' में प्रतिमास अपने ऐसे अनुभव लिखता रहूं। पं० मुखलाल-जी आदि मित्रों का मुझाव मेरे सामने था ही। मैने सीचा 'साधना के पथ पर' का उत्तराई ही क्यों न लिख डालूं? इस प्रारंभिक वक्तव्य से उसकी शुक्तआन करता हूं। पाठकों को इनसे लाभ पहुंचा तो मेरा प्रयत्न सार्थक होगा। (क्रमशः)

# जहां सौन्दर्य और श्रम साथ-साथ चलते हैं!

प्रो० रंजन<u></u>

स्याम पूर्व का एक छोटा-सा देश है। इसकी सब से वड़ी विशेषता यह रही है कि इसने सैकड़ों वर्षों से अपनी आजादी की रक्षा की है। एशिया का यही एक देश है जिसने प्रत्यक्ष रूप से विदेशी प्रभाव को स्वीकार नहीं किया और न उसकी हकूमत स्वीकार की। इसके सिवाय यहां के इतिहास के प्राचीन पृष्ठों

पर भारतीय संस्कृति की सैकड़ों कहानियां अंकित हैं। एक समय भारत की जो कुछ भी विशेषता थी वह यहां पर पल्लिवत और पुष्पित हुई। वाद्ध वर्म के रूप में स्थाम भारत की इस थाती की आज भी रक्षा कर रहा है। भारत ने उत्थान-पतन के अनेक नाटक देखे। उसका वह गीरवपूर्ण अतीत आज केवल कक्षा की वस्तु रह गया है, वर इन पूर्व के देशों ने यहां के कितने ही स्थरं-पृष्ठों को अपने जीवन वा एक बग ही बना जिया है। बीढ मर्म बाल भी यहा छोक-प्से के रूप में मान्य है। ऐसे स्थाम के विषय में कुछ और अधिक जानने की हमारी उत्तुक्ता स्थामांकिक ही है। मासिक के पूर्व किसी भी देश के सर्जून-दर्यन तो बही करा सकते, पर उसरी एक साकी अवस्थ दी जा सहती है।

भारत के कुछ लोग बतुंगान स्थाम को प्राचीन भारत की एक अनुकृति-मान मानते हैं, इससे अधिक भ्रान्तिपूर्ण बात और कोई नहीं हो सकती। स्याम ने अपने पडीसी देशों की संस्कृति और मृत्यना के भड़ार से बहुन कुछ ग्रहण किया है । बच्चोडिया, हिन्देशिया, भारत चीन एवं महाया के जीवन की अभिट छापी से मिनकर एक ऐसा रसायनिक पदार्व बन गया है जो मूल से सर्वा निज है। यह महना भी आन्ति-पूर्ण ही होगा कि इस देश के जीवन में इस अश तक भारत का प्रमान है, इस अश तक चीन का या इस अश तक पश्चिम का। समन्वय और गहण के इस गुग ने स्थाम के जीवन में एवं मीलिनता उत्पन्न कर दी है और यही गारण है कि सब प्राचीत देशों से कुछ-त-कुछ लेकर भी स्याम उनका नही, क्षपना बना रहा है। यह विभीनता पहले भी भी थीर वाज भी है।

बहुँ तक वर्तमान स्थाम की वीमाओ वा प्रस्त है वे आज स्पिर हैं, पर इतिहास के पिछठे पन्ने पर्राटने से पता चन्नता है कि इस देश को सीमार्थ, राज्यका और राज्यानिया स्थायर वरकतो और सिटती रही हैं। हारवती जीर अजुष्मा के राज्य आज अपनी क्लाओर समृद्धिकों कहानी मान रह ग्याहै। अनेरे सहदरों से दर्गामा कतीत बोल रहा है और उस प्रमुद्धि सप्रमंग्य जनीत से छन्नर बाव बित्त स्थाम का मिनार्थ हुंग हैं, यह प्राचीन, नवीन, पूर्व, प्रस्तुक सा प्रमार्थ हुंग हैं, यह प्राचीन, व्योग, पुर्व, प्रस्तुक सा प्रका हिंग हो। यह सा विक्रायण पर्व व्यापन प्रस्तु हैं, बहा भी स्थाम में सम्यन्य एव व्यापन पुरुष्टकोण भी कमी छोड़ा नहीं गया। देश वा छोड़-पर्य भीद वर्ष सा बीरहें, पर सहा के छोड़-शीवन से प्रमायण

और महाभारत को क्यायें गधी पड़ी है। राम का चरित्र यहा के लिए जीवन कर आदर्श वन गया है। रग-मच, बहानी, नृत्य, नाटक सभी रामामण और महाशास्त से ही प्रेरणा लेते हैं। राम और बुद्ध दोनो यहा के लिए आदर्श व्यक्ति है। मन्दिरी में जहा गर्भ-गृहो में बुद्ध की मृति शो की प्रतिष्ठा है वही उसी मन्दिर की दीवारो पर सपूर्ग राम-क्या चित्र हारा उतार दो गई है। स्थान की चित्रवला की थेप्ट अभिय्यवित रामायण-क्या के द्वारा ही हुई है और बद्ध के साथ-साथ शिव और बद्धा की या विष्ण की मतियों का मिलना भी असभव नहीं है। स्थाम की राज गती बैंकाक में ऐसे बहुत-से बाट (मन्दिर) सिलेंगे जहां बढ़ के साथ-साथ बह्या, विष्ण भी घोषित है। दनिया के किमी देश में इतना समन्वयात्यह आचरण देखने को नही मिनता. ्मनित के साथ भोग, पूर्व के साथ पश्चिम गले मिल रहे हैं। भारत ने जिस सिद्धान्त का निर्के कागज -पर बलात किया है, स्यान में उसे आचरण में उतारा है। और यही कारण है कि संस्कृतियों का अञ्चापन यहा घर नड़ो कर सका। वे एक-दूबरे की पूरक के रूप में बड़ा विक्रित हुई और सर्ग से भिन्न वस्तित्व को सर्ग में ऐने विशादिया कि जनका वपना बछ रह ही न गया।

स्थिति के अनुकूष बना केना स्थानियों के बीवन में खुब है। यह दूनका एक विशेष गुण है। राजनीति में क्या, चर्क में वदा, ध्यवसाय में क्या, सार्व में स्था, ध्यक्त पर सह स्वा प्रस्ता प्रकार पर सह मान प्रमान कोना सिद्धान्त, आर्या, नियम और मान्यलाओं में हतेया ज्योके रहे हैं। आराध्यक्त में नियम और मान्यलाओं में हतेया ज्योके रहे हैं। आराध्यक्त में स्वाच के सार्व प्रकार स्वाच करते, पर बदके, पर देखने बाली आजादों को नहीं जाने दिया। स्थाम को इसी स्वित से आद बहुन-ने देश जान उठाना चाहते हैं, पर उचकन इतिहास सात्ती हैं कि ऐसे अपनार्य पर स्थाम को अपना वर्जन्य वा पालन करना आता है।

बभी बैसा कि कपर सकेत किया था, स्वाम में

भोगवाद और भिक्षुवाद साय-साथ चलते हैं। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। देश का सामान्य नियम है कि प्रत्येक युवक दो वर्ष के लिए अनिवार्य सैनिक शिक्षण में शामिल हो, उसी तरह प्रत्येक बीद युवक को कुछ समय के लिये भिक्षु वनना भी आवश्यक है। यह रस्म किसी समय पूरी हो जानी चाहिए। और फिर आपकी मर्जी पर है कि जब जी चाहे, चीवर को उतार कर अलग रख दें और गृहस्य वन जायें। यहां पुनः गृहस्य होना न तो अपमान का कारण बनता है और न पतन का। अधिकांश भिक्षु थोड़े समय तक भिक्षु-वर्म पालन करने के बाद अपने गृहस्य-धर्म में लीट आते हैं। आजीवन उपासक और भिक्षु वने रहने वाळे लोग कम होते हैं। दोनों एक-दूसरे के पूरक कर्तव्य हैं-पूरक इसलिए कि गृहस्य अपने 'भिक्षु' कर्तव्य की मूल नहीं जाता। भिन्नुओं के निर्वाहायं कुछ जिम्मेदारी उसकी भी है, यह वह समझता है। ऐसे ही उदार गृहस्यों के दान पर स्याम के सैकड़ों बाट और विहार चलते हैं। स्वयं भिक्षु न सही, पर भिक्षु के प्रति उनकी हमदर्दी कम नहीं होती। समाज थोड़े-बहुत आजीवन भिक्षुओं का भार वड़ी सरलता से निभा लेता है। आप आश्चर्य के साथ पूछ सकते हैं कि इस अर्थ-युग में व्यर्थ ही क्यों याई-समाज भिक्षुओं का अ।दर करता है और क्यों उन्हें जीवन के निर्वाह के लिए कठि-नाई नहीं होती? इसका उत्तर सहज ही दिया जा सकता है। प्राचीन काल से स्यामी समाज की शिक्षा-दीक्षा, उत्नव-विनोद, दवा-दारू की व्यवस्था ये विहार या बाट ही करते रहे हैं। गांवों में तो इन मन्दिरों का एक सांस्कृतिक महत्व हैं। यहां त्योहारों के दिन लोग इकट्ठे होकर नाटक और नृत्य करते हैं, उपदेश बीर धर्म-ग्रंथ सुनते हैं । जो पढ़े नहीं हैं, उन्हें पढ़ाने-लिखाने का दायित्व भी पहले इन्हीं विहारीं पर रहता था। मिक्षुओं का जीवन आच्यात्मिक दृष्टि से कितना कंचा है या नीचा, यह प्रश्न गीण है ; पर इतनी वात सच हैं कि यहां के भिक्षु उपयोगिता की दृष्टि से स्यामी समाज के रोम-रोम में गुथे पड़े हैं। शिक्षा-विभाग तो सरकार ने अब खोला है, पर अनतक इस कर्तंब्य का

पालन कौन करता था? -- कीन वह स्थान था जहां सुख-दु:ख, हर्य-विपाद, रोग-शोक में जाकर स्यामी कुछ राहत पाता था ? जीवन के विकास और विनोद की व्यवस्था, रोग की दवा, सभी के लिये भोले स्यामी इन्हीं विहारों में पहुंचते थे और हैं और यहां उन्हें आत्मा, मन और शरीर के लिये पौष्टिक तत्व मिलते थे। तब ऐसी संस्था और उसके सायकों के प्रति गृहस्थों की वैराग्य और उपेक्षा कैसे आ सकती है ? ये भारत के संन्यासी या वावा नहीं है जो अपनी मुक्ति की चिन्ता में ही रात-दिन दूवे रहें। ये समाज से दूर नहीं, समाज उनकी साधना और सेवा की प्रयोग-भूमि है। इसीलिए उपयोगिता और शिक्षा की दृष्टि से वे सदा से समाज के अंग रहे है और रहेंगे। तभी उनके प्रति समाज की श्रद्धा और आदर कायम है । वैंकाक के बीद्ध विश्वविद्या-लय से शिक्षा प्राप्त कर निकले हुए भिक्षु उस शिक्षा का फिर गांवों में जाकर प्रचार करते हैं-विक्षा और धर्म की यह अलख इस प्रकार युग-युग तक जगती रहती है।

याई-समाज की दूसरी विशेषता है-यहां की महिलाएं। शाब्दिक स्वतन्त्रता और समता तो स्त्रियों को भारत ने भी दी है और समय-समय पर प्रशंसा और स्तुति के नशे से उन्हें कम मद-होश भी नहीं किया गया है-- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' के वाक्य हमारे आचरण के नहीं, आडम्बर के सूचक हैं। परन्तु स्थाम में जो कुछ देखा वह पच्छिम से भी भिन्न या, श्रेष्ठ या। यहां की नारी सच्चे अर्थ में पुरुप की साथिन है। उसे वार्थिक और सामाजिक थाजादी प्राप्त है और राजनैतिक आजादी की उसे चिंता नहीं। उसके विषय में वह सोचना भी नहीं चाहती । वह समज्ञती है कि राजनीति निष्टुर पुरुष के ही उपयुक्त है। इस आर्थिक स्वतंत्रता की सामा-जिक दृष्टि से भी बहुत अहमियत दी जाती है। अपने देश में जिस तरह पुरुष का कमाना आवश्यक है उसी प्रकार स्याम में कोई नारी वेकार नहीं वैठती~ कुमारी, विवाहिता, वृद्धा, सभी जीवन के संघर्ष में भाग लेती हैं। फिर ऐसा भी नहीं कि दफ्तर उनके गृह-जीवन

के वर्त्तव्य में बुछ वसी करदे। निठल्ले बैठकर गप-शप करना उसे नहीं माला। ऐसी महिलाओ को इस देश की तरह विशेष सम्मान भी नहीं मिलता । कुछ राजवश की महिलाओं को छोडकर, जो बहुत कम है, शेय सभी महिलाए अपनी स्थिति, शिक्षा और योग्यता के अनुसार कुछ-न-कुछ काम करती है। खेनो में हल के पोछे धान विखेरना. स्टेशनो पर फल, माँस और पानी बैचना, होटलो में सर्विस करना और दफ्तर में फाइलें सम्भालना और स्कलो में पदाना-ये सब महिलाओ हे ही काम है। कपडें की बढ़ी-बड़ी दुवानो पर इन्ह मैंने क्पडे बेचते देखा। सरकारी विभागो की कृतियो पर अधि काश स्याम के सदा मुस्तराते चेहरे ही नजर आयेंगे-शायद इसीलिए यहां के दपनरों में पुरुष की गैरहाजिरी कम होरी है। फुर्रीले हाय-बेधिशन चेहरे, खिलती अदायें साथ काम करने वाले पुरुषवर्ग को भी चेतना और उत्साह देती रहती है। श्रम यहाँ भीक है, बेगार नहीं। आफिस के नीरत, शुष्क कमरे इस उल्लास और हती-स्तरी के बाताबरण में अनुप्राणित हो उठते हैं। बसा में सफर करते समय आपको सकोच करने की जरूरत मही । दो महिलाओं के बीच यदि स्थान रिक्त है तो आप आराम से बैठ सकते है और आप के बीच में यदि एक महिला के बैठने भर की जगह भी खाली है सो दिना आप को इधर-उधर खिसकाये देनिया बैठ जायेंगी । नोई बात बरना हो तो तशल्लुफ दिखाने की जरूरत नहीं। आप जो पूछेंगे उसना बडी नमना से उत्तर मिलेगा । स्याम की नारिया अपने की छुई-मुई मही समझनी, जी पुरुषों की छाया या बात से अपवित्र या दूषित हो जायगी। एक-दूसरे से बात करना मर्यादा-उल्लंघन की सीमा में नही आता । सेवन-कम्प्लेवस (Sex Complex) इनके दिमान में है ही नहीं । दोनों को दोनों की इज्जन का स्थाल रहता है, पर वह इतनी नाजक नहीं है कि-पर पुरुष से बात करते ही चली जाय । इस देश में कोई स्त्री अपने को दायो नहीं मानती और न पुस्य देवता । समाज में आर्पिक या जाति के आधार पर कोई भेद नहीं होता । जाति और वश को मिष्या मानना के लिए यहां कोई स्थान नहीं। विवाद वहां आधा तीर पर मेम-विवाद ही होते हैं, जिसे स्थामी स्वयंवर का एक रूप मानते हैं।

परस्याम के जीवन का एक और चित्र है, जो सफेद नहीं है। समाज में कई क्षेत्रों में सबम का अभाव भी है। कुछ वराइया भी स्वामियो में गहरी जह जमावे है। इनसे समाज को बड़ी हानि पहुची है। फिन्एखर्ची, आडम्बर और हालाबाद ने इनकी वडी हानि की है। इसीलिए बड़े-से-बड़े स्थामी की आप कर्ज से मुक्त नहीं पायमे । दोना मिलकर कमाते है, फिर भी खर्ष पूरा नहीं पडता । पीने-पिछाने का चौक बहन आम है । महिलाए मी इस बात में पीछे नहीं है । मितब्ययता महिलाओं में भी नहीं है। भौतिक दिष्टिकोण इतना हावी हो गया है कि ये लोग लाने-पहनने से आगे कुछ सोचना हो नहीं चाहते। उमरखैयाम पैशा दी ईरान में हुआ, लेकिन उसका असर स्थाम में वडा । आध्यात्मिक पक्ष मृतप्राय हो गया है। पुरुषों में एक प्रकार को अजीव लागरवाही के दर्शन होगे। बस में बैठकर इसका अन्याज आप लगा सकते है। दाया-वाया, धीमे, तेज-सङ्क के कोई नियम इन्हें मान्य नहीं । बैठे-बैठे ऐसा लगता है कि बस अब टकराई, अब टकराई। टेफिन के नियम जैसे वहा कोई मानता ही नही। बाएदिन दुर्घटनाए होती है। मीड-भाड वाली सडको पर मैंने हाइवरो को ४०-५०-६० की रफतार से वसें दौडाते देवा है। यह लापरवाही जिन्दगी की दौड में भी मिलेगी। पूर्व में वह स्पृति नहीं है जो महिलाओं में हैं। कुछ बहदीपन-सा है। पुरुष विनोदी विश्वसी दोनों है और इसीलिए साधारण नागरिक राजनैतिक हलचलो में विशेष रुचि नहीं रखता ।

"इस दुनिया में मनुष्य ज्यादा है या तम है, इसका पृथ्वों कोई मार पहसूस नहीं करतीं, लेकिन सनुष्य सन्त्रन हैं या दुर्जन हैं, इसका भार अवस्य महसूस करती हैं। पृथ्वों को मनुष्य की सत्या का नहीं, स्वीयों का भार हैं।"

# न्त्राचार्य जे. सी. कुमारप्पा

### डा॰ श्रोमप्रकाश गुप्ता

कुमारपाजी का सच्चा दर्शन मगनवाड़ी में होता है। उन्होंने ही इसे जन्म दिया है और १७ वर्ष से वे यहां हैं। मगनवाडी 'अखिल भारतीय ग्राम-उद्योग संघ' का केन्द्र है। बड़ा सुन्दर और रमणीक स्थान है। छोटे-वड़े बहुत से उद्योग-भवन, प्रयोगशालाएँ क्षीर कार्यकर्ता-निवास हैं; किन्तु कुमारप्पाजी का अपना घर उन सबसे छोटा है। २० फुट लम्बा और १५ फुट चौड़ा एक कमरेका यह मजान है। वर्षा ऋतु में सोने के लिए एक वरामदा है। मकान के चारों तरफ लकड़ी का एक बाड़ा है और वाड़े के बाहर खाई का एक पाखाना है। उसी एक कमरे में उनका स्नानवर है। मुलाकात-वर और भोजन-घर भी उसी में हैं। फर्निचर के नाम पर एक लकड़ी की खाट, एक छोटी-सी मेज र्जार स्टूल को छोड़कर कुछ नहीं है। यही कुनारप्पाजी की प्रसिद्ध झोंपड़ी है। इस झोंपड़ी के अन्दर किसी का याना उन्हें अच्छा नहीं लगता। यदि कोई आदमी उनसे कुछ वात करने के डिए अन्दर आ भी जाता है तो वे चुपचाप उठकर वार्ते करते-करते उसे वाहर ले आते हैं। किती को पता भी नहीं चलता।

घोती-जामा और कुर्ता पहने हुए इस झोंपड़े में यद्यिन कुमार पाजी विल्कुल एक हिन्दुस्तानी छगते हैं; किन्तु वह एक ऐसे हिन्दुस्तानी हैं, जिनपर पाश्चात्य देशों की बहुत-सो बच्छी चीजों का खूव प्रमाव पड़ा है। उनके झोंगड़े में हरेक चीज विल्कुल व्यवस्थित और सुन्दर छंग से रखी हुई मिलेगी। मिट्टी की साफ-सुयरी दीवार पर तीन-चार शीग्रे में मंड़ी हुई तसवीरें, पीतल की शमादानी, जिसमें घानी का तेल जलता है, कमरे की शोमा को और भी वड़ा देती हैं। कुमारपाजी अपने नित्यप्रति के जीवन में बहुत ही व्यवस्थित हैं।

कुमारप्पाजी समय के वहुत पावन्द हैं। एक घड़ी

सदैव उनकी सहगामिनी रहती है। एक-एक मिनट का हिसाव उसी के आवार पर हेता है। मगनवाड़ी के अपने १७ वर्षों में शायद ही कभी उन्होंने समय के पालन में चूक की हो। चाहे बलास में जाना हो या किसी सभा-समारोह या उत्सव में, अथवा मुलकत करनी हो, वे कभी एक मिनट की भी देर नहीं करते।

मुलाकःत के लिए पहरें से ही समय नियत किए विना वे किसी से भी नहीं मिलते। कई बार ऐसा हुआ है कि कुछ प्रमुख व्यक्ति आए; किन्तु मुलाकात का समय पहले से निन्चित न होने के कारण उन्हें निराश लोटना पड़ा । एक बार एक सज्जन से मुलाकात के रिए ९ वर्ज का समय विश्चित हुआ था । ९ वजकर १० मिनट तक कुमारप्पाजी ने राह देखी। उसके बाद जब वे मेहमान अ.ए तो उनसे कहलबा दिया कि में अब दूसरे काम में लग गया हूँ । उनके भाई-बहनों तक को उनकी इस आक्त के अनुसार वरतना पड़ता है। कभी-कभी उनकी इस आदत से लोग चिड़ जाते हैं; किन्तु वे परबाह नहीं करते। एक बार तो जब वे विहार रिले.फ का काम कर रहे थे. गांघोजी वनारस से पटना उनसे मिलने आए; किन्तु कुमारप्पाजी पूर्व-नियोजित एक-दूधरे काम में लगे हुए थे। अतः गांचीजी को विना मिठे ही वापस जाना पड़ा । कुमारप्पाजी कभी विना पूर्वसूचना के किसी का समय नहीं छेते मौर समय नियत करने पर कड़ाई से उसका पालन करते हैं। यदि किसी कारण उन्हें देर हो जातो है और मुलाकात नहीं होती है तो वे उसका बुरा नहीं मानते।

कुमारापाजी एकाउन्टेन्सी या वहीखाते के विशेषज्ञ हैं। इस कारण उन्हें नपे-तुले शब्दों और संक्षेप में लिजने की आदत पड़ गई है। वे अनिगनत पत्र लिखते हैं, किन्तु अधिकांग कार्ड ही होते हैं। उनके सम्बे-से-लम्बे पत्र भी मुस्किल से एक पृष्ठ के होते हैं। कार के प्रशेष प्रशेष का भी वे एकः दो चुमने वाले वावस रिसकर उत्तर दे देते हैं। उनके कवन या लिखने में मानुकता अथवा अतिरामीत्तिक को बहुत ही कम स्थान पहुंचा है। जानेश में ज फर भी वे कुछ नहीं गा जिस्ति है तो भी वह सार-कुल और सिक्ति ही होता है।

कुमारपाजी स्वमाव से ही बूछ उब है। वधौं से रनतचार रहने के कारण उनकी यह उपना और भी बढ गई है। विसी से जरा सी गरती हो जाए या गरत बार मह से निकल जाए तो कुमार पाजी का पारा चड **जाना है और तेज बातें** उनके मुह से निकल जातो है। उनकी इस आदर ने अपने मित्रों अर सहकारियों में उन्हें कुछ अशिय भी बना दिया है, किन्तु उनके सब मित्र जानने हैं कि उनके हृदय में विश्वी प्रकार का कपट मही है। जहां उनका गुस्सा ठण्डा हुआ कि वे फिर वैसे ही इसमख बन जाने हैं। यदि लीग उनसे चबराएँ नहीं और उसी स्तर पर बात बीत करें तो मालम होगा कि वे विसने अच्छे साथी और सहयोगी है। कुमारपा-जी किसी भी चर्चा या वहस में हमेशा समझाने और समझने ने लिए तैयार रहते है। यही वारण है कि जो कीत उन्हें अच्छी सरह से जात रे हैं, वे उनकी वडी इज्जत करते हैं।

जनकी बहुन सतती ह कि बचपन से ही वे नियों पर आपाप और आधा कर होने नहीं येन सकते। जब कभी ऐसी स्विति आहे हैं, उन्होंने बटकर मुकावला किया है। उनका पहुंग और असिन गुण यह है कि वे एक स्वाका है, विननु वे सदा अच्छी चीत्रों के लिए और अस्विक वास से सर्वे हैं।

कुमारणात्री एक हिनुस्तानी ईसाई घराने में देश हुए और वही इनका कालन पालन हुआ । सम्म-हारिता उस पर में अंत्रिय नहीं हो सकती थी, तन्तु कुमारणात्री ने क्यों पहुने मासाहार छोड़ दिया । बूरोर और कमरीना के दोरों में भी वे बरावर साफ हार करते रहे । हाल हो में खन वे चीन जा रहे ये तो बणकते में चीनों दुनाशा में उनने पूरे दल भी दख सी। याच ज प्रकार के मात बनाए गए सी की कई महार की खराई थी। बार परें की ग्राव है कि कुमारप्पची ने दल के बहुनने लोग सबकुछ खा बए; किन्तु कुमारपांजी ने फुकुरमुता लीर थोड़े सलाद को छोडकर किसी चीज को नहीं छन्ना।

नुगारपाजी जिस भीज को उठा है पूरी तीर पर उठारी हैं। राजगीरि और सर्पशास्त के सत्त्र प्र मं भी उनका यही हांज हैं। वे एक महिलारक वर्ष नीति पर आपारित अहिलार प्रजातिक का इक्ज देखते हैं। हिन्दुस्तान में उनके सिवा निशी ने भी अहिलार सर्पशास्त्र और इतना अधिक मही लिखा। कपने इस महान स्थल की रतना अधिक मही लिखा। कमें भाषा कुछ गीशी हो जाती हैं तो उसने कोई हानि नहीं होनी। जी हैंजम देनीसन ने नमन्यर सन् १९४८ में भीत न्यून' के लिए एक हें का स्थत हुए औ क्यारपानी के बारे में हिला है—

'अंखिल भारतीय प्रानीयोग सब के मनी दार के छी जुमारणा टन व्यक्तियों में है है जो जैसा महते हैं, वैसा ती करते हैं। मित्रमङल की बैटक में, अपेशी वाय-पार्टी में या खाही दरबार में, सब जगह वे यथाना घोरी जाना बोर जुला ही पहनते हैं। वह अपने अपता घोरी जाना बोर जुला ही पहनते हैं। वह अपने हटना सहत नहीं कर सहते !

'स्यायो संगाज-व्यक्ता' नाम की अपनी पुतक में उन्होंने एक बाती पूर्वीपति की चर्चा की है। उसने बड़े वई के साब अपनी सोने की सात दिखाकर कुमारपा-धी से कहा, ''यहा काम करनेवानें मज़री की सनाई कुमारपानी में अपना सकताई ?'' कुमारपानी में जगह में केशो ''शान बंद कर देना।''

दि छो में जिन बहुन के यहा के ठहूरने हैं उनके चर एक दिन झुदह जारते के समय कुमारपानी ने जनको छहुकिया में किए रक्की गई टाटा सावृन्त को बट्टी को उठाकर तस्तरों में रल दिवा और गमारता से कहने ज्ये कि तुपने ऐसी जाता कैसे की कि में गलाबार के उक्चा के सूत से हुए में प्राप्त को कि तुपने ऐसी जाता कैसे की कि में गलाबार के उक्चा के सूत से हुए में प्राप्त के कि तुपने ऐसी जाता कैसे की कि में गलाबार के उक्चा के सुत से हुए मोरण के से के इंड काए जाते हैं कहाँ पहुँचे मान की सुती होती थी।

केवल ऐसे ही छोन दूसरों की नैतिक कमजीरियों की टीका कर सकते हैं. जिन्होंने अपना सारा जीवन किसी एक उद्देश्य की पूर्ति में दे जिया है जीर निःस्वार्थ होकर उसमें उन गए है। ऐसी स्विति में जो चूर्नानी दी जाती है उसरें स्टब बीर बकाबारी अलकती रहती है। कुमारप्याजी उन गिने-चुने भागतदासियों में मे है. जि होंने च्यातार किसी एक उद्देश्य की पूर्ति ने लगे रहहर वह स्थान और वह मान प्राप्त किया है, जिसके आबार पर वे बाज उन कोगों को, जो अभी से गांबीजी के रास्ते पर चलते हुए लङ्खड़ा रहे है, नमझाने-बुझाने का नैतिक अधिकार रखते हैं। वे रोरण की अर्थ-मीरि को इसीनिए चुनीनी दे सकते है. व्योंकि उनका जीवन शोपण से परे हैं। वे कोई नीकर तक नहीं रखने । सपनवाड़ी के सामान्य रसीई घर में जो हुछ बनता है, बही वे खाते है। अपने वपने बुद घोते है और शायद हो किसी से सेवा छेते है। संस्थाओं के बहुत कर संचारक ऐसे होंगे जो अपने शिष्यों तथा अपने नीचे कान करनेवाले दूसरे लोगों पर इतना कम निर्मर रहते हो । श्रद्धेय काका साहब ने एक बार कहा पा, "यदि हुमारप्पा इतने हुँसोड़ और दिनोदी न होने सीर कच्छ पहनते होते तो वे तुरन्त एक पक्के संत वन गए होने।"

हुमारप्नाजी ने ईसाइयत पर वर्चा या प्रवन्तन नहीं निये हैं; बल्क अपने जीवन को नद्युमार हाला है। उनकी दो पुस्तक 'Practice and Precepts of Jesus, आर 'Christianity: its economy and way of life', चन्ची ईसाइयत को बरतने और पर्वत पर ने विये गए उन्देन को बमल में छाने के बेजोड़ नमूने हैं। गांबोजो ने लिखा है—'मैं ईव्यर में वियास करनेवाले हर व्यक्ति में, वह ईसाई हो या किसी भी दूसरे वर्ष को माननेवाला, इस पुस्तक को पड़ने की सिफारिश कर सकता हैं। ईव्यर के मन्त के कर में यह ईसा-सम्बन्धी एक ऑडिकारी वृद्धिकीय है।' यदि जुनारप्पाजी का मिलन इस क्षेत्र में न हुआ होता नो वे सचमूच एक बड़े कान्तिकारी वर्मनेवा हए होने।

दुनारपाजी ने विवाह नहीं किया। एक बार पृष्ठने पर उन्होंने विवाह न करने का एक बङ्ग अजीड- ना किन्तु सच्चा कारण यह दतारा कि दे चाहते थे कि बाबी करने ने पहले उनकी आय दम हजार के आंकड़े में हो जाए बार जद वह मीटन बार तो गांघी-जी ने उन्हें पकड़ लिया। उनके बाद बादी करने की बन्हें कुरमत ही नहीं मिली। उन्हें बाबी न करने वा कभी अफ़डोस नहीं हुआ। दे एक पूर्ण इह्मचारी है। उन्होंने अपनी इन्द्रियों को इतना जीत लिया है कि उनके दश्चवयं का उनपर कभी कोई दोन नहीं पटना। उन्होंने अपने जीवन को इनता व्यस्त बना लिया है कि यहां कहीं भी जाने हैं काम में लग जाते हैं । मगनवाड़ी में उन्हें देखिये, वे टाकर सद जगह चून-चूनकर सद चोजें देख रे रहते हैं। उनकी लिगाह इन रिनेज हैं कि एक दिन काग्रङ दिमान देखते जा रहे थे। मिट्टी की मुलायम बीबार पर उन्हें उगली का कोई काला निमान दिखाई पड़ा। तुरना दड़ी नकाई ने उने खुरचा और तब अन्दर गए। सननवाड़ी का कोई भी ईट-परपर, पेड़-पौदा या देल-चूटा ऐसा नहीं है. जिसमे उनका परिचय और सम्बन्ध न हो। थ्री. जी. रामचन्द्रन्जी इनीलिए कनी क्लिंद में कह देने हैं कि हुमारप्पाजी को अविकाहित कहना विन्तुल झूठ है: क्योकि उन्होंने नरतदाड़ी से ही जिलाह कर लिया है।

कारा सहव कारेककर मजाक में एक और बात दनके बारे में कहा करने है, "कुमारप्माजी की जित्ती अच्छी अंग्रेजी लाती है उसकी ल घो भी हिन्दी जाती होती तो उन्होंने कमी को देश में आग छरादी होती।" वे एक वड़े सहनी कान्तिकारी है। जैसे-जैसे सदय बीतना ज.यम और जैने-दैन हिंदुस्तान की परिस्पितिमा रचन मक कान करनेवालों के लिए अविकाधिक चुनौती का रूप लेती जायंगी, कुनारप्याजी भी विवकारिक सन्त और कांतिकारी होने जायेंगे। बाज मी वे अनंदा काविकारी कहलाने बाले मगोड़ी से वविक स्विर कृतिकारी है । मगतवाड़ी छीड़कर वेलडो गांव में 'पनई झालम' के नाम वे की नया प्रयोग उन्होंने छेड़ा है वह आगे मिलनेवालो नई बीज का प्रतीक है। इस प्रकार वे स्वयं ही बाज उन कोगों के किए एक चुनीजी है, जो नए कॉन को छेहर गांबीजी का अनुकरण करेंगे।

#### तपश्चर्या श्रीर गुरु-भक्ति

थी यदुनाय थत्ते

रामायण और महामारत हिन्दुस्तान ही ने नहीं बहित सारी दुनिया के महान प्रयो में से है । रामायण और महाभारत यहां के क्षाय जनता के जीवन में युक्त मन यह । महाभारत के जनता के जीवन हैं युक्त मन सभी भाराओं में हो चुके हैं। महाभारन साहित्य का साम रही । महाभारत की जात्मा है गीता।

भारत में जो-गो लोग भहान हुए उन सवन गीता को मार्गदर्गक माना है। सक्त्यपार्थ गीता के पहुरे माध्यक्तार थे: उनका साक्त्यपार्थ एक प्रसिद्ध प्रथ हैं। सारे सदार को अर्द्धेत की शिक्षा देनेबाले सक्त्याचार्य को भी गीता से ही जीवन ध्येय मा शासाख्यर हुआ था।

आधुनिक मुग में हम देखते है कि लोकमान्य तिलक तया महात्मा गावी गीता को बहुत मानते य । सुप्त देश बो जगाने के लिए लोकमान्य ने निष्काम कर्मयोग का नारा लगाया। देश के लिये तडपते और काम करते करते लोरमान्य ने जन्मिम सास ली या यो कृतिए कि गीता के सदेश को जीवन में उतारते उतारते उन्होने देह छोड दी । उनके बाद देश का चेन्त्व गाधीजी करने लगे। कर्मयोग से एक सीढी आगे जारूर उन्होते अनासविनयोग का पाठ देश को पढाया । गीता के कथन के अनुसार स्वयमं का बाबरण करते करते समर्पणभाव से अपनी जीवन लीला को गाधीजी ने सम प्र दिया। दिवतन्त्र के लक्षणी की व्यास्या करनेवाले इसरे अध्याय के आखिरी १८ क्लोंगे का पाठ गांधींबी प्रायंना में रोज करते के त्यारे भारत में स्थितत्रज्ञ के लक्षण प्रार्थना में दाविल हो गये हैं। गाधीजी ना कार्य अब विनोवाजी चला रहे हैं। विनोबाजी तो कहते हैं कि माता के दूध पर जितना मै परिपुष्ट हुआ हू उतना ही गीतामृत पर में परिपुष्ट हुआ ह। विनोवाजो गीना के अनन्य मक्त है। योता का सन्देश .. महाराप्ट्ने घर घर में पहुने, इसल्एि विनोबाजी ने गीता का मराठी में 'गीताई' के नाम से अनुवाद किया

हैं। विनोधानी के भीता प्रयम्त \*\* और 'स्थितक्षक स्थान \* सारे मारत में विस्थात हो चुके हैं। विनोधानी ने गोता से सं 'साम्ययोग' का राज्येश निकाला है और आजक स्वी के किये उनकी सब कीशिसों कर रही हैं। वर्मीन का बटबारा करने के किये लोगों को प्रेरित करके गीता-प्रयोग क्यारित हो सीक्षा वे लोगों को वे रहे हैं और उच्चर पनगर के आध्यम में जो प्रयोग कह रहे हैं उनते हमें साम्यय पी सवाज की एक तलक मिठ लागी है।

इस तरह गीता एक महान ग्रथ है। लेकिन विद्यार्थियों के लिये, नौप्रवानों के लिये गीना का सन्देश बया है ? उनते गीता कहनी है, "तपश्चर्या करो।" सर, तपश्चर्या आदि शब्द हम बार-बार सुनते रहते हैं, लेकिन तपरचर्या का सही अर्थ हम जानते नही है। हमें लगता है कि तपश्चर्या का अर्थ है शरीर को कप्ट देना. तपाना । यपस्वी का नाम सनते ही हमारे सामने जटा दाढी-पारी, रापाय वस्त्र-परिवान करनेवाना, लोक-सम्पर्क से दूर रहनेशाला, वन निवासी खडा हो जाता है। हम पढते है कि भारदाज ऋषि वडे विदा प्रेमी थे और तप नरके उन्होंने विद्या प्रान्ति के लिये अपनी आय बढा ली। तप करके एक खुटेरा बाहनीकि ऋषि बन, गया। भगवान् बुद्ध 'बडुजन हिनाय, बहुजन सुलाय' मार्ग को खोजने के लिये तप करने पातपाट छोडकर बन में गये थे। से तो बातें हुई सत-सन्जनो की, लेकित हम पड़ते है कि रावण तक ने तपदचर्या करके वर पा लिया या और मक्न प्राक्षाद के पिता हिरण्यकस्यप को मो तपस्या करके ही बर मिला या। ऐसे कई असुरो के नान हमें घर्म-प्रयो में मिल जाते हैं वि जिन्होने तप करके दनिया को सनाया भी। ऐसा होते हुए भी तप करने का मतलब हम लोग नहीं जान पाने ।

\* ये दोनो पुस्तक 'मह्त्रा साहित्य मदन' से प्रकाशित हुई है। तो क्या गीता नीजवानों से, विद्यार्थियों से घर छोड़कर भाग जाने के लिये कहती हैं? नहीं। गीना कहती है—नुम जहां-कहीं. जिस परिस्थिति में हो, वहों उसी परिस्थिति में तुम तप कर सकते हो। गीता ने तरस्चर्या को तीन विभागों में बांटा है। १. शरीर-तग, २. वाचिक तग, ३. मानसिक तग।

हमारा शरीर ही दृश्य किया करता है। अगर हंमें तप करना है तो पहले अपने शरीर पर नायू पाना होगा। फिर वाणी की वारी आती है और जब शरीर और वाणी पर हम काबूपा जाते हैं तब मन पर काबूपाने की कोशिश करना कुछ आसान हो जाता है।

शरीर-तथ या देह की तपश्चयों कैसे की जाय? उसका आहार तोड़ना, देह को दंडिन करना आदि मार्ग गीता नहीं बताती । गीता कहती है:

> देवद्विज गुरु प्राजपूजनम् जीचमार्जवम्। ब्रह्मचर्यमहिसाच जारीरम् तप उच्चते ॥

अर्थात्—देव, द्विज, गुरू और प्राज्ञों की पूजा करना, स्वच्छता रखना, नम्न और सरल व्यवहार करना, ब्रह्मचयं और अहिंसा का पालन करना, इनको शरीर-तप कहते हैं।

शरीर की तपरचर्या इसलिए की जाती है कि शरीर सतेज और सवल वने। गीता ने शरीर-तप करके पहलवान वनने का आदर्श सामने नहीं रखा है। हममें से अधिक श शरीर को इसलिए तपाते हैं कि हम ताकतवर वनें ताकि दूसरों को सताकर अपने सामने घुटने टेकने के लिए उन्हें विवश कर सकें; लेकिन गीता ने यहां शरीर-तप में अहिंसा को जोड़ दिया है।

देव, दिज, गुरू और प्राज्ञों की पूजा करने का मतलब है जनकी पूजा करना जो ,समाज को ज्ञान देकर उसकी पुष्ट बनाते हैं। एक तरह से यह कृतज्ञता का पाठ है। हमारी संस्कृति का विचान है, "मातृ देवो.

भव, पितृ देवो भव, आचार्यं देवो भव! " इससे पता चलता हैं कि 'आचार्यं देवो भव' में माता और खिता का समावेश आप ही हो जाता है। उसी तरह गीता ने यद्यपि सिर्फ गुरूननों की पूजा करने के लिए कहा है तो भी उसका मतलब है माता, पिता और उसकी पूजा । जिन लोगों ने हमारी मानवता को जगाया, हमें शिक्षा-दीमा दी, उनकी पूजा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे भ।रतीय चरित्र-साहित्य में गुरूपूजा का आदर्श वज्ञानेवाठे कितने ही उदाहरण मिल जावेंगे। अगर बादमी कृतज्ञ बनता है, नम्र बनता है तो उसे सब विद्याएं प्राप्त हो जाती हैं। फिर मिट्टी की गुरू-मूर्ति से एकछन्य को विद्या मिल सकती है। कच की अपने रायुओं के गुरू से दिया प्राप्त हो सकती है। कणं की गुरूभवित तो विख्यात ही है। कणं की गोद में गुरू सीवे थे। एक भ्रमर ने आकर उसके पैरों को लाना शुरू किया; लेकिन गृरू की नींद न खुल जाय। इसीलिए कर्गं उस सदको सहते गये। गुरू की आजा पालने के लिए खेत की मेड़ पर सोकर पानी को रोकने वाला आुरुणि, गुरू की आजा के लिए दूव पीना छोड्नेवाला अस्वत्यामा, अपने बड्टान का भूल-कर गुरू के लिए जंगल में लकड़ी काटनेवाले भगवान् गोपालकृष्ण, गुरू के यजों की रक्षा करने के लिए वचपन में ही वन जाने वाले रामच द्रजी और रामदास स्वामी को गुरू मानकर उनकी झोली में अपने राज का दान करनेवाले शिवाजी-ये हैं हमारे बादर्श । महात्माजी गोख़ले को अपना गुरू मानते थे। गोखले ने गांधीजी से कहा या कि वह पहले एक साल भर आंब-कान खोलकर और जवान बन्द करके देश भर की यात्रा करें, तब फिर देश की राजनीति में हिस्सा लें। गांधीजी ने गोवले की इस बात को सिर-आंखों पर रक्ता और सारे भारत के पहुड़े दर्गन कर लिए। गोखले भी बड़े गुरूभ -त्रत थे। न्यायरत्त रानडे को वे अपना गुरू मानते थे। इस तरह गुरू-शिष्य का भव्य और उदात्तं नाता रहता है। सच्चा गुरू सच्चे शिप्य को अपना सर्वस्व दे देता है और इच्छा करता है कि शिष्य उससे भी आगे बढ़े। "शिष्यादिच्छेत् पराजयम्" यह

हमारे प्राचीन ग्रुओ की प्राथना हुआ करती थी।

यह तो ठीक है कि मुरू की पूजा करती चाहिए ठेकिन सेते ? जार देनवाले गुरू की पूजा जानवुक्त कम से करनी चाहिए। कम-कुसुम से उनकी पूजा करती चाहिए।

#### स्वे स्वे कंमंच्यभिरत

ससिद्धि सभते नर । (गीता)

अय त—अपन अपने कम में लगा हुवा नर सिदि लाम करता है। आद की तरफ पहुंच जमाने की शिका पद्धित नहीं थी। बाज शिका में नवत सिद्धांव दाखिक हो गदा है जिससे हमारी शिका जीवन से कुछ अलग पर गई है। आत स्कूणी मजाई पर जोर दिया जाता है। उससे बच्चा में अच्छ सस्कार पैदा नहीं होते। पुरान जमाने में गुरजों ने इस सिद्धांत को माना था और इंछो लिंद दिन रात शिस्य गुरू वे साव ही रहते थे। जब बारद्ध सान के बार शिस्य अपने पर जाने कमते थ तब गुरू उपदेश देव

यानि या यस्माक सुचरितानि

सानि तानि त्वया सेवितव्यानि नो इतराणि ।। अर्थात् — हममें जो जो भलाई हो उमीको तुम अपना लो, और बातों को छोड़ दो। समापत्तन के समय आचाय जीवन-दि देकर शिष्य को विश्व करते वे । कहते वे "हम पूर्ण मही है। हममें भी मुख दीप है। तुम उनकी न अपनाओ। हममें जो अंच्छाई है उसकी अपनाओ। गृह के इस उपदेश का चितन करते हुए, जीवन की बोर देखने का एक मगल दृष्टिकीण पाकर शिय घर चना जाता या। मृश्युजा का यही रास्ता है कि जहाँ जो कोई अच्छाई मिले, उसको अपनाते चले जाय । जिसके पास से थोडा भी हम सीख सकते है वह है हमारा गुरू। भगवान् दत्तात्रेय के बारे में हम जानते हैं कि उन रे गुष्ओं में गया तक शामिल या। उनकी यह दृष्टि सच्ची गुरपूजा वी दृष्टि है। मधुमनको जिस तरह रूपन से जहाँ जो कुछ शहद मिलता है उसे जमा करती जाती है, चीटी शवकर का एक

एक कण जमा करती है उसी लगन से हमें सदगुणो की

उपासना बरनी चाहिए। महाराष्ट्रीय सत तुकाराम ने

इसी भात को स्टब्प करके कहा है कासया दोष विवरत आणिकांचे ।

सम काथ त्याचे उणे असे ।।

यमीत—' में क्यो दूसरों के दोगों का चितन करने
बेटू मेरे बाद उनकी क्या कभी है? मुर्जूजक हरकाह
की अक्यादे में जुनू का रूप देखा है। द्वाप ही हाएक
स्थित में कोर्र-नकोई जन्माई वह देख ही रेता है।

जाव इससे एक्टन उत्तरी तिपति होती जा रही

आज इससे एक्टन जटते हिपान होती जा रही है। हमने जुरूज़न की दृष्टि हो नहीं रही है। कोगों में हर बगह बुराई को खोजन की आदतनी पर गई है। हम सोग मुक्तनों के दोनों की हो खोज करके उनका जितन करने हैं, जिससे हमारा मिस दुग्नों से मर खाता है।

मुखा नार का जारान है। उहीं अहकार है वहीं विचा की उरावना क्या होगी ? जदत र पदा अपने बाली उर का महसूत करके कुक नहीं गाता है तदक क वह बाजी ही रहेगा। केरिन अब वह मुक जाता है बट बीवन से घर जाता है। घरन की शिरा नम्रत के दिना नहीं हों सदवी। अगर हीं अपना जीवर पर्युचों से घरना है गरियुण वरनों है तो हमें मुकता चाहिए, नम्न बनना चीडिए।

जाबिर शिक्षा वर्षा है ? जबतक हम विका की ज्याव्या न कर तबतक रूप वृत्या नया नर सकेंदे ? स्टक्टरोन सम्मुद्ध निका है। हमारा जीवन सहकारों के बनता है। इसी-एए विजीवानी ने जिस है— जबदन है सतकेंद्री हमारा जीवन सककारों है बनता है। इसी-एए विजीवानी ने जिस है— जबदन है सतकेंद्री वे साम्यद नरों। अकेंत्रे जन्म हमारा हों। हो, तससे वस होता है, तससे नरों। वसी हों से क्षेत्र के साम नर्जे हमारा केंद्री नरा वर्षे हमारा करेंद्री। वसी विजय हमारा हमारा है हमारा केंद्री हमारा करेंद्री। वसी विजय हमारा हमारा

## विचासें पर नियन्त्रण

### श्री लालजीराम शुक्ल

मनुष्य के विचार ही मनुष्य को सुखी और दुःखी वनाते हैं। जिस मनुष्य के विचार उसके नियन्त्रण में है, वह सुखी है और जिसके विचार उसके नियन्त्र ग में नहीं रहते, वह सदा दु:खी रहता है। दु:खी मनुष्य अपने दुःख का कारण अपने आपको न मानकर किसी वाह्य पदार्य को मान लेता है। इस प्रकार की किया को आयुनिक मनोविज्ञान में 'आरोपण की किया' कहते हैं। इस प्रकार कुछ लोग अपने मित्रों को, शत्रुओं को और सम्बन्धियों को कोसा करते हैं और कुछ भाग्य को ही। वे अपनी ओर नहीं देखते। आत्म-निरीक्षण करने वाला व्यक्ति बीघ्र ही इस निष्कर्भ पर बाजाता है कि हमारे विचार ही हमारे शत्र-मित्र, सम्बन्धी अथवा भाग्य है। जिस मनुष्य के विचार उसके अनुकूल हैं, वह सभी प्रकार के लोगों, परिस्थिति गों बीर भाग्य को अपने अनुकूल पाता है। इसके विपरीन जिस व्यक्ति के विचार प्रतिकृष्ठ होते हैं, वह चारों ओर शत्रु-ही शत्रु देखता है। विचारों के दूषित होने से वातावरण दूनित हो जाता है और मित्र भी बत्रु वन जाते हैं तथा सफलता भी विफलता में परिणत हो जाती है।

विचारों को अनुकूल बनाना ही पुरुपार्थ है। विचार अभ्यास से अनुकूल अथवा प्रतिकूल होते है। जो मनुष्य जिस प्रकार के विचारों का अभ्यासी हो जाता है उसके मन में उसी प्रकार के विचार वार-वार आते हैं। सांसारिक विपारों का विन्तन करने वाले व्यक्ति के मन में सांसारिक विचार ही आते हैं। उसे इसी प्रकार के विचारों में रस मिलता है। यदि कहीं जान-चर्चा होती है तो वह उसे रस-हीन समझता है। सांसारिक लोगों को ज्ञान-चर्चा के समय जल्दी से नीद आ जाती है। ज्ञान-चर्चा मनुष्य की इन्छाओं के ऊपर नियंत्रण करती है। वह उनकी तृष्ति नहीं करती।

अतः इस प्रकार की ज्ञान-चर्चा में आनंद की अनुभृति करना उनके लिये एक अस्वाभाविक-सी वात होती है।

विचारों पर नियंत्रण धीरे-धीरे आता है। प्रत्येक आवेशात्मक विचार मन को निर्वल बनाता है, निर्वल मन बुरे विचारों के नियंत्रण में असमर्थ रहता है। जब मनुष्य का मन निर्वल हो जाता है तब किसी भी प्रकार के दुःखदायी विचार मन में उठ जाने पर, मब प्रकार के प्रयत्न करने पर भी वे मन से नहीं निकलते। कितने ही लोग अपने विचारों से ही परेशान रहते हैं। वे अपने अभद्र विचार मन से निकालना चाहते हैं; पर जैसे-जैसे अभूद्र विचार को मन से निकालने की चेप्टा की जाती है, वह और भी प्रवल हो जाता है। ऐसी अवस्था में कभी-कभी मनुष्य को निवंलता आजाती है।

इस प्रकार की रियति मानसिक निवंदता का परिणाम होती है। यह मानसिक निवंदता वार-वार आवेशात्मक विचारों को मन में आने देने से उत्पन्न होती है। सब समय विचारों का नियंत्रण करने की चेप्टा से मनुष्य की इच्छा-शक्ति इति विख्ता विख्तती हो जाती है कि कोई भी युरा विचार इच्छा-शक्ति के बिना मन में देर तक नहीं ठहर पाता। जो मनुष्य आवेशात्मक विचार पर जितना ही अविक नियंत्रण रखता है वह अपनी इच्छा-शक्ति को उत्तनी ही बलवती वना लेता है। एडवर्ड कारपैन्टर का कथन है—"किसी भी विचार को पहुछे हो क्षण मार डालो तो फिर उससे जो तुम करना चाहते हो कर सकते हो।" जित मनुष्य को आवेशों को रोकने की आदत पड़ जाती है उसे किसी प्रकार के बुरे विचार नहीं सताने।

मनुष्य का अभ्यास प्रायः पागविक प्रवृत्तियों में रमण करने का हो गया है। जिस समय हम कोई समाजोपयोगी काम नहीं करते, पागविक प्रवृत्तियों की सतुष्टि में रूप जाते हैं, तब प्रवृत्तियों के उत्तेतित होने पर करेक प्रकार के प्रवल वूरे विचार पन में आने उपते हैं। इसलिए रूपेंव किसी-न विधी गलाई के राग में अपने को रुपाये रखना बुरे विवारों पर नियक्ष के लिये परम आवश्यक हैं। जब भी मन स्वच्छन्य या निकम्मा होता हैं यह स्थमायद या तो किसी समय काम्य बस्तु की प्रप्ति की योजना बनाने छम्छा हैं असे बाह के साम प्रयोक्त के प्रति ईच्यां और प्रतिवार की बाह किसी स्थातिक के प्रति ईच्यां और प्रतिवार की बाह सोचने छमता हैं।

श्रवाधनीय विचारों के निवनण का बहुत सुन्दर खराव्य बुद्ध भगवान ने बनाया है। यह उपाय 'उदान' मामक सेट प्रम में पाया जाता है। यह उपाय योगिक क्षार मनोवैज्ञानिक है। वह इस प्रमण में उल्लेख-नीय हैं।

बूढ समवान एक बार अपने एक शिष्य के साथ हुई हुए ये । उस शिष्य के मन में इसर उपर प्रमण करने का विकार उठा। उसने भणवान बुढ़ से आजा मागी। युद्ध भगवान ने पहले तो आजा न दी, पर उसके बार-बार आपड़ करने पर दे दी। उसने आस-पास जावर अनेक स्वान देखे। उन स्थानों में उसे एक बड़ा सुन्दर बगीचा दिखाई दिखा। उस वर्गीच को देखकर उसके मन में आया कि यहां वैठकर मोगान्यास कहा सो उसने बुढ़ भगवान से उसकी आजा मागी। विशेष आपड़ देखकर बुढ़ भगवान में कनुमति दे दी। अब वह शिष्य जन्न स्थान पर योगा-म्यास करने समा धर ज्योही उसने कार्य आरम्म किया, उसके मन में अनेक विवार्त करने करने।

श्चल में वह भिन्नु भगवान वृद्ध के पास लावा और उसने नहा, "महाराज, मेंने जोही योगानमास प्रारंत भिगा, मेरे मन में काम-विनक्त, जावाम-विवर्त और विहिसा विवर्त कोने जो। में इन विवर्त्त की रोक नहीं सका। इसाबर मुगे इनसे सूटने का उनाव बनाइये। मगवान ने कहा कि जिस मनुष्य का मन विराय में दूव नहीं हो चुका है जो अकेने रहना जीवन नहीं हैं। उसे सदा सम में रहना चाहिए। वस में रहने से मनुष्य के विवार विवृद्ध नहीं हो साते। फिर प्रत्येक सायक

को निम्मिलिंबत चार धर्मों का सदा पालन करते रहता चाहिए—(१) अधुन भावना का अभ्यात, (२) मेंत्री भावना का अभ्यास (३) 'जानगान-सिंत' का अभ्याब (४) सदार की अनित्यता के विचार का अभ्याब।

मनुष्य का थन सहा राग और द्वेय के बीच यही के पेंडक्य की नावि इयर-से उबर डोक्ता रहता है। इसी कारण मनुष्य को साम्यावस्था प्ररूप नहीं होगी। मन के सदा बादिय रहते वे बह कोई भी काम करन से नहीं कर पाता। राग मनुष्य के मन में ऐसे अनेक सरकार पैदा कर दिवा है। उपाय मनुष्य के मन में ऐसे अनेक सरकार पैदा कर देता है जिनसे मानसिक प्रम्थित एकर हो। आता है। रागा पर मनीवृत्ति की पूरक हेपा.सक मनीवृत्ति है। यह एक अधीनत के प्रति राग हीता है वव उक्क अधीन हो। से सुष्य के प्रति हमारे सम हैप-मावना। उपाय हो वाती है। वो हमारे स्वार्थ के मातक होने हैं, उनके प्रति हमार पाता है और जो हमारे स्वार्थ के सावक होने हैं उनके प्रति हमारवाना होती है।

राय को विनासक अधुन-भावना है और देय की विनाशक मैत्री-मावना । प्रत्येक पूरुप को सुन्दर स्त्री के प्रति अनुराय होता है। यह अनुराग उसके अचेतन मन में बैठा रहता है । जब वह बाहरी मन से साथु भी बन जाता है तब भी यह अनुराग उसके मन से नहीं जाता है। सुन्दर रूपवती स्त्री के प्रति सभी पृद्यों की ग्राम-भावना होती है। पर रूप के दुर्गण कामातूर पृथ्य की दिलाई नही देते एव रूप का बार बार जितन करने से कामवासना और भी प्रवल हो जाती है। इस रायात्मक मनोवृति के विनाश के लिये रूप के दुर्गुणी पर विचार करना आवश्यक है। शरीर की गदगी पर विवार करने से उसके प्रति अनुराग चला जाता है। मुर्देकी क्ल्पना करके उसपर चिन्तन करने से शरीर के प्रति अनुराग नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार धन, मान आदि के दुर्गुणो पर नित्य विचार करने से इनके प्रति बनुरान नष्ट हो जाता है । यही बशुभ-भावना है।

यहाँ यह बताना बावस्वक है कि राग और द्वेप किसी बात ने सोचने मात्र से नष्ट नही हो जाते। इसके लिखे श्रीनदिन निरतर अभ्यास की आवस्वकता होती है। प्रतिदिन का निरंतर अभ्यास आत्म-निर्देग का रूप धारण कर लेता है। जबतक हमारा कोई विचार चेतन मन के नीचे अचेतन मन को प्रभावित नहीं करता वह हमारे चिरत्र का सुधार नहीं करता। विचार-मात्र से इच्छा-शिवत दृढ़ नहीं होती, इच्छा-शिवत अभ्यास से दृढ़ होती है। कितने ही पंडित अनेक प्रकार का ज्ञान-उपदेश दूसरों को करते हैं; पर वे स्वयं अपने मन को नियंत्रण में नहीं रख पाते। वे स्वयं उन वास-नाओं से मुक्त नहीं होते, जिनसे वे दूसरों को मुक्त करने को चेष्टा करते हैं। मनुष्य में सामर्थ्य वृद्धि नहीं, वरन् अभ्यास लाता है। अभ्यास से मनुष्य का स्वभाव ही परिवर्तित हो जाता है।

मैत्री-भावना कोच की विनाशक है। जिस प्रकार 'अशुभ भावना' से काम-वासना का निराकरण होता है, इसी प्रकार मैत्री-भावना से कोय का निराकरण होता है। जिस व्यक्ति में अपने कोध को रोकने की जितनी अधिक योग्यता होती है, उसका मन उतना ही अधिक शान्त होता है और उसकी सामर्थ्य उतनी ही अधिक होती है । जो व्यक्ति सबके प्रति मैत्री-भावना का अभ्यास करता है, वह दूसरों से निर्भीक रहता है। उसकी मानसिक शक्ति व्यर्थ के विचारों में खर्च नहीं होती । अमैत्री-भावना का अभ्यास करने वाला व्यक्ति सदा भय के वातावरण में रहता है। वह सदा अनेक ' कार के शतुओं की कल्पना किया करता है। और . उनसे बचने के लिये अनेक प्रकार की योजनाएं वनाता रहता है। इस प्रकार उसकी अविकांश मानसिंक शक्ति कल्पित शत्रुओं से लड़ने में नष्ट हो जाती है। फिर वह निर्वल-मन हो जाता है। यदि ऐसी अवस्या में उसके मन में कोई अशुभ विचार आ जाये तो वह उस विचार को अपने मन से नहीं निकाल सकता। अमैत्री-भावना और कायरता एक-दूसरे के पूरक है। मैत्री-भावना शांति और पौरुप की वर्द्धक है।

सभी प्रकार के वितकों को नाय करने का सबसे

सुगमऔर अचूक रुपाय 'आनापान-सति'\*का अभ्यास है। 'बानापान-सति' मन्त्र्य की मानसिक शवित को सञ्चित रखता है। 'आनापान- सित' का अभ्यास प्रत्येक अगुम विचार को शुभ विचार में परिणत कर देता है। यदि किसी प्रकार का संकल्प मन में उठते ही मनुष्य आनापान के अभ्यास में अपने आप को भुला दे तो उसका संकल्प सत्य हो जाय। हम सदा अपनी मानसिक शक्ति को व्यर्थ संकल्प और विकल्प में खर्च करते रहते है। यदि संकल्प के बाद प्रतिकृष्ठ भावना हम मन में न लायें अर्थात् किसी-प्रकार का संदेह संकल्प की सफलता में न आने दें तो हमारा कोई भी संकल्प विफल न हो । पर इसके लिये चेतना की घारा को रोकना अत्यंत आवश्यक है। चेतना की धारा 'आनापान-सति' के अभ्यास से रुक जानी है। न केवल सभी प्रकार के बुरे विचार इस अभ्यास से नण्ड हो जाते हैं, वरन् सभी प्रकार के दारीरिक और मानसिक रोग भी दूर हो जाते हैं।

आयुनिक मनोविज्ञान की यह एक मीलिक खोज है कि आत्म-निर्देश से मनुष्य अपनी मानसिक और शारीरिक बीमारियों को नष्ट कर सकता है। पर आत्म-निर्देश का ठीक उपयोग साधारण व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। इच्छा और गुभ आत्मनिर्देश एक साथ नहीं रहते। जो मनुष्य इच्छा को मार सकता है, वही आत्मनिर्देश से वास्तविक लाभ उठा सकता है। इच्छा की मारने के लिए चेतना के प्रवाह को रोकना आवश्यक है और यह 'आनापान-सित' से सम्भव होता है। जो व्यक्ति अपनी चेतना को अलग कर देने में जितना समर्थ होता है, वह आत्मनिर्देश से उतना ही लाभ उठाता है।

संसार की अनित्यता का अभ्यास अहङ्कार का विनाशक है। जिस व्यक्ति का अहङ्कार जितना अधिक होता है उसके दुःच भी उतने ही अधिक होते हैं। अहङ्कार की वृद्धि एक प्रकार का पागलपन है। अहङ्कारी मतृष्य दुश्यही होता है। वह जिस बात को सच मान बैठता

<sup>\* &#</sup>x27;आनापान-सित' 'प्राणापान स्मृति' की पाली संज्ञा है। यह एक प्रकार का प्राणायाम है। इससे बड़ी सुगमता से मन वशमें हो जाता है। इसमें स्वास के आने-जाने पर ध्यान लगाना पड़ता है।

हैं उसके प्रतिकृत किसी की कुछ भी सुनने को तैयार नहीं रहता और जो उसका किरोध करता है वह उसका भीर सब हो जाता है।

अहंदूर ना अपोर ससार के अनिस्य पदार्थों से अपना एक्स स्पारित करना है। कोई व्यक्ति अपने आप कों पत्र में, कोई पद में, कोई मान और कीर्ति मान और वेर्ति मान और वेर्ति मान और वेर्ति मान और वेर्ति मान अपने अपने अपने अपने अपने के मानुत्य अपने अप को समझने वी चेट्टा करता है। वह फिर अपने राजुओं को सरवा बटा देता हैं। जिल व्यक्ति का अहंदूर जितना अपिक होता है, उसके चातु भी उन्हें अधिक होते हैं। अपन अह्दूर के कारण ही वह इन प्रमुखी को पैदा करता है और किर वह इन पानुआं को पैदा करता है और विकास मानुआं के प्रस्ता करता है अपन अह्दूर के कारण ही वह इन पानुआं को पैदा करता है अपने अह्दूर के कारण ही कहता प्रमुखा के विनास के इंग्डा करता रहना है। आगे चनकर य

मनोविज्ञान का यह अटल सिखान्त है कि दूसरे के विनाहा के विकार ही आरम-विनाहा के विकारों में परिणत ही जाते हैं। परपात और खा मधान की आकराए एक-दूसरे की पूरक है। जब हमारे बेतन मन में एक मकार की माजनाए उबल होगी है यह हमारे अनेन मन में पूरक मकार प्रकार की भावनाए प्रवल हो जाती है। इस प्रकार दूसरों का विनास करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति अपना ही विनास कर डालता है।

जो व्यक्ति अपने अहं द्वार को नष्ट किये रहता है उसका कोई यत् नही होता । उसके विचार भी उसके शत्रु नहीं होते । ऐसे व्यक्ति को किसी प्रकार की विजिप्ता वही सवावी । अहङ्कार-रहित मन्द्य के विचार सर्वात्मा के विचार होते हैं। उनमें विश्व में नव-स्पन्दन करने की धक्ति होनी है। अहलूार मन्द्र्य की आध्यात्मिक शक्ति के विनास का सूचक है। जब मनुष्य में आध्यात्मित्रता ने प्रकाश का उदय होता है तब बहद्धार का विनाश विमिर के समान हो जाता है और तमो वह अपने आप को सब प्राणियों में देखने लगता है। उसरा मन चान्त और बांनन्दमय हो जाता है। अतः अहसार विनाश अपने विचारों की नियात्रण में रखने का सर्वोत्तम और अन्तिम उपाय है। इसके लिए संसार की अनित्यता के विचार का अध्यास करना एकमान उराय है। ससार के देशव की सत्यता में विश्वास रखने वाले व्यक्ति में अहन्दार का समाव हाना असम्भव है।

C

#### ( पुष्ठ ३२७ का सेनास )

शाबस्यक है कि इन प्रामीधोगों में सर्वोच्च कटा-वीसल का इस्तेमाल किया जाय । इस प्रवाद उस मानवीय कार्यदासित को सर्वाठन करने रचनात्मक वार्थों में ज्याया सा सकेगा, ज्यानदा कि हमने अवनक कोई इस्तेमाल नहीं विचा है।

सामानिक त्याय की शान्ति के निश्चित उद्देश को केकर हमें उत्पादन एवं किनरण ने समूर्व निरोक्त को किर से समानिक करना होगा। बाज वेद्वानी एव पहरी शेनी, निखडे हुए एवं अल्प-विक्तित क्षेत्रों व जादियों को वेद्दानों में तथा जनना के जिलिन करों के बीच जो चर्नमान विवस्ताएँ हैं जन्हें उत्तरोत्तर कम किया जाना चाहिए और एक व्यक्ति की विश्व-से-अधिक वास्तरी की सीमा निश्चित की जानी चाहिए। कर छगाने तया वर्ष सम्बन्धी नीतियों की जाथ-पहताल में भी यही दृष्टिकोण रक्षना चाहिए।

ह्मारी योजना का उद्देश्य सांविक एक साहकृतिक असमानावात्रा को जसरोत्तर दूर करना होना पाहिए, ताकि हम भारत राष्ट्रीय करिस के प्येय-समान जबतर और समान राजनीतिक एवं सामानिक अविकारी को सुनियाद काले एके सम्मिलित सहकारी स्वराज्य की सामिष्ट पत्र निर्माण कर सके निस्तका कथा विश्व-साहिए एवं विश्ववन्यन की स्वरंगना करता हो।



# कांग्रेस के ५७ वें ऋधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव

### १ शोक प्रस्ताव

यह कांग्रेस निम्नलिखित व्यक्तियों के निघन पर अपना हार्दिक शोक एवं महान क्षति प्रकट करती है:

 सरदार वल्लभभाई पटेलू, २. श्री अरविन्द घोष
 श्री अमृतलाल ठाकर, ४. श्रीमती पूर्णिमा वनर्जी,
 श्री मयुरादाम त्रिकम जी, ६. श्री रघुनन्दन गर्मा,
 श्री हरप्रसादमिंह, ८. श्री खुर्गीदलाल, ९. श्री मनीन्द्र भूपणींसह, १०. मीलाना हसरत मोहानी

### २ कांग्रेस-संविधान में संशोधन निम्नलिखित को धारा '२८' की जगह रखा जाय--

इस संविवान में कोई संशोवन, परिवर्तन व परिवर्द्धन सिर्फ कांग्रेस-अधिवेशन द्वारा ही किया जा सकना है। किंतु जब कांग्रेस-अविवेशन न हो रहा हो तब यदि कांग्रेम-कार्यसमिति चाहे तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को घारा '१' के अलावा संविधान में संजोधन, परिवर्तन व परिवर्द्धन करने का अधिकार होगा, परन्तु गर्त यह रहेगी कि इन प्रकार का कोई भी संशोवन, परिवर्तन व परिवर्द्धन अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा तभी किया जा सकेगा जब कि इस प्रकार की प्रस्तावित हेर-फेर के बारे में प्रत्येक सदस्य को बैठक की तारील मे कम-से-कम एक महीना पहले उचित नोटिम दिया जा चुका हो और खास तीर पर इसी काम के लिए बुलाई गई वैठक में उपस्थित होकर मत देनेवाले सदस्यों का उनके पक्ष में दो-तिहाई बहुमत हो । अविल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा किये गए परिवर्तन पृष्टि के लिए आगामी कांग्रेस-अधिवेशन के सामने रखे जायेंगे। किंतू पुष्टि होने से पहले भी उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा निश्चित की गई किसी तारीख से अमल में लाया जा सकेगा।

### ३ परराष्ट्र नीति

यह कांग्रेम परराष्ट्रनीति के सम्बन्ध में नासिक कांग्रेम के प्रस्ताव की पुष्टि करती है।

आज दुनिया की यड़ी जरूरत युद्ध से यचे रहने की है, जो कि मानव जाति के लिए अनिवार्य रूप में एक लाउलाज मुमीबत ला देगा। यह कांग्रेम संजीदगी के माय उम्मीद करती है कि दुनिया के वे बड़े राष्ट्र, जिनपर कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है, ऐसी नीतियों पर अमल करेंगे जो कि मीजूदा तनावों को कम करेंगी और वर्तमान ममस्याओं का ज्ञानितपूर्ण हल खोज निकालेंगी। राजनैतिक अथवा आर्थिक परिवर्तन करने के त्याल में किमी दूसरे मुल्क के साथ हस्तक्षेप करने की नीति और दूमरे मुल्क की नीति को नियन्त्रित करने तथा उसे अपने निजी भाग्य के निर्माण की स्वतन्त्रता से बंचित करना निज्वय ही झगड़े का वायस होता है।

मयुक्तराष्ट्र परिपद् का निर्माण सब मुल्कों को भले ही वे एक-दूसरे से बहुत-सी वातों में असहमत ही क्यों न हों, एक सामान्य मंच पर ले आने का था और उसकी बुनियाद यह थी कि प्रत्येक मुल्क को अपने निजी तरीके पर विकसित होने की स्वतन्त्रता रहे और वे एक दूसरे के काम में हस्तक्षेप न करें। यदि संयुक्तराष्ट्र परिपद् की इस बुनियादी नीति पर अमल किया जाय तो दुनिया को आज जो एतरा जकड़े जा रहा है वह

धीरे-भीरे वस हो जायगा और समस्याओं के बारे में सान्तिपूर्ण तरीके से विचार वरना आसान हो जायगा । यह वायस भारत सम्भार द्वारा अपनाई गई उस नीति वा समर्थन करती है जिसपर अमल करते हुए उसने सब देशों के साथ मैंत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने का और उन सामरिक एवं अस्य सन्धियों से बचने भा प्रयक्त विधा है जो वि दुनिया को दो प्रतिस्था मुंदी में बाट देने की प्रेरणा पर विश्व सामित को सतर में डालगी है।

सास तौर से यह कांग्रेस कारत सरकार के सान-फासिसको कार्ल्स में, जो कि जारानी मारिन-सिंच पर स्तत्सत करने के लिए युलाई वह थी, आय न केने बोर उसके बजाय जारान के साथ पुषक सांग्र करने के निजय का समर्थन करती है। मुद्र एमूर्व की शानित, जो कि कोरिया के युद्ध और उसके बाद हुए उतार-चडाक के बहुत जांबक अग हो गेंद्र है, सुद्र एमूर्व के बेसो और उनके साथ मुख्य कर से सम्बन्धित जग्म देगों के सहयोग पर आधारित होंगी चाहिए। निसी भी पक्षपानपूर्ण स्मवस्था में निसमें ये समस्त देश सामित्य न हो, तनाय के बड जाते की सम्मावना है और वह व्यवस्था शानित्यू में समझीनों के सवसरों की कम करती है।

यह काग्रेस आशा करती है कि कोरिया में युद्ध विरास की शातकीत सफल होगी और इससे सुदूरपूर्व में और भी बड़े समझौतों के होने का ताता रुगेगा।

पुन रास्त्रीर एग के अधावह कार्यकम, जिन्हें कि कापुनिक परिस्थितियों की वजह से बहुन से देवों ने अपनामा है, जनरिष्ट्रीय तगाव नी वडाते हैं और उन मुख्तों की जतता के करण भारी बीत डालते हैं, जिसके फरस्तकस्थ उनके जीवन का मानदर्य नीचा हो जाता जाता है। पुन रास्त्रीय एग के इन कार्यकमी की वजह से दुनिया के कम विकरित दूरों की उजित में बावा पृक्ती है। यदि पुन-रास्त्रीकरण के इस उन्हे-चौर से वं को रचनात्मक नार्यों में और वम विनवित देवों के विकरत में स्थाप का सी में और वम विनवित देवों के विकरत में स्थाप जाता जा सा तो युद्ध की तैयारियों की वशेशा बह रास्त्रि की विनय तिस्त्रित मारदी होगी।

काग्रेस का विश्वास है कि संयुक्त राष्ट्रीय परिषड् स्वय को जन उद्देश्यों की पूर्ति में छगावेगी जिन्हें उसवे इतनी खुबसूरती के साम अपने अविकार-पत्र में रखा है और बहा नहीं बाबस्यक समक्षा जायगा, वह इस काम के लिए अपने को पुन-सगठित करेगी !

कांग्रेस को भारत और पाकिस्तान के चले आंते तनाव ना अव्यक्ति चेद है। उससे दोनों देशों को नुकतान होता है और यह उनने सद्यत्यों को विभावन बनाना है। भारत का निजी भी मुक्क के प्रति, निनर्म पाकिस्तान भी शामिन है, हमना करने का न तो हरावा है और न यह ऐसा हरावा कर ही सकता है। दिन्तु भारत को हैमेरा किमी भी ऐसे हमले ना सामना करने में निल्द तैयार रहना है जो कि उनके कोषों के किमी भी हिस्से पर हो सकता है। कांग्रेस मारत-पाक्तिशत-सद्यन्यों सब ममराभों हा कांग्रेस मारत-पाक्तिशत-सद्यन्यों सब ममराभों

काश्मीर के सन्वस्थ में भारत सरकार की यह पोधित नीति रहीं हैं, निसके साथ कार्यस पूर्णत्या सहमत हैं, कि काश्मीर की बतता को बचने भाग का निर्माण तथा निषंध क्यों करना चाहिए। कार्यस जम्मू और कास्मीर स्टेट में उन समुचित परिस्थितिया के रहते पीष्य ही जनमर सबह करने का क्यारत करेगी निनका भारत सरकार स्टंट उन्हों में जिल कर चुकी है। कार्यस कस्मीर स्टंट में विवान मरियन के निर्माण का स्वागत करती है और आधा करती हैं कि रिमाल में स्वान करती है और आधा करती हैं कि रिमाल में स्वान वह निवान-गरिय हैं भे थय हो के जरिये और अभिन अधिक स्टेटी निवान-गरिय हैं भे अप की की प्रीम

४ समाज-विरोधी और कुछ फूट डालने वाली प्रवृत्तियाँ

शुरू में ही कावेत वा शहर और उसकी पीनित जीति ऐंके जवाण्याधिक राष्ट्र बनाने की रही है जियनें हरएक पर्य का सम्मान हो और दिशी में पर्य मा जाति के प्रति चेदनाव न हो और जो राष्ट्र की सब जातियों तबा व्यक्तियों को सथान अभिकार और अनगर की स्वजनता देने वालों हो । मारतीम जनगर के सिच्यान की चुनियाद होती जाता पुत दिद्धात पर रखी गई है। इसकी विचालित होने का सत्तव्य सीवयान और उन आदशों का उल्लंघन होगा जिनसे भारतीय जनता ने अपनी स्वतन्त्रता के लम्बे संवपं के दिनों में प्रेरणा पाई है। कांग्रेस इस नीति की फिर से पुष्टि करती है और उसकी यह सम्मित है कि साम्प्रदायिकता चाहे किसी भी सूरत में हो घम तथा संस्कृति का दुरुपयोग है और वहुन हानिकर है। जाति-पक्षपात और वन्धन भी विच्छेदकारी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देते हैं और देश के बड़े हितों के लिए धातक है। इस प्रकार के जाति-पक्षपात तथा साम्प्र-दायिकता की भावना और व्यवहार समाज-विरोधी हैं और फूट डालते हैं। वे भारत की एकता तथा प्रगति के मार्ग में वाधक हैं और इस कारण उनका विरोध होना चाहिए।"

### ५ आर्थिक कार्यक्रम

यह कांग्रेस जुलाई १९५१ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वंगलीर-अधिवेशन में स्वीकार किये गए चुनाव-घोषणापत्र की स्वीकार करती है।

कांग्रेस का विश्वास है कि देश के सायनों का अच्छे-से-अच्छा उपयोग करने, राष्ट्रीय आय को बढ़ाने और उसका समान रूप से वितरण करने तथा राष्ट्र के पुन-निर्माण के कार्यों में जनता की शक्ति को लगाने के लिए एक सुनिश्चित अर्थ-अयवस्था की स्थापना करना जरूरी है। इसलिए कांग्रेस आयोजन-कमीशन द्वारा बनाई गई पंचवर्षीय-योजना के मसीदे का स्थागत करती है और राष्ट्र से एवं जास तीर से समस्त कांग्रेस-जनों से अनुरोध करती है कि वे राष्ट्रीय आयोजन की कार्यस्व में परिणत करने के लिए अपना पूर्ण सहगोग दें।

हमारे तात्कालिक आर्थिक कार्यक्रम में मुख्य स्थान आर्थिक कार्यों के प्रत्येक क्षेत्रों में सब प्राप्त सावनों द्वारा उत्पादन को अधिकाधिक बढ़ाना होना चाहिए। हमें सबसे अधिक फिक खाद्यात्रों के उत्पादन की करनी चाहिए ताकि अन्न के लिए हमें विदेशों की सहायता पर आश्रित न रहना पड़े। यह भी अत्यन्त आवश्यक है, कि हम कच्चे माल को पर्याप्त मात्रा में मुहय्या करते रहने की समुचित व्यवस्था करें, ताकि लोग काम पर लगे रहें और हमारे उद्योग पूरी कार्यगिक्त से चलते रहें।

हमें देश के आयिक और सामाजिक संगठन की उन

अन्दरूनो खरावियों को दूर करना ही है जिनके कारण हमारी आर्थिक प्रगति एक गई है, ताकि हमारी उत्पादन-शक्ति का और जनता की भलाई का स्तर अधिकाधिक ऊंचा हो।

हमारी भावी उन्नित पूंजी के निर्माण पर और इस काम के लिए समाज द्वारा प्रतिवर्ष बचाई गई रकम पर आश्रित है। समाज की बचत को बढ़ाने के लिए खर्च का नियन्त्रण करना होगा। पूंजी लगाते के परम्परागत सावनों की जगह मिम्मिलित एवं सहकारी बचतों को और बहुन अबिक लोगों की छोटी-छोटी बचतों को देना चाहिए। युद्धकाल तथा युद्धोत्तर काल में टैक्स बचाने और चोरवाजारी की जिन सामाजिक बुराइयों ने उग रूप घारण कर लिया है और जो हमारे आयिक विकास में अत्यधिक बावक हैं, हमारी किसी भी सफल योजना के मार्ग में बावक बन गई हैं। यह जहरी है कि सामाजिक स्थिरता और सुवार के लिए खतरे के रूप में उपस्थित इन बुराइयों को दूर करने के लिए सरकार कारगर कदम उठावे और सारा समाज इस कार्य में उसे सहयोग दे।

राष्ट्रीय आयोजन को कार्यान्वित करने और भारत की तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए देश की सामान्य एवं आर्थिक प्रशासन मशोनरी की समान स्तर पर लाने की आवश्यकता है। इसके लिये यह जरूरी हो जाता है कि औद्योगिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से देश के आर्थिक ढांचे की एक योजना बनाई जाय और उसी के मुताबिक सामाजिक न्याय की आवश्यकताओं की देखते हुए वर्तमान आर्थिक ढांचे की फिर से संगठित किया जाय।

वुनियादी उद्योगों के निर्माण करने के कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कांग्रेस चाहती है कि उपलब्ब सावनों एवं व्यक्तियों का स्वाल रखते हुए उद्योगों पर उत्तरोत्तर जनसत्ता स्थापित हो। किन्तु किल्हाल स्टेट को जो सावन उपलब्ब हैं उनमें से अविकांश का उपयोग पहले कृषि, सिचाई, विद्युत्शक्ति, यातायात, ग्रामोद्योग एवं छोटे पैमाने पर चलाये जाने वाले उद्योगों के लिए करना होगा। व्यक्तिगत क्षेत्र के उद्योगों को आम राष्ट्रीय उद्देशों की प्राप्ति के लिए जन-क्षेत्रों के उद्योगों के साथ मिल जुल-कर चलना चाहिए। श्रमिकों

को औद्योगिक कारलानों के रोजवरोज के नामो तथा प्रत्येक उद्योग नी सामान्य समस्याओं में भाग छेने वा अधिकार होना चाहिए।

भारत की अर्थ-गिति की बृत्याद मूणि है। हमारी मूगि-स्वरस्या ऐसी स्वरित होनो चाहिए कि मूणि पर मेहरत-सन्दरी पर वे बाले ठोमो को हम पर मेहरत-सन्दरी पर वे बाले ठोमो को सम्पत्ति के सामित के सामित के सौर पर हो। विमोदारी एवं वाजीरदारी-सम्प्रत-प्रवाह, कामत वा तिर्मारण, कामत वा तिर्मारण, मित्र में एक व्यक्ति हारा प्राप्त वो बात वाली मूणि के एका बें कहा प्राप्त वे बात वाली मृणि के एका बें कहा मेहर सन्दर्भ के सुवा कर के हुत मुख्य मुख्य अग बहुत से प्राप्ती ने अपने यहा पहले से ही। कार्यकर मुख्य अग बहुत से प्राप्ती ने अपने यहा पहले से ही। कार्यकर मुख्य अग बहुत से प्राप्ती ने अपने यहा पहले से ही। कार्यकर मुख्य अग बहुत से प्राप्ती ने स्वर्ण के सही कार्यकर मुख्य अग बहुत से प्राप्ती ने स्वर्ण के सामित कार करना की कार प्राप्त की सामित कार करना को करना प्राप्त कार्यकर महत्व प्राप्त कार करना को करना प्राप्त कार्यकर महत्व की।

अपनी ग्रामीण अर्थ-अयवस्या के पुनःसमठन में पहला क्दम प्यक्-पृयक् व्यक्तिगत स्वायी के खिलाप गाव को बतीर एक सामाजिक एव आर्थिक इनाई के सदद सनाने और विकास के लिए प्रभावात्मक दासन क्षावस्था स्थापित करने का है । बाम-उत्पादन-परिवडी को उत्पादन बढाने और विकास करने का दाकि व दिया जामा चाहिए तथा उन्हें स्टेट एव जनता के वीच सम्पर्न स्थापित वरने वे माध्यम का काम करना चाहिए । उनको चाहिए कि वे सामाजिक वार्यों के लिए स्वेच्ठाधम संगठित करे। ऐसी समस्त भूमि पर, जिसे मालिको हारा न जोता-त्रोया जाना हो, ग्राम-उत्पादन-परिषद् ना अधिकार होना चाहिए। अलामकर एवं अपर्याप्त जारा-जिया आज आयिक एवं सामाजिन प्रयति के मार्ग में बाधक है। इसलिए बढ़े-बड़े सहकारी फार्मी का बनाया जाना आवश्यक हो गया है। हमें सहकारी ग्राम-व्यवस्था के आयार पर अपनी कृषि-सम्बन्बी अर्थ-नीति को फिर से सगठित करना चाहिए।

ज्यतन सहकारी ग्राम-व्यवस्या क्वा हम समुचित रूप से सगठन और विकास नहीं नर लेने तबतक, अस्यायी तौर गर, बडे-बडे व्यक्तिपत कार्यों को स्टेट के निर्देशन एव नियत्रव में काना चाहिए। उनके लिए यह आवस्यक कर दिया आय कि वे सत्कार द्वारा निश्चित हिन्दे से ती एव व्यवस्था के स्तिर में समावता काव। वित्त ना म्यूनता स्तर स्थापित व रते, जिन्स की शन्म में फेडल की अच्छाई पर शुल्य क्याने, सेता की उपज पर आयक्त लगाने बौर भूमि की नीमतो को नियन्तित करने जैते विभिन्न तरीको के सम्मानना कम की जानी चाहिए। यदि इसमा पाटन न विचा जाय तो ऐसे वडे व्यविनमृत फार्मों का प्रवन्न मत्वान कपने आय में है हो।

छोटी-छोटी अलामकर बाराजियां को सहकारी स्रेतों के रूप में समाठिन करने के लिए उत्साहवर्द्धन कदम उठायें जाने चाहिए तथा बहुवन्यी सहकारी समिनियों को समाठिन करने का काम हाय में लेना चाहिए।

हमारे देश के पात सबसे बड़ी सम्पति हमारी जनस्वित्त है। परनु यदि उबता उचित हिमारा नहीं विद्या
मारा से यह देश को थी है बीच ले जायों मेर उबते किए
मार रूप वन वायगी। जो कोम समा रूप से रोजगार में
छगे हुए है उनके अलावा देश में बहुन बड़ी सस्या ऐसे
छोगों की भी है जो हुए-पुट होते हुए जारिका रूप से ही।
मन्दों में लगे हुए हैं। दस्य बन से छोगीति रूप सार्था में
स्वाने में लगे हुए हैं। वस्य बन से छोगीति रूप से ही
मन्दों में लगे हुए हैं। इस्त बहुत-से ऐसे भी है निकरी
कार्यद्वाता नीचे रूप की है और जो हम मकार देश को
आविक हानि पहुचा रहे हैं। इसिएए पूर्ण रोजगा- देशा
और बार्यक्षमता के सर्व को कथा उठाता—हमारे
स्वार्टीय अवाद के मस्य प्रयो है।

राष्ट्रीय आयोजन से जिन बुनियादी उद्योगों का तया कृदि की उतिते ने विवास का कार्यकर रखा गया तर विवास को कार्यकर रखा गया कि उत्योत ने विवास का कार्यकर रखा गया विवास के प्रतिकृत पर पान से विवास कार्यकर प्रतिकृत पर पान के विवास के विवास कि उत्योग के विकास द्वारा हो सम्मन है। इतिवर्ध प्रामोशोग एवं छोटे पैमाने पर जन्म का नोक उद्योगों के विवास किये जाने बाले माल में उत्पत्ति के लिए निरिस्त वर्धिय के नामें बाले माल में उत्पत्ति के लिए निरिस्त वर्धकर कार्यकर कार्यकर

( झेष पृष्ठ ३२३ पर)



### सहयोगियों के विशेपांक

भारतीय त्यौहारों में दीपावली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उस अवसर पर बहुत से पत्रों के विशेषांक निकला करते हैं। इस वर्ष भी लगभग एक दर्जन 'दीपावली विशेपांक' निकले हैं । कुछ भारी-भरकम हैं, कुछ दुबले-पतले; कुछ चटकीले हैं, कुछ सीये-सादे । पटना से निकलने वाले साप्ताहिक 'बोगी' का बावरण बहुत ही आकर्षक और नयनाभिराम है; लेकिन अन्दर १०४ पृष्ठ की पाठ्य सामग्री होते हुए भी पाठक को सन्तोप नहीं होता। उसमें कई साहित्यिक लेख हैं, गृहरचना पर 'दिनकर' की कविता है, भारतीय शिक्षा और रंग-मंच पर रचनाएं हैं, कहानियां हैं; लेकिन विशेषांक से पाठक कुछ विशेष सामग्री की अपेक्षा रखते हैं। दीया-वली-विशेषांक में दीपावली की प्राचीन परम्परा और उसके महत्व पर एकाध लेख अवस्य होना चाहिए, अन्यया उसे-'दीपावली' विशेषांक कहने का कोई अयं ही नहीं होता। अन्य सामग्री में भी कोई योजना दिखाई देनी चाहिए। प्रस्तुत विशेषांक में वैसा कुछ न होते हुए भी उसके कुछ लेख वहुत अच्छे हैं। 'दिनकर' का 'काव्य की यात्रा कठोरता की ओर' लेख आजके साहित्य-कारों, विशेषकर कवियों को पर्याप्त विचार-सामग्री प्रदान करता है। व्रजशंकर वर्मा के 'जयपुर और आमेर का किला<sup>'</sup> में वहां की स्थापत्य-कला पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। निलन विलोचन शर्मा से 'डायरी के सम्गादित पृष्ठं की अपेक्षा अधिक अच्छी चीज पाने की हम आशा करते थे। कुछ मिलाकर अंक सामग्री के वैचित्र्य की दृष्टि से अच्छा है। एक रूपये में अंक वुरा नहीं है।

जयपुर की दैनिक 'लोकवाणी' के विशेषांक का वहिरंग उतना आकर्षक नहीं है; लेकिन उसकी सामग्री बहुत पुष्ट और उपादेय हैं। सर्वश्री विनोवा, धीरेन्द्र मजूमदार, सिद्धराज ढट्ढा, भगवानदाम केला, जवाहिर-लाल जैन की रचनाएँ सुपाठच ह और आज़ की ज्वलंत समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करती हैं। विशेषांक की कई रचनाएँ पुरानी हैं, पर उससे उनका महत्व कम नहीं हो जाता। हमें विश्वास है कि ४४ पृष्ठ के इस विशेषांक को पढ़कर पाठकों के बहुत कुछ पहले पड़ेगा।

काशी के साप्ताहिक 'संसार' में कैलासचन्द्र शास्त्री का 'दीपावली और भगवान महावीर', जगदीशप्रसाद शास्त्री का 'वैदिक युग का गणतंत्र' और श्री काशिनाय त्रिवेदी द्वारा अनूदित श्री दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री का 'संस्कार का अयं', ये रचनाएँ पाठक को भारत के प्राचीन युग में ले जाती हैं। उन उजले पृष्ठों को देखकर पाठक गद्गद् हो जाता है। १०० पृष्ठ के इस विशेषांक में और भी. कई लेख और कविताएँ हैं, जिन्हें पढ़कर पाठकों का मनोरंजन होता है और कुछ ज्ञानवर्द्धक सामग्री भी प्राप्त होती है।

वागरा से निकलने वाले दैनिक 'सैनिक' में वा॰ गुलावराय ने वपने 'दीपावली का राष्ट्रीय महत्त्व' लेख में 'रामराज्य' की प्रचीन कल्पना को उपस्थित करते हुए वताया है कि हम रूढ़ि के रूप में दीपावली को न मनावें; विलक एक बादर्श समाज की उसके द्वारा स्थापना करने का प्रयत्न करें। उनके इन शब्दों में वड़ी सचाई है—"वाहरी सफाई के साथ-साथ हृदय की मीतरी सफाई भी-ला सकें तो राष्ट्र अपने इस पुण्य पर्व को मनाकर धन्य होगा।" सीताराम तिवारी का 'वुन्देलखण्डी लोकनृत्य,' धीरेन्द्र मजूमदार का 'रचनात्मक कांति में जड़ता' आदि केन्व भी पठनीय हैं। ३४ पृष्ठ के इस विशेषांक में वैसे कई एक रचनाएं

३२९

पठनीय है क्षेत्रिन पत्र ने सस्वापक पाछीवाळजी जैसे प्राणवान केखन की पाठक एकाच जोरदार चीज पाने नी आहा करके निरास होता है।

ग्वालियर के ' जयाजी प्रताप ' के रूपान्वरित 'मध्यभारत सदेश' में केल तो बहुत रूप है, समाचार और विद्यापन अधिक है। जहीं तक विजेपार का सन्वय हैं, पाठक को सतोप नहीं होता, किर भी ५८पूटों में ' दौरावली' और ' दौषाचली का चारनीय विदेवन' आदि दो-एक रचनाए पाठक पढ़ सकते हैं।

दिल्ली के बीर अर्थुन' की जबसे नई व्यवस्था हुई है, उसका स्नर मिर गया है और वह पाठको के लिए उस महान् परस्परा मा प्रतीन जहीं रहा, जिस ने इस पन को जीवन और जीने की कला प्रवान की थी। उसके इस विदोगन में 'सास्त्रीज पुर्वानमाण और साहित्य' आदि दो-एन केल तथा कुछ कविताएँ पड़ी जा सनती है। विवोधान का आवरण वेशक बहुत जानपंक और मुस्द है। दू-एन्टों के इस अक का मुस्य बारह आने हैं।

हैरराबाद से प्रकाशित 'बिलम मारती' का 'ब्यापार दिवेदान' अपने विषय का अच्छा अक है। उत्तका नाम कुछ जम-पूर्ण है। वर्ष-शास्त्र-सम्बद्धी उत्पंतीनी सामग्री का उसमें सक्कन किया स्वा है। प्रवर्तीय योजना, भान को हाम-गुटाई, घरेलू उद्योग-घरे, चीत्रीना अवसाय, फिल्म उद्योग आदि सामग्री की तृष्टि से इस अक की रचनाए उपयोगी है। विशेषाक म १० पूळ है।

सामधी की दृष्टि से हमें सबसे अच्छा जबलपुर के 'जयिहित्य' ना वियोगक लगा। उसके १३६ पृष्ठों के इस अक की रचनाओं को देखकर पता चलता है कि उसके सम्पादक महोट्य ने परिच्य किया है और सूत्र के काम लिया है। अचल, राजकुमार रचुनीरसिंह, चिनवमीहन दार्मा उचादेशी मिना, मूर्यनारायच्यास, व्योहार राजेन्द्रसिंह प्रमृति साहिय-कारों की रचनाए इस अक की वीमा बदाती है और पाठको ना घ्यान आकर्षित करती है । आवरण-पृष्ठ पर विज्ञापन सटकता है।

करकत्ता के 'मया समाज' की गणना हिन्दी के उत्कृष्ट पत्रो में की जाती है। उसके साधारण अक भी सुन्दर और उपादेय सामग्री से परिपूर्ण होते है। दीपावली ने अवसर पर प्रकाशित उसका 'जन-स्वास्ध्य जक जीवनोपयोगी सामग्री से इतना परिपूर्ण है कि पाठक उसक प्रत्येक लेख का ध्यानपूर्वकन केवल पहुँगा ही, अपित् अक को बार-बार पढ़ने के लिए समाल कर रक्खेगा। वर्तमान समय की महत्वपूर्ण समस्याओं में एक समस्या यह भी है नि हमारा शारीरिक स्वास्थ्य उत्तरोतर गिरता जारहाई। इसना मुख्य नारण तो सभवत यह है कि हमें साने-पीने की सद और पौष्टिक वस्तूए नही मिल्ती, लेकिन एक कारण यह भी प्रतीत होता है कि हम स्वास्थ्य के नियमों को भल गये हैं।।अत उस बोर जितना ध्यान सीचा जाय, अच्छा है। पिछले दिना 'जीवन साहित्य' के 'प्राकृतिक चिक्तिसा' विशेषाक ने इस दिशामें अच्छा कार्य किया। 'नया समाज' के सम्पादन की हम बचाई देते हैं कि उन्होंने आजको इतनी महत्वपूर्ण समस्या पर इतनी स्वस्थ और लाभदायन सामग्री एनत्र नरके पाठको को दे दी। हमें विश्वास है कि जो भी इस विशेष कि की पढेगा, उसे लाभ ही होगा।

'किल्लांकर' और 'आरोम्म मिर' मराठी के सुविक्यात पत्र है। इन सोनो के मी 'दीवाजी दिवीपाक' हमारे सामने है। 'किलांक्कर' में मराठी के जानेक साहित्यकारी की रचनाए है, जब कि 'आरोम मिर' में स्वास्था-ववधी उपयोगी सामग्री समहीत की गई है। इन निर्मेषाको को रेखकर हमें लगता है कि मराठी के पत्रों की व्यक्ताइन अपने साहित्यकारों का बविक सहनोग प्राप्त हो जाता है। दोनो के जावरण वहत सहनोग प्राप्त हो जाता है। दोनो के जावरण वहत सहनोग प्राप्त हो जाता है। दोनो के जावरण

—सञ्यसाची

# "CRATE TO THE P

अधिवेशन का मुख्य कार्य

कांग्रेस का नया अधिवेयन हो गया। उसका मृत्य उद्देश्य तो था कांग्रेस की विचार-शारा का प्रचार और कांग्रेस-मंगठन में मजबूती लाना, सो भी लानकर आगामी चुनावों की दृष्टि से। जहां तक चुनावों का सवाल है, यह कदम ठीक था। चुनावों के उम्मीदवार छांटने में जो उनकी सचाई, ईमानदारी, भलमनसाहत पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है वह उचित, आवश्यक और वांछनीय है; परन्तु यह प्रवृति चुनाव तक ही सीमित न रहनी चाहिए। कांग्रेस-संगठन के जब चुनाव होने लगें तब भी इसका ध्यान रखने की जरूरत है; विल्क जीवन के तमाम ध्यवहारों में ही हमें गुद्धता और सचाई को प्रयम स्थान देना चाहिए। तभी हमारी संस्था, समाज या जानन में इसका महत्व बढ़ सकेगा।

सभापति के भाषण के अलावा इस अविवेशन में दो प्रस्ताव बहुत महत्वपूर्ण हुए। एक तो हमारे राज्य के जाति-वर्ष-निरपेक्ष-स्वरूप संवंबी और दूसरा आर्थिक नियोजन-संबंधी। जाति-वर्म-निरपेक्ष राज्य का यह मतलव नहीं है कि किसी नागरिक की कोई जाति या कोई धर्म न हो, या न रहे। अपने व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन में वह किसी भी जाति या धर्म को अंगीकार करे; परन्तु देश के शासन में उस जाति या वर्म को घुसेड़ने का प्रयत्न न करे। दूसरे शब्दों में देश के शासन में वह एक हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई या ब्राह्मण, बनिया, कुम्हार, तेली के रूप में भाग न ले। वहां वह हिन्दुस्तानी या भारतीय है। इस तरह जातीयता या घामिकता को प्रवानता न देकर भारतीयता की भावना को प्रवान मानना, यह इस प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य था। इस भावना के विपरीत जो अंदर-अंदर जाति या धर्म की आड़ लेकर समाज में या देश में जहर फैलाते हैं, मारकाट, तोड़फोड़, घोखायड़ी को प्रोत्साहन देते हैं वे समाज और देश के शत्रु है, यह बतलाना भी इस प्रस्ताव का एक हेनु था। कोई भी विचारशील व्यक्ति इस प्रस्ताव का समर्थन किये वगैर नहीं रह सकता। यदि इनकी स्पिरिट को हम अंगीकार और आत्मसात् कर लें तो फिर भारत की आन्तरिक ही नहीं, पाकिस्तान-संबंधी समस्या भी शीद्य हल हो सकती है।

राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समता की स्वीकार किये विना हम आत्मिक समना के सिद्धान्त की स्वीकार नहीं कर सकते । भारतवर्ष ने अपने नवीन वियान के द्वारा सबको समान मत देने का अधिकार देकर राजनैतिक समता प्राप्त कर ली है। सामाजिक और आर्थिक समता का मार्ग भी गोल दिया है; परन्तु वह समता अभी सिद्ध या प्राप्त नहीं हुई है। आर्थिक नियोजन का संबंध आर्थिक समता से है और वह बड़े कारखानों या यंत्रों को बढ़ावा देकर सिद्ध नहीं की जा सकती, विलक गृह-उद्योगों और श्रम को प्रतिष्ठित करके की जा सकती है, यह गांबीजी ने बार-बार कहा है और विनोवा भी रोज-बरोज इसपर जोर देते हैं: जो पंचवर्षीय नियोजन अभी कांग्रेस ने स्वीकार किया है वह इस दृष्टि से वहत अबूरा और असन्तोपजनक है । फिर भी एक बात हमें भूलनी न चाहिए। वह यह कि यह कोई आदर्ग चित्रण नहीं हैं; बल्कि व्यावहारिक नियोजन है अर्थात अगले पांच वर्षों में भारतवर्ष व्यायिक वियमता मिटाने के लिये आज की स्थिति में क्या कुछ कर सकता है, इसकी तस्वीर इसमें बताई गई है। अतः सर्वेदियी दृष्टि से यह नियोजन कितना ही अपूर्ण हो, शासनिक दृष्टि से आज की सरकार इससे आगे नहीं जा सकती थी, ऐसा लगता है। इसमें गृह-उद्योग,श्रम, व्यक्ति-उपयोग पर काफी जोर दिया गया है।

फिर भी हम मानते हैं कि योजनाओं से कुछ ज्यादा वनता-विगड़ता नहीं—उनके पीछे यदि शुद्ध भावना, दुद सक्लप और उसे चलाने के लिये अच्छा सगठन हो । यह हमारे सयोजको, सचालको और सेवका की सचाई और योग्यता पर निर्भर करता है। हमारी बृद्धि, हमारा ज्ञान और हमारा अनुभव बच्छा नियोजन प्रस्तुत कर सकता था , परन्तु उसे सकल बना सकती है हमारी द्वद्व सकल्प और संगठन की शक्ति। वह हम अपने जदर पालें सो फिर चिन्सा और निराद्या का कोई कारण नहीं। मई दिल्ली १-११-५१

#### हत्या से सबक

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री थी लियाकत वली सा **की हत्या से पाकिस्तान ही नही, हिन्दुस्तान भी अ**थित हुआ। यह बनलाता है कि यद्यपि द्यासन की दृष्टि से भारत के दो टकडे हो गय तो भी दोनो नो आत्मा एक है। नये प्रधान मनी रवाजा नाजिमुद्दीन के आने से दोनो भागो में अधिक शानि होने की आशा हुई है। यदि दोनो भागा के लोग और शासक एक-दूसरे की कठिनाइया का अधिक सहानुभूति से विचार करेंग तो यह कठिन नहीं है कि दोना देशों के लोग अपने राष्ट्र के रूप में तो एक भारत की ही स्वीकार करें और शासन की दुष्टि से, पानिस्तान और हिन्दुस्तान दो अलग-अलग विभाग मात्र मान लिय जाय ।

पहले एक व्यक्ति के मरने या मारने का भारी प्रमाव होता था, वयोकि दासन में व्यक्ति की प्रवानता थी। **अव तो विचार,प्रणाली और सगठन की प्रवानता है।** अत क्यक्ति के रहते, न रहते से बोडा-यहत असर भले ही हो, विवार, प्रणाली एवं सगदन की सहसा बोई क्षति नहीं पहुच सकती। अत व्यक्तिया की हत्या करना केवल मूर्वता ही हो सकती है। गाधीजी की हत्या उनके विचारों के कारण हुई, न कि व्यक्तिगत काम्णा से । मगर गाधीजी की हत्या से क्या उनके विचारो, प्रणालियो और संगठनों को दुंट धनका पहुँचा ? बन्कि अनुभव तो यह बतलाता है कि उल्टी उनको अधिक गति और दुइता मित्री। अत आज व्यक्तियाकी हत्याया विरोध न करके जिन विवास, प्रणालियो और संगठनी से हमारा मतमेद है उनके विरुद्ध लोगों को समझान का प्रयत्न करें। इम नये कुरुक्षेत्र म वाणी, तलबारी या बमी से लडाई न हीं होती, बल्कि मुस्तियो, प्रमाणी, उदाहरणो से अवित् बुद्धिवल और ज्ञानवल से तथा प्रेमपूर्वक लोगो की सेवा करके अर्थात बात्मबल से ही की और जीती जा सकती

इसलिए जो चाहते हैं कि पाकिस्तान और हिन्दस्तान फिर एक हो <del>-ख</del>डित भारत फिर अखड हो जाय, उन्हे शस्त्र प्रयोग और बल-प्रयोग का रास्ता छोडकर ज्ञान वल और आत्म-वल से काम लेना चाहिए। गांधीजी और लियाकत जली की हत्या हमें यही सबक सिखाती है। नई दिल्ली, १-११-५१

#### स्वार्थ नही, मित्रता

चीन का सास्कृतिक प्रतिनिधि महल भारत आया है। उघर चीन ने प० नेहरू की अपने देश में आने का निमत्रण दिया है। सीन का और भारत का बहुत प्राचीन सम्बन्ध है। वावनिक चीन का भी भारत से मैत्री-सम्बन्ध रहा है। यह नवीन आदान प्रदान उस सम्बन्य की दृढ़ ही बनायेगा, बयोकि भारत की विदेश-नीति का पहला सिद्धात ही यह है कि विश्वार भेद के बावजूद सब राष्ट्रों से मित्रता रखना। भारत न वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय गुटो में से किसी में शामिल होना चाहना है, न तटस्य राष्ट्रों ना एक तीसरा गुट ही बनना चाहता है। इससे उसका प्रभाव एशिया में तो बढ़ ही रहा है, बरोप में भी इस नीति के समर्थक पैदा हो रहे है। भारत, जो सब राष्ट्रो से मैत्री-सम्बन्य रखना चाहता है, वह राजनैतिक कारणो और राजनैतिक आधारो पर नहीं. जिसका मृत्यव होता है कोई समझौता, कोई ठहराब, कुछ सीदावाजी, कुछ साठ-गाठ । इससे परे और कपर उठकर भारत बहुता है-"हम अपने घर में स्वतन्त्र है, पुम अपने घर में स्वतन्त्र रही।"जो देश दूसरी के स्वार्थ के शिकार रहे है, उन्ह भी भारत स्वतन्त्र देखना चाहता है और ऐसे हर देश की भारत ने मदद की है, जिसका नतीजा यह हुआ है कि सारे एशिया से साम्राज्यवाद की जह खोखली हो रही है। भारत न केवल खुद आजाद हुआ है, बल्कि उसने दूसरे की आजादी का बीडा भी उठाया है। इससे जिन महान राष्ट्रों को क्षति पहुंचती है वे भीतर-मीतर मारत से नाराज रहते हैं और भारत को अपने अपने गुट में मिलाने पर मजबूर करना चाहते हैं। लेकिन अपने स्वायं को छोडकर यदि विस्वहित की दृष्टि से देखें तो उन्हें भारत की

सन्नीति और उसके रक्षक जवाहरलाल की महानता के सामने सिर झुकाना पड़ता है। निश्चित है कि महान राष्ट्र यदि अपना स्वार्थ-परायण दृष्टिकोण न छोड़ेंगे तो उनकी शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जायगी।

वाज मध्य-पूर्व में ईरान, मिश्र, सूटान में जो कुछ हो रहा है वह इनका ज्वलन्त प्रमाण है। इसमें संदेह नहीं कि स्थानीय स्वार्थ का विघात करके विदेशों स्वार्थ पनप नहीं सकते। स्थानिक स्वार्थों को प्रधानता देकर ही वे अपनी प्राण-रक्षा कर सकेंगे। जिस दूरदेशों ने भारत के स्वामित्व का लोग छोड़कर भारत से मिश्रता को तरजीह दी, वही ब्रिटेन को ईरान और मिश्र को उलझनों ने बचा सकती है। अब संनार का प्रत्येक राष्ट्र अपने हिन के प्रति सजग हो गया है और विदेशियों के स्वार्थी-चंगुल में फंस रहना पसन्द नहीं कर सकता। विदेशियों को चाहिए कि वे स्वेच्छापूर्वक अपने अनुचित स्वार्थों को छोड़ें और मिश्रना को प्राप्ति से सन्तोप मानें। अब राष्ट्रों के परस्पर सम्बन्ध स्वेच्छापूर्वक ही कायम रह सकते हैं। इस नीति पर दृढ़ रहकर भारत अपनी ही नहीं, संसार की बड़ी सेवा कर रहा है।

नई दिल्ली २.११.५१

'जीवन-साहित्य' का अगला विशेपांक

' भूदान-यहा खंक ' होगा। जो काम अस्य और सत्ता से नहीं हो सका, उसे विनोवा अपने पुण्य से कर रहे हैं। यह कोरी कल्पना नहीं, प्रत्यक सत्य हैं। पाठक जानते हैं कि अवतक उन्हें लगभग १७ हजार एकड़ जमीन दान में मिल चुकी है। यह जमीन भूमिहीनों को दी जायगी। यह एक ऐसी सत्यायही कांति है जो भारतीय स्वातन्त्र्य कांति से कम महत्व नहीं रखती। जिन दिनों लोग यह समझने लग गये ये कि गांधीवाद खतम हुआ, गांधीवादी पोच और वेकार

लोग हैं, जो योग्य थे वे घारा-मभाओं, मंत्रिमंडलीं और सरकारी पदों पर पहुंच गये, जो वेकार थे वे चर्या, खादी, और तेलघानी की लिये बैठे रहे, उन्हीं दिनों उमी वर्षा और सेवाग्राम के परमवाम से एक ज्योति निकरी जी मोटर और हवाई जहाज के युग में पैदल घूम रही है और जिसने अपने चमन्कार से भारत के शासक-मंडल की नहीं,विदेशी प्रें बकों को भी प्रभावित किया है। इसके पास केवल प्रेम का बल है। उसने तेलंगाना में प्रेम के मुकाबिले शस्त्र को योया ठहराया, कम्युनिस्टों को अपनी नीति पर पूर्नीवचार करने को बाध्य किया और उन लोगों से सहवे भुदान करा रही है, जो बलपूर्वक लेने लगें तो एक इंच जनीत भी विना प्राण की बाजी लगाये नहीं छोड़ेंगे। बही विनीवा छाती ठीककर कहते हैं, "यदि मेरी योजना स्वीकार की जाय तो दो-तीन साल में भारत की कपटे की आवश्यकता खादी से पूरी की जा नकती है।" इतना प्रत्यक्ष प्रमाण और जबरदस्त चुनौती देने हुए भी यदि हमारे कान पर जुं न रेंगे तो इसे देश का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। यह भूवान-यज हमारी समझ में नवींदय का आवार-स्तम्भ है इमी तरह हम सब बुद्ध प्रवृत्तियां स्वेच्छापूर्वक करने लग जायं तो उसी दिन भारत में रामराज्य हो जायगा। विनोवा इसके जीते-जागते प्रतीक हैं । उनके हाय मजबूत करना भारत के गरीबों, भूमिहीनों की सहायता करना है; बल्कि दरिद्रनारायण की पूजा करना है और भारत को खतमयी कांति की आशंकाओं से बचाना है। इस मांतिमय कांति में 'जीवन साहित्य' हृदय मे अपना योग देना चाहना है। इसी से हमने निश्चय किया है कि हमारा जनवरी अंक ' मूदान-यज्ञ ' अंक होगा, जिसकी सामग्री मे पाठकों को पता चलेगा कि विनोबाजी के इस क्रांतिकारी कदम का कितना व्यापक प्रभाव पड़ने बाला है।

नई दिल्लो २-११-५१ ---ह०उ०

### ग्राहकों से निवेदन

जिन बन्युओं का 'जीवन-साहित्य' का वार्षिक शुल्क दिसम्बर में ममाप्त हो रहा है उनमे हमारा अनुरोध है कि वे आगामी वर्ष के लिए ४) म० आ० हारा शीन्न मेज देने की छूपा करें अथवा हमें मूचना दे दें जिसमे जनवरी का विशेषांक उन्हें बी० पी० से भेज दिया जाय। यदि कोई मूचना न मिली तो ी० पी० मेज दी जायगी। छुड़ा कर अनुग्रहीत की जिये।

#### जीवन-साहित्य

का नया विशेषांक

## भूमि-दान-यज्ञ श्रंक

जनवरी में पाठकों को मिल जायगा। उसे पटकर

आपको पता चलेगा कि तपोधन विनोबा क्यो इतनी लम्बी पैदल यात्राए कर रहें हैं और इन यात्राओं का क्या परिणाम निकलेगा। विनोबाजी का यह यज्ञ एक ऐसी

### श्रहिंसक कांति

है

जो देश का कायाकल्य कर देगी।

यज के प्रधान होता विनोवाजी के अतिरिक्त अनेक विद्वानो, चितको अौर साध हो की रचनाए इस अक में रहेगी।

यदि श्राप

"जीवन-सिहित्य" के ग्राहक नहीं है तो तत्काल ग्राहक बन जाने की कृपा करे। यदि ग्राहक है और आपका वार्षिक शुल्क दिसम्बर में समाप्त हो रहा है तो अबि उन्ब ४) मनीआईर से भेजकर आगामी वर्ष के लिए ग्राहक बन जायें।

इस अभिनन व्यनुष्ठान

योग देने के लिए विनोवाजी की विचार-वारा तथा उनकी प्रवृत्तियों का ज्ञान आवरयक है।

व्यवस्थापक

जी व न - सा हि त्य कनाट मर्जन, नई दिल्ली।

## सरता साहित्य मगडत के नबीननम प्रकाशन

सस्ना साहित्य मगडल

नई दिन्ही

### ग्रहिंसक नवरचना का मासिक

[परिशिष्ट]

सपादन

0

फरवरी १/६५२

धाविन' मूल्य ४)

1

इस अन वा ॥)



# गांधी-डायरी १६५२

## लोकमत

"इस वर्ष की 'गांधी-डायरी' पिछले वर्ष मे भी मुन्दर रूप में प्रकाशित हुई है। इसका उपयोग करने वाले के प्रत्येक दिवस का मंगलाचरण गांधीजी के वचनों हारा होगा। ऐसे कल्याणकारी प्रकाशन के लिए सस्ता साहित्य मण्डल धन्यवाद का भाजन है।"
— मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त

"यह डायरी बहुत उपयोगी प्रतीत होती है और इसमें अनेक शिक्षात्रद वार्ते होने से इसका महत्व वड़ जाता है।" —श्रीप्रकाश

"डायरी के रूप में भव्य और मनोज हैं ही, उससे बड़कर गांधी-वचनों से मेरे लिए तो वह प्रातःस्मरणीय ही हो गई है।" — जैनेन्द्रकुमार

"गांघीजी की जीवन-दृष्टि से और विचारों से छोगों को परिचित कराने में इस टायरी का काफी उपयोग होगा।" — शंकरराव देव

"डायरी तो जीवन में नियामकता लाती ही है, किन्तु 'गांधी-डायरी' इसके साथ-ही-साय नीति, सदाचार, सद्भाव और आध्यात्मकता का भी हदय में संचार करती है। मेरा तो ख्याल है कि ऐसी डायरी का उपयोग करनेवाले व्यक्ति के जीवन में विश्वद्धता, पवित्रता और परोपकार अपना स्थान प्राप्त किये विना नहीं रह सकते और वह व्यक्ति मुख और शांति से वंचित नहीं रह सकता।" — (डा०) हीरालाल जैन

"यह डायरी जीवन के सूत्रों की—विशेषकर महात्माजी के उपदेश-सार-अंश की—मुन्दर प्रदर्शिनी है, जिसे देख-देखकर आत्म-स्फुरणा होती है और प्रेरणा मिलती है। ऐसी डायरी का घर-घर प्रचार होना चाहिए।"
——(प्रो०) विनयमोहन दार्मा

"जीवन की दिनचर्या पर इस उत्तम टायरी का अमिट प्रभाव पड़ेगा और पूज्य बापू के अमूल उपदेश-वाक्य जीवन-यात्रा के मुन्दर सम्बल होंगे।" — शिवपूजन सहाय

"यह डायरी वहुत उपयोगी है।...इस डायरी को हाथ में रखने से गांधी-आदर्श की सदा याद बनी रहेगी।"
—रामेश्बरी नेहरू

"इस बार सचमुच यह डायरी बहुत ही मुन्दर एवं उपयोगी बन गई है ।...माधारण व्यक्ति के लिए भी यह उपयोगी प्रमाणित होगी।" ——(राजकुमार) रधुबीर सिंह

"इस तरह की डायरी के प्रकाशन से वापू-प्रेमी लोगों को आनन्द होगा और काम में भी सहायता मिलेगी।" —आर्यनायकम

"डायरी में प्रत्येक पृथ्ठ के वाक्य तो प्रत्येक दिन के लिए मानसिक नवप्रेरणा अनुप्राणित करते हैं। वापू के भक्तों के लिए तो यह डायरी एक निधि के समान है।" —सोहनलाल द्विवेदी

"मेरे लिए तो यह डायरी स्वाध्याय तया अभ्यांस के काम की है। इस युग में जबिक देश की जीवन-नीका डावांडोल हो रही है और प्रायः लोग गांधीजी के अमूल्य उपदेशों तथा सिद्धान्तों को भूलते जा रहे हैं, यह डायरी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है, यदि इसको लेनेवाले भाई-बहनें इसमें निहित रत्नों का दैनिक सदुपयोग अपने जीवन में करें।" उत्तरप्रदेश, एजस्थान, मन्यप्रदेश तथा निहार मातीय सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाइब्ने रियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम्य पंचायतों के लिए स्वीकृत



क्रॉपॉटकिन **ट** 

#### कला और जीवन

वर्तमान कलाकारों के सबसे सुन्दर चित्र प्रकृति, प्रामो, घाटियो, तूकानी समुद्रों और वैमवदाली पर्वतों के होते हैं, पर खेतों में काम करने में जो कवित्व है उसे वह चित्रकार कैसे चित्रित्त कर सकता है, जिसने खेतों में काम करके स्वय कभी उसका बानन्द नहीं उठाया, कैवल उसका बनुनान या कल्पना भर की है, जिसे उस प्रदेश का ज्ञान उतना ही है, जितना कि मौसमी चिहियों को रास्ते में पड़ने वाले देश का होता है, जिसने नई जवानों को उपम में बढ़े सबेरे खेत में जाकर हल नहीं चलाया, जिसने अपने संगीत से आदर स्वातियों से प्रतिस्पर्धा करते हुए मेहनती पसियारों के साथ हिसया भर-भर कर थास काटने का आनन्द नहीं लिया? भूमि और भूमि पर जो कुछ उगा हुआ है उसका प्रेम तो तूलिका से चित्र बना देने मात्र से प्राप्त होता नहीं, यह तो उमकी सेवा करने से उपजा है। जिससे प्रेम ही नहीं, उसका चित्र कीसे बनेगा? इसी कारण तो बन्जे से-जन्छे चित्रकारों ने इस दिया में जो कुछ बनाया है बह भी बत्नुल अपूर्ण है, वास्तविक जीवन से दूर है और प्राप्त मानुकता की व्यजनामात्र है। उससे जान नहीं है। . .

## यदि न दोगे आज, कल देना पड़ेगा

पक चुका है फल, अरे, आगे सड़ेगा, यदिन दोगे आज, कल देना पड़ेगा।

> मांगते हैं मान्य तुमसे प्रेम करके, बैर करके अन्य छेने को छड़ेगा ।

बहुत संग्रह हो चुका कुछ त्याग भी हो, नाम में तो चार चांद वही जड़ेगा।

> एक हम्यं तभी कहीं इतकृत्य होगा, आप अपने साथ जब दो घर घडेगा।

भक्त को भगवान भी न विभक्त रक्ते, क्या कभी रक्ताश्रु मोती-सा झड़ेगा।

> छोक-परिवर्तन रुकेगा क्या कहीं भी, समय का जो नियम है निश्चय नड़ेगा।

मूल होगी यदि फलाफल के विषय में, जान लो तो फूल कांटे-सा गड़ेगा।

> भूमि का अधिकार छोड़ेंगे न तृण भी, अज्ञ है, अपने लिए ही जो अड़ेगा।

36

[तेसमाना-साथा की समाप्ति पर मचेरियाल, जिला लादिलाबाद में हैदराबाद-रिमासत के कार्यकर्ती-सम्मेलन में, ७-१-५१ को दिया हुआ भाषण ।]

यह जो इतना साहस मैने विया, उसवा महत्व मेरे मन में बहुत ही ज्यादा था। यद्यपि इसमें से कुछ नतीजा आयेगा, ऐसा स्थाल करके मैंने यह नाम नहीं लिया था लेकिन बर्घा से जब में निक्ला तब वहा एक छोटी-सी समा सक्सीनारायण मदिर में हुई थी। वहा पर लोगों की इजाजत लेते समय मैने वहा था कि अभी तो यह आखिरी मुलानात ही समझो। फिर कव जिलेने, मालून नही। सभी मेरे मन में यह स्याल था, लेकिन उसको जाहिर मही किया या-जबतक कि दिवरामपल्ली नहीं पहुच सकू। उसके बाद निश्चय किया और घुमने वा आरम्भ हुआ। मन में तो ऐसा था कि लतरे के मूल्क में जा रहे हैं। अगर इस खतरे की दूर करने वा कोई उपाय मिल गया तो अच्छा है। अगर इस खतरे वा खुद को ही अनुभव आमा तो भी अच्छा है, क्योंनि उससे घातिमय उपाय सहज ही सूझेगा। ऐसा वृद्ध मन में रखवर निवले थे सीर परमेश्वर की कृपा हुई, जिससे सारा-का-सारा वाताबरण ही बदल गया। वम्युनिस्टो के हृदय तक पहुचने की जितनी बोशिश हो सकती थी, उतनी मैने की, इतना में वह सकता हू । और मेरा मानना है कि जिनसे बात करने की मुझ मिला उनको, और जिनके वानी तक मेरी बात पहुची उनको, इतना तो नि सदेह यकीन हुआ होगा कि यह मनुष्य उनका भी भला चाहता है। हा, मेरा मार्ग एक स्वप्न है, यश आने में कहा तक उसना छपयोग होगा इस विषय में शका तो हो ही सकती है। फिर भी मैने तो जनको यही बताया कि तुम्हारे जो दावे हैं, वे कोई भी कौम अभी तक यशस्वी नहीं कर सकी है और आगे कब करेगी, इसका भी कोई मरोसा नहीं है, यह एक बात तो कम-से कम कबूल कर लो । दूसरी यह बात भी समझ लो कि हर हालत में चाहे हिसा खड़ित न की जाय, कुछ हालतो में उसे मान्य भी कर छें, फिर

भी स्वराज्य प्रास्ति वै बाद—और अर्थाक अंडस्ट फेबाइक (बयस्क सर्वाधिनार) दिवा गया है, उसके माद सहसो का परित्याग ही करना चाहिए था। कार उतना नहीं किया है हो पहले दर्ज की माने को है कीर यह ऐसी परची है, जिसे कोई भी प्रचा और जो प्रचा की सरकार है, वह यरदास्त नहीं नर सकती और उनके साथ किसी तरह की सहानुमूधि राजना असम्य ही होगा। यह बात सने उनको समझाने की कोशिया की। नेपा अपना मानना है कि इसना बापकी हो। है पर सपना मानना

अनुशासन के नाम पर जडता

यद्यपि मेरे मन की यह तैयारी है कि ये जो अत्याचार अभी हुआ करते थे, वे यद्यपि कम तो जरूर होगे, फिर भी बिल्कुल मिट जायेंगे ऐसा तो नहीं है, कुछ जल सकते हैं। उसका कारण इन लोगा में एक बड़ी बुदिहीनता है। और यह इन्हीं लोगों में है ऐसी बात नहीं है, दूसरे लोगो में भी है। इस जमाने में यह जा गई है। इनको डिसिप्लिन का एक ऐसा खयाल है कि अपनी बढि को कोई चीज न जबती हो तो भी अपनी सस्था की दृष्टि से हर हालत में उसको मानना चाहिए। ऐसी एक निष्ठा उन लोगो में है। इसमें गुण भी है। में ऐसा नहीं कहता कि यह केवल दोप ही है, लेकिन उसके कारण सारी-की-सारी जमात पराधीन, परतन्त्र और बिल्कुल जड बन जाती है। डिसिप्टिन के नाम पर लाखो लोगो को अपने हाय में रखना और यत्रवत् छाखो छोगो का सचालन करना, यह एक दृष्टि इस जमाने में निकली है, जिसका उपयोग सब करने रूगे हैं 🖟 हम देखते हैं कि काग्रेसवालों में भी डिसिप्लिन का काफी प्रयोग होता है । उसकी कोई दोष भी नहीं दे सकते, लेविन डिसिप्टिन का यहां तक खयाल, कि एव चीज बृद्धि को न जबे और उससे देश को बहुत भुक्सान पहुँचता है ऐसा भी निरूपय हो, तब भी नहीं छोड़ना, उसमें एक तरह की लॉयल्टी-निप्ठा भानना, यह वास्तव में वृद्धिहीनता की पराकाप्ठा है। लेकिन इसकी इस यांत्रिक युग में एक गुण समझते हैं और इसलिये इन लोगों की जो हाईकमांड है, जोकि हिंदुस्तान में नहीं है, विल्क हिंदुस्तान के वाहर है, वह जव-तक इनको दूसरी बाजा नहीं देगी तवतक इनका रवैया खास बदलेगा, ऐसा नहीं मान सकते। फिर भी चूंकि इनमें से बहुतों के विचार बदल गये हैं और वयोंकि इनके लिये बातावरण की भी अनुकूलता नहीं रही है, ये अत्याचार कुछ कम अवस्य होंगे; लेकिन कुछ-न-कुछ हुआ करेंगे। इसके लिये हमको अपने मन में तैयार रहना चाहिए। यह तो मैने कम्युनिस्टों के साथ मित्र के नाते सम्बन्य स्थापित करने की जो कोशिश की, उसका थोड़ा जिक किया।

## जागतिक क्रांति के वीज

यह जो मसला है, वह एक अन्तर्राप्ट्रीय मसला है और उसका हल अगर हम शान्तिय तरीके से कर छेते हैं तो यही समझो कि स्वराज्य-प्राप्ति के वाद हमने एक वड़ी भारी खोज की, ऐसा कहना होगा। याने हिंदुस्तान ने स्वराज्य हासिल किया, उसमें अहिंमा का उपयोग हुआ है यह दुनिया ने देखा और उसपर से दुनिया में कुछ आशा वंघ गई। वैसे अगर यह मसला हम अहिंसक तरीके से हल कर सकते हैं--- और मेरा विश्वास है कि हम कर सकते हैं तो सारी दुनिया के लिये यह एक मुक्ति का रास्ता मिल जायगा। इस दृष्टि से इस तरफ देखना चाहिए। आरम्भ में मैंने जब अपने विचार लोगों के सामने रखना शुरू किये और कुछ भूमिदान मांगना गुरू किया तव, जैसे नदी का आरम्भ शुरू में छोटा होता है, वैसे ही विचार सूझते गये और मैं कहता गया। वह एक छोटा-सा आरम्भ हो गया। इसका महत्व क्या है यह उस वक्त बहुतों के ध्यान में नहीं आया; लेकिन जैसे-जैसे वह विचार आगे वढ़ता गया अरि लोगों के दिलों पर उसका असर होता गया, वैसे-वैसे उसका मिवप्य में क्या परिणाम हो सकता है, इसकी लोग समझने लगे । अगर हम अपनी कल्पनाशक्ति चलायें और इस चीज़ को ठीक तरह से ग्रहण करें तो यह बात घ्यान में आ जायगी कि इस काम में जाग-तिक क्रांति के बीज छिपे हुए हैं। लोग मुझे आकर पूछने लगे कि क्या इससे फलाना भसला हल होगा ? मैंने कहा कि भाई, बात यह है कि मसले आखिर कैसे हल होते हैं, यह दुनिया नहीं जानती है। मसले ऐसे ही हल हो जाते है। दुनिया के कई मसले ऐसे हैं, जो किसने हल किये, यह कोई नहीं जानता । इतिहास जानने वाले जानते हैं कि वर्ल्ड-वार(विश्व-युद्ध)होती है, फिर भी मसले वैसे-के-वैसे ही पड़े रहते हैं और कहीं-कहीं तो मसले बढ़ ही जाते हैं। फिर भी पांच-पच्चीस साल के अन्दर कुछ मसले खत्म हो जाते हैं और नये मसले तैयार होते हैं। तो पुराने मसले कैमे खत्म हुए, इसकी खोज करने के लिये कोई इतिहासकार बैठे तो आगे का सारा प्रवाह देखकर के और कुछ कार्यकारण सम्बन्व देखने की कोशिश करके कुछ कह भी सकता है। जो लोग वर्ल्ड-वार (विश्व-युद्ध) में शामिल हुए, वे भी यह दावा नहीं कर सकते कि यह बार हमने चलाई। यल्कि उसमें हम दाखिल हो गये, ऐसी वात हो जाती है और कोई मनुष्य यह भी दावा नहीं कर सकता कि फलाना मसला फलानी दुष्टि से हल हुआ है। ऐसी हालत में मैं एक मसला हल कर रहा हूं, यह मान लेना बिल्कुल अहंकार का लक्षण होगा वीर उस तरह का कोई ख्याल मेरे मन में नहीं है। मैं कोई मसला हल कर रहा है, ऐसा कोई आभास मुझे नहीं आया है, बल्कि इतना मैं मानता हूं और समझ गया हूं कि इसमें जो दर्शन हुआ है, उसकी अगर हम ठीक से ग्रहण करें और उस चीज के साय अगर हम एकरूप होने की कोशिश करें तो यह ऐसा सावन है, जिससे मसला हल हो सकता है।

अहिंसा में हर मसले का हल

पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक चिट्ठी मुझे लिखी थी। उसमें उन्होंन जहां जो हो रहा है, उसके लिये खुशी प्रकट की थी। उसके जवाब में मैने लिखा था कि मेरा विश्वास है कि हर कोई मसला अहिंसा से हल हो ही सकता है; लेकिन उसके लिये हृदय-शुद्धि की आवश्यकता होती है। ऐसी हृदय-शुद्धि हम कहां से लायें, यही सवाल है। लेकिन अगर उसी के लिये हम कोशिश करते रहेंगे तो वह जरूर कभी-म-कभी हासिल होगी, ऐसा विश्वास रख सकते हैं। इस तरह वा एवं जुमला उन्न पत्र में मेंने लिखा है। उसका जिक बाज में मुस्ति हिएस परता है कि उसमें भेरा विस्ताम मेंने प्रवट विचा है, विकाश दशन इस बार मुखे प्रत्यक्ष हुआ। वैसे तो इस चीज की बन्यना से और प्रद्रा से में मानता था ही, लेकिन इस मनंबा उसका दर्मन हुआ। आज तो आप कोगो को में हनना ही कहुगा कि यह तम, जिसे मेंने मुन्यान-यम भाग दिवा है एक सामान्य यक नहीं है।

इस युग की असामान्य घटना

आज मैन एक माई से इस विषय में चर्चा की और पूछा कि इस सरह की कोई पुरानी मिसाउ होगी इतिहास में ? तो उस बाई ने विनोद से पड़ा कि पुराने दान के एसे जिन तो आते हैं कि कोई मठपति, आचार्य निकले और अपने मठ ने लिये दान मागन गये तो लोगों ने जनके मठ के लिये जमीनें दी है। इस तरह के कुछ उदाहरण आते हैं. लेकिन ग्रीको के लिये इस तरह जमीनें भागते जाना और लोगो वा जमीनें देने जाना, ऐसा नोई भी जदाहरण इतिहास में हम नही पाने है। यह तो विनोद में जो चर्चा हुई, वह नहा । वैसे, इतिहास में कौत-सी घटना हुई और कौत-सी नही हुई, यह बहना कठिन है, क्योंकि इतिहास हजारों साल का पूराना है। उसका पूरा जिक्र हमको उपलब्ध नहीं है । छेनिन इतना नि सहाय है कि यह जी घटना इस युग में बनी है, वह सामान्य घटना नहीं है, क्योंनि इसमें छोगो ने जो दान दिया है, उसके पीछे लोगो की बहुत ही सद्भावना है, इसवा में साक्षी हु। उसकी में नई विशाल देनपता ह, लेक्नि एक-दो मिसालें देता हू, जिनका मुखपर बहुन असर हुआ है। एक माई ने हमनी १२५ एकड का भिम-दान दिया । वह जमीन अच्छी थी । वह भाई दो-तीन दिन हमारे साय घुमता था और दूसरो से दान दिलाने की कोशिश चली थी, लेकिन दूसरे रोज उसने खुद उउवर सवा सी एकड का दान दिया। हमने पूछा कि आज फिर से क्यों देते हो ? तो उसने कहा कि आज एकादशी का दिन है, इसलिए ऐमा लगा कि आज के रोज ही कुछ पुष्पकार्यं कर लेना चाहिए।

यह छोटी बात नही है। यह मिसाल मैंने इसलिए दी कि जिन्होने दान दिया, उन्होने नेवल हृदय शृद्धि की भावना से ही दिया और यो समझ करके ही दिया कि इस यह में भाग छेना अपना काम है। और मैने हर जगह समझाया कि इसमें गरीओ पर हम कोई उपकार करते हैं ऐसी मावना बाप ममिदान देते समय अगर मन में रखने हो हो वह अहनार होगा और उससे जो साम हम चाहने हैं वह नहीं होगा। गरीबों को जमीन तो मिलेगी. लेक्नि उदने से भेरा काम नहीं होता है। भेरा काम तो सब होगा, जब यह समझोगे कि जैसे हवा और पानी पर हरेक का हक है, वैसे जमीन पर होक का हक है और जबकि कई छोगो के पास विल्कुल जमीने नहीं है, उस हालत में बहुत ज्यादा जमीन अपने पास रखना गुलम बात है। उस गुरुती से मक्त होने के लिये ही हम जमीन वेने हें, इस खयाल से देना चाहिए। यह हमने बार-बार नहा और जहा हमको जरा भी शका आई कि जो दान दिया जा रहा है, उसमें कुछ सामसना या राजसना का भाव है, बहा हमने वह दान नहीं लिया है, म्योकि हमारा मतला यह नहीं था वि किसी भी तरह से जमीन बटोरें। ऐसा काम तो कम्युनिस्ट करते है । हर किसी हालत में बमीन मिलती है तो से सो । बुशी से मिलती है तो खुशी से ले लो, झबडे से मिलनी है तो झगडे से ले लो । और दे दो यरोबो को, क्योंकि आखिर जमीन सो अन्धी चीज है। 'पुलिस एक्सन' के पहले श्रीमानो की जमीनें छेकर उन्होंने गुरीबों को दे दीं, छेक्नि पुलिस एक्सन ने बाद वे जमीनें गरीवो के हाथ से गई और पुराने मालिकों *रो देवी पदी । यहा ऐसी गरवा दर्द मी, यहा मेरे* यरीवो को समझाया कि 'वाम्यनिस्टो ने आपको अमीन दी, वहती खैरदी, लेक्नि आप ने ली कैसे ? उसपर तुम्हारा अपना अधिकार क्या था <sup>7</sup> यह तुमने अच्छा काम नही किया ।' इसे समझाने में ही यही समय देना पडा था. क्यांकि आश्रिर सीति-अनीति का खयाल अगर हम बनना में से निजाल देते है तो जनता का मभी लाम मही हो सकता। किसी मी तरह से अपने हाथ में बमीन वा जाय तो अच्छी वात है, ऐसा अगर लोग समझने लगें तो उससे न गरीबो ना ही उद्घार हो

नकता है, न देश का । इसलिए यह बात हमने उनको तमझाई कि वे जमीनें तुमने लीं, इनी में तुम्हारी गलती हुई । लेकिन अब ये जो जमीनें तुम्हारे पास आयेंगी, वे दिल्हुल प्रेम से आयेंगी । कोई तुमको यह नहीं पूछेगा कि ये तुम्हारे हाय में कैसे आई ? ये तुम्हारे हक की जमीनें है ? तो इस तरह हमने गरीवों को समझाया और श्रीमानों को भी समझाया । हमारा अपना विश्वास हो गया कि जैसे कम्युनिस्ट भी अपने मन में समझे होंगे कि यह हमारा भला ही चाहता है वैंसे श्रीमान भी समझे होंगे कि यह हमारा भला ही चाहता है और मुझे इसका पूरा मरोना है कि अगर इस तरह हम सबके मिन यनने के ही ख्याल से काम करेंगे तभी । यह मसला हल होनेवाला है ।

जमीन तो एक प्रनीक-मात्र है कुछ लोगों का इससे उल्टा ख़बाल है। वे कहते है कि द्वेप-भाव में जोर होता है। कोई लड़ाई करनी है, कोई बड़ा भारी आन्दोलन चलाना है तो कोई 'दार' (युद्ध) होना चाहिए। फिर उसको 'क्लाम बार' (वर्ग-युद्ध)कहो या जातीयता कहो; लेकिन जहां कहीं लगणा नाता है, वहीं जोर पैदा होता है, इमलिए हेण-भाव पैदा करने की कोशिय की जाती है, इस आजा से कि ज्ससे संघटन होता है और आन्दोलन में जोर आता है, लेकिन चाहे उसमें जोर आना भी हो, तथापि वह काम का नहीं है, वह नुकसानदंह है। इसलिए प्रेम वैदा करके हीं जो काम हो सकता है, वह करना चाहिए, यह ध्यान में छेकर हमने काम किया। हमने छोगों को यह भी समझाया कि अगर किसी मनुष्य ने दान दिया है तो जसने अच्छा किया है; लेकिन जिनने महीं. दिया है तो यों नहीं समझना चाहिए कि वह मनुष्य घृणा के लायक है। उसकी घृणा नहीं होनी चाहिए। एक दफा जब यह सवाल मुझसे पूछा गया तो मैने उसको दृष्टान्त दिया कि हमारे आश्रम में प्रार्थना की घंटी वजती हैं। पहली घंटी वजती है तब कुछ लोग नहीं उटते हैं तो हम उनको घृणा नहीं करते । हम यह समझते हैं कि अभी यह गहरी नींद में हैं, दूसरी घंटी वजेगी तब उठ जायेंगे। तो वैसे ही जिन लोगों ने

बाज कुछ नहीं दिया है; लेकिन हम अगर प्रेम से मांगते जायं और नमजाने जायें तो दूसरी मतंबा वे समझ जायंगे। तो आज वे नहीं नमजे इसका मनलब इनना ही है कि वे कम समजने वाले हैं। इसलिए वे आज नहीं समझे हैं, यों मानकर उनके विषय में घृणा या हैप या हीन-भाव नहीं होना चाहिए। अगर ऐसा हीन-भाव मन में हो गया तो जिन्होंने दिया, उनके मन में शायद घमंड का भाव वा नकता है। तब हमारा सारा विचार विगड़ जाना है। यह बार-बार मैने नमझाने की कोशिश की है कि यहां जमीन केवल एक नियानी के तीर पर है। जमीन नो अपनी जगह ने उठनी नहीं है। हर हालत में वहीं काम देती है और जबकि गरीबों को इसकी भूख है तो आज नहीं कल, इस तरीके से नहीं, दूसरे तरीके से, उनके हाय में जमीन आये वगैर हरगिज रहने वाली नहीं है। यह कभी नहीं हो सकता कि आम जनता को जमीन से महरूम राया जाय और जनता इस चीज को सदा के लिये बरदाव्त करे। इस वास्ते ये जमीने किसी भी तरीके से उनके मालिकों के हाथ से लेकर गरीबों के हाथ में फारन पहुंचे, यह मेरी इच्छा नहीं है। वह ठीक और सच्चे तरीके ने ही उनके हाथ में पहुंचे, यह मेरी दृष्टि है और यह समझान की ही मैने कोशिय की है।

## इस यज में हरेक का हविभीग

मैंने इनको यज का नाम इसलिए दिया है कि यज में हिस्सा लेना हरेक का कतंब्य है। चन्द लोगों ने ज़मीनें ख्रीद कर के हमको दीं: उनको जब समझया गया कि हरेक को इसमें हिस्सा लेना है तो उन्होंने पूछा कि आप पैसा क्यों नहीं लेते? तो मैंने कहा—"पैसा लेना मेरा काम नहीं है और मैं पैसा नहीं लूंगा।" उसमें से चन्द लोग ऐसे निकले, जिन्होंने कहा, "ठीक है, हम ज़मीन ख्रीदकर दे देंगे।" उनका दान भी हमने लिख लिया है। कहने का मेरा मतलब यह है कि हमने यह समझाया कि सिर्फ श्रीमानों से लेना है यह बात नहीं है। यह तो यज बुक् हुआ है। जिनके पास ज्यादा जमीन नहीं थी, एक ही एकड़ ज़मीन थी, उनके पास से भी हमने एक गुंटा ज़मीन दान में ली. ऐसे भी दान इसमें हैं।

इसमें श्रीमानो भी जमीन है और परीबो की मी है और जिनके पाए जमीन नहीं थी, उन्होंने सरीवनर हमको दी है। तो यह जो सब हुआ है, उसे बनता में तो दिन से सब हुआ है, उसे बनता में तो दिन से हम के स्वाम होता दी हम हम के स्वाम के स्वा

'वावाना बेऊ बगडे ।' बूछ लोग बहुते हैं कि 'इबनामिक होर्ल्डिंग धर्गरह देखोगे या नही ?' मैने अपने मन में कहा, गजराती में कहावत है कि "बावाना बेऊ बगडे," यान बाबा एन-साय दो बातें करने गया तो उसकी दोनो बानें विगडी । इसलिए श्रीमानी का ममस्य छुडाना और गरीबों के पास सीथे जमीनें पहचाना एक बात है और कोई कोआपरेटिव काम करना इसरी बात है। ती कोआपरेटिव काम वर्षे था इवनामिन होल्डिंग बनाए, यह तो कोआपरेदान से ही हो सकता है, नही तो उसका उल्टा अर्थ होगा कि कथ जमीने किसी गरीय को दी ही म जाय, लेकिन गरीको को तो जमीन देनी ही है और फिर उनको एकत्र करके कोआपरेटिय काम करें, गुमा, नमका, अर्थ, होता है, । लेकिन ये दो प्रयोग हम एक साथ नहीं करना चाहते। अगर ऐसा कोआपरेशन बने तो अच्छी बात होगी। यह काम भी होना चाहिए, छेकिन वह अगर नहीं बनता है तो उसके पीछे अभी नहीं पडना चाहिए।

कोऑपरेटिव खेती कब ?

एक थीमान् हमको मिले। उनकी इच्छा हुई कि अधिक जमीन हमको दी जाय, लेकिन उसके साय वे एक शर्त रजना चाहते थे। उनका कहना था कि कोआपरेशन निया जाय, उसकी एक समिति बनाई जाय बौर उस समिति में वे खुद रहें। मैने उनको साफ वह दिया वि हमें पहला काम यह करना है कि ममत्व-बृद्धि में आपको मुक्त करना है। हमको गरीब पर तो दया आती ही है, लेनिन आपपर भी दया आ रही है कि आपको हम ममत्व से कैसे छुडामें ? इसलिए हम इतना ही चाहते है कि आप जितनी जमीन छोड़ सकते हैं उननी छोड दें । वे ज्यादा जमीन देना चाहते थे, लेकिन हमने पहा नि हम ज्यादा जमीन नहीं चाहते हैं, वर्तक विना शर्त बमीन चाहते हैं। फिर हमने उनसे कहा कि यह कोआप-रेशन का प्रयोग जरूर यशस्वी हो सकता है, ऐसा हमें विश्वास है---अगर वह युक्ति से और गणिन से किया जाय। और इसके बगैर हिंदुस्तान का उढ़ार नहीं होगा, यह भी हम मानते है, स्योकि छोटे लोग एकत्र होकर नाम नहीं करेंगे तो दुनिया में वे टिक नहीं सकते ! उसमें जमीन का नई सरह ना नुकसान होता है, पैदाबार भी घटती है। यह सब हम मानते है, लेकिन हम आपको पूछते है कि जिनको ऐसी जमीनें अभी तक मिली नहीं है, जिनको इस वरह का अभ्यास नहीं, जिनको गणित का सान नहीं , उनके उपर आप यह चीज कारेंगे और फिर नहेंगे कि जनको अवल नहीं है, इसलिए फिर एक नियामन सस्या भी आप मनरेर करेंगे और उसमें हमारा भी एक नाम रखेंथे ! सो मतलब उसका यह हवा कि गरीब मालिर तक भाषके माश्रित-जैसे ही रह जायेंगे । यह हम नहीं बाहते हैं । फिर हमने उनसे एक सवाल पूछा कि अगर कोआपरेटिव खेनी अच्छी चीज है तो जिनके पास तीस-चालीस-पदास एकड जमीन है, ऐसे लोग इनट्ठे होनर क्यो नहीं कोआपरेटिव खेटी करते ? जिनको नये सिरे से दान देते है, उन बेचारी पर यह पूष्य-कार्य क्यो लादते हो ? -

इसलिए ये दो प्रयोग एक साथ नहीं करने हैं। हमने तो यह सोना है कि साधारण पान मनुष्यों का एक पुटुक्त रहा तो उसके पांच एकड शुक्कों की जमीन हम वेंचे और अगर तरी की जमीन देगे हैं तो एक एकड देकर समामान माजेंगे। इतने से उनका जो पेट-मुकार चलेशा और कुछ प्रयक्ष काम करने वा मौका उनको गिलेगा, उतने से हम संतुष्ट हो जाते हैं। इसके बाद इक नामिक होल्डिंग की दृष्टि से उनको एकत्र करना है तो वह बागं की बात है। उसको इसके साथ जोड़ना नहीं चाहिए। 'मैं गहि न ग्रीबी!'

ग्रह कोई व्यक्तिगत दान हमने नहीं लिया है। यह बात ठीक है कि हमारे नाम से लोगों को दान देने में प्रेरणा हुई होगी। तो उस नाम का उपयोग उनको करना है तो वे करें। मुझे उसकी परवाह नहीं है, पवोंकि मेरी दृष्टि से वह नाम शून्य है। यह सारा काम ग्रीबों के लिये है। उनका नाम आजतक हमने खाया है कीर उनको अभी तक हमने कुछ भी दिया नहीं है। यह सारा सोचकर अत्यन्त अनुतापयुक्त चित्त से यह काम हम कर रहे हैं। श्रीमानों का तो उपकार क्या कहना; लेकिन हमारा भी कुछ उपकार गरीवों पर हो रहा है ऐसी कोई भावना जमीन देते समय हमारे मन में नहीं है। जलहे, हमारे मन में यह सदमा है कि अभी तक हम पूरे ग्रीब नहीं हुए हैं। तुलसीदासजी ने एक जगह भगवान् की स्तुति करते हुए अत्यन्त दृःखी मन से कहा कि "नाय गरीवनिवाज हैं"-हे भगवान ! आप तो गरीवों के पालक हैं। "मैं गहि न गरीवी"-लेकिन मैं अभी तक ग्रीव नहीं हो सका तो मेरा पालन कैसे होगा ? तां "नाय गरीवनिवाल हैं, " इसका वयं तुलसीदासजी ने विशेष रीति से लगाया है। अक्सर लोग कहा करते है कि परमेरवर गरीनों का पालक है, गरीव-निवाज है; छेकिन तुलसीदासजी ने अयं यह निकाला कि जो गरीब होते हैं, उनकी ही रक्षा भगवान् करता है और मैं तो अभी पूरा ग्रीव नहीं बना हूं। तो है प्रभु ! मेरी रक्षा कैसे होगी ? ठीक यही प्रार्थना में किया करता हूं और मुझे इस वात का सदमा है कि वावजूद अखंड कोशिया के, में अभी तक परिपूर्ण गरीव नहीं हो सका हूं। तो पर-मेस्वर मुझे क्षमा करेगा, इतना ही मेरे नन में भाव है। अर्यात्--यह जो काम में कर रहा हूं, उसमें गरीवों पर कोई भी जपकार नहीं हो रहा है, विलक्त हमको जो पश्चात्ताप हो रहा है, उसका यह एक प्रकाशन-मात्र है। इससे अधिक और कोई भाव नहीं है। अतः मेरा नाम लेकर लवतन चला वैसा आगे भी चला तो मुझको कोई हर्ज नहीं है। वह गरीनों का ही नाम है; लेकिन यह जो सारी जमीन इकट्ठी होगी, वह लाखों लोगों के देने से ही होगी। उसमें सद लोगों का हिस्सा होना चाहिए, इसलिए मैं चाहूंगा कि कांग्रेस वाले, सोघालिस्ट और दूसरे भी विचार वाले कोई हों जो यह समझते हों कि इस काम में नुकसान नहीं है, इसमें भाग लें।

सर्व-संग्राहक नाम

कुछ लोग कहते हैं कि यह जो आपका दान का तरीका है, उससे दुनिया का कुछ भला जरूर होगा; लेकिन इससे कोई नमस्या हल नहीं होती । राज्यतन्त्र वदले वर्गर कुछ नहीं होता है। कुरान में एक जगह लिखा है कि कुछ लोग यहां तक शंकाशील होते हैं कि मरने के बाद भी कोई स्वर्ग होगा या नरक होगा, नहीं कह सकते । ऐसे लोग पुण्य किया करते हैं तो उनके पुण्य के कारण अगर उनको स्वगं में दकेल दिया जायगा तो भी शंका करेंगे कि क्या सचमुच यह स्वगं है और उसमें हम दाखिल हो चुके है ? यहां तक लोग अश्रद्धा रखेंगे, ऐसी एक जिस्त कुरान में मैने देखी । तो ऐसे शंकाशील लोगों से मैं इतना ही पूछता हूं कि भाई, इससे कोई बुरी बात तो नहीं होने वाली है ? तो कहते हैं कि हां, युरी वात तो नहीं होने वाछी है, थोड़ा-डा भला होगा; लेकिन इतने भर से क्या होता है ? — 'मायुर्य मधु बिंदुना रचिंदाुन् क्षारांबुधेरीहते ।' एक वड़ा भारी समुद्र है—खारे पानी का । उसमें शहद की दो बूंदें टालने से अगर कोई कहे कि उस समुद्र में परिवर्तन हो गया तो क्या होनेवाला है ? संभव है कि चन्द मिनिट के लिये वहां कोई मक्खी बैठ सकती है। इससे ज्यादा कुछ नहीं हो सकता। तो ऐसे लोगों से मैं चर्चा में नहीं पड़ता। मैं कहूंगा कि आप कहते हैं वैसा भी हो सकता है। अगर सब लोगों ने इसमें योग नहीं दिया, सबको वैसी प्रेरणा नहीं मिली तो इतना ही होगा कि दस-पांच हजार एकड़ जमीन गरीवों को मिल गई, इससे ज्यादा कुछ नहीं हुआ और यद्यपि यह पुग्य-कार्य है तो भी हिसाव लेने लायक यह नहीं है, ऐसा ही सावित होगा; लेकिन सवको अगर जंचा कि भाई, यह काम ऐसा है कि वृंद-वृंद वारिश का पानी गिरता है फिर मी वह हर जगह मिरता है इस
िन्ये जैसे सारे मदी-माले मर नर बहुते हैं, वेसे हर काई
कार इसमें हाय कामये तो वैसा हो नाम हो सबता है।
केरिकन यह नम हामा र जब परमेश्वर प्रेरणा रेगा तब।
आपके दिल में जब यह बात आयामी नि हम जो नाम
अभी नर रहे हैं वह सारा एक ओर रखो। हमागा
राय-र-तम नकाने ना काम नोई सम महल नहीं रखता
केरिन वह भी एक ओर रखो और दूबरी और यह वाल
केरिन वह भी एक ओर रखो और दूबरी और यह वाल
केरिन वह भी एक और रखो और हमरी बोर यह वाल
करिन वह भी एक और रखो और इसरी और यह वाल
करिन कह भी एक और रखो और इसरी और यह वाल
किर्म हम भी एक और रखो और इसरी बोर यह वाल
केरिन कह भी एक और रखो और इसरी बोर यह
वैदा होती है। तो तराजू में तोलकर के देखने से अग
आप सबनो यह मालम हो कि यह अमकी काम है
बीर आप सब इसमें हाय बटायें तो आप समस कीजिय
निरंता है। ये वो मारी चीज पैदा होगी। । पेसा हमारा
विद्वास है।

वर्ग-भेद काल्पनिक

हमारा पूरा बिश्वास है कि आप यह बान जिल में से निकाल देंगे कि श्रीमान नाम का कोई वर्ग है और गरीब नाम का इसरा वर्ग है। यह काल्पनिक कथाए सव छोड़ दो । इतना ही समझो वि सारे मनप्य है । हरेक में कोई बुराई भी होती है और कोई भलाई भी होती है। तो भलाई का जो भग है, उसको सीच छेना हमारा काम है। जैसे लोहचदक मिट्टी में पडे लोहे के बोडे कण भी सीच लेता है वैसी शक्ति हममें होनी चाहिए कि हरेक मनव्य में जो भी भलाई होगी, उतनी ही हम खीच लें भीर जो बुराई होगी, उसको न खीचें, बाहर न छायें। बराई उसके अन्दर ही छिपी रहेगी तो आग चल कर बह सरम हो जायगी। लेकिन जो गुणास है, वही आय शायेंगे, उसी का प्रयोग होने देंगे, उसी को भौका देंग---यह अगर हम करें एसी शक्ति हममें आये तो आप देखग कि काम तभी होगा, नहीं तो मन में अगर कुछ ऐसा रहा वि श्रीमानी से हमको सब धीन कैना है सो समझ सीजिये कि उन शीमानी के मन में भी ऐसी प्रतिकिया होगी कि लोगो को हम जमीनें क्यों दें ? हमारा भी कोई हक है या नही ? ऐसी बात उनके मन में जा जाती है। कानून और वातावरण का निर्माण

एक भाई ने हमसे कहा कि यह काम कानून के

बगैर नैसे पूरा होगा ? मैने नहा कि मेरे इस काम की पूर्ति ने लिये नयान्यमा चाहिए, यह मझे नयो सोचना चाहिए, जबकि मझे दनिया में भगवान ने अने लाही पैदा नहीं किया । अगर ऐसा होता कि मेरी पूर्ति के लिये ब्रिया म और विसी चीन की जरूरत ही नहीं है सो परमेरवर केवल महो ही पैदा करता और कहता कि तुले पैदा किया है अब तू जो करेगा वह परिपूर्ण है. अब किसी इमदाद की तुझे जरूरत नहीं है। लेकिन जब मैं देखता ह कि मारत में पैतीस करोड लोग पडे है वो जाहिर है कि मैं जो करता ह, उसकी पूर्ति में बहत कुछ काम बरन का बाकी है श्तो में इन क्रानन करने वाला को कहा रोकता हु? लेकिन में कहता हु कि कानून भी जरा दग से करो, जिससे हसी नहीं होगी। में सनता ह कि अभी सोचा जा रहा है कि मनव्य ज्यादा-से-ज्यादा जो रक्बा रख सकेगा, उसकी मर्यादा होनी चाहिए, बाई सी एकड खुरकी और पचास एकड तरी-दोनो एक साथ। मैने कहा, यह भी छोड दो। करो यह कि या तो तरी पत्रास एकड होगी, या ढाई सौ एकड खरकी होयी ! इतना करो तो भी हसी से बच जाते हो, नहीं तो वह एक हसी की चीज हो जाती है। वह न करने-जैसी ही बात हो जायगी-उसका कोई मनलब नहीं है । मैं तो गणित की समानता को मानता हूं । हमारी अगुलिया जैसी विषम होती है, वैसा समाज विषय चलेगा, लेकिन अग्-लियों के बीच में सहकार होता है, वैसा सहकार हो ती बस है । यह दुप्टान्त जाये समझाते हुए मैन कहा कि यह तो आप नहीं दसने हैं कि एक अगुली दो फूट लम्बा है और एक अगुली दो इन लम्बी है। वे छोटी-बडी होती है, क्षेत्रित कुछ प्रमाण में बैसी होती हैं। क्षेत्रित यहा तौ इतना फरक है कि उसमें सहकार की गुजाइश ही नहीं है और यह जो कानून आप सोच रहें हैं, उससे यहा का मसला भी हल नही होता है।

फिर जहां कानून बाता है, नहा दह बाता है, कुछ व्यवस्था बाती है और सामने वाला कानून के जन्द रहकर वितना वच सनता है, जलन स्वन की कोतिया करता है। बाज भी मही हो रहा है। सरकार एक कानून कट्ठोल के बारे में करती है तो व्यासरी उसमें से भी लाम लेने की कोशिश करते हैं और फिर उस कानून को करीव-करीव निकम्मा-सा बना देते हैं। तो इस तरह व्यापारी जीर श्रीमान् एक बाजू और सरकार दूसरी बाजू, ऐसा होकर दोनों की अकल के बीच में टक्कर चली तो दोनों की अकल का जो योग होना चाहिए वह नहीं होता है, बल्कि उलटा नुकसान होता है। इसलिए केवल कानून बनाने से हम संतुष्ट नहीं होते हैं। वह तो बनना चाहिए, उससे गरीब लोगों को यह विश्वाम हो जाता है कि सरकार हमारे लिये सोच रही है। लेकिन कानून के बावजूद बातावरण बनाने का यह जो काम है, दान-यज्ञ हरेक करे—इस वृत्ति को फैलाने का काम हमको करना होना और उससे बहुत लाम होगा।

वाकी के सारे लाभ एक वाजू रखो, उनकी कोई कीमत नहीं है; लेकिन इससे जो अहिंसा की शक्ति वढ़ेगी, वह सबसे वड़ा लाभ है। बहुत दफा हम कहते हैं कि अहिंसा से क्या होगा, कैसे चलेगा ? जहां तक हो सके, अहिंसा से काम करें, यह तो ठीक है; लेकिन उससे काम नहीं हुआ तो क्या करेंगे ? मैं उनसे पूछता हूं कि आप ही बताइये कि फिर आप क्या करेंगे ? तो कहते हैं कि हिंसा की आराधना करेंगे ! आजतक छाख बार लड़ाइयां लड़ चुके; लेकिन उससे कोई भी समस्या हल नहीं हुई। फिर भी हम अहिंसा को कारगर ही मानते हैं। पिछली वार हमने हिसा की, लेकिन हमको यश नहीं मिला तो हम सोचते हैं कि उसमें फलाना नुक्स रह गया था। अव दुवारा हम ऐसी हिंसा करेंगे कि जिसमें वह नुक्स नहीं रहेगा। यानी हिंसा से अगर अच्छा परिणाम नहीं आया तो हिंसा का कोई दोप नहीं है, विल्क उसके प्रयोग में हमने जो कुछ गलती की उसका दोप है। इतने श्रद्धापूर्वक हजारों सालों से हिंसा का प्रयोग चलता आया है। वार-वार नाकामयावी मिछते हुए भी उसके विषय में हमको शंका नहीं आती है। मैं कहता हूं कि जिस विषय में आपने हजारों सालों से इतनी निश्चल श्रद्धा रखी, वह छोड़कर जरा उसके विषय में शंका तो लाइये अपने मन में ? और सोचिये कि आखिर दोप कहां हो रहा है ? लेकिन हिंसा में इतना विश्वास है ! जहां किसी लड़के को गणित समझाते हैं और वह वेचारा नहीं समझता है तो हमारा भरोसा तमाचे पर रहता है। हम मानते हैं कि तमाचा लगेगा तो लड़का समञ जायगा। इतना क्या बद्भुत जादू है उस हिंसा में, जो हम मानते हैं कि हमारी हरेक समस्या हर हालत में वह हल ही करेगी ? अत्यन्त मूड़ विस्वास का अगर कोई नमूना है तो यह है। तो इतना जो विश्वास रखा है, उसको जरा ढीला करो और सोचो कि हिंसा को इतनी ट्रायल देने के वाद भी अगर कोई परिणाम नहीं निकलता है तो हिंसा के मार्ग में ही कुछ दोप है और जैसे आपने हिंसा को ट्रायल दी, वैसे अब अहिंसा को देकर अगर परिणाम नहीं आता है तो और सोचो । हमारी अहिंसा में कुछ कमजोरी रह गई होगी या कुछ नुक्स रह गया होगा, इस तरह विचार करके चन्द रोज अहिंसा के विकास के लिये दे दो । उससे दुनिया का कुछ भी विगड़ने वाला नहीं है। दुनिया ने हजारों साल हिंसा के प्रयोग में खोये तो अब अहिंसा के प्रयोग में सी-पचास साल उसने और खोये, इतना ही होगा-अगर कुछ खोया ही है तो। लेकिन इस तरह का प्रयोग करने का सोचें तो कुछ नतीजा उसमें से आयेगा। दुनिया को ऐसी चीज की अत्यन्त आवश्यकता है। अहिंसा को भी ट्रायल दो

इसलिए में आपको कहता हूं कि यह जो छोटा-सा काम हम कर रहे हैं, उसकी तरफ सारी दुनिया की आंखें हैं, क्योंकि दुनिया में आज जो चल रहा है, उससे यह उलटा काम है। और अगर यह अयशस्त्री हुआ तो कुछ और विगड़ने वाला है ऐसा तो है नहीं, लेकिन अगर यशस्त्री हुआ तो दुनिया आज जिस चीज के लिये प्यासी है, वह चीज उसको मिल गई, ऐसा होगा। इसलिए यह बहुत ही महत्व की बात है। इससे एक बड़ी शक्ति की उपासना हो सकती है, एक नई दृष्टि लोगों को मिल सकती है और दुनिया को राहत मिल सकती है। इसलिए इस चीज को ट्रायल देना है, ऐसा समझकर कानून की बात अभी अपने पास रहने दो और सारे लोग यह काम करने के लिये आ जायं, ऐसी आप लोगों से मेरी मांग है।

### भृदान-यज्ञ को देशच्यापी वनाने के लिये सुभाव

ब्याचर्य विनोबाजी द्वारा प्रेरित और प्रचारित मूदान-का में फिन-निष्ठ स्वर ने छोगी से धी विनावा-की को थो मुख्योग मिल रहा है वह बहुत ही उत्ताह-दायक है और साबित करता है—यदि साबित करण की अक्टत हो सी—कि छोगों का हृदय मुद्ध है और छाण हम यज ने जैसी नैतिह जरीछ को अपनान की धमता रहते हैं।

आग्दोलन स्वमावत नीतिव होने के नारण उपके मणता ने महान व्यक्तित्व और वारित्यन से उसे वक मिल्या रहा है और सफलता विकास से उसे वक मिल्या रहा है और सफलता विकास से किया मिल्या से उसे महाना चाहिए कि जमीन की मालिनी का समान-कर से बरवारा मागने बालों जो स्नोटक आधिक हालत लाग देश में है, वह भी आदोग्त की सम्या का एक नारण है। इस आदोग्त का स्वरूप हनना व्यापक है कि उसकी पिपूर्णना के लिये किया प्रमुख्य मीते पर का मालिक मीते पर का मालिक होगी। भी पिप्तां के स्वरूप हमाने के मदद करने होगी। भी पिप्तां के अहिता पर परिवर्णन में अप का मीते पर उचित स्थान है कि समाज के आहिता परिवर्णन महा है कि वानून के अप का सिने अनुकुल बातावरण पैदा करना, यह भी इस आहितन पर पर देश है।

विनी भी दृष्टि से देखिए, मुझे यक्षीन है कि
एक्तास्त्रक कार्यकर्ता मानेंगे कि यह आदोलन उनकी
निष्ठा और उनगर चरने की उनकी तात्रत की एक
प्रकार से चुनीती है। उनका यह फाउं है कि वे हस
सदीरन को सफल कर और उत्तवी सर्वोदयक्त्यना
के अनुसार सामानिक और आधिक की ता कार्यक्र वनायें। इसिल्ए उनको यह काम पूरी तथना से वक्ष केना चाहिए जिससे कि यह आदोलन यवासमब सीम्रता से राष्ट्रव्यापी वने। कम सेन्न आरम्भिक्त जब्दामां में प्रणेता है। इस आदोलन का केन्द्र रहेगा, असमें कोई शक नहीं, पर आदोलन फैलने के लिये अनुकूछ हाल्य पँदा करने में हम सबको मदद करनी शाहिए।

इस सम्बन्ध में भेरा मुझाव है कि नीचे लिखी धार्ते अनल में लाई जाय । स्थानीय हालत की देखकर कुछ तक्दीलिया इसमें की जा सकती है।

- १ भूदान-यज्ञ का प्रारम्भ, आवश्यक्ता और मुद्दो के वारे में हिन्दुस्तान की भिन्न सिन्न भाषाओं में अधिकृत पत्रक का तुरन्त प्रकाशन 1 यह पत्रक छोटा-सा, करीव आठ पनी का हो।
- २ चुने बुए रचनात्मक कार्यकर्ताओं हे द्वारा विचित्र भाषा नाषी क्षेत्री में इन पत्रको का परिणाम-कारक दिनरण।
- ३ सारे देव-भर में समाचार-नत्रों के सपादकों से एचनात्मक नार्यन तो गहरा सफ्के जोडें और इस पत्रक की ही नहीं, बक्कि इस आदोलन से सब्धिन जानकारी को भी समय-उपय पर अधिक-स-अधिन मात्रा में प्रमाशित नरने ना आग्रह नरें। सपादकों को विनोवाजी और हुसरे नेदाओं के तद्विपयक लेल और प्रादेशिक भाषाओं में अनुदित सभावण निरने की व्यवस्था नार्यकर्ता नरें। यहा यह नह देना ठीक होगा कि 'हुरिजन' सेर' 'सर्वाद्य मासिक में विनोवाजी के भाषण वर्षों की अधिद्वत पिपोटे आती है।
- ४ भदान-बन्न के बारे में छहय देन्द्रित करने के निव्यं होन्य भाषा भाषी क्षेत्र वा भदेश के रचना मक नार्यकर्ता छगाछे छ सत्ताह के भीतर, वार्यकर्ता अगार्यकर्ता अगार्यकर्ता अगार्यकर्ता आगार्यकर्ता अगार्यकर्ता अगार्यकर्ता अगार्यकर्ता के स्वान्त्र के बारे में सम्बद्ध स्वार्यकर्त के बारे में सम्बद्ध स्वार्यकर्त के बीराना और तरह से सोत्यर कमार्द्ध जाय । स्थानीय धरिनित्य स्वार्यक्ष या बोर जाई छोत्र सम्बद्ध स्वार्यकर्ता अगार्यकर्ता स्वार्यकर्ता स्वार्यकर स्वाया स्वायकर स्वार्यकर स्वाया स्वायकर स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वार
  - ५ देहाती अचलो में मूदान-यज्ञ का सन्देश फैलाने

के लिये चुन हुए रचनात्मक कार्यकर्ताओं की सर्वोदय-दाशा संगठित की जाय तो अच्छा होगा ।

६. शुरु की इन प्रादेशिक दैठकों के बाद भूवान-गत का मन्देश अधिक-से-अधिक फैलाने के लिए स्यान-स्यान पर सभाएं की जायं।

७. शुरू की प्रादेशिक दैठकों में रचनात्मळ कार्यकर्माओं में से श्री काका साहद कालेलकर, श्री शीहण्यदान जाजू, श्री धीरेन्द्र मजूनवार, श्री धीशेजी, श्री जी. रामचन्द्रन वर्गरा में से किसी को भी सारे काम को उचित मार्ग-दर्गन देने के लिये बुलाना अच्छा होगा। पहले से उनसे तय करके बैठक के बाद उस क्षेत्र में उनका दौरा भी रखा जा सकता है।

को लोग जमीन देने को तैयार हों, उनकी मुची, पूरी तफतील के साय, बाकायदा अधिकृत व्यक्तियों के द्वारा दनाई जाय और ये सूचियां श्री दिनोबाजी को भेजी जाये। यह दिलकुल स्टब्ट कर दिया जाय कि

सुरेशराम भाई ©

साजकल योजनाओं का जमाना है। जिसको देखिये उसीके पास देश के मुझार और उन्नित की योजना मौजूद है। थोड़े दिन से बड़ी चर्चा चल रही है एक पंचदर्षीय योजना की, जो भारतीय सरकार के प्लानिंग कमीशन ने बनाई है। लेकिन इतनी योजनाएं बनने पर भी देश की हालत में उरद के उनर सफेदी-चराबर भी अन्तर नहीं पड़ रहा है। यह कोई अचरज की बात भी नहीं है। इन सब योजनाओं में एक बड़ा दोप यह है कि जो लोग योजना बनाते हैं उनको खुद कोई अमली कदम नहीं उजना पड़ता। हर कोई चाहता है कि उसकी योजना पर दूसरे लोग अमल करें और उसे दूसरे कामों के लिये फुरसत रहे। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरें' वाली बात हो रही है। लेकिन हमें हमें है कि हाल ही में एक ऐसी योजना निकली है जो अन्य योजनाओं से अलग जाति और

श्री विनोबाजी के हारा अधिकृत व्यक्ति के सिवा और कोई भी व्यक्ति दान स्वीकार नहीं करेगा। यह मानकर चलना चाहिए कि यथासंभव खुट विनोबाजी ही उस क्षेत्र में भ्रमण करते समय भू-दान स्वीकार करेंगे।

९. किये हुये काम का विवरण हर पत्तवाड़े 'सर्व सेवासंघ' के बक्तर को भजा जाय। विवरण की दो प्रतियां भेजी जायं, जिनमें से एक प्रति इस आफिस के द्वारा श्री विनोबाजी को भेज दी जाय।...

इसमें कोई सन्देह नहीं रहा है कि देश की ज़मीन की समस्या को शान्ति से हल करने का एक क्रांतिकारी रास्ता श्री विनोशाजी ने सबके सामने रक्खा है। इस बात को मबने मान लिया है और समी श्रेणियों के बिद्यान, देश-सेवक और नेता इस विषय की चर्चा कर रहे हैं। चुनाव खत्म होने के बाद जब केन्द्र में और प्रदेशों में केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारें कायम होंगी तब यह विषय ज्यादा जोरों से लोगों के सामने आवेगा।

## विनोवाजी की पंचवर्षीय योजना

पाये की है। इस योजना के निर्माता आचार्य विनोबा भावे हैं।

यह योजना क्या है ? इसकी न कोई भूमिका है, न विस्तार के साथ इसका कोई लेखा है। योजना संक्षेप में यह है—पाँच वरस में हिन्दुस्तान के छोटे-मंत्रले-बड़े जमींदारों से पाँच करोड़ एकड़ जमीन जमा करके वेजमीन वाले खेतिहर मजदूरों में बांट देना। वस इतनी-सी है विनोवाजी की यह पंचवर्षीय योजना। इसको पूरा करने का उनका तरीका वया है ? वह झोली फैलाकर निकल पड़े हैं, निखारी वनकर नहीं, विलक यह कहते हुए—

"वावा, जापके चार वेटे हैं तो पांचवां मुझे समितये और मेरा हिस्सा मेरे हवाले की जिये।"

हभारे देश में खेती के योग्य कुल जमीन छत्तीस करोड़ एकड़ के करीब है। इसमें से विनोवाजी

#### विनोवाजी की पचवर्षीय योजना सुरेशराम भाई

गाउनें हिम्में से भी कम, सिर्फ पाच नरोड एमड गाउने हैं। तरह-तरह से मामने वाले हमारे देश में एए हें—विसी को पैसा चाहिए, किशो के लगाव वा विसी को चपडा। लेकिन विनोबानी तो एचदम मये सम्प्रदाय के सालून पड़ते हैं। न साला लेते हैं, म नपड़ा, न पैसा। उन्ह तो जमीन चाहिए जमीन, विसपर बीज बोने से फरहन पेदा होतों हैं। और पिर, बेद गहु बान अपने लिए नहीं मामते। इपर मामते हैं उपर इसरो वो दे देते हैं।

सवाल उटता है कि शांकिर उन्हें यह बात क्यां सूती? इसिछए कि देश की हालन दिनो-दिन गिन्धी पा रही है। छालनपुर (सामी) में उन्होंने स्वय कहा पा-

'आन हमारे देरा वा सबसे बड़ा सवाल उन कालो-सरोडो वा है जिनको दो जून लागा की नतीब नहीं होता। यह जवाल है उपडे हुए इन्छानी समाज का। इसके पैदा होने की जबहु है हमारे देहाती सगजन या कर्पनीति का बरखाल हो जाना, जिससा आयार प्रामोधीम और स्वाव-प्रश्नन पर था। हमारे गालों नी बढ़ती हुई दिख्ता एक जिन्ता वा विपव है और पार वरस के स्वराज्य ने वावनूद इसमें रती-सर फर्क नहीं पड़ स्वराड़ी प

ऐसी स्वरताक हास्त का सामना सकको मिछकर ही करना है। जब सब लोग कुछ स्थान करेंग या आकृति कहारोंने तभी कुछ उपाय वन सकता है। इस उपाय की विनोवाजी ने 'यस नाम दिया है

'पुराने जमाने में जन देश पर सकट काता चा तो हमारे पुराने कोग 'यत निषा करते थे। इस्तिक्य् में भी 'यत' करता चाहता हु, और मेंने 'मृतान-धारें का प्रयोग गुरू कर दिया है। ये लोगों से वर्षोने मागता फिरता हूं। इस में में हरएक को हिस्सा नेना चाहिए, क्योंकि यह सक्की सकाई बोर जनि के लिये हैं। जिल तरह से सम में हम यब आहुति पढाते हैं वसी तरह हमें अभीन का साम देना प्योहर में इसकिए विनोवानों सबसे क्योंक करते हैं कि

आजो, इस यज में भाग छो । वह बहते है

"में हाम जोडकर आपसे बिनती करता हूँ कि नेस सनस्य पूरा कीनिये। में ज्योन अपनी सातिर नहीं माग 'खा हूं, निनकी तरफ से में आया हूं बहु बोल नहीं सकते, न अपना मनकब आहिर कर सनते हैं। में चाहता हूं कि रामयाण की तरह मेरे सब्द आपके दिल पर असर करे।"

ध्यान रहे कि जमीन दान देना किसी पर महसान करना नहीं है। अमीन दान देना धर्म है, यरम पुनीत वर्ष्यंय है।

चिनोत्राची कर्तु है, "मं यह नहीं कहुगा कि
जमीदारों के पांछ थी जमीन है वह उन्होंने केजा
तयेको से हाशिक की है, रेकिन समय आगया है,
जब जमीदार कोच बेमगीन वालों के अधिकार को
महमूद करें और उनके सही दावे को हवीकार करें।
एक् साहिए कि वेनमीन बालों का वो हिस्सा है वह
सुदी-स्वारी दे हालें।"

यही नहीं, बिनोबाजी आगे बढकर कहते हैं • "चैंत हवा और पानी सब निसी के होते हैं, ऐसे ही बमीनें जी सबकी हैं। में यह नहीं मानदा कि जमीन क्षिकें चन्द आदिमयों की ही अम्पति हैं। परकारण में चक्का किस्ता बरावर दिसा है।"

इसलिए इत्साफ का तकावा है कि हिन्दुस्तान के वे लोग विनके पास छतील करोड एकड फमीन है, वे उसका एक चौबाई नहीं तो उसमें बाई बाने भर तो उन्हें दे दें, जिनका हक हैं।

बन हमें यह देखना है कि इन पाच करोड़ एकड़ में फिल्मे से हमारे देखकी बनान की हालन पर बया बस्त देखा। हर कोई वानता है कि हालन रहा की मिटटी बहुन उपजाड़ है, लेकिन उसकी फी एकड पैदाबार दूसरे देखों से मही कम है। जीवे हुम फी एकड पान की कारत के दुछ आकड़े देशे हैं—

-	देश	कारत		
\$	हिन्द्रस्तान	९ मन ५ सेर		
3	वमरीका	१८ मन २० सेर		
₹	जापान	२८ मन ३२ सेर		
×	विस	३७ मन २० सेर		

कहने की आवध्यकता नहीं कि कम पैदावार के जहां और बहुत से कारण हैं, वहां एक यह भी है कि हमारे यहां का खेतिहर ज़मीन का पूरी तरह मालिक नहीं है। वह मानों किराये पर काम करना है। इसलिए कमी जिस चीज की है वह है जोश या उत्साह। अब जब पांच करोड़ एकड़ पर उसके मालिक ही चद खेती करेंगे तो उसकी वे उसी तरह येवा करेंगे जैमे मां अपने बच्चे की करती है। इस तरह करके अगर वे फ़ी एकड़ छः मन भी ज्यादा पैदा कर सकें तो कुल मिलाकर तीस करोड़ एकड़ के हिसाव से अनाज अधिक मिल जायेगा, जो एक करोड़ टन से कहीं ज्यादा वैठेगा । अगर इतना न होने पाए तब भी कम-रो-कम तीस लाख टन ज्यादा तो पैदा हो ही जायगा और हमें विदेशों से एक छटांक भर के लिये भी हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। इस तरह अनात के मामले में हिन्दुस्तान स्वावलम्बी हो जायगा।

विनोवाजी की पंचवर्षीय योजना केवल यहीं नहीं रक जाती। उनकी उड़ान तो बहुत ऊची है:

"थोड़ी ज्मीन भूदान में यहां और थोड़ी वहां पाने से मेरा काम नहीं चलने वाला है। मेरा लक्ष्य तो सारे समाज की काया पलट देना है।"

साफ ज़िहर है कि जिस उलझन में देश फंस गया है, उसका इलाज हकूमत के पास कोई नहीं है। जरूरत है सिर से पैर तक चोला ववलने की। विनोबाजी अपनी इस पंचवर्षीय योजना के ज़िरये मानों ज्योति की तरह अंधेरे को चीरे टाल रहे हैं। सोये हुए मदमस्तों को—पूंजीपितयों, ज़मींदारों, श्रीमानों को, जो सत्ता व शक्ति के नशे में चूर हैं—वह जगाने आये हैं, ताकि समय रहते ही वे चेत जायं।

वापूजी ने तो सन् १९२९ में ही सावधान कर दिया था:

"हमारे पूंजीपितयों और श्रीमानों के सामने वस दो रास्ते हैं—या तो वे अपने पास की फाळतू चीजों को खुशी-खुशी छोड़ दें और जिनको वे मिलनी चाहिए उनके पास पहुंचें, या अगर पूंजीपित समय रहते नहीं जागता है तो अज्ञानी लेकिन जागी हुई और भूखी जनता एक ऐसा तूफान खड़ा कर देगी जिसका नामना कोई शिवतशाली सरकार भी नहीं कर सकेगी, चाहे उसके पास वितनी ही शिक्त क्यों नहीं गै

इस तूफान को अगर रोका जा सकता है तो प्रेम और अहिंमा के रास्ते मे। अगर किसी दूसरे तरीके मे—गनी हिंसा और मारकाट से—उसे रोकने की कोशिश की जायगी तो 'न रहे बांस और न बजे बांमुरी' वाली हालत पैटा होगी। विनोधाजी अपनी पंचवर्षीय योजना में प्रेम और अहिंसा के ज़रिये ही—गान्ति के साथ—संकट का मामना करना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि "हमारे समाजी दृष्टिकोण में एक क्रान्ति" पैदा हो जाय। यह क्रान्ति आदर्ग के अन्दर करनी है और बिना हो-हुल्लड़ के। विनोधाजी की यह योजना तीन तरह की क्रान्ति लायेगी—आयिक क्रान्ति, सामा-जिक क्रान्ति और आदर्श की क्रान्ति। इन तीन क्रान्तियों के बाद राजनैतिक क्रान्ति तो आप-से-आप हो जायगी।

विनोबाजी ने कहा है:

"जबतक ईश्यर भेरे दम-में-दम रखेगा, में दर-दर जाऊंगा और जुमीन की भीख माँगुगा!"

इस तरह अपनी योजना को पूरी करने का वीड़ा विनोबाजी ने उठाया है। अवतक उनको लगभग साठ हजार एकड़ ज़मीन मिल चुकी है; लेकिन पांच करोड़ में माठ हजार की विसात ही क्या है? पर यह यज की गुस्त्रात है और गुरू में हर पीचा छोटा ही होता है। इसलिए घवराने की कोई बात भी नहीं है। यह योजना सफल होगी और जरूर सफल होगी।

हम सबको चाहिए कि इस योजना में, यज्ञ में गरीक हों और अहिंसक कान्ति में उनका हाथ बटावें।

रिहमन यहि संसार में सबसों मिलिए घाय। ना जाने केहि रूप में नारायण मिल जाय।। 0

पूर्व वापूर्व द्वारा सचारिन रावनीतिक स्वातन्त्र्य युद्ध में भाग रेकर वहनो ते किन प्रवार मार्ग-प्रदर्शन किना या, उसी प्रकार आधिक और कामाजिक आजादी के विधे वो अनुष्ठान विशावाओं ने आरम्ब विधा है उसव भी के अपना काम कर रही हैं।

विनो राजी करते हैं कि जैसे जब नोई प्यासा हमारे मर जा जाता है तो उसकी पानी पिलाना हम अपने कर्तिय समय हे हैं वैसे हैं। जो किसान से-जमीन हैं उनकी जमीन सेन समय हे में वैसे हैं। जो किसान से-जमीन हैं उनकी अमीन हैं हम आवस्थल को को बहुत जन्छे। तरह समसवी हैं। हरवाजे पर जाय प्यासे को पानी और मुखे को अस है तो के परम भय मानती हैं। विनोजाओं प्रारा समाजित मूबान्य में मंत्र के परम भय मानती हैं। विनोजाओं प्रारा समाजित मूबान्य में मंत्र के परम पर हमन हीं। मानू स्वमान के दारें प्रदेश हैं। उत्ते उत्तर में अनेद पार हमन हीं। मानू स्वमान के दारें प्रदेश हैं। उत्तर के अमें पार हमन हीं। मानू स्वमान के दारें प्रदान से से अपने साथ से अपने से अपने साथ से स्वप्त मान से से अपने साथ से अपने से अपने साथ से स्वप्त से अपने साथ से साथ से अपने से अपने साथ से साथ से अपने से अपने साथ से साथ से अपने साथ से साथ से अपने से अपने साथ से साथ से अपने साथ से साथ से साथ से अपने साथ से साथ से अपने से अपने साथ से साथ

२—मीलोभीन खिले में गाव की एक बहन छ मील पैदल बलकर थी। विनोबाजी के पडाव पर आई खोर डेड एकड जमीन दान देकर मत में भाग लिया।

६ — विश्वमार्गा, वदायू िमले में है बराबाद के पूराने मुख्य दीवात की, पूर्वी में अपने पिन की रात में भी तिवाद में मिलने किया में मिलने मिलने में मिलने मिलने में मिलने में मिलने मिलने

ह—एटा जिला व नारान पर पर प्रस्ति रात के आठ बने नध्ये एकड अमीन दान देने के लिये आई। चूमि उसमें कुछ कानूनी सलाह की जरूरत थी इसलिये थोडा विलम्ब हुआ।

### मूमिदान-यज्ञ ऋौर महिलायें

५—नासमज (एटा) में ही एन और गरीव दुखिया वहन आई और उसने अपने हिस्से की वीस एकड भूमि दान में मेंट की।

६--मैनपुरी में सन् १८५७ के स्वातः व्य-मुद्ध के प्रसिद्ध देशसकत श्री तेजसिंहजी बौहान के यदास्वी उत्तराधिकारी ने सीम सौ एकड जमीन का दान निया।

७—-मैनपुरी जिले में करहल पड़ाव पर एक वहन ने बीस एकड जमीन दान में दी।

८—गानियाबार (बुरुन्दसहर) में एक वक्षील की क्यी प्रकान मुत्तर पर गई। उनने पति बीमार से । उनसे स्तात बीमार से । उनसे स्तात है कि व्यक्ति स्तात है कि व्यक्ति स्तात है कि व्यक्ति है कि विकास के स्तात है कि विकास के सह के कि विकास के सह के कि विकास के सह के कि विकास के सिंह के बहुत बोली कि हमारा गुजार को बनारत है है जिल्ला हि हमारा गुजार को बनारत है हो जालगा। इसारी इच्छा है कि यह जमीन बरिद्रनारायण के बाम में आवे।

९—वरेली में एक दारणार्थी बहुत अपने पति है साथ आई, उसके पास जमील नहीं थीं, पीस में 1 उमने पीसे लेने का आपह लिया, लेकिन मेंने महा कि विनोवार्या पीसे नहीं लेते । यह मुनकर बहु अपने पति में पदार्था करने चली गरी। योडी देर बाद आगर बोली, 'हम खरीयनर जमीन देंगे, हमें पेसो की जमीन खरीदस विनिद्धा में दें पास एक जमीन साले मित्र कारे थे, बहु करनी जमील शास दें पास एक जमीन साले मित्र कारे थे, बहु करनी जमील खरीदया देंगे । एक उस बहुन ने अपने पति दे जमील खरीदया देंगे । एक उस बहुन ने अपने पति दे हान-पत्र अपन्ता दिया ।

श्रासी, तथा विजनीर यादि जिलो में भी इसी प्रकार कई बहुनो ने मूमिदान-यज्ञ में साग लिया और उत्माह से दान दिया।

प्रवचन में भी बहुतें बहुत बड़ी सरया में आती है। एटा जिले के एक पड़ाव पर गाय में बहुनें चित्र के मीतर बैठी थी। विनोबाजी ने डसपर दुस प्रनट निया और बनाया कि यह सो विदेशी रिनाज हैं। हमारे देश में जहा जीवन-साहित्य: फरवरी १९५२

महिलाएं वनवास में साथ जाती थीं, युद्ध में भाग लेती थीं, सैकड़ों मील यात्रा कर तीर्यों के दर्शन करती थी, वहां परदे के लिये स्थान कहां है ? इसपर वह चिक उठा दी गई। बूढ़ी बहनों ने भी अनुभव किया कि यह रिवाज गलत है।

भरतसिंह उपाच्याय С

में उन सैंकड़ों व्यक्तियों में से हूं जिन्होंने पूज्य विनोवाजी की यात्राओं में मानतिक रूप से उनके पगों का अनुसरण किया है। एक पुरुप बहुत जनों के कल्याण के लिये, जिनके लिये जीवन भार है ऐसे सहस्रों के उद्घार के लिये, उत्पन्न हुआ है, ऐसा मुझे श्री दिनोवाजी को देखकर छगता है। जिन (भृमि) के लिये भाई-भाई आपस में लड़ते है, पिता और पुत्र भी जिसके लिये कलह करते हुए कचहरियों तक पहुंचते हैं, भारत-युद्ध से लेकर रुसी क्रांति तक की रक्तरंजित क्रांतियां जिस के गर्भ में निहित है, उनके विषय में वितृष्णा उत्पन्न कर संग्रही मनुष्य से उसे इतने वड़े पैमाने पर लेना और जिनके पास भूमि नहीं है उनमें वितरित करना, यह काम मानवीय इतिहास के लिये नया है। अकिंचन के साथ स्वयं अकिंचन हो जाना अरि इस प्रकार दृःखी मानवता के साथ तादातम्य स्थापित करना, यह काम तो इस देश के जानियों की परम्परा में अनेक बार किया गया है। इससे विराग की कल्याणकारी भावना वड़ी है और मनुष्यों के अन्तःकरण शुद्ध हुए हैं। अनित्यता-घ्यान के साथ भोग-वृत्ति घटी है और समाज में द्योपणकारी वृत्ति का तिरोमाव हुआ है। विनोवाजी स्वयं अकिचन हैं, परन्तु उनका प्रयोग एक दूसरी प्रक्रिया पर आवारित है। आवृनिक युग की सारी वौद्धिकता और ययार्यता को लिये हुए विनोवार्जा एक मध्ययुगीन सन्त हैं, इसीलिये उन्होंने भूमि (या सम्पत्ति) के विषय में विराग उत्पन्न करके ही नहीं छोड़ दिया है, बल्कि उस वैराग्य-भावना का उपयोग मनुष्य-मनुष्य के बीच की आयिक विषमता को हटाने के लिये किया है, दूसरे यद्दों में उन्होंने उसे अहिसंक समाज-रचना का आचार वनाना चाहा है। इस प्रयत्न में उन्हें कहां तक सफलता

ये उदाहरण बताते हैं कि भारत की नारी अपने क्रिय को भूछी नहीं हैं और यह भी कि यह ऐतिहासिक यात्रा भूमि-समस्या को सुळझा नहीं तो सरळ अवस्य कर देगी।

## भृदान-यज्ञ : एक श्रदाञ्जलि

मिलेगी, यह तो अभी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अहिंसक प्रक्रिया में (जैसा मुझे लगता है) क्रांतदर्शी ऋषि पर ही सब कुछ निर्भर नहीं करता, बल्कि ग्रहण करने वाले समाज पर भी बहुत कुछ आधारित रहता है। सामाजिक परिणाम विनोवाजी के स्वयन के अनुकूल हो, इसके लिये हमें सिक्य प्रयत्न करना होगा। परन्तु इतना तो हर हालत में निश्चित है कि हिंसक क्रांति में जहां ध्वंस के बाद निर्माण का कार्य शुरू होता है, विनोवाजी की प्रक्रिया में प्रतिक्रियात्मक ध्वंस का कहीं नाम-निधान नहीं है। वहां जीवन का केवल निर्माण हीं निर्माण है, चाहे वह जितना अल्प हो।

विनोवाजी के कार्य का मूल्यांकन करने का हमें अधिकार नहीं। जिस एक पुरुष ने केवल अपने तम से, केवल अपने प्रवर आच्यात्मिक तेज से, अनेकों का वैर शान्त किया है, अनेकों की द्वेपाग्नि बुझाई है और समाज में एक नई क्रांति का मूत्रपात किया है, वह निञ्चय ही विशेष भगवत्-अंश-सम्पन्न महापुरुष हैं। विनोवा के कार्य का महत्त्व जितना युग जनित परिस्थितियों के समाधान के रूप में है उससे अधिक शास्वत सत्य के रूप में वह लोक-कल्याण का साघक वनेगा । जव-जव मनुष्य छोटे-छोटे भूमि-खंडों के लिये वापस में लड़ेंगे, जब-जब उनकी हेपारिन मीतिक लाभों के लिये भड़केगी, तव-तव विनोवा के कार्य की याद दिलाई जाने पर वे कुछ क्षण के लिये अवस्य ठिठकेंगे। और कदाचित् घात-प्रतिघातमयी हिंसा से वे विरत होंगे। समाज का जो रूप विनोवा की व्यापक दृष्टि के सामने है उसमें चाहे भौतिक लाभों की उतनी सिद्धि न हो सके; परन्तु भारत की आच्यात्मिक विरासत जो उसकी अपनी विशेषता है, उसी प्रकार के समाज में ही निर्वन्य विकास प्राप्त कर सकती है, यह मुनिश्चित है।

भूमि के विभाजन के लिए देश भर में हलचल मची हुई है । जमीदारी-प्रथा का अत हो रहा है । समाज-बादी भूमि को भूमि हीन मजदूरी में बाटने का बादो-लन कर रहे हैं। अखिल भारतीय वाग्रेस भी भूमि के उचित विभाजन के लिए वायदा कर चुकी है, जिससे कि भूमि-हीन मजदूर उन वडे जमीदारों की आमदनी में हिस्सा ने सकें जिनके पास बहुत बनी भूमि है और जिससे उननो खुब आमदनी होती है। चाँति और अहिंसा की मूर्ति श्री विनोवा भावे देश भर में अभग करने भूमिदान-यज्ञ ने लिए भूमि एकत्रित कर रहे है। उन्होंने २१ नवश्वर १९५१ को सच्या समय राजपाट (दिल्ली) पर प्रार्थना के पश्चान भाषण में बतलाया कि उनका भूमि दान हेने का त्या प्रयोजन है और किस आधार पर वह उसे स्वीकार कर रहे है। उन्होंने कहा कि इस समय उनका उद्देश्य देश में एक धर्म-सगत और न्यायप्रद बाता दरण पैदा करके जनता का हृदय बदलना है, तावि भूनि की समस्याको जो हमारे सामने है हल दिया जा मके। कोई भी मनुष्य संसार की सब समस्याओं को हल नहीं कर सकता। वह आशा करते ये कि जिस भाति वह जनता के सामने कुछ विचार रख रहे हैं, वैसे ही अन्य कोग मी रय सकते है। भूमि के प्रश्त का आर्थिक पहल तो समाब अपने आप देख सकता है। उन्होने तो अपना काम जनता का हृदय बदलना चुन रखा है ताकि यह प्रस्न शातिपूर्ण ढग से हरु हो सके । अब समाज पर जिम्मेदारी आ गई है नि वह इस वात पर विचार करें और निर्णय करें नि भूमि का पुनर्विमाजन किस आधार पर होना चाहिए। यह समस्या वडी पेचीदी है और इस ओर सीघ्र ध्यान देना चाहिए। उन बातो का निर्णय करने के पहल, जिनके आधार पर भूमि विभाजन होना है यह प्रश्न उठता है कि भूमि-विभाजन क्यों किया जाय ? इसका उत्तर सरल हैं कि

### भूमि-विभाजन का त्र्याधार

भूमि-विमाजन आय के सावनों का यमोचित रूप से वितरण करने के लिए निया जाना चालिए। इस विषय में तीन वालों का स्वपाल एकना परेगा— स्मम यह कि सरोक कराने कराने

भूमि के दुर्गीदमानन का हमारी इपि-समस्याओं से बहुत धिनाय सबसे हैं। बाज पर और तो ऐसे इपक हैं, जिनने पास सहसों एकड भूमि है और इसरी खार ऐसे मजदूर है दिनना निर्वाह फान के मौकों पर मन्द्रियों है। जिनने पास आवस्यका से अधिक भूमि है उनको बपना अदिरिन्त भाग उन्हें दे दालना नाहिए, जो भूमि-हीन है या जिनने पास सहसी सम भूमि है नि विस्तर्भ जो को का रुप है हम उहिम सहसी हम उहिम हम उहिम सहसी हम उहिम हम उहिम सम भूमि है नि विस्तर्भ जो को का रुप हम उहिम सा उहिम हम उहिम हम उहिम सा उहिम हम उहिम सा उहिम हम उहिम हम उहिम हम उहिम सा उहिम हम उहिम ह

क्रयक-मरिवार के लिए पर्याप्त मूमि की मात्रा था एक ऐसी इकाई का निर्णय करने के विचार से हमें मालूम करना चाहिए वि हमारे पास कुछ कितनी मूमि है, उसके विभिन्न भागों की जलवायु कैसी है मिट्टी कैसी है जीर मिचाई की क्या सुविधाएं है तथा वे अन्य वाते जिनकी मदद से फसल तैयार होती हैं और पशु भारतवर्ष के अनेक भागों में पाले जाते हैं। हमें उन अन्य वातों का भी जान होना चाहिए, जिनका भारत के विभिन्न प्रदेशों में फसल और पशुओं के जीदन तथा उन्नि पर प्रभाव पड़ता हैं। हमें प्रत्येक विभाग में खेती करने की विधि और वहा के मनुष्यों को आवश्यकताओं का भी पूरा जान होना चाहिए। भूमि की इकाई की मात्रा के निर्धारण और हमारी पश्-नमस्या में परस्पर गहरा संवध है। यह संवध इतना महत्वपूर्ण हैं कि जबतक हम यह निर्णय नहीं कर ले कि हमें पशुओं की आवश्यकता है या नहीं, हम किसी परिणाम पर नहीं पहुंच सकते।

भारतवर्ष में आज भी पशु हमारे जीवन के एक अंग है । हमारे देश में अधिकतर लोग शाका-हारी है और वगैर दूब, वही, घी इत्यादि के गुजारा नहीं कर सकते। पशुओं के गोवर और मूत्र से भूमि उप-जाऊ वनती है और पशु ही यातायात, घरेलू कारखानों को चलाने और खेत तथा वगीचां को मीचने का कार्य करते है। दुनिया के किसी भी हिस्से में, चाहे वहां के रहने वाले गाकाहारी हो या मासाहारी, चाहे उनके कारलाने विजली ने चलते हों या पशुओं की सहायता से या किसी थीर गक्ति मे, चाहे उनकी खेती-बाड़ी का या यातायात का काम अटकनी हिस्सों में या बड़ी सड़कों पर पशुओं से होता हो या मगीनो से, विना पशुक्षों की सहायता के मनुष्य जीवन का पूरा-पूरा आनंद नहीं उठा सकता। आज दशा यह है कि भारत में उनकी नितांत आवश्यकता होने पर भी उनका पालन-पोपण का व्यय इतना वढ़ गया है कि कोई उनको भली प्रकार पालने और उनकी नसल-वृद्धि करने का साहस नहीं कर सकता। अच्छी द्वारु गायों की कमी के कारण राष्ट्रीय स्वास्थ्य की अवनित हो रही है। वैलों की असमर्यता के कारण खेतों की भूमि भली प्रकार नहीं जोती जा रही है और इस कमी को दूर करने के लिए खेती के कार्य में भी यन्त्रीकरण बारम्भ हो गया है।

वर्तमान परिस्थिति में भारत में एकदम मशीनों

द्वारा खेती नहीं हो नकती। अमरीका तक में, जहां कि दुनिया में मबसे अविक मशीनों से खेती होती हैं और जहां औमन दर्जे के खेत का क्षेत्रफल १९५ एकड़ हैं (जो मशीन द्वारा खेती करने के लिए उपयुक्त क्षेत्रफल हैं) वहां भी खेती के कार्य का पूरा यन्त्रीकरण नहीं हो सकता, अब भी वहा पशु एक बड़ी मंग्या में खेती का काम करते हैं। मन् १९४८ में वहाँ एक करोड़ घोड़े और खच्चर खेती के काम में मदद करते थे। उनकी पशु-समस्या हमारी पशु-समस्या ने कही अधिक सरल हैं; क्योंकि वे गाय की अनावश्यक नर-पनान को नहीं पालते और उन्हें मांम के लिए काट डालते हैं। इसके विपरीत भारत में गाय दूव देनी हैं और बैल खेती का काम करते हैं। यहां यदि हम दूध उत्तत्र करना चाहते हैं तो हमें दुधार पशुओं के नर बच्चों के लिए कोई-न-कोई कार्य निकालना ही पड़ेगा।

अगर हम मशीनों द्वारा खेती करने का निर्णय कर भी लें तो वह व्यावहारिक रूप से संभव नहीं । हम ऐसी स्यिति में नहीं है कि अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए ट्रैक्टर और उनमें चलनेवाले हल तथा येती करने की अन्य मशीनें तया उनके जमरी हिस्से बना सकें। ये नव चीजें प्राप्त करने के लिए हमें विदेशो पर निर्भर करना परेगा। भारतवर्ष में इनमें चालक शक्ति उत्पन्न करनेवाला तेल ( प्रमूल आयल ) उत्पन्न नहीं होता। उसके लिए भी हमें आयात पर निर्भर करना पड़ेगा। ऐनी दशा में यदि युद्ध छिड़ जाय या अन्य किसी कारण से यानायात बन्द हो जाय या और इसी प्रकार की कोई अन्य विपरीत स्थिति उत्पन्न हो जाय तो हम कही के भी न रहेगे। गांबीजी सदा मे पैदावार के काम को विकेन्द्रित रूप से चलाने के पक्ष में ये। हम भी यही चाहते है; परन्तु कृपि-कार्य में यन्त्रीकरण खेती की उत्पत्ति को कुछ हायों में ही केन्द्रित कर देगा, जो आज जनसारवारण के हाथ में हैं और विकेन्द्रित रूप में चलता है। इससे यह साफ प्रकट होता है कि सिवाय बैल के हम कोई भी यन्त्र चाहे वह कितना ही सुलभ और बीघ चलने वाला हो, खेती के काम में नही ला सकते, जब-तक कि हम बैलों को अन्य कही काम में लाने का

ज्याय न निकाल सें। इसके अलावा हमारे सामन और कोई चारा नहीं हैं। यैंकों ने बिना भारतवय में बनी की उपन न हम बदा सनते हैं और ने हैं। यायम स्व सनते हे और दिना गायक राष्ट्र वा स्वास्थ्य और बाय-शक्ति भी वायम नहीं रासी जा सबती।

हमको एक सन्व्यापरिवार, उसके एक जोडी वैल सया अन्य पशुओं के आधार पर ही, जो वह पालना है, भूमि की एक मात्रा या इकाई निश्चित करनी पडगा। भारत में सब जगह एक हल पर दो वैल काम करते हैं। यही बैल खती याडी में अन्य काम भी करते है। इससे स्पट है कि भूमि की एक इकाई की माता इननी हानी चाहिए जिसको एव जोडी बैल जीन मने और उसमे कम-स कम इतना अनाज और चारा पैदा किया जा सक जो उस भूमि पर खेती म लगे हुए कुटम्ब और उसन पशुआ के लिए पर्याप्त हो। निस्मदेह हरएक प्रान्त और जिले में वहां की घरता और बैला की ददा के अनुमार भूमि की नाई की मात्रा न अन्तर होगा। यह इनाई यदि निसी समय आवस्य हो तो सामृहिक या सहनारिता ने सिद्धान पर नाम नरने के लिए दोगनी तोतगुरी या जित्तरी गुना आवश्यक समझी जाय, बंदाई जा सरती है।

अब हमना यह देवना है कि आरत के जिन्न पिन्न मागों के बैलो की चाकिन व अनुसार एन नुदुम्ब के छिए मूमि की हमारे क्या निर्माल की जाम और नह आवनल की माने के सिन्म के मिल प्रकार ठीन बैटगी। अजनकल की म्मिज रे पर करांड ५० लाल एकड मूनि जोगी जानी है और हत्यग २६ वरोड ६० लाल फतल ब्याई जाती हैं। ४ करोड ५० लाल एकड मूनि जोगी जाती हैं। ४ करोड ५० लाल एकड मूनि सिनाई के मीगा है और इन नृती हुई मूनि के बीवाई माग माल मान पान के होनी है। ६ करांड एकड जीतने योग्य मूनि बनेर पुरे के सिनाई के सिनाई के सिनाई के सिनाई के सिनाई है। १ करांड एकड जीतने योग्य मूनि बनेर एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और इन्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और इन्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और इन्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और इन्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और इन्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और स्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और स्तांड एकड तन जीनि जीतने योग्य नहीं हैं और स्तांड एकड तन जीनि क्यांड नाम के सिनाइ से साले रचती जाती है। हमारे पसुनो की सानाइ र एकडी का सिनाइ से साले रचती जाती है। हमारे पसुनो की सानाइ र रोड ७० लास हैं, विवस अनुमानत ५

बरोड ६० लाख बैल, ४ बरोड ३० लाख गाय, ३ करोड ८० लाख गाय के बच्चे, २ वरोड भैस, ६० लाख भैसे और एक करोड ४७ लाख भैम के वस्ते हैं। उपरोक्त ५ करोड ६० लाख बैल सब-के-मब खेती के काम में नही आते, क्यांकि इनमें से कुछ काम लेने के योग्य नहीं है और कुछ वातायात के काम में, शहरो और वस्बों के छोटे छोटे हुई, तेल तथा अन्य ऐसे बार-सानो के कामो में लगे हुए है। कुल ५ करोड़ के लगमग खेती बाडी के काम में आ सकते है। समस्त भारतवर्षं की खती की भिम को शीन भागों में विभाजित क्या जा सकता है। पहला विभाग-जहां की भूमि अधिकाशत कड़ी है और जहा एक वर्ष में औसतन ६० इच से अधिक वर्षा होती है। इसरा-जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की, विशेषत दुमट जाति की भूमि है और लगभग आधी भूमि में सिवाई के साधन है और जहां सीसतन एक वर्ष में २५ इच से ६० इच तक वर्षा होती है और तीसरा जहां की भूमि दुमट और अधिक रेतीली हैं और जहा एक वर्ष में जीनतन २५ इस से कम वर्षा होनी है । पहले विभाग में लगभग ५ करोड एकड जुती हुई मुमि है, दूसरे में १२ करोड ५० लाख और तीसरे में ५ कराइ।

शास आर तायर म ५ कराइ।

यहले विभाग में बैल छोटे और कमजोर हाते हैं।
इस कारण उसमें जीसतन ६ एसड भूति एक जों.

बैल की मदद से सम्माली जा सरती है। इसरे विभाग

के बैल मन्दर से सम्माली जा सरती है। इसरे विभाग

के बैल मन्दर के स्वर्थ अधिन कलवान होते हैं इस

लए बहा एन जोशी बैल की मदद से औसतन १०

एकड भूति सम्माल सनते हैं। सीसरे विभाग के बैल

वापी बड़े और खून मजबूत होते हैं, इसलिए बहा एक

जोड़ी बैल की मदद से जीसतन १९३ एनड भूति सम्माल

सकते हैं। इस तरह पहले विभाग में ठल लाल, इसरे में

के आदश्यकता होगी। एक जोड़ी बैल जितरी भूति

को आदश्यकता होगी। एक जोड़ी बैल जितरी भूति

को जोत सकते हैं, प्राय जननी है। भूति एक कुट्म के

पास होगी। अस्वैक विभाग में जितने जोड़ी बैल

होगे, जतने ही प्रत्यक्ष क्य से सीती करन बाले पुट्म्ब

होगें। जतने ही प्रत्यक्ष क्य से सीती करन बाले पुट्म्ब

## जीवन-साहित्य : फरवरी १९५२

अब हमें यह विचार करना है कि एक कुटुम्ब को औसतन कितने अनाज और चारे की आवश्यकता होती है। प्रायः एक कुटुम्ब में औसतन ५ प्राणी होते हैं, जिनमें एक मर्द, उसकी स्त्री, दो बच्चे तथा एक कुटुम्ब पर साश्रित प्रीड़, जो पिता, माता या वहन में से कोई एक होता है। इन सबको ४ प्रीड़ के समान समझना चाहिए। प्रायः एक कुटुम्ब के पास बीसतन एक जोड़ी बैल खेती और यातायात के काम के लिए, एक गाय या भैस और उसका एक बच्चा तथा एक बैहड़ी या बैहड़ा (उसका वड़ा बच्चा) होता है। यह सब मिलाकर ५ होते हैं जिनको ४ प्रोढ़ पशु के बराबर समझना चाहिए। मनुष्य और पशु के लिए बनाज और चारे की आबश्यकता हरएक विभाग में बलग-अलग होगी और वह उनके कद, बजन तथा वे क्या और कैसा काम करते हैं इस-पर निर्भर करेगी। उनके कद, काम जो वह करते हैं और खाने की आदतों को दृष्टि में रखते हुए उनके लिए अनाज और चारे की मात्रा बैजनिक दृष्टि से निश्चित की गई है।

वह हिस्सा जहां वर्ष वह हिस्ता जहां वर्ष दह हिस्सा जहां में बोसतन ६० इंच में बौसतन २५ ने वर्ष में बीसतन से अधिक वर्षा ६० इंच तक वर्षा २५ इंचे से कम

तिम्नलिखित आंकड़े यह प्रकट करते हैं कि प्रति कुटुम्य के लिए जो भूमि निश्चित की है उसका किस प्रकार उपयोग होगा और वह मनुष्य तथा गाय-वैलों की अखिल भारतीय योजना में ठीक वैठेगी कि नहीं:

	होती है।	होती है और आयो भूमि में सिचाई के सायन हैं।	वर्षा होती है।
१. एक परिवार या इकाई की भूमि का क्षेत्रफल	६.२५ एकड	१० एकड़	१६.६६६ एकड
२. हर विभाग में जोती हुई भूमि	५ करोड़ एकड़	१२॥ करोड़ एकड़	५ करोड़ एकट़
<ol> <li>कुटुम्बों की संत्या जो खेती-बाड़ी के काम में प्रत्यक्ष रूप में लगे हुए हैं।</li> </ol>	८० लास	१ करोड़ २५ लाख	२० लाब
४. प्रत्यक्ष रूप में खेती के काम में लगे हुए कुटुम्बों के मनुष्यों की संक्या—प्रत्येक कुटुम्ब में ५ मनुष्यों के हिसाब से	४ करोड़	६ करोड़ २५ लाख	१॥ करड़
<ul> <li>प्रत्येक विभाग में भैस, गाय, वैलों की संस्या उनके वच्चों सहित, प्रति कुर्टुम्च में ५ पशु के हिसाब से (३) × (५)</li> </ul>	४ करोड़	६ करोड़ २५ लाख	१॥ करोड़
<ul><li>६. ओसतन कितनी फसलें एक वर्ष में एक भूमि में होतों हैं।</li></ul>	\$ <del>\&amp;</del>	१डे	3
<ul> <li>कितनी एकड़ फसल जो संभवतः प्रत्येक विभाग में उगाई जा सकती है—(२) × (६)</li> </ul>	६ करोड़ २५ लाब एकड़	१६ करोड़ ६६ <del>ड</del> े लाख एकड़	३ करोड़ ७५ लाख एक <i>इ</i>
८. कुल कितनी फसल तीनों विभागों में उगाई जा सकतो है।	•• •• ••	२६ करोड़ ६६ लाख	

### मूमि-विमाजन का बाधार : परमेश्वरी प्रसाद गुप्त

#### यनाज (फ्रहग्रेन्स)

प्रसाम (अध्यन्त)							
<ol> <li>एक कुटुम्प के लिए अनाव की बावश्यकता प्रति प्रीट्र वीसतन २१ औस प्रतिदिन के हिसाब से ।</li> </ol>	२० मन	२२॥ धन	२४ मन				
<ol> <li>प्रति एकड मुरथ-मुख्य अनाजो की औसन पैदाबार।</li> </ol>	८ मन	८॥ मन	६मन				
११. कितने एकड फसर एक परिवार के लिए चाहिए (९) $\div$ (१०)	२.२८५	3 EXA	8000				
१२. कितने एकड फसल को कि प्रत्यहारूप से सेती में लगे हुए परिकारी के कुछ सदहयो के छिए चाहिए (३) × (१३)	१,८२,८०,०००	३,३०,८७,५००	₹,₹٥,००,०००				
<ol> <li>इपरोक्त वीनो विभागो का जोड ।</li> </ol>		६,३३,६७,५००					
चारा (फॉडर)							
१४. एक प्रौड गाय-बैल के लिए वितना मुखा चारा ११ महीने में चाहिए (एक महीना चराई का छोडवर)	४५.३७५ मन	५३ ६२५ सन	६६ सन				
<ul> <li>१५. —उपरोक्त— ४ प्रौड़ शाय-वैलो के लिए</li> <li>(१४) × (४)</li> </ul>	१८१५ मन	२१४५ मन	२६४ मन				
<ol> <li>शारा जो म्सा दृश्यदि के रूप में एक कुट्टून्स के लिए उत्पादित जनाज से निकन्दता है (यह उपरोक्त में से कम किया जा सक्ता है)</li> </ol>	४० मन	४५ मन	४८ मन				
१७ एक हुटुम्ब के पशुको के बास्ने सुन्ने चारे की आवस्य स्ता (१५)-(१६)	१४१५ मन	१६९५ मन	२१६ मन				
१८. प्रति एवड चारे को जीसन पँदाबार (सूच चारे के रूप में )	४४ म्	६० मन	३५ मन				
१९ (१७) में दिया हुआ चारा पैदा करने के लिए कितने एकड चारे की फमल बोनो चाहिए (१७) ÷ (१८)	<b>३.२१</b> ६	२ ८२५	६ १७१				
२०. —उपरोश्न— ती तो विमागो के गाय-वैजो के लिए (१६) × (३)	२,५७,२८,०००	३,५३,१२,५० <i>०</i>	१,८५,१३,०००				
२१ उपरोक्त - तीना विभागो का चोड		७,९५,५३,५००	११७				

उपरोक्त आंकड़ों के अनुसार ११ करोड़ ७५ लाख मनुष्यों और इतने ही पशुओं के खाने के लिए पर्याप्त अनाज और चारे का प्रवन्य हो गया । भारतयर्ष में कुल जन-संस्या लगभग ३४ करोड़ ५० लाव और पश्-संस्था १७ करोड़ ७७ लाख समझी जाय तो हमे वाकी २२ करोड़ ७५ लाख मनुष्यों और ६ करोड़ २० लाख पशुओं का प्रवन्य करना शेप हैं। हमारे पास अभी तक ऊपर लिखे हुए कुट्मबों की दोई हुई फसलो में से १३३.७४५ एकड़ फसल शेव है। इसमें से अन्य ऐसी चीजें जैसे चीनी, तम्बाक्, रुई, ति उहन इत्यादि की उन मनुष्यों की आवश्यकता की पूरा करने के बाद जो प्रत्यक्ष रूप से सेती के काम में लगे हैं, जो वाकी वचेगी उसकी उन मनुष्यों और उनके पशुओं के काम में लाया जा सकेगा जा प्रत्यक्ष हप से खेती का कार्य नहीं करते और जो बड़े कस्वों आर शहरों में अन्य व्यापार, उद्योग-धंचे तया नौकरी का कार्य करते हैं। परन्तु वह वकाया फसलें इतनी नहीं होंगी कि जो इन सबकी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त हों। इसलिए जवतक हम खेती की प्रति एकड़ उपज न वढ़ा सकें तवतक हमारे सामने दूसरा चारा नहीं दिखाई देता, सिवाय इसके कि खेती योग्य उस भूमि को तोड़कर खेती की जान, जो इस समय बेकार पड़ी है।

इस सुझाव के अनुसार जितने मनुष्य खेती के कार्य में लगाये जा सकते हैं उससे अधिक के लिए खेती के कार्य में गुंजायश नहीं है। वने हुओं को तो घरेलू दस्तकारी, न्यापार, यातायात के कार्य, नौकरी या अन्य धन्धों में ही लगाना पड़ेगा। उपरोक्त इकाई किसी प्रकार खेती की उत्पत्ति में वायक नहीं होती, विल्क उत्पत्ति की वृद्धि में सहायक होती हैं; क्योंकि इसके अनुसार काम करने वाले किसान को काम करने का पूरा अवसर मिलता है तथा पूरा उत्साह होता है। उसको अपने परिवार और अपने उन पशुओं के खाने-पीने के लिए भरपूर सामग्री मिल जाती है जो मुख्य काम करनेवाले हैं। खेती के कार्य में अधिक मनुष्यों को रोजगार देने की झोंक

में यदि खेती की विभिन्न विभागों की जमीन की निश्चित काई को घटा दिया गया तो खती की उपज की कीमत बढ़ जायेगी और खेती का घन्धा लाभप्रद न रह सकेगा। इसलिए खती की इकाई को और घटाना उचित न होगा।

यदि वेरोजगार परिवारों को और कहीं भी यथोचित रोजगार में नहीं लगाया जा सकता तो उनकी कुछ हद तक ऐसी खेती के कार्य में लगाया जा सकता है जहां बैल या ट्रैक्टर की बजाय मनुष्य द्वारा ही जमीन को फावड़े से खोदकर फसल बोने के लिये तैयार किया जा सके। यह वहीं सम्भव हो सकता है जहां पर्याप्त मात्रा में पानी तथा खाद मिलता हो और जहां भूमि इतनी उपजाऊ तथा अन्य स्थिति इतनी अनुकूल हो कि खूब जोरों से खेती हो सके। ऐसी हालत में खेती की भूमि की इकाई एक परिवार के लिए २५ एकड़ रखी जा सकती है। यहां औसतन दो फसल प्रतिवर्ष तैयार की जा सकती हैं और इस प्रकार एक परिवार ५ एकड़ फसल तैयार कर सकेगा जिससे परिवार को पर्याप्त मात्रा में अनाज तथा उसकी गाय-भेंसों को काफी चारा प्राप्त हो जायगा । इसके अलावा परिवार की तम्बाकू, गुड़, तेल, सब्जी की तथा अन्य आवश्यकताएँ भी इससे पूरी हो जायेंगी।

इसमें सन्देह है कि एक कुटुम्ब, चाहे वह बैलशक्ति का उपयोग हो या मनुष्य-शक्ति का, खेती-वाड़ी
के काम की विना वाहरी मज़दूरों की सहायता के
सरलता से समय पर कर सकेगा। किसी हद तक उन्हें
बाहरी मज़दूरों की सहायता लेनी ही पड़ेगी, वयोंकि
भारतवर्ष में खेती का कार्य वारहों महीना यकसां नहीं
चलता। वर्ष के किसी भाग में बहुत अधिक कार्य
होता है बीर किसी में कुछ भी नहीं। भारतवर्ष में
ऋतुएं, वर्षा और तापक्रम बादि प्राकृतिक स्थितिया
दुनिया के अन्य प्रसिद्ध देशों से भिन्न हैं। वहाँ वर्षा
करीब-करीब हर ऋतु में होती है और अन्य प्राकृतिक
स्थितियां तथा कुछ कृषिम मुविवाएं ऐसी हैं कि बारहों
गहीना खेती का कार्य कुछ-न-कुछ बराबर चलता
ही रहता है।

इस समम मारतीय सरनाट बाँद मिश्र मिश्र समुतायों के नेता समी वर्तमान मृष्टिन्यक्तमा को समाप्त नरने तथा उसके स्थान पर एक नई न्यायमाठ क्यक्सा के निमाण ने पक्ष में हैं। इस्तिक्ष्य एक उपन परिवार के किए खेती को मृष्टि की इकाई निर्देशन परने के कार्य को स्थापन नहीं किया जा सकता। देश का सबसे कहा उद्योग कृषि और पहुष्टालन ही रहेगा। स्या वस्तुओं के उत्पादन-मार्थ की हम इस सीमा तम नहीं वहा सकते निक्त में बिटेसी नियाल पर निर्मर रहना और दूसरे देशों से अनुनित लाम जराना परे।

हम शानित-मुबंब रहना चाहते हूँ और दूसरे देशा को भी शानि पूर्वक और स्वतंत्र रहने देना चाहते हैं। खेती-बाधी के कार्य के लिए अधित-थे-अधिक भूमि-रहित मबदूरों को रोजगार केर्न भी दूष्टि से हमें स्वती को भूमि की हकाई तुरत निश्चित करनी होगी और हम जितना जस्बी इसका निश्चय करना स्वता ही अच्छा होया।

कावा कालेलकर

0

### लोकोत्तर विभृति का हृदय-दर्शन

चे जसे हम ठोस साहित्य कह सकते हैं। इसकी शक्ति / अद्मुत हैं।

कई युनराह युवक और युवतियों ने स्वीवार किया है कि गांधीजी का साहित्य पढ़ने से उर्हे सच्या सस्ता मिला। इतना ही नहीं, किन्तु बृहता के साथ पढ़ी सस्ते से जाने का वक भी मिला।

बाह में गाधी की खबस पूजराती में और अप्रेजी में लिखते थे। बाद में जब उनका कार्यक्षेत्र मास्तव्यापी हुआ, तब वे अपनी विशिष्य दीकी की दिखी में बोलने कमें और किखने भी क्या। उनकी बाणी से निक्की कुई और उनकी कनम से लिखी हुई हिल्यी का पाइ क्यर दिया जाय तो वह राष्ट्रमाया के निश् एक बिदी बोडी जठीत होगी। उनकी पीडी का स्थापन

करना कोकरोबा की दृष्टि में महत्व का है। साम्र करने अपनी विन्दर्शिके आख़िरी दहा महीनो में शाम्र की प्रार्थना वे बाद उन्होंने प्रवन्त किये उनमें उन्होंने अनेत राप्टूडिश के विषयों को केकर अपना हृदय जनता के सामने सोल दिया है।

मान्यीजी ने अपने अनुभव, अपने विचार या भीवन सिद्धान्त असल में निसी भी भाषा में निसे हा, उनका अनुबाद दुनिया की सब भाषाओं में होने वाला है, इसमें मुखे सिनक भी सवा नहीं है।

एसे भी दिन बार्वेंगे कि अब दुनिया के लोग गांधीजी

कावाकाकलक

महारमा गांधी साहित्योगायन नहीं थे। वै जीवन-वीर थे। या तो सेवानार्थ में, या टोकहित के लिए एनने में उन्होंने अपना सारा जीवन व्यनीत किया। उन्होंने गुजराती और अग्रेजी साहित्य नाची पदा या। सस्कृत साहित्य का जास्वाद अनुवादो हारा किया था। तुकसीदास और क्वीर आदि हिन्दी सत्तों की वाणी से वे परिचित थे। जहां आवस्वकता पत्री बहा पर उन्होंने तिमिल, उन्हें, मराठी और बरावा भाषा का अभ्यस्त किया। तो नी हम कह समले हैं कि माथीजी ने साहित्य से उत्यना गही पाया, विज्ञाना सीवा जीवन से पाया।

मतीजा यह हुआ कि उनके साहित्य में साहित्यक स्थान साहित्य में साहित्य के अपना मार्च प्रवाद मार्च है। स्थान की उपावना करते एक जरमूत करता दमार्च है। सार की उपावना करते प्रवाद में अपने से तीर उनके साहित्य में क्ष्युता, तेज और मार्च सीना पूर्णों का सुदर्श मिया मार्गावित ना तमाम साहित्य सीमा है, पारमाधिक हैं, ह्रद्य तक पश्चमतिक रहे। बचके के सी मन्त्र आत्मतिका पर लावड होनर चहींने यो हुछ भी साहित्य निर्माण किया, सराज्ञ-सारा बीवानिक साहित्य है। सनुष्ठ को कहिर साहित्य ही सनुष्ठ को सहित्य होने से सुद्ध साहित्य हो सनुष्ठ को सहित्य होने से सुद्ध सी साहित्य हो सनुष्ठ को सहित्य होने से सुद्ध सी साहित्य होने सी साहित्य होने सी साहित्य होने साहित्य होने सी साहित्य होने साहित्य होने सी साहित्य होने साहित्य हो

के विचारों की गंगोत्री तक पहुँचने के लिए गुजराती, हिन्दुस्तानी और संस्कृत सीखेंगे और जिस संस्कृति में गांधीजी का उदय हुआ उस संस्कृति को भी अच्छी तरह समझने की कोशिश करेंगे। गांधीजी के देश के श्रार उन्हीं के जमाने के हम लोगों का कर्त्तव्य कहीं श्रीयक है।

गांधीजी का समस्त साहित्य प्रामाणिक हप से हिन्दी में प्रकट होना चाहिए और वह भी ऐसी हिन्दी में कि जो हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और चौराष्ट्र से लेकर बंगाल, आसाम तक सब लोग आसानी से समझ सक्षें।

ऐसा एक प्रयत्न दिल्ली के 'सस्ता साहित्य मण्डल' की ओर से शुरू हुआ है और उसकी आठ सुन्दर जिल्दें हमारे सामने हैं। \* यह 'मण्डल' स्वर्गस्य जमना-छालजी की प्रेरणा से और अनेक हिन्दी-सेवकों के परिश्रम से अपना कार्य कर रहा है। महात्मा गांधी का आशीर्वाद इसे प्राप्त है। गांधी-साहित्य के प्रकाशन को इस 'मण्डल' ने अपना प्रधान कार्य बनाया है।

जो बाठ जिल्दें हमारे सामने हैं, उनमें सारा गांवी-साहित्य नहीं बाता। वाकी रहा साहित्य कम महत्व का नहीं है। किन्तु जितना मसाला हमारे सामने है, वह गांधीजी के जीवन का, उनके मीलिक विचारों का, उनके समस्त जीवन-कार्य का और अन्तिम विज्ञान का रहस्य समझने के लिए काफी है। इसमें ज़क्री विविधता भी है।

गांवीजी की आत्मकया, जिसे वे 'सत्य के प्रयोग' कहते हैं और उनका 'दक्षिण अफीका के सत्याग्रह का इतिहास' उनके तमाम साहित्य का श्रीगणेश हैं। ये दोनों ग्रन्थ विश्वसाहित्य में अपना स्थान छे चुके हैं। इनमें गांवीजी की जीवन-दृष्टि और उसका कम-विकास पाया जाता है।

याद रहे कि दक्षिण अफीका की अपनी वीरोचित साधना पूरी करने के वाद हिन्दुस्तान में आकर विविध प्रवृत्तियों के वीच गांधीजी ने केवल अपनी स्मृति के आधार पर ये दोनों ग्रन्थ लिखे हैं। इस वात की ओर हम इसलिए नहीं ध्यान दिला रहे हैं कि गांधीजी की अद्भुत स्मरण-शक्ति की लोग कदर करें, किन्तु इसलिए कि वर्यों के वाद, काल की चलनी से जो कुछ भी गिर गया, जसे छोड़कर सत्याग्रही, आत्मार्थी और सत्य के प्रयोगी व्यक्ति के मन में जो वातें महत्व की महसूस हुईं, वही जनमें दी गई हैं। जो वातें इन दो ग्रन्थों में नहीं आईं, वे सव-की-सव तुच्छ थीं; ऐसा कहने का आशय नहीं है। लेकिन जितनी वातें यहां आई हैं, वे गांधीजी के जीवन-प्रयोग को स्पष्ट करने के लिए काफी हैं।

जब मैने एक दफे गांधीजी से कहा कि "आपकी आत्मकथा में फलानी-फलानी बात नहीं आई हैं", तब उन्होंने कहा कि "मुझे उसका खयाल है। और कई चीजें तो मैंने जान बूझकर छोड़ दी हैं। उन्हें देने का कर्तव्य तुम्हारे जैसों का है।"

गांधीजी की आत्मकथा के जैसा पारदर्शक प्रत्य दुनिया में शायद ही दूसरा होगा । रूसो या सेंट आगस्टीन जैसे छेखकों ने अपने कनफेशन्स लिखे हैं, किन्तु उनमें सत्यिनिष्ठा के साथ साहित्य का रस इतना कुछ मिला दिया है कि उसे पड़ते आत्मीयता पैदा नहीं होती । गांधीजी ने कनफेशन्स का कहीं भी प्रयत्न नहीं किया है । उनकी सत्यिनिष्ठा की धारा शुरू से आखिर तक एकसी बहती है।

दक्षिण अफीका के इतिहास में वे बहुत-कुछ दे सकते थे। ब्रिटिश साम्राज्य में जिनकी तिनक भी प्रतिष्ठा नहीं थी और जिनको अफीका के न काले लोग चाहते थे, न गोरे, और जिनमें घमंभेद, भाषाभेद और प्रान्तभेद के कारण एकता भी नहीं थी, ऐसे लोगों की सदारत करके आठ-नौ साल तक असमान युद्ध चलाकर विजय पाना, यह एक रोमांचक कथा है। गांधीजी की किताब में उन्होंने मतलब की सब बातें दी हैं; किन्तु अपने जीवन की अद्भुतता विलकुल छिपा दी

<sup>\*</sup>प्रार्थना-प्रवचन (भाग १) ३), प्रार्थना-प्रवचन (भाग २) २॥), ३. गीता-माता ४), ४. पन्द्रह अगस्त के बाद २), ५. वर्मनीति २), ६. दक्षिण अफीका के सत्याग्रह का इतिहास ४॥), ७. मेरे समकालीन ५), ८. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा ५)।

#### रोकोत्तर विमृति वा हृदय-दर्शन : वाका कालैरकर

है। दुल की बात है कि उम सलाग्रह का इतिहास लिसने बाला उनके नाल का कोई बादमी नहीं निक्छा। सिर्फ बालक प्रमुदाम गांधी ने 'बीवननु परोड' जानक -गुजराती निताब में उस समय ना आत्रमी बातावरक विस्तार से दिया है। सब तो यह है कि जनरळ समस्द्रस को या बहा के निशी दूसरे अब्दे को अपनी दुष्टि से इस सायाग्रह का इतिहास लिखना चाहिए था।

जन दिनो तिस हिलाव का गापीओं के मन पर और जीवन पर लग्नापारण श्वरप पत्र कोर जिलका गापीओं न गुजराती में सिधन्त अनुवाद भी किया, वह 'ववॉवय कीरओर बीजों के साथ अलग-जलग जिल्लों में आगा है। रिक्तन का 'सर्वोदय' और सास्टर का 'मीतियमं में दीनों एकत्र आये हैं। इन दोनों के साथ प्रकाशकों ने 'मगक प्रमात' और 'आयमवासियों हैं, में गायों की के जेल से मेंत्रे हुए दो पत्र-महा दिखें हैं। बेल्गर हो यह होता कि 'नीतियमं' और 'सर्वोदय' के साथ परिंद का 'सर्वादय' के साथ परंद का अपने की किया सर्वादय हैं स्थान परंद सराजपार)। यह छोटी-सी विताब सेंट पैल के 'स्मकुल' पर लिखा हुआ सुबर बाध्य है, जिसे साथीशी बार-बार पड़ते थे।

गापीनी के जीवन पर निन प्रत्यो का स्वतं ज्यादा असर प्रदा, जनमें गीता का क्यान अनापारण है। ग्रोभीनी ने गीता को अपनी 'आष्यारियक माता' कहा है। इस देशे प्रत्य के तारे में गायीनी ने को कुछ ची कहा या जिसा है, उसका सबह इस साहित्य-अंगी में 'ब्याप्रतिक्तार' के द्याय दिया है। इस कह सन्ते हैं कि यह मग्रह करडा बना है।

इसके साथ और मी एन सम्रह देना नाहिए जिसने सन्दर ईमामसीह के 'गिरि प्रवचन' बादि नायीओं की प्रिय चीजें आ जाय !

विज्ञायत में और दक्षिण अध्येका में नापीनी को ईसाइमी के बीच रहना था और काम करता था। उन होगों का धर्म-मन्य वाइनिक हूँ और उसना मन्दर्भन हूं ईसामसीह का 'गिरि-अक्चन'। यहं-बर्फ-समभाव ना पानन बरने बाले माणीनी ने इस 'गिरि- प्रकल्प को अपनाया। द्यना हुं। नहीं, किन्तु बादिक में विद्या हुए कर पांछ के पत्रों में से उसना 'प्रमानन' में विद्या प्रमान में विद्या में विद्या प्रमान में विद्या में विद्या प्रमान में विद्या प्रमान में विद्या में विद्या में विद

श्रीमद्राजवन्त्र के 'राजवीव' का भी शायद इसी में अन्तर्भाव करना होगा।

हफ्के वाद बाती हैं तीन जिस्तें, जिनमें हो है—

यार्मना-यवनन की, जिनमें गांधीजी ने अपने आजिरी

वह महीनों में देव हित के अनेन विपयों पर और

लोगों से वचाल लेकर अपना ह्वरम व्यव्स हिता
है। इन दो बड़ी विन्यों में गांधीजों के ह्वर की

वेदना पाई मानी हैं और साय-दोष उनकी मानवता
और वरम-नेटि की खड़ा भी। इनमें यह भी पाया

वाता हैं कि स्वराज की प्रांति तक राष्ट्र उनके साम

पा। अब वे अपने की नई बानों में अकेले पाते हैं

बीर राष्ट्र वन नाव न हो, इसिंहए लोगों को जगाना

चाहते हैं।

'प्रार्थना-प्रवचन' समझने में नहीं मदद होती है उस लेख-समह से जो इस साहित्य-भेगी में 'पन्दह अगस्त के बाद' के नाम से आया हजा है।

प्रकाशक ने 'मगल प्रभात' और 'आयमवासियों हें' बे दो चीवें 'ममेनीति' के साथ दी है। दोगो एक-सी नही है। 'मगल-प्रभात' वाधमवर्ती का माप्य है, इसरे पत्रों में सहपदेश है सही, केविन वह प्रकीण है।

याधीवीका 'हिन्द स्वराज्य', जिसमें उनकी सारी भीड बाजाठी है, 'मगलप्रभाव' जिसमें उनका समाव-धर्म भी व्यक्त होना है बोर 'प्यनास्कक कार्यक्रम' जिसमें राष्ट्रोद्धार की सब बातें आगी है, इन सकते एक जिल्ह में दे देना बच्छा होगा, साथ ही उनके राष्ट्रीय शिक्षा के सिद्धान्त बोर कार्यस के लिये उनका दिया हुआ अन्तिम आदेश ! जीवन-साहित्य: फरवरी १९५२

अव रही एक जिल्द, जिसका नाम दिया है 'मेरे समकालीन'। ऐसा नाम देने का अधिकार गांधीजी का ही या। प्रकाशक इसे नाम दे सकते थे, 'समकालीनों के बारे.में'। इस जिल्द का मसाला सब अच्छा है। लेकिन इसका सम्पादन डीला-डाला हुआ है। समकालीनों के नाम मूची में वर्णानुकम से दिये जा सकते हैं, लेकिन मूल ग्रन्थ में सारी रचना दूसरे ही ढंग से होनी चाहिए थी।

'सस्ता साहित्य मण्डल' की भाषा के बारे में कहा जा सकता है कि मामूली तौर पर वह आसान, कामफहम और गुद्ध होती है। लेकिन अनुवाद में कभी-कभी गफलत रह जाती है। अखबार वालों को सब काम जल्दबाजी से करना पड़ता है। बही लेख जन ग्रन्थ के हप में प्रमाणभूत आवृत्ति के तौर पर दिये जाते हैं तब सारा अनुवाद किसी जानकार व्यक्ति से फिर से तपासना अच्छा। वैसे तो 'सस्ता साहित्य मंडल' का अनुवाद अच्छा होता है, किन्तु इतने पर से सन्तोप नहीं मानना चाहिए। हमारी देशी-विदेशी भाषाओं के अनुवादकों को चाहिए कि वे अनुवादका को राष्ट्र की और संस्कृति की एक उच्च सेवा समझ लें। इसमें जितनी भी मेहनत करनी पड़े,

'उठानी चाहिए।

'गांची-साहित्य' व्यवस्थित रूप में जनता के सामने रखने का भार 'सस्ता साहित्य मण्डल' ने उठाया है, इसके लिए वह घन्यवाद का अधिकारी है। हम आशा करते हैं कि 'मण्डल' यह काम यथासमय पूरा करेगा। महात्माजी तो चाहते थे कि लोग उनके लेखों को और भापणों को सिर्फ सुनें, पढ़ें नहीं, किन्तु जो-जो बातें जंच जायं उन्हें अपने जीवन में उतारने की कोशिश करें।

जो लोग गांघीजी का साहित्य पढ़ते हैं, वे इस युग की एक लोकोत्तर विभूति के हृदय का दर्शन करते हैं। यह विभूति जीवन में कमंबीर और हृदय में महान् आत्मा थी। उनकी वाणी जितनी अपने जमाने के लिए और अपने देश के लोगों के लिए थी, उतनी ही समस्त मानव-जाति के लिए और सदा के लिए बोधप्रद है। पाठकों को चाहिए कि वे इस स्वाति नक्षत्र के महापर्व पर अपने हृदय को मुक्त शुक्ति के जैसा बनावें और गांधीजी के सन्देश को ग्रहण करें।

-- 'आल इप्डिया रेडियो' के सीजन्य से

सुशील С

स्यूलता की ओर झुंकता हुआ विशाल राजस्थानी शरीर, प्रेमल मुस्कान से मंडित अनगढ़-सा चेहरा, दृढ़ता और विश्वास से भरे नयन, प्रशस्त ललाट जिसे ऊंची वाड़ की गांधी टोपी और भी प्रशस्त करती थीं; यह था सेठ जमनालाल बजाज के पाधिव रूप का प्रभाव जो पहली बार देखने पर मेरे मन पर पड़ा। उन्होंने लंम्बा कुरता और अवेक्षावृत, ऊंची घोती पहनी थीं। वे कोलाहल से पूर्ण हरिजन कालोनी में चुपचाप एक और टहल रहे थे। बायद कुछ सोच रहे थे। लेकिन इसके कुछ क्षण बाद वे इस प्रकार खुल कर हंसे कि बाज भी उसकी गूंज मेरे कानों में भूजने लगती है।

## 'वे जिन्दा साहित्य थे'

यह लगभग सन् १९३४-३५ के आसपास की बात होगी। गांधीजी की सान्ध्य-कालीन प्रायंना के बाद में बालोचित उत्सुकता से नेतागणों के दर्शन की टोह में भटक रहा था। इसी प्रयत्न में में सेठजी की ओर जा निकला और उसके कुछ क्षण बाद ही दिल्ली की बहन सत्यवती भी उधर आगई। उन दिनों समाजवाद की बड़ी चर्चा थी। उसी को लेकर वहन सत्यवती किसी युकक से चर्चा कर रही थी। मैं भूलता नहीं तो उस चर्चा में आज के एक प्रसिद्ध समाजवादी नेता का नाम आया। उसे सुनकर सेठजी सहसा बहनजी की ओर मुड़े और बोले—अरे वह छोकरा! वह तो मेरे पास था ...

'जी जी-हाः।'

'मैने ही उसे बम्बई भेजा था। वह समाजवादी बना है।'

और यह कहते-कहते में खुळ वर हसे। इतने खुळ कर कि बहननी अप्रतिम हो उठी। वेबोले-समाजवादी में हें।'

बार्से बहुत हुई पी। आज बुझे उनका स्मरण नहीं पर उनका भाव यही या विशेषकर उनकी उस मुक्त हुसी का ।

लेक्नि उनकी उस अटपटी वेशम्या, सशक्त हसी और समाजवादी होने के दाने का उनके सेठ होने से कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ा। इस ससार में ऐसे लोगो का प्रमाय नहीं है जो चादी का चम्मच मह में लेकर पैदा होते हैं और स्वेच्छा से गरीबो का बरण करते हैं. लेकिन ऐसे लोग निस्तदेह कम है जो गरीव-घर में पैदा होते हैं और जब भाग्य-लक्ष्मी उनका वरण करती है तो अपने पौरप की रक्षा कर पाते हैं। धेठजी उन्हीं कम छोगो में से थे। वे मह में चादी का चम्मच छेकर नहीं जन्मे थे। ये निर्धन पर स्वाभिमानी माता पिना के पुत्र वे । इसलिये उनके रक्त में स्वामिमान या, चादी ना अहवार नहीं। यद्यपि भाग्य-लक्ष्मी की क्रमा से वे सेठ बच्छराज के धनी परिवार में गोद गये परन्त इसे उन्होने नभी स्वीकार नहीं विया और मानो इसीना प्रायश्चित नरने के लिये उन्होने स्वेच्छा से दिखनारायण के प्रतिनिधि महात्मा गाधी को अपना पिता बरण किया। यही नही जब वे कुल सनह दर्ग ने थे तब उनके धनी दादा नहने न पहनने पर एक दिन जनसे नाराज हो गये. ऋछ सन्त मुस्त कह दिया । स्वाभिमानी जमनालाख इसको नहीं सह सदे । उन्होंने तभी त्याग-पत्र छिल दिया। एक संघर्षशील मुक्क के मनोभावी का यह एक अपूर्व चित्र है--

'क्षाज मिती ताई तो हमारे बारे में अथवा जो हमारे ताई खर्च हुयो सो हुयो बाकी आज दिनसू आप कनसू एक छदाम कोडी हमा लेबामा नही अथवा मगवामा नही. और आपके मन मा कोई रीत का निवार करनी मत ना। आपकी तरफ हमारी कोई रीत का हक आज दिन सो रह्यों छे नहीं ।'

एसते का यह तेन निराणों के ही भाग्य में बदा होता है। जीनन भर यह तेन उनका करन बना रहा, लेकिन इसका यह जर्म करोब नहीं हैं कि वे मोहासियर नहीं होते में। उनमें नरेन पमनीरिया भी पर उनके साथ उनमें एक नीर बात भी थी, ने अपनी कमणीरियों को जानते थे—"में अपने दोषों का साथाल करता हूं हो दार्म, उनमां बहु के से मन घर जाता है।" हमी जान ने कारण ने उनक पमनीरियों की अहणा से बच जाते थे। बादू को एक एक में उन्होंने क्लिस हमा—"लिह्सा क साल का आवरण कम होता दिखाई वे रहा है। उर हैं कि कही उच्छार अद्धां भी कम न हो जावे। इस कारण अस्तुन-बोलजा में बच दर्ग है। को यह भी माना भी वर्तन मा पहुँ। हैं। वाम-वासता भी वहनी मालूम हो रही है।"

जानहरू ता और आरमन्यन मनुष्य है आचरण के महर्रे हैं किर जल्हें तो निवंनों ने पनी महारमा भाग्यी जैसे मानिस्तंन प्राप्त हो । बब-जब वे फिनजन की ओर बढते बापू नहीं चेता देते थे। वपडे नी मिल जरीदने ना विचार करना और किर खाब देना एन ऐसी ही पटना है।

सेठजी अनगढ मो नम नहीं थे। उनकी स्मय्वादिता स्वीपन तक पहुंच मई मी, 1 वे बाहुर्या हे मी, उसका पडते में। एक बार किमी विवादय के मार्थनता में के कमाब से तक आहर उनके पास पहुंचे। उन्होंने विचार मरने के बाद निरुद्ध करने को बहुर। वार्यन्तिमा मो सायद बुट्स कहामता की आवस्पकता मी, 1 वे मारू के पास पये। बापू नो उनकी बात जनी और उन्होंने चेत्र प्रमुक्त के मान्य सेठजी है जी मी, उन्होंने चेत्र पन्ने के मान्य सेठजी है जनीं मी। घटनी ही सेठगी उसक पड़े—' आपको कोग कमाब देते हैं और आप झट से उनकी बात मान केते हैं। वे लोग पहुंके मुझसे मिले थे। मंने वहा या कि ठहर पर चुछ कर सहुता। उन्हें आपको स्वाते की स्था चकरता थी?"

बापू---(उद्देग को दवाते हुये) "हा,सो तो ठीक है, लेकिन बापके निश्चय करने तक तो उनका काम चीपट हो जायगा। हमें कार्यकर्ताओं की सुविधा और कठिनाइयों का ज्यादा खयाल रखना चाहिये, वनिस्वत अपनी जांच-पड़ताल के। कार्यकर्ता यदि ईमानदार हैं तो फिर हर समय ज्यादा सख्ती से नुकसान होता है।"

सेठजी (झल्लाकर)—"लेकिन में अपना तरीका नहीं वदल सकता। आपकी वात दूसरी है। आपके जितनी शक्ति मुझमें नहीं। में आपकी चाल चलने लगूं तो 'कीवा चले हंस की चाल' वाली गत होगी।"

इस अक्खड़ता के पीछे जैसा कि स्पष्ट है उनकी व्यवहारिकता का अतिरेक है, अहम् का विस्कोट नहीं। वे श्रीर मे ठोस थे; उनकी व्यावहारिकता के आधार भी उतने ही ठोस थे। वे गलत समझे जाने को तैयार थे; परन्तु गलत कदम उठाने को तैयार नहीं थे।

वे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं थे परन्तु उनके रक्त में जो व्यवहारिकता का पुट था उसके वल पर वे बुद्धि के क्षेत्र में सदा अप्रणी रहे। पं० मोतीलाल नेहरू और भूलामाई देसाई जैसे कानून के पण्डितों को उनकी बुद्धि का लोहा मानना पड़ा था—

'जमनालालजी से बढ़कर साफ दिमाग रखने वाला (क्लियर हेडेड) व्यक्ति कार्य-समिति में और नहीं है।' (मोतीलाल नेहरू)

'कार्य सिमिति में उनके विना काम नहीं-सा चलता था। उनकी सलाह हमेशा सद्यःस्फूर्त व्यवहारिकता और शुद्ध विवेकपूर्ण होती थी। सब समस्याओं को देखने की उनकी दृष्टि सच्चे रूप में राष्ट्रीय और असाम्प्रदायिक होती थी।' (भूलाभाई देसाई)

स्वयं गान्धीजी ने कहा था—'उसके जैसा वारीकी से हरेक चीज को पंकड़नें वाला बादमी भाग्य ही से कहीं मिलता है।' लेकिन सेठजी केवल व्यवहार-कुशल ही नहीं थे। वे मूलतः धार्मिक थे। कर्मकाण्डी नहीं, साधक! 'जीवन सेवामय, उन्नत, प्रगतिशील उपयोगी और सादगीयुक्त हो यह भावना जबसे मैंने होश संभाली, तबसे अस्पष्ट रूप से मेरे सामने थी।' इसी दृष्टि से उन्होंने मार्ग-दर्शक की खोज की—'मार्ग-दर्शक की खोज में मेने भारत के अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क पैदा किया। ....इसी मार्ग-दर्शक की खोज में मुझे गांवीजी मिले और

सदैव के लिये मिले ।' गान्चोजों के अतिरिक्त विनोवा भी गुरुख्प में उनके बहुत पास ये। वे तो जैसी उनकी सन्तान के अभिभावक वन गये थे। अपनी जीवन-सन्य्या में मां आनन्दमयी की गोद में उन्हें अपूर्व शान्ति मिली पर सच्ची शान्ति उन्हें सदा कर्मरत रहने में मिलती थी।

सेठजी का जीवन संघर्ष की अपूर्व कहानी है। वे गरीव के घर जन्मे; पर भाग्य ने उन्हें लक्ष्मीपुत्र बनाया। वे भाग्य से जुझे और स्वेच्छा से फिर गरीवी स्वीकार की। भाग्य ने रायवहाद्री प्रदान की पर वे उसे फेंक कर सत्याग्रही वन गये । विन मांगे उन्हें जो-कुछ भी मिला उसे उन्होंने अर्स्वाकार तो नहीं किया पर जब वह उनकी साधना के मार्ग का वन्यन बना तो उसे नि.संकोच ठुकरा दिया । ये झुके नहीं, कूटनीति उनसे सदा दूर रही । दयानन्द का सत्य उनका सत्य बना, स्पष्ट, जो जैसा है वैसा, कड़वा, निपट सत्य। सन् १९१८ में सरकार ने उन्हें रायवहादुरी की उपाधि प्रदान की; परन्तु जब उसने यह देखा कि कांग्रेस के नेता उनके पास ठहरते हैं तो कमिश्नर ने उन्हें बुला भेजा और बताया कि वे रायबहादुर हैं। उन्हें ऐसे लोगों से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। इस-पर सेठजी ने जवाव दिया- 'मेंने तो रायवहादूरी के लिये सरकार से कभी कहा नहीं, न किसी से कोशिश कराई । आपका यह समझना कि रायवहादुरी मिलने के बाद मेरा सम्बन्ध इन लोगों से हुआ बिल्कुल गलत है। मेरा इन लोगों से बहुत पुराना सम्बन्ध है।'

और जब काफी तेजी के बाद किमश्नर ने समझौता करने को कहा तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में जबाब दिया —'इसमें समझौते की कोई बात मालूम नहीं होती। जो लोग मेरे यहां ठहरते आये हैं वे फिर भी ठहरेंगे।'

और वे गांची की आंधी में तन-मन-धन से कूद पड़े। वे नागपुर अण्डा-सत्याग्रह के नेता थे। उन्होंने राजस्थान में जागृति का मन्त्र फूंका था। वे सन् २३ से ४१ तक गांचीजी की हर पुकार पर जेल गये थे। वे सैनिक थे और सदा सैनिक रहे। जहां गये सैनिक की भावना लेकर गये। कार्यकारिणी में पहुंचे तो अन्त तक रहे; कोपाध्यक्ष वने तो मृत्यु के बाद ही उस स्थान को रिक्त किया। जहोंने राजनीति में पूर्णकोण रक्ष लिया पर उनकी प्रतिमा कर बारविक प्रस्कुटन हुआ गावी के रचनारक्षक करवाँ में । गाधीवाँ के राजनारक्षक करवाँ में । गाधीवाँ के राजनारक करवाँ में । गाधीवाँ के राजनारक करवाँ में में पूरी तरह अपना लिया था। यहा तक कि मुझे हुल करना ही नहीं पहता था। व्योही में निसी नवे नाम की सुक करना है। नहीं पहता था। व्योही में निसी नवे नाम की सुक करता है। नहीं पहता था। व्याप्त कर कर केना मानो उनका व्याप्त कर कर केना मानो उनका व्याप्त माने वन गाय था।

क्या सादी, क्या गौ-सेवा, क्या इरिजन उद्धार क्या हिन्दू-मुस्लिम एकता, समी क्षेत्रो में वे सम्पूर्ण रूप से आये । 'विनोवा के शब्दो में'-'जमनालाल जी के दिल में देहमावना ना अवशेष भी न रहा, फेवल सेवा ही सेवा रही।' लादी में बारे में उन्होंने स्वय लिखा है-'मैं मानता ह नि इस समय यदि बाह्यण स्नान-सच्या किमी दिन न कर पाये सो शायद ईश्वर उसे क्षमा कर देवे पर यदि वह चर्ला म कातता हो या खादी न पहनता हो तो उसे ईश्वर के यहा शायद ही क्षमा मिले।" गी-सेवक तो उनका बिरद बन गया था। गोपरी आज भी उनकी स्मति का पार्थिव रूप है। प्राप्टमाया के प्रति जनकी सेवायें नगण्य नहीं है। हरिजनो के लिये उन्होंने मन्दिर ही नहीं खोले उन्ह अपनी रमोई में भी नियक्त किया। एक मारवाडी के किये सन १९३५ में ऐसा व रना वितने साहस का वान हो सक्ता है, आज इसकी करपना करना बहत कठिन है। समाज-मधार के क्षेत्र में भी वे अधणी रहे। उन्होंने विवाह वे मन्नो तक के नये अर्थ लगाये।

सेठजी को अपने जीवन में जो सफलनायें मिजी वे नत्त्वम नहीं है। उनका मूछ उनकी इस महत्त्वमाक्षा में है-जीवन में में इस तरह दरतमा चाहता हूं कि परते समय कोई मूमें स्थला यन् ममनने नाला न पढ़े। ' रिकन महत्त्वावासा सब बरते हैं, पर उतकी पूरा बरते वा प्रयत्न करता बिरलों में भाग्य में होता है। वह सीभाष्य संदर्भ को मिला या। उनकी महत्त्वावासा पुर्व हुई या नहीं इसनर पाय देने वा जीवकार हमें नहीं मिला है पर यह एक चिरनवीन सत्य है नि जो प्रयत्न करता है वह निरचयही सफल होता है। इसदृष्टिसे छन्हे निश्वनीम सफल नहा जा सनता है।

एन' सेवक ढरा-धमका कर उनसे पैसे लेना नाहता धा-'मुझे इतने हजार रुप्मे दीजिए बरना गोली से उटा दू गा।' सेठबी हसे और बोले-'जरूर मार। में देखता हू गू कैसे भारता हूँ।'

बह बया मारता । दूसरे दिन उन्होंने ही उसे बाम से छुट्टी दो और परम मिन भाव से उसे अपने स्थान का दिकट और खर्च ने लिये पैसे देकर विदा किया।

विश्वाल वर्षी रवार्थ से हजी वा साहल और औरार्थ मी विश्वाल वा। आहित्य में उनना मुकाबला कीन कर बनेया ! मिनता करता बहुत कीम जानते हैं परन्तु उन्हें विवाहता सेठानी जानते थे। उनके हुद्य से प्रेम का निर्मार करता था, उनकी वाणी में दृढता की विशासिया उडती बी, उनकी गति में विद्वास था, ये अपने को जानते थे। वे में समुर्यों नहीं थे परन्तु उनकी अपूर्णताओं को उनके अपनो ने अड़त हुर तक कक लिया था।

वेजन्य से लियंन से, खतीन से सेठ से, वन से साधक से, स्वचाव से महत्वावाक्षी मनुष्य मे—एक साम हठी और विनसी, निर्मीव और खरक, मक्त और विनसी, उनकी मुख्य से अस्मित के किये उनकी महत्वावाक्षा वा मूल या आरमोनति के किये

बीर उस तब्प में से सेवा और कमें का जो कम प्रवट हुआ, जीवन को उन्होंने जिस प्रकार जिया उसीको एक्स बरफे गांधीओं ने उनके रिम्मे कहा था— के जिन्दा साहित्य में 1' क्योंनि जो अच्छी तरह जीना जानता है बहाँ सच्या करफार (शाहिरियक) है।'

इन अर्थों में वे सचमुच जिन्दा साहित्य ये।

(१) इस रुष की अधिवास सामग्री श्री हिप्साऊ उपाध्याय लिखित 'श्रेसार्वी अपनाकालग्री' और 'बारू के आश्रम में' से जी गई हैं। ये दोनों पुस्तके'सस्ता साहित्य मटक' से प्रकासित हुई हैं।



## चुनाव और उसके वाद

चुनाव का दौर समाप्त हुआ । भारतीय राष्ट्र-निर्माण के अगले पांच वर्षों का मविष्य बहुत छुछ इस चुनाव पर अवलिम्बत था, इसलिये इसमें नारे राष्ट्र ने अमूतपूर्व तत्परता और तन्मयना दिखलाई, जो कि सर्वया उचित थी। कई पार्टियों तथा स्वतन्त्र उम्मीव्वारीं ने जगह-जगह चुनाव लड़े। जो लोग कानुन-विवान द्वारा अर्थात् पालंमेंटरी नरीके या जिस्से ने नवींदय की निडि में मलतः विरयास नहीं रखते, उन्हें भी इसकी तात्या-लिक उपयोगिता और आवश्यकता महसूस हुई और उन्होंने भी इसमें भाग लिया या सहयोग या आगीबीद दिया । अभी तो नव जगह परिणाम निकले नहीं हैं और महान, कोचीन-ड़ादनकोर में कांग्रेस की बहमन नहीं मिला है, राजस्थान में भी ऐसी आयंका हो रही है कि शायद न मिले फिर भी भारत के तमाम और भागों में कांग्रेस की नारी दिजय हुई है। राजस्यात को छोड़कर शायद और किसी जगह मतदान में कांग्रेस-विपित्रयों ने भीपण दहाव और दराद से काम नही लिया । चुनाद-अधिकारियों ने प्रायः मनी जगह न्यायभाव से काम लिया और मतदानाओं ने भी शान्ति-भाव का प्रदर्शन किया । जहां तक जानवारी मिली है, कांग्रेम उम्मीदवारों ने प्रचार में अपना स्तर ऊंचा रखने का प्रयत्न किया है यह मद शुभ चिन्ह हैं। चुनाद के प्रारम्भ में बड़ा भय था कि न जाने क्या-बया कांट हो जायेंगे; परन्तु इतने विशाल चुनाव के दरम्यान सद प्रकार ने प्रायः गान्ति रही, यह खुद नारनवानियों की रम्यता और नमझदारी पर अच्छी रोयनी दालता है। इन सब बातों के लिये हम मंतीय का अनुभव कर सकते हैं, परन्तु यह अवश्य आश्वयंजनक स्थिति है कि दो महीने पहिले यहां कांग्रेस की चारीं तरफ गालियां-हीं-गालियां मिलती सी, वहां अपद-कुपद देहानियों नक ने आखिर वयों कांग्रेस को सब जगह विजयी बनाया! इसके छोटे-यदे अनेक कारण हो सकते हैं, परन्तु कांग्रेस-संगठन और वार्यकर्ताओं का भीतर से जो हमें अनुभव है, उसक आधार पर हम इनना अबस्य कहना चाहते हैं कि संबंध के समय और संग्राम के समय कांग्रेसी छोग फिर भी मिल कर चलना और काम करना जानते हैं। जहां-जहां वे मिल कर चले हैं, बहां-बहां सकलना प्राप्त की है। जहां फूट और भीतरी नोइ-कोइ का बोल-बाला रहा, बहां असकल हुए। इसारी सकलना और असकलना का बीज खुद हमारे हैं। अन्वर है। इस सत्य का अनुभव इस चुनाद में प्रत्येक को हुआ और होना चाहिए।

चुनाय तो हो गया और सरकार भी जगह-जगह बन जायेंगी, परन्तु उसमे असल काम पूरा नहीं हो जायगा ।

इस चुनाद से उत्पन्न जागृति और घिन का उपयोग जन-सम्पर्क दढ़ाने और उनकी रचनात्मक सेवा करने में होना चाहिए और नये शासन के द्वारा पंच-वर्षीय विकास-योजना की पूर्ति होनी चाहिए।

चूनाव के दरम्यान हमें अपने नीची मतह पर होने का भी अनुभव हुआ। बड़े-बड़े कार्यकर्ताओं और जिम्मेदार कांग्रेनियों ने एक दूसरे के खिलाफ काम किया, भीतरी नीड़-फोड़ की झूठी अकवाहों और गलत नारों का बाजार गर्म रहा, बड़े-से-बड़े आदिमयों के खिलाफ जितनी आसानी से झूठी बातें फैलाई जाती थीं, उतनी आसानी से वे मान भी की जानी थीं। यह देखकर यह खयाल होना स्वामाविक है कि हमारा स्तर ऐसे अवसरीं पर कितना नीचे चला जाता है। मनुष्य की—उसकी नम्मना और संस्कृति की परीक्षा, संकट और संग्राम-काल में ही होती है। ऐसे समय में नो मनुष्य अपनी उच्चता, उदारक्त और भेष्ठता नहीं छोडता बही सच्चा मनुष्य है। उसी में आमे बढ़ने की शक्ति होती है। वही समान को जना उठा सकता है, यह बात हमें सदैन याद रखनी शाहिए।

चुनाव के बाद अब चुनाव-जनित कट्ता कोर पैमनस्य मिटकर सद्मावना और सहयोग का बसावन्य बनाना चाहिए। चुनाव एन साधन वा राज्य की इच्छा और मावना को प्रविश्त करने का, बह कान यूट हुल। अब उसके परिणाय को ध्यान में रसकर, राज्य की इच्छा को समझकर हमें उसकी पूर्ति करने का सक्त्य कर देना चाहिए और हन पान सालों में लोक-पीक्षण और लोक-विक्ता होतना हो जाना चाहिए कि विससे अगले जुनाव में इससे कम सन्ते में और ज्यादा अबस्या और सानित क सद्माव के साथ वेचल धेन्यतम और योध्यतम व्यक्तियों भो ही हम अपना प्रतिनिधि चुन सकें।

नई दिल्ली ५-२-५२ —ह० ड॰

'हरिजन'-पत्र

राष्ट्र-प्रेमियों को यह समाजार पडकर वहा दु स हुना होगा कि स्पर्क मात से 'होरान' (अवेनी), 'हरिजन सेक्क' (हिंदी), जीर 'हीरान वन्यु' (गुक-ताती), ना प्रकाशन वन्द कर दिया जाराग। य पत्र महास्मा गामें: की बाती है और भारत के स्वातन्य-सग्राम के देश के निर्माण में कर पत्रो का विशेष योग रहा है। जबसे हस्वना प्रकाशन सुद हुआ है, गापीजी कारतर क्रिकेटिंग जिसते रहें हैं। एव प्रकार से गापीजी कारतर क्रिकेटिंग सिंत रहें हैं। एव प्रकार से गापीजी का अव्हात्मों आदि के में मूख-पत्र रहें हैं। जनके निर्माण वें पश्चात्म मी सर्वार में सरेश को पैकाने तथा देश की महत्वपूर्ण समस्याजी ना गापीजी जी होटिस हरू मुसाने में दनना बडा हाग रहा है।

गायोजी ने इन पत्रों के लिये निजापन नभी स्वीतार नहीं निमें। अह ये ग्राहकों के बल पर ही चलते रहे। गायोजी की मृत्यू के बाद मी नहीं परस्परा कायम पही। जब नभी आधिक सकट लाया, पाठको ने अपने कर्तव्य का निर्वाह दिया। र तजनेतिक नारणो को छोड कर नभी जायिन सकट से इन पत्ती ना प्रमासन बन्द नहीं हुआ, और यह निरुच्च हो बटे दुर्भाण की बात होगी यदि जब भी इन्हें उस कारण से बन्द होने दिया गया। ये पत्र मार्थाजी ने ग्वॉत्तम समारक हैं जीर जनके आदाों के पृद्धानुक्व स्थारित करते रहे हैं। प्रतिकृत परिस्थितियों में भी उनकी दृष्टि मूक्तिन नहीं हुई, जनके पैर नहीं शामगाये।

हमें पता नहीं कि यह दु जब निस्तय करने से पूर्व सचानकों ने इस सनट के निवारण के लिये दिनता प्रयत्न निया है, लेकिन सार्वजनिक इस से क्रोई प्रयत्न हुआ है इसका भी हमें पता नहीं हैं। इसलिये हम साहते हैं कि 'हरियन' पत्रो के पाठको, निरोध कर पाछु-प्रेमियी को एक सनदर अवस्य दिया जाये।

हण रचनात्मव वार्यवर्णांनी सथा पाठको से अनु-रोध करेंगे वि व हन पानी में अधिक-धे-अधिक बाहुक बनावर सथान्को को आधिक चिन्ना से मृत्त कर वें और इस प्रवार उन्हें राष्ट्रियता की इस पानी को सुधिकर स्वतं में लिये बाध्य करें। वेंन्सीय सरकार तथा प्राविधक सरकारों भी पार्यित सब्या में इनकी प्रतिका सरीद कर सहाधान दे करती है। गांधी-स्थारक निध्य की प्रीक्ष में से भी कुछ मदद वी जा सबती है। जो भी समय उपाय हो, विये जाव और इन पाने को बन्द होने से बचाया जाव। इस प्रवस्था से कि इंटिजन यह से साथा स्व स्वार्थ कहा जा स्वार्थ और साथ दो पत्र कर कर कार्यों, हमें सतीय नहीं है। इसे स्वीय तब होगा जब ये स्व पत्र जीवित रहेंगे। इस पद्मी की आदम्पता है और देश-बाल की गतिविधि को देशने रागा है कि भी

पाठक, राष्ट्रीय सरकार और गायी स्मारक-विधि, इन सबके स्यो यह परीक्षा-समय है।

—य•

## 'भूदान-यज्ञ' अंक

"...कहते हैं, अवतारों, ऋषियों और महापुरुषों के कार्य तत्कालीन जन प्रायः नहीं देखने
के अभ्यासी होते हैं। 'जीवन-साहित्य' ने भूदानयज्ञ अंक निकाल कर निश्चय ही विशिष्ट दृष्टाओं
की परम्परा निभाई है। इसमें वापू और विनोवा के
जो पत्र छपे हैं, उन्हें मैंने तो स्वयं पढ़ा ही, पूज्य भैया
(श्री मैथिलीशरण गुप्त) को भी पढ़कर सुनाने का
सौभाग्य मैंने लिया। मन में वैसी पवित्रता का अनुभव
किया जो ज्ञान की त्रिवेणी में डुवकी लगाने से ही
मिलती है...।"

—सियारामगरण गुप्त

"...इस अंक के कारण पाठकों के सामने पूज्य विनोवाजी का जो अन्तर्वाह्य स्वच्छ, सरस, निर्मल, उदात्त और महान् रूप सामने आया है, वह अपने आप में इस अंक की वड़ी सिद्धि है। मुझे विश्वास है कि यह अंक खूव लोकप्रिय होगा और इसकी हज़ारों प्रतियां सारे देश में उत्तम साहित्य के रिसकों के घर पर पहुंचेगी।..."

---काशिनाय त्रिवेदी

"...भूमिदान-यज्ञ अंक मिला, बड़ा अच्छा लगा । विनोवाजी का मुखपृष्ठ का चित्र बड़ा अच्छा है...।"

---महावीरप्रसाद पोद्दार

"... निस्संदेह भूदान-यज्ञ अत्यन्त सामयिक, उपयोगी और आकर्षक रहा है। श्री विनोवा की राष्ट्र-सेवा का जो महत्वपूर्ण कार्य चल रहा है उसका संदेश चारों ओर पहुंचाने तथा उसका प्रसार करने में "जीवन-साहित्य" का यह कार्य स्तुत्य है।"

---रामचरण महेन्द्र

"... विशेषांक बहुत ही रुचा। (वह) संग्रहणीय एवं मनन करने योग्य है। आचार्य विनोवा के महान् कार्य का परिचय विशेषांक में दिया है यह अच्छा ही है।"
— उमाशंकर सुक्ल

"... 'भूदान-यज' अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई। वास्तव में यह अंक हम जैसे पय-भ्रष्ट और निर्जीव कार्यकर्ताओं के लिये प्रकाश-पुंज है।"
—गोवर्धन सिंह

"... 'भूदान-यज्ञ' विशेषांक निकाल कर 'जीवन-साहित्य' के सम्पादकों ने जिस निष्ठा, परिश्रम-शीलता और गम्भीर श्रद्धा से विनोवा के विचारों के प्रसार में जो महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है वह स्तुत्य है। विनोवा के समान यदि हमारी तपस्या और अध्यात्म-निष्ठा नहीं हो सकती, तो उसकी उपासना में भी हमारी कमी क्यों हो ? 'जीवन-साहित्य' के पृष्ठों ने हमें इस उपासना का अवसर दिया, इसलिय उसके प्रति भारी कृतज्ञता है।"

"'जीवन-साहित्य' का घ्येय ही यही है कि वह अहिंसक नवरचना के गुभ कार्य में दिन-दिन प्रगति करे। यह अंक उस प्रगति का एक सुन्दर प्रतीक है क्योंकि श्री विनोवा जी और उनका भूमिदान-यज्ञ अहिंसक नवरचना की सफलता के दो ज्योतिमंय स्तम्भ हैं।"

—गुरुदयाल मल्लिक

"'जीवन-साहित्य' के इस नम्बर में भूदान-यज्ञ के जुदा-जुदा पहलुओं पर रोशनी टाली गई है—जिससे उसकी सच्ची जानकारी हासिल करने में मदद मिलती है। ज्यादातर लेख उन भाई-वहनों के हैं जो इस यज्ञ में विनोवाजी के साथ हैं और उसको कामयाब बनाने में अपने तन मन घन से लगे हुए हैं। इसकी वजह से यह नम्बर दिल को कहीं ज्यादा छूने वाला और असरदार वन गया है।"

--सुरेशराम भाई

वार्षिक मृल्य ४)]		ANIECA.	[ एक प्रति का ।।)
-------------------	--	---------	-------------------

#### लेख-सूची

8	कला और जीवन	<b>कॉपॉट</b> किन	९७
₹	यदि न दोगे अध्य, कल देना पडेगा	र्या मैविलीशरग गुत	9,6
3	मुक्तिका मार्ग	र्था विनोबा	33
٧.	भूबान-यम को देशस्यापी बनाने के लिए सुप्ताद	थी शकरराव देव	१०७
ц.	विनोबाजी की पचवर्शीय योजना	यी मुरेशराम भाई	306
Ę	भूमिद्दान-पञ्च और महिलायें	बावा राघवशस	<b>१</b> ११
9	भूमिदान यज्ञ : एक श्रद्धात्रलि	थी भरतसिह उपान्याय	\$ ? ₹
c	भूनि विभाजन का आधार	थी परमश्वरात्रसाद गुप्त	<b>₹</b> १३
٩	लोकोतर विभूति का हृदय-दर्शन	थी दाका काउंटकर	233
ę۰,	'वे जिन्दा साहित्य भे'	थी मुशील	१२२
33	क्याव कैसे <sup>?</sup>	हमारी राय (सम्पादनीय)	128

### पाठकों से निवेदन

'जीवन-साहित्य' के विषय में गताक में हमने जो अपील निकाली थी, उसका पाठको पर अच्छा प्रभाव पडा है। एक वधु लिखते हैं कि मानव-समाज के नैतिक धरातल को ऊचा करने वाला 'जीवन-साहित्य' जैसा पत्र घाटे में चले यह बड़े दुःग्र की वात है। मैंने निक्चय किया है कि उसके लिए २५ ग्राहक बनाऊगा। चार ग्राहक बनाकर उन्होंने भेज भी दिये हैं। अन्य कई पाठकों ने भी ऐसा ही शुभ सकदप किया है। अपने पाठकों की इस आत्मीयता के लिए आभार मानते हुए हम उनसे अनुरोध करते हैं कि वे अधिक-से-अधिक जितने ग्राहक बनावेगे, उनके नाम हम 'जीवन-साहित्य' में प्रकाशित कर देंगे।

---यशपाल जैन सम्पादक

## 'मएडल' के नये प्रकाशन

एक त्रादर्श महिला (श्री विनायक तिवारी)

?)

स्व॰ अवित्तिकावाई गोखले के सेवामय जीवन की कहानी । "वह एक त्यागी विदुर्यो महिला थीं, जिन्होंने गांघीजी की पुकार पर आराम की जिन्दगी छोड़कर कण्टकाकीर्ण देश-सेवा-वृत्ति को वरण किया और अन्तिम दम तक निभाया।" —(राष्ट्रपित) राजेन्द्रप्रसाद

व्यक्ति और समाज को सेवा की ओर उन्मुख करने वाली पुस्तक । आमुख —श्री देवदास गांधी श्रमिट रेखाएं ( सम्पा० श्रीमती सत्यवती मिल्लक )

जीवन के हृदयस्पर्शी रेखाचित्र और संस्मरण। "'अमिट रेखाएं' किसी जाति अयवा धर्म की सीमाओं से बद्ध नहीं।... जिन अतिथियों को सत्यवतीजी ने निमंत्रण दिया है, उनमें कोई भेद-भाव - नहीं किया, केवल मनुष्यता ही उनकी कसौटी रही हैं। —वनारसीदास चनुर्वेदी

राजघाट की संनिधि में ( विनोवाजी के प्रवचन )

III =

भूदान-यज्ञ के सिलसिले में पैदल-यात्रा करते हुए विनोबाजी दिल्ली आये थे। वहां ११ दिन में उन्होंने जो प्रवचन दिये थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। आज की अनेक ज्वलंत समस्याओं पर इसमें प्रकाश डाला गया है। वर्त्तमान समय में जब कि लोगों को मार्ग नहीं सूझ रहा है यह पुस्तक मार्ग सुझाती है।

## सह-प्रकाशन

गांधी-गोरव (पं० गोकुलचन्द्र शर्मा)

**(11)** 

इस खण्ड काव्य में बड़ी सरस तथा भावपूर्ण बैली में विश्वबंद्य महात्मा गांधी के जीवन-व्यापी महान् कार्य का चित्रण किया है। महात्मा गांधी पर जितने पद्यात्मक ग्रंथ लिखे गये हैं, उनमें अपने ढंग का यह निराला है।

अशोकवन (पं० गोकुलचन्द्र शर्मा)

**(11)** 

इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने वड़ी ही प्रवाहपूर्ण तथा प्रांजल भाषा एवं दौली में जगउजननी सीतामाता के वन्दी-जीवन का चित्र उपस्थित किया है। ऐसा सजीव और भावनापूर्ण चित्रण तिद्वपक अन्य पुस्तकों में कम ही देखने को मिलता है।

प्राप्ति-स्थान

# सस्ता साहित्य मग्डल

नई दिल्ली



## अहिंसक नवरबना का मासिक

રફાયલી હોંદર્જ

#### हरिमाऊ उपाध्याय यशपाल जैन

जो देने कं ाूमांक पर नहीं देला, वह बोने के मौके पर नहीं बोखा ≀ और बोने के मौके पर जिमने नहीं बोखा उसने बहुत-कुछ योषा । और इसी नरह देने के मौके पर जिसने नहीं दिया, उसने भी बहुत खोखा।

---विनोद्या----

अप्रैल १९५२ |छशुष्याना



्रभरता माहित्य पंडल प्रकाशन

# वार्षिक मूल्य ४)] जिल्लि - शाहिट्य [एक प्रति का १०)

## लेख-सूची

१. सच्चा आव	मी	महात्मा गांधी	१६१
२. सर्वोदय-दर		आचार्य विनोवा	१६२
३. इन्तजार व	तीजिए	महात्मा भगवानदीन	१६६
४. सत्याग्रह मं	हि। सर्वोदय	श्री जैनेन्द्रकुमार	१६८
५. जीवन की		हरिभाऊ उपाध्याय	१७१
	कार्यक्रम की शक्ति	श्री रामनारायण उपाध्याय	१७३
७. कांच और	दर्पण	संकलित	<i>,</i> <b>१</b> ७४
८. दांता ताल्	के का भील प्रदेश	श्री अमृतलाल मोदी	. <b>. १</b> ७५
९. एक दृष्टि		श्री विपुला देवी	१७८
•	ता में क्या है और क्या नहीं ?	श्री शंकर दत्तात्रेय जावड़ेकर	१८२
११. क्या व कैरे	7?	हमारी राय	१८७

# रचनात्मक कार्यकर्ताओं से

# निवेदन

प्रिय वन्धु, 🕤

'जीवन-साहित्य' के विषय में आचार्य विनोबा कहते हैं—'''जीवन-साहित्य' विचार के लिए अच्छा खाद्य दे रहा है।''

श्री किशोरलाल मशरूवाला—"मेरी राय में 'जीवन-साहित्य' उपयोगी पत्रिका है । . . . उसमें पढ़ने योग्य चीजें देखता हूं ।"

श्री वियोगी हरि—" 'जीवन-साहित्य' को गांघी-विचार-धारा का मैं एक ऊंचा मासिक पत्र मानता हूं । इस पत्र के जैसे स्वस्थ तया विचारपूर्ण लेख अन्यत्र कम देखने को मिलते हैं।"

इस पत्र को सेवा करने का अधिक-से-अधिक अवसर दीजिये । आप स्वयं तो पढ़ते ही होंगे । कृपया पांच अन्य मित्रों को भी ग्राहक बना दीजिये । वार्षिक झुल्क केवल ८) है ।

> भवदीय व्यवस्थापक

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा निहार प्रादेशिक सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाइमें रियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम-पंचायतों के लिए स्टीकृत

# मीवन साहत्य अहिंसक नवर्षना का मिसक

अप्रैल १९५२ ]

विषेश्व अक ४

#### सचा श्रादमी

धन साधन-मात्र है और उससे सुख तथा दुख दोनों हो सकते हैं। यदि यह अच्छे मनुष्य के हाथ में पडता है तो उसकी बदीकत खेती होतो है और अन्न पैदा होता है, किसान निर्दोध मजदूरी करके धन पाते है और राष्ट्र पुखी होता है। खराब मनुष्य के हाथ में धन पडते से उससे (मान छीजिये कि) गोळा-बाब्द बनते है और लोगों का सबैनाश होता है। गोळा-बाब्द बनते है और लोगों का सबैनाश होता है। गोळा-बाब्द बनाने बाळा राष्ट्र और बिस पर इनका प्रयोग होता है वे दोनों हानि उठाते और दुख पाते हैं।

इस तरह हम देख सकते हैं कि सच्चा आदमी ही घन है। बिस राष्ट्र में नीति है वह घन-सम्पन्न हैं। यह जमाना भोग-विद्यास का नहीं हैं। हरेक खादमी को जितनी मेहनत-मजूरी हो सके, उतनी करनी चाहिए।

'सर्वोदय' से ]

मेरा काम लोगों के दिलों को समझाने और उनके भीतर जो ईव्वर है, उनको जगाने का है। यह मेरा भिनत-मार्ग है। भिनत-मार्ग में भनत भगवान् को जगाने का काम करता है। जागने पर, जो काम करना है, स्वयं भगवान् ही कर लेता है। यह है मेरी भावना इस काम के वारे में। मेरा यह मानना है कि हिंदुस्तान का मसला जमीन का मसला है और जवतक वह हल नहीं होता, इस देश में शान्ति नहीं हो सकती। अभी आपने देखा चुनाव का एक वड़ा भारी प्रयोग हिंदुस्तान में। इतने वड़े पैमाने पर हिंदुस्तान में ही क्या, और कहीं भी चुनाव इसके पहले नहीं हुए। इस चुनाव ने सव लोगों को विना किसी भेदभाव के, वोट का अधिकार दिया। यह नहीं सोचा कि कौन कितना पढ़ा-लिखा है। यह भी नहीं सोचा कि कीन कितना लगान देता है। स्त्री-पूरुप के भेद को भी कोई स्थान नहीं दिया और न जाति-पांति का भेद रखा। यह चीज ही ऐसी है कि अगर हम उसके मानी ठीक समझ लेंगे और समाज की रचना उसके मुआफिक करने की सोचेंगे, तो उससे परिवर्तन आ सकता है और अगर हम इसका अर्थ पूरा नहीं समझेंगे और समाज का ढांचा जैसा आज है वैसा ही रहने देंगे तो यह चुनाव हमारे समाज में उथल-पुथल मचाये विना नहीं रहेगा । जव आप, लोगों से कौल मांगते हैं और लोगों को, मालिक समझकर अधिकार देते हैं कि हर पांच साल के वाद वे अपने नौकरों को वदल सकते हैं, और उस तरह आवश्यक शिक्षण द्वारा उन्हें जगाते भी हैं तो अगर हम ठीक मौके पर न जागे तो वह पुराना ढांचा ढह जाने वाला ही है। लेकिन फिर जिस तरीके से वह ढहेगा उससे समाज में शान्ति नहीं रह सकेगी। जो काम मैंने शुरू किया है उससे हमारे समाज में किसी भी तरह की उथल-पुथल हुए विना एक क्रांति, एक इन्कलाव, आ सकता है। आपने देखा कि दक्षिण भारत में कई लोग खड़े हुए थे। उनमें कांग्रेस वालों के खिलाफ कम्यूनिस्ट भी खड़े ये और लोगों ने उन्हें भी वोट दिया । यह घटना कुछ सबक देती है या नहीं, आप देखें। जो सवक उससे लेना था, मैं तो पहले ही ले चुका हं।

हिंदुस्तान की जनता वहुत नम्म है, श्रद्धालु है। अगर उसकी मुश्किलें हम अपनी मुश्किलें मानते हैं, उसका दुःख अपना दुःख समझते हैं और अगर हम अपनी तरफ से उन मसलों को सुलझाते हैं और उनके दु:खों को दूर करते हैं तो समाज-रचना तो वदल जावेगी ही, वदलने की प्रक्रिया में द्वेप-भावना नहीं बढ़ेगी, कटुता नहीं आयगी। समाज की रचना में परिवर्तन हमेशा होता रहा है, नदी का रूप तीनों मौसमों में वदलता रहता है, सृष्टि का रूप भी ऋतुओं के अनुसार वदलता रहता है। खुद हम अपने जीवन में देखते हैं कि हम वाल्यावस्या से जवानी में आते हैं और यह भी देखते हैं कि जवानी की मस्ती हमेशा टिकती नहीं, बुढ़ापा आता ही है। जगत का यह नित्य गतिमान अर्थ अगर हम न समझें और परिवर्तन की तैयारी न करें तो परिवर्तन तो आवेगा ही; लेकिन हमें उसे लाचारी से स्वीकारना होगा। अगर कोई यह समझे कि बुढ़ापा कभी आयगा ही नहीं तो वह पछतावेगा और अगर वृद्धिपूर्वक पहले ही समझ ले तो बुढ़ापे में औरों पर भार नहीं पड़ेगा, वरना बुढ़ापा तो आवेगा; लेकिन युरी तरह आवेगा। इसका कारण यह है कि आजकल आश्रम-धर्म का ठीक पालन नहीं होता है। शास्त्रकारों ने जो सामाजिक व्यवस्था दी थी वह अव नहीं रही। इन्द्रियां क्षीण होने तक लोग गृहस्थाश्रम नहीं छोड़ते । आखिर जब इंद्रियां छड़खड़ाने लगती हैं, शरीर जर्जर हो जाता है तब लाचार होकर भोग छटते हैं। छेकिन फिर भी वासना कायम ही रहती है। क्या इससे यह वेहतर नहीं होता कि ज्ञान-पूर्वक भोगों को छोड़ दिया जाता, ताकि जीवन में कुछ इज्जत भी रहती ? आज न तो इज्जत है और न लज्जत।

यही देखो न,हिंदुस्तान में अंग्रेजों का राज था। अगर वे दुराग्रह-पूर्वक यहां का अपना राज पकड़े रहते तो उन्हें जाना तो अवस्य पड़ता, पर दुस्मनी कायम रहती; लेकिन वे समझदार थे, सोचने वाले थे, इसलिए धीरे से अपना

१६२

पाय हटा लिया। नतीजा यह हुआ कि आज भी उनका और हमारा सम्बन्ध अच्छा है और जो दुर्व्यवहार हो सकता था उसमें वे मक्त रहे, और आखिर में नाम भी कमा लिया। उसी तरह अगर यह राजा लोग भी हठ पकडते और अपनी रियासतो का विसर्जन न नरते तो उनकी भी दुदंशा होती। आज वे वच गये हैं और अगर ठीक सेवा में लग जाते हैं तो इज्जत भी हासिल कर सक्ते हैं। तो मैने यह दो मिसालें दी सामाजिक परिवर्तन की। इस तरह समाज में परिवर्तन अक्सर होता ही रहता है। लेकिन परिवर्तन करना है यह समझ कर अगर विचारपूर्वक काम विया जाय तो मन के मताबिक परिवर्तन होता है, वरना परिवर्तन हों होता ही है; लेकिन मन के मुताबिक नहीं होता। बहते पानी को ठीक राह ले जाया जाय सो अपनी कल्पना का सुन्दर रमणीक वगीचा तैयार हो सकता है, बरना पानी सी बहेगा ही, बगीचा नहीं बन पायेगा ।

ऐसी हाल्स मे, जबकि हिंदुस्तान में गरीवी बहुत ज्यादा है, उद्योग-धर्य नहीं है और जमीन की माग है तो यह नहीं हो सकता है कि छोग लामोदा रहे। पिछले दिनो दुनिया में परिवर्तन भी काफी हुए है, नये-नये विचार भी प्रकट हुए हैं, और यह नहीं हो सबता कि हिंदुस्तान दुनिया से अछता रह सके । फिर गरीवी इतनी है कि दुनिया में किसी भी और देश से उसकी सुलना नहीं की जा सनती भीर यह भी नहीं हो सकता कि सत्ता बाते ही रचना बदल दी जासने । इसलिए हमें अभी से उचित कदम उठाकर च्याप-वृद्धि है, प्रेम-भाव हे, जमीन का मसला इल करना चाहिए। कोई सुने, न सुने, लोगों को इस सम्बन्ध में समझाना मेरा काम है। जिस तरह प्रेम-पूर्वक लड़की व्याह में दी जाती है, वैसे ही जमीन भी ू जुरुरतवालो को प्रमपूर्वक देने की बात में कह रहा हु। इसका नतीजा यह होगा कि यह जमीन का मसला हल होगा और दुनिया भी देखेगी कि हिंदुस्तान का अपना एक तरीका है और वह दुनिया से निराला है। आज ही (२८ जनवरी) 'हरिजन' असवार में मूदान के सम्बन्ध में एक इंग्लंड के अखबार का लेख छपा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि वह बात हिंदुस्तान में हो समत हो सकतो है कि सागने से क्योंग मिंठे। याणि में नहीं मानता कि और जगह यह समत नहीं है, फिर भी लेकक का यह वहना धायद गलत न हों कि हिंदुस्तान की तरह मह और स्थाने में समत न हो। और फिर मेरी आवाज तो वहुत कमजोर हैं। न मेरे पास कोई समत है। मेरे पास कोई साम है। मेरे पास कीई साम है। मेरे पास है साम है। मेरे पास है। मेरे पास है। मेरे पास है साम है। मेरे पास है। मेरे पास है तो नह पाल तहीं कहता है। स्थान सिंदुस्तान में समय है तो नह पाल मही कहता है। स्थान सिंदुस्तान में समय है तो नह पाल मही कहता है। कहता है। कहता है। सह साम है। कहता है।

में जिल स्थापक भावना से यह मसला हल करना बाहता हूं, उस तरीके से सगर यह मसला हल हुआ तो जो परिलर्जन सामगा, बसे अच्छी खूबतूरत माकल मिलेगी बरना मल को बनेगी, लेकिन यह खूबसूरत गही बनेगी, बस्तुरत बनेगी। उसमें हुमारी कोई कला प्रकट नहीं होती।

. क्ला का काम यह है कि कृतज्ञता-वृद्धि रखते हुए गरीबो पर प्यार करें। हमने गरीबो को मुमि से विचत रवा । यह पाप किया, ऐसा हमें समझना चाहिए और उसके प्रायदिवत में लग जाना चाहिए। तब जो मृति बनेगी वह पुजा के लायक होगी। तब हम अपनी सरकार ऐसी बना सकेंगे जिसे सर्वोदय की सरकार कह सकेंगे, जिसमें कोई किसी के कथे पर सवार नहीं होया। कोई किसी का शोवण नहीं करेगा। हर आदमी यह सोचेगा कि मैं अपनी चिता नहीं करूगा । अगर मेरी चिता कोई करे तो समाज करे. अगर न करे तो भले न करे. इस तरह की व्यवस्था को सर्वोदय व्यवस्था कहते हैं। स्वराज्य के बाद अब हमें ऐसा सर्वोदय समाज कायम करना है। लीन यु ताग ने कहा है कि यह मुल्क-हिंदुस्तान-गाँड इन्टाक्सिकेटेड मुल्क है। यह सही है कि हिंदुस्तान में परमेश्वर के नाम से जितना प्रचार होता है उतना विसी और नाम से नही होता।तेलगाना में कम्यूनिज्म का प्रचार बहुत ज्यादा हुआ है। फिर भी जहा-जहां में गया, सबेरे से शाम तक राम-भजन चलता था। तीन-तीन भील लोग लेने और पहचाने,

भजन गाते आते थे। तव मैंने कहाथा कि कम्यूनिस्ट आयंगे कीर जायंगे, सरकारें भी आयंगी और जायंगी; लेकिन राम-नाम अखंड रहेगा। मैंने यह निष्ठा वहां देखी। कम्यूनिस्ट तो ईववर को नहीं मानते, फिर भी उनके केन्द्रों में मैंने यह निष्ठा देखी। और ठीक भी है,लोग ऐसी निष्ठा क्यों नहीं रखेंगे ? ईश्वर पर उनका भरोसा है। वे ईश्वर को पिता मानते हैं और आखिर पिता अपने बच्चों के लिये क्या चाहता है ? यह कि सव लड़के सुख से रहें। ईश्वर तो पिता-माता दोनों हैं, और वह है जिसके कारण पिता-माता को प्रेम प्राप्त हुआ है। वह क्या चाहेगा ? क्या वह यह नहीं चाहेगा कि सव मुखी रहें ? और इसमें सोचने की क्या बात है ? जरा देखने से मालूम होगा कि राजा-रंक सबके सामने भगवान् सूर्यनारायण समान रूप से प्रकाश देते हैं, उसी तरह हवा, पानी और जमीन भी सबके लिये समान पैदा की है; परन्तु हवा और पानी तो सवको मिलते हैं, लेकिन जमीन कुछ लोगों के पास है कुछ लोगों के पास नहीं है। क्या परमेश्वर की ऐसी इच्छा हो सकती है कि जो लोग खुद काश्त नहीं कर सकते उनके पास ज्यादा जमीन हो और जो काश्त करते हैं उनके पास न हो ? क्या ईश्वर की इच्छा हो सकती है कि जो जमीन उसने निर्माण की वह कुछ छोगों के पास तो बहुत ज्यादा रहे और कइयों के पास विल्कूल न रहे ? एक के पास पांच एकड़ हो और दूसरे के पास पांच सौ एकड़ हो ? क्या ईश्वर की इच्छा यह हो सकती है कि जिस गंगा का कि उसने निर्माण किया उसमें एक तो पानी पीवे, दूसरा न पी सके ? जाहिर है कि अगर ऐसा होगा तो यह सब भगवान की इच्छा के विरुद्ध होगा, और अगर एक नदी के प्रवाह के विरुद्ध तैरना भी मुक्तिल होता है तो परमेश्वर की इच्छा के खिलाफ खड़ा रहना कितना मुश्किल हो सकता है ? परमेश्वर के खिलाफ कीन खड़ा होता है? —वह जो शैतान है,दानव है, भले ही वह मानव के रूप में क्यों न दिखाई देता हो।

तो हमें जितनी जमीन जोतनी हो उतनी हम रखें, ज्यादा न रखें। लोग अपने को जमीन का स्वामी समझते हैं, जबिक जमीन परमेश्वर ने पैदा की है। जिस वस्तु का स्वामी ईश्वर है उसके लिये खुद को जो ईश्वर या मालिक या भोगी कहता है, उसे गीता ने असुर कहा है। ऐसी वृत्ति से सुख कैसे होगा ? उससे तो झगड़े वढ़ेंगे। आज हमारे देश में नये-नये पक्ष निकल रहे हैं। जिधर देखो उघर पक्ष-ही-पक्ष खड़े हो रहे हैं। इसका कारण यह चनाव नहीं है। चनाव तो निमित्त है। कारण तो यह है कि हिंदुस्तान में लोगों को असंतोप है जिसका मूल किसी व्यक्ति में नहीं, समाज-रचना में है। उस समाज-रचना को बदलने के लिये हमें जो कुछ करना चाहिए वह अगर हम नहीं करते हैं और लोगों को दोप देते हैं तो वह हमारी गलती है। वास्तव में समाज की आर्थिक और सामाजिक रचना आज विल्कुल विगड़ चुकी है और यही वजह है कि आपस में हेप-भाव वढ़ रहा है। बाह्मण अपने को श्रेष्ठ समझता है। क्षत्रिय समझता है कि सत्ता हमारे हाथ में होनी चाहिए-और इस तरह हर जाति वाले अपने लिये राजनैतिक हक की वात करने लगे हैं और अपना सब भला दूसरे का सव वुरा ऐसा समझते हैं। परिणाम यह होता है कि न हम सामाजिक ढांचा बदल पाते हैं और न आर्थिक। राजनैतिक सत्ता तो हमें मिली है; परन्तु हम परिवर्तन तो तव ला सकते हैं जब हम पहचान लें कि आज की सामाजिक और आर्थिक रचना विगड़ी हुई है। पचास एकड़वाला अगर कहे-"मेरे पास तो पचास एकड़ ही है। उसमें से मैं दस एकड़ कैसे दे सकता हूं? मुझे तकलीफ होगी।" तो मैं पूछता हूं कि बुढ़ापे में भी आपको तकलीफ होगी या नहीं ? मनुष्य निर्जल एकादशी करता है तो उसे शारीरिक कष्ट होता ही है; परन्तु मनुष्य का समाधान केवल शारीरिक सुख से नहीं होता । उसे मानसिक सुख की आवश्यकता होती है। जो शक्स पचास एकड़ में से दस एकड़ देगा उसके पास चालीस एकड़ रहेंगे यह वात सही है। लेकिन यह ज़न चालीस में भी उतनी फसल निकाल सकता है जितनी पचास में से निकालता था। घर में पांच लड़के होते हुए भी छठा लड़का पैदा होने पर और जायदाद छोटी होने पर भी अगर वह छठा जायदाद का हकदार हो सकता है तो दरिद्रनारायण को छठा क्यों नहीं मानता है ? इसलिए में सबकी समझाता हूं कि अगर घर में पांच लोग दीखते हैं तो एक न दीखने

षाले को भी मान को और उसके किये छठा हिस्सा मझे दे दो। शास्त्रों ने भी छठा हिस्सा राजा को देने को कहा है। हिंदस्तान का राजा कौन है ?इसका जवाव मझे देदो। जब आपने बोटिंग का अधिकार सबको दिया है और जब देश में गरीबों की तादाद ही ज्यादा है तो में कहना चाहता ह कि हिंदुस्तान का राजा गरीब ही है, दरिद्रनारायण ही है। किसी यनिवसिटी का डिग्री-प्राप्त व्यक्ति या और कोई इसरा न रोडपति हिंदुस्तान का राजा नहीं हो सकता । इसलिए उस राजा को अपना हक दीजिए, छठा हिस्सा दीजिए । जब आप अपने जीवन का छठा हिस्सा गरीव को देंगे तो वह आपके लिये मरने को तैयार भी रहेगा । ययाति के पाच लडको में से अपना यौवन देने के लिये सिर्फ एक लडका तैयार हुआ था। आपके लडको में से शायद एक भी तैयार न हो । लेकिन यह गरीब, जिमे आप अमीन देंगे, आपके लिय जान देने को तैयार होगा। ऐसा उत्तम मित्र हम कमाते है और बदले में देते क्या हैं? केवल यही न, बीस में चार एकड । उस सारे प्रश्न पर भदान की दृष्टि से नहीं, आत्मबत्याण की दृष्टि में मोजियेगा।

मेरे साहतो, इन विनो आपके माल में नई चुनाव-सभाए हुई होगी, जिनमें एक पता ने दूधरे पक्ष की बुराई भी की होगी। एक निल्या-नई ही मानो उन समाओ में चुक हुन होगा। आरम-स्तुति, परिनिन्दा का वर्षन उसकें भारको होता रहा होगा, पर आज एक फलरीर आपकें पास आ पहुचा है जो आपने सामने वेचक पत्रवान का मूगान ही करता बाहता है कर रहा है। आपको भगवान् का पुत्र समसकर केवक अपना नर्सव्य सवक्षाने के लिये आपनें पास आया हैं। वीर किसमें नहीं होते? देशि सबमें होने हे बीर मुसमें मी है। विनन में लागता हु कि सामनें मान-या अस्तित्या जिनी हुई है। आपस्य ही नहीं जानते। आपनो मानुम है कि एक व्याप से भी एक महान बात्मीकि ऋषि वन सका। और, आप ही वी वे

लोग हैं जो पत्यर से भी भगवान बना सकते हैं। पत्यर को भगवान बनाने की शक्ति जिनमें है, मेरे लिये तो वे अत्यन्त स्तति के लायक है । इसलिए अगर आप अपने स्वरूप को समझेंगे तो जो चाहेगे कर सकेंगे। और ऐसे बाप दानितमान होते हुए भी अपनी शक्ति परनिरदा में खर्च कर रहे हैं। अगर हम अपनी आल क्रव कर छेते हैं सो सुष्टि में ऐसी कौनसी शक्ति है जो हमारी आज में जबरन आ वसे ? यानी सब्दि की जरम करने की यक्ति आपमें है। यह ज्ञान आपको हो जायगा तो आप जैसा चाहेने परिवर्तन कर सकेते । जहा यह विधार आपके हृदय में उदित हो जायगा वहा आप सरकार की तरफ देखते बैठे नहीं रहेगे। आप स्वय परिवर्तन ला सकेंगे। थह सारी दानित आपमें है और इसलिए मैं आपसे भदान-यत में अपना हविभाग देने के लिये कह रहा हा। जाज भी मुझे जमीन तो मिल रही है लेकिन मेरी आवाज में अब भी कुछ रबोगण और तमोगण पडा है। जब मेरी आवाज में पूर्णतया सरवगण ही प्रकट होगा तब में जो मागगा वह आपको देना होगा । आज आप इस काम का प्रारम्भ कीजियेवा। चुनाव में जो शक्ति आप कोगो ने लगाई उससे आधी भी अगर इस काम में लगा दें सी दो माह मे यह काम पूरा हो सकता है। और दो माह भी क्यो छयने चाहिए? इन्ही चुनाव के दिनो में ही अभी पीली-भीत में था तो मैने देखा कि उन लोगा ने बारह हजार एकडकर दिये । जरा आप पाच-सात रोज भी पूरी शक्तिके साथ काम करें तो आपके जिलेका कोटा पूरा हो सकता है। गगा और यमना के इस प्रदेश में यह काम पूरा हो जाय तो इससे सारे भारत को प्रेरणा मिल सकेगी। अभी जब मैं शहिपकेश था तो बहा गगा का जो दश्य मेंने देखा बह कितना अद्भुत था । भेरी स्थिति वहा ख्यान करने लायक नहीं रही। इसलिए में कहता है कि यह प्रदेश जिसे आर्यावर्त कहते हैं और जिसने राम, कृष्ण और बद्ध जैसी विमतियों को जन्म दिया है वह सारे भारत को प्रेरणा दे सकता है।

<sup>्</sup>रक्ष भूरान-मन के डिल्पिनेले में उत्तर प्रदेश की पै-ल-मात्रा करते हुए मै-पुरी में २८ जनवरी १९५२ की दिश हुआ भाषण

# इन्तज़ार कीजिए

सर्वोदय का खयाल वड़ा अच्छा है। इस खयाल में जितना ही दम डाला जाय उतना ही अच्छा है। जिस सफलता को हमने आदर्श मान रखा है वह तो नहीं होगी, पर उतनी सफलता जरूर होगी, जितना हम जोर लगायंगे।

यह ठीक है कि छप्पर जितने आदमी उठाते हैं उनके लिये वह ज्यादा भारी नहीं होता, पर वही छप्पर उनके लिये वहुत भारी हो सकता है अगर वहां कोई ऐसा आदमी मीजूद न हो जो उनका, छप्पर को एक साय उठाने के लिये, दिल न उठाता रहे। छप्पर उठाते वक्त हर आदमी अपना पूरा जोर लगाता है; पर इतने से ही काम नहीं चलता। इशारे के लिये एक आदमी चाहिए। और यही वह कुंजी है, जिससे सर्वोदय का ताला खुल सकता है।

अंग्रेजों की हुकूमत का पेड़ इतनी गहरी जड़ जमा चुका या कि कई वार अलग-अलग तरह से अलग-अलग दलों ने पूरा-पूरा जोर लगा कर उसको गिराना चाहा; पर वह न गिर सका । उसी पेड़ को सन् '२१ में हिंदु-स्तान ने गिराने की कोशिय की और उसकी जड़ हिल गई। गिरा २६ वरस के वाद, यह दूसरी वात है।

सन् '२१ में हमने भारत के सब बादिमयों का उदय अपनी आंख से देखा था। सर्वोदय इसके सिवाय और कुछ हो ही नहीं सकता कि हर आदमी अपने को मिटाकर दूसरे की मलाई सोचे। विश्वास रक्खें कि वह नहीं मिटेगा। गोल चक्कर वृंगकर अगर सब आदमी एक दूसरे के घोंटू पर बैठ जायं तो बिना कुसों के कुमों का आनन्द ले सकते हैं और किसी को भी ज्यादा यकान नहीं होगी। सर्वोदय में यही होता है। सन् '२१ में सबको यह दिखाई दे रहा था कि सब ऊंचे उठते चले जा रहे हैं। इसीलिए सब पूरा जोर लगाये हुए थे। और जगाये हुए थे एक गांवी के इशारे पर। उस वक्त हिंदुस्तान की आज़दी का ताला खुल गया, दरवाज़ा पुलते-खुलते रह गया।

मध्य-प्रदेश में मंडला एक छोटां-सा नगर है। उसके दोनों तरफ नदी बहती है। एक तरह से वह एक टापू है। एक वार नदी में वाढ़ आ गई और एक दिन यह हाल हुआ कि मंडला अब डूबा, अब डूबा! पर किसी तरह बच गया। हम वहां तहकीकात के लिये पहुंचे। और वातों के अलावा यह बात सबके मुंह पर थी कि जोर की वाढ़ के तीनों दिन मंडला में बहा रहा।

क्या मतलब ? मतलब यह कि सब भेदभाव उठ गया। छतों पर से वह उसके यहां खाना बना कर भेज रहा है, वह उसके पहां। कोई गैर रह ही नहीं गया। छुआछूत मिट गई। हिंदू-मुसलमानपना मिट गया। ऊंच-नीच खत्म हो गई। हर दूसरे के लिये मरने को तैयार हो गये। शायद उसीका यह नतीजा हुआ कि जन का नुक्सान बिल्कुल नहीं हुआ, बन का नुक्सान हुआ। इसे आप मंडला के सब आदिमियों का उदय कह सकते है।

सर्वोदय'के माने हैं दुनिया के सब आदिमयों का उदय। दूसरे अयों में दुनिया के सब आदिमयों में से भेद-भाव का उठ जाना। ऊंच-नीच का खत्म हो जाना। क्या यह संभव हैं? हिंदुस्तान में सन् '२१ वापस नहीं लाया जा सकता। तब सारी दुनिया में सन् '२१ कैसे लाया जा सकता हैं?

तो क्या सर्वोदय को तिलांजिल दो जाय ? नहीं-नहीं, तिलांजिल क्यों दी जाय ? सत्य और व्यहिंसा जिनके हजारों वर्षों से सारी दुनिया में फैलाने की कोशिश की जा रही है और कभी एक गांव में भी नहीं फैल पाये, तो क्या लोगों ने इस विचार को छोड़ दिया ? सर्वोदय इस विना पर नहीं छोड़ा जा सकता । आज उसके सफल होने के कोई साधन नहीं है । पर वह बीज-रूप में रहेगा ही । बभी ऋतु नहीं बाई । बोया नहीं जा सकेगा । वह चिनगारी के रूप में रहेगा ही । बभी ईंधन नहीं बाया । ली में तबदील नहीं किया जा सकेगा ।

फाइड की कृपा से जब आज कॉलिज का हर लड़का और लड़की अपने मां-बाप के घारे में यह कह सकते हैं

#### इन्तजार कीजिए: महात्मा भगवानदीन

कि जरहोने हमें पैदा करके हमारोकपरकाग बहुसान किया, जरहोने जो हुछ किया अपने जानन्द के लिये किया, हम तो पैदा हो गये, तब सर्वोदय की बाद उनके गढ़े कैसे उतर सक्ती हैं? जो मां-वाप का अहुसान नहों पानता, जो मां-वाप को सेवा नहीं कर सकता, वह किसी इसरे को उठाने को बात कैसे शोच सकता है? जो आदमी जरना नरका सेवा हो जाने के दखा के बहु सीचक में भते आदमी को कैसे निकाल सकता है?

थवग का ितमा देवा वा सकता है र गा-वाप को बहुती म विदाये हुए नते पाव चवना हुना वह चित्रवट पर देवा वा सकता है तो सपने में भी नही देवा वा सकता है स्वयुव्ध चवते हुए देवने की तो करणवा भी नहीं को वो सम्बन्ध चवते हुए देवने की तो करणवा भी नहीं को वा सकता है सत्रवट पर धवण को देखकर हो। दो-वी नात्र आसू बहाती देवी जा सकती है, पर एक आख को भी ऐसा कोई सच्चा दुवर देखकर एक आझु विराजे का

सीभाग्य प्राप्त नही हो सनता।

सवीदय को बान उसके मुहसे निकले तो योगा देवी हैं जो किसी के कब हैं हो किस निक के किसे निक्तो दोवरे की कल्दत न समसे। उसके मुहसे भी निकले दो बोगा देवी हैं जो किसी से कब बैठे हो न्याय के किसे उसीको मुनिक्त मानके जिससे वह लडा है। उसके मुह है भी घोमा देवी है जो किसी से खड कर हमार के किसे वहीं किसी होतरी आपनी को अपना मुन्तिक मान हो। आज जरा-उरा बात में बदालन का दरवाडा लड्डानी बाले कर सर्वोदय की बात कहते हैं तो उनने मुहसे बह बोगा नहीं देवी। मह ठोक हैं कि गापीसी विश्ववन्युख नामी बच्चा

पालने के लिये हिंदुस्तानियों के हाथ में छीड यये हैं और यह भी ठीक हैं कि वह वाबीय में हो पक घरता है। छेकिन बाज मा मारत और पाहे किसी विचार को पाल सकता हो, विस्वयम्पूत के विचार को पालने को सोध्या नहीं रखता। परिचम यालों को दोड बहुमनल को और है, विस्वयम्पूत को और नहीं। बारत परिचम के पान पर-पास रखहर बल रहा है। किर यह नहीं कहा जा पर-पास रखहर बल रहा है। किर यह नहीं कहा जा पहता कि वह विस्व-मम्पूत की और जा रहा है। बोर जब उपर नहीं जा रहां हो जह खरीं स हेना-देना ।

खन्ं '२२ में जब सुराब की बात छठी तो कुछ छोगों ने यह चाहा कि उन्हें यह बताया जाये कि मुराब से मतजब केरे राज से हैं। और उन्हें कुछ नहीं बताया गया, बयोकि सुराब केने बाजों के दिन में सुराज का ठोक-केर नरवा ही। न या, जिसका नतीजा यह हुआ कि आज भारत में कहने के जिये प्रवार राज हैं पर इस राज में ने सब बुराइया मौजूद हो जो सन् '५७ से पहले कपनी के राज में मौजूद थी। आर सर्वोदय का मी कुछ ऐसा ही हाल हो रहा है। यह अभी तन साफ नहों हुआ कि सर्वोद्य से आपका मन्हन बचा है। आज ऐसा चया हो रहा हैं जिसे आप नहीं चाहते ? यह नहीं चाहते तो आप यया चाहते हैं ? इस नाकपाई का प्रह नतीजा होगा कि स्वरेंदर के साथ से जो चीज सही होगी वह ऐसा ही एक क्ये के विसी, जैसे दनिया के और धर्म।

नाम सर्वोदय रहेगा और एक छोटी सी जमात बन जायगी, जो अपने उदय की इतनी कीशिश करेगी जिसमें सबी का अस्त होना बरूरी होगा 1

सर्वोदय में होटे-वह होगे, ऊपे नीचे भी होगे, प्रदीव-व्यामीर मी होगे। बाय की किसी व्यवस्था में कों है यनद नहीं आयेगा। अन्तर आयेगा चिक्रं दिलों में । यह सब ऐसे ही एक हो गये होगे जैसे सन् '२१ में हो यो। घर में किसी बच्चे का उदय नहीं एक पाता। बाग में बाग के किसी होटे-से पोने का उदय नहीं हक पाता। बेसे ही दिन में एक हो जाने पर किसी के उदय में नोई स्कार्य न होगी। आय चोनी फीरिया वालों की सादित जान दे रहे हैं। और उचकी जान के रहे हैं दूधरे। स्वोद्य की अस्था होने पर जान देने बाते सब होने जीर जान के नाला कीई न होता।

बाब के दग की सरकार, बाज के दग का ब्यापार, बाब ने दम का कला-कीवल, आज के दम के तालीग, बाब के दम के बेल, बाब के दम को कला, बाज का साहित्य, बाब का दगव-सिगार, बाब का रहन-पहन, आज के थोळ-बाल के सरीके—देगमें से कोई एक भी ऐसा नहीं है जो हमें सर्वोद्य की बोर के जा सके। बगर कमी सर्वोद्य के थोज में किल्ला पूरा तो बह साबद

## जीवन-साहित्य: अप्रैल १९५२

यह दिन होगा जब हम आज की सभ्यता से ऊव चुके होंगे और यह समझ गये होंगे कि यह आज की सभ्यता ही है जो हमें एक-दूसरे के अन्त करने पूर तैयार कर देती है। यह आज की सभ्यता ही है जो हममें सबसे प्रेम नहीं होने देती और यह आज की सभ्यता ही है जो हमें आगे बढ़ने से रोके हुए है और अब यह जरूरी है कि इस सभ्यता की तरफ से मुंह फेरा जाये और सर्वोदय के काम में लगा जाये।

्पर यह दिन तो अभी पास नहीं मालूम होते। सर्वोदय की आवाज उठाए जाइये और शांति के साथ इन्तजार किए जाइये।

### जैनेन्द्रकुमार O

सर्वोदय की मेरी अपनी निष्ठा को इवर कई ओर से चुनीतो मिलती रही है। आस्तिक होकर इस विश्वास से में डिग तो सकता नहीं कि कुछ परम सत्य है जिसमें हम सब एक है। इस तरह सर्वोदयकी निष्ठा मेरे लिए अनिवायं ही है। पर इवर जान पड़ता है कि उस विश्वास को मुझे बलपूर्वक पकड़े रहना पड़ा है। उसपर चलना मुक्किल जान पड़ा है। जैसे वह ऐसा आदर्श हो जो यथार्थ से उलटा है। वह आसमानी हो और घरती उससे अछूनी रह जाती हो। प्रवृति उससे विमुख दीखती हो और निवृत्ति में ही उसकी सिद्धि हो। यानी उस निष्ठामें से कर्म की स्फूर्ति नहीं मिली है, बेग और अदम्यता नहीं प्राप्त हुई है, बल्कि जैसे एक हठ और एक कट्टरता हाय रह गई है जो आदमी की कर्म-कुरालता को और उसकी लोक-संग्राहक दावित को खाती है।

गांधीजी के जमाने में सर्वोदय एक स्वयं-सिद्ध और सफल नीति जान पड़ती थी। उसके नीचे राष्ट्र एक और इकट्ठा हो रहा था, वह शक्ति पा रहा था और जन-जीवन का प्रत्येक तत्व अनुभव करता था कि वह उठ रहा है और वढ़ रहा है। समन्वय की नीति, जान पड़ता था, सबल और सफल नीति है। संवर्ष की नीति उसकी अपेक्षा में विकलं या अल्पफल वाली है। वर्ग-विग्रह, साम्प्रदायिक स्पद्धी या दलगत होड़ उतनी सही या कार्यका री चीजें तब नहीं जान पड़ती थीं। सैन्य या स्टेट की सत्ता में तब उतना सत्य नहीं वीजता था जितना जनता में और उसके रचनात्मक श्रम में। जान पड़ता था कि लड़ाई सब सतह पर है भीतर मेल और सहयोग है, और विग्रह उन लोगों का शीक है जो

# सत्याग्रह में ही सर्वोद्य

जनता की कृपा और मेहनत पर जीते हैं। राजनीतिक काम तब साफ ही दोयम था और रचनात्मक काम पहला। अहिंसा तब निरी भलमनसाहत नहीं थी, उसकें साथ सत्य का योग था और उसमें प्रखर शक्ति थी। राजनीतिक सत्ता तब उस अहिंसात्मक शक्ति से स्वतन्त्र न थी, बल्कि उसकी अपेक्षा और अधीनता तक में थी।

गांधीजी के वाद स्थिति वदली। अब सर्वोदय का 🕠 दर्गन प्रयासपूर्वक साथ रखना पड़ता है। वह उतना अमोघ भीर प्रत्यक्ष नहीं है। सर्वोदय के ऊपर पार्टी का उदय आ गया दीखता है। पार्टी ही सब जगह स्टेट बनाती है। वह बहुमत की होती है और अल्पमत को उसकी कृपा पर रहना पड़ता है। लोकतन्त्र की आजकल यही पद्धति है। शासन का तंत्र लगभग सब जगह इसी प्रकार का है। इस-लिए स्टेटमूलक समाज-व्यवस्था सर्वोदयी व्यवस्था नहीं हो सकती । स्टेट की सत्ता सैन्य-निभंर है। सैनिक का काम, गौरव उसे कितना भी मिले, अन्त में अनुत्पादक है। मानव-संपत्ति को वढ़ाने वाला नहीं, घटाने वाला है। उसकी सार्यंकता विग्रह में ही है, युद्ध के अभाव में सशस्त्र सैनिक के लिए कोई काम नहीं रह जाता। इसलिए जहां काम-काज हकूमत के जोर से होते है वहां वातावरण सर्वोदय के वजाय दलोदय का हो जाता है। एक दल का जीतना दूसरे दल या दलों के हारने के आघार पर ही हो सकता है। और गांधीजी के जाने के वाद जैसे आज मुख्य और महत्वपूर्ण काम रचना और वनाना नहीं वित्क चुनना और चुने जाना वन गया दीखता है। राजनीतिक के नीचे रचनात्मक आ गया है। यानी सर्वोदय ठीक है, रचनात्मक भी ठीक है;

लेकिन इस धर्त पर कि सर्योदय दलोदय के नीचे हो और रचनारमक राजनीतिक के मातहत हो । सक्षेप में विश्रहा-रमक दर्यन उपर आगया है और हमारे नाम-नाज-अच्छे, उपयोगी, रचनात्मक काम भी---उसी के तले चल रहे हैं ।

मह बस्तुस्थिति सर्वोदय-सम्बन्धी वेरी निष्ठा पर चूनौनी बनचर आई है। में अपने साम अब भी बनाव रहा हू और इस नेतीओ रह आबा है कि सराबी वस्तुस्थिति में नहीं है, न मही है कि विग्रहावार में कोई नहें साहित्यति ये आई है, बिक चा हो सर्वोदय वा दर्शन हमारा एकागी है या फिर उसने प्रति हमारा समर्पण सपूर्ण नहीं है।

मुझे जान पटता है कि सत्याग्रह में ही सर्वोदय की सिद्धि है। आग्रह सत्य ना रखना ही होगा। सर्व नो सत्य से अरुग हम नहीं पा या पकड नहीं सनते । गिनती ना वह विषय नहीं है। अगर इतने वरोड आदमी दुनिया में रहने है तो उन सवका सा एक एक का, खयाल या लिहाज करके चलने में सर्वोदय नहीं संघेगा। ऐसे उलझन पैदा होगी और हो सरता है कि परिणाम में निष्वेष्टता हाथ आय । वाहर जो अनेवता है--बट्टत से हित है, दल है, बगें हैं, देश है, राज्य है-- उन सबने बीच हठात जोड-मेल मिलाने की कोशिश सर्वोदय को पास नहीं छायगी। यह कोशिश सत्य के आग्रह को साथ रत्न थिना इतनी भावनामयी बनी रहेगी कि ययाथ में उसका परिणाम कुछ न हो पायगा । इसलिए सर्वोदय के कार्यत्रम में सत्याग्रह का तन्त्र यदि श्रीण हो रहगा तो उसकी सारी रचनात्मकता जनसामान्य म सर्वोदयी भावना को उमार नहीं संकेगी और विग्रहवाद की बाढ को रोत नहीं सवेगी।

कायस ने हाथ में आज स्वनन्त्र भारत में हरूमत की सामहोर हैं। उत्तन अभी मुनाव जीता है और पाम वर्ष के लिए मेन्द्र म और प्राता में उस सासन पर आता मिला है। लिए मेन्द्र म और प्राता में उस सासन पर आता मिला है। माग्रेस गांधीनी मी इच्छानुतार कोन्सेसक सम नहीं बन सत्ती। वह उन जननको को नमात में अपने मो नहीं परिपात पर सकी, जो प्रजाजन में मुक्तिमत कर सो जाय। प्रजा नहीं बहु राजा वती। नि चदेह गढ़ उसले प्रजा के हिन के लिए निया। गांधीनी को चदि यह छनता या के हिन के लिए निया। गांधीनी को चदि यह छनता या के जाना पहला हिन समते हैं कि स्वय प्रजा का आगांधी कर जाना पहला हिन समते हैं कि स्वय प्रजा का आगांधी

एकता बनाने से अधिक उसे प्रवा का उद्धार करना था। इस्रतिष् प्रवा के जीवन-मान से बुछ उठकर रहना और नीचे व रहकर पदो पर रहना उसे अयुक्त नही जान पडा। ऐसी हालत में काग्रेस स्वय में राष्ट्र का प्रतीक या प्रति निम्ब नही रह गई। यह एक सगठन और दल बन गयी।

काषेस बहु भीज यो जिसको गाधीजों का आधीर्याय प्राप्तया। गायीजों का दर्धन, नार्य रम और साल्योकन कापेस के साय्यम से मूर्त हुआ। काम्यस के द्वारा गाधीजों ना काम सामने आया और फैंका और स्थानी मिकल कर रहुँचा। उस सन्म मलेक रक और कां और हिंहा अपने अपने विरोध में मिक्टी चले गए और काम समय मानो एक साठन न यो, सह स्वय एक शादर्श और जागर भी। एक साठन न यो, सह स्वय एक शादर्श और जागर भी। यो स्वय अतीर सा सही बल है जो वागेस को हुकूमन पर बाने हुए हैं। केंक्लिन यह बल कम हो रहा है। हुक्स जाहर लाले जा जन-सपकें भी बात वारवार कहने है सानी उनकों कमी अनुमय करते हैं। इसवा बसा यही मतलब नहीं है कि सर्वोदय से कायेस खुत होकर एथोन्य की तरफ आ रही है और इसकिए मिलेल पड़ रखी हैं?

प्रत्म है कि सर्वोदय अपने प्रति और इस पक्षोदय और प्रशादह के प्रति क्या करे 'केकल द्वा का गण कि गाधीजी का उसे नेनृत्व मिला था अपने में दल वन जाने पर उस का क्षांस से साथ कोंदेवी तद्वात नहीं हो सकता। उसकी शहून मूर्ति खुठी रहनी ही चाहिए और कांग्रेस के साथ उसे समान्त होने वा हक नहीं है। कांग्रेस के साथ उसे समान्त होने वा हक नहीं है। कांग्रेस को सर्वोदय-नीति के प्रति जगा हुआ रखने का काम जिसवा है बह स्वय उद्याम सीमित नहीं वत सकता।

सवांदय बया अराजनीतिक रहे यह प्रश्न उठता रहा है और आगे भी उठना रहेगा। पर वह सेदानिक है। शायद उस प्रश्न को स्वय में स्वर्त न होने में शुनिया भी प्रतींजिए हिंक वह वैद्यानिक है। यवार्ष में जीवन में लान-वर्षों नहीं है और कोई प्रमाव व्यापन होने पर अराजनीतिक रह नहीं सकता। या तो स्वेत रूप से राजनीतिक या कि राजनीति का निक्षेट आयेट। भावना की व्यवस्था में गिनती नहीं है और इस्रविष्ट भावना की व्यवस्था में राजनीति की निक्षेट आयेट। भावना की व्यवस्था में

लेकिन इसी जगह उलझन है। और मुझे जान पड़ता है कि सर्वोदय शब्द की व्याप्ति भावना तक है। सबका भला हम चाह सकते हैं, चाहते हैं, पर कर किसी तरह नहीं सकते। जहां लोगों को अपनी भलाई पदार्थ से जुड़ी मालूम होती है उस संसार में एक की भलाई में दूसरे की बुराई हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। धन का समान वितरण हो तो किसी से छेकर किसी को देना होगा। जिसकी दिया उसकी भलाई है तो जिससे लिया उसकी बुराई दीख आएगी। लौकिक हित और स्वार्थी में इस तरह परस्पर-विरोध रहता ही है। सर्वोदय को इस लौकिक धरातल से थछता रखकरचलाने में ही असलीसर्वोदयता अक्षण रहती जान पड़ती हो, तो सर्वोदय कुछ ऐसा निरा आध्यात्मिक हो जायगा कि जागतिक तल पर शून्य दीख आय। वह चीज भारत में कम नहीं रही; लेकिन उतने से काम नही चला। भावना की जबिक सीमा नहीं है तब कमें सदा सीमित होगा। इसी कारण कर्म से तटस्थता एक प्रकार का पलायन है। वह असामाजिक अतएव अनाध्यात्मिक है। सर्वोदय में यदि कर्म का समावेश है तो उसकी सफलता के लिए भावकता के साथ एक निर्ममता भी आवश्यक है। सर्वोदय की कार्य-प्रणाली में यदि कुछ विछुड़ते हों, कुछ असुविधा अनुभव करते हों, कुछ उसे अपने लिए हठात् अप्रिय मानते हों, तो इस कारण वह प्रवृत्ति सदोप नहीं हो जाती । निरुचय ही हर प्रवृत्ति सविनय होगी किंतु उससे अधिक मांग प्रवृतिशील से नहीं रखी जा सकती । वह अहिंसा की कायरता बना देना होगा।

विनोवा का भूदान-यज्ञ सर्वोदय की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। ज्मीन भगवान ने दी है, लेकिन यहां
उसका स्वत्व वट गया है। वह सबकी नहीं है, केवल उपयोग और श्रम की नहीं है। श्रम के योग से वह हमको अन्न
और फल देती है इसलिए न्याय से वह उसकी है जो अपने
श्रम के योग से बस्ती को अन्नदा और फलदा बनाता है।
विनोवा उनसे जिनके पास अधिक है बस्ती लेते हैं उनके
लिए जिनके पास नहीं है। यह काम सद्भावना के बल पर
होता है। इसरे किसी बल से नहीं। आजके दिन
यह बड़ा काम है और सद्भावना के सामर्थ्य से जिनका
विस्वास उठ गया है उनकी आंच खोल दे सकता है।

लेकिन सर्वोदय की श्रद्धा इतनी गहरी आदमी में पठे कि विग्रह का विश्वास उसमें से निर्मूल हो जाय, इसके लिए आवश्यक है कि विग्रह और संवर्ष में से सबने वाली शक्ति प्रत्यक्षतः आदमी को निर्वल दीख आए। अन्याय पलता है क्योंकि उसको सह लिया जाता है, उसका प्रतिकार नहीं किया जाता। असत्य भी उसी प्रकार अपनी शक्ति से नहीं जीता, शक्ति उसमें है ही कहां। फिर भी जीता दीखता है तो इसलिए कि सत्य चुप रहता है। सत्य के इस आग्रह में ही अमली शक्ति पड़ी हैं। उस प्रकार के आग्रह में से सिवनय अवज्ञा और कानून-भंग भी निकल सकता है। कुछ उस प्रकार का काम आज की जैसी विकट और भीपण परिस्थित में सर्वोदय यदि जगा सका तो संभव है कि वह प्रकाश लोगों को दीख आय जिसकी इस अधेर में जरूरत है।

भूदान श्रमिक को धरती तो दे देगा; पर श्रमिक को अपना श्रम-फल भी मिले, वह उसके हाथों से उड़कर कहीं दूर के गोदामों में नहीं पहुंच जाय, इसका उपाय भी 🦳 सर्वोदय-दृष्टिको दिखाना और सर्वोदय के कार्यक्रम की करके बताना होगा। दुनिया में सल्तनतें बदली हैं और व्यवस्था वदली है। यह काम खुनी क्रांति के ज्रिये हुआ है। हाल की यह बात है, और इन क्रांतियों का पूरा और सही परिणाम जांचने के लिए अभी समय का अंतर काफी नहीं है। क्रांति का खुनीपन कोई खूबसूरत चीज नहीं कही जा सकती । उसे विद्या भी कोई नहीं मानता । मानना चाहिए कि मनुष्य उससे अधिक सभ्य और संस्कृत हो रहा है। क्रांति वह करेगा, कर सकता है, पर आदमीयत के रास्ते से, जान-विरयत के सहारे नहीं। यह श्रद्धा सर्वोदय की है। विप्रहवाद एक नक्शा देता है जिसमें सारा ढांचा रूपांतरित दीखता है । स्टेट जैसे महायंत्र को शुद्ध और श्रमाबीन बना दिखाने का उसका दावा है। अगर खुनी कांति टलनी है तो सर्वोदय को वह सब काम करके बताना अपना जिम्मा मानना होगा । स्टेट आयुनिक मानव-विज्ञान का सबसे बड़ा और पेचीदा यंत्र है । उसका परिष्कार सर्वोदय करेगा या उससे असहकार ? उसके प्रति नितात तटस्य और निवृत्त रहने से उन असंख्य लोगों को कोई ढाड्स नहीं पहुंचता जो अपने

नित्यप्रित में मुख-दृख को उस म्टेट के महायत्र से सीधा जड़ा देखते हैं।

सत्य यदि एक चिनारा है तो अहिंसा दूसरा। दोनो से नियत होनर हो जीवन कुछ जगर महाता और उठसकता है। रजनारसक प्रदीत्या म कर्मण्यता ही रहेगी और सत्यायह मा रवास उसमें हो हो सातो अससे जैनल्य नहीं उमरेगा। पूर्त्तमांण के लिए — अपना पुर्वानमांण और लोग ना भी—स्वीकार और इत्याग दोना गा योग चाहिए। स्वीगर में से सबह जाता है जिसना मून है जिनव सवा। यह अहिंसा की भाग है। चिन्तु दुरुगर उठता ही सावश्यक है और इमकी ग्रानित सन्य में से लेनी होगी । वर्जन, इनकार, प्रतिकार—इस प्रक्ति को भी जाना होगा, यदि भावना है नोचे योजना और कर्म के घरावन कराने प्राप्त का अप कर विच्या हो। यदि अप वर्जन की स्वार्य कराने प्रत्य वनना है । इसी अवस्था म यह विव्यहासक दर्जन को पूरी तीर पर अनावस्थम वना सकता है। अव्यापा सनरा है कि वहीं पत्ने जीवा हैन हमारे जीवन में पूस कैं। धानी कि निवृत्त सत के लिए अप्याप्तमीति और अनुत समारी के लिए वर्ष किन्नहु—ति । इस अनार का खड़ित जीवन मानव विकास म अब अमहा वन जाना सारिए। यह दर्जन अब अमिनार्य हा आजा चाहिए कि धर्म दो नहीं हैं, जीवन के उदस्य की नीति एक है। सदार और मोज विवृत्त कहीं हैं और दानों की स्वर्गीयोन उपलब्धि के लिए साथना एक ही हैं।

#### हरिभाऊ उपाध्याय

'भारत छोडो' आन्दोलन का श्रीगणेश विश्वपुढ ही जिन भीषण और विजट परिस्विनियों में माधीओं ने दिसा था, उसे देखते हुए मोई यह नहीं नह मनता या कि इस आन्दोन में नूर पड़ने याला को वन क्या गत होगी, नोन कहा होगा, और अल्ड को देश को भी क्या स्थिति होगी! मेने पर वालों से नह दिया था कि तिवता रागा-थोना हो, एक दिन देशों का। मागोरियों देवी से नहा कि समस को, गुरहारा मुहाग आज समान्त हो रहा है। इस बार लेक ही नहीं, भगव है गोली से भी उस्त देवे जाय। यदि तरशीर में वक्तर सही-सलामत धर आ गया हो सुना रोज-राज चिन्ता और शीक वर राग दूरा आ गया है। सगर रोज-राज चिन्ता और शीक वर राग दूरा होगा। लेक में सब प्रभार के क्टा और नदू तथा दुरे अनुमुखों की तैयारी मंत्रे कर की थी।

बम्बई में बारू नी मिरफ्तारों ने ३-४ दिन बाद में मध्य भारत की ओर रवाना हुआ। खमाल यह था कि राजस्थान, (मध्य भारत, राजपूराना, अजनर-भारवाडा) में कुछ काम करते और किर वाम बरते हुए ही पकड़ो जाज। में रतलाम होता हुआ पहले इदौर पहुला। 'भारत छोडों के प्रस्ताव में राजा-खहाराजाओं से अपेजी हुक्सत का साथ छोडते की अपील की गई थी। इन्होर के वनमान

### जीवन की गहराई में

महाराजा श्रीमन्त यशवन्तराव होलकर वडे स्वाभिमानी और भावुक व्यक्ति है। वे कुछ समय पहले भारत की स्वाधीनता के पश्च में खुलमलुल्ला एक ऐसा बनतव्य दे चके थे जो अग्रेजी हकूमत को बहुन खटका था। उनकी सरकार में उस समय दो-तीन ऐसे व्यक्ति ये जिनमें मेरा प्राना परिचय था, महाराजा पर भी जनका प्रभाव था। जनके द्वारा भैने महाराजा तक यह अपील पहुचाने का प्रयत्न विया। दोनो-तीनो व्यक्तियो के रख की मुझपर अच्छी छाप पढी 1 सहानुभृति सबने बताई--एक ने कहा, "मैं महाराजा को यह सलाह देने के लिये तैयार हु, परन्त मै जुनियर हु—सीनियर वे है, यदि वे तैयार हो जाएँ ती में अवस्य उनका साथ दूगा।"सीनियर व्यक्ति ने कहा-"हमारी सलाह पर महाराजा साहद अवश्य तैयारहो जायगे, परन्तु उन्हे सुरन्त गद्दी से उत्तरना होगा। भाज वाग्रस में ऐसी शक्ति नहीं है कि वह अपने घल से महाराजा नी रक्षा नर सके।" मेने कहा-"में प्रजा मडल के सब नेताओं से सलाह करके उनकी तरफ से यह कहने आया हू कि यदि महाराजा साहत इस अपील को मान ले ता इदौर राज्य का एक-एक व्यक्ति उनकी रक्षा में जान लडा देगा। अग्रेजी राज्य के खत्म होते ही देशी-नरेशो को नाग्रेस नी दारण आना पडेगा। अत. आज अग्रेजो जीवन-साहित्य : अप्रैल १९५२

और शियाओं—का उंगा निकला । मंते स्वारे के मुकामों पर जाना चाहा: परन्तु माथी मित्रों ते शेक दिसा और मुझे इन्दीनान दिलाया कि स्थिति जल्दी ही कावू में सा जायगर ।

दगे नया आन्दोलन दोनों दृष्टियों से में वहां के मुख्य अधिकारियों से भी मिला। शान्ति-रवा उभय का के हिन में थी—यद्यि अंग्रेजी सन्तनत को तो शान्ति-भंग से मनचाही मदद ही मिल मकती थी: पर हिंदुन्तानी अधिकारी इस बांव को समजते थे और उन्होंने मुझे यक्तीन विकाश कि जबनक विद्यार्थी या जनता शान्ति-भग नहीं करेंगे तबतक हम बानूनी कार्यबाही के अलावा आन्दोलन को कुचलने का खाम तौर पर प्रयक्त नहीं करेंगे। जिस तत्यरता और साहम से उज्जैन के बार्यक्तीओं ने उस दंगे को शान्त विया उसकी अच्छी छाए लेकर में जयपुर गया।

वहा पहुच चर पना लगा कि बारूडी तया नार्व-निर्मित के सदस्यों की गिरातारी के बावजूद उपपुर नगर में हड़ताल तक नहीं हुई और वहां के प्रजामंडल के कार्यकर्ता बन्वर्र से तथा और कहीं से सूचना मिलने की राह देखने रहे । में बनस्थली भी गया । वहां लोग यह माने हैंडे हे कि आन्दोलन एतम हो गया है और अब यह पतः नहीं सकता। हां, कुछ लोग तुले हुए ये कि हुम अन्दोक्त च्यार्टेने. मत्यावह करेंने और दहरत होती तो प्रशानंदल में अलग होकर भी आजादी की आखरी लड़ाई लड़ेगे। वहां ऐसी ठंडक छाई हुई थी कि जयपुर में हर्काल नहीं हुई. इस बान पर चर्चा चलाने हुए मुझे मिश्रों से यहाँ तर रह देना पड़ा कि जब बादुजी की गिरमारी पहां हड़नाल के लिये जाही नहीं है तो सायद उनके मरने की नाह यहा के लोग देखने होते। कुछ दिन के प्रयन से अन नो प्रजानंदल और आजाद मोर्ची के लोगों ने नित्र अन्दोलन चलाने नी एक गोजना बनाई।

नेता विचार बुछ दिन और उत्युद्ध ठहरने का था; वेदिन कोठा ने पुरान आई और मुझे वहा जाना पड़ा। मुझे उज्जैन में हो पता लग गया था। कि पुलिस मेरी तलार में है। मेने एक निरमय कर लिया था कि छिप कर नाम करना नहीं और लामका पुलिस के पंजे में भी जाना नहीं। लेकिन वर्ष वर्ष स्रयोग से कोटा-स्टेशन पर उतरते हैं। एक पुल्सि इत्यंक्टर ने हाम मिलाया जो पहले भी अवसर पहाँ मिला करते थे। मुखे जया शेख कर मेही हुआ। दो-जार मिलिट सामुको वातचीत करके में आमें बढ़ने क्या--कुकी मेरा सामान केकर आगे वल पुका था--कि पुलिस अपसर ने कहा, "जमाज्यावची काप सो भेरे साम बिल्ये "में समझ बचा और मेने पुण्डा- बाट-सारद भी है ?" उत्तरोन कहा, "तो हो कुछ नहीं है, परन्तु अवसर ते जिन कोची की तलाव में सरकार है उनमें पहला नाम बाएका ही है और हमें हुइम है कि जहा कहो भी मिले बातकी पिरमार कर सें!" में प्रसन्तन से उनके साथ हो किया। में सामार पहल्या कहा के उनके साथ हो किया। में सामार पहल्या कहा किया है जिये सार सह

षा, परन्तु उसने जो बसापारण निश्चास मुसपर प्रकटिक्या उसकी मेने बाबा नहीं की थी। उसने कहा— 'परिवजी, अपकी सवाई के हम सब कोग कावल हैं इसिक्यों में अगफी उलाधी की लगा। हमारे काम की जो पीन आपकी परा हो नह आप मुझे दे शेजिये ?'' भेने वसपूम ही उनकी आसी में देश कर मेरे पास उनकी। पृष्टि से जो आपितन्तर कागमार में वे सब उनकी विदित्त कि उस हमें मेरे की उस उस जो हैं देशों के उस हमें प्रकार मेरे की अगित का उस हम हम जो हमा की स्वाप्त के साम प्रकार मेरे हमा की मुझे कहा—'पड़ियों, मैं की हैं सास पहरा-चीको बाब पर नहा रख रहा हूं।' मेरे मन ने कहा—'पड़ियां अपकार की यहा हिना आपक्ष की करी हैं।'' मनवान के बहा निया आपक्ष की करी हैं।''

(कनश)

#### रामनारायण उपाध्याय

जब हमारा देश पुरुष्म था, सब भी यहा रचनात्मक नाम चलते थे, देश में उत्साह और जावति भी और राष्ट्र क्षमातार प्रगति कर रहा था। केकिन बाज यह कहा जाता है कि बया करे, रचनात्मन कार्य चलते नही, देश में उत्साह मही है और सर्वन निरासा एव अक्सेच्यता का बातावरण है 1

बात यह है कि गांधीजों ने हमें सत्य के समर्थन के साथ मसरम का प्रतिकार करता भी किसाया और अहिंसा ने पालन के साथ, हिंसा से मुकाबल करने का गांगे भी दिसाया। सत्य बा बृदता से पालन और अदरथ का नजता से प्रतिकार, यहाँ जनका जीवन-मुक्त था।

उन्होंने न सिर्फ 'स्वराज्य' की बात कही, बरन उसके रिए सत्यावह, अवत्योग, सवित्वय कानून वर्ग और 'मारत-गोडो' जैसे महान प्रासिकारी आप्दोलन प्रकार विरोगी हुक्त्यत का जमकर मुकावला निया और स्म प्रदार पारत की आजावी दिलाई।

उन्होंने न सिर्फ 'स्वरेसी' की बात कही, वरन हाथ पिसे आटे, हाथ कुटे चावल, पानी के सेल और हाथ-मत्ती हाथ-युनी सादी के जरिये, यत्रोधोन और विवेधी के

### रचनात्मक कार्यक्रम की शक्ति

विकाफ, एक समस्य मोर्चा तैयार किया और इसको केकर एक ऐंग्रे सायावरण का निर्माण किया, निरस्त लोगों में विवेचना वर्षों में होली जलाई, देश और विवेध की विवेधी वर्षों में होली जलाई, देश और विवेध की मिलों का वर्षों योग वर्षायोग वापायाया, लादी हुमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को पोधाक बनी और जाद भी चरला गिल के विवास एक बहिंदारमुक कार्य का प्रदीक बनकर चल्ला है।

छन दिनों जब देश में सांप्रदायिकता को छेकर हिंसा बागी, उन्होंने एक अहिसक सेनावी को ठरह उसमें प्रदेश कर, हिंसा पर अहिंसा से विकय प्राप्त की और मों साप्रदायिक एकता में नाप को भी असरा भनापा।

उन दिनों जब देश में कानून से शराब बन्दो नहीं थी, बाधीजी में एक जोर यदि बराब के सिकाम, नैतिक जमीन देवार की, तो दूबरी जोर बराब को दूकानो पर विनन्ध पिकेटिय कर उसे जडमूल से बन्द करने का प्रयत्न भी किया। यही नहीं बरन् उन्होंने पर की बारदीबारों जोर पर से पियो महिनाओं को शराब को दूबानों पर पिकेटिय के लिय तैयार कर पहिला-समाब में भी एक अनुसुद बागृधि को जन्म विया। और ऐसे समय में जब लोग, अछूत की परछाई से भी परहेज करते थे, उन्होंने सबसे नीचे माने जाने वाले हरि-जनों को, सबसे पिवत्र माने जाने वाले मंदिरों में स्थान दिलवाकर हिन्दू-धर्म पर से अस्पृश्यता के कलंक को मिटाया और यों समाज में एक आमूल क्रांति की।

्र इस तरह उन्होंने अपने जीवन में रचनात्मक कार्यक्रम के साथ-साथ अहिंसात्मक आन्दोलनों का समन्वय साधकर, देश को जाग्रत किया, ऊंचा उठाया, आगे बढ़ाया और संघर्ष में से एक नये समाज की रचना की।

इतिहास में गांधीजी पहले आदमी थे जिन्होंने अपने जीवन में संत और योद्धा के गुणों का समन्वय साधा। लेकिन लगता है कि स्वराज्य के वाद हमने गांधीजी के संतत्व को तो स्वीकार किया; लेकिन उनके आंतरिक सेनानी-स्वरूप को भुला दिया। हमने उनके असांप्रदायिक राष्ट्र के सिद्धांत को तो माना, लेकिन सांप्रदायिकता के जहर को जड़मूल से उखाड़ फेंकने में अपना समुचित योग-दान नहीं दिया। हमने सच को सच तो कहा; लेकिन झूठ (गलत) का विरोध नहीं किया। यही वजह है कि सांप्रदायिकता हमारी वगल में वढ़ती गई और एक दिन उसने हमारे राष्ट्रपिंता की हत्या कर डाली।

यदि हम ग्राम-उद्योग की वात तो कहें, लेकिन मिल

का शेयर भी खरीदें, खादी पहनें किन्तु विदेशी का लोभ संवरण न कर सकें, कानून से मंदिर-प्रवेश विल तो पास करावें, लेकिन हरिजनों को अपने साथ मंदिर में न ले जा सकें तो हम और हमारे कार्य आगे बढ़ने वाले नहीं हैं।

यदि हम श्रम-निष्ट, शोपण-विहीन, विकेन्द्रित, स्वावलम्बी, अहिसक समाज की रचना करना चाहते हैं तो हमें केन्द्रीय यंत्रीकरण और शोषण का विरोध भी करना होगा।

हम यह न भूलें कि सिर्फ प्रकाश का होना ही अंघकार की समाप्ति का मूचक नहीं हैं। सूर्य के प्रवार और प्रचंड तेज के बावजूद अनेक बार अस्तित्वहीन, घने काले बादल भी, कुछ क्षण के लिए ही सही, घरती पर अंघेरा कर देते हैं। प्रकाश को मिटाने की शक्ति भले ही किसी में न हो, लेकिन उसे ओट में कर सत्यमार्ग को धूमिल बनाये जाने के प्रयत्न सदा से होते आये हैं।

इसिंहिए जिस तरह वादलों को विछिन्न करके ही किरणें घरती पर प्रवेश पाती आई हैं, उसी तरह असत्य एवं अन्याय का प्रतिकार करके ही सत्य और न्याय की राह आगे वढ़ा जा सकता है।

यदि हम अपने कार्यों में संपूर्ण सफलता चाहते हैं तो हमें अपने जीवन में गांधीजी के रचनात्मक और आंदोल-नात्मक दोनों तरह के कार्यों का, समन्वय करना होगा।

## कांच और दर्पण

साहकारी का घन्धा करने वाला एक बूड़ा यहूदी बहुत ही लालची था। एक बार वह अपने धर्मगुरु के पास गया। धर्मगुरु ने उसका हाथ पकड़ा और उसे खिड़की के पास ले गये। बोले, "बाहर देखो, और बनाओं कि नुम्हें वहां क्या-क्या दिखाई देता है ?"

्यहुदी ने उत्तर दिया, "रब्बी, मुझे कुछ मदें, सीरतें स्रोर छोटे-छोटे बच्चे दिखाई पड़ते हैं।"

वर्मगुर फिर उसे आईने के पास है गये और पूछा,

"अव तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

"अब तो मैं सिर्फ अपने को ही देखता हूं"—उसने जवाब दिया ।

धमंगुरु ने कहा, "देखो, खिड़की में भी कांच लगा है, आर इस आईने में भी। लेकिन आईने के कांच पर थोड़ी चांदी लगाई गई है और यह आईने के साथ चांदी के मिलने का ही परिणाम है कि तुम दूसरों को देख नहीं पाते, सिर्फ अपने को ही देखते हो।" दाँता तालुके का भील प्रदेश

भारतवर्षं बहुत पुराना व विभिन्न जातियो ना देश है। जब आर्य लोग भारत में आकर बसे तो कहा जाता है कि यहां के मूल निवासी देश के दक्षिण भाग में तथा दूसरे भीतरी भागों में जहा आये लोग उनका पीछा न करे, बस गये । आर्य लोग कुछ स्सस्कृत थे तथा मुख निवासी द्वाविड, भील, मेना, नागा और रानीपरज आदि जातिया अर्थजगली थी। आर्थ लोग भैदानो में बसे तो ये लोग पहाडो में जा पहुचे।

आज भी भारत के करीव-करीव सभी भागों के पहाडी इलाको में ऐसे मूल निवासी पाये जाते हैं। आसाम बिहार, राजस्थान, गुजरात, दक्षिण आदि में कई ऐसे स्यल है जो बहुत भीतरी है और जहा बादिवासी लोग बसते हैं। गुजरात में पचमहाल, डाग, सूरत आदि ज़िलों में ये लोग पाये जाते हैं। बनासकाठा व सावरकाठा जिले में रहनेवाली भील बस्ती राजस्यान में उदयपूर. सिरोही, डूगरपुर, बासवाडा आदि में पाई जाने वाली भील व ग्रासिया नीम से मिलती-जुलती हैं।

बम्बई राज्य ने अपने सभी जिलों में ऐसे आदिवासी तथा पिछडे हुए बर्गों में काम करने के लिये सर्वोदय-नन्द्र क्षोले हैं । इनमें पुराने काग्रेस के रचनात्मक कार्यकर्ता काम करते है- जनपर सदालन का भार है, सरकार मदद देती है और इन लोगों की उतित के लिये ये केन्द्र नाम करते हैं। यम्बई के सभी जिलो में एक-एक केन्द्र है। ऐसे बीस केन्द्रों में से दाँता तालुका के संगाली गाव में बनासकाठा के पुराने वार्यकर्ता श्री अकवरभाई के संचालनरव में एक सर्वोदय-योजना का केन्द्र चल रहा है 1

सणाली गाव सारे दाँता राज्य में 'बोरो के गाव के तौर पर मशहूर हैं। यह दाँता से पूर्वोत्तर दिशा में सोलह मील तथा आबू रोड से दक्षिण में करीब तीस मील है। यहा पहुचने के लिये साधारणत पगडडी या बैलगाडी का रास्ता और अपनी खुद नी टामो ना सहारा छेना पडता है। सर्वोदय-योजना को चलते हुए करीव एक वर्ष

हो चुका है और केन्द्र का महत्त्व स्थापित हो जाने से कभी-कभी जीप-गाडी भी नजर था जाती है।

सारे दाँना तालुका में पहाड व जगल हैं--बस्ती बहुत छिछली है। यहा सारा प्रदेश ही भीली बस्ती का है। ये भील-ग्रासिये लोग राजस्थान के दक्षिणी हिस्से के लोगों से मिलते-जुलते हैं। इस जगल के बीच लोगो की आजीविका का कोई साधन न होने से सदी, बरसान या गर्मी, हमेशा ये लोग बाहरी प्रदेशा में घोरी करके अपनी आजीविका चलाते हैं। राजा भी (पहले यह प्रदेश राजस्थान एजेन्सी में देशी रजवाडा था, जब बम्बई प्रांत में विलीन हुआ हैं) उसमें से अमूक हिस्सा दाण-कस्टम-के नाम से पाता और वे चोरी के अपराध से मुक्त समझे जाते । अब यह धन्या विलीनीकरण व आजादी के बाद छिन गया 🖁 ।

सणाली का आधम दोनों तरफ नदियो व पहाडो के बीच में व दो नदियों के संयम पर बसा है। अब लोग यहा पर अपने दु ख-ददों को सुनाने, सगडा निपटाने व दवा-दारू के लिये आते हैं। आध्यम के पीछे ही सणाली गाव है। गाव क्या, विलरी हुई झोपडियो का एक समूह है। भील-प्रासिये लोग कभी इकट्ठे घर बाधकर नहीं रहते । ये आधे जगली, अधैजापत, अज्ञानी व अपत है-पर रहेगे अग्रेजो की तरह अलग-अलग बगलो में याने पासकूस की झोपडियो में ।

भील-ग्रासिये लोगो की आजीविका का साधन जगल व जगल से उत्पन्न होने वाली वस्तु व उनकी वित्री है। खेती उनका धधा है; पर उससे साल में छ महीने मुक्तिल से गुजरते हैं। कुए व सिचाई के सापन वहत कम छोगो के पास है। यहां की मुख्य फसल मकई (मक्की) है। आजवल लोग तिल भी बहुत बोते हैं। कुछ म्गफली, गेह, डागर या चावल आदि की खेती भी होती है।

खेती में स्त्रियां मुख्य माग लेती हैं। पुरुष कुछ आलसी होते हैं। वे आरामपसन्द हैं। जबतक जेव में एक पैसा भी होगा वे मेहनत गगदूरी करना पसन्द न 104 करेगे। इस वारे में इनमें सूझ वाले लोग वहुंत कम पाये जाते हैं। खेत में बोना, नींदना, काटना आदि सभी काम स्त्रियां करती हैं। पुरुप अक्सर हल चला देते हैं।

इन लोगों के कई रीति-रिवाज अंग्रेजों से मिलतेजुलते हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि भारत के दूसरे
लोगों में जो संस्कृति है, वह इन लोगों को ज़रा भी नहीं
छूगई। ये लोग अर्ध-जंगली व अर्ध-संस्कृत हैं। भारतीय
प्रजा में ब्रह्मचर्य व सतीत्व की भावना बहुत दृद्धि नई
शिक्षा के कारण ये विचार बहुत ढीले पड़ गये हैं। पर इन
भील-प्रासियों में मानो वह संस्कार हैं ही नहीं। स्त्रियां
काफी स्वतन्त्र होती हैं और व्यभिचार बहुत बुरा नहीं
माना जाता। गरमी व सुज़क के रोग भी अक्सर पाये
जाते हैं। यूरोपीय प्रजा में भी ब्रह्मचर्य की कोई
तीव्र भावना नहीं है।

हरेक व्यक्ति कई शादियां कर लेता है। एक ही पुरुप के तीन-चार जीवित स्त्रियों का होना कोई आश्चर्य की वात नहीं है। दो स्त्रियों तो वहुत साधारण हैं। एक ही स्त्री का पित बहुत कम। वह भी कम उम्प्र या कम ज़मीन होने के कारण ही होगा। स्त्रियां खेती में मज़्द्रों का काम देती हैं इसिलये भी बहुपत्नी-प्रया है। इनके कुटुम्ब बहुत बड़े होते हैं। एक ही पुरुप के दस-बीस बच्चे तो साधारण-सी बात है। पर बादी होने पर अवसर लड़के अपना नया घर बसा लेते हैं।

मेलों-त्योहारों आदि पर नाच होते हैं, तब लड़का-लड़की एक-दूसरे को पसन्द कर लेते हैं और वे साथ-साथ जंगल में चले जाते हैं। तब माता-पिता को पता चलता है और फिर सगाई व शादी हो जाती है। फभी-कभी शादी की रस्म पूरी किये बिना ही लड़को अपने पित के साथ रहने चलो जाती है। फिर जिस वर्ष अच्छी फसल होती है शादी की रस्म अदा कर दी जाती है। लड़के को शादी के लिये लड़की के बाप को कुछ पैसे देने पड़ते है।

एक ही स्त्री अपने जीवनकाल में तीन-तीन चार-चार पित कर लेती है। विच्छेद दोनों ओर से हो सकता है, पर गांव के लोगों का निर्णय जुरूरी है। झगड़ा होने पर या और किसी कारण से स्त्री कष्ट होकर अपने पीहर चली जाती है या कभी पित निकाल देता है। फिर उसक मायके वाले दूसरी झादी करा देते हैं। विधवा विवाह तो होते ही हैं—पर कम उम्र में विधवा होना नहीं पाया जाता। अपवाद भले हों—क्योंकि वालविधवायें वाललग्न वाले समाज में ही अधिक होती हैं।

अक्सर स्त्री-पुरुष साथ-साथ घूमते हैं, साथ ही मेलों आदि में भी जाते हैं। घूंघट बहुत कम अवसरों पर देखा जाता है। छड़की या छड़के का बाप पास में होने पर भी पति-पत्नी साथ रहते हैं। नृत्य में भी स्त्री-पुरुष साथ ही भाग छेते हैं।

जब लोग एक-दूसरे से मिलते हैं तो प्रेम दिखाने के कई तरीके हैं। ये लोग हाथ मिलाते हैं-दूर से सलाम या हाथ नहीं जोड़ते। मुंह से राम-राम बोलेंगे, पर हाथ अवस्य मिलायंगे। स्त्रियां भी आपस में मिलने पर हाथ मिलाती हैं। एक-दूसरे को गले भी लगाती हैं और छाती से चिपट जाती हैं। पुरुप से पुरुप भी निकट सम्बन्धी होने पर एक दूसरे को छाती से लगाते हैं। एक पुरुप और एक स्त्री के मिलने पर निकट सम्बन्ध्यों में हाथ चूमने का रिवाज है। बहुत निकट की हो तो पीठ भी सहलाते हैं। फिर छोटे बड़े का सम्बन्ध हो तो स्त्रियां पुरुप को बहुत नीचे झुककर सलाम करती हैं, ऐसा मैंने देखा है। जपर के रिवाजों के मुकाबले यह अजीव तरीका है। पता नहीं यह इनमें कैसे आ गया! रास्ते के बीच में मिलने पर भी घर पर मेहमान के आने की तरह ही स्वागत-शन्दीच्वार करते हैं।

मेहमान घर पर आजाय तो वे काफी स्वागत-सत्कार करते हैं। सरकारी नीकरों को बात तो दूसरी है। तलाटी या पुलिस वाला ठहरेगा तो वह तो जवरदस्ती खाट-विस्तरा, आटा व घी ले लेगा। मामूली मेहमान की भी और खासकर वाहरी (इनको जाति का न होने पर) मेहमान की खूब आवभगत करते हैं। जो-कुछ अपने पास हो जसे खिला-पिलाकर खुझ होंगे। खुद भले कुछ न खायं पर पास में दो पैसे भी हों तो मेहमान के लिये घी-गुड़ हाजिर कर देंगे। दूघ, छाछ का तो पूछना ही क्या? हां, आप उनकी मेहमानदारी स्वीकृत करेंगे या नहीं, इसकी शंका उन्हें रहती है; ऐसा पता लगा है। वे अपने आपको दूसरे वर्गों से कुछ नीचा अनुभव करते हैं।

ये लोग दूर-दूर झापडियो में रहते हैं। अवसर हर-एक की झोपडी अपने-अपने खेत में होती है । सामन ही खेत होता है। झोपडी घासफूस की या बास काटकर तथा चीरकर उससे बनाये हुए कटलो द्वारा दीवार खडी करके बनाते हैं। मिट्टी के घर भी अनसर पाये जात है जो दूसरो को मजदूरी देकर बनवाने पडते हैं। ढवने के लिये पास, खाल रा के पत्ते या फिर केल काम में लाये जाते हैं। अनसर घर छोटा-एक ही कमरे के रूप में-होता है। मामूली स्थिति वाले के घर में मिट्टी की एक या दो कोठी-जिसमें फसल का अनाज भरकर रखा जाय एक तरफ चुल्हा-केवल तीन पत्थर, एक हाडी, रोटी बनाने को मिट्टी का ठीकरा-दूसरी सरफ एव पानी का मटना व मिट्टी का पानी लेने का वर्तन —बीच में फटे वियडे को तरह लटकने वाला स्त्रीका एकाय फाजिल कपडा-यह कुछ होना है। दो एक महीने में कोठी खतम हो जाती है। फिर वे जगल की उपज मर निभर करते हुँ-कही कभी मजदूरी मिल नई तो राशन का अनाज आ गया बरना मछलिया मारना, पीपल, खजूर आदि पेडो के फल खाकर समय निकालना होता है। कुछ लोग जरा अच्छी हियति वाले भी होने हैं। उनके घरो में एक की धजाय दो तीन कोठिया होती है या घर बुछ वडा होता है। वही खाना बनाना, लाना व वही सीना। बाहर बाडे में ढोरों को बाघा जाता है। यदि गाय-भैस या वन री हुई तो साल भर कुछ छाछ मिल जायगी जिससे खान में मुछ मदद व मुछ विटमिन्स भी मिलेमे और घी विकेगा जिससे नमन-भिन्नं दारीदा जा सके। खेत में तिल ठीन पक गया ती कुछ पैसे आ गये। फिर तो अवतक पास में पैसा है वह चैन की बसी वजायेगा। पेड के नीचे आराम करेगा और जबतर भूखो भरने न छगेगा तबतक मज दूरी की सीज न करेगा।

अब इनके जेवर व मणडे देखिये। बत्सर राजस्थानी धापरे नी तरह रिजया ऊचा ऊचा धापरा पहनती हूं। कई एक रिजया के गठे में बादी ने गहने भी दिखाई देंग, परन्यु ज्यादातर तो एक जगनी घाच से बनने वाले कई प्रवार के गहने पहनती हूं-अथवा सफेद रग के मणके

की लंडिया पहनती हैं। दुस्यों को भी सीक हैं। वे भी अस्सर कान में, युछे में या कमीज के बटन आदि के स्प में कुछन कुछ पहनते ही है-पर साघारण लोगों के लिये ऐसा करना सम्मन नहीं है। छात का भी कई लोगों में होक पाया जाता है और साफे का भी। मले ही वह छोटा हो, दो हाय का हो या विचडा ही यही। पहनने- ओडने को इनके पाछ पोती आदि न हो तो कभी-कभी रात को ओड कर सोने के जनी वहन साल आदि ही पहन लंके। इन्हें या विचडा हो सी सी अयारा पहन लंके। इन्हें वचा मालूम कि इससे बहु और भी ज्यादा महता पड़ जाता है।

सालपान में यह लाखियत है कि कभी भी तैयार बाटा दो मिलेमा नहीं। जब भी भोजन बनाना होगा बुस्त अषवा खेरें उठकर आटा पीचा जायेगा। प्यकी दनका मुख्य साधन है और करीब-करीब हरेंक के पर में माई जाती है।

इनके नाब-गान को लीजिये। नृत्य में हशी व पुरुष हाय ही नावते हैं। नाव के साथ हुछ पुरुष ढोळ लेकर बनाते हैं—बाकी पुरुष व हिमया डोळ के बारी तरफ पृत्यते हुए पायते हैं। दो-बार डोळ को बार जयाता हो है सब साथ-ही-आप डोळ को उठाये हुए नाव में भाग लेते हैं। इनका अधिवतर नाव एक ही तरह का होता है—बहु है एक चेरा पुरुषा का व एक पेरा हिक्यों का—ताळ-बढ पेर उठते हैं—बीच-बीच में दौड जैसी भी काती है—वहु भी पेरे से—खुशी वा जिलाता नहीं। हुछ-म-डुछ गान सो साथ में होता ही हैं। एक-यो कडी ठेकर बहुत समय तक माये जायें। इधर गायीजी का नाम भी गीयो में जाने कमा है बराजा अस्तर गानो में राजा व आपस के साथ —उनका मुखब अन्त आदि बातों का वर्णन रहते। हो नाव-गान आदि मुख्य तीर पर शादी करने के असर पर होते हैं। इस समय व्यागार भी डोक जमता है।

मेठो में लोग नई तरह की चीजें लाते हैं—जैते बर्तन, साने-मीने तथा पहनने थी चीजें, बान, माला, घमाल, आदि मामूछी दौक की चीजें। साने के लियें मूगफ्ली, मुद्द ब बोपरा ऐसे मोनो पर सास तोर से खूब विकता है।

रात को ये लोग कई बार भजन करने बैठते हैं। अस समय सबला, व तानपूरा जैसा कोई वायपत्र रहता उसे वजा-वजा कर मंजीरे वजाते हुए भजन गाते जाते ह और झूमते जाते हैं। स्त्रियां भी कभी-कभी इकट्ठी होती है और पुरुषों के साथ भजन में शामिल होती हैं। तब उनका नाच और साथ में गाना शुरू होता है। यह गाना काफी दूर-दूर तक मुनाई देता है।

'देवरा' इनके जीवन में मुख्य है। यह किसी मन्दिर द उसमें रखे हुए देवता दोनों के लिए काम में लाया जानेवाला घटद है। ये लोग, उसकी पूजा साधारण तौर पर नहीं करते,पर बीमारी के समय अवसर उसकी मानता' —मनीती—करते हैं। इस अवसर पर बिल्दान करने की भी प्रया है। उस ममय कोई एक व्यक्ति बड़े जोर-जोर से पूमता है। पर यह तो उन लोगों में फैले हुए भ्रम व अज्ञान का कारण है।

शिक्षा तो इन लोगों में है ही नहीं। इनमें कहीं कोई इक्का-दुक्का व्यक्ति जो कभी इघर-उघर आया गया हो या तो कहीं कांग्रेन-कार्यकर्ताओं से मिला हो तो भले चार-छः अक्षर जानता हो या अपना नाम लिख सकता हो पर वाकी तो गून्य है। हां,इन गांवों के वीच में कहीं-कहीं पर कुछ गांव ऐसे भी है जहां इनके अलावा दूसरी जानियों के लोग भारत के और गांवों की तरह वसे हुए हैं। वहां एकाध मारवाड़ी, वोहरा आदि आकर व्यापार के लिये बैठ जाता है। वहां राजपूत, कुमार आदि दूसरी

विपुला देवी €

विज्ञापन की संसार में उतनी ही आवश्यकता है तथा यह कला सर्व-साधारण के लिये उतनी ही लाभप्रद प्रमाणित हो सकती है, जितना रेडियो तथा संस्कारित रूप में सिनेमा। रेडियो से मुनकर तथा सिनेमा में प्रत्यक्ष देखकर इतिहास, भूगोल, समाज-विज्ञान एवं देश-विदेश की नूतनतम घटनाओं को जिस प्रकार समझा जा सकता और सच्चा ज्ञान संग्रहीन किया जा सकता है, उसी प्रकार ढंग से काम लेने पर 'विज्ञापनों' द्वारा कम मूल्य और कम समय में आवश्यकता की वस्तुएं भी पाई जा सकती है। एक-एक दूकान छानकर मन की वस्तु खरीदने जातियों के बच्चे उस दुकानदार के पास कभी-कभी पढ़ते हैं। कहीं-कहीं ऐसे छोटे से कस्वे में एकाय स्कूल भी पाया जाता है। इस तरह इस क्षेत्र में समाज-सेवा का बहुत ज्यादा काम वाकी पड़ा है।

वाहन-व्यवहार न होने से यह प्रदेश और भी पिछड़ा रह गया है। वाहर के वातावरण का बहुत कम असर यहां पर हो पाता है। जागृति भी विलकुल नहीं है। आज तक यह प्रदेश एक देशी रजवाड़ा था जहां पर राजा का बहुत ज्यादा आतंक या। सारी प्रजा वेगार से दवी हुई थी; पर अब बीरे-बीरे जागृति होती जा रही है। वम्बई सरकार ने दाखंदी करके प्रजा को बहुत लाभ पहुंचाया है। सर्वोदय-केन्द्र खोल कर भी जनता की सच्ची सेवा की है। स्वतन्त्रता आ जाने के बाद और राज्य का विलीनीकरण हो जाने से लोगों को कुछ राहत मिली है।

तव भी इस प्रदेश में बहुत कुछ काम वाकी है। कई सेवकों की पूरी जिन्दगी चाहिये तव कहीं इस प्रदेश के लोग कुछ जाग्रत, कुछ सभ्य और कुछ शिक्षित होंगे और आगे बढ़ने लगेंगे। तभी यह हिस्सा भी देश के दूसरे भागों के बराबर था सकेगा। यह प्रदेश ऐसे सेवकों को बुला रहा है, जो इनकी सच्ची सेवा कर सकें। आजीवन सेवकों की खास आवश्यकता है।

## एक दिष्ट इधर भी

के श्रम की बचत हो सकती है और दूरवर्ती देशों एवं नगरों में उपलब्ध वस्तुएं डाक और रेलवे की सहायता से देश के किसी भी कोने में मंगवाई जा सकती है। परन्तु आज स्थिति ऐसी नहीं है। कुछ इस कारण नहीं कि हमारे देश में छापेखाने कम हैं या पत्र-पत्रिकाएं विज्ञापन कम प्रकाशित करती हैं। वरन् इस कारण कि इस क्षेत्र में सर्वत्र झूठ और जालसाजी का बोलवाला है। सिनेमा और रेडियो की बुराइयों की ओर अब जनता और सरकार दोनों की दृष्टि है, लेकिन विज्ञापनों की ओर अभी किसी का ध्यान नहीं है। नतीजा यह है कि दिनोदिन छोगो का यह विचार दृढ होता जाता है कि 'कूठ' का दूसरा नाम धिजापन है। इसिलये यदि दिची चीज को सिजापनों में 'जरूरी' रिल्ला जाये तो समझ नेना पाहिये कि वह कोई बेकार चीज होगी। काले को घोरा और मूलें को बिडान हिन्स देना, इन विज्ञापनों के बाए हाय ना क्षेत्र हैं।

हमारे देश म विभिन्न भाषाओं में हजारो मासिक क्षीर सैनडो दैनिक पत-पत्रिकाए प्रतिमास प्रकाशित होती है, जिनको पढने वालो की सख्या लगभग एक करोड होगी। बहुत कम ऐसी पत्रिकार्ये निकलंगी, जिनमें विज्ञापन एकदम न रहते हा । विज्ञापन प्रकाशित करना, पत्र-पत्रिकाओं की आय बढ़ाने का एक साधन है। इसलिये जो नया पत्र निकल्ता है, वह पहली कोशिश विज्ञापन पाने की करता है। जिस पत्र-पत्रिका की खपत जितनी अधिक होती है, उसकी विज्ञापन दरें भी उतनी ही अधिक होती हैं। प्राप्त धन का उपयोग, पत्र-पत्रिका की सौन्दरं-वृद्धि या घाटे की पूर्ति में ही किया जाता है, इसलिये कहा जा सकता है कि पाठको को विज्ञापनो के सम्बन्ध में आपत्ति न होनी चाहिये । यरन्तु पत्र-पत्रिकाए कितने गैर जिम्मेदार ढग से आखें मीच कर विज्ञापन लेते और अपने मुख्य पृथ्ठो पर प्रकाशित करते हैं, वह अवस्य निरीक्षण करने योग्यवात है। किसी भी प्रमुख हिन्दी मासिक पत्रिका को उठा लीजिए और उसके विज्ञापन-स्तम्भ को देख डालिए। जादू के असर वाली तात्रिक अगृठिया, भयानक रोगो की अच्क दवायें, हवारो रुपये प्रतिमास कमाने की राह बताने वाली कितावें, मकली स्वर्ग की लूट के मुनहरे अवसरों की घोषणायें, नए-नए ढगो से की हुई मिलगी।

लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो 'अमीर' बनवे के प्रलोमनों के सामने आहमसमर्थण नहीं करते । वे लोग अपने श्रम से उत्पादित पूजी की एक एक पाई अपनी आवस्यकता-पूर्ति में अध्य करना चाहते हैं । ऐसे लोगों की मारी परक कर, उन्ह अपन जाल में कसाने के लिये समाज दोही तत्वों ने नया डल निकाला हैं । अभी यत समाज दोही तत्वों ने नया डल निकाला हैं । अभी यत मर्से में हिन्दी के कई प्रमुख दैनिक पत्रो में यह विशापन दिलाई पड़ा—'मलेरिया से बचिये, चैन की भीद सोरसे

**औ**र मसहरिया नौ-नौ रपये मे खरीद करके खाट पर लगाइये । विज्ञापन देने वाली कलकसा को कोई सस्या थी । कुछ लोगो ने जोड-तोड मिलाकर हिसाव लगाया कि छोटे शहर में करीव दस-ग्यारह रुपये में सिली-सिलाई ऐसी मसहरी मिल जाती है जो सवा गज ऊची, इतनी या इससे अधिक चौडी और ढाई गज लम्बी हो। अतएव क्लकत्ते में डाक्खर्च सहित नौ रूपये की मसहरी मिलना आश्चर्यजनक नहीं हैं। आखिर मृत्य में थोडा बहुत अन्तर तो गाव और कस्वे तक की चीजो मे रहता है। अत ससहरिया मगवाने की ठहरी। पहले दो भसहरियों का आर्डर दिया गया। छठे दिन वी पी सूचना का कार्ड आ पहुचा, जिसमे लिखा था-"परम धन्य-वाद। आपकी आज्ञानुसार वी पी सेवामें भेजी जा रही है, कृपया तुरन्त रुपया देकर थी पी लेले। हम गारदी के साथ सही और सच्ची वस्तुए भेजते है किसी प्रकार की शिकायत हो, नि सकीच लिख दें। तुरन्त ठीक कर दी जाएगी । अपने ग्राहको को सन्तुष्ट करना हम अपना धर्म समझते है। साथ ही उन व्यक्तियो पर जो मठे आर्डर देकर वी पी वापस कर देते हैं, कम्पनी केस भी करती है। आप हमारी वस्तुओं से अवस्य ही प्रसन्न होंगे।"

पेवा ज्या कि कोई ईमानदार कम्पनी है। सोचने छाने कि सकती की, दस मवहिंग्या साथ ही मगा छेते। डाक-अव्य भी कम पडता और सबको एक मार में मिल भी जाती। तकवी का पासंक बोला जाने लगा। जो लोग मवहिंग्यो के इच्छुल में, में चारो ओर से घेर कर बैठे। पर जब मवहिंग्या निकली, तम सभी की बोले बन्द हो गई। न जाने किस देसकी लाटोबी नाप की भी हिन्युसान में ऐसी साट किसी भी प्रदेश में प्रमृत नहीं हिन्युसान में ऐसी साट किसी भी प्रदेश में प्रमृत नहीं होती। मुस्किक से एक हाम जबी, इतनी ही भोबी और करीब हाई हाण जबी। कोई मुर्त चसे लगाकर भेले ही सी लेता, जीवित आरभी के लिये तो किस रहा मभन न था। जत जिस बेचारे ने आर्टर हिन्ता था, उसोने सिर माल पटक रूर गाहक लोग चलते बने।

उसने कम्पनी को कई पत्र जिले कि वह मसहरिया वापस लेले अथवा दो के बदले एक ही ठीक मसहरी देदे, पर कोई जबाब नहीं मिला। अदालती कार्रवाई की वात सोची गई; परन्तु उसका अर्थ था वैठे-विठाये एक संकट खड़ा करना ।

विज्ञापन देने वाले अमीरअली ठग के भी चचा होते हैं। एक विज्ञापन दो-तीन मुख्य पत्र-पत्रिकाओं में दिखाई दिया, जिसमें कहा गया था "असली विलायती घड़ी मुफ्त लीजिए। यह घड़ी अमरीकन विद्या फाउन्टेनपेनों की विकी वढ़ाने के लिए, विल्कुल मुफ्त बांट रहे हैं। ठीक समय देने और मजवूती की गारंटी ६ वर्ष। अभी पत्र लिखें। जायद देर करने से, इस रियायत का लाभ न मिले। फाउन्टेनपेन का मूल्य ५)।"

समझदारों के मन में तुरन्त प्रश्न उठ खड़ा होगा कि इस फाउन्टेनपेन के बेचने वाले को क्या पागल कुत्ते ने काटा है, जो इतने कम मूल्य के फाउन्टेनपेन के साथ ऐसी अच्छी घड़ी दे रहा है ? परन्तु बात ऐसी नहीं। युद्ध के पूर्व चार आने से लेकर नक्वे रुपये तक के फाउन्टेनपेन बाजार में मिलते थे,। आजकल भी दस आने का फाउन्टेनपेन बाजार में है। इधर घड़ियां भी अनेक प्रकार की आई हैं। इसलिए फूंक-फूंक कर पैर रखने वाले लोग तक, इस विज्ञापन से भ्रम में पड़ सकते हैं, जबिक अनुभवहीन लोग घड़ी का वितरण वास्तव में प्रचारार्थं ही समझने को गलती करेंगे। वे सोचते हैं कि पेन चाहे दस आने वाला ही हो, लेकिन घडी की तो गारंटी है। चलो मंगवा लें।

परन्तु पासंल खोलने पर, दस-त्रीस काग्रजों की पर्त के भीतर महे रंग से पुता एक फाउंटनपेन निकलता है और घड़ी की जगह एक काग्रज। उसमें लिखा रहता है—"जय हिन्द, आपकी सेवामें पासंल के साय छः आईर फार्म भेजे जा रहे हैं। आप इनपर अमरीकन फाउन्टेनपेनों के आईर अपने मिलने वाले मित्रों से आसानी से ले सकते हैं। एक-एक रुपया पेशगी ले लें, आईर-फार्म भर कर रुपयों के साय में भेज दें। आपको छः अमरीकन फाउन्टेनपेन एवं छः सेट आईरफार्म वी० पी० से भेज देंगे। इस पार्मल में आपकी इनामी घड़ी या ऊनी कम्चल आदि भी होगा। आपके बनाये ग्राहक भी इसी तरह ग्राहक बना कर इनाम मुफ्त ले सकेंगे। कम्पनी की इस मूचीपत्र में अदल-बदल करने और इनाम की चीजें घटाने-बढ़ाने का पूरा अधिकार हैं।"

अव आप विज्ञापन पर एक दृष्टि फिर डालिए और देखिए कि क्या उसमें एजेन्टों के कमीशन के रूप में घड़ी मिलने की बात की कहीं गंध तक मिलती हैं। एजेन्टी ही करनी हो तो एक क्यों, दस-बीस घड़ियां पाई और खरीदी जा सकती हैं। इसमें इसी फाउन्टेनपेन का कौन निहोरा? परन्तु इससे भी बढ़कर बात यह कि पांच रुपये कलम का दाम और सवा रुपया डाकव्यय देकर दस आने वाला फाउं-टेनपेन मिला, तो मुफ्ती घड़ी इससे कहीं गई-गुजरी न होगी, इसका कौन ठिकाना? फिर दस आने की चीज, पांच रुपये में मित्रों के गले महना क्या उनके साथ विद्वासघात नहीं है?

इस विज्ञापन जैसी ठगी, मुफ्त सोना बांटने के विज्ञा-पनों में भी रहती है। मानव स्वभावतः सीन्द्यंप्रिय होता है। सीन्द्यं वढ़ाने के उपकरणों में आभूपणों की भी गिनती है। घनी सोने, चांदी, जवाहरात के आभूपण पहनते हैं तो गरीव पीतल, कांसे, फूल वगैरह के। इघर नकली सोने की चाल भी चली है। जहां तक इसकी विकी की वात है, वहां तक गनीमत है। परन्तु सीची विकी से सन्तुष्ट न होकर ये लोग ठगी की राह पकड़ते हैं। यह वात बहुत आपत्तिजनक है। कुछ दिन पहले कई पत्रों में एक संस्था ने यह विज्ञापन दिया—"अपने नेशनल न्यू गोल्ड के प्रचार के लिए हमने एक नमूने का वाक्स, जिसमें डाय-मंड कट की ४ चूड़ियां, नए डिजाइन का १ हार, वाम्बे फैशन की २ अंगू ठियां हैं और साथ में ४ तोले नेशनल न्यूगोल्ड मुफ्त में देने का निश्चय किया है। आज ही मुक्त सोने एवं नमूने के वक्स के लिए लिखें।"

दूसरी संस्था ने अपनी संस्था का उत्सव मनाने के लिए ऐसी सेट और सोना मुफ्त बांटने की घोषणा की। उन्होंने नमूने के बक्स को खरीदने पर सोना देने का उल्लेख नहीं किया और न कहीं बक्स की कीमत का उल्लेख किया। अतः जो लोग ऐसी चीजों पर पैसे फॅकना बेकार समझते हैं, वे भी मुफ्त गहने कैसे हैं, यह देखने के लिए उत्सुक हो उठते हैं और वे लोग भी जो शौकीन हैं; पर इतने पैसे नहीं कि नकली गहनों पर खर्च कर सकें। किंतु जब वे उसे मंगवाते हैं, तो वी. पी. में चार से १० रुपये बीच की चीजें होती है। विकापनवाताओं की यह मनोवैज्ञानिक चालें हैं। वे जानते है कि कौतूहल और इच्छा ये ऐसे मत्य है जिनका उन्पन करके काम निकाला जा सकता है।

भौषी प्रभार के विज्ञायनदाता दावा करते न कि तार्निक अगूठी जिससा मून्स काई या सीम एघचे रहा। है, मगवा नर पहन लीजिए वस आपके सारे सकट स्थमत हो जायेंगे। टनी प्रण करने नम्मां, मन-बाहा विवास हम्मा गृहस्थ पीवन स्थमं वन जायया बुस्मन पैरातले आ गिरया भन-बीलत की कसी नहां रहेगी, समस्त कार्यों म सकटना प्राप्त होंगी। साराय यह कि ऋदि सिक्कि आपकी पुटठी म रेखींगी।

अब सोचिए वि क्या ऐसा हो सबना समब है ? अनक अननय विनय और सेवाजा से जो इदय नहीं पसीजते ने इस अगुठी की शक्ति से पिघल आयेंगे। बडे-बडे वकील जिस मामले की अयर परिश्रम द्वारा भी न सुत्रक्षा भने हा, वह केवर ढाई रुपय की इस अगुठी की खदसून शक्ति से मुलझ जायगा । धन, नीजरी पाना ऋदि-सिवि इतनी साधारण हा ता क्या न हमारी सरकार एसी अगठियो वे निर्माण का एक कारपाना खुलवा दे और सब मत्री तथा सरकारी कर्मचारी तथा बेकार लाखी आदमी एक एक अगुठी पहन लें । अमरीका से गह मगवान और अन्तर्राष्ट्रीय वैक म वज्र लेने की आवस्यकता ही व पडे । अगुठी का प्रभाव गण्त प्रमाणित होने पर, तानिक जी हजार-हजार रुपया प्रत्येव वो दनाम दगे। पाच सी तो वही नहीं गए। वर्ड सात्रिक शोवों न एसी घोषणाए वेस में कर रखी है पर किमी ने अबतक इसे प्राप्त नहीं विया है।

भूठ और जाएसाजी में एव-दूसरे की यात यह बाते इस विज्ञापना को पड़बर हम इसी निर्णय पर पहुंचे हैं कि अब समय आ गया है मि काले वाजार को देमन करन के एिए दूब-प्रतिज्ञ हमारी सरनार दूबता से काम लेक्न कानून और प्राचित ने द्वारा भूठी और निरप्योगी वन्नुआ के विज्ञापनवाताआ को की-की-कड़ी सत्याए दे। एक अपने की दियासलाई दो आन में बचने वाला का मुनापा बवाआ-सम्बन्धी सब विवायनों की जान सरवार के निक्रीय और प्राचीय स्वास्थ्य निक्षण परे। वदाओं ना प्रभाव विषयक हुंठा प्रचार, रोगा को बढ़ने और मयानक रूप ग्रहण राने का अवसर देवा है। बिना स्वास्थ्य निक्षा की जान के एसे विवायन क्यों नहीं प्रनाशित होने नाहिए। अगर नोई दडा वास्तव में उपयोगी हैं, तो उसपर कई कान्यों को जान करनी चाहिए। अयदक ऐसी खबस्था न हो तबतक लोगों को खुर सम्मना चाहिए कि विवाशित दखाओं का सेवन अबरें में डेला फ़नना हैं।

जहां तक बस्तुओं वा सम्बन्ध है, यदि प्रिकार् यह रिक्स बना द कि दिवापन ने भाग विवाधित बस्तु का त्रमुला भी मेना जाया करे तो इससे एक सीमा तक घोला-व्यत्नी का व्यापार यह हो सकता है। विवेगी एक अपन पाठका को मुक्त वानुनी परामर्श देते हैं, उनकी सम्पत्ति की देख देख करते हैं और घरेलू मामके निपटान के लिए कस्टरी बहायदा भी देते हैं। तो क्या हमारी पन-पर्णिकाए अपने पाठनों के घन का अपव्यय रोकने के लिए इतना भी नहीं कर सकती ?

<sup>&</sup>quot;विज्ञता नैतिक वल है और नैतिन बल भौतिक बछ से अनन्त मुना थेष्ठ हैं।"

# भगवद्गीता में क्या है त्र्योर क्या नहीं ?

( गतांक से आगे )

## 'ईव्वरभाव और आस्तिकता'

गीता में ब्राह्मण और क्षत्रिय के गुणों का वर्णन करते समय 'ईव्वरभाव' और 'आस्तिक्य', इन दो अलग-अलग घट्टों का प्रयोग किया गया है। 'आस्तिक' गण बाह्मणों का है और 'ईंग्वरभाव' क्षत्रियों का । 'ईंग्वरभाव' में प्रभुत्व का और दंड-नीति से औरों को सजा देने के अधिकार का अनुभाव होना है। 'मै प्रभ् हूं, मै पालनकर्ता हूं, जिनका पालन करने की जिम्मेवारी मुजपर है उनका पालन करने के लिये मैं दंडनीति का सहारा लेता हूं। में दुर्जनों को सजा देना हूं।' आदि भावनाओं का 'ईच्बरभाव' चटद में अन्तर्भाव होता है। 'आस्तिक्य'-वृत्ति ऐसी निष्ठा प्रदिशत करती है कि दुनिया में नैतिक शक्ति की ही जय होगी। इसमें यद्यपि ऐसी निष्ठा होती है कि अनैतिक शक्तियों की हार होगी, तो भी ऐसी वृत्ति नहीं है कि अनीतिमान् व्यक्तियों की हम सजा दें। इसमें यह वृत्ति भी हो सकती है कि इस आस्तिययवृत्ति से अनीतिमानों को आप-ही-आप सजा मिलेगी या उन्हें परमैक्वर दड देगा या राज्य-मंस्था सजा देगी। लेकिन दुर्जनों को हमारे बदले दूसरा कोई या खुद भगवान मजा करें यह वृत्ति भी पूर्ण अहिंसा की द्यांतक नहीं है। दुर्जनों को सजा मिले या परमेञ्वर उन्हें सजा दे, इस प्रकार की इच्छा मच्ची अहिंसा नहीं, बल्कि एक तरह की हिंसा ही हैं। हुर्जनीं में सद्वृद्धि आये, उनका उद्घार हो, वे मज्जन वनें ऐसी इच्छा रखना या वैसी प्रार्थना करना ही सच्ची अहिंसा-वृत्ति है। इस अहिंसक वृत्ति से दुर्जनों के दुष्ट कार्यों के खिलाफ हमेशा लड़ने रहना, क्रांतिकारी अहिंसा है और इस क्रांतिकारी अहिंसा से ही सत्याग्रह के मार्ग का निर्माण हुआ है। नन्याग्रह में जो आस्तिक्य-वृद्धि गृहीत है, वह इस प्रकार की अहिसक किन्तु प्रभावशाली वृत्ति हैं। 'सर्वोदय' शब्द में दुर्जनों का नाम सूचित नहीं है। इसीलिये 'दुर्जनों का नाय करने के लिए मैने अवनार लिया है। यह 'उच्चरभाव' भी मत्या- ग्रही निष्ठा के साथ मेल नहीं खाता । लेकिन गीता में दम प्रकार का ईश्वरभाव सर्वत्र प्रकट हुआ है और उसकी गिनती रार्जीय के स्वाभाविक गुणों में की गई हैं। राज्य-शासन करने वाले दंडधारी व्यक्तियों में इस गुण का होना ज़क्सी हैं; लेकिन ऐसी अपेक्षा है कि वह व्यक्ति अहंकार एवं ममत्व के साथ इम प्रभुत्य का उपयोग न करे।

यहां पर यह शंका हो सकती है कि ईश्वरभाव या प्रभुत्व में एक प्रकार का अहंकार तो निहित ही होता है। लेकिन गीना में अर्जुन के जिस अहंकार का वर्णन आया है वह यह अहंकार नहीं है। 'मै दुर्जनों के साथ भी नहीं लडंगा, मैं तो संन्यास लेकर जंगलों की खाक छानता फिहंगा '। इस मनलव के जो शब्द अर्जुन ने कहे, उन्हें सामने रखकर या उन गव्दों द्वारा व्यक्त होने वाली वृत्ति के लिये श्रीकृष्ण ने 'अहंकार' शब्द का प्रयान किया है, क्योंकि 'मेरा राज जिन्होंने छीन लिया है, उनके साय भी मैं युद्ध नहीं कहंगा' यह वृत्ति भले ही श्रेष्ठ हो; लेकिन वह वृत्ति अर्जुन के प्रकृतिगुणों या उसके स्वभाव के साथ मेल नहीं खाती थी, उस बोझ को वह उठा नहीं सकता था। जिस ृत्ति को हम उठा नहीं सकते या जिसका निभाना हमारे लिये निञ्चित स्पने असंभव हो वह अच्छी या श्रेष्ठ हो तो भी भी उसे स्वीकार करता हूं,' ऐसा कहना अहंकार का द्योतक है। अर्जुन की जिस अहंकार ने घेरा था, वह इसी प्रकार का था। जब उगका प्रकृतिसिद्ध ईंदबरभाव जागृत हो गया तो उसका वह अहंकार नष्ट हो गया । जिनका प्रकृतिवर्म ब्राह्मणत्व है उनमें यह 'ईंश्वरभाव' नहीं होता । ऐसे बाह्मणत्वविशिष्ट प्रकृति-धर्म के व्यक्ति को उपदेश देने का मीका होता तो श्रीकृष्ण की दलीलें कहां तक सफल होती यह एक सवाल ही है। ऐसे लोगों या व्यक्तियों की अगर गांधीजी-जैसा गुरु मिल जाय तो वह कहेगा कि 'मत्याग्रह मे अपने अधिकारों की प्राप्त कर छेने के लिये या अन्याय का मुकाबला करने के लिये नुम तैयार हो जाओ ।' इस नरह की क्रांतिकारी

#### भगवदगीता में क्या है और क्या नहीं जावडेकर

व्यक्ति गीना में नहीं है । उसमें प्रधानतया मात्रशा की रक्षा के लिये शस्त्र धारण करने वाले अवनारी राजींप का धर्म बताया गया है। उमत्री आवश्यत्रना आज व समाज के लिये हा तो भी मानव-समाज को आज जिस मर्वांगीण कानि की आवस्यक्ता उससे भी अधिक मण्यस हो रही है उसे गर्जाय के शस्त्रवल द्वारा असल म रान की **ग**िशास सतरनाप है। इस बात को पहचानकर समाज स आत्मवल की जागृति और संगठन करके एसी जाति की जा भवेगी इस निष्टाकी मानव-पमात्र का आज अभिक जरूरत है। आज सन्याम लने की इच्छा वरन वाले क्षत्रियाकायुद्ध के लिये प्रदृत होने का सदश दने की मही, बरिक जिस आर्थिक वियमना और अर्थनायन की महत्वाकाक्षा के कारण जागतिक महायुद्ध छिड जाते है, उस आधिक वियमना को नष्ट करके अर्थशायण की आक्राक्षा जहा जड नहीं जमा सवेगी एमे नये समाज वा निर्माण करने की आवस्यकता है । ऐसे समाज के निर्माण के लिये समाज में सर्वागीण काति करके वर्षभदा का नष्ट इरना चाहिये । इमलिये यह सामाजिक नानि आत्मवल द्वारा करना किस तरह समय एव आवस्यक है यही मनुष्य को दिला देना चाहिये। इस काम में गीना का आधार कुछ अभिक्षाम का नहीं है।

आत्मवल और मानवधर्म

श्री शहरा गर्य न गीता-भाष्य की प्रस्तादना म कहा है कि 'ब्राह्मणत्वस्य हि रक्षणन रक्षितः स्यान् वैदिका धर्मः।' और इस ब्राह्मण व नी रक्षा के लिय ही थी हुण्य **का** अवनार भा∽इन तरह का प्रतिवादन किया है । इस्-् पर से यह नतीजा निकलता है कि वैदिक धर्म की रक्षा होना या न हाना सन्त्रियत्व की अपेक्षा ब्राह्मणत्व की रक्षा पर अधिक आपार रखना है। फिर भी इस ब्राह्मण व की रक्षा के लिये अत में शतियामं के अवतार की आवश्यकता मान ली गई हैं। इस सम्बन्ध में यहा अधिक ऊहापाह करने की जहरत नहीं हैं। गात्रीजी ने जिस शातिकारी अहिंसा ना प्रतिशदन किया है उसका ध्येय है समाज में थारमयल को जाप्रत एवं प्रभावशा की करके उसे शस्त्रवल के सरक्षण की आवश्यकता ही महसूस न हा। त्रीकन मह अन्तिम ध्येष सामाजित दृष्टि से जाज वास्तववादी

नहीं है। फिर भी यह बात सबको स्वीकार हो सनेगी कि ब्राह्मणस्य सब्द से ब्यन्त हाने वाले आध्यात्मिक गणों की वृद्धि करने पर ही मानववर्ग का सारा दारोमदार है । गावीजी के जीवन-मन्देश का मूत्र इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'आत्मवलस्य हि रक्षणेन रक्षित स्यात मानवा धर्में –। इस आत्मवल का समाज के वेवल एक विधिष्ट वर्गम जापन और सरक्षित करना आज का सवाल नहीं बच्चिमारे समात्र में व्यापकरूप से फैले हए किन्तू सुप्नावस्था म रहनेवाले आ मवल का जाग्रन करके उसके प्रभाव से एक-वर्ग-मधाज (वर्गहीन समाज) का निर्माण करना ही आज की समस्या है। आज के 'जगाने में चानुर्वर्ण्यमस्या और युद्ध को आवश्यक मानकर-त्रिये गये झात्रधर्म के उपदेश का स्ट्रम्य पर्याप्त नहीं हो सकेगा । लेकिन उसक कुछ महत्व के सिद्धान्ती को आज भी स्वीकार करना होगा। इतना ही नहीं, बल्कि उन सिद्धान्तो पर जार देशर नई मानव सस्क्रीत की रचना करनी हागी।

#### गीता-धर्म और आधुनिक मानव

अन्त में आज के मानव के लिये भी गीना के उपदेशी से सीखनेलायक जो बानें है उनका सक्षेप में निर्देश करके इस छेख को खत्म करना है। मानव समाज की रचना के लिये धर्म का आधार होना चाहिये, यह गीना का अन्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त है । लेकिन समाज-रचना और समाज के सारे व्यवहारों के लिये आधारभूत यह धर्म नोई लास धर्म, मजहब नही,बस्कि मानव के अन करण में रहनेवाली क्नंथ्यनिष्ठा ही वह धर्म है । गीता के सामाजिक स्परेश का यही सार है कि समाज में सब ध्यवहार करते समय उसकी इनाइया यानी मानव स्वार्यसाधन ने हेलु से प्रेरित होकर नहीं किन्तु क्तंब्य-वृद्धि में अपने व्यवहार करें। समाज में अपना-अपना नायं करते समय ध्यक्ति स्वायं-बुद्धि से वर्तावकरे तो भी आप-ही-आपसमाजहित होगा, रेकिन ऐसे समाज में प्रत्येव व्यक्ति को स्वार्य साधने का समान अवसर मिले और हर एक को औरों के साथ स्पर्क्षा व रने की पूरी स्वनन्त्रता हो । इस विपर्व्यस्त एव म्यामक सिद्धान्त पर बाधुनिक यूरोप में वैदय-सस्कृति का निर्माण करने का प्रयोग पिछली दो शताब्दियों में किया गया। लेकिन लगभग सभी समाज-शास्त्रियों ने अब यह वात स्वीकार कर ली है कि यह प्रयत्न और प्रयोग भ्रामक और विघातक सावित हो चुका है। सामाजिक व्यवहारों की वनियाद व्यक्ति-स्वार्थ एवं स्पर्धा के तत्वों पर रखने से समाज में अनर्थ फैल जाता है यह वात अब सबने मान ली है। सामाजिक व्यवहार कर्तव्यवृद्धि, सेवाभाव तथा सह-कार की वृत्तियाद पर होने चाहिए यह तत्व समाजवादी विचारप्रणाली का एक आधारभूत तत्व माना जाता है। इस दिष्ट से सोचा जाय तो मालूम होगा कि गीता की सामाजिक विचार-प्रणाली व्यक्तिवादकी अपेक्षा समाज-बाद के अधिक निकट है। समाजधारणा के लिये आवश्यक कोई भी कार्य मन्ष्य कर्नेव्यवृद्धि से करना रहे तो वह आन्मिक गान्ति के मोक्ष को प्राप्त कर संकेगा; लेकिन उसे नाहिये कि वह यह कार्य सकाम वृद्धि से, फलासवित से, अहंकार से या ममत्व मे न करे। इस प्रकार निष्काम, निरहंकार, निर्मम एवं अनासका वृत्ति से जिन सामाजिक कर्तव्यों को हमने स्वीकार किया हो या जो कर्तव्य हमें प्राप्त हो गये हों उन्हें हम कदापि न छोड़ें; मनुष्य को आत्मिक मोक्ष प्राप्त करने के लिये सामाजिक कर्तव्यों का त्याग करने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है, इस प्रकार की भूमिका को स्वीकार करके गीता ने व्यक्तिगत मोक्षतथा समाजधारणा का लोकसंग्रह—इन दोनों का बहुत मुन्दर समन्वय किया है। लेकिन अगर ये सामाजिक कर्तव्य आत्मोन्नित में महायक होनेवाले हों तो उन्हें करनेवालों को केवल अपने विशेष समाज के हित का ही विचार करने में काग नहीं चलेगा, उन्हें तो ऐसे ही कार्य कतंव्यवृद्धि ने करते रहना चाहिये जिनमे सारे मानव-समाज का ही नहीं बल्कि सबंभूतमात्र का हित होगा। जबिक मानव समाज अलग-अलग राष्ट्रों या वर्गी में वंट गया है, उनमें से किसी साम राष्ट्र या वर्ग के हित को -मामने रखकर अपने कर्तव्य करना और अन्य राष्ट्रों या वर्गों के हिन की तरफ ध्यान न देना गीता के आध्यात्मिक एवं धार्मिक उपदेश के विषरीत है। इसमें जिस अहंकार तथा ममत्व का त्याग करके कर्तव्याचरण का उपदेश किया गया है वह अहंकार या वह ममत्व किसी राष्ट्रीय

भावना या वर्गीय भावना के कारण भी पैदा नहीं होना चाहिये।

राष्ट्रीय या वर्गीय अहंकार तथा ममत्व के वशीभूत किये हुए कर्तव्य उन्हें करनेवालों के या मानवसमाज के आत्मिक उद्घार या भौतिक हित के लिये विघातक हए विनां नहीं रहेंगे। गीता की दृष्टि विशिष्ट राष्ट्रहित या वर्गहित साघने की नहीं, विल्क सारे मानवों का आध्या-त्मिक एवं आधिभौतिक हित करने की है। इस मानवहित की दुष्टि से आज युद्ध-संस्था को नष्ट करके सब मानवों को एक राज के मातहत लाना और वर्गसंस्था का नाश करके एक-वर्ग-समाज की स्थापना करना आवश्यक हो गया है। गीता में इस विशिष्ट पृष्ठभूमि को स्वीकार करके कर्तव्याकर्तव्य की चर्चा नहीं हुई है, इसलिये उस सम्बन्ध में स्पष्ट आदेश उसमें से नहीं मिलेगा। फिर भी उसकी सारी सिखावन इतनी व्यापक और मानवीय अन्तःकरण कीं चिरंतन एवं श्रेष्ठ वृत्ति पर आधारित है कि वह यद्ध-संस्था और वर्गसंस्था के नष्ट होने पर भी मानव को सतत मार्गदर्शक एवं उन्नतिकर मालूम होगी। मनुष्य समाज के प्रति अपने कर्तव्य स्वहित वुद्धि से न करके सर्वहित-बृद्धि से करे और वे निर्मम, निरहंकार तथा अनासक्त भावना से किये जायं, यह उपदेश कभी गतार्थं नहीं होगा ।

## जीवन की सर्वांगीण निष्ठा

गीता के उपदेश की और एक सबसे श्रेष्ठ विशेषता यह है कि उसने मानवीय जीवन के सभी अंगों का विचार करके जीवन-निष्ठा का प्रतिपादन किया है। जिस प्रकार मानवीय जीवन का एक आध्यात्मिक अंग है, उसी प्रकार उस जीवन के लिये आधारभूत एक आधिभौतिक अंग भी है। जिस तरह मानवीय जीवन का एक व्यवितगत अंग है, उसी तरह एक सामाजिक अंग भी है। मानवीय जीवन के आध्यात्मिक तथा आधिभौतिक और व्यवितगत तथा सामाजिक आदि सभी अंगों का विचार करके गीता में उपदेश किया गया है। मनुष्य व्यक्तिशः मुक्त हुआ, उसे आत्मप्राप्ति हो गई या वह सब परिस्थितियों में आत्मप्राप्ति का उपयोग कर सका तो भी औरों के उद्घार का कर्तव्य उसे करते रहना चाहिये।

### मगवद्गीता में क्या है और क्या नही : जावडकर

के धारण पोषण के लिये फिर मानव-सनाज भौतिक मीगो की आवस्यक्ता है। ये भौतिक भीग सबको मिलते रहें, इसके लिये बावश्यक काम सबको करना ही चाहिए। गीता में इन मौतिक भोगो की प्राप्ति की दृष्टि मे ही यज्ञ के महत्व का वणन किया गया है। यह बीक है कि यज के कारण देवना सन्तुष्ट होते हैं और वे हमें भौतिन भोग देते हैं, इन विवारों से आज कोई भी सहमत नहीं होगा, फिर भी भौतिक शक्ति और सामाजिक शक्ति के सहयोग एव सहायता से हमें इध्ट भोग प्राप्त होने है, इस बात को ध्यान में रह्मकर उसके लिये होने वाले सामाजिन तथा भौतिन शनित के ह्यास या क्षय की पूर्ति कर लेना और भौतिक भोगों के उत्पादन में अपनी श्रमशक्ति का विनियोग करके उस-कार्य में सहयोगी होना हर एक का वर्तव्य है। समाज के धारण-पोपण के लिये आवश्यक श्रम करना और वह श्चम करने बालो की शक्तियों का उचित विकास होगा इस तरह सामाजिक सपति का विमाजन करना-इसे क्षामृतिक परिभाषा में यज्ञ कहा जा सकेगा। सामाजिक जीवन के लिये चलने बाला यह यज्ञ उचित रूप से चलता रहे तो ही समाज का भारणपोपण होगा । यही सबक गीता के यज्ञ-सम्बन्धी आग्रह से हम छे सहते हैं। यह सामाजिक यज्ञ आज के समाज में उचित रूप से नहीं चल रहा है। इस यज के लिये जो श्रम करना पडता है, उसमें दारीक न होकर जो लीग आब उसमें से पैदा होने वाले भीगा का फेवल स्वामित्व के अधिकार से उपभोग कर रहे हैं वे गीता के उपदेश के अनुसार सामाजिक धन की भोरी ही कर रहे हैं। अवनक यह स्तेय बन्द नहीं होता तवतक समाज की घारणा वे लिये आवश्यक उपमोग उनित रूप से पैदा नहीं होगे और उनका विभाजन भी ठीव दम से नहीं होगा । सामाजिक उत्पादनकार्य की इस चोरी को आज के जायदाद-प्रवधी कानूनो ने जायव ठहराया है । जबतक इस चोरी को कानूनन बन्द नही किया जाता तवतक समाजधारणा के लिये आवश्यक यह यज्ञ ठीन दग से नहीं चलेगा और इसलिये लोनसंबह भी नहीं होगा। यह मूलभूत अन्याय समाज में विग्रह पैदा

कर रहा है और जवतक उत्पादनकार्य एव विमाजन-कार्यं में चलनेवाला अन्याय दूर नहीं किया जाता तबतक इस विग्रह का अन्त नहीं होगा । समाज में सब व्यवहारो के लिये धर्म ना अधिष्ठान होना चाहिये, यह गीता का सिद्धान्त अगर हमें आज कोई सिखावन देता है तो बह यही है कि सामाजिक घनोत्पादन के नार्य में और विमानन में चलनेवाले मुलभूत अव्याप की जबतक हम दूर नहीं करते सबनक समाज धारणा या लोकसपह का कार्यनहीं होगा।

समाज के मौतिक अग ना विवेचन करते समय उसके घारणगोपण के लिये आवश्यक घनोत्पादन के प्रश्नो की तरह ही उसकी रक्षा एव अन्याय-निवारण के प्रश्न का भी गीता में प्रधानतया विचार किया गया है। जब-तक रक्षा और अन्यायनिवारण का प्रवन्य नहीं होता तब-तक समाज का नैतिक या बारिमक यल नही बढ सकता । इसीलिये रक्षा और अन्यायनिवारण के नार्य सतत चलते रहने चाहियें, इस सरफ गीता ने विशेष ध्यान दिया है। इसी दृष्टि से उसमें घनंयुद्ध एव क्षात्रधर्म का समयैन किया गया है। इन प्रश्नों को हरू करने के लिये शस्त्रबल या दडनीति का प्रयोग करना न पडे इस प्रकार का प्रस्थ किये विना समाज में घम या नीति का सवर्षन या सरक्षण नहीं होगा। इसलिये आज मन्त्यो को आवश्यक महसूस करने वाली हिसा को भी टालकर उन सवालो को अहिंसा से और शान्ति से हल करने का प्रयत्न करना ही सच्ची धर्मसस्यापना का मार्ग है। इसमें जितनी सफलता मिलेगी, उतनी ही मात्रा में सामाजिक नीति स्थिर होती जायेगी । केवल जारमवल का सगठन नरके उसके प्रभाव से थे सवाल अभी हल नहीं होते हैं। इसीलिये शस्त्रवल से न्यायसस्यापना करने का प्रय न समाज करता रहना है। इस बास्तववादी भौतिक दृष्टि से गीता की रचना हुई है।

### दैवी और आसुरी वृत्तियो का सग्राम

समाज में न्यायसस्यापना और अन्यायनिवारण व रने के कार्य में से ही देवी एव आसुरी वृतियों के सन्नाम वा सवाल खडा हो जाता है। इस सवाल को आगे रखकर

## जीवन-साहित्य: अप्रैल १९५२

यह संग्राम चलाने का एक मार्ग प्रसंगानुसार गीता में प्रधानतया वताया गया है। लेकिन उसका मतलव यह नहीं कि यह संग्राम चलाने का वही एकमात्र मार्ग है या उससे अधिक श्रेष्ठ मार्ग का अवलंवन न किया जाय। गांधीजी ने सत्याग्रही कांति का जो मागं आधुनिक मानव के सामने रखा है, वह एक अधिक श्रेष्ठ मार्ग है और उसका अवलंबन करना गीता के आव्यात्मिक आदर्श के अनुरूप ही है। इसी दृष्टि से गांधीजी कहते थे कि 'गीता के उपदेश के अनुसार सत्याग्रह से अन्याय-निवारण का कार्य करते रहने का मार्ग में लोगों के आगे रख रहा हं।' लेकिन इस अधिक श्रेष्ठ मार्ग पर चलने के लिये जितने आत्मवल की ज़रूरत है उतना जिसके पास न हो, उसे गीता में वताये हुए मार्गों से अन्याय के खिलाफ लड्ना चाहिये, कर्तव्य-पराङ्मुख नहीं होना चाहिये, या समाज में चलनेवाले न्याय-अन्याय के प्रति उदासीन भी नहीं रहना चाहिये। यह बात सच हो तो भी कोई ऐसा नहीं कह सकता कि अन्याय के विरुद्ध शस्त्रवल से लड़ने के फल और आत्मवल से लड़कर न्याय-स्थापना करने के फल भीतिक या नैतिक दृष्टि से एक ही प्रकार के हो सकते हैं। आत्मबल से लड़कर जो फल मिल सकता है, वह शस्त्रवल की सहायता से किये हुए संग्राम से नहीं मिल सकता यही सिद्धान्त गांवीजी ने 'साधनों की शुचिता' के नाम से क्रांति-

कारियों के सामने रखा है। समाज के भौतिक अंगों का और आर्थिक तथा राजनैतिक व्यवहारों का विचार करना चाहिये, उन सबको नैतिक अधिष्ठान देना चाहिये और वह नैतिक अधिष्ठान जव नण्ट होता है तव उसे पैदा करने के लिये सामाजिक फ्रांति फरनी चाहिये, इन आयुनिक फांतिकारियों के विचारों को गांघीजी ने आत्मसात् किया है। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी दिखा दिया कि सर्वांगीण फांति आत्मवल से ही फरनी चाहिये, तभी सारे सामाजिक व्यवहारों को आवश्यक नैतिक अधिष्ठान प्राप्त करा दिया जा सकेगा। इनमें से सब सामाजिक व्यवहारों को नैतिक अधिष्ठान की जरूरत है, यह विचार गीता में मान लिया गया है। लेकिन जब वह नैतिक अधिष्ठान नष्ट हो जाता है तो उसे फिर से पैदा करने के लिये एक सर्वागीण फ्रांति करनी होगी और वह ऋांति आत्मवल से करना ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है; ये विचार गीता में नहीं मिलेंगे। लेकिन उसमें मानवीय जीवन-निष्ठा को बनाते समय भौतिक वास्तव-वाद और आध्यात्मिक आदर्शवाद का समन्वय करने का जो व्यापक दृष्टिकोण पाया जाता है । उस व्यापक दृष्टिकोण का आघार छेने से आज के मानव के गले यह वात अच्छी तरह उतरेगी कि यही विचारप्रणाली सच्चे अर्थ में उद्धार करने वाली हो सकेगी।

मराठी 'नवभारत' से ] (अनु०-- श्रीपाद जोशी

## 'जीवन-साहित्य' की फाइलें व विशेषांक

'जीवन-साहित्य' के गत वर्गों की कुछ अजिल्द और कुछ सजिल्द फाइलें हमारे स्टॉक में शेप हैं। उनमें बहुत ही उग्योगी सामग्री है। पाउकों से हमारा अनुरोव है कि अजिल्द के लिए ४) और सजिल्द के लिए ५) वार्षिक के हिसाव से भेजकर मंगा लें। पोस्टेज अलग।

### विशेषांक

१. विश्वशांति अंक

३. प्राकृतिक चिकित्सा अंक [परिशिष्ट सहित] २)

२. जमनाङाल-स्मृति अंक ॥)

४. भ्दान-यत्त-अंक [परिचिष्ट सहित]

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

# 'अर्था व किरी ?

भ्दान-यज्ञ

यह जानकर हुये होना है कि विनोपाली का भूदान यज्ञ ब्यापक रूप घारण करता जा रहा है। उन्हें न केवल भूमि ही अब अधिक मिल रही है, अपित उनके यज्ञ को देशभर में फैलाने के लिए स्थान-स्थान पर प्रयत्न प्रारम्भ हो गये है । समाचार मिला है नि ग्जरात में इस नाम के लिए एक कमेटी बनी है। और भी वई स्थानो पर कमेटिया बनी है या बन रही है। इस खबर से तो हमें बहत ही खशी हुई है कि एक जगह पर उन्हे पूरा गाव ही दान में मिल गया है। यह सब इस बात का दोनव है कि लोग विनोवाजी के अनुष्ठान की वल्याणकारिता और उसके दूरगामी प्रभाव को कुछ-कुछ समझने लगे हैं और उन्हें यह भी लगने लगा है कि देश की वर्तमान विषय परिस्थिति में विनोवाजी का मार्ग ही सर्वोत्तम है। काग्रेस से अब लोगो की अधिक आशा नहीं रही है और उससे भी कम मौज्दा शासन-नव से है। कारण कि काग्रेस के सगठन और शासन की मशी-नरी में अनेक बुराइया भर गई है और उनकी दृष्टि लोक-हित से हट कर अन्यन केन्द्रित हो गई है। ऐसी हालत में लोग विनोताजी और उनके यज्ञ की और बादाामरी निगाह से देख रहे हैं। कहना न होगा कि हम लोग जिनना विनोवाजी ने हाथ मजदूत करेगे, उनके यक्त को गतिशील बनायने, उतनी ही जल्दी देश में स्थायी आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति होगी और वराहती जनता को राहन मिलेगी । यदि समय रहने हम लोग नहीं चेते तो निश्वय हो एक ऐसा बवडर आने वाला है कि सारा देश वरवाद हो जायगा।

सौन्दर्य-प्रतियोगिता

विश्व-प्रतियोगिता में भाग छेने की दृष्टि से 'भारत सुन्दरी'का मुनाव करने वे लिए देश के भिन-भिन्न नयरोमें हुाल ही में जो प्रतियोगिता हुई थी, उसकी फिल्म सिनेमा-

घरो में दिखाई जा रही है । जिस प्रकार सीन्दर्य का प्रदर्शन क्या गया है, वह बाज की तयाकवित 'सम्यता' के लिए भले ही शोमा की बीज मानी जाय, भारतीय संस्कृति तथा नारीत्व के लिए वह घोर लज्जा की चीज है। जिन दा दो में प्रतियोगिता में भाग रेने वाली महिलाओं का फिल्म में बसान किया जाता है, उसे सुनकर तो धर्म से गर्दन झक जाती है। रूप ना इस प्रकार महे दग से प्रदर्शन करना सर्वया अवाउनीय है। क्या हम इतने दिवालिया हो गये है कि अपनी सस्कृति को छोडकर पदिवस का अन्धानुकरण करे ? हम नहीं चाहते कि अपने को एक सीमित परिधि के भीतर बन्द कर ले--आजवल की अन्तर्राय्दीय परिस्थि-तियों को देखते हुए वह समय भी नहीं हैं-लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्य देशों का हम आल मृद कर अनु-करण करे और अपनी उन चीजों को मूल जाय, जिनके कारण भारत ने शताब्दियों से विश्व में नाम और मान पाया है। हम अधिकारियों से अनुरोप करेंगे कि सीन्दर्य-प्रदर्शन की प्रतियोगिता की बन्द कर दिया जाय। राजीय टण्डनजी के शांदी में "सौंदर्य चरित्र का देखा जाना चाहिए, रूप-रगना नही।" —πο

राजधाट

राजघाट पर राप्ट्रपिता महात्मा गान्धी की समाधि है। महात्मा गान्धी इस युग के एक महान पूरप ये। ससार में जितने लोकप्रिय वे ये उतने लोकप्रिय बहुत कम व्यक्ति रहे होगे । मारत में भी उनके विरोधी तक उन्हें महान पुरप मानते थे--ऐसा महान पुरुष जो यूगो बाद जन्म लेता है। उनकी समाधि उन्हों के अनुरूप श्रद्धा और महानता की प्रतीक है। वह एक ऐसा पवित्र स्थान है, जिसका निसी विवादास्पद और दलगत नीति अथवा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके साथ ही वह पिक्तिक का स्थान भी नहीं हैं 1

लेकिन राजघाट पर सवकुछ होता है। वहां लोग जायें,पर उसकी पिवता का ध्यान रखें यह आवश्यक है। समाधि पर खेलना-कूदना, खा-पीकर इघर-उघर जूटन फैलाना, थूकना, फूल तोड़ना—ये वार्ते घामिक दृष्टि मे नहीं, नागरिकता की दृष्टि से भी अनुचित है। इन वातों को लेकर समाधि के रक्षकों और नागरिकों में अनेक वार संघर्ष हुआ है, अब भी होता रहता है। नागरिक अपना कर्तव्य समझें यह तो ठीक है, पर सरकारी लोग जिस प्रकार उन्हें यह वातें समझाते हैं वह भी शोभनीय नहीं है, विशेष-कर गांचीजी की समाधि पर।

राजघाट एक प्रकार से सरकारी विभाग वन गया है। सरकार एक यंत्र है, उसके सारे काम यंत्रवत होते हैं वर्षात् उनके पीछे मस्तिष्क होता है, ज्ञान होता है; पर हृदय तो दूर, बुद्धि के साथ भी कंजूसी वरती जाती है। यही हाल समाधिकी व्यवस्थां का है। लट्ट लिये अक्खड़ चौकी- दार वहां रक्षा के लिए तैनात है। पर हमारा विचार है कि गांधीजी की समाधि पर भय से नागरिकता सिखाना कोई अच्छी वात नहीं है।

इससे भी अधिक चिन्तनीय बात यह है कि समाधि राजनैतिक अखाड़ा बनती जा रही है। किसी को भूख-हड़ताल करनी होती है, कोई आन्दोलन शुरू करना होता है, जलूस निकालना होता है, मंत्रिमंडल बनाना होता है तो यह इन कामों का आरम्भ राजघाट से करता है। निस्संदेह उनकी भावना राष्ट्रपिता का आदर करने की ही होती है; पर इसके साथ यह भी स्पष्ट है कि उनके कुछ कामों के खाँचित्य के बारे में मतभेद होता है। सब काम सबकी वृष्टि में सही नहीं होते। गांधीजी से जीते-जी किसी का मतभेद रहा हो, पर मृत्यु के बाद वे मानव-मात्र के हो गये है। ऐसी स्थित में ऐसे कामों के लिए जिनके बारे में मत-भंद की गुंजायश है, उनके आशीर्वाद की कामना या कल्पना करना उचित नहीं है।

इसके अनिरिक्त समाधि एक पवित्र स्थान है। वहाँ जलूस या दूसरे तमाझे के काम अच्छे नहीं लगते। यह ठीक है कि ऐने कामों के बारे में कोई सीमा नहीं बांबी जा सकती और जनता के उत्साह को भी नहीं रोका जा सकता। राहीदों की चिताओं पर मेले जुड़ा ही करते हैं। इस सत्य को हम स्वीकार करते हैं। हमारा निवेदन केवल इतना ही है कि वे मेले दलगत न हों। किसी पार्टी-विशेप के न हों, भले ही वह सत्तारूढ़ कांग्रेस दल ही क्यों न हों!

और यह भी कि भारत-सरकार राष्ट्र की इस सम्पत्ति की रक्षा सरकारी विभाग की तरह न करके मानवता के मान-दण्डों के अनुसार करे।

## राष्ट्रभाषा और प्रांतीय हिन्दी

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा वन चुकी है, पर खेद हैं कि उसको लेकर अभी तक विवाद नहीं समाप्त हुआ है। हिन्दी-उर्द्-हिन्दुस्तानी विवाद की कसक अभी कुछ लोगों के दिल में खटकती रहती है और उसको प्रकट करने का कोई-न-कोई मार्ग वे ढ्र ही लेते हैं। इघर एक नया नारा उठा है—भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी और उत्तर प्रदेश की हिन्दी, दो हैं। उनके हप भिन्न-भिन्न हैं। अचरज इस वात का है कि यह नारा दोनों ओर से आया है। जो लोग कभी हिन्दु-स्तानी के पोषक रहे थे उनमें से कुछ लोग संस्कृत-बहुल शब्दों वाली हिन्दी को उत्तर प्रदेश की हिन्दी कहकर अपना रोष प्रकट करते हैं। हिन्दी-वादी कट्टर लोग आवाज लगाते हैं कि राष्ट्रभाषा का तुम कुछ ही हप स्थिर करो, पर भगवान के लिए हमारी हिन्दी को न विगाड़ो।

दोनों के अज्ञान पर हमें तरस आता है। भाषा किसी के बनाये न बनती है और न बिगड़ती है। वह तो सदा स्वयं विकसित होती है। वह नदी का नीर है, पोखर का पानी नहीं है, जिसे आप अपनी मरजी से रोक सकते हैं। राष्ट्रभाषा राष्ट्रकी है। राष्ट्रमें उत्तर प्रदेश भी है। पूर्व, पश्चिम और दक्षिण भी हैं। सबके योगदान से जो भाषा विकसित होगी वह राष्ट्रकी भाषा होगी। युग-युग में उसका रूप पलटता रहेगा, लेकिन आत्मा नहीं पलटेगी, इस सत्य को स्वीकार करके हमें इन अज्ञान-मूलक वारणाओं से छुट्टी पा लेनी चाहिए। ऐसी वातें स्वतन्त्र भारत के निवासियों को शोभा नहीं देतीं।

## नेपाल और हिंदी

नेपाल हमारा पंड़ौसी देश है। वस्तुतः वह अपने राज-नैतिक अस्तित्व के अतिरिक्त और सब प्रकार से हमारा अंग है। उसकी संस्कृति, उसका धर्म सब हमारे समान हैं। जसनी बोर्जी भी हुगारी बोर्जियों परिवार की हैं। यद्यां बहा कई बोर्जिया हैं पर गोरपाली उनमें प्रमुख हैं और बह हिन्दी के बहुत पास है। इपर समाचार आया है कि वहां है नविनिम्न मिमाइल के एक मुनी थी खड़ुमान सिंह है अपने देशवासियों को सलाह दी है कि वे हिन्दी सोसें। मह सलाह ठीक समय पर दी गई है। यदि नेपाल देश के निवासी इसमें राजनैतिक गंग्य न मानें ठो हिन्दी सोस कर स्वहत कुछ सीत्र सकते हैं। यह उनके पहोसी महाल मारत राष्ट्र की राज्द्रभाया है। मारत का खारा आन, सारा अनुमब हम भाषा में सचित होने बाला है। नेपाल देश के बारी हिन्दी सील कर अनायास ही इतने बड़े जान के अधिकारी बन सकते हैं।

हमारा उद्देश उनकी राष्ट्रभावा ने प्रका को उठाना मही है। वह कुछ भी बनें, हिन्दी का जान उन्हें सदा कल देगा, क्योंकि भारत नेपाल का बदा माई है। इसें विद्यास है कि मेपाठी लोग अपने क्यों में इसे में क स्टाह को उसी क्य में प्रहुप करेंगे, जिसमें वह थी गई है।

—'सुकोल पाठको का आभार

' जीवन-साहित्य' के पिछले अक में हमने अपने पाठकों से हुछ प्रस्त पूछे थे और पत्र के वर्तमान रूप के सम्बन्ध में उनकी सम्मति तथा मुसाब माने थे। बढ़े होगे की बात है मि पाठकों का प्यान उत्त प्रस्तो की क्रोर गया और उन्होंने ने बेवल पत्र पर अपनी सम्मति ही दी है, अपितु पत्र के और अधिक उपयोगी बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुसाब मी मैंजे हैं। इन सम्मतियाँ तथा मुझाबों कर हम जीवन-साहत्य के आगामी अनो में ययावसर स्वयोग करों।

जहा तर 'जीवन साहित्य' के मौजूदा रूप व नरेवर का सम्बन्ध है, पाठका के जिवार अलग-अलग हो सनते हैं, सबना एनमत हो भी नहीं सनता, लेकिन एक बात जो सबने स्त्रीकार की हैं, यह मह कि ये पत्र के प्राह्म बनाने में प्राप्त पोग देंगे। एक बगु ने तो रेप आहक बनाने का सुभ सकल्प किया हैं। कुछ बना कर मेज भी दिये हैं। कुछ भेज रहे हैं इससे स्पष्ट हैं कि पाठकों को जीवन- साहित्य' के प्रति गहरी बात्मीयता हैं और वे चाहते हैं कि उनका यह पत्र सेवा-पच पर उत्तरीत्तर गतिशील होता रहे ।

पाठक जानते हैं कि पत्र में हम विज्ञापन नहीं देते और आजकल आमदनी का सबसे वडा साधन विज्ञापन ही होते हैं। अधिकास पत्र इसी उद्दर्य को लेकर चल रहे हैं। ये कैमे-कैसे निकम्म और घृणित विज्ञापन छापते हैं, इसकी कन्पना पाठकी की इस अक के एक तत्सम्बन्धी लेख से हो जायगी : 'जीवन-साहित्य' इस मार्ग को सर्वधा जवाछनीय मानना है। इसमें पाठकों के हित की भावना नहीं हैं, बन्कि निजके अनचित लाभ नी है। इसलिए प्रति वर्षे तीन-चार हजार १५वे का घाटा उठाते हए भी 'जीवन-साहित्य' विज्ञापना की आमदनी के लालच से बचता रहा है और आगे भी बचने का प्रयत्न करेगा। तब उसे केवल अपने पाठको ना ही सहारा रह जाता है। पिछले विसी अक में हमने अपने पाठको से निवेदन बिया था कि यदि प्रत्येक पाठक ५-५ ग्राहक बना दें हो 'जीवन-साहित्य' घाटे से बच जायगा और पाठको की सेवा अधिक क्षमता के साथ कर सकेगा। हमारे पास जो उत्तर आये हैं, उनमें अधिकाश लोगो का कहना है कि पत्र के पुष्ड बहुत नम है। हम स्वय इस बात को महसूस करते हैं, लेबिन पट्ठ बढ़ाने का साहस करें तो कैसे ? पट्ठ बढ़ाने का अर्थ होगा धाने को बढाना। पष्ठ तो तभी बढाये जा सकते है जब बाहको की सस्या बडे।

हुम पाटका से पुण अनुरोध करेंगे कि वे जितने ग्राहक बना सकें, बनाने की हुपा करें। अपने यहा के शिक्षा-विकाशो राधा पुस्तकालगां व अन्य सार्वजनिक सस्याओं को भी प्राहक बनने के लिए प्रेरणा रे सनते हैं। लेकिन पुमीष्म से 'सर्वोद्य', 'हरिजनसेकक' अपवा 'जीवन-साहित्य' जैसे पत्रोकों सरीदने की शोर उनका प्यान नहीं जाता है। हुमें उचसे पैरना अवस्य होती हैं, पर हुम जानते हैं कि सेवा ना मार्य हमेशा कठिन होता है। हमें विस्तास ह कि वो सरकार नहीं कर पाती पाटक उसकी पूर्ति जदस्य करेंगे।

# नूतन वाल-शिच्चण-संघ

की

# हिन्दी शिक्षगा-पत्रिका

आद्य सम्पादक—स्व० गिजुभाई वधेका : प्रधान सम्पादक—ताराबहन मोड़क सम्पादक—वंसीधर : काशिनाथ त्रिवेदी

'आज का वालक कल का निर्माता हैं' यह सब मानते हैं; पंरन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक बनाने के लिये प्रयत्न 'हिन्दी शिक्षण-पत्रिका' करती है। यह नूतन शिक्षण के सिद्धान्तों के अनुसार वालोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करती है। यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करती है। यह पत्रिका मनोविज्ञान के आचार्य श्री गिजुभाई वधेका के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति है।

पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय हैं। वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।=)।
विशेष जानकारी के लिये लिखिए:

हिन्दी शिच्तण-पत्रिका-५१ नंदलाल पुरा लेन, इन्दीर।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का सचित्र सांस्कृतिक मासिक पत्र

# विक्र म

## (सम्पादक तथा संचालक—सूर्यनारायण व्यास)

हिन्दी का सर्वेश्रेष्ठ मासिक 'विकम' ही है, जिसका राजा-महाराजाओं से लेकर देश के सर्वेसावारण , समाज तक समान रूप से प्रवेश हैं।

'विक्रम' के आरिभिक १६ पृथ्ठों में महीने भर की महत्वपूर्ण घटनाओं पर विविधतापूर्ण, मौलिक, उत्कृष्ट और निर्भीक एवं स्वस्य विचार समन्वित रहते हैं। सभी विद्वानों ने हिन्दी का 'माडने रिव्यू' कह कर इसकी प्रशंसा की है।

स्वस्य साहित्य, 'श्राष्ट हास्य, चुनी हुई कविता और कहानी एवं विचार-प्रेरक पंचामृत तथा समस्त मासिक साहित्य का सुन्दर परिचय 'विक्रम' की अपनी विशेषता है ।

यदि आप अवतक ग्राहक नहीं है तों अिलम्ब ग्राहक वन जाइये, मित्रों को बनाइये और परिवार के शाल-यर्थन के लिए 'विक्रम' को अवस्य स्वीकार की जिये । वार्षिक मूल्य ६) ६०, एक प्रति का ॥=), नमूना पुण्त नहीं ।

विशेष जानकारी के लिए लिखिये:

ज्यवस्थापक — विक्रम कार्यालय, उन्जेन (मालवा)

## **\* राष्ट्रभारती** \*

#### भारतीय साहित्य की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

रिकीय वर्षे में प्रकार्रण

सम्पादक-शो मोहनलाल मह, श्री हृषीकेश शर्मा

साहित्य सम्प्रति कला प्रजान पश्चिका "राष्ट्रभारती" प्रति सास आपको हिन्दी और भारत की विभिन्न प्रान्तीय तथा विदेशी भाषाओं की साहित्यक सास्कृतिक गतिविधि का परिचय देशी !

इसमें देश विदेश के गण्य-मान्य विद्वाना और कलाकारों की थेप्ट रचनाए और अधिकृत अनुवाद भी रहते हैं। "राष्ट्रभारती" को राष्ट्रमाया--राजमापा हिन्दी के और समझा सभी प्रातीय भाषाओं के खेक साहित्यकारो का सहयोग प्राप्त है।

'कोबिद', 'राष्ट्रभाषारस्न' और 'विशारद के अध्ययनशील त्रीढ छात्रो की सहावक्षा के लिये प्रति-मास इस पत्रिका में मुख्य मुख्य पाठ्य पुस्तको को छेकर समाली बनारमक सामग्री भी प्रस्तुत की जायगी।

राज्यभारती प्रत्येक मास की १ सारीख को प्रकाशित होती है। दी। पी। भेजने का नियम नहीं है। नमने की प्रति वे लिये १० आना के डाक टिकट भेजें।

वार्षिक मल्य ६) **चिक प्रति १० छाना** 

प्रयाध्यक्ती--"राष्ट्रभारती" राष्ट्रभाषा प्रचार समिति. हिन्दीनगर, वर्धा ( मध्य-प्रदेश )

#### समाज-साहित्य का मुखपत्र

त्रं सुन्दर तिरंगा यावरख

★ त्रिचार-प्रधान लेख

\* भारपूर्ण कहानियां

★नए और प्रराने लेखकों का मिलन-स्थान।

## सरग स

प्रवान सम्पादक

ख्याजा श्रहमद श्रब्बास

सम्पादक कुलभूषण्

मारत के प्रमुख शहरों में सभी जगह मिलता है। छमाही ५॥)

वाधिक १०)

एक प्रति १)

सरगम पव्लिशर्स

अडवानी चेम्वसं, फीरोजशाह मेहता रोड, वम्बई १

<u> </u>
विहार, उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान श्रौर वड़ौदा के शित्ता-विभाग से स्वीकृत
=== किशोर ===
E STATE TO THE STATE OF THE STA
विद्यार्थियों और किशोरों को लोकप्रिय और ज्ञानवर्द्धक पाठ्य-सामग्री देने वाला
हिन्दी-संसार में अपने ढंग का अकेला मासिक
C 'किशोर' विज्ञान, भारत की प्राचीन संस्कृति, साहित्य, व्यायाम और स्वास्थ्य आदि विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में किशोरों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करता है।
ा अपने पाठकों को मानव-जीवनक्रम का, विश्व के इतिहास का, विज्ञान के शोधकों, ग्रहलोक की मनोरंजक कहानियों और साहसिकों के कौतूहलपूर्ण रोमांचक प्रसंगों का परिचय कराता है।
C नये-नये विषयों से पूर्ण, अद्यतन अनुसंवानों के आधार पर रचित कहानियां देना 'किशोर'की अपनी विशेषता है।
<ul> <li>प्रेरक कविताएं, आदशं जीवन-कथाएं, प्रकृति का सजीव वर्गन, यात्रा-विषयक लेख 'किशोर' के प्रत्येक अंक में रहते हैं।</li> </ul>
🔿 प्रति दां विशिष्ट पाठ्य-सामग्रियों से विभूषित और अनेक चित्रों से सम्पन्न विशेषांक निकालता है।
'किशोर' के कुछ महत्वपूर्ण विशेपांक
कालिदासांक-१) गांधी अंक-१।) भारतांक-१) रवीन्द्र अंक-॥)
पटेल अंक।=) उपकथांक।।) विक्रमांक।।) स्वाचीनता-अंक।।)
वार्षिक मूल्य ४) : एक अंक का ।=)
वाल-शिचा-सियति वाँकीपुर (पटना)
······································

## हिन्दी-कथा-साहित्य की सर्वश्रेष्ठ सर्वाग-सुन्दर सचित्र मासिक पत्रिका

एक प्रति [

- सुमित्रा -

वार्षिक मूल्य ६) रुपया

संचालक-श्री कैलाशनाथ भागंव, स्टार प्रेस, कानपुर

तथा

संपादक--श्री देवीप्रसाद धवन 'विकल' भ्रौर श्री विट्ठल शर्मा चतुर्वेदी

परिवार के सभी सदस्यों—स्त्री-पुरुषों, पुत्र-पुत्रियों, भाई-बहिनों—को 'मुमित्रा' वेबड़क पढ़ने को दी जा सकती है। इसकी कहानियां पाठक की सात्विक वृत्तियों को जाग्रत करती हैं तथा व्यक्ति को मुसंस्कृत बनाती हुई उसका मनोरंजन करती हैं, कर्त्तव्य के लिए सन्नद्ध करती है, और भावुकता के दुरुपयोग से बनाती है।

'नुमित्रा' के पाठक कहानियों द्वारा वड़-से-वड़े और गूढ़-से-गूढ़ विषय को भी आसानी से समझ सकते और मानव-जीवन की गृहिययों को आसानी से सुख्झा सकते हैं।

नमूना के लिये आज ही पत्र लिखिये

सुमित्रा-प्रकाशन, महात्मा गांधी रोड, पोस्ट वाक्स नं० १. कानपुर

#### 'मग्डल' के नवीन प्रकाशन

राजधाद की संनिधि में (विनोबाजी के प्रवचन)

m = 1

"मूर्गि की समस्या के समाधान के लिए जानार्य भावे ने जो प्रणाली अपनाई है, उससे छोगो को मनभेद ही सकता है, निन्तु इस सच्य को कोई अस्तीक्षर मही कर सकता कि उसका उद्देश महान और पवित्र है। इस महता और पवित्र के इसने इन प्रवचनों में पूर्णहण से मिलते हैं। पुत्रत्व पठनीय और मननीय है तथा हम प्रत्येक हिन्दी पाठक से आयह करते हैं कि वे इस प्रत्येक को अवस्य पड़े।"

--नवभारत टाइम्स

अमिट रेखाएं (सम्पा॰ सत्यवती मल्लिक)

3)

"हम पर बनारसोदास चतुनेदी के इन धारेंदी से पूरी तरह सहसत है कि 'इस सदह ने पीडे एक व्यक्तित्व है, आत्मा है, एक घोजना है ।" सारा सदह हतने मुन्दर वर से किया गया है नि उतको इराजता और सप्रणीता मन को गिरफार कर जेती है।"

--विश्ववाणी

एक ग्रादर्श महिला (ले० विनायक तिवारी)

ş

"ऐसे जीवन चरियो का हर गृहस्य में रहना आवरवन है। यदि आप अपनी पुनो, बहन अववा पत्नी को कोई पुस्तन उपहार-स्वब्द प्रदान करना चाहते हैं तो आपके लिए 'एक आदर्स महिला' सर्नोहरूट साबिन होगी।"

---नई दुनिया

ेरीढ की हड़डी (स॰ विष्णु प्रभाकर)

011)

".. सम्पादक का प्रयक्त अवस्त स्तुत्व है और उसने हिन्दी के पाटको को अपने प्रतिनिधि एकाकी नारों और उनकी रचनाओं से अवस्त कराने की दिशा में को अवसी का नाम किया है यह सराहतीय है एवं अनुनरभीय है।

-- नवभारत टाइम्स

अन्य पुस्तको के लिए 'मण्डल' का वडा सूचीपन मगा लीजिये।

#### सस्ता साहित्य मगडल नई दिल्ली

# 司意

जिस ग्रंथ को पाने के लिए हजारो पाठक चिरकाल से उत्सुक हो रहे थे वह

विष्य-हरिहास की कृतकः

वड़े ही सुन्दर और आकर्षक रूप में मई के अन्त तक प्रकाशित हो रहा है।

# इस हरे संस्कारता से

मूल अंग्रेजी ग्रंथ से वहुत-सी नर्ड सामग्री जोड़ दी गर्ड है और एक प्रकार से नया ही अनुवाद हुआ है।

सुपर रायल अठ-पेजी O पृष्ठ ९०० के लगभग O मूल्य २१) लेकिन इसके प्रकाशित होने से पहले

अर्थात् मई के मध्य तक जो पाठक, पुस्तकालय तथा शिक्षा-संस्थाएं १६) भेज देंगी, उन्हें ग्रंथ इसी मूल्य में हम अपने खर्चे से भेज देंगे।

पुरत्वा किहाता छों

कं लिए

भी विशेष रियायतें रक्की गई हैं। पत्र लिखकर मालूम कर छीजिये।

इस व्य

की

माँग बहुत है और प्रतियाँ थोड़ी छपी हैं। अनः जल्दी कीजिये।

--मिलने का पता--

नवयुग साहित्य सदन स्टब्स् स्टिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट प्रस्टुस्त हिन्दी प्रकाशन मंदिर खजूरी बाजार, इंदौर नहीं दिन्ही जीरो रोड, इलाहाबाद

# Alek enieta

अहिंसक नवरचना का मासिक

int lliter

#### हरिभाअ उपाध्यायः यशपाल जैन

इस अक के विशेष लेख

- **©**विचार सुबार
- 🛮 कत्रा का विराप (शहानी)
- जीवन की गहराई म (सम्मरण)
- •सेवापुरी सवादय-मम्मरन
- ●कम्बोडिया न गौरव स्थ**ठ**
- ●गुरदव–गाधी

आदि आदि

मई १९५२ छ: द्याना

--- 87707



सस्ता माहित्य मंडल प्रकाणनः

# व्यक्ति प्रचिष्ठ प्रचिष्ठ । जिल्लिन साहित्य (एक प्रविश्व १०)

## लेख-सृची

्. इ <del>ड-दाप</del> न	••	20.5
२, मंत्र का द्वस्थन	थी रवीन्त्रनाथ टाहुर	25.8
इ. लोकी-मुन्डेक	धी गु <i>रदवास मिल्ल</i> क	250
८. विचार-मुणार	थी प्रमुदास गांबी	25.4
<ol> <li>मूले वान वरें</li> </ol>	र्ध। कंचनलना मध्ययाल	205
६ जीवन की गहराई में	हरिमाडः उपाच्याय	202
s   देन बनाम पूजा	श्री र <del>बीकनाय</del> ठाडुर	さっさ
८. सर्वी का विकाप	থা কৰীৰ বিহান	20%
<ul> <li>वस्तोतियां के गीनवस्थल</li> </ul>	ष्टी० रंजन	27:
१८ मेबारुरी या महीहरू-मन्मेलन	श्री श्रीपाट तोशी	2 5 3
११. नचीडी पर	समालोदना	চ্চ
१२. ह्या ह समि ?	हमारी राष्	7.26
१३. मंटल के मधे प्रकाशन	स्रोक्सन	252

### च्यवश्यक स्चना

जो वन्यु जुलाई से 'जीवन-साहित्य' के ग्राहक बसे थे, उनका चंदा अगले महीने समान हो जायगा। हमारा उनसे अनुरोध है कि विना मांगे या नमरण पत्र की प्रतीक्षण किये नवयं ही दे अगले वर्ष के लिए ४) मनीआईर द्वारा भेज देने की हुपा करें। यदि नीम जून नक हमें रूपया या कोई सूचना नहीं मिली तो हम समझेंगे कि दे पत्र दी० पी० से चाहने हैं और जुलाई का अंक वी० पी० द्वारा भिजवा देंगे।

जीवन-साहित्यं की आधिक स्थिति के विषय में हम समय-समय पर अपने पटकों को सूचनाएँ देने रहे हैं और पाटकों से यह छिपा नहीं है कि 'जीवन-साहित्य' को विद्यापनों की आमदनी नहीं है। इसेलिए उसे अपने ग्राहकों पर ही निभेर करना पहला है।

ऐसी अवस्था में जाहकों से हमारा निवेदन है कि वे अपना द्युन्क तो भेजें हो. नाथ ही दूसरे भाइयों को भी जाहक बनसे को प्रेरित करें।

> व्यवस्थापक सस्ता साहित्य संडल नई दिल्छी

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, अध्यप्रदेश तथा प्रहार प्रादेशिक सरकार्रास्त्रिय स्टूली, काल लाइमेरियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम पचायती केंक्सिय स्टीवृत

# सीवन साहित्या अहिसक नवरवना का मानिक

मइ १९५२ ]

[वप१३ अक ५

वद्धवागी

अत गढि न दीप्र स न भूनि स और न मान न ही प्राप्त होती है। गीरनती पूरप भी जाध्यात्मिन गढि नहीं दिला सनता पर इतन से यह न समयमा नि य निरम्पक हैं और इनका याग करन से गुढि प्राप्त होनी है। बचतक सम दिलाय और होने का सान बना रहेगा तवतक गढि दुकम है।

मद्रापात क स्थ्यन संसर्वात का नाग हांगा हु इसम तो संगह ही गहा। फिर मद्यपात सं क्छह बहुना हु और सह रांगा का घर ता हु हो। क्सन अवकीरि भी पण होती हु। यह व्यसन सन्द्रा को नट्ट और बृद्धि की क्षाण का दना हु। मद्यपान के छ दुव्यरिणाम हु।

जो प्राणियो की हिसा करना ह वह द्वाय नहीं । समस्य प्राणिया क साथ जा अहिसा का बतीव करना ह वहीं आप ह ।

जम कोई मनुष्य विश्वी प्रवण्यात की नणाम उनरकर तर न सकन के कारण बहु जाना ह और दूसरा को पार नहीं उतार सकता कत हा जिन मनव्य न यमबान वा सपानन नहीं किया और विद्वारा के सूज स अध्युष्ण वचन नहीं मुत जो न्वय ही अपान और सपाय म बूबा हुआ ह बहु दूसरों का विस्त प्रवाण समाधान कर सकता है?

त्रज्ञ कोई गाणी हो नहीं तरे गाल पर बोर्ड यणड भार द या पत्थर या हिष्यार स तर गरीर पर बोर्ड प्रहार करे तो भी तेरे वित्त में विकार नहीं जाना चाहिए तरे मृह स गर्र गण्य नहीं निकलन चाहिए तेरे मन म उस समय भी तर गत्रु के प्रति अनवपा और मत्री वा भाव रहना चाहिए और निसी मा हाग्त स प्राप्त नहीं आना चाहिए।

साय एक हा ह दूसरा नही । साथ व किंग बढ़िमान लाग विवार नहा करता ।

### रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वीणा का कोई तार पीतल का होता है तो कोई तार फीलाद का। कोई तार मोटा होता है तो कोई तार वारीक। कोई नार मध्यम स्वर में आबद्ध होता है तो कोई पंचम स्वर में। नार को बांधे बिना काम नहीं चल सकता, वयोंकि उसमें से कोई एक विश्वद्ध स्वर उपजाना होता है।

इस जगत् में ईश्वर के साथ हमें कोई विशेष सम्बन्ध स्थापित करना होता है। कोई एक विशेष स्वर जाग्रत करना होता है।

चराचर विश्व के इस विराट् विश्वसंगीत में मूर्य, चन्द्र, तारे, आपिंध, वनस्पति आदि सब अपने विशेष स्वर बजा रहे हैं। तो क्या मानव-जीवन को भी इम चिर-उद्गीय संगीत में, अपना स्वर नहीं वजाना चाहिए।

परन्तु अभी तक हमने इस जीवन को तार की तरह वांधा नहीं। अभी तक उसमें से किसी गान का आविर्भाव नहीं हुआ है! हमारे जीवन मूल स्वर से विच्छित्र होकर अनेक प्रकार की तुच्छताएं अकृतार्थ हो रही है। येन-केन प्रकारेण उसमें से एक नित्य स्वर की धुव बनाना ही पटेगा।

तो फिर तार को किम प्रकार बांधा जाय? ईंग्वर की वीणा में बांधने के म्थान तो अनेक है। उनमें ये किमी एक को निश्चित तो करना ही होगा।

मंत्र इस प्रकार का एक बन्धन है! संत्र के आधार पर हम मनन के विषय को मन के साथ जोड़ कर रख सकते हैं। यही बात बीणा की खूंटी में होती है। इस प्रकार करने से आबश्यकता के प्रमाण में ही तार बांधा जाता है। वह छटक नहीं सकता।

विवाह के समय स्त्री-पुम्प के कपड़े में गांठ वांघी जाती है और उसके साय मंत्र भी पढ़ा जाता है। वह मंत्र मन में भी गांठ वांघ देता है।

ईरवर के साथ ग्रंथि बांधने का जो प्रयोजन है उसमें मंत्र सहायक होता है। उस मंत्र के आधार पर हम उसके साथ अपना एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध निदिचत कर सकते हं। ऐसा ही एक मंत्र है—पिता नोऽसि, पिता नो बोधि ! नमस्ते अस्तु ! मा मा हिंसी : यजुर्वेद ।

जीवन को इस स्वर के साथ वांध लेने से अपने सभी विचारों में, सभी कर्मो में, एक विशेष रागिणी वज उठती है। में उसका पुत्र हूं यह मंत्र मूर्तिमान होकर हमारे समस्त अस्तित्व में यही वात प्रकट करेगा कि मैं उसका पुत्र हूं।

आजकल तो हम कुछ भी प्रकट नहीं करते, खाने-पीने में, काम में और आराम में समय चळा जाता है। परन्तु अनन्त काल में, अनन्त जगत् अपने पिता हैं ऐसा कोई लक्ष्ण ज्ञात नहीं है। अभी तक अनन्त के साथ हमारी कोई गांठ बंधी नहीं।

चलो, आज इस मंत्र से हम अपने जीवन का तार वांधें ! त्याते-पीते, उठते-वैठते, जागते-सोते, वारंवार यही एक मंत्र हमारे मन में वजता रहे— 'पिता नो ऽसि।' जगत् के समस्त मानव इम तथ्य को जान जायं कि हमारे पिता हैं।

ईसा मसीह इस स्वर को पृथ्वी पर झनजना चुके हैं। उनके जीवन के साथ यह तार ऐसी पक्की रीति से वंघा हुआ था कि मरण पर्यन्त की समस्त यंत्रणाओं ने या दु:सह आघातों ने उसे लेशमात्र भी वेसुध नहीं वनाया। वे बोलते थे—-'पिता नोऽसि।'

'है पिता, मैं तुम्हारा पुत्र हूं'—इस स्वर को ठीक प्रकार से जगाना कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। क्योंकि पुत्र में पिता का ही प्रकाश होता है। 'आत्मा वै जायते पुत्रः।' संतान में पिता स्वयं ही संतत होता है। यदि तुम्हारी अपापविद्ध, आनन्दमय, परिपूर्णता को व्यक्त नहीं किया जा सके तो फिर 'पिता नोऽसि' इस स्वर की संकार कैसे होगी ?

अतः मेरी प्रत्येक दिवस की यही प्रार्थना है---'पिना नो बोधि, नमस्ने अस्तु ।'

अनु०--शंकरदेव विद्यालंकार

#### गांधी-गुरुदेव

गाभीजी मुनहली जिस्स में बधी हुई भावत्-गीता में तो गुरदेज उपनियदों की सचित्र आवृति । एक धर्म का उपासक था तो दूसरा क्यां, लेकिन दोनों एक साय—प्याधि अलग-अलग क्षेत्र में—एक ही सरस में मनिंदर में उपायना करते थे।

गांधीकी ने सेवा ना संगीत वर्खें की धुन के साथ गाया, पुरदेव ने अपना पोधन संगीत की सेवा में विज्ञाया। एक ने मत्त्र्य-जाति के दु की दिक को दिकाया दिकाया ती दुसरे ने मत्त्र्य की आरमा का आनन्द दिया। पर दोना एक साथ प्रेम के मोहित वर्षेत्र में किरे।

याधीजी ने नीति के अनन्त मार्गों पर चलते हुए प्रभुका मार्ग पक्षा । गुरदेव ने प्रेम की उपस्थित म आनन्द ने नृत्य विया और प्रभुके दिल्का गुप्त मार्ग स्रोज निकाला ।

एक ने कमल में जो बिजलों वा बाण है उत्पर ध्यान किया, दूपरे ने विजापी के बाण पर जो कमल है उत्पर। लेकिन ये दोना सत्य के दो बाजू है—मृदु और रहिन नम्न अपन

गाधीती की दिस्ट में यह जगत प्रभुका एक

कार्यालय था। बुरदेव की दृष्टि में यह जगत भगवान का एक वर्गीचाथा। परन्तु दोनों ने अविरत कार्य में अपना जीवन विताया। एक का काम था आनन्दमय करना जीर दुषरे का काम था आनन्द उत्तप्त करना।

गाषीजी यह भागते थे कि व्यक्तिगन समस्या जगन की समस्या है। गुम्देव भागते ये कि जगत की जो समस्या है वही व्यक्तिगत समस्या है। पर दोनो जानते ये कि जीवन एक सीधी ककीर नहीं, एक बल्लैज है।

एक ने यह माना कि जीवन सगमरमर का एक बर है। पर इसरे न यह माना कि जीवन हैम का अभि-सार है। इसिलिए गाधीबी न उस अनगढ़ हैन में से मूर्तिकार के समान मूर्ति गरी, इसरे ने एन बीने और अपनी प्रिया की बेणी में न्यूगार किया। पर दानो न जीवन तो स्वीनार किया। एक में शक्त के रूप म और दूगा ने स्वीवनार किया। एक में। यक न दामी में कप म और इसरे ने कुमारी के कर म।

इस प्रकार गाधीजी और गुरवक दाना प्रभू के दिल के बाग में उगे—जो दिल मानव दिल है। उनके जीवन की मुवास असर रहेगी, जैसे भगवान् असर है।

#### प्रभुदास गाधी

एक समय था, और वह बहुत पुरानी बात नहीं है कहिन हुतारे देश के कीने-कीन में बहा देशों निरादा-ही निरादा छाई हुई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि निन स्तेत प्रभुतों भी गुलामी के नितायकारी निकल में हम लीन पूर्व होता था गिलामी के नितायकारी निकल में हम लीन पूर्व है उससे से निकलान निल्म ही नहीं, जसभय सा ही है। निर्वंत सा बळनान अनगद या निडान् रेयत या राजा, गयार या राजनीतिज और पूरण या नवजवान सभी ने मन में यह विश्वास जम गया था कि इस अधनी नियम से हुइना, बरसो नया सरियो तक नामुमिन बना रहेगा। जिसके सामाज्य ने आपी में अधिव पूर्वों पर

#### विचार-सुधार

रवी है और जिसके साधाज्य में सूर्य अस्त ही नही होता, ऐसे साधाज्य को उल्टना मनुष्य के बूते की बात नही है। ईक्वर हो जब कहा पार लगायेगा तब सही ।

किंतु करोडो भारतवासियों के हृदय में एसी घोर निराक्षा के होते हुए भी अपने देश में एसे विरले लोग भीजूप में जो उस अटल शासान्य को उलाइ फॅक्न पर दुक हुए में और उसी कोशिय में दिन रात एक कर रहे थे। कम्में से कुछ लोग ऐसे में जो जुन छिप का जहा मौका मिटे बहा चुन-मुक्त र हुट अपनरों की हुया करन म अपनी पूरी शाकिन और बृद्धि सर्च करते में। कुछ ऐसे भी में, जिन्हें इन छुटपुट हत्याओं के द्वारा कोई काम बनना नहीं दीखता था, इसिलए अंग्रेजों की फीज में छद्म रूप से प्रविष्ट होकर सारी-की-सारी भारतीय रोनाओं को वरगलाने की और विधिवत समुचे देश में एकसाथ क्रांनि कर देने की तैयारी में लगे रहने थे। दूसरी ओर कुछ समझदार विद्वान अंग्रेजी राज्य के मूल सत्ताधारियों को समझा-बुझाकर और भले अंग्रेजों की दया प्राप्त करके अपने देश पर होने वाला कठिन अत्याचार व अन्याय दूर कराने का प्रयास करते थे। इन तीनों प्रकार के देश-सेवकों के अनिरिक्त एक दल ऐसा भी था जो राजकाज या राजनीति से अछुता रहकर अपने इस गुलाम देश के अवनत समाज को उन्नत करने के लिये भरसक प्रयत्न करता था । उनका खयाल यह था कि गुलामी के भयानक गर्न से देश को उभारने का कामयाय तरीका अपने समाज का मुधार ही है। और मुधार का उनका ध्येय प्रायः पाञ्चात्य देशों की आधुनिकता को अपनान कर एवं यंत्र, विज्ञान और भौतिक साधनो का भरसक लाभ उठाकर देश के जीवन-स्नर को पश्चिम के देशों के बरावर ला देने का था। मार यह कि उस घोर गुलामी से वचने के लिये एक ओर तो कुछ लोग बारीरिक बल वटोरने में लगे हए थे और दूसरी ओर कुछ लोग अपनी कालिख मिटाने के लिये समाज और जीवन-स्तर की परिवर्तित करने पर तुले हुए थे।

ऐसे समय में इन चारों प्रकार के देश-सेवकों से वित्कुल भिन्न एक निराली आवाज गांधीजी ने निकाली। उन्होंने समरत भारतवानियों को सचेत किया कि सर्वप्रथम आवश्यकता अपने विचार और दृष्टि को शुद्ध करने की है। जबतक विचार-दोप बना रहेगा तबतक भारत को गुलामी से छुट़ाने के लाख प्रयत्न वेकार सावित होंगे। यदि अंग्रेजों को भगाने में थोड़ी-बहुत सफलता मिलेगी भी तो वह गुलामी का परिवर्तन-मात्र होगी। अपनी उस चेतावनी को 'हिंद-स्वराज्य' नामक पुस्तक में गांधीजी ने लिपिबद्ध किया। वह कोई बड़ा ग्रंथ नहीं है, छोटी-भी पुस्तिका मात्र है; पर है साक्षात् जलती हुई चिनगारी। स्वच्छ चित्त से, किसी भी पूर्वाग्रह के विना, जब उसका गहरा अध्ययन किया जाता है तब अपने

विचारों में, अपने जीवन-प्रवाह में, आमूल परिवर्तन कर देना मनुष्य के लिये अनिवायं हो जाता है। जिस आतम-विश्वास के साथ प्राचीन ऋषियों ने अपने उपनिषदों के बारे में कहा है कि "इसे मुनकर सूखा ठूंठ भी अंकुरित हो उठेगा" उसी आत्मविश्वास के साथ गांधीजी ने अपने 'हिंद-रवराज' की प्रस्तावना में विनयपूर्वक चुनौती दी है कि "उद्देश्य मात्र देश की सेवा करने का और गत्य की खोज का व उसके अनुसार आचरण करने का है। इसलिए यदि मेरे विचार गलन साबित होते है तो उसे पकड़ रखने का आग्रह मुझे नही है। परन्तु यदि वे सही साबित होने है तो दूसरे लोग भी उसका अनुसरण करें, ऐसी अभिलापा देश-हित के लिये मन में रहेगी ही।"

दूसरों को अपने इन विचारों को ग्रहण करने का आग्रह वे क्यों कर रहे है, इसका भी खुलामा गांधीजी ने अपनी उस प्रस्तावना के आरम्भ में किया है—"जब मुझमे नहीं रहा गया तभी मैने यह लिखा है। बहुत पढ़ डाला, बहुत मोचा-विचारा, जितना बन पड़ा, हिंदी लोगों में बहम की और बहुत में विचारवान अंग्रेजों में मिलने और बात करने का भरसक प्रयत्न किया। इसके बाद जो अपने अन्तिम विचार प्रतीत होते है उन्हें पाठकों के सन्मुख रखना अपना कर्त्तव्य समझता हूं और उसे लिखकर प्रकाशित करने का साहस मैने किया है। आशा है कि अपने इन विचारों को आम जनता के सामने रखना अनुचित नहीं माना जायगा।"

और वे विचार हैं क्या ?

सच्चा जोश—अंग्रेजों से भारत को छुड़ाने की तीव आतुरता उसीमें आवेगी जो ज्ञानपूर्वक मानेगा कि भारतीय संस्कृति सर्वोपिर है और यूरोप की संस्कृति केवल तीन दिन का तमाबा है। ऐसे सुधार कई आए और मिट्टी में मिल गये। कई पैदा होंगे और मिट्टी में मिठ जायंगे।

मच्चा जोश उसीमें हो सकता है जो आत्मबल का अनुभव पाकर शरीर-बल के सामने नहीं दवेगा व निडर रहेगा, और इनने पर भी किसी पर बल-प्रयोग करने की बात स्वप्न तक में नहीं सोचेगा।

मच्चे जोगवाला वह रह पायगा, जिस हिंदी का

दिल आजकल की दयनीय परिस्थिति को देखकर बहत ही वेकरार बन गया होगा और जिसने जहर का प्याला शरू से ही अपने गले के नीचे उतार लिया होगा।

अगर ऐसा (सच्चे जोडा वाला) एक व्यक्ति भी होगा तो वह अग्रेजो को भारत छोड कर चले जाने वी ब्रात सना सकेगा और अग्रेजो को वह सननी पडेगी।

••••हमें जो स्वातन्त्र्य चाहिए वह मागने से मही मिलेगा, र्यिया केने पर ही मिलेगा । हथियाने के लिये तास्त की आवश्यकता रहेगी । और वह तानत. बह वल उसीके पास होगा जी---

१ अग्रेजी मापा का प्रयोग मजबरी की हास्तत में ही बाने अनिवार्य होने पर ही करेगा ।

२ जो खब बकील होते हुए भी अपनी बकालत को तिलाजिल है हेगा और अपने घर में चर्ला समाकर कपड़ा सनेगा ।

३ जो वकील होते हुए अपना पूरा ज्ञान जनना को समझाने-यज्ञाने में और अग्रेयो की बाल खोलने में रुगायेगा ।

४ जो स्वय बकील होनर मजरिम और मब-क्किलो के झगड़ो में न उलझकर अदालतो से अलग रहेगा और उसका परित्याग करने के लिये छोगी को अपने निजी अनमवी के आधार पर समझायेगा ।

५ वकील होते हए अपनी वकालत छोडने के साथ-साथ जज बनना भी रवाग देगा ।

६ जो डाक्टर होने हुए अपना बधा छोड देगा और विश्वास करेगा कि छोगो के रक्त-मास की चीर-पाड करते रहने के मुकावले लोगो की जात्मा का विदलेयण करके व उसका अनुसधान करके अनता को स्वस्य करना बेहतर रहेगा।

७ जो डाक्टर होते हुए यह बात समझ लेगा कि वह स्वय चाहे जिस धर्म या सप्रदाय का हो फिर भी जिन्दे पश-पक्षियो पर अग्रेजी चिनित्सालयो में जो निर्मेष भीर-भाड की जाती है, वैसी हृदयहीन त्र्रता के द्वारा यदि गरीर स्वस्य हो सकता हो तो भी उसका स्वस्य न होना और बीमार रहना अधिक श्रेयस्कर होगा।

८ डाक्टर होते हुए भी जो स्वय चर्से को अपना-

येगा और जो रोगी होगे उन्हें रोग का मूल कारण सताकर उसके निवारण का उपाय बतायेगा और व्यर्थ की शीत-षिया देकर रोगी की खुशामद हरगिन नही करेगा, और विश्वास रखेगा वि निकम्मी धवाइयो का सेवन छोड़ देने के नारण यदि किसी रोगी का शरीर गिर जाता है तो दनिया बेबा हो जाने वाली नहीं है। इतना ही नहीं, उस व्यक्ति पर वह सच्ची दया ही मानी जायगी।

९ बदि वह सम्पर्शियाटी होगा तो भी अपने पैसो की परवाह न करके अपने मन में जो बात होगी बही कहेगा और विसी छत्रपति के सामने भी वह नही विव्यवेगाः ।

२० वह धनक्वेर अपनी दौलत चलों की स्यापना में लवं बरेगा और स्वय केवल स्वदेशी वस्तुओ का ही इस्तेमाल करके वही पहन-ओड कर, इसरों की प्रोत्साहित वरेगा ।

११ सभी हिंदस्तानी अपने मन में इस बान की पक्की करेंगे कि यह समय पश्चाताप और प्रायदिवन दा है।

१२ सभी हिंदुस्तानी समझेंगे कि किसी भी प्रजाकी तरक्की विनाद ख उठाये कभी हुई नहीं है। युद्ध के मोचें पर की कसीटी होती है दूल उठाने की। इसरों को क्ल करना कोई कसीटी नहीं है। जो बात रण-क्षेत्र में, वही बात सत्याग्रह में भी है।

१३ सभी हिंदुस्ताभी इस बान को स्वीकार करेंगे कि जब दूसरे करेंगे तभी हम करने की सोचें, यह न करने का बहाना ही है। हमें उचित व अच्छा लगना है। इसलिए हम अपने करने का काम शुरू कर दें, बाद में यदि दूसरी को जनेगा तब वे भी शक बरेंगे। बाम करने का यही एकमात्र तरीका है । जो स्वादिष्ट मोजन मेरे सामने आता है उसे ग्रहण करने के लिये मैं इसरे की प्रतीक्षा में रका नहीं रहता । ऊपर जो बात बताई गई उसकी करना, वर्षात् अपने-आप आगे बढकर दु स झेलना यह स्वादिष्ट भोजन है। और मायुस होकर करना या दूल भोगना यह केवल बेगार ही है।

'हिंद-स्वराज्य' के बीस प्रकरण लिख कर गाधीजी ने अपनी बात का साराश उत्पर दी हुई कडिकाओं में 🕳 स्पष्ट कर दिया है और अन्त में फिर लिखा है-

"आपसे छुट्टी पाने से पहले दुवारा मैं कहने की इजाजत चाहता हूं कि:

- १. स्वराज्य वही है जो अपने मन का राज्य हो।
- २. उसकी कुंजी सत्याग्रह, आत्मवल या दयावल है।
- उस बल को काम में लाने के लिये स्वदेशी
   को अपने पूरे अर्थ में अपना लेने की आवश्यकता है।

४. यह जो हमें करना है, अंग्रेजों के प्रति हेप के कारण नहीं करना है अपितु अपना कर्त्तव्य समझकर करना है। अर्थात् अंग्रेज लोग नमक-कानून हटा लें, जो धन वे ले गये हैं वह लौटा दें, सभी हिंदुस्तानियों को वड़े-बड़े पदों पर विटा दें, अपनी फीज वापस लौटा ले जायं, तो भी हम उनके यंत्रों का बना हुआ वस्त्र पहनेंगे या उनकी भाषा को अपने व्यवहार में लायेंगे या उनके उद्योग-हुनर—उनकी कला-कारीगरी को काम में लायेंगे, ऐसा नहीं है।

वह सब सचमुच न करने योग्य है, इसीलिए वह करना नहीं है, यह वात हमें अपने मन में स्पष्ट कर रुनी होगी।

मैंने जो-कुछ कहा है वह अंग्रेजों के ऊपर द्वेप-भाव से नहीं कहा है। केवल उनके आधुनिक सुधार के द्वेप से कहा है।

मुझे प्रतीत होता है कि हम लोग स्वराज्य का नाम गा रहे हैं; परन्तु उसका स्वरूप हमारी समझ में नहीं आया है। मैं स्वयं उसे जिस प्रकार समझा हूं उसे समझाने का मैने प्रयास किया है। और ऐसा स्वराज्य प्राप्त करने के लिये यह देह समर्गित है, ऐसी गवाही मन दे रहा है।"

गांबीजी ने ऊपर की बात आज से चालीस वर्ष से भी पहले खिखी हैं—लन्दन से केपटाउन लीटते हुए समुद्र-यात्रा में, "कीलडोनन केसल" नामक स्टीमर में। पुस्तक की समाप्ति पर गांबीजी ने अपने हस्ताक्षर इस प्रकार किये हैं—

ता. २२-११-०९ कीलडोनन केसल

—मोहनदास कर्मचन्द गांधी

ंगीर करने की बात है कि सम्पूर्ण स्वदेशी के द्वारा ही सच्चा स्वराज्य पा सकने की बात जब गांधीजी ने लिखी तव वह स्वयं पैरों की जुरावों से लेकर गले कालर और नेकटाई तक पूरे विदेशी वस्त्रों में सुसज्जित रहा करते थे।

उस समय गांधीजी को इस वात का भी ठीक-ठीक पता नहीं था कि गुजराती में जिसे 'रेंटिया' और हिंदी में चर्खा कहा जाता है वह कैसा होता है, किस प्रकार चलाया जाता है और उसके द्वारा क्या पैदा किया जा सकता है। "वकील लोग चर्खा लेकर कपड़ा ब्नेंगे"-ऐसा वाक्य जव उन्होंने लिखा है तब उसका मतलब यही निकाला जाता है कि यह लिखते समय उनकी समझ में अपने घर में बैठकर काठ के मामूली औजारों के सहारे घर-वना कपड़ा तैयार कर छेने का आग्रह था। वह कैसे किया जा सकता है ? चर्खा क्या है ? कर्घा क्या है ? यह ज्ञान प्राप्त करना अभी गांधीजी के लिये वाकी था। किंतु चर्के का स्वरूप, उसका फलितार्थ, उसके साथ-साथ आवश्यक अनेक-विय प्रवृत्तियां और उससे प्राप्त होने वाले विविध परिणामों के वारे में अपने चित्त में धूमिल झांकी तक न होते हुए भी गांधीजी के मन और बुद्धि में यह वात पूर्णरूपेण प्रकाशमान थी कि यदि हमें जिन्दा रहना है और भारतवर्ष की प्रगति साधनी है तो विदेशी के प्रवाह से सर्वथा मुंह मोड़ कर अपने जीवन में स्वदेशी को उसके पूर्ण-स्वरूप से अपनाना ही होगा। सोलहों आना स्वदेशी में ही देश का दुर्दैव मिट सकता है और करोड़ों हिंदवासियों का वल इसीमें निहित है।

चूंकि गांधीजी अपनी बात के पूरे धनी थे और सच्चा स्वराज्य प्राप्त करने के लिये उन्होंने अपना सारा जीवन और प्राण तक बाहुति में चढ़ा देने का दृढ़ संकल्प कर लिया था इसीलिए स्वदेशी के मार्ग पर वे क्षमणः आगे बढ़ते ही चले गये। स्वदेशी की यह स्थापना किसी भीषण कांति के द्वारा, किसी से लड़-झगड़ कर अथवा जनता में पागलपन फैला कर गांधीजी ने नहीं की। यदि गांधीजी ने चाहा होता तो सन् १९२१ ई० में जब विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का कार्यक्रम उन्होंने देश के सामने रखा था और जब मारे हिंदुस्तान में घूम-घूम कर वे विदेशी बस्त्रों की अपने हाथ से होली जला रहे थे तब स्वदेशी के नाम पर मारकाट और जनूनी फ्रांति की

पपकती हुई ज्याला देश के कोने-कोने में फैला दो जा सनती थी। परनु स्वरेशी की साधना के उस उम्र आप्योकन में भी गांधीजी ने जनता के विचार सुधार के ना है। करव रसता । साठ करोड रपये के विलायती सर्वा का विरोध करने के लिए भारतानर में कुछ मिछा कर दोनीन करोड रपसे के विलायती वस्त्र शायद ही जके होंगे। लाख लाल आदमियों नी मरी-पूरी सामा में पुष्टिक से कुछ हजार स्ववित्त दस होली में केवल अपनी आठ-वारत लाने की दोगी ही कुरवान करने माल का सहयोग देते थे, परनु इतने छोटे प्रतीव ने ही देश की सारी हवा बदल डाली और मैंचेस्टर के साठ करोड रपये के वस्त्र-ध्यवसाय पर सदा के लिये भारत के बाजारों में आएत ला गई।

सार यह कि निसी भीरगुल से नहीं, किसी छोना-प्रप्ती से नहीं, अपितु केवल विकारों में परिवर्तन और उल्लाति करके गांधीओं ने भारत की बनता को स्वदेशी के अनुत ना पान कराया। यह उरकाति क्स-क्स प्रकार की हुई, कब हुई हकार मोशा-बहुत अध्ययन हमारे किये पय प्रदर्शक हो सकता है। इसलिए उनपर सरसरी निमाह शालना अनुचित न होगा। नीचे दो गई तियियों से पता बलेगा जि-क्सेशी की सम्पूर्णता तक पहुचने के लिये गांधीजों में स्वया और अपने सामियों के हारा कैसे करेंस करम बढाते हैं—

सन् १९०९ में गाधीजी ने भारतवासियों के खिये खादेश प्रवाशित किया कि घर में चर्चा वसाकर कपड़े बना छेने का काम हरेक को करना चाहिए।

सन् १९१० के बाद दक्षिण अफीवा के वीनिक्स आपन में अरोजी दूबनाने के सिलासिकाया तैयार विकासनी मूट-गर्ट आदि मोछ लेना बन्द हो गया। हिंदुस्तानी मिछ ने बने क्पडे के घर में दुरते, कीट, पतबून सी लेने का आहर हरता गया।

सन् १९११ के बाद चमनते हुए रगीन विलायती सूट का गापीजी ने प्राय परित्याग किया। केवल शुद्ध वस्त्र के पतलून और नमीज का ही पहनावा रखा।

सन् १९१३ में दक्षिण अफीना में होते हुए भी

पतळून व कमीज छोड कर मदासी लुगी और ढीला जुरता गाघीजी ने अपनाया ।

सन् १९१५ में कोचरव आध्रम में मिल के सूत के करपे पर कपडे बुन लेना गापीत्री ने सुरू किया और आध्रमवाओं के लिये हाय-बुने और अपने हाय के सिले वस्त्र ही पटनने का नियम बनाया ।

सन् १९१७—गाधीजी ने दोहरे बस्त्र अर्थात् काठियावाडी पगडी और अगरला पहनना छोड कर वेचल योती-कुरता और अपनी आविज्ञत गाथी टोपी लगाना गुरू विद्या ।

सन् १९१८—मिल के मृत के वने घरत्र छोडने की दिया में शीगणेश के रूप में ब्हाय के क्ते मृत की खादी की मोटी घोनी पहनना गांधीजी ने आरम्भ किया।

सन् १९१९—सावरमती आध्यम में होने वाली मिल के मुत की बुनाई हटा कर हाय-को मुन की ही बुनाई बालू करने का बकरन बिया गया और इसके बास्ते बखें पर सून कातने का प्रयत्न शुरू हुआ। अर्थान् हिन्द-कराज्य में लिखने के स्म वर्ष बाद गाधीजों ने प्रयम बार अपने आध्यम में बखें की स्थापना की।

सन् १९२० — बताई वे लिये मिल की बनी पूनियो को प्रयोग में लाना बन्द किया गया और साबरमती आधम में मिल के सूत की रही-सही बुनाई भी समाप्त कर दी गई।

सन् १९२१---परकरा जेल में गाथीजी नातने के साथ-साथ पुनाई नरके दूरी अनाने ना काम भी करने लगे। उससे पहले पूरे भारतवर्ष में एन काल बन्ने कान नरने ना प्रचार जिल्ले निले को काम्रेस मेनिटयों ने हिया। बढ़े नगरों में सानदार लादी-भड़ार लोले गये और नई आक्रमों एवं निवारीओं में जोरों से कनाई-चुनाई -चल पड़ी। आपमों में सम्मों के जिसे खादी पहनना जनिवार्य हो गया।

सन् १९२४—यरबदा जेल से छूटने पर और काप्रेस का अध्यक्षपद सभालने पर गांधीजी ने प्रत्येक काप्रेसी सदस्य के लिये सुत कातना अनिवायं बना दिया।

सन् १९२६—अखिछ भारत चर्सा-सप का ब्यवस्थित इय से सगठन किया गया । भिन्न भिन्न प्रान्तों में खादी-स्त्रादन और विश्री बढ़ते रुगी । सन् १९२८—पूरे भारतवर्ष में प्रवास करके गांधीजी ने चर्खा-संघ को शक्तिशाली वनाया। खादी मिल-वस्त्रों से भी अधिक मुन्दर व बढ़िया वनने लगी। खादी-कार्य को व्यापारिक ढांचे पर सुगठित किया गया।

इसके वाद सात-आठ वर्ष तक प्रायः यही सिलिसला चलता रहा। वेहतरीन और मिल के कपड़े के मुकावले में बाजार में खप सके ऐसी खादी पैदा करने का सतत प्रयास होता रहा। कांग्रेस के राजनैतिक आन्दोलनों के साथ, विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर पिकेटिंग आदि होने के कारण किसी वर्ष खादी की खपत दुगनी-तिगनी हो जाती और कभी राजनैतिक क्षेत्र में मायूसी छा जाने पर खादी की विकी आठवां हिस्सा ही रह जाती। फिर भी कपड़ों के बाजार में प्रायः डेड से दो प्रतिशत कपड़ा खादी का विकने लगा और औसत प्रतिवर्ष एक करोड़ रुपये का काम चर्खा-संघ करने लगा।

सन् १९३४ या ३५ में, यानी 'हिंद-स्वराज्य' लिखने के पच्चीस वर्ष से अधिक समय वीतने पर गांधीजी ने अपने 'पूर्णतया स्वदेशी' के मूत्र पर बहुत जोर देना शुरू किया। चर्जे के साथ-साथ अन्य ग्रामोद्योगों को भी गांवों में और घरों में विकसित करने का उपदेश दिया। वर्धा में मगनवाड़ी की स्थापना की और स्वदेशी-व्रत अपनाने वालों को चक्की-घानी चलाने की प्रेरणा की ! वस्त्र में जो स्वदेशी दृष्टि थी वह रसोई-घर में पैदा की।

सन् १९३६ में — खादी और ग्रामोद्योगों के मजूर-कारीगरों के हितायं कांतिकारी परिवर्तन किया गया और चखें, चक्की आदि पर काम करने वालों को भरपेट दाल-रोटी भी न मिले, इतनी कम मजदूरी देने का निषेघ किया गया। इस प्रकार गांधीजी ने आधिक क्षेत्र में एक नया ही कांतिकारी विचार प्रकट किया कि वाजार में सस्ती-से-सस्ती चीज वेचने और खरीदने की होड़ में उत्तरना मनुष्य के लिए लांछन-स्वरूप है और उसीमें शोपण की जड़ समाई हुई है। सब आदान-प्रदान पूरा पारिश्रमिक देकर ही करने में ग्रामोन्नति-देशोन्नति और मानव-हित है।

सन् १९३८—स्वदेशी ब्रत का पूर्णरूप से पालन आर्थिक क्षेत्र में ही करना पर्याप्त न होगा, सांस्कृतिक क्षेत्र में भी करना होगा और स्वदेशी का मूल सांस्कृतिक विकास में ही है, इस वात पर गांधीजी ने जोर दिया। और इसके लिए कताई और ग्रामोद्योगों के सहारे ही सभी पाठशालाओं के चलाने की व वुनियादी तालीम देने की योजना उन्होंने देश के सामने रखी।

यह क्रांति भी विचारों में आमूल सुधार करने के हेतु की गई ।

सन् १९४५—सन् वयालीस की राजनैतिक क्रांति के बाद आगाखां महल के जेल से छूटने पर स्वदेशी के पूर्ण पालन पर गांधीजी ने नये ही सिरे से प्रकाश डाला और केवल खादी, केवल ग्रामोद्योग और केवल बुनियादी तालीम के वदले समग्र ग्राम-सेवा की ओर देश का व देश-सेवकों का ध्यान दिलाया।

सन् १९४७—चर्का-संघ के व्यापारिक संगठन को विकेंद्रित करके उसकी शिवत और अनुभव को गांवों के छोटे-छोटे क्षेत्रों में पूरी तीर से लगाने का आदेश दिया। खादी की व्यापारिक प्रवृत्तियों पर अंकुश लगा दिया और प्रत्येक देशहितैपी स्वदेशी पालन का आग्रही और खादीधारी स्वयं कुछ-न-कुछ उत्पादन का काम भी करे, इस आग्रह को कायम करने के लिये खादी के मल्य में थोड़ा अंश सूत के रूप में लेना प्रारम्भ कराया।

सन् १९४८ के फरवरी मास की तीसरी तारीख को सेवाग्राम में इसी समग्र-सेवा की प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए और अंग्रेजों के चले जाने के बाद दिल्ली में आये हुए स्वराज्य को गांव-गांव पहुँचाने के वास्ते स्वदेशी-व्रत का पालन अधिक ठोस रूप में कैसे किया जाय, इसका मार्ग-दर्शन कराने के हेतु कार्यकर्ताओं की एक वड़ी सभा का आयोजन गांधीजी ने कराया था और स्वयं उसमें उप-स्थित होने के लिए दिल्ली से प्रस्थान करने वाले थे कि अकस्मात उनके लिये महाप्रस्थान करने की वेला आ गई। हमारे लिये अधिक परिश्रम करने से ईश्वर ने उन्हें रोक लिया और उनका स्थूल देह उनसे विसर्जित करवा लिया। भारत-भर में अपने संपूर्ण अर्थ में पूर्णस्प से स्वदेशी की स्थापना करने की मनोकामना उनके मन में अपूर्ण ही रह गई और उस दिशा में जाने का फांति-कारी विचार वे हमारे लिये विरासत में छोड़ गये।

बदते हुए हाहाकार में भीये हुए स्वर से रो उठने थे, भयत्रस्त रदन गा उठते थे करण रागिनी वह रागिनी जिसके स्वर विखारे हुए से हैं, जिनके कण-कण में अनन्त बेदना चीख रही है। वह रट रहा था--'मा घर चलो' और अभागी मा दर्भाग्य से निरन्तर संधर्प करने-करते धकित-चिकत मा उसकी ओर देख भर लेती थी। पीडित हृदय से पिता मानो अपने दुर्भाग्य के प्रति कह उठता था, "कहाँ है अपना घर ?" और निस्तक्ष राहि होहाकार कर उठनी थी

उसने चौखा-चिल्लाया, रोया-गाया; किंतू उसकी, उस घर-बार-विहीन अभागे मानव-परिवार दो नरण पुकारमहत्रों में टबरा कर लौट आई समुद्र की लहरा से खेलकर पुरुट आई, झोपडियो से भीगकर, भारी होनर विफल हो आ गई <sup>।</sup> वह बे-घर-बार था। मालिक के खेल म उसने छ वर्ष तन जल्ती दोपहरी में श्रमक्ण-सिचित परिश्रम किया था, कपाती सर्दियो में दात क्टक्टाते हुए काम किया या और आज वह भूमि-स्वामी की दी हुई एक्मात्र आश्रयदायी छोपडी से भी निकाल दिया गया था। उसकी अर्ड-नम्न नारी, उसका भोला अभागा दिश्तु, सब ही तो आज पथ ने आश्रित है, दित् पय . भी क्या उनका अपना है ? रात के बढ़ते हुए अन्धकार में उन्हें दूर से आता हुआ सिपाही स्पष्ट दीख रहा है। अब अब ठोकर, गाली और और . 1

श्रमनार, भूमि-सेवक-परती माता का पूत्र इसी प्रकार अनेक युगा से भीज जिल्ला रहा था। उसके स्दन के स्वर श्रीण पडते जा रह थे। उसका वठ मूखकर मरस्यल बन गया था और और उसकी करण स्वर-ल्हरी वज उठी मन्त के कानो में। रो उठा

सन्त का हृदय यह भूमि-सेवक, यह नामकर, यह देश का खाल, यह भूखा है, यह नगा है, यह भूमि-हीन है। . सन्त तडप उठा। उसकी व्यथा से उसके कानो में, हृदय में और सर्वांग में गज उठा प्रश्नोत्तर "धर चलो ।" "वहा है अपना घर ?" और वह निकल पडा भिक्षा मागने । युग-युगान्तर से कव किसने ऐसी भिक्षा मागी थी। उसके शान्त हदय की बेदना, सच्ची बहानुमूर्ति से सने स्वर गुज उठे, भूमि सबकी है घरती-माता अपने मब पुत्रो नी है। वह आज भूमिविहीन क्यों है <sup>?</sup> तुम आज आवश्यकता से अधिक भूमि के स्वामी क्यों हो ? यहां, सहां सन्त को दान दो मेरी झोली मरदो अक्षय दान में मुझे भूमि चाहिए उनके लिये जो भूमि-विहीन है। मुझे आज अमर भूमि-अक्षत से दरिवनारायण की अर्थना वरनी है। आज की भेरी अमर पूजा तुम्हारे सात्विक दान ने ही हो सकेगी। मेरी खाली झोली भर दो तुम्हारा दान व्यर्थ नहीं जायगा। उसमें दरिद्रनारायण की अर्चना होगी, प्रजा होगी।

वाकाम से बद्द्य बुसुध वर्षा आरम्भ होगई मृमि-विहीनो की दुर्वल स्वर-लहरी सबल व्यक्तियो तक पहचाने का भार लेने वाला अनन्त शक्तिशाली. निभंग दीनवन्ध सन्त आज भी अपनी दान्त, दढ एव स्निग्ध वाणी से भारत के भूमि-स्वामियों को उनकी तामसी निहा से जगाने के लिये कह रहा है "सुझे दान दो मुझे दान चाहिए उनके लिये जिनके पान कुछ भी नहीं है फिर भी जो महान है मानव है।"

सन्त विनोबा की बाणी जन-जन के हृदय में गुत्र उठी है गज रही है

नित्य पाठ की चीज यदि यात्रिक होगई तो फिर वह चित्त में अकित होने की जगह उल्टी मिट जायगी । यह दोप नित्य पाठ का नहीं, मनन न करने का है। नित्य पाठ के साथ-हो साय नित्य मनन और नित्य आत्य-परीक्षण आवश्यक है । 'गोला-प्रवचन ो

पष्ठ ३२

---विनोधा

# जीवन की गहराई में

कोई चार बजे प्रातःकाल गाड़ी पकड़नी थी-ालस के जमादार और दो सिपाहियों ने आकर मुझे जगाया । मुझे हथकड़ी डालकर ले जावें या कैसे, इस द्विया में वे थे। शायद दारोगाजी ने उन्हें स्पष्ट हुकुम नहीं दिया था। वे उन्हें जगाना चाहते थे। मैने वीच में पड़कर कहा-- "उन्हें जगाने की ज़रूरत नहीं है, तुम मुझे हथकड़ी डालकर ले चलो। मुझे इसमें कोई शर्म या अपमान नहीं मालूम होगा।" मैंने मन में यह भी सोचा कि विना हथकड़ी डाले यदि अजमेर ले जायंगे तो रास्ते में किसीको यह पता नहीं चलेगा कि मैं गिर-पतार कर लिया गया हूं। हथकड़ी होने से तमाम स्टेंगनों पर शोहरत फैल जायगी-नयोंकि प्रायः हर बड़े स्टेशन पर कोई-न-कोई जाननेवाला मिल ही जाता है। जब दूसरे दिन में अजमेर स्टेशन पर पहुंचा तो जो पुलिस-अफ़सर मुझे लेने के लिये आये थे उन्होंने मुझे थर्ड क्लास में और हयकड़ी पहने हुए देख कर साथ वाले जमादार को डांटा और कहा-"'यह क्या ? यर्ड क्लास में ? सो भी-ह्यकड़ी डालकर लाये हो ? लोलो हयकड़ी! मैं इस दृश्य को नहीं देख सकता।" और जब मेरी हथकड़ी खुरु गयी तब वह डिब्बे में आया। मुझसे हाथ मिलाया और कहा, 'मै बड़ा शमिन्दा हं कि ये लोग आपको हथकड़ी डालकर लाये। अंश जब वे कोटावाले इन्सपैक्टर उन्हें मिले तो उन्हें भी इस बात पर वड़ा उलाहना दिया । ें र 😁 👵

इस समय इसमें पहले के जेल-जीवन के दो-एक अच्छे संस्मरण याद आ रहे हैं जो सचाई या सत्याग्रही वृत्ति के प्रत्यक्ष फल जैसे मुझे मालूम होते हैं।

जेल में दाढ़ी-हजामत के लिये राजनैतिक कैदियों को भी जेलर के दपतर में आना पड़ता था और उनके सामने दाड़ी-हजामत की किया होती थी। एक रोज़ मैने जेलर से कहा कि क्या नाई कैदी को आप बैरक में हजामत बनाने के लिये नहीं भेज सकते ? उन्होंने एक क्षण सोचा और कहा—''सब आदमी आपकी तरह हों तो भेज दूं। लोग मेरे सामने भी नाइयों से वातें करते हैं और वातों-वातों में अपना काम कर लेते हैं। जबिक मुझे यह सख्त हिदायत है कि राजनैतिक कैदियों को मामूली कैदियों से वात न करने दूं। यदि आप यह विश्वास दिला दें कि कोई राजनैतिक कैदी नाई कैदी से वात नहीं करेगा तो में नाई कैदियों को वैरक में भिजवा दिया करंगा।" मैंने झट से विश्वास दिला दिया। तब वे वोले—"ऐसे नहीं, आप जाकर अपने सब साथियों से अच्छी तरह बातचीत कर लें और यदि वे इसको मंजूर कर लें तो मुझे विश्वास दिलायें।" सबने मंजूर तो कर लिया; परन्तु बाद में निभाया नहीं और हम लोगों को फिर वहीं दफ्तर में हजामत के लिये जाना पड़ा।

जेल में राजनैतिक कैदियों को देने के लिये बहुत-सी पुस्तकें थाया करती थीं। जेलर बहुत बार मुझे बुला लिया करते और कहते कि देखिये इनमें से कौन-कौनसी पुस्तकें राजनैतिक कैदियों को देनी चाहिए ? और मैं बिल्कुल ईमानदारी से उनको बता दिया करता था कि कौन-सी पुस्तकें थापत्तिजनक थीं। बाद के जेल-जीवन में भी जेल-अधिकारियों का यह विश्वांस जारी रहा। जेल में जब-जब कैदियों की तलाशी के अवसर आये हैं, जेल-अधिकारियों ने मुझे उससे प्रायः बचा लिया है,

एक बार 'सी' क्लास का एक राजनैतिक कैदी चक्की में दिया गया। मुझे भी कुछ समय 'सी' में रहना पड़ा था। उन्हीं दिनों की यह घटना है। यद्यपि मुझे अनाज-सफार्ड का काम दिया गया था, फिर भी में साथी-कैदियों का उत्साह बढ़ाने के लिये खुद चक्की पीसा करता था। जहां तक मैने देखा, प्रायः सभी राजनैतिक कैदी सचाई के साथ अपना काम पूरा करने की कोशिश करते थे। बाज-बाज चक्की की मशक्कत से घव-राते जूनर थे; परन्तु आ पड़ने पर उमंग से अपना काम पूराकरने की कोशिश करते थे। बाज-बाज चक्की की मशक्कत से घव-राते जूनर थे; परन्तु आ पड़ने पर उमंग से अपना काम पूराकरने की कोशिश करते थे। कोई अठारह साल का एक जवान लड़का था, पहुंची में दर्द होने से उससे पीसा कम जाता था। इन्तिफाक से उसी दिन सुपरिटें इंट का दौरा

#### प्रेम बनाम पूजा : रवीन्द्रनाथ ठाकूर

हुआ। वह यूरोपियन था। ठाउना थीम योम योस रहा था, सुपिटिंडेंट में घेत हुआ हि यह वनता हूँ दर्द- वर्द कुछ नहीं हैं। उसने हुछ पूछा—नाम नम नम नमें नरने हीं? छडनान नमें नमें कुछ नहीं हैं। उसने हुछ पूछा—नाम नम क्यों नरने हीं? छडनान नमें नमें जो-नुछ जवाव दिया उसन मुगिरिटेंडेंट ने समझा नि यह गुरताखी कर रहा हैं। उनन हुस्त दिया—'में छिरो में नदन नरने इसने पूरा नम नो पंत्र करते हीं हम छोग जियान हुए—छडना भी पबडाया। एक तो हाय में दर्द, किर पूछा नाम देन पर ही तम्हां स्निटों से मुमिन हो सकतो थी। मुगिरिटेंड हम चे पड़ियान हो से पड़ी समाना । जेकर ने कहा—'में खूद मानवा हु कि रूडका ईमानवार है, मगर उसने जावा है साहब विगव गया।' जैसे समझाया कि उसकी मबद का मोई उसाय होना चाहिए। वह अवेका तो जब कि हाथ में दर्द है, भैसे नमा पुरा कर सकेगा?

जेंकर—' उपाम तो हो सनता है, मरन्तु जैमे आपपर मेरा भरोसा है, बैमे ही अपने भरोसे के निसी साबी को आप चुन क तो रास्ता निरुल नकना है। यदि बान फूट गांधी सो मेरा मरण सबमे पहले होगा।"

ता नरा भरण सवस पहल होगा। मं—'ऐसा ही होगा, यदि लडवा ईमानदार न होता तो में खुद भी सिपारिश करने न शाता । सच्चे की सहा-यता करना प्रत्येक का घमें होता हैं। या तो आप साहब को समझाइये कि उन्होंन स्विति की समझने में भूल की हैं या सचाई की सातिर स्वज्जे की मदद कीजिये।"

जेलर—"साहब से कुछ नहतें जाउगा तो वे राक कर लेंगे कि में राजनीतिक कैदिया के प्रति सहानुभूति रखता हूं। अन उन्हती पूराकाम करने ही दिखामा चाहिए। यदि आप अपना विस्ततनीय साथी चुन सनने हैं तो में उन्हों कि में उससे मात रख दूगा—सीनों मिल कर पूरा काम कर मर्गें—माहब के पूरे काम की रिपोर्ट मिलने पर सन्हाई से उसकी छड़ी हो जायगी।"

मेंने भाई जमनारायणजी व्यास से—कल के राजस्थान के मृत्य मन्त्री—जो उन दिनों मी कास के कैदी में, वात्रपीत की, वे उसी वस वैधार हो गये—जेनी कि जनती सदेव विचारिहाना और वहानुपूरिशील प्रवृत्ति रहती है—जोर सायद दो-तीन दिन तत कोटी में उस कटने के साय चक्की पीसी। तीमरे-कीचै दिन पिर सहत की रॉड हुई, उन्हें पूरे काम की रिपोर्ड मिली जीर दह स्वययेवक कोटर्स में चक्की की पिसाई से वरी हमा। (क्षमा)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

#### त्रेम बनाम पूजा

ससार से बैराग्य लेने वाला एक बैरागी गभीर रात्रि में बील उठा, "आज में इप्टदेव के लिए घर छोड हू गा—कीन मुझे भुला कर यहा वामे हुए है?" देवता ने कहा, "मैं।" उसने नहीं सुना। नीद में दूवे शिवा को छाती से विषटाकर प्रेयसी शब्या के एक किनारे सो रही थी। वैरागी ने कहा, "ऐ माया को छलना, तू कौन है?" देवता बोल चंठे, "मैं।" दिन किसी ने नहीं सुना। सम्या पर से उठकर वैरागी ने पुनारा, "प्रमो निम नहों हो?" देवता चे कहा, वैरागी ने नहीं सुना। स्था पर से उठकर वैरागी ने पुनारा, "प्रमो निम नहों हो?" देवता चे रात्री से रात्री ने देवता ने सहा, "छोट आजो।" वैरागी की यह वाणी भी नहीं सुनाई दी। अन्त रो पड़ा। देवता ने कहा, "छोट आजो।" वैरागी की यह वाणी भी नहीं सुनाई दी। अन्त में लम्बी सोस लेकर देवता ने कहा, "छोट आजो।" वेरागी कर बढ़ी छोडकर कहा वला।"

# कबों का विलाप

अमीर न्यायासन पर विराजमान हुआ। उसके दायें-दायें देश के विद्वान्-पंडित लोग बैठे थे जिनके चढ़े हुए चहरों पर किताबों और ग्रन्थों का प्रतिविम्ब पड़ रहा था। आसपास सिपाही तलबारें थामे और नेजे उठाये खड़े थे। सामने दर्शक लोग अपराधियों के न्यायदान का दृश्य देखने की प्रतीक्षा में खड़े थे। सबकी गर्दनें झुकी हुई थीं। आंखों में आजिजी झलक रही थी और सांस रुकी हुई थीं। गोया अमीर की आंखों में एक ताकत थी जो उनके दिलों पर डर और रोब फैला रही थी।

मंत्रणा पूरी हुई और इन्साफ का वक्त आ गया। अमीर ने हाय उठाया और चिल्लाकर कहा, "गुनहगारों की एक-एक करके मेरे सामने हाज़िर करो और उनके गुनाहों व दोपों से मुझे परिचित कराओ।" इसपर कैंद- खाने का दरवाजा खोल दिया गया और काली दीवारें नजर आने लगीं।

जंजीरों की झनकार आने लगी जिसके साथ कैदियों की आहें और रोना-पीटना मिला हुआ था। दर्शक गर्दनें उटा-उटा कर उनकी तरफ देखने लगे मानो उस कप्र की गहराई से निकले हुए मृत्यु-प्रासों पर पहले नज़र डालने में एक-दूसरे से आगे बढ़ जाना चाहते थे।

योड़ी देर के बाद कैदलाने से दो सिपाही निकले जिनके कटने में एक नौजवान था। इसके हांथों में हथकड़ी थी और उसकी चढ़ी हुई त्यारी व निडर चेहरे से स्वाभिमान और आत्मिक शक्ति का पता चलता था। उसे सिपाहियों ने अदालत के बीच में खड़ा कर दिया और खुद योड़ा-सा पीछे हटकर खड़े हो गये। अमीर ने एक क्षण तक उनकी तरफ धूरकर देखा और फिर सवाल किया, "यह आदमी जो हमारे सामने इस तरह सिर उठाये खड़ा है, गोया अदालत में नहीं बिलक किसी गर्व के स्थान पर खड़ा हो, इसने क्या जुमें किया है?"

अमीर के वजीरों में से एक ने जवाब दिया,—"कल सरकार के एक फीजी अफसर और चंद सिपाही देहात में एक काम पर गये थे। इस आदमी ने अफसर को करल कर दिया। सिपाहियों ने इसे गिरफ्तार कर लिया और खुन में लिथड़ी हुई तलवार कब्जे में करली।"

अमीर आसन पर वैठा कोध से कांपने लगा। उसकी आंखों से कोप के तीर निकलने लगे। उसने गरजती हुई आवाज में कहा, "इसे भारी जंजीरों में जकड़ दो और फिर उसी अंधेरी कोठरी में बन्द कर दो और कल इसी की तलवार से इसकी गर्दन उड़ा दो और इसकी लाश को शहर के वाहर फेंक दो ताकि गिद्ध और चील इसका गोक्त नोच लें और हवा इसकी बदवू को इसके घरवालों और दोस्तों तक पहुंचा दे।"

नीजवान को वापस कैदलाने की तरफ ले जाया गया और लोगों की दुःखपूर्ण दृष्टियां उसके पीछे-पीछे गई; क्योंकि वह अभी कम उम्र था, खूबसूरत था और स्वस्य था।

इसके बाद दो और सिपाही एक औरत को लिये कैंदलाने से निकले। यह स्त्री बड़ी सुन्दर और कोमलांगी थी। उसकी आंखों में दुःख और निराशा का पीलापन झलक रहा था। उसने अपनी आंखें नीची की हुई थीं और शर्म के मारे गर्दन झुका रखी थी।

अमीर ने उसपर निगाह डाली और कहा—"इस औरत ने, जो हमारे सामने इस तरह खड़ी हैं जैसे सत्य के सामने छाया, क्या जुर्म किया है?"

एक सिपाही ने उत्तर दिया, "यह औरतं वदचलन है। रात को जब इसका शौहर घर आया तब उसने देखा कि यह अपने एक प्रेमी के साथ सोयी हुई है। इसका दोस्त उरकर भाग गया और इसके पति ने इसे पुलिस के हवाले कर दिया।"

यह सुनकर अमीर कुढ़ हो उठा और वह औरत द्यामिंदगी के मारे पानी-पानी हो गई। अमीर ने गरजते हुए कहा, "इसे वापस कैंदलाने में ले जाओ और कांटों के विस्तर पर मुलाओ ताकि यह उस विस्तर को याद करे जिसे इसने अपने पाप से नापाक बनाया और इसे इनारु (एक कडबा फल) मिला हुआ शिरका (शराव) पिलाओं ताकि यह अपने पर के साने को मार करे और जब सुबह हो जाय तब इसे नगा करके सीचते और मसीटरें हुए साहर के बाहर के जाओं और समसार कर दो। इसकी लाय को बही पड़ा रहने दो ताकि मेडिकें इसका गोस्त ला जाय और हड्डियों को कोडे-मकोडे चाट ले।"

उस औरत को फिर कैदलाने की अमेरी कोठरी में ले जाया गया। लोग उसकी तरफ अफ्नोस की नजरों से देख रहे थे। वे अमीर के इन्साफ पर भी खुत ये, लेकन वन्हें उस न्त्री की मुन्दरता, कोमलला और उमकी है की आसी पर भी रहम जा रहा था।

फिर दो सिपाही अधंड उच के एक कमजोर आदमों को लिये हुए आदे को अपने कारते हुए युटनी को प्रशिद्धा हुआ पक रहा था। उसने जनसमूह की ओर ब्यापुक्ता भरो आसो से देखा। उसकी आसो में निरासा, विनास और दरिदता हरूक रही थी।

अमीर ने उसपर निमाह डाली और जोश में आकर कहा---"इस गन्दे शादमी ने जो इस सरह खडा है जैसे जित्सो में मुद्दी, क्या गुनाह किया है ?'

एक सिपाही में जनाव दिया, "यह चोर है। रात के बक्त यह कळीसा (गिरजा) में जा पूसा और जोगियों मैं इसे पकड किया। इसकी झोळी में पवित्र नैयेख के बरतन पाये गए।"

अमीर ने उनकी तरफ इस तरह देखा जैसे भूवा पिढ़ पत्कटी चिडिया की और देखता है और चिल्ला कर बीला, "इसे फिर कैवलाने के अपोरे में फिर बो और जनीरों से जकड़ दो। जब मुबह हो जाय तब इसे देशनी रखी के सहारे एक ज़के पेड़ से छटका दो और उसी तरह इसे जमीन ब आसमान के वीच तवनक छटका रहने दो जबतक कि इसनी गृज्हारा उनकिया सड़ यक न जाब और उननी बदद बारों और न फिल जाय।"

सिपाही चोर को फिर कैटबाने में छे गये और छोग १ सनसार करना—इरलामी प्रमेशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का दड जिसमें ध्याभवारी को जमीन में कमर तक गाड देते थे और उसके यिर पर परकरों की

क्यां करके उसके प्राण लेते थे।

कानाफूसी करने लगे कि इस मरियल काफिर ने पवित्र उपासना-गृह के बरतन चुराने की हिम्मत कैसे की ?

वमीर न्यायासन से उतरा और उसके विद्वान तथा बुद्धमान परामर्थेदाता उसके पीछे-पीछे हो किये। विराही कुछ बागे होगये, कुछ भीछे। दर्शकाण तिवर वितर हो गये और दस तरह वह स्थान खाली ट्रोगमा। अकवता कैदियों भी आहे और गहरी तास सुनई देती रही।

में वहा खड़ा उस कानून पर हैरान हो रहा था जो इन्सान ने इन्सान के लिए बनाया है। मैं उस बीज पर गीर कर रहा था जिसे लोग इन्साफ कहते है, यहा तक कि मेरे विचार इस तरह गायव हो गये जिस तरह सध्या की लालिमा धुध में छिप जाती है। मैं उस मकान से निकला। भें अपने दिल में यह कहता था कि घास मिट्टी के मुखतत्व में से बढ़ती है बकरी घास की खा लेनी है, भेड़िया शकरी को अपनी खरान बनाता है, गैडा भेडिये की खा छेना है और बेर गेड़े की मीन के घाट उतारता है। क्या कोई ऐसी ताकत भी भीजूद है जो मीन पर भी छा जाय और अत्याचार के इस सिलसिले को खत्म कर दे ? वया कोई ऐसी ताकत मौजूद है जो इन तमाम पृणित बाता की अच्छे भतीओं में परिवर्तित कर दे ? क्या कोई ऐसी ताकत भौजद है जो जीवन के तमाम तरवी को अपने हाथ में ले और अपने अन्दर सोख ले--जिस तरह समुद्र सारी नदियों को अपनी यहराइयों में स्थान देता है ? क्या कोई ऐसी ताकत मौजूद है जो नातिल व मनतूल, व्यक्तिचा-रिणी व उसके जार, चोर व मुद्दें को अमीर के न्यामासन शे अधिक ऊचे न्यायासन के सामने खडा कर दे ?

दूसरे दिन में शहर से निजलकर खेतों को तरफ हो किया ताकि दिल को कुछ तसल्यों मिल जीर जगल की दिलवा किया दू वर और निगल की दिलवा किया दू वर और निगल की दिलवा के ता गलिया के उन की राज्य ने में स्वार दे जो ता गलिया के से अवदर पैदा कर दियों थे। में जिस वक्त पाटों में पहुंचा तो खेला—गिदों, चीलों और कौता के सुर-के दूड उड रहे हैं और उनकी आपाजों के उनके पर तो कम्मन से सारा सामुमटल प्रकम्शित है। ये उनके परा तो कम्मन से सारा सामुमटल प्रकम्शित है। ये उनके परा तो कम्मन से सारा सामुमटल प्रकम्शित है। ये जारा आपी वहां तो मेंने देशा कि मेरे सामने एक लाय पेड़ से लटक रही है, एक नगी स्त्री का मृत सारीर उन

जीवन-साहित्य : मई १९५२

पत्थरों के ढेर में पड़ा है जिनसे उसे संगसार किया गया था और एक नवयुवक का शव घूल व खून से सना हुआ है और उसका सर घड़ से जुदा पड़ा है।

में उस वयस्थान के पास ठहर गया। मेरी आंखों पर एक मोटा और अंधरा पर्दा पड़ गया। में कल्पना तथा मृत्यु के सिवाय, जो खून में लियड़ी हुई उन लाओं पर छाई हुई थी, और कुछ न देखता था और विनाश की पुकार के अलावा कुछ भी न सुनता था। इस पुकार में कीवों की आवाज भी मिली हुई थी जो इन्सानी कानून के शिकारों के चारों और मंडरा रहे थे।

तीन मानव कल तक ज़ीवित थे; लेकिन आज सुबह मृत्यु के कब्जे में चले गये।

तीन आदिमियों ने मानवी अस्तित्व में अपनी प्रतिष्ठा को खो दिया और अन्धे कानून ने हाथ बढ़ाकर उन्हें बेरहमी के साथ पामाल कर दिया।

तीन इन्सानों को जेल ने गुनहगार करार दिया, क्योंकि वे कमजोर थे और कानून ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि वह ताकतवर था।

एक आदमी ने दूसरे को कत्ल कर दिया तो वह कातिल ठहरा; लेकिन जब अमीर ने कातिल को कत्ल करवा दिया तो वह अमीर न्यायाधीश समझा गया।

एक शक्स ने प्रार्थना-मंदिर का माल छीन लिया तो लोगों ने उसे चोर कहा; लेकिन जब अमीर ने उसकी जिन्दगी छीन ली तो वह अमीर आलिम-फाजिल ठहरा।

एक औरत ने अपने शीहर से वेईमानी की तो लोगों ने उसे व्यभिचारिणी ठहराया; लेकिन जब अमीर ने उसे नंगा करके संगसार करवाया तो वह अमीर शरीफ कहलाया।

खून वहाना हराम है; लेकिन अमीर के लिए यह किसने हलाल कर दिया ?

माल हड्प करना जुर्म है; लेकिन आत्माओं को हड्प करना किसने जायज् किया ?

नारी की वेईमानी खराब बात है; पर यह किसने कहा कि गुन्दर शरीरों को संगसार करना पवित्र कार्य है?

हम छोटी-सी बदमाशी के मुकाबले में बहुत बड़ी चदमाशी करते है और कहते हैं कि 'यह कानून है।' हम २०६ फिसाद का बदला बदतरीन फिसाद से देते हैं और कहते हैं कि 'यह शील है।' हम एक अपराध के प्रतिकार में दूसरा बड़ा अपराध करते हैं और चिल्लाते हैं कि 'यह इन्साफ है।'

क्या अमीर ने कभी अपने दुश्मन को मौत के घाट नहीं उतारा ? क्या उसने कभी अपनी प्रजा के किसी कमजोर इन्सान का माल हजम नहीं किया ? क्या उसने कभी किसी खूबमूरत औरत की तरफ आंख नहीं उठाई ? क्या वह इन तमाम जुमों से पाक है कि उसके लिए कातिल कीं गर्दन उड़ाना, चोर को मूली चढ़ाना और व्यभिचारिणी को संगसार कराना जायज हो गया ?

वे कीन थे जिन्होंने चोर को दरकत से लटकाया ? क्या उस काम के लिए आसमान से फरिस्ते उतरे थे ? क्या वे यही इन्सान थे जो वह सब माल हड़प करते व चुराते हैं जो उनके हाथ लग जाता है ?

और उस कातिल का सिर किसने कलम किया ? क्या उसके लिए ऊपर से नवी और पैगम्बर आये थे या वे यही सिपाही थे जो कत्ल और खून करते रहते हैं ?

और व्यभिचारिणी को संगसार किसने किया ? क्या उसके लिए पवित्र आत्माएं अपने स्थानों से आई थीं या वे यही लोग थे जो अंधेरे के पर्दे में वदकारियां किया करते हैं ?

कानून... कानून क्या चीज है ? किसने उसे आकाश की ऊंचाइयों से मूरज की किरणों के साथ उतरते देखा है ? और किस मनुष्य ने आखिरी इच्छा को मानवी हृदय से सहमत पाया है ? और किस वंश में फरिश्तों ने आकर इन्सानों से कहा कि कमजोरों को जीवन के प्रकाश से वंचित कर दो और गिरे हुए को तलवार के घाट उतार दो और अपराविधों को फीलादी पांतों के नीचे रींद दो ?

मेरे दिमाग में यही खयाल चक्कर लगा रहे थे और मुझे परेशान कर रहे थे कि इतने में मैंने किसी के पांचों की आहट मुनी। मैंने आंख उठाई तो देखा कि एक औरत पेड़ों में से निकलकर लागों के करीब आ रही है। उसके चेहरे पर खतरे के आसार दिखाई दे रहे थे, मानों बह उस भयावने दृश्य को देखकर उर गई थी। वह उस

लाज ने पास पहुंची, जिसना सिर नटा हुआ था और चील-चील कर रोने लगी। वह लास की तरफ बढ़ी और उसे अपनी नापती हुई बाहो से गुळे छगाया । उसकी आखो से आमुओ की झडी लगी थी। वह अपनी उपलियो से लाश के बालो को छ रही थी। जब वह थक गई तो उसने अपने हायों से जमीन सोदना शरू किया यहा तक कि एक लम्बी-बीडी क्य खोद ली। फिर उसने उस भीजवान की लाहा को उठाकर कब में रख दिया । उसका षटा हुआ और खुन से सना हुआ सिर उसके कथी पर रल दिया और नव को मिड़ी से ढाप नर उसके ऊपर उस तलवार के फण को गाड दिया जिससे उस मृत व्यक्ति का सिर भाटा गया था । इसके बाद उसने आसू बहाने हए मझसे नहा, ''अभीर मे नह दो नि बजाय इसके कि मै उस शरस की लाश को जिसने मझे बेहरजती के करन से नजान दिलाई, जगल के दरिन्दों और परिन्दों के खाने के लिए छोड़ द, मेरे लिए बेहतर है कि मैं मर जाऊ और जैम शरम से जा मिल।"

भैने उससे बहा, "को हुखिया, मुझसे करो भन । बयोकि में सुमसे पहले इन मैयता पर विलाप कर बुका हू, लेकिन मुझे यह सो बनाओं कि इस व्यक्ति ने तुन्हें वेइ-जनती के करन से किस सरह बचाया ?"

जसने दृद्वी हुई आवान में जवाब दिया, 'जमीर वा एव अरतर हमारे लेतो म लगान और जिया बहुत करने आया, लिनन जब उसने मुझे देखा सो मुखरर भयानक अभिन्या वो दृष्टि उपन्ने लगा। फिर उसने मेरे सिताओं पर मरहूक को मारी रत्न आयद कर सी और कुकि मेरे गरीव मितानी यह रक्तम अदी नहीं कर सकते थे, उब अभार न मुसे में आकर रुपये के बदके में मुसरर नजता कर लिया लाकि मुल जमीर के महुल म पहुचाने। मंत्रे रोभोर उसने देखा नी मानना की, लैनिम उसे दया न आई। में ने उसने पितानों के बुढाये वो तरफ एया देने की प्राप्ता की, लेनिन वह न पसीला। उस मेंने चिल्ला-पिल्ला कर गाववाला को इक्ट्रल किया और उनके सामने परियाय की। उसार यह नीजवान, विसके साम मेरी ममनी हो चुनी थी, लावा और उसने मुले कल सर के हानो से हुवाया। अपमर ने मुस्ते में आकर उमे बस्ल कर देना थाहा , लेकिन नौजंबान ने फूर्ती के साथ अपने को बचाया और दीबार से लटनती हुई पुरानी तल-बार सीव कर उसने अपने उत्तर हिये गए हमले के बचाव में और मेरे बील की रसा के लिए उसको करल कर दिया। इसके बाद वह अपने आरसस्मान के किए मक्तूल की बाद के पास ही खबा रहा। अन्त में मिपहिंगों ने जोई मिरफ्तार करके कैंदलानेमें बाल दिया।"

इतना कहकर उसने मेरी तरफ दिल को पिघलाने बाली नजर से देखा । फिर उसने जल्दी से पीठ मोडी और चली गई! अलबता उसकी दर्दनाव ' आवाज बायमण्डल में गुजती रही।

तीजवान ने मेरी तरफ रचा। उसकी आजो से मालूम हो रहा था कि वह बहुत रोया-पोग है और उसने सारी रात वागते हुए बिनाई है। वह अध्यत्त हों। और तिराध स्वर में सीला, 'में वही बरतसीय जादमी हूं जिवसी सीलार स्वर में सीला, 'में वही बरतसीय जादमी हूं जिवसी सीलार स्वर में सीला, 'में वही बरतसीय जादमी हूं जिवसी सीलार सिंधा गया। इस एक-दूबरे को वागों से मुहरूवर करते थे। हम जवान हो गये जीर प्रीमेर भी मूरी तरह उपर आई। हम जवान हो गये जीर प्रीमेर भी मूरी तरह उपर आई। एक दिन जवकि में धहर से वाहर गया था, लडको के बाद ने उसकी सादी जवदरती एक दूबरे सल्म से कर दी। में बब वापस जाया और मेर यह ववर मुनी सो मेरे जीवन में अपेरा छा गया और मूरी बाद ना हमर हा गया।

में अपनी अंतिरिक प्रवृत्ति के साथ बहुत झगड़ता रहा; लेक्नि हार गया । मेरी मुहब्बत मुझे इस तरह लेकर चल दी जिम तरह झांखोंबाला किसी खंबे का मार्ग-दर्शन करता है। में छिपकर अपनी प्रेयसी के घर पर पहुंचा ताकि मै उमकी आंखों का नुर देलूं और उसकी आवाज का गीत मुन्। मैने उसे अकेली पाया। वह अपनी किस्मत को रो रही थी और अपने जीवन पर शोक कर रही थी। मै उनके पास दैठ गया। हम बान्तिपूर्वक वातें करने में मन्त हो गये थे और भगवान साझी है कि हमारे हृदय पवित्र थे। किन्तु जब एक घंटा गुजुर गया तो एकाएक उसका पति था गया। उसके जब मुझे देखा तो गुस्से से वह पानल हो गया । उसने अपनी स्त्री के गले में कपड़ा टालकर कोर मचाना बृह कर दिया, "लोगो, आओ ! बीर इन जारिजी को व उसके जार को देखी।" अड़ीसी-पड़ौमी जमा हो गये और थोड़ी देर में पुलिसवाले भी खबर पाकर आ पहुंचे । उस शहस ने अपनी औरत को पुलिन के कठोर हायों में दे दिया जो उसे घसीटते हए याने की तरफ ले गये। लेकिन मुझपर किसीने हाय भी न उठाया; क्योंकि अन्या कानून और गन्दी रहियां नारी का ही पीछा करती है और मदं का हर अपराव क्षम्य समझा जाता है।"

इतना मुनाने के बाद नौजवान अपना मुंह छिनाये शहर की ओर चल दिया और मुझे उस लाग की तरफ देखते हुए छोड़ गया जो पेड़ से लटक रही थी और जो सिफं उतनी ही हिल रही थी जितना कि हवा के सोके पेड़ की शाखाओं को हिला रहे थे। मानो वह बातावरण की आत्माओं से दया की याचना कर रही थी और चाह रही थी कि उसे मीचे उतारकर जमीन पर मानवता के प्रेमियों और मुहत्वत के शहीदों के पहलू में डाल दिया जाय।

एक घंटे के बाद एक दुब्ली-पतली औरत आ पहुंची जिसके कपड़े चिथड़े हो रहे थे। वह पेड़ से लटकती हुई लाग के करीद आकर ठहर गई और उसने रो-पीट कर अपने हुदय को हलका किया। इसके बाद वह पेड़ पर चट़ गई और उसने अपने दांतों से रेशमी रस्सी को खोला। तब लाग गीले कपड़े की तरह जमीन पर आ रही । औरत पेड़ से नीचे उतरी और उसने दो कब्रों के पहलू में तीसरी कब्र सोदी और लाग को उसमें दफ़न किया । जब वह कब्र पर मिट्टी डाल चुकी तो उसने लकड़ी के दो दुकड़े लेकर उनकी सलीब (नास) बनाई और उसे कब के सिरहाने गाड़ दिया । जब वह जाने लगी तो मैंने आगे वढ़कर सवाल किया, "ए औरत ! तुम्हें किस बात ने मजबूर किया कि तुम एक चोर को दफ़न करने के लिये यहां आई ?"

उस स्त्री ने मेरी तरफ देखा । उसकी निगाहों में परेगानी और अन्यमनस्कता के चिह्न दिखाई दे रहे थे। उसने कहा, "यह मेरा पति, मेरे जीवन का सायी और मेरे बच्चों का बाप है । हमारे पांच बच्चे भूखों मर रहे है। उनमें से सबसे बड़ा आठ साल का है और सबसे छोटा अभी दूव पीता है। मेरा पति चोर न था। वह गिरजाघर की जुमीन में खेतीबाड़ी करता था और उसे गिरजाबर के सब लोग इतना ही पारिश्रमिक देते थे कि अगर हम शाम को खाना खा लेते ये तो मुबह के लिये हमारे पास कुछ न वचता था । जब मेरा पति जेवान था तब वह गिरजाबर के खेतों को अपनी पेशानी के पसीने से पानी देता या और अपनी भुजाओं की शक्ति से वहां के बागों को हराभरा रखता था; लेकिन जब वह बूढ़ा हो गया और सालों की मेहनत ने उसकी ताकत को नष्ट कर दिया और उसे वीमारियों ने घेर लिया तो उन्होंने मेरे पति को यह कहकर नौकरी से हटा दिया कि 'गिरजाघर को अब तुम्हारी जुरूरत नहीं है। अब तुम चले जाओ और जब तुम्हारे वेटे जवान हो जायंगे तव उन्हें यहां भेज देना ताकि व तुन्हारी जगह ले लें।' मेरा पति उनके सामने बहुत रोया-वोया। उसने ईसामसीह के नाम पर उनसे दया की याचना की और उन्हें फरिस्तों व मसीह के साथियों की कसमें दिलाई; लेकिन उन्होंने दया न की और न उसपर मेहरवानी की, न मुझपर और न हमारे बच्चों पर ।

मेरा पित शहर में गया तािक कोई नौकरी ढूंढे, छेकिन नाकाम होकर वापस छोटा, क्योंकि उन महलों के रहनेवाले सिर्फ जवान आदिमयों को नौकर रखते थे। इसके बाद वह सड़क पर बैठ गया तािक छोगों से दान या भील हासिल करे। लेकिन किसीने उसकी तरफ ध्यान न दिया। लोग वहते वि, 'ऐसे रहे-सहे आदमी को भीख या खैरात देना धर्म की दृष्टि से जायज नहीं है।

अन्त में एक ऐसी रात आ पहुची जबकि हमारे बच्चे भूख के मारे जमीन पर तडप रहे ये । मेरा दुधमुहा बच्चा मेरे स्तनो को चुसता था, लेकिन उनमें दूध न था। मह दृश्य देखकर मेरे पति ना चेहरा बदल गया और वह अभेरे के परदे में चुपके से निकला। वह गिरजाधर के भड़ार में पहुच गया जहां पादरी अनाज व झराव जमा करके रखते हैं। मेरे पति ने अनाज की एक झोलो भरकर अपने कथे पर रवडी और बाहर निकलना चाहा । मगर \* अभी कुछ गज गया था कि चौकीदार जाग उठे और उमे पकड लिया। उन्होंने गालियो और मारपीट से उस गरीव का सत्यानादा कर दिया और जब सुबह हुई तो उसे यह कहकर पुलिस के हवाले कर दिया कि 'यह चोर है जो गिरजाघर के सोने के बतन चुराने आया या।

पुलिस ने उसे कैदावाने में धकेल-दिया । उसके बाद उसे इस दरव्त से लटका दिया गया सानि गिद्ध इसके गोरत से अपना पेट भरे, क्योंकि इसने इस बात की कोशिश की थी नि इसके भूखे बच्चे उस अनाव से अपना पेट भरें जो इसने अपने बाजुओं की ताकत से उन दिनो जमा किया या जबकि वह गिरजायर का नौकर वा ।"

इतना वहनर वह गरीब औरत चली गई, पर उसनी , बातो ने सारी फ़िजा को उदास बना दिया । ऐसा मालून होने लगा गोया उसके मृह से घृए के बादल निकलवर हुदा में दूख का वातावरण पैदा कर रहे है।

मै उन कन्नो के पास लडा रहा जिनकी मिट्टी के बणी से फरियादें निवल रही थीं। में खडा सोच रहा था कि अगर इस खेत के पेडों से मेरे दिल की आग की लपट ख् जाय तो ये हिलने लग जाय और अपनी जगह छोडकर अमीर व उसके सिपाहियों से जग करे और गिरजाघर की दीवारों को तोडफोड कर पादरियों के सिर पर गिरा दें। मै उन नई क्यों की ओर देख रहा था और मेरी

दृष्टि से सहानुमूति का माधुर्य तथा दु ा एव दोक का भंड वापन निकल रहा था।

मह एक नीजवान की कब है जिसने अपने जीवन को

एक अवलास्त्रीकी शील-रक्षाके लिए निटावर कर दिया । इसने उस स्त्री को मेडियो ने दाँतो से छडाया और इस बहादरी के लिये इसकी गर्दन उडा दी गई। उस स्त्री ने अपने मुक्तिदाता की कब पर तलवार गाड़ दी है जो इस नौजवान की बहादुरी की तरफ इशारा करती है।

यह कब उस युवती की है जो मारी जाने से पहले प्रेम की एक पुतली थी। इमे सगसार कर दिया गया, क्योंकि वह मरते दम तक पवित्र रही। इसके मित्र ने इसकी क्व पर फूलो का गुच्छा रख दिया है जो प्रीति की सुगन्य की स्रोट,इशारा करता है।

और यह उस बदनसीय ग्ररीय की क्य है जिसकी भूजाओं में जबतक ताकत यी तबतक वह गिरजामर के खेतो में खेतीबाडी करता रहा, छेकिन जब उसमें ताकत न रही सो उसे निकाल दिया गया। वह काम करके अपने बज्बो कापेटपालना चाहताथा, लेकिन उसे काम न मिला । फिर उसने भीख मामना चाहा,लेकिन किसीने उसे भील न दी। आखिरकार जब इसकी निराशा हद से बढ गई तो इसने उस अनाज में से थोडा-सा उठाना चाहा जो इसने अपने माये का पसीना बहाकर और मेहनत करके जमा किया था। इसे पक्ड लिया गया और इसकी जान ले ली गई। इसकी स्वी ने इसकी कब पर सलीव बनादी है ताकि रात के एकान्त में आसमान के तारे पादरियों के जल्म को देखें जो मसीह की सिखावन को फैलाने का दावा तो नरते है: लेकिन असल में तलवारी से दुखियो तथा दर्बलो की गर्दनें उडाते हैं।

सूरज क्षितिज के पीछे छिप रहा बा, मानी वह आदिमियो के अत्याचारों से तम आ गया या और उनसे नफरत करताया। सघ्या अपने घूघट में सारी दुनियाको ले रही थी। मैने आकारा की ओर देला और -क्ब्रो के रहस्य पर हाथ मलते हुए उच्च स्वर से बोला, "यह है तुम्हारी तलवार, ए बहादुर मर्द, जो जमीन में गडी है। ये हैं तुम्हारे फूल, ए नारी, जिनसे प्रीति की किरणें निकल रही है और यह है तुम्हारी सलीव, ए ईसा-मसीह, जो रात के अन्येरे में छिप रही है।"

अत» ---श्रीपाद जोश्री

# कस्बोडिया के गौरवस्थल

औपचारिक कठिनाइयों को पार कर जब किसी प्रकार में हिंद-चीन की सीमा में प्रवेश कर सका तो उस चिर-संचित आनन्द की सीमा नहीं रही । वचपन की वे कहानियां, पुस्तकों में विणत समेर-वंशीय वैभव के वे अमल्य रतन और हिंदचीन के जंगलों में विग्वरी भारतीयता की वह अमर विभृति 'अंकोर-वाट' मेरे कल्पना-जनत में साकार हो उठी। हवाई जहाज से उतरते ही उत्मुक आंखें जैसे एक ही सांस में इतिहांस के उन स्वर्ण-पृष्ठों को पी जाना चाहती थीं और मैं जैसे शरीर की सम्पूर्ण इंद्रियों से उस महानता को अपने में समेट लेना चाहता था। कम्पनी की गाड़ी जब हम सबको लेकर 'सिप-रीप' (कम्बोडिया का एक नगर जहां से प्राचीन अंकोर-याम केवल ७ मील है) की ओर चली तो उप्ण-कटिवन्य के घने जंगल हमारे दोनों ओर खड़े थे। हमारी छोटो पार्टी में लंका के डा. मलल शेखर थे जो आजकल अखिल बीद विश्व-सम्मेलन के प्रधान हैं और उन दिनों वे समस्त बौद्ध देशों का भ्रमण कर रहे थे। एक अमरीका के दंपति थे और एक कलकत्ता के इंजीनियर मि. बनर्जी थे। होटल में पहुंचते-पहुंचते दो वज गये थे (हिंदचीन समय)। स्नान-भोजन आदि से निवृत्त होकर हम लोग जंगल में छिपे उस दैवीखजाने की ओर वढे। पाठकों की जानकारी एवं मुविधा की दृष्टि से वर्णन को मैं दो भागों में रखंगा-(१) अंकोर-थाम, प्राचीन खमेर राजाओं की राजधानी, अनेक कला-स्थलों की जननी; (२) 'अंकोर-बाट' विश्व का पांचवा आरंचर्य-कला और वस्तुकला की एक अमर निवि। लेख के प्रथम अंश में 'वियान' एवं अंकोर-याम का वर्णन रहेगा। 'वियान' अकोर-याम के खंडहरों में खड़ा खमेरों का वहुत प्राचीन मन्दिर है। कई दृष्टियों से यह अंकोर-वाट से भी श्रेष्ठ और आकर्षक है। लेख के दूसरे अंश में अंकोर-वाट का वर्णन होगा।

लगभग चार मील जंगल में चलने के बाद हमारी कारें एक चहारदीवारी के निकट पहुंचीं। सामने एक बहुत ऊंचा द्वार था। उसके दोनों ओर पंक्ति में नागराज के फैले शरीर को देव साबे हुए थे। इस पूर्वी द्वार का नाम 'विजय-पौर' है। द्वार के ऊपरी भाग पर घनी संगतराजी का काम है और वीच में चीमुखी अवलोकतेश्वर की मूर्ति खोदकर बनाई गई हैं। कहा जाता है कि यह अवलोक-तेश्वर प्राचीन खमेरों के कुल-देवता थे। इनके तीन नेत्र हैं। इससे पता चलता है कि इस त्रिनेत्री मूर्ति की कल्पना किसी अंश तक शिव से ली गई है।

इस द्वार से कुछ आगे चलकर, शहरपनाह के अन्दर चार फर्लाग जाने पर, 'अंकोर धाम' की प्रथम कला-सृष्टि 'वियान' के दर्शन होते हैं। कला के विचार से 'वियान' 'अंकोर-वाट' से भी दी सी वर्ष पूर्व विजयवर्मन सप्तम द्वारा बनाया गया था। आजं प्रकृति के आकोश से यह भी अपनी रक्षा नहीं कर सका। इसकी वाह्य वारादरी करीव-करीव ढह चुकी है। छत गिर गई है। शून्य दीवारें अतीत के सपने छिपाए खड़ी हैं। इसके भाग्य के साथ-ही-साथ अंकोर-थाम की शाही राजधानी भी घूल में मिल गई है। कुदरती पेड़-पौथों ने राजधानी पर धावा बोल कर उसकी विशाल मुन्दर इमारतों को विल्कुल दवोच लिया है। इस जंगल में वरगद, पीपल, चन्दन, अंजीर, बलूत और वांस के पेड़ गुथे खड़े हैं।

'वियान' अंकोर-थाम का सबसे शानदार देवालय
है। कुदरत के हमले से इसकी रक्षा की जा चुकी है। अंकोर की सम्पूर्ण कृतियों में वियान सबसे अद्भुत और अजीव है। इसमें अंकोर-वाट जैसी महानता नहीं, शास्त्रीय सींदर्य नहीं; परन्तु फिर भी इसकी अपनी नवीनता है जिसमें भय और आश्चर्य मिले हुए हैं। इसे देखकर एक आतंक-जैसा भाव मन पर छा जाता है, फिर भी इसके आकर्षण में कोई कमी नहीं होती। कहा जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण पहले बौढ़ों के दया-देवता के लिये हुआ था, परन्तु वाद में प्रलय के देवता 'शिव' को समर्पित कर दिया गया। इस मन्दिर को तीन पिरामिड का मन्दिर कहते हैं। इसमें कुल मिलाकर चालीस मीनारें हैं और प्रत्येक के ऊनरी खंड में चौमुखी एवं त्रिनेत्री अवलोकतेश्वर देवता का सिर बना है।

इन चेहरों की लम्बाई छ कीट है। देखने में यह मुख-भाग बड़ा प्रमावशाली प्रतीन होना है। इनके बानो में बड़े-बड़े कुडल लटक रहे है और सिरो पर कचे कलभोदार मुकुट सोभिन है। उनके आलें जैसे मारित के नवे में बचकी है। उनके ओठो पर एक विजिन प्रशास्त्र्य हसी छिटक रही है। प्रान काल से लेकर सम्यानक उनके चेहरे के भाव सदा बदलते रहने है। बेहरे पर कभी आनन्द, कभी विपाद, कभी सतीय एव कभी अभाव की अलक हिमाई देगी है। मिलर में महाचा और छाया का ऐसा मुन्दर सम्प्रिक्ष हुआ है कि उसके सीन्दर्य में एक विभोग निवार आ गया है।

अकोर-बाट की खदाई की अपेक्षा वियान की खुदाई दिलचन्य और मनोरजव है। इसकी दृश्य-नयाए मानव-जीवन से सम्बन्धित है। अकोर-बाट के सारे-के सारे दश्य पारलीविक और परोक्ष जीवन की भूमिका स युक्त है। इन्हें देखने-देखने मन ऊब जाना है। लगभग सभी दृश्या म एक्टपना है , परन्तु वियान के दृश्य अपनी अभिव्यक्ति और प्रभाव में अधिक मानवीय **और लौ**किन हैं। इस मन्दिर की सवाबट के लिये चने गये दश्य मन्त्य के दैनिक जीवन से सम्यन्ध शवने हैं। इनका जन्म जीवन की दैनिक घटनाओं के बीच से हुआ है। शिल्पकार ने इसी लोक के जीवन से प्रेरणा सी है। मानव के हर्प,विपाद, संघर्ष, शिकार एव अन्य परि-चित कार्य सभी दीवारो पर छैनी से उतार दिये गए हैं। सम्पूर्ण समेर-समाज इस भित्ति बला में मुखरित हो उठा है। खमेर कीए कैसे रहते थे, कैसे काम करते थे कैसे ख्शिया मनाते थे, कैसे हमते-रोते थे-सबक्छ यहा देखा जा सकता है, सबका उत्तर इन दश्यों में मिल सकता हैं । किसान के झोपड़े, राज-प्रासाद और उनमें रहन बाउँ लोग भी यहा देखें जा सकते हैं। समा, स्वायत, नत्य और दावनें जो ग्राम्य जीवन वे अग है और जिनका ग्राम के कठिन परिश्रम में घना सम्बन्ध है यहा पर नारीगर ने सप्रहीत नरने इन पत्थर ने ट्राडी पर नक्स कर दिने हैं। धान के लहलहाते सता को घर में · लाने के बाद यह सब क्तिना स्वाभाविक है। एमा प्रतीन होता है कि इस कल्पना को मानार रूप देववाला व्यक्ति

एक सच्चा लोक-वृति रहा होगा ! लकडी में लटका कर मारे हुए हिरन को छे जाते समय शिकारी जानवरी और पक्षियों से भरे जगल में किसी साथ से वान करते दिखलाई देने हैं। लम्बी-मतली नावों में (बेनोज) भद्र महिलाए जल विहार के लिये जा रही है। उनके सेवक उनके ऊपर मोरछल कर रहे हैं। ग्राम बचार जाड का खेल मदारी से देख रही है। कारीगर हमारत बना रहे हैं, मछए मछलिया पकड रहे हैं-यें सभी दश्य दीवारो पर अकित किये गए हैं। जैसे जीवन का कोई कार्य, हदय का कोई भाव, मन की कोई लहर यहा अक्ति होने से बचन सकी। इन वित्रों में व्याय और मजाक का पूर भी मौजूद है। कही एक साथ होर से दर कर अपने उस दूसरे साथी की अपेक्षा अधिक तेजी से भागना है जिसे नग्न जल-विहार करती हुई सन्दरियो को चौरी से एक नजर देखने का मौका मिल गया है। प्रस्पेक दश्य-चित्र में प्रमाव और कौशल का मेठ है। ये दश्य देखने बाले के सामने भित-भित अवस्थाओं की विधिवना का एक सबीव चित्र उपस्थित कर देते है ।

'वियान' से बोडी दूर उत्तर की ओर खमेर राजाओ की प्राचीन राजधानी नगर-थामं (नगर-धाम) अथवा अकोर-वाम के लडहर विखरे नजर आते हैं। थोडी दूर पर ही प्राचीन कोपागार के खडहर खडे हैं। लोगो का कहना है कि इस वर्गाकार मैदान में पहले एक सुन्दर हरा-भरा लॉन था । जानीय-बीवन के सभी सार्वजनिक उत्सव यही से बारम्भ होने ये । यहा से मगर के प्रत्येक कोने के लिये मार्ग जाने थे। ये मार्ग दोना कोर बड़े वक्षा की क्लारों से घोमित थे। कहा जाता है कि वैसव के उन दिनो यहा एक चीनी यात्री सन् १२९६ ई में आया था। उसने तन्का जीन अकोर-थाम के विषय म बहन कुछ लिला है। उसके वर्णन के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि इस शहरपनाह की लम्बाई बीस मील थी। इसमें पाच सिंह-गौर थे। प्रत्यक सिंह-गौर के साथ दो छोटे-छोटे द्वार बने थे। इसकी ऊचाई दस गज है। नगर के बीबो बीच एक स्वर्ण-मीनार यो जिसके चारो और वीस अन्य छोटी डोटी मीनारे थी । इस मीनार-समह से लगभग आधा मील की दरी पर शाहीगहल या राजप्रासाद था।

राजप्रासाद एवं सामन्तों के भवनों के द्वार पूर्व की ओर थे। प्रासाद-कक्षों की छतों पर शीशे की छतें थीं। कुछ पर पीली खपरेंलें पड़ी थीं। एक वार चम्बा लोगों ने इस नगर को ११७७ ई. में नष्ट कर दिया था। दुवारा जय-वर्मन सप्तम ने उसी पुराने स्थान पर एक नया नगर वसाया था। इसी नये नगर का नाम 'नगर-थाम' पड़ा। शहरपनाह के वाहर खाई थीं जिसमें हमेशा पानी रहता था। यह खाई ३०० फीट चौड़ी थी। पिछले दिनों एक खुदाई में 'विजय-पीर' के सामने एक पुल मिला है।

• उस केन्द्रीय मीनार से प्राचीन राजधानी के अन्दर प्रवेश करने पर थोड़ी दूर पर वारह मीनारें पेड़ों के ऊपर झांकती नजर आयंगी । इनके इतिहास का पता खमेर-विद्यार्थी आजतक नहीं लगा पाया है । ऐसी कहानी प्रचलित है कि जब दो खमेरी वंशों में कोई झगड़ा हो जाता था तो दोनों विरोधी इन मीनारों में से एक-एक पर बैठते थे और बैठे-बैठे जिसपर पहले किसी बीमारी का हमला हो, उसे अपराधी मान लिया जाता था।

हस्ति चब्तरा-इस केन्द्रीय मैदान के सामने ही हस्ति-चवृतरा है। यह हस्ति-चवृतरा खमेर जिल्पकला का एक उत्कृप्ट नमुना है। यह चवृतरा कुल मिलाकर बारह फीट लम्बा है। इसमें तीन सीढ़ियों के चढ़ाव है। छोर वाली सीढ़ियां नाग की मूर्तियों पर वनी हैं। मध्यवर्ती सीढ़ियों का घेरा विष्णु के वाहन गम्ड का वना है। चवृतरे के प्रत्येक छोर पर यिकार को जाते हुए हाथियों की एक ज्ञानदार कतार है। इन हाथियों का आकार छगभग सजीव हाथियों के समान है। इन हाथियों के हीदों में राजा और राजकुमार बैठे हैं। यह शिकार का दुश्य इतना सजीव और प्राणमय है कि थोड़ी देर के लिये दर्गंक यह भूल जाता है कि वह पत्यर की प्रतिमाएं देख रहा है। शिकारी जानवरों की चेप्टाएं, हाव-भाव, उछल-कूद बढ़े स्वाभाविक है। इसपर इनके पैरों के नीचे इगी हुई घास और घास में खड़े हुए पेड़ तो इस स्वभावि-कता में और प्राण फूंक देते हैं।

कोढ़ी राजा का स्थल हस्ति-चबूतरे के ठीक उत्तर की ओर है। यह चबूतरा खुदाई की सात पंक्तियों से सुशोभित है, इनमें सामन्त एवं उनके दल-वल की मूर्तियां खुदी हैं। हंसती हुई महिलाओं के गले में हीरा-मोतियों के हार शोभित हो रहे हैं।

अंकोर-याम के इन खंडहरों में 'वियान' के सिवाय, प्राखात, पीन-मेहान (कैलास का जलागय); प्रीरूप, हेप्राम एवं राजप्रासाद के स्थान और खंडहर तो आज भी देखे जा सकते हैं। यहां से थोड़ा आगे वढ़ने पर राजप्रासाद का दूसरा कोट आता है। इसकी दीवारें लगभग भूमिसात् हो चुकी है। मुख्य द्वार के चिन्ह शेप हैं, इसको पार करने के बाद एक बहुत ऊंचे पक्के चबूतरे पर राजप्रासाद के नीचे की मंजिल वची है, वह भी विना छत के । छतें गिरचुकी है ; पर द्वार और दीवारें कायमहैं। द्वारों की ऊंचाई बहुत कम है। इतने छोटे द्वार क्यों बनाये जाते थे, यह समझ में नहीं आता । राजप्रासाद की कुर्सी बहुत ऊंची है, लगभग पचास फीट की ऊंचाई पर प्रासाद का भवन खड़ा है। प्रासाद के चारों ओर एक पानी की गहरी खाई थी जो आज सूखी पड़ी है। महल से थोड़ी दूर पर एक शाही जलाशय है जिसमें ग्रीष्म के आतप से राहत पाने के लिये राज-महिपियां स्नान करती थीं, तैरती थीं । उन दिनों उसके पास जाना अक्षम्य था । राजप्रासाद के चारों ओर बहुत-से छोटे-छोटे प्रकोष्ठ हैं। आज यह मौन था। हम लोग बहुत देर तक खड़े-खड़े जगमगाते वैभव के उस सौंदर्य के अवशेप को देखते रहे। यहां से कुछ आगे जंगली सुष्टि से घिरी सड़कों को पार करते ही प्रीरूप के मन्दिर के सामने पहुंचे । इसका निर्माणकाल भी लगभग वारहवीं शती माना जाता है। घने जंगलों के बीच एक प्राचीन अस्पताल की सैकड़ों गज लम्बी इमारत खड़ी है। इन इमारतों को देखने से उस काल के अंकोर-थाम के वैभव और व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। 'प्रीरूप' एक बहुत बड़ी इमारत है। इस इमारत को आज जंगली वृक्षों ने वृरी तरह अपने में कस लिया है और शीघ्र यदि इनसे रक्षा न की गई तो इतिहास के ये गौरवपूर्ण अवशेष केवल अपनी स्मृति छोड़ जायंगे ।

#### श्रीपाद जोशी

गत अर्प्रेल १९५२ की ता १३, १४ और १५ वो सेवापुरी (जिंका बनारस) में अधिक भारत सर्वोदय समाज का जो सम्मेकन घी थीं हण्णदास जाजू की अध्यक्षता में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ वह गाधीबाट कें इतिहास में एक महत्व का स्थान रकता है।

मस्मारत म रंगथग दो हजार सेवक और नियन्त्रित संदर्जन रास्थित च जिनमें आचार्य कावा कालेलकर राजिंप बात्र पृष्टपोलभदाम टन्डन, बाबा राघनदाम आ० ष्ट्रपरानी सम्मलन के अध्यक्ष थी थी क्रूपदाम जाज थी भाईमाहव धोत्र श्री दादा धर्माधिकारी, सरकारी योजना ममिति वे श्री रा कृ पाटिल, श्री गुलजारीलाल सन्दा, भारत सरकार के वाणिज्य मंत्री श्री हरेकुण्य महताब, उत्कल के प्रधान मंत्री श्री नवक्रण चौधरी, हैदराबाद के प्रधान मनी थी वी रामक्रणराव, उत्तर प्रदेश के प्रधान मंत्री श्री गोविन्दवन्त्रम पत. शिक्षामत्री थी सपूर्णानन्द, बाग्रेस के सहामत्री थी लालवहादूर धास्त्री, त्रिसिपल श्रीमशारायण अग्रवाल, श्री धमेदेव बास्त्री, श्री रामकृष्ण धून श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, चरला सघ के अध्यक्ष थी धीरेन्द्र मनुमदार, पडित सुन्दरलाल, श्री सिद्धरात्र ढड्ढा, श्री सन तुनडोजी महाराज, डाक्टर प्रफुरुलचन्द्र घोष, श्री लक्ष्मीवाव. भी सीनाराम सेवमरिया, श्री जराजाणी आदि प्रमुख य।

पहला काषा दिन और आका ना पूरा दिन दूर-दूर स आपे हुए बार्चनाशिंग नो अपने निवार प्रवट नगने क लिए रखा गया था । उससे फायरा उलार पर्दे भारता कुछ लोगों ने सरकार की मीरी की नकी आलोनवा की, कुछ ने कम्यूनित्म वा सतरा वैंगे बढता आ रहा है इसकी चर्चा की, कुछ में मधनियंग को कानूनन जारी करते ना सुवाब रखा और यह नहा कि प्रादिशिक कांग्रेख कमेटिया मधनियंग के आन्दोलन में जानवृद्धनर रोश अटवा रही हैं बुछ ने अह्नोडाकों प्रका की और श्रीनाओं वा प्यान आविंग्र किया तो बुछ भारता वे वीनवारी

#### सेवापुरी का सर्वोदय-सम्मेलन

तालीम पर जोर दिया । कुछ मित्रो ने आदिवासियों के मबाल नी तरफ इशारा किया तो कुछ वहूनों ने महिलाओं की वृद्धी हालत का विकास की निर्माण की वृद्धी हालत का विकास की निर्माण की हार्यों से सहायता की प्रार्थना की । सामाजिक एव जाविक असमता की तरफ बढ़तों ने योतावों का ध्यान सीचा और सत्यापह लेंगे असरकार का प्रांता की । सामाजिक का ध्यान सीचा और सत्यापह लेंगे असरकार का प्रांता किया है जे असरकार का प्रांता किया है जे असरकार की जो वाल बहुत पहरू की मालूम हुई उनके आरे में विवाब न अपने भायण में जीवत मार्गदर्शन में किया । दनके असरका ध्यावहारहाँ एक प्रिमन्त महित्या वारों में ती कुछ भायण हुए, मगर सामेलज की सारी वारों की सह मार्गदर्शन का बोलन'। भारत सरकार के प्रतिनिधि सबसे आने बाले थी रह प्रांतिल ने हित्य में भी कुछ साम बाल प्रांत हित्य में भी चुछ साम का बोलन के हित्य में भी चुछ साम का प्रांति की स्वाप कार्य ।

उत्तर प्रदेश के लावी-वार्य के आपारस्तम एव अलिक भारतीय नेता आचार हुमतानी के सममकत का उद्यादन करते हुए नहां कि "न्वनात्मक वाम को करते समय दे तरह वे विचार हुमारे दिमाग में हूं। सरते हूं (१) जुळ कोग केवल अपनी आत्ममृद्धि के जायाल ने यह काम करते हैं (२) हुळ केवल रिवारी है को हमीलिए यह काम वनते जाते हैं कि अवतक उन्होंने बही वाम दिमार है, और (१) हुळ हम तिस्वय से यह वाम करते हैं कि हमें एव ऐसा नया समाज बनाना है जो न हो। प्रजीवार वे विवय में कमा हुआ होओ रा नम्युनियम के केश्न के नेत्रे कर्य मुक्त हो। आराफो मोमकर है कि आरा इतने से विश्व उद्देश्य को लेकर यह काम करते रहते हैं। नेरा अपना जोर तो नया समाज बनाने पर हो है और अगर आपनो जो यह दुष्टि पसन्द हो तो आपको भी मेरी तरह इस वार्र में सोमस होया।"

इसना जवात देने हुए थी निनोना ने बडे सुन्दर हम से समझाया कि "हम दो मोदकप्रिय हैं, उड्डूप्रिय हैं। हमें दाककर, खोना, धी सब एक साथ नाहिए। हम तीनो का मिश्रण करके खायंगे । केवल शक्कर, खोवा या घी में हमें रुचि नहीं । रचनात्मक काममें आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक तीनों दृष्टियां रहनी चाहिएं।"

श्री विनोवा ने अपने विस्तृत भाषण में भूदान-यज्ञ-आन्दोलन का इतिहास एवं विकास वताते हुए कहा कि "इस आन्दोलन में हिन्दुओं के साथ मुसलमानों ने भी काफी हिस्सा लिया है और कांग्रेसियों की तरह ही कृपक, मजदूर प्रजा पक्ष, ममाजवादी, माम्यवादी, जनसंघी, इतना ही नहीं विल्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वालों ने भी इसमें सहायता दी है तथा सहानुभूति प्रकट की है। इस आन्दोलन की सफलता इसी में निहित है।"

भूदान-पन्न का आन्दोलन कितने समय के अंदर सफल होगा इसकी चर्चा करते हुए श्री विनोवा ने कहा, "डाक्टर राममनोहर लोहिया कहते हैं कि विनोबा के इस मार्ग से इस आन्दोलन को सफल होने में तीन सौ साल लग जायंगे । मुझे इससे दुःख नहीं हुआ, आनन्द ही हुआ, क्योंकि मैंने तो सोचा था कि इसमें पांच सी साल लग जायंगे । इसका मतलव यह हुआ कि हमारे समाजवादी मित्र हमें इस काम में मदद देना चाहते हैं। मैने पांच मी बरस की मियाद भी कोई विनोद में नहीं कही। एक लाख एकड़ जमीन प्राप्त करने में मुझे एक साल लग गया, अतः इस हिसाव से पांच करोड़ एकड़ हासिल करने में पांच सी साल लग जायंगे। हां, यह ठीक है कि ऐसी वातें केवल गणित से नहीं चलतीं। हो सकता है कि अपने पुरुपार्थ से हम इस काम को वहुत जल्दी कर छैं।" सम्मेलन समाप्त हो जाने के बाद ता. १६ की मुबह को कार्यकर्ताओं की एक बैठक में श्री विनोवा ने कहा कि "डाक्टर राममनोहर लोहिया का एक पत्र मुझे अभी-अभी मिला है, जिसमें वे लिखते हैं कि 'मैंने अपने भाषण में तीन सौ नहीं विलक १६०-साल लग जायेंगे ऐसा कहा था। इसका मतलब इतना ही था कि केवल हृदय-परिवर्तन के मार्ग से यह काम जल्दी होने वाला नहीं है, उसके लिए नमाज-परिवर्तन भी होना चाहिए। कम्युनिस्ट छोग केवल समाज-परिवर्तन चाहते हैं, हम समाजवादी हृदय-परिवर्तन पर भी विश्वास करते हैं, इसलिए अगर हम आपका निषेध करते हैं तो मानी हम अपना ही निषेध करते हैं । हम तो आपके काम में पूरा सहयोग देने की भरसक कोशिश करेंगे ।'"

भारत सरकार के पंचवर्णीय नियोजन के सदस्य श्री रा. कृ. पाटिल ने भू-दानयज्ञ के आन्दोलन का समर्थन -करते हुए अपनी कुछ शंकाएं प्रकट कीं । उन्होंने कहा कि उससे जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े हो जायंगे जिन्हें फिर से एकत्रित करना मुश्किल होगा । उनका कहना या कि जमीन के छोटे टुकड़े हो जाने में उसकी पैदावार घटेगी, इसंलिए भूदान में मिली हुई जमीन का वितरण करते समय कुछ ऐसी शर्ते लगानी चाहिए जिनसे जमीन के टुकड़े न होने पावें और लोग सहकारी खेती करने को वाध्य हो जायं।

इसका उत्तर देते हुए श्री विनोवा ने कहा कि "आज भारत के किसान को जमीन की भूख लगी है, उस भूख को तृप्त करना हमारा प्रधान कर्तव्य है। जब यह भूख कुछ कम हो जायगी यानी सबको थोड़ी-थोड़ी जमीन मिल जायगी तब लोग स्वयं ही एक-दूसरे के साथ सहयोग करके या तो सामूहिक खेती करेंगे या सहकारी ढंग से। आज ही उनपर यह शर्त लादना ऋरता होगी। इसका दूसरा एक खराब असर यह भी होगा कि अगर इस शर्तपर जमीनें दी गईं तो जमीन के मालिक भी उसमें शरीक होकर अपने स्वामित्व की भावना का पोषण करते रहेंगे। उनकी स्वामित्व भावना का संपूर्ण लोग करने के लिए भी यह जहरी है कि जमीनें विना किसी शर्त से ली और दी जायं। फिर यह भी सोचने की बात है कि अगर ऐसी शर्तें लगा दी गईं तो एकाध एकड़ भूमि का दान हम कैसे ले सकेंगे?"

भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े हो जाने से पैदाबार घटती है, इस तरह का जो आक्षेप श्री पाटिल साहब ने किया था उसका मुंहतोड़ जवाब देते हुए विहार के श्री लक्ष्मीबाबू ने आंकड़ों की मदद से यह साबित किया कि यह आक्षेप पूर्णतया भ्रांतिमूलक है। बिहार में कई किसानों ने जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों में खेती करके अपेक्षा से अधिक पैदाबार कर ली है। श्री श्रीमत्रारायण अग्रवाल ने भी जापान की मिसाल देते हुए यह बताया कि वहां जमीन के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े रहने पर भी बहां का किमान

#### सेवापरी का सर्वोदय-सम्मेलन : श्रीपाद जोशी

हमारी अपेक्षा कई गुना अधिक अनाज पैदा करता है।

श्री पाटिल साहद ने एक जापिन यह भी उठाई कि देशत के सारे होग संत्री नरने रुपेंचे तो उठांगो के लिए कोई बनेगा हां नहीं और लंती पर बहुत ज्यादा वोच परेवा ! उनके इस आक्षेप ने ऐसा रुपा हमा मानो उटान इस आन्दोरन को अच्छी तरह समझ रुपे की विनोश ने करा हि "हम मब काँगो को अभीन नहीं के जा गर है । पीती, तेली, नाई, युनकर, बडई, लुगार, कुछार, कुछा, सादि जो होगा आजर क्यान अपना काम करने को बचे ही उत्तर अपीन नहीं दी जायगी । वेचक उन्हों को अभीन दी जायगी जिनके पास खेनी के अध्याव कोई और रोजगार है ही नहीं । केचक इनना ही नहीं, बिला हम इस बान का भी ध्यान रुपेंगे कि सब वारीगरा को बच्छा रोजगार मिलना है और गारे पानीधीय सुचार क्यों करने हैं।"

हमी विषय पर बोरने समय पहित मुन्दरलाल जी से नये चीन की जानकारी थोनाओं को दी और बनावा दि बहा कैसे बहुन चीडे अरम में सबको जमीन बाटी गई। उनकी चीन-स्तृति के लिए सम्मेनन का समय अपर्याप्त मानूम होने के कारण पात को उनका अल्य सम्मान रखा पात, जिसमें बाफी मोगो ने उपस्थित पहन्द अपनी रचि प्रकट की।

पुछ अस्य वक्ताओं ने भी बीन की नारीक करते हुए यह वहाँ कि ताताशाहों में ही अच्छे काम जलते हुं हुंग महे हैं, लोकसाही (जनन्त्र) में अच्छे वास भी बहुत आहिता होने हैं। इनका जबाब देते हुए बी विजोबा ने कहा कि "जब इस ऐसा करते हैं तो उक्का मनल्य पही होना हैं कि हमने लोकपाही के निवालों को अच्छी तरह नहीं समसा हैं। आज तो हम मुझ ने लोकपाही की बातें करते हैं और इघर फीज भी बडाने जाने हैं। य रोगों भी मांग नहीं जब सकती। इसे निवस्य कर रूमा चाहिए कि हम किम मार्ग पर चन्ना चाहते हैं। तब इस देलेंग कि लोकपाही ही तीए परिलामकारी होनी हैं और तानागाही वेचळ सीध-नुपाल्यामकारी होनी हैं।"

भदान-यह के बलाबा अन्य विषयो पर भी सम्मेलन में

चर्चा हुई, मसस्य अपिन-अ्रिंग्स्य ने बारे में थी जाजूजी न नहां वि अनन हम अमीरो और बुद्धिजीनी सींगी की प्रतिस्था नरने आये हैं, अब अम और अपिन दोनों की इन्बन नदाने ना बन्न आया हैं। अन हमारा कर्तेक्ष हो बाना है नि हम स्वय दारीरुपम नरे और अब्य अम-जीवियों नी स्वत्ह मबदरी स्नेट महीने में हुए रोज अब्य होंगे के यह नाम नरे। इस विश्वय पर श्रीमती रामेश्वयों नेहरू और श्री काला नालेक्टर के मारण हुए। राजर्षि श्री पुरातमदास स्वतन ने अपने आपण में आदम्म आम ना बड़ा मुन्दर और आवर्षण विश्व जीना और यह आया प्रनट नी कि एन जमाना आयेगा जब हुमारे बड़े-बड़े शहर केवल सहस्र वनन र रह तारों।

कुछ मित्रों ने भूदान-यह के विषय में बोलने समय इस बात पर बहुत जोर दिया कि अपर हमारा आन्दोळन सम्द नहीं होना है तो हमें स-पाहर हमें दीयारि अपो के मुख्य करनी चाहिए, इमरा अवाव देने हुए श्री विनोशा ने एक बड़े यजे की उपमा थी। उन्हाने कहा, "बोमार नो अवस्य सरने ही वाटा है देया समारत हम दशा के माय उमनी अरपी कर सामाय भी तो साम मही काने, क्योंन सामान जुटाने में देंत नहीं कमत्री। इसी तरह अगर हम सुद्ध से हो सन्यायह का विनन करने करोंगे तो हमारा प्यान बट जायमा और हम अपने उद्देश्य में मुख्य करही हो सकेगे। जब मीना आ जायमा तब मत्यायह हम मार्ग आपने से आप कर जायमा।"

इस प्रकार व्यानार तीन दिन तक अनेन विषयों पर
चर्चाए होनी रही। उनने नारण नार्यक्तीओं के प्रनृती
गान-आरावार्ये दूर हो पर्दे और एक नया उत्पाह
एवं बेन्न्य केन्नर सारे नार्यक्तों सेनापुरी से रवत्वा हो
प्रवे । अगने दो आह के अन्दर जो पच्चीम आल एकड़
बनीन आण करनी है उन्योग में कितनी मुस्ति हिम प्रदेश
गो आपन करना है इनाहा में निकानी मुस्ति हिम प्रदेश
गाया और हर प्रदेश के किए अन्य-अन्त भूनान समितिया
निवास की गाँ। यहा सा उत्पाह और उत्पर देवनर
हुँ पूंसा क्या हि २५ स्वाम ना सम्बन्ध बहुत प्रोध पूरा
होमा और अहितान समान नार्ति में हमारा प्रारक एक
कहम आने वह जाया।



भारतीय राष्ट्रीयता कियर ? - ले॰ श्री रघुवीर-शरण दिवाकर, प्रकाशक—मानव साहित्य सवन मुरादाबाद, पृष्ठ सं० ७८ मूल्य १)

राष्ट्रीयता भारत के लिए नई चीज है। उसे अंग्रेजों की देन न भी माने तो भी वह उसी युग की उपज है। आदियग में भूमि के प्रति ममता के प्रमाण हमें मिलते है, पर कालांतर में वह ममता भूमि से हटकर अध्यात्म की ओर मह गई और फिर एक दिन ऐसा आया कि विश्व-कल्याण के नाम पर मनुष्य स्वार्थ का पुतला वन गया। संकृचित राप्ट्रीयता सदा घातक होती है, परन्तु जो राष्ट्रीयता स्वस्य मान-दण्डों को लेकर चलती है वह मानवता से भिन्न नहीं है। इस छोटी-मी पुस्तिका के लेखक ने इसी तथ्य का प्रतिपादन किया है। भारतीय राष्ट्रीयना "आध्यात्मिकता के झुठे उन्माद में व भौतिकता के मोह-जाल में न फंस कर दोनों के संतुलन व सामंजस्य पर ही मानवजीवन निर्धारित करते हुए यथार्थवाद को मान देती रही तो राष्ट्र का कल्याण है, विञ्व का त्राण है।" वस्तुतः यही सही दृष्टिकोण है।

लेखक की भाषा और गैली में ओज है। यदि उग्रता कुछ कम होती तो प्रभाव अधिक स्वास्थ्यप्रद होता। तो भी उसके दृष्टिकोण से हरएक समझदार व्यक्ति सहमत होगा और उनकी मीलिक विचार-प्रणाली की सराहना करेगा।

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी, इलाहावाद की तीन पुस्तकें,

संकार (१९३९ से १९५० तक की प्रसिद्ध उर्द कविताओं का संकलन)-सम्पादक-श्री रघपति-सहाय 'फिराक'. पूष्ठ १९८, मूल्य ३)

'नंकार' उर्दू कविताओं का संग्रह है। कुछ पूरानी कविताएं भी है। ये कविनाएं देश की नई चेतना को २१६

समिपत की गई हैं। वस्तुतः ये कविताएं स्वयं नई चेतना से ओतप्रोत है। इस नई चेतना का आधार है साम्यवाद और रूस। सम्पादक ने माना है कि गांधीवाद जानदार साहित्य नहीं पैदा कर सका, गांधीयुग लगभग वंजर सावित हुआ । इस स्थापना से मतभेद हो सकता है । मैं उर्द की वात नही कहता, पर देश में ऐसी भाषाएं हैं जिन्हें गांधीवाद ने प्रेरणा दी है। इसलिए इस तरह की स्थाप-नाएं जल्दी में नही बना लेनी चाहिए। लेकिन इस बात को छोड़कर जहां तक कविताओं का सम्बन्ध है हम उनकी शक्ति, ताजगी और मूत्र के कायल है। वे एक नये युग का सन्देश देती है। यद्यपि उनका चुनाव एक विशेष दृष्टिकोण को सामने रखकर किया गया है यानी वर्तमान युग की और वर्तमान शासन की कमजोरियों का पर्दाफाण तथा रूस और साम्यवाद की प्रशंसा, तो भी उनकी भाषा, उनकी शैली और उनकी पैनी दुष्टि हर किसी को मोह लेगी।

भाषा अधिकतर सरल और वामुहावरा है। कहीं-कहीं तो ठेठ हिन्दी है। जहां कठिन है वहां शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं। यदि सम्पादक कवियों का संक्षिप्त परिचय अीर दे देते तो अच्छा होता । पुस्तक 'हिन्दुस्तानी' का नमूना है। भूमिका में सम्पादक ने भाषा' को 'भागा', विवरण, चित्रण को विवरन और चित्रन लिखा है। न जाने 'चितरन' क्यों नही लिखा! उन्होंने उर्दू कविता की प्रशंसा की है, ठीक की है, पर हिन्दी कविता पर जो छीटाकशी की है वह मानसिक अस्वस्थता का प्रमाण है। उससे वचने तो उनकी विद्वता में कोई घटवा नहीं लगने वाला था। बहरहाल हम तो उन्हें इस मध्र 'झंकार' के लिए बन्यवाद ही देंगे।

महात्मा गांधी के विलदान से सबक-ले॰ श्री मुन्दरलाल; मूल्य १२ आना; पृष्ठ-संख्या ६५ ।

महात्मा गांघी की हत्या वर्तमान विश्व की एक

महान पटना है। बाने वाली दुनिया उमने कारणों पर सदा विचार करती रहेंगी। इस पुस्तक के न्याह पर मुन्दरलाल ने यही दिया है। उनका विवेचन विद्वतापूर्ण है। वह हुएँ सीवने को सामधी देना है। उन्हान इस अन्तरोंनी पटना पर रावनीतिक, साम्बदायिक और ऐतिहासिक तीनो पटनाओं में विचार किया है और बनाया है कि इस महान विज्वान के हुए मधा मिक्का के क्वते हैं। बह पिका एक ही है कि हम कथन नवीतिक राष्ट्र का सामदायिकता में बचायें। यह पुश्चक हर दुन्टि व पडनीय और माननीय है स्थादि बाज के यूप में साम्ब सायिकता नाता म्या में किन अपना दिर बमार रही है। इसमे पहले कि वह हुने प्रमा के हुने वास्तविकता को समय किना चाहिए। यह पुश्चक ठस वास्तविकता को समय किना चाहिए। यह पुश्चक ठस वास्तविकता को समय

पुस्तक की भाषा हिन्दुस्तानी है। उसमें प्रवाह, सरलता और विस्वास है। हर नवयुवन की इसे पडना फाहिए।

चीन की जावाज-ले॰ थी सुन्दरलाल । वृष्ठ ४४ डिमाई साइज । मृत्य ।)

गत बर्षे ५० सुन्दरलाल जी एवं गैर-भरतारी शिष्ट-महल के नेता के रूप में चीन के नये लोकराज की दूसरी वर्षगाठ के उत्सव में भाग लेने गये थे। वहा पर आपने कुछ भापण व बन्तव्य दिये थे । उन्हीं का यह संवह है। प॰ सुन्दरलालजी ने वहा जो बुछ देखा, २ वर्ष में क्षत-विश्वत चीन ने जो शानदार नारनामे निये, एशिया में प्रपति की जो आधारशिला स्वापित की उसका वर्ण परिश्रम इस पुस्तक में मिलता है। चीन की यह प्रगति भारत ने लिए अध्ययन नी वस्तु है । पहित जी ना दाना है कि चीन कम्युनिस्ट नहीं है । गाषीजी की शिक्षाओं का बहा भारत से अधिक प्रसार व प्रचार है, विशेषकर चर्से का । इस दावे की सत्यता का प्रश्न यहा नहीं उठता, बयोकि चीन के शासक अहिंसा में विश्वास नहीं करते, पर इस बान को छोड़ कर चीन ने जो सफलता प्राप्त की. जो प्रगति की है, तनतोड कर जो नवजीवन का सचार निया है वह निस्सन्देह प्रशंसा के योग्य है। ए० स्न्दरलाठ की

यह पुस्तिकर सारत और चीन को पास लाने में तथा भारत को अपना नव निर्माण करने में बहुत सहायक होगी।

#### हमारे सहयोगी

इधर इस देश में हिन्दी के बढ़ते हुए प्रचार और प्रसार ने फल्स्वरूप अनेक सुन्दर पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हो गया है। उनमें गुलदस्ता, नवनीत और सम्पदा प्रमुख है। गुलदस्ता (हिन्दी शहनैस्ट) अपने प्रकार का हिन्दी में शायद सबसे पहला पत्र है। विदेशी में इस प्रकार के पत्र अनेक है और लाजों की सहसा में छपते हैं। इधर-उधर जो सुन्दर रधनाए निकलती है ऐसे पत्रों में वे सक्षेप में वा सार रूप में दी जानी है. जिममे अधिक-सै-अधिक व्यक्ति उनमे लाभ उठा सके। गुलदस्ता इसी प्रकार का बनुठा पत्रहै । श्री राजपाल मिन्य प्रान्त के रहने वाले हैं। हिन्दी में उनका यह प्रयत्न सराहनीय है । रचनाओं का सकलन ज्ञानवर्षक, मुरुचिपूर्ण और सुपारुय होता है। पत्र को बिना पत्रे छोडते नही बनना । अधिव-से-अधिक पाठकों को इसे अपनाना चाहिए। इसका वार्षिक चन्दा १०) तथा एक प्रति का मृत्य १) है । पता है गुरूदस्ता कार्यालय, पीपनवण्डी आगरा। 'वननीत' गुलदस्ता के बाद आने वाला इसी प्रकार का सुन्दर पत्र है। इसका चन्दा वही है जो गुलदस्ता ना है। इसका प्रकाशन 'नवनीत प्रकाशन' बम्बई से होता है । 'नवनीत' में विदेशी रचनाओं का बाहुन्य रहता है। वह हमें अतर्राष्ट्रीय साहित्य की मंदीनतम भाराओं से परि-चित करम्ता है और उस अपार मागर में जो सुन्दर और बने हए रल है उन्हें हमारी मेंट करता है। वह वस्तन नवनीत है। हम इन दोनों पत्रों के दीघें जीवी होने की प्रार्थना करते हैं। यद्यपि 'सम्पदा' का क्षेत्र भित्र हैं, यह अर्चशास्त्रीय पत्र है पर इसीलिए इसका महत्व बहत अधिक है। हिन्दी में शायद यह अपने विपय का अकेला पत्र है । इसका मार्ग दुस्ह है और इसे बहुत समल-समल कर चलना है। हिन्दी में बहानी के अतिरिक्त और शुख नहीं विकता, इसीलिए यह आवस्पन हो जाता है कि इस ( धेव पण्ड २२० पर )

# Crie a sport

#### सर्वोदय-सम्मेलन

सर्वोदय-समाज का चौया वार्षिक सम्मेलन श्री श्री-कृष्णदासजी जाजू की अध्यक्षता में १३,१४ और १५ अप्रेल को मेवापुरी में समाप्त हो गया। देश के विभिन्न भागों से लगभग दो हजार रचनात्मक व कांग्रेसी कार्य-कर्ता (सर्वोदय-समाज के सेवक) तथा प्रमुख नेता उसमें सम्मिलित होने आये थे। अनेक विदेशी लोग भी थे। जैसी कि आधा थी, सम्मेलन का अधिकांश समय भ-दान-यज्ञ की कल्पना को स्पष्ट करने तथा उसे देश-व्यापी बनाने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने में व्यतीत हुआ। सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, श्रम-प्रतिप्ठा, मद्य-निपेध आदि विषय भी चर्चा के लिये आये, लेकिन वे गीण वनकर रह गये। मुख्यतः विचार तो भू-दान-यज्ञ पर ही हुआ और हम सकते हैं कि उस दृष्टि में यह सम्मेलन वहुत सफल रहा। भू-दान-यज्ञ के विषय में लोगों की आशंकाएं दूर हुई, साथ ही रचनात्मक कार्यकर्ता इस महान कार्य में योगदान देने के लिए एक नया उत्साह. एक नई प्रेरणा और एक नया निश्चय लेकर गये। निश्चय ही इससे भू-दान-यज की गति अब और अधिक वेगवान होगी और उसके छिए संगठित रूप से उन भागों में भी प्रयत्न प्रारम्भ हो जायंगे जहां इस यज के प्रवर्तक विनोवाजी अभी तक नहीं पहुंच पाये हैं तथा आगे भी जाने की संभावना नहीं है।

एक वात से हमें बड़ा संतोप और हर्ष हुआ और वह यह कि कांग्रेस या सर्वोदय की विचार-घारा से मतभेद रखने वाले अनेक नेताओं ने भी इस सम्मेलन में भू-दान-यज का समर्थन किया। रचनात्मक संस्थाओं के मेल मे वने 'सर्व सेवा-संघ' ने तो दो वर्ष के भीतर पच्चीस लाख एकड़ भूमि एकत्र करने का संकल्प ही कर टाला। उनका प्रस्ताव इस प्रकार है:

"सत्य और अहिंसा पर अधिष्ठित वर्गविहीन और शोपण-रहित समाज वनाना हमारा उद्देश्य है--ऐसा समाज जिसमें हरएक के विकास के लिए पूर्ण अवकाश हो। आज हमारे देश में जो आर्थिक विषमता है उसे वदल-कर इस उद्दिष्ट की ओर हम किस तरह बढ़ सकते हैं यह आज हमारे सामने मुख्य प्रश्न है। पिछले सर्वोदय-सम्मेलन के वाद श्री विनोबाजी द्वारा प्रेरित और प्रचा-रित भुदान-यज्ञ के आन्दोलन से हम लोगों को इस प्रश्न का उत्तर काफी मात्रा में मिल गया है। इस आन्दोलन ने अहिंसा की शक्ति का प्रत्यक्ष परिचय देकर अहिंसा पर हमारी श्रद्धा को फिर से सजीव बनाया है। खुशी की बात है कि इस आन्दोलन ने सारे हिन्दुस्तान का ही नहीं, विलक बाहरी देशों का भी ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। देशभर में फैले हुए हमारे कार्य-कर्ताओं तथा जनता से भी यह मांग हो रही है कि इस युगप्रवर्तक ऋांतिकारी आन्दोलन को वेगवान तथा देशव्यापी वनाने के लिए 'सर्व सेवा-संघ' की तरफ से उन्हें मार्ग-दर्शन मिले और श्री विनोवाजी की भी यही इच्छा है कि अब यह कार्य उनके व्यक्तिगत प्रयत्नों तक ही निर्भर न रहकर देशव्यापी बने । इसिलए 'सर्व सेवा-्संघ' अपना कर्तव्य समझता है कि श्री विनोबाजी के नेतृत्व में इस कार्य का भार अपने ऊपर ले ले।

"इस भूमिदान-यज्ञ आन्दोलन का मूलभूत सिद्धान्त यह है कि जिस तरह बच्चों का अपनी माता पर समान रूप से अधिकार होता है उस तरह भू-माता पर भी उसकी सभी सन्तानों का समान अधिकार है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हमारी सारी भूमि का नये सिरे से न्यायो-चित वितरण हो। इस वितरण का अनुपात आम तौर पर यह रहे कि प्रत्येक परिवार को कम-से-कम पाच एकड सुरक या एक एकड तरी जमीन दी जाय।

"इस न्यामोचित वितरण के लिए छोक-मानल को तैयार पर समाज की विवेन-बृद्धि को आवाहन कर और अगंदे दो साल के अन्दर की गांव ५ एकड़ की ओसल के हिसाब से हिन्दुस्तान के करीब ५ छात्र देहातों में नाम पर कम-से-कम २५ लाल एकड मृशि प्राप्त कर। वह उन येवसींगों को से जाय जो स्वय खेती करना जानन है और करना चाहने हैं और जिन्हें कोई दूसरा रोजगार गहीं हैं।

"सर्वोदय समाज के निर्माण की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि जीवन के हर क्षेत्र में आधिक समानना की सववो पूरी हो और सववो पूरा वाम मिले । हमारा विश्वास है कि यह किरिट्रत अपने-स्वस्था के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए सारे देश में किनेन्द्रत उद्योगों अर्थान् प्रामोदोगों का स्थापक प्रभार हो। उस दृष्टि से एक बुनियादी सारस के तौर पर अग्न एव वस्त केस्वावण्यका में वापक होने वाले केस्त्रित उद्योगों का वहिष्कार किया गाया।"

इस द्युन और सामिषक सक्त्य का हुम हार्विक अभिनास्त्र और अक्षमीक करते हुए देश के समस्य अधिकारों और शिक्तमों, विशेषकर प्रकारक कार्य-कार्माओं से अपूरोक करते हैं कि वे इस सक्त्य को श्रीख ही कार्योगित करते में आपएक से जुट जाय और दो वर्ष से पहले ही इसे पूरा करके दिला में। इस कार्य में कीन प्रदेश किता हाथ बटायेगा, इस वारे में भी विचार हुआ और हुए कमेटियां कर् निर्माण विधा गया। में अमेटिया अपनेजपत्र क्षेत्र में काम करीं।

क्षामीलन भी व्यवस्था से नुछ छोयों को मंत्रे ही अमनीप रहा हो, नुछ मायल मुनते-मुनने जब भी चठे हो, नुछ को उस मास्त्रीनिक नायमा मन अमान मी खटका हो, जिनके बारण अनगुछ और जिनवरामप्त्ली में सर्वोदय सम्मेलन सजीव हो उठे थे, केविन मुनान-मक के लिए इस सम्मेलन में लोगों में जो स्नीत पुरान-मक बहु बड़ी बीज थी और छमसे इम सम्मेलन की सणना सर्वोदय समात्र के एक ऐतिहासिक सम्मेलन के रूप म की जायगी ।

नेहरूजी की जिज्ञासा और मंगल-कामना

थिनोवाची ने भूदान-यज्ञ के प्रति भारन के प्रधान गयी परिव जवाहरवाल नेहरू की शुरू में ही दिल्लामी रही है। उतना ही नहीं, तैलमाना में दसकी सफलता की दैखनर एक बार समद में उन्होंने कहा या कि जो काम हिप्यारवन्य फौजें भी नहीं कर सकती थी वह नाम विमोवानी में कर दिलाया। वर्षोद्य सम्मेलन के कार्य नी उप्रति की कामना करने हुए सहस्त्री ने विमोवानी की निम्मालिखित पत्र भेषा था

> नई विल्ली ११-४-१९५२

तिर विनोधाती,

आपका सदेशा भूते मिर्ला कि मैं सर्वोदय सम्मेलन में सामिल होऊ। मेरी भी कुछ इनछा थी कि में इस मीके से फायबा उठाऊं और आप से और औरों से मिर्लू और कुछ बातचीत में हिस्सा लूं। सेकिन में इस सम्मा बिल्कुक मनबूर हूं और यहां से जा नहीं सकता। चौड़े देर जाने के कुछ माने भी नहीं है।

सर्वोवय सम्मेलन के काम में, आप जानते हैं, मुमे बहुत दिलकाची है और में आशा करता हू कि इनके तरकारें, होगी और उससे हम सब कुछ संख्ये। गुरुजारो-लाल नवाजी और पाटिल यहा से जा रहे हैं और बास्त आने पर बहा का हाल बतायेंगे और हम सब उस पर विचार करेंगे।

आशा है कि भापका स्वास्थ्य अच्छा होगा ।

आपका, जवाहरलाल नेहरू

विचार-काति के लिये जरूरी कदम

सर्वोदय की विचारपारा और मुदान-यत की क्लम नो जनहामारण तक पट्टचाने और उनमें विचार मानि उत्पन्न करने के लिए जिस जीज की जयन अवस्वकता है बहु यह है कि इसके बारे में प्रामाणिक साहित्य सरल-मुखेश आया व सस्ते मुख्य में प्रकाशित क्लिंग जाग मुखेश आया व सस्ते मुख्य में प्रकाशित क्लिंग जाग आज सारा वाजार साम्यवादी विचारवारा की छोटी-वड़ी पुस्तकों से भरा पड़ा है। ये पुस्तकें इतनी सुन्दर छपी हैं, इतना बढ़िया कागज लगा है और सबसे अधिक यह कि वे इतनी सस्ती हैं कि मामुली हैसियत का पाठक भी उन्हें खरीदने के लिए सहज ही लालायित हो उठता है, खरीद लेता है। यदि हमें अहिसक कांति के लिये लोगों को तैयार करना है तो हमें भी सस्ते-स-सस्ते मल्य में विद्या-से-बिद्या साहित्य निकाल कर देश के घर-घर में पहुंचाना होगा । भले ही यह कार्य 'सर्वोदय-समाज' की ओर से हो अथवा गांधी स्मारक निधि की ओर से या 'सर्व सेवा-संघ' की ओर से, होना जरूर चाहिए और विधिवत रूप से । जवतक लोगों में विचार-क्रांति नहीं होगी, भावी समाज के नव-निर्माण को लोग पूरी तरह समझकर हृदयंगम नहीं करेंगे तवतक सर्वोदय की विचारवारा और भूदान-यज्ञ का प्रभाव वहुत सीमित रहेगा । अब चुंकि उस दिया में संगठित रूप से कदम उठाया जारहा है, हम चाहते हैं कि ऐसे साहित्य के सूजन और प्रसार की ओर फौरन ध्यान दिया जाय। सौभाग्य से गांघीजी, विनोवाजी तथा अन्य अनेक चिन्तकों का वहत-सा साहित्य इस विषय पर मौजूद है। उसे सस्ते-से-सस्ते म्ल्य में निकाला जा सकंता है, साथ ही नया साहित्य भी तैयार कराया जा सकता है। इस कार्य में जितनी जल्दी होगी, उतना ही हमारा और हमारे देश का लाभ होगा। अन्य देशों में जव-जव कांतियां हुई हैं, उनके लिए लोक-मानस चितकों के साहित्य ने ही तैयार किया है। रस्किन की मुप्रसिद्ध पुस्तेक 'अन्ट्र दिस लास्ट' ( सर्वोदय ) ने गांचीजी का जीवन ही वदल दिया, स्टो की 'अंकिल टाम्स केविन' (टाम काका की कुटिया) ने अमरीका में गुलामी के विरुद्ध कांति पैदाकरदी। इतिहास में और भी ऐसे अनेक दुष्टांत मिलते है । हमारे जीवन, समाज और देश में क्रांति लाने के लिए विचारों की क्रांति आवश्यक है और यह कार्य साहित्य ही कर सकता है।

0

#### कसौटी पर

(पृष्ठ २१७ का शेप)

पत्र को वेचा जाय । सम्पादक और प्रकाशक के इस साहसपूर्ण कार्य में सबको सहायना देनी चाहिए।

जैसा कि सम्पादक ने प्रथम अंक में अपनी नीति की चर्चा करते हुए लिखा है—"आज हिन्दी संसार भी पहले ने अधिक जागरूक और अधिक शिक्षित हो चुका है। लोकनन्य शासन ने उसपर गम्भीर उत्तरदायित्व भी डाल दिया है कि वह देश की राजनैतिक व आर्थिक समस्याओं को स्वयं समझने की कोशिश करे तथा उनका हल करे। वास्तव में नेहरूजी के शब्दों में यह हमारा प्रथम कर्तव्य है कि १९४७ में हमने राजनैतिक स्वराज्य का जो चैक प्राप्त किया था उसे आर्थिक समृद्धि की नकदी में भुनाने का प्रयत्न करें, क्योंकि आर्थिक समृद्धि ही मच्चा स्वराज्य है।"

यह एक वड़ा दावा है। 'मम्पदा' इस दावे का स्वीकार गरके मैदान में आई है। उसके लेख इस बात के साथी है.कि वह जो दावा लेकर, चली है उसका दायित्व वह समझती है। 'स्टॉलिंग क्षेत्र में संकट' 'पंचवर्षीय समृद्धि योजना' 'मुद्रा प्रसार' 'यह महंगाई क्यों' 'जगत की पैट्रोल सम्पदा' तथा अन्य लेख भारत की आर्थिक स्थिति पर अच्छा प्रकाश डालते है। लेखों के अतिरिक्त समाचार, भूचना और गतिविधि के हप में उसने अच्छी जागहकता का परिचय दिया है। 'श्रम समस्या' 'कृषि और खाद्य' 'विविध-राज्यों की आर्थिक प्रवृत्तियां' आदि कुछ अच्छी जानकारी देने वाले स्तंभ है।

पत्र हर प्रकार से मुवोध, ज्ञानवर्धक और रोचक है। उसका कार्य कठिन है, पर आरम्भ मृन्दर है और साहम भी स्तुत्य है। हेमें आज्ञा है कि उन्हें सब ओर से सहयोग मिलेगा। इस पत्र के सम्पादक श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार मुपरिचित लेखक और सम्पादक हैं। इसका वार्षिक मृल्य ८), एक प्रति का ॥।) तथा प्राप्ति-स्थान अशोक प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली है।

—'सुशील'

#### 'मंडल' के नये प्रकाशन

अमिट रेखाए (स० मत्यवनी मिल्टिन)

" इस सबह में जिन उदात चरियों ने रेवाचित्र हैं ने भिन-भिन्न जातियों ने देवों ने हैं। आज ने यूग में जब मनुष्य मनुष्य ने बीच नी खाई बकती जा नहीं है तब इस तरह के सबह एक स्वास्थ्याद बातावरण तैयार करने में अप्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे।

—हिंदस्तानी प्रवार

3)

" मानसिक चिंड्रमना एवं परिस्थित को विव रास्ता में इस प्रकार का म्हदक साहित्य ही मानव को गोवित रहने को स्कृति प्रवान करता है। इस दिस्य मि इसस्पर्सी रेका-विचा का यह सबह अवने-आप म की अवने एक अनोता है।"

—राम ग्रेस " तास्त्र एको में विकास है । सम्बन्ध

" पुन्तन पहने में दिल्चरम है। महान् जा माजा ना परिचय प्राप्त करने ने माय-माय नहानी ना भी जानन्द मिलता है।" —विस्वााणी

रोइ की हड्डी (स० विष्णु प्रभावर)

"प्रस्तुन पुस्तक में उच्च कोटि के साहित्य सेविया तथा विद्वानो में क्लिके हुए आठ एकानिया का समझ किया गया है। मग्रह कान्यक में आधुनिक हिंदी एसावियो का विषय, भीगी, विधान नया निराधें की दिन्द से प्रतिनिधित्व कगना है।"

--विश्ववाणी

"यह जाठ एवाविया ना मझह है। बाटा एवावी आठ विभिन्न र पश्चितरुठ एवावीवारो की कृतिया ह। इनवे मधादय श्री विष्णु प्रभावर ने दशके मध्यदन में वाफी होस्यारी न काम रिया है। "

—हिदुस्तानी प्रचारै

■ राजवाट की सनिधि में (विनोग प्रवचन) ॥=)

प्रत्येक के लिए इन प्रवचना का अध्ययन आवश्यक है, इमलिये कि विनासजी हारा जिस रचनात्मक तया ऐतिहासिक जाति वा श्रीगणेश विद्या गमा है,
वह भारत ही नही विस्व की महत्वपूर्ण घटता है।"
—नई दीनया

" मूदान-यज्ञ सर्वोदय विचार और राष्ट्रीय योजना आयोग-सम्बन्धी चर्चाआ वा यह सम्रह हर विचारवान और सननमीठ व्यक्ति के लिय पठन-पाठन को सामग्री है।

--- वर्मवीर

भूदान-यज्ञ (विनोजा-प्रवचन) ।)

" सन प्रवर आवार्य विनोताजी वी प्रेरणा से आज हमारे गण्ड में एक महान प्रानि हो रही हैं। भूमि वे अगमान विनग्ण नो विकट समस्या ना इक आकार्यजी न अपन भूशान-यत के रूप म प्रस्तुत विचार्त । ——गमीर

" पुल्तर विनोताजी की नई शार्य-योजना में भरी हुई है। प्रत्येक विचारसील पाठक के लिए पहने और मनन करने योग्य है।" —विश्ववाणी

एक आवर्श महिला—(२० विनायक तिवारी) १)

सहारमाजी की रहन्नाई में एसी बहनें भी भैदान में आई को हुकी समाज की नेवा करना अपना पर्ने समझती भी और उनके हिन में अपना हित भानती भी। इन बहना में बही ज्यों जगह है महाराष्ट्र में पुरानी मनक और सीभारस्वती अवतिका बाई मोस्टरेकी । हम उम्मीद हैं दि इस पिताब का कब प्रचार होगा।

ं धीमती योगने उत्तवनीट की समाज मुखान्त और देश-मान थी। भारतीय मिट्टाभा की आमृति के रियो उन्होंने अवन परियम निया। उनहां जीवन एक जास्त्र जीवन या और भारतीय मिट्टाभा के विशे अनुकरणीय।
——विस्ववाणी

#### हिन्दी का सचित्र मासिक

पष्ठ संख्या ८०

क ल्प ना

वार्षिक जुल्क १२) एक प्रति १)

( साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक )

# पहिये

जिसमें उच्चकोटि के साहित्यकों और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी। अपने गंभीर और सुरुचिपूर्ण स्वरूप के कारण सरकारी विभागों द्वारा मान्य

#### संपादक मंडल

র্ম তা০ आर्येन्द्र शर्मा (प्रधान सम्पादक) र्रम नधुसूदन चतुर्वेदी र्रम बद्रीविशास्त्र पित्ती र्रम वृत्तदावर्गिक्तारों मिश्र र्रम नुनीन्द्र र्रम कला-सम्पादक—जगदीश मित्तल

विशेष परिचय के लिये हमें लिखिये :-

'कल्पना' कार्यालय, ८३१ वेगमवाजार, हैदरावाद-दित्या

# खू॰ कि॰ खरकार हारा पुरस्कृतः भारतीय ज्ञानपीठ काशी के प्रकाशन

Ş.	दर्दमान	पुरस्कार	१८००	€∘	मू०	Ę)
٦.	पथचिह्न	11	१०००	**	"	२)
	दैदिक साहित्य	22	8,00	"	"	€)
	गेरो शायरी	11	400	17	,,	٤)
	<u> शेरो-सुख़न</u>	11	५००	"	"	(٤
દ્.	मिलनयामिनी	71	५००	11	77	૪)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुएड रोड, वनारस-४

#### हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ सचित्र सांस्कृतिक मासिक 'विक्रम'

#### संचालक-सम्पादक--श्री सुर्यनारायण व्यास

हिन्दी का सबेयेन्ड मासिक 'वित्रम' ही है, निस्तरा देश के सती वर्गों में समान रूप से प्रवेश है। 'वित्रम ने आर्राम्मर १६ पूष्ट प्रति मास भर की महत्वपूर्ण घटनाओं पर विविधापूर्ण, मीरिक, जरहप्ट और निर्मीक एव स्वस्य विचार सर्वान्वन रहते हैं। सभी विद्वानी ने हिन्दी का 'नाइमें रिप्य'

कहरूर प्रशास की हैं। 'वित्रम' की व्यक्ती यह विशेषता हैं। स्वस्य साहित्य, विष्ट हास्य, चुनो हुई कविता और कहानी एवं विचार प्रेरक साहित्य से समस्तित इस मासिक के प्राहन व्यवस्य विनिध ।

'वित्रम' देश के समस्त भागी तथा विदेशी दुवाबांसों में भी समान रूप से पहुँचता हूँ, इसिट्ये अपनी बस्तुओं के स्थापार-विज्ञापन के छिये भी यही थेट्ड साहिक हैं। वाधिक मूल्य ६), एक प्रति ॥>) विदोय जानकारी के छिये जिसिये—

व्यवस्थापक—'विकम' कार्यालय उज्जैन ( म० भा० )

हिन्दी-कथा-साहित्य की सर्वश्रेष्ठ

सर्वांग-सुन्दर सचित्र मासिक पत्रिका

एक प्रति ॥^) आने

-सुमित्रा -

"वार्षिकमूल ६) क्यार

संचालक-श्री कैलाशनाय भागव, स्टार प्रेस, कानपूर

तया

संपादक-श्री देवीप्रसाद धवन 'विकल' ग्रीर श्री विट्ठल शर्मा चतुवँदी

परिवार के सभी सदस्यों न्त्री-मुख्यों, पुत्र-पृत्रियों, गाई-वहितो-को 'शुनित्रा' बेमडर पड़ने को दी जा सनती है। इतनो नहानियाँ पाठन की साल्कि वृत्तियों को जायत करती है तथा प्यान्त को सुसंहत बताती हुई उत्तरा मनोरंजन करती हैं, वर्तय्य ने छिए सन्नद्ध करती हैं, और मावृक्ता के दक्ष्योग से बचाती हैं।

'समित्रा' के पाठक वहानियो द्वारा वड-से-वडे और गुढ-से-गुड़ विषय को भी आसानी से समझ

सकते और मानव-जीवन की युरिवयों को आसानी से सुलक्षा सकते हैं।

नमना के लिये आज ही पत्र लिखिये

सुमित्रा-प्रकाशन, महात्मा गांधी रोड, पोस्ट वाक्स नं० १. कानपुर

	विहार, उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान श्रीर वड़ीदा के शिज्ञा-विभाग से स्वीकृत			
	— विज्ञार			
	विद्यार्थियों और किञ्ञोरों को लोकप्रिय और ज्ञानवर्द्धक पाठ्य-सामग्री देने वाला हिन्दी-संसार में अपने ढंग का अकेला मासिक			
0	'किशोर' विज्ञान, भारत की प्राचीन संस्कृति, साहित्य, व्यायाम और स्वास्थ्य आदि विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में किशोरों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करता है।			
C	अपने पाठकों को मानव-जीवनकम का, विश्व के इतिहास का, विज्ञान के बोधकों, ग्रहलोक की मनोरंजक कहानियों और साहसिकों के कीतूहलपूर्ण रोमाचक प्रसंगों का परिचय कराता है।			
0	नये-नये विषयों से पूर्ण, अद्यतन अनुसंधानों के आयार पर रचित कहानियां देना 'किशोर'की अपनी विशेषता है ।			
0	प्रेरक कविताएं, आदर्ग जीवन-कथाएं, प्रकृति का सजीव वंर्णन, यात्रा-विषयक छेख 'किशोर' के प्रत्येक अंक में रहते हैं।			
0	प्रति वर्ष विशिष्ट पाठ्य-सामग्नियों से विभूषित और अनेक चित्रों से सम्पन्न विशेषांक निकालता है।			
'किशोर <sup>'</sup> के कुछ महत्वपूर्ण विशेषांक				
	लिदासांक—१) गांधी अंक—१।) भारतांक—१) रवीन्द्र अंक—॥। ल अंक—।-) उपकथांक—॥) विकसांक—॥) स्वाधीनता-अंक—॥।			
पटे				
वापिक मूल्य ८) : एक अंक का ।=}				
	वाल-शिचा-समिति वाँकीपुर (पटना)			

# न्तन वाल-शिच्चण-संघ

की

# हिन्दी शिक्षगा-पत्रिका

आद्य सम्पादक—ंस्व० गिर्जुभाई वधेका : प्रधान सम्पादक—ताराबहन मोड़क सम्पादक—-वंसीधर : काशिनाथ त्रिवेदी

'आज का वालक कल का निर्माता है' यह सब मानते हैं; परन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक बनाने के लिये प्रयत्न 'हिन्दी शिक्षण-पत्रिका' करती है। यह नूतन जिक्षण के सिद्धान्तों के अनुसार बालोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करती है। यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करती है। यह पत्रिका मनोविज्ञान के आचार्य श्री गिजुभाई बधेका के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति है।

पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है। वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।=)। विशेष जानकारी के लिये लिखिए:

हिन्दी शिच्ए-पत्रिका-५१ नंदलाल पुरा लेन, इन्दोर।

## उत्तर प्रदेश की ग्राम-पंचायतों के लिए स्वीकृत

हमारी पुस्तकें

			•		
(3)	गाथी-साहित्य		(₹)	ग्रामोपयोगी-साहित्य	
(	अ) गांधीजी की लिखी	पुस्तकें	30	हमारे गावा की कहानी (रामदास गौर)	(H)
٠,	आत्मव या	- 1	2 ?	म्बतन्त्रना की आर (ह० उ०)	811)
5	प्राथना प्रवचन१	₹}	20	नवजीवन (ग० निवाम)	31)
\$	प्राथना प्रवचन	<b>∀11</b> )	3.5	रामतीय-सदेश (॰ भाग) (रामनीथ)	111#
8	गीता माना	6)	38	हिंदुआ न अत और त्योहार (व नन्हेयाजू	
۹	पात्रह अगस्त के बाद	2)	34	पद्मभा का इलाज (प० प्र० गुप्त)	n)
٤	राष्ट्रवाणी	8.3	3.5	चारा-दाना	ı)
3	स्थिप आमक्या	PH)	₹.0	आदश आहार (स॰ दा॰ गप्त)	8)
6	द्रश्चय	(۶)	36	सपाई (म॰ द० शर्मा)	811)
0	हृदय मधन क गाच दिन	4)	38	भारतीय मजदूर (६०० स० मनमना)	3111 €
१०	मंगर प्रभाव	1=)	60	गानामृत (था० पारादार)	₹n)
8.9	शीनाजाध	11)	दर्	मतवाणी (विधामी हरि)	ξH)
१३	ग्राम सवा	1=)	8.5	हमारी पुत्रिया वैसी हो? (चनुरमन शास्त्री	(119 (r
9.0	अनामवित्रयाग (इत्राचमहित)	\$11)	<3	दिव्य जावन (अनु०—ना० शकर)	(11)
१४	गाधी विक्षा (३ भाग)	nı≈)	66	मनन (ह० उपाध्याय)	811)
१७	बापू की मीन	11.}	Rel	भटे रही चय रही (बा० दिवदी)	(=)
	(आ) गाथोजी-विषयक प्	<b>स्तकें</b>	8.6	नवपुवका म दा रातें	- 1)
9 €	बापू की भागवाम-नहाना (मृ		23	ध्यावहारिक सभ्यता (ग० शर्मा)	\$11)
وع	राष्ट्र पिता (ज० महरू)	-)	64	स्वाधानना की चन्नीनी (झा० वमा)	3)
90	নামু (ঘ০ বা০ নিছকা)	v j	(8)	जीवनी निवन्ध, क्या तथा अन्य	
90	प्रापृ व चरणो म (१४० चादार	गरा) -•॥)	68	मरा जीवन प्रवाह (वि० हरि)	All)
00	गाधी वित्रावरी (जीतमल लूपि	या) >)	40	हिद्रुधम की आश्यायिकाए (मानाभाड भट्ट)	(11)
28	गाबीजी का धड़ाजरि (विनावा	) 11)	42	उपनिषदा की कथाए (शकरराव देव)	٤)
23	श्रद्धावण (विकामी हरि)	1)	43	निवानी की धायना (तामकर)	٤)
23	पुष्य स्मरण (शिभाक उपाध्या	य) १॥)	લ્વ	विश्व की विभूतिया (ह० उ०)	811)
28	संयाप्रहंभीभाषा (१० दिवावर	) 3111	48	बारका का विवस (टाल्स्टाम)	111)
(२)	विनोवा-माहित्य		44	दग प्रम की कहानिया (अगोक)	1=)
રોષ્	विनावा के विकार	<b>/</b> )	48	हरिद्वाद (का० त्रिवरी)	1-)
⊃ દ	र्गाता प्रवचा	~1)	13	गप्नीय गीन	1)
20	<b>ईशावास्यवृ</b> ति	111)	-1	भजनाबरा	11)
31	स्थितप्रज्ञ देगाः	~t)	t <sub>e</sub> e	महाभारत अथा (राजाजी)	9)
20	रागी-अस्तरमा	~III.)	80	पविवानात्र (वा० अग्रवार)	3)

#### सस्ता साहित्य मगडल

नर्ड दिख्नी

सुपर रायल में बड़े आकार के ९०० पृष्ठ का महान् ग्रन्थ

#### जिसके लिए

# म्राप बारह वर्ष से मतीचा कर रहे थे

नये रूप-रंग
परिवर्द्धित सामग्री
श्राकर्पक श्रावरण
विद्या जिल्द
सन्दर छपाई

उपलब्ध होने जा रहा है। यदि आपने अपनी प्रति १६) अग्निम भेजकर सुरक्षित नहीं कराई है तो बीध करा लीजिये, अन्यथा ६१ मई के पब्चात् वह आपको पूरे मूल्य अर्थात् २१) में मिलेगा। नेहरूजी का यह दुर्लभ ग्रन्थ आपका ज्ञानवर्द्धन करेगा, आपकी अलमारी की बोभा वढ़ाएगा।

प्रतियाँ थोड़ी छपी हैं: मांग बहुत है

पुस्तक-विकेताओं के लिए भी विशेष रियायतें रखी गई हैं । पत्र लिखकर मालूम कर लें ।

--मिलने का पता---

नवयुग साहित्य सदन इंदीर

नई दिल्ली

हिन्दी प्रकाशन मंदिर इलाहाबाद उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा विहार प्रादेशिक सरकारों हारा स्त्रूलों, कालेजों व लाइमेरियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम-पंचायतों के लिए स्त्रीकृत

# जीवन साहित्य

अहिसक नवरवंता का मसिक

जुलाई १९५२ ]



कुदिन हिंतू सो हित सुदिन हित अनहित किन होइ । सिंस छुवि हर रिव सदन तेच मित्र कहत सब कोइ ॥

अवसर कीडी जो चुकै बहुरि दिएँ का लाख । दुइज न चदा देखिए उदी कहा भेरि पाखा।

बुध सो विवेकी विमलमित जिन्ह के रोप न राग । सुहृद सराहृत साधु जेहि तुलसी ताको भाग॥

तुलसी जे कीरित घहींह पर की कीरित लोड । तिन के मुह मसि छागिहै मिटिहि न मरिहै घोड ।।

जो परि पायेँ मनाइऐ तासी रूठि विचारि । तुलसी तहाँ न जीतिऐ जहेँ जीतेहूँ हारि॥

तुलसी सो समरथ सुमति सुकृती साघु सयान ! जो विकृति व्यवहरइ जग खरच लाम अनुमान ॥ कहते हैं न, 'मुंह में रामनाम और वगल में छुरी'—ऐसी असंगत हमारी नीति हैं। हम लोकशाही के साथ-साथ केन्द्रित योजना और लश्कर चाहते हैं। मुंह में लोकशाही है और वगल में केन्द्रीकरण तथा लश्कर है। उस मूर्ख को आप वया कहेंगे, जो मूत कातता जाता है और उसे तोड़ता भी जाता है ? हम लोकशाही के साथ-साथ उसके विनाश के तत्त्व भी लेते रहेंगे तो परिणाम कैसे निकलेगा।

हमारे कुछ मित्रों ने मिलकर एक सर्वोदय-योजना वनायी और उसे प्रकाशित किया। उसमें कुछ त्रुटियां रही होंगी; लेकिन उस योजना में सर्वोदय के तत्त्व काफी थे। एक मौका आया जब श्री जयप्रकाश नारायण ने उस योजना के आधार पर जाहिर किया कि अगर सरकार और कांग्रेस इस योजना को अपना लें तो मतभेदों के रहते हुए भी हम समाजवादी पार्टी को विलीन कर देने को तैयार हैं। जयप्रकाश नारायण की तरह अगर सरकार और कांग्रेस भी कहती कि सर्वोदय-योजना की इतनी वातें हमें मंजूर नहीं हैं, वाकी की सारी मंजूर हैं तो देश में इतने तीव पक्षभेद न पड़ते, हिन्दुस्तान में एक बड़ी हद तक एकरसता आ जाती। लेकिन कांग्रेस ने और सरकार ने उस योजना के सम्बन्व में अपनी राय प्रकट नहीं की । इसका कारण सर्वोदय-योजना के पीछे जो दृष्टि थी, उसीको वे न समझ सके। उन्हें सर्वोदय पसन्द है। वे गांधीजी के प्रेमी हैं, लोकशाही भी चाहते हैं; लेकिन यह जरूरी समझते हैं कि मुख्य सत्ता केन्द्र में चाहिए और लक्कर भी चाहिए। इसलिए उनके साथ हमारा मेल कैसे होगा? हालांकि उनके लिए हार्दिक सहानुभूति हो सकती है। सर्वोदय प्लैन में यह माना गया है कि कभी-न-कभी हम लक्कर को छोड़ने वाले हैं, कभी-न-कभी हम शासन-च्यवस्था को भी विलीन करने वाले हैं। सरकारी योजना लक्कर की आवश्यकता सदा महसूस करती है और राज्य-शासन कायम रखना चाहती है। वह हमारी योजना के साथ सच्ची सहानुभूति नहीं रख सकती।

हम एक विचारक हैं और विचारक के नाते अपना काम करते जाते हैं। अहिंसा हमारी नीति हैं, जिसका तत्त्व समन्वय हैं। हमारा विचार किसी के साथ थोड़ा भी मेल खाता हो तो उसके साथ सहानुभूति और सहकार करने को मैं तैयार रहता हूं। हरेक व्यक्ति के विचार में थोड़ा-बहुत भेद अवस्य रहेगा— 'पिण्डे-पिण्डे मिर्तिभन्ना।' लेकिन कुल मिला कर हमारी मूलभूत राय एक हैं। हमारे मन में यह सन्देह न रहे कि टोटलि-टैरियनिज्म नहीं हैं, इसलिए हमारा काम शीघ्र नहीं होता। हम लोकशाही का सच्चा अर्थ समझें और पूरे अर्थ के साथ उसका प्रयोग करें तो हमारा काम शीघ्रतम होगा। मुझे कोई वतावे कि इसमें परिस्थिति से क्या क्कावट होती हैं?

जिन विचारों में आज मेरी निष्ठा है, उनको मैने थोड़े में अपने आप सबके विचारार्थ रख दिया है।

जमशेदपुर के श्री शरतचन्द्र साहू नामक एक किसान ने अपनी कुशाग्र बृद्धि का अद्भुत परिचय दिया है। उन्होंने एक छोटी नदी-घाटी-निर्माण-योजना पूरी कर ली है और उससे वह अपने फार्म की ३० एकड़ भूमि सींच रहे हैं। उनका फार्म बंगाल-विहार सीमा के पास चाकूलिया में हैं।

साह ने १९४८ में कलकत्ता की एक प्रदर्शनी में दामोदर-घाटी-योजना का एक नमूना ं देखा था। उसे देखकर वह वहुत प्रभावित हुए और घर लौटकर अपने फार्म के पास वहनेवाली रुएक छोटी नदी पर बांघ बनाया। अब वह अपने फार्म में विजली लाने की तैयारी कर रहे हैं।

इसके लिए उन्हें न तो योजना-कमीशन की सहायता चाहिए और न अमरीकी डालर की।

#### तंदुरुस्ती की तद्वीर

'जीवन-साहित्य' के दो पहलू हैं एक जो शिव को समझने में सहायता देता है और दूसरा जो जीव मरे 'शिव मा एक सच्चा सेनक बनाने में मदस्यार होता है और जीव तो' तभी एक सच्चा सेनक बन सकता है जब वह तदुरस्त हो, इनीकिए तो कहने हैं, "तन्दुस्सी हजार नियायत है।"

मगर इस भगवान की बस्तीस को सभारने का तरीका पहले जानना चाहिए। इस बारे में एक कहानी मुझे याद पडनी है। कुछ बरस पहले असरीका के एक विश्वविद्यालय के एक अध्यक्ष करीव चालीस वर्ष तक विश्वविद्यालय का नाम करके निवल हए । इन चालीस बरसो में वह एक दिन भी अपने नाम से ग्रैप्हाजिर नहीं पहें। उनके विश्वविद्यालय से विदा होने ने अवसर पर उनके विद्यार्थियों ने उन्हें एक मान पत्र दिया जिसमें अध्यक्ष महोदय के अनेक गणा-दिली और दिमारी दोनो ---वा वर्णन था। सगर उस मानपत में अध्यक्ष महाराय से एक विशेष प्रश्न भी पछा गया था--- "क्या आप इपका हमें यह बतायगे कि आप इतने वर्षों तक अपना शरीर इतना तन्द्रस्त कैसे एख सके हैं ?" अध्यक्ष महोदय ने मानपन ना अवाब देते हए इस प्रश्न का भी उत्तर दिया। वह उत्तर यह पा, "Every day I study carefully my bowels and the Bible I" (अयोत-मे हर रोज बड़ी साबधानी से अपने पेट और धर्मशास्त्र का अध्ययन करता ह। ) तन चगा तो मन चगा, मन

चगा तो तन चगा।

यह हं तन्दुक्स्ती की एक तदकीर । एक और भी तदकीर है । वह यह कि धरीर विगड़ने पर कौरत हस्पात के डाक्टर ने दर्शन नहीं करने नाहिए, विक्त से बीर क्षास्टर हे जिनकी सलाह लेनी चाहिए । इन बाक्टरों के नाम है—Doctor Diet and Doctor Quiet ( वर्षात् इक्टर लुगक और बाक्टर लामीकी) जुराक वदलने पर और चुपचाप रहने से बहुत सी छोटी-मोटी वीमारिया जुद ही दुम देवाकर मांग जाती है ।

एन कें6री वदबीर भी है। कही है, पैगन्बर मोहम्मद साहव की एव हरीस है जिममें आप फरमाते हैं, "जो अपनी जीम और जनतिहम सो समाकल रखना है और जबपर काबू पकता है वह क्वां में प्रवेश करने का अधिकारी हैं।" क्वां अतिस्था मुख का एक प्रतीकमात्र है और मुख का एक आप सहुम्स्ती है। इस्लिए जो अपने जवान के जायके पर और जननेजिय पर काबू एस सकता है वह तनुकस्ती हासिल कर करवा है।

तो बदा सवनुष्ठ तदबीर से ही जीवन में होता है? नमा तकदीर कुछ भी नहीं? इन प्रश्नो का जवाद वार्तिक बन्धु ही दे सकते हो। मगर जीवन की खाला मे बारवार ऐसा सकत पत्राया गया है कि बहुन दफा तदबीर ही तकदीर है।

हुम सियासी और इस्तसादी मामको पर जरूर बहुस करें और वह मामके अहम है। पर अगर तैतिक बुनिमाद न रहे तो हम बालू पर ही अपना मकान बनाएगे। और उस नैतिक नजिर्म की खासियत यही थी कि हमारे दिमान में और हमारे अगक में ईमानदारों हैं और अपने मकसद को ओर जड़ने के लिए हम निडर है। गांधीजी कभी यह कहते हुए नहीं पकते ये कि उद्देशों को प्राप्त करने के लिए अपनामें गये तरीकों को वडी अहमियत है और अपनामें गये तरीकों का असर अपने मकसद पर गड़ता है।

## प्रेमी लेकिन कोधी पति

[ भारतीय संसद के अध्यक्ष श्री दादासाहव माबलंकर, अहमदावाद के स्थातनामा वकील थे । गुजरात की कांग्रेस की स्थापना के समय से उसके मन्त्री थे। अहमदावाद म्युनिसिपैलटी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। स्वराज्य-आंदोलन के दिनों में जब वे जेल में गये थे तब वहां भी उनका सेवा-कार्य चालू ही रहता था। जेल के कर्मचारी, उनके प्रति आदर होने के कारण, उन्हें मामूली कैदियों से मिलने की सहूलियत कर देते थे । खून आदि वड़े अपराध में फँसे हुए कैदियों को दादासाहव की ओर से कानूनी सलाह मिलती थी। सलाह जितनी कानूनी होती थी उतनी ही नेकी की भी होती थी। दादासाहव का मनुष्य-हृदय पर और उसकी भलाई पर असीम विश्वास है। अपनी दी हुई सलाह का गुनहगारों के मन पर क्या-क्या और कैसा असर होता था उसके ग्यारह प्रसंग लिखकर उन्होंने गुजराती में प्रकाशित किये हैं। किताब का नाम है 'मानवतानां झरणां।'

गुजरात में श्रेष्ठ कोटि के एक लोक-सेवक हैं श्री रविशंकर महाराज व्यास। उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी जरायम पेशा लोगों के उद्घार में व्यतीत की है। गुजरात के एक सिद्धहस्त लेखक श्री झवेरचंद मेवाणी ने रिवर्गकर महाराज के अनुभव उन्हों के मुंह से सुनकर प्रकाशित किये हैं। उस किताव का नाम है 'माणसाईना दीवा'।

'माणसाईना दीवा' और 'मानवतानां झरणां' दोनों ग्रंथ शीन्न-से-शीन्न राष्ट्रभाषा में प्रकाशित होने चाहिएं। 'माणसाईना दीवा' की प्रस्तावना में मैने लिखा है कि 'यह किताव जगत के साहित्य में अपना स्थान अवश्यमेव लेगी।' 'मानवता के झरने' का आस्वाद अभी-अभी ले सका हूँ।

'मानवता' के इन 'झरनों' का आचमन करके वड़ी प्रसन्नता हुई। वह तीर्थं का जल होने से उसमें विशेष महत्व और पानित्र्य है। स्व० मेघाणी की लिखी हुई 'माणसाईना दीवा' पढ़ने के बाद जो संतोष अनुभव हुआ या, वहीं सन्तोष और शृचिता इस पुस्तक में पार्ड जाती है। फ़र्क इतना ही है कि उस किताब में श्री रिवशंकर महाराज के अनुभवों को श्री मेघाणी ने शब्द-रूप दिया था, इसमें श्री दादास।हव ने महाराज के जैसे ही अपने अनुभव खुद लिखे हैं।

घातु का वरतन चाहे जितना मोरचेदार या दाग़ी क्यों न हो,तेजाव के सामने वह तुरन्त ही सब मैल छोड़कर् चमकीला वनता है। मौत का साक्षात्कार भी कई वार इमी तरह तेजाव का काम करता है। मृत्यु का यह माहात्म्य इस किताव में हर जगह देखने की मिलता है।

जपनिपद के ऋषि कहते हैं कि 'सत्य का चेहरा सोने के ढक्कन से ढका हुआ होता है। भगवान सूर्यनारायण ही जसे लोल सकता है।' हम यहां देख सकते हैं कि सहानुभूति जब निःस्वार्य सेवा का रूप लेती है तब जसका तेजस्वी प्रकाग भी सूर्यनारायण का काम करता है और सत्य की पहचान तो दिमाग से नहीं, दिल से होती है। 'हदयेन हि सत्यं जानाति'।

शास्त्र-धर्म, प्रतिष्ठा-धर्म, कायदे-कानून और उनकी सजाएं जो कर नहीं पातीं, सच्ची सहानुभूति वह कर सकती है।

रिवयंकर महाराज के और दादासाहब के अनुभवों को पढ़कर पाठकों का मन अवस्य द्रवित और अन्तर्मुख होता है; लेकिन इतना काफी नहीं है। हमें मनुष्य-जीवन और उसकी विविव प्रेरणाओं का फिर से अध्ययन करके अपने क़ायदे-क़ानून, अपना वर्म-सास्त्र, रूढ़ियां और सारे समाज-सास्त्र की रचना नई बुनियाद पर खड़ी करनी चाहिए। इस दिया में हमारी लोक-संसद के अध्यक्ष जरूर आरम्भ कर सकते हैं। इस कार्य में उन्हें असंन्य नमानवर्मी सेवकों की मदद जरूर मिलेगी।—काका कालेलकर ]

२६२

'भीलका' की ओर ना करीन पच्चीश साल की जम्र का एक नेवजवान किशान। अपनी पानी के खून का उसपर इल्जाम। गेल के दवासानों में में बीभारी से मिलने जाया करता था। बहा एक रोज बहु मुक्से मिला और अपनी बात सताई, सलाह भी मागी।

यह सच था कि उसके हाथों उसकी परनी की मीत हुई थी, मगर परनी को मारने का उसका इराया कभी भी मही था। परि-परनी के बीच बहुत येम था और दोनो एक-दूसरे की खूब चाहते थे, किन्तु यह जनाव जिठने प्रेमी ये उसने नोशी भी थे। मुझे सम्माद जिठने प्रेमी एक ही बृति के दो पहणू है। जैसा अधिकाय प्रेम बैसा अधियय नीथा। जिस बनते जो तार छिड जाय उस-पर मिन्नेर एकता है।

भाई साहब बेत में काम के लिए गये थे। पत्नी रोज जनने जिद्द रोदी के बाती थी। एक रोज उसकी आने में जुठ देर हुई या रोटी में जुठ कम-ज्याया हुआ था, सुद देवकर यह एकाएक बिगट गए। शायद पेट में भूख सीज हो जाने हैं भी उसका जबर उनके दिमाग पर

हमा होगा।

हाय में आर बाली तककी थी। यह पत्नी को कोर फूंक कर बोला, "इतनी देरी क्यों हुई ने क्या करती थी?" बदकिस्मती से अकस्मात कर ठीक औरत के दिवर पर लगी और वह कररा कर बगीन पर गिर पत्नी। यह देखते ही उसे बहुत एक्का लगा, पळताबा हुजा, दुख हुआ, लेकिन होनी थी सो हो चुली थी। जब क्या

कुछ देर के बाद, दी-चार मिनट में, उसने औरत के हिंग में फारे के रिफर्-चर्जर गत्नु पर गती, विष्ठका... उसका विर गोद में छे कर में का, रोने खवा, मगर कुछ फरफ नवर न आमा। इससे मह चीच में पर गया और गाड़ी में बेंछे जोतकर अने के ही पत्नी को उठावर पाड़ी में रक्षा और शोजका की ओर चक दिया, इस उम्मोद से कि बहु। पहुचते ही कुछ उपाय निवक्त सके।

यह घटना चूकि खेन में घटी थी इसलिए उसे वहा देखने वाला तो कोई या ही नहीं।

औरत रास्ते में ही गुजर गई। फिर भी आशा

और उम्मीद में वह उसे घोलका तक हे आया। पुल्सिवालो को पता चला और उन्होने उसे गिरफ्तार विद्या और उसपर खुन का मुकटमा चलाया गया।

बव उपके सामनें सवाल यह वा कि अपने हायो जोकुछ हुआ उसे प्रकृत करें या प्रत्यक सबूत न होने की
बवह से इन्कार कर दे और कह दे, "मुसे कुछ मालूम
नहीं। नेरी परिमोक्टपी में ही किसीने उसे मारा। में
उसे बल्स्डाक के बा रहा था कि रास्ते में हो नह मुकर
मई। मारनेवाक कीन कीन थे, इसका मुसे पता नहीं
है।" और छूटने की की।यब करें? इस मुकरमें में
प्रत्यक्ष या इसरे औई सबूत के अमाब में उसका मुक्त
होना भी सम्बच था।

वपराय स्वीकार करने से सवा मिलना तो निश्चित ही था। हा, इन्कार कर देने से छूटने की समावना शकर थी। उसे सलाह देनेबाले उसके रिस्तेवारी की इच्छा थी कि यह हक्केकत से इन्कार नरे जीर दुवता के साथ यहाँ मुट्टे कि में कुछ नहीं जानवा।

स्वभावत में विचार में पह गया। मुझे इसमें बरा भी सनदे नहीं या कि उसे अब कहना ही चाहिए ! केविन बह सवा के किए तैयार होगा था नहीं, इसमें मुझे बकर सदेह था। बब तरह से सोच-विचार कर मेंने उसे सठाह दी कि तुनको तो सत्य कह कर अपराय को 'व्यीकार करना ही चाहिए। इसीमें तुन्हारा मकरा है। उसका पत्ती के प्रति अंच और मौत की सजा का हुछ कर, इन दो माबी का आभय केकर मेंने उसे समझाने की कोशिया की। मैंने कहा, "भाई, मान को कि तुमने कहा कि में कुछ नहीं जानता। वो तुन्हारी पत्ती को किसने मार.) और किंक, अपको से मार.? इस. मतकाथ, मे.

उसने वहा, "नहीं साहब, में बुछ नहीं बता सक्गा।" मेंने पूछा, "तुम्हारा किसी पर सदेह हैं, ऐसा अगर पुछा मया हो। तम किसी का नाम बहा सकोगे ?"

"नही, यह भी नही बता सकता।"

"तुम्हारी निसी के साथ कुछ दुश्मनी थी कि जिससे तुमसे बदला छेने के लिए किसी ने तुम्हारी पत्नी को मारा ?" "नहीं, यह भी नहीं हैं।"

"तव तुम्हारी पत्नी की मौत किस तरह हुई इसका कुछ तो खुलासा होना ही चाहिए ना? यह सच है कि आर की लकड़ी मारते वक्त किसी ने भी तुम्हें नहीं देखा; लेकिन जहां तुम और तुम्हारी पत्नी दो ही थे वहां पत्नी की मौत किस तरह हुई इसका भी तो कुछ खुलासा होना चाहिए न? यह खुलासा संतोषप्रद न हो तो यही अनुमान लगाया जायगा कि तुम्हीने कुछ किया है और उससे उसकी मौत हुई है। सिर पर चोट हुई तो उसे करनेवाला कोई तो होगा ही और वह तुम्हारे सिवा और कीन हो सकता है? अगर अनुमान से यही तय किया जाय तो तुमने इरादंतन खून किया है ऐसा सिद्ध होगा और इसका नतीजा तो फांसो ही है।"

मेरी दलीलें वह ध्यान से सुनता था। इनमें उसे कुछ तथ्य मालूम हुआ होगा। इसिलए मैने आगे चलाया। मैने कहा, "भई, तुम्हारा पत्नी पर प्रेम था। वह भी-तुमसे मुहब्बत करती थी। वया तुम्हारे हाथों वह अकस्मात् मर गई और वह इस संसार में नहीं है, इसिलए उससे वेबफा होकर अपना दोष कबूल न करके अपने पाप का प्रायदिचत्त करने की जगह, ईरबर और अपनी फत्नी के प्रति, पापी बनना चाहते हो?"

नवजवान किसान मुन रहा था। उसके चेहरे पर से मालूम होता था कि इस बात का कुछ असर उस पर हो रहा है। इससे कुछ देर तक मैं चुप रहा। क़रीब पांच मिनट के बाद रिश्वयी मुद्रा के साथ उसने कहा, "दादासाहव, मैंने निश्चय कर लिया है।"

"क्या निश्चय किया ?"

"यही कि जो-कुछ हुआ वह पूरा-पूरा सच वता

देना और पत्नी से माफी मांगकर ईश्वर पर श्रद्धा रखना।"

मैने उसे प्रोत्साहन दिया और कहा, "इस निश्चय में अडिंग रहने के लिए ईश्वर तुम्हें वृद्धि और वल दे।" साथ-साथ मैने यह चेतावनी भी दी कि अब तुम्हें अपने बचाव के लिए कोई वकील या और किसी को नियुक्त करने की क्या जरूरत हैं? खामखा खर्च मत करो।

यह बात भी उसने मान ली।

इस मुक्तदमे में अधिक क्या चलनेवाला था? संक्षेप में ही मुक्तदमा खतम हुआ और उस किसान को अदालत की ओर से चार साल की सजा मिली। सजा पाने के बाद वह मुझसे मिलने आया। उसे दो तरह का सन्तोप था। एक तो कम सजा हुई इसका और दूसरा अपने सच कहने का।

मैने उसे तीसरा पहलू बताया, "भई, यह संतोष तो ठीक है; लेकिन गुस्से में आकर निर्दोष पत्नी के साथ जो अन्याय किया उसके प्रायदिवत्त के रूप में यह सज़ा है ऐसा मानकर तुम अपनी पत्नी के साथ प्रेम और वफ़ादारी बताते हो ऐसा नहीं मानोगे?"

वह मुस्करा दिया।

मैने आगे पूछा, "क्या अव आगे कुछ अपील वगैरा करनी है ?"

पलभर वह खामोश रहा। उसके बाद तुरन्त बोला, "ना, बेचारी औरत तो जान से गई। तब प्राय-श्चित्त के लिये चार साल जेल में विताना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं है।"

उसके चेहरे पर ऐसा परम संतोप फैला हुआ था, मानो जीवन का गहरा तत्वज्ञान समझ लिया है।

[ 'मंगल-प्रभात' से

स्वर्गीय और पार्थिव का विवाद बहुत पुराना है। वे साहित्यकार जो सदा आकाश पर दृष्टि रखते हैं उनकी सेवा में मैं केवल यह कहने का साहस करता हूं कि हमारी घरती भी एक ज्योतिर्मय ग्रह है।

गीना न नीजवानरे से तपरचर्या करने के लिए कहा है। देव, द्विज गुरु प्राज्ञा की पूजा करना-यह है पूजा की पहली बात । विनोबाजी ने लिखा है, "जो देता है सो देव, जो रखता है सो राक्षम ।" अपने पास ज्ञान धन है वह दूसरी में शटने में जिसे गौरव मास्महीता है यह देव है। द्विज पाने जिसका दुवारा जन्म हुबा है बहा बैस तो दौत और पशी भी दिज वहलात है। अगर उनको हम दिजा में दाखिल करेंगे तो वह दवा, युवाऔर मघवा को एक ही सूत्र में गूँथने जैमा होगा। दिज का अर्थ जिसका जीवन-परिव्यरण हुआ है ऐसा दारस । एसा ही अर्थ हमें लेना होगा । गुरू वह है जो हमें जीवन-दृष्टि प्रदान करता है। प्राज वह है जिसकी बृद्धि ने प्रज्ञाका रूप घारण विया है। इसवा मतलब यह हुआ कि जिनके पास से कोई-न-कोई गुण हम सीखते है उनको स्वनमं से हमें पूजा चढानी चाहिए । गीता ने दारीर-तप में इसको सबसे अव्यल रखा, है इसी पर से उसका महत्व हमें जान रेना चाहिए। गीता ने ज्ञान का साधना-मार्ग क्या बताया है ? गीता कहती है--

तिक्रीय प्रीमपातिन मरिप्रमेन रसेवया
मृत्य तुम्बर्ग आत्म प्राप्त करना है तो नम मनन प्र स्तुम्बर्ग शुक्र सीर सना करना है तो नम मनन प्र स्तुम्बर्ग पुक्र सीर सना करने जान प्राप्त करना
मृद्धिय पुर्या कराने में पृष्ठ शब्द-जब नहीं होते थे।
सदा से सिसाने में यरते अपने जानरण से सिस्ताना ने
में हुत स्वस्तरे थे। एक अपने मणिन निकाल है— कुन्हारे
स्त्र में जानना नहीं चाहता, नयों कि स्वय तुन्हारा
स्त्र में जानना नहीं चाहता, नयों कि स्वय तुन्हारा
स्त्र में अहमा प्रदेश सरकर प्रमुक्त कर ते हैं।
शिक्ष को स्त्र सुन्हारा स्वरूप प्रमुक्त करों है। आचरण की
फिन्न किसे वर्गर लोग स्थी बड़ी बार्ज बोलने हैं और
सानते हैं कि वे बहुत बड़े बन यय है। पहले नो शिक्षा

गुरोस्तु मौन व्याख्यान शिष्योस्तु छिन्न तताव गुरुवा मीन ही व्याख्यान होता या और इघर शिष्य को सभी कठिनाइया दूर हो जाती थी। हमारे शास्त्र-कारों ने यह भी बताया है कि 'आवार प्रयमो पर्य' पहला पर्य जाचार है। जाचरण आदर्श बताना पर्म पालना है। गुग्नुवा की यही माग है। योता में दूसरी चलह लिख दिया है—

यगर् विभूमियसस्य श्रीमद्रभितमेव वा जहा-जहा तुम्हें विभूतिमस्य की सलक मिले जो भीज न्द्रभीयत या जहात हो यह मेरे क्या ही से बनी है ऐसा जान को। गुरू-जुबा की समग्र बृट्टि मही हैं। जहा जहा से हमें केहि नसीहत मिले यह हमारा गुढ़ है और उस मुनीहत की असल में साना है सम्बो मुक्-पूजा। एक तह से यह नमता बीर इत्तमता भी है।

गीता ने शरीर-तपश्चर्या में इसरा स्थान सपाई को दिया है। सपाई के विना सस्कार-सपनता वहा ! अवर पाटी साफ नही है को उसपर हम लिख कैमे पायगे <sup>?</sup> सारा निसर्ग हमें सफाई, का पाठ पढ़ा रहा है। हम क्डा-करकट फेंकते है, उसमें से लाद बननी है बौर उसीम से अच्छे पेड पौधे उप बाते हैं। आदमी के मलमूत्र की खाद वडिया बनती है : निसर्ग ने भी सफाई का पूरा प्रबन्ध कर लिया है। वर्षी में आसमान से पानी गिरता है मानी सारी सृध्य को धीकर साफ करता है। सूरव की किरणें रीज सफाई करती है। हमारे देश का यह वंश भाग्य है कि मुरज की धुप हमें हरदम मयस्सर होती है । हम कार्वन हाय ओक्साइड की हवा बाहर छोडते है तो वृक्ष उसे हजन करके हमें प्राणवाय फिर से देते है। निसग के इन उदाहरणों से भी क्या हम सपाई वरने की प्रवृत नहीं होगे? मीता ने सफाई को देवी गुणो में स्थान दिया है।

सपाई का सही अर्थ बहुत कम छोग जानते हैं। अपने पर को साफ करने रास्ते पर पचरा फंकना सपाई नहीं हैं। सफाई का अर्थ है स्वरूप-रिवर्तन। बुरीची बरे अर्थी चीन वा निर्माण । सफ्नूज से साद बनाकर मूमि को उपजाक बगाना, कूंड करफट का बम्बोस्ट बनाना, नहाने धोने का बतने साफ दिया

हुआ पानी बगीचों में देकर फलफूल पैदा करना सच्ची सफाई है। एक जगह का कूट़ा हटाकर दूसरी जगह विखेर देनेवाली सकाई को गीता ने तपश्चर्या नहीं कहा - है. न कह भी सकती है। एक जगह का कूट़ा उठा करके दूसरी जगह डालना एक दिखावटी सफाई भर हो सकती है। आज यह दिखावटी सफाई वहुत जोरों पर है। इसका सबूत चाहिए तो लोगों के लंगोटे, जांचिये और तीलिये देख लीजिए। ऊपर के सब कपड़े धोबी के इस्तरी किये हुए; लेकिन अंदर के सब गन्दे। लोग दो-दो दिन नहायेंगें भी नहीं; लेकिन ऊपर से पोमेड और पाउडर पोतते रहेंगे। अच्छा खुशबूदार तेल सिर में मलेंगे। सिर्फ साफ कपड़े पहनना तपश्चर्या नहीं है। अगर हम कपड़े दूसरों से धुलवाकर पहनते हैं तो उसमें हमारी तपश्चर्या कहां है ? लोग हरदम पूछने है कि क्या पाप का बदला मिलता ही है ? मै कहूँगा मिलता है। दांतों को साफ न रखना एक तरह से पाप ही है। उस पाप का बदला दांत खराब होने पर मिल जाता है। दांतों से इतनी वदवू निकलती है कि दूसरे वातें करना भी टाल देते हैं। हमारी सब कियाएं साफ होनी चाहिए। अगर हमारे अक्षर साफ नहीं हैं तो। उसका फल परीक्षा में कम अंक पाकर मिल ही। जाता है। हमारी नींद भी साफ होनी चाहिए । साफ ' नींद याने निस्वप्न गाड़ निद्रा । ऐसी निद्रा के वाद विकार शमन होता है, अच्छे भावों की परिपृष्टि होती है। तंदुम्स्ती बढ़ती है; लेकिन ऐसी साफ नींद मय-स्सर हो इसके लिए पूरा दिन स्वच्छ कियाओं से विताना चाहिए। दिन की शियायें अगर साफ नहीं होती हैं तो रात की नींद भी साफ नहीं हो सकेगी। हम नहाते भी ठीक ढंग से नहीं । किनी-न-किसी तरह दो-चार लोटे शरीर पर टालना नहाना नहीं है। नहाने के वाद हमारे अंग-अंग में चैतन्य का प्राद्रमीव होना चाहिए। साफ हवा, साफ पानी, साफ चांदनी हमें बहत भाती है। कहा जाता है कि गया भी साक पानी चाहता है। बादमी में तया बीरों में फर्क यह है कि बादमी जिस चीज को चाहना है उसके निर्माण के लिए भी वह कोशिश करता रहता है। स्वच्छता भी एक तरह से

कृतज्ञता ही है। जो अोजार, जो चीजें हमारी सेवा करती हैं, हमारी मदद करती हैं उनको साफ रखना कृतज्ञता है। पररपरं भावयन्तः श्रेयं परमवाष्स्यय—— 'एक-दूसरे की परिपुष्टि करके परम श्रेय को प्राप्त हो जाओ' का मतलव भी यही है।

स्वामी रामतीर्थ की एक वात वहुत मशहूर है।
स्वामीजी हरेक चीज की इस तरह फिक रखते थे कि
जैसे उनके भी प्राण हो। पुस्तकों पर कबर चढ़ाते,
जूतों में तेल देते, लालटेन के कांच को साफ रखते।
जिस लालटन ने प्रकाश दिया, जिस पुस्तक ने ज्ञान दिया,
जिस जूते ने पैर जलने से बचाया उसकी बराबर
हिफाजत करनी चाहिए। स्वामी रामतीर्थ इस तरह
हर एक चीज का खयाल रखते थे। हरेक सेवा-साधन
को पिवत्र मानकर उसे साफ रखना चाहिए। इस
तरह की सफाई से हममें तपोबल आ जाता है।

जैसी आवहंवा हो बैसी चीजें पैदा होती हैं। अगर हमने गरीर को साफ रखा तो मन भी साफ हो जातां है। तंदुरुस्त गरीर में तंदुरुस्त मनवाली कहावत मगहूर है। साफ गरीर में साफ मन रहेगा, इमलिए अंतःशुधि के लिए भी वहिःशुद्धि की निहायत जरुरत होती है। विनोवाजी ने शिवरामपल्ली के सर्वोदय-सम्मेलन में जो पंचिवध कार्यक्रम लोगों के सामने रखा है उसमें भी अंतःशुद्धि, वहिःशुद्धि, श्रम-शांति-समर्पणम् वताया है।

आजकल देखा यह जाता है कि आमतौर पर लोग शरीर-श्रम से नफरत-मी करते हैं । पसीने से तरवतर किसान या मजदूर को देखकर नाक-भी सिकोड़ने लगते हैं । एक बार किसी मजदूर में इसी तरह एक दिखावटी आदमी ने नफरत भरे शब्द कहें । तब बह मजदूर बोला, 'भाई, हमसे तुम नफरन करते हों; क्यों- कि हमारा शरीर गंदगी की बाहर फेंक देता है; लेकिन तुम्हारा शरीर गन्दगी की जमा करता है, उसको तुम लिये बैठे हो, जरा खयाल करो !" शरीर-श्रम में शरीर की शुद्धि में मदद मिलनी है। स्वच्छना को लिये शरीर-श्रम एक निहायत जरुरी चीज बन जानी है।

हम।रे नेताओं ने सफार्ट के जरिये किस तरह वल बढ़ता है सकी मिसालें पेश की हैं। महात्माजी सफाई के बारे में बहे दक्ष थे। अफीना के टॉस्स्टाय-आश्रम में तर सुरस्यों के करडे इक्ट्रेट करने वे स्वय थो डालते थे। पितत जवाहरलालजी बत्तु १९२० के आयोजन में जेल में थे। तब वे जपने पिताजी के नपडे खुद पोते थे। विनोदानी पवनार ने पात के सुरमाव की लगातार समाई नरते थे। सेनामित वापट मिछने करीब १०-१५ ताल से वाहायरा समाई मन्त्रे हैं। सान्युक्ती नहते थे, 'फैलनी ने फालिस्त में, में बाह लालिस्य मा ज्यादा जमानर हूँ।' गायीजी ने सफाई ना महत्र ठीर सरह से आह चर्चक विषायक नार्यक्रम में खहारी भार वाला है दिया।

यह तो बात हुई नियो सफाई गी, किंग्न हमारे स्वावनिक संवो नियो कर तथाक कीजिए। हमारे कोन महा तक आमें बदे हैं कि रेक में यहा 'युक्ता नहीं किंवा होना हैं यही पिर्वकारियों सावने दिखाई देते हैं। सहसे में कुछ। इन्द्रा करने के किए जो 'हुडिया होती हैं उनके भी बारो और कुछ करते के किए जो 'हुडिया गत वर्ष अण्या साहेर नहत्वबुदे जापान यब थे। कोट कर उन्होंने एन मुक्तकान में बताय था कि जापन के कोन बच्चे हो कुछ। में क्यारा भी विमाजित करके डाकने है। कपोन्ट बनाने लायन चीन एर बानू पर, भाव-जीवी चीजें हुसरी जबह और धानुर तीसरी जगह बालते हैं। उनना छंय होना हैं —माचीन चीनो से उपयुक्त पदार्थ बनाना !' मुट्टे में से ने मदनवन मा निर्माण करना जानते हैं। हुमें उनसे मह कला जानती चाहिए। युद्ध से नितना बड़ा सदमा जापान को पहुचा, छेनिम फिर भी बीन साल में जरते अनत अपने को सम्भाल किया हैं। हुस एक चित्रा करते अनत हम अगर सकाई का खवाल एखी ता हमने कुल पैदा होगा।

साफ सरता हुन देलने हैं तो अपना दुव भूक जाते हैं, बहनी नदी को देखरर दिक से बही-पड़ी उसमें ऐदा होगों हैं साफ आस्माम को देखर रहारा स्मा प्रमान हो जाना है। सबाई का इस तरह हमें सहज ही फल सिंट जाना है। समाई का फल है प्रसन्तता।

प्रसादे सबै दु खानां हानिरस्योपजायते प्रसाद चेनतां हान्तु मुद्धिपर्यवतिष्ठते प्रमाता से सब दुख भाग जात है और बृद्धि स्पिर हो जानी है। सप्पर्द-मैसी छोटी यान से निलनेवाला इनना वडा फूक च्या हम योही बेनट सो देंगे?

विनोबा **©**  त्रिसूत्री कार्यक्रम

भूदान-या ने लिए अब सर्वत्र अनुकृत हवा हो गई है। हदबी में सर्वेदिय सम्मेलन हो रहा है। जैसे दूसरे कई प्रान्तों में हुआ है पा होनेवाला है। सर्वेदिय में खादी, प्रामोचोग, नई तालीम, अस्दृश्यता निवारण आदि कई वाम आने है। इन सबके लिए भूदान-यत से अनुकूलता निर्माण होनी है। यह बान अब वार्यक्ती समझ गये है।

र्यनात्मक नाम न। संन्याय जब निसी तात्नाजिक वीचिन समस्या के साथ जुड जाता है तब दोनों मिल नर सगुण सानार रूप भारण नरते हैं। जिन्य नैमितिक दोनों जहा परस्यर पोयक बनने हैं, वहां कान्यप्रेरणा धर्में का कर छित्ती हैं और निरिद्ध प्रेरणा दलनी हैं। अन्याय नाम्य निर्वेष का और बरता है। राजनीय स्वराज्य प्राप्त नर केने के बाद बास्तव में नार्यारण होना है। राजनीय स्वराज्य प्राप्ति में तो क्षेत्रक विष्य निवारण हुआ, जिस निध्य के नारण कार्यारम्म ही नहीं हो सकता था। जो मुख्य काम नरना है, वह तो अभी है। उतने किए निस्य नैमितिन सरीग जब सथा है तब वैग मिलना है। भूदान-यह और दूधरे रचनात्मक काम मिल कर समान की भवतिता दे सकते हैं।

रचनात्मक काम के मेने दो सकेन बनाये हैं। एक गाथी-स्मृति में हर व्यक्ति से वार्षिक एक गुडी समस्ति कराता, अर्थान मुताबिट और दूमरा नावनमुक्ति, जन सेवी बाधम तुन्य सस्याए बगहु-बगह चलाना।

इस तरह गायोजी के जाने के बाद सीन खाद मैंने देश ने सामने रघे ' शूनाजरिं, क्षाजन्मिक, मूदान-पन्न मेरा खपाल हैं, यह युवकों की स्पूर्णि के लिए पर्याप्त कार्यम्म हैं। इनसे खेवकों को साम्ययोग स्रोगा और समाज में सर्वेदय होगा।

हटडी सर्वेदिय सम्मेलन के लिए सन्देश ]

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

में न बंधा हूँ देश-काल की जंग लगी जंजीर मे

में न खड़ा हूँ जाति-पाँति की ऊँची-नीची भीड़ में

मेरा धर्म न कुछ स्याही शब्दों का सिर्फ़ गुलाम है

में वस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम है,

मुझसे तुम न कहो मन्दिर-मस्जिद पर मैं सर टेक हूँ

मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है! कोई नहीं॰

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इन्सान हैं
मुझको अपनी मानवता पर बहुत-बहुत अभिमान है
अरे, नहीं देवत्व मुझे तो भाता है मनुजत्व ही
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग-सुख की सुकुमार कहानियाँ
मेरी धरती सौ-सी स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है! कोई नहीं।

मुझे मिली है प्यास विपमता का विप पीने के लिए
में जन्मा हूँ नहीं स्वयं-हित, जग-हित जीने के लिए
मुझे दी गई आग कि इस तम में मैं आग लगा सकूँ
गींत मिले इसलिए कि घायल जग की पीड़ा गा सकूँ,
मेरे दर्दीले गीतों को मत पहनाओ हथकड़ी
मेरा दर्द नहीं मेरा है, सबका हाहाकार है। कोई नहीं।

में सिखलाता हूँ कि 'जियो औं' जीने दो संसार को' जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो अपने प्यार को, हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह बूल भी चलो इस तरह कुचल न जाये पग से कोई जूल भी मुख न तुम्हारा मुख केवल जग का भी उसमें भाग है फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का ग्रांगार है। कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

स्याम की उत्तरी सीमा के घने जगलो और गिरिमालाओं को पार कर वायुवान हिन्दचीन में प्रवेश कर रहा था। इतिहास प्रसिद्ध कम्बोज राज्य (कन्दोडिया) को बोलती घरती, अपनी छाती पर जीवित वक्ष राशि को घारण कर खिल रही थी। जगला के बीच-बीच में स्थित जल-सरोबर पथ्वी के सीन्दर्य में एक निलार पैदा कर रहे थे। आसमान में खेलते हुए छितराने बादल-नीचे हरियाली का असीम समुद्र और इजिन की गुज एक विचित्र दातावरण उत्पन्न कर रह थे। हमारा यान अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा था-कल्पना-लोक में लोक प्रसिद्ध अवोरवाट के प्राचीन मन्दिर की त्तस्वीर वन-विगड रही थी। इतिहास ने पन्ने वील रहे थे। ठडी हवा के झोको से आर्खे कुछ झपक गई थी। योडी देर बाद जो झपकी खुली तो देखा हमारा यान बहुत नीचे किसी विशाल, काली-सी बहुत दूर तक फैली इमारत पर चक्कर कट रहा है। घने जगुर के बीच इमारत की उँची आसमान से बीजती गम्बजे यात्री की कला का असर पैनाम मुना रही थी। समझते देर न छगी कि यहाँ अकोरवाट है। मन्दिर की मैली दीवारें, काली छतें, उच्चे कगूरे सभी भीत खडे थे। यान ने जैसे अपने अन्तर के सम्मान को इसके तीन चनकर काट कर प्रकट किया हो। मन और हदय श्रद्धा से पुलकित हो उठे थे। जीवन का एक स्वप्न पूरा हो रहा था। एशिया भी अमर कला कृति, विश्व का पाँचवा बाश्चयें हमारी आता के नीचे फैला था। जातम विभार हो में ऊपर से ही कला और मन्ति के उस पूज्य प्रतीक की अपने भागों में भर लेने को ब्यायुल मा। वायुयान दो-तीन संकार काट कर 'सिपरीप' एरोड्रम की जोर बढा-एक हराभरा मैदान, उसमें फरपराता यान-स्टेशन का . गोल झडा-जमीन में पढी हुई सफेद चुने की रेखाए। यान अव नीचे उतर रहा था। मशीन की धडकन बद हो गुई थी। पक्षों ने बल, विज्ञान का करिश्मा.

नीचे चतरने नी तैयारी कर रहा या। यान के पैर बब पृथ्वी को छ रहे थे । दो-एक हलके उद्याल और झटना के बाद यान ने जमीन पर दीइना शरू निया। उत्सनता जमीन पर उतरी। मोटर पर बैठ हम लोग सिपरीप' के वैभवपुण रॉयल होटल की ओर बढ़े। ला-पीकर भीने उनरे तो हिन्दचीन के दो बज रहे थे। होन्छ ने सामने खडी नारा पर बैटकर हम शीग अशीरवाट की और रवाना हए । प्रिय बस्त के साक्षात स मन की जो अवस्था होती है जम बच्दा में वाघ सक्ता कठिन होता है। दोना ओर हिंग्याली से थिरी सडक पर हमारी गाडिया तंत्रों स दौड़ रही थी। होटल से केवल दस मिनट वे रास्ने पर दनिया की यह अधीवो-गरीब तामीर सडी थी। सभी याशिया की उत्मुक्ता आला में उतर रही थी । दिल गुदगुदा रहा था और सामने वाह्य प्राचीर की ऊँचाई के ऊपर मन्दिर की गुम्बजें झाक रही थी, चन्द मिनटा में कार से उतर कर हम लीग सिंह-पीर के सामने के राजमार्ग पर खड थे। राजमार्ग और प्राचीर के बीच २५० गढ चौडी पानी की एक धारा मन्दिर का वेप्टन कर रही थी। कमल खिले थे। पानी के ऊपर हरे पत्ती की चादर-सी विछी थी और इसके उसपार वर्षन-कालानी अमर कलानारो की आत्मा उन धिला-लड़ा से बोल रही थी-य घर गनगना रहे थे--

'उस अतीत गौरव की गापा छिपी इन्हों उपकूलों में कीति सुरिभ वह गमर रही अब भी तेरे बन फूलों में।'

विव वी कत्यना, त्येक भी यनम अकोरबाट भी सींदर्य-राशि को भैद नहीं कर सकती। जोनुष्ठ आयो के सामने स्थूल रूप से खडा था वह एक आद्यय या—एक स्थन था—एक शिव करण को बाबाज थी। एक साथक की यह ऐसी साधना यो जिसमें कलावार की निष्णान में वेचल रूप नहीं दाना, केवल विस्तार नहीं भरा, विल्क उसम उसने अपना व्यक्तित्व और प्राण तक घोल दिए। पुस्तकों में प्रकाशित अपूर्ण वर्णन, चित्रों में अंकित अधूरे चित्र क्या कभी उस कलाकृति का सजीव वर्णन पाठकों के सामन उपस्थित कर सकते हैं? मैंने जो-कुछ यहाँ देखा वह कल्पना से वहुत परे था। वर्णन और चित्र इस महान कला-मृष्टि का केवल एक पक्ष हमारे सामने रख सकते हैं। अंकोरवाट क्या है, कैसा है इसे समझने के लिए आपको घंटों एकटक उसकी और घूरना चाहिए। उसके चरणों में बैठकर विचारों में गोते लगाना चाहिए।

तिमंजिला विशाल स्मारक अपने अनेक गुंवजों से विरा खड़ा है। सामने एक लम्बा पूल है जिसे पार करके ही हम इस सायना-भूमि के सिहपीर तक पहुंच सकते हैं। शानदार पोर्टिको, लम्बी सीढ़ियां, रहस्यपूर्ण देवा-लय अपने भीतर एक शानदार अतीत छिपाये हैं, परन्तु देवालय के विशाल आकार-प्रकार की निश्चित रूपरेखा दिमाग में आ सके इसके लिए कुछ अंक देना आवश्यक होगा। यह देवालय इतना विशाल हैं कि इसके प्राचीर के अन्दर एक छोटा सा नगर वस सकता है। इसके वायाताकार घेरे की लम्बाई २६ मील है। इसके चारों ओर २५० गज् चौड़ी पानी की एक खाई है। पश्चिम की ंबोर एक लम्बा पुल है--मिन्दर तक पहुँचने के लिए इस पुल को पार करना अनिवार्य है । इस पुल के दोनों ओर सिंहों की विशाल मूर्तियां सिंहपीर तक फैली हुई हैं। अपनी सीढ़ियों, द्वारों एवं प्रकोप्ठों सहित यह सिहपीर स्वयं गृह-निर्माण-कला का एक आदर्श प्रतीक है। प्रवेश-द्वार दो हैं-एक पैदल यात्रियों के लिए और दूसरा र्य और हायियों के लिए। प्रथम द्वार को पार करते ही ठीक सामने एक वड़ा प्रांगण फैला है और इसके दूसरे छोर पर दैवस्यान का मुख्य मन्दिर है। सिंहपीर से देवालय के मुख्य द्वार तक ५२० गज छम्बा एक शिलाजड़ित मार्ग बना है। इस मार्ग के दोनों और सप्तफणी नाग का लम्या शरीर एक छोर से दूसरे छोर तक फैला है। देवा-लय के द्वार के सामने दोनों ओर शेपनागों के सतक फण आक्रोप मुद्रा में चड़े खड़े हैं। इन दोनों नागों के

लम्ब शरीर को बीच-बीच म देवांगनाएं अपने हाथों में साथे हुये हैं। रास्ते के बीचों-बीच दोनों ओर दो प्राचीन पुस्तकालयों की इमारतें एक-दूसरे के आमने-सामने खड़ी हैं।

देवस्थान के प्रधान भवन के भीतर की प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक खुदाई , प्रत्येक सजावट अप्रत्याशित , आश्चयंपूर्ण एवं सुव्यवस्थित है। दूर से अंकोरवाट एक ही विशाल पत्यर के टुकड़े का बना माळूम पड़ता है। जिसके दार्ये-वायें छोटे-छोटे और बहुत से उपमन्दिर खड़े हैं। सच वात यह है कि अन्दर प्रवेश करके यात्री अपने को एक कला-संसार के भीतर खड़ा पाता है। दालान, बरामदीं, कक्षों एवं मंडपों की शृंखलाएं उसे भूल-भूलैय्या में उलझा देती हैं, केन्द्रीय देव-मूर्ति तक पहुँचने के लिए इन सबका पार करना अनिवार्य है । मुख्य गर्भ-गृह एक अंधेरा छोटा प्रकोण्ठ है जिसके अन्दर किसी प्रकार की सजावट नहीं हैं। पहले इसके भीतर एक विष्णु की प्रतिमा आसीन थी; परन्तु आज उसके स्थान पर भगवान बुद्ध की मूर्ति प्रतिष्ठित है और इसके सामने एक छोटा-सादीप सदा टिमटिमाता रहता है। इस गर्भ-गृह के ऊपर एक बहुत ऊँची मीनार है। इसकी जँचाई २१५ फीट है। यह मीनार चारों ओर से अन्य चार छोटी मीनारों से घिरी है। इन मीनारों का एक-एक इंच भाग श्रप्ठ संगतराशी के काम से सज्जित है। एक भी इंच पत्थर ऐसा नहीं मिलेगा जिसका स्पर्भ कारीगर की छेनी से न हुआ हो। खमेरीं के विषय में यह कहा जाता है कि म्वेथिक कलाकारों के समान उनमें कल्पना थी; यूनानी कलाकारों से उन्हें समन्वयात्मक एकरूपता का वरदान मिला था; ज्ञानयुगीन (Renaissance) कलाकार की शक्ति और सृजन की संपत्ति उनके पास थी । यहां की निर्माण-शैली में सभी विचारवाराएं, सभी कला-पद्मतियां गुथकर एक नवीन शैंळी को जन्म देती हैं। बारीक लेस के समान संगतराक्षी हजारों वर्ग फीट पत्थर पर फैली हुई है। यहां सजावट और रूप की नुमायश-सी छग गई है। बीच की दीवारों के ऊपर और नीचे नाग को श्रेष्ठ जरदोजी जैसे काम से इक दिया गया है।

भारत के सभी धर्म, सम्पूर्ण इतिहास एवं व्यापक

कला इन पापाण-सडो पर उतार दी गई है। श्रदा-सपन्न भक्तो, ज्ञान पिपासु यात्रियो, भारतीय इतिहास के विद्यार्थियो एवं विनोदी घमकाडों के मस्तिष्क के लिए घटो का भोजन यहा मौजद है। हम यहा समद्र-मथन वे दृश्य देख सक्ते है। सुरासुर-संग्राम की विभीपिका यहां सजीव हो उठी है। राम-रावण के यद की कथाए परवरों से बोलती-सी जान पडती है। राम की अपार द्यक्ति, सीता की पति-भक्ति एवं रावण की छिप्सा की सैंदडी क्याए इन मक शिलाओं के हृदय की चीर कर मलरित ही उठी है। कुण्य का जीवन, गोपियों की प्रेम-नया, यशोदा का विलाप आदि महामारत के मत्य प्रसग-चित्र प्रचुर मात्रा में इन दीवारो पर देखे जा सकते हैं। यहा की इस खुदाई (carving) की पुण्ठ-मूमि रामायण और महाभारत ही है। परवर के इन पन्ना पर कठोर लेखक ने छोड़े की कलम से महाकाव्य कालीन सम्पूर्ण भारत को लेखबढ़ कर दिया है--और यह एक ऐसा छेखन है जिसे समझने और पदने के लिए अक्षर-ज्ञान की बावस्यकता नहीं-केवल भावक हृदय बौर उत्सक बाखों से प्राचीन इतिहास के इन अक्षरो को बड़ी सरलता से पढ़ा जा सकता है। भारतीय पीरा-णिकता की कोई बात भीति-अकन से छट नहीं पाई है। स्वर्ग और नर्क के दृश्य भी क्षमेरों के कल्पना-जगत से बच नहीं सके। विस्तार की पूर्णता, भाषों की स्पष्टता, वर्णन-वैचित्र्य सभी मिलक्र क्ला में एक बाणी का सचार कर देते हैं। मक तस्वीरें बोलने लगती है। शिला-खडो में पति उत्पन्न हो जाती है और एक लम्बा सुनहला बनीन पायाण और कल्पना का बजारा लेकर चेतन बन जाता है। भारत और सभीज का यह सास्कृतिक ऐतिहा-सिन संपम-- अकोरवाट', आज ८०० वर्ष बाद भी दोनो देशों की परम्परा की एकता, रूढियों की समानता एव मान्यनाजा की एकस्थाता के माझी के सप में सम्बोडिया के उन एकान्त घने जगलो में खडा है।

कुमारिल स्वामी

दादू

धानितिनेवत में भरती होने के बाद में वस्तर छड़नो के मृद्द ये बाद अवनीदनाथ के बाद में मृता मरता था। विजता मुनता था, उतनी हो उतन्या अवती जाती थी और में उनने दर्धन के लिए व्याकुत पहता था। एक दिन के एक एक बाद में मुना महता था। एक दिन के एक एक बाद के लिए व्याकुत के लिए महता था। एक दिन के एक एक मार्च हो। ये भी धाम की एक वहने के हाथ उनके वरणो में नमस्तर करने कि लिए पहुँच। सममुन उत्त दिन पहली बाद उनके वरणो में नमस्तर करने कर के लिए पहुँच। सममुन उत्त दिन पहली बाद उनके वर्षो में उनके मेरा परिचम कराया। मुनवर वे कहने कमे— "अवका! दिल्ली से आमे हो?" येन मुक्कराते हुए 'शी हाँ कहा और एक कोने में वा सब्बा हुआ। छोनो से मिरवर के दिन वालिटन हो रहे के कि उनकी बातवीत

बुनते और उनके सारे अग-अत्यय को एक-एक करके देखने में तम्मय था। इस महान् कलाकार की बनावट में हम लोगो से क्या विशेषता है, यही सोचने में में लगा रहा।

वे हमारे देश के विश्व-जगत् के मीप्पणितामह वे १ उन्होंने व्याने परिवय से बन्छे-जन्छे महारिययों को देश किया या । वे महारायी जोग कभी भी वर्णास्वत है। उनके प्रिय शिष्य भी नारकाल बहु सानितिकेतन में मौजूर हैं। कोर भी उनके सिध्य जगह-जगह सारे हिन्दुस्तान में फेले हुए हैं।

सन् १८०१ को ७ जगस्त को जोडासाको के ठाकु-प्यितार में अवनीत्रताय का जन्म हुआ। उनके सिरीम्ब्राम और पिता गुणीन्द्रताय विकास होते के मात्रे विकास ये ३ नया निमारे पापरानी के बगते में बातक जबनीत्वताय ने अपने रिसा की त्रिका और रंग लेकर चित्र वनाना शुरू किया। वे गंगा के विभिन्न दृश्यों को अंकित करने लगे। उन्होंने यह जा प्रकृति और गंगा को प्यार करना शुरू किया और उसके देखने में तन्मय होने लगे, इसीके द्वारा वालक अवनीन्द्रनाथ का मन जाग उठा, जी उठा। स्कूल में उन्होंने शुछ अधिक नहीं सीखा। वहां वे अपने शिक्षक को उसकी भूल बता वैठने के कारण बुरी तरह से पिटे थे। उसके तुरन्त बाद उनके पिता ने स्कूल छुड़ाकर घर में लिखने-पढ़ने का प्रवन्य कर दिया। घर में पण्डितजी महाभारत और कादम्बरी पढ़ाते थे, फारमी पढ़ने का कम भी चलता था। साथ ही राविका गोस्वामी और बड़े-बड़े उस्ताद-गवैये मंगीत की शिक्षा देने आते।

उधर वगल के मकान में पितामह के वड़े भाई महिंप देवेन्द्रनाथ के घर पर ब्राह्म-धर्म पर व्याख्यान हुआ करते। ज्योति काका की कला-साधना और रिव काका का संगीत तथा साहित्य-अनुशीलन भी चलता रहता।

चित्रांकन के काम में उन्होंने अपने वड़े माई गगनेन्द्रनाथ का साथ पाया। इन सबसे ऊपर अवनीन्द्रनाथ ने देखा—"रात की तरह काली पद्मा नीकरानी चांदी का बहुत बड़ा चमचा और गर्म दूब की कटोरी लेकर दूथ ठंडा करने के लिए बैठी है। वह गर्म दूध को चमचे से उठाती है और डालती है। नीकरानी का काला हाथ दूब ठंडा करने के छंद में ऊपर को उठ रहा है और नीचे को गिर रहा है।"

जन्होंने बीर भी देखा—"कभी-कभी बहुत-सी वधुयें वाहर से आकर जंगले के पास चटाई विद्याकर उसपर बैठी धूप तापती रहती हैं। छत के पास ही छज्जे के कोने में दो नीले कबूतर रहते हैं। ज्योंही पी फटती हैं वे दोनों सवक-सा याद करने लगते हैं—गुटरू गूं, गुटरू गूं। बीर वे देखते कि सन्नाटे से पूर्ण दोपहर में नारियल के पत्तों पर रोशनी कींदती। है और चीलें धूम-धूमकर उटा करती हैं।"

अवनीन्द्रनाथ स्वयं लिखते हैं—"बचपन में मेरे शिशु मन ने क्या-त्रया संग्रह किया यह तो में बता चुका हूँ, बहुत से लोगों को बहुत जगह, बहुत वार । यीवन म मन-भ्रमर ने जो-कुछ संचय किया, उसका योड़ा-योड़ा स्वाद मैंने दूसरों को दिया है। अब भी अपने हाय से बनाये एक के बाद एक चित्र में उसी को दे रहा हूँ। क्या तुम इस बात को नहीं समझते हो? 'पद्मपत्र में जलविन्दु' के समान मुख के दिन चले गए। क्या तुमने उसका स्वाद उस चित्र में नहीं पाया? जोड़ासांको भवन के अन्त-पुर में प्रसावन के समय जो मुन्दर-मुन्दर मुख दिखाई देते थे, मन ने उन सबका संग्रह कर लिया। तुम उनमें से कइयों को मेरे 'दुलहन का शृंगार' चित्र में पाओगे।"

सन् १८८१ से १८९५ तक उनका कार्म पाश्चात्य शैली पर चला। अधिकतर 'पेन एण्ड इंक' चित्र थे। कुछ रंगदार चित्र भी थे और पैस्टेल की प्रतिकृतियां थीं। सन् १८९५ से १९०० के बीच के चित्रों में विलायती 'इल्यूमीनेशन' शैली के और देशी चित्रों का आलंकारिक रूप प्रतिफलित हुआ। उनके राधा-कृष्ण-सम्बन्धी चित्र इसी समय अंकित हुये थे। सन् १९०५ में जापानी कलाकार टाईकान और हसीदा ठाकुर-भवन में अतिथि होकर आय। अवनीन्द्रनाथ न उनके साथ काम किया और आवश्यकतानुसार उनकी पढ़ित को अपनी कला में ग्रहण किया। इसी युग में अर्थात् सन् १९०० से १९१० में, अवनीन्द्रनाथ की उस शैली का विकास हुआ जिससे जनसाधारण परिचित हैं। 'विरही यक्ष', 'उमर खैयाम', 'चित्रावली', 'गणेश-जननी' आदि चित्र इसी युग के बनाये हुए हैं।

ववनीन्द्रनाय नये भारत की कला के जनक हैं और कलाकार-गोष्ठी के पुरोधा के रूप में सम्मानित हैं; पर साहित्यिक अवनीन्द्रनाय का दान भी अतुलनीय है। साहित्य के क्षेत्र में छोटे और बड़े सभी के लिए वे अपूर्व रस का भंडार भर गये हैं।

वे अपने शिष्यों को ऐसा प्यार करते थे जैसे अपने खुद के ही छड़के हों और उनके शिष्य छोग भी अपने गुरू को उसी आदर के साथ देखते थे जिसका वर्णन हमारे वेद-पुराणों में आता है। आश्रमों और गुरुकुलों का वर्णन सुनने में जो रस मिछता है वैसे ही उनके शिष्यों के मुख से उनके बारे में सुनन से पहले बाला जमाना हमारी आस्त्रो के सामने आ जाता है। भी नन्दलाल बसु ने मूझ उनके बारे में बताया थानि ने उन्हें अपने लड़के के समान देखते थे। जब वे लोग ऍलोरा-अजन्ता गर्ये थे तो वे कलकत्ता में बैठे-बैठे उनकी देखभाल करते थे। छोटी-छोटी चीजो का पूरा ध्यान रखते ये । वे (विद्यार्थी लोग) अजन्ता पहुचकर थहा कापी बरते थे। उन पहाडो में खाने-पीने की चीजें नहीं पाई जाती । साग-सब्जी भी नहीं भिल्ली । तब दाद कलकत्ते से उनके लिए हर सप्ताह आलुओ का पारसल भेजा करते थे। इससे यह मालम होता है उनका हृदय नितना विशाल था और वे अपने शिष्यों का क्तिना ध्यान रसते थे । यही कारण है कि आज भी उनके शिष्य लोग उनका स्मरण करते हुए अपने-अपने काम में जुटे हुए हैं। आज भी वे लोग अपने देश की चित्रकला को देखते हुये सिर उठावर वह सकते हैं कि यह सब उन्हींनी मेहरबानी है जो हमें रास्ता दिखा कर चले गये है।

मुक्ते उनके विकों का सम्रह, कला भवन वान्ति मिकेतन में देखने को मिल गया था। उनके चित्र देखने के बाद मुझे ऐसा लगता था कि क्या इस जन्म में हम छोप भी ऐसाकाम कर सकेंगे। अगर किसी अच्छे विप्रकार ना चित्र देखने की मिले तो वह बिन वहा से किसीको जाने नहीं देगा। अपनी तरफ खीवता रहेगा। घटो खडे खडे देखने की इच्छा होगी। यह तन्मय हो उठेंगा। यही चमरनार अवनीबान के चित्रों में था। मैने अपनी आखी से बादू को चित्र बनाते हुए देखा था। तब मुने ऐसा मालूम हुआ या जैसे एव योगी अपनी समाधि-अवस्था में रह रहा हो। आजकल के कुछ चित्रकारों के चित्र देखने से ऐसा मालूम होता है कि वह चित्र काटन

को दौडता है। बजाय खडे रहने के वहा से दौडने की इच्छा होती हैं। वे एक बार वहते थे कि एक नित्र बनाने से पहले कम-से-वम कुछ महीने उसके बारे में जिन्तन करने के बाद उसे बनाना चाहिए। यही कारण है कि उनके वित्रो में क्ला वास्तर बहुत ऊचा उठ गया था। असल में चित्रकार के चित्रो को समझने से पहुठे चित्रकार को समझना चाहिए। तमी उसके चित्र समझ में भा संकते हैं।

एक बार मैं कल्कता में उनसे मिलने गया। उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत ही गिरा हुआ या। फिर भी मुख पर प्रसन्नता थी। उनसे मिलने के बाद उनके चित्रा को देखने में लग गया। एक कोने में कुछ चित्र काठियावाडी देहाती जिलीनो-जैसे बने हुये थे। मै उन्हे देलकर बडा ही खुश हो रहा था। दे मेरी सरफ देखकर वहने लगें- "वया तुन्हे बहुत पसन्द है। "मैने कहा—''जी हा।" किर तो वे उसके बारे में विस्तार से बताने लगे-- मेरे पास काठियाबाह की कुर्सी है। उसी को देखने से उसका पेन्टिंग बनाने की इण्छा हुई और मैंने इन चीजो का प्रयोग करके देखा।"

अस्तिम समय में भी ने रोज दो-सीन घटे बैठकर कुछ-न-कुछ बनाया करते ये। उन दिनो शान्तिनिकेतन की एवं कलाकार श्रीमती रानी चन्दा उनकी बहुत ही देल-भाल क्या करती थी। जो-कुछ भी वे बनाते, उन्हे दिलाकर बहुत ही खुझ होते थे। नभी-सभी तो बन्चो की तरह खुशी से उछल पडते थे। मनुष्य को भीजन की जितनी जरूरत है और उसके लिए वह जितना परिश्रम करता है, चित बनाने के लिए वे उतनी ही साधना की अरूरत समयते ये।

वे सबमूच महान् कलाकार य ।

एक बार किसी ने कबीर ने पूछा—"मैना गाती है तब इतना मीठा क्यो लगता है ?" क्वीर ने उत्तर दिया— 'प्योकि वह 'मैं' 'ना' है। वह अपने को भूंककर गाती है। 'मे—ना' अपीत् में नहीं। बक्दी 'मै-मैं' करती है। वह क्या भीठा ठगता है ? लग ही नहीं 'मे—ना' अपीत् में नहीं। सकता, क्योंकि मैं का अर्थ है अहकार।"

# जीवन की गहराई में

जेल में दो घटनाएं ऐसी हुई है जिनके बारे में मैं अवनक मही निगंब नहीं कर सका कि उनमें गलती बी या नहीं। एक तो अंगूठे का नियान लगाने के प्रकरण में सम्बन्ध रखती है, दूसरी दो माबी कैदियों के केल में भाग जाने के सम्बन्ध में हैं।

जेल के किसी नियम के अनुसार जेल-अधिकारियों ने जनर के वर्ग के राजनैतिक कैटियों से हुक्तन् चाहा कि सबके अंगूठे के निशान लिये जायं। हम छोगों ने पढ़े-लिखे आदिमियों से अंगूठे के निजान तलव करने के हुदन को अप्रमानजनक समझा और उसे मानने मे इन्कार कर दिया। तब दो बार हम कई राजनैतिक कैंदियों पर मुकदमे चले-एक बार तो एक जान्ने की कमी रह जाने में हम जीत गए। इसरी बार ३-३ मास की नजा काटी। किर भी हुक्म आया कि जबरन अंगुठे के निवान लिये जायं। इनपर आपन में काफी विचार-विनिमय हया। अन्त में तय रहा कि अपना विरोध बता कर ( Under protest ) उनके बल-प्रयोग करते ही अंगूठे के नियान दे दिये जायं। पूरी यक्ति ने विरोध न किया जाय; लेकिन मुझे बुलाया गया तो उस कमरे का मारा दृश्य देवकर मेरी आत्मा ने विरोध किये दिना न उहा गया । मैने पूरी चितत लगा कर विरोध किया, खुट मुझे भी तथा जेल के जो अधिकारी और जमादार-सिवाही वहां उस काम के छिए मीजूद ये और मुझे आदर की दृष्टि ने भी देखते थे. बारचर्य हुं आ कि मेरे मूले और दुवले-मतले गरीर में इतना बल कहां से आ गया ? आखिर तो कई आदिमयों का मिलकर गरीर-वल कामयाव ही होने वाला या-उन्होंने मेरे अंगुठे के निवान ले लिये; पर उस जीर-क्षाजमाई का यह नतीजा हुआ कि मैं शायद दो घंटे तक बेहोश-जैसा रहा । मेरे साथियों ने उछाहना दिवा कि जब सबने मिल कर यह तथ किया था कि जोर-आजमाई नहीं करना है तो फिर आपने ऐसा क्यों किया ? मेरे पास इसका कोई सन्तोपजनक उत्तर नहीं या सिवा इसके कि इस दृश्य को देखकर मुझसे विरोध

(५)
किये विना न रहा गया। मुझे जहां तक स्मरण है मैंने
अपना यह मत दिया या कि जहां न्याय-अन्याय का या
स्वाभिमान-हानि का प्रदन हो, वहां प्राणान्त तक भी
विरोध या प्रतिरोध किया जा सकता है; लेकिन बहुमत
के आगे मैंने विना प्रतिकार किये अंगूठे का निशान देने
का मुझाव मान लिया था। पर ऐसा मालूम पड़ता है
कि ऐन बक्त पर मेरी मूल भावना प्रवल हो उठी, मैं
वेकाबू हो गया और प्रतिकार कर बैठा। बुढि से
मंस्कार प्रवल होने है, यह इस घटना से सिद्ध होता है।
आपका मन या बुढि कुछ भी फीसला करे, आनवान के
अवनर पर आपने वैसा ही आचरण हो जायगा जैसे कि
आपके संस्कार होंगे। अतः केवल विचार या मन वदलने
से काम नहीं चलता—मंस्कार भी वदलने चाहिए।

में मानता या कि अंगुठे के नियान लेने का जेल-अधिकारियों का कोई नैतिक कत्तंत्र्य नहीं या, केवल जाको की खानापूरी करनी थी। अतः उन्होंने इस प्रश्न को इतना तुल देकर, हम सबको तीन-तीन महीने जेल की सजा देने के बाद भी बल-प्रयोग के हारा निकान लेकर बड़ा अन्याय किया है, अतः इसका प्रतिकार आत्मवल से करना ही चाहिए। मेरे वेहोश होने तक की नीवत आ गई, फिर भी जेल-अधिकारी अपने मूढ़ आग्रह से पीछे न हटे, इससे यह प्रत्यक्ष हो गया कि मानवता और मानवी भावों की कितनी कमी इस फीलादी यंत्र में आ गई है। इससे मेरा हृदय बहुत व्याकुल रहने लगा। आखिर अनदान के रूप में इसका प्रतिकार करने का निस्चय किया । मैं अपने माथियों की इसकी उपयोगिता समझा सका था, ऐना मुझे स्मरण नहीं है; परन्तु अनशन ने मूझे काफी शान्ति मिल गई । जब मुझे किसी प्रश्न पर व्याकुलता होती है, कोई रास्ता मूझ नहीं पड़ना है तो अन्तिम वल का प्रयोग करने के निय्चय से शान्ति मिल जाती है । अहिंनात्मक साधनीं में विस्वास रखने वालों का अन्तिम बल है अनगन। रुपवास के द्वारा परमात्मा से आत्म-शृद्धि, मार्ग-दर्शन या आत्म-बल के लिए प्रार्थना करना।

तीन दिन के बाद सुपरिष्टेण्डेण्ड में, चोित यूरोपियन होने हुए भी बर्रुत भला और हमदर्द या, मुखे बहुत समयाया, मेरे स्वास्थ्य मी, पांकीवयों में भेरे स्थान मो, अपनी जिम्मदारी की, नई दर्गों हों। दन सकता मुत्तपर नोई असर हा हुआ। तब उसने एक नई चीज मेरे सामने रखी। अनसन तो सम्बाह्य के कानून में अन्तिम सहस्र हैं न ? मेने कहा— हां। तो फिर अभी तो एक सार्ग आपने सामने खुला है। जनक उसने हारा आप प्रतिकार या ज्याय प्राप्ति का प्रयम् नहीं कर तेते तस्तर आपनो अनसन वा अवलस्वन

मं—"वह नमा बात है, जो बरने से रह गई है?" "आप कानून वा छहारा छेवर हमारी जेवर आधिकारियों की वार्रवाई का विरोध कर सबते हैं और इन्साफ पासनते हैं?"

जन्होने वह विधि भी बताई थी और मुझे ऐसा साद पड़ ग है कि वहां कानूनदा मित्रा ने भी उसका समर्थन किया था, इस समय में उसे भूल रहा हैं। तब मैंने तीन दिन के बाद अनशन समाप्त कर दिया था। बाद में मैने अपने वकील मित्रों से इसमें सहायता देने **क्ना बार-बार अनुरोध किया, परन्यु जेल में** रहते हुए कोई नार्रवाई करना बहुत कठिन है, यह या ऐसी ही इलील देते रहे। जेल से निकलने पर सब अपने-अपने कामो में व्यस्त हो गये और वह वात जहा-की-तहा रह गई। मुझे ऐसा लगता है वि इन सब मित्रों की मेरे अनुवान-मग में जितनी दिलचस्पी थी उतनी उस प्रति-कार में नहीं थीं। मैं कई बार अपने मन से प्रश्न वरता हैं कि तुमने क्यों उस बाग्रह को छोड़ दिया? या ती नुमने पहले इतना आवेश दिखा कर गलती की, या फिर बाद में ढीले पडशर ग़लती की। द्यान्त वित्त से जब मै विचार करता हूँ तो ऐसा मालूम होना है कि अगुठे के निशान देते समय जो जोर-आजमाई नी, वह आवेश ना परिणाम था, सोच-समझ कर किया हुआ निश्चित और निर्फान्त निर्णय नहीं या। इसी से बाद में उसके लिए उत्साह नहीं रहा । यदि निर्णय सही हैं तो फिर अन्त तक उसे निवाहने का उत्साह मनुष्य में रहना

चाहिए या फिर बस समय ना प्रतिनार तो सही था। बाद में जो शिविल्ता आई बहुन मजोरी थी। जो हो, बापू के इस मत से मूझे सन्तोप अदरम मिलना है कि मनुष्य मन्ती नमजोरी के पत्त में न बरे, बहादुरी के पता में करे। जान बचाने ने पत्त में नही, नप्ट सहने के पता में करे। जान बचाने ने पत्त में नही, नप्ट सहने के एक्स में करे। मैंने इसमें यूदि पन्ती भी नी हो तो वह जान बचाने के पता में नहीं की थी।

वब दूसरी घटना छीजिए। ८ वगस्त १९४२ को बन्दई में 'भारत छोड़ी' प्रस्ताव पास होने के बाद ९ को सुबह ही बापूजी आदि की गिरफ्तारी हुई। तब बागे आन्दोलन चलाने के बारे में वापूजी ने कोई शास हिदायलें नहीं दी यी। 'करीं या मरों' का मत्र दिया या और वहाया, "सव अपने-अपने नेता बनो।" अत हर बादमी अपने दिमाग से सोचने छगा । मेरे साथियो और भित्रों ने बस्वई में मेरे सामने भी प्रश्न खंडा किया--तार काटने में, मनान जलाने में हिमा है क्या ? पहले से अपना प्लान सरकार को बता देना सत्य में आता है क्या? ये दो पेटट प्रश्न ये । कोग चाहते सो ये कि अग्रेजी सरकार का स्नात्मा अब कर ही दिया जाय, परन्तु सत्य और अहिंसा की सीमाए भी समझ लेना चाहने ये। सत्य-अहिंसा की स्प्रिट चाहे सबमें न आहे हो, परन्तु उसकी स्यूल रक्षाकरनातो चाहते ही पे। मुझे भी उनको सत्य-अहिंसा पर व्यान्यान नहीं देना -था, उसकी व्यावहारिक व्याप्या और सीमा बनानी थी । मैने उत्तर दिया—(१) हिंसा वा सम्बन्ध जीव-घारी से समझना चाहिए। विसी जीवघारी को न भारता चाहिए, न काटना चाहिए। (२) पहले से प्लान बतलाना आवस्यक नहीं, पूछने पर झूठा उत्तर न देना भाहिए । जेल में पहुचने पर भी ये प्रस्तोत्तर नारी रहे। बुछ साथियो ने जेल मे भाग कर देश में काम करने की योजना भी बनाई। मुत्रमे पूछा गया। भैने जवाव दिया, "जेल वे कष्ट से धयरा व र जेल से भागना कायरता है, इसका मैं समर्थन नहीं कर सकता। देश में क्षाम करने की भावना का में समर्थन कर सकता हुँ; परन्तु किसो के पूछने पर या पकडे जाने पर झूठा वयान न देना चाहिए।" अाखिर अजमेर जेल से दो

नाम पर लगातार देश के मधी देशकान अपने जीवन की आहति देते रहे है, जिस नाम को लेकर महात्मा गांधी तया देश के लाखों भीजवानी ने बपना सर्वस्व करवान बरने मुल्क को आजाद किया, आजादी प्राप्ति के बाद प्रथम चनाव के अवसर कर उसे जितने प्रतिशत बोट किले बह माँग्रेस के पिछले इतिहास के लिए शोभा की बात नहीं है। उन्हें तो शनप्रविश्वत बोट मिलने चाहिए थे। स्विन ऐमा न होकर कुल मिलाकर बहमत भी प्राप्त नहीं हवा। अत उन्हें सोचना होगा कि आखिर वात क्या है कि इनक दिनों से जमा क्या हुआ भगाज-भेवा का 'वैक बैछन्स होने हए भी उन्हें इतना नम बोट मिन्छा । बया इनन थोडे दिनो में ही साठ साल से जमा किया हुआ 'बैलन्स' भना डाला या और कोई बात है ? आज जब पाच साल के लिए मल्क की बागडोर इस दल के हाथ में आई है तो उन्हें समझना होगा कि यह अवसर उनके लिए अन्नि परीक्षा का है। उन्हें अपनी कमजोशियों का विश्लेषण करके उन्हें दर करना होगा । साय-साथ यह बात भी सोचनी होगी कि आज की यग-समस्या के समाधान के लिए जन्म लेने वाले जिस वनपुरुप महात्मा गायी के मार्ग-दर्शन में उन्हें आजादी मिली, उन्हींके बताये हुए रास्ते मे देश की आर्थिक तथा सामाजिक सगठन के तरीको की अबहेलना करके परिचमी तरीको को अपनाने से क्या वे मुल्क को बचा सकेंगे ? इन समाम बाती पर विचार करके उन्हें अगले पाच माल का कार्य-त्रम निर्धारित करना होगा।

कार्यय विरोधी दलों को भी सोचना होमा कि उन्ह इननी बाता होते हुए भी इस कर क्यों क्यांजित होना प्रधा । साप्ताधिक नारों पर आधारित क्यों को सोचना चाहिए कि जनता उनके साथ मही है । उन्हें समझना चाहिए कि जनता उनके साथ मही है । उन्हें समझना चाहिए कि मारत में गांभीओं के घहीद होने के साथ-साथ माप्रधाधिकान में की जान जुस चुकी है। जान जी कुछ दिलाई दे रहाई यह वेचल राज हो हैं। वह फिर में जलाई नहीं जा करती !

दूसरे विरोधी दलों को यह सोचना होगा कि जब कियी तपन्वी को जमकी तपस्या के फल्स्करूप इद्रासन मिलता है तो वह इद्रपुरी में बाहे जितना ऐंग और आराम नरता रहे उमका आसन तवतन नहीं टल सनता जननक सुसरा कोई व्यक्ति उससे अधिन तपस्या नहीं नर वेता । बताएव उन्हें भी अपने वारे में गम्मीर निभार कर जनता को बाज नी बिनट समस्याओं के समाधान के लिए कठिन त्याग और कठोर तपस्या नरती होगी। उसके छिए अपने चीचन की बाहृति देनी होगी। तभी चलना के दरवार में वे अपनी स्थिति वनांमर आगे वह मन्त्री के दरवार में वे अपनी स्थिति वनांमर आगे वह मन्त्री के दरवार में वे अपनी स्थिति वनांमर आगे वह

इसलिए इस बार का शाम चुनाद हर-एक व्यक्ति और दल के लिए गम्भीर विचार का विषय हो गया है। य इसका विचार करे।

चुनाव से देश की समा विभिन्न दलों की वास्तविक स्यित का पता तो चना ही, ऐकिन आम जनना की स्थिति तथा उन पर चुनाव का असर क्या हुआ इन दोनो वाता की भी जानकारी हुई। विभिन्न प्रान्तों से जिस प्रकार अजीव बालो की सूचना मिल्सी रही उससे जनना के सार्वजनिक अज्ञान का काफी परिचय मिला। इसमे रचनात्मक वार्यकर्ता के लिए वापी विचारणीय सामग्री उपस्थित हो गई। आमतौर पर जहा रचनात्मक संस्था या नार्यक्ती काम करते रहे वहा भी जनता में विशेष जोस दिखाई नहीं दिया । इसलिए जहाः विभिन्न राज-नैनिक दलों को देशसेवा ने निश्चिन मार्गी पर विचार करना है बहा रचनात्मक कार्यवर्ताओं को भी यह सोचना होगा कि क्या वालिंग मनाधिकार के कारण पैदा हुई परिस्थिति में दनका भी कोई काम है ? उन्हें जनता के नागरिकता ने अधिकार सथा क्लेंब्य के शिक्षण की जिम्मेदारी उठानी होगी और उसके लिए निश्चिन कार्य-भैंछी पर विचार करना होगा । प्रत्येक रचनात्मक केन्द्र के वार्यवसीओ की इस प्रकार वार्यवस बना कर काम घरना होगा विसमे उनके केन्द्र स्वान के आसपास की तमाम जनता सजग नागरिक वन सके ।

ं नजाई पडळ वे शहरमों नो अगर वेन्द्रीय-सवालन बादी समाज-स्वत्स्या के स्वरूं विवेतित-सवालल्यी समाज-स्वत्स्या के आचार पर ग्रामराध्य स्थापित कराजा है 'तो इस वार्ष के सबसे अधिक तिनमेदारी उन्हीं पर शांती है। अत उन्हें ग्रोड शिक्षण के इस महत्वपूर्ण प्रेम को अपने हाय में लेना होगा और गांव के नीजवानों का शिविर, स्वाध्याय मंडल तथा आम सभाओं का संगठन करना होगा । उनकी साप्ताहिक वैठक में अधिक-से-अधिक तादाद में गैर-मदस्यों को भी निमंत्रित कर इस कार्य में प्रगति लानी होगी । जिस कांतिकारी प्रोग्रास के प्रसार के लिए कताई मंडलों का अस्तित्व है उसे आगे वढ़ाने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम का खास महत्व समझना चाहिए।

चनाव के फलस्वरूप जनता में कुछ बुरा और भला दोनों असर हुए हैं। चुनाव के सिलसिले में जहां विभिन्न दल तथा उम्मेदवारीं द्वारा अजान जनता को गुमराह करने की कोशिश की गई वहां आपस की बहम तथा चर्ची द्वारा उनकी आंखें भी काफी खुल गईं, उनमें अपने आप ही काफी राजनैतिक चेतना फैली तया शिक्षण भी मिला । इतना दूपित वातावरण होते हुए भी चुनाव का यह एक अच्छा नतीजा रहा।

विभिन्न उम्मीदवार तथा दल हारा विपैले प्रचार के कारण जो घातक असर हुआ उसमें जातीयताबाद के विकास का स्थान मुख्य रहा । ब्राह्मण-अब्राह्मण, जाट-वनिया,कायस्य-भूमिहार,कुर्मी-अहीर आदि मुख्य जातिगत विद्वेप ही नहीं फैला; बल्कि गाँड, कान्यकृत्ज आदि उप-जानिगत विद्येप का भी बाजार काफी गर्म रहा । विभिन्न प्रांतों के अलग-अलग चुनाव होने के वावजूद भी प्रान्तगन विद्वेप का सिर भी काफी ऊंचा रहा। ऐसी भावनाओं का विकास मुल्क को कहां ले जायगा, इसकी कल्पना से ही रोमांच हो जाता है। गांधीजी के निधन से साम्प्रदायिकता के भस्म हो जाने के बाद देशभर में जिस प्रकार प्रांतीयना नथा जातीयता की अग्नि धवक रही है वह स्वतः काफी भयावह है । चुनाव के कारण इस आग में जिस प्रकार बृताहुति पड़ी है उस पर भी हरेक दल के सदस्य तथा प्रत्येक रचनात्मक कार्यकर्त्ता को गमंभीरता से विचार करना होगा।

भारत गुम्जनों का परम्परा से पुजारी रहा है। लेकिन इस चुनाव में जनता के गुरु स्थानीय वड़े-बड़े नेताओं ने भी अपनी-अपनी समालोचनाओं को सम्बन्धित दलों के मिद्धांन नया कार्यक्रम के दायरे में मर्यादित न रख कर उन्होंने एक-दूसरे की व्यक्तिगत आलोचना में जिस भाषा का इस्तेमाल किया उससे सदा की श्रद्धालु जनता के दिल में भी नेताओं के प्रति आस्या घटी है। आज गांव-गांव और बाजार-बाजार में अच्छे-से-अच्छे नेताओं के बारे में जिस हरुकेपन से चर्चा होती है वह किसी भी मुल्क के नेतृत्व के लिए शोभनीय नहीं है। ऐसी परिस्थिति में साधारण जनता में व्यापक उच्छ खलता या जाय तो उसमें आरचर्य ही क्या है ?

कताई मंडलों तथा रचनात्मक कार्यकत्ताओं को इन दियाओं में भी ध्यान देना होगा। उन्हें अपनी जान देकर भी प्रांतीयना तथा जानीयना का उच्छेदन करना होगा और दलगत कशमकश से बाहर रहकर अपने त्याग और तपस्या हारा देश में आस्थापूर्ण नेतृत्व की स्थापना करनी होगी।

0

#### भूल सुवार

- १. जून अंक में 'कर्नाटो पर' स्तम्भ के नीचे 'गांघी गीरव' की समालोचना की गई है। उसके प्रकाशक नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर है, हिन्दी प्रकाशन मिन्डर, प्रयाग नहीं ।
- २. उसी अंक में प्रकाशित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिआंव' लेख में उद्वृत 'ताम्बूलं द्वयमासनं च लभते यः कात्यकुटजेय्वरात्' रुलोक कान्यकुटजेय्वर के सभाकवि राजशेखर का है, पृथ्वीराज जगन्नाय का नहीं ।

कृपया पाठक सुवार लें।

विनोजाजी के इस भूदान-यज्ञ के इतिहास में कुछ घटनाए तो स्वर्णक्षरों में लिखने लागन हो चुनी है। जिला जीनपुर का वह टिवारडी गाव, बहा के तमाम मृत्स्वामियो ने अपनी जमीने देनर गाव में एक भी देजमीन को बिना जमीन के नहीं रहने दिया निरा कानपुर का वह कस्या पुत्रदाया, जहा विनावा-जी द्वारा भृदिनरण ने समय बहा ने भृ-स्वामियों न अपने यहा वे सभी बेजमीन परिवारा को प्याप्त अमीन देक्र अप्रतिम मिसार पेश कर दी, यहातक कि एक सिल परिवार ने अपनी सारी-की-मारी जमीन मूमिहीना के लिए दे दी—ऐसा यह मारा ब्रह्सिंग त्रान्तिका प्रत्यक्ष इतिहास आज जगह जगह बनता जा रहा है और उसीमें मगरीठ गाव की विमाल सुनार हो रही है। बीर-मूमि बुन्देल्लग्ड के हमीरपुर जिल का मगरीठ एक छोटा-सा गाव है, जिसकी जनसम्या बुल ५०० की यानी नरीब १०४ घर की है। इस गाव ने भूदान-यत के इतिहास में एक नया पृष्ठ खोलकर अहिसन प्राति नितनी निनट की वस्तु है यह प्रायक्ष वर दिलाया।

इस गाय में ५४ वेजयोन और ५० जमीन वाले पिरवार रहते हैं। आजादी के मजाम में भी इसने अपना नाम सबसे ज्यादा उज्ज्वक कर दिलाया था। दीवान यानूमानें और उनके परिवार ने अपनी तपस्य जीर सामना से इनके आलीनेंव कर रखा है। वब येन्द्रा पार करके विजोवानी ने हमीरपुर जिले में प्रवेश किया तो तार अपने पलने पार पार करके विजोवानी ने हमीरपुर जिले में प्रवेश क्या तो तार मरपीठ आले पलने पलने पलने विजाव कर उनके स्वागत ने लिए वहा मौजूद से। विजोवानी ने पाय-सात निमर ही मापण दिया होगा पर उन भागव में पाय-सात निमर ही मापण दिया होगा पर उन भागव में पत्र मूर्य में भी सो मापल को निहत उन्होंने एक ऐसा मत्र पून दिया, जो सारे पाव वाला को अभिन्त ति स्वी मीमा गोल को है। अर पीपाल को सात्र मत्र विजाव पर स्वाग । गाव वाले समद पर्म कि सब मूर्य मीमाने को है। और पीपाल याने पाय के ही सब लोग। 'वे सोपने लगें नि बवो ना पाय को सभी मूर्य

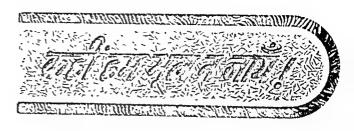
विनोवाजी को अर्थित कर दी जाय<sup>7</sup> कुछ भर को स्त्रियो ने कहा 'क्या भूखा मरोगे <sup>7</sup>' तो घर वाला ने जवाव दिया, 'मगवान् ने हाय-पैर जो दिये हैं।'

दीवान राजुध्नसिह्बी भी इस प्रयत्न में रंगे ये कि गाव बालों का पूरा सहकार इस योजना में मिले। दीवान साहब का गाव वाला ने रातो-रात वृहाया । फिर पचायन की और सक्च्य किया गया कि "सारी मूमि विमोदाजी ने श्रीचरणा में अपित की जाय।" भावना सर्जीव बनी उन्होने दीवान साहव को प्रतिनिधि बनावर राठ मेत्रा। वहा, उस गाव की सम्पूर्ण मुमि, जो करीव ६७५ एकड है, विनी ताजी को अपैण कर दी गई। सहज भाव म दीवान माहब ने नहा, "विनोवाजी, हमारे गाव के लोग आपने श्रीचरणो में यह भूमि अपित कर रहे हैं, उस दरिद्रनारामण ने लिए जिसके आप प्रतिनिधि है। इसे आप स्वीकार करें।" और उन्होंने सबका दान-पत्र पेस कर दिया। इस तरह गाव की चप्पा-चप्पा जमीन का मालिक वह दिस्तारायण बना, जिमकी बाबाज अवतर किमी ने इस प्रकार बुउन्द नहीं की थीं।

दीवान साहब और उनके एडके, सबकी हुए 30 एनड जमीन इसमें सामिल है। अहिंसन कालि का यह प्रत्यक्त और जीता जागना उदाहरण उन आहोंने जारीना की यो जबाब देता है, जैसे सूरत अवकार को मेदता है। किसी की साना हो तो वह प्रत्यत्व आवर इसमी सुन्भृति कर देले।

यविष वितोवाबी प्रत्यक्ष इस गाव में जा नहीं भाये थे, फिर भी गाव वालों ने बेडावा नितारे से इटेस्टिया गाव तक, रास्ते भर में, मिट्टी में करा-कण में, वण्नी प्रेम के मरी कीर खड़ा से पूरिता मावता भर से बी। हर काण जनके जतुरू ग्रेम का प्रदर्गन विभिन्न रूपों में होता रहता था।

भूदोन-यज्ञ के इतिहास में मगरीठ का यह नया पृथ्ठ असरपृथ्ठ होगा।



#### गोस्वामी तुलसीदास

[ पुण्य तिथि—श्रात्रण शुक्ल ७— ९ जुलाई ] गुसाईंजी का सच्चा स्मारक

सत्पुरुष देह से मुक्त होने पर लुप्त नहीं होते हैं, विकि व्यापक बनते हैं और सारे वातावरण में फैल जाते हैं। इसलिए उस जमाने से तुल्सी आज ज्यादा जिन्दा हैं। दुनिया के हित में उनका संकल्प आज सारे विश्व में फैल गया है। रेडियो के रामान हमारे पास सिर्फ उनकी वाणी को पकड़ने की द्यक्ति की जरूरत है।

में तुलसी के जिले से ज्यादा जमीन मांगता हूँ नयोंकि उदार-हृदय तुलसी के ज्ञान की यहाँ मेच के समान वर्षा हुई है। आज में थोड़ा वहुत चूम लेता हूँ, तो मेरी तारीफ होती हैं; लेकिन तुलसीदासजी तो ३०-४० साल तक चूमे हैं। उन्होंने यहां के कोल-किरात आदि गरीबों का कितने प्रेम से वर्णन किया है। उस महासमर्य जानी ने, अज्ञानमय किरातों के प्रेम का वर्णन करते हुए कहा है कि 'राम हि केवल प्रेम पियारा।'

आज मैने कीनूहल से तुलसीदासजी की मूर्ति देखी। बाह्य हप की कोई हस्ती नहीं है, परन्तु एक चिन्ह के तीरपर लोग अपना भित्तनाव प्रकट करते हैं। तुलसी की मूर्ति उनकी रामायण है। बाहर के लोग ऐसे स्थानों के लिए अपेक्षा लेकर आते हैं, इसलिए यहाँ के लोगों की जिम्मेदारी वढ़ जाती है। आप लोग तुलसीजी का स्मारक बनाना चाहते हों तो उसके लिए सरकार पर निर्मर नहीं रहना चाहिए। जनता और व्यापारियों को मिलकर उस काम को पूरा करना चाहिए। मैं तो तुलनी रामायण को वाइविल और शेक्सपीयर से मिल कर बनी हुई चीज की बराबरी का मानता हूँ। और इसलिए मैं भी चाहना हूँ कि उसका अच्छा स्मारक हो, लेकिन सच्चा स्मारक तो इस गांव के लोगों के हृदय में होना चाहिए।

मैने नुना है कि यहां शराव पीनेवाले काफी तादाद में है। तुलमीजी के गांव में यह सब क्यों होना २८० चाहिए ? इस गांव में तो पवित्रता का आदर्श मिलना चाहिए । यहाँ के लोग व्यत्तनों से मुक्त, मांसा-हार न करनेवाले, सभी उद्योग करनेवाले, नित्य ज्ञान चर्चा करने वाले और रामायण पढ़नेवाले होने चाहिए। यहाँ एक भी भूखा आदमी नहीं रहना चाहिए और यहाँ के झगड़े पहीं निपटना चाहिए। ऐसा हो तभी नुलसी का स्मारक होगा।

हमारे लोगों पर एक आक्षेप है कि हममें चिरत्र-ग्रन्थों और इतिहास की कमी है। यह आक्षेप सही है। जैसे युक्लिड की भूमिका जानने के लिए उसका चरित्र जानने की कोई जरूरत नहीं, उसी तरह देह के साथ आत्मा का कोई सम्बन्ध न होने के कारण देह चर्चा की कोई जरूरत नहीं। में इसमें गुण देखता हूँ, क्योंकि हम देह-विपयक चर्चा नहीं करते; बिल्क विचार को चाहते हैं। इसी विचार-धारा का अनुकरण करके हमें जुलसी का आध्यात्मिक स्मारक बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

उत्तरप्रदेश में बुद्ध के बाद लोक-सेवा करने वाला नुल्सीवास ही निकला है। जनता का मूल्यमापन थर्मा-मीटर जसा होने के कारण जनता अपने हितकर्ता नुल्सी का अभी तक स्मरण करती है। नुल्सीवासजी तो हर-एक में धनुर्धारी राम को ही देखते थे। इसलिए उनका जो ऋण हमारे सिर पर है उसे हमें चुकाना है और ऋषि-ऋण सबसे श्रेष्ठ ऋण है। उसे चुकाने का मतलब है, उनके विचारों को आगे चलाना और उसके अनुसार जिन्दगी वसर करना।

गोस्त्रामी तुलसीदास की ) जन्म-भूमि में दिये गए भाषण से

---विनोवा

### महाकवि का सन्देश

काल मनुष्य को पैदा करता है। पर मनुष्य काल को गित को मोड़ भी देता है। तुलसीदास काल-विधाता की देन थे। नाथ-सम्प्रदाय से निमृत सन्तमत ने कबीर में जो उद्दाम रूप लिया, उसमें सित थी, पर उद्देण्डता भी थी, उसमें मिल्न थी, पर विनय की वभी भी थी, उसमें सबम था, पर सौन्दर्य का अभाव भी था। इसकें विचरीत तुर्क आत्मण की बरबरता उस समय सान हो गई थी। देस में सालित की प्रतिष्ठा हो यह थी। रामा-मन्द के रूप से भिन्त आन्दोलन का एक नेता पेदा हो कुका था। ऐसी ही न्यित से महावित नुलसीदासबी कुका था। ऐसी ही न्यित से महावित नुलसीदासबी कुका आधिनांत्र हुआ।

तूलसीदासजी ने रामभित्त की जो धारा बहाई उसमें अपूर्व और उद्दाम द्यक्तिन थी, विन्तु उसके प्रतीक हुनुमान थे, जिनके हुदय में भगवान का निवास था, पर जो भगवान के दास थे, जो दुष्टा की पुरी लका में आग लगावर भी भक्त विभीएण के घर की रहा। करना अपना कर्त्तव्य समझते थे । जुलसीदासजी की मक्ति की प्रतिमा जगुरजननी सीता है, जो यदि चाहती तो बडी आसानी से हनूमान के साथ लगा से भाग कर राम के पास ला जाती, पर जिन्होने इस प्रकार छिपकर अपने भगवान के पास जाने की अपेक्षा विरह और दुख में तिलतिल कर जलना पसन्द किया । यह अपन भगवान् के पास उसी गौरव से जाना चाहती थी, जिस गौरव के अधिकारी स्वय उनके भगवान् ये । वह गौरव यदि सिन्ध् के बधने से प्राप्त होता हो तो मिन्धु बधे, वह गीरव यदि लका के रक्त-स्नान से प्राप्त होना हो, तो लवा रक्न में ड्व जाय, वह गौरव यदि सीता के अग्नि-प्रवेश से प्राप्त होता हो तो सीता अग्नि में भी प्रवेश वरेगी, पर अपन भगवान् वे पास वह गौरव और मर्यादा के साथ ही जायगी।

बता नहीं, बरित्र पर इतना जोर देने बाला सुल्मीदास के बाद और कोई महावित पेदा हुआ अववा नहीं। धायद गहीं पेदा हुआ नी बीढ धर्म म किकार पंदा होने पर जब 'अता' और 'जपान' के नाम पर उन लोगों ने भारतीय समान को पतन के धर्न में ढकेल दिया था, शणिक्वाद के दर्शन में जब वाणी का विश्वम पेदा कर तथन के मृत्य वा स्तरम कर दिया या; पुरस अपनी धनित पर मरोखा न कर जब सन्त्रमन्त्रों के नित्र धानव बत गया था, उस समय समाज को उठाने के लिए एकमाव चरित्र बल की आव-

इयरता थी । और वह चरित्र वस्त पैदा किया महाकवि तुलसीदाय ने अपने महाकाव्य 'रामचरित-मानस' द्वारा ।

'रामचरित मानस' व्यापक अर्थों में समाज-दर्शन हैं। पिता अपने पुत्रो को प्यार करता है,पर उनकी शिक्षा के लिए महामूनि विस्वामित्र ने नियन्त्रण में उन्हे जगलो में मेज देता है। पिता अपने पुत्र को प्यार करता है, पर केकेयी की दिसे हुए वचनो को क्षणिकवादी तर्क द्वारा झुठलाता नहीं, अपने बचन की रक्षा के लिए राम को बन भेजता है, पर अपने प्रेम से विवश होकर शरीर-त्याग भी कर देता है। राम दन में जाकर केवल काल-यापन नहीं करते । वह पौरपमय क्में की प्रतिष्ठा करते हैं। यह बन म पथ के काटो को मसलते हुए पद्म का निर्माण करते है। विरोध में यदि कोई रात्रु आता है, तो उसका सहार करते है, मित्र आता है, तो उसे हायों पर उठावर सिंहासन पर बैठाते हैं। पत्नी का हरण हो जाता है, तो योग नहीं ले लेते, हरण करने वाले का विनादा करके अपनी मर्यादा कायम करते है और उस मर्यादा को अग्नि की प्रचड ज्वाला में तपा ेते हैं। इसील्ए 'मानस' को मर्यादा काव्य भी कहा जाता है ।

तलसीदास ने चरित्र की, मर्यादा की और पौरय की प्रतिष्ठा की। भवित का वह काल था, वह स्वयं भक्त थे, इसलिए उनके सम्पूर्ण नाष्य में भनिन की पावन रस धारा भी प्रवाहित है। आज विज्ञान की प्रचड आच में भक्ति की सरम्बनी चाहे मुख गई हो, पर चरित्र की आवश्यकता हमें आज भी है. पुरानी मान्यताओं पर से चाहे विश्वाम उठ भी गमा हो, पर मानवीय मर्यादा की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी। और पौरप ? पौरप की आज जितनी कमी है, शायद ही वभी रही हो । अत पौरप की आज सबसे ज्यादा आव-इयक्ता है—किन्तु उस पौरप की जो अपने बहकार को लाकजीवन में विसर्जित कर दे, जैसे हनूमान ने अपने पौरूप को राम के निकट विमर्जित कर दिया था। उस पौरुप की आवश्यकता है जो झकता न जाने, मुडना न जाने हुट जाय, मिट जाय, पर टेक न छोड़। ऐसे पौरप को प्राप्त करने के लिए नुल्सीदास का स्मरण --- वैजनार्थासह 'विनोद' परम आवस्यन है।



भापा : ले॰ मदनगोपाल; पृष्ठ संख्या ११६, मुख्य डेड़ रुपया।

ईसा का सन्देश: ले० आचार्य जे०सी० कुमारप्पा, अनुवादक—सुरेश रामभाई, पृष्ठसंख्या १२०, मूल्य १)।

पहली पुस्तक जैसा कि इसके नाम से प्रकट है भाषा-विज्ञान से सम्बन्ध रखती है। उसका अपना एक विशिष्ट दृष्टिकोण है जिससे कुछ लोगों को मतभेद हो सकता है और है भी; परन्तु इसी कारण पुस्तक का महत्व कम नहीं हो जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जिस दृष्टि-कोण को अपनाया है वह मौलिक है और पाठक को सोचने का काफी खाद्य देता है। भाषा निर्माण के बारे उन्होंने अनेक बातों में एक बात यह भी सूचित की है कि 'तुम' की जगह 'आप' कहना हमारे सदियों तक दवे रहने का फल है। किया में लिंग क्यों पैदा हुआ इसका कारण उन्होंने मरदों द्वारा औरतों पर जुल्म बताया है। ये दो उदाहरण है जो उनके अध्ययन की दिशा को सूचित करते हैं। उन्होंने भाषा की उत्पत्ति से लेकर भाषा-शास्त्र के मुलभूत सिद्धान्तों को अपनी भाषा में कैसे काम में लाया जा सकता है इसकी चर्ची की है। वैसे इस पुस्तक का आधार हिन्दी-उर्दू और हिन्दुस्तानी का पुराना झगड़ा है और उन्होंने सावारणतया 'हिन्दुस्तानी' का बचाव किया है।

कुल मिलाकर पुस्तक भाषा-विज्ञान में रुचि रखने बालों के लिए अध्ययन करने योग्य हैं। लेखक का अध्ययन गहरा और बहुत हद तक तटस्य हैं। हम पुस्तक का स्वागत करते हैं।

दूसरी पुस्तक श्री जे. सी. कुमारणा की ईसाई धर्म पर व्याख्याओं का संग्रह है। इसमें उन्होंने जहां ईसा के सन्देश पर प्रकाश, डाला है वहां यह भी स्पष्ट बताया है कि 'ईमाई' लपन का इस मत से कोई वास्ता ही नहीं रह गया है कि ईसा का जीवन कैसा था और उन्होंने क्या मिसाल पेश की है। स्वयं ईसाई लोग अपने धर्म की जो छीछा-लेदर कर रहे हैं उसका पूरा ज्ञान इस पुस्तक से हो जाता है। ईसा की आत्मा ईसाई धर्म में नहीं हैं वह तो गांवी, के सन्देश से अधिक है। पुस्तक में ईसाई धर्म की मूल शिक्षाओं, विलदान, त्याग व अहिंसा आदि की बड़ी मार्मिक व्याख्या की गई है।

अन्त में कुछ कथाएं देने से पुस्तक की रोचकता बढ़ गई है। अपनी भूमिका में गांधीजी ने पुस्तक की ठीक ही प्रशंसा की है। हम सबसे इस पुस्तक को पढ़ने का आग्रह करते है।

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद की दो पुस्तकें

उत्तर की दीवारें उस पार के पड़ीसी }—हे. काका कालेलकर

दोनों पुस्तकें संस्मरण के रूप में लिखी गई हैं। पहली में जेल-जोवन के अनुभव हैं, दूसरी में अफीका यात्रा के। पहली में ८४ पृष्ठ हैं और मूल्य है चौदह आने, दूसरी में ३०० पृष्ठ हैं और इसका मूल्य साढ़े तीन रुपये हैं। काका सा० उन लेखकों में से हैं जो आंखें खोल कर देखते हैं और मुक्त भाव से लिखते हैं। छोटी-से-छोटी वात भी उनसे नहीं वच पाती। विवरण इंतना सच्चा और सारगींभत होता है कि वर्ण्य वस्तु का चित्र उत्तर आता है। यात्रा-वर्णन लिखने में उन्हें अपूर्व सफलता मिली है। 'उस पार के पड़ौसी' में पूर्वी अफीका का पूरा चित्र है। उसके मनुष्य, उसके पयु, उसकी प्रकृति, सबसे आप तादात्म्य भाव स्यापित कर सकते हैं। वेशक कहीं-कहीं 'मैं' आपको खटक नकता है, पर उसकी अनिवार्यता हमें स्वीकार कर लेनी चाहिए और वहां के प्राणवान भारतीयों के जीवन का अध्ययन करना चाहिए।

काका सा॰ ने अपनी यात्रा में कुछ ही चुने हुए स्थान

नहीं देखें, उन्होंने वे स्थान भी देखें जहां मनुष्य मनुष्य से भय बाता है। सरोप में हम यही नहेंग कि यह पुरवक पूर्वी अफीका ना भूगील और दितहास दोनों हैं। इतिहास भी ऐसा है जो उपन्यास, यात्रा, सस्यक्त सभी के रख से मन्पूर है। साथ में राजनीति की पुट भी पूरी है। अफीका ना प्रक्त आज हमारे सम्मान का प्रक्त है। जसकी पूरी जानकारी हस पुस्तक में है।

'उत्तर की दीवार सन् १९२२ के सावरमती जल णीवन के कतुभवा का सब्द है। वे अनुवय एक कलावार के अनुभव है। उनका सम्मूर्ण रस पढ़ने पर ही प्राप्त हो कतता है। प्रकृति और पुरस्का चित्रण इसमें भी मुख्य बन बड़ा है, विद्येयकर पर्यु पश्चिमों की भावनाओं का ।

भाषा काकी सरल, सचवत और व्यापूर्ण है। छवाई सफाई सुरदर है। अफीका यात्रा के तुछ चित्र भी है। सब मिला कर पुस्तकें हर घर में रखने योग्य है।

—सुवील भारत और दक्षिण-पूर्वी एशिया— को भरतिहर, उपाध्याय, प्रकाशक—सरल साहित्य प्रकाशक, बड़ीत (भेरठ) पृथ्ठ ६९, मू १)। थी भरतसिंहनी उपाध्याय बौद दर्रान व दतिहास के एक प्रतिद्ध विद्वान हूं। अभी-अभी 'पाठी-साहित्य का दिव्हासे नामक रनना पर इन्हे उत्तर प्रदेश की सरकार से पुरस्कार भिला हूं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत और दक्षिण-पूर्वी एशिया के सास्कृतिक सम्बन्ध का प्रामाणिक वर्णन किया है।

एशिया के नवजाराज्य के इस दौर में उपाध्यायती न साहहतिक सबध की बहानी विश्वकर एक महत्यपूर्ण काम किया है! ठेकक के ही बन्यानाता "देशों के राज-नीतर खबध बनते और विगडते रहते हैं, किन्तु जो काम साहित्य और सक्कि के माध्यम से किया जाता है बह स्थायों होता है, वर्षांकि उसमें मानन बृदय मा कर्मयें होना हैं।"गिरवपड़ी इस तरह के प्रयत्नी से मानव मानव के आपसी सम्वय्य अधिक दुढ़ होते हैं।

सिंदियों से इस देस के बौद्ध प्रिश्त जिस अपर सदेश को लेकर बृहत्तर भारत और एशिया के विभिन्न प्रदेशों में पूमे, उदी की कहानी इन पूटों में दी गई है। प्रत्येक क्ष्मपाना को प्रमाणों द्वारा पुष्ट करके लेकक ने अपनी बहुतता का अच्छा परिचय दिया है।

बहुजता का अच्छा परिचय दिया है। पुस्तक पठनीय एवं सप्राह्य है।

-য়াণ নাণ মত্র

(पृष्ठ २८५ का शेव)

गाधी जी के अनुवासियों को इस बात को विशेष रूप से याद रज़ना है कि विसी काम को कर लेना इतना महत्व-पूर्ण नहीं है जितना यह कि वह काम कैसे किया गया। सावधानी की आवश्यकता

देश में बुनाव हुए। राज्यवित, प्रधानमंत्री, सवद— सभी का जनवनन प्रणालों से चुनाव हुआ। । जहां तक व्यक्तियों का सम्बन्ध है, शासन पुराने ही लोगों के हाथ है। समस्याएं भी बहुत बुरू पुरानी हैं, लेकिन वभी-नभी पुरानी समस्या भी इस वस में सामने आती हैं कि उससे भय रुगने लगता हैं। हिन्दी का प्रन्त बुरू हों रूप में पेश विया जा रहा हैं। हिन्दी नायाभागी लोगों के भय हैं कि बत्तेमान गति वे हिन्दी पनदह वर्षों में भी राज-मापा नहीं वन सबेगी, इसलिए वे उतावली प्रनट नर नि पंच /

पेंहें हैं , दूसरी और दक्षिण के सदस्यों का कहना है कि

उत्तर भारत के लोग हम पर हिल्दी लादना चाहते हैं।
एन सदस्य ने ती इस प्रस्त पर दिल्दी लादना चाहते हैं।
एन सदस्य ने ती इस प्रस्त पर दिल्दी लादना चाहते हैं।
हो अत्तर नी पमक्षी दे लाती। हमें लेद हैं कि इस

प्रकार नी दिस्पति पैदा हो। यहैं। उत्तवकी और आलोग

दोना नमजोरी के हिस्पार है। हमें विश्वसास है, दोनो

पत्नों में से कोई नमजोर नहीं हैं और दो पक्ष महो, जब

तो केवल एक पक्ष है, क्यों कि हिन्दी राजभापा बन चुकी
है। अब वो अचल केवल यही है कि पन्छ स्पर्य के भीतरभीतर हिन्दी कैसे अपने पद को प्राप्त कर सकती है।
इस चूंचे? का मार्ग दुक्त में प्रत्येक मारतवासी को एक

विश्वसाम पर स्ववेद की कोई मुजायस नहीं है।— च्ल

# परिसा वा किसी ?

#### 'मंडल' का जयन्ती-उत्सव

'मण्डल' की जयंती मनाने, के विषय में 'जीवन-साहित्य' के पिछले एक अंक में सूचना दी जा चुकी है। विचार था कि उत्सव मई में किया जाय, लेकिन अनेक कारणों से वह संभव न हो सका। अव सितम्बर या अक्तूबर में करने का निश्चय हुआ है। उत्सव की हप-रेखा तैयार हो गई है। उसके चार मुख्य अंग रक्खे गये हैं--१. उत्सव २. सांस्कृतिक कार्यक्रम ३. प्रदर्शिनी और ४. 'जीवन-साहित्य' का विशेपांक। उत्सव दिल्ली में किसी सुविधाजनक स्थान पर मनाया जायगा और उसका कार्यक्रम दो दिन का रहेगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम में लोकगीत, लोकन्त्य तथा एक एकांकी के अभिनय आदि की व्यवस्था होगी। प्रदर्शिनी में पुस्तकों, चित्र, चार्ट आदि के द्वारा हिन्दी साहित्य की प्रगति का दर्शन कराया जायगा। 'जीवन-साहित्य' के विशेषांक--'प्रगति के पच्चीस वर्ष'--में 'मण्डल' के पच्चीस वर्ष के कार्य के विवरण के साथ-साथ इन वर्षों में साहित्य-जगत में, विशेषकर प्रकाशन-क्षेत्र में, जो प्रगति हुई है, उसके सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सामग्री रहेगी।

'मण्डल' की पूँजी बढ़ाने के लिए एक योजना तैयार की गई है। उसमें लोगों से ऋण के रूप में आर्थिक सहायता ली जायगी, जो कुछ वर्षों में लीटा दी जायगी। साय ही 'मण्डल' की बहुत-सी पुस्तकों ऋण देनेवालों को मिल जायंगीं और जबतक रकम 'मण्डल' के पास रहेगी, मिलती रहेंगी। इसमें ऋण लेनेवालों को तो लाभ है ही, ऋणदाता और सामान्य पाठकों को भी लाभ पहुँचेगा।

'मण्डल' के इस आयोजन का हर तरफ से स्वागत हो रहा है, यह हर्ष की वात है। संयोजकों ने स्पष्ट कर दिया है कि यह उत्सव 'तमाये' के रूप में नहीं किया जा रहा है; बिल्क पिछले पच्चीस वर्ष के 'मण्डल' के कार्य का सिहावलोकन करके आगे के कार्य की योजना वनाने के लिए।

हम प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी, विशेषकर हिन्दी-प्रेमी से अनु-रोघ करेंगे कि वे इस शुभ आयोजन को सफल वनाने में मदद करें।

#### 'भारत सेवक समाज'

समाचार मिला है कि प्लानिंग कमीशन राष्ट्रीय विकास-योजनाओं में देश के प्रत्येक भाग से वयस्क स्त्री-पुरुषों का स्वेच्छित सहयोग प्राप्त करने के लिए एक अ-राजनैतिक संस्था स्थापित करने जा रहा है, जिसका नाम होगा---'भारत-सेवक समाज'। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इस समाज का उद्देश्य व्यापक रूप से जनता की सेवा करना होगा। पं० नेहरू ने उसके सम्बन्ध में कहा है, "हमें अपने लोगों पर निगाह रखनी है, उनके पास जाना है, उनसे चर्चा और विचार-विमर्श करना है और उनके साथ काम में जुटना है। किसी सामान्य ध्येय या कार्य में जैसे लोग मिलकर काम करते हैं. वैसे ही हमें करना है। छोगों को कुछ वातें हम सिखा सकते है तो बहत-सी हम उनसे सीख भी सकते हैं। इसलिए हमें लोगों के पास अपने ज्ञान का दम्भ लेकर नहीं, बल्कि विनम्प्रता की भावना और इस उत्कट अभिलापा को लेकर जाना चाहिए कि हम लोग मिलकर ऐसा प्रयत्न करेंगे, जिससे निष्कियता का पहाड हह जायगा। इसी उद्देश्य को सामने रखकर 'भारत सेवक समाज' कायम करने का विचार किया गया है।"

समाज की स्थापना अभी हुई नहीं है, शीघ्र ही होने जा रही है; पर उसका उद्देश्य शुभ और अभि-नन्दनीय है। यदि वह उसीके अनुरूप चल सका तो निश्चय ही देश के लिए बड़े ल भ की बात होगी। अपूज की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि शासन और जनता के बीच उस सहयोग की भावना का अभाव है, जिसके वछ पर बढ़े-बढ़े काम देखते-देखते पूरे हो जाते हैं। इसमें अधिक दोष किसका है, इसमें विवेचन में हमें नहीं पड़ना है। दोष निसी का और कितना ही क्यों न हो, श्लेकन दतना निदिचत है कि विदे देश को ऊसर वड़ना है, समृद्ध बनना है तो शासन और जनता, दोनों की पारप्परित सहयोग से काम बरना होया।

'सवाँदय समाज' स्रोत सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्णं कार्यं कर रहा है, फिर भी ऐसे जितने प्रयत्न हो, अच्छा है। इतना ध्यान अवध्य रक्का जाना चाहिए कि उनमें आपस में सीहार्ड रहे, प्रतिद्वित्ता की भावना नहीं। प्रतिद्वित्त्वा का दुष्परिणाम हम प्रतिदिन देव रहे हैं। क्रेकिन उससे तभी बचा जा सकता है, जब कि कोई उच्च आदर्श सामने हो, निजी स्वार्थ या पद प्रतिष्ठन पाने की कामना नहीं।

एक विवाह

दिल्ली में गत मास एवं विवाह को लेकर यहा बावेला मचा । उसमें कई व्यक्ति घायल हुए । बाद में उनमें से एक मर भी गया। छोगाने अधिकारियो का अपमान किया, गाधी टोपिया जलाई और नई प्रकार से कानून की उपेक्षा की । इन सब बातो का कारण यह बा क उस विवाह में वर मुसलमान था और कन्या हिन्दू । कहा जाता है नि प्रादेशिक काग्रेस के अधिकारिया ने और दिल्ली प्रदेश के मुरय-मन्त्री ने इस विवाह में सहयोग दिया। वर मुख्य-मत्री का निजी सचिव था और कन्या काग्रेस-दफ्तर में टाइपिस्ट का नाम करती थी। इन सब बातों से जनता ने,विशेषकर पुरुषार्थी भाइयो ने. यह अर्थ लगाया कि कांग्रेस और कांग्रेस सरकार ने जानबूस कर अपनी धर्मनिरपेक्षता का बिढोरा पीटन के लिए इस विवाह का विशापन किया। जनतत्र के युग में विरोधी पार्टियों ने सत्ताधारी दल को बदनाम करन के लिए इन सम्यो से पूरा लाग उठाया और वे दो-तीन दिन के लिए राजधानी के अमन को खतरे में डालने में सफल हो गए।

विवाह वैसे तो एक व्यक्तिगत प्रस्त हैं। रजामन्दी से कोई कहीं भी विवाह कर सकता है। इस विवाह में

दोनो पक्षा की रजामदी थी । हा,कन्या के पिता राजी नही थे. पर जैसा कि सुना गया था कि लडकी बालिंग है तय पिता की नाराजगी का कानुन की दृष्टि से कोई अर्थ नहीं । छेनिन प्रश्न उठना है कि क्या कानून और स्वतन्त्रता अपने आपमे सम्पूर्ण है ? कानन की अनमर्थता सवसम्मत है और एक व्यक्ति की स्वतन्त्रता वहा समाप्त हो जाती है जहा दूसरे भी नाक शुरू होती है अर्थात् स्वतन्त्रता अपन आप में स्वतन्त्र नहीं है, बल्कि दूसरी अनेक बातो पर निभंद है। हिन्दू मुस्लिम विवाह नोई गुनाह नहीं है, परन्त इस प्रश्न को लेगर भारत में जो कुछ हुआ वह सभी जानते हैं। उस बान को मुलाने लायन समय भी अभी नहीं आया है। इसके विपरीत उन माना को हरा रखने वाली वाते अभी तन मौजूद है। हमें खद है कि दिल्ली काग्रेस के अधिकारिया न इस मोटे से तथ्य को भूला दिया और वे लोग ऐसी वाते कर बैठे जिनको करन का कानुनी अधिकार तो उनको या, पर जिनका परिणाम उनके लिए बरा हो सक्ता था और ऐसा ही हुआ ! हम विरोधी दल बालो की बास नहीं करेंगे। उ हाने वहीं किया जो वे कर सकते थे। किसी भी की मत पर वे वर्तमान शासन को उलाड फैरना चाहते हैं । ऐसी स्थिति में क्या शासक वर्ग की सत्ता का गर्व प्रकट करना उचिन होगा? क्या वास्तविकता को भूत जाना होगा और आचार्य हुपलानी की भाति यह मान लेना होगा कि साम्प्रदामिकता गाधीजी के साय मर गई? हमारा विचार है कि साम्प्र-दायिकता केवल दवी है और हमारी जरान्सी असावधानी से वह कभी भी सिर उठा सकती है।

ह्मारा इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है नि यह विवाह जब नहीं होगा और न हम उन कारणा की छान- बीन करना बाहते हैं जिनसे छड़नी ने विवाह करने के इस ना स्वाह करने हैं जिनसे छड़नी ने विवाह करने जो छोन सीमाप्य से जाव अधिकारी या शासक है वे यह समझ के नि उनसे किसी बाम का परिचाम अब बेनल उन्हीं पर नहीं पड़ने बाजा है। उनसे साथ उनका सम्मुन्दुन्द है समुवा देश हैं। यहीं नहीं, कभी-नभी छोटी-छोटी बानो से विवास में हन्यक मन जाती है।

( श्रेष पूष्ठ २८३ पर )

#### हिन्दी का सचित्र मासिक

पुष्ठ संख्या ८०

क ल्प ना

वाषिक ज्ञुल्क १२) एक प्रति १)

( साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक )

# पढ़िये

जिसमें उच्चकोटि के साहित्यिकों और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी। अपनी गंभीर और सुरुचिपूर्ण सामग्री व रूप के कारण सरकारी विभागों द्वारा मान्य

संपादक मंडल

द्रं डा॰ आर्येन्द्र शर्मा (प्रधान सम्पादक) द्रं मधुसूदन चतुर्वेदी द्रं बद्रोविशाल पित्ती द्रं वृन्दावनविहारी मिश्र द्रं मुनीन्द्र द्रं कला-सम्पादक—जगदीश मित्तल

विशेष परिचय के लिये हमें लिखिये:

'कल्पना' कार्यालय, ८३१ वेगमवाजार, हेदरावाद (दित्तिण)

# हिन्दी में अर्थशास्त्र की एकमात्र उत्कृष्ट पत्रिका

# सम्पदा

वाषिक मृत्य ८)

#### सम्पादक--श्री कृष्णचंद्र विद्यालंकार

साहित्य, कहानी, राजनीति और समाज-सम्बन्धी अनेक हिन्दी पत्रिकाएं होते हुए भी अर्थशास्त्र की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका केवल 'सम्पदा' है। आर्थिक, औद्योगिक, व्यापारिक विषयों पर विद्वत्तापूर्ण लेख और आंकड़ों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्तम्भ पत्रिका की विशेषता हैं—

वैंक और वीमा हमारे उद्योग व्यापार और वाणिज्य

श्रमसमस्या वाजार की गतिविधि अर्थवृत्त-चयन कृषि और खाद्य अध्यक्ष के पद से

विद्यार्थियों के लिए

विविच राज्यों की आर्थिक प्रवृत्तियां

आपका निजी या सार्वजनिक वाचनालय 'सम्पदा' के बिना अपूर्ण है। जल्दी ग्राहक बनिये।

# अशोक प्रकाशन मन्दिर

रोशनारा रोड, दिल्ली

तार . हिरवी
ग्रजन्ता ===
: मासिकः
प्रकाशक : हेंदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, हेंदराबाद (दिच्चिए)
त्रकाशक र १९९१वाच स्वतंत्र स्व
मूल्य : ९-०-० भाग मु० वार्षिक
किसी भी मास से ग्राहक बना जा सकता है
क्टल विशेषनाए
र उस्त कोटि का साहित्य २. सुन्दर और स्वच्छ छपाई ३ क्लापूर्ण वित्र
सपादक
श्री वंशीघर विद्यालंकार श्री श्रीराम शर्मा कुछ सम्मतिया
30 444/41
भ "अजन्ता का अपना व्यक्तित्व है।"—अनारसीदास चतुर्वेदी
<ul> <li>"अजनता को अपना (अकार) के ।</li> <li>"अजनता मुन्दर और स्वच्च पिक्वा है।"—दिनकर</li> <li>"अजना मुन्दर और स्वच्च पिक्वा है।"—नामुदेवरारण अप्रवाल</li> <li>"अजना सादित्य का नवा क्रव्युवत है।"—नामुदेवरारण अप्रवाल</li> <li>"अजना सादित्य का नवा क्रव्युवत है।"—नामुदेवरारण अप्रवाल</li> </ul>
इ. "अजन्म क्षित्रिय वा नया वरपवृत्र है।"—नामुदेवरारों अभवाल इ. "अजन्म हिन्दी की सर्वभेष्ठ मासिक पविकासों म से एर है।"—करहैयाजल मागेवलाल मुनगी
B state to the state of the sta
क्रिकेट जिल्ली पस्तक सन् ५२ का नया संस्करण
अत्यन्त सस्ती और निराली पुस्तक : सन् ५२ का नया संस्करण
प्रकाशित हो गया 🐧
प्रकाशित हो गया सचित्र कौन क्या है ?
प्रकाशित हो गया सचित्र कौन क्या है ?
प्रकाशित हो गया सचित्र कौन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)  हम्मादक रामनाय गुप्त बी. ए.: प्रेमनारायण बग्रवाल एम. ए
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)  समाय रामनाय गुप्त बी. ए.: प्रेमनारायण अग्रवाल एम. ए हिन्दी में ऐसी पुस्तक आज तक नहीं छपी जिसमें देश के सभी प्रकार के
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)  समाय रामनाय गुप्त बी. ए.: प्रेमनारायण अग्रवाल एम. ए हिन्दी में ऐसी पुस्तक आज तक नहीं छपी जिसमें देश के सभी प्रकार के
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)  सम्मादन  रामनाय गुप्त बी. ए.: प्रेमनारायण बग्रवाल एम. ए हिन्दी में ऐसी पुस्तक बाज तक नहीं छपी जिसमें देश के सभी प्रकार के प्रमुख व्यक्तियों का संक्षिप्त जीवन परिचय हो  क्रिक्ट एवं समुद्ध में: १३४ पुष्ठ. अनेक फोटो: कीमत अत्यन्त अल्प: केवल ३।)
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)  सम्पदम  रामनाय गुप्त बी. ए.: प्रेमनारायण अग्रवाल एम. ए हिन्दी में ऐसी पुस्तक आज तक नहीं छपी जिसमें देश के सभी प्रकार के  प्रमुख व्यक्तियों का संक्षिप्त जीवन परिचय हो  मासिक पत्र साइज में: १३४ पृष्ठ. अनेक फोटो: कीमत अत्यन्त अल्प: केवल ३।)  शीध मंगाइये,
प्रकाशित हो गया सचित्र कीन क्या है ? (Illustrated Hindi Who's Who)  सम्मादन  रामनाय गुप्त बी. ए.: प्रेमनारायण बग्रवाल एम. ए हिन्दी में ऐसी पुस्तक बाज तक नहीं छपी जिसमें देश के सभी प्रकार के प्रमुख व्यक्तियों का संक्षिप्त जीवन परिचय हो  क्रिक्ट एवं समुद्ध में: १३४ पुष्ठ. अनेक फोटो: कीमत अत्यन्त अल्प: केवल ३।)

कोन : ५४५०

## सचित्र त्रैमासिक 'इतिहास' का नया आयोजन

# 'दक्षिण सारत विशेषांक'

१ अगस्त सन् १९५२ को प्रकाशित हो रहा है। १२५ पृष्ठों की सुपाठ्य सामग्री, अनेकानेक चित्रों से सज्जित, आकर्षक मुखपृष्ठ, मूल्य केवल वारह आने।

अन्य विशेषांकों के समान प्रस्तुत विशेषांक भी गणमान्य विद्वानों के लेखों से सिज्जित रहने के कारण स्थायी साहित्य की सामग्री से परिपूर्ण होगा। वार्षिक शुल्क ३) रु० प्रेनित कर शीघ्र ही अपना नाम वार्षिक ग्राहकों की मूची में दर्ज करावें। विज्ञापनदाताओं के लिए स्वर्णिम अवसर हैं।

भारत की सांस्कृतिक एकता को चिरस्थायी रखने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि इसके विविध भागों के बारे में पर्याप्त जानकारी हो । इस समय दक्षिण भारत के विवय में सर्वसाधारण जनता में बहुत कम ज्ञान है। इसी उद्देश्य से 'दक्षिण भारत विशेषांक' के प्रकाशन का निश्चय किया गया है।

तामिलनाड, आन्ध्र, कर्णाटक, केरल—दक्षिण में भाषानुसार चारों प्रांतों की ऐतिहासिक भूमिका, भूगोल एवं सीमाएं, जनसंख्या, साहित्य, सामाजिक जीवन (भोजन, वस्य, खेल, सामाजिक संस्थाएं एवं रिवाज), जनता की आर्थिक स्थिति, राजनीतिक समस्यायें, सांस्कृतिक संघर्ष, विगत एवं वर्तमान शती के महापुरुषों की जीवन-झांकियां तथा अन्यान्य रोचक एवं महत्वपूर्ण जानकारियों से यह अंक परिपूर्ण होगा।

'इतिहास' कार्यालय, कटरा विड्यान, दिल्ली–६

	विहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और वड़ोदा के शिक्ता-विभाग से स्वीकृत
	् किशोर
	विद्यार्थियों और किशोरों को लोकप्रिय और ज्ञानवर्द्धक पाठ्य-सामग्री देने वाला - हिन्दी-संसार में अपने ढंग का अकेला मासिक
•	'किशोर' विज्ञान, भारत की प्राचीन संस्कृति, साहित्य, व्यायाम और स्वास्थ्य आदि विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में किशोरों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करता है।
0	अपने पाठकों को मानव-जीवनकम का, विश्व के इतिहास का, विज्ञान के शोधकों, ग्रहलोक की मनोरंजक कहानियों और साहसिकों के कीतूहलपूर्ण रोमांचक प्रसंगों का परिचय कराता है।
•	नये-नये विषयों से पूर्ण, अद्यतन अनुसंघानों के आधार पर रचित कहानियां देना 'किशोर'की अपनी विशेषता है।
•	प्रेरक कविताएं, आदर्श जीवन-कथाएं, प्रकृति का सजीव वर्णन, यात्रा-विषयक छेख 'किशोर' के प्रत्येक अंक में रहते हैं।
•	प्रति वर्ष विशिष्ट पाठ्य-सामग्रियों से विभूषित और अनेक चित्रों से सम्पन्न विशेषांक निकालता है।
	'किशोर' के कुछ महत्वपूर्ण विशेषांक
का	लिंदासंक-१) गांधी अंक-१।) भारतांक-१) रवीन्द्र अंक-॥।
पटे	ल अंग—।=) उपकयांक—।।) विक्रमांक—।।) स्वावीनता-अंग—।।।)
	वापिक मूल्य '८) : एक अंक का ।=}
•	वाल-शिचा-समिति वाँकीपुर (पटना)



इस अक के विशेष लेख

🦫 ईश्वरीय प्रेरणा 🔊 भविष्य की दृष्टिसे

- 🤋 श्री जाज अरटेल
  - चापू की अहिमस राज्य-गर्जान अग्रदत
- , अप्रद्रा ) जीवन की गहराई म

स म्पा द क हरिभाऊ उपाध्याय : यशपाल जैन

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

एक प्रति की

9		_
7	10	. च
1.1	12	(2)

11	15 /5/ 11	
१. परमहंस के उपदेव	a •••	२८९
२. ईइबरीय प्रेरणा	विनोवा	560
२. भदिष्य की दृष्टि		
_	काका कालेलकर	२९३
४. थी जाजं अरंडेल		
	—हरिभाऊ उपाध्याय	२९५
५. उच्च शिक्षा में ए		
	–शंकरदेव विद्यालंकर	२९८
६. आदमी की हमारे		
	तमनारायण उपाच्याय	500
७. बापू की अहिसक		
	-कंचनल्ता सध्यरवाल	००ई
८. 'शा रेना'	—-सिद्धराज दहा	३०२
९- अग्रह्त	—देवराज दिनेश	इं०३
१०. जीवन की गहरा	ई में	
•	—हरिभाऊ उपाध्याय	305
११- कहीं हम भूल न	जायं !	330

(3)

गमालोचनाएं

हमारी राय

228

३१६

२॥)

१२. गर्गोडी पर

१३. वया व कंसे ?

## 'जीवन-साहित्य' की फाइलें और विशेषांक

हमारे स्टॉक में 'जीवन-साहित्य' की निम्निलियत फारकों और विशेषाकों की कुछ प्रतिया जेप हैं : १९ (६ की फाएल, विभिन्द ८) मिल्द ५) " (छ. अंकों की) " 1774 (11)

६७७६ ₹) 33.16 8) 8080 8)

7940 と) 4) १६५१ 11)

विशेषांक

अमनालाल-स्मति-अंक 11) प्रार्तिक निकित्सा अंक (परिकिष्टांक सहित)

२१) विरव-सांति अंद्र (H)

मंगानं में विलम्ब न कीजिये ।

तस्ता लाहित्य मण्डल, नई दिल्ली

# 'जीवन-साहित्य' के नियम

- १. 'जीवन-साहित्य' प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में प्रकाशित होता है। १० तारीय तक अंक न मिले तो अपने यहां के पोस्टमास्टर से मालूम करें। यदि अंक डाकखाने में न पहुंचा हो तो पोस्टमास्टर के पत्र के साथ हमारे कार्यालय की लिखें।
- २. पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या अवश्य दें। उससे कार्रवाई करने में गुगगता और गीव्रता हो जाती है।
- ३. बहुत से छोग ग्राहक किसी नाम से होते है और आगे का चंदा किमी नाम से भेजते हैं। इससे गड़बड़ी हो जाती है। इस सम्बन्ध में मनीआउर के कपन पर स्पप्ट नूचना होनी चाहिए।
- पत्र में प्रकाशनार्थ रचनाएं उसके उद्देश्य के अनुकृष्ट ही भेजी जायं और कागज के एक ही और साफ़-साफ अक्षरों में छिखी जायं।
- ५. अरबीकृत रचनाओं की बापगी के लिए साथ में आवश्यक टाक टिकट आने चाहिए।
- ६. समालोबना के लिए प्रत्येक प्रत्वक की दो प्रतियां भेजी जायं।
- ७. पत्र के ग्राहक जुटाई और जनवरी में बनाये जाते हैं। बीच में रुपया भेजने वालों को मूचना दे देनी चाहिए कि उन्हें निछले अंक भेज दिवे जायं या आगे ने ग्राहक बनाया जाय।

---च्यवस्थापक

0

नोट--ग्राहकों से निवेदन है कि यदि उनके पते में कोई बृटि हो तो उसकी सूचना तुरन्त हमें देकर ठीक करा हैं, जिसने पत्र उन्हें समय पर मिलता रहे।

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश क्या विद्वार प्रादेशिक सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाइमें रियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम-पंचायतों के लिए स्वीकृत



#### परमहंस के उपदेश

जल में नाव रहे तो कोई हानि नहीं, पर नाव में जल नहीं रहना चाहिए। साधक सत्तार में रहे तो कोई हानि नहीं परन्तु साधक के भीतर ससार नहीं होना वाहिए।

स्वच्छ वस्त्र में कोई भी स्वाही का दाग पडने से वह दाग बहुत स्पष्ट दीखता है उसी प्रकार पित्रत्र मनुष्यो का बोडा दोष भी अधिक दिखलाई देता है।

धर्माचरण वलात् नही कराया जा सक्ता। धर्म-पिपासा जाग्रत होने पर जीव स्थय ब्याकुल हो धर्मान्वेपण करता है और वैसे आचरण ये प्रवृत्त होता है। धर्म-साधन कर्तेच्य है यह बात उसको स्मरण नही करानी पडती।

पुस्तक ह्वार पढ़ो, मुख से हवार क्लोक कहो, पर व्याकुल होकर उसमे हुवकी नहीं कृगाने से उसे पान सकीये।

पूर्व दिशा की ओर जितना ही चलोगे परिचम दिशा उतनी ही दूर होती जायगी। इसी प्रकार घर्म-पथ पर जितना ही जग्नसर हीने ससार उतनी ही दूर पीछे खूटता जायगा।

मैंने आज जो काम उठाया है, वह भी मजदूर-आंदोलन ही है। जो सबसे कमजोर है, जो वेजमीन है, वेजबान है, उनका यह आंदोलन है। अक्सर मजदूरों के आंदोलन गहरों में होते हैं। यूरोप में किसानों के भी आंदोलन हुए है; लेकिन हिन्द्स्तान में ज्यादातर शहरों में ही ऐसे आंदोलन हुआ करते है। गांव के मजदूर अत्यन्त असंगठित हैं। उनमें जाग्रति नहीं है उन्हें शिक्षा मिलती नहीं। उनके पास सिवा खेती के दूसरा कोई घंघा भी नहीं है और जिस खेती पर वे काम करते हैं उसके वे मालिक नहीं है। खेती के ये जो मजदूर है, जो सबसे नीचे के तबके के है और समाज की श्रेणियों में सबसे निकृष्ट है उनका सवाल मैने उठाया है। जो सबसे नीचे के स्तर के होते है उनका सवाल उठाना ही सर्वोदय का और अहिंसा का तरीका है। क्योंकि जो सबसे आखिर का है, उसे ऊपर उठाना चाहिए। फिर उसके साथ बाकी के भी ऊपर उठ जाते है। जो उनसे ऊंचे हैं उनके लिए फिर स्वतन्त्र आंदोलन नहीं करना पड़ता। मुझपर आक्षेप किया जाता है कि मैं सिर्फ नीचेवालों को ऊपर उठाने की बात करता हूं। पर समुद्र-स्नान से सब निदयों के स्नान का पुण्य मिल जाता है, फिर निदयों में अलग स्नान करने की जरूरत नहीं पड़ती। उसी तरह यह काम है, बगर्ते कि उस काम को करने का ढंग ऐसा हो कि जिससे एक को लाभ और दूसरे को हानि न पहुंचे। अगर हम ऐसा तरीका अख्त्यार करते है, तो नारा-का-सारा समाज ऊंचा उठता है। सर्वोदय या अहिमा का तरीका ऐसा है कि जिसमे वाकी के सब लोग स्वयं ऊंचे उठ जाते हैं। किसी ने मुझसे पूछा था कि आप मन्यम श्रेणीवालों के लिए या शहर के मजदूरों के लिए क्या कर रहे हैं ? उन समय मैने मजाक में कह दिया था कि दुनिया के सब मनले हल करने का मैने ठेका नहीं लिया है। लेकिन वह तो विनोद था। 'एक साथे सब सथे, सब साथे सब जाय' इस तरह मैं तो एक वातावरण निर्माण करना चाहता हं, जिमसे कि समता, न्याय, भूतदया और सहान्-भूति की हवा फैल जाय और उनसे दाकों के मसले अपने-

आप हल हो जायं। यदि न भी हों तो केवल जरा-सा आंदोलन करके ही वे हल किये जा सकें।

मेरे काम की ओर देखने की अनेक दृष्टियां हैं। लेकिन सई-दिवस के निमित्त मैंने यह एक दृष्टि आपके सामने द्यों कि मेरा आंदोलन 'मजदूर-आंदोलन' है। मैं खुद अपने को मजदूर मानता हूं। मेरे जीवन के वत्तींस वर्ष जो जवानी के "वेस्ट ईयर्स" (सर्वोत्तम काल) कहे जाते हैं क्षे मैने मजदूरी में विताये। मैने तरह-तरह के काम किये हैं। समाज जिन कामों को हीन और दीन मानता है, जिनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है-यद्यपि उनकी आवश्यकता बहुत है, ऐसे काम मैने किये है । भंगी-काम, वुनायी-काम, बढ़ई-काम, खेती आदि । आज गांधीजी नहीं हैं, इसलिए मैं बाहर निकला हूं। अगर वे होते तो मैं बाहर कभी नहीं आता, और आप मुझे किसी मजदूरी में ही मग्न पाते। कर्म से मैं मजदूर हूं, यद्यपि जन्म से ब्राह्मण याने ब्रह्म-निष्ठा और अपरिग्रही हूं। ब्रह्मनिष्ठा तो मै छोड़ नहीं सकता। किसी भी काम की ओर देखने की हरेक की अपनी अलग-अलग दुष्टि होती है। तुलसीदासजी ने लिखा है कि जहां राम खड़े हुए थे, वहां उनको देखनेवाले जिस तरह के लोग थे, उस तरह से उन्होंने राम की ओर देखा-"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मुरत देखी तिन तैसी।" जो काम व्यापक होते है, उनके अनेक पहलू होते है और इसीलिए उनकी ओर कई दृष्टियों से देखा जा सकता है। मेरे काम से भूमि की समस्या हल हो सकती है, अन के उत्पादन में वृद्धि हो सकती है, न्याय वढ़ सकता है, ग्रामों की संगठना हो सकती है, राज-कारण पर उसका अच्छा असर हो सकता है, लोगों में धर्म-भावना का विकास हैं। मकता है तथा लोगों की अविकसित और गुप्त वर्म-भावना को, दान और दया करने की वृत्ति को बाहर लाया जा सकता है। मेरे काम की, वह धार्मिक और भारत की पद्धति के अनुकूल कार्य है इस दृष्टि से भी, देना जा सकता है और इसे एक वड़ा मारी मजदूर-आंदीलन भी कहा जा सकता है।

हाय में लेनी होगी। जो लोग खेनी में मजदूरी करने है परन्त बेजमीन है, उनका प्रश्न उठाना होगा। मुझमें ताकत नहीं थी, लेक्नि फिर भी मुझे वह बाम लेना पड़ा, बयोबि नहीं तो में इरपोन सावित होता और धर्म को मूलता। मैंने सीचा नि जब परमेश्वर मुझे यह प्रेरणा दे रहा है, तब इम काम को पूरा करने की तावत भी वही देगा ! यह मानकर मैने इस नाम को उठाया । ईश्वर पर याने आप सदपर श्रद्धा एवं के मैने यह वाम लिया है। जो परभेश्वर मुझे मागने की प्रेरणा दे रहा है, वह आपको देने की प्रेरणा भी देगा । वह एनतरफा नही, बल्कि ध्यापक है और सोचनेवाला है। अहिंसा का यही तरीका है। दिनया के कई देशों में खेती के मजदूरों के आदोलन पले। लेनिन भारत में रिसी ने उनकी ओर ध्यान नही दिया । सिर्फ कम्युनिस्टो ने तेलगाना में उनकी ओर ध्यान दिया । बाकी तो सब शहर के मजदूरो के आंदोलन है । इतिया में हरेंक ने अपने अपने दन से इस सवाल को हल किया है। लेकिन उनका तरीका वेडगा है। मे उसे नहीं चाहता है। मैं मानता हूं वि उससे दुनिया€्र मला नहीं हुआ और नभी होगा भी नहीं। में मानता हू कि भारत के लिए वे तरीके नुकसान पहुंचाने वाले हैं मेरी, या हमारी, या मारत की एक विशेषता है। मैं तो इन तीनो को एक ही मानता हूं । हमारा अपना एक विशेष सरीवा है। मुझे कल किसी ने कहा कि जबईस्ती से जल्दी जमीन मिरु सकती है। मैने कहा कि मै जबईम्ती नहीं चाहता । मेरा नाम आहिस्ता श्राहिस्ता बले ता कोई हम नहीं, लेकिन वह मेरे तरीके से हाना चाहिए, हिसक तरीके से नहीं । मेरा तरीका वहिमा का, सर्वोदय

का, भारतीय सस्कृति का तरीका है। यदि घी के डिब्बे

यह सब मैने किया नहीं है, मुझे करना पडा है।

हैदराबाद के सर्वोदय-सम्मेखन के बाद एक बहिनक

निरीक्षक के नाते में तेलगाना गया था। वहा के आतक को

नष्ट करने के लिए सरकार सालाना पाच करोड रूपया

खर्चे नरती थी फिर भी बह नष्ट नही हुआ था। इनलिए

बहिसा बहा कैसे काम कर सकती है. यह देखने के लिए मे

नम्म भाव से गया । भैने वहा की परिस्थिति देखी और

मुझे मानो सूचना मिली कि मुझे कितानो की समस्या

को जाग रुपाई जाय तो घी जल जाता है। और वेद-मत्र ने साथ यत में उस घी की आहति दो जाय, तो भी घी बलता है। दोनो में घो बलता ही है, लेकिन एव से मादना जरु जानी है और दुनिया सत्म हो जानी है, दूसरे से भावना पावन हो जानी है। हिमक तरीके से एक मसला हल करने से दूसरे मसले निर्माय हो जाते हैं। हिंसक तरीने से नई-नई तकलीकें पैदा होती है। हमने बाजादी हासिल करने के लिए जो तरीका उठाया था, वह यही निर्माश हो स्वा, क्यांकि वह भारत की सम्यना के अनकल या और उसके लिए हमें मुयोग्य नेता भी मिला या । वैसे ही विशुद्ध तरीके से हमें और भी सभी मसले हल करने है। उपनिषदीं में कहा गया है कि हि अग्निदेव, हमें सुपब से के जाओ, बुरे रास्ते से नही । हमें केवन स्वमी नही चाहिए, बल्क वह मुपथ से चाहिए।' कुरान में भी यह कहा गया है कि 'इहदिनम् सिरातल मस्तकीन, निरातत्र लखीन अनुजम्त अलैहिम-हे भगवार । हमें सिर्फ मीबी एह चाहिए। गलत राह से हम मुशाम पर नहीं पहुन सकते। वसी-वसी यह आमास होता है कि हम मुकाम पर पहुंच गये हैं; परन्तु असल में जात में जाने के बजाय हम जहन्म में पहच जाने है। इसल्लिए हम सीबी राह से या सूपय लेकर आदर्भ की तरफ पहचना चाहते हैं।

सकता। राम के खिलाफ रावण लड़ नहीं सकता। लेकिन अर्जुन के खिलाफ यदि भीष्म का नाम लिया जाय, तो युद्ध हो सकता है। अच्छे गव्द के विरुद्ध अच्छा गव्द लाकर ही युद्ध हो सकेगा। राम-रावण की लड़ाई एक अजीव वात है। यदि हम कहे कि सूर्य और अंवकार की वडी भारी लड़ाई हुई, जिसमें अंबकार के समूह के समूह मूर्य पर दूट पड़े और सूर्य की किरणों ने उनको नष्ट किया, तो यह केवल वर्णन ही होगा; वयोंकि सूर्य के उदय के नाय ही अंबकार को नष्ट होना पड़ना है। उसी तरह राम का उदय होने के साय ही राव: यत्म हो जाता है। सूर्य के सामने अंथकार टिक नहीं नकता, राम के सामने रावज टिक नहीं सकता। और 'समता' के मामने 'असमता' भी टिक नहीं सकती। लेकिन जब हम 'समता' के मामने 'क्षमना' खड़ी करते हैं, तो युद्ध होना संभव है। 'क्षमता' में विश्वान करने वाले कहते है कि 'क्षमता के लिए जमीन के बड़े-बड़े ट्कड़े होने चाहिए।" तो भिन्न विचारवाले नया विचार प्रगट करते हैं कि हम ऐसी कुश रता से 'समता' लानेगे कि उसमें 'क्षमता' भी होगी। जहां 'समता' है, वहा 'क्षमता' भी आयेगी। यत योगेरवरो कृष्ण, यत्र पार्थो धन्धरः।

मजदूरों के सवाल को एकांगी ढंग से जीर हिंसक तरीके में हल करने की कीशिश करनेवाले कभी कामयाब नहीं हो नकते। उसमें तो हानि ही होगी। में ऐसी कुशलता से यह काम करना चाहना हूं कि 'समता' की तो रक्षा हो नके, पर ऐसे टग में कि मजदूरों का दुःम तो नष्ट हो, पर अमना और दूसरे अन्य गुण भी कायम रहे।

अाज नारा भारत मजदूर बन गया है। भारतवामी अपनी बृद्धि का उपयोग करना नहीं जानते। लाखों को हमने शिक्षा ने बाचत रखा है। वे सब धन-मान-जान बिहीन हैं। फिर उनमें 'धमता' कैने आयगी? आज गाव में अच्छा बटर्र भी नहीं मिलता। यदि चर्चे का कोई नया माठेल बनाना हो,तो गाव का बटर्ड वह नहीं बना नकता। उनके लिए हमें पाच नाल उने नालीम देनी पड़ती है। हमारा कारीगर-वर्ग 'धनिस्कल्ट मजदूर' है, जिने न जान है, न प्रतिष्टा है, न ध्येय है। पूजीबादी नमाज में अनमर कुट तो ऐने होते हैं जो दिमान का ही काम करते

है, और कुछ यंत्र के समान काम करते हैं जो अपनी अकल का उपयोग नहीं कर सकते। किसोको चाकू में छेद गिराने का काम दिया जाय, तो रोज पांच हजार चाकुओं में वह छेद गिराता है और जिन्दगीभर यही काम करता रहता है। वे लोग कहते हैं कि इस तरह से काम दिया जाय तो 'क्षमता' और 'कुजलता' पैदा होती है। वे मनुष्य के जीवन को सर्वाङ्गोण वनने नहीं देते। पूजीवादी समाज में कुछ तो 'हैइस' वनते हैं, जैसे 'हइमास्टर,' 'हेडक्लकं' वगैरा। इसका मतलव यह है कि इघर सारे सिर ही मिर, चाहे वह 'सिरजोर' क्यों न हो, और उघर सारे हाथ ही हाथ! और उनका कहना है कि इममे क्षमता आती है! सर्वाङ्ग-परिपूर्ण मनुष्य उनकी दृष्टि से क्षमता के खिलाफ है।

चातुर्वर्ण्य में भी कुछ लोगों ने ऐसी कल्पना कर रखी थी कि भंगी का काम ब्राह्मण नहीं करेगा। लेकिन वह गलत है। चातुर्वर्ण्य का सच्चा अर्थ यही है कि चारों वर्णों में चारों वर्ण होते है, लेकिन किसी एक काम की प्रवानता होती है और वाकी के गीण होते है। भगवान् कृष्ण युद्ध के समय केवल लड़ते ही नहीं थे, बल्जि घोड़ों को घीने का भी काम करते थे। उस समय उन्होंने यह नहीं कहा कि यह तो क्षत्रिय का काम नहीं है। और जब अर्जुन का मोह-निरास करने की बात आई, तब उन्होने वह भी काम किया। अर्जुन से यह नहीं कहा कि यह तो बाह्मण का काम है, इसलिए तुम अपनी शंका लेकर किसी ब्राह्मण के पास जाओ। कृष्ण भगवान् तो मौके पर ग्वाल वनते थे, मीके पर ब्राह्मण,मीके पर बूद्र । क्षत्रिय तो वे थे ही । इसलिए लड़ने का काम तो उन्हें करना ही पड़ता था। तो चातुर्वण्यं में हरेक के लिए एक प्रवान काम होता है। वह उसे करना ही पड़ता है। लेकिन बाकी के काम भी वह करता है। एक वार किसी गणित के प्रोफेसर से पूछा कि फैजावाद स्टेशन कहां है ? तो उसने कहा, मै जाग्रफी (भूगोल) नही जानता । अगर वह इस तरह से कहे, ता वह अच्छा नागरिक नहीं वन नकता । गणित का प्रोफेसर होते हुए भी उने भूगोल का इतना तो सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए। बास्त्रों में कहा गया है कि "धर्मोयम् नार्व

#### भविष्य की दिष्टि से : काका कालेलकर

विणिका " सबके लिए समान गुण आवस्यक है। फिर भी हरेक के अपने-अपने वर्ण के अनुसार अलग-अलग गुण भी होने हैं। विरोपता नामम रसते हुए सबको पिपूर्ण मानव बनाना उसका उद्देश्य हैं। सबको मन, हाम, सिर अस्म करवाय विशेष में ये हैं। इसलिए सबको समी अहाम करना चाहिए। फिर भी वह निसी एण नाम को प्रधानता से सहता है।

मैं चाहता हूं कि माजिक और मजदूर का मेद पिट जाय । जिसका मतलब यह नहीं कि हम माजिक की अक्ट का उपयोग नहीं करता चाहते । आ माजिक होगा, कह मजदूर भी होगा और जो मजदूर होगा वह गाजिक भी होगा। कुछ तो 'माजिक-अमान मजदूर' ऐहीं, जो हाय का काम करते हुए भी दिमाय के काम को प्रधानता देंगे और कुछ 'कजदूर प्रधान माजिक होगे, जो दिमाय का काम करते हुए हाय के काम को प्रधानता हैंगे। 'बुढिसमान घारीर-अम करनेवाले' और 'जम- प्रयान बुद्धि का काम फरनेवाले,' ऐसी व्यवस्था समाज में होनी चाहिए । व्यार अमवान् मह नही चाहता तो मुछ को तो वह हाय-ही-हाय देता और कुछ को केवल बुद्धि ही देता। राहु और केनु के समान सबको अपूर्ण बनाता। पर उसने सबको परिपूर्ण वनाया है, इसिंग्ए कि सब परिपूर्ण चीकन विना सके।

हम मालिक-मनदूर-भेद मिटाना चाहने है, पर इसका सर्व यह नहीं कि मनदूर वी धम-शिनन का सा मालिक की ध्यवस्था-धिनन का हम दिनास नहीं चाहते ? हम दोनों की दोनों तरह की धिनायों नात्रत करता चाहते हैं। हम 'समता' लाता चाहते हैं और 'क्षमता' को और देखिये और यदि यह काम आपको जब जार, की और देखिये और यदि यह काम आपको जब जार, की जपना काम समझ कर उसे उटा लीजिये तथा इस काम में युद्ध याहते।

#### काका कालेलकार

भील लोगों ने जीवन में कुछ विवेदनाए है। उनका महति के भीन प्रेम हमारी काव्य रिक्वता के जिनका छिछला नहीं होता। मध्यिनों ने लिए पानी की जितनी आवस्यकता होती है उतनी ही आवस्यकता भीलों के लिये प्राकृतिक स्वाधीनता की होंगी है।

सामाजिक मुषारी ने हमारे कुछ वन्न-से-उन्न मादवाँ को तो भील जाति ने अपने जोनन में महुके ते ही जाता है ! नोई सरमाजिक पर्वे जोनन में महुके ते ही वहाता है ! नोई सरमाजिक पर्वे एक क्या क्या कर कर पर्वे हुई है ! स्वामाजिक पर्वे एक्सिय स्वा मांक दिल उदार और प्रेमक होता है ! उसकी सबसे वही महिजाय सह है कि उसे प्रांत समाज में हिजायल जाना नहीं साता ! प्रगत समाज को वालने के लिए बहु उल्लुक रहुता है, नेलिन जीवन-करह में बहु बेबारा हमारी जीवन प्रणाठी से टक्सरो दिना पही रहुता ! हमसे प्रथ

#### भविष्य की दृष्टि से

हमारी जीवन-मद्धित से मेल नहीं लाने, इमलिए बह और भी मुझला उठडा है। बन भील की शिक्षा ना मुख्य अस तो हमारी जीवन-प्रणाली के साथ उत्तक्षा अच्छा परिचय करा देना है।

पिर भी हमें यह नहीं मूलना चाहिए कि ऐसा करते से इस एक तरह से भगनान का अगराम करते हैं। भगनान नै भील तरहति को अगसी सृष्टि में स्थान दिया। उत्त सुरुक्ति को रहते हैंने जिलको नि सृष्ट स्टरण्या हस्से नहीं हैं स्त्रीलए उसे पर्यम्यट्ट विश्वे बिना कोई चारा नहीं हैं। भीकों को इस अपने जैसे क्याके ही छाउँगे; उन्हें सुकी भी करेंगे। भीक व्यक्तियों के प्रति हसारा स्थामाव विकस्तित होना। फिर भी हम पहंन मुने कि हस तो मील-सन्कृति कर नाया ही करने दें हैं।

सच्चे समाज-मुघारक की दीर्घट्टि अगर हमर्में हो तो भील-सस्हाति के गहरे प्राप्तत्वों का नारा हम न करें। अभी से इस सम्बन्ध में सुरुप विवार वारके इन तन्वों को बचाने और भविष्य के अबिक अच्छे जमाने तक उन्हें बनाये एकने का प्रयत्न हम करें।

भील लोगों का जीवन जांचने से ऐसा मालूम होता है कि उनका जीवन-तत्व, उनका जीवन-रस, उनके संगीत और नृत्य में उपरिथत है। हम देख सकते हैं कि भील को अपने संगीत और नृत्य में कितना मजा आता है लेकिन हम यह नहीं समझ सकते कि नृत्य-संगीत में उसे किस तरह का सुख मिलता है। यह नहीं कहा जा सकता कि कोई भील बालक बड़ा ढोल गले में लटका कर बंटों अकेला ही गाता-नाचता रहे तो उस दृष्य के पीछे के उसके जीवनान्द को हम समझ सकते हैं। हमारा संगीत का स्वाद जीवन का आहार नहीं, किन्तु सिर्फ मसाले जैसा है। हम उसकी भावनाओं को नहीं समझते, इसलिए उसे जंगली कहकर दिसाग से निकाल देने हैं।

अंग्रेजों ने संस्कृत भाषा और साहित्य की खोज की। उससे पहले उनकी दृष्टि में सारी संस्कृत-संस्कृति का अम्तित्व ही नहीं था। वे यह मानकर चलने थे कि अजीव लोगों के अजीव वहमीं से भरा हुआ यह कुछ जंगली साहित्य है। जैसे-जैसे उन्होंने संस्कृत का अध्ययन करना चुन्न किया वैसे-वैसे उन्होंने देख लिया कि मनुष्य-जीवन की सारी समृद्धि उसमें उपियत है। इनना ही नहीं विकि भारतीय संस्कृति उननी विद्याल और गहरी और स्वतन्त्र है कि अब भारतीय दृष्टि से जीवन का निरीक्षण-परीक्षण करके मनुष्य-जानि की यात्रा की दिशा फेरनी पड़ेगी।

भील-जैसी पिछड़ी माने जानेवाली जानि में जी नृत्य-संगीत चलता है उसकी रिमकता, उसका आनन्द और उसकी पुष्टि की जिस दिन हम समझ जायेंगे उस दिन शायद हमें लगेगा कि यह वस्तु पूर्णतया स्वतन्त्री और भायवाही है। इस वस्तु को अगर हम उनके जीवन में रहने न देंगे तो उनका जीवन उतनी मात्रा में बुटियुक्त या कंगाल माना जायगा।

आज हम यह मब नहीं समज सकते इसिलए हमारा कम से कम कर्तव्य इतना है कि हम उस नृत्य-संगीत को मरने न दें; उसे टिकाबे रखने के लिए जितनी अनु-बृल्ता पैदा कर सकें उतनी अवस्य करदें। भीलों को प्रगत जीवन में धर्मान्तरित करने से पहले उनना खयाल तो हमें रखना ही चाहिए कि उनकी यह विशेषता वती रहे। भारतीय जीवन-इप्टिका असर जिस तरह इस्लाम और ईसाई धर्म पर होने लगा है उम तरह भी हों के जीवन-रम का असर कभी-कभी हम पर जहर होता है। वह जाति आज बालक-दशा में हैं । दुनिया के प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी बालक-दशा में बहुत बार असहाय और अनघड़-जैसे मालम होने है। इसी तरह जायद भील जीवन के अनवर्षन में हमारी मंस्कृति की बिल्कुल स्वतन्त्र और अकल्पित तेज देने की शक्ति है। हम संस्कारी हैं; रुकिन उमी कारण कुछ हद तक क्षी प्रवीय भी हैं। जंगली कीमों के पास हमारे संस्कार न भी हों, लेकिन सारे जीवन की ओर नवीन दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति और शक्ति उनमें हो सकती है, और चूंकि उनकी प्राण-शक्ति खर्च नहीं हुई है, इमलिए जब वे अपर उठने का प्रयत्न करेंगे तब हन्मानजी की तरह अगर वे बड़े-बड़े उहुयन दुनिया को दिखायें तो उसमें क्या आश्चयं ? जबतक हम यह नहीं जानते थे कि खान में निकलनेवाले काले-कलूटे कोयले में कितनी अग्नि-शक्ति मीजूद है तवतक हमने उसकी कितनी कड़ की थी?

हम जानते हैं कि भीलों के संगीत तथा नृत्य में जो ताल होता है उसका असाधारण प्रभाव घरीर के ब्यापार एवं जान-तन्तुओं पर पड़ता है। जिस तरह प्राणायाम के हारा मनुष्य बजकाय बन सकता है उसी तरह विधिष्ट प्रकार के संगीत और तालबद्ध हावभावों से सामान्य घरीर से असामान्य काम निकालना संभव है—इतनी बात स्वीकार करने में कोई आपित्त नहीं होनी चाहिए। लेकिन आज हम यह नहीं कह सकते कि बह घिनत किस दिशा में विकसित होगी। संगीत-नृत्य की मिसाल यहां सिर्फ नमने के तीर पर की गई है। भीलों के जीवन एवं उनके जीवन-रस को हमें बड़े आदर के साथ खूब परयना चाहिए और उसमें बड़े-बड़े परिवर्तन करने से पहले यह जरूरी है कि सरजनहार जीवन-स्वामी से टरकर उसकी सृष्टि तथा योजना की गृहता को घ्यान में रसकर हम चलें।

(अनु० श्रीपाद जोशी)

#### श्री जार्ज ऋरंडेल

महात्माबी ने एन बार मुझक्षे बहुत था कि ये अवेब तो योगियों के मत्तान मालूम होते हैं । उनकी प्रवन्म-पट्ता, नियम्ति और व्यवस्थित जीवन, वार्य-दक्ता नियों योगों से कम नहीं । वस एक ही नवर है । तद यह कि इनका ज्यादा प्रयन्त दूसरो को शोषण करने का होता हैं। हुसरे मायनों में में उनको कमी-नभी राज्य की सन्तान कहा करता हैं। राज्य भी बड़ा विद्वान और तपस्थी था, अच्छा शासक और सफठनवनों था, परन्तु वह राज्य इसिक्ट कहाना वि हुसरों को सनाता था। किर भी अबदों से मुगो का मैं मक्त हैं और उनके मुशाबके में कई बार हिन्द्रसानियों की परिध्या पना ह।

स्वर्गीय श्री जार्ज बरडेल का ख्याल जाते ही महारामां में पूर्वीक वचन याद आ जाते हैं। फर्क हतना ही हैं कि अवेजों में हमरों का रोगण करने की जी हिए पाई जाती है, उससे श्री अरडल बिलकुल बरी थे। हतना ही नहीं, तस्त क्षेत्र कर से हित तक एक सेवामांवी, निर्णवान, उक्व कोटी ने साथक थे। विद्वान तो थे ही, लेकिन उननी दृष्टि में विद्वान का बजे जीवन-पुढि और जीवन मिदि के मुझाबल में पा अवकी हस विरोगना ने उन्हें के मुझाबल में पा अवकी हस विरोगना ने उन्हें कीरा विद्वान तहने रेवर चियोषकों की बहा-विद्या स्वयो सस्यो सम्बाद का अविरागन का हिया स्वयो सस्यो स्वयो सस्यो स्वयो स्वयो स्वयो स्वयो स्वया का अधिन्यता नवा दिया।

विद्वान् अनमर भीव होते हैं । उनका सास्त-सान उनके साहत की मद मर देल हैं। पर भी करहेल वहें साहती और निर्माल मदेल में। १९९१ की एम पटना मुझे बाद आती हैं, जबिक मैंने पट्टे पहले श्री अरहल के दर्धन बनारस के हिन्दू कालेज में किये थे। बहु उन दिनों इस मालेज में मितिपल थे। में उननी स्कूल-साला में एम विद्यार्थी था। महन्त के हैं हमास्टर पक इस्वालनारात्म मूर्ट्य। निस दिन से स्कूल में मनी होने के लिए गया, भी अरहेल और मुर्टू साहब को एन साथ टहलते हुए देला। दोनो मा रना गीरा था। भी मुद्द बिंद करोड़ी लिजास में होते, मूल मुद्दे हुए होते तो यह होते हिन मह सहसा दिन वह हिन्दुस्तानी हैं। दोनो टहलते हुए इस तरह काम मिला कर चलते से जैसे नोई
गत्नीत के पुतरे कर रहे हो। हास और पाव को गति
दोनों की एक समान थी। इसमें उनका कोई साद
प्रस्ता नहीं स्थाई देशा का सन्ति वह उनकी सादना ही
थी। इस वियोधता ने प्रथम दर्शन में हो मेरा ध्यात
खीवा और जेरे मन म सिश्मण-स्वाओं के अध्यापको
के जीवन में क्विती अनुमासन बढ़ता हानी चाहिए.
इनका दर्शन विया।

मेरे भनी होने के कुछ दिन बाद ही एक घटना हई जिसने भी भरडल के प्रति मेरी श्रद्धा बहुत बढा दी। उन दिनो भारत में बम पार्टी का बडा जोर या। ग्वालियर में एक पड्यत्र केम हुआ था, जिसमें बहा के विक्टोरिया कालेज के प्रोफेसर थी हरि रामधन्त्र दिवेकर की शायद डेद साल की सखा हुई थी। सजा काट कर वे दमारस आये और इस फिराक में य कि किमी कालेज से मनी होक्ट एम०ए० पास करलें। एम०ए० प्रीवियस वह कर चने ये और फाइनल उन्हें करना था। बनारस में उन दिनो दो ही कालेज ऐसे ये। एक सेंट्रल हिन्दू कालेज और दूसरा वदीन्स वालेज। बदीन्स वालेज में मझे जहातक बाद है, डा॰ बेनिम प्रिंसिपल थे। श्री दिवेकर जब और जगह से निरास होनर थी अरडेल के पास पह वे और अपना किस्सा बयान किया तो उन्होंने बड़ी सहानभृति दिवाई और फौरन भर्ती कर लेने का आस्वासन दिया। जब मुझे यह मालम हुआ तो मेरे मन ने वहा कि यह शिक्षण सस्या वयार्थ में शिक्षण सस्या है, जहां साहस व निर्मीकता की शिक्षा सर्वप्रयम दी जानी है । उन दिनो एक शिक्षण सस्या के लिए यह मामूली साहस की बात न थी। एक हिन्दुस्तानी तो यह साहस कर ही वैसे सबता था और यूरोपियन से ऐसी आया हो नही सकती थी। श्री अरडेल ना यह नायें व गुण नदापि मुलानें योग्य नही हैं।

नेवल इतना ही नहीं, थी अरडेल उन महान अग्रेजो में थे जिन्हीने भारत को अपनी भातृभूमि मानक्ट एक-निष्ठता से उसकी सेवा की थी। वे उन विद्वानों में से ये जिन्होंने अपनी विद्यता भारत के अगिक्षित और पिछड़े हुए लोगों को गिक्षित और प्रगतिशील बनाने में लगादी थी। वे मानवता के उन सच्चे उपासकों में से थे, जिनकी दृष्टि में न तो रंग या धर्म कोई अन्तर टाल पाये थे, न अंच या नीच। वे राष्ट्रीयता के उन प्रचारकों और प्रवतंकों में ने थे जिन्होंने अपनी जाति और अपनी सरकार ने विरोध मोल लेकर, बिलाम और बैमव को दुकराकर स्वेच्छा ने किताई और आपदाओं को वरण किया था। वे उन दार्शनिकों में ने थे, जिन्होंने धर्म और सम्प्रदाय के मंकुचित धेरे ने ऊपर उठ कर समूची मानव जाति को एकता के सूत्र में बान्चने और उमे चिरन्तन शान्ति एवं आनन्द के पथ पर अग्रमर करने के लिए शिक्त-भर प्रयत्न किया था।

उनके अवस्य उत्माह और श्रद्धा का परिचय मुझे हजा १९११ या १९१२ में, जब थियासफीकल कनवेन्यन बनारम में हुआ या और श्री जे० कृष्णमूर्ति के एक अवतार होने की चर्ची फैल रही थी। मुझे जहां तक बाद है बायद बनारम में ही यह पहले पहल घोषणा की गई थी और श्रीमती एती दौनेन्ट ने लगा कर बड़े बड़े थियोसोफिस्ट श्री जे० कृष्णमृति के प्रति बड़ी नमता प्रदिशत करते थे। उस समय में भी उस कनवेन्यन में गया था। श्री जे० हुएण-मृति को देखकर उन नमय तो मेरे मन पर कोई लाम अमर नहीं हुआ। उनके छोटे भाडे और उनके पिता स्व० श्री नारायणैया साथ थे । मूजे वह सब एक खिलवाड़ जैसा लगा । परन्तु दहे-बहे थियोमीफिन्ट और बाम कर श्री बरंडेल बड़ी श्रद्धा ने उन्हें मानते थे। मूजे आज भी बाद है कि जद बभी श्री जें० हुप्णमूनि का नाम भाषण में धाना नो उनका चेहरा श्रद्धा ने विल उठना । वह श्रद्धा और उत्साहमयी मूर्ति आज भी मेरी आंखों में नाच रही है।

यद्यपि श्री अरंदेल का जन्म तथा विद्यान्दीला यूरोप में ही हुई थी तथापि वे अपनी युवाबस्था मे ही भारत के मामलों में बड़ी विलबस्थी लेने लगे थे। वे भारत की ममस्याओं को समझने का प्रयत्न करते और वहां की हल-चलों को ध्यान में देखते थे। भारत के लिए उनके हद्य में जो प्रेम और नहानुमूनि की माबना थी, वह निरन्तर बड़ती गई और एक समय वह आया जव कि उन्होंने सन् १९०३ में ब्रिटिश मेक्शन के जनरल सेकेटरी का पद छोड़ कर बनारस के मेंट्रल हिन्दू कालेज में इतिहास के अध्यापक का पद स्वीकार कर लिया। इस कालेज की स्थापना श्रीमती एनीवीनेन्ट ने की थी। श्रीमती एनीवीरेन्ट के लिए उनके मन में अपार श्रद्धा और भिक्त थी। ध्रिमती एनीवीरेन्ट के लिए उनके मन में अपार श्रद्धा और भिक्त थी। ध्रिमसीफिकल सोमायटी के प्रचार और प्रसार के लिए वे जो विश्वव्यापी कार्य कर रही थी, उस वे बड़े आदर की दृष्टि से देखने आये थे। श्रीमती एनी वीसेन्ट के प्रति उनकी यह श्रद्धा ही उन्हें मैन्ट्रल हिन्दू कालेज में खीच लाई। मैन्ट्रल हिन्दू कालेज में वे श्रीमती एनी वीसेन्ट के निकट संपर्क में आये और अपना काम इतनी तत्परना और लगन से करने लगे कि वे कालेज के प्रिमियल के पर पर पहुंच गये। इतना ही नहीं, चीरे-चीरे वे श्रीमती एनी वीसेन्ट के प्रमुख गये। इतना ही नहीं, चीरे-चीरे वे श्रीमती एनी वीसेन्ट के प्रमुख गये। इतना ही नहीं, चीरे-चीरे वे श्रीमती एनी वीसेन्ट के प्रमुख गये। इतना ही नहीं, चीरे-चीरे वे श्रीमती एनी वीसेन्ट के प्रमुख गये। इतना ही नहीं, चीरे-चीरे वे श्रीमती एनी वीसेन्ट के प्रमुख गये। इतना ही नहीं, चीरे-चीरे वे श्रीमती एनी

श्रीमती एनी वीसेन्ट ने प्रारम्भ में घामिक और सांस्कृतिक कार्यों तक ही अपने को सीमित रखा था। अतः श्री अरंडेल भी शिक्षा और घम के क्षेत्र में ही काम करते रहे। अपनी विद्वना एवं कियाशीलता के कारण समय-समय पर वे इलाहाबाद यूनीवर्मिटी के, नैशनल यूनिवर्मिटी, महाम के प्रिमिपल, होल्कर राज्य के शिक्षा मंत्री तथा भारत के लिवरल केथीलिक चर्च के रिजनरी विश्वप जैसे उच्च पदों पर पहुंचे और अपना समय एवं शिक्ष्य इन कामों में लगाते रहे। लेकिन श्रीमती एनी वीसेन्ट राजनीति में आई तो वे भी उनके नाय-माथ इस क्षेत्र में कृद पड़े।

यह बट़ा ही नाजुक समय था। भारत की पुकार पर इस समय न तो कोई ध्यान दे रहा था, न कोई ऐसा व्यक्ति ही था, जो नेतृत्व के सूत्र को बच्छी तरह संभाल सके। श्रीमती एनी बोसेन्ट में विशाल विद्याबुद्धि, बदस्य इच्छा-शक्ति एवं बयक कार्यशोलता का बट़ा ही मुन्दर समन्वय था। राजनीति में प्रवेश करके उन्होंने जरा भी बैन नहीं लिया। वे जानती थी कि बब प्रस्ताव पास करके भारत की समस्या हल नहीं हो सकती। बब तो समृचे देश में एक जोरदार बान्दोलन करना पड़ेगा। बतः उन्होंने 'त्यू इंटिया' नामक एक दैनिक पत्र निकाला तथा 'कामन थी अरङ्क परिवि ज्ञान में का नारोलन में जाग आ गये स लगांपि उनना प्रिय नारा नो सेवा फा ही था । वर्ड-उड आवालन में विज्ञाय मून नेवन भी भागि मानवना की होवा में को टूर्न हैं। उन्हें अग्र था । वालवर्स का बोलन इस दिव्य से उन्हें वडा अच्छा लगा । वालवर्स में सेवा-भावना अरबर उन्हें वडा अच्छा लगा । वालवर्स में सेवा-भावना अरबर उन्हें वडा अच्छा लगा । वालवर्स में सेवा-भावना अरबर उन्हें वडा अच्छा लगा । वालवर्स नारोल ना निर्मा था । व्यवस्था वालवर-ज्ञावालन ने विच्या-बालवर-ज्ञावालन ने विच्या-बालवर-ज्ञावालन ने विच्या-बालवर-ज्ञावालन ने विच्या-बालवर-ज्ञावालन ने व्यवस्था अरुक्त के वाहम प्रमी हैन्द के पर पर भी उन्होंन वडी नपरता और लगा से मार्थ पिया । उन्हान बदाम प्रान्त भी नेवा मार्थिन के प्रान्तीय निम्लवर के पद पर भी अर्थ प्रमाण एक प्रमाण मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ प्रमाण एक प्रमाण मार्थ प्रमाण एक प्रमाण विचा ।

शाजवर-आपरीलन की भागि भज़कुरा की उजित का आपरीलन भी जंभा जड़ा विव वा । मुरोष से मज़ुरा पी उजी का जायोलन आरम्भ हो स्वा का और व अराम सगड़न वहां मज़्मुन क्य रह के लेकिन भारत म ना इस प्रभार का को जान्योग्न का गहीं। अत सी अरहक न इन लगम मंथी, को लिक्सपों लेगे। उन्होंने मज़ास म यह नार्व आरम्भ रिया और अरास केन्द्र-मिन्सम के आगरेरी स्वीडेंन्ट से पर पूर भी बहुत दिनो तक कार्य करने रहे। मदास की यह रुबर यूनियन भारत की सबसे पुरानी और वडी यूनियन मानी जाती हैं।

इस प्रकार श्री अरडेल ने सेवा के कई क्षेत्रों में काम किया, लेकिन उनका सबसे अधिक प्रिय विषय था धर्म । वे एव साधव थे। श्रीमती एती बीसेन्द के प्रति उनके आकर्षण ना यही एनमात नारण था। वनपन से ही वे वियासफीकल सोमायटी के निर्माता के सपर्क में रहे ये और उमने प्रचार और सगठन के काम में श्रीमती एनी बीमेन्ट ने साय-साथ उन्होंने एक लम्बे असे तक कार्य किया। यरोप तया दनिया के अन्य भागों में भी इस आन्दोलन की गतिशील और सकल वनाने में उन्होत बडा परिश्रम किया। भारत की भाति आस्टेलिया में भी उनकी वडी दिलचस्पी थी और वहा भी विवासाफिनल सोसायटी के बाम की वढाने में उन्होने शक्तिमर प्रयत्न किया। श्रीमती एनी वीमेन्ट की एमी कोई प्रवृत्ति नहीं थी , जिसमें उनका डाय न हो । उनकी मत्य के बाद वे थियासाफिकल सोमायटी के उपाध्यक्ष नामजद किये गये और बाद में उनके अध्यक्ष निर्याचित हुए । अध्यक्ष के निर्वाचन में उन्हें बहुत ज्यादा मत मिले थे।

जनकी 'ि बीपा', 'माजन्ट एवरेस्ट', 'फ्रीडम ऐंड केटदिवा तथा 'गाइस इन दी बीकॉमग' बडी प्रसिद्ध पुस्तकों है, जिनमे उनके दार्शनिक विवारो की भागीरपी ना बड़ा ही सुन्दर प्रवाह है। श्रीमती रुक्मिणीदेवीजी से विवाह बरके तो मानो वे पूरी तरह भारतीय वन गये थे। उनके विवाह की घटना उस समय तो मझे वही ही विचित्र लगी। थीमती रुक्मिणीदेवी अपने बात्यनाल में थी अरडेल से शिक्षा पाती थी. अर्थान उनकी क्षिच्या थी। विद्यादान के उपक्रम में से दोनों के प्रगय का जन्म हुआ और वे विवाह बचन में बच गये। उस समय के हिन्द-पसार को ऐसे विवाह से गहरू। आघात लगा था और थी अरडेल के प्रति भेरी श्रद्धा को भी एक धक्का लगा, एक बाल तक उनके प्रति मन में उदासीनता आ गई। दोनो की अवस्था में भी बड़ा अन्तर था। वाद में दोनो ने अपने जीवन को जिस प्रकार राष्ट्रीय सेवा और परोप-कार में लगाया, उससे मेरे मन का बह भार हल्का हो गया

#### जीवन-साहित्य: अगस्त १९५२

और अब जब कि विवाह व्यवस्था में ही कांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं, उसका एक संस्कार मात्र ही मन पर रह गया है और उसकी आलोचना का भाव नण्ट-प्राय हो गया है। उस समय के सुधारकों ने अवस्य ही यह माना कि श्री अरंडेल और श्रीमती किमणीदेवी ने इस विवाह के द्वारा पूर्व और पश्चिम में एक मधुर संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया है। श्री अरंडेल के विचारों की उच्चता, व्यवहार की पिवता, सेवा भावना की उत्कटता और साधना गीलता कई भारतीयों में स्कूर्ति और प्रेरणा का संचार कर चुकी है और करती रहेगी। उनका जीवन ऐसे अनमोल गुणों की खान था। उनकी यह छोटी-सी माला आपको अपित करते हुए मैं अपने को धन्य मानता हूं। क्योंकि गुणों का स्मरण करने से मनुष्य स्वयं गुणी बन जाता है।

#### शंकरदेव विद्यालंकार 🚳

#### अोहियो अमेरिका (संयुक्त राज्य) का एक औद्यो-गिक राज्य है। वहां पर एंटियोक कालेज में ग्यारह सी छात्र 'विद्याध्ययन और निज कमाई' की तालीम प्राप्त कर रहे हैं। अब इस कालेज के कार्यबाहक अपनी इस योजना को अपने अध्यापक वर्ग में भी प्रयुक्त किया चाहते हैं। आजकल वहां के छात्र एक सत्र में विद्याभ्यास करते है और दूसरे सत्र में कामकाज करते हैं। संचालक लोगों का अब अध्यापकों के प्रति भी यह निवेदन हैं कि "कुछ समय पढ़ाइए और कुछ समय कमाइए!"

इस योजना की सफलता के लिए कालेज के कार्य-वाहक सदस्य देश में विभिन्न उद्योगों, धंधों और सरकारी नौकरियों के अध्यक्षों के साथ वातचीत करके योग्य प्रवन्य कर रहे हैं। क्योंकि इस प्रकार अध्यापक भी समाज-जीवन में प्रत्यक्ष कामकाज करके कमार्ट करेगा तो उससे वह अपने शिक्षण-कार्य में भी उपयोगी अनुभव प्राप्त कर सकेगा। इस योजना के सफल होने पर, इसके परिवामों का प्रभाव देश-भर की शिक्षण-संस्थाओं पर पटेगा।

इस योजना को सन् १९२१ में आर्थर मार्गन ने प्रारंभ किया था। उस समय वे इस कालेज के अध्यक्ष थे। बाद को वे हेर्नमी-बाटी औयोरिटी के सभापति बनाए गए थे।

अन्य मंस्याओं के मुकाबले में एंटियोक कालेज एक छोटा-मा कालेज हैं। परन्तु मंयुक्त राज्य अमेरिका के मभी राज्यों में से तथा ममुद्रपार के कितने ही देशों मे वहा पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए छाबगण आने हैं। इन विद्यार्थियों को अमेरिका के मभी भागों में कामकाज करने

## उच्च शित्वा में एक नया प्रयोग

के लिए भेजा जाता है। इस कालेज के सदस्य छात्रों को अपनी-अपनी कथाओं में अमुक समय तक शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात ऐसे व्यवसायों में कामकाज करने के लिए भेजा जाना है जिससे उनकी तालीम में अभिवृद्धि हों सके। यह कामकाज भी उनके स्नातकीय अध्ययन कम का एक अंश माना जाना है। सामान्यतया प्रत्येक स्थान के लिए दो छात्र नियत किए जाते हैं। एक छात्र जिम समय व्यवसाय के लिए जाता था उस समय दूसरा छात्र अध्ययन करता है। फिर जब वह अध्ययन के लिए आता है तब यह छात्र उमकी जगह नीकरी के लिए जाता है। इस प्रकार नीकरी देनेवाले की सारे वर्ष भर नीकरी चालू रहती है।

अध्यापकों के निमित्त थोड़े समय शिक्षण और थोड़े समय कामकाज की योजना को व्यावहारिक वनाने के लिए कालेज के कार्यवाहकों को नौकरी देनेवालों का सहयोग प्राप्त करना होगा। वर्योकि विभिन्न विषयों के अध्यापकों के लिए इस प्रकार के कार्य खोजने होंगे जिनके लिए उनका ज्ञान, अनुभव और योग्यता उचित और साधक हो सके और साथ ही वह कार्य उनकी शिक्षण की शक्ति में वृद्धि करने वाला हो! इस योजना में अध्यापकों की भी सहकारी मंडलियां वन जायेंगी। एक मंडली कालेज में पढ़ा रही होगी उस समय दूसरी मंडली अपने शिक्षण के साथ मेल खाने वाले उद्योग, व्यवसाय अथवा नौकरी में लगी हुई होगी। उसके पश्चान ये मंडलियाँ शिक्षण और नौकरी की अदला-बदली करेंगी।

[गुजराती 'शिक्षण अने साहित्य' से]

#### श्रादमी की हमारे हाथों उपेता न हो

विजान के प्रयत्नों से लाज हम आदमी की जनु-परिवरित में भी उसे देख, मुन और समझ सकते हैं। विजो में उसका सकस्प-दर्शन विज्ञा जा सकता है। देखान मारेडियों से उसकी वाणी मुनी जा सकती है और पत्रो एव पुस्तकों के अरिये उसके विजार जाने जा सकते हैं।

के दिन इतने से ही आदमी को सनीय नहीं हुआ और उसने एक ऐसा आविष्मार विश्वा कि जिससे आदमी के रहने या नहीं रहने पर भी सिनेमा के पर्वे पर उसे साकार स्वरूप में बोलते, गारी और दाम करते देवा जा सके। यो उसने अने आविष्णार में सम्पूर्णता प्राप्त की नित्म करते हैं वा तो से से असे से उसने यह दावा विश्वा उसी सण से वह परावित्त हो उठा।

उस दिन में 'म्यू पिमेटर्स' वा एक लाल देख रहा था। बील खेल में सुचना मिली कि सहसाल की मृत्यु हो गई। न जाने कैसे मन बेचैन हो उठा। सिनेमा हे गर्दे पर सहसाल के दोखने, बोलने और काम कर नहें ने के बावजूद भी यह अधिक सत्य था कि सहसाल अब नहीं रहा। चाह कर भी अब उससे प्रत्यक्ष मिला या बोला नहीं जा सकता। पर्दे में उसके बिना, बोला और हातमाब की बाथ केने के बावजूद भी प्रत्यक्ष आदमी को उसके समय से अधिक एक शाम भी रीन सकने की साम्यों किसी में नहीं [बातान में भी नहीं। बात्यी की यह कैसी लान्यों कि मानों वह सब मुख नरके भी मुख नहीं कर सकता।

सभी एक रोज की बात है। अपने एक मिन से मिले क्यों हो गय से। अचातन रेडियों घर उनकी वाणी मुननें की मिल गई। बड़ी बोल, वही स्टाइल। में आत्मिकांगेर-सार पुनता रहा। आशों में उनना जिन छाया था। और कानो में उनकी वाणी गुज रही थी कि इसी बीच कार्यक्रम समारत हो गया। छेने देखा आसपास कहीं कोई नही था। और उनके और मेरे बीच की दूरी पुन सँकडो मील की दूरी वन चुकी थी। मन मसोसकर रह गया।

गामीओं के प्रार्थना-अववन रिनार्ड नर लिये गये हैं। आव भी जब में उन्हें सुनता हु तो मन में एन हाहाकर, एक तुकान सा उठना है। उनके जीवन के अनेने चित्र, अनेको घटनायें, अनेको स्पृतिया आयो में पूमने काती हैं और यो में उन्हें सुनरर भी नहीं मुन पाना। जगता हैं जि अभी कल तक को हमें सहत्र प्राप्त प, वे अब हमसे स्वान्तवा के लिए दूर वक्ष गये है। और यो मन की वेषैनी वहती हीं आतो हैं।

यो विज्ञान के सहारे जादगी से मिलने के जितने भी सायन हैं उनमें से पिता भी से तना आनन नहीं, जितना अख्या आदमी से सिल्कर होता है। आदमी आदमी से मिलन र भेले ही ज्ञान की या क्या में बात न में मीन रह जाय लेकिन आदमी को आदमी से मिलकर जो आनन्द होना है उसकी तुल्ना में दूसरा कोई सुल नहीं।

आज जो विज्ञान की हवा चली है उसमें कही ऐसा न हो कि हम 'चित्र' की तो पूना करें और प्रत्यक्ष 'आदमी' की हमारे हायो उपेना होनी चले।

यदें के छाया बिजो को देवनर ही हम खुशी मनायें लेकिन यनुष्य की मृत्यु से हममें 'वेदना' न जरे। लेकि वी वाणी या बिचारी से तो हम प्रमामित ही, लेकिन उत्तते हमारी कोई 'आल्भीयता' न सर्थ 'दिश्यों से हम देवा बिदेश को खबरें तो सुजै, लेकिन अपने ही पड़ीसी के 'इस ब्दें' ते हम बेक्बर रह जरमें ।

बास्तव में इम घरती का सबसे यडा सस्य 'आदमी' है। और आदमी से जादमी को सरह मित्रने, आदमी के नजरीक आने, आदमी की सेवा, सहायता करने और आदमी को प्यार करने से बडकर और कोई मुख नहीं है।

क्या आप झूठा पानी पीना पसन्द करेंगे ? यदि नही तो पुस्तके माग कर क्यो पढते है ?

## कंचनलता सव्वरवाल, एम. ए.

दिनों नहीं, महीनों नहीं, वर्षों नहीं संकड़ों वर्षों के पश्चात् १९४७ भारत के कन्धों पर से गुलामी का जुआ जतारने में सफल हुआ । भारत स्वतन्त्र हुआ । यद्यपि क्षानन्द की वह सर्वव्यापी लहर न वह सकी जिसकी कल्पना आजादी के दीवाने, नींव के पत्यर, देश के असन्य नवयुवक नवयुवतियां--शहीद कर रहे ये फिर भी रक्त-स्नान की हुई आज़ादी मिली ही । जो हो वह कहानी दूसरी है--भारत स्वतन्त्र हुआ । विदेशी शासन का अन्त हुआ और जन-जन की कल्पना में नाच उठी पूज्य वापू की वाणी। एक स्थान पर उन्होंने लिग्वा था "आर्थिक समानता के प्रयत्न के माने पूंजी और श्रम के शास्वन विरोध का परिहार करना है।" इसके मानी यह है कि एक तरफ से जिन मुट्ठीभर धनाड्यों के हाय में राष्ट्र की संपत्ति का अधिकांश इकट्ठा हुआ है, वे नीचे को उनरें और जो करोड़ों लोग भूखे और नंगे है, उनकी भूमिका ऊची उठे। जबतक मालदार लोगों और भूखी जनता के बीच यह चीड़ी खाई मीजूद है, तवतक अहिमक राज्यपद्धति मवर्षा असंभव है। नई दिल्ठी के राजमहर्ला और गरीव मजदूर की झोंपड़ियों में जो विषमता है, वह स्वतन्त्र भारत में एक दिन भी नहीं टिक सकती; क्योंकि उस समय गरीबों को उतना ही अधिकार होगा, जितना कि धनवान से घनवान को । अगर सम्पत्ति का और सम्पत्ति ने होने वाली मत्ता का खुशी में त्याग नहीं किया जायना और सार्वजनिक हिन के लिए उसका मंविभाग नहीं किया जायगा तो हिंसक क्रान्ति और रक्तपान अवस्यम्भावी है। स्वतन्त्र भारत में पांच वर्ष व्यतीत कर चुकने पर आज यह लेखा-जोखा लेना आवय्यक हो गया है कि कहां तक हम 'अहिनक राज्य पद्धति' की स्थापना कर पात् है। बापू ने जिस विषमता की ओर संकेत किया था क्या स्वतन्त्र भारत के पंचगुने तीन मी पंमठ दिनों में बह टिक नहीं पायी है ? राजमहरों ने क्या आज भी झोपहियों को अपने भीतर या अपने आसपास स्थान दिया है ? क्या **बाज हम मगर्व सिर उटाकर यह कह मकते है कि स्वतन्त्र** भारत में एक भी व्यक्ति भूता, नंगा, वेवरवार नहीं है ?

# वापू की अहिंसक राज्य-पदति

यह सत्य है कि विभिन्न प्रकार की राजनीतिक, आर्थिक यहांतक कि सामाजिक कठिनाइयों ने भी अपने उग्ररूप में इन्ही पाच वर्षों में दर्शन किये; किन्तु साथ ही यह भी तो मन्य है कि यह पाच वर्ष भारतवर्ष में महात्मा गांधी के 'अहिमक राज्य पद्धित' पर अक्षरणः विश्वास करनेवाले पाच ब्यक्ति भी उत्पन्न नहीं कर पाये हैं। यदि ऐसे पांच व्यक्ति ही बापू की भाति अदम्य उत्साह लेकर सत्ता एवं पदाधिकार की भावना से नरत होकर इस चीट़ी खाई को जो आज भी उसी नरह उपन्थित है, भर सकते तो सम्भवतः समस्या का आणिक हल हो सकना सम्भव हो जाना । देश से आज भी वेकारी है और उसका कारण केवलमात्र यही नहीं है कि भारतीय आलगी है, उसका कारण यह भी नहीं है कि भारतीय श्रम का मूल्य किसी प्रकार भी समझना ही नहीं चाहता है। श्रम का मूल्य तो पेट में निरन्तर धयकने वाली ज्वाला मानव को स्वयं सिला देती है। कारण है श्रम का व्यावसायिक हंग पर ठीक से बंटवारा न होना । योजनायें वनती है और बनती चली जाती हं किन्तु उनका मूल्य केवल 'योजना मात्र' ही रह जाता है। व्यविनगत ईभव तथा धन से उत्पन्न सत्ता के प्रतीक आज भी सिर ऊंचा किये भारत की अधिकांश निर्वन जनना का उपहास ही किया करने हैं। इसमें कोई मन्देह नहीं कि देश के धन की उसकी उत्पादन शक्ति की बढ़ारे बिना सम बंटवारे की चर्चा करना व्यथं है। जब तक देश में इतनी बस्तूएं नहीं हो। जाती कि प्रत्येक व्यक्ति की आवस्यकताओं की आवस्यक पूर्ति हो सके तवतक 'बंटवारे की समता' अथवा 'अत्यावय्यक सबके लिए' का नारा लगाना थोया अवव्य हो जाना है किन्तु देश की सम्पदा बढ़ाने के लिए कितने युगों की आवश्यकता होगी? कवतक हम बापू के उस स्वप्त की साकार सत्य बना देखने के लिए आंखे फोड़ घरती एवं आकाश की ओर देखते रहेगे? सन्त विनोबा को स्वतन्त्र भारत में भी बापू के 'रामराज्य' की कत्यना साकार करने के लिए झोली फैला कर हार-हार दरिद्रनारायण की प्रसाद खोजने की आवस्यकता वयों हुई ? करोड़ों मृत्ये और नंगे देशवासियों

की भूमिका ऊँची उठाने के लिए ही तो हमारे सम्मूल और भी देशा के उदाहरण है जोकि हमसे वही पिछड हुए थे। जहां केवल धन वैभव और जन्मजात बदा के आधार पर ही मानव-मानव में इतनी अविक मेद की सिंद कर दी थी कि एक बाकाश के नीचे झारना भी अपराध समझता या और दूसरे को पाताल से तनिक ऊपर देख पाने की सुविधा पाने के भी सब द्वार बन्द कर दिये गये थे। यद्यपि दोना मानव ही लो थे फिर भी उन देशों ने ऐसे थोड़े से ही समय में इस मेद को कम कर दिया। श्रम का मृत्य है और बहुत अधिक है। सबम्ब ही आज की कला जाज का मौन्दर्व, जाज दिन विद्य की सम्यता और सस्ट्रति श्रवहार की सबसे बडी देनदार है। धमनार अमजोवी ने ही भन्ने रहकर नग रहकर झोपडो में कीन, घुर और वर्ण की बठोर वृदा के आधान सहकर यहातक पत्नी की आध्येट खाते और बच्चा की औपधि के विना, पथ्य ने विना मर जाते देखकर भी विश्व को सुन्दर और सुन्दरतर बनाया। यह बनाते जाना, बनाते रहना उसकी लाकारी थी, घेबसी थी और थी साधनहीनता, निन्तु उसने यह सब किया तो और किश्वसंस्कृति उसकी देनदार तो है ही। यही भारत में भी नितान्त सत्य है, बिन्तु वेवल इस सत्य का उल्लेख कर भर देने से ही तो बाधिक समानता ---वह आर्थिक समानता जिनका बापू ने उल्लेख किया है. वह आधिक समानता जिसका अर्थ है मुजी और धम के शास्त्रत विरोध का परिहार करना-स्वापित मही हो सकेगी? आज भी पूजी और श्रमी का सास्वत विरोध जावित है। आज भी प्रत्येक मानव की भीतरी थम शक्तियों सम्बन्धी सार्जे नहीं हो पा रही है-आब भी औद्योगित कौशल सम्बन्धी रुचि जायन करने की योजनाए अयुरी है क्या ? शायद इसलिए कि वापु की 'अहिसक राज्य पद्धति जिसका आघार या स्वेच्छा. जिसका मुल या स्वेच्छा से सम्पत्ति एव सम्पत्ति से होनेवाली सता ना त्याम और सार्वजनिक हिन के लिए उसका सविभाग--किन्तु आज उसका पता भी कहा है ? एकाकी सन्त विनोवा स्वेच्छा से दिया गया मूमि वा दान माग रहा है, किन्यु स्वेच्छा से त्याग किया गया सत्ता का

दान नौन देगा? वह सत्ता जिसमें पुजीवादी का सा यवं है, वह सत्ता जिसमें प्रभुता की भावना है और वह सत्ता जिसमें चाटुरारिता द्वारा प्रसन किये जाने की क्षमता है । वस्तुत पुजीवाद की समस्त बराइया तब ही 🔍 विषमय और तीसी हो उठनी है जबकि उनमें अधिनार-भावना, सत्ता एवं सत्ताधारी की-मी प्रवृत्तिया आकर स्वान बना लेती हैं। पूजी के बिना भी किसी भी क्षेत्र में जहा प्रभुता, सत्ता, एव अकारण मानव की मानव पर जमानेवाली अधिकार भावना आ गई वही पुजीवाद की बुराइयो का श्रीयणेश हो जाता है। अत आज दिन आवश्यक्ता है-सबसे बडी अवश्यक्ता है बापू के 'अहिंसक शासन पद्धति' के सच्चे समर्थको की, उन जनसेवको नी,जिनके लिए धन, मत्ता एव ल्यानि ही लक्ष्य न हो बरन् एक्य हो देश-सेवा-मानव तो मानव ही है फिर भी ऐसे जनसेवको का देश में सर्वया अभाव नहीं है। बाज भी देश के कीने-कीने में अज्ञात, अविख्यात, अपने अपने छोटे छोटे सीमित क्षेत्रो में मूक मौन काम न रनेवाले जनसंबक है ही । उन्हें एकत्रित करके, उनकी शक्ति सब-कित करके आवश्यकता है उन्हें एक ही लक्ष्य भी और लगाने की और वह लक्ष्य होगा मानव का मानव सेक्रांत्रम भेद मिटा देना। काम कोई भी छोटा नहीं है। निसी भी एक दब से जीविका उपार्जन करनेवाला दूसरे दग से जीविका उपार्जन करनेवाले से हय नहीं है, निम्न नहीं है फिर भी आज दिन सचमुच दू ल रोता है यह देल कर कि एक व्यक्ति नैनीताल को प्रकृति छमि देएने का लोगसब-रण न कर सकते के कारण आता है पार निरीह प्राणियो के कन्धो पर रखी डाडी पर बैठ कर। इतना तो ठीक ही है किन्तु वह चार मानव-जीवित भारतीय प्राण गिड-गिडाते हैं उस क्यों पर बैठे हुए व्यक्ति से चादी एक चमक-दार सिक्का पाने के लिए--यद्यपि असमय में ही भर कर, यावज्जीवन चियहे लगानर, स्वय उता नर भी महीन नहीं मोटा अन खान र भी वह अपने बच्चों के लिए शिक्षा तो दूर रही पेटमर अन भी नहीं जुटा पाले और वह भी स्वतन्त्र भारत के वासी है। यही नहीं छाती फाडकर श्रम करते हैं--यही नही बृद्धि में भी अवसर पाते ही प्रमाणित कर देते हैं कि वह उन मानव प्राणियों से तनिक

भी कम नहीं हैं जिन्हें निरन्तर कन्धों पर ढोकर वह पर्वत की ऊंची-से-ऊंची श्रेणियों तक पहुंचा देते हैं। आज हम 'श्रम के मूल्य' का गीत गाते हैं किन्तु मीलों मनों बोझ पीठ पर लेकर चढ़ाई चढ़नेवाले मानव के श्रम का मूल्य हमारे दस मिनट कलम विसने के पारिश्रमिक से कहीं कम ही क्यों रह जाता है ?इसीलिए तो कि आज भी मानव मानव नहीं है। आज भी उसके भीतर असमानता इतनी अधिक है कि एक दूसरे पर हर प्रकार का अंत्याचार करके भी समाज में सिर उठा कर चल पाता है, लज्जा से उसका सिर झुक नहीं जाता । पूंजीवाद की-वुराइयां हमारे रक्त-मांस में इस प्रकार अच्छाइयां वनकर घुस गई हैं कि इन्हें हम किसी प्रकार भी पहचान नहीं पा रहे हैं। मै उस दिन की प्रतीक्षा कर रही हूं जिस दिन कोई भी कार्य-झेत्र हो कोई भी पेशा हो, कोई भी जीवनमार्ग हो, मानव का सम्मान केवल इसलिए ही होगा कि वह मानव है। अतिरिक्त सम्मान

आप गुणों के लिए दीजिए और अवस्य दीजिए; किन्तु प्राप्य सम्मान तो मानव को केवल इसीलिए दीजिये कि वह मानव है। प्रारम्भिक जीवन में जीविका उपार्जन करने के लिए योग्य वनने, की मुविधायें तो केवल इसी-लिए दीजिये कि वह मानव है। वहां भेद क्यों हो और वह भी 'प्रकृति-दत्त गुणों के आधार पर नहीं केवल इस-लिए कि एक व्यक्ति किसी सम्पन्न नागरिक के घर उत्तन हुआ है और दूसरे का जन्म साधनहीन दरिद्र की झोंपड़ी में हुआ है। इतनी विषमता को मिटाये विना 'स्वराज्य' कैसा ? यह विषमता तो वापू के शब्दों में स्वतन्त्र भारत में एक दिन भी नहीं रहनी चाहिए। बापू को कल्पना का वह 'अहिंसक शासन पद्धति' द्वारा शासित भारत का सुदिन कब आयेगा नहीं मालूम । किन्तू उनकी प्रतीक्षा अवस्य है, उसे देख पाने की उत्कट अभिलापा अवस्य है। यदि वह दिन न आ सका तो बापू की भविष्यवाणी सत्य होकर रहेगी।

सिद्धराज टड्डा С

#### प्रमु

--- तू सर्वव्यापी है; सर्वशिक्तमान है; विश्व के अणु-अणु में तेरा वास है; अर्रे-अर्रे में तू रमा हुआ है!

—तेरे अस्तित्व से अलग किसी चीज का अस्तित्व नहीं है; तेरी व्यापकता मे अलूना कोई तत्व नहीं है; तेरी इच्ला के बिना कोई स्पन्दन नहीं है!

#### अन्तर्यामी

—आज संनार का क्य-क्य एक-दूसरे के विरोध में खड़ा है, नामंजस्य और समन्वय की जगह विग्रह और प्रतिद्वन्दिता ने ले ली है; मत्तर, द्वेप और कलह की ज्वालाओं ने पृथ्वी नंत्रत हो छठी है; यह प्रह्माण्ड मानों दुकड़े-दुकड़े होने जा रहा है।

#### दयामय

—हमारे पापों को क्षमाकर; अपनी दया का विस्तार कर; अपने प्रेम की-वर्षा कर; इस संतष्त सूमि को अपनी करना के जल से आई कर!

## 'प्रार्थना'

#### सर्वशक्तिमान

—अगर यह संभव नहीं है; अगर किया की प्रति-किया होनी ही है; अगर पाप का फल भीगे विना कोई चारा नहीं है; तव.!

- तब, हृपा करके जल्दी अपना तीमरा नेत्र खोल और प्रलय का नाण्डव होने हे, जिससे पाप-पुण्य, मलाई-बुराई सब उस आग की लपटों में भस्म हो जायँ, मीजूदा पीड़ा और वेदना का अन्त हो, पुरानी वातें सदा के लिए विस्मृत हो जायँ और एक नई सृष्टि का उदय हो।

#### नियन्ता

—यह तो नुच्छ मानव की पुकार है, जो देश और कार की सीमाओं से आबद्ध है!

---पर तू चराचर का स्वामी है, देशकाल के बन्धन से परे अविनाशी और अक्षर है।

ं — जो तेरी इच्छा हो वही होने दे, उसीमें हमारा कल्याण है, हमारा श्रेय है !

तेरी इच्छा पूर्ण हो !!!

#### पात्र

शरिषर -एक तपस्वी महात्मा मृदुला -शशिवर की पुत्री

केसरीसिंह -एक डाक

चन्दर सलीम } —गाव के नवयुवक

रुखनसिंह ⊸गावकाजमीदार

#### प्रथम दृश्य

(समय-राति स्यान-प्रतिघर का आश्रम-श्रायम में तपस्वी द्यादायर का सकान, एव कोने में दीपक टिमटिमा रहा है, द्यादाधर इधर से उधर घूम रहे हैं)

सासियर-(म्बन्न) जीवन में कितना समर्थ है, वितनी बेदना है, इस भी प्रत्येक क्षम एक क्षम सत्य को तरह साम है। यकल्का जीवन भी पूजी है, लेकिन यह कितना परिप्रम चाहती है हुए कोई मही जानता। जोग नारे लगाना जानते हैं, पर में नारों में विस्वास नही करता। में कहना नहीं करना चाहता हू। मेरा क्षेत्र कोर समाब, में कहें महान बना कर ही रहुगा। यह नेरा छोटा सा गाव, यह सेरा प्यारा सा जायम, से एक आवर्ष उपस्थित करेंगे। यह सेरी इक्डा है और में जानता हू कि मेरी कुटा पूरी में।

मृदुरा-(जाते हुए) बापू । क्या कुछ देर विधाम नहीं करेंग ।

धारिषर-त्रु। बुछ देर आराम बरना तो बाहना या, पर करू करा 7 मेरी आखो में नीद ही नही है। दुनिया चो रही है, कोई तो जामता रहे। तू तो जा नदी ! मेरे बारण तेरी नीद मी असमय में ही खुळ जानी है। मुदुरा-नही बापू ! ऐसी तो बोई बान नहीं। में सोब

मुद्राण-नहां नाथ प्राप्त किया मिल । मेने अभी प्रिमी वि आपसे आपर कुछ देर वार्त महा। मेने अभी अमी समर्थ में मा को देसा तो अचानक नीद उनट गई। सियर—पगत्री नहीं की। जा, जाने सो जा। मृत आरमाओं के विवय म अधिक नहीं सोनते। तेरी मा देवी आरमाओं के विवय म अधिक नहीं सोनते। तेरी मा देवी

थी, बस इससे अभिक और मैं हुठ नहीं जानता। बह भाहनी थीं कि उसके बच्चे राष्ट्र-हित में रुपे रहें। उसका पति देश, समाज और जाति का गौरव वर कर जिए। बस में यही चाहना हूं कि तुम उसकी इच्छा पूरों कर सकी।

(नैपच्य में किसी के दरवाजा खटलटाने की आवाज) शशिवर-कौन हैं।

शाशावर-कान ह ' केसरी-में हू आपका एक सेवक ! आपके दर्शनी की अभिलाषा मुझे यहा तक खीच लाई है।

स्रश्चित्र-इतनी रात गए । ठहरो, में आना हू। मृहुका-(धीमे स्वरमें) बापू । कोई बात्-स्वरान हो। येरे विवार में इस वक्त दरवाडा खोलता ठीक न होगा।

घांचवर-मेरा कोई समु नही है, वेटी । मैरा द्वार सबके लिए जुला रहता है । (सीचते हुए) हुम बहुन छोटी भी जब एन रात महान् कांनिकारों नवुमित्र इसी तरह आए थे । पुलिस उनवे पीजे थी । उन्हें भी इसी कुटिया ने आया दिया था । वह रात भी इननी ही गहरी थी । मृदुला-भण्डा । पर थे इस समर मही है नहुनी । धांतियर-कोई आवस्यक्ता भी नही है जाने की। सु मुहुला नहीं, मृदुलही । देदी नहीं, नेवाह है। (जानर स्टाबत सीलत है) आओ भाई, नहीं कैसे आए हो, नमा चाहते

हो हमसे ? केसरी-कुछ नहीं, वस आपके दर्शन की लालता यहां तक खोच लाई है। बहुन दिनों से सोच रहा पा का आपने दर्शन करू। लेकिन का और कैसे करू यह आज समय ने धनलाया!

श्राधिवर-माई। क्या तुम्हारा नाम पूछ सकता हू । केसरी-मेरा नाम आप जानते है। (मृदुला से) वेटी तु यदि "

द्यशिषर—(मृदुला को जाने का सकेत) अरी मृदुला । क्या तू मूळ गई कि ये वाहर शीत से आए हैं, कुठ दूय हो तो गरम कर लाजी न । (केसरीसिंह से) क्यों दूध

#### जीवन-साहित्य : अगस्त १९५२

पियोगे न! (मृदुला जाती है)

केसरी-किसी के यहां की चीज खाता पीता तो नहीं, पर आपका प्रसाद अवस्य ग्रहण करूंगा !

ज्ञावर-में आपकी वातें समझ नहीं पा रहा। क्या आप छुआछूत में विख्वास करते हैं ?

केमरी-अछूत तो एक तरह से मैं स्वयं हूं !इसलिए छुआछूत में विश्वास कैंसे करूंगा ! पर डरता हूं कोई खाने में विष न मिलादे।

्राधियर-में सीधा साथा कितान आदमी हूं, पहेलियां मुलझाना नहीं जानता ।

केमरी-कान कहता है कि आप पहेलियां सुलजाना नहीं जानते। जितनी पहेलियां आपने मुलजाई है शायद ही कोई मुलजा सके। फिर मैं तो विलहारी हूं उस मनुष्य पर, उलजनें स्वयं ही मुलजती हुई जिसके पास चली आ रही हों! (धीरे से) मुनिये! मेरा नाम केसरीमिह है!

जिञ्चर—(प्रमन्नता से) केसरीसिंह। ... न जाने क्यों मेरा विश्वास था कि एक दिन तुम अवश्य मेरे पास आओगे! ... दह एक दिन आज आही गया!

केसरी—उम दिन आप जब किसानों की उस सभा में दोल रहे पे तो में वहां वेप बदल कर अपने साथियों सहित आपका भाषण सुन रहा था। मेरा सिर अमें से झुक गया था जब आपने कहा कि अपने गरीब भाइयों की रक्षा के लिए केसरीसिंह में जरा भी अमें होगी तो बह यह डाकूपने का काम छोड़ देगा। में स्वयं कभी किसान था और एक दिन इसी मरकार के नये नये अत्याचारों से तंग आकर डाकू बन बैठा। और तभी से बाही खजाने को लूट कर गरीब जनता में बांट देना अपने जीवन का जहेंग्य बनाये घूम रहा हूं।

यनिवर-इससे जनता का क्या बना, बता सकोगे ? अच्छा होता यदि उन किसानों को अपने साथ छेकर मरकार को संगीनों का सीना तान कर सामना करते।

केसरी-अब तो में भी यह बात समझ गया हूं। तन, मन, घन, जिस तरह भी हो जनता की सेवा करना चाहता हैं। आप मुझे रास्ता दिखाइये।

गिनियर-रास्ता दिखाया नहीं जाता, खोजा जाता है। केसरी-ठीक है लेकिन क्या मैं आप के समाज में अपनाया जा सकूंगा ।

शशिवर-क्यों नहीं ! तुम्हारे ही वर्ग से आकर एक दिन महर्षि वाल्मीकि हमारे समाज के नेता बने थे।

केसरी-तो फिर आशीर्वाद दीजिये कि मैं आपका साप दे सकूं। मैं अब जाना चाहता हूं।

शशिवर—कुछ देर वाद चले जाना। तुम्हारे लिये दूव आ रहा है।

केसरी-फिर कभी सही महाराज! अब पी फटने वाली है।

श्चियर-समझा, जाओ ! भगवान तुम्हारा पथ प्रशस्त करे ।

(नैपथ्य में दूर होती हुई घोड़ों के टाप की आवाज)
मृदुला-(आते हुए) यह क्या ! क्या अतिथि चले गये।
शशिवर-हां वेटी ! जानती है वह व्यक्ति कीन या ?
मृदुला-न !

शशिवर-वह केसरीसिंह था !

मृदुला-( भयभीत स्वर में ) केसरीसिंह ! वह आपसे क्या मांगने आए थे बापू।

शशिवर-मांगने नहीं, देने आये थे, बेटी ! मृदुला-वया !

शशिवर-एक वचन ! और वह यह कि आगे से वह कभी डाके नहीं डालेंगे। (सहसा आकाश में प्रकाश होता है) है यह क्या ! यह सहसा इतना प्रकाश कैसा ! ऐमे लगता है जैसे कहीं भीयभ आग लग गई हो। (भागने, दौड़ने, चीखने आदि की आवाजों आती हैं) अवश्य कहीं वहुत वड़ी दुर्घटना घट गई है। तुम यहीं ठहरो, मैं अभी आता हूं।

(सलीम का प्रवेश, सिरं से रक्त वह रहा है) सलीम-बावा! खुदा के वास्ते आप वहां न जाइवे। जमींदार के कारिन्दों ने हरिया के खेत में आग लगादी हैं और बुझाने के लिए आई हुई जनता पर लाठियां लेकर टूट पड़े हैं।

गशिवर-मृदुला ! तुम सलीम का ध्यान रखी । इसे कहीं ठीक ढंग से लिटाओ । मैं अभी जाता हूं।

सलीम-न बाबा, न ! आप वहां न जाड्ये । वे दुष्ट आपके खून के प्यासे हो रहे हैं ।

शशिधर-रास्ता छोड दे भेरे बच्चे <sup>।</sup> मैं स्वय अपनी आलो से सब कुछ देयात चाहता हू।

सलीन-(वहोशी-ती में) तो फिर मै भी तुम्हारे साय च रुगा। मैं यहा वैडरे नहीं, इत का देने आया था।

. इक्षियर—तुम्हारा रवन दाकी वह चुका है। स्वस्य सिपाहियो के होने हुए घायल सैनिक मोर्चे पर नही जाते। मेरे बेटे, तुम आराम व रो । (शोधता से चले जाने हैं) सलीम-ओह खुरा (बेहोरा हो जाना है)

मदुला-भैय्या । सलीम भैय्या । होश में आओ ।

दूसरा दृश्य

(स्थान-दाशियर के आश्रम में दुली विसान और मजदूरो नी समा)

द्यशियर-भाइयो ! यह अत्याचार हमारे लिए नए नहीं है। तुम लोगों के देखते-देखते में चार बार इस बायम को बना चुकाह। मैं जब वभी सरकार का मेहमान बन कर जैल जाता हू मेरे पाछे मेरी साधना का स्वर्ग मिट्टी में मिला दिया जाता है । लेक्नि यह भेरा ही नही सुम्हारा भी है। मैं अपने उन सावियों से जो आज उस अत्याचार की भटटी में अपना सब कुछ होम कर चुके हैं क्टुना कि वे इस आध्रम को अपना घर समझकर यहाँ रहे।

सलीम-बाधा। आप जानते है कि गाव में क्या बात फैलाई जा रही है।

द्यद्याधर-क्या ?

सलीम-जमीदार और उसके वास्त्रिक कहने फिरते है कि आश्रम में जाना घीर अपराव है। जो यहा रहेना जसे जान जिरादरी से निकाल दिया जायेगा। क्योंकि यहा चमार, ब्राह्मः, मुसलमान सब इबट्ठे रहते हैं और एव दूसरे वे हाथ का लुआ खाते हैं।

श्रश्चिय-यह तो अनाज की वान है पर वे तो चमार, ब्राह्मण, हिन्दु और म्सलमान मजका खून इकट्ठा च्मते हैं। सलीम-खून का चूसना उनके धर्म में पवित्र समझा

जाता है, वावा । द्मशियर-अत्र उनसे साफ साफ वह दो वि हमारे

दारीर में और रक्त नही रहा है। धन्दर-हा, जितना था वह उन्होंने चूस रिया। हम

मर जायेंगे परजाल्तू फाल्तू कर नहीं देंगे। हम जेलो

में जावेंगे, फासी के तस्ते पर झुठेंगे पर वेगैरतो की तरह जिन्दगी नहीं कार्टेंगे ।

श्रश्चियर-तो तुम सब नैथ्यार हो <sup>1</sup>

सब-(एक साय) हम लोग आपके साय है आप जी वहेंगे हम सब वही वरेंगे।

श्चिवर-अच्छीतरह से सोचलो <sup>।</sup> मै एक वार आगे दढ कर पीछे हटना नही जानना । मेरे साय वही आगे बढ़ें जिसके सिर पर कफत हो, जिमकी छाती लोहे की हो और जो आफनो में भी हतना जानना हो।

सब-हम सब तैय्यार है। दाशिवर-तावास, अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप

लोगो के सदट के दिन टल गरे। धन्दर-हम सदा से ही आपकी अपना नेता मानते

आए है आप हमारे लिने मन कुछ है।

सनीय-आपना हक्त हमारे सिर आजो पर। आप हमारे सरदार है। हम आपके इशारे पर अपना सब कुछ कुर्जान कर सकते है।

शशिवर-मुझे जाप लोगो से यही आशा थी। अब आप लोग शान्ति मे आश्रम के मडारे में भोजन बनायें और लायें। हमारे यहा छुआ ठून का कोई प्रश्न नही है। मै चाहता हू इत्सान इत्सान बन कर जियें। इत्सानियन से वडा और कोई धर्म नहीं है।

चन्दर-(एक दम) वावा 1 अमीदार साहब इयर आ रहे हैं। उनके साथ उनके कारिन्दे बगैरा भी है।

वशिषर-मृभ लक्ष म है । आने दो और हा, तुम सव अपने अपने काम में लग जाओं।

(लोबा का जाना, जमीदार लखर्नीमह का आना) स्खनसिंह-(युस्से में )यह कैता मोड भडनका इक्ट्रा

कर रन्ता था, सपस्ती जी। यह आश्रम है या उचनको के छिपने की जगह<sup>ा</sup>

शशिवर-जमीदार साहव । यह उदनको ने छिपने की जगह नहीं है, घरती के बेटो के लिए मा की ममनामय मोद है।

लखनमिह-अच्छी तरह सोच लो, स्वामीओ । वही ऐसा न हो कि केने के देने पड जावें । उनमें कई ऐसे भी है जिन्होने सून किये हैं।

#### जीवन-साहित्य : अगस्त १९५२

शशिवर-चून करनेवाले तो आपके मकान पर शराव के प्यालों के साथ अट्टहान कर रहे है। मेरे पास तो दम तोड़ती हुई लाशें आई है।

लखन-में आपसे सीधे शब्दों में यह कह देना चाहता हूं कि ये लोग बागी हैं इन्हें अरग देना आपके हित में अच्छा नहीं होगा।

गशियर-मेरे हितों की आपको इतनी चिन्ता है उसके लिये धन्यवाद ! वैसे मैं आपको यह वतला दू कि मुझे आपको धमिकयों की जरा भी परवा नहीं है। जो ब्रिटिश साम्प्राज्य की यातनाओं से नहीं इरा वह आपकी इन गीदर भभिकयों से क्या डरेगा।

ललन-हूं, तो यह बात है। दो चार बार जेल क्या काट आये हो गोया दुनिया फतह कर ली है। तीन की ड़ी की हस्ती नहीं और......

श्रीयर-लखनसिंह ! मेरे आश्रम में इस प्रकार मूर्खतापूर्ण बोलचाल की मनाही हैं। में आपको बनला दू कि यहाँ बोलते हुए आपको यहा के नियमों का पालन करना होगा। यह आपकी बैठक नहीं कि जिसे चाहा लाल-लाल आंखें दिखा कर टरा दिया। यहां आपको सम्यता से बोलना चाहिए!

लखन-में आपका भाषभ नहीं मुनने आया स्वामी जी ! में आपको बतला दूँ, कि इस तरह के आश्रम-बाश्रम के ढोंग यहां नहीं चलेंगे। बहू-बेटियों को पढ़ाना कीन में शास्त्र में लिखा है!

चन्दर-ओ हो, तो गोया आप बास्त्रों का ठेका लेकर यहां आये है।

शशियर-चुप रही चन्दर ! जब दो व्यक्ति बातें कर रहे हों तो तीमरे को वीच में नहीं बोलना चाहिए !

लपन-चन्दर! तेरी पाल विचवा के मुम न भरवा दिया तो भेरा नाम लखनिमह नही।

चन्दर-पृद ही खेंच के देहूं। नुमसे तो खिचने से रही। बाबा की आज्ञा नहीं बरना अभी तुम्हारा .....

शशियर-चन्दर ! मै कहता हूं जाकर अपना काम करो। हमें लाठियों से लड़ने की आवश्यकता नहीं है। उनकी लाठियां उन्हें ही मुवारक हों।

लपन–यह तो समय ही बनाएगा, शशिवर ! कि किस

की लाठी किसे मुवारक होती हैं।

सलीम-आपके आकाओं का राज जा रहा है, जमींदार साहेव ! रोटी पानी भी नसीव होगा कि नहीं इसकी फिक करें।

श्रीधर-(कठोर् स्वर में) सलीम, चन्दर ! जाओ अपना काम देखो ।

दोनों-जो आजा वापू ! (जाते हैं)

शशियर-जमींदार साहेव जाड़ थे, आप भी अपने घर जाकर आराम कीजिये । मेरी आपसे कोई व्यक्तिगत शत्रुना नहीं हैं । मैं आपके मुझाव मान सकता हूं; लेकिन मैंने किती के रोब को स्वीकार करना नहीं सीखा है । मैं शान्ति का उपायक हूं और उसीमें विश्वास करता हूं । यदि शान्ति से बात करने की इच्छा हो तो आप किसी भी समय आ सकते हैं नहीं तो अदालत में मिलेंगे।

लखन-तो फिर अदालत ही सही ! शशिथर-आपकी इच्छा।

तीसरा दृश्य

[आश्रम में एक ओर से गिंगिवर दूसरी ओर से मृदुला का प्रवेग। मृदुला खुग है ]

मृदुला—ववाई हो वापू। शशिवर—किस वात की री!

मृदुला–मिठाई लाये हो कि नही बापू ! फिर बताऊंगी कि किन बात की ।

गिंग्यर—(हंमते हुए)पगली कहीं की ! जियर सच्चाई होती है, जीत वही होती है। पर मुझे खुगी इस बात की है कि अन्त में लखनिमह को बृद्धि आगई और उन्होंने कोर्ट के बाहर ही सब बातें मान लीं।

मृदुला-विमियाये होंगे ।

शशिवर-इममें यसियाने की कीन-मी बात हैं वेटा! वे लोग अपने पैसे और रिश्वत के मान पर अकड़ते ये। उन्हें मालूम नहीं कि आज तर्क की दुनिया में बहुत-सी बार्त पिछड़ गई है। मैंने उन्हें रास्ते में बहुत समझाया, आखिर मान गये।

मृदुला-अच्छा बापू ! चलो भीतर चल कर कुछ आराम करो । आपका स्वास्थ्य अब दिन प्रति दिन विगडता जा रहा है।

शशिघर -अब मुझे अपने स्वास्थ्य की चिन्ता नही है, बेटा । मेरा उद्देश्य पूरा हो गया। आज इम मुकदने को लडते-लडने दो मास बीत गए, उनका पैमा लडता रहा और मेरी बृद्धि े इमी अरसे में देश भी स्वतन्त्र हो गया। न जाने क्सि तरह अपने जीवन को सम्माले चला आ रहाहु। (नैपब्य में गाय ने रभाने ना स्वर) दूध सी दुह लिया होगा इसका ?

मृदुला—अभी, षुछ देर पहले दुहाया।

शशिधर-योडा सा देदो । द्यायद कुछ तबीयन मुघर जाय । ऐमे लगता है जैसे यह घौरी गय्या मेरे ही परिवार का एक प्राणी है।

मृदुला – आपके ही परिवार वा प्राणी है बापू । आप कैसे भूले जा रहे है।

श्रीधर-भूल तो नही रहा हू। न जाने क्यो मन अपने आप में उदास होता जा रहा है। बहुत ही यक गयाहुआ जा।

मृदुला-अवस्थे की बात है ! आज आप भी घकान

मान रहे है। क्षशिधर-मान तो नहीं रहा बेटी, महसूम वर रहा हूं। मैने जीवन में हारना नहीं सीखा । फिर अवस्था का भी तो तकाजा है मुदुला, देखती हो क्तिना बढ़ा हो गया ह । (नैपय्य में शोर) लो, यह लोग भी शहर से आ गये।

सलीम । सलीम-आया वापू<sup>†</sup>

श्चिषर-चन्दर कहा गया है <sup>।</sup>

सलीम--गाव बालों को बूलाने गया है। आने ही वाला होगा। हमने उसे बीच रास्ते से पहुरे ही बलने को कह दिया था।

शशिधर-अच्छा निया । बहुत अच्छा निया । देखो लखनसिंह नो भी यहा आने के लिए कह देना।

मै उनसे मुछ वानें बरना चाहूगा। सलीम-अब तो वे बड़े भरु बन गये हैं। अपने विचे

पर पछता रहे थे। हो सकता है वे खुद ही यहा आयें।

प्रशिषर-अच्छा है। मैं चाहता हू सब लोग यहा एक हो कर रहें। माई-माई की तरह एक दूसरे से वन्ये-से-

कर्याभिडाकर चर्ते। मेराअव क्**ठ**पतानही हैं । (खासी) शायद अब मै बनिक दिन जी भी सकृगा या

चन्दर-ऐसी बान नहीं करते वापू ! अभी हम को आप की बहुत आवस्यकता है। हम सदैव आपके सरक्षण में रहना चाहते हैं।

द्यशिवर-ऐसा मोचना कमजोरो है चन्दर<sup>ा</sup> मेरा काम पूरा हो गया । मुझे हृदय रोग है । क्या पता मृत्यु कव घर दराये । वैमे अब आजाए तो अच्छा ही है । बस 😁 (खासी, एक दम लेट जाते हैं)

मद्ला-वापू (घवरा जाती है)

द्यधिषर—कुछ नहीं वेटी, घवरा मत अभी अभी सलीम-(देख रूर) तवयत कुछ ज्यादा खराब है। मै डाक्टर को बुलाना हू। (जाना है, मृदुला शशिषर को समालती है )

केमरी-(बाहर से) क्या शक्षिघर तपस्त्री यहा है। मै उनसे मिलना चाहना हूं।

छलन-आइये । भीतर आजाइए । उनका स्वास्थ्य वहुत अधिक घराव है। (केसरीसिंह अन्दर आता है)

द्यशिषर-(लासी आती है) कीन आया है। वेसरी−वापू । मैं केसरीसिंह आया ह ।

शशिवर-(स्वर में पीड़ा का अनुभव हो रहा है साथ में उल्लाम भी है) बहुत उचित अवसर पर आये, मित्र ! तुम्हारी ही याद कर रहा था। तुम्हारे समाचार सुनना रहा हूँ । कोई नहीं कह सकता कि यह बही पुराना केनरी है। इन दिनो आश्रम को तुम्हारी आवश्यकता है। [ चन्दर, सलीम, लखनसिंह का घवराते हुए प्रवेश ] चन्दर—बापू का वया हाल है, मृदुला ।

श्चित्रघर--हाल ठीक है, <del>घ</del>न्दर । भगवान जिस हाल में रखे वही ठीक है (देखकर) रखनसिंहजी ।

छसर्नासह—जी हाँ । मैं लज्जित हूँ . श्रश्चियर-(ठीक्कर) छोडो उन बातो को । मैने तुम्हे बुलवाया है। और विना बुलवाये ये केसरीसिंह भी ठीक समय पर थानये है। ज्या मै लाशा नरू कि पुराने बैर विरोध भूलकर आप सब लोग मिलकर आश्रम में काम करेंगे . (जोर की खासी)

(श्वेष पृष्ठ ३१५ पर)

# जीवन की गहराई में

**(** Ę, )

मान और अपमान का प्रश्न वहुत वार सामने आता हैं। स्वाभिमान भी एक विकट प्रश्न है। मान-अपमान का ध्यान रखना यदि व्यवहार-दक्षता है, स्वाभिमान की रक्षा करना यदि मनुष्य का कर्त्तव्य है, तो मान-अपमान से परे हो जाना मनुष्य की सार्थकता है। मान-अपमान के साधारण प्रश्नों ने मुझे कभी परेशान नहीं किया; विलक जब दूसरों को उससे परेशान देखता हूं तो अलवत्ता सोच में पड़ जाता हूं। परन्तु यों अन्तिम विक्लेपण में स्वाभि-मान जैसी चीज भी नहीं ठहर पाती। अन्याय को सहन न करने की वृत्ति का ही नाम यदि स्वाभिमान हो तो उसका मैं कायल हूं। ऐसी तेजस्विता हर व्यक्ति में होनी चाहिए। अपने मान या स्वाभिमान की रक्षा करने के प्रति जागरूकता ही यदि उसका अर्थ है, और दूसरे के मान या स्वाभिमान-भंग से उसका कोई सरोकार न हो तो यह वात मेरी समझ में नहीं आ सकती। सच्चा स्वाभिमानी वह है जो अपने मान की रक्षा करे और दूसरे क मान-भंग होता हो तो उसे भी सहन न करे। साथ ही अपना मान-भंग करनेवालों को दुश्मन न माने, उनके दूसरे गुणों की उपेक्षा न करे । जीवन में ऐसे कई प्रसंग आते हैं, जहां दूसरे लोग लड़ पड़ते हैं। आजीवन नहीं तो बहुत अर्से तक .. दुरमनी मान लेतेहैं और उन प्रसंगों की कटुता को कभी नहीं भूलते हैं। बहस में ऐसे गर्मी के अवसर तो आये हैं जब में झल्ळा पड़ा हूं, गुस्से में आ गया हूं, कठोर और चुभने वाले शब्द भी मुंह से निकल गये है; परन्तु किसी के अप-मान या मान-भंग करने की कभी इच्छा तक न हुई । इसे में परमात्मा की अनुकष्पा ही अपने पर मानता हूं । यदि में इस बात पर ध्यान रखता कि छोगों या साथियों ने कहां-कहां मेरी उपेक्षा की है, कहां-कहां मुझे पद, स्थान, मान मिलना चाहिए था, तो मै शायद पागल हो जाता; परन्तु परमात्मा ने कृपा करके मुझे यह दृष्टि और वृत्ति ही लगभग नहीं दी है । दूसरे अपने प्रति क्या व्यवहार करते हैं, इसकी तरफ मेरा उतना ध्यान नहीं है, जितना कि इस बात की तरफ कि मैं दूसरों के साथ क्या व्यवहार करता हूं और मेरे उनके प्रति क्या कर्तव्य या धर्म हैं।

ऐसा एक तरफ़ा खाता मैं अपने पास रखता हूं। शायद इसीलिए कई वार या तो मूर्ख की गिनती में आता हूं, या कमजोर की, या फिर लोग मुझे समझ नहीं पाते। दूसरे के व्यवहार या रुख की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देता हूं, इसलिए, उनसे वार वार गलितयां होते हुए भी उन्हें फिर फिर मौका देने और उनपर विश्वास करने को जी चाहता है। मैं अपने आपको जब यह देखता हूं कि हर गलती को महसूस करता हूं, उसे सुवारने का प्रयत्न करता हूं, तो मुझे सहसा यह विश्वास नहीं होता कि दूसरे ऐसा न करते होंगे। इस पर रोशनी डालनेवाले कुछ प्रसंग यहाँ लिखता हूं।

जेल में एक बार नये आनेवाले राजनैतिक कैदियों ने मुझे कहा—दासाहव, आप जिनको वाहर पीछे छोड़ आये है वे तो आपकी कन्न खोद रहे हैं। मुझे एक तो इस पर विश्वास ही न हुआ, दूसरे, मैने मन में सोचा-मेरी कत्र क्या खुदेगी ? जो चीज दूसरे की दी हुई होती है, वह दूसरा छीन या ले सकता है, जो कुछ मुझे भगवान् ने दिया है वह वहीं छीन सकता है। फिर मेरे मन में यह विचार भी आया, कि जो शक्स किसी का कुछ छीनता नहीं, किसी का कुछ विगाड़ता नहीं, उससे कोई क्यों छीनने लगा, कोई क्यों विगाड़ करने लगा ? लेकिन, कुछ समय के वाद, जब मैं जेल से छूटा तो घर जाने .से पहले मैं उन मित्र से मिलने गया और मेरे आञ्चर्य की सीमा न रही, जब मैंने उनके व्यवहार, वातचीत, तर्ज से अनुभव किया कि सचमुच कुछ दाल में काला जरूर हैं । लेकिन मैंने इसकी कोई चिन्ता नहीं की और न अपना तर्ज, न रुख़ ही उनके प्रति बदला। उन्होंने स्वतन्त्र काम कर लिया था, इससे भी मेरी जिम्मेदारी कम हो गई। आगे जाकर अनुभव ने वतलाया कि उन्हें अधिक कष्ट उठाना पड़ा । मुझ मूर्व को भगवान् ने बचा लिया । जिन्दंगी में इस तरह का यह पहला ही अनुभव मुझे हुआ था।

एक वहन जो मुझे वहुत मानती थी, वड़ा विदेवास

#### जीवन की गहराई में : हरिभाऊ उपाघ्याय

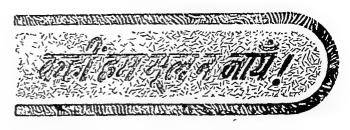
रखती थी, किमी तरह राजनैनिक दलवन्दी और प्रचार की शिकार होकर मेरे विन्ताफ हो गई। बम्बई मे एक प्रदशन करते हुए उन्होने कई आदिभया के मामन मुझे जिनना कुछ भरा-बुरा बहा जा मकता था , वहा । अगवान न मझे शक्ति दी कि मै शान्ति स और हममुख रहवर सब सुनता रहता। लेक्नि मृत्र विश्वास या कि एक दिन आएगा, जब उन्हें इस व्यवहार पर पछनाना पडगा । और ऐसा ही हुआ था। दाद म तो उनके दारीर और मन की स्थिति बहुत विगड गई किन्तु मुझपर वैमा ही सरोमा रखती रही । मरे मन म न उस समय यह भाव आया न आज भी है कि उन्हान मेरा क्तिना अपमान त्रिया। बन्कि उस घटना से मैन यह शिशाली कि जा मनुष्य अति दुल, क्रोध, आदेग या आवेश म बुळ ऊटपटाग वह जाता है, उस पर दिचार करना व्यय है। जो लुद ही अपने आप में नहीं रहता वह उस समय पर्न-नून्य हो जाता है। पशु के क्यवहार का गया पुरा मानना ?

जेल में एक बड़े शिष्ट और साजन्य की मृति जम मिन हमारे साय थे। वे आजाद खया र और स्वतन्त्र वृत्ति वे ये मगर लिहाज, अदब, दाराफ्त म किसी में पीछ नहीं रहते थै। वैसे मैं दुछ उन्प्रऔर दुछ सेवाओं वे लिहाज से समाम राजनैनिक कैदिया स यडा और एक हद तक सम्मानीय समझा जाता या। हम दाना एक दूसरे से मोह भी रखते थे, और एक दूसर की विशापनाओं का भी आदर भरतथा एक बार किसी बान पर मेरे और उनके बीच बादविवाद चट पटा। हम दोनो गरम हो गय । यहात्र कि उनके मृह स निकल गया-- "आपम है ही कीनमी योग्यना-आपकी उम्म का निहाज करता हू, बनी..." मृह उनके में शब्द बहुत चुन गय सासनर उनने जैमे सम्य और शिष्ट व्यक्ति में मुख से सुनवे । लेकिन थोड़ी ही देर में में सोचने लगा कि यदि भेरी योग्यना पर इन्ह विस्वास नहीं है तो मुझ इनसे एमे ही व्यवहार की आझा रखनी चाहिए। देवल आयु दे लिहाज मे ये जो जान करते हैं

यह भी इनना ही बहण्यन हो सनता है। मुने उसरा भी नया अधिकार है? अत मुद्दे इनने अप्रिय या नटु खब्दो से नुरान मानना चाहिए। जो में नटी हैं, जो मुद्र में नही हैं उसके मानने नी आदा मुत्ते दूसरो से क्यो रहनों चाहिए? यदि कोई योग्यता या विगेवताई तो लोवा पर उसना असर पढ़े बिना रहेगा नहीं, मंदि नहीं हैतो अपने को दूसरा से उसे मनवाने का कोई अधिकार नहीं।

एक मेरे अजीज है जो विगडने पर और आपेसे बाहर हा जाने पर चाहे जो कह देते है और कह सकते है। मूझे उनके इस व्यवहार से द ल तो बहुत होना है-और यह वे मेरे ही साथ करते हो सो बात नहीं, परन्त बुरा नहीं मानना । एक बार स्टेशन पर कई आदमियों के बीच उन्होने कोध म आकर वैसी ही बातें कहना सुरू किया। उन्हें देखकर एक और सज्बन ने, जो मझसे प्रेम रखते है मुझे सरत मुस्त कह डाला। इसलिए नहीं नि मैने खद कोई गुनाह विया हो, बल्कि इसलिए कि गुनहकारी के साथ में सस्ती से पेश नहीं आता । जब दोनों ने इस प्रकार सीमा छोड दी तो मुझे बहुत बुरा लगा। इतना कि अप इनके साथ बात करने का धर्म नहीं रहा । दो-एक दिन के बाद जब उनसे शान्ति से बात करने का अदमर आयातव मैने इतना ही नहाकि अवतन तो तुम घर पर ही बुरा भला कह बैठते थे, अब तो स्टेशन पर भी बहुने लग यये। जिस सहम को तुमने अपना बडा वहां और माना है उसके प्रति स्टेशन पर ऐसा व्यवहार क्या विभी को शोभा दे सकता है ? उन्होंने उत्तर दिया "मैं भी इसे अच्छातो नहीं वहता—लेनिन मेरा आवेश अब रुक्ता दम है, आदि" मैने ऐसे अनुभव से यह निवोड निकाला है कि जिनकी नीयत पर सन्देह न हो, उनके स्वभाव-दोपो को सहन किये विना कोई गति नहीं है। रोज-रोज उससे उद्धिग्न होने और रोते रहने के बजाय तो उसे झान्ति से सहन करने ना अभ्यास बढाना अधिक लाभदायी है ।

कलाकार बनने के लिए, मुरय दार्त है मानवमात्र के प्रति प्रेम न कि क्लान्प्रेम ! —-टाल्सटाय



#### रामकृष्ण परमहंस [पुष्प तिथि—भाद्रपद कृष्णा ११, १६ अगस्त]

शायद सन् १८८१ की पूजा की छुट्टियों के समय पहले-पहल मुझे उनके दर्शन हुए थे। उस दिन केशव वाव के आने की वात थी। नाव से दाक्षिणेय्वर पहुंच, घाट से चढ़ कर एक आदमी से पूछा--"परमहंस कहां है ! " उस मनुष्य ने उत्तर की ओर वरामदे में तिकये के सहारे बैठे हए एक व्यक्ति की ओर इशारा करके वतलाया—"यही परमहंम है।" परन्तु मैने देखा, दोनों पैर ऊपर उठाये और उन्हें अपने हायों से घेर कर बांबे हुए अवचित होकर वे अपने तिकये का सहारा लिये हैं। मेरे मन में आया, इन्हें कभी वावुओं की तरह तिकये के सहारे बैठने या लेटने की आदत नहीं है, संभव है, यही परमहंस हों। तिकये के विलकुल पास ही उनके दाहिनी और एक वाव् बैठे थे। मैने मुना, वे राजेन्द्र मित्र हैं, बंगाल सरकार के महायक सेकेट्री रह चुके हैं। उनके दाहिनी ओर कुछ सज्जन और वैठे हुए थे। परमहंसदेव ने कुछ देर बाद राजेन्द्रबाबू से कहा—"जरा देखो तो मही केंगव आता है या नहीं।" एक ने जरा वढ़ कर देखा, लीट कर उसने कहा--"नहीं आते।" थोड़ी देर में फिर शक हुआ तव उन्होंने फिर कहा-- 'देखो, जरा, फिर तो देखो।" इस वार भी एक ने देखकर कहा--'नहीं आते'। साय ही परमहंन देव ने हंनते हुए कहा—"पत्तों के झड़ने का भव्द हो रहा था, रावा सोचती थी-भेरे प्राणनाथ तो नहीं आ रहे हैं! क्यों जी, क्या केंगव की सदा की यही रीति है ? आते ही आते एक जाता है।" कुछ देर बाद संघ्या हो ही रही थी कि दलवल समेत केयव वा गये।

आते ही जब भूमिष्ठ होकर उन्हें प्रणाम किया, तब उन्होंने भी ठीक वैसे ही भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया और कुछ देर बाद सिर उठाया । उस समय वे समाधिमग्न थे—कह रहे थे—

'कलकते भर के आदमी इकट्ठे कर लाये हो इस-लिए कि में व्याच्यान दूगा। आच्यान-व्याख्यान में कुछ न देसकूगा। देना हो तो तुम दो। यह सब मुझसे न होगा।' उसी अवस्था में दिव्य भाव से जरा मुस्कराकर कह रहे है—''मैं वस भोजन पान कहंगा और पड़ा रहूँगा। मैं भोजन कहंगा और सोळंगा—वस। यह सब मैं न कर सक्गा। करना हो तुम करो। मुझ से यह सब न होगा।"

केशववाबू देख रहे हैं और रामकृष्ण भाव में भरपूर हो रहे हैं। एक एक बार भावावेश में 'अ: अ:' कर रहे हैं।

श्री रामकृष्ण की उस अवस्था को देन कर मैं सोच रहा था—''यह ढोंग तो नहीं है। ऐसा तो कभी मैने देखा ही नहीं।" और मैं जैसा विश्वासी हूँ यह तो तुम जानते ही हो।

समाधिभंग के पञ्चात् केशववाव् से उन्होंने कहा—
"केशव, एक दिन में तुम्हारे यहां गया था। मैंने सुना, तुम
कह रहे हो, 'भिक्त की नदी में गोता लगा कर हम लोग
मिन्चिदानन्द-सागर में जाकर गिरेंगे।' तब मैंने ऊपर
देखा, (जहां केशववाव् और ब्राह्मसमाज की स्थियां
वैठीं थीं) और सोचा तो फिर इनकी क्या दशा होगी?
तुम लोग गृहस्थ हो एक वारगी किस तरह सिन्चिदानन्द
सागर में गिरोगे? उसी न्यांले की तरह जिसकी दुम में
कंकड़ बांच दिया था, कुछ हुआ नहीं कि झट वह ताक
पर जा बैठा, परन्तु वहां रहे किम तरह? कंकड़ नीचे की
ओर खींचना है और उसे कूद कर नीचे आना पड़ता है।
नुम लोग इसी तरह कुछ काल के लिए जप-ध्यान कर सकते
हो, परन्तु दारा और मुन क्यों कंकड़ जो पीछे लटका
हुआ नीचे की ओर खींच रहा है, वह नीचे उतार कर ही

छोडता हैं। तुम लोगों को तो चाहिए कि मिनन की नदी में एक बार डुबकी लगा बर निचलों, फिर डुबकी लगाओं और फिर निकलों। इसी तरह बरते रहों। एक बाग्गी तुम लोग कैसे डुब कर जा सक्ते हों?"

वेदावदावू ने वहा "वया गृहस्यों के लिए यह वात

असभव है ? महाप देवेन्द्रनाथ ठाकुर?"

परसहस ने दो तीत बार 'देवेग्द्रनाथ ठाकूर' देवेग्द्र देवेग्द्र' कहर र उन्हें तक्ष्य चरते कह बार प्रमास किया फिर कहा—'भूनो, एक के यहा देवेग्द्रमा के समय उत्सव मनाया जाता था, मुखाँवत के समय भी बीठ कहती थी और अस्त के समय भी। नई साठ बाद फिर बह भून न रह गई। एक दूसरे ने पूछा—'बड़ो महायत, आजक्क आपने पहांची बीठ क्यो नहीं चहाई जाती?'' उत्सते कहा, 'असी अब तो दात ही। गिर गये ''? देवेन्द्र मी अब प्यान चारण करता है—देवा ही। पणन्तु वडी सान का आरमी है—जूब मनुष्यता है इममें।

"देखों, जितने दिन माया रहती हैं, उतन दिन आदमी बच्चे नारियल में तरह रहता हैं। नारियल वब तक बच्चा रहता हैं तत्वतम यदि उमदा गूदा निक्ताजना चाहों तो गूदे के साथ कोघटे का भी कुछ अचा छिल कर करर निकल आयेगा। और जब माया निकल जाती हैं तब वह मूच जाता हैं—नारियल मा योजा कोघटे के यूट जाता हैं, तब वह मीतर लडलकाता रहता है, आस्मा कलम और वारिर लक्ष्म हो जाता है, फिर वरीर के साथ उसमा बोई सबथ मही रह जाता।"

यह वो 'मं' है, वह बड़ी नड़ी विध्नाहमा ला वर लड़ी वर देता है। क्या यह 'मं' दूर होगा ही नहीं? देवा वि उस ट्रट हुए मकान पर पीपल वा पेड पनर रहा रहा है, उसे काट दो, फिर दूमरे दिन देवो। उसमें कोपल निकल रही हैं—यह 'मं' भी इसी तरह वा है। प्याव ना कटोरा सान वार धोजो, परन्तु उसवी बृजाती हो नहीं।"

महादेव देसाई
(पुष्प तिप-भावपद कृष्णा १०,१६ अगस्त)
महादेव देसाई के मित्र और प्रशंधन उनके प्रिय काम
करके ही उनकी बरसी मनाते हैं। वे बढे सन्नियाली

पुरुष थे। वे सुन्दर और सुडील अक्षर लिखते या। वे कई जीओ से प्यार करते थे। लेकिन उन सब में चर्ल की जगह पहली थी। एक क्लाकार होने के नाते वे निषम से बहुत बढिया नर्ताई नरते थे। बाग कान के मारी बीझ से पक कर चूर होजाने पर थी वे हमेशा नतने का बस निकाल लेते थे। चर्का उन्हें फिर तरोनाबा बना देता था।

उनकी कई खूबियों में उनके बेंगोड अक्षर भी बोई क्य महत्व नहीं रखते थे। उसमें कोई उनका सानी न था। गमदाल स्वामी ने अपने एक दोहें में जूबमूरत अक्षरों की वमकीले मीतिया से तुलना की है। महादेव की वलम से निकले हुए अक्षर लरे मोती जैसे होते थे।

उनको तीसरी जूबी थी, हिन्दुस्तान की भाषाओं से उनका प्रेम । आप सबको भी यह गुण अपने मेंपैदा न प्ले की की किया करने विश्व । वे भाषाधालनी थे । बताकी, मनाठी और हिन्दी पर उनका पूरा अधिकार पा। और वे उर्जु भी सीख चुने थे । जल में उन्होंने क्वाजा साहिब एक एए ए मति है, जो उनके साथ केंद्र थे, भारमी और अरवी सीलने की भी को विदार की भी ।

—मो० क० गाथी

रवीन्द्रनाथ ठाकुर (पुष्पतिथि—भाद्रपर कृष्ण २, ७ अगस्त)

पुरुदेत वर्ष देह लाक में मिल चुनी है, लेकिन जन ने अदर वो जोन थी, जो उन्नेला पा, नह ती मूरण की तरह पा, जो तदकक बना रहेगा जवतक परिता र जानदार हों। गुरुदेव ने जो रोमनी केलई वह आत्मा ने लिए वी। गूरज की रोमनी केल हमारे धारीर को लामवा पहुलाती है, वैसे गुरुदेव को लेलाई रोमनी ने हमारी सारम को उरुर उठाया है। वे एक कि वे की र प्रमान अंजी ने साहित्यक वे। उन्होंने अपनी मानु-मापा में लिला और साप्ता को उरुर उठाया है। वे एक कि वे की र प्रमान अंजी ने साहित्यक वे। उन्होंने अपनी मानु-मापा में लिला और साप्ता वमाल उनकी किवान के सर्वा के कान्यवा बहुन्तनी भाषाओं में हो चुने हैं। वे अवेजी के भी बहुत बढ़े देखक वे और धायर बिना अग्रेमी जाने ही वे उस अवान के हतने बढ़े केलक कम पाये थे। गररेस की पायदें तो उन्होंने की थी, लेकिन मूनिविद्धी को नोई विधी उन्होंने नहीं ही भी वे तो वम गुरुदेव ही वे हमारे एक

वाइसराय ने उनको एशिया का कवि कहा था। उसने पहले किसी को ऐसी पदवी नहीं मिली थी। वे समूची दुनिया के भी कवि थे। यही क्यों, वे तो ऋषि थे। हमारे लिए वे अपनी 'गीतांजिल' छोड़ गये है , जिसने उनको सारी दुनिया में मशहूर कर दिया। तुलसीदासजी हमारे लिए अपनी अमर रामायण छोड़ गये हैं। वेदव्यासजी ने महाभारत के रूप में हमारे लिए मानव-जाति का इतिहास छोड़ा है। ये सब निरे कवि नहीं थे। ये तो गुरु थे। गरुदेव ने भी सिर्फ कवि के नाते ही नहीं, ऋषि की हैसियन से भी लिखा है। लेकिन सिर्फ लिखना ही उनकी अकेली वासियत नहीं थी। वे एक कलाकार थे, नृत्यकार थे और गायक थे। बढ़िया से बढ़िया कला में जो मिठाम और पवित्रता होनी चाहिए, वह सब उनमें और उनकी चीजों में थी। नई-नई चीजें पैदा करने की उनकी ताकन ने हमको शांतिनिकेतन, श्रीनिकेतन और विश्वभारती जैसी संस्थाएं दी है। अपनी इन संस्थाओं में वे भावरूप से विराजमान हैं, और यह अकेले बंगाल को ही नहीं, विलक्ष समूचे हिन्दुस्तान को उनकी विरासत के रूप में मिली हैं। गांतिनिकेतन तो हम सबके लिए असल में यात्रा का एक धाम ही वन गया है। गुरुदेव अपने जीनेजी इन संस्थाओं को वे रूप नहीं दे पाये जो वे देना चाहते थे, जिसका वे सपना देखते थे। कौन है, जो ऐसा कर पाया हो ? आदमी के मनोर्य को पूरा करना तो भगवान के हाथ में है। फिर भी ये संस्थायें हमें उनकी कोशियों की याद दिलायेंगी और हमेगा हमको यह बताती रहेंगी कि गुरुदेव के मन में अपने देश के छिए कितनी गहरी प्रीति यी और उन्होंने उसकी कितनी-कितनी मेवाएं की है। --मो० क० गांबी

#### लोकमान्य तिलक (पुण्यतियि—श्रावण शृक्ला १०,१ अगस्त)

तिलक महाराज का देश प्रेम अटल था। साथ ही उनमें तीक्ष्ण न्याय-वृत्ति भी थी। इस गुण का परिचय मुझे अनायास मिला था। १९१७ की कलकत्ता-महासभा के दिनों में, हिंदी साहित्य सम्मेलन की सभा में भी बह आये थे। मैंने वहीं देखाकि राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति उनका कितना प्रेम था। मगर इससे भी बढ़ कर जो बान मैंने उनमें देखी, वह थी अंग्रेजों के प्रति उनकी न्याय-वृत्ति उन्होंने अपना भाषण ही यों शुरु किया था—"मैं अंग्रेजी शासन की ख़ब निन्दा करता हूं, फिर भी अंग्रेज विद्वानों ने हमारी भाषा की जो सेवा की है, उसे हम भुला नहीं सकते" । उनका आवा भाषण इन्हीं वातों से भरा था । आखिर उन्होंने कहा था कि अगर हमें राष्ट्रभाषा के क्षेत्र को जीनना आंर उसकी वृद्धि करना हो तो हमें भी अंग्रेज विद्वानो की भांति ही प्रिथम और अभ्यास करना चाहिए। अपनी लिपि की रक्षा और व्याकरण की व्यवस्था के लिए हम एक बड़ी हद नक अंग्रेज बिद्वानों के आभारी हैं। जो पादरी आरम्भ में आए थे, उनमें पर-भाषा के लिए प्रेम था । ग्जराती में टेलर-कृत व्याकरण कोई साधारण वस्तु नहीं है। लोकमान्य ने इस बात का विचार भी नहीं किया कि अंग्रेजों की स्तृति करने से मेरी लोकप्रियता घटेगी। लोगों को तो यही विस्वास था कि वह अंग्रेजों की निन्दा ही कर सकते है।

तिलक महाराज में जो त्याग-वृत्ति थी, उसका सीवां या हजारवां भाग भी हम अपने में नहीं बता सकते। और उनकी सादगी ? उनके कमरे में न तो किसी तरह का फर्नीचर होताथा, न कोई खास सजाबट। अपरिचित आदमी तो स्थाल भी नहीं कर नकता था कि वह किसी महान पुरुष का निवास-स्थान है। रगरग में भिदी हुई उनकी इस सादगी का हम अनुकरण करें तो कैसा हो ? उनका वंर्य तो अद्भृत था ही । अपने कर्तव्य में वे सदा अटल रहते और उसे कभी भूलते ही न थे। वर्मपत्नी की मृत्युका संवाद पाने पर भी उनकी कलम चलती ही रही।..... क्या हम तिलक महाराज के जीवन का एक भी ऐसा क्षण वनला सकते हैं जो भोग-विलास में बीता हो ? उनमें जबरदस्त महिष्ण्ता थी। यानी वे चाहे जैसे उहंड-मे-उहंड आदमी ने भी काम करवा लेते थे। लोक-नायक में यह अस्ति होनी चाहिये। इसमे कोई हानि नहीं होती। अगर हम संकृत्रित हृदय यन जायें और सोच रुं कि फर्जा आदमी से काम लेंगे ही नहीं, तो या तो हमें जंगल में जा कर वन जाना चाहिए, या घर बैठे बैठे गृहस्य का जीवन विताना चाहिए । इसमें शर्त यही है कि स्वयं अलिप्त रह सकें। --मो० क० गांधी

अरविन्द

[अन्मतिथि-भाद्रपद कृष्ण १०, १५ अगस्त]

िर्भ नवम्बर सन् १९३८ की रात के वो बने श्री अरिवन्द की जाप की दुर्गन्दना हुई थी। उसके बाद से उनके कार्यक्षम में कुछ गरियनंत्र जायदा और नुछ एक साधक उनकी सेवा में रहते वहाँ। तभी स्वामावत अनेव विषयों की चर्चा भी छिड़ जाती। डा निरोदयरण को कि तब से लगातार भी अरिवन्द की सेवा में रहे हैं यहा एक दिन की, १० दिसम्बर १९३८ की, जावचीत वा विवरण प्रस्तुन करते हैं। हम आसा करते हैं वे ऐसे और भी अनेव विवरण प्रस्तुन कर समेरे।

हुक के दिनों में बातचीत साथ के समय होनी थी। हुममें से पाच-छ व्यक्ति उनवी राज्या वे पास बैठ जाते और उनके हुमित की परीक्षा बरते। व वर्धी-सभी जब माताजी भी उपस्थित होनी तब हुमारी चर्ची अधिक सजीव एवं सरस हो उठती। परतु पीछ चलन ये अपने

काम के कारण उपस्थित नहीं हो पाती थी। "आपने पाडिचेरी को अपनी साधना का स्थान

आपन पाडचरा का अपना साध्या ना राज्य क्यों चुना ?" सध्या के झटपुटे में हममें से किसी ने पहला सीर छोडा !

"एक आदेश के कारण" उन्होंने उत्तर दिया, "एक अरयन्त प्रमावपूर्ण काणी ने मुझसे यहा आने नो कहा और मैं उसकी आज्ञा का पालन किये बिना नही रह सका ।"

हुमारी दिलवस्मी एवदम बढ गई और हम बुछ और पास सरक आये। उन्होंने आगे वही, ''अब में बन्दर से कलक्षा जाने लगा मैंने ठेठे से पूछा-अपनी सामना के अग्रवर होने के लिए अब मुंते बया कर साहिए, 'वे कुछ देर मीन रहे-समवन अंतर की वाजी मुनने के लिए-और फिर बोले, 'जियन समय पर प्यान किया करों और हुंदर में वाणी मुनने वा माल नहीं और हुंदर में वाणी मुनने वा माल नहीं और हुंदर में बीणों मुनने वा माल नहीं और माति हुंदर में बीणों मुनने वा माल नहीं की पी पार्टी के बताई सी। बाजी उनर से आती हों लिया। पर मुझे दिन्दु के जिया उन्होंने बताई थी। बाजी उनर से अति साम के लिए विशेष समय पाराजन करना छोट दिया प्यान हुर समय बलता है। रहुता था। अत्यन इन्होंने दिए विशेष स्पत्ते वेटने की जरूरत नहीं यो। जब लेटे कलनारों आये और

उन्होने यह सब बात सुनी, बे बहुन अधिक अममजस में पड पवे और नाराज हुए। उन्होने कहा, 'किसी भूत ने तुम्हे अपने बच में कर लिया है।' मेंने उत्तर दिया, 'जल्छा यदि यह कोई मूल हैं तो भी मुझे इसीके पीछे चलना होगा।' बे मेरी आतरिल जबस्था नहीं समझ सने, न उन्हें उत्तर की वाणी को ही नोई करनान थी। वे नेवल एक ही प्रकार की वाणी सुनने ने अस्परन थे।'

जब वें रहे तो विमी ने एक और प्रश्न किया जिसका प्रकृति विषय से कुछ सम्बन्ध नहीं था। हमारे बार्मालाय का प्रवाह साधारणत इसी प्रकार बकता थां ऐसी मटकी में और ऐसी परिस्थित में विसी एक विषय पर विधिवन्न विचार करना सभव नहीं हो सकता या माही बढ़ बहुत अधिक लामदायक होता।

"लोग कहते हैं कि 'यौगिक-साधन' आपके द्वारा केशवसेन की आत्मा ने लिखी थी। क्या यह सच है?"

"केशबनेन ?" उन्हांने आदस्यों ने नहां, "जब में इसे लिख रहा था, प्रयेन बार आरम में और अत में राममोहनराय नी प्रतिमा मेरे सामने आनर कांग्रे हो बाती थी, नेराबनेन नी नहीं। जरर निसी सृजनशील व्यक्ति ने राममोहनराय को केशबनेन बना दिया है। बमा तुन्हें मालून हैं "उत्तर सीनी" नाम नेने चला? " उन्होंने जरा रुक नर पूछा।

हान जरा दक्त पर प्रूटा

"नही जी।"

"तुम्हे मानूब ही है कि पुस्तक पर लेखक के रूप में 'उत्तर मोनी' का नाम है। क्या तुम जानने हो यह नाम कैसे पड़ा ?"

"नही जी।"

"अच्छा दक्षिण में एक प्रतिस्त योगी था। जब वह मरने रुपा तो उसने अपने विषयों से बहा कि उत्तर से एक पूर्व मोगों दक्षिण में आयगा और वह अपनी तीन मिलाओं सिक्यात होगा। वे जिलाए वहीं हैं जो मेंने "मुगादिनीर पत्र" (पत्नी के नाम अपने पत्रों) में प्रतिनादिन की है। उस योगी के एक जमीदार जिल्ला ने मुने दूढ़ निकाला और पुरतक वा सारा सर्व उसीन उठाया। इसी नारण लेखक ना नाम 'उत्तरयोगी' दिया गाना है। अदिति से ] [ डाठ निरोदवरण

# TONICI WE

भारत में सशस्त्र कांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास (प्रथम खण्ड) — लेखक — मन्मयनाय गुप्त, प्रकाशक — नागरी प्रेस, प्रयाग, पृष्ठ ३४४, मूल्य ४॥)

विदेशी सत्ता के चंगुल से भारत को मुक्त करने के लिए कितना संवर्ष करना पड़ा और कितनी आहुतियां देनी पड़ीं, इसका इतिहास निस्सन्देह अत्यन्त रोमांच-कारी एवं अद्भृत है। जिस स्वतंत्रना का आज हम उपभोग कर रहे हैं, उसकी वुनियाद में जाने किस-किस की सावना छिपी हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी के मुप्रसिद्ध लेखक श्री मनमयनाथ गुप्त ने सन् १८५७ के गदर से लेकर सन् १९३९ तक की सशस्त्र क्रांतियों का विशद वर्णन किया है। लेखक स्वयं एक क्रांतिकारी रहे हैं। उन्होंने न केवल क्रांतियां देखी ही हैं, अपितु स्वयं आगे बढ़कर उनमें सिकय भाग भी लिया है। क्रांतियों के साथ उनके इस नादात्म्य के कारण उनके वर्णन बहुत ही रोचक और हृदय-स्पर्शी वन गये हैं। प्रामाणिक तो होने ही चाहिए।

पुस्तक का प्रारंभ १७५७ के प्लासी के युद्ध तथा उनके पहले के कतिपय विद्रोहों के वर्णन से होता है। अनन्तर तिथिकम से देश के विभिन्न भागों में हुई क्रांतियों और क्रांतिकारियों का सविस्तर उल्लेख है।

इस खण्ड में लेखक ने क्रांतिकारी आंदोलन के सूत्रपात से लेकर बंगाल, दिल्ली, पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, वर्मा, सिंगापुर, मदरास तथा अन्य स्थानों में हुई क्रांतियों का बड़ा सजीव और रोमांचकारी हल दिया है, जिसे पढ़कर अनेक शहीद हमारे सामने आ खड़े होते हैं। और उनके बलिदान की कहानियां हमारे हदय को अक्नोर डालती है।

लेखक के स्वयं क्रांतिकारी होने से इस पुस्तक के विवरण जहां रोचक वने हैं, वहां उनमें एक दोप भी आ गया है और वह यह कि लेखक की दृष्टि तटस्य नहीं रह सकी। इतिहासकार का काम तथ्यों को देखना है, उनके साथ वहना नहीं है। जो हो, पुस्तक प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी को पढ़नी चाहिए, पढ़ने से अधिक समझनी चाहिए। विशेषकर यह स्मरण रखने के लिए कि आजादी के लिए हमने कितनी कीमत चुकाई है।

में इनसे मिला: लेखक—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' प्रकाशक—आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ २००, मूल्य २॥)

हर्ष की वात है कि हिन्दी-साहित्य की समृद्ध वनाने के लिए इवर कुछ अभिनन्दनीय प्रयत्न हो रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक का प्रशयन और प्रकाशन वैसा ही एक प्रयत्न कहा जा सकता है। हिन्दी के अधिकांश साहित्यकारों के विषय में सामान्य पाठकों में अनेक भ्रांत-बारणाएं फैली हुई हैं, कारण कि उनके बारे में, कुछ साहित्यकारों को छोड़कर, जिन्होंने अपने विषय में स्वयं लिखा है, प्रामाणिक सामग्री वहत कम मिलती है। भाई 'कमलेग' जी ने हिन्दी के छोटे-वड़े दर्जनों उपन्यासकारों, कहानी-लेखकों, कवियों, आलोचकों, भाषागास्त्रियों, नाटककारों आदि से 'इंटरव्यू' लेकर महत्वपूर्ण सामग्री इकट्ठी की है बीर उसका लाभ पाठकों को दे रहे हैं। इस पुस्तक में उन्होंने सर्वश्री गुलाबराय, रामनरेश त्रिपाठी, सुदर्गन, 'निराला', धीरेन्द्र वर्मा, चतुरसेन शास्त्री, उदयशंकर भट्ट, महादेवी वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, शांतिप्रिय द्विवेदी, 'अजेय' और रामविलास शर्मा, इन बारह साहित्यकारों को लिया है। 'इंटरब्यू' की पद्धति हिन्दी में बहन पुरानी नहीं है। पं० वनारसीदास चतुर्वेदी, वंय्वर कन्हैयालाल मिश्र, प्रभाकर तथा दो-एक अन्य लेखकों ने इस दिशा में प्रशंस-नीय कार्य किया है, फिर भी 'इंटरब्यू' का प्रचलन अभी हिन्दी में बहुत कम है। 'इंटरब्यू' लेना आसान काम भी नहीं है और मन की बात निकलवा लेना तो बहुत ही कठिन हैं। 'कमलेश'जी के अधिकांश 'इंटरब्यू' सफल

हुए हैं । उन्होंने बहुत-मी ज्ञातच्य और रोचक बातें साहित्यनारी से बहुवजाती हैं । हमें दूब सबह में रामनरेराओं, सुर्वयनवी और चतुरसेनजी के 'इटरप्यूं बहुत पतन आये। वे चिचन ती है ही, साब ही उनमें 'इटरप्यू' देनेबाठों के अनर के एक बास्तविच ज्ञाकी भी पाठकी को सिक जाती हैं ।

हा, सामग्री का फम ठीक नहीं है। वह एक प्रकार से भागमती का पिटारा कन भवा है। वक्छा होना यदि साहित्य के एक-एक अन के साहित्यकारों को किक विका जन निवा जाता। इसमें की उन्होंने का शिक्ष, कहानीकार कि मार्ग कि मार्ग कि एक दें म इस्ट्टा कर दिया है। हा क्का है कि इससे पुल्क को रोजस्ता वढ गई हो, पर उसमें कोई म्यलन नहीं रहीं।

जो हो, हमें विश्वास है वि पुस्तक वा हिन्दी-जगत में स्वागत होगा और पाठव आगे की विस्तो की उत्सुक्ता से प्रतीक्षा करेंगे।

पुस्तक की छपाई सामान्यनमा ठीव है, पर वही-कही छापे की मूलें रह गई है।

कही छापे की भूजे रह गई है। विनोबा का संदेश - लेखक—सुरेश रामभाई, प्रकाशक—किताबी डीला, इलाहाबाव पुट २५, सूरव चार आना ।

विनोवाजी का नाम और उनका मुदान-यत देश-विदेश के लिए उत्तरोतर आकर्षण की वस्तु मनता जा रहा है। अपन जनुष्ठान के द्वारा देश के सामाजिन जीवन में विनोवा एक चई ऋणि के लिए उपमुक्त भूमि तैयार कर रहे हैं।

अन्तुन पुरित्ता में लेखन के पान लेल है, जिनमें से एन तो निनोश को, खेर चार उनके मूरान-यह आदी- लग ने बितास और उसके विभिन्न रहतुनों को समाने में सहायता देते हैं। इन लेखों को पड़कर पान जलता है कि मुदान दात बना प्रारम और दिकास कैंग्रे हुमा? यह यह देव हो जी प्रतिकार के प्रति

(पृष्ठ ३०७ का सेव)

रखन-भगवान आपनो चिरायु नरें । मै निस योग्य हूं । मै सदैव आपकी आज्ञा माननर अपना न सैव्य पालन मरुगा ।

(मृदुष्टा की सिसकिया)

श्रीश्रापर-अपन क्या में अब कुछ नहीं रहा रखनकी भगवान के यहा से देवदूत चल पड़े हैं। अब कुछ ही छाणों भी काल है। परकार रोने नहीं, बेटर <sup>1</sup>

की बात है। मृदुला रोते नहीं, बेटा । चन्दर-(भीड का दोर) वापू सभी ग्रामवासी आये

है। आपने दर्शन करना चाहते हैं।

र्यादाघर-कुटिया का द्वार सोछदो। मैं स्वव सबके दर्शन करना चाहता हूं (स्टन, हिविबया) मैं वाहता हा कि मेरी विदा-वेळा में आप छोग मुस्करायें <sup>7</sup> ताकि मैं विश्वास कर सकू वि आप मेरे पोछे मेरे छोडे अवूरे काम को पूरा कर सकेने <sup>1</sup> (सहसा हिनकी के साथ मृत्यु । भीड घान्ति से आकर द्वार पर ठिठक जाती है फिर सहसा सिसकिया फूट पडती है । सहसा केसरीसिह लडा हो जाना है )

वेसरी-आइयो। रोने वा अवसर नहीं है। हुम उनके कार्य पूरे करण है। वे मरे नहीं अमर हो। यये हैं। उन्होंने हमें बीनज दिया और जीना सिलाया। वह हमारे लिए छान्ति, सुन, और स्नह के अपद्रत थे। यहान आसाए ममी नहीं मरती। हमें वनना पान यागे यहाना है और वह रोने से नहीं उनके पद चिन्हों पर चलने से होगा। (सहसा सब लोगों की दृष्टि केमरीसंब पर जानर अटन जानी है। एक प्रकाश उमरता है वो मारी यारी शिवाप कीर वेसरीसंब्र के मुख पर वमनता है। परदा पिरता हैं।



#### जवन्य व्यापार

आज जबिक हमारे देश में अधिकांश बढ़े व्यापार डांवाडोल स्थिति में है, एक व्यापार है, जो जोरों से तरकी कर रहा है। वह व्यापार है स्त्रियों, विशेषकर नव-यवतियों के ऋय-विऋय का और उनमें 'पेशा' कराने का । स्त्रियों और पुरुषों के गिरोह-के-गिरोह इसमें लगे हैं और उनका काम है छोटे-बड़े कस्बों और देहातों से हजारों अवोध वालिकाओं और स्त्रियों को फंसाकर यहर में ले आना और उन्हें वेचकर,उनसे पेशा कराकर पैसा कमाना । सबसे बड़े आइचर्य और संताप की बात यह है कि नगरों म 'जनरक्षक' पुलिस बैठी है, बायनाधिकारी बैठे हैं और उनकी आंखों के सामने यह व्यापार धड़ल्ले के साथ चल रहा है। अभी दिल्ली में एक कान्फ्रेंस में भाषण देते हुए श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने बताया कि विभिन्न स्यानों से ३०० लड़िकयों का उद्घार किया गया है। पिछले दिनों 'इंडिया' नामक पत्र में इस विषय पर दिल को हिला देनेवाला एक लेख छता था । उसमें अनेक चित्र भी दिए गए थे, उन बहनों के, जिन्हें विभिन्न चकलों से मक्त कराया गया था और उनकी मर्मस्पर्जी कहानियां उन्होंके मुंह में कहलवाई गई थीं। यह पढ़कर रॉगटे खड़े हो जाते है कि किस प्रकार मासूम लड़कियों को फुसलाया जाना है, किस प्रकार उन्हें बारीरिक यातनाएं दे-देकर चकले पर बैठने के लिए विवश किया जाता है और किस प्रकार उनके मन में यह भावना पैटा कर दी जाती है कि वे पतित हो गई है और समाज या उनके माना-पिता उन्हें कदापि ग्रहण न करेंगे।

हम इस जबन्य व्यापार की अपनी पूरी शक्ति से निन्दा करते हैं। जो लोग इस भयंकर व्यापार को कर रहे है, वे अपने और देश के माथे पर कलंक का टीका लगा रहे हैं। रचनात्मक कार्यकर्ताओं और लोकसेवकों से हम अपील करेंगे कि इस नफ़रत-भरे काम में लिप्त लोगों को पकड़ना भी वे अपने कर्त्तव्य का एक अंग मान छें। साथ ही व्यामनाविकारियों से भी हम अनुरोध करेंगे कि वे ऐसे लोगों को कठोर-से-कठोर दण्ड दें। आखिर हमारा यह लम्बा-चौड़ा शासन-तंत्र किस मर्ज की दवा है? पता चला है कि पुलिस इस बारे में ढील से काम लेती है। यदि ऐसा है तो हम कहेंगे कि वह अपने कर्त्तव्य से च्युत होती है।

हम नहीं मानते कि इस व्यापार के पीछे केवल आर्थिक कारण हैं। यदि है, तो भी इसे किसी भी हालत में उचित नहीं ठहराया जा सकता। हम अपनी सरकार से कहेंगे कि उसे इस संबंध में अब अधिक जागरूक और कर्त्तव्यशील बनना चाहिए।

#### राजाजी का संकल्प

मदरास के मुख्य मंत्री चक्रवर्ती राजगोपाला-चार्य देश के उन महान व्यक्तियों में से हैं, जो चाहे पद पर हों, या वाहर, सदा देश को ऊंचा उठाने के लिए चितित और प्रयत्नशील रहते हैं। हाल ही में उन्होंने एक महान् संकल्प किया है कि वह मदरास प्रदेश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए जी-जान से चेट्या करेंगे। राजाजी का यह संकल्प सराहनीय और अभि-नंदनीय है। आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता देश-व्यापी भ्रष्टाचार को दूर करने की है। प्रायः हर विभाग में आज भ्रष्टाचार फैला है, वेईमानी चल रही है और अपनी स्वायंसिद्धि के लिए गलत काम किए जा रहे हैं। हम यह नहीं कहते कि सब लोग बेईमान या स्वार्थी हैं; लेकिन कहा जाता है कि एक मल्ली तालाब के पानी को गंदला कर देती है। यदि किसी विभाग के थोड़े कर्मचारी भी बेईमान है, तो वे सारे विभाग को दूपित कर देते हैं।

आज के बुराइयों से भरे युग में राजाजी का यह संकल्प उस दीप-स्तंभ की भांति है, जो अंधेरे में भटकते मानव का एक मात्र सहारा होता है। क्या अन्य प्रदेशों के अधिकारी राजाजी के इस कंदम का अनुमरण नहीं करेगे?

कैसा साहित्य विक रहा है <sup>?</sup>

उस दिन प्रयात में हम पुरुषका वी एन हुकान पर बैठे चर्चा कर रहे स नि इतने में एक सज्जन आय और उन्होंने मेज ने पास आकर पीरे-से पूछा 'कीक-साहन है ?" दुकान के एक मर्चवारी ने कह दिया कि नहीं है। बहुसज्जन जानको हुए तो हमने उनसे पूछा कि इस पुलाक का आप क्या करते ? उन्होंने सहस कर उत्तर दिया—मूमे नहीं बाहिए एक मित्र में मनाई है।

इतने बुछ दिन बार हम बलबन्ते में एक पुस्तर-विनेता से बात बर रहे थ कि साठ लाल की इस आवादी में कैसा साहित्य पड़ा जा रहा है। उन्होंने नहा, "यहा तो जानूसी या बासनोत्तेजन उपन्यास और में में बी कहानिया अधिक पड़े ही उन्होंने के उपन्यास और कहानी-सपह खूब यिक रहे हैं। उन्होंने कुछ नए आई और बेदा हुए हैं।" एक सज्जन चुण्याम बैठे हमारी बाते मुन रहे ये। न रहा गया तो उन्होंने किताबों के अपने पेनेट में से एक दिवाब हम जीते के आगे पटनते हुए कहा कि यह भी इक्तन-दुनान पर बिक रही है। बही पुस्तन यी जिसती साण प्रयाग की हुनान पर की गई सी।

बास्तव में आज क गमीर साहित्य की माग बहुत कम है और अधिकागत मानव की खूद वामनाओं को अककाने बाजा साहित्य जोरो स बिक रहा है। ऐसे साहित्य का मुक्त इसीलए होना है कि उनके पान है और बेवा इसिलिए जाता है कि उन पर बमीधन खूब मिन्न जाना है। अन्य पुस्तकों पर नहा २०-२५ या अधिक से-अधिक के अतिसत्त कर्मीधन मिन्ना है, वहा ऐसे साहित्य पर ५०-६० प्रतिस्तत मर्ज में मिन्न जाता है। पाइन ऐसे साहित्य को इसीलए लरीखते हैं कि वसे पढ़ने से उनके दिमाग पर और नहीं पड़ना, उन्हें उनहें अपनी सासी सामनाओं के उमार से हन्का आनद प्राप्त होना है।

इस प्रवाह को बंग रोका जाय, यह एक विवारणीय प्रका है, । जो छोग राजनीति में हैं, उन्हें जो उपने हों क्षेत्र को उजाह-पछ हैं अबदारा महा है, जो इस दिया में बुठ सोचे, बास्तव में यह बाम उनके बृते का है भी नहीं। इस और तो साहित्य-अपन के महार्रिया और सर-नहीं। इस और तो साहित्य-अपन के महार्रिया और सर-

नार के विक्षा विभागा को विशेष रूप से घ्यान देता
चाहिए। लोक रिव कैमे परिष्ट्रत हो, धामलेटी माहित्य
को बाढ को केसे रोका जाय, बढिवा साहित्य सर्वनामृत्य
के लिए सुलम मृत्य में केसे दिया जाय, आदि-आदि
प्रक्त है जिन पन-देस के व्यापक हित में विधिवत रूपमें
लोर समिति डया से विचार हो नहीं, उस और कियासक
क्या भी उत्ताना चाहिए। बाज का युग हमारे लिए एक
बडी चुनौती है। उसकी अप अधिक अपनेलना करने
हम अपना बहुत नुकतान करेंगे।

पचाचुली शिखर पर धावा हिमाल्य को अनेक अजेय चोटिया पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रति वर्ष विदेशों में अनेक साहनी आने रह है लेकिन हम लोग जो पर्वतराज की छाया में ही बसने हैं इस ओर से सदा उदासीन रहे । क्या यह उदासीनना हमारे चरित पर एक कलक के समान नहीं है ? क्या यह हमारे साहम को चुनौती नहीं देनी ? हमें हुएं है आखिर भारतवासियों में इस चुनीनी को स्वीकार करके कलक को घो देने का बीडा उठा लिया है। अभी इस जून में 'पिलानी हिमारोहण दल' ने हिमाचल की पनाचूली (२२,६५० पीट) नामन चोटी पर आश्रमण किया था। यद्यपि वे पूर्ण रूप से तो सफल नहीं हुए पर १६ जून का दिन के १२ बजकर ३८ मिनट पर उन्हान २२,१२५ फीट पर भारत का तिरंगा झण्डा रुहरा दिया। आगोमी बसन्त या हेमन्त में क्रिर आतमण करने और मुख्य चाटी पर विजय पाने की आशा करते हैं।

२०,१०५ फिट तर पहुंच कर भी इस वर ने विवेधियों का रिलार्ड तोड दिया है। हम इस वर का अभिनदन करते हैं और आसा करते हैं कि हिमाल्य में भयानक सीन्यं हुंचार देस में अरिकार्धिक अन्येपन की मुर्वृति पंता करेगा। हमें यह जानरर और भी प्रसन्ता हुई कि इस दल के सभी सहस्य पिनानी क्लिन के छान है। जैसे-जैस हमें अपनी स्वतन्तना का भान होगा, इसे विवाधिया के ऐसे अनेच दक अनेक अन्य हिममप्तित दिवाधिया के ऐसे अनेच दक अनेक अन्य हिममप्तित दिवासीय वर्ष तिस्था जहराने के लिए आप बरेंगे, क्याहि साहस जन विरक्त गुणों में एक प्रमृत्य गुणा है जा स्वतन्तना सी रहाने किए अनिवाध है।

#### हिन्दी का सचित्र मासिक

पष्ठ संख्या ८०

कु ल्प ना

वार्षिक शुल्क १२) एक प्रति १)

( साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक )

## पहिये

जितमें उच्चकोटि के साहित्यिकों और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी। अपनी गंभीर और सुक्तिपूर्ण सामग्री व रूप के कारण सरकारी विभागों द्वारा मान्य

संपादक-मंडल

द्रहा॰ आर्येन्द्र ज्ञामी (प्रवास सम्पादक) द्रि मधुसूदन चतुर्वेदी द्रिवहीविज्ञाल पित्ती द्रिवृन्दावनविहारी मिश्र द्रिमुनीन्द्र द्रिकला-सम्पादक—जगदीश मित्तल

विशेष परिचय के लिये हमें लिखिये:

## 'कलपना' कार्यालय, ८३१ वेगमवाजार, हेदरावाद (दित्तिण)

विहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश,	राजस्थान	घ्योर बड़ोदा	के शिचा	-विभाग से	स्वीकृत
					-
	दिश्	THE -			

विद्यार्थियों और किशोरों को लोकप्रिय और ज्ञानवर्द्धक पाठ्य-सामग्री देने वाला हिन्दी-संसार में अपने ढंग का अकेला मासिक

- C 'किंगोर' विज्ञान, भारत की प्राचीन संस्कृति, साहित्य, व्यायाम और स्वास्थ्य आदि विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में किंगोरों की ज्ञान-पिपासा की शान्त करता है।
- C अपने पाठकों को मानव-जीवनकम का, विश्व के इतिहास का, विज्ञान के शोधकों, ग्रहलोक की मनोरंजक कहानियों और साहिसकों के कांनूहलपूर्ण रोमांचक प्रसंगों का परिचय कराता है।
- 🔾 नये-नये विषयों से पूर्ण, अद्यतन अनुसंघानों के आचार पर रचित कहानियां देना 'किशोर'की अपनी विशेषता है।
- © प्रेरक कविताएं, आदर्श जीवन-कथाएं, प्रकृति का सजीव वर्णन, यात्रा-विषयक लेख 'किशोर' के प्रत्येक अंक में रहते हैं।
- प्रति वर्ष विशिष्ट पाठ्य-सामग्रियों से विभूषित और अनेक चित्रों से सम्पन्न विशेषांक निकालता है।
   'किशोर' के कुछ महत्वपृर्ण विशेषांक

कालिदासांक—१) गांधी अंक—१।) भारतांक—१) रवीन्द्र अंक—॥) पटेल अंक—।=) चपकयांक—॥) विक्रमांक—॥) स्वाधीनता-अंक—॥)

वार्षिक मूल्य ४) : एक अंक का ।=)

वाल-शिचा-समिति वाँकीपुर (पटना)

### नृतन वाल-शिच्चण-संघ

#### हिन्दी शिक्षगा-पत्रिका

आद्य सम्पादक—स्व० गिजुभाई वयेका : प्रधान सम्पादक—ताराबहृन मोड़क सम्पादक—संसीधर : कांश्रिनाय विवेती

'आज का वालक कल का निर्माता है' यह सब मानते हैं; परन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक बनाने के लिए प्रयत्न 'हिन्दी गिक्षण-पत्रिका' करती है। यह नृतन शिक्षण के सिद्धान्तों के अनुमार वालोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करती है। यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मागं-दर्शन करती है। यह पत्रिका मनोविक्षान के आचार्य श्री गिजुभाई वर्षका के स्वन्नों को प्रतिस्ति है।

> पितका का प्रत्येक अरु सम्रहणीय है। बार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।~)। विशेष जानकारी के लिये लिखिए ' '

हिन्दी शिचण-पत्रिका---५१ नंदलाल पुरा लेन, इन्दौर।

#### **\* राष्ट्रभारती** \*

भारतीय साहित्य की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका वित्रीय वर्ष में पदार्गण

सम्पादक-श्री मोहनलाल भट्ट, थी हपोकेश शर्मा

क्षाहित्य-सस्कृति-करन प्रधान पत्रिका "राष्ट्रभारती" प्रति मोग आपको हिन्दी और भारत की विभिन्न प्रान्तीय तथा विदेशी भाषायों की साहित्यक-सास्कृतिक गनिविधि का परिचय देगी ।

इसमें देश-विदेश के गण-मान्य विद्वानों और क्लाकारों की थेन्ठ रचनाए और और इस अनुवाद भी रहते हैं। "यह भारती" को राष्ट्र भारत—राजमाण हिन्दी के और लगमग सभी आतीय मापाओं के थेन्छ साहित्यकारों वा सहयोग प्राप्त है।

कीविद, 'पाटुमाणारल' और 'विद्यारद' ने अध्ययनशील प्रोड छात्रो की सहाक्षता के लिये प्रति-मास इस पत्रिवा में मूच्य-भूख्य पार्य्य-पुस्तको को लेवर समालोचनात्मक सामग्री भी प्रस्तुत की जायगी।

राष्ट्रभारती प्रत्येक मास की १ तारीख को प्रकाशित होती है। क्षी० पी० चेजने का नियम नहीं है। नमुने की प्रति के लिये १० आना के डाक-टिक्ट मेर्ने।

पार्पिक सल्य ६)]

एक प्रति १० थाना

प्रवत्यकर्ता-"राष्ट्रभारती" राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा (मध्य-प्रदेश)

#### राष्ट्रभाषा हिन्दी का सचित्र सांस्कृतिक मासिक पत्र

## विक स

## (सम्पादक तथा संचालक—सूर्यनारायण व्यास)

हिन्दी का सर्वथेष्ठ मासिक 'विकम' ही है, जिसका राजा-महाराजाओं से लेकर देश के सर्वसाधारण समाज तक समान रूप से प्रवेश है।

'विक्रम' के आरिभ्भक १६ पृष्टों में महीने भर की महत्वपूर्ण घटनाओं पर विविधतापूर्ण, मीलिक, उत्कृष्ट और निर्भीक एवं स्वस्य विवार समन्वित रहते हैं। सभी विद्वानों ने हिन्दी का 'मार्डने रिव्यू' कह कर इसकी प्रशंसा की है।

स्वस्थ साहित्य, शिष्ट हास्य, चुनी हुई कविता और कहानी एवं विचार-प्रेरक पंचामृत तथा समस्त मासिक साहित्य का मुन्दर परिचय 'विक्रम' की अपनी चिशेपता है।

यदि आप अवनक ग्राहक नहीं है तो अविलम्ब ग्राहक वन जाइये, मित्रों को बनाइये और परिवार के ज्ञान-वर्धन के लिए 'विकन' को अवस्य स्वीकार कीजिये। वार्षिक मूल्य ६) रु०, एक प्रति का ॥=), नमूना मुक्त नहीं।

#### विशेष जानकारी के लिए लिखियेः

## व्यवस्थापक — विक्रस कार्यालय, उज्जैन (मालवा)

## ज्ञानिह्य [मासिक पत्र]

"ज्ञानोदय बहुत ही उत्तम है। काळान्तर में इसकी विशेष उन्नति होगी। जनता अपनावेगी।" ——सुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी

"ज्ञानपीठ के अन्य प्रकायनों की भांति ज्ञानोदय मुन्दर और शिक्षाप्रद है।" — सम्पूर्णानंद "ज्ञानोदय का क्षेत्र जैसे-जैसे पुनीत तथा व्यापक होता जायगा उससे निरीह जगत को अवश्य सांस्कृतिक प्रेरणा मिलेगी। पत्र मुक्चितूर्ण है।" — समित्रानन्दन पन्त

"इतनी उदार श्रमण संस्कृति की पत्रिका की बड़ी आवश्तकता थी।" — राहुल सांकृत्यायन "जैन नमाज के जितने पत्र हैं, उनमें से अगर एक पत्र उठाने का ही मुझे अधिकार हो तो मैं निरचय ही 'जानोदय' उठाऊंगा।" — विजयचन्द्र जैन बी० ए०

"विश्व-कल्याण की भावना से पूर्ण सत्यं शिवं मुन्दरं का समन्वय करनेवाले जैन धर्म का कलात्मक दर्शन ही 'ज्ञानोदय' का मुख्य उद्देश्य है। इस नयनाभिराम श्रमण संस्कृति के अग्रदूत का मैं हृदय से स्वागत करता हूं।"
——श्रीचन्द्र जैन एम० ए०

"हिन्दी का यह अनुपम पत्र है और बड़ा ऊंचा आदर्श लेकर निकला है।" — साहित्यसन्देश "'ज्ञानोदय' बहुत मुन्दर निकल रहा है। बधाई!" — अगरचन्द्र नाहटा

एक वर्ष में ६६० पृष्ठ]

[वार्षिक मृल्य ६)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, पो० व० नं० ४=, बनारस ।

बडे आकार के ९०० एट का महान ग्रन्य

#### विश्व इतिहास की भलक

जिसके लिए

श्राप वारह वर्ष से प्रतीक्ता कर रहे थे

्रनये रूप-रंग **०**परिवर्द्धित सामग्री **०**ञ्चाकर्षक ञ्चावरण मज्यूत जिल्द

०सुन्दर छपाई

प्रकाशित हो गया है और वाजार में मिल रहा है। यदि आपने अपनी प्रति १६) अग्निम भेजकर सुरक्षित कराई है तो बीघ्र पुस्तक आपके पास पहुचने वाली है। अगर नहीं कराई है तो अगस्त के महीने भर यह छूट और रहेगी। इस बीच आप १६) भेजकर पुस्तक मगालें। इसके न्वाद वह आपको पूरे मूल्य अर्थात् २१) में मिलेगा । नेहरूजी का यह दुर्लभ ग्रन्थ आपका ज्ञानवर्द्धन करेगा, आपकी अलमारी की बीभा वढाएगा।

#### जल्दी कीजिये

पुस्तव विजेताओं के लिए भी विशेष रियायते रखी गई है। पत्र लिखकर मालूम कर ले।

—मिलने का पता—

इदीर

मवयुग साहित्य सदन सस्ता साहित्य मंडल हिन्दी - वान नई दिल्ली

## पुस्तकालयों, विद्यालयों, शिच्रण संस्थाओं

तथा

# हिन्दी प्रेमियों के लिए अनुपम अवसर

'सस्ता साहित्य मंडल' के 'जयंति-उत्सव' के निमित्त आयोजित 'सहायक सदस्य योजना' के सदस्य वनिये

इस योजना के अंतर्गन १०००) तथा ५००) देकर मंडल के सहायक सदस्य बनाये जाते हैं। १० तथा ८ वर्षों में रुपया वापस भी कर दिया जाता है और इस असें में मंडल अपनी प्रकाशित पुस्तकें सदस्यों को भेंट-स्वरूप, अपने खर्च से पहुंचाता है। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में सदस्यों का रुपया वापस हो जाता है और उनके पास अच्छे साहित्य की एक शानदार लाइन्नेरी बन जाती है। इसमें लाभ ही लाभ हैं। हानि तो कोई है ही नहीं। अभी केवल ५०० सदस्य बनाने की योजना है। सदस्य बड़ी तेजी से बन रहे हं। अतः आप भी अपने मित्रों सहित सदस्य बन जाने की कृपा करें।

सदस्य-योजना, सदस्यना का फार्म तथा अन्य विस्तृत जानकारी के लिए तुरंत लिखिये—

मंत्री-

सरता साहित्य मण्डल

चार सर्कस ःः नई दिल्ली



सस्ता साहित्य गंडल प्रकाशन

एक प्रतिका

## लेख-सूची

11/1/10/11						
१. अमृतवाणी 😁 😁 रामतीर्थ	३२१					
२. एक महत्त्वाकांक्षा · विनोवा	<u> ३</u> २२					
३. १५ अगस्त की आत्मचितन 😁 इन्द्रसेन	३२५					
४. आचार्य-भिवतं और तिमल की भेंट						
••राजलक्ष्मी राघवन	३२९					
५. दो तस्वीरॅ ' 'भदन्त आनन्द कीसल्यायन	इंडर्					
६. बौद्ध धर्म में श्रद्धा का स्थान						
••भरतिमह उपाध्याय	इंडर्					
७. श्रीमती ऐनीबेसेन्ट 🎌 वि <sup>ष्</sup> णु प्रभाकर	३३५ .					
८. अपराध-चिकित्सा ॰ गोपालकृष्ण मल्लिक	336					
९. ईधन तया लकड़ी बचाइए 🎌 विष्णुशरण	368					
१०. प्राचीन ग्रंथों के अन्वेषण की आवश्यकता						
••गीरीशंकर हिवेदी 'शंकर'	3/5					
११. कहीं हम-भूल न जायँ 😁 'मुमन'	366					
१२. कसीटी पर 💎 समालोचनाल्	364					
१३. वया व कैसे ? * हमारी राय	376					
१४. मण्डल की ओर से 😬 😶 मंत्री	360					
$oldsymbol{\circ}$	,					
'जीवन-साहित्य' की फाइलें और विशेषांक						
हमारे स्टांक में 'जीवन-साहित्य' की निम्नी	लेखित					
फाडलों और विशेषांकों की कुछ प्रतियां शेप हैं :						
१९४३ की फाडल, अजिल्द ४) सजित	<del>≡</del> ί\					
१९४५ ,, (छ: अंकों की) ,, रे॥) ,,	2II)					
13.7£ " " ±) "	3)					
(\$ " (\$ "	૪)					
??'?? ,, = 1, = 1, ,,	(ا ا					
1340 " " ) "	ų) <sub>(3</sub>					

#### विशेषांक

9062

जमनालाल-स्मृति-अंक ॥)
प्राकृतिक चिकित्सा अंक (परिशिष्टांक सहित) २।)
विद्य-गांति अंक . १॥)
मंगाने में विलम्ब न कीजिये ।

सस्ता साहित्य मृण्डल, नई दिल्ली

## 'जीवन-साहित्य' के नियम

१३ 'जीवन-साहित्य' प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में प्रकाशित होता है। १० नारीख तक अंक न मिले तो अपने यहां के पोस्टमास्टर मे मालूम केरें। यदि अंक डाकखाने में न पहुंचा हो तो पोस्टमास्टर के पत्र के साथ हमारे कार्यालय को लिखें।

२. पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या अवश्यं दें। उससे कार्रवाई करने में मुगमना और शीघ्नता हो जाती है।

वहुत से लोग ग्राहक किसी नाम से होते है और आगे का चंदा किसी नाम से भेजते हैं। इससे गड़ेंबड़ी हो जाती है। इस सम्बन्ध में मनीआईर के कूपन पर स्पष्ट मूचना होनी चाहिए।

४. पत्र में प्रकाशनार्थ रचनाएं उसके उंद्देश्य के अनुकूल ही भेजी जायं और कागज के एक ही ओर साफ़-साफ़ अक्षरों में लिखी जायं।

५. अस्वीकृत रचनाओं की वापसी के लिए साथ में आवश्यक डाक टिकट आने चाहिए ।

 समालोचर्ना के लिए प्रत्येक पुम्तक की दो प्रतियां भेजी जायं।

५. पत्र के ग्राहक जुलाई और जनवरी से बनाये जाते हैं । बींच में रुपया भेजने वालों को मूचना दे देनी
चाहिए कि उन्हें पिछले अंक भेज दिये जायं या आगे से ग्राहक बनाया जाय ।

--च्यवस्थापक

२।) १॥) नोट---ग्राहकों से निवेदन है कि यदि उनके पते में कोई बृदि हो तो उसकी सूचना तुरन्त हमें देकर ठीक

करा हैं, जिसमें पत्र उन्हें समय पर मिलता रहे।

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा बिहार प्रादेशिक सरकारों हारा स्कूलों, कालेजों व लाइमेरियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राप्त पत्तायतों के लिए स्त्रीकृत



अहिंसक मबरच्ना का ग्राप्तिक

सितम्बर १९५२ ]



स्वामी रामतीयं

#### श्रमृत-वाणी

हिर ॐ शांति ॐ शमदम, ॐ ॐ शिव शिव वम् वम् । लमृत वरसे है हरदम, रिमक्षिम रिमक्षिम छम् छम् छम् ।

छाई घटा है कैसी काली, चाल है जिसकी क्या गतवाली। अपत बरसे हैं क्षम क्षम, रिमक्षिम रिमसिम छुम छुम छुम ।।

बादे-वहारी सास हमारी, लोंब ऑब नेचर से है जारी।

चलती है सोऽह सोऽह, रिमझिम रिमझिम छम् छम् छम् । भाको से है कुछ तो झुमें, धवनम से कुछ घरती चूमें।

नूर है नेरा कैंसा आला, स्वेत या क्षीर समुन्दरवाला। चमके है कैंसा चम चम, रिमक्षिम रिमक्षिम क्षम् क्षम् क्षम् ॥

कैसी लहरे मारे हैं, दुनिया जिससे पसारे हैं। ले रहा छहरें हैं थम-थम, रिमझिम रिमझिम छम् छम् ध्र

दं नूर का है भड़ार, तारे है जिसकी बौछार। गया प्रकाश अब राम में रम, रिमझिम रिमझिम छम् छम् छम् ॥ में यह दावा नहीं करता कि हमें जो आजादी मिली, वह हमारी अहिंसा के परिणामस्वरूप ही मिली; क्योंकि वह दावा ठींक नहीं होगा। गीता ने वताया है, कोई भी काम पांच कारणों से वनता है। इसलिए केवल हमारे अहिंसक प्रयोग से ही आजादी मिली, यह कहना अहंकार होगा। लेकिन अहिंसात्मक लड़ाई एक वड़ा कारण है, ऐसा हम कह सकते हैं। दुनिया का इतिहास लिखनेवालों को लिखना पड़ेगा कि हिंदुस्तान का राजकीय मसला नैतिक तरींके से हल हुआ था तथा हिंदुस्तान में राष्ट्रीय आजादी का प्रयत्न करनेवालों को जो यथ मिला, वह इतना अपूर्व और ऐसा अद्भुत है कि उसने दुनिया का घ्यान अपनी और आकर्षित कर लिया है।

इस तरह हमने देखा कि हमने एक अत्यन्त वलवान राष्ट्र से आजादी हासिल की है।

दूसरा एक चमत्कार इस देश में यह हुआ कि इतनी वड़ी सल्तनत, जिसके वारे में यह कहा जाता था कि उस पर सूर्य कभी अस्तमान नहीं होता, यहां से अपना सारा कारोवार समाप्त कर चली गयी। उसने एक तारीख मुकरंर की और ठीक उस तारीख़ के पहले वह यहां से कूँच कर गई। इसलिए मेरा मानना है कि हमने जो अहिमक तरीका अपनी आजादी हासिल करने के लिए अस्तियार किया था, उसकी जितनी महिमा है, उतनी ही महिमा इस वात की भी है कि अंग्रेजों ने एक निदिचत तारील को यहां से हुकूमत उठा छी। इतिहास-कार मानेंगे कि यह भी नैतिकता की एक अद्भुत विजय हुई। एक और चमत्कार, और ऊपर के चमत्कार ने भी अधिक वड़ा चमत्कार यह हुआ कि जहां माउण्ट-बेटन ने हिन्दुस्तान का कारोबार हिन्दुस्तान के लोगों को सींप दिया, वहां हमारे लोगों ने उसे ही गर्वनर जनरल के तौर पर रख लिया । नैतिक विजय की इससे बड़ी मिसाल कोई हो नहीं सकती थी। नैतिक तरीके की खूबी यह होती है कि उसमें जो जीतते हैं, वे जीतते ही हैं, लेकिन जो नहीं जीतते, वे भी जीतने हैं। एक की हार के आधार पर दूसरे की जीत नहीं होती । और आप देखते हैं कि वावजूद इस बात के, कि हमें इंग्लैंड से कई तरह का दुःख पहुंचा और यातनाएं सहनी पड़ीं, हम लोगों के मन में आज इंग्लैंड के बारे में दुश्मनी के भाव नहीं हैं। अन्यत्र किसी भी लड़ाई के बाद ऐसा सद्भाव प्रगट नहीं हुआ है।

अव, जविक एक राज जाकर दूसरा राज आया है, तो यह सोचने का समय है कि हमें किस प्रकार अपनी समाज-रचना करनी है। याने यह संघ्या का समय है, ध्यान का समय है। हमारे सामने आज पचासों रास्ते खुळे हैं। कीनसा रास्ता लें, यह हमें तय करना है। यह तय करने में हमें उस घटना को नहीं भूलना चाहिए, जिसका हमने आदरपूर्वक अभी उल्लेख किया । आज हम एक बड़ी भारी सल्तनत का वोझ उठा रहे हैं। इसिलए हम सबके सामन यह बड़ा भारी सवाल है कि हमारी आर्थिक और सामाजिक रचना करने में कौन-सा तरीका स्वीकार करें। गांधीजी के जमाने में हमने अहिंसा का तरीका वाजमाया या, लेकिन उसमें हमारी कोई विशेषता नहीं थी, क्योंकि तब हम लाचार थे। अगर हम उस रास्ते नहीं जाते तो मार खाते । दूसरा कोई अहिंसक रास्ता हमारे लिये चुला नहीं था। इसलिए जो रास्ता हमने अख्तियार किया, वह अशरण का शरण था, अनाथ का बाश्रय था । इसल्एि हमने अहिंमा का रास्ता अपनाया थीर गांधीजी का नेतृत्व हमें मिला। हमने सोचा कि यह तरीका हम आजमायें। हिंसा में हम जितने ताकतवर थे, उसमे ज्यादा ताकतवर हमारे दुरमन थे । लेकिन अहिंसा में हम उनसे ज्यादा ताकतवर थे। इसलिए हमारे सामने एक ही रास्ता था-या तो आजादी हामिल करने की तमना छोड़कर चुपचाप गुळामी स्वीकार करें या अहिंमक प्रतिकार के लिए नैयार हो जांय । उस समय हमारे नामने पसन्दर्शा या 'च्वायन' का सवाल नहीं था। लेकिन अब बात दूसरी हैं । अब हम चुनाव कर सकते हैं । अगर हम चाहें तो हिंसा का तरीका चुन सकते हैं, चाहें तो बहिंता का चुन यनते हैं। चाहे तो सेना में बादमी बड़ा सकते हैं, नौकादल और वायुक्त भी बड़ा सकते हैं और देश को खाना मणड़ा चाहे न मिल, परन्तु देखनासियों को इस सेना के लिए स्थाप करने को कह सकते हैं। और चाहें तो बहिंता के रास्ते भी जा सकते हैं। चुनाव करने की यह सत्ता बाज हमारे हाम में है। पहले काचारी थी, बाज ऐसी लाचारी नहीं हैं।

और फिर आज, जब कि गाधीजी चले गये हैं, हम लोग मुक्त मन से और खुले दिल से विना विसी दवाब के निर्णय कर सकते हैं। मानो इसलिए गाधीजी को भगवान् हमारे बीच से उठा ले गया है। अब उनना दवाव हुम पर नहीं है। अगर हम हिंसा के तरीके की मानते है ती हमें रूस या अमेरिका को गुरू मानना होगा । किसी एवं गुरू को मान कर उसके शागिद बनवर स्वतन्त्रता-पूर्वेव उनमें से किसी का गुलाम बनना होगा । सवाल यह है कि क्या स्वतन्त इच्छा से हम उनके शागिर्द बनना चाहते हैं ? क्या उनके "कंप-मालीअर" बन कर उनके पीछ-पीछे जानर हमारी तानत बढनेवाली है ? उनकी ताकत से ताकत लेने में हमें पचासी वर्ष लग जायेंगे और सभव है, फिर भी हम उनसे ज्यादा तानतवर न हा सके। नतीजा यह होगा कि हिन्दुस्तान को फिर से गुलाम होवर रहना पढेगा और अगर हम अमेरिका तथा रूस, दीनो से भी तानतवर बन जाय तो दुनिया के लिए एव खतरा साबित होगे। अब सवाल हमारे सामने यह है कि स्व-तन्त्रता के नाम पर क्या हम गुलाम बनना चाहते है या दुनिया के लिए एक खतरा बनना चाहते है। हमें गहराई से इस पर सोचना होगा।

आज हिंदुस्तान स्वतन है, फिर भी नपश बाहर से मुर्गाना पढ़ता है। आज हिन्दुस्तान स्वतन है, तब भी हमें 'एसबएट' लोग बाहर के मागोन 'घठते है। आज हिन्दु-स्तान स्वतन है, लेकिन हमें शहन और देगापित बाहर से ही मागोन पढ़ते हैं। आज हिंदुस्तान स्वतन है, परंतु तालीम के लिए भी हमें बाहर के देशों पर निमंद रहना पड़ता हैं। तो नमा आजादी के साप-साथ हम स्वतनतापूर्वक मुलाम बने रहना नाहते हैं? आज बह सवाल हम लोगो के सामने ज्यस्त्रिय है। मणवान् ने हिंदुस्तान ना मतीव ऐसा बनाया है कि या तो उसे अहिंसा के रास्ते से श्रदा-पूर्वेक चलना चाहिए, या जो लोग हिंसा में पडित हैं, उनकी मुलामी मजूर करनी चाहिए, नयांकि हिंदुस्तान एक पचरमी दुनिया है, एक खण्ड-प्राय देश है। इसमें अनेक धर्म, अनेक भाषाए, अनेक प्रात और उनके अनेक रस्यो-रिवाज है। उसका एक-एक प्रात गुरम के बड़े-बड़े देश की बराबरी का है। बया एसी अनेय-विध जमातो को हम हिसक तरीके से एक रस रख सकते हैं ? एक-एक मसला नित्य हमारे सामने उपस्थित होता जा रहा है। आंध्र बाले बाहते हैं कि हमें एक स्वतंत्र प्रदेश मिले। वे भारत मूमि से अलग नहीं रहना चाहते हैं, लेकिन उनकी अलग प्रदेश की माग अनुचित नहीं है। तो क्या उनकी यह माग हिंसक तरीके से पूरी हो सकती है ? अगर हिंसारमक तरीके को हम ठीक मानते हैं तो हमें यह मानना होगा कि गाधीका हत्यारा पुण्यवान था । उसका विचार भले ही गलत हो. पर वह प्रामाणिक या। अगर हम अच्छे और सच्चे विचार के बास्ते हिंसात्मक वरीके अस्तियार करना ठीक समझते है, वो आपको मानना होना कि नाधीओ की हत्या करने वाले ने भी बडा भारी त्याग किया है। अगर हम ऐसा मानें कि प्रामाणिक विचार रखनेवाले अपने विचारो के अमल के बास्ते हिसक तरीके अस्तियार कर सकते हैं. तो भै आपसे कहना चाहता हू कि फिर हिन्दुस्तान के टुकडे-टुकडे हो जायेथे, वह मजवत नही रह सकैगा। हिंसा से एक मसला तय होता दिखायी देगा, लेकिन दूसरा मसला निर्माण होगा । मसले कम होने के बजाय नये-नये मसले पैदा होते ही रहेगे। आज भी हरिजनो को मदिरो में प्रवेश नहीं मिलता। छुआछूत का यह भेद नहीं मिट पाया हो बया हरिजन अपने हाथ में शस्त्रास्त्र ले ? अगर अच्छे नाम के लिये हिसा जायज है, तो हरिजन माई शस्त्र चठायें, यह भी आयज मानना होगा। यह दूसरी बात है कि वे शस्त्र न उठायें ।

इसिंहिए बाज ये सब बाते घ्यान में एसकर तय करता होगा कि जो महत्व के समस्ते हमारे सामने बाज हैं, उनको हल करने के लिए कौन से सरीके जायन हैं और कौन से माजायन ? अपर हम अच्छे मक्सद के बास्ते बराब सामन इस्तेमाल करते हैं तो हिन्दुस्तान के सामने ममुके

### जीवन-साहित्य: सितम्बर १९५२

पैदा ही होते रहनेवाले हैं। लेकिन अगर हम अहिंसक तरीके से अपने मसले तय करेंगे तो दुनिया में मसले रहेंगे ही नहीं। यही वजह है कि मैं भूमि की समस्या शांति के साथ हल करना चाहता हूं। भूमि की समस्या छोटी समस्या नहीं है। मैं लोगों से दान में भूमि मांग रहा हूं,भीख नहीं मांग रहा हूं। एक ब्राह्मण के नाते में भीख मांगने का अधिकारी तो हूं, लेकिन यह भीख में व्यक्तिगत नाते ही मांग सकता हूं। पर जहां दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि के तौर पर मांगना होता है, वहां मुझे भिक्षा नहीं मांगनी है, दीक्षा देनी है। इसलिए में इस नतीजे पर पहुंच चुका हूं कि भगवान् जो काम वृद्ध के जरिये कराना चाहते थे, वह काम उन्होंने मेरे इन कमजोर कन्बों पर डाला है।

और मैं मानता हूं कि यह कार्य धर्म-चक्र-प्रवर्तन का कार्य है। यह मेरी सिंहगर्जना है। जमीन तो मेरे पास कव की पहुंच चुकी है। आप जिस तरीके से चाहो, उस तरीके से यह समस्या हल कर सकते हो। आपको तय करना है कि घी के डिब्बे को आग लगानी है, या वेदमंत्रों के साथ यज में उसकी आहुति देनी है। आप यह मत समझिए कि वाहर से हमारे इस देश में केवल मानसून ही थाते हैं। क्रांतिकारी विचार भी वाहर से आते हैं और जिस तरह से हवा वे-रोक-टोक आती है, उसी तरह कांतिकारी विचार भी विना रोक-टोक, विना किसी तरह के पासपोर्ट के बाते रहते हैं। लोगों ने, जहां दीवारें नहीं थीं, वे बनाई। चीन की वह बड़ी दीवार देख लीजिये। भगवान ने जर्मनी और फांस के बीच कोई दीवार नहीं खड़ी की थी, लेकिन उन्होंने सिगफिड और मेजिनो लाइने वना कर क्षेत्र संकृचित कर दिया। मगर ये दीवारें लोगों को केवल इवर से उवर आने-जाने से ही रोक सकती हैं, परंतु वे विचारों के आवागमन को नहीं रोक सकतीं। उसी तरह यहां भी दुनिया के हरेक देश से विचार आयेंगे और यहां से वाहर भी जायेंगे। इसलिये हमें तय करना चाहिए कि भूमि की समस्या हमें शान्ति से हल करनी है या हिंसा से ? मेरे मन में इस वारे में संदेह नहीं है कि यह समस्या शांति से हल हो सकता है। इस संबंध में इतना स्पष्ट दर्शन मेरे मन में है, इसीलिए मैं निःसन्देह होकर बोल रहा हूं और कहता हूं कि भाइयों, बन में पंछी बोल रहे हैं, इसिलए अब जाग जाओ। आप उसे सुनते हैं या नहीं? आप जानते हैं या नहीं? हे मेरे अंतर्यामी भगवान्! प्रातःकाल का समय हो गया है, तुम जाग जाओ और दीनन को दान दो! जिस तरह तुलसीदासजी भगवान् को समझा रहे थे, उसी तरह मैं अपने भगवान् को यानी आपको कहता हूं कि जाग जाओ। यदि आप सब दान दोगे तो आपकी इज्जत होगी।

जैसा कि मैंने अभी कहा, जिस तरह वाहर की हवा इस देश में आ सकती है, उसी तरह यहां की हवा भी वाहर जासकती है और जिस तरह वाहर से विचारों का आक्रमण यहां हो सकता है, उसी तरह हम भी अपने विचार वाहर भेज सकते हैं। यह भ्दान-यज्ञ एक छोटा-सा कार्यक्रम है। लेकिन आज दुनिया की नजरें इस तरफ लगी हुई हैं। दुनिया के सब लोग इस आन्दोलन के बारे में तुच्छ बोल रहे हैं। लोग कहते हैं कि जमीन तो मारने से मिलती है, मांगने से कैसे मिल सकती है ? भारत में यह एक अजीव तमाशा हो रहा है कि मांगने से जमीन मिल रही है। यह एक स्वतंत्र दृष्टि से विचार करने लायक वात है कि अव मांगने से एक लाख एकड़ से ज्यादा जमीन मिली है। जहां दुनिया में चारों ओर लेने की और छीनने की वातें चल रही हैं वहां इस देश में देने का आरंभ हो रहा है और अन्तर्यामी भगवान् जाग रहे हैं। और जिस तरह वाहर से विचार यहां आ सकते हैं, उसी तरह यदि हम घीरज और हिम्मत रखें, तो यहां के भी विचार वाहर जा सकते हैं। जरूरत इस वात की है कि भूदान-यज्ञ का संदेश सब दूर फैलाने के लिए हम उसी निष्ठा से काम करें, जिस निष्ठा से भगवान् बृद्ध के शिष्यों ने किया । वे बाहर के देशों में गयें और वहां प्रेम से प्रचार किया। उसी निष्ठा से हमें इस नये वर्म-चन्न-प्रवर्तन में लग जाना चाहिए। ऐसा होगा, तव आप भी दुनिया को एक नया आकार दे सकेंगे। मैंने कहा है कि जब प्रलय के समय सारी दुनिया जलमय हो जाती है, तो अकेला मार्कण्डेय ऋषि तैरता रहता है और फिर वहीं दुनिया को वचाता है। उसी तरह बाज भी दुनिया में विचारों से, बचन से, ब्यापार से, यस्त्रास्त्रों से,एटम वम से-हर तरह से प्रलयात्मक प्रयत्न हो रहे हैं। उस प्रख्य के सारे प्रयत्नों पर जो देश मार्कण्डेय

की तरह अनेव्या देरेगा, उसके हाथ में दुनिया का नेतृत्व आने वाला है। में यह अपिमान से नहीं बोल रहा हूं, बिल्क नगरापूर्वन वोल रहा हूं। हम नगर वर्ने, सभी ऊचे उठ सकेंगे। मन महाराज ने मविष्य स्थित रखा है

इस देन में जो महान् पुरुष पैदा होगे उनमें ऐसी रामिन होगी वि उसके द्वारा सारी दुनिया के लोग अपन जीवन के लिए आदर्श सीसेंग ।

में पहता हू कि वह शक्ति वह सत्ता आपके हायों

में है। आपको एक नेता मिछा था, जिसके नेतृत्व में आपका देश व्यक्तिया के तरीके से आवाद हो सका। आज भी इस देश में ऐसे लोग हैं, जिनके हृदय में सद्भाव मौजूद है। वब योशी हिम्मत रखो और घोडो करणन-शनित रखो तो आप देखेंपे कि आपके हाप में भी वह शक्ति है, विस्ते आप दुनिया को आकार दे सकते हैं। यह आफमण नहीं है, बिल्क दुनिया को बचाना हैं। यह एक ऐसी महत्वाकांक्षा है, वो रखने लायक हैं।

#### इन्द्रसेन **छ**

१५ अगस्त देश की स्वतंत्रता का पृष्य स्मारक है। इस दिन हम स्वतंत्रता के समर्थ तथा इसकी प्राप्ति को स्मरण करके आनद मनाते है तथा इसे आगे के लिए ददतर बनाने के लिये सनल्प करते हैं। यही दिन श्री अर्रिवन्द का पावन जन्मदिवस भी है। इसी दिन सन १८७२ में थी धरविन्द ने जन्म किया या। स्वतनता के देशव्यापी तथ्य में और श्री अरविन्द के वैयक्तिक जन्म में बस्तुत गमीर सबध भी है। थी अरविन्द प्रथमत भारतीय लोक-वेतना में देशमक्त और राष्ट्रनेता के रूप में अवतरित हुए। वास्तव में जब श्री अरिवन्द दीर्घ प्रवास के बाद शिक्षा समाप्त करके भारत पहुचे तो देश की स्वाधीनता ही उनकी मन-यदि का एक मान विचार था और वह बीध्य ही उनके New Lamps for old (पूराने आवशी की जगह नमें) के अधीन बल रूप में प्रकट हुआ। यह लेखमाला खायद १८९४ में बकाशित हुई भी और इसमें छन्होंने उस समय की नरस इलीय भीतिका जोरदार खडन किया था तथा उसके स्थान पर स्पष्ट तथा बलपुर्ण शब्दो में एक स्वाबलनी नीति की उद्योषित किया या । गत शताब्दा के अतिम दशक में लिये हुए लेख आज भी जोजस्वी प्रतीत होते हैं। उस दासता के वातावरण में वह निर्मीक सत्यमायण, जाति के सक्ते अधिकार का वह बास्यापन, जनस्य ही परम बीज और तेज की बस्तू थी। पीछे जब श्री अरविन्द स्वदेशी आदोलन में उस समय के सर्व-प्रसिद्ध पत्र 'बन्दे मातरम'

#### , १५ त्रगस्त का त्रात्म-चिंतन

का सपादन कर रहे थे तब वे नित्य प्रति देश के मन और प्राण में यही भाव भरते रहे कि पूर्ण स्वाधीनता ही हमारा ब्येय हो सकता है इससे कम हम कुछ भी स्वीकार नहीं करेगे। एक बार के उनके शब्द हैं "हमें विश्वास है कि जब यह नव-जाग्रत-जाति अपनी शनित को सगिठत कर लेगी, तो वह कानफेडरेसी (राज्यसम्) में बराबरी ने सबब के अतिरिक्त इंग्लैट से और निर्सा सबय के लिए न राजी हो सकती हैं और न इसे होना ही चाहिए। स्वामी और पराधित अववा जवन और अधीनस्थ के सबवो से सनस्ट रहता परवस्य के अयोग्य, तक्छ और दयनीय आकाक्षा है, शक्तिशाली तथा गौरवपूर्ण स्वा-धीनता से कम के लिए यत्न करना हमारे अतीत की महानता तथा भविष्य को विशास सभावनाओं का अपमान करना होया ।" यह ध्वनि और भाव 'वन्दे मातरम' के पच्ठ पच्ठ पर अकित रहते में और उन्हीं पच्छी की देशभनित और स्थाधीनता-भ्रेम की शिक्षा ने गांधी यग के अधिकाश देशसेवकों को पैदा किया । आज के बयोवस राष्ट्रनेता तब युवक थे और इनमें से जिन्होने 'बदे मातरम्' से अपनी देशमन्ति की दीला ली भी वे विश्व सहदयता क्षया कृतज्ञता से उस पत्र और उसके लेखों को स्मरण करते हैं यह स्वय अनुमव करने की चीज है ।

परन्तु को अरविन्द के लिए स्वामीनता अत में जीयन की बुनियाद ही है, इसकी पहली तथा अनिवार्ग माग,

इसका ध्येय नहीं । ध्येय वास्तव में वह कार्य है जो उन्हें एक समय स्वातंत्र्य संवर्ष से अलग खोंच लाया और जिसने उन्हें जीवन के गंभीर तत्वों को एकांत में खोजने के लिए वावित किया। भारत की संस्कृति का निर्माण वेद- उप-निपदों के ऋति-आथमों में हुआ था। एकांत और शांत अंतर्निरीक्षण द्वारा जो जीवन के मौलिक आधार उन ऋषियों ने इंद्रु निकाले ये वही भारतीय संस्कृति की दृढ़ भूमि बने और उन्हीं के वल पर भारत चिरजीवी बन सका है। श्री अरविन्द की ठीक यही प्रेरणा थी और उन्होंने वर्तमान समय में भारतीय जीवन तथा सामान्य मानव जीवन की वह समन्वय देने का यत्न किया है जो उसे वर्तमान संकट से निकालकर जीवन-विकास के वास्तविक मार्ग पर लगा सके । श्री अरविन्द सन् १९१० में पांडिचेरी पद्यारे थे और तब से उनकी यही गवेपणा रही। सर् १९२६ तक इसका शुद्ध रूप व्यक्तिगत था, इस के बाद इसने सार्वजनिक कार्य का रूप घारण कर लिया और यह उत्तरोत्तर विकसित होता गया । इसमें श्री माताजी का सहयोग एक दैवी सहायता रही है। इस समय इस कार्य का रूप सार्वभौम बना हुआ है और जब यह प्रत्यक्ष रूप में द्रुततर गति से आगे वढ़ रहा है। श्री अरविन्द पिछले कुछ वर्षों में जीवन के आच्यात्मिक आचारों. तया संभावनाओं को आज के वीद्धिक जगत में विस्तारित करने के लिए आश्रम के साथ एक विश्वविद्यालय का थायोजन बढ़ाना चाहते थे। जहां आश्रम एक शुद्ध आध्यात्मिक जीवन-निर्माण का केन्द्र रहा है वहां विश्व-विद्यालय शिक्षा को एक नया रूप देने का आयोजन होगा जिससे जीवन निर्माण के नए समन्वय को विस्तृतर रूप दिया जा सकेगा।

विश्वविद्यालय आयोजन संबंधी अधिवेशन को हुए अभी एक ही वर्ष हुआ है, परंतु इतने समय में विश्व विद्यालय ने पर्याप्त विकास किया है। इसके लिए उचित केंद्रीय स्थान, जो कि ठीक आश्रम के सामने है, प्राप्त हो गया है और उसकी पुरानी इमारतों को वर्तमान उपयोग के लिये परिवर्तित कर दिया गया है। गत इं जनवरी को माताजी ने उसका उद्घाटन किया था और अब विश्वविद्यालय का स्कूल-विभाग यहां लगता है।

उसीमें संगीत और नृत्य के कक्ष हैं तथा पुस्तकालय का स्थान भी । विश्वविद्यालय के उच्च-स्तरीय अध्यापन की दृष्टि से इस बीच में कुछ एक व्यक्तियों का आगमन विशेप आनंद का रहा है । एक फ्रेंच महिला, संगीत कला की विशेपज्ञा, पघारी हैं, और उनके अधीन संगीत-शिक्षा सुन्दर रूप में पनप रही है । एक और महिला कला तया पुरातत्त्व विज्ञान की विशेषज्ञा हैं । फिर एक जर्मन विद्वान आये हैं जिनके अधीन जर्मन भाषा की शिक्षा प्रारम्भ हो गई है तथा आश्रम-साहित्य का जर्मन अनुवाद तथा प्रकाशन भी जारी हो गया है। स्पेनिश विभाग का आयोजन भी शीघा होने जा रहा है। परंतु सबसे महत्त्व-पूर्ण चीनी विभाग का आयोजन होगा । आश्रम प्रेस के लिए चीनी टाईप आदि का आईर गया हुआ है और यथा-शीघ्र कुछ चीनी सावकों के अधीन Life Divine के चीनी अनुवाद की, जो कि पूरा हो चुका है, छपाई शुरू हो जायगी।

पिछले साल में इतना विकास विश्वविद्यालय के भिविष्य का पूरा आश्वासन दिलाता है। इस संबंध में हमें यह याद रखना होगा कि श्री अरिवन्द विश्वविद्यालय एक नई सांस्कृतिक भूमि की रचना करना चाहता है और इसके लिए उपयुक्त उपाध्याय और शिक्षक वहीं हो सकते हैं जो विद्वान् होने के साथ आध्यात्मिक जिज्ञासु भी हों। जिनमें आत्मा के लिए सिक्रय भावना नहीं, जो आध्यात्मिक जीवन के तपस्वी जिज्ञासु, नहीं, वे श्री अरिवन्द विश्वविद्यालय के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते।

शीअरिवन्द ने अपने सार्वभौम कार्य के रूप में अपना आश्रम ही क्यों कोला था? श्री अरिवन्द ने अपनी दीर्य- कालीन व्यक्तिगत साधना द्वारा यह अनुभव किया था कि मानव जीवन एक मार्वभौम विकास का अंग है तथा यह अचेतन भाव में मन से उच्चतर आत्मा की भूमि की ओर अग्रसर हो रहा है तथा यह भूमि अतिमन के महान् आध्यात्मिक तत्त्व के अवतरण से तथा मानव में आत्म- जिज्ञासा और अभीप्सा के उद्दीप्त होने से अधिक शीध चिरतार्य की जा सकती है। इसी चिरतार्यता के केंद्र के रूप में ही आश्रम की कत्यना और स्थापना हुई थी और वही काम ३० साल से अनयक रूप में होता आ रहा

है तथा उसे ही अब आगे मानाजी चला रही है। इस द यं ने निश्चय ही ससार को एक नई प्रेरणा प्रदान की है, और इसकी सफलता, प्रत्यक्ष ही, जीवन में एक उच्चतर नया स्तर पैदा कर देगी. जो कि आत्मा का प्रशस्त मार्ग होगा । आज ने बृद्धिवादी युग तथा इसके विरोधो और सक्टो का यह सिन्य समाधान होया । ऐसा मौलिक समामान ही श्रीअरविन्द के जीवन की खीज थी और इसी के लिए वे यत्नशील रहे । यही वह सास्कृतिक आधार तथा उद्देश्य था, वह समन्वय या, जिसे चरितार्थ करन के लिये, उनको दृष्टि में भारत विशेष उपयुक्त है, इसी के लिये स्वाधीनता प्रयोजनीय थी और यही तच्य इसे क्षाज ससार को दे सकता चाहिए । उनके विस्व विद्यालय **को आज के बौद्धिक जगत के** लिये यही समन्वय चरितायें करना है। आज शिक्षा का आदश शृद्ध वौद्धित है। बुद्धि, विचार, जितन और स्मृति का कौशल ही शिक्षा का मापदण्ड है। परतु ये सब सामध्ये प्रधानत विश्लेषणात्मक है, अश-अश और खण्ड-खण्ड से अपने विषय की रचना करते हैं। इनके समन्त्रय कल्पिन जोड-तोड होते हैं। यही कारण है कि आज की सस्ट्रति में भेद, विरोध और समर्प अस्यधिक हो गये हैं। इसके विपरीन आस्म-तरव में समग्र-मान प्रधान होता है, उसकी दृष्टि सश्टेपणात्मक होती है, समन्वय उसके लिये प्रत्यक्ष सत्य होता है। भी अरविन्द का कहना है कि मानव ने विदिश्य गात्मक भाव को अत्यधिक मात्रा में विकसित कर लिया है, उसे अपने व्यक्तित्व के सक्लेपगात्मक भाव का भी विकास करना चाहिए। मही समय की दुउ माग है और इसके बिना मानव आज के प्रश्तो ना समाधान नहीं पा सकेगा। श्री अर्थबन्द विश्वशिद्याचय इसी नवीत शिक्षा आदर्श की प्रस्तुत -करना चाहरा है। एर दम शिक्षा-देद्र का एक वडा ढाचा खडा कर देना इमका उद्देश्य नहीं, विल्क इस नए आदर्श की सुदृढ मूमिका प्रस्तुन करना । यह मूमि नया सास्कृतिक मूल्य है और इसे सहज गनि से विश्वसित होना होगा। परतु यह निश्वय ही बड आनद की वात है कि आज इस माग को अनुभव करने वालो की सस्था कम होने हुए भी काफी है और उन्होंने थी अरदिन्द विश्वविद्यालय के आयोजन से अपूर्व जानद माना है तया इसे अपनी

सहयोग दिया है।

सन् '४२-'४४ नी वात है, देश में '४२ के आदोलन तथा उसके दमन के कारण धोर निरामा छाई हुई थी। एन नेता ने, जो उस समय के लिये नहीं उठ सकेगा, गुढ के उपराज अयेज और भी जैमिक दमन करेंगे और जनता ५०-१०० साल के लिए स्वतन्त्रता का नाम भी नहीं किगी। यह बात श्री अपनिन्द से भी नहीं गई पत्नु उन्होंने देसे मुनकर वहीं गमीरता से नहीं मुई पत्नु उन्होंने देसे मुनकर नहीं, स्वता है इस बात की कि स्वतन्त्रता आने पर हम उसका उपनोग केंसे नरेंगे।"

१५ अगस्त, जो कि हमारा स्वतन्त्रता का दिवस है तया अरविन्द का जन्मदिन है, श्री अरविन्द के इस वाक्य के चितन का उपयुक्त अवसर हो सकता है। विचारणीय है कि क्या गत पाच वर्षों में हमने स्वतन्त्रता का जिनत उपयोग किया है, व्यक्तिगत रूप में तथा जाति और राष्ट्रस्य में अयवा रिसी अध में उचित और किस बदा में अनुचित ? अथवा कम से कम क्या हमारे विकास की दिशा तो उचित है? यह दिशा मगा हमारे व्यक्तिगत तथा राष्ट्रगत स्वभाव और स्वधर्म के अनक्ल है अयवा क्या पर धर्म का आध्य लेकर हम अपने पूर्व विकास की सहस्राव्दिया की उनाजिन सास्कृतिक वनराशि को तो नहीं लो दे रहे हैं? अथवा क्या इस मौलिक सम्पत्ति को पून उपयोगी बना कर तया उसे परिवृद्धित करके ससार को देने के लिये यत्नशील रहे है ? ये सब प्रश्न गभीर रूप में विचारणीय है और स्वतन्त्रता का जयन्ती दिवस प्रत्यक्ष ही इस कार्य के लिए विद्येष उपयुक्त है । हम आज राष्ट्र-निर्माण पर उचित रूप में ही बहुन बस दे रहे हैं। परन्तु निर्माण का हमारा सारा बल बाधो और वैज्ञानिक प्रयोगशालाओ पर ही नहीं होना चाहिए। वे तो साधनमात्र है, साध्य तो मनुष्य है और मन्ष्य का निर्माग, उसकी चेतना का, उसकी अन्तज्योंति का निर्माण होता है, जो कि उसे अपने सारे कार्य-कराप में प्रेरित प्रचलित करती है तथा उसके जीवन मस्यो का निर्धारण करती है। यदि मारतीय मानव अपने चेतना स्तर में नहीं उठ रहा है, यदि उसकी

### जीवन-साहित्य: सितम्बर १९५२

भावनाएं अधिक सूक्ष्म और यथार्थ नहीं वन रही हैं तो सब कुछ होते हुए भी राष्ट्र का निर्माण नहीं हो रहा है।

श्री अरिवन्द ने ऐसे आन्तरिक निर्माण को ही प्राय-मिकता दी थी और इसकी मर्यादा निर्वारित करने तथा चरितार्य करने के लिये अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। श्री अरिवन्द विज्ञान को चुरा नहीं मानते थे और न भौतिक अवस्थाओं को ही उन्नत करने के ही विरोध में थे, परन्तु मौलिक निर्माण वे अन्तरचेतना के निर्माण को मानते थे। इसे उन्नत करना ही उनकी योगसायना और आश्रय का ध्येय रहा है और प्रत्येक ही उसके उन्नत होने से सारा जीवन स्वतः उन्नत होने लगेगा।

यहां प्रश्न पैदा होगा कि यह किया कैसे जाय ? पहला उपाय है ऐसे आन्तरिक विकान के लिए व्यापक अभीप्सा, इसके लिये चाह, इसकी मांग, इसे ही मौलिक सत्य स्वीकार करने वाली दृष्टि पैदा करना और जिस हद तक यह अभीप्सा, चाह, मांग तया दृष्टि स्वायी और दृढ़ होती जायगी उसी हद तक ये हमारे वाह्य प्रयोजनों में भी प्रतिविक्तित होने लगेगी और तव वे आयोजन भी साक्षात रूप में उन के साधन वननें लगेंगे। ये अभीप्सादि व्यक्ति में भी जीवन-निर्माण की वास्तविक प्रेरणा होती है। विहर्मुख जीवन के लिये वाह्य वस्तुएं साधना से अधिक कुछ नहीं। चेतना को साक्षात रूप में विकसित, उत्तम और संगठित करना ही वास्तविक निर्माण होता है। यह निर्माण-शैली हम अपने लम्बे इतिहास में खूव देख

सकते हैं। यही हमारा प्रमुख स्वमाव है और इसी से हमारा स्वषमं नी नियत होगा। इस दृष्टि के लिये अभीप्सा जाग्रत करना निर्माण की पहली शर्त है। और ऐसी पहली शतं जो शेप प्रयोजनीय अवस्थाओं को स्वतः पैदा कर देती है। हमारे निर्माण कार्यो में, हमारी शिक्षा में, हमारे साहित्य आदि में यदि यह अभीप्या जाग्रत हो उठे तो हमें और ही दृष्टि प्राप्त हो जायगी और हम अपनी समस्याओं पर जहां अब वस्तुओं और उनके भाव-अभाव को आघार बनाकर विचार करते हैं फिर मानव की बैतना उनके सामर्थ्य और संभावनाओं को लेकर विचार करेंगे। इससे मनोवैज्ञानिक वल के अभृतपूर्व स्रोत प्राप्त हो सकते हैं, परन्तु इसके लिये उचित दृष्टान्त पैदा करने होंगे तया सहायक वातावरण वनाना होगा। यह अपने आपमें योग विद्या का रहस्य है परन्तु यह रहस्य ही तो भारतीय जीवन का विशेष वल रहा है। श्री अरविन्द ने संघर्ष के दिनों में कहा था, "योग को मानव जीवन का श्रादर्श मानना ही वह प्रयोजन है जिसके लिये भारत का अभ्युदय हो रहा है।" स्वतन्त्रता आने से कहीं पहले, उसे आते देख कर ही, श्री अरविन्द निर्माण-कार्य का स्वरूप निर्यारित करने तथा उसकी क्रियात्मक भूमि बनाने में छग गये थे। यह निर्माण का स्वरूप उनके विस्तृत साहित्य में विशेष रूप में वर्णित है। इसके अतिरिक्त उनका कियात्मक कार्य पूर्ववत् विकसित हो रहा है। हम इनसे कितना लाभ उठाते हैं यह, प्रत्यक्ष ही, हमारे दिचार, विवेक तया साहस पर निर्भर करेगा।

विनोवाजी जेल में थे। एक वार उनसे एक परिचित भेंट करने गया। जेल के विषय में पूछने पर विनोवाजी ने जेल की सुन्दर परिभाषा की। उन्होंने पूछा—"तुमने सरकस देखा है न?" वे वोले, "हाँ" विनोवाजी ने कहा, "वस ठीक है। जेल को उससे विल्कुल उलटा समझो। सरकस में आदमी पशुओं पर शासन करता है और जेल में पशु आदमी पर।" यह सुनकर उक्त व्यक्ति खिलखिलाकर हंस पड़ा, साथ ही विनोवाजी भी।

#### श्राचार्य-भिन्त श्रीर तिमल की भेंट

प्राचीन काल से आचार्य प्रिन्त गुरुबुळ वाह, गुरुदक्षिणा आदि के लिए भारत सदा से सुविस्थात है। भारतवासियों ने सन्तति प्राप्ति से लेकर सम्राप्त तक, हर बात में गुरुवा आदेश प्राप्त कर, करने को धन्य माना है।

सत्तानहीन राजा दिलीप ने गृह विस्ति की यो मामयेनु भी पुनी निदनी की सेवा-सुन्यूपा कर प्रकृत्वित गृह की छुपा से अनुपृत्तित होकर रच्न की वासा या। गृह महाराज सान्दीपना की कामना पूरी करने ने किए भगवान् कृष्णकर ने स्वयंवाची बाह्यमञ्जाकक भी बैकुष्ठ के प्राप्त कर गृहरिक्षणा पूरो की थी। अविध्वित भन्न एकष्टम ने गृह होग के प्रेमी चिप्य बर्जुन का मार्ग प्रशासकरने ने विस्तु वनके मागने पर अपने चाहिने हाथ का अगृहा देकर उन्ह आह्वपंस सानित नर दिवा या। सत्त कवीरदास ने स्वामी रामानन्त के पास स्पर्ध और "राम राम" हम महामन्त्र से कुतां और वन्य होकर-

"गुरु गौविन्द दोनो खडे काने लागो पाय ।

बलिहारी गृष्ठ आपने मोबिन्द दिये बताय ॥" वह कर आधार्य-मध्यि वा जो प्रमाद प्रकट विद्या वा उससे कोई अपरिचित्त नहीं हैं। श्री बैप्णव सम्प्रदाय, आधार्य मंकिन पर ही स्थित हैं।इसका बादर्स कबीर दास हैं।

दक्षिण के 'तिरुक्षुरुषु' नामक मान में ताध्यरणी नदी के किनारे प्राविक के सहल नाचा (चिन्निता भी घठनोपन जम्म है जन मान के बिना एक इमकी के कि के बिक में पीगातीन में 1 इमर मीत साध्यम्य प्रावित के लिए श्री मनुर किन यान्त्रार आचार्य का अन्यापन करते-करते श्री जयोग्या नगरी में पहुने । एक दिन रात में उनको दक्षिण की शेर से एक प्रकार का आमात हुआ जिससे उनने मन में यह जावा जहुरित हुई कि आवार्यवर वही प्रवाद पर स्वित है। और वे उस मुकार के जिससे की शेर कर वे उस मुक के नारा करी हो थी में उस मुकार कर के सह मुकार के सा कर में सह जावा महाने कि से उस मुकार के सित हो। चीन से उस मुकार के सा कर में से स्वाद की प्रवाद कर मुकार के सित हो थी में से कर मुकार के सित हो थी में से से सुकार कर में सह मुकार के सित हो थी में से से मुकार के से सुकार के से सुकार के से सुकार के से सुकार के से हो चिनका सित बार हो थी।

भागंदर्यंक प्रकास समाप्त हुआ । मधुर कवि गद्गद् हो उठे ।

उनके हुयें का पारावार नहीं रहा। किंतु आवार्यवर के न तो कमकन्यन खुके तथा न अग सवाकत हो हुआ। इस विध्य का मन अधीर हो उठा। कुछ देर बाद उन्होंने एक करक उठा कर उनके पात फंका, उसकी जावार के साथ ही जावार्यवर की आवें खुकी। आवार के कटाब-बीवण से थी मधुर किंव को रोमाच हो आया। बननी आवारा दूर करने के जिए तथा आवारीरियेंद्र आरि के कि ए उन्होंने पृष्ठा—

"धत्तत्तिन्वविरित्न शिरिवद् पिरदाल एत्तर्ति र एगे किडवरूम्?" प्रश्न का आश्रय था कि स्थूल प्राकृतिक शरीर में अणरूप आत्मा स्थान प्राप्त करके कैसे अपना अनुभव करेगी और कैसे रहेगी ? उत्तर मिला" अतिसरु अये किडक्कूम्" यानी उस शरीर के होने वाले सुख-इ स्रो को भीय कर, जीवारमा परमारमा सम्बन्ध को भलकर उसी भवर में चक्कर काटती रहेगी।" श्री मधुर कवि ने तरन्त दसरा प्रश्न पछा "शिरियदिन विपिरिल पेरि-यद पिरदाल, एतेर्तिक एगे किडक्ट्रम ? अर्थात् अणुरूप जीवात्या के अन्दर विभू रूप परमारमा, का विकास हो हो वह किसे अनुभव कर कैसे रहेगी? उत्तर मिला: "अत्ततिरु अमे रिडक्क्रमव।" जब अण्रूप आत्मा अपने बन्दर परमात्म-सम्बन्ध पायेगी तव उसीमें भग्न होकर उस अकार बाच्य भगवन साक्षात्कार की अनुभव कर, उस प्राप्ति से अप्राप्य सुखं को भोग कर आनन्दा-म्बधि में कल्लोलित रहेगी।

इससे जिस विषय के जानने के लिए श्री ममूर किंद्र यानवार उत्तर भारत से एक प्रशस की सहायता लेकर बाये में वह पूरी हुई। अपने आचार्यवर ही क्यों थी वंश्मव सप्रसाय के ही मूक स्तम्म नम्मान्त्रार श्री घट-गोपन के चरणो पर अपना तन मन अधित कर वह घन्य हुए। आचार्य मन्त्रित करों में एक कर उन्होंन-अपने की कुतार्य मान्य । मागवतीत्तम के दस पदी का आल्यार

### जीवन-साहित्य: सितम्बर १९५२

के सहस्र पद्यों का अध्ययन करने से पहले और अन्त में पाठ करना ही उनकी कविता का, उनकी आचार्य भिक्त का एक मात्र आदर सूचित करता है, यह कहना अति-गयोक्ति न होगी। पहले पद्य में उनकी वाणी गुरुका प्रभाव प्रकट करती है:

किष्णगुण विक्ताब्मिनालू कटदुण्य पण्णियः पेरुमायन् एन्नप्पनिल् निष्णत्तेनकुरुकूर निष्म एलककाल् अष्णिककुममुद्दुरुम्न एन्नावुक्के ।

छोटी और मजबूत रस्ती हाय में लिये यशोदा देवी के बहुत देर के परिश्रम के बाद यशोदानन्दन पकड़े गये। "इत वालक को खंभे से बांध दंगी और थोड़ी देर गोपियों की शिकायत से बचकर रहंगी।" यह सोचकर बसोदा श्रीकृष्ण को बांबने छन जाती है और यक जाती हैं। उन्होंने कृष्ण के बांबने में कितनी ही सामर्थ्य दिललाई किन् व्यर्थ । सोचा रस्सी वालक के पेट तक वा जायगी पर पूरी न हुई विल्क कम ही होती गई। पनीने से तर थकी-मांदी माता की इस अवस्या ने अलौकिक वालक के मन में दया उमड़ आई और वेदवंदा प्रतिपादक भगवान् ने अपनी कृपा से उस रस्सी को पर्याप्त बना दिया। इसी प्रकार आलवार : "अपनी कृपा से अपने आप वन्त्रे हुए वह परमात्मा मेरी आत्मा का उद्घार करने वाले हैं। फिर भी उस परब्रह्म को दिखा देने वाले मेरे साचार्यवर श्री गठगोपन के नाम स्मरण से मेरा जीवन अमृत-पान को रिच प्राप्त करता है।" कह कर गुरुत्तर आचार्य की महिमा प्रकट करते है। दूसरे पद्य में उनके गुण-गान करते-करते "मै उनकी जो रचना है उसे ही रट कर बन्य मानूंगा" कह कर अपनी आसक्ति को प्रकट करते हैं। तीसरे पद्य में "आज तक मैं भगवत्-विपय से विमुख होकर फिरता रहा, लेकिन आज मैं आचार्य श्रेष्ठ को कृपा से उस देवाधिदेव नीलमेघ-निभ भगवान के दर्शन भी प्राप्त कर सकूंगा" ऐसा कहते हैं। चौथे पद्य में आप गुरुवर के मातृ-पितृ समान वात्सल्य का वर्णन करते हैं। पांचर्वे पद्य में आचार्य श्री के श्रीगद-सम्बन्य प्राप्ति के पहले अपने अनुचित कार्य से दृ:दी होने के अनन्तर गुरु की महिमा से बन्य होने का

वर्णन है। छठे में "सात जन्म के अनेकानेक वर्ष तक अपने गुण-गान करने का अनुग्रह किया है ऐसा मुझसे भाग्यवान् कोई और होगा क्या ?" कह कर गुरु प्रसाद का वर्णन करते हैं।

सातवें पद्य में कहा है "मुन्दर द्रविड पद्यों के स्थान परमोपकारी श्री शठगोपन ने अपनी कृपा भरी दृष्टि से मेरा उद्घार किया है। मेरा पाप तो इतना प्रवल था कि उसके नष्ट होने की तो संभावना ही नहीं थी। उनकी इस कृपा को मैं आठों दिशाओं में प्रति ध्वनित करूंगा।"

नवें पद्य में अपने धन्यत्व पर मुग्य होकर उसे प्रसन्न चित्त से प्रकट करते हैं। "मेरा मन स्वभाव से बुद्धिमता प्राप्त करके ईश्वर को पाने में असमर्य था। ब्राह्मणों से, अध्ययन श्रेष्ठ वेदनों से गायेजाने वाले वेद को मेरे हृदय में द्रविड भाषा के सहस्र श्लोकों के द्वारा अवल रूप से स्था-पित कर मेरा उद्धार किया है। जिस आचार्यवर को मैने आचार्य स्थान पर वरण किया, उन्होंने तो मेरे जन्म को ही सायक बना दिया।" कहकर अपने गुरुदेव की महिमा का यद्य गाते हैं। दसव पद्य में वे कहते हैं कि एक उच्च कोटि के गुरू अपने विषय की अयोग्यता आंकने पर भी उसकी परवाह न कर, किस तरह विषय की भलाई करेंगे।

पयनं राकिलुम्, पांगलराकिलुम् शयल् नंराक त्तिरुलि थणि कोलवान् कुयिल निरार पोलिल शूल कुरु कूर निम्ब मुयल किरेन उन्दन् मोटकलकंबेये ।"

जालवार श्री गठगोपन की अनुग्रह विशेषता इतनी गहरी है कि अपने शिष्य की अयोग्यता पर ध्यान नहीं देते हैं, निज का कोई लाभ न होते हुए भी शिष्य की भलाई चाहते हैं। जैसे माता बच्चे की रक्षा का ख्याल रखती है वैमे ही उनकी कृपा है। आचार्यवर्यों में दो श्रेणियां है, जिन्हें अनुवर्तित प्रसन्नाचार्य और कृपामात्र प्रसन्नाचार्य कहा जाता है। श्री शठगोपन को मधुर किव आलवार कृपामात्र प्रसन्नाचार्य वर्ग में रख कर उनकी चरम कृपा का, हृदय खोल कर आनन्द वाष्य के साथ, गद्गद्द कंठ से इस पद्य में वर्णन कर अपने बन्यत्व को प्रकट करते है—

"अविमित विषयान्तरझ्यठारे उपनिषदाम् उपगानमात्रभोगः । अपि च गुणवद्यात तदेक्द्येषो मयुरकविह् दये ममाविरस्तु ॥" राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्षा) की बैठन से लीट रहा था। विना मेरी जानकारी के दीपहर के मोजन के लिए 'मिक्सवात्र' में 'नुख' रल दिया गया था। 'गोदिया' पहुच कर देखा तो 'हलबा-पुरी' थी।

साय में पे शिलाय (असम) के सेंट एडमड कालेज ने प्रो० चौमरी । उनसे मिली सहायदा के . बावजूद में यह 'हलवा-पूरी' समाप्त न कर सका ।

साम को मुझे उस हलवान्यूरी' वी अपेक्षा न थी और दूसरे दिन प्राप्त वाल मैं कठकत्ते पहुचने ही बाला था। 'मिस्तापाम' घोकर रखन के लिए 'हलवान्यूरी' का 'दान करना अनिवार्य था। मैं किसी 'सुपान' को खोजन लगा।

फेटरगर्म नी दूसरी और झाना तो देसा एन मिशुन' निसी में जूटे आम ने हिल्मों को उठा-उठा नर उनमें सबसिप्ट मायून्ट में के क्ला नो प्रेयपूर्वन बाट रहा है। ऐसा लगा कि मानों नह कियी ज्यानमादक से छुटो हुई गई-गई मूक की गलीवग निसाल रहा है।

मैंने उस 'मुपान' को अपने 'भिजापान' का यथायें अपिनारी माना और आम के छिलका को छोड़ 'हल्या-पूरी' हेने के लिए आमें जाने नो नहा । उसने अपना कुत्तें क्ना फला फेला दिया । नहीं असावधानी से में अपना 'भिजापान' उस 'भिज्ञुक' के पत्ले में खाली कर देता तो उसके हाम कुछ भी तो न छनता । अधिनास मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो जाता । उसना हुतें का पत्ला ऐसा ही तार-शार था ।

यह दूसरी बात है कि निसी 'नणाद' ऋषि नी तरह वह भी उस मिट्टी में मिल नर मायुर्व्य के नणो की किसी म-निसी तरह चुन लेने ना आधा-पुरा प्रयत्न अवस्य नरता।

'मिस्रु' ने थोड़ी साववानी नी । उस 'भिक्षुक' को उत्तर गाड़ी में बुला लिया । एक-एक करके उसके हावा में, कुर्ने में, जैमे-उसे भी वह हिल्बा-पूरी समाया, दिवा विद्या ।

एक मुसाभिर यह सब देश रहा था। जब एक-एक करके सभी पूर्ग्या उस 'भिश्वक' के हाथो और पत्ले में जा पहुची और मेरे हाथ में रह गई केवल एक अस्तिम पूरी वो वह बोला--"मुझे भी तो कुछ दे देते ।"

पहले तो विस्वास ही नही हुआ वि वह स्वसूच भोजन पाहना है। बितु में जानता हूं कि मूल श्वसे बका रोग है। इसलिए उसकी याचना की क्षोर ध्यान न दे अन्तिम एक पूरी उसी के हाय में यमा दी ॥

और देखा उस 'भिक्षुक' से भी पहले वह 'मुसाफिर' अपनी पूरी चवा रहा है !

उसनी आकृति कह रही थी—"सावपात । 'क्षाना' अपनी जादर फैलाता जा रहा है। सप्टेरपेश मध्यवृत रोगो को भी यह नाति विरकाल में ही समेट छै सेकता है।"

× ×

और यह दूसरी तसवीर है नल्कनों की । कोई-कोई धिनौना दृश्य भी क्तिना आकर्षक होता है। उस दिन चलते-चलते मैंने अपने सामियों को भी अपने साम सहक के एक नुकरक पर रोक लिया—

"भन्ते । क्या देख रहे हैं ?"

"हको।"

में वह तसवीर देखने में सन्मय था।

बारह चौरह वर्ष का एक श्टका । हान पर नगा करम । पास में पते पर पीश सत् । मिसक्या क्रम और उस सत् पर समान कर मिसिमा हो भी । कड़के ने एक हाथ और कोई काम कर सकता था—जहम और सत् को मिसक्यों से बचना अनिवार्य था।

यास ही फुरक रहे ये थार पाच की वे । वे उन्न छड़वे के अस्म की 'कार्की' पर अधिक मुख्य के अपने उसके सत्तु के भीठेवर्न पर ? यह से बर सकता आसान न था। रुकत केवल सत्तु साना चाहता था और बीवे सायद परस्तु बसा सत्तु दोनों।

मैंने देखा कि यह उडका सत्तु की एक गोली भना कर कुछ दूर पर फॅक दे रहा है, कीने उछल कर उसकी ओर जाते हूँ, तब तक फूर्ती से वह एक गोली बना कर अपने मुह

### जीवन-साहित्य: सितम्बर १९५२

में डाल हे रहा है। उसका कुछ सत्तु मिक्खयों के लिए था, कुछ कौवों के लिए और कुछ अपने लिए।

मिक्खयों और कौवों से जरूम की रक्षा करते हुए 'योड़ा सत्तु जैसे-तैसे पेट में ढकेलने का उसके पास और कोई उपाय न था। काले कौवों को सत्तु की 'रिश्वत' देना उसके लिए उतना ही अनिवार्य हो गया था, जैसा आज के कुछ सरकारी अफसरों को।

मैं खंड़ा-खड़ा उस तसवीर को देखता रहा। सोचता रहा कि यह आखिर किसकी तसवीर है।

कलकत्ता का कालेज स्क्वायर शिक्षा का केन्द्र है।

वहीं पर मुझे यह तसवीर पड़ी मिली—प्रसिद्ध मैडिकल कालेज के हास्पिटल के नक्कड़ पर ।

मैं उस तसवीर को झाड़-पोंछ कर साथ न ला सका, यही इन पंक्तियों के लेखक का 'दर्द' है; और विना लाये भी वह साथ-साथ चली ही आई, यही उसकी बड़ी मुसी-वत है।

अव मेरी आंखों के सामने न वह छड़का है, न उसका जख्म है, न उस पर बैठी हुई मिक्खयां हैं, न उसका गीला सत्तु है, और न उसपर झपटने वाले कीवे हैं, किंतु वह समाज है, जिसका ये सभी अपनी-अपनी जगह पर प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

#### भरतसिंह उपाध्याय

वौद्धधमं बुद्धि-प्रधान धमं है । उसे 'एहिपस्सक' धमं कहा गया है, जिसका अर्थ है 'आओ और देख लो'। विश्वास को यहां कोई स्थान नहीं है । वैज्ञानिक प्रक्रिया के समान खोज और परीक्षण उसके साधन हैं और विश्लेषण उसका मार्ग है । सत्य उसके लिये एक खोज करने की वस्तु है, पहले से तैयार की हुई देन-लेन के लिए नहीं। इसलिये मनुष्य को बांधने का प्रयत्न वहाँ विलकुल नहीं किया गया है । वीद्धधमं की यह एक ऐसी विश्लेषता है जो उसे संसार के अन्य सब धमों से अलग कर देती है।

बौद्धधर्म के बुद्धिवादी दृष्टिकोण के कारण उसे आधुनिक युग में काफी लोकप्रियता मिली है। वैज्ञानिक मन को संतोप देने में जितना यह धर्म समर्थ हुआ है उतना अन्य कोई नहीं। रोप में, उन्नीसवीं खताब्दी में, जब धर्म और विज्ञान का संधर्प चल रहा था, यूरोपीय विचारकों का इस धर्म से परिचय हुआ। यहां उन्हें एक ऐसा अद्भुत धर्म मिला जिसकी न केवल मान्यताएं विज्ञान से संगत थीं, बल्कि जिसकी सोचने का पूरा तरीका वैज्ञानिक था। इस धर्म से परिचय पाकर यूरोप के विचारकों को कितना आख्वासन मिला है यह इसी से जाना जा सकता है कि उनमें से एक (सर फ्रांसिस यंग्हम्बेण्ड) ने कहा है कि बुद्ध-उपदेशों के समझने का

# बोद धर्म में श्रदा का स्थान

वास्तिवक समय अव २५०० वर्ष वाद आया है, और दूसरे (वरट्रेंड रसल) ने अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा है कि "यदि में किसी धमं को अपनाऊंगा तो वह वौद्ध्यमं होगा।" बौद्ध्यमं के निरन्तर बढ़ते हुए प्रभाव के ये शब्द संकेत भर हैं। जिस धमं के प्रभाव में आधे से अधिक जगत् पहिले भी आ चुका है उसे, या यदि अधिक ठीक कहें तो उसके मागं को (क्योंकि 'मागं' से अतिरिक्त बौद्ध धमं और कुछ नहीं है), ज्ञान और मानवता के विकास के लिये आगे चल कर यदि पूरा विश्व अपना ले तो यह कोई आक्चर्यं की बात न होगी। जैसा कि एक जापानी सम्प्राट् ने कहा था—संसार में कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो बुद्ध-धमं से प्रभावित न हो यदि यह उसके सामने रक्खा जाय।

इसे एक युग धर्म की ही बात समझना चाहिए कि बौद्ध धर्म के विशेषतः बुद्धिबाद ने इस युग में लोगों को अपनी ओर आछुट्ट किया हैं। बौद्ध धर्म के ऐसे अनेक गुण हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकृति के लोगों को, भिन्न-भिन्न युगों में आछुट्ट करते रहेंगे। यहां केवल एक सूक्ष्म भय यह है कि हम कहीं इनमें से किसी एक गुण का अतिवाद न कर बैठें, जिससे हम तथागत के मन्तव्य से दूर जा पहें। बुद्ध-मन्तव्य इतना परिपूर्ण है जितना जीवन। दूसरे शब्दों में हम इसे यो कह सकते हैं कि मध्यम-मार्ग से तयागत ने वर्म का उत्रदेश दिया है। 'मज्झेन तयागतो षम्म देवेति'। यह बात हमें बुद्ध-धर्म ने प्रकृत रूप को समझने में सदा याद रखनी चाहिए।

कोरा वृद्धिवाद मनुष्य को प्रश्नीतयाद या भौतिव-वाद में ले जायगा जिस प्रकार कोरा श्रद्धावाद अप्य विश्व मं से वो दे धम देशे विद्यावाद पर तो आपारित है हो मही, यह भौतिक बात से भी जतात्र ही दूर है। जहां तक वह प्रका के विकास पर जोर देता है बीद धमें एक विज्ञान है। परन्तु यहा वह प्रका को व्याच्या 'हु धार्जिय-सपुन्न जान' के रूप में करता है, यह विज्ञान से लागे वड कर नैतिक दर्शन वन जाता है और विज्ञान का प्यत् प्रदर्शन करता है। बृद्धिवादों होते हुए भी वह बौदिक नहीं है। वह जीवन का एक परिपूर्ण, व्यावहारिक दर्शन है है। इसके लिए उसमें श्रद्धा की महिमा भी अपने दश से सुरक्षित है, यह हम उसके स्वस्थ के विवेचन से अभी देशें ।

भगवान बद्ध ने जिस ज्ञान को प्राप्त किया उसे चन्होने 'अतर्शवधर' बसाया है। 'अतर्कावचर' का अर्थ है तर्क से अप्राप्य । सत्य या बोधि नी प्राप्ति बौद्धिन ऊहापोह से नहीं हो सननी । जैसा कठोपनियद के ऋषि ने कहा या 'यह मति तक से प्राप्त नहीं की जा सकती' (नैपा तकेंग मतिरापनेया), वही अर्थ 'अतकांवचर' इाब्द में निहित है। बीदिक ज्ञान से अनीव इस गम्भीर सत्य को प्राप्त करने ने लिए सर्व प्रथम निस बात की आबश्यकता होगी, इसे बताते हुए ज्ञान-प्राप्ति के ठीक बाद ही भगवान ने पहा था "अमत के द्वार खल गये है। जिनके पास कान है के अद्धा उपारिकार कर ।" कुट कर्य बित-राद्धि के लिए या और चित्त-राद्धि वा लक्ष्य या निर्वाण । निर्वाण या पूर्ण विद्युद्धि के लिए सयागत ने पृष्यार्थं को ही प्रधान साधन बताया था। यह सार्थक है कि बोद्ध परिभाषा में 'प्रधान' धन्द का ही अर्थ पुरु-पार्थ है। बीर्य और अप्रमाद इसी के दूसरे नाम है। बीयं और अप्रमाद ने रूप में देखना ही बौद्ध साधना को उसने वास्तविक रूप को देखना है। परन्तु नीर्यारम्म के लिए प्रेरणा या शक्ति कहा से फिलेगी 7 वृद्धि से नहीं

मिल सनती, नयोकि उसका सम्बन्ध हृदय से नहीं हैं। इसना काश्य स्तेत तो अदा हों है जो हृदय से उत्पन्न होती हैं और जिसे मगवान ने एक 'वल' माना है, एक 'इंदिय' या जीवनी-जिन नहा हूं। तो द पर्म में पान इंदिया ( अदा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रता) और सात वल (श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रता) और सरवाच या पाप-मय) माने गये हैं। उनमें श्रद्धा को स्पम स्वान प्राप्त हैं। इसका नारण यह हैं कि उत्पन्न होते ही यदा चित्त-को को दूर कर देती हैं। जैसा नहा भी मया है, "सदा उप्यज्यमाना नीवरणे विश्वस्मेति।"

श्रद्धा वित्त में उत्पन्न हुई है, इसका लक्षण ही यह है कि सारा मन प्रसन्तता से भर जाता है, मनध्य को चेतना एकदम सान्ति और आध्यारिमक 'प्रसाद' में द्व जाती है। थढ़ा का लक्षण करते हुए 'मिलिन्द-प्रश्न' में कहा गया है "सम्पसादनलब्खणा सद्धा" वर्यात् श्रद्धा का रुक्षण है सप्रसाद, वित्त का प्रसन्न होना, सान्त होना, उत्साह से भर जाना। 'मिलिन्द-प्रश्न' ईसवी सन् के करीव की रचना है। बौद्ध जीवन-साधना ने हमें जो कुछ दिया है उससे हमें यह आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि योग सूत्र के भाष्युकार ब्यास ने, जिसका समय पाचनी रावान्दी ईसवी माना गया है, हवह बौद्ध परिमापा को स्वीकार करते हुए कहा है 'श्रद्धा चेतसः सप्रसाद ' (ब्यासभाष्य १।२०) । क्या श्रद्धा की सर्वोत्तम परिभाषाके लिए भी हम बौद्ध साधनाके ऋणी हैं ! न केवल ब्यास-भाष्य, बल्कि योग-सुत्रो (तृतीय शताब्दी ईसवी पूर्व) पर बौद्ध प्रभाव स्पष्ट उपलक्षित है, यह इसी प्रसग में इनसे जाना जा सकता है कि असप्रतात समाधि की प्राप्ति हे लिए उन्होंने श्रीद्व सापसा की प्राप्त इंडिपों का उन्लेख विया है, यद्यपि 'इद्रिय' शब्द का निर्देश उन्होने नही किया है। "श्रद्धावीर्यस्पनिसमाधिप्रशापूर्वक इतरेपाम्" (योगसूत्र १।२०) । इस सूत्र की व्यास-माप्य में जो ज्याख्या की गयी है वह बौद मन्तव्य और शब्दा-वर्ली का विलक्त अनसरण करती है, इसे विस्तार से दिलाने की यहा बावस्यक्ता नहीं। हमारा अभिप्राय यहा केवले यह दिखाना है कि श्रद्धा चित्त भी वह प्रसाद-मयी अवस्था है जो एक ओर साधक को उन्नत आध्या-

त्मिक अवस्याओं को अनुभव करने के लिए उत्साहित करती है और दूसरी ओर संशयादि चित्त-मलों को दूर कर चित्त को शान्ति प्रदान करती है। श्रद्धा से ही वीर्य ज्त्यन्न होता है। वीर्यारम्भ करने वाले की स्मृति ठहरती है। जिसकी स्मृति ठहरी हुई है उसीका चित्त समाधि-सन्न होता है और वित्त की समाधि से ही प्रज्ञा मिलती है जिससे साथक यथाभूत ज्ञान-दर्शन को प्राप्त करता है। इस साधना-कम का आरम्भ प्रसाद-रूप श्रद्धा से होता है। इसकी सच्चाई की गवाही गीता भी संसेपतः इन शब्दों में दे गई है। "प्रजादे सर्वेदु:खानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याणु वृद्धिः पर्यवितष्ठते" संशय या अश्रद्धा को जिस प्रकार गीता में विघ्न माना गया है और अज्ञ और अश्रद्धालु के विनाश की बात कही गई है उसी प्रकार संगय या विचिकित्सा (विचिकिच्छा) को वौद्ध दर्शन में चित्त का एक कांटा कहा गया है। "जो भिक्ष शास्ता के प्रति संदेह करता है, उनके प्रति श्रद्धा नहीं रखता, प्रसन्न नहीं होता, उसका चित्त संयम, योग और प्रधान (पुरुपार्थ) की ओर नहीं झुकता।" इसलिए जहां कहीं पालि-चिपिटक में साधक का वर्णन आया है वहां सबसे पहले यही बात कही गई है-यहां भिक्षु श्रद्धा से युक्त होता है' (इव भिक्लु सद्धाय समन्नागतो होति) आदि। इसलिए हम कह सकते है कि बौद्ध साधना का प्रस्थान विन्दु बुद्धि नहीं विलक श्रद्धा है और जैसा वृहदारण्यक उपनिषद् ने कहा है, श्रद्धा की प्रतिष्ठा हृदय में है "हृदये होव श्रद्धा प्रतिष्ठिता"। दानादि के प्रसंग में जिस प्रकार श्रद्धा की प्रशंसा वैदिक ग्रंथों में की गयी है उसी प्रकार बीद्ध साहित्य में श्रदा की सम्पूर्ण पुण्यकारी वस्तुओं (पुंजिकिनिया वत्यूनी) का आधार कहा गया है। सत्तु-निपात के किस भारद्वाज-मुत्त में भगवान् बुद्ध अमृत की खेती करते दिखाये गये हैं। उसका वीज वहां श्रद्धा को ही बताया गया है। श्रद्धा की वार-वार अभ्यास की गई अवस्थाओं को ही आचार्य बुद्धघोप ने भिवत कहा है (पुनप्पुनं भजनवसेन सद्धा वा भिवत) और भिवत अनिवार्यतः प्रेम (पेम) से सम्बन्धित है। परन्तु यह ध्यान देने योग्य है कि बौद्ध साधना श्रद्धा से प्रेमरूपा भिवत की ओर न मुड़ कर प्रज्ञा रूपिणी 'भावना' की ओर वढ़ गयी है जो बुद्धि से अधिक सम्बन्धित है। जैसे गीता ने कहा है, योग की तो दोनों जगह ही आवश्यकता है और 'भावना' से भी शान्ति और सुख की सिद्धि होती है।

नास्ति वृद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः मुखम् ॥ इस प्रकार हम देखते हैं कि वौद्ध साधना में श्रद्धाः और वृद्धि का समन्वय हैं । उनकी श्रद्धाः 'प्रज्ञान्वया' हैं । स्वयं भगवान् वृद्ध ने हमें एक शब्द दिया हैं 'पंजान्वया सद्धा' (प्रज्ञान्वया श्रद्धा) । इस एक शब्द के द्वारा ही हम बौद्ध धर्म में श्रद्धा के स्थान को समझ सकते हैं ।

श्रद्धा के द्वारा विमुक्त होने की वात भगवान् ने अनेक बार कही है। "श्रद्धा के द्वारा मनुष्य भव-बाढ़ को तरता है" (सद्धाय तरती ओपं) ऐसा उन्होंने अनेक बार आस्वासन दिया है। पिंगिय नामक ब्राह्मण विद्यार्थी को उन्होंने अनेक उदाहरण देते हुए श्रद्धा द्वारा मुक्त हो जाने के लिए उत्साहित किया। भगवान् ने कहा "जिस प्रकार वक्कलि, भद्रायुघ और आलवि गोतम श्रद्धा द्वारा मुक्त हुए उसी प्रकार पिंगिय! तुम भी श्रद्धा को उपस्थित करो। तुम मृत्यु को पार कर जाओगे।" इस प्रकार श्रद्धा द्वारा भगवान् ने विमुक्ति को सिखाया है।

तयागत की 'प्रज्ञान्वया श्रद्धा' इस अस्तव्यस्त जीव-लोक के लिए, जिसके वौद्धिक और भावात्मक सन्तुलन खोये हुए हैं सचमुच एक वरदान की वस्तु है।

श्रद्धां के मानी अन्ध-विश्वास नहीं है। िकसी ग्रन्थ में कुछ लिखा हुआ या किसी आदमी का कुछ कहा हुआ अपने अनुभन्न विना सच मानना श्रद्धा नहीं है।

—विवेकानन्द

#### श्रीमती ऐनी वेसएट

थीमती ऐनी वसन्द को विदेशी भागते सहसा मन को पक्ता लगता है। मले ही उनका अन्य छन्दन में हुआ या पर वे भारत माता की एक शानदार बेटी थी ऐसी शानदार कि उनके कारण हमारी प्रतिष्ठा सदा अवी रहेगी। अपनी जन्मदात्री के लिए प्राण दे देने के उदाहरण से विश्व का इतिहास भरा पढा है परन्त दूसरे की मा को अपनी मा मानकर उसके लिये तन-भन-षन न्योछावर कर देना उन बिरली महान आत्माओं ना काम है जो 'अपने-इसरे' की भावना से मक्त होती है। चन्ही आरमाओं से मानवता घन्य होती है और ससार रहने लायक स्थान बनता है । ऐनी बेसण्ट सन् १८९३ में भारत आई तब उनकी आय लगभग ४७ वर्ष की बी। सब से लेकर २० सितम्बर १९३३ तक जिस दिन वे चिर निदा में सो गई थी उन्होने अपना भाग्य भारत के माग्य के साथ जोडे रखा। मृत्य के समय वे ८७ वर्ष की थी। वे पूरे ४० वर्ष तक भारत के भाग्याकाश में एक तेज रोशन सितारे के समान चमकती रही । धर्म, समाज सेवा, पत्र कारिता, राजनीति और शिक्षा कोई ऐसा क्षेत्र नही था जिसपर उन्होंने अपनी छाप न छोडी। जिसे बन्होने अपनी सेवाओ, सच्ची और सफद सेवाओ, से पुष्ट न किया हो। भारत में वियोसोंकी की अब अमाने में उत्ते अधिक काम किसी ने नहीं किया। वे उसी के लिए जीवित रही और मरी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका स्थान स्वामी श्रह्णानन्द, म मदनमोहन मालवीय, लाला इस-राज बादि की शणी में सुरक्षित हैं। राजनीति में दे भारतीय राष्ट्रीय महासमा की समानेत्री के पद तब पहच गयी थी। बाँग स्काउट और गर्ज गाइड मुवर्गेट में उन्होने सकिय भाग लिया और पत्रकार जगत् में 'डेली हेरल्ड' आदि अने क पत्र निकाल कर उन्होने अपने अदम्य साहस का परिचय दिया था । वस्तृत भारत के सार्व जितक जीवन का नोई ऐसा कोना नहीं था जी इस आयरिश महिला के प्रभाव से अलूता रहा हो या जिसको उन्होंने अपनी जाद भरी कियाशीलता से प्राणवान

न बना दिया हो ।

भारत में वाने से पहले इस विलक्षण महिला के ४७ वर्ष कोई शान्त वर्ष नहीं थे । इस छोटें से जीवन काल में उन्होने बनेक भयकर तुफानों को उठते और मिटते देखा पर वे सदा चटान की तरह स्पिर रही। वे उन व्यक्तियों में से नहीं थी जो अपने मृह में चादी वा चम्मच केनर पैदा होते हैं। उनने पिता की मत्य के बाद उनकी माता के पास इतने साधन भी नहीं ये कि वे अपनी सन्तान को उचित शिक्षा दिला सके । इसलिए उन्हे एक घनी महिला के पास रह कर सिक्षा प्राप्त करनी पड़ी। १८६७ में, अपने विवाह से पूर्व तक, उनके जीवन में कोई बनोखी घटना नहीं घटी । वे तबतक एक धर्म-भीत युवती थी। इस वर्ष उन्होने एक पादरी से विवाह किया। यही विवाह उनके जीवन को मोद्य देने वाला बन गया। पति प्राने विचारों के व्यक्ति ये जो परनी की मात्र बासी समझते है और शीमती बेसण्ट स्वतन्त्र प्रकृति की महिला थी। कथा आती है कि एक बार वे अपने पति के दर्व्यवहार से तम आकर जहर पीने की तैयार हो गई । शीशी अभी हाथ में ही थी कि जैसे उनकी आत्मा ने उनसे नहा-अंश वजदिल । त मसीवता और सकलीकों से डर कर आत्म-हत्या करना चाहती है। आत्म समर्पण का बाठ सीख और सत्य की खोज कर ।' इसके बाद यवती ऐनी बेसण्ट ने जहर की शीशी को तोड डाला और और सत्य की लोज में अपने-आपको होम दिया। इसके लिए उन्हें अपने पति की ही नहीं छोड़ना पड़ा अपने बच्चों से भी हाय घोना पडा । सन १८७४ में वे अपने पित से वलग हुईँ। तक्तक वे नास्तिक हो चुनी थी। यह उन्होंने जनसरवानिरोध अर्थात् बनावटी साधना से सन्तति-निग्रह का समर्थन किया। एक पैम्फलेट में जो बाद में "नौल्टन पैम्फलेट' के नाम से अशहर हुआ वे कातन की सीमा पार कर गई। पट वें डरी नहीं। अपने अदम्य साहस से उन्होंने विरोधियो का सामना ही नही क्या बल्क अपने दृष्ट-कोण के लिए जज का समर्थन सक प्राप्त कर लिया

परन्तु उसके साय उनके वच्चे उनमे छीन लिये गये। कानून ने नारी के इस अधिकार को तो स्वीकार कर लिया क वह स्वयं इस बात ना फैसला कर सकती है कि वह कव बच्चे की मां बनना चाहती है परन्तु उनके बच्चे पिता के हवाल कर दिये गये। मां के बच्चे उसमे छीन लिये जायें उससे बड़ी चोट और क्या हो सकती है; पर उस दीरांगना ने मानी अपनी आत्मा की सान्त्वना देने हुए कहा-- 'इम दृढ़ निश्चय के माथ कि यदि, मेरे अपने बच्चों से मझे दंचित कर दिया जायना नो में उन नद निस्सहाय बच्चों की माता का स्थान ग्रहण कर लूगी जिनकी मुझने सहायता हो सकेगी और इस प्रकार दूसरों की पीड़ा को शान्त करते हुए अपने हृदय की पीड़ा को मिटा लूंगी।' क्या कभी किमी मां ने इसमे अधिक यान-दार शब्द कहे होंगे ? आर उन्होंने केवल कहा ही नहीं वित्क अपने शेष जीवन में वे इन्हीं शब्दों की कियात्मक रूप देती रहीं ।

सन् १८८९ में वे यियोसॉफी की प्रवर्तिका मैटम क्लैबत्नको के मन्पर्क में आई। यह एक ऐसी घटना थी जिसने उनके जीवन की एक निश्चित दिया दी। व जवतक जीवित रहीं थियोसाफी के लिए जीवित रहीं। यियोमाफी के कारण ही वे भारत आई और फिर कभी नही लौटीं। तदमे उन्होंने विश्व को अपना देश और परोपकार को अपना धर्म नान लिया । यूं ती वायरिय लोग नदा से भारत के मित्र रहे है पर श्रीमती देसण्ट ने उस मित्रता को पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया। वे जिन्दगी भर भारत में फैकी हुई अधिका, अन्व-विश्वास कुरीतियों और राजनीतिक दासना में जूलनी रही। भारत आने के पांच वर्ष दाइ ही उन्होंने १८८९ में वनारम में 'मेंड्रल हिंदू स्तुल' की स्थापना की जो बाद में कालिज और अन्त में हिंदू दिव्दिविद्यालय के रूप में वदल गया। क्या यह एक अनोची बात नहीं है कि पं. मदनमोहन मालबीय को काशी हिंदू विस्वविद्यालय के निर्नाण में सबने अधिक नित्रय प्रोत्नाहन और प्रेरणा इस विदेशी महिला से मिली। इस देश की शिला-प्रणाली में धर्म और राष्ट्रीयना को स्थान दिलाने में उन्होंने जो प्रयत्त किये वे अपूर्व है। उन्होंने सदा पश्चिम के प्रभाव

का विरोध किया । उन्होंने कहा कि वास्तविक सफलता प्राप्त करने के लिए शिक्षा का काम उन लोगों को अपने हाथ में लेना चाहिए जो न केवल अपने देश को प्यार करते हो बल्कि जो उनकी आवश्यकताओं को ममझते हों और उनकी अद्मुताओं, विशेषताओं और परम्पराओं से परिचित हो । उन्होंने दिसम्बर १९४७ में कलकता में राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन का मूत्रपात किया। वनारस हिंदू कालेज के अलावा मदनपल्ली का थियोमफीकल कालेज भी उनके शानदार काम का शानदार सबूत है।

नन् १९१३ में उन्होंने भारत की राजनीति में प्रवेश किया । इस उद्देश्य के लिए उन्होंने 'कामनवील' नाम का एक माप्ताहिक तथा-'न्यूइंडिया' नामका एक दैनिक निकाला । इन दोनों पत्रों ने तत्कालीन भारत में प्रचड राजनीतिक जागृति पैदा कर दी। यह वह युग या जब भारतीय कांग्रेस गोलके और तिलक की राज-नीति के भंवर में फंसी हुई थी। उस समय वे एक नया संदेश लेकर राष्ट्र सभा में आई। उन्होंने नरम और गरम दल में समझीता कराया और उसमें एक नई कह फूंकी। वे जहां जाती थीं उनकी अदम्य प्रिया-शीलता उनके वागे चलती थी। शीघा ही सितम्बर १९१६ में उन्होंने 'होमन्छ लीग' की स्थापना की। देन्दते-देखने सारे देश में लीग का जाल विछ गया। सरकार घवरा गई। मद्रास के गवर्नर ने उनसे कहा—'मिसेज वेसेंट, आप उस तरीके का राजनीतिक कार्य करना छोट दें जैमा अब कर रही है। इसका उत्तर उन्होंने अपने स्वभाव के अनुसार यह दिया या—'श्रीमान्, मै तो बैमा ही करती जाऊंगी जैसा मै बेहतर समझूंगी ।" इसपर वे बृछ दिन बाद नजरबन्द कर दी गई। इतिहास इस बात का साक्षी है कि उनकी नजरबन्दी के बाद वह आन्दोरुन और भी तेजी ने दड़ा । यहां तक कि माटरेटों और बुट्डे में भी सलवली मच गई। खुफिया पुलिस की सनके निगरानी के बाबजूद वे वरावर पत्रों के लिए छेच लिखती रही और स्वराज्य तया न्वदेशी के प्रचार के लिए स्त्रियों तक ने जलून निकाले । याद रिचिये यह वह जमाना या जब पुराने नेताओं में ने कुछ तो मर गये थे, कुछ ने सन्यास के लिया या, कुछ गुमराह हो रहे थे और गांधी अभी राजनीति का अध्ययन ही कर रहे थे। ऐसे विकट समय में श्रीमती बेसण्ट ने देश का नेतृत्व करके अपने प्रेम का यह एक अनीखा सबत दिया था। सरकार द्वारा अपनी नजरबन्दी पर उनके ये शब्द कि 'एक चूहा शेर को मूदगुदाने की चेध्टा कर रहा है।' उनके स्वभाव का पूर्ण परिचय देते है। देश ने भी उनको सन् १९१७ की नलकता कांग्रेस का प्रधान चुनकर उनका उचित सम्मान किया । वे राष्टीय महासभा की अध्यक्ष बननेवाली पहली नारी थी। उस भाषण में उन्होन कहा या-जब मुझे जलील किया तो आप लोगो ने प्रतिष्ठा का ताज मेरे सिर पर रखा. जब मुझे कल क्ति किया गया तो आप लोगों ने मेरी दयानंदरारी और विश्वास-पात्रता पर भरोसा प्रकट आप लोगो ने मेरी पैरवी की और मेरी रिहाई हासिल की । मैं अस्पन्त दीन रहदर सेवा वरने में गर्द अनुभव करती थी लेकिन आप लोगो ने मुझे ऊचा उठाया और दुनिया के सम्मुख मुझे अपना चुना हुआ प्रतिनिधि उद्घोषित किया। मेरे पास आपना धन्यवाद करने के मेरे घाट्य बहुत निवंल है लिए पर्याप्त शब्द नहीं इसलिए मेरे नाम ही मेरे भावों को मली माति जाहिर करेंगे। आपकी दी हुई मेंट को मै मात्मूमि की सेवा में मेरे पास जो भी बुछ है, और मै परिणित करती ह जो कुछ हु, वह सब माता के चरणो में उपस्थित करती हू। बाइए हम सब मिलकर शब्दो द्वारा नहीं, अपनी सेवा द्वारा बोलें--"बन्दे मातरम्"।

इन हुदय दावी शब्दों में श्रीमती बेरेण्ट ने एक बार फिर भारत के साम भगने सम्बन्ध को पक्ता किया, एक बार फिर उन्होंन विश्व को बताया कि भारत पेरी मान्सुर्मि हैं। मानीनी के बाते तक वे भारत की एक-छत्र नेता बनी रही परन्तु माधीजी के सत्याग्रह और सत्तद्वीग से वे कभी सहस्त न हो सकी और इसिल्प वे सीर-सीरे काये से इर हटती गई पर उनकी जियाबीकता कमी कुठित नहीं हुई और अब वे अधिक-से-अधिक पियोसपीक से सोसामटी के नाम में लगी रहते लगी। आदियार, महास, में स्थापित वियोसाकीकल सीसाइटी का कर्द आपका सक्या स्तारण हैं। इकका उद्देश्य पूर्वी सहकृति की सुन्दर सातों को सामने लकर विश्व बन्युत्व की मानना जायत करना या। यहं एक ऐसा वेन्द्र या जियने परिचम के अने विद्वानों को एक बार फिर इस पुरातन देश की ओर आव्यापत विया। छेनिन इसना यह अर्थ नहीं कि वे राजनीति से सिल्पुल अछम हो गई थी, सन् १९२१ में निवाल वन्नेवास के 'ह्या में उन्होंने स्वान्त्रता आन्दोलन को नथा जन्म दिया। सन् १९२५ में 'नामनवेस्य आफ इतिया बिल्' का प्रस्ताव इन्होंनी प्रेरणा से हुना जिसका उद्देश्य सेना और निर्देशी प्रमुख्य को छोड़ कर भारत की सारे अधिकार सौंपना था। सन् १९२७ में उन्होंने महास कारे अधिकार सौंपना था। सन् १९२७ में उन्होंने महास कारे से स्वराज्य के ध्वेय का समर्थन दिया था पर क्छकता-वाग्रेस में उन्होंने अपने मतमेद को स्पष्ट सब्दों में प्रकट कर दिया। उनके बाद सामद वे काग्रेस में नहीं गई। इन वातो का विवेचन करते समय हुनें यह नभी नहीं भूकना थाहिए कि सब उनकी आयु ८२ वर्ष की थी।

शिक्षा, वर्म और राजनीति के क्षेत्र के बलावा चन्होने बाँय स्काउट सबनंगेंट में भी भाग लिया । सन १९०२ में इन्हें इस सस्था की सबसे बडी उपाधि-'सिलवर बरफ' प्रदान की गई। असन्य लेखों के अतिरिक्त उन्होने रुपभग ३०० पुस्तकें रिखी जिनमें 'गीता' का अनुवाद भी है। पत्रकारिता के क्षेत्र ने पूर्ण स्वतन्त्रता की हाभी थी । उन्हाने अनेक पत्रो का सम्पादन विदा जिनके अग्रलेख दे स्वय लिखती थी आर्थिक और प्रकाशन-व्यवस्था भी वे स्वय करती थी। उनका ज्ञान अदुभूत था और आपण क्लामें वे अपने युग में वे-मिसाल थी। जनके भाषणो से जनता का दिल हिल उठता था । उन्होंने सदा गिरे हुओ का पक्ष लिया, वे आयलैंड के किसानों के लिए छडी, लन्दन में दियासलाई ने कारीगरो की हडताल में पूरा भाग लिया । बन्दरगाह के मजदूर और बन्स थनानेवाले, सबने श्रीमती बेसण्ड में अपना रहनमा पाया । वस्तृत जनकी कलम और उनकी जवान दोनो क्षोषित वर्ग के लिए ढाल ही नही बनी बल्कि उनपर होने वाले अत्याचार का निराकरण करने में वे सदा सफल रही।

वे वस्तुत सत्य की खोज करनेवाली थी। सत्य की खोज करते-करते वे जिस बात को सही समझती थी

### जीवन-साहित्य: सितम्बर १९५२

पक्के इरादे के साथ उसके पीछे पड़ जाती थीं चाहे फिर उन्हें कितने ही कप्ट क्यों न उठाने पड़ें वे पीछे नहीं हटती थीं ! उनका सारा जीवन इस बात का सबूत है । उन्होंने स्वयं किया है कि मृत्यु के पश्चात् अपनी समाधि पर मैं केवल यही एक बाक्य चाहती हूं—"उसने सत्य के अन्वेपण में अपने प्राणों की बाजी लगा दी।" और आज जब उन को स्वर्ग सिवारे लगमग १९ वर्ष बीत गये हैं जब भारत स्वतन्त्र हो गया है क्या हम विश्वास के साथ नहीं कह सकते कि श्रीमती वेसण्ट ने सत्य के अन्वेषण में अपने प्राणों की वाजी लगा दी थी। हम समझते हैं कि कह सकते हैं और साथ ही महात्मा गांची के शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि यह श्रीमती वेसण्ट ही थी जिन्होंने भारत की गहरी नींद से जगाया।

भारत अपनी इस बहादुर वेटी की सेवा, तपस्या, और साधना को सदा याद रखेगा।

0

## गोपालकृष्ण मल्लिक

आज देश में राष्ट्रीय सरकार है और उसकी नुमा-यन्दगी ऐसे नुमाइन्दे कर रहे हैं, जो हिंदुस्तान के सबसे आगे के मुधरे व्यक्ति माने जाते हैं। राष्ट्र के भाग्यो-दय और इसके सर्वागीण विकास की आशा इनसे ही अधिक-से-अधिक की जाती है। फिर आज जबकि सभी क्षेत्रों में पुनरुद्धार के कार्यक्रम एवं योजनाएं वन रही हैं, जेल-बन्दी के विषय में भी विचार करना वांछनीय है। यह कोई गैरजहरी विचार नहीं, कि इसकी अबहेलना कर, कोई भी लोकप्रिय सरकार और राष्ट्र आगे वढ़ सके और अमन-चैन की परिस्थित में पूर्णतम योग की कल्पना कर सकें।

मामूली अपराधों के लिए देश में जो लाखों कैदी जेल भेजे जाते हैं उनके विषय में कुछ विचार करने की क्या आज आवश्यकता नहीं है ? इनमें भी कई लोग संभवतः निरपराधी होंगे, कई लोगों ने सरकार की और से न्याय प्राप्त करने के बारे में निराश होकर कानून अपने हाय में लेकर किसी को मजा दी होगी। कई लोगों ने अणिक मनोवेग के कारण कुछ अपराध किया होगा और वाद में पञ्चाताप करके वे पुनीत हो गये होंगे और कई लोगों के स्वभाव में पूरा-पूरा परिवर्तन भी हो गया होगा। आंदोलन में जो जेल गये होंगे और जिन्होंने इस विषय के तारतम्य एवं विचार में उतरकर वहां ऐसे अनुभव प्रास्त किये होंगे, उन्हें इसका पता लगा होगा।

ऐसे लोगों का खयाल ही कीन करता है ? हमारे

## अपराध-चिकित्सा

कायदे-कानून चाहे कितने ही मुन्दर क्यों न हों उनके प्रत्यक्ष अमल को देखते हुए यह कवूल करना पड़ता है कि शिक्षित और मध्यम वर्ग के सफेदपोश व्यक्ति इस जाल में फंस नहीं पाते । गरीव जनता की अपेक्षा मध्यमवर्ग में शराफत और सज्जनता अधिक है ऐसा तो शायद कोई नहीं कहेगा । किन्तु राज कर्मचारी अक्सर मध्यम वर्ग से आते हैं। वे अपने वर्ग के प्रति पक्षपाती भी हो सकते हैं। मध्यमवर्ग के लोग अक्सर होते भी हैं चतुर; चाहे जो अपराध करके भी कानून की पकड़ में नहीं आते; उल्टे दूसरों को फंसाते हैं। कर्मचारी भी उनका पक्ष लेते हैं। अपने को वचाने के लिए मध्यमवर्ग के लोग कोशिश और क्वं भी वेहद करने हैं और किसी न किसी तरह वच ही जाते हैं।

जे ठवाने हैं गरीवों के लिए, श्रमजीकी और अप्रति-िष्ठत छोगों के लिए। वे ही बेचारे जेल में ठूंमें जाने हैं और उन्होंके साथ जेल में सब तरह की ज्यादितयां की जाती हैं। उनकी रिहाई और कल्याण की किसे परवाह हैं?

जेल या कारावास की संस्था किसलिए बनाई गई है ? यूरोपीय विचारक कहते हैं कि कारागृह की मंस्था घर्म-त्र्यवस्था के द्वारा ही राजतन्त्र में दाखिल की गई है। जिसने पाप या अपराध किया हो उनको चाहिए कि वह प्रायद्वित्त करे। यह सिर मुंडाकर एकांत में जाकर बैठ जाय, समाज से अलग होकर जान-पान में चस्त परहेज रखे, प्रायद्वित्त के तीर पर अपने शरीर

को कप्ट दे और इस तरह पाक-साफ होने के बाद समाज में दालिल होकर उसके नाम-कान में दारीक हो सकता है। धर्म-व्यवस्था में मनव्य ये व्यवहार स्वेच्छा से करता है और उसमे उसे लाभ भी होता होया । किंतु राजदव में अवराधियों से यह प्रायदिकत जबरन कराया जाता है। इसलिए उसका असर कुछ भी नही होता और जो होता भी है तो वह उल्टा ही होता है। हमारे यहा कारा-बास की और नरक्वास की कल्पना एक ही है। बादमी को कोई एक दिन की सजा देकर सतुब्ट कैसे हो सबता है ? "अपराधी को बराबर सताना चाहिए, लगानार पीडा देनी चाहिए, वह भाग न जावे इसलिए उसे सीक्षी में बन्द रखना चाहिए, जबनक समाज की बदला रुने की वति तुप्त न हो जाय और कैदो नी तेजस्विता विलकुल नष्ट न हो जाय, सबतन उसे सताते रहना बाहिए"-ऐसा ही कुछ लयाल मनुष्य जाति के मन में था। गरुउपराज में नरव-यातना का जो वर्षन आया है, जैन-शास्त्र में श्री नरक-यातना के जो चित्र खींचे गये हैं, वे सब मनुष्य के परिशोध या प्रतिहिंसा की वृत्ति के ही चोतक है । मनुष्य ने अगर एक गुना गुनाह किया हो तो उसके प्रति दसगना गनाह करने का समाज को मानो हक ही मिल गया है। होता ही समाज का खयाल होता है, सचपि भिन-भिन रूप से सभी वैसे ही दोगी है। परतु दूसरों के बारे में विवार करते हुए जैसे अपन को भूल ही जाते है।

ईतामधीह के सामने जब एक मुनहगार काया गया और उसे पत्थर से मार्रभार कर मार्ट्स की बात तब भी गई तो ईसा ने नहा कि इस पर बही पत्यर मार्ट्स हो दिनहोंने नभी बैसा मुनाह न निया हो। यार्ते यही समाप्त हो गई और सभी का

हाय उठकर नीचे गिर गया।

यही बात समाज की होगी है। आदमी गुनह्यार है या नहीं यह तय करने के लिए बढ़े-बढ़े विद्वान् और चरित्रवान ग्यायापीश रखें जाते हैं। हुनारों की तन-साहे उन्हें रो जाती हैं। मनुष्य-बुद्धि ना पूरा उपयोग करके सूडम नानून वनायें जाते हैं। और इतना सब करने पर मी ग्यायापीश मी मदद के लिए एक-एक हनार-हनार फीस लेनेवाले वकील-बरिस्टर अधियुक्तों की बोर से रखे जाते हैं। फिर जहां एन बार कोई शस्स अपराधी साबित हुजा कि समाज भी अपनी सहानुभूति तथा न्यायबद्धि उसकी और से बिल्कुल ही हदा टेरो हैं।

वपराय-निषंध के लिए जैसे कानून बनाये जाते है, बैसे ही अपराधियों नी निया तरह से सबा दी जाय, क्यता जीय-मून्त निया जाय, इसता भी शासन तैयार होना चाहिए। जैसे दोन्ना करने के लिए विक्सा-सासन पैदा हुना है वैसे ही कोगो को बुराइयों से क्याने के लिए, दोय-मूनन करने का सासन भी हमें तैयार करना होगा; तभी सभाज में अपराध और क्यतपियों की मध्यता बम हो सचेथा। होदी सी 'मर्ज बडता गया '' के को बात की सब में सम्प्राण में स्वा कुछ काम दोतता है ? बेरी नम्म सम्मति में ती उल्टा प्रमाव हुता है। बगोक विवस में चोरी करने की बुदो लग्न नहीं होती बही पश्चयन और कानून के पेच में पड कर वस काक आता है तो चोर बनकर आता है। और चोर मध्यता है। वहीं विवस विदेश

इसका यह मदलब नहीं कि गुनाहगार को सबा ही न दी जाय । मतलब तो यह साफ है कि उसका चास्त्र और उद्देश्य बदलना चाहिए अन्यमा परिणाम सामने हैं। मान लीजिए कि किसी राज में ऐसी व्यवस्था की गई है कि न्याय-मन्दिर के समान आरोप्यमंदिर की अद्यक्षत बने वहा बीमारी पर बीमार होने का अभियोग ख्याया जाना है। वे अपनी और से हम खद होकर बीमार नहीं हुए यह सादित करने की कीविय करते है और डाक्ट्र-जदालत में मैठे हुए डाक्टर-याया-बीच उनपर रोगी होने का अभियोग साबित मान छेडे है। फिर उनको किसी छोटे या बड़े राषाखाने में बमुक दिनो तक केंद्र रखने की सन्ना फरमाते हैं और अपने बाजापत्र में लिखते हैं कि इस बाइमी को इतने दिनो तक जुलाब या रेचक दिया जाय, इतने दिनो तक नूनैन दी जाय, इनने दिनो तक मुखा रखा आये, और में सब सजाए अगर वह चुपचाप सहन कर लें तो उसे बुछ दिनो की रिआयत दी जाने, उसने दिन पूरे होते ही उसे रोग-मुक्त मानकर छोड़ दिया जावे—को उस अवस्था के बारे में हम क्या कहेंगे ? पाठक कृपया इसे मजाक न समझें या हंगी न मानें। हमारे पागलखानों की चिकित्सा करीब-करीब इसी ढंग की होती हैं। सर-कारी अफाखानों में भी कभी-कभी ऐसे दृष्य देखने को मिलने हैं।

तात्वर्य यह है कि किसी मनुष्य को समाज के स्वामा-दिक वायुमंडल से अलग कर जेल में रखने मे न उस आदमी का हित होता है न नमाज का । जो लोग उन्मुक्त होकर समाज में अत्याचार करते ही रहते है, जून-खरावी, मार-पीट, व्यभिचार और दगावाजी की जिन्हें आदत पड़ गई है, ममाज में उनका रहना ही जतरनाक है। ऐसे आदमियों को पकड़कर नमाज से पृथक् रखना होगा । किन्तु आमर्तार पर किनी को उसके परिवार या संबंधियों ने अलग करके जेल-काने में रखना वेहतर नहीं है। कोई निश्चय ही गुनह-गार है या नहीं, और है तो कितना, यही समाज में प्रकट हो जाय, और उसका गुनाह नमाज के सामने जाहिर हो जाय. इतना समाज-हिन के लिए पर्याप्त है। फिर ऐसे गुनहगार के साथ किस तरह पेश आना चाहिए, यह समाज का हरेक व्यक्ति अपने आप निश्चित करेगा। इसके बाद बगर सजा करना ही हो तो मानसवास्त्री, समाज्ञास्त्री और आरोग्यज्ञास्त्री ने पूछकर नई सजाएं मनुष्य ढूंड़ ले । किंनु प्रत्येक बात पर जुर्माना और कैंड-ये ही दो सजा की प्रयाएँ आज प्रचलित है। यह उतना बुद्धिपूर्ण एवं विवेक-युक्त नहीं मालूम पड्ता है। जैसे अनेक प्रकार के रोगों के लिए अनेक प्रकार की चिकि-त्साएं है, उमी तरह हर किस्म के अपराधी का अध्ययन, विञ्लेषण और वर्गीकरण करना चाहिए निन्न-निन्न वर्ग के अपरावों के लिए जो मानव-वास्त्र और नमाजगास्त्र युक्तियुक्त बनाये वही करना चाहिए। वहीं नजा होगी। जिन तरह टाक्टर या वैद्य मरीज की नव्ज देख कर चिकित्सा में परिवर्तन करना है उसी प्रकार गुनहगारों को भी नमय-समय पर देन-कर उनकी सजा में परिवर्तन करने रहना चाहिए। अगर कोई कहे कि ऐमी जांच कठिन है. मन्प्य के अंदर पैठकर उसकी पाह लेना मनुष्य-शक्ति से बाहर है, तो उसका जवाव यही हो सकता है कि ऐसी हालत में किसी को एक दिन से अधिक सजा देने का अधिकार भी मनुष्य को नहीं होना चाहिए। जबिक श्रमजीवी जनता को अधिकाधिक राजनैतिक अधिकार देने की बात चल रही है तब उसके जीवन की प्रतिष्ठा हमें बढ़ानी चाहिए और दंडवियान भी मनुष्योचित ही बनना चाहिए।

अपराघ नो हर जगह, प्रत्येक मनुष्य से होता है।
गांधीजी के आश्रम में भी होता था; किंतु गांधीजी
उसका निराकरण मानस एवं समाजधास्त्र की नीति
से करने का प्रयोग करते थे; क्योंकि उन्हें तो मनुष्यजीवन की हरेक बुराई का इलाज मनुष्योचित व्यवहार
से करना था, इसका अमल संसार को बताना था।
इसका ही दूसरा रूप अहिमा का व्यवहार है। गांधीजी
ने ऐसा किया और मफलता भी मिलती रही। उनके
वे सब प्रयोग लोगों के सामने आते रहे है। यहां देने
से विस्तार होगा। गेहूं, कपड़े, रुपये, संतरे तथा अन्य
चीजों को चोरी के अपराध, झूठ बोलने के अपराध गर्जेकि
मनुष्य-जीवन के सभी स्वामाविक अपराधों का इलाज
वे मनुष्योचित रूप में, मानस एवं समाज-धास्त्र के
व्यवहार से, किया करते थे। उन्हें सफलता भी मिली,
क्योंकि वहीं सही मार्ग था।

आप कहेंगे कि यह गांधीजी की बात है। उसका प्रभाव अधिकतर होता होगा। साधारण मनुष्य साधारण समाज में कैंने करे? वह कैसे संभव होगा और उसमें लाम के बजाय नुकसान की ही संभावना है। लेकिन एक दृष्टांत उपस्थित करंगा, जो एक साधारण आश्रम का है और जहां माधारण आदमी ही रहते हैं। हमारे सेवाश्रम में एक दफा चार घूम आया और पकड़ा गया। आश्रम के मंचालकजी ने उसे अनेक प्रकार की रीति-नीति बता कर, चिला-पिलाकर छोड़ दिया। पुलिस को उनकी चवर लगी और चोर पकड़ कर छोड़ देने की गैर-कानूनी कार्रवाही के दंडस्वरूप उन्हें जुर्माना और जेल की मजा मिली जो उन्होंने सहर्ष भूगन ली। मगर चोर के विषय में कुछ भी न बता कर अपना आदर्श पेश किया। वह चोर तब से चोरी करना छोड़ कर काम-काज करके

#### । ईंघन तथा लकडी बचाइये : विष्णुशरण

गुजर करने लगा। उसके बाद बबतक उसने चोरी नही की है, यह बात सारा इलाना जानता है। यह घटना करीव ६ वर्ष पूर्व की है।

यह है मनुष्योजित न्याय और नीति की साधारण

मिसाल ! मितु सरकार अधर विश्वाल पैमाने पर इसे बरते तो परिणाम विश्वाल निकलेगा । कम-से-नम प्रयोग तो करना ही चाहिए । अमर काममानी हुई तो ग्राह्म रहेगा, मही तो त्याल्य । नुकसान क्या होगा ?

#### विष्णुशरण

मारत सरकार ने गतवर्ष की भाति इस वर्ष भी वृका-रोवण सन्ताह मनाया । इस कार्य का पूर्ण रूप से रवायत किया गया, क्योंकि वन किसी भी राष्ट्र की एक बहुमूस्य सम्मति और समस्त मानक्योंकन का आधार होते हैं और जब वे नष्ट हो जाते हैं तब जकते करार अंत्रित यह मानक्यीनव भी स्वतः ही नष्ट हो जाता है। इतिहास इस बात का साक्षी है। बनते से अनेक आर्थिक लाम होते हैं तथा से सीन्यं के भी प्रमुख साथन है। जनके लाम प्रायक्ष तथा अप्रत्यक्ष सभी क्यों में प्रायत होते हैं।

इनमें से एक प्रमुख लाग है इँघन तथा लकडी की पूर्ति में अभिवृद्धि। इन साधनो को बनाए रखने के दो प्रमुख रूप हैं.

(१) नए बृद्दों का आरोपण तथा वर्तमान साधनी का मुनिवारित प्रयोग । प्रथम तो वस्तुत बृद्धारोपण पर्वे ही हैं। परन्तु ऐवा प्रतीत होता है कि दिवीय कर की और तिक भी ध्यान नहीं दिया गया है। भारत सरकार और बृद्धारोपण आरोलन के जन्मदाताओं ना ध्यान इस आरोजन की इस कमी वी और जोरवार ध्यन्नो में आर्चित करना ही वर्तमान लेख का उद्देश्य है। ईयन और लक्डी की बरवादी एक राष्ट्रीय बरतादी है और इनकी बरन यमासम्य सब प्रभार से होनी पाहिए। एक आरोजन जिसका उद्देश नि इंपन और लक्की के प्रयोग में सावधानी बरत करके बचत करना है, बार्र पुर्वोचन आपार पर सांक्त और उस्ताहर्युक जनमा बाने तो निरुचय ही मारी राष्ट्रीय सिंत होने से बच सक्ती है और उसकी सफलता कोई नगव्य नहीं विनी चा सकती।

#### ईंघन तथा लकड़ी वचाइये

बहुत सारी लकडी जो व्यर्थ ही बरवार होती रहती है बासानी से नष्ट होने से बचाई जा सरती है । अतएत सरकार को बोध हो "ईयन और लक्डी बचाओं" आन्दोलन भी प्रारम्भ करता चाहिए। यह तो स्पष्ट है कि यह प्रस्तावित सान्दोलन वृक्षारोगण आन्दोलन के साथ मुस्तिमापुर्वक सिकाया जा सकता है। वह इस बान्दोलन के बास्तविक उद्देश के विद्ध भी नहीं हीसा और न अधिक व्ययसाम्प ही ।

ऋप करने की शक्ति का होना एक बात है तथा प्रयोग की क्ला का होना दूसरी बात । मनुष्य अपनी आवश्यकतानसार इंधन और लगडी मले ही लरीद सके अधवा अन्य प्रशार से प्राप्त कर सके, परन्तु उन्हें उनके प्रयोग करने की कला में भी दक्ष होना चाहिए। भारी मात्रा में ईवन और सकड़ी या को एक्सम नष्ट हो जाती हैं, या बरबादी से भरे तरीके से उपयोग में लाई जाती है अयवा वर्षा और गर्मी से सडती रहती है। अनुसधान-शालाओं को इस प्रकार के प्रयोग निकालने चाहिए जिनके ब्यवहार से सकड़ी की शक्ति तथा उपयोगिता बढ जावे और वह सीलन, गर्मी और कीडों के प्रभाव से अधिक-से-अधिक सकत रहे । ईंथन की ओर तो विशयरूप से कोई ध्यान ही नही दिया जाता । घर के सबसे अधिक परित्यक्त कोने में वह डाल दी जावी है। कीडे उसे खाते रहते है और सीलन उसे बरबाद करती रहती है। चुल्हे में एक-बार में ही बावस्थरता से अधिक ल्कडिया झोकदी जाती है और बहुत-सी रूपटें सो अनावास ही उठ कर नष्ट हो जाती है और चूल्हे पर रखे हुए बरतन को उनसे कोई भी लाभ नहीं पहचता । वस्तृत उस समय जीवन-साहित्य: सितम्बर १९५२

कम ईंबन से ही काम चल सकता था। बहुबा चूल्हा खाली पड़ा रहता है और लकड़ियां जलती रहती है। घरों में जलने हए अंगारों से कोयला तो कदाचित ही तैयार किया जाना है। ये अंगारे घीरे-घीरे राख में परिवर्तित हो जाते हैं और यह राख बूरे पर डाल दी जाती है। अगर यही अंगारे वचा लिये जायँ तो न केवल ईवन का काम दें प्रत्यत जलाने में लकड़ी की अपेक्षा अधिक आरामप्रद भी सिद्ध हों। जबिक लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़े कुल्हाड़ी से फाड़े जाते हैं तो छोटे-छोटे ट्वड़े भी वच रहते हैं। वे भी किसी प्रकार नष्ट नहीं किए जाने चाहिए और उनका भी पूरा उपयोग होना चाहिए। लकड़ी को बारी से चीरने पर बुरादा बच रहता है। वह बुरादे, की अंगीठियों में जलाया जा सकता है। विशेष रूप से वे मन्त्य, जोकि जंगलों के निकट रहते हैं लकड़ी बीर ईंबन के प्रयोग में बड़े लापरवाह होते हैं, पेड़ों की छोटी गानाओं तथा खोरे का तो कोई मूल्य ही उनकी

दृष्टि में नहीं होता। यदि कोई वनविहार के लिए निकले तो उसे स्थान-स्थान पर फाड़ी हुई लकड़ी व खोरे के व्यर्थ ही सड़ने के लिए पड़े हुए ढेर मिल जावेंगे। वन-विभाग को, जिसके ऊपर वनों की रक्षा का दायित्व है, वृक्षों के इस विनाशकारी विध्वंस को रोकने की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

वाशा है कि भारत सरकार वृक्षारोपण के इस पहलू पर भी गम्भीरतापूर्वक सोचेगी और यदि उसे इसमें कोई तथ्य दिखाई पड़े तो इस आन्दोलन को भी कियात्मक रूप देगी। यदि सरकार की ओर से कोई कदम नहीं भी उठाया गया तब भी स्वतंत्र भारत के नागरिक इस ओर ध्यान देंगे। कि कड़ी और ईवन के उपयोग में बचत से न केवल किसी हद तक उनकी व्यय-राशि ही कम हो जायगी वरन् वे राष्ट्र को भी भारी क्षति से बचा लेंगे जोकि मनुष्यों की निष्क्रियता, उदानीनता तथा नाजानकारी से उसे भुगतनी पड़ती है।

# गोरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

# प्राचीन ग्रंथों के अन्वेषरा की आवश्यकता

संसार में जीवित और उन्नत कहलाने वाले देशों के लिए यह आवश्यक हुआ करना है कि वहां के निवामी अपने पूर्वीपर इतिहास का अध्ययन, अपनी भाषा का भरपूर जान और प्राचीन तथा अर्वाचीन मंस्हाति एवं स्थिति का सतर्कनापूर्वक ध्यान रक्यें।

देशकाल की वास्तविक स्थित और गतिविधि इतिहास से ही जानी जाती है और इतिहास के निर्माता हुआ करने हैं साहित्यक। भारतीय इतिहास तथा साहित्य के सृजन और संरक्षण में पौराणिक काल में ही बुन्देल्खंड का समुचित हाथ रहा है। संस्कृत साहित्य के सर्वोत्कृष्ट कवि वाल्मीकीय रामायण के कर्ता महींय वाल्मीकि, तभीनिधि पाराधर, अष्टादश पुराणों एवं महाभारत के रचिवता कृष्णद्वैपायन वेद व्यास, वीर-नित्रोदय वृहद्कोप के प्रणेना मित्रमिय, प्रवोध चन्द्रोदय और शीधवीध के लेक्क कृष्णिमश्र

तथा काशीनाथ मिश्र इसी भूमि से आविर्भृत हुए रतन थे।

वारह्वीं शताब्दी में परमाल चन्देल के दरवारी कवि महोबे के जगनिक किन, मोलहवीं शताब्दी में हिंदी भाषा के प्रथम आचार्य कवीन्द्र केशव, किववर बलभड़, बिहारीलाल, पद्माकर, लाल, महाराजा छत्रसाल आदि अनेकानेक किन अपनी साहित्यिक सेवाओं के कारण अरमत्व प्राप्त किये हुए हैं।

विद्याओं और कलाओं के विकास के लिए अनुकूल आम्यंतर और वाह्य सामग्रियां अभिप्रेत हुआ करती है। बुन्डेलचंड को प्रकृति ने अनोची छटाएं और दृष्य प्रदान किए है। ऊंची-नीची शृंखलाबद्ध पर्वतमालाएं, हरे-हरे सबन बन-कुंज, निर्मल जल ने प्रपूरित सर-सरिताएं, आदि देखकर ऐसा कौन-सा हृड्य है जो आनन्द-विभोग न हो छठे।

बुन्देलचंड भारतवर्ष का एक महत्वपूर्ण भूमाग

माना गया है। गिरिराज हिमालय को जब हम भारतवर्ष के मुकुट की उपमा देते हैं तो वीर और कविश्वस्तिकी बुन्देललड की मृत्रिक गी हम जयक मुदुढ जतत विशाल बसस्यल और सबसे नवस्कृति संचालन करने बाला हदस मानने हैं।

अपनी इस निधि पर विसे गर्व न होगा । किन्तु जहां प्रकृति हमारे प्रति इतनी उदार है यहां हम इचने अरुभंग्य है, क्योंनि अरनो करोहर तक का जीवत उपयोग नहीं नरति । इसी वारण हमारा हास हुना है, हम जीवित हो गए हैं।

स्वतन्तना प्राप्त होने ही नव-निर्माण का सुन प्राप्त हुआ है। इस नव-निर्माण की भावना से प्रत्येक प्राप्त और प्रत्येक व्यक्ति प्रमाधित है—प्रमाधित होना ही चाहिए! इस नव-जागरण में स्वेष्ट होकर हमें अपनी पूर्वावर स्थिति पर गभीरतापूर्वक विचार करके कदम बढाना चाहिए। तब ही हमारी आयोजनाए कलीमृत हो सक्ती है।

जैसा कि ऊपर िलवा जा चुना है, बुन्देल्ला को वर्तरा मूमि उच्च कीटि के अनेक नित्र उपप्र कराने में स्वयंट स्थाति पा चुकी है। अब को बुन्देल्ला में गाव-गाव और पर-पर अनेक अपनाशित अब करते में बच्चे हुए पढ़े हैं और नितने ही अमून्य प्रच सो झीनूर बादि के मीत्र पदाचे बनकर नक्ट ही चुने हैं। जो बच पड़े हैं उनके उद्धार की और हमारा ध्यान नहीं जाता। यह कितनी हरूजा की बाद है। पत्यरों के हीरों की खुदाई पर प्रतिवर्ष एक बड़ी राज्य के हीरों है, किन्तु साहित्य-जात् के संजीव हीरों की खुदाई पर प्रतिवर्ष एक बड़ी राज्य को होरों है, किन्तु साहित्य-जात् के संजीव हीरों की क्षार हमारा ध्यान ही नहीं जाता। यह दिया में अस्तर भी होरों है, अन्येगक करते है, उन्ह सहयोग मही मिलता। इसी उपेशा के कारण हम पिछड़े हुए पिछ हो रहे हैं। विश्व-बच बापू ने डा. पी जे मेहता ने पैन्फलेट की प्रस्तावना में क्या

"... मिंद हम छोगो में अपनी देशी मापाओं पर श्रद्धा नहीं रह गई है तो यह इस बात का छक्षण है कि हम छोगो में स्वय अपने ही प्रति श्रद्धा, अपने ही प्रति विश्वास का अभाव है। यह अवस्थिमेव नाश का चिह्न हैं। और हम लीमों को स्वराज्य की नोई स्कीम चाहे नितानी ही उदा-रवापूर्वक बमें। न दी जाय, पर फिर भी मदि हम लोगों में जन आपाओं के अदि बादर न होगा, जिन्हें हमारी माताए बीजती है वो हमारा राष्ट्र कभी स्वराज्य-मोगी राष्ट्र नहीं होगा।"

बापू के उपदेशों में इतनी अधिक सामग्री है कि मदि उनकी और हमारा अरपूर ध्यान लग जान तो हम अपना बहुत-कुछ सुपार कर लें। शास्त्रतिक विकेशीकरण के पीछे भी यही भावना भाम कर रही है कि हम सब अपने-अपने वामो, मारो और प्रान्तों का मुचार कर ले, उनके प्रति सच्चा प्रेम रखें, उनकी सब प्रवार करति करने के सासन सीचे और तरपता से उनको काम में लावें। बापू ने आस्म-सम्बद्ध, आस्म-निमंर, शास-मुसार और आस्म-निरीक्षण करने के जिए इसीजिए बार-बार अपने उपदेशों भे में और दिवा है।

हमारी जन-विध सरकार का कार्य बहुत-कुछ बासान हो जाय यदि उसकी बायोजनाओं को सफल बनाने में हम सबका सम्मिटिन उचीन उसे प्राप्त होता रहे। बागू के बतकाये हुए मार्थ पर चलकर हम अपना, अपने गांवों का, अपने प्राप्त का और अन्त में अपने देश का बहुत-मुछ हित कर सक्ते हैं।

साधारणत हिन्दी-मापा-भाषियो और मुख्यत विन्यप्रमात्वासियो से येशा निवेदन हैं, आग्नह है कि वे इस सम्बन्ध में अपने-अपने विचार प्रवट व रेशी र विचार-विनियम करके ऐसी योजना प्रस्तुत कर के जिससे प्राचीन ग्रन्थों के अनेवश्य वा कार्य मुच्चार क्य में कलने रुपी उन अयो के प्रकास में आले से जहा एन और माधा-प्यारकी, का भाष्यक प्रतेश कर सिक्ता है छिपा हुआ पूर्व बात हम वस उनने सीस सेनेगे, निरुत्ता ही छिपा हुआ इतिहास हम यसके सामने आ जायमा, विचाने ही किन्यों और ठेसको की कृतियो को नव-नीवन प्राप्त होगा और प्राप्त ने साम-होना जनसे देस और हिन्दी माया का

आशा है इस ओर किंच रखनेवाले महानुभाव 'जीवन साहित्य' द्वारा अपने सुझाव प्रवट करने की कृपा करेगे, जिससे इस प्रमति को सफलता मिले।



### विट्ठलभाई जे. पटेल

[पुण्यतिथि १८ सितम्बर, आस्विन कृष्ण १४]

"सन् १९२७ में एक दिन लन्दनवासियों ने आरचर्य से देखा कि एक सफेद 'राजद्रोहो टोपी' से ढकी हुई सफेद दाढ़ी कुछ अजीव शान से "विक्षिम पैलेस" की सीढ़ियों पर चढ़ रही है। इस दाढ़ी ने राजमहल में प्रवेश करके "हिज मैजेस्टी किंग जार्ज दि फिफ्प, किंग आफ द्रिटेन, आयरलेंड एंड डोमीनियन्स वियाण्ड दी सीज एण्ड एम्परर् आफ इंडिया" से भेंट की और इस वात-चीत में सम्प्राट् महोदय को बताया कि "कांग्रेस को आवाज समस्त भारत की आवाज है। अगर ग्रेट ब्रिटेन भारत से सद्भाव बनाये रखना चाहता है, तो उसे कांग्रेस को संतुष्ट करना चाहिए।" राजद्रोही गांबी-टोपी में सम्प्राट् से भेंट करनेवाली यह दाढ़ी भारतीय पालमेंट (लेजिस्लेटिव असेम्बली) के सभापित श्री विट्ठलभाई पटेल की थी।

जब उन्होंने देश की और भी अधिक सेवा करने की आवश्यकता समझी तो एका-एक १९३० में उन्होंने उस उच्च पद से त्यागपत्र दे दिया और सर्वसायारण में पहले-जैसे फिर मिल गये। उन्होंने देश की जात्मा की पुकार सुनी थी, उसकी समझा था, उसकी ही सहायना को वे सभापतित्व की कुर्सी को छोड़कर जाये पे। महात्मा गांबी से मतभेद रखने पर भी उन्होंने उनका साय दिया और 'पेशावर-जांच किमटी के समापति निय्कत होकर उसकी जांच का कार्य दिन-रात एक करके किया। परिणामस्वरूप उनको निरफ्तार कर लिया गया और जेल में उनका स्वास्प्य वराव हो गया। उनको दीमारी इननी वही कि जेल से छूटने पर इलाज कराने के लिए उन्हें विदेश जाना पड़ा। उनका रोग-प्रस्त शरीर भारत से दूर था, परन्तु उनका ह्दय यही रह गया था । शारीरिक यातना जद पराकाष्ठा को पहुंच चुकी भी तद भी दिदेशों में भारत की मान-रक्षा के लिए अपनी बची-खुची शक्ति को कम करते रहे और एक प्रकार से यही उनके अन्त समय को निकट ले बाया। परिणामस्वरूप जिनेवा में २३ अक्तूबर १९३३ को उनका स्वर्गवास हो गया। उनका जीवन देश और मनुष्य की सेवा तथा अन्याय से युद्ध करना था। जवतक दम-में-दम रहा, वे वीरता के साथ जीवन व्यतीत करते रहे।

कूटनीतिज्ञ का सबसे बड़ा अस्त्र उसकी दूरदिशता है। विट्ठलभाई को मानवी स्वभाव का जो गूढ़ जान या, उसीने उनको इतना शक्तिमान बनाया। उनके पास केवल ऊपर-ही-ऊपर देखनेवाली आंखें नहीं थीं विलक भीतर घुस कर देखनेवाली आंखें भी पीं। अपने सभापतित्व से त्यागपत्र देते हुए २१ जनवरी १९३० को उन्होंने कहा या, "मैं समझता हूं कि कठिनाइयों के होते हुए भी मुझे इस नौकरशाही के विरुद्ध अपने पद का गौरव और असेम्बली की अवधि की रक्षा करने में पर्याप्त सफलता मिली है। मुझे इस बात का संतोप है कि जनता का मुझ पर विश्वास है। मेरी समझ में अव उपयुक्त समय का गया है। संसार के सबसे बड़े महा-पुरुष ने भारतीय कांग्रेस की अधीनता में 'सविनय अवज्ञा **आन्दोलन' छेड़ दिया है और उसकी बदौलत आज** हजारों आदमी सरकारी जेलों में मेहमान हैं, हजारों और लाखों जेल जाने की तैयारी कर रहे है। ऐसी अवस्थां में मेरे लिए उचित स्थान इस असेम्बली की कुर्नी पर नहीं, प्रत्युत देशवासियों के बीच में है।"

असेम्बली के सभापति पद से इस्तीफा देने के बाद उन्हें सजा हुई तब उन्होंने कहा था—मुझे भी पीयरेज (लार्ड की पदवी) और पेन्शन मिल गई।

'नये मारत के निर्माता' से ] —क्षेमचंद्र 'नुमन'

# क्रिगौटी पर 🥞

संस्मरण-साहित्य की तीन पुस्तकें

सस्मरण और रेलाचित्र-सन्वर्ग्या साहित्य का हिन्दी में बहुत दिन तक बंध अभाव रहा, पर इस्पर पेंक्ष चेंक्ष प्रति हो रही है इस प्रकार की अनेक पुस्तक सामने आ रही है और उनमें काफी पुस्तके काफी सुचर होती है। आज हम जिन शीन पुस्तकों की चर्चा करने जा रहे हैं वे मुप्तिल्ड व्यमितवी हारा जिवित और सम्बीत है और उनना प्रकाशन मुखर सविष्यका सुचक है। वे पुस्तके है

१ मेरे साथी-ले॰ महात्मा भगवानदीन, प्रकाशक-भारत जैन महामण्डल, वर्षा एट १४०, मृत्य १)।

२. हमारे आराध्य-छे० प० बनारसीवास चतुर्वेश, प्रशासक-मारतीय साननीठ, काशी, पूठ २७२, सून्य ३) ।

३ जैन-जागरण के अवदूत-सम्पादक की अयोध्याप्रसाद गोयलीय प्रकासक-वही, पृष्ठ ६२% मध्य पान काया।

तीनो पुस्तको में सस्मरण अधिव है। रेलाजिय यहुन कम । हां, 'जैन अवारण के अबहुंठ में सक्षिय जीवनिया भी हैं। वैसे तोनो की अपनी-अपनी वियोचता है। 'मेरे साबी' में सहात्माजी ने जन्ही व्यक्तियों की चर्चा को इनहें जी उनने वियोव सम्मर्क में आये। इही बानो में सस्मरण में ही हैं। महारमाजी की चीजी अब्दुरी है। वे जिस स्मरण में ही हैं। महारमाजी की चीजी अब्दुरी है। वे जिस स्मरण में ही कि अपने स्मिन आपने अविपिक्त होत्र सी अपन अपना वन जाता है। क्या 'रामदेवी-वाई' जिनके सस्मरणों में इस पुस्तक का वाश भाग घरें है, और 'याल जेनद्र' क्या 'माई अनितत्मसाद जी' और पर्युन्त नाल सेठी स्व जैसे आपने वार्तकरवाद ही हैं फिर उनमें सिनन मह है कि सकुक कह कर भी वे आपनी सहानुभूति नही खोने। बया मजाठ आप निसी चरित्र के प्रति नठीर हो सकें। जैनेन्द्रती के बार-जीवन कें सस्मरण ऐसे ही हैं, जैने कोई जिता अपने पुत्र के सस्मरण लिखें।

'हमारे आराध्य' की विशेषता यह है कि इसके बर्ण्य व्यक्ति सभी विदेशी है। ये न सरमरण कहे जा सकते हैं और न रेखाबिता वैसे से इन होनों की सीमा-रेखा के आसपास है। रहान रेखाचित्र की भोर है। इनमें बाकनिन और कीपाटकिन जैसे अराजक-वादी, एमसँन और योरी जैसे अमेरिकन ऋषि, तुर्ग-नेव जैसे उपन्यासकार, स्काट जैसे पत्रकार और रोमा-रोला जैसे महारमा है। चतुर्वेदीजी हिन्दी के इनेनिने रैलाचित्रकार और जीवन चरित्र लेखक है। उनकी भाषा बौर धैली प्रावल, सरल और मजी हई है। उसी तरह विषय में भी उनकी पैठ गहरी है। हरएक वित्र अपने में सब दृष्टि से पूर्ण है। लेखक की दृष्टि पैनी, सहानुमृति से सराबार और उसमें पर्याप्त तटस्थता भी है। यद्यपि वे चरित्र एक मन्त की लेखनी से निकले हैं पर वह भक्त विवेवहीन नहीं है। इनमें कहानी का रस. जीवन का सत्य और चित्र का आकर्षण है।

ये बाराध्य केवल चतुर्वेदों के हो, सो बात नहीं है। भारत के सभी रहने चाले जनने बहुन-कुछ सील सनते हैं। इस वृद्धि से भी इनना बड़ा महत्त्व है। एन-किक के निर्माण की जो पुकार बाक अभी है जलकी और यह पुस्तक एक ठोग क्वम है। इसकी जितनी प्रश्लाक की जार, गोड़ी हैं।

'र्जन-बायरण के बाइहर' में जैन-समान के महापुरयों । और सामियों के चरित्र है। वे चरित्र ऐसे पावत है कि सम्पादक ने पार्टों में "कीमे बात उठती है जमसर इन्हीं अफानों से"। सचमुज में चरित्र किसी जाति दियों के नहीं, बल्कि मनुष्य-मात्र के लिए उपारेंग्र है। यह बात नहीं कि उनके जीवन में कुछ त्याज्य नहीं है। पुस्तक में वे दातें भी हैं, पर क्या वे भी हमें यह नहीं बतातीं कि कमियों के बावजूद ये व्यक्ति किस तरह इतने ऊंचे उठ सके हैं।

सम्पादक ने निस्सन्देह परिश्रम किया है और हिन्दी के अनेक प्रसिद्ध लेखकों के संस्मरण और रेखा-चित्र दिये हैं। उनमें स्वयं गोयलीयजी, श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रमाकर, महात्मा भगवानदीन, श्री गुलाव राय तथा श्री जैनेन्द्रकुनार प्रमुख हैं।

ये श्रद्धा के फूल हैं। श्रद्धा यदि विवेक के साथ आती है तो वह जीवन को उठाती है। यह पुस्तक इसी दृष्टि से पठनीय है। सम्पादक को हम बबाई देते हैं। उन्होंने हमें अनेक सुन्दर रत्न दिये हैं।

छराई, सकाई, गंटअप सब रलाघ्य हैं।

### हमारे सहयोगी

भारत सरकार से बच्चों के मनोरंजन के लिये प्रकाशित होने वालो पितका 'बाल भारती' ने अपना जून अंक 'कहानो अंक' के रूप में प्रकाशित किया है। उसमें सुपोग्य सम्पादकों ने विभिन्न देशों को लगभग १३-१४ कह नियां संप्रहोत की हैं। वे कहानियां सर्विया, रूस, ईरान, फांस, इंग्लैंड, तिब्बत, चीन और भारत से सम्बन्ध रखती हैं। वे सभी तनो रोचक और शिक्षाप्र हैं कि पढ़ कर बड़ों का मन भी खुशों से फूल कर कुप्पा हो जाता है। यूं तो कह नियां सब अनूदित हैं, पर चीन देश को छोडो-सो रोचक कहानी एक चोनी लड़की ने हिन्दों में हो लिख कर भेजी है। कहानी बड़ी दिलचस्प हैं। अंक को देख कर लगता है कि इस प्रकार का आदान-प्रदान और दूसरे देशों के साहित्य का परिचय कित्ना

लाभदायक हो सकता है। ये कहानियां प्रत्येक देश की विशेषताओं को और संसार में जो मूलभूत एकता है, दोनों को स्पष्ट करती हैं। हम सम्पादकों को ऐसा सुन्दर अंक निकालने के लिये वधाई देते हैं। 'आजकल' भी भारत सरकार का पत्र है। समय-समय पर वह अच्छा साहित्य देता रहता है । उसका जून अंक 'आदिवासी अंक' है। आदिवासी कभी बड़े उपेक्षित समसे जाते थे, पर आज के जनतंत्र के युग में सब बराबर है। आदि-वासियों की सभ्यता और संस्कृति की ओर अब सबका ध्यान जाने लगा है। इस अंक में उसी प्रकार का अध्य-यन है। यह पूर्ण तो हो ही नहीं सकता। छोटे-से अंक में केवल समस्या का परिचय ही दिया जा सकता है, पर जो कुछ दिया गया हैं वह अधिकारपूर्वक अधिकारी व्यक्तियों द्वारा दिया गया है। यद्यपि सांस्कृतिक पक्ष पर अधिक जोर है तो भी दूसरे पक्षों का परिचय भी कुछ-न-कुछ मिल ही जाता है। लेखकों में वेरियर एलविन, जयपाल सिंह, देवीलाल सामर, डी. एन. मजूमदार, डी. रंगैया, वी॰ राघवया, श्यामचरण दुवे, लोकनाय मराली, वी एस. 'गुहा' आदि कुछ नाम हैं। इनका तथा दूसरे लेखकों का आदिवासियों से सीघा सम्पर्क ह । कुछ चित्र तो वहुत सुन्दर हैं। वि वदर्शन विभाग में भी विदेशों के आदिवासियों पर तीन सुन्दर लेख हैं। यह अंक आदि-वासियों की समस्याओं का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिये सदंभं ग्रंथ-की तरह उपयोगी है।

अंक मंगाने का पता "प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, ओल्ड सेकेटेरियट, दिल्ली, है। — 'सुशील'

(पृष्ठ ३४९ का शेष)

'मण्डल' के इस शुभ आयोजन में ज्वारतापूर्वक सहायता देने के लिए हम उन्त सब महानुभावों और संस्थाओं के हृदय से आभारी हैं। हम उन सज्जनों के भी कृतज हैं, जो हमें सदस्य बनाने में अपना सहयोग दे रहे हैं। कलकते में श्री भागीरयजी कानोड़िया, श्री सीतारामजी सेकसरिया, श्रीश्याममुन्दरजी जयपुरिया, श्रीरामकुमारजी भुवालका, श्रीआनदोलालजी गोयनका, श्रीराघाकुण्णजी नेविटया आदि-आदि, दिल्ली में श्री जय-दयालजी डालिमया, श्रीमूलचन्दजी बागड़िया, श्रीमदन-गोपाल सोडानी, श्री हंसराज गुप्ता तथा बांकुड़ा में श्रीमोहनलालजी गोयनका आदि ने इसे अपना ही काम नान कर इसमें मदद की हैं और कर रहे हैं। इन सबका

आसार हम किन शब्दों में मानें ? इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी बहुत से बंधु सहायता दे रहे हैं। इन सबके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप हो सदस्य इतनी तेजी से बनतें जा रहे हैं। हमने निश्चय किया है कि जिन-जिन सज्जनों के रुपये प्राप्त होते जायंगे, उनके नाम हम 'जीवन-साहित्य' में कमशः प्रकाशित करते जायंगे।

हमें विश्वास है कि सत्साहित्य के संवर्धन और प्रसार के इस आयोजन में प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी, विशेषकर साहित्य-प्रेमी का सहयोग मिलेगा और अल्पकाल में ही पांच लाख रुपये एकत्र हो जायंगे, जिसका कि हमने संकल्प किया है।

-मना

# क्या व तंत्री ?

आजादी का पर्व

बाज से पान वर्ष पूर्व १५ अमस्त को मारत स्वतन्त्र हुआ या और यह स्वामांविक ही है िए एक महान राष्ट्रीय पर्व वे रूप में उस दिन देश में लुविया नार्वाहें जाय । और साला की भाति इस साल प्रवाणी में भी समारोह किये गए। छाल विके के भैदान में लोग बहुत वही सक्या में इकट्ठे हुए और उनकी उरस्थित में मिले के विह द्वार पर राष्ट्रध्वन फहराले हुए मधान मन्दी पहित नेहरू ने गत वर्ष की घटनाओं वा सिहा-खलान विया तथा देशवाखियों से खपीछ की कि वे सवाई एव ईमानदायि के साथ अपन नर्जव्य ना धावन करें। हिंसा, साम्प्रयायिकता और चोर-बाजारों की तीव निन्दा करते हुए उन्होंने कहा कि द्वार चुएस्यों से कोई भी बीर का का नहीं उठ सकता। उन्होंने जवार दृष्टि एकवे और राष्ट्र-हित को सर्सोर्यार स्वान देने पर और थिया।

इसी अवसर ने लिए राष्ट्रपति डा राजेंद्रप्रधावनी में भी देश के नाम एक सदेश देते हुए कहा, ''बह समय सतीप से बैठ जाने ना नही हैं। (देश का) डावा ती वम गया है, पर भमी उसमें मास-विश्या नैठानी है और यह कार्य ती तभी पूरा होगा जब हम गरीवी, रोगऔर जज्ञान की समस्या की सुकक्षा जुकेंगे।''

आपे चल कर उन्होंने बहा, "बाहे हमारे हाय क्यों न बगरें और हमारे पैर क्यों न लडबहार्य, हमारा धर्म हैं कि हम दृष्टि को धुपड़ी और कही रास्ते पर कलते की अपनी लगत को कमजीर न होने दें। बात जो बर्प प्रारम्भ हो रहा है उसके लिए हमें मही बत लेना बाहिए। हमें चित्र की बायस्वकता है—ऐसे चित्र की जो आसानी से उन आलोमनो से परावित न होगा, जो हमें पेरे हुए हैं। तथाव करने के लिये तत्पर रहेगा, जो कमारा कठिनाइयों के बाद भी समाई पर दृढ़ रहेगा, जो हमें ग्रामध्यं प्रदान करे कि हम दूसरे लोगों के दिल में बैठ सकें और उनके दर्द को अपना बना सकें, जो सदा रूने के बजाय देने को तरपर रहेगा। ऐसे चरित्र वाले व्यक्तियो का राष्ट्र स्वयमेव मुखी और सम्पत्र होगा और दूसरो को भी मुखी और सम्पत्र करेगा।"

राष्ट्र के इन दोनो वर्णधारों ने जिन बातो पर जोर दिया है, दे बड़े महत्व की है और जबतक हम उन पर घ्यान नहीं देंगे, इस पर्व को सच्चे अर्थों में नहीं मना सकेंगे । आजादी प्राप्त हुए पाच दर्प हो गये लेकिन अभी तर दर्जनी समस्याए हमारे सामने ज्यो-की-स्थो चट्टान की तरह खड़ी है और राष्ट्रीय नेताओं की चिन्ता. प्रयत्न तथा वडी-बडी योजनाओं के बावजद राष्ट्र कपर उठवा हुआ दिखाई नहीं देता। गरीबी, भलमरी, निरदारता, अस्वास्थ्य तथा अन्य अनेक ध्याधियो से देश आज भी पीडित होकर कराह रहा है। यदि हम आजादी के वछाह का सचमुच अनुभव करना चाहते है तो हमें चाहिए कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने क्तेंब्य का पालन करे और उन बुराइयो को अपने पास भी न फटकने दे, जिनसे समस्टि के हित पर आच वाती हो। वाज वया व्यक्ति और व्या समाज, हर कोई वपन शृद्ध स्वार्थों के दलदल में पसा है और उसे इस बात की चिन्ता नहीं कि उसकी कृति से देश ऊपर उठता है, या नीचे गिरता है।

हम आता करेंग कि पिछले पाच वर्ष ने अनमसो के बाधार पर सरनार और अनता आज की सुक-केंग्सी महाज्याधियों के पिछ जाने कितना सून-मीता एक किता बाजादी के किए जाने कितना सून-मीता एक किता गया है, जाने कितनी आहुतिया दी गई है। तब कही यह मुस्ति देखने को मिला है। यदि आगे हम इसी प्रकार अपने स्वामं को देखते व उसकी सिद्धि के लिए प्रयत्न करते रहे हो वह हमारे और देस की आगादी के लिए बढ़े सतरे की नाल होगी। आजादी का यह पर्व हमें वह बाद दिकाने के लिए होना चाहिए नि देश का हित-अहित अब हमारे ही हाथ में है और अगर हमने अपने तुच्छ स्वायों को अहमियत देकर देश के बड़े हित की अबहेलना की तो हमारा और देश का ईश्वर ही मालिक है।

#### 'भारत-स्वच्छता' आन्दोलन

३ जुलाई से आचार्य विनोबा काणी में निवास कर रहे हैं। वे भूमि के बारे में तो सोचते ही हैं, साय ही देश को लाभ पहुंचाने वाली छोटी-बड़ी अन्य बातों का भी चिन्तन करते रहते हैं। काशी में गंगाजी के घाटों की गंदगी को देखकर इवर उन्होंने एक नये आन्दोलन का सूत्रपात किया है और वह आन्दोलन है 'भारत-स्वच्छता' -देश की सफाई का । उनका कहना है कि गंदगी से हमारा या समाज का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता, इसिलए अन्दरूनी स्वच्छता के साथ-साथ वाहरी स्वच्छता भी होनी चाहिए। विनोबाजी के इस आन्दोलन का हम हार्दिक समर्थन करते हैं। आज की स्थिति यह है कि अब्बल तो हम सफ़ाई का पूरा-पूरा ध्यान रखने नहीं और यदि रखते भी है तो उसमें पड़ौस की सफाई की चपेक्षा कर जाते हैं। अपने घर के कुड़े-करकट से पड़ौस को गन्दा कर डाल देते हैं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि जयतक पड़ीस में गन्दगी है, हमारी सफाई वेमानी है शीर जबतक पड़ीस में बीमारी है, हमारा अपना स्वास्थ्य निरन्तर खतरे में है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि जहां हम अपनी सफाई और स्वास्थ्य का ध्यान रक्खें वहां यह भी न भूलें कि उसके लिए हमारे पड़ीसी का भी साफ और स्वस्य रहना आवश्यक है। नागरिकता का तकाजा है कि किसी भी निजी या सार्वजनिक स्थान की गंदा करना भयंकर अपराव माना जाना चाहिए। क्षाज हम जहां चाहें यूक देते हैं, जहां चाहें छिलके पटक देते हैं और इस प्रकार जाने या अनजाने, अपने, समाज बीर राष्ट्र के स्वास्त्य को खतरे में डालते हैं। स्वतन्त्र भारत के नागरिकों को यह शोभा नहीं देता। हम चाहेंगे कि यह आन्दोलन जोरों से चले,जिससे हमारे देश का प्रत्येक नागरिक इन दिशा में अपने कर्तव्य की समझे बीर उसके पालन में अधिक जागरूक और सचेप्ट रहे।

### दफ्तरों में हिन्दी की उपेक्षा

हमारे भारतीय संविधान में हिंदी को राष्ट्र-भाषा बौर राज्यभाषा स्वीकार किया गया है; लेकिन राजकाज की मुविया की दृष्टि से काम चलाने के लिए पन्द्रह वर्ष तक अंग्रेजी के प्रयोग की छट रखी गई है। इसका अर्थ यह है कि हिंदी पन्द्रह वर्ष में अंग्रेजी का स्थान ग्रहण कर लेगी। भारत को आजाद हुए पांच वर्ष हो गये; लेकिन उस दिशा में हम लोग अभी तक विशेष प्रगति नहीं कर पाये । दुःख की बात तो यह है कि हम उस बारे में विशेष चितित भी नहीं दिखाई देते हैं। हीना तो यह चाहिए या कि जिस दिन हमें आजादी मिली थी उसी दिन हम यह घोषणा कर देते कि आगे सारा काम-काज हमारी अपनी भाषा में होगा और जैसे भी होता, अपना काम हिंदी में चलाते, लेकिन लाचारी के कारण अंग्रेजी को कुछ समय के लिए रखना जहरी है। या तो उस लाचारी को जल्दी-से-जल्दी दूर करने के लिए संगठित प्रयत्न तत्काल प्रारम्भ हो जाना चाहिए था। हमें यह कहते लज्जा आती है कि कुछ स्यानों को छोड़ कर शेप सब जगह अंग्रेजी को यथापूर्व महत्त्व दिया जा रहा है, उसीमें सारा काम-काज चलाया जा रहा है और ऐसा कोई प्रयत्न होता नहीं दीख पड़ रहा है जिससे पन्द्रह वर्ष में हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले ले। हमें यह भी पता चला है कि अनेक स्थानों पर हठपूर्वक ऐसी कोशिश की जा रही है कि अंग्रेजी का स्थान अक्षण्ण बना रहे। हम अंग्रेजी के विरोघी नहीं है और उसमें कितना अमूल्य साहित्य उपलब्ब है; यह हम जानते है । लेकिन इसका मतलब यह नहीं होना चाहिए कि हम बिदेशी भाषा के प्रेम में अपनी राष्ट्र-भारती को उपेक्षा की दृष्टि से देखें। जो लोग हिंदी की प्रगति के मार्ग में अज्ञानतावश रोड़े अटकाते हैं वे देश के प्रति बड़ा भारी विस्वासघात करते हैं । हिंदी समूचे देश की भाषा है और अत्यन्त आत्मीयता के साथ उसकी उन्नति के लिए प्रत्येक देशवासी को प्रयत्नशील होना चाहिए ।

यदि सरकारी दफ्तरों में हिंदी के प्रति ऐसी ही उदासीनता रही तो पन्द्रह वर्ष में तो क्या, पचास वर्ष में भी हम अंग्रेजी को नहीं हटा सकेंगे।

हम केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों से अनुरोध करेंगे कि ने इस मामले में ढिलाई से काम न लें और ययासंभव शीध्र ही अपने दफ्तरों में राजकाज को हिंदी में चलाने की व्यवस्था करें। जनता की ओर ने भी इसके लिए जीरदार शब्दों में मांग की जानी चाहिए।

#### 'मएडल' की ऋोर से

'जीवन-साहित्य' के पिछारे अक में हमने सहायक-सदस्यों की एक योजना प्रकाशित की थी, जिसे 'मण्डल' ने अच्छे साहित्य के सुजन और प्रसार की दृष्टि से आवस्यक साधन जटाने के लिए तैयार किया है। उस योजना के अनुसार एक हजार रूपये लेकर सहायक-सदस्य बनाए जाते हैं। यह रकम पाच वर्ष तक मण्डल ने पास रहेगी । बाद में २००) -२००) साल दे हिमाब से पाच वर्षों में लौटा दी जायगी । इससे रूपया देने वालो को यह लाभ होना कि उन्हें 'मण्डल' से प्रकाशित प्राप्य पुन्तकों का एक सेट, जो छमभग २४०) का है, सत्वाल भेंट में मिल जायगा और आगे दस वर्ष सक, जबन र मूत्र रकम चुका नहीं दी जायगी, मण्डल से निरलने वाली नई पुस्तके मेंट-स्वरूप मिलती रहेंगी। इस प्रकार रुपया-का-रुपया वापस मिल जायगा, साच ही लगभग ७००) की चूनी हुई सुन्दर पुस्तके भी। उघर 'मण्डल' को भी अधिक साहित्य निकालने के लिए पूजी मिल जाती है। ऐसी ही एक योजना ५००) की भी बनाई गई है, लेनिन वह देहातों ने लिए हैं।

हुएँ की बात है कि इस योजना का प्रत्येक क्षेत्र में हुर्तिक स्वागत हुआ है। हम छोगों ने गुरूबात कलकत्ते से की हूँ बीर दुछ ही किनों में वहा तथा वन्य स्वानों में एक-एक हमार रूपये देकर अनेक व्यक्तित्व स्वानों में एक-एक हमार रूपये देकर अनेक व्यक्तित्व हमराएसदस्य बन गई है। उनकी नामावलि की पहली क्लिट इस प्रकार है

१. शान्ति बलव (डालमियापुरम्) २. एजा सूगर बम्पमी लि॰ (रामपुर)

३ थी मापवप्रसाद विडला (वलवत्ता) ४. डालमिया रित्रियेशन वलव, (नई दिल्ली)

४. डारुमिया रिकियशन नरुव, (नव विस्ता) ५ सेठ लालचन्द सेठी, (उज्जैन)

५ सठ ठालचन्द्र स्वाः, (उपरा) ६ उडीमा सीमेन्ट लि॰ (राजपगपुर)

७ मारवाडी वालिका विद्यालय (कलकत्ता)

८ श्री रामराल राजगढिया

९ श्री गोपीहण्य कानोडिया,

१०. श्री भगवतीप्रसाद सेतान (कलवत्ता) ११ थी रामकुमार अग्रवाल ٠. १२ श्री रामस्वरूप मामनन्द १३. थी मनसनलाल वागडोदिया १४. विकास विद्यालय (राची) (क्लकता) १५. श्री लक्ष्मीनिवास बिडला १६. श्री आनन्दीलाल गोयनका १७ स्वदेवी काटन मिल्स क० लि० (जुही, कानपुर) १८. थी मदनगोपाल रूपटा (कलकत्ता) १९ श्रीमती पद्मादेवी भानोहिया \*\* २०. की रामेस्वर टाटिया २१. ग्री धर्मधन्द सरावगी २२. श्रीमदी अनस्या नानोडिया २३ थी रामकुमार भूवालका २४ श्री नर्रासहदास अग्रवाला २५. थी जगन्नाय बेरीवाल २६ थी मातादीन खेतान २७. विरसा क्लब २८. श्री बजमोहन बागडी २९ श्री दीनानाय कानोडिया ३०. श्री पुरुपोत्तम केजडीवाल श्री काशीराम बनारतीलाल ३२. श्रीयती गायत्रीदेवी गोयनका (बान्डा) ३३. श्री सत्यनारायण बाजोरिया ३४. श्री चिरजीलाल बाजोरिया (कलनता)

३४. श्री चिर्जालाले बाजारमा (कलनता)
३५ श्री वात्साराम नानोहिया "
३६ जीरियन्ट पेपर मिराम करता (करागनगर)
३७ जाजाद मचन पुस्तकाल्य (फरेनुटुर-पेवालाटा)
३९ श्री रामग्रसार पोदार (दिल्ली)
४० श्री रामग्रसार पोदार (दिल्ली)
४० श्री रामग्रसार पोदार (वलनता)
४२ श्री रिपाम्पराम कोठारी (कलनता)
४२. सेठ सूरज्ञमक जालान पुरावकाल्य "
४३ सुनुमान पुस्तकाल्य (हाजा)
(सेव पूष्ठ ३४६ पर)

# न्तन वाल-शिच्तण-संघ

को

# हिन्ही शिक्षगा-पत्रिका

आद्य सम्पादक—स्व० गिजुभाई वधेका : प्रवान सम्पादक—तारावहन मोड़क सम्पादक—वंसीधर : कार्शिनाथ त्रिवेदी

'आज का वालक कल का निर्माता है' यह सव मानते हैं; परन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक वनाने के लिए प्रयत्न 'हिन्दी शिक्षण-पत्रिका' करती है। यह नूतन शिक्षण के सिद्धान्तों के अनुसार वालोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करती है। यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करती है। यह पत्रिका मनोविज्ञान के आचार्य श्री गिजुभाई वधेका के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति है।

पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है। वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।=)।
विशेष जानकारी के लिये लिखिए:

## हिन्दी शिच्रण-पत्रिका-५१ नंदलाल पुरा लेन, इन्दौर।

तार : हिन्दी		^	फोन : ५४५०
	חבב"ו ה		
	श्री य व्हा		
	4 4 14 4		

#### ः मासिकः

प्रकाशक : हैदरावाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, हैदरावाद (दिच्चिण)

मूल्य : ९-०-० भा० मु० वार्षिक

किसी भी मास से ग्राहक वना जा सकता है

कुछ विशेपताएं :

१. उच्च कोटि का साहित्य २. सुन्दर और स्वच्छ छपाई ३. कलापूर्ण चित्र संपादक

श्री वंशीधर विद्यालंकार : श्री श्रीराम शर्मा

कुछ सम्मतियां

- १. "अजना का अपना व्यक्तित्व है।"-वनारमीदान चतुर्वेदी
- २. 'अजन्ता मुन्दर और स्वच्छ पविका है।"--दिनकर
- ३. "अजन्ता माहित्य का नया कल्पवृत्त है।"--वामुदेवरारण अग्रवाल
- ४. "अजना हिन्दी की नर्वश्रेष्ठ मानिक पित्रकाओं में ने एक है।"—कन्हैयालाल माणेकलाल

हिन्दी का सचित्र मासिक

पद्ध संस्था ८०

### क ल्प ना

वार्यिक शुल्क १२) धक प्रति १)

( साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक )

#### पढिये

जिसमें उच्चकोट के साहित्यिको और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी। अपनी गंभीर और सुरुचिपुणं सामग्री व रूप के कारण सरकारी विभागों द्वारा मान्य

संपादक-मंडल

🔿 डा॰ आर्येन्द्र हार्मा (प्रधान सम्यादक) 🕒 मयुनुदन चतुर्वेदी 🖈 बद्रीविज्ञाल विसी

🖯 बृग्दावनविहारी मिश्र 🖸 मृनीग्र 🖸 कला-सम्पादर---जगदीश मितल

विशेष परिचय के लिये हमें लिखिये:

'कल्पना' कार्यालय, ८३१ वेगमवाजार, हैंदरावाद (दिच्चण)

### **\* राष्ट्रभारती** \*

भारतीय साहित्य की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका दिलीय वर्ष में पदार्शन

सम्पादक-श्री मोहनलाल भट्ट, यी हृथीकेश शर्मा

साहित्य-सस्कृति-कला प्रधान पत्रिका "राष्ट्रभारती" प्रति मास आपको हिन्दी और भारत की विभिन्न

प्रान्तीय तथा निदेशी मापाओं की साहित्यिक-सास्कृतिक गतिविधि का परिचय देशी। इसमें देश-विदेश के गण्य-मान्य विद्वानो और कलाकारो की थेय्ठ रचनाए और अधिवृत्त अनवाद भी रहते हैं। "राष्ट्रभारती" को राष्ट्रभाषा--राजभाषा हिन्दी के और छममग सभी प्रातीय मापाओं के श्रेष्ठ

साहित्यवारी वा सहयोग प्राप्त हैं। 'कोविद', 'राष्ट्रमापारल' और 'विकारद' के अध्ययनशील प्रौढ छात्रो की सहावता के लिये प्रति-मास इस पत्रिका में मुख्य-मुख्य पाठ्य-मुस्तको को लेकर समालोचनात्मक सामग्री मी प्रस्तुत की जायगी।

राष्ट्र भारती प्रत्येक मास की १ तारीक्ष को प्रकाशित होती है। थी। पी॰ मेजने ना नियम नहीं हैं। नमूने की प्रति के लिये १० लाना के डाक-टिक्ट मेर्जे।

एक प्रति १० धाना वार्षिक मृल्य ६)]

प्रबन्धक्रती--"राष्ट्रभारती" राष्ट्रमापा प्रचार संमिति, हिन्दीनगर, वर्घा (सध्य-प्रदेश)

## राष्ट्रभाषा हिन्दी का सचित्र सांस्कृतिक मासिक पत्र

# विकास

## (सम्पादक तथा संचालक—सूर्यनारायण व्यास)

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ मासिक 'विकम' ही है, जिसका राजा-महाराजाओं से लेकर देश के सर्वसाधारण समाज तक समान रूप से प्रवेश है।

'विक्रम' के आरम्भिक १६ पृष्ठों में महीने भर की महत्वपूर्ण घटनाओं पर विविधतापूर्ण, मीलिक, उत्हिष्ट और निर्भीक एवं स्वस्य विचार समन्वित रहते हैं। सभी विद्वानों ने हिन्दी का 'मार्ड्न रिव्यू' कह कर इसकी प्रशंसा की है।

स्वस्य साहित्य, शिष्ट हास्य, चुनो हुई किवता और कहानी एवं विचार-प्रेरक पंचामृत तथा समस्त मासिक साहित्य का सुन्दर परिचय 'विकम' की अपनी विशेषता है।

यदि आप अवतक ग्राहक नहीं है तो अविलम्ब ग्राहक वन जाइये, मित्रों को बनाइये और परिवार के ज्ञान-वर्षन के लिए 'विकम' को अवश्य स्वीकार कोजिये। वार्षिक मूल्य ६) रु०, एक प्रति का ॥ > ), नमूना मफ्त नहीं।

विशेष जानकारी के लिए लिखिये:

## व्यवस्थापक — चिक्रस कार्यालय, उज्जैन (मालवा)

# ज्ञानीद्य [मासिक पत्र]

"ज्ञानोदय बहुत ही उत्तम है। कालान्तर में इसकी विशेष उन्नति होगी। जनता अपनावेगी।" ——क्षुल्लक गणेशप्रसाद दर्णी

"ज्ञानपीठ के अन्य प्रकाशनों की भांति ज्ञानोदय सुन्दर और शिक्षाप्रद है।" ——सम्पूर्णानंद "ज्ञानोदय का क्षेत्र जैसे-जैसे पुनीत तथा व्यापक होता जायगा उससे निरीह जगत को अवश्य सांस्कृतिक प्रेरणा मिलेगी। पत्र मुख्चितूर्ण है।" ——सुमित्रानन्दन पन्त

"इतनी उदार श्रमण संस्कृति की पत्रिका की बड़ी आवस्तकता थी।" — राहुल साँकृत्यायन "जैन समाज के जितने पत्र हैं, उनमें से अगर एक पत्र उठाने का ही मुझे अधिकार हो तो मैं निश्चय ही 'ज्ञानोदय' उठाऊंगा।" — विजयचन्द्र जैन दी० ए०

"विष्य-कल्याण की भावना से पूर्ण सत्यं शिवं सुन्दरं का समन्वय करनेवाले जैन धर्म का कलात्मक दर्शन ही 'ज्ञानोदय' का मुख्य उद्देश्य है। इस नयनाभिराम श्रमण संस्कृति के अग्रदूत का मै हदय से स्वागत करता हूं।"
—शीचन्द्र जैन एम० ए०

——आयदः जन एनण्ए "हिन्दी का यह अनुपन पत्र है और बड़ा ऊंचा आदर्श लेकर निकला है।" — साहित्यसन्देश

क वर्षे में ६६० घ्रष्ट] [वार्षिक मूल्य ६) भारतीय ज्ञानपीठ काशी, पो० व० नं० ४⊏, वनारस ।

#### सस्ता साहित्य मगडल

की

#### वे पुस्तकें

#### जिनसे

- आपका पुस्तकालय आकर्षक बनगा, उसकी शोमा बढेगी
- आपके ज्ञान में वृद्धि होगी, आपका समूचा परिवार चाव से पढ़मा
- जिन्हे आप अपने मिनो और सम्बन्धियों की भेंट करेंग तो वे बहुत ही प्रसन्न होग
- सेरे समकालीन (महात्मा गायी) युग-पुरव दारा बढी हा काव्यमय यावा और हवय स्पर्धी गैली में लिखे अनेका महापुरवो और मामान्य लोन चेवका वे मस्मरण।
   ५)
- श्रेवार्थी जमनालालजी (हरिभाज ज्याच्याय) हिन्दी के सिद्धहस्त केवव द्वारा गाणीजी व 'पावव पुत्र जमनालालजी की ज्यायास-जैसी रोचन जीवनी-अरणादायन और शिक्षाप्रद ।६)-६॥)
- भागवत धर्म (हरिमाऊ उपाध्याय) भीतिक उन्नति ने साव बाध्यात्मिक उन्नति ने पण पर के जानेवाला अमृतपूर्व ग्रय । भागवत के एकादश स्कथ का वही ही सरल-मुबोध सैली म अनुवाद ।
- सर्वोदय सल्बदर्शन (गापीनाथ थानन) अहिंशा नी प्रतिष्ठा और अहिंगक राज्य-व्यवस्था का बहुत ही परिश्रम, विवेन तथा मूहम द्णि स किया गया विवेचन।
   ७)
- ५. फारावास कहानी (कुडीला नेवर) गांधीना तथा उनने सगी-गांधिया ने आगाला महल म बदी जीवन क प्रकलित माम का मार्गिक राज्य और शिक्षाप्रद बुताना । गांधीजी ने मानज राज्य नीतित, कांपू ज्य की विविध झांबिया । महादेवभाई और बा क निधन के हृदय दिदारक विवरण । २८ हुकेंम चित्र ।
- ६. काग्रेस का इतिहास (पट्टािम सीतारामैया) लगभग १५०० प्टा की इन तीन जिल्दा का पडकर आपके सामने १८८५ से लकर १९४७ तक का स्वतनता के लिए तडकडाता, हमते हमते जान पर सक्ता और फिर अन्त में विजयी होता एक मुग था खडा होता है। आजादी के लिए किननी तपन्या, साधना और बल्दािन करने पड़े हैं, इनका प्रामाणिक उतिहास। प्रत्येव जिल्द का मूल्य १०) मेट लेन पर २०)

अन्य प्रकाशनों के लिए

एक कार्ड लिखकर बड़ा सुचीपत्र मगा लीजिये:

सस्ता साहित्य मण्डल

नई दिल्ली

बड़े आकार के ९०० पृष्ठ का महान् ग्रन्थ

# विश्व इतिहास की अलक

जिसके लिए

छाप बारह वर्ष से प्रतीचा कर रहे थे

ल्नये रूप-रंग ०परिवर्द्धित सामग्री ०ञ्चाकर्षक ञ्चावरण ्मज्ञूत जिल्द ्सुन्दर छपाई

प्रकाशित हो गया है और वाजार में मिल रहा है। यदि आपने अपनी प्रति १६) अग्रिम भेजकर सुरक्षित कराई है तो पुस्तक आपके पास पहुंच गई होगी या शीघ्र ही पहुंच जायगी । अव आपको ग्रंथ पूरे मूल्य अर्थात् २१) में मिलेगा । नेहरूजी का यह दुर्लभ ग्रन्थ आपका ज्ञानवर्द्धन करेगा, आपकी अलमारी की शोभा वढाएगा।

# जल्दी की जिय

पुस्तक-विकेताओं के लिए भी विशेष रियायतें रखी गई हैं। पत्र लिखकर मालूम कर लें।

--मिलने का पता--

इंदीर

नवयुग साहित्य सदन सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली

हिन्दी प्रकाशन मंदिर इलाहाबाद



## लेख-सूची

१. सिद्धांत बनाम व्यक्ति 😬 विनोवा	३५३
२. भूमि-यज्ञ जयंती ः कि.घ. मशरूवाला	३५४
३. आत्मज्ञानी किशोरलाल भाई विनोवा	३५५
४. पुष्य-स्मरण • कमलनयन वजाज	३५७
५. महावीर की जीवन-झांकी	
़ ' दरवारीलाल कोठिया	३६०
६. राष्ट्रनिर्माता ऋषि दयानन्द	
• अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार	३६४
७. स्वामी रामतीर्यं का राष्ट्र धर्म ' सुशील	३६८
८. अखण्डनिष्ठ गांधी 🎌 र्जनेन्द्रकुमार	३७०
९. संरदार पटेल 🎌 रामचन्द्र तिवारी	३७३
१०. प्रेमचन्द ः देवराज 'दिनेश'	३७५
११. कंसीटी पर 💎 समालोचनाएं	३७८
१२. वया व कसे ? • • सम्पादकीय	३७९
१३. मण्डल की ओर से 🎌 🔻 मंत्री	३८१

#### 0

## 'जीवन-साहित्य' की फाइलें और विशेषांक

हमारे स्टॉक में 'जीवन-साहित्य' की निम्नलिखित फाइलों और विशेषांकों की कुछ प्रतियां शेष हैं: १९४३ की फाइल, अजिल्द ४) सजिल्द ५) " (छः अंकों की) " १९४५ १॥) ,, सा) १९४६ ₹) २) १९४८ ₹) " Y) १९४९ ₹) と) १९५० ૪) 4) 2948 ¥) 4)

#### विशेपांक

जमनालाल-स्मृति-अंक	•	u)
प्राकृतिक चिकित्सा अंक	(परिधिष्टांक सहित)	રા)
विश्व-गांति अंक		१॥)

मंगाने में विलम्ब न कीजिये । सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

## 'जीवन-साहित्य' के नियम

- १. 'जीवन-साहित्य' प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में प्रकाशित होता है। १० तारीख तक अंक न मिले तो अपने यहां के पोस्टमास्टर से मालूम करें। यदि अंक डाकखाने में न पहुंचा हों तो पोस्टमास्टर के पत्र के साथ हमारे कार्यालय को लिखें।
- २. पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या अवश्य दें। उससे कार्रवाई करने में सुगमता और शीन्नता हो जाती है।
- इ. वहुत से लोग ग्राहक किसी नाम से होते हैं और आगे का चंदा किसी नाम से भेजते हैं। इससे गड़वड़ी हो जाती है। इस सम्बन्ध में मनीआडंर के कूपन पर स्पष्ट सूचना होनी चाहिए।
- ४. पत्र में प्रकाशनार्थ रचनाएं उसके उद्देश्य के अनुकूल ही भेजी जायं और कागज के एक ही ओर साफ़-साफ़ अक्षरों में लिखी जायं।
- ५. अस्वीकृत रचनाओं की वापसी के लिए साथ में आवश्यक डाक टिकट आने चाहिए।
- ६. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियां भेजी जायं।
- ७. पत्र के ग्राहक जुलाई और जनवरी से बनाये जाते हैं। बीच में रुपया भेजने वालों को मूचना दे देनी चाहिए कि उन्हें पिछले अंक भेज दिये जायं या आगे से ग्राहक बनाया जाय।

--च्यवस्थापक

नोट---ग्राहकों से निवेदन है कि यदि उनके पते में कोई युटि हो तो उसकी सूचना नुरन्त हमें देकर ठीक करा छें, जिससे पत्र उन्हें समय पर मिलता रहे। उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा मिहार प्रादेशिक सरकारों द्वारा स्कूकों, कालेजों व लाइनेरियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम-पचायतों के लिए स्वीकृत



विनोवा

#### सिद्धांत वनाम व्यक्ति

"गाधीजों के कोई सिद्धात होते, तो मृत्यु के बाद वे अपने साथ उन्हें के गए होते !
लेकिन वैसा नहीं है, बिल्क गाधीजों द्वारा प्रयट हुए है। उन्हें जब में प्रहण करता हू तब वे मेरे
ही बन जाते हैं। उन्हें लोगों के सामने रखते समय गाधीजों के नाम से रखने की जरूरत नहीं
है। स्वतन रूप से लोगों को विचार समझा सकते हैं। वे लोगों की बुद्धि को जब जाय, उनके
बन जाय तभी उनवा अमल वे करें ऐसा में कहूगा। इस तरह काम करेंगे तो हिन्दुस्तान का
कायापलट हो जायगा। मन के असर कागज पर लिखे होते हैं। उनको समझकर अपने जीवन
में उनके अनुसार जोपरिवर्तन करता है, उसके वे काम में आते हैं। नहीं तो एक कीडा उन
मनों को कागज सहित पूरा खा जाता है।

# भृमि-यज्ञ जयंती

में भूमि के हरेक स्वामीसे प्रार्थना करता हूँ कि वह ह्दय की गहराई में उतर कर विचार करे कि हवा और पानी की तरह यह पृथ्वी भी किसी की खानगी मिलकियत नहीं हो सकती । यह एक ऐसा सत्य है, जिससे कोई तत्वतः इन्कार नहीं कर सकता । पृथ्वी पर सवका अधिकार है, और सबके हित के लिए उसका सदुपयोग किया जाना चाहिए । लेकिन इस सिद्धान्तरूप वात का मानव-जाति द्वारा अनादर किया गया है और भगवान की इस उदार देन पर चन्द लोगों का कब्जा रहता आया है और असंख्य लोग उसे प्राप्त करने के लिए लालायित रहे हैं। नतीजा यह आया है कि यह पृथ्वी हमेशा रक्त-पात और लड़ाईयों से पीड़ित रही है । न कभी उसे शान्ति मिली है, न उसपर वसनेवाले जीवों को कभी आराम मिला है।

भूमि के लिए बेटा बाप का खून करता है, भाई भाई का कल्ल करता है। पांच पांडव पांच गांव लेकर संतुष्ट होने के लिए तैयार थे, लेकिन कौरवों के लोभ के कारण यह नहीं हो सका। परिणामस्वरूप ऐसा महाभारत मचा कि जिसमें सारे भारत का वैसा ही नाश हो गया, जैसा पिछले दो जागतिक युद्धों ने यूरोप का कर डाला है। हम इतिहास की बड़ी-बड़ी कहानियां पढ़ते हैं, प्राचीन शहरों को खोद निकालते हैं, परंतु सबका निचीड़ क्या है? पृथ्वी पर स्वामित्व जमाने की होड़ में बड़े-बड़े राज्य मिट गये हैं, सभ्यतायें नण्ट हो गई हैं।

जब तक पृथ्वी पर अपना स्वामित्व रखने की भावना मौजूद है, तब तक दुनिया में युद्ध का अन्त आना, शांति और मेळजोळ कायम रहना और सर्वोदय सिद्ध होना असंभव है। यह सब भूमि गोपाल की ही है, यह केवल एक काव्योक्ति नहीं है, निश्चित सत्य है। इस सत्य का अस्वीकार करने के प्रयत्न ने आजतक मनुष्य-जाति को कभी मुखी नहीं होन दिया है। और जबतक यह व्यर्थ प्रयत्न जारी है, तबतक वह कभी सुखी नहीं होगा।

हम जानते ही हैं कि दक्षिण अफीका में हमारा सत्या-

ग्रह चल रहा है। जिसकी तह में उतरकर देखा जाय तो आखिर वह क्या है ? मानव-जाित के एक वंश को वहां की साँरी भूमि हथियाना है और दूसरी मानव-जाितयों को वहां नहीं वसने देना है। वहां की मूल जाितयों-को भी उखाड़ देना है। वह खंड इतना बड़ा है और इतना कम बसा हुआ है कि भारत के लाखों लोग भी वहां मुखपूर्वक वसाये जासकते हैं। लेकिन वहां के बलवान गोरे लोगों को यह बात स्वीकार नहीं। इसलिए उन्हें निकालने के लिए तरह-तरह की कोिश्रशें की जा रही हैं। इसीका यह संवर्ष है।

रिश्या और चीन में खून की निदयां वहाकर वड़ी कान्तियां की गईं। आखिर क्यों ? करोड़ों लोग भूमि-हीन, दिद और वेकार; चंद लोग लाखों एकड़ भूमि के स्वामी। ब्रह्मदेश, मलाया आदि में जो वड़े बलवे होते हैं, उनके पीछे भी यही कारण है। हमारे देशमें तेलंगाना के उपद्रवों के मूल में भी यही वात थी। परंतु परमात्मा की कृपा और पूज्य गांधीजी के पुण्य प्रताप से विनोवाजी को वहां जाते ही भूमि-दान-यज्ञ की प्रेरणा हुई; और यह वात चल पड़ी और अच्छी तरह आगे बढ़ी। यात्रा में सारे रास्ते के भू-स्वामियों ने यज्ञ का अच्छा सत्कार किया और उदारता से दान दिया। फिर भी यह एक फूल की पत्ती जितना ही हुआ है। अभी बहुत कुछ होना शेप है।

एक दिन जरूर ऐसा आयगा, और मैं आशा करता हूं कि वह दिन जल्दी ही आयगा, जबिक सारी दुनिया की सब भूमि दुनिया के सभी छोगों की सामान्य संपत्ति मानी जायगी। और जो कोई मनुष्य जिस किसी देश में उस पर श्रम करना चाहेगा, उसे करने दिया जायगा। उसके मार्ग में जाति, राष्ट्र आदि किसी कारण से बाधा न आवेगी। जिससे सारी पृथ्वी पर मनुष्य-जातिका समान रूप में फैंळ जाना संभव होगा।

चलें, इसकी शुरूआत अपने तत्त्वज्ञान और संस्कृति के अनुरूप हम अपनी पद्धति से ही करें। यानी तप, यज्ञ

#### आत्मजानी किशोरलालभाई : विनोवा

शीर दान के जरिये, जर्यातृ स्वेच्छा से, अपना कर्तव्य समस्तर । हतारी वरी मा भूमिहीनों मा तथा तो इवटा हुना ही है। अगर अब वे वेवेन हो गये है और उनना भीरत चुक गया है, तो उन्हें दोय नही दिया जा सकता। स्वोक्ति उसमें बे तथे जरूर है, परतु निसहाय मात्र से तरे है। वह तपस्ता बख उनकी जगह नामेन तांजों नो इस मत्र ने छिए बृद्धियूवन तथकर चालू राज्या नारिए। से भी और तिरत तपस्त्वा जरे हो जो को तांचिया ने सुध्य समितिया ने सुक्त समितिया ने सुक्त स्वत्य हो हो समितिया ने सुक्त समितिया ने सुक्त समितिया है। अब तीलपा कार्य भून्यामियों सो सिपुल मात्रा में अपन दान देवर उसे पूर्व पर ने दि हो । कि सुक्त मात्रा में साम स्वत्य के विनोधा अपनी साम स्वत्य से विनोधा अपनी साम स्वत्य से विनोधा अपनी साम स्वत्य से विनोधा अपनी साम स्वत्य के विनोधा अपनी साम स्वत्य के विनोधा अपनी

सारी सिन्न दक्ष पर लगा रहे हैं। वे दतने लागत और सीण हो गये हैं कि यह नहीं नहां जा सनता कि वे अपने पैरोंके क्तायुकों ने बल पर पूम रहे हैं। परमातमा ही जन्हे—"वार नियो हाती परोनिया"—आधार देवर चला रहा हैं। बादये, हम अब उनने लिए प्रार्थना करे, नार्य करे, जीर उनका मिशापात्र उदारता में भर दें। हमारे प्रार्थन गृहका की आदेश है

"तुम सव एक होकर कलो, एक होकर बोलो, एक होकर सोबो । तुम्हारा ध्यय समान हो, तुम्हारे हृदय समान हो, तुम्हारा किन्तन समान हो।" इसका हम पालन करे।

#### विनोवा

इन दिनो निशोरलाल माई नो बहुत तक्लीफ रही। वैसे तो कोई पचीस साल मे उननी बीमारी चल रही यो । लेकिन इधर गत दो-नीन मास में उनकी तक्लीफ बढ गई और उन्हाने हरिजन के काम से मुक्ति चाही थी। लोग उन्ह मुक्त करने की सोच भी रहे थे। लेकिन परमेश्वर ने उन्ह छडाया । मै तो परमेश्वर का उपकार मानना ह । मेरे साथ उनका पत्रव्यवहार इन दिना मामुली कौरपर चल रहा या। मत मास से एवं दो पत्रों में बे अन्तनाल की क्या स्थिति हो, ब्रह्मनिय्ठ पुरप की क्या ब्याख्या हो आदि चर्चा करते रहे । अपने बतिम पत्र में खन्होंने लिखा या वि आजवल मेरे विचार इसी प्रकार चल रहे हैं। डाक्टर फहते हैं कि विश्वाति ले को। निकट भविष्य में मृत्यु के लक्षण नही है। परन्तु किशोरणाठ भाई ने अपने मन की उत्तम तैयारी कर ली थी, यह पत्र-ब्यवहार से स्पष्ट होता है। वे गफ्टत में नही बन्दि आस्पिर तक कर्नव्य करते हुए गए।

मुझे सज्जनों और सत्पूरपों नी सपति का बहुन भाग्य मिला है। रेकिन मैंने ऐसा दूबरा नोई मनुष्य नहीं देना जिने रोज इतनी तीज़ वेदना सहनी पट । उनके दमें के दौरे से लोग घदरा जाते, पर वे रात-रात रोग से

#### श्रात्मज्ञानी किशोरलालभाई

समस्ते रहने और दौरा बमा नि हस्ते दिलाई वेते। एन स्वीत दूस्य शीख पहता था। धरीर को वे अपने से पुमक् समते थे। मार्वजनिन सेवन ने मांते मीना साने पर कहरो पर वे हिंग भी नर रेने थे, सम्पादन ने माते। रिनिम स्वार नेई मन्ती महमून हुई सो प्रीरन समा माग रेने थे। पूर्ण निवेर पुरुष का नमूना सगर मेने कही देखा रो निवीरणाठमाई में। स्पट्यारी और स्वतन्त्र विचार के थे थे। बापू के साथ रहते हुए अगर हुछ मतभेद हुआ ती वे अकट भी नर देते थे। भी उनको रुगता सप्ट बता रिवेद स्वीर महोचन यहां। परनु मन में सबके लिए विवद और निर्माण्य सनेत्र था।

 लिए जो भाव था, उस बारे में मीचना हू कि वह किस प्रकार का था तो कहना चाहिए कि एक आत्म-ज्ञानी पुरुष के लिए जैसा चाहिए बैंसे वे थे।

नैने अभी जो मंत्र कहा कि, 'नस्मान् आत्मज हि अवंथेन् मूनिकामः' इस प्रकार जैसे आत्मजानी की उपासना करे वैसे त्री वे थे। उनको गरीर के रोग का इ.स ही नहीं हुआ। अब परमेन्बर उनको भी उठा ले गया तो मैं यह नहीं जानना कि और कोई मनुष्य ऐसा हममें है, बापू के साथियों में, जो सब्बो सम्हाल सके। अधिक-से-अधिक वे ही सम्हाल सब्ते थे, परन्तु मुजे आजा है कि उनके दिल में जो स्तेह और सीहार्ड था उसका हिस्सा हमको मिल जाए।

बहा मेरे जो ब्यारपान आदि हीने थे, उनका मारांग नैयार करके दामोदर उनके पान भेज देना था। मैं उने देखना न था और कह दिया था कि कियोरलाल मार्ग किमी भी बाज्य में जो नुधार और बदल करना चाहे कर नजने हैं। बिचार जी दृष्टि से जननी श्रद्धा मैं किमपर रूप महूगा ब्यान में नहीं था रहा है।

ईंग्वर उन्हें ले गया यह नो अच्छा ही हुआ है। पर अब उनके पीछे हम जो रहे हैं, उनको कि जोग्लाल माई का उदाहरण मामने रत्यकर निरन्तर भगवान् की मेदा में मन्म रहना चाहिए। दापू के पहले ही उनके मामने उनके दो मक्त महादेवसाई और उमनालालजी चले गए।

मृद्यान-प्रज्ञ के जाम के माथ अधिक-मे-अधिक कोई एउन द हुआ तो वह बिजोरलालनाई थे। उनके वर्ण में रहने पर भी उनकी हम्ती ही उमकी यहा बल देनी रही। वह बल मैने नहीं खोजा, वह नी मिलना ही रहेगा। मैने बिजोरलालमाई के बारे में राशाप्टला की लिखा था कि वे बुध नहीं कर मजने, फिर भी जनना करने हैं। चीना में अपने में कर्म की बान कही है। उमका उदाहरण विजोरलालमाई थे। बापू ने क्म में कर्म माव का उदाहरण विजारलालमाई थे। बापू ने क्म में कर्म माव का उदाहरण विजारलाल माई थे। बचिप वे क्म यून्य नहीं की बान बीपनी थी। बचिप वे कम यून्य नहीं वीपने थे, लिखना-पदना, चर्चा कादि करने थे, पर्नु वे हलवल, आन्दोलन नहीं कर पाने थे। बैसा उनका वे हलवल, आन्दोलन नहीं कर पाने थे। बैसा उनका

गरीर न था। उस अकर्म में भी महान् कर्म होता था। उनके रोग-जर्जर गरीर में महान् योगी का-मा स्वरप विद्यमान था। अपने सिद्धान्तों पर वे अटल रहते। आस पास के तुच्छ नेवक के साथ भी हमदर्जी और एकता का अनुभव कैसे किया जा सकता है, यह जब मैं सोचता ह तो वे सेरे सामने मूर्तिमन्त खड़े होते थे।

आज मुबह नारनाथ ने में का रहा था। रान्ते में एक प्रेत की ले जा रहे थे। बोलते थे 'राम-नाम सत्य है'। भगवान बुद्ध ने तो यह जिला बी है कि मोजन के लिए स्मजान में भी बैठे। जब लाज जल रही हो और जाने का बक्त हो गया हो तो साना चाहिए। भगवान बुद्ध का तात्वर्य बह् था कि मृत्यु को नामने रसकर जीवन जीये। मृत्यु ने डरे नहीं। बह याद दिलाती है कि हम वर्मजाला में पड़े हैं। उनकी हममें आमिक्त न हों। बीक ऐसा ही चित्र, निरनर मृत्यु को नामने रसकते हुए अत्यन्त निर्मर जीवन विताने हुए, कियोरलालभाई का था।

किसी महापुरुष के साथ तुलना। वरने ने किसी पर विशेष प्रकाश पटना है ऐसी बात नहीं, परन्तु उनमें बापू ने भी बददर कुछ बब्जिया थी। उनके मारे विचारी को गहरे तत्वज्ञान की बैठक थी, क्योंकि वे प्रत्यक्ष आन्दो-लन में नहीं रहने थे, इसलिये साक्षी नम देखते थे और कर्ड बातो में उनका टर्मन अधिक सही निकलता था। इनवा कुछ परिणाम यह भी होता था कि, साझान् कर्म-योग ने नम्पर्क न होने के कारण जो घटनाए होती थी, उनका कुछ तीक परिणाम भी उनपर होता था। फलत. वनी-वनी दर्गन एकांगी हो जाना था। परन्तु इसमै भाष्ययं नहीं । बहुन-बहुन आज्ययं नी यह है कि व देह ने दिन प्रकार भिन्न रह सकते थे। विगोरलाल मार्प के जैसे महान् साञ्य, से बहुगा वि, ब्रह्मनिष्ठ ईज्बर परायण पुरुष का प्रयाण बहुत ही पायन प्रमग के रूप में हमारे लिए है। बाज हम मारनाय हो आये, तो मेरे दिमाग में दिनमर बुद्ध का ही स्मरण रहा और अब रान को यह यबर मुन रहे हैं। हमारे नजबीय जी लोग रहते है, उनरी योग्यता का सान हमें नहीं होता जितना कि हर के व्यम्तियों या परन्तु जिस बोटि के बृद्ध भगवान थे उसी कोटि के तियोग्लाल मार्ज थे। ९-९-'५२

आज से लगुरम २८-३० वर्ष पूर्व, जब में सावर-मती आध्यम में एक दारुक की तरह रहता था, पूज्य कियोरिलाल्याई और गोमली नाकी नो पहलेगहरूल देवा या, ऐसा मेरा खायक है। कियोरिलाल्याई की हम हुरेसा काला और गोमलीवहन को काकी वहते लग्ने हैं। हतने क्यों में उनके बरावर सम्पर्क में लाने का सीमाय मुने मिलता रहा। पूज्य काकाजी (जमनालाल-जी), से वे साल-दोसाल छोट हो थे। फिर भी बन्काजी का उनके प्रति आदर-भाव और प्रेम सदा बना रहा। इकास हो मही, जर्मनु दोलो परिकारों में घनिष्ट धान्यन्य हो गया था।

काका को जबसे मैंने देखा, वे हमेशा बसे की बीमारी से पीडित रहें। उनका शरीर निरतर हर्डी ना काचा-मात्र रहा। वे इतने कमजोर और नाजुक शेवले ये कि उनके बारे में मह कर सदा हो बना रहता था कि न जाने उनकी बारे मूं मह कर सदा हो बना रहता था कि न जाने उनकी शारीरिक स्थित में कोई परिवर्तन हुआ हो, ऐसी बात नहीं। जब वे २०-३५ वर्ष के होंगे तब पबाव के कम नहीं काते होंगे और जितम समय में जब यह ११ वर्ष के हो चुके थे, तब भी कोई विशेष युद्ध नहीं मालुम होते थे।

आध्रम में उनके व्यक्तित्व का हुमेदा ऊषा स्थान रहा। इष्यत में बादू की मगीर वीमारी ना कीई कर उत्यम होता तो काला की बोर ही दोनों की निगह कार्ती। प्रान्तिक दृष्टि से सारपार्ती के वापनवासियों ने उन दिनों बारू के बाद इन्हींको आध्रम का आधार-स्तम सा मान रखा था। वायू सावरपती-जायम की आसमा में तो जन्य व्यक्तियों में, जो जाअम के जीवन-प्राण' हो सके, काका वा मुख्य स्थान था। इसके अलावा वह हमेशा हमारे परिवार के पुरूलनों में से एक रहे, जिनकी वनह से उनके प्रति हमारी बगाय बढ़ा और पूच भावना निरत्तर बनी रही। काका सविध बी ए, एल एक बी में, तथापि उनकी सरखता, निर्मेखता और सहब-सादवी के कारण सायद ही कभी िपसी पर ऐसा असर पड़ा हो कि वह उनकी विद्वारा या चातुर्य के दबदवे में आ गया हो। उन्हें किसी प्रकार का चम, आइम्बर बनावट या दिखावट हु तक नहीं गई थी। छोटे-बंदे, गरीब-शीमत, मामूली-से-मामूली कार्यकर्ता, नेता अववा किसी सरवारी मानी आदि से काम पड़ता या ऋड़ मिनके तो उनका बही सरक-वा-मान पड़िता के तो उनका मही सरक-वा-मान कार्यक्रत होते दो वो मान कार्यक्रत किसी कर कार्यक्रत के उन्हों के स्वाप्त कर कार्यक्रत के उन्हों के स्वाप्त कर के हुक्त हो, इसका उदाहरक दूदने से भी मिलना महिकल हैं।

काका मूलत आध्यात्मिक पूरप थे। विचारवाम, बृद्धिमान, तेजस्वी और ज्ञानी । दमे के कारण शरीर उनका नाम-भात्र-साही रह गया था। वसे का दौरा उनके लिए अत्यन्त कष्टकर होता था । उसकी बेदमा देखने वालों को भी असहा होती थी। परन्तु काका उसको सहज घरीर-धर्म के अनुसार सहन किया करते थे । वे बिल्कुल निमोंही और जनक की तरह बिदेह से। इसके पीड़ा-प्रस्त होते हुए भी उन्होने कभी अपना विवेक क्षण-भर के लिए भी लोगा हो, या उनकी समझ में अतिय सबय तक कोई अंतर पढ़ा हो, ऐसा आभास-मात्र भी विसी को नहीं हुआ। जब यह लिखते थे तो ऐसा क्वजित ही हुआ हो, नि कोई आवश्यक बात उनसे छट गई हो। एक निष्णात की भाति बारीक-से-बारीक तपसीलों में भी बह उतरते थे। इसी वीच यदि दमे का दौरा हो गया तो कलम और कागज को वाजु में रख देते थे। घटो बेदना-ग्रस्त रहने पर भी जैसे ही दौरा समाप्त हुआ कि पाच मिनद के मीतर वे उसी तरह पून लिखते हुए दिलाई देते थे, मानो इस बीच कुछ हुआ ही न हो। जहां से जो बीज छूटी थी, वहीं से उसको आगे लेकर ने इस प्रकार जट जाते थे कि बासपास वाले देखनर चक्ति रह जाते

उनका आचार जिलना ही शुद्ध था, उनके विचार

उतने ही गहरे और स्मष्ट थे। उनका जीवन उनके विचारों का उल्या था। उनके आचार और विचार में कहीं भी अंतर नहीं दिखाई देता था। उनका आहार जिस प्रकार अल्प और सात्विक होता था, उसी प्रकार एक योगी की भांति पूर्णक्रोण संयमी भी था।

गरीर से विशेष धम उनसे हो नहीं सकता था। एक जगह बैठकर अधिकतर लिखने का काम ही वह कर सकते थे। फिर भी उनका सारा जीवन कर्म करते? ही गया, इसमें शंका नहीं।

गीता में स्थित-प्रज्ञ के लक्षण दिये हैं। वापू जीवन के हर क्षण जाग्रत रहते ये। उन्होंने विचार-पूर्वक, अति वाग्रह और पूरे प्रयत्न से स्थितप्रज्ञ के उन लक्षणों को वात्मसात् किया यो । वापू का पुरुपार्य अद्वितीय या । उनकी सक्ति दैविक थी । उनका प्रयत्न जीवन के अंतिम क्षम तक चालू रहा । उनकी निष्ठा अडिग थी और वे सकल रहे । परन्तु वापू से भी वड़कर स्थितप्रज्ञ के लक्षण किसी एक महापुरुप में मझे सहज-स्वामाविक दिखाई दिये हों तो वह विनोवा हैं। उनके साय-साय काका ही दूसरे महापुरुप थे, जिनका जीवन एक सच्चे निष्ठावान बात्मार्यी और तेजस्वी सत्यार्यी की तरह होते हुए भी एक अविचल स्थितप्रज्ञ की तरह था। अध्यात्म की मंब तीनों के ही जीवन में सतत और प्रखर रही। परन्तु जहां वापू के जीवन में उस भूख के रामन के लिए एक हर्ट और संवर्ग दिवाई देता है, वहां इन दोनों महापुरुपों के जीवन में उसका शमन सहज सुलभ प्राप्य मालूम देता है, जैसे कि पूर्व जन्म की तपस्या और संस्कार की वदौलत ही उसे वे जन्म के साथ लाये हों।

९ सितम्बर, मंगलवार संच्या का समय। काका ने महाप्रयाण किया। कितना अलीकिक जीवन! तिथि के हिसाब से वही उनका जन्मदिन था और वही हम सबके लिए उनकी पुण्य तिथि हो गई! विधि की लीला में कितने ही विचित्र संयोग या मधुर मिलन होते हैं। पर ऐसा पुण्य कम ही लोगों को प्राप्त होता है कि उनके जन्मपर्व पर ही उनके जीवन की पूर्णाहुति हो! काका को वह दुलंभ पुण्य प्राप्त हुआ।

में बनारस गया हुआ या विनोवा के पास । वहीं

काका का दुःखद समाचार मिला। काशी विद्यापीठ में, जहां विनोवा ठहरे हुए थे, शोक का सागर उमड़ आया। विनोवा भी स्तव्य रह गए। उनके कुछ समय मौन रहने से ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी महायुद्ध में जूझते किसी सेनापति को उसकी सेना के एक दिग्गज के गिरने का समाचार मिला हो और वह एक वढ़ती हुई जिम्मेदारी को अनुभव करते व एक दृढ़ संकल्प को ठानते अपनी शक्ति और शीर्य को चढ़ता हुआ देख रहा हो। ठीक उसी प्रकार विनोवा का व्यक्तित्व भी एक अचल निष्ठा के साथ किसी विशेष संकल्प को करता हुआ मीन रूप से व्यक्त हो रहा था ! काका के वारे में जव-जब कोई वात छिड़ी, वह कुछ क्षण के लिए ध्यानमग्न-से हो जाते थे। अपने अंतिम पत्र में काका ने विनोवा के सामने कुछ विचार प्रकट किये थे, उनकी चर्चा करते हुए विनोवा ने कहा कि "अंत समय में किशोरलालभाई अध्यात्म-जगत् में डोल रहे ये और उनके मन की स्थिति परमावस्था को प्राप्त हो चुकी थी।" काका ने अपने इसी पत्र में अपने स्वास्थ्य के विषय में उल्लेख करते हुए विनोद में लिला या कि डाक्टरों को सब कुछ देखते हुए नजदीक में मृत्यु के चिन्ह दिखाई नहीं दे रहे हैं। यह लिखने के दो-तीन दिन में ही उनका महाप्रयाण हो गया । विनोवा ने कहा, "वे हरिजनपत्रों की जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते ये। १ अन्तूवर से उन्हें मुक्त करने का आश्वासन भी दे दिया गया था। लेकिन परमात्मा को वह कहाँ मंजूर था ! उसे तो उन्हें पहले ही मुक्ति दे देनी थी। ऐसी उन्नत अवस्या में वह उन्हें उठा ले गया। इसका शोक कैसा ? मुझे तो इसकी खुशी होती है।" भूदानयज्ञ में जिस एकाग्रता से, तैलंगाना की यात्रा के वाद से, विनोवा लगे हुए हैं और नित्य प्रति पैदल चलकर हजारों मील का भ्रमण कर चुके हैं , उतनी ही एकाग्रता और विचार-शुद्धि के साथ काका भी भूदान-यज्ञ में संलग्न थे। इस यज्ञ के विषय में 'हरिजन' में जितना काका ने लिखा हैं, उसे देखकर भूदानयज्ञ के विषय में उनकी तन्मयता तया विनोवा के साय उनकी एकरसता साफ दिखाई देती है। जो काम विनोवा भ्रमण और प्रचार से कर रहे हैं, वह काम काका ने एक जगह स्थिर रहकर लेखन

द्वारा किया। विनोबा को उनका बहुत बडा सहारा था। अपने प्रवास में भदान का प्रतिपादन करते हुए विनोधा तो आगे-आगे चलते दिखाई देते थे, पर उनकी बातो का स्पष्टीकरण करनेवाले और जनके यज वा औचित्य. सचाई, महत्व और अनिवार्यता बतानेवाले काका ही थे। कहते है कि एक बार देवताओं में शगडा हुआ और जब वे इस बात का निर्णय न कर सके कि उनमें सबसे बडा कीन है तो तय हुवा कि जो सबसे पहले पथ्वी की परिश्रमा करके लौट आवेगा, वही जीता माना जायगा । सारे देवता अपने-अपने बाहन लेकर पृथ्वी की परिक्रमा करने दौड पड़े, लेकिन गणेशजी अपने ही चारो ओर तीन बार घूम गये और बोले कि पच्ची की तीन बार परिकमा बरके में सबसे पहले आ गया ह । विनीना जहा सारे भारतवर्ष में पर्यटन करके उसकी परिक्रमा करते दिलाई देते है, वहा अपने स्थान से ही अडिग होनर काका ने मूदान यज्ञ में अपना पूरा योग दिया। जो परिकमा घूमकर कर सकता है, दूसरा उसीको मन पूर्वक अपनी एकाव्रता से, एक ही जगह रहकर कर सकता है। दोनी में इतना अतर होते हए भी कितनी साम्यता रही है। मुदान-यज्ञ के लिए जहा विनोबा और काका दो थे, अब वहा अने ले बिनोबा दिलाई दे रहे है । कौन वह सकता है वि काका चारीरिक यथन में रहकर जितना काम करते रहे, अब वे शरीर से मुक्त हो सारे वातावरण में ब्याप्त होकर एक नहीं, हजारी और लालो में प्रेरणा न फक सकेगे ? भूदान का गीवर्डन कृष्ण की सरह जहां विनीवा की अगुली पर ही दिलाई देता है, वहा काओं मोहकवारियों की ठाई भारतवारियों का भी अपनी-अपनी लकडी का सहारा जैव उसमें लगने लग जायगा तब हमें इस यज के लिए एक नहीं, हजार नहीं, लाखी विनोवा विखाई देंगे। बही इस यज का विश्वरूप दर्शन होगा । इस यज्ञ को पहली पवित्र आहरि स्वरूप ही काका गये हैं। उनकी शक्ति का इस सबमें सवार हो, यही भगवान से हमारी प्रार्थना हो सकती है । मझे खयाल नहीं पडता कि काका को गोमती

काकी के दिना कभी देखा हो। दोनो का जीवन सेवा-

परायण था । पिछले ३० वर्षों में काकी ने जिस एक-निष्ठा से नाका की सेवा की है, उसकी दूसरी मिसाल नहीं दी जा सनती है। काकी ने जिस प्रकार जनकी सेवा की और उनकी हर जरूरत को बारीक-से-बारीक निगाह से देखनर नियमितता से जागरूक रहनर पुरा किया, उससे उन्होने काका की आयु में दस पाच वर्ष अवदय वढाये होगे, इसमें कोई शक ही नही। हम लोगो के बीच में यदि काका अबतक रहे ती इसका मुख्य कारण उनका सबमी जीवन जिल्ला था. उससे किसी प्रकार वस काकी की सेवा नहीं थी। काका अधिकतर बीमार रहते थे। यह स्थाभाविक ही था नि काकी उनकी सेवा में लगी रहती। परन्तु जब काकी बीमार हो जाती हो काका भी उसी दक्षता के साथ उनकी सेवा करते दीख पडते ये । काकी भोजन बनाती, कपडे घोती, घर का छोटा-मोटा सब काम करती । साथ ही एक अच्छी नसं की भाति उनकी सेवा-शुध्रूषा भी करतीं। जब मभी जरू-रत पडती और चाका के पास मदद देने को कोई व्यक्ति उपलब्ध न होता तो उनकी चिटठी-पत्री आदि का मती का काम भी वह सहज और अच्छी तरह से कर लेखी। वे स्वयं भी समझदार और बुद्धिमती है और कठिन से-कठिन अवसरो पर काका को भी अचक सलाह देने में अडिग रहती ? वे सच्चे माने में काका की जीवन-साथी थी, मित्र थी। काका यदि प्राण थे तो वह उनका शरीर-रूप हो गइ थी। सचमुच वे दो शरीर परन्तु एक प्राण-स्वरूप रहे । जब-जब काका की तीव दौरा होता था और मनमें आशकाए-कृशकाए उठने छगती थी तो या (जानकी देवीजी ) की भगवान से यही प्रार्थेना होती थी कि जब कभी ह इनको है जाय, साथ-साथ ही है जाना । दोनो का जीवन इतना एकरूप हो गया था कि एक के विनादसरे की कल्पना हो ही नहीं सनती थी।

काका के महाप्रयाण के बाद काकी को क्या लिखता ! तार में शिष्ठें प्रणाम 'गेंके । बाद में जब कर्मा में उनमें निष्ठा तो उनकी धीरता का मुसपर एक अवीब प्रमात पड़ा। उनके बेहुरे पर करणा थी। उस वैदना-पूर्व व्याकुछता के बातावरण में उनका सारा सरीर जीवन-साहित्य: अक्तूवर १९५२

निश्चल, स्थिर-जैसा दिखाई दिया। अश्रुप्रवाह निरंतर चालू था। चेहरा फीका, मुद्रा गंभीर। जिस तरह पत्थर की मूर्ति के ऊपर पानी का प्रवाह निरंतर चालू हो, वह दृश्य कठोर-से-कठोर हृदय को भी हिला देने वाला था। उनकी वाणी वेदना, थकान और जागरण के कारण घीमी पड़ चुकी थी; लेकिन वह अति कोमल और पहले से कही अधिक मधुर थी। उनके जब्द थोडे नपे-नुले और उनके योग्य ही थे। आसपास में सभी को उन्हींस धीरज मिल रहा था। वाजू के कमरे में आश्रम- वासी रामायण का पाठ कर रहे थे और चर्खा कात

रहे थे। सारा वातावरण ऋषि-मुनियों के अनुकूल जैसा होना चाहिए था वैसा ही था।

गोमतीकाकी को मैने मनः पूर्वक वार-वार प्रणाम किया और मुझे उस समय ऐसा लगा मानो ऋषि-पत्नी अरुंवती ही मेरे सामने हैं।

आज के इस किंटियुग में काका जैसे ऋषि-मुनि, , तपस्वी और योगी, साथ ही काकी जैसी सती-साध्वी को हम देखते हैं तो कीन कह सकता है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

# दरवारीलाल कोठिया

आज से २५५१ वर्ष पहले लोकवन्द्य महावीर ने विश्व के लिए स्पृहणीय भारतवर्ष के अत्यन्त रमणीक पुण्य-प्रदेश विदेहदेश (विहार प्रान्त) के 'कुण्डपुर' नगर में जन्म लिया था । 'कुण्डपुर' विदेह की राजधानी वैंगाली (वर्तमान वसाढ़) के निकट वसा हुआ था और उस समय एक मुन्दर एवं स्वतन्त्र गणसत्ताक राज्य के . रूपमें अवस्थित था । इसके शासक सिद्धार्थ नरेश थे, जो लिच्छवी ज्ञातृवंशी थे और वड़े न्याय-नीतिकुशल एवं प्रजावत्सल थे । इनकी शासन-व्यवस्था अहिंसा और गणतंत्र (प्रजातंत्र) के सिद्धान्तों के आधार पर चलती थी । ये उस समय के नी लिच्छवि (विज्जि) गणीं में एक थे और उनमें इनका अच्छा सम्मान तथा आदर था । सिद्धार्थ भी उन्हें इसी तरह सम्मान देते थे। इसीसे लिच्छवी गणों के बारे में उनके पारस्परिक, प्रेम और संगठन को वतलाते हुए वीद्धों के दीवनिकाय-उट्ठकथा बादि प्राचीन ग्रन्थों में कहा गया है कि 'यदि कोई लिच्छिव वीमार होता तो सब लिच्छिव उसे देखने आते, एक के घर उत्सव होता तो उसमें सब सम्मिलित होते, तया यदि उनके नगर में कोई साधु-सन्त आता तो उसका स्वागत करते थे।' इससे मालूम होता है कि अहिंसा के परम पुजारी नृप सिद्धार्थ के सूक्ष्म अहिंसक आचरण का कितना अधिक प्रभाव था ? जो साथी नरेश

# महावीर की जीवन-मांकी

जैन धर्म के उपासक नहीं थे वे भी सिद्धार्थ की अहिंसा-नीति का समर्थन करते थे और परस्पर भ्रातृत्वपूर्ण समानता का आदर्श उपस्थित करते थे।

सिद्धार्थ के इन्हीं समभाव, प्रेम, संगठन, प्रभावादि गुणों से आकृष्ट होकर वैशाली के (जो विदेह देश की तत्कालीन मुन्दर राजधानी तथा लिच्छिव नरेशों के प्रजातंत्र की प्रवृत्तियों की केन्द्र एवं गीरवपूर्ण नगरी थीं) प्रभावशाली नरेश चेटक ने अपनी गुणवती राज-कुमारी त्रिशला का विवाह जनके साथ कर दिया था। त्रिशला चेटक की सबसे प्यारी पुत्री थीं, इसलिए चेटक उन्हें 'प्रियकारिणी' भी कहा करते थे। त्रिशला अपने प्रभावशाली मुयोग्य पिता की मुयोग्य पुत्री होने के कारण पैतृकगुणों से सम्पन्न तथा उदारता, दया, विनय, शीलादि गुणों से भी युक्त थीं।

इसी भाग्यशाली दम्पति—त्रिशला और सिद्धार्थ —को लोकवन्द्य महावीर को जन्म देने का अचिन्त्य सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिस दिन महावीर का जन्म हुआ वह चैत मुदी तेरस का पावन दिवस था।

महावीर के जन्म नेते ही सिद्धार्थ और उनके परि-वार ने पुत्रजन्म के उपल्यय में खूब खुशियां मनाई । गरीवों को भरपूर धन-धान्य आदि दिया और सबकी मनोकामनाएं पूरी की । तथा तरह-तरह के गायन-

#### महावीर की जीवन-झाकी:दरवारीलाल कोठिया

वादिमादि फरवाये। मिद्धार्यं के कुटुम्बी जनो, समझील मित्रनरेशो, रिक्नेदारो और प्रजाबनो ने भी उन्ह वधाइया भेजी, खुशिया मनाई और याचको को दानादि दिया।

महाबीर बाल्यावस्था में ही विविध्य झानवान् और अदितीय बुद्धिमान् थे। सायु-सन्त भी ब्याना समा-धान कर देने था। सायु-सन्त भी ब्यानी सकाए पुठने जाते थे। इसीकिए कोचों ने उन्हें सन्मति कहुना मुख्क कर दिया और इस तरह वर्धमान का जोक में एक 'सन्मति' नाम भी प्रसिद्ध हो गया। बहु बड़े थीर भी था। अयकर बायदाओं से भी नहीं धवडाते थे किन्तु उनका साहन पूर्वक सायना करते थे। अन उनके साथी उन्हें बीर और जतिवीर भी करते थे।

महाबीर इस तरह बाल्याबस्या को अतिशान्त कर धीरे-धीरे कमारावस्था को प्राप्त हए और कुमारावस्था को भी छोडकर वे पूरे ३० वर्ष के युवा हो गये । अब उनके माता पिता ने उनके सामने विवाह मा प्रस्ताव रखा। किंतु महाबीर तो महावीर ही थे। उस समय जनसाधारण की जो दुर्दशा यी उसे देखकर उन्हें असह्य पीड़ा हो रही थी। उस समय की अज्ञानमञ्ज स्थिति को देखकर उनकी आत्मा सिहर उठी थी और हृदय दया से भर आया वा अतएव उनके हृदय में पूर्णरूप से वैरान्य समा चुका था। उन्होंने सोचा-इस समय देश की न्यिति धार्मिक दृष्टि से वडी खराव है, धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है। यजो में पराओ नी बिल दी जा रही है और उसे घम नहा जा रहा है। नही सरवमेष हो रहा है सो बही अवयेष हो रहा है। पराशी की तो बात ही क्या, नरी (मनुष्यो) का भी यज्ञ नरने के लिए, बेदो के सूत्र बताकर जनता, को प्रोत्साहित किया जाता है और क्तिने ही लोग नरमेघ यज्ञ भी करने पर उतारू हो रहे हैं। इस तरह जहा देखो वहा हिसा का बोल-बाला और भीषणनाण्ड मचा हुआ है। सारी पथ्वी खून से लगपन तो बड़ी हैं। इसके बतिरिक्त स्त्री, ेच्य जो दुर्व्यवहार शूद्र और प `र्दे। स्वी हो रह

बीर पृद वेदादि सास्त्र नहीं पर सन्ते । 'स्त्री पृद्रोता-धीयताप् जेते निर्मय परक वेदादि कात्र्यों की दुहाई दी जग रहीं हैं और इस तरह उन्हें कात्र से विचन रक्षा का रहा हैं । स्यू के साम समायम, उसका अनस्त्रश्च और उसके साथ सभी प्रकार का व्यवहार वन्द्र कर रक्षा हैं और यदि कोर्ड नरता है तो उसे क्ले-सै-नडा रण्ड मोगना पदवा हैं। पतियों की तो हालत ही मत पूषियों। यदि विची से अज्ञाननादय या भूल से कोर्ड अपराप वन गया तो उसे जाति, धर्म और तमाम उत्तम बादों ये च्युत करके बहिल्हत कर दिया जाता है—उनके उद्धार का कोर्ड एक्सा ही नहीं है। यह भी नहीं समुत्रा जाता कि मनुष्य मनुष्य हैं, देवता नहीं। उसहें पहारिखा हैं। सन्ती हैं और उनका मुखार भी हो सबनाहीं

महाबीर इस बजानमय स्थिति को देखकर खिन्न हो उठे, उनकी बारमा सिहर उठी और हदय दया से भर आया। वे सोचने लगे कि यदि यह स्थिति कुछ समय और रही तो बहिनक और आध्यात्मिक ऋषियो की यह पवित्र भारतभूमि नरककुण्ड वन जायगी और मानव दानव हो जायगा । जिस भारतमीम के मस्तक को ऋपगदेव, राम और बरिष्टनेमि-जैसे अहिसक महापूरुयों ने ऊचा किया और अपने कमों से उसे पावन वनाया उसके याये पर हिंसा का वह भीपण कलक लगेमा जो घळ न सकेगा। इस हिंसाओर अडलाको थीय ही दूर करना चाहिए । यद्यपि राजकीय दण्ड-विधान-आदेश से यह बहुत कुछ दूर हो सकती है पर उसका असर लोगों के घरीर पर ही पड़ेगा-हृदय एव आत्मा पर नहीं। आत्मा पर असर डालने के लिए तो अन्दर की आवाज—उपदेश हो होना चाहिए और वह उपदेश पूर्ण सफल एवं बल्याणप्रद तभी हो सकता है जब में स्वय पूर्व अहिंसा की प्रतिष्ठा कर लू। इसलिए अब भेरा घर में रहना किसी भी प्रकार उचित नहीं है। घर मैं रहकर सुक्षोपमोग करना और अहिंगा की पूर्ण साधना करना दोनो बाते सम्भव नही है। यह सोचकर उन्होने घर छोडने का निश्चय कर लिया।

उनने इस निश्चय को जानकर माना निराला, पिता सिद्धार्थ और सभी प्रियंजन अवाक् रह गये परन्तु उनकी दृइता को देखकर उन्हें संसार के कल्याण के मार्ग से रोकना उचित नहीं समझा और सबने उन्हें ऐसा करने की अनुमित दे दी। संसार-भी ह सभ्य जनों ने भी उनके इस लोकोत्तर कार्य की प्रशंसा की और गुणानुबाद किया।

राजकुमार महावीर सव तरह के सुखों और राज्य का त्याग कर निर्प्रन्य-अचेल हो वन-वनमें, पहाड़ों की गुफाओं और वृक्षों की कोटरों में समाधि लगाकर अहिंसा की साधना करने लगे। काम-क्रोध, राग-द्वेप, मोह-माया, छल-ईर्प्या आदि आत्मा के अन्तरंग शत्रुओं पर विजय पाने लगे । वे जो कायक्लेशादि बाह्य तप तपते थे वह अंतरंग की ज्ञानादि शक्तियों को विकसित व पुष्ट करने के लिए करते थे। उनपर जो विघ्नवाधाएं और उपसर्ग आते थे उन्हें वे वीरता के साय जीतते थे। इस प्रकार लगातार वारह वर्ष तक मीन-पूर्वक तपश्चरण करने के पश्चात् उन्होंने कर्म कलंक को नाश कर अर्हत अर्थात् 'जीवनमुक्त' अवस्या प्राप्त की। आत्मा के विकास की सबसे ऊंची अवस्था संसार दशा में यही 'अर्हत् अवस्था' है जो लोकपूज्य और लोक के लिए स्मृहणीय है। वौद्धग्रन्थों में इसी को 'अईत् सम्यक् 'सम्बुद्ध' कहा गया है।

जारमा में अहिंसा की पूर्ण प्रतिष्ठा कर ली, समस्त जीवों पर उनका समभाव हो गया—उनकी दृष्टि में न कोई शत्रु रहा और न कोई मित्र । सर्प-नेवला, सिह-गाय जैसे जाति-विरोधी जीव भी उनके सान्निध्य में आकर अपने वैर-विरोध को भूल गये । वातावरण में आफ्र अपने वैर-विरोध को भूल गये । वातावरण में अपूर्व शान्ति आ गई । महावीर के इस स्वामाविक आत्मिक प्रभाव से आकृष्ट होकर लोग स्वयमेव उनके पास आने लगे । महावीर ने उचित अवसर और समय देखकर लोगों को अहिंसा का उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया । 'अहिंसा परमोधमं' कह कर अहिंसा को परम-धमं और हिंसा को अधमं वतलाया । यत्रों में होनेवाली पशुविल को अधमं कहा और उसका अनुभव तथा युक्तियों द्वारा तीव्र विरोध किया । जगह-जगह जाकर विशाल समाएं करके उसकी वुराइयां वतलाई और

अहिंसा के अपरिमित लाभ वतलाये। इस तरह लगातार तीस वर्ष तक उन्होंने अहिंसा का प्रभावशाली प्रचार किया, जिसका यजों की हिंसा पर इतना प्रभाव पड़ा कि पशु-यज्ञ के स्थान पर शान्तियज्ञ, ब्रह्मयज्ञ आदि अहिंसक यजों का प्रतिपादन होने लगा और यज्ञ में पिष्ट पशु (आटे के पशु) का विधान किया जाने लगा। इस बात को लोकमान्य तिलक जैसे उच्च कोटि के विचारक विद्वानों ने भी स्वीकार किया है।

पशुजाति की रक्षा और धर्मान्यता के निराकरण का कार्य करने के साथ ही महावीर ने हीनों, पतितजनों तथा स्त्रियों के उद्घार का भी कार्य किया। 'प्रत्येक योग्य प्राणी धर्म धारण कर सकता है और अपने आत्मा का कल्याण कर सकता है ' इस उदार घोषणा के साथ उन्हें ऊंचे उठ सकने का आश्वासन, बल और साहस दिया। महावीर के संघ में पापी से पापी भी सम्मिलित हो सकते ये और उन्हें वर्मवारण की अनुज्ञा थी। उनका स्पष्ट उपदेश था कि 'पाप से घृणा करो, पापी से नहीं' और इसीलिए उनके संघ का उस समय जो विशाल रूप था वह तत्कालीन अन्य संघों में कम मिलता या । ज्येट्ठा बीर अंजनचोर जैसे पापियों का उद्घार महावीर के उदारधर्म ने किया था। इन्हीं सब बातों से मृहान् आचार्य स्वामी समन्तभद्र ने महावीर के शासन (तीर्थ-घर्म) को 'सर्वोदय तीर्य' सबका उदय करनेवाला कहा हैं। उनके धमं की यह सबसे बड़ी विशेषता हैं।

महावीर ने अपने उपदेशों में जिन तत्त्वज्ञानपूर्ण सिद्धान्तों का प्रतिपादन एवं प्रकाशन किया उन पर कुछ प्रकाश डारुना अवस्थक है:—

१ सर्वज (परमात्म) वाद—जहां अन्य धर्मों में जीव को सदैव ईरवर का दास रहना वतलाया गया है वहां जैन धर्म का मन्तव्य है कि प्रत्येक योग्य आत्मा अपने अध्यवसाय एवं प्रयत्नों द्वारा स्वतंत्र, पूर्ण एवं ईरवर— सर्वज्ञ परमात्मा वन सकता है। जैसे एक छह वर्ष का विद्यार्थी' 'अ आ इ ' सीखता हुआ एक-एक दर्जे को पास करके एम. ए. और डाक्टर वन जाता है और छह वर्ष के अल्प क्रारा अने-धान्य आदि दिया न कर छेता है, उसी रूप पूरी कीं। तथा तरह-तरह क प्रवरणों

#### महावीर की जीवन-झांकी : दरवारीलाल कोठिया

को दूर करता हुआ महात्मा तथा परमात्मा वन जाता है। कुछ दौषो और आवरणो की दूर करने से महात्मा और सर्व दोयो तया आवरणो को दर करने से परमात्मा कहलाता है। अतएव जैनधर्म में गणो की अपेक्षा पूर्ण विकसित आत्मा ही परमात्मा है, सर्वेज एव ईश्वर है--उससे जदा एक रूप कोई ईश्वर नहीं है। यथार्थत गुणो की अपेक्षा जैनवमं में ईश्वर और जीव में कोई मेद नहीं है। यदि भेद है तो वह यही कि जीव कमें बन्धन मुक्त है और ईश्वर कर्म-बन्धन मुक्त है अपर कर्म-बन्धन के दूर हो जाने पर वह भी ईश्वर हो जाता है। इस तरह जैनधर्म में अनन्त ईश्वर है। हम व आप भी कर्म-बन्धन से मनत हो जाने पर ईश्वर (सर्वज्ञ) बन सकते है। पूजा, 'जपासनादि जनममें में मुक्त न होने तक ही बतलाई है। उसके बाद वह और ईश्वर सब स्वतत्र व समान है और अनन्त गुणो के भण्डार है। यही सर्वेजवाद अयवा. परमारमबाद है जो सबसे निराला है। त्रिपिटिको (मजिसमिनकाय अनु पृ. ५७ आदि ) में महावीर (निसाठनातपुत्त) को वृद्ध और उनके आनन्द आदि शिक्यों ने 'सर्वज सर्वदर्शी निरन्तर समस्त ज्ञान दर्शन-बाला' कहकरें अनेक जगह उल्लेखित विया है।

२ रत्नत्रय पर्म-शिव परमात्मा केंग्ने वन सनता है, इस बात को भी जैनकमं में बतका दिया है। जो जीव सम्पन्नत्योंन, सम्पन्नान और सम्पन्नदिन उप रत्नत्रय पर्म को पारण केंद्रता हूँ बहु ससार के हुनो से मृत्य-पराम्ह्या हो आडा है।

(क) क्रान्मकुर्यात-मूठता और अभिमान रहित होकर मधार्प (निर्दोप) वेव (परमात्मा), यथार्थ बचन और पपार्च महात्मा को मानना और उनपर ही अपना विश्वास करता।

(स) सम्मन्जात-न नम, न ज्यादा, यथार्थ, सन्देह और विपर्यंप रहित तत्त्व का ज्ञान करना ।

(ग) सम्यक्चरित्र-हिंसा न करना, शुठ न बोलना, पर-बस्तु को बिना दिये ग्रहण न करना, बहा-चर्यपूर्वक रहुना, अपरिग्रही होना । गृहस्य इनका पालन एक देश और निर्प्रत्य साधु पूर्णत करते हैं।

(वे) सन्त नुष्युक्त अतीव, आलव, बग्म, ध्र सबर, निर्वास और मोख में सात तत्व (अस्तुमूत पदार्ष) है। यो चेतना (आगने देखने नो) गुग्न से मुक्त हैं यह मी चेतना (आगने देखने नो) गुग्न से मुक्त हैं यह मी चेतन्त है। इसे चेतु अवीपतप्य है। इसे चुर्युन, वर्म, अयमं, आगता बोर कारू ये पाय भेद है। जिन कारणों से जीव और पुर्युन का सबस होता है वे मिथााव, अविस्ति, प्रमात, क्याय और नोण आयव तर्ष है। पूपानों को तरह जीव और पुर्युन्त कर यो गाड़ सम्बन्ध है वह वर्ष तर्स है। अनागत क्या मा न होना सवर तर्स है और सम्बन्ध में रहित हो जाना मोल है। मुनुषु और सम्बन्ध में रहित हो जाना मोल है। मुनुषु और सम्बन्ध में रहित हो जाना मोल है। मुनुषु और सम्बन्ध में के लिए

४ कमं — तो जीव को पराधीन बनाता है - उसकी स्वतता में बाइक हैं बहु कमं है । इस कमें की बजह से ही जीवारमा नाना योनियों में ध्रमण करता हैं। इसके बानावरण, वर्धनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयू, नाम, वीच कीर कर्याय में बाठ भेद हैं। इसके भी उत्तर भेद अनेक हैं।

५ अनेकाल और स्पादाद जैन धर्म को ठीक तरह समसने समसाने और भीमासा करने कराने के लिए महाबीर ने जैनचर्म के साथ ही जैनदर्शन का भी प्रस्पण किया।

(क) अनेकान्त, नाना धर्मस्य वस्तु अनेकान्त है।
(ख) अपेक्षा से नाना धर्मों को कहनेवाले वक्त प्रकार की स्यादाद कहते है। अपेक्षाबाद, क्यवित्वाद आदि इसीके नाम है।

इन और ऐसे ही और अनेक सिद्धान्ती का महाबीर ने प्रतिपादन किया वा जो जैन शास्त्रों से ज्ञातव्य है।

अन्तमं ७२ वर्षं की वायु में कातिक नदी अमीकत्म के प्रातः महावीर ने पावा (विहार) में <u>निर्वातः</u> प्राप्त विया जिसकी स्पृति में जैन-समाज में वीरनिर्वाण सवत् प्रचव्ित हैं और जो आज <u>२४७८ व</u>ल रहा है।

### अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार С

काठियावाड़ ने भारत को आधुनिक काल में दो महापुरुष दिये हैं। एक ऋषि दयानन्द और दूसरा महारमा गांबी। एक समुद्र के किनारे जन्मा अतः वर्तमान ने समझौता करके चला, दूसरा मोवीं राज्य के टंकारा गांव में उत्पन्न हुआ, अतः उसका मूलमंत्र हुआ-वह 'पनों को कैंवी से कतरने के लिए नहीं आया, वह नी जड़मूल से नष्ट करने आया है।'

ऋषि दयानन्द के बचपन का नाम मूलगंकर था। मुलदांकर के पिता अम्बादांकर आंदीच्य ब्राह्मण थे। वे एक अच्छे जमींदार थे। 'ऑदीच्य' शब्द बता रहा है कि यह कुल किसी समय पंजाब से आकर वहां वसा या, और अपने मुक्त्यान को उसने भुकाया नहीं। अम्बागंकर कट्टर गैव थे। शिवरावि को उनके यहां सब लोग भक्तिभाव से उपवास रखते थे। और पृद्यगण शिवमन्दिर के ही अन्दर पूजा-याठ मजन-कीर्नन में सारी रात गुजारते थे। मूलबंकर ने भी एक शिव-रात्रि पर व्रत रक्ता । मन्दिर में दस बजते-बजते सव सो गये पर बाल मूलबंकर नहीं सीया। उनका छोटा दिमाग यह मोचने में व्यस्त या कि क्या शिवरात्रि की कथा का 'शिव' यही है, जो अपने ऊपर चढ़ाये गए चढ़ावे की खाने में चूहों को भी नहीं रोक सकता ? नवंबक्तिमान् थीर मबेंब्यानक 'शिव' नो यह नहीं है, फिर वह कहां है? बालक के मन में कांनुहरू और जिज्ञासा जाग उठे।

मूल्यंकर ने बाल्यावस्था समाप्त कर तरुणाई में प्रवेश किया। परन्तु उसके मन और हृदय में यह आन्दोल्लन बरावर चलता रहा, कि असली 'शिव' कहां है? कैलामवासी शिव की खोज उसने जारी रखी। उसके दयालु चाचा ने इस खोज में थोड़ी बहुत महायता की। परन्तु एक दिन वे भी चल बसे। उनकी मृत्यु ने बालक के मन में दूसरा प्रश्न पैदा किया, यह मृत्यु क्यों आनी है, क्या इससे बचा नहीं जा सकता? तरुण मूल्यंकर का हृदय तूकान से भर गया। घरनर में चाचा का उसपर अत्यविक स्तेह था, जब वे ही नहीं रहे, नब

# राष्ट्र-निर्माता ऋषि द्यानन्द

तरुण मूलबंकर को घर मूना-सूना लगने लगा । इसी वीच उनकी स्नेहमयी भगिनी की भी मृत्यु हो गई। इस मृत्यु से उसका मन इस दुनिया की ओर से सर्वया विरक्त हो गया । वह एक दिन प्रातः काल घर से लोटा लेकर निकल भागा । पर शीघ्र पकड़ लिया गया । उसको दुनिया में फंसाए रखने के लिए उसके विवाह की तैया-रियां होने लगी । मूलदांकर भी अब १८ साल का युवा हो गया था। वह अबोच बालक नहीं था। परमात्मा, र्वार मृत्यू के विषय में कुछ सोच-विचार सकता था। मृक्ति और निवांण कैमें मिलता है, यह उसने पढ़ लिया था। वह जन्ममरण से मुक्ति पाने की खोज में एक रात जो भागा, फिर वह घर बापस नहीं आया, और न कमी उसने स्त्रनः अपने गांव का पता आजन्म किसी को दिया। वह जीते हुए फिर कभी काठियावाड़ ही नहीं गया। मूल्यंकर ने घरवार का मोह छोड़ा और एक मंन्यासी से संन्यास ले लिया और अब वह दण्डी स्वामी दयानन्द सम्स्वती हो गया।

दयानन्द की खोज जारी थी। वह अमली शिव के दर्शन करना चाहता था और साथ में वह जन्म-मरण से छूटना चाहता था। वह मृत्यु पर विजय पाने को उत्मुक था। वह एक बीर योदा के समान गुरु की लोज में निकल पड़ा। एक मठ से दूसरे मठ, एक अलाड़े ने दूसरे अवाड़े में गुरुओं की खोज में फिरा। परन्तु उसको मच्चे गुरु के कहीं दर्शन नहीं हुए । कन्दराओं, गुफ़ाओं और पर्वत की चोटियों को भी उसने इस खोज में पार किया । परन्तु उसको सच्चे गृह के दर्शन नहीं हुए। हताय दयानन्द मुक्ति और सच्चे शिव की खोज में अल्यवनन्दा की चोटी पर पहुँच गया। उसका टारीर बीर मन दोनों यके हुए थे । हिमाच्छादित घवलगिरि ने भी उसके मन में आशा नहीं जगाई और वह शिवर से नीचे कूदने और अपना प्राणान्त करने को तैयार हो गया । जब वह कूटने को था उसको अन्तर्ध्विन मुनाई दी—दयानन्द देश के अन्दर दुःच, दारिद्रघ छाया

#### राष्ट्र-निर्माता ऋषि दयानन्द: अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

हुआ है, और तुससे भी अधिक छोग दु खी, निराझ और हतास है। उनको तेरी मदद और सेवा की बरूरत है। उनके जिए तू जी। दयानन्द को अन्तर्ज्योति मिल गई। सास्तविक शिव का पता मिल यथा। उसने अपना जीवन जनता की सेवा में उत्सर्ग वरने का सक्तर वर जिया। जनसेवा के दृढ सकरण के साथ वह चोटी से उत्तरा।

अब उसको जन-सेवा के योग्य शिक्षा की जरूरत थी। गुरुकी लोज में वह मयुरा पहुचा। वहास्वामी विरजानन्द से उसने शास्त्रों का अध्ययन किया। नए गुरुजी भट्टोजीदीक्षित की सिद्धान्तकीमुदी के कट्टर विरोधी थे, और वे किसी को अपना शिष्य बनाने से पहले उसके मन में उसके प्रति तिरस्कार भरने के लिए उससे उस पर जूते लगवाते य । स्वामी दवानन्द से भी उन्होने लगवाए। दयानन्द को जिस मुरु की खोज थी वह मिल गया । गुरु में दयानन्द की अपूर्व मक्ति थी । दोनो एक सम्प्रदाय के सन्यासी थे ! गुर कर्तारपुर (जालन्धर) के निवासी थे। दुवले-पतले और अत्यन्त कोयी प्रजानश सन्यासी थे। परन्तु उनकी विद्वता प्रसिद्ध थी। काधी और मिथिला भी उस समय मयुरा को मानते थे। दयानन्द गुरुनेवा में सदा तत्पर रहते थे। यमुना के मध्य से गृह ने स्नान के लिए क्लबों भर भरकर जल राते। कमरे में झाड़ देते। एक दिन झाड़ देकर कूडा दरवाजे के पीछे जमा कर दिया। अचानक उस पर गृह का पैर पष्ड गया । बस फिर क्या था, दण्डी युवा दयानन्द पर बरस पडे। पर शिष्य ने चूं तक न की। क्षमा मागते हुए यही कहा, गृहजी आपको ही इससे दर्द हुआ होगा। हाम के अगूठे पर लगी इस चोट को ऋषि दयानन्द कभी भूले नहीं। विद्याध्यमन समाप्त करने के बाद शिय्य छोग केकर गुरु दक्षिणा देने पहुचे । परन्तु गुरु ने नहा-'वेटा । मुझे यह दक्षिणा नही चाहिए। तुम योग्य हो, समर्थ हो, तुम ही इस काम को कर सकते हो। एक तो देश से अज्ञान-अन्धकार दूर नरो, रुप्त आप-प्रन्यो का प्रचार करो और नाना मतो के जाल को छिन्न-विच्छित करके सुद्ध वैदिक धर्मका प्रवारक से।' शिष्य ने गुरु के आदेख के आगे मस्तक नत कर दिया। अलखनन्दा-तट पर

विए सक्त को पूराक्र के वापय गुरु ने दिखादिया। गुरु का आ सीर्वाद पाकर स्वामी दमानन्द जन-सेवा और अविवा-अज्ञान अल्यकार दूर करने के छिए चल यदे।

गगा-यम्ना के बीच का प्रदेश सदा से नवीन विचार-धाराओ का केन्द्र रहा है। अधर्ववेद की इस नारण वडी महिमा है। स्वामी दयानद ने भी अपने प्रचार के लिए यही क्षेत्र चुना। उन दिनो रेल, मोटर, साइकिल कुछ नहीं थीं। प्रचारक को पदल ही गाव-गाव और शहर शहर घूमना पडता या। ऋषि ने देश मर में युमने के बाद अनुभव किया कि अन्धविश्वास और जडता .. का मुख्य कारण मूर्ति पूजा है। यह बुद्धि को जग लगा देती है। इसके विपरीत नए धर्म-ईसाई धर्म-राज्याश्रय के बल पर तेजी से फैल रहे हैं। वे नया जीवन, नृतन दिष्टिकोण, नवीन विचार देते है और अन्यकार से प्रकाश में ले आते है। बुद्धि और तर्क के अभाव में दढ-विश्वास अन्या और लगडा लूला है। वह टिना रह समता है। परन्तु फैल नहीं सकता, न दूसरे को प्रभावित कर सकता है। देश-भ्रमण में ऋषि ने नाना मतो के कारण उत्पन्न विवादो, अद्भुत प्रयाओ, मूढ विश्वासो, जडता, समाज को सीण करने वाले रीति रिवाजो को भी देखा। ऋषि ने देखा मतो और पयो की अनैतिकता को दूर करने का एक मार्ग सद्ध वैदिक धर्म का प्रचार है। वेदो के प्रति उपनिषदो, गोना और वेदान्त ने जो प्रतिक्रिया उत्पन की है, उस को दूर कर हिंदू जनता को सुद्ध वैदिक घर्म का स्रोत दिखाने से ही हिंदू जाति में एकता और नया जीवन उत्पन्न हो सकता है। वेद ही एक ऐसा आधार है, जहा सब हिन्दू एक हो सकते है। इसको अनुभव करके ऋपि ने बेद का सन्देश देश में फैलाना शुरू किया। इसी समय कुम्भ का मेला बाया । दयानन्द ने इसको अनुपम व्यवसर समझा और हरिद्वार पहुच गए। यहा ऋषि ने अनुभव किया कि उनके त्याग और उनकी तपस्या में कुछ कमी है। इस कारण उनकी वाणीका प्रमाव कुछ नहीं पड रहा है। ऋषि ने सबैमेघ यज्ञ किया। छगोटी को छोड कर सब वस्त्र त्याग दिये। कीमती वस्त्र और अपनी सब पुस्तकें युद्द के पास मेज दी। ऋषि दयानंद ने सबैमेय यज्ञ और सर्वस्य त्याग के पश्चात् 'पाखंड खंडिनी पताका' फहराई। इस अद्भुत पताका ने जनता को आर्कापत किया। ऋषि की प्रभावशान्त्री वाणी हिमालय और गंगा की तरंगों से टकरा कर सर्वत्र गूंज गई। देश ने अनुभव किया कि एक अपूर्व शक्ति का उदय हुआ है।

गंगा-तट पर जब ऋषि घम रहे थे, और घोर तपस्या • कर रहे थे, गांवों में जाना तक छोड़ दिया था, उसी समय देश में प्रवल झंझावात आया. देश ने एक करवट ली, पराधीनता का पाश काटने का एक महान यतन किया, बोर ऋषि गंगा-बास-तट छोड़ कर सीघे झांसी की बोर रवाता हो गये। मध्यप्रदेश में फिरने लगे। इस स्वातन्त्रय युद्ध के अन्दर ऋषि ने भाग लिया, यह निश्चित है। यह इतिहास ने अब मान लिया है, पर क्या भाग लिया, और किस रूप में भाग लिया, यह अभी खोज होनी शेप है। भारतीय क्रांति का यह पन्ना अभी अज्ञात है। परन्त, यह निश्चित है कि इसने ऋषि के विचारों की प्रभावित किया । वे केवल धर्म-मुघारक नहीं रहे । राजनीति के दीक्षा-गुरु भी हो गये। परन्तु जिस जाति के हाथ से गस्त्र भी छीन लिये जावें, उसके पास घामिक सामाजिक सुघार ही मुक्ति का मार्ग शेप रह जाता है। राज-पूताना में इस समय भी यस्य थे। ऋषि को राजपूतों के शीर्य से बहुत आशा थी । अपने प्रचार-काल का एक बड़ा भाग वहां लगाया । परन्तु उनकी आया फलवती नहीं हुई। तब उन की दृष्टि ब्रिटिश सरकार को सैनिक देने वाले प्रान्त पंजाब पर पड़ी और यहां ऋषि को आंशिक सफलता भी मिली। परन्तु इससे पहले कि वे अपना कार्य थागे बढ़ाते उनकी जीवन-छीला ही समाप्त हो गई। उस समय भी उनके पास जो व्यक्ति रह गया था जिसने ऋषि के जहर के प्रभाव से क्षत-विक्षत शरीर की देखा था और इस अवस्था में भी उनके चेहरे पर अपूर्व शान्ति देखी थी, और 'प्रमुतेरी इच्छा पूर्ण हो;' 'ऑम् झान्तिः गान्तिः गान्तिः' का स्पष्ट उच्चारण मुना था, वह एक पंजाबी ही युवा था। नास्तिक गुरुदत्त इससे आस्तिक गुरुदत्त हो गया । परन्तु वह स्वाधीनता-संग्राम का सैनिक नहीं बना।

जब स्वराज्य का नाम लेना भी अपराध था. उस समय मंत्रद्रष्टा ऋषि ने घोषणा की, रही-से-रही स्वराज्य भी अच्छे-से-अच्छे सुराज्य से बढ़ कर है। ऋषि ने देखा था कि पहले स्वातन्त्र्य-युद्ध के बाद ब्रिटिंग शासकों ने जनता के साथ कैसा अमानुपिक वर्ताव किया था। वे इस से अव्य हो गये थे। उनको यह भी खलता था कि अंग्रेज इस देश के अन्दर रह कर भी इस देश से घणा करते है और देशी जते की कचहरियों तक में नहीं आने देते । इसने ऋषि को कट्टर स्वदेशी का ब्रती बना दिया। देश की गरीबी को वे कभी नहीं भूले। जहां गो-रक्षा के लिये गौशालाएं स्थापित कीं, गौ-करणा निधि कियी वहां नए नए उद्योगों को सीखने के लिये इयामजी कृष्णवर्मा और अन्य अनेक युवकों को जर्मनी भेजा। उस समय का नया संयुक्त जर्मनी तेजी से आगे बढ़ रहा था और इंग्लैंड को चुनोती दे रहा था। नए उद्योगों और बंबों की शिक्षा पाने के छिये ऋषि ने जमेनी को उपयुक्त स्थान समझा और वहां योग्य युवकों को छात्रवृत्तियां देकर भेजते रहे। वे एकमुखी नहीं थे। वे सर्वतोम्की प्रतिभा के सुवारक थे। उनकी नजर चारों और थी।

वे कट्टर नहीं थे। आलोचना में वे अवश्य स्पष्ट वक्ता थे। लाई इफरिन ने जब विक्टोरिया के साम्राज्ञी होने की घोषणा करने के लिए दिल्ली में दरबार किया था, उस समय भी ऋषि ने सब को मिल कर एकता स्थापित करने की कोशिश की थी। सर सय्यदब्रहमद खां, केशवचन्द्र सेन प्रमृति उस समय के बड़े बड़े नेता उस 'एकता सम्मेळन' में एकत्रित हुए थे । वे समझते थे कि वार्मिक एकता होने पर हो देश शोघ्र स्वाधीन हो सकता हैं। परन्तु वे अपने सिद्धांतों में समझौता नहीं करते थे। थियासफिस्टों के साथ इसी कारण उनका मेल होकर भी टूट गया । परन्तु जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे को--जो प्रार्थना समाज के एक नेता थे—उन्होंने परोपकारिणी समा का सदस्य वनाया जिसको उन्होंने वसीयत कर अपनी समस्त पुस्तकों को छापने, बेचने और वैदिक यंत्रा-लय का स्वामित्व सींपा। जस्टिस रानाई का नाम उसके सदस्यों में होना इस वात का एक प्रमाण है, कि वे कट्टर

#### राष्ट्-निर्माता ऋषि दयानन्द : अवनीन्द्रकुमार विद्यालकार

और साप्रसायिक मनोवृत्ति के नहीं थे। वे एक उदार धर्म-समात्र मुपारक और देश की राजनीतिक जेनना को जगाने वाले थे। नुज्यीदाय को भी नाला क्यों का पाखड कच्छा नहीं लगा था। परन्तु वे सुनार के समान कोमल चीट करें, क्यां देश या। विंतु उद्यय दोनों कार की, बन्तर दोनों में यही था। विंतु उद्यय दोनों का एक था।

देश का एक वहा शिक्षित वर्ग हीनना की भावना ने ग्रसिन था। आज जैसे कुछ छोग मास्को को देखन है, और वहा से प्रेरणा पाने हैं, उसी प्रकार उस समय ना शिक्षित वर्ग रुन्दन को तीर्थ और बादर्श मानताथा । इस हीनताको भावनाको दूर करने के लिये जर्मनी में मल वेदो की मना कर यहा छत्रवाया और जनका भाष्य आरम्भ निया। वेद-माप्य की जनकी शैली नवीन थी, उन्होंने पुरानी परिपादी का स्वाग कर दिया । प्र-येक शब्द के उन्होंने तीन वर्ष बाध्यान्मिक, आधिदैविक और आधिमौतिक निये। महीघर के माप्य की उन्होंने नडी आलोचना की। ऋग्वेद भाष्य-मिना' में उन्होंने जिम वेद-भाष्य शैली का प्रतिपादन किया, उस और अब विद्वाना का ध्यान वाकपित हजा है। ऋषि यदि यह अग्रेजी में दिखने, शो उस समय इल चल सच गई होती । परन्तु ऋषि ने इस भोर ध्यान ही नहीं दिया। यह बाज एक बारवर्य की बात हो सकती है, परन्तु उस स्वदेश-मनन के दिए यह कोई आक्रपंग नही था। वह अपने देशवासियो तक पहचना चाहता था। इसलिए उसने गुजरानी होने हुए भी हिंदी की अपनाया । सस्तुन का उद्भट विद्वान होने हए भी. हाओं के पडितों की पराजय देकर भी, कुलमीदान के समान अपना महान् ग्रम 'सन्यार्थ प्रवास' हिंदी में लिखा। जब विमान बानाश में महराने भी न थे, उस समय

क्षपि ने विमानों ने इस देश में होने वा उट्टेंग विचा। क्षपि ने विमानों ने इस देश में होने वा उट्टेंग विचा। क्षप्तर-वे-तार ना भी उल्लेख निचा। बायुनिक शिक्षित समाज ने उत्तवा उपहास किया। पर नई सोजा ने विद्ध कर दिवा है कि ऋषि वा वहना गलत नहीं था। देश ने तरित तुकां में स्वाभिमान, देश ने प्रति ऋषुराज बोर तर्षे वृद्धि बोजावत किया। इस उद्देश में वे पूर्णें सफल हुए। पनाच ने एन प्रसिद्ध साम्पनादी ने नहा था नि उनको जाति ना पविन जीर साम्पनादी 'संस्पार्च प्रसार्च' नै वाय्यत ने दानाया। यही नारण है नि देश के अन्दर सप्तद जाति ने नेन्द्रों में पनाव मदा आगे रहा। जायँ-युक्त इसके भी नेता हुए।

'सन्यार्थ प्रकारा' वे पहले दस सम्मुटासी में ऋषि ने अपने नृतन दर्शन की व्याख्या की है। परमात्मा जात्मा और प्रकृति इन तीनों की माननेवाला प्राना त्रैतवाद उन्हाने पून स्यापित विचा । वेदान्त के नाम पर चल रहे डोग का जबाव उन्हाने इस प्रकार दिया। गीता ने वेदों की निन्दा की थी और प्रतको कर्मकार बाला थनाया था। ऋषि ने यज्ञ-दर्म को पून जारी किया। इसने माय प्राचीन वर्ण-ध्यवस्था को गण-कर्म स्वमात के आधार पर स्यापिन किया और लिला कि यदि बैध्य का पुत्र ब्राह्मण गुण का हो, और ब्राह्मण पुत्र बैदय गण का हो, तो दोनो अपनी मन्तान बदल लें। यह वैयक्तिक नम्पत्ति पर ही क्ठोर प्रहार नहीं, अपिन एक कार्तिकारी विचार भी है। मार्क्याद का इममें अनेक लोग जवाब देखते हैं। इसके अतिरिक्त ऋषि ने 'ययेमा बाच करूपाणी या बदानी जनेम्य , की घोषणा कर बेदो का अध्ययन करने वा सनव्यमात्र की अधिकार दिया, कन्याओं की शिक्षा देने और बालकों ने समान उनने लिये गरकल सीरने के लिये वहा । बाल-विवाह के विरुद्ध आवाज उठाई। 'सन्यामे प्रकाश' इस कारण केवल धर्मशास्त्र की विवेचना का ग्रंथ न होकर 'समाज धास्त्र' ना एक ग्रम हो गया है। ऋषि का अपने मत के प्रति कोई आग्रह नहीं । उन्होंने वहा कि यदि तर्क और युद्धि वहें तेमी 'उनको स्वीकार करो, अन्यया नहीं । तर्व और वृद्धि को मर्व प्रयम स्थान देने बाला और कोई सुधारक उनके समान इस यग में नहीं हुआ। परन्तु वेद में आगे वे भी झुर जाते हैं। यहा तक और बृद्धिका अन्त हो जाता है। बद्धि-विलास पर लगाई गई यह सीमा और पावन्दी आज वे अविस्वास ने युग में यदि अखरे तो नया आरचर्य <sup>1</sup> परन्तु ऋषि विस्वानों के सुप में उत्पन हुए थे, यह न भूलना चाहिए । इस समय के लिए यह नववून का सूचक था । और ऋषि इस दिष्टि में यग प्रवर्त्तंत्र है ।

भारत आज भी फकीरों का देश माना जाता है। यह दूसरी बात है कि फक़ीरी का यह वाना वदनाम हो गया है पर इसका जो सन्देश है; जिस भावना से भारत की आत्मा ने फकीरी की ग्रहण किया या वह आज भी अक्षुण्ण है। फकोरी के अनेक आदर्श युग-युग से हमारे सामने रहे हैं। कश्यप मुनि से लेकर, जो सृष्टि के जन्म-दाता हैं, अरविन्द तक के आदर्शों में समानता रहते हुए भी एक भिन्नता है। इसे विविधता कहें तो अधिक ठीक रहेगा। ज्ञान, तप, भिक्त और कर्म एक ही शक्ति के रूप हैं। किस युग को किस रूप की आवश्यकता होती है यह उस युग की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। वर्तमान भारत के निर्माताओं का चित्रण करने पर इस प्रश्न का उत्तर मिल सकता है। खेत वस्त्रों में गांधी भी फकीर थे। कर्म उनका मूल मंत्र था। कर्म में ही वे तप देखते थे। उसके प्रति निष्ठा उनकी भिक्त थी और विना ज्ञान तो कर्म कर ही कौन सकता है ? कर्मरूपी सूर्य के वे सब ग्रह थे। उसीके चारों ओर वे घूमते थे।

लेकिन केवल गान्धी का मंत्र कर्म हो यह वात नहीं थीं । उनसे पूर्व इस देश की जागृति के जो अग्रदूत थे वे सव कर्म के उपासक थे। राजा राममोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्य के नाम उदाहरण के लिए दिये जा सकते हैं। इन चारों की कार्य विविध में अन्तर था। उस अन्तर की हम विभेद के अर्थों में न लें तो उसका सही-सही रूप समझा जा सकता है। आत्मा-परमात्मा का दर्शन सर्व-सम्मत नहीं है। न कभी हुआ और शायद कभी होगा भी नहीं। विभिन्न रूपों में उसके अस्ति नास्ति की कल्पना संसार ने की है। जिन महापुरुप की चर्चा यहां अपेक्षित है वे वेदान्त-दर्शन के उपासक थे। 'उनके लिये सारा विद्व और उससे भी परे सारा ब्रह्माण्ड केवल एक आत्मरूप था। उनकी इस विचार-धारा के अनुसार मनुष्य अपने झूंठे अहंकार के मोह से ऊपर उठकर परिवार प्रेम, देश प्रेम, मनुष्य-प्रेम-यथार्य में विश्व-प्रेम में विचरता हुआ सच्चे

# स्वामी रामतीर्थ का राष्ट्रधर्म

आत्मा परमात्मा के साक्षात्कार में अग्रसर होता है।' (स्वामी राम जीवन कथा-सरदार पूरनसिंह)

स्वामी राम के राष्ट्र धर्म की परख इसी उद्धरण के प्रकाश में की जा सकती है। वे विलक्षण प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। मस्ती उनके जीवन का रक्त थी। १८७३ ई० में वे जन्मे, २८ वर्ष की आयु में (१९०१) वे सायु हुए। १९०२ में जापान और अमेरिका घूमने गये। १९०४ में भारत लीटे और १९०६ में जब वे कुल ३३ वर्ष के थे उन्होंने संसार को सदा के लिए छोड़ दियां । क्या यह अद्भुत वात नहीं है कि उनके जन्म के दिन और मृत्यु के दिन भी दीवाली थी। क्या यह पर्व मनुष्य की निरंतर खोज का प्रतीक नहीं माना जा सकता पर यह तो कल्पना की वात है। ऐसा न भी होता तो भी स्वामी रामतीर्थ की मान्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ने वाला था। वे ब्रह्मानन्द सरोवर में डूवे हुए द्वन्द्वातीत मुक्त पुरुप थे। उनके लिए 'द्ई' नहीं थी। सब कुछ 'एक' था। एक से भिन्न कुछ नहीं, सव-समग्र 'एक'। तव राष्ट्रधर्म कैसा ? उसमें तो राष्ट्र से 'प्रेम की शर्त' है। स्वामी राम भी राष्ट्र से प्रेम की वात मानते थे क्योंकि उनका राष्ट्र तो ब्रह्मांड का अंग है। कथा आती है कि राम जब अमेरिका में थे तो एक स्त्री उनसे मिलने आई। वह वड़ी दुखी थी। उसका वच्चा मर गया था। वह राम से शांति की प्रार्थना करने आई थी । राम ने उससे कहा-राम आनन्द वेचता तो है पर उसके लिये मूल्य देना पड़ता है। स्त्री चिल्ला उठी-'हां, हां, स्वामीजी! चाहे जो लें। मेरा सब कुछ लें।'

राम-िआनन्द के राज्य में यह सिक्का नहीं चलता। तुम्हें राम के जगत में चलने वाला सिक्का देना होगा।

स्त्री—हां, हां, स्वामीजी ! में दूंगी, अवस्य दूंगी। राम—बहुत ठीक। तो छो इस नीग्रो जाति के छोटे से वच्चे को अपने ही बच्चे की तरह प्यार करो।

और उन्होंने एक बच्चे को उसकी ओर बढ़ा दिया। वह कांप उठी—'ओह यह कितना कठिन कार्य है।' राम बोले—'तब तो आनन्द पाना भी दस्तर है'। तो यह या राम का राष्ट्रपर्म । भारतवर्ष के सवध में उन्होंने व्यिक्त — भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास पर स्थान देने से हमें पता चलता है कि बीधा द्वारो देशा है द्वारो सात वर्ष में में निरामक के लाग-मन का एकमात्र वर्तिन बनारा में भी निरामक के लाग-मन का एकमात्र वर्तिन बनारा नारण बनी है हमारी पार्चवर्ष नीति । "ब्रोही हमारे द्वार कमारे में (भारतवर्ष में) मुदे का कैसा विद्यास उज्ज्वक गोरवस्य प्रताम वर्ष है । औ, यह भरत है, में निर्मा को उचमें सात्रीदार न होने दूसा ! यह एसा किए और बिड किया बन वर्ष देशी नीति के लिया का किया किया ने में के प्रताम करा हिया है । बीर नहीं की लाखा में ही दूसने उत्तम अपनार फैला दिया । न तो भगवान वर्षावता का प्रकार करते वाका है और न ही सौमाय मोगीविक है ।"

यह नहीं हो सबता बहार को प्रेम करने वाटा खन देश की प्रेम करी । स्कामी एम तो मस्ती के अपूर्व खानद में दूबकर बोलते थे—"जब में चलता हु में सीवता हू कि मारत चल रहा है। जब कोएता हु तब सोचना हू कि मारत बोल रहा है। जब स्वास ऐता हु तब मारत हो क्यास लेता है। में भारतकर्षे हु, में सकर हु, में शिव हू। यही देशभिन ना सर्वोत्तम साक्षात्कार है। यही है व्यवद्यारिक वैदान ।

को अस्ताबलगामी सूर्य । बधा तू भारतवर्ष में उदय होने जा रहा है ? बचा तू दया करके राम का यह क्येश उस पुज्य और प्रताप की भूमि तक न पहुंचा देगा? अते, मेर भे में दे मुश्चित्त्रु भेरे भारत के बीतों में प्रात-कालीन भोस कथा बन जाने । जैसे योव विश्व को पुनता है, बैध्यव दिल्लू को, बोद बुद को, रेसार्ट ईवा की, मुसल-मान मुहम्मद को, उसी भ्रवार जलते हुए हृदय की जो के साथ में अपने मारतवर्ष को एन चेंब, विल्लू, बोद, हंसाई, मुसलमान, पारसी, विल्ला, सन्यासी, शूट वयका दिसी मी भारतवासी की दिखीत से देशना और पुत्रन सहना हूं। एं सारतमत्वर्ण में गेरे सभी स्थी, सभी

लेकिन राम प्रेम और जानन्द से पूर्व यह कविता

करके ही नहीं रह गये। उस तरण कर्मचीमी ने आज से पचास पूर्व भी डिमरियो की निन्दा की और कहा— 'काम करो, दिन रात काम करा । मूतकाल की वर्तमान के अनुसार डाजो और वस्तुन्त वनाओं और फिर वीरता के साब अपने बुद्ध पिवन और रावित्ताओं वर्तमान को मनिय्य की दौड़ में सबसे आगे बड़ने दी।'

बाज नेहरू बया इससे बुछ भिन्न बहता है। जन सस्या की समस्या आज भारत के जन्म-मरण की समस्या बन रही है। पचास वर्ष पूर्व उसे वेदान्त केसरी ने मानो चेतावनी दी यी-"एव साधारण स्थिति का भारतीय घर हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र का दिग्दर्शक है, अत्यन्त स्वल्प साधन और न देवल नित्य खाना खानेवाले मला में बद्धि घरन विवश होकर अर्थहीन निर्देय उत्सवी में अनावस्थक व्यय का भार ऊपर से। अरे एक ही अस्तवल में बधने वाले पशुभी एक दूसरे से लडते-भिडते मर जायेंगे, यदि धास केवल दो एक के लिए होगी और उनकी सट्या मैंकडा तक पहचेगी। सचयं की जड को न मिटाना और लोगो को शान्ति की शिक्षा देना उपदेश का उपहास करना है। " आग चलकर वे और भी स्पष्ट हए-एक समय था. जबकि भारतवर्ष के आयं निवासियों में बडी सत्या में सन्तान का होना बरदानरूप माना जाता था। किन्त के दिन चले गये, देश-काल की परिस्थिति में आकाश-पाताल का अन्तर हो गया । भारतवर्ष की जन-सस्या में बाढ आ गई, अत वड परिवारो का होना अभिदाप रूप बन गया है आओ अब हम उस महाभयकर और हानिप्रद विचार को जो इतने दिनो तुक हमारे व्यवहार को चक्कर में डाले रहा, भारतवर्ष के धरातल से निवाल बाहर करे । कौनसा विचार, कौनसा सिद्धान्त-'विवाह वरी, अन्धापुन्य सन्तान पदा वरो। जीवन की स्वासें पूरी करो और गुलामी में मर आओ।'

एक वैदान्ती के मुद्द से ये कैंसे मानसंगादियों जैसे बिजार निक्ष्ठ रहें हैं ' लेकिन बचा यह सब मही है, कि मारत का मावी धर्म बैदान्त ही होगा। सन्त विनोदा ने यही मीनध्याणों की है। बैदान्त से बढ़कर सगता का सिद्धान्त कहा गिलेगा। स्वयं स्वामी रामतीमं के सब्दो

( श्रेष पृष्ठ ३७२ पर )

एँसे लोग जो हमारी कल्पना को पकड़ते हैं दो कोटि के होते देखे नाते हैं। एक जिनकी सफलता वाहर की ओर फँउती हैं, उनके वल-विकम पर स्तम्भित रह जाना होता है। वे पराक्रमी, सेनानी और सम्राट् होते हैं। उनका साहस उदाहरणीय होता है और मृत्यु से वे डरते नहीं जान पड़ते। वे इतिहास का निर्माण कर जाते हैं और जगत उनके कारनामों पर चिकत होकर रह जाते हैं। इनकी सफलता विस्तार में और शक्ति में है।

लेकिन दूसरे प्रकार के भी लोग है जो कम सफल नहीं समझे जाते। अपने समय में वे इतने प्रखर और प्रसिद्ध नहीं होते। यहांतक कि कभी-कभी आसपास के लोग भी उन्हें नहीं जानते। लेकिन पीछे उनकी कीर्ति उन्हें अमर बना जाती है। ये लोग सन्त, किन, साहित्य-कार आदि होते हैं। इनकी साधना मूक होती है, उतनी प्रगट और मुखर नहीं होती। ये प्रीति के लोग है और इन्हें अपेक्षाइत अन्तर्मुखी कहा जा सकता है।

ये कोटियां अपने ओर और छोर पर जैसे एक दूमरे को समझ नहीं पाती। एक ओर निरी निवृत्ति है, तो दूसरी ओर प्रवृत्ति है। एक चिन्तन में छीन दीखता है, तो दूसरा निरंतर कर्मरत होकर जूझता है।

ये दो कोटियां मूल में विभक्त व्यक्तित्व का परिणाम है। एक आदर्श को आरायता है, दूसरा वर्तमान को सायता है। एक अकिवन-भक्त होता है दूसरा सर्व समयं सत्तावीश।

स्पष्ट है कि दोनों उदाहरणों के मूल में कहीं विघ-टन रह जाता है। अन्तर और वाह्य ये दो रहते हैं और एक का विकास शायद दूसरे के ह्नास पर होता है इसलिए वाहर की ओर विस्तार और भीतर की ओर अवगाहन—जैसे मानव-विकास की ये दो विपरीत विदिशाएं हों। जो राज्य और साम्राज्य बनाते और विस्तृत भूखंड पर अपनी प्रभुता सिद्ध करते हैं और जय मायते हैं वे काल स्मृति में उतने गहरे नहीं उतर पाते। और जो आत्मसायना में मुक्त होकर अमर अनुभ्तियां प्राप्त और प्रदान करते हैं वे जग-विस्तार में चाहे स्वल्प ही दीखें पर काल के स्तरों को भेदकर चिरजीवित रहते हैं। जैसे कि एक देश को जीतता, है दूसरा काल को वेधता है, और दोनों के कृतित्व की दिशाएं इतनीं भिन्न रहती हैं कि मानो वे समानान्तर हों और कहीं मिलती ही न हों। मानव-च्यिकत और मानववर्ग इन दोनों दिशाओं में विभक्त रूप से सहज ही विकास करते जा सकते हैं। इसके दृष्टांत सब काल सब देश में देखने में आते हैं। पराक्रमी पुरुपों की कमी नहीं, उसी तरह सायक सन्तजनों की भी कमी नहीं। उनसे हम परिचित हैं, उनको समझने में हमें दिक्कत नहीं होती। जैसे हमारे ही वे गुणानुगुणित रूप हों।

लेकिन युग-युग के बाद ऐसे व्यक्ति भी पैदा होते हैं जिनका विकास इस या उस दिशा में नहीं होता। वह एकांगी नहीं हो पाते । अन्तर और वाहर जिनमें दो होकर नहीं रहते । वे निवृत्त होते हैं, पर उतने ही प्रवृत्त भी। वे स्वनिष्ठ होते हैं पर उतने ही जगनिष्ठ भी । वे इवर पराक्रमी, कर्मठ और कृति दीखते हैं तो उघर भगवल्लीन, अकिचन, प्रार्थना और चितन में रत रहनेवाले हैं। उनका अन्तःकरण कर्मेन्द्रियों को पुष्ठ और वलिष्ठ ही करता है। साधारणतः इन दोनों में लड़ाई चला करती है। इन्द्रियां स्वयं प्रवृत्त होती हैं और अन्तरात्मा को भीतर से निर्वल छोड़ जाती , है । अन्तरात्मा को प्रवल करके सन्त और तपस्वी जन् 🆯 काया को निवंस और इन्द्रियों को निस्तेज कर सेते हैं। मानो आत्मवल के लिए इन्द्रियों को निर्वल करना और वाहुवल के लिए आत्मवल की विमुखता रखना आवश्यक हो।

यह विरोध प्रगट सब कहीं देखने में आता है। सिद्धांत और आदर्श के लोग प्राणशक्ति को मानो नियत और नियुक्त करके किंचित मुखा देते हैं। प्राण-वेग को स्वीकार करके उसके वल से चलनेवाले लोग जैसे नीति-नियमों को पीठ देकर उक्कृत्वक और विनाधारमक हो जाते हैं। ये बनाते नहीं बितजा ताते हैं। यह विरोध समयों को उत्पत्ति करता है और प्रस्ति को और प्रीति को, सप्ता को और सेवा को, राजनीति को और प्रस्तृति को, व्यक्तित्व को और दलकीशल को परस्पर रगड़ में जाता रहता है। एसे विभननता पैदा होती हैं और पूर्णता खटित होती हैं। मानवजाति का इतिहास इसी इन्द्र में से जूसता का आरा है।

एक की प्रमुता ने दूसरे को पवदिकत किया है। बैसे यूग भी हत किया और मितिक्या के पदेश से बकते रहे हैं। भीतिक उर्जात के बाकेश का यूग बाया है जो कभी आता कर उर्जात के बाकेश का यूग बाया है जो कभी बादिक तर देती है। विभिन्न तर उर्जात के प्रमुत्त कर उर्जात के प्रमुद्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्यं स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स

लेहिन पूर्णता भी नहीं है और उसकी सायना की भी एक परपरा है। वहा एकामिया नहीं उहती और डेथ भी सान्त होता है। इसे पूर्णता भी सामना का क्य जगत में अधिक देखने में नही जाता। इन्द चन बहुत तीव हो जाता है, पूर्ण की मिन्छा और जहाँत का स्वरूप जब बढ़ा में से मानो पूरी तरह तिरोहित हो जाता है वब जैसे प्रकृति के नियम से दूज वजक योग के प्रतीक का आविमाँव होता है। "बरा यदा हि एसंस्व म्हानियंग्रित, समवामिं (अह) पूर्ण यूर्ग ।"

करर की बात की अवतारवाद वे समर्थन में मे नहीं देता। में उसे जीवन के वैद्यानिक नियम के रूप में देखता हू। मूल में सपूर्णता है। विमाजन अत में जीत नहीं सकता। अत में एकता, सर्वीत्मता है। सब-सब हो रहना पूरी तरह वन नहीं मकता । इसिलए खडितजीवन हद पर पहुनकर अपने ही जोर से असडता के आदर्श को अपने बीच में से प्रस्फुटित करने को बाघ्य होता है ।

याधीजी को मै उसी दर्ष्टि से देख पाता है। गायीजी का करना उतना मेरे लिए प्रधान नहीं है जितना होना है। करना सदा सामयिक होता है। उसको स्वरूप और भाषा तत्वाल की परिस्थित से मिलती है। इसलिए जो उन्होने किया वह अपने आप में उतना अन्तिम नहीं है। आखिर तो उनके होने ना ही वह बाह्य रूप है। बरने में उनका होना ही फटा है। इसीसे केवल करने वालो के हाथ उनकी प्रेरणा नहीं आती। अपने भारत की राष्ट्रीय लडाई के एकमान प्रवर्तक और सेनानी होकर क्या युद्ध के ठीक बीचो बीच उन्होने बार-बार मही कहा कि 'मै प्रकाश की प्रतीका में ह. ईश्वर कहेगा वैसा होगा।" यह यक्त की मापा अनुसर कर्मशालियों के बीच निर्यंक हो जाती है। लेक्नि एक चौथाई सदी से भी ऊपर भारत जैसे महादेश के वर्मचक के चालक होकर भी गाधी के अन्तरम की वही भाषा थी।

निधी पहलू से देलें तीन संन्तीह विदोधनास गांधी में खमाहित दीलने हैं। राजनीति के क्षेत्र में जनके बंद्या कारिकारी कीन दूबरा हुआ े किन तान-तीति में से क्षा कारिकारी कीन दूबरा हुआ े किन राज-तीति में से देव दिवस के तो निक्त स्वाद्या के तो कहर उदार-त्यां के बाद में बीन ताना । सार से और सम्मता ते हुए होंगे चले करें। । सार से और सम्मता ते हुए होंगे चले करें। लेकिन सदा राजनीति के बीच में बीनन रजा। । सार से और सम्मता ते हुए होंगे चले करें। लेकिन सहार में नीर सम्मता ते हुए होंगे चले करें। होंगा ये हुं एत जनके प्रतिक्र के निक्त से कीन रहा गांधा था हिन सम के और वह के बादसी में, पर उनके चीन उत्स्वल और विदादों और परीच कीन दीन से लि सार होंगे। यो कार की प्रवादा जिया के विदेश दिन की की होती सी, कीन नह सरवा । या कि वह नियम स्वयम के असि धारायत का पायक हैं।

भे गांधी को सामियन भारतीय राजनीति के पुट्ठ एट पर देखना अत्यन्त अनावत्यक समझता हू। देश और काल के चौखटे में कीलित करके हम उस गांधी को नही पार्येंगे जो जीवत की एक अमर सत्यता को उद्धरित बर गया। विल्क उस गांधी को ही समझ सकेंगे जो इस सन् से उस सन् तक सिर्फ सत्तर अस्सी वरस तक जिया और फिर मर कर चुकगया। जो गांधी मर गया वह करमचंद्र का पुत्र था। लेकिन एक गांधी ईश्वर का पुत्र भी था। जिसने कहा कि सोते-जागते पिछले पैतीस से भी अधिक वर्षों से मैं राम को एक क्षण के लिए भी नहीं भूल सका हूं। मेरा सब ले लो, हाथ काट दो, पैर काट दो, सिर उतार लो फिर भी मैं रहूंगा। पर ईश्वर के बिना तो एक पल मैं रह नहीं सकता हूं। ऐमे व्यक्ति को इस मूल-श्रद्धा से अलग करके देखने से भला हम क्या हाथ पा सकेंगे?

श्रद्धा वह किसी अपनी बनाई घारणा की नहीं थी, मतावलम्बीं नहीं थी, बीद्धिक नहीं थी। वह संपूर्णता की थी, उसकी जो अखंड है, अद्वैत है, सबमें है, जिसके बाहर कोई नहीं और जो सब विविधताओं को अपनी एकता में समाये है। इसलिए वह अटूट होकर भी निर्वेर और निविरोध नहीं थी।

आज की सबसे बड़ी समस्या है उस निष्ठा को प्राप्त करना जो अपने विरोध को समझ सके और अपने विरोधों से प्रीति कर सके। वहीं वस्तु आज अकल्पनीय वन गई है एक मतबाद दूसरे मतबाद के अपवाद पर हीं ठहर सकता है। इस तरह संघर्ष नियम है और समन्वय दीखता नहीं है। इन्हात्मक भौतिकवाद (डाइलेक्टीकल मैटीरियलिज्म) के पार समयन्वित एकात्मवाद तक पहुंच नहीं हो पाती। परिणाम यह कि सिवा इसके निस्तार नहीं दीखता कि कोई एकवाद या दल या सत्ता सबको पराभूत करके एकच्छत्र वन जाय और दुनिया को एक द्यासन के अधीन कर ले। गांधी के पास वह निष्ठा थी और

राजनीति को रामराज्य का आदर्श देकर उसने बताया कि एक की भी सम्भावना को जो न कुचले ऐसा राज्य हो सकता है। किन्तु वह शक्ति की दृष्टि से विकेन्द्रित होगा और सबेम श्रम करनेवाला उत्पादक जन उसका केन्द्र होगा।

राजनीति और कर्मनीति के क्षेत्र में जबिक उस अखंड निष्ठा का अभाव है तब धर्मक्षेत्र में ऐसे लोग हैं जो आंखों को बन्द करके भगवान की अखंडता और सम्पूर्णताको ऐसा मन में लेते हैं कि वाहर के भेद विज्ञान को समझने और झेलने की सामर्थ्य उनकी इन्द्रियों में और बुद्धि में नहीं रहती। वे संसार के किसी काम के लिए वेकार हो जाते हैं। ऐसे लोगों की भारत देश में न्यूनता नहीं थी और न ही है। उनकी भिक्त उन्हें भावावेश देकर अपनी अपूर्णताओं के प्रति सुष्त छोड़ जाती है और अपने आसपास की चुनौतियों और तात्कालिक कर्तव्यों के प्रति वे उत्तिष्ठ नहीं हो पाते।

पहले वर्ग के लोग प्रेम को और अहिंसा को पदाकान्त करते हुए चलते हैं, दूसरे वर्ग के जन सत्य की मांग के प्रति सोये वने रहते हैं।

यह बड़ी भारी सार्वत्रिक और सार्वकालिक खाई गांधीजी के जीवन में पट आई। आत्मिचितन जनसेवा से अलग होकर उन्हें महत्त्वहीन होगया और जन-आन्दोलन की प्रवृत्ति आत्म परिष्कार की चेप्टा से हीन होकर केवल माया जाल हो रही। वाहर का जगत क्या और अन्दर का मनोजगत क्या ? सब कहीं उन्होंने उस सत्ये- स्वर को प्रत्यक्ष करना चाहा जो सबमें सोया पड़ा है। और जिसके जाग उठने में ही समस्याओं का समीचीन समायान है।

(पृष्ठ ३६९ का शेष)

में "यज्ञ का अर्य है कि हम व्यवहारतः अपने पड़ीसी को अपनी ही आत्मा मानने लगे, हमें उसका प्रत्यक्ष अभ्यास और अनुभव हो, हम सबके साथ एक या तदात्म हो जायें, सर्व-आत्मा राम बनने के लिए, हम अपनी क्षुद्र आत्मा का परित्याग कर दे । यज्ञ में स्वार्थपरता को आहु ते दो जाती है और तब सर्वात्मा—परमात्मा का उदय होता है। इसी भाव को प्रायः एक दृष्टि से

भिक्त का नाम दिया जाता है और दूसरी दृष्टि से उसी को यज कहते हैं।"

सो यही है राष्ट्रवर्म ! यही है है 'तत्वमिस' का प्रह्मानन्द । यही स्वामी रामतीयं का सन्देश जिसे उनकी इस जन्म और पुण्य तिथि पर भारतवासियों को आत्म-सात् करना है ।

सरदार पटेल के अस्तित्व का पता मुझे उन दिनो लगा जबकि बारदोनो सत्याग्रह छिडा हुआ था और उसके लिए आधिक सहायता एवजित की जा रही थी। बारदोली का नाम मैने पहिले कभी नहीं सना था। हा पटेल का नाम मैने मुना था। पर मेरे लिए उसका अर्थ केन्द्रीय एसेम्बली के स्पीक्त दादीवाले वडे पटेल का था। उन दिनो मेरे यन में जो राजनीतिक वातावरण था, उसमें गाथी, मोनीलाल, लाजपतराय, मदनमोहन मालबीय, सी आर दास, जबाहरलाल बादि नाम ये जो ग्रहो की भाति चमकते हुए युम रहे ये । उन दिनो कई चित्रकारों ने राष्ट्रीय नेताओं के भारत-माति से चित्र अक्ति किये थे और वे बाखार में दिक्ते थे। उनमें से कुछ चित्र मैंने एकतित किये थे । मुझे लगता है कि उनमें सरदार पटेल का चित्र अवस्य होगा । रहा हो पर उसने मुझे उस समय प्रभावित नही किया। सरदार पटेल को मैंने बारदोली सत्याग्रह के माध्यम से जाना । बारदोली सत्याग्रह नया था ? वड क्यो चलाया गया था ? उसका अंत कैसे हवा ? इस विषय में मेरी जानकारी को जितना पूरा होना चाहिए था उतनी पूरी वह नही थी। एक अस्पव्ट धुषला आसास था कि इस सत्याप्रह में बहुत में छोगो ने बहुत से रूट उठाये और नाना प्रकार के अल्लाबार सहै। मुझमें सत्याप्रहियों के प्रति एक ध्रुषती सहान्मृति उमडी और अत्याचारियों के प्रति एक अस्टब्ट निर्वीय कीय । एकाएक सूनी कि सत्याग्रह समाप्त हो गया है और शोई पटेल हैं जो सरदार बन गये है। सरवाग्रह रात्रि के अधेरे की माति पुष्ट मुमि में रह गया और पटेल सरदार बनकर मूर्य की मानि बागे समर आये । तभी पूर्व परिचित नामा से सम्बन्ध जोडने पर पना चला कि ने बड़े पटेल के छोटे माई है।

सरदार पटेल से बात करना तो दूर, उन्हें निकट से देखने का अवसर भी कभी मुझे मही मिला। दूर से कदाचित मैंने एक दो बार उन्हें खबस्य देखा हैं।

उनके चेहरे नी वारीन जिंटलताओं के विषय में मेगी कोई स्पष्ट घारणा नहीं हैं । नाना चित्रों में जो उनवे " भाति-भाति ने चेहरे चित्रित हैं, उनकी तुलना असली चेहरे से करने का कभी अवसर नहीं आया और मै समझता हू कि उसकी आवस्यकता भी नहीं है । वित्रकारों से उनके चेहरे की ऊचाई-निचाई पकड़ने में चाहे मूल हो गयी हो पर उस चेहरे के पीछे जो सतकं सयम, जो सहन शक्ति, जो स्पैर्य और जो दृहता है, उसे सभी पण्ड पाये हैं । उन सभी चेहरी से यह स्पष्ट है कि नाना दिख्या और नाना कलास्तरी पर अभिव्यक्त नाना चेहरीबाला यह जो पूरुप है उसे आप आज्ञा नहीं दे सक्ते. उसे आप विचलित नहीं कर सकते. उसे आप न लम्बे-लम्बे हग धरने को विदय कर सकते हैं और न ठहर जाने की बाघ्य । वह पूरुप है स्पार्टन यग का प्राचीन और औटो-मैटन युव का नदीन । स्टीमरीलर का नाम कदाचित उन्होंने ही कई बार लिया है। लगता है कि वे उसे पसन्द करते थे । मोटे, भारी, मजबत पहिया की मद, निश्चित गति से आगे बढाता हुआ और सडक पर बिछे पत्थर के ट्रक्टा को कुचलता हुआ, चाहे के ट्रकडे वितनी ही वडी और वितनी ही ऐतिहासिक चट्टान के याग बयो न रहे हो ।

व मुझे भाषण मुनने बा शीक है और न उन्हे पड़ने में विशोप व्यक्ति । और जहातन में समझता हू सर-दार बोल्टे भी कुठ कल थे। भाषणनाओं में अन्य नेताओं ना नाम जितनी बार मेंने मुता है उठतनी बार उनका सुनने में नहीं आया। भोई महत्वपूर्ण मापण भी उन्होंने नमी दिया हो ऐसी बात भी मभी मेरे सुनने में नहीं आई। मेरी इस बारणा में ऐतिहासिक मूल हो समनी है, पर व्यवितन रूप से अपने जीवन में पिछते वीस वर्षों से ये मुझे मीन ही अपिक प्रतीत हुए। बीर इसी मुझे ब्याता है कि उनके बोले हुए सब्दों में उतना वर्षे नहीं पाया बार्जी सकता जितना कि उसमें जो उन्होंने नहीं कहा है। मुझे उनका मीन उनकी वाणी से अधिक मृत्तर प्रतीत होता है। और उनके भीतर स्थित एक अबल सायक की सूचना देता है। ऐसे सायक की, जिसकी दृष्टि अर्जुन की भांति लक्ष्य पर है, और लक्ष्य की ओर ले जाने बाले पथ पर। मार्ग के दोनों ओर के बातावरण में, इवर-उवर की शोभा छटा में उनकी कोई हचि नहीं है। जब मार्ग में कोई नदी-नाला आ जाता है और उने पार करने के लिए पुल बनाना होता है तभी इवर-उवर खड़े वृक्षों की ओर उनकी दृष्टि जाती है, अन्यथा नहीं। शब्दों के उपयोग में उनकी कंजूसी स्वस्य चारित्रिक खनक के समान है। वह उस बाचाल अनक में दूर है जो चरित्र को बाह्य स्पावली के भीतर छिपी किसी वारीक दरार की सूचना देती रहती है।

जब मैं दम-बारह वर्ष पहिले की वात सोचता हूं बीर याद करता हूं कि विभिन्न नेनाओं के प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया थी तो ऐसा अनुभव होता है कि मै गांधीजी में श्रद्धा रचता था, नेहरू और वोस को अपनी भिकत देना था। पर जब विस्वास की वात आती थी तो ऐसा लगता था कि सरदार ही उसके अधिकारी है। महात्माजी का आदर्ग मुझे मोहता था । नेहरू और बोस की बातें ै उत्तेजित करनी थीं और एक विचित्र आनन्द देती थी । पर मेरे मन में एक बान बुंबली पर शक्तिशाली रूप में उरस्यित थी । वह थी यह, कि हम सोचें चाहे कुछ, बोलें चाहे कुछ, पर करें वहीं जो बिल्कुल ठीक हो। तेज उतना ही चलें कि मांस न फूले । आदर्श का भार उतना ही उठाये जितना संगल मके और कविता की जीवन में उतारते समय इतना ध्यान रखें कि हमारे पैर घरती से उपाइ न जायें। जीवन की इस अस्पष्ट दृष्टि ने न जाने कैसे यह तय कर लिया था कि जवतक सरदार है तवतक इस विषय में चितित होने की कोई वावश्यकता नहीं है। उनके होते हुए कोई बात ऐसी नहीं होगी जो अनावस्थक हो। हमसे ऐसा भार उठाने को नहीं कहा जायगा जिसे हम संभाछ न सकें। वे न प्रहलाद का युग इस देश में लाना चाहेंगे न फ्रांस की राज्यक्रांति का जमाना। परम्परा से जैसा भारतीय जीवन चला आया था, दुक्लम-सुक्लम में शांतिपूर्वक वैसा रहता जाना चाहता था । मैं नहीं चाहता था कि कोई मझसे कहे कि भई इस पिटी हुई पगडंडी पर क्या चल रहे हो । आओ उन झाड़ियों में होकर उस पार निकल चलें। थोड़े कपड़े फटेंगे, थोड़ा खुन बहेगा, यह भी सम्भव है कि कोई विपैला नाग भी हमें इस ले, पर हमारा पूरा विश्वास है कि इन झाड़ियों के दूसरी ओर एक वहत चौड़ा राजमार्ग है। हम उस पर खड़े होकर ही नहीं, आवस्यकता पड़े तो वैठकर या लेटकर भी चल सकते हैं। मैं अपनी पूरानी संकरी, पर मन से साफ पगदंडी पर चलते रहना चाहता था। मैं एक ऐसी सड़क पर, जिसका अम्तित्व ही संदेहमय है, जाने के लिए कष्ट उठाने को तैयार नहीं था और समझता था कि सरदार पटेल इस विषय में भेरे साथ है। वे हमें आव-श्यकता से अविक हमारी परम्पराओं से नहीं उखाड़ेंगे। वावश्यकता से व्यविक, सही या गलत, जिसे मैं भारतीयता समझता था उसे नहीं उजाड़ेंगे। गांधीजी महात्मा थे जो तपोवन से आये थे। नेहरू और वीस वे भारतीय थे जिनकी धमनियों में विदेशी गर्मी धमकती थी। केवल सरदार पटेल थे जो मुझे सजग सतर्क इहलीकिक और भारतीय होने का आभास देते थे।

सरदार पटेल व्यक्ति तो ये ही। कुछ व्यक्ति होते हैं जो अपने अशरीरी व्यक्तित्व को विकसित कर लेते हैं। सरदार उनमें से एक थे। उनका अशरीरी व्यक्तित्व भारतीय राजनीतिक और संवर्ष में व्याप्त हो गया था। वे करोड़ों भारतीयों के मानसिक वातावरण में एक महत्वपूर्ण तत्व थे। र्गांघीजी ने भारतीय आत्मा को बोधित किया था। नेहरू ने उसे गति दी थी तो पटेल ने उस गति को दृढ़ता और संयम प्रदान किया था। उन्होंने उस गति का संगठन किया था, और उसे निर्मम, निर्वाघ रूप से आगे बढ़ाते रहने में अपने जीवन का विकास किया था। भारतीय इतिहास में राजनीति कैसी चलती आई है, और कैसे चलती आई है वे इन दोनों वातों को जानते थे। उनकी विशेषता इसमें थी कि वे जानने से आगे वढ़ गये थे। आवश्यकता पड़ने पर वे उस मैदान में, पुराने पैतरों पर, पुराने शस्त्रों से खेल सकते थे और खेलते थे।

हम क्षेत्र में उनका बान और जनकी सफलता आरपर्य-जनक थी। यह उनकी सफलता प्राप्त कर केने की कला थी जो करोडो मारतियों के विक्वास को उनकी और आकर्षात करती थी। वे मनुष्य में टुक्ताओं को जानते में और अपने उन से उनका उपयोग निविच्य करप को और वहने के लिए करते थे। प्रत्येक राष्ट्र में मुक्तामं होती है और सबलतायें भी। पाष्ट्र मिरते-पढ़ते रहते हैं। पर होंगे आयु उन्हीं राष्ट्रों की होती हैं जो सम्पर्यों के बोच अपनी सबलताओं वा नहीं, अपनी पुर्वेलताओं का उपयोग ठीक प्रकार से करन की शमका रहते हैं। माची और पटेल इस कला के अयनत सफल कलानार में सरदार पटेल का बन्य कव हुआ और नव उ सरीर पूरा हो गवा, इसमें मुझे वितोग घींच नहीं है । वेरे व्यक्तिना से अगर उठ चुके हैं। सारवार-व्यक्तिन नहीं में, एक सत्वा थे। वे पुरुप नहीं थे। पीरव्य थे। विदे-विवा के विराद्ध देश में जो सबर्ग विया उसके सगतन में जनका मान अवन्त महत्वपूर्ण था। पर देश को ठोक-तन्त्र के लिए मुसीनत बनाने में आतरिक वागाओं की इस करने का वो कार्य उन्होंने विचा, नह बहु हमनते हैं कि, बहु अकेले ही किया। बाज को मारतीय राष्ट्र की कप रेखा हैं उस पर सरदार के व्यक्तितर की छाप स्पट्ट पीट-योचर होती हैं। वैद्या उनका व्यक्तितर सथात, गठित बोटि सहत्व या वैद्या ही राष्ट्र के अपन पीछे छोड गये हैं।

#### देवराज 'दिनेश'

प्त साहित्यकार की सबसे बड़ी सफलता यही है कि पाठक उसकी रचना को पड़ने के बाद यह सोचे समझे और अनुभव करें, कि यह कहानी, यह घटना उसके जीवन की या उसके जीवन की आसपास की है अयात अपने समाव का रूप वह उन रचनाओं में देख सके।

लाहीर की बात हैं। में अपने पड़ील में बसे एक परिवार से पूर्णक्षेण परिचित या। पड़ीड़ी होने के माते दुखी या उनके निरायति के सावती होने के सारे पहता। मेरे काम्यक में बहुत वागा पड़ती। फिर उस परिवार का वहा लड़का मेरा मित्र भी था। उसके इस का मुझे साझीडार भी होना पड़ता। में सोचता वर्मी आमें चलकर इसपर लिख्या। अबढ़े से उसर पिता, मुबती विमाता। एक चार-माच साल का छोटा मार्र। यह भी मेरे पड़ीसी मित्र की कहानी। जिता में सक्की मनोबृति के, घर के रहेंस। विमाता मुक्त से किसी किस्स की भी बातें करती होती पिता आ जाते,

#### प्रेमचन्द

तो युक्क को मारिया अवस्य पदती । एक दिन मुझे पता तथा कि भेरा मित्र झीडिंग हाउत्तर में वालिल करा दिया गया है। कभी-कभी भे मिल आता ! पर वह बहुत उदास अपन पर क्यार्च करेत्र होने के कारण उम्मादी। कुछ दिनो बाद पता लगा कि उसे टी॰ बी॰ हो गई है।

मुझसे कभी-कभी कहता । मेरी कहानी किलना। अभी कुछ दिनो बाद टी० बी० के हास्पटिक में उसकी मृत्यु हो गई। हम बार-याच मित्रों ने दाह सस्कार किया। उसके पिता शामिक नहीं हुए।

इधर मुझे जासूसी जरम्यास एडमें पर एक दिन बड़े बाई की डाट फटकार सहती पढ़ी ! किन्तु उसके बाद मुझे मतान के लिए उन्होंने प्रेमकादयी का उपन्यास निमंत्रा इसने की दिया ! में पड़ने के बाद अवाक एह गया ! दिल्लुक मेरे पढ़ीस की कहानी है तब भी और अब भी कई बार सोचता हूं कि यदि मेरा मित्र बेद जीता होता तो उसे 'यह दे देता ! या कही उसके जीवननाज में मृझे निमंत्रा उपन्यास मिल जाता ! तब प्रेमक्त को मा नहानिया पढ़ी और कितनी ही बार पढ़ी ! हर कहानी में मित्री नि विद्यों हम में समाज की हुरीतियों से उत्पाद पीडा पण रही हैं । दहेनप्रवा, बातविवाह, जनमेल-

į

विवाह इत्यादि । प्रेमचन्दजी ने अपनी लेखनी के द्वारा इन सभी कुरीतियों पर कठोर प्रहार किया । उनके नग्न चित्र खोंच कर हनारे सामने रक्खे हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों में उनके विविध रूप हैं।

प्रतिज्ञा और वरदान उनके सावारण उपन्यास हैं। मुबास्तन के द्वारा वे निखरे हुए कलाकार और समाज नुवारक के रूप में हनारे सामने आते हैं। इस उपन्यास में उन्होंने समाज की उन परिस्थितियों का चित्रण किया है जिनके द्वारा एक भले घर की नारी वेदया वनने पर बाध्य होती है । उसमें वेदया को घृणित सनझने वाले समाज के ठेकेदारों का वास्तविक रूप दिखाया गया है।

इयर देश में राजनैतिक जागृति आ रही थी। गांबीजी विदेशी सत्ता से अहिंसात्मक आन्दोलन द्वारा संवर्ष कर रहे थे। प्रेमचन्द की रचनाओं पर गांवीवाद का व्यापक प्रभाव पड़ा ? गांघीजी देश के साथ-साथ समाज में भी तो एक व्यापक परिवर्तन लाना चाहते थे। मानव समाज की विषमताओं को दूर करना ही उनका उद्देश्य या । प्रेमचन्दर्जा ने लेखनी के द्वारा उनके विचारों का प्रचार किया । कहना चाहिए वापू के हाय की लाठी वनकर उन्हें सहयोग दिया । छूआछूत, ऊंच-नीच, दहेज-प्रया, अनमेल विवाह, मजदूर-किसानों का जमींदारों, महाजनों और मिल मालिकों द्वारा शोषण । इन सब पर खूब लिखा । इनके जीते-जागते चित्र हमारे सामने रखे ।

सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गोदान, ये सब अच्छे-बुरे मानव पात्रों से भरे पड़े हैं ! पड़ते हुए कुछ पात्रों पर क्रोब आता है । कुछेक से घृणा हो जाती है । कुछेक पर आपकी सहानुभूति उमड़ी पड़ती है। यही है प्रेमचन्द की सफलता।

उपन्यासों ने भी अधिक निखरे हैं वे अपनी कहा-नियों में । उनकी कृतियां विश्व-साहित्य का गीरव हैं । कहानियों में 'शतरंज के खिलाड़ी' 'बड़े घर की बेटी' 'दिल की रानी' 'पंचयरसेश्वर' 'सुवितमार्ग' 'कफन' इत्यादि, बार-बार पढ़ते ही बनती है । बहुत ही सुन्दर हैं।

उनन्यासों में गोदान और कहानियों में कफन । उनके अन्तिम दिनों के आसगस की रचनायें हैं। इनके 305

चित्रण में कलाकार को अपूर्व सफलता मिली है।

'गोदान' को पढ़ने पर ऐसा लगता है जैसे होरी के रूप में स्वयं प्रेमचन्द समाये हुए हैं।

उन्होंने देश में फैली हुई भूख और गरीबी का म. मिक चित्र खींचा है। क्योंकि उनके जीवन की कहानी भी बहुत ही कष्टप्रद और दुखद रही है ? उन्होंने स्वयं समाज के अत्याचार सहे। उनके विद्रोही हृदय ने उन्हें कलाकार बनाने पर बाध्य किया।

एक साधारण मध्यमवर्ग के परिवार में उनका जन्म हुआ । आठ वर्ष की अवस्था में उनकी मां की मृत्यु हो गई। पिता ने दूसरी शादी कर ली। इनका वचपन का नाम धनपतराय था । लेकिन इनके चाचा प्यार से इन्हें नवावराय कहा करते थे। उर्दू में इन्होंने नवावराय के नाम से लिखना शुरू किया किन्तु उर्दू के छोटे क्षेत्र में इस महान् कलाकार के विचारों का प्रचार कम हो पाता। यह हिन्दी के क्षेत्र में आये और प्रेमचन्द नाम ग्रहण किया।

पिता की आमदनी बहुत ही कम थी। परेशानियां बहुत अधिक थीं । विमाता का क्रोय भी सहन करना पड़ता था। ऐसे वातावरण में पछ रही थी, एक बलवती आत्मा । पिता ने जैसे-तैसे मैट्रिक तक पढ़वाया । आगे यह स्वयं अपनी मेहनत, ट्यूशन के द्वारा पढ़े। वी० ए० पास किया। मैट्रिक के बाद ही उनके पिता का देहान्त हो गया था । परिवार का बोझ भी इन्हीं पर था । और पिता मरने से पहिले इनका विवाह भी कर गये थे, एक वेजोड़ विवाह।

वाद में साहित्य क्षेत्र में आने के बाद इन्होंने शिव-रानी से विवाह किया। वह बाल विववा थी, उस समय किसी वियवा से विवाह करने का अर्थ समाज से विद्रोह करना या । विद्रोही प्रेमचन्द ने साहस का परिचय दिया । ज्ञिवरानी के आगमन से उनकी घरेलू कठिनाइयां कुछ दूर हुई । प्रेमचन्दजी की मृत्यु के बाद शिवरानीजी ने एक पुस्तक 'प्रेमचन्द घर में' लिखी । जिससे प्रेम-चन्दजी का अच्छा परिचय मिलता है।

इस पठन-पाठन के साय उनकी साहित्य-सेवा भी चल रही थी। उनका इस क्षेत्र में काफी नाम आ चुका था।

१९०५ में वह डिप्टी इन्सपेक्टर वने । स्कूको का मुआदना करना और अपना लिखना कुछ दिनो तन तो चलता रहा । किन्तू बाद में यह नौकरी की छोड़ दी ।

फिर एक स्कूल में मास्टरी गर ली। बहा एक दिव इस्तोज़र से कहाज़ुनी हो। यह । इनके स्कूल का इन्स-नेक्टर इनके पर के सामने ने निकला। बहुत बहुत रकुन्त रे पर बैठे कुछ काम कर रहे थे। उन्होंने खेत नक्ष्मार नहीं किया। वह इस बात से किड गया। उसी समय इन्हें कुलाकर कहा—"तुम देखते नहीं कि तुम्हारा अफनर सामने से जा रहा हैं। जुम उसे सलस्य कर नहीं करते। ' इस पर प्रेमकन्यती ने उसे बहुत बात, कहा "आप स्कूल में सफतर हो सन्ते हैं, पर एर नहीं।"

इयर गायीजी का असहयोग आन्दोलन देशव्यापी हो रहा था। मुराजि इन दिना बीमार थे, नीवरी से स्तीका देवर उसमें शामिल हो गये और विदेशी दासवा के विद्यु लड़ने पर वटिबद्ध हुए।

आर्थिक कठिनाइया इनके सामने सदा रही। धारीर प्रारम्म से ही दुवला-पतला था। अत्यधिक सस्ता होने पर भी इच-चो कमी खाने को नहीं पिला। चारो सरक परे- सानिया चारो ओर दुख, वाहर-मीतर वही भी तो मुख की मात नहीं। सचर्ष पर समर्प, निरन्तर समर्प। प्रवासका के बट्ट अनुमव। समाज का करण करवन! देश में फेनी हुई राजनैविक कान्ति। उस अमाब यस्त युग में नक रहा या मारित ना भीनियम गोर्की।

अपने हृदय में गरीवो थे लिए अपरिवित सहानु-मूचि लिए ! कुप्रवाओ वे विरोध में जागहरू विद्रोह लिए । साहित्य वा सुमर नेनानी जनता को जीवन वा बारी स्वच्चा पथ बता रहा था । समानस्थी उपवन वा चतुर माको अपनी थोग्यता से मानव मन की करिया विका रहा था।

विन्तु निरुत्तर वरीवी और बीमारी के युन से साया जावर अपने 'यगल धून' उपन्यास की अपूरा छोडता हुमा वह सन् १९३६ के माठ अक्टूबर को स्वर्गपीयगामी हुमा। जीव कहते हैं उन्हें मरे माज स्रोतन्ह वर्ष हो गये। यथा वे सबसुब मर गये, नहीं, ऐसा नहीं, प्रेमवन्द नहीं मर सकता, नुभी नहीं मुर् सक्ता। वह अमर हैं

मिसोरलाल प्रयस्वाला हमारे विराल नार्यनातीं में से एन है। नाम करते हुए वह नभी पनने नहीं। वह अदमन जागस्न रहते हैं। उनमें जायन दृष्टि से नोर्ट मी बात नहीं सूर पाती। वह एन तस्व नेता है और गुजराती के एन लोन-प्रिस लेका। गुजराती के वह जेंसे निवाल है निर्मा हों से पाती के भी है। वह जातीन साम्प्रासिक था प्राणीय लहनार या दुरावह से बिल्डल मुनन है। वह एन स्वतन देन हैं वह राजनीती नहीं एक पैवालुसी समाय-मुभारक है। वसर पाती ने निवाली है। उनमें सामिन नहरता वा नोर्ट निर्मा तहीं एक पैवालुसी समाय-मुभारक है। समर्थ पाती ने निवाली है। उनमें सामिन नहरता वा नोर्ट निर्मा तहीं वह जिम्मेदारी लोने और तिमापन वाजी से सामते हैं। इतने पर भी कोई ऐसा बादमी नहीं निर्मा जो जिम्मेदारी लेने पर भी उने उनमें वामिन का बाती ने निर्मा को अधिक प्रमान का अध्यक्ष वनने को राजी वर सवा था। उनकी परित्मप्रीलता और सरस्व था में निर्मा की हमाय है। उन्होंने अपने स्वास्थ्य ने प्रति पुरी लापरवाही रजनर सवा स्था की स्वत महान की परित्मप्रीलता और सरस्व अपने एक विभन्न अपने सम्ब की हमी महान की राजी निर्मा की आपने विभन की साम के लिए सुला रखा। कोई आपने मही जि एस सबसे वह सब ने एक विभन्न अप बन गए। असीम साववानी ने साम कहीने सम ने लिए एक ऐसा विधान बनाया जो ऐसी निर्मा भी सस्या के लिए निर्मो का सम देवनता है।

हरिजन ]

--मो० व० गाधी

# हिलांदी पर

यौन-मनोविकार: कारण और निवारण लेखक—डा॰ सुरेन्द्रनाय गुप्ता, प्रकाशक-स्वास्थ्य-संदेश प्रकाशन, कालगी। पृष्ठ ९८, मूल्य ॥।॥॥॥

हिन्दी में सैक्स-संबंधी साहित्य का प्रायः अभाव-सा है। जो पुस्तकें मिलती हैं, उनमें से ९९ प्रतिशत अप्रमाणिक और अवैज्ञानिक ढंग से लिखी हुई है, जिन्हें पढकर पाठकों को लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। शरीर-रचना की जानकारी प्रत्येक व्यक्ति को होनी चाहिए; लेकिन दुर्भाग्य से इस विपय को अश्लील मानकर उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। परिणाम यह होता है कि ठीक-ठीक जानकारी न होने के कारण लोग अनेक रोगों के शिकार होकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, प्रस्तुत पुस्तक यीन-मनोविकार के कारणों पर प्रकाश डालती हैं और उनके निवारण का मार्ग वतलाती है। उसे पढ़-कर जात होता है कि हमारे बहत से रोग तो काल्पनिक होते हैं और जो रोग नहीं है, उसे अपनी अज्ञानता के कारण हम रोग समझ बैठने की भूल करके अपना अहित करते हैं। स्वास्थ्य की समस्या दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही हैं। स्वतंत्र भारत को जबिक पूर्ण स्वस्य और सगक्त होना चाहिए, वह क्षीण होता जा रहा है। उस ओर ध्यान देने की आवस्यकता है। आली-च्य पुस्तक काम की है, इसिटए वह वीमारियों के बारे में अनेक भ्रांत घारणाओं को दूर करती है और आजकल के झूठे विज्ञापनों से बचने की चेतावनी देती है। वह यह भी वताती है कि आदमी गिर कर कैसे उठ सकता है। पूर्णतया वैज्ञानिक दृष्टिकोण से न लिखी होने पर भी पाठक यदि इस पुस्तक को पहेंगे तो उन्हें बहुत ही नई वातों की जानकारी हो जायगी। -स•

[ 'जीवन-साहित्य' में समीक्षा के लिए हमारे पास स्वेच्छा-पूर्वक बहुत-सी पुस्तकों भेजी जाती हैं। उनमें से चुनी हुई पुस्तकों पर हम स्वतन्त्र रूप से अपने विचार प्रकट करने का प्रयत्न करते हैं। जी पुस्तकों छूट जाती हैं, उनके विषय में हमारी लाचारी मानी जानी चाहिए। इस समय हमारे पास निम्नलिखित पुस्तकों आई हुई हैं। इनमें से कुछ पर हम आगामी अंक में विस्तार से चर्चा करेंगे। —सम्पादक]

[समालोचना के लिए दो प्रति आना आवश्यक है।

- एशिया का आधुनिक इतिहास—छे० सत्यकेतु
   विद्यालंकार, प्रका० सरस्वती सदन ममूरी ९॥)
- रजत रिश्म—छे० रामकुमार वर्मा प्रका० भारतीय ज्ञानपीठ काशी
   रा)
- संस्मरण—ले॰ वनारसीदास चतुर्वेदी, प्रका॰ भारतीय ज्ञानपीठ काशी '३)
- ४. आकाश के तारे: धरती के फूल-ले॰ कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, प्रकाशक-उपरोक्त २)
- ५. संस्कृति समस्या—ले० स्वामी सत्यभवत, प्रका॰ सत्याश्रम, वर्घा १॥)
- ईंग्वर के सम्पर्क में—मूल ले॰ रेल्फ वाल्टो ट्राइन अनु॰ केदारनाथ गुप्त, प्रका॰ छात्र हितकारी पुस्तकमाला, प्रयाग
   २)
- ७. कियमिश चिकित्सा—मूळ छे० डा० जोशिया झोल्ड फील्ड, अनु० केदारनाय गुप्त, प्रका० उपरोक्त ॥=)
- ८. तपोवन—संकलनकर्ता—श्री शुकदेव दुवे, प्रका० कलामंदिर प्रयाग १॥)
- ९. रत्न समुच्चय—सम्पा० जगपित चतुर्वेदी, प्रका० —
  आदर्श ग्रन्थमाला, प्रयाग १)

हमारी राय

# पिराव की भे ?

किशोरलालभाई भी गये।

गापीजी नी मृत्यु के बाद उनके जिन सपी-सापियों ने उनके नार्य को मली प्रकार समाल लिया पा, उनने श्री किसोरलाज्याई ना हमाल कहुत कथा पा। उनका बान सागर की उच्छ लयाह बोर उननी प्रज्ञा हिमालय की माति अपल घो। स्वास्थ्य जोने और काया सीग होने हुए भी वे दुक्यापुर्वक अधिन सम्बद्ध करने दाशियत की बहुत नरते रहे। 'हरित्य' पत्रो के पाठक जानते हैं कि बहु निजनी नियोजनापूर्वक अपने विचार व्यक्त नरते थे। उनके विचारों का स्मर्थन चया प्रवाद परी, नीन उनने अग्रस्त हो जायना या कोन जुड़ा, इमकी उन्होंने नभी जिला नहीं की। वे अपने प्रति सर्वत प्रमान परी।

गामीजी की विकार-पारा का उन्होंने महराई से कष्यपन करके स्वतन बुद्धि से उसका जितन मिया या। यहाँ कारण या कि जटिट-दे-ब्वटिक सम्स्वार्थी का भी वह बदुत बज्जई और सुकाई के साम हरू वता देते ये। विकारी की स्पटता की बजह से उनकी नेस्तन-संजी भी सहन और वीपनम्य होनी थी। वह एक महान् विकारक ये और जब भी कोई समस्या उनके सामने आतो थी, उसको तह में जाते ये। निपम्न इतने ये कि बढ़े-से-बढ़े मारती का मी मिहान नहीं वरते थे।

जनना जीवन निरंतर नर्ममण रहा । मरी जवानी में बहु गाणीनी के पास आपे थे, पर जहाने अपनी कोई आहातारा गेर नहीं रखी । आरम-जवार से वहती अपनी कोई आहातारा गेर नहीं रखी । आरम-जवार से वह सहा बच्चे नरे हैं। दिस्सम होता है कि दसे से जर्केरित स्वास्प्य को लेनर नह इतना परिष्यम केंग्रे नर सकें। आप लहें पन मंजिये । आपा से पहले आपनो जतार पिळ जावारा। ते से मंग्रिये, आपकी मान जाली नहीं जावारी और एक हरियम-मंत्री के परिनेर्य-मंत्रे जवार केंग्रे से एक हरियम-मंत्री के परिनेर्य-मंत्रे जवार केंग्रे से परिनेर्य परिनेर्य केंग्रे केंग्रे से परिनेर्य केंग्रे केंग्रे से परिनेर्य केंग्रे केंग्रे से परिनेर्य केंग्रे केंग्रे से परिनेर्य से परिनेर्य से स्वास्थित केंग्रे से परिनेर्य से परिनेर्य से से परिनेर्य से से परिनेर्य से परिनेर्य से से परिनेर्य से स्वास्थित केंग्रे से स्वास्थित केंग्रे से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से परिने से से परिनेर्य से से परिनेर्य से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से परिने से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से से परिनेर्य से से से परिने से से परिनेर्य से से परिनेर्य से से से परिनेर्य

जैमी काया के लिए इतना परिश्रम क्दापि समय नहीं हो सकता था। क्मेंडजा उनके जीवन का घर्म थी और उस धर्म का पालन करने-करते ही उनके प्राण विसर्जित हए।

किशोरलालमाई के जीवन की सादगी स्पृहणीय थी। न कोई दिखायट, न कोई आडम्बर और सान पान अस्वत सबमी।

वियोजातमाई को एक-म-एक दिन जाना ही या, पर कात जब कि विदेश को तो बहुता में निष्ठा प्वनेताक कोगों को परान्या पर दुनौती मिल रही है, हमें उनका निवन बहुत अवर रहा है। आत के युग को उन जैसे निष्ठासान व्यक्तियों से सावस्वकर्ता है।

हश पुष्पात्वा को हम अपनी और 'जीवन-साहित्य'
पारत की हारिक पुराजिंग अधित करते हैं उन '
'पाष्ठक' तथा 'जीवन-साहित्य'—गरिवार के प्रति है उन '
'पाष्ठक' तथा 'जीवन-साहित्य'—गरिवार के प्रति है उन '
पार्वा है कि हमारे परिवार का एक अववन्त आत्में,
पार्वा है कि हमारे परिवार का एक अववन्त आत्में,
पार्वा निवारती।'
गांधी-अर्थाती।

२ अक्नूबर को गांधी जयती है। अबेजी तिथि के हिमान से इसी तारीख को बायू का जम्म हुआ था। उन बायू का, जो बनवक जीसे, अपने जीवन का अयेक का देश की होना में ज्यानिक क्यते रहे और वसीमें उन्होंमें अवने आयो का निमर्जन किया। यह पुष्प-दिवश हमें समरण दिलानाई कि बडी-बदी वार्ते बनाकर कोई बड़ा नहीं बन वारता, बड़े बनने के लिए महान् सायना की आवस्यकता होगी हैं।

बापू नो सबसे प्रिय बस्तु चर्ता थी और उन्होते नहा या नि अवर मनाई ही जाय तो उनकी नहीं, 'चर्ता-जरती' मनाई जानी चाहिए । इसका अर्थ यह हुआ कि बापू चाहते ये कि उन्हें याद रखने ना सर्वोत्तम तरीका उनकी प्रवृत्तियों, उनके हितकारी कार्यों को आगे वढ़ाना है। पर खेद है कि आज हम उनका नाम तो लेते हैं, पर उनके काम को वहुत कम लोग हैं, जो निष्ठापूर्वक कर रहे हैं। कांग्रेस के अधिकांश तपेतपाये लोग सरकारी पदों पर चले गये हैं और वहां 'कुर्सी की मजवूरी' से वंधे हैं। जो गेप हैं, उनमें थकान-सी आ गई है और वे निराश-से हो गये हैं। तपोधन विनोवा जैसे इनेगिने लोग हैं; पर युग के विपरीत प्रवाह में उन्हें अपनी वात लोगों तक पहुंचाने के लिए कितना संघर्ष और परिश्रम करना पड़ रहा है। आज मानवता पीड़ित होकर कराह रही है और मानव की निष्ठा हिल गई है।

ऐसे में गांधीजी को हम कैसे याद करें ? नाम गांधी का लें, काम शैतान का करें, इससे अधिक विट-म्वना और प्रवंचना क्या हो सकती है ? वापू के प्राणों से भी प्यारी खादी आज मर रही है, ग्रामोद्योग नष्ट हो रहे हैं, नई तालीम को शंका की दृष्टि से देखा जा रहा है, गर्जेंकि उनके कामों को धीरे-धीरे छोड़ा जा रहा है। स्मरण रहे कि गांधीजी के कामों को तिलांजिल देकर हम उस पुण्यपुरुष को जीवित नहीं रख सकते। गांधीजी का अस्तित्व उनके कामों में है और उनका नाम लेने और उनका स्मरण करने के अधिकारी हम तभी होंगे जब उनके अधूरे कामों को पूरा करेंगे, उनके बताये मार्ग पर चलेंगे। ऐसे आदमी भले ही थोंड़े हों, देश का भविष्य उन्हींके हाथों में मुरक्षित रहेगा।

गांधी-जयंती के इस पुण्य-पर्व पर सर्वोदयी कार्यकर्ताओं को वापू के मार्ग में अपनी निष्ठा को पुन: मजबूत कर लेना चाहिए और वापू के काम में पूरे मन और हृदय से जुटने का संकल्प कर लेना चाहिए। तभी जयंती मनाने का कोई अर्थ और उसकी उपयोगिता होगी।

### ए.आई.सी.सी. के प्रस्ताव

ए. आई. सी. सी. का दो दिन का अधिवेशन इंदौर में समाप्त हो गया। अनवारों से पता चलता है कि वहां काफी लोग इकट्ठे हो गये थे; लेकिन जिस गरमा-गरमी की आशा लेकर वे गये थे, वह पूरी नहीं हुई। अधिकांश लोगों की धारणा थी कि कांग्रेस में आपसी तनाव काफी हो गया है, जिसका विस्फोट इंदौर में अवश्य होगा; लेकिन पं॰ नेहरू के कुशल नेतृत्व ने उसका मौका नहीं आने दिया। यह निश्चय ही बड़े हर्प की बात है। आपसी मतभेदों को सार्वजनिक रूप देना या किसी संगठन को खींचतान करके कमजोर बनाना व्यक्ति या देश, किसीके लिए भी हितकर नहीं है। उससे नुक्सान ही अधिक होता है।

, इंदौर में इतने नेता लोग इकट्ठे हुए; लेकिन सर-कारी नीति और कार्यों का समर्थन करने के अलावा इस जनशक्ति का क्या उपयोग हुआ ? नेहरूजी और उनकी सरकार की वैदेशिक या अन्य नीतियों के पोपक प्रस्ताव पास करने के लिए क्या इतने आदिमयों को इकट्ठा करने की जरूरत थी ? क्या देश को अपना कुछ देने के लिए कांग्रेस के पास कुछ भी नहीं रहा ?

अपने महाप्रयाण के एक दिन पूर्व गांधीजी ने अपने 'आखिरी वसीयतनामे' में लिखा था, "देश का वंटवारा होते हुए भी, हिन्द की राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा तैयार किए गए साधनों के जरिये हिन्दूस्तान को आजादी मिलने के कारण मौजूदा रूपवाली कांग्रेस का काम अव खत्म हुआ--यानी प्रचार के वाहन और घारा-सभा की प्रवृत्ति चलानेवाले तंत्र के नाते उसकी उपयोगिता अंव समाप्त हो गई।" और उन्होंने "शहरों और कस्वों से भिन्न उसके सांत लाख गावों की दृष्टि से हिन्दुस्तान को सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी हासिल" करने, फीजी सत्ता पर देश की सत्ता को प्रधानता देने, कांग्रेस को राजनैतिक पार्टियों और सांप्रदायिक संस्थाओं की गंदी होड़ से बचाने तथा ऐसे ही अन्य कारणों से कांग्रेस को तोड़ने और 'लोकसेवकसंघ' के रूप में प्रकट करने का स्पष्ट आदेश दिया था। वह जानते थे कि आजादी मिल जाने पर यदि कांग्रेस के रूप में आमूल परिवर्तन न किया गया, उसकी प्रवृत्तियों को राजनीति से हटाया न गया, सेवा के क्षेत्र में न लगाया गया तो सत्ता के पीछे लोगों के सिर फूटेंगे। इसीलिए उन्होंने कांग्रेस को सेवा के मार्ग पर प्रवृत्त करने की सन्टाह दी थी; लेकिन आज तो ऐसा लगता है कि सरकार से पृथक् ( शेप पृष्ठ ३८२ पर )

#### मंडल की खोर से

'जीवन-साहित्य' के पिछले जक में हमने भड़ल की सहायक सदस्य-योजना तथा उसकी प्रगति के विषय में कुछ जानकारी दी भी। पाठको को यह जानकर हुएँ होगा कि योजना खब लोकप्रिय हो रही है और उसके सदस्यों की सख्या तेजी से बढ़ रही है। अनेक हितैयी बय उत्पाहपूर्वक सदस्य बनाने में योग दे रहे है । करकारे के प्रयत्न जारी है। वहा पर कई अन्य नए बन्ध आगे आ गये है और हमारी पूरी-पूरी सहायना कर रहे है। पिछने अक में हमने जिन महानुभावों के नाम दिये हैं, उनका तो हार्दिक सहयोग मिल ही रहा है, साय ही सर्व थी पूरपोत्तमदास जी केजडीवाल, श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया, श्री दुर्गाप्रसाद सरावगी, श्री स्थामदेवजी देवडा, श्री रामेश्वरजी टाटिया प्रमृति से भी हमें पर्याप्त सहायता मिली है । इन सब महानुमाबो के हम अत्यन्त आभारी है। इनकी मदद का ही यह परिणाम है कि कलकत्ते में इतने सदस्य इतनी तेजी से बन गये है और बनते जा रहे हैं। प्रयत्न दिल्ली में भी चल रहा है। पिछले अक में जिन महानुभावों के नाम दिये ये उनके अतिरिक्त थी महेरकरदयाल का हार्दिक सहयोग भी हमें मिल रहा है।

पिछले अन में हमने सदस्यों की नामाविल दी थी। आगे के नाम इस प्रकार है

४४ सेन्द्रल डिस्टिलरी एड केमिक्ल वर्क्न लि॰, भेरठ केट।

भेरठ कट ।

४५ श्री भरनरामश्री दिल्ली क्लाय एड जनरल

मिला लि॰, दिल्ली ।

४६ श्री आधार्यं, श्री वर्धमान विद्यालय, बालंचन्द-नगर, पुना ।

४७ श्री हनुमान पुस्तवालय रतनुषद, वीवानेर।

४८ थ्री सेन्ट्रल डिस्ट्रिब्यूटर्स लि॰, क्लक्ता ।

४९ थी डी॰ एल॰ एफ॰, हाउन्सिम एड कन्य-टुक्शन, लि॰, नई दिल्ली।

५० इम्पलाइज वेनोफिट फड ट्रस्ट, दिल्ली।

५१ श्री अवध शुगर मिल्स लि०, हरगाव, सीतापुर।

५२ हिन्दुस्तान युगर मिल्स लि०, गोलागोकरन-नाथ, खेरी।

५३ थी मोइनलाल जालान, रायगढ ।

५४ थी मोहनलाल, नई दिल्ली ।

५५ थी प्रिसिपल, शारदा इण्टर कालेज, मूकुन्द-गढ, जयपुर।

५६ श्री गोविन्दराम सेक्सरिया, इन्दौर ।

५७ श्री हनुमान शुगर मिल्स लि०, मोनीहारी, बम्पारन।

५८ श्री एन० के० शाशरिया, कलकता।

५९ श्री मत्री, जैन स्वेतावर तरापयी, विद्यालय,

६० श्री पुनमचन्द जी गुजरानी, कलकत्ता ।

६१ थी मुरलीधर सोनयलिया, कलकता।

६२ श्री मूरजमल मोहता, कलकता।

६३ थी ओकारमल सर्राफ, कलकता। ६४ श्री वैजनाय तापडिया, कलकता।

६४ श्रा वजनाय तापाड्या, कलकता । ६५ श्री गिरधारीकाल रामनारायण, कलकता ।

६५ था १४रथाराकाल रामनारामण, नस्त्रतः ६६ थी क्लैमालाल केनडीबाल, क्लक्ता ।

६७ श्री मरलीयर खेतान, कलकता ।

६८ थी पुरुयोत्तमदास मसकरा वी ए सहजनमा, गोरखपुर ।

६९ थी बनारसीलाल बनाज, बनारस ।

हमें विस्वास है कि हिंदी अभी महानुभाव हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि के इस कार्य में अवस्थ सिन्य सह्योग प्रयान करेंगे। हिन्दुस्तान के हर स्थान पर हम क्षेत्र सावद क पहुल सके। अत हमारा अनुरोग है कि प्रयोक्त हिन्दी-येगी बन्य अपने यहां के सावन-सामन व्यक्तियों के पते हमें भेज दें, जिससे हम कोग उनसे पत्र-अवहार करते अपना मुजिया हो सो मिलनर इस योजना में उनका साथ के सके और योजना का लाभ उन्हें दे सके। भी सज्जन सस्त्य जन गये हैं, उनसे भी हमारा निवेदन

### जीवन-साहित्य : अक्तूवर १९५२

है कि अन्य बन्धुओं की रुचि इसमें उत्पन्न करे और उन्हें सदस्य बनने की प्रेरणा दें। आज के युग में, जब कि साहित्य के नाम पर बहुत कुछ अवांछनीय पुस्तकें जोरों से विक रही हैं, जो भी इस योजना द्वारा गांबीजी, विनोवाजी, पं० नेहरू, राजगोपालाचार्य, काका कालेलकर, किशोर-लाल मशरूबाला, आदि चिंतकों एवं राष्ट्र-उन्नायकों के स्वस्थ और चरित्र निर्माणकारी साहित्य के प्रसार में योग देगा, वह हिन्दी-साहित्य की और देश की भारी सेवा करेगा।

(क्रमशः)

### मंडल का जयंती समारोह

'मण्डल' का जयंती उत्सव सितम्बर में या उसके आसपास के महीनों में करने का विचार था; लेकिन कुछ मित्रों की सलाह है कि जनवरी-फरवरी में करना ठीक होगा। वैसे भी फिलहाल हम लोगों का ध्यान सहायक-सदस्य-योजना के सदस्य वनाने पर केन्द्रित हो रहा है और वह काम तेजी से चल रहा है। जैसा कि हमने ऊपर निवेदन किया है कलकत्ता, दिल्ली आदि में काफी सदस्य वने हैं और वन रहे हैं। अतः जयन्ती-समारोह जनवरी-फरवरी के आस-पास करने का विचार किया गया है। तिथि निश्चित होने पर उसकी सूचना पाठकों को दे दी जायगी। 'मण्डल' के बहुत से हितैपी उत्मुक हैं कि समारोह जल्दी-से-जल्दी किया जाय। उनके सीजन्य और आत्मीयता के लिए हम उनके आभारी हैं। हमारा उनसे अनुरोध है कि ्वे सदस्य-योजना को सफल बनाने में योग दें। यों तो जितने सदस्य वन जायँ, अच्छा है; लेकिन हमारी कल्पना है कि ५०० तो वनने ही चाहिए, तभी हम लोग साहित्य-सम्बर्द्धन और विकास की योजनाओं को पूरा कर सकेंगे। हमें विश्वास है कि हमारे हितैपियों के सिकय सहयोग देने पर ५०० सदस्य वनने में विशेष समय नहीं छगेगा। --मंत्री

( पृष्ठ ३८० का शेप )

कांग्रेस का अपना अस्तित्व कुछ रहा ही नहीं । इतने प्रस्ताव पास किए; लेकिन भूदान-यज्ञ के बारे में प्रस्ताव पास करना तो दूर, दो शब्द भी किसी ने नहीं कहं । गांबीजी जानते थे कि सच्ची आजादी सरकारों के अदल-बदल से नहीं मिलेगी, उसके लिए सात लाख गावों को संगठित करना होगा, उनकी गरीबी दूर करनी होगी, अगिआ मिटानी होगी। इसी दुष्टि से उन्होंने राजनैतिक संवर्ष के साथ-साथ रचनात्मक कार्यो पर जोर दिया था। भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भी रचना-रमक कार्यो की आवस्यकता ज्यों-की-त्यों विद्यमान है। हमारी निश्चित राय है कि कांग्रेस सरकारी नीति या कार्यो पर मुहर लगाने मात्र से देश की उतनी सेवा नहीं कर सकेगी, जितनी कि सेवा के कार्यों को स्वतंत्र हप से अपनाकर । देश के युवकों को आज ऐसा कार्यक्रम चाहिए जो उनकी शक्ति, उत्साह और त्याग का उप-योग कर सके। कांग्रेस वैसा कार्यक्रम तैयार करके और

देश की जन-शक्ति को उसमें लगाकर ही मजबूत बन सकती है, अन्यया वह राजनैतिक दलों का और अधिक अखाड़ा बन जायगी। और उसका परिणाम यह होगा कि लोगों में जो-कुछ थोड़ा-बहुत कांग्रेस का नाम शेप है, वह भी मिट जायगा।

यह अंक

इस बार जैसा कि पाठक देखेंगे सारा अंक एक प्रकार से स्मृति अंक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। इसी कारण 'कहीं हम भूल न जाएँ' स्तम्भ स्वतन्त्र रूप में नहीं जा रहा है। हम चाहेंगे कि हमारे पाठक इस अंक के बारे में तथा इघर जो परिवर्तन हमने 'जीवन-साहित्य' में किये हैं उनके बारे भें अपनी राय हमें भेजें जिससे नये वर्ष से जो और परिवर्तन हम करने वाले हैं उनके सम्बन्य में निश्चित बारणा बनाई जा सके।

—सुशील

आपके, आपके परिवार के प्रत्येक सदस्य के, प्रत्येक शिक्षानींस्या तथा पुस्तकातम्य के लिए उपयोगी हिन्दी-का अपने ढंग का पहला पत्र

वापिक मृत्य गुलद्स्ता [हिन्दी डाइजैस्ट] नमूने की प्रति

अप्रेजी डाइजैस्ट पितिशाओं की तारह दुनिया की तमाम भाषाओं के साहित्य से जीवन की नई स्कृति, एत्साह और आनन्द देने वाले लेकों का मुन्दर सजियत सक्तन देने वाला गह पत्र अपने तम का अकेला है जिसन हिन्दी पत्रा में एक नई परम्परा कायम की है। हास्य, स्था, मनोरजक निवस तथा कहानियां इनकी अपनी वियोषता है।

#### लोकमत

"गुलदस्ना को टक्कर का मासिक पत्र असी तब प्रकाशित नहीं हुआ । मैं इस प्रीक्ता को आयोगन मृतना हूँ।" ——स्वामी सम्बदेध परिवाजक

आधापान हुनना हु ।

' इसमें धिक्षा और मनोरबन दोनों के बच्छे साथन उनस्थित रहने हैं।" — नुलाबराय एम०ए०

"गुल्दरना बच्छो जीवनोवयोगी सामग्री दे रहा है।" — जैनेन्द्रहुमार हिल्ली
"गुल्दरना विचारी का विस्तिवधालय है, जिसे घर में रखने से सभी लान उठा सकते है।"

#### <sub>सा विवास का विश्वास्था</sub> । गुलदस्ता कार्यालय, ३९३= पीपलमंडी श्रागरा ।

मारतीय साहित्य दी प्रतितिति मासिक पत्रिका

वार्षक मूल्य राष्ट्रभारती एन प्रति

सम्पादक-श्री मोहनलास मट्ट, थी ह्योकेश शर्मा

साहित्य-सस्हित-क्ला प्रधान पत्रिका "राष्ट्र-भारती" प्रति भास आपको हिन्दी और भारत की विभिन्न प्रात्तीय तथा विदेशी मापाओं की शाहित्यक-सास्ट्रतिक गठिविधि का परिचय देशी !

'कोबिद', 'राज्यायायल' और 'विद्याय' के अध्ययनतील प्रीड छात्रों की सहायता के जिये प्रति-मास इस परिवा में मून्य-मून्य पार्य-मुन्तको को नेवर समालीचनात्मक सामग्री भी प्रस्तुत को कावायी राज्यायाती प्रत्येक मास की १ तारीस को

राद्रभारता अल्बन् मार्च्या १ तार प्रशासित होती हैं।

प्रबन्धनर्ता—"राष्ट्रभारती" राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्घा (भच्य-प्रदेश) राष्ट्रभाषा हिंदी का सवित्र साम्हितिक मासिक पत्र

वाधिक मृत्य विक्रम एक प्रति

(सपादक तथा सचालक—सूर्यनारायण ध्यास) हिन्दीका सर्वयेष्ठ मानिक 'विकम' ही है, जिनका राजा-महारावाओं से ठेकर देश के सर्वसामारण समावतक समान रूप से प्रवेग हैं।

स्वस्य साहिय, शिष्ट हास्य, चुनी हुई विवता और नहानी एव विचार-प्रत्न पथामृत तया समस्य मासिक साहिय का सुन्दर परिचय 'विवय' की अपनी विशेषता है।

समी विद्वाना ने हिन्दी का 'मॉडने रिट्यू' कहकर इनको प्रचसा की है।

यदि आप अवनर्व प्राहत नहीं हैं तो अनिज्यन ब्राहत बन जाइचे, मित्रों को बनाइचे।

विशेष वानमधे के लिए लिपिये:

ध्यवस्थापर— विक्रम कार्यालय, उउजैन (मालवा) नूतन वाल-शिक्षण-संघ की

वापिक मूल्य

# हिन्दी शित्त्ग्ग-पत्रिका

एक प्रतिका ।=)

्रिशाज का बालक कल का निर्माता है' यह सब मानते हैं; परन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक प्रिवनों के हिए प्रयत्न 'हिन्दी शिक्षण-पत्रिका' करती है। यह नूतन शिक्षण के सिद्धांतों के अनुसार वालोपयोगी म्ह्याहित्य प्रकृत करती है। यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करती है। यह पत्रिका मनोविज्ञान के आचार्य थी गिजुभाई वयेका के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति है। पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है।

हिन्दी शिक्षण-पत्रिका---५१ नंदलालपुरा लेन, इन्दौर ।

# क्लपना (मासिक)

पि्ये

जिसमें उच्चकोटि के साहित्यिकों और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी।

प्रत्येक अंक में एक रंगीन चित्र

स्वायी स्तम्भ:---

कला प्रसंग—विनोद विहारी मुकर्जी सांस्कृतिक टिप्पणियां—दिनकर कीशिक

साहित्य बारा—इस स्तभ्भ के अंतर्गत पाठकों, लेखकों बादि द्वारा उठाये गये साहित्यिक प्रश्न आदि हैं।

पुस्तक समालीचना—कल्पना अपनी निर्मीक समीक्षा के न्यार प्रसिद्ध है।

वार्षिक मूल्य पृष्ठ संख्या ८०, एक प्रति का १२) १)

८३१, वेगम वाजार, हैदरावाद।

तार : हिन्दी

फोन : ५४५०

### श्रजन्ता

: मासिक :

प्रकाशकः हैदरावाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, हैदरावाद (दक्षिण)

मूल्य : ९-०-० भा० मु० वार्षिक

किसी भी मास से ग्राहक बना जा सकता है।

कुछ विशेपताएं :

१. उच्च कोटि का साहित्य

२. सुन्दर और स्वच्छ छपाई

३. कलापूर्ण चित्र

सम्पादक

श्री वंगीयर विद्यालंकार : श्री श्रीराम शर्मा

कुछ सम्मतियां

१. "अजन्ता का अपना व्यक्तित्व है।"—जनारसीदास चतुर्वेदी २. "अजन्ता हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिकाओं में से एक है।"— कन्हैयालाल माणेकलाल मनशी

# उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

- १. बर्द्धमान १८००) पुरस्कार मूल्य ६)
- २. शेरोमुखन ५००) ,, मूल्य ८)
- इ. द्वीरोगायरी ५००) , मूल्य ८
- ४. पयचिह्न १०००) " मूल्य २)
- ५. वैदिक माहित्य ६००) ,, मूल्य ६)
- ६. मिलनयामिनी ५००) " मूल्य ४)

# सन् १६५२ के नवीन प्रकाशन

- १. हमारे आराव्य(पं०वनारसीटास चतुर्वेदी)मू० ३)
- २. संस्मरण , , मृ०३)
- मूल्य ८) ३. रेखाचित्र (प्रेस में) " मुख
- " मूल्य २) ४. रजतरिम (डा॰ रामकुमार वर्मा) मू॰ २॥)
  - ५. आकाय के तारे : घरती के फूल (क. मिश्र) २) ६. जैन जागरण के अग्रदूत (अ०प्र०गोयलीय) मू०५)
- भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ५

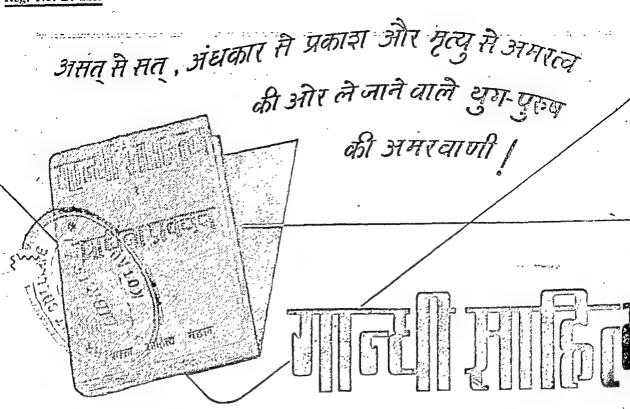
### सस्ता साहित्य मगडल की वे पुस्तकें

#### जिनसे

8	आपका	पुस्तकालय	आकर्षन	बनेगा.	उसकी	शोभा	बहेगी

- 🛮 आपके ज्ञान में बृद्धि होगी, आपका समूचा परिवार चाव से पढेगा
- जिन्हें आप अपने मित्रों और सम्बन्धियों को भेंट करने तो वे बहुत ही प्रसन्न होगे
- विश्व इतिहास की भालक(जबाहरकाल नहरू) दुनिया के देशों का झान करानेवाला महान् प्रयः।
  वहां आकार परिवर्धित सामग्री मजबूत जिल्द आकर्षक आवरण सुन्दर छपाई २१)
- श्रेयार्थी जमनास्त्रास्त्रजी (हरिमाळ वपाध्याय) हिन्दी के विद्वहस्त लेवक द्वारा गामीशी के 'पावर्थे पुत्र' जमनालालजी की उचन्याव-नैती रोषक जीवनी-प्रेरणादायक और विद्वाप्यद ६)-६॥)
- भागवत धर्म (हरिमाऊ उपाध्याय) मौनिक उत्रति ने साय आध्यारिमक उत्रति के पथ पर के जानेवाला अभूतपूर्व अय । भागवत के एकादश स्कृष का वृद्धी ही सरल-सुबोध सैकी में अनुवाद ।
- सर्वोदय तत्त्वदर्शन (गोपीनाथ पावन) अहिंसा को प्रतिष्ठा और अहिंसक राज्य-व्यवस्था का बहुत ही परिध्यम, विवेच तथा सुक्ष दृष्टि के किया नया विवेचन।
   ७)
- ५. कारायास फहानी (मुणीला नैयर) गाथीजी तथा उनके सभी-साथियो के आगाला महल में वही जीवन के इनकीस मास का गामिक, रोचक और विकाय दृशाला । गाथीजी के मानव, राज-मीतिल, वायू रुप की विविध झाविया । महादेवआई और वा के निधन के हृदय दिदारक दिवरण। २८ दुर्लभ चित्र।
- ६. कांग्रेस का इतिहास (पट्टानि सीतारानैया) रूपमण १५०० पूळो की इन सीन किरवो को पडकर आपके सामने १८८५ से टेकर १९४७ तक वा स्वतंत्रता के लिए तक्कावता, हसते-हसते जान पर लेलता और फिर अन्न में विजयी होता एक युग आ वका होता है। आवादी के लिए कितनी तपस्या, साधना और बलिदान वरने पढे हैं, इसका प्रामाणिक इतिहास । प्रत्येच लिस्ट का मूल्य १०) सेट रूपे ने पर २० सेट र
- ७. मेरी फहानी (जवाहरलाल नेहरू) लगभग ९०० पृष्ठों की इस आत्य-क्या में राष्ट्र के लोकप्रिय नेता की जीवन-नहानी हैं। इसमें लेखक ने अपने मानसिक विकास नो सही सही अकित करने का प्रपास किया है। नया सस्करण।

अन्य प्रकारानों के लिए कार्ड लिखकर बड़ा सुचीपत्र मंगा लीजिए' सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली



'सस्ता साहित्व मंद्रल' ने इस ग्रन्यमाला के प्रकाशन का विदीव आयोजन किया है। इसके अन्तर्गत राष्ट्रकिता महात्मा गांभी का संपूर्ण साहित्व हिन्दी में क्लाभग वच्चीस जिल्दों में कि काशित होगा। हिन्दी में इतना बढ़िया, प्रामाणिक और सस्ता साहित्य आज तक किसीने भी प्रकाशित नहीं किया। सभी भाग पठनीय, ममनीय भीर संप्रदृषीय हैं।



### प्रकाशित पुस्तकी

आषार्यं विनोषा : "पुस्तके अस्यमान्नो सीर बहुगुणी है।" (१) प्रार्थमा-प्रयचन-१-३) (२) प्रार्थमा प्रयचन-२ - १॥)

क्षिष्ठ (३) गीता-माता ४) (४) पंत्रह अगस्त के बाद २)

हास्ट्रपिष्ठ हा॰ हाजोन्द्रप्रसाय । " (भंडस झा यह) (५) धर्मनीति २) (६) व०अफ्रीका का सत्यागह ३॥)

क्षर्यत्तनीय गीर शायहयक संकल्प हैं।" (७) मेरे समकालीन (८) प्रार्थमा-प्रवचन-३ (प्रेस में)

परी पोजना तथा अन्य पुस्तकों के लिए मण्डल का बड़ा स्चीपत्र मंगाकर देखने की कृपा करें।

रास्ता साहित्य में जिला इन है दिल्ली



दिसम्बर

इस अक व विशेष लग

Oमवका सहयो। चाहिए

• अजारणम् राज्यसम् • अत्राप्त अदि ब्रांनया पर विजय सम

• शत्र जाद प् • • चित्रज्ञान

**७**हमारा तार स्वाए

O र्ग मनोगचद्रदाम गुप्त

• भारत और विश्वास

**0**गवारपाठा

. आर्दे - आर्द

क्ष स्पाद क

हरिनाऊ उपाध्यायः यगपार जैन

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

एक प्रति का

# लेख-सूची

्. पहाज़ी पर के उपदेश हजरत ईसा	४१७
२. सन्का सहयोग चाहिए . विनोवा	४१८
३. अजातमञ्जूराजेन्द्रवायू यशनाल जैन	४२३
४. जोध आदि वृत्तियों पर विजय कैसे ?	
अरविन्द	४२५
५. फांबस्तान खलील जिन्नान	४२६
६. हमारी लोक-कथाएं	
आदर्गकुमारी यगपाल	826
<ul> <li>श्री सतीज्ञचन्द्रदास गुप्त शम्भुनाथ सबमेना</li> </ul>	850
८. आत्म-विद्वास कन्हैयालाल मिन्डा	83 ž
ू. गीत 'नीरज'	४इ५
१०. जंन जेक्वस रूसो विष्णुअरण	४३६
.१. भारत और फिलपीन रामसिंह रावल	૪૩૭
<ol> <li>गद्य-गीत गंकरलाल जा० पुरवार</li> </ol>	४३९
२२. गंबारपाठा नित्यानंद	860
्र. कसीटी पर समालोचनाएं	.995
१५. हवा क कैसे ? सम्यादकीय	866
्६. मंडल की ओर से मंत्री	39.9.

### ञ्यावश्यक सूचना

'जीवन-साहित्य' के ग्राहक नं० १००१ ने २२०० तक का वार्षिक शुक्क इस अंक के माथ मगाप्त हो जाता है। इस वर्ष डाकसाने के नये नियमों के अनुसार कोई आवञ्यक सूचना अथवा मनीआईर फार्म नहीं रख सकते। ग्राहकों में हमारा अनुरोध है कि वे स्वतः ही अपना आगे के वर्ष का गुक्क दिसम्बर १९५२ के अंन तक भेज देने की कृपा करें।

आगामी वर्ष का वार्षिक मूल्य भेजते नमय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। नवीन ग्राहक मनिआर्डर कृपन पर 'नवीन ग्राहक' ब्रह्म अवश्य लिखें।

बी० पी० से भेजने का स्त्रीहित-पत्र यदि भेजें तो अपना ग्राहक नम्बर अवस्य लिखें अन्यया भूल से आपका नाम नवीन ग्राहकों में भी लिखा जा नकता है और इस प्रकार दो स्थानों पर नाम लिख जाने से बी०पी० आपको दो बार भेजी जायगी।

'मण्डल' की जयंती के अवसर पर 'जीवन-माहित्य' का बहुत मुन्दर और उपयोगी विशेषांक प्रकाशित हो रहा है—'प्रगति के पच्चीम वर्ष', जिसमें पिछले पच्चीस वर्ष की साहित्यिक प्रगति का विद्वानों द्वारा विवरण उपस्थित किया जायगा। यह विशेषांक विशेषांक में कही अधिक संदर्भ ग्रंथ होगा। पाठक कृपया उसका ध्यान रक्षें। —द्यक्स्यापक

# भारत के लोकप्रिय नेता नेहरूजी का महान् ग्रंथ चिएच इतिहास की सल्वक

यदि

अभी तक आपने नहीं खरीदा है तो ज़ीघ्र खरीद लीजिये। ऐसे ग्रंथ जल्दी प्रकाशित नहीं होते। इस बार ही यह बारह वर्ष बाद निकला है।

वड़े आकार के लगभग ९०० पृष्ठ, सुन्दर-गुद्ध छपाई, आकर्षक एवं मजबूत जिल्द

फिर भी मूल्य केवल २१)

अवसर चूकने पर कहीं आपको निराग न होना पड़े !

सस्ता साहित्य मगडल नई दिल्ली उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा विहार प्रादेशिक सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाइब्रेरियों तथा उत्तरप्रदेश की प्राम-पंचायतों के लिए स्वीकत

का मिर्मिक





हजरत ईसा

### पहाडी पर के उपदेश

मुबारिक है वे जो दूसरो की भलाई करने के लिये भूख प्यास सहते है, उन्हे

जरूर भर पेट खाने को मिलेगा।

अगर तुम पूजा का सामान लेकर मन्दिर में पूजा के लिए जा रहे हो और तुम्हे याद आ जावे कि तुम्हारे किसी भाई को तुमसे कुछ भी दुख पहुँचा है तो उस सामान को वही छोड कर लीट जाओ, पहले जाकर अपने भाई से सुलह करो और फिर जाकर ईश्वर की पूजा करो।

कोई आदमी एक साथ दो मालिको की नौकरी नहीं कर सकता। या तो एक से नफरत करेगा और दूसरे से प्रेम और या एक की सेवा करेगा और दूसरे से बेपरवाही । तुम परमात्मा और 'मैमन' (धन का देवता) दोनो की सेवा एक साय

नहीं कर सकते।

# सबका सहयोग चाहिए

कल मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि स्त्रियों को सभा में लाइये। और यह खुशी की वात है कि कुछ स्त्रियां यहां आई हैं। लेकिन इसके आगे जो भी सभा होगी उनमें और भी अधिक तादाद में स्त्रियों को आना चाहिए। ज्ञान सीखने का मीका स्त्रियों को मिलना चाहिए। जो नाहक झगड़े की सभायें होती हैं उनमें स्त्रियां न जायें। और अगर जायें भी तो वहां पर निकम्मी वातें न होने दें, उसे रोकें। लेकिन अगर आज इतनी हिम्मत आपमें नहीं है तो वहां मत जाइये। लेकिन जहां पर ज्ञान सुनने को मिलेगा, जीवन-शृद्धि की तथा जीवन कला की वातें होंगी, जरूर जाना चाहिए। वहां स्त्रियों को सार्वजनिक सेवा के काम में शरीक होना भी वहुत आवश्यक है। वहुत से लोग मानते हैं कि स्त्रियों का काम घर तक ही महदूद है। लेकिन मैं यह नहीं मानता । स्त्री और पुरुप, दोनों का काम घर में भी है और घर के वाहर भी। हां, घर के काम गहरे होते हैं। बच्चों का रक्षण करना बुनियादी और कठिन काम हैं। और इस के लिए माताओं को अधिक ध्यान देना आवश्यक है। फिर भी उन्हें समाज के कामों में आना चाहिए, नहीं तो आज के जैसा वह काम पृष्पों के ही हाय में रहेगा। और पुरुषों ने जो राह चलायी हैं यह खतरनाक है। आज हम देख रहे हैं कि दूनिया में पचीस सालों में दो महायुद्ध हो चुके और आज भी झगड़े और कशमकश चल रही है। कोई नहीं कह सकता कि इसमें से तीसरा महायुद्ध निर्माण होगा। पुरूपों ने जो समाज-रचना वनायी उसमें युद्ध और झगड़े ही निर्मित हुए। वे यशस्वी नहीं हुए और इसलिए स्त्रियों को उस क्षेत्र में आना चाहिए और अपने गुणों का प्रभाव वहां डालना चाहिए। स्त्रियों में दया, क्षमा, शांति और प्रेम इत्यादि गुण होते हैं। इन गुणों की आवश्यकता जिस तरह घर में है उसी तरह समाज में भी है। समाज का काम केवल पुरुषों के हाथ सौंपने से ही हो सकता । आज तक हमने ऐसा किया और नतीजा यह हुआ कि घर में तो प्रेम और शांति रही, लेकिन वाहर झगड़े रहे। अंदर की और वाहर की दुनिया का यह भयानक भेद मिट जायगा, अगर जिस प्रेम के आधार पर कुटुंव की रचना हुई है उसी के आधार पर समाज की हो जाय।

भूदान-यज्ञ के क्या मानी है यह स्त्रियां, पुरुप, वच्चे, बढ़े सभी समझ सकते हैं। स्त्रियों के ती वह वात सीघे मन में पैठ जाती है। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि आप जिस तरह कुटुंव में रहते हैं, प्रेम से 'एफं' दूंसरै के साथ व्यवहार करते हैं, घर की कमाई सबकी मान कर उसका सब समान उपभोग करते हैं, वैसे ही समाज में भी होना चाहिए। सारा गांव एक कुटुंव बनना चाहिए। जमीन सबकी होनी चाहिए। हमने यह देखा है कि मुख दूसरों को वांटने से बढ़ता है और दु:ख वांटने से घटता है। हम सुख बढ़ाना और दुख घटाना चाहते हैं और दोनों का इलाज एक ही है-दूसरों के साथ वंटवारा करो । मैं चाहता हूं कि गांव वाले एक-दूसरे के सुख-दु:ख में हिस्सा लें। किसी को अपना सुख देने से खुद का घटता नहीं। लेकिन आजकल जो पैसे की माया चल रही है उस पर से ऐसा लगता है कि व्यक्ति अपना पैसा दूसरों को देने से खुद का कुछ नुकसान होता है यह महसूस करता है। इसका कारण यही है कि कूटुंव का न्याय समाज में नहीं चलता । इसलिए उस न्याय को समाज में लाना होगा। तब हर कोई समझेगा कि दूसरे के दृःख में हिस्सा लेने से दुःख कम होता है और अपने सुख में हिस्सा देने से सुख बढ़ता है। यह काम कितने महत्व का है इसको अगर स्त्रियां समझेंगी तो वे जमीन की माया ममता नहीं रखेंगी। और अपने पति से कहेंगी कि वावा को जमीन दे दो। उनकी नीति से एक का भला तो होता ही है लेकिन उसके साथ दूसरे का बुरा नहीं होता है। इसलिए उनके कहने के अनुसार छठा हिस्सा दे दो। गरीव को जमीन मिलेगी तो वह कृतज्ञ होगा। उसके मन में आपके प्रति

प्रम निर्मित होगा और आपको एक अच्छा मिन हासिक होगा। जगर किसी के पास बळारह एकड जमीन हो और उसमें से नह तीन एकड जमीन दे देता है, ती उससे उसका कुछ विकरता नहीं। बक्त के हुए पन्नेह एकड में बहु ज्यादा मेहनव करेगा, जिससे देता का उत्पादन बढ़ेगा। उस पर परमेश्वर की हुगा होगी। और जिसे वह तीन एकड जमीन मिन्टेमी वह भी सुखी होगा। अपने पास ज्यादा जमीन होने से हम पूरी तरह से उसकी हिस्कान सह। भर सकते हैं। इसलिए छन्न सिन्मा से जाय तो हुछ विगडता नहीं, इसलिए छन्न हिस्सा नहीं,

कल यहा पर प्रात के कार्यकर्ताओं की परिपद क्षर्त थी । सारे प्रात से एक सी पचास कार्यक्त्रों आये थे। उन्होने तय किया कि हम सबसे छठा हिस्सा मार्गेगे। 🖇 इसलिए अब बहनों को अपने पति, भाई और लंडको को सनसाना चाहिए कि हमारा मोह मत रखना। जमीन देने से गाव का और देश का मला होता है। पुरुष अक्सर कहते है कि हम जमीन देंगे तो हमारी हित्रया क्या कहेगी और बाल-अच्चो का कैसे पालन-पोपग होगा । इसलिए इस काम को बहनें समझ ले. तो जो प्रेम का बातावरण घर में है वह गाव में भी निर्मित हो सकता है। मैं बहनो को बहना चाहता हू कि आपकी ग्राममाता बनना चाहिए, तो गाव गोकुल बनेमा। इसी दनिया में बैक्ठ का निर्माण होगा । जहा प्रेम होता है वहीं पर वैकुठ होता है। वह किसी कीने में पड़ा हआ नहीं रहता। वह कैलास में ही नहीं, हमारे यहां भी है। गाव में प्रेम का वातावरण बने दी सबके जीवन पवित्र बनेंगे और गाव गोकुल होगा। स्तिया इसको सहज समझ लेंगी ! उन्हें यह समझने में कुछ भी कठिनाई नही होगी । लेक्नि, उन्हें सभा में बाने ही नही दिया जाता । पर्दे में कैदी जैसे बद रखा जाता है। नतीका यह होता है कि उनके दिल छोटे बन जाते हैं। दरअसल में उनके दिल छोटे नहीं होते । परत् घर के सक्चित वातावरण में रहने के कारण वे अपने ही बाल-बच्चो का सोचती है। लेकिन जब स्त्रियों के कानी में ज्ञान जायगा तब ऐसी हालत नहीं रहेगी। में वहता हू कि हरेक समा मे

जितने पूरुप आते हैं उतनी ही स्त्रिया आयें, सो ही समाज में इस पर पूरा विचार होगा । अवरे विचार से गाडी चलती नहीं । इन जाती है । स्त्री और परूप. दोनो साय-साय चलने से समाज की गाडी चलती है। दोनों को मोक्ष का समान अधिकार है। स्त्रियों की मोक्ष. विद्या, ज्ञान, और वे चाहे तो धन का भी अधिकार होना चाहिए । दोनो को समान अधिकार होना चाहिए. यह वात शास्त्रों ने भी मानी है। मन ने कहा है कि माना की योग्यता पिता से हजार गुना बढकर है । इसका मतलब यह है कि अगर माताओं से ठीक दग से ज्ञान मिलेगा वो सारे समाज की जितनी रक्षा होगी उतनी रक्षा और किसी से होने बाली नहीं है। और इसलिए यन ने स्त्रियों के सामने पवित्रता ना बादर्श रहा। आज भी हम देख रहे है कि स्त्रियों ने ही समाज में पवित्रता की रक्षा की है। तिलक महाराज ने कहा है कि स्त्रियों ने धर्म की रक्षा की है। हम देखते हैं कि स्त्रिया शराब नहीं षीती । वीडी और सिगरेट से भी उन्हें नकरत है । अगर वे इस तरह का बरा काम करने लगेंगी तो सारा समाज खतम हो जायगा । आजकल समान हक की माय की जाती है। कुछ स्त्रिया कहती है कि हमें भी वीडी-सिगरेट पीने का पुरुषों के जितना ही अधिकार होना चाहिए । मै उनसे बहवा कि, हा, नरक में जाने का दोनों का पूरा अधिकार है। पर मैं चाहता ह कि वे ऐसी वरी बाते न करे। उनका काम तो पृथ्पों को नरक में से छुडाना है। मैं चाहता हु कि हरेक पढी-लिखी स्त्री 'गीता-प्रवचन' पढे तो मेरा कान आसान होगा । स्त्री झान सपादन करेगी और गीता-भाता हरेक घर में बैठ आयशी तो मेरा नाम हो आयगा।

कुछ विद्याचियों ने मुससे सवाल पूछा है कि आपके मूदान-यज में हम विश्व तरह ने योग दे सकते हैं। मुझे यह मुनन र खुनी हुई कि विद्यार्थी इसमें दिलनस्मी के रहे हैं। कुछ लोग विद्याचियों के बारे में निरादा हो गए हैं। वे दिकायत करते हैं कि विद्यार्थी उरह बन गए है, उनमें नम्रता नहीं हैं। कुछ हर तक यह बना सही मी हो सनती हैं। लेविन कुछ मिला कर के हिन्दुस्तान का विद्यार्थी- समाज विनयगन्य नहीं है। अगर कसूर है तो विद्यार्थियों का नहीं, तालीम का है। सब लोग कहते है कि तालीम गलत है। सरदार पटेल तो यह कहते-कहते मर गये कि तालीम खराव है। हमारे डा॰ राघाकृष्णन यही कहते हैं। फिर भी तालीम में कोई वदल नहीं हो रहा है। जब हर शख्स बदलना चाहता है तब बदल क्यों नहीं हो रहा ? क्या तालीम मृत्यु के समान भगवान् के हाय की चीज है, हमारे वस की बात नहीं है ? ऐसी कोई बात नहीं है। लेकिन हम सोचते नहीं। और सोचते हैं तो आहिसता-आहिसता । ये पढ़े-लिखे लोग जितने सुस्त हैं उतने सुस्त देहात के लोग नहीं हैं। वैसे तो कुल मिला-कर हिन्दुस्तान के लोग सुस्त हैं। सब कहते हैं कि नई तालीम होनी चाहिए। पर चलाते हैं पुरानी ही रटन। स्कूलों में आज भी वही पुराना इतिहास, पुराना भूगोल, पुराना गणित चलता है। जवतक यह नहीं वदलता है तवतक विद्यार्थियों के मन में संतोप नहीं निर्माण हो सकता । विद्यार्थी तो अखबार पढ़ते हैं । दुनिया की सभी बातें वे पढ़ते हैं, जानते हैं और सुनते हैं। और फिर उनके दिलों में विद्या-ज्ञान प्राप्त करने की स्वाहिश होती है और वे चाहते हैं कि देश की सेवा करें, परन्तु उन्हें मूझता नहीं कि किस तरह सेवा की जाय । क्योंकि उनकी विद्या का देशसेवा से कोई ताल्लुक नहीं है। नतीजा यह होता है कि विद्यार्थी असंतुप्ट हो जाते हैं और फिर उदण्ड बन जाते हैं । लेकिन मैं चाहता हूं कि वे उदण्ड न वनें। मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान के विद्यार्थी अपनी मातृभूमि के लिए अत्यन्त पराक्रम करने के लिए उद्यत हैं। विद्यार्थियों के पास जमीन तो नहीं रहती है। छेकिन मैं चाहता हूं कि वे अध्ययन करें। जमीन का मसला क्या है, अर्थशास्त्र उस वारे में क्या कहता है, इसको वे समझ छें। हमारी वातें तो जान ही लें। लेकिन विरोधी विचारों का भी अध्ययन करें। मैं चाहता हूं कि विद्यार्थी इस विषय का पूरी तरह से अध्ययन करें।

दूसरी वात में यह चाहूंगा कि भूदान-समस्या तव हल होगी जब सारे लोग मेहनत-मजदूरी की आदत डालेंगे। आज विद्यायियों में वह आदत नहीं है। तुलसी- दासजी ने कहा है कि हमको वर्षा, हिम, मारुत, घाम सहन करने की आदत होनी चाहिए। परंतु आज की तालीम ही ऐसी है कि विद्यार्थियों में यह आदत नहीं डाली जाती है। उन्हें सब तरह से महफूज रखा जाता है। यह सारा दोप तव जायगा जव तालीम में वदल होगा। अपनी तालीम में बड़ी भारी कमी यही है। लेकिन फिर भी विद्यार्थी इस वात को समझें और खुद मेहनत करें। अकसर घरों में माताएं या नौकर कपड़े घोते हैं, लेकिन विद्यार्थी को चाहिए कि अपने कपड़े खुद घोएं। में चाहता हं कि वे अपना कमरा खुद साफ करें। और भी पृष्पार्थ करना चाहते हैं , तो सूत कातें और अपने लिए कपड़ा बनाएं, भाजी-तरकारी पैदा करें। शरीर को मजबूत बनाना, व्यायाम और खेलकूद की ओर ध्यान देना और ब्रह्मचर्य का पालन करना, जिससे काया, बाचा और मनसा पवित्र रह सकें, यह विद्यार्थियों का काम है। बीस साल तक शरीर बढ़ता है। उसी समय अच्छी आदतें डालनी चाहिएं। विद्यार्थी को नी वजे सोना चाहिए और चार वजे उठकर अध्ययन करना चाहिए। लेकिन आजकल उलटा होता है, इसलिए विद्यार्थी दोनों तरफ से खत्म होते हैं। जिसने सुवह का समय खोया वह विद्यार्थी नहीं; प्रतिभा-शून्य, निस्सत्व मनुष्य है। प्रातःकाल में त्वरित विद्या हासिल होती है, इसलिए हमारे पूर्वजों ने भी सिखाया है कि सुबह अध्ययन करो। उससे ताजगी रहती है। रात को सिनेमा देखना विलकुल गलत है। उससे मन, आंख और नींद, तीनों विगड़ते हैं और स्वप्न आते हैं। रात को सोने के पहले तारिकाओं का दर्शन करना चाहिए। उससे बढ़कर क्या सिनेमा हो सकता है ? इस विशाल आकाश का और तारकाकुंजों का अध्ययन कर, भगवान् का चिंतन करके सो जायं तो ,अच्छा होगा । स्कूल में आगे जो काम करना है उसकी सारी तैयारी करनी चाहिए। आप भूदान-यज्ञ में शरीक होना चाहते हों तो इसके पीछे अर्थशास्त्र की जो बात है उसका अय्ययन करें । शरीर और मन पर अंकुश रखो और ब्रह्मचर्यं का पालन करो। रात को सिनेमा मत देखो। यही मैं आपसे चाहता हूं । जो बड़े विद्यार्थी होते हैं

उनको छुट्टिया के समय मे देहात मे जाकर भदान-यज्ञ का प्रचार करना चाहिए। सारे विद्यार्थी साफ-सूयरे रहे । घर की सफाई बहने कर लेती है इसलिए विद्या-थियो को चाहिए कि वे बाहर की सफाई करे। विद्यार्थी प्रति दिन पद्रह मिनट भी सफाई को दें तो सारा बक्सर शहर आइन जैसा साफ होगा । घर के बन्दर जैसी सकाई रहती है वैसी बाहर भी होनी चाहिए। इसीलिए हमने 'स्वच्छ भारत आन्दोलन यह शब्द उठाया। स्कूल में अञ्जे पालाने हो और विद्यार्थी उसकी सफाई की ओर ध्यान दें। भेरे यन म विद्यार्थियों ने लिए प्रम है। मै आज तक कुछ न-कुछ विद्याभ्यास करता वा रहा ह। दितिया का काम तो चल ही रहा है। लेकिन मेरा ऐसा एक भी दिन नहीं जाता है जबनि मैने कुछ-न-कुछ अध्ययन न किया हो। इसीलिए मै वाजा रहता हु। जड मही बनता । विद्यार्थी अगर यह वरगे तो हिन्दस्तान की नीव खडी होगी।

अब मैं शहर वाले शिक्षितों से बूछ बहुना चाहता ह । कल मैंने सुनाया कि मेरा काम एक बुनियादी काम है। हम न सिर्फ मूमि का बटवारा करना चाहते है, मल्य रामराज्य प्रस्थापित करना चाहते हैं। सारे गाँव परिशक्ष और निर्मेल यनना चाहते हैं। आज सुबह में जेल में सोशलिस्ट भाइयों से मिलने गया था । मझे उनसे मिलकर लुशी हुई, क्योंकि वे भी देश की सेवा करने का लयाल रखते हैं। मुझे इस बात का दुख है कि वे एक दिन भी जैल में रहें। उन्हें फीरन छोड़ देना चाहिए। उससे कुछ भी बिगडेगा नहीं। मैने उस निमित्त से सारा जेल देवा और मुझे बारचर्य हुवा कि जेल में भी वातने और वृतने नी मिल लडी कर दी है। कैदियों की यन के सामने खड़ा रह कर काम करना पडता है। वे भोरी करके वहा पहुचते हैं। और उनमें से बहुत से ऐसे होते हैं, जो खाना न मिलने के कारण चौरी करते हैं। हा, उनमें से कुछ बदमाश भी होते हैं, जो खाना मिलने पर भी बुरे नाम करते है। लेकिन बहुत से लोग गरीन तबके के होते है। वहां जेल में उनकी रखने का उद्देश्य यह है कि उनकी बहा पर ऐसा उद्योग सिम्बाया जाय, जिससे बाहर जानर वे अपने कुटुब का पालन-पोपण नर सके। अगर उनके। हाथ से सूत कातना और बुनना सिलाते तो अच्छा होता। परंतु उनहे छुटने पर बया मिन्नो में नमा कि स्वात है? बया उनकी रोजी मिन्नेगी, ऐसी कोई गारदी है? यह नही हो सनता है। इसिल्ए उनकी हाथ के उद्योग सिवाने वाहिए। लेकिन आजनक हम लोगो के दिमाग सिवा कर्य बनते हैं। हमें पिता हो। बेचिन आजनक हम लोगो के दिमाग सिवा कर्य बनते करें। यह में पिता हो। बचा करें। यह में पिता हो। बचा हम गरदी की यन बनाकर उनसे पणुभा के जीता काम लेना चाहते हैं? या उनकी वृद्धि विकासत हो वे अपके गांव की सेवा करें अपनी सपित व्याप्टें यह हम चाहते हैं ? इसारी बचा कर्यना है इस पर जग सोवना चाहर ।

मैं इस तरह सोचता हु तो आज के जेल, विद्यालय, राज्य-कारोबार, व्यापार में सब कैसे चले, इसकी दूसरी भी भुरत हमारे सामने आती है और आजका सब बूछ भहा लगता है। अब हम उसको सुधारना चाहते है। हम जो कुछ सोचते है उस तरह से दूसरे सोचते ही नहीं, ऐसा मेरा कहना नहीं है । लेकिन पश्चिम से एक प्रवाह आया है, जिसमें हम सब वह रहे है । मै पश्चिम का विरोधी नहीं हु। पश्चिम की निंदा और पर्व की स्तरित में नहीं करना चाहता। दोनो में जो अच्छी बाते है. उनको में छेना चाहता ह और जो ब्री है , उनको छोडना चाहता हु । उसी तरह मैं प्राचीन काल की अच्छी वाते. इस काल की अच्छी बातें. इस देश की अच्छी बाते. साहर के देश की अच्छी बाते लेना बाहता ह । लेक्नि परिचम में आज जो अर्थ-शास्त्र का विचार चला है और जिसने वहा वाली की भी समाधान नहीं दिया, क्या हम उसी की यहा लाना चाहते हैं ? आज किस देश में चैन है ? रशिया, इन्हेंग्ड. अमेरिका, अर्थनी बादि में कही भी सुख नहीं है। उनके रास्ते से सूल नही मिलता है, लडाइया और अशांति ही पैदा होनी है, यह हम देख रहे हैं। वहा सी अच्छी चीजें हेने में कोई हर्ज नहीं हैं। लेकिन हम दिमाग रख-कर सोचे और काम करे, यह मैं चाहता ह<sub>ै।</sub> कैदियो को मिल में उद्योग नहीं सिखाये जाते । नतीजा यह होता है कि छटने के बाद भी उनको बाहर की मिलो में

## जीवन-सहित्य : दिसम्बर १९५२

काम न मिलने के कारण चोरी करने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं रह जाता है। वह फिर से चोरी करता है और जेल जाता है। यह जो उसका बार-बार पुनर्जन्म होता है, 'पुनरपि जननं, पुनरपि मरणं' चलता है, उस से उसको मुक्ति कैसे मिले, यह हमें सोचना चाहिए। उमे ऐसी विद्या, ऐसी वृद्धि, ऐसी कला, ऐसा हृदय, ऐसे संस्कार वहां मिलें, जिससे कि छूटने के वाद अच्छा नागरिक वन सके। लेकिन आजकल तो हम चाहते हैं कि हमारे घर की रोटी भी फैक्टरी में वननी चाहिए। इसलिए भाइयो, जरा सोचो तो कि हम किघर जा रहे हैं। क्या हम ऐसे घर बनाना चाहते हैं, जिसमें हरेक घर के साथ कुछ जमीन हो, जिस पर उस कुटुंब के लोग मेहनत मुशक्कत कर कुछ फल, तरकारी वर्गरा पैदा कर सकें और प्रेम से रह सकें ? या हम देहातों को मिटा कर वड़े-वड़े शहर बनाना चाहते हैं, जिसमें कल-पुर्जों के कारखाने हों और सबका खाना एक जगह हो। सव एक ही कारखाने में काम करें यह हम चाहते हैं। अगर इस तरह की हमारी वृत्ति है तो मैं कहता हूं कि यह विलकुल गलत है। हमें अपने गांव की रचना हमारी संस्कृति के आधार पर लेकिन आधुनिक विज्ञान का सहारा लेकर करनी है। कुछ लोग कहते हैं कि मैं विज्ञान के खिलाफ हूं। यह बिलकुल गलत बात है। मैं तो विज्ञान का प्रेमी हूं। लेकिन आजकल विज्ञान का एक ऐसा ढंग हो गया है कि उसके बारे में गलत तरीके से सोचा जाता है। विज्ञान तो ज्ञान का एक अंग है। आत्म-ज्ञान और विज्ञान मिलकर ज्ञान हो जाता है। और आत्म-ज्ञान का विज्ञान से याने सृष्टि के ज्ञान से निकट का सम्बन्ध है। दोनों साथ-साथ बढ़ते हैं। मुझे अपने ग्रामों में जो मिक्खयां हैं, जो मच्छर हैं, जो रोग हैं उन सबको हटाना है, तो कीन हटायेगा ? विज्ञान ही हटा सकता है। विज्ञान तो आपका दास है, बंदा है। आप चाहें तो वह एटम बम्ब बना देगा और चाहें तो अच्छी अच्छी दवाइयां और आपरेशन के साधन वनायेगा। सूख के साधन निर्माण कर सकता है, और दुख के साधन भी । वह हमारे लिए जीवन का इंतजाम कर सकता है, और मृत्यु का भी इंतजाम कर सकता है। वह तो शक्ति है। हम चाहे जैसा उसका उपयोग कर सकते हैं। मैं अधिक से अधिक विज्ञान चाहता हूं। और इसलिए अहिंसा की बात करता हूं। विज्ञान के साथ हिंसा आ जाय तो दुनिया का खातमा होगा । इसीलिए विज्ञान के साथ अहिंसा का आग्रह रखना आवश्यक है। उससे हम गांव को वैकुंठ बना सकते हैं। विज्ञान के आधार पर हमें नये गांव, नये घर बनाना है। हम विज्ञान की मदद लेना चाहते हैं, लेकिन हमारे ढंग से । हमारी समाज़-रचना कैसी हो यह विज्ञान नहीं तय करेगा, समाज-शास्त्र तय करेगा । विज्ञान जीवन को आकार दे सकता है, परंतु जीवन का प्रकार क्या हो, यह नहीं कह सकता । यह तो आत्मज्ञान ही बता सकता है।

जव तुम दूसरों के साथ वातचीत करो तब अपने चारों ओर सजीव उपस्थित और संरक्षण को वनाये रखने के लिए वरावर सावधान रहो और जितना कम बोलना सम्भव हो उतना कम बोलो।

-श्री मां

#### श्रजातरात्रु राजेन्द्रवावृ

'वावुजी, 'जीवन-साहित्य' का एक विशेषाक निकाल रहे हैं। एक लेख दे दीजिये।"

"आप देख ही रहे हैं। मझे अवकाश कहा है ?"

"जी. छोटा-सा ही दे दीजिये।" "अच्छा, कल सबेरे सा जाइये।"

सबेरे पहचातो पूजाकर रहेथे। पाच मिनट में समाप्त करके कातना आरम्भ करते हुए बोले, "बाप लिख लिये ? म

"जी हा ।"

"अच्छा, लिखिये।"

सेख खिला दिया । मैने कहा, "पढवर सुना दू?" "नहीं जी, आप देख लीजियें। मही भाषा ठीक करनी हो तो कर-करा लीजिये।"

× "बाबूजी, . . की पुस्तक आपने पूरी पढी है ?"

"नही।"

"उसकी मुमिका तो आपने ही लिखी है।" हा, लेखक ने कुछ अश पढकर सुनाये थे :"

"पुस्तक बहुत अच्छी नहीं है। उसके बुछ स्वल सो

बहुत ही असस्कृत है।"

"हा, मैंने सुना हैं। शेखन पीछे पड गये। मुझे लिखना पडा। गलती हो गई।"

"बावजी, 'मण्डल' की जयती कर रहे है। आपका सदेश चाहिए। उसी अवसर पर 'जीवन-साहित्य' ना विशे-वाक भी निकास रहे हैं। उसके लिये हरू तेखा।"

धनी मूछो के नीचे होटो पर हल्ली मुस्कराहट खेल गई। बोले "सदेश भी चाहिए और लेख भी ?"

"दोनो मिस सके तो वडी कृपा हो। पर लेख देर से भी मिल जायगा तो चल जायगा। सदेश जल्दी चाहिए।"

"ठीक हैं, सदेश परसो मेज दूगा। लेख के लिए बाद

में याद दिला दीजिएगा ।"

ये कुछ चित्र हैं उस महापुरूप के, जो आज भारत के

सर्वोज्न पद पर आसीन है, हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्रवाद के। वामकात्र में घिरे रहते है, मुलाकाती बाते है, इघर-चघर आना-जाना पडता है, ऊपर से दमा समय-समय पर हैरान बरता रहता है , पर क्या मज़ाल कि राजेन्द्र बाब विसी भी छोटे-बडे बच्छे काम के लिए इन्कार कर सके। 'हा'नर लेना प्राय आसान होता है, पर निमाना कठिन । नेकिन राजेन्द्रवाद है कि जिसके निये 'हा' करेगे, उसे पूरा अवश्य कर देंगे।

सम्बा नद, स्यामल वर्ण, योहा भारी शरीर, अव्यव-स्थित मुर्छे, सिरपर छोटे-छोटे काले-सफेद खिनडी बाल. जिनपर बबेत खादी की गाधी टोपी, आखें उमरी, उतत नसाट, देह पर (घर में हो तो), घोती-कुरता-वडी, (बाहर)- शेरवानी-बढीदार पाजामा 1

--- यह है राजेन्द्रवाव की बाह्य आकृति और देश-भूषा । चेहरे से सरलता टपकती है और वाणी से मुद्रता

श्चरती है।

आज के प्रतिस्पद्धी से भरे युग में ऐसे व्यक्ति मिलना कठिन है जो पद, गौरव और प्रतिष्ठा को महत्व न देकर सेवा के लिए समर्पित हो। राजेंद्रबाव उन्ही विरल महा-प्रयो में से है। आज वह भारत के सबसे ऊचे पद पर आसीन है ----ऐसे पद पर, जहां बैठकर कोई भी मद-मत्त हो सकता है लेकिन राजेंद्रबाबू के लिए पद चुकि मह-रवाकाक्षा की पूर्ति का साधन नहीं है, वह वहा बैठ कर भी, वैसे ही सेवापरायण है जैसे कि पहले थे। इन पक्तियों के लेखक को उन्हें नई पदोपर काम करते देखने ना सौभाग्य प्राप्त हुआ है-स्त्राधीनता सप्राम के एक बीर सेनानी के रूप में, एक महान राष्ट्रीय नेता के रूप में, खाद्यमन्त्री के रूप में,विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में, गांधी स्मारक-निधि के अध्यक्ष के रूप में और अब राष्ट्रपति के रूप में. लेकिन एक भी ऐसा अवसर याद नहीं आता, जब कि राजेंद्र बाबू ने निनी भी पद के लिए मोह प्रदर्शित निया हो, अथवा वहा बैठ कर दम प्रकट किया हो । "प्रमुता पाइ काहि मद नाहि" सत तुलसीदास की इस उक्ति का यदि कहीं अपनाद मिलता है, तो राजेंद्रदानू में । राष्ट्रपति

## जीवन-साहित्य: दिसम्बर १९५२

का पद कुछ इतना ऊंचा है और राष्ट्रपित भवन का वायु-मंडल कुछ इतना आडम्बरयुक्त है कि सामान्य व्यक्ति तो वहां पहुंचते-पहुंचते घबरा जाता है, लेकिन जहां आप राजेंद्रबायू के सामने पहुंचेंगे, उनकी सरलता, निश्छलता और स्वाभाविक आत्मीयता से आपकी घबराहट क्षण भर में दूर हो जायगी।

अपने जिन गुणों के कारण वह इतने लोकप्रिय हैं, वे हैं उनकी विनम्रता, निरिभमानता, और प्रामाणिकता। आयु में अपने से कहीं छोटे व्यक्तियों को मैने उन्हें कई बार 'श्रद्धेय' अथवा 'आदरणीय' लिख कर संबोधित करते देखा हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी यह विन-म्रता और श्रद्धा उनके लिए मात्र शिष्टाचार की वस्तु नहीं है, उनके स्वभाव का एक अंग है।

वह विद्वान् हैं लेकिन अपनी विद्वत्ता को वह दूसरों पर लादने का कभी प्रयत्न नहीं करते । आज के अनेक 'तथाकथित' विद्वानों की भांति शब्दों का आडम्बर उन्हें प्रिय नहीं । जो कुछ उन्हें कहना होता है, सरल, मुबोध और स्पष्ट भाषा में कह देते हैं । भाषा उनके लिए चम-त्कार की चीज नहीं है, भावों की वाहिनी है । उनकी रचनाओं को पढ़ लीजिये, उनके भाषणों को सुन लीजिए, वानचीत में देख लीजिये, उनके विचारों में कहीं भी उलझन नहीं मिलेगी । इतने मुलझे विचार, इतनी स्पष्ट भाषा और इतने उत्हाष्ट भाव, बहुत कम लोगों में मिलेंगे।

अधिकांग नेता अपने विचारों की दृढ़ता अथवा दूसरों की मान्यताओं के प्रति अनुदार दृष्टि रखने के कारण अनेक विरोधी पैदा कर नेते हैं। बहुत से अवसरों पर विरोध समुता का रूप ग्रहण कर नेता पाया जाता है। नेकिन राजेंद्रवायू में इतनी समन्यय-बुद्धि और दूसरे के विचारों के प्रति इतनी उदारता और सहिष्णुता है कि उन्हें एक प्रकार में 'अजातसमु' कहा जा सकता है।

लोगों की शिकायत है कि वह ढीले ढाले हैं, अपनी बात को बहुत दृढ़ता से नहीं कहते । और देशव्यापी अना-चारपूर्ण वायुमंडल को वदलने के लिए जोर नहीं लगाते । लोगों की इस यिकायत में सचाई हो सकती है और है; लेकिन हम लोग प्रायः भूल जाते हैं कि दीर्घकालीन संस्कार और परम्पराओं को तोड़ना आसान नहीं होता। जब कभी अवसर आता है, राजेंद्रवाबू अपनी बात कहने से नहीं चूकते, लेकिन बुराई की जड़ जहां गहरी होती है, वहां एक व्यक्ति के कहने अथवा एक दिन के प्रयास से सुधार नहीं हो जाता।

राजेंद्रवावू गांधीजी के निष्ठावान अनुयायियों में से हैं । भले ही वह विवरणों में वहुत गहरे न उतरें या दृदता न दिखावें; परन्तु जहां तक मूल मान्यताओं का सम्बन्ध है, वह चट्टान की तरह अडिंग हैं।

उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। प्रथम श्रेणी के राजनेता तो वह हैं ही, उच्चकोटि के साहित्यकार भी हैं। और चूंकि प्रामाणिकता उनकी विशेपता है, अतः जो भी काम हाथ में लेते हैं, बहुत ही दक्षतापूर्वक करते हैं। अवतक जितने पदों पर उन्होंने कार्य किया है, परिस्थितियों के दवाव अथवा अन्य कारणों से भले ही उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त न हुई हो, लेकिन अपने प्रयत्न में उन्होंने कभी शैथिल्य नहीं दिखाया है और काम को आगे बढ़ाया है।

सेवा के लिए इतना निष्ठापूर्ण समर्पण बहुत कम लोगों में मिलता है। दमे की बीमारी और आयु का तकाजा है कि वह विश्राम करें; लेकिन सेवा के लिए जब उनकी आवश्यकता है तो बीमारी का निमित्त या आयु का सहारा लेकर वह पीछे कैसे रह सकते हैं। जबतक शरीर चलता है, सेवा की पुकार को अनमुनी करना उन के स्वयं के वश की वात नहीं है।

वड़े दुर्भाग्य की वात है कि हमारी पुरानी पीढ़ी घीरे-घीरे तिरोहित होती जा रही है। पर यह निश्चय ही हमारा परम सीभाग्य है कि राजेंद्रवावू हमारे घीच विद्यमान हैं। भगवान् से हम सबकी प्रार्थना है कि हमारे 'वाबूजी' अभी बहुत वर्ष तक हम सबके बीच बने रहें और हमारा मार्ग दर्शन करने रहें।

#### कोध आदि वृत्तियों पर विजय केसे !

( गनाक से जागे )

साबारण जीवन में छोप काम, त्रोघ, छोम, वासना आदि को स्वामाविक, क्षतव्य एवं उचित चीजें समजन है और उन्हें मानव प्रकृति का अब मानते है । जहां तक समाज इन्हें अनुत्साहित करता है अथवा इन्हें निदिवन सीमाओं के भोतर या उचित सयम वा सर्वादा के अधीन रखने ना बाप्रह करता है वही तक लोग इन्हें सदासार ने सामाजिन मान या व्यवहार ने नियम के अनुसार वस में रवने ना यल नरते है। इसने विपरीत, यहा तया सब अकार के बाध्यास्तिक अदिन में इन बीजा पर विजय तथा पूर्ण अमुख नी माग की जानी है। यही कारण है कि यहा समयं अति तीय अनुभूत होना है, इम्रलिए नहीं वि ये चीजें साधारण मनच्यो की अपेका साधकों में अधिक प्रवल रूप में उठनी है बरन इसलिए कि आध्यात्मिक मन तथा प्राणिक चेप्टाओं में उत्कट सघपं चलना है--आध्यात्मिक मन सयम की मान करता है और प्राणिक चेप्टायें विद्रोह करती है तथा नवे जीवन में भी पून उसी तरह बने रहना चाहती है जिस तरह दे पुराने जीवन में थी। यह जो धारणा है नि साघना इस प्रकार की चीजें जनावती है इसमें साय इतना ही है कि एक तो साधारण मनुष्य में ऐसी बहुत भी बात है जिनमे वह सचेतन नहीं है नमानि प्राण उन्हें मन से छिताये रखकर तूप्त करता रहना है जबकि मन समन ही नही पाना वि वह कौन सी शक्ति है जो इस कार्य को ग्रीत कर रही है। इस प्रकार, जो चीजें परार्थ. परोप्तकार एवं सेवा के निमिल की जाती है वे अधिकतर अहरार से परिचरित होना है । इन वहानों के पीछे बहरार हिया ही रहता है। योग में एक प्रश्न की पुरें के पीछे से बाहर प्रशाश में राना तया उससे छुटनारा पाना होता है। दूमरे साधारण जीवन में नूछ चीवें दवा दी जाती है, वे प्रकृति में ही दवी पदी रहनी है पर नष्ट नहीं हुई होतीं। वे किसी भी दिन उमर सक्ती है अयवा वे अपने की मन या प्राप्त या घरीर के नाना-

स्पानीन रूपो या ज्या महबदियों में प्रवट नर छन्न है जबनि इस बात ना स्पाट पना नहीं जरुजा कि उनका जमानी नारण का है। यह तम्म पूर्वारीय मनोनेशानिकों ने अभी हांछ में दृढ़ निकाला है और मनोनिश्चित्यण नामक नये विज्ञान ने इस पर बहुज बल दिया है, यहां तक विक् इसका अन्यायन बड़ा जजा कर बर्णन किया है। यहां मी, सायला में मनुष्य की इस बची प्रकृतिका से स्पेतन हो कर उन्हें निहाल प्रकृता होजा हैं। इसे उनाहना कह सकते हैं परनु इनका यह वर्ष नहीं कि एने कार्यन्य से उनाहता है बन्निक वेदन नहीं कि एने कार्यन्य से उनाहता है बन्निक वेदन निवा के सामने ला सा परना है ताहि बरनी स्था

यह जो बात है कि कुछ लोग अपने की बदा में करने में समर्थ होने है और दूतर वहा लिए जाने है। इसका कारण है स्वभाव-स्वभाव में भेद । कुछ लोग सास्विक स्वभाव में हाने हैं। और उनने लिए, कम से कम कुछ हद तक , सबस करना सुगम होता है । दूसरे अधिक राजसिक होते है और नयम की बदिन स्था प्राय: बन्भव बनुभव करने हैं। क्र्या का मन एवं सक्त्य सदल होना है बौर दूसरे प्राण-प्रवास मनुष्य होने हैं जिनमें प्राणित आवेग अधिक प्रदल होने है तथा अधिक करर बाये होते हैं । कुछ छो। स्पम को बावस्पक नही समझते और अपने बापको जुला छोड दने हैं । माधना में मानसिक या नैतिक समम के स्थान पर आध्यारियक प्रमन्त्र स्थापित करना होता है । कारण, मानविक समम केवल आधिक हाना है, वह हमें निर्माण ही करता है म कि स्वतंत्र एवं मुक्त । ऐसा तो देवल आन्तराहिमक एव आध्यात्मिक सयम ही कर सकता है। इन वियय में साघारण तथा आध्यात्मिक बीदन में मूल्य मेद मही है।

यौगिन, मनोमीतिक आदि आदि इध्यिमे से आमारण, हदस और आतों में स्यूल चेतना का नहीं बरन प्राणिन चेष्टाओं का निवास है। यही पर प्राणी जीवन-साहित्य: दिसम्बर १९५२

O

के कोघ, भ्य, प्रेम, घृणा तथा उसकी अन्य सब् मनो-वैज्ञानिक विशिष्टतायें उछलकूद मचाती हैं तथा अरीर और मन की पाचनशक्ति में गड़बड़ी पैदा कर देती है।

कोघ के कारण आत्मा तमसाच्छन्न हो जाती है, वृद्धि और इच्छा शक्ति शांत साक्षी आत्मा को देखना तथा उसमें स्थित होना भूल जाती है, मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप की स्मृति से भ्रष्ट हो जाता है। इस पतन में इच्छाशक्ति भी विमूह, यहां तक कि नष्ट हो जाती है। कारण, कुछ समय के लिए, हमारी निज स्मृति में इसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। यह कोघ के वादल से दक जाती है। हम कोघ, आवेश एवं शोक ही वन जाते हैं। और आत्मा, बुद्धि तथा इच्छाशक्ति नहीं रहनी।

वस करने की एक वात यही है कि इन प्रवृत्तियों से अपने को अलग कर लिया जाय, अपने आन्तर आत्मा को खोज निकाला जाय, उसीमें निवास किया जाय। फिर ऐसा कभी नहीं मालूम होगा कि ये सव वृत्तियां अपनी हैं, विल्क ऐसा मालूम होगा कि वाहरी प्रकृति ने आंतर आत्मा या पुरुष के ऊपर उन्हें ऊपर ही ऊपर से आरोपित कर दिया है। उस समय बड़ी आसानी से उनका त्याग किया जा सकता है या उन्हें नब्ट किया जा सकता है।

अगर तुम अपनी प्राणगत वृत्तियों पर सच्चा प्रमुत्व प्राप्त करना चाहते हो और उन्हें स्पांतरित करना चाहते हो और उन्हें स्पांतरित करना चाहते हो तो यह केवल तभी हो सकता है, यि तुम्हारा हृदय हृत्पुरुष. तुम्हारी अन्तरात्मा पूर्ण स्प से जाग जाय, अपना राज्य स्थापित कर ले और तुम्हारी सारी सत्ता को शिवत के स्थायी स्पर्श की ओर खोलकर अपनी स्वाभाविक विशुद्ध भिवत, अनन्य अभीष्मा और सभी भागवत वस्तुओं के प्रति होने वाले अपने अखण्ड एकनिष्ठ आवेग को तुम्हारे मन हृदय और प्राण प्रकृति पर स्थापित कर दे। इसके अतिरिवत दूसरा कोई पथ नहीं है और किसी अधिक सुगम मार्ग के लिए छटपटान से कोई लाभ नहीं। नान्यः पन्या विद्यते अयनाय। (अदिति कार्यालय के सीजन्य से)

खलील जिव्रान 0

कल ही की वात है, कि मैं शहर के हो-हुल्लड़ से घवराकर खामोश खेतों की तरफ निकल गया और एक ऐमें ऊंचे पर्वत के पास पहुंच गया, जहां प्रकृति ने अत्यन्त उदारता से अपनी देन बखेर रखी थी।

में पर्वत पर चड़ा और झुककर शहर को देखा। शहर अपने समस्त मीनारों और मन्दिरों सहित उस धूएं के घने वादलों से डका हुआ था, जो शहर की मट्टियों और कारखानों से उठ रहा था।

मैं वैठ गया और सोचने लगा । मुझे आदिमयों के उद्योगवंद्यों का विचार आया । मुझे ऐसा अनुभव हुआ, कि उनकी यह सारी दौड़-धूप निरर्थक और निष्फल हैं।

मैंने अपना ध्यान मानवजाति के इन दौड़-घूप के क्षेत्रों से हटा लिया और उन खेतों पर एक दृष्टि डाली, जो ईंग्बर की प्रतिष्ठा और तेज के फर्या हैं।

# कब्रिस्तान

इन खेतों में मुझे एक कब्रिस्तान दिखाई दिया। उसमें संगमरमर की मुन्दर लेख-दिलाएं गड़ी थीं। और सरु के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष उगे हुए थे।

में जीवित मनुष्यों की वस्ती और किवस्तान के बीच बैठा जीवन के अनंत संघर्ष, समाप्त न होनेवाले हो-हुल्लड़, विस्तृत खामोशी और मृत्यु की अनंत कठोरता पर विचार कर रहा था।

मुझे एक तरफ आशा और निराशा, प्रेम और घृणा, घनाट्यता और दिइता, और विश्वास और अविश्वास दिखाई दिये और दूसरी तरफ मैंने मिट्टी को उस मिट्टी में मिले देखा, जिससे प्रकृति रात की गहरी वामोशी में वढ़ने और उन्नति करनेवाले ह्रे-मरे और रंगीन पींदे पैदा करती है।

जब मैं इस तरह से सोच विचार कर रहा था, तो एक बहुत वड़ा जनसमूह घीरे घीरे चलता हुआ

#### कविस्तान : खलील जिवान

मेरी आखो के सामने आया और मैने एक ऐसा गीत सुना, जी आलोन में एक शिविलता उत्पन्न कर रहा था।

मेरी आंखों के सामने से बड़े और छोटे इन्सानों की भीड गुजरी। मनुष्य एक अरपी बा अनुकरण कर रहे थे। और रोते चिल्लाते हुए अपनी अपनी फरियाद विलाप और करन से आलोक को मर रहे थे। इस तरह वे कह तक रहुक गये। बहु गर्बारियों ने इक्ते लिए प्रार्मना की और धूर आदि जलाई। बाजेबालों ने अल्यत बुक्तनक ध्वनियों में शोक के गीत गाये। मुक्बताओं ने लाडे होंकर बड़ेन्सड घंक्या में प्रसामपुर्ण आपण दिए और कवियों ने शोन और बुक्तमरी कविताए पड़ी। इस प्रकार प्रवास का गया।

फिर जब वह भीव छीट घर गई, तो मुझ इस स्थान पर एक धानदार रेखानिला दिखाई थी, जिसे कलाकारों ने बडी कुशलता से तैयार किया था और जिस पर अनमनित फूल मालाण और गजरे पटे ब जिन्हें निष्ण मालियों ने बनाया था।

अन में जनसमूह शहर में वापिस पहुच गया और में उन्हें दूर से देखता हुआ गहरे विचारों में बूब गया । इस क्वत सुर्य धीरे-भीरे पश्चिम में इस रहा था ।

चट्टानो और वृक्षी की परछाइया लम्बीही रही थी और वे प्रकाश की चादर को उनार रहे थे।

इस बक्त मेंने आका उठा कर देखा, तो मुझे दो आदसी दिखाई दियें, जिन्होंने अपने नको पर कामारण ही अरपी उठाई हुई थी और उनके पीछे एक स्त्री कर्ट-पुराने नमडे पहने चली आ रही थी। उसकी छाती से एक बालक चिपका हुआ था और पान के पास एवं हुता था, जो कभी स्त्री और कभी अरपी की तरफ देख रहा था।

इस निधंन मनुष्य की अरथी के साथ वस इतने ही लोग थे।

स्त्री के लामोश आसू उसके हृदय के दुल और शोक की साक्षी देरहे थे।

वालन केवल इसलिए चिल्ला रहा था, कि उसकी मारो रही थी। और एन स्वामोमनन बुत्ता खामोशी और उदासी की हालत में पीछे-पीछे जा रहा था।

जब ये लोग कबिस्तान में पहुचे, तो दूर एक ऐसे अलग कोने में एक गड़े में इस लाश को इफन किया गया जो सगमरमर की बन्नो से बहुत दूर था। फिर वे अरयन्त सामोशी और जशांधी के साथ बापिस लौटे।

कुते की दृष्टि बार-बार अपने स्वामी के अहिम विश्वाम-स्वल की तरफ छौट-छौट जाती थी। अत में वे सव बुठों की बोट में आखों से ओवल हो पूर्व।

यह देखकर भैने अपनी धृष्टि शहर की तरफ उठाई और बहा, "यह सब घनवानो भीर शक्ति-शाकी छोयो के रूए हैं।"

और फिर मैने कबिस्तान की तरफ मुह करते हुए कहा, "और यह भी घनवानो और शक्तिशाली लोगो ही के लिए हैं।"

मैने चिल्ला कर पूछा, 'परमात्मा ! वता तेरे इवंल और निवंत जन कहा जाए ?'

मैने यह कहकर आकाश की तरफ दृष्टि उठाकर देखा, जो ड्वते हुए सूरज की सुनहरी किरणो से शोमाय-मान हो रहा था। अब मुझे अपने अंतरग से यह आवाज मुनाई दी, " उनका विधाम स्थान यहाँ है, यहा।"

अनु • — माईदयाल जैन

क्या आप जिस प्रंकार प्रतिदिन खाते पीते है उसी प्रकार पढते छिखते भी है ? मन और मस्तिष्क को पुष्ट करने के लिए अच्छे ग्रथ खरीद कर पढिए और याद रिखये कि हिन्दी राष्ट्रभाषा हैं।

#### कादर्शकुनारी यशपाल O

लोकक्याओं का जन्म कब हुआ, इसका कोई स्यष्ट इतिहास नहीं निलता, लेकिन अनुमान किया जा सकता है कि जबसे सृथ्यि का आरम्म हुआ और एक दूसरे के भावों को समझने के लिए भाषा का माध्यम शुरू हुआ तभी से लोकक्याओं का भी जन्म हुआ होगा। मनुष्य की प्रवृत्ति कुछ ऐसी होती है कि उसे दूसरे के बारे में कीत्हलपूर्ण बातें कहने और सुनने में बड़ा आनन्द आता है और उसी प्रवृत्ति की तृष्टि के लिए लोकक्याओं की सृष्टि हुई होगी।

लोककयाओं का प्रचलन नगरों की अपेका गावों में अधिक है। इसका कारण यह है कि नगरों में कंच-नीच, अमीर-गरीव, पड़े-बेपड़े आदि का बहुत भेदमाव रखा जाता है। शहर का मेहतर एक-दो वरस के बच्चे के लिए भी 'मंगी' ही रहता है, लेकिन गांव में वह किसी का चाचा है तो किसी का ताऊ, किसी का दादा है तो किसी का दादा। गांव में न सिनेमायर हैं न नाट्य-गृह, न नाचवर। पर उनके मनोरंजन का कोई सावन तो होना ही चाहिए। आइये, अब जरा मुखिया की चौराल पर चलें। देखिये तो अधियाने के चारों ओर कैसे मस्त होकर सब कहानी सुन रहे हैं। छंगू घोबी कहानी कह रहा है और पंडित, नाई, कुम्हार, जमींदार सब आग तापते हुए कहानी सुन रहे हैं। बरे, यह क्या! यह चिलम तो अभी ठाकुर साहब के हक्के पर रखी थी, इसी को पंडितजी ने पीना शुरू कर दिया। पंडितजी से वह देखी, रम्मू नाई के पास पहुंच गई। अरे, वह तो विसकती ही जा रही है। हां, यह शहर नहीं है, जहां बादमी पड़ौसी को भी नहीं जानता । यहां तो सब सगे-सम्बन्धी हैं। फिर सब मिलकर वैठे हैं। तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

कहानी चाहे कितनी भी रोचक क्यों न हो फिर भी उसकी रोचकता अधिकांशतः कहने वाले पर निर्भर करती है। भाषा एक तरह की होने पर भी कहने का ढंग अपना-अपना निराला होता है। भाव-प्रदर्शन के

# हमारी लोक-कथाएं

विना कहानी का रस आधा रह जाता है। जरा देखिए, इस घोषी को, कभी हाय मटकाता है तो कभी आंखें; कभी नाक सिकोड़ने लगता है तो कभी जोश में आकर आधा उठ बैठता है, और कभी डंडा इस तरह उठाता है जैसे किसी को मार ही बैठेगा। कहानी कहते समय यह सब करना आवश्यक है। यह क्या? अधियाने पर बैठे सब लोग हंसी के मारे लोट पोट हुए जा रहे हैं। कहीं कोई जल न जाय! यही है गांव के कहानी कहने के अडड़े का दृश्य।

अगर कहानी आकर्षक ढंग से कही जाय तो श्रोता यही चाहते हैं कि वह द्रीपदी के चीर की भांति बढ़ती ही चली जाय और वे मंत्र-मृग्य होकर सुनते रहें। वे उस समय यह भूल जाते हैं कि लकड़ी का उडनखटोला, महादेव-पावंती का पिड़किया से राजकुमारी बना देना, इंद्र के घोड़ों का बाग नष्ट कर जाना आदि बातें क्या कभी संभव हो सकती हैं! ये कहानियां तर्क से परेहें।

कहानी कहने वाला किसी भी जाति का क्यों न हो, गांव में आदर और प्रेम का पात्र वन जाता है। ये लोक कथायं इतनी सरस हैं और इतने आकर्षक हाव-भाव के साथ कही जाती हैं कि कोई विद्वान भी उस बातावरण में पहुंच जाय तो आनन्दित हुए विना नहीं रह सकता, बच्चों की तो बात ही क्या है। एक आदमी कहानी कहता है। सब सुनते हैं। एक हुंकारा देता जाता है। हुंकारे के विना न कहने बाले को मजा आता है, न सुननेवाले को। लोक-कथाओं में निम्नलिखित गुण अवस्य पाये जाते हैं:

१. रोचकता २. कीतूहल, ३. कहीं-कहीं पर बलोकिकता तथा ४. लोक-जीवन का चित्रण

इनमें रोचकता और कोतूहल, ये दो गुण मुख्य हैं। इनके विना न कहानी आगे वह सकती है, न सुनने वालों को मोह सकती है।

लोक-कयाओं की अति प्राचीन परम्पराओं का

#### हमारी लोक-कथाए . बादर्शकुमारी यशपाल

महत्व अब कुछ कम होता जा रहा है, फिर भी शायद ही कोई ऐसा जनपद होगा, जिसकी अपनी लोकक्याए न हो । जवतक लोकजीवन है, लोक-क्याओं की महत्ता नष्ट नहीं हो सकती । हमारे छोनजीवन में छोनसाहित्य खब पनरा है। एक समय था जबकि यातायात की सुविचाए नहीं यी और लोग दूर-दूर की यात्राए बहुत कम कर पाते थे। उस समय भी इन लोक-कवाओं की यात्रा रुकी नहीं थी। वे निरतर एक जवह से दूसरी जनह घुमती रहती थी। लेकिन अब जब कि यात्रा की इतनी सुविधाए हो गई है, ये नहानिया भी वडी तेजी के साथ भूमण करती रहती है । अतर्राष्ट्रीय आदान-अदान तया रेडियो ने तो यह भी समय कर दिया है कि यहा की कहानिया विदेशों में भी मुनी जा सकती है। इन्हीं सब सुविधाओं का फरु यह है कि जो कहानिया हमें ब्रज में मुनने को मिली हैं, वे बुदेललंड, बगाल, और पहाडी इलाको में भी प्रचलित है। रूप में योडा-बहत परिवर्तन हो सकता है। जब हम अनेक विदेशी लोक-कयाओं का अध्ययन करते हैं तो अनेक ऐसी वहानिया मिलती है जो हमारी भारतीय कहानियो वा ही परि-यतित रूप है। इन कहानियो का प्रारम्भ प्राय इस प्रकार होता है एक राजा था। यह नहीं बताया जाता कि वह कहाँ राज्य करता या और कव करता या? इसलिए ये कहानिया व्यक्ति, देश और काल की परिधि में नहीं वध सकती।

मैंने कुछ कहानिया बुदेल्लड में सुनी थी। वहीं कहानिया बोडे-बहुत उक्टक्टि के साथ हमारे अब में भी नहीं जाती है और वे ही कहानिया मैंने बुछ अवल-बदल के साप अल्पोड़ा और नेनीताल के पहादियों से भी गुनी हैं। यह कोई माश्यर्य की बात नहीं, क्योंकि पव कोगों में आपस में इतना सम्पर्क है तो कहानियों पर मी उस्का प्रभाव पर बिना नहीं पह सकता। कहीं-नहीं पर केतल भाषा का ही अतर हैं। भी शिवसहाय नयुर्वेश की 'जानपीक' मासक बुदेललाड़ी कहानी में पानी की सीदा का नाम 'जिदिया' है। यह हार चुछ लेती हैं। एक कोरों का दामाद की-बार जानी हुई बाते का बेवा है और गाव में यह जानपाड़ के नाम से मशहूर हो जाता है। राजा उचे पकड़ बुक्याता है कीर कहता है कि यदि वह हार का पता न बता सका तो हसरे दिन उसकी गर्दन करवा दी जायगी। वेजेंगी के मारे कोरी को नींद मही आती। वह कहता है—"आजारी निदिया, तेरी मीर वरेंगी पिनिया।"

इसीको भ्रज का सगुनिया कहता है.

"आजारी निहरिया, तेरी भोर कटेंगी मुक्सिया" यू देक्कडी हाडी कर नाम 'निहिया' हैं और इज के कहानी भी हाडी राम माम 'निहरिया' हैं और इज की कहानी भी हाडी राम माम 'निहरिया' हैं और इज एक ही अर्थ हैं: नीद । वह देनारी गर्दन कटने के दर से हार बर पता जानपाटे को बता जाती है और इस प्रकार कोरी राम है । इससे माम हो हैं । इससे माम है कि ये बहुति सा इनाम पाता हैं । इससे माम हैं कि ये बहुति सा इनाम पाता हैं । इससे माम हैं कि ये बहुति सा इनाम की हैं होजार स्वीकार नहीं करती कीर नहीं कर विश्व हो करती हों हो तहती हैं।

जैंद्वा मेंने जपर कहा है कुछ नश् नियों की घट-नायें अस्वामाशिवनची आन परती है, दिनिन छोक-च्याओं की विपोचता न्यापंता नहीं है विकित मनोराज-है। जैंदो एक 'पित्रजा' नामक कहानी में पित्रजा रची अपने पति के बाव को पड़ा छोड़कर खीर छपीटने बैठ जाती है। यह नहभवनची बात काती है, टेकिन यदि वह ऐसा न करे तो बहानी आगे क्लें बढ़े। कहानी में उन्नके बावड़ी आनन्य आगा है।

इसी प्रकार कई-एक कहानियों में शिव-मार्वशी बाते हैं, हायन और राहस्य मिलते हैं, परिया लाती हैं, हाय राजकुमार बन जाता है, मूरण को बात दिवातें ही उस रय का भोड़ा और पोशाक सा जाती हैं, पोड़ा यगनवृत्ती महरू की हत कलाग जाता हैं, सार्द-बादि बातें जबस्य ही जक्षभव नगती हैं, लेक्नि इन सर्वे विना कहानियों में पूर्त-पूरा रस परियान नहीं हो पाता। फिर ये नहानियां जिस गुप में रिक्ती गई पी कर यम ही अजीविक बातों में विज्ञास करता था।

लेकिन बाज का पाठक यदि उन बातों को छोड़-कर लगमें प्रवाहित जीवन को ही प्रहण करे तो लसका रस सिब्बत नहीं होगा। यह युग-युग से चली आती लोक सस्कृति का सन्चा स्वरूप पहुंचान सकेगा। वंगाल मे वाहर श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त के सम्बन्य में लोग वहुत कम जानते हैं। केवल सर्वसा-धारण ही नहीं, बिल्क आजकल के कांग्रेसमैन भी! और यही सतीशदा वंगाल के, विभाजन से पूर्व से वंगाल के गांथी माने जाते रहे हैं। यह वस्तुतः सत्य है कि यदि उन्होंने देश की राजनीति में नेता बनने की वृष्टि में भाग लिया होता, तो वे वंगाल के सर्वमान्य मुख्य-मंत्री, किसी प्रान्त के राज्यपाल या केन्द्रीय सरकार का मन्त्रित्वपद कभी का पा गये होते। यदि उनमें किचित भी प्रचार की भावना होती तो उद्योगों के सम्बन्ध में, अर्थ-शास्त्री, पत्रकार, विख्यात डाक्टर, वैज्ञानिक, अनेक विषयों पर अधिकारपूर्वक मृजनहार लेखक के रूप में उन्होंने अद्वितीय सफलता प्राप्त कर ली होती। लेकिन मौन साधन, लोक-कल्याण और निःस्वार्थ लोक-सेवा में सदैव उनका अडिग विश्वास रहा है।

मतीगदा के सम्बन्ध में यदि यह कहा जाय कि वे कांग्रेस की बुलन्द इमारत की नीव की इंट के समान हैं, तो किंचित भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस तरह इमारत की नींव की ईंट उसकी भव्यता और विशालता की आधार होती है, लेकिन उसका एक अंश भी दिखलाई नहीं पड़ता, ठीक इसी प्रकार सतीगदा का सम्प्रक कांग्रेम-संस्था के साथ है। उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया कि उन्हें कोई पद मिले या किसी कार्य में ख्याति मिले और लोग उनकी प्रशंसा करें। प्रचार की, आत्म-प्रशंसा की भावना से कोमों दूर, जैमे उन्होंने स्वयं को लोकवाद की भावना से — माना-पमान की व्यवहारिकता से बहुत ऊपर उठा लिया है, जहां उन्हें सम्मान, प्रशंसा, ईपी, हेप और शास-कीय-शिवत का प्रलोभन छू नहीं पाता।

महात्मा गांघी को अपने रचनात्मक-कार्यक्रम की दिशा में जिन व्यक्तियों पर अट्ट विश्वास था, उनमें सतीशदा का सम्मान पूर्ण अग्रिम स्थान था। महात्मा गांबी से इस रचनात्मक-कार्यक्रम को सफल बनाने

# श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त

के लिए - उनकी सत्य, अहिंसा और त्याग की परिभाषा को साकार करने के लिए ही उन्होंने सिक्रय राजनीति में भाग नहीं लिया। गांधीजी ने कहा:

'तुम्हारा क्षेत्र रचनात्मक कार्य-क्रम है—वंगाल में, महाविनाञ की तरह प्रसारित अकाल, रोग और वेकारी को दूर करने के लिए तुम अपनी योग्यता और शक्तियों का योगदान दो।'

और सती बदा ने अपने गुरु के वचन को पूरा करने के लिए अपने जीवन की समस्त बितयां लगा दीं। सती शदा ने जो त्याग. जो मेवा और जिस जन-कल्याण की भावना से वंगाल में कार्य किया है उसकी अमिट छाप वंगाल के नगरों पर ही नहीं गावों पर भी अंकित है। अपने दुर्भाग्य के झंझावातों से निरन्तर संघर्ष करने वाले वंगाल को इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि उसके शरीर में घुसे हुए हिंसा, गरीवी और रोग के कीटाणुओं को कोई मसीहा विना नग्तर के बाहर निकाले। आज भी वंगाल में राजनीतिक नेताओं की अपेक्षा ऐसे व्यक्तियों की अधिक आवश्यकता है जो हिंसा से दूर रहकर स्थानीय गरीवी को मिटाने के लिए अपने जीवन को खपा दें। सती बदा ने अपने प्रान्त के हित में यही किया।

लेखक को सतीशदा के सम्पर्क में आने और उनके सोदपुर (वंगाल) स्थित आश्रम में एक लम्बे अर्से तक रहने का अवसर मिला है। लेखक ने अनुभव किया है जैसे न केवल वंगाल की विल्क समस्त देश को बेकारी, भुत्रमरी और गरीबी उनके जीवन में सिवत हो गई है। उनके दैनिक जीवन का प्रत्येक क्षण अपने लिए न होकर, दूसरों के हित के लिए होता है। वे कल्पना और भावना से अधिक रचनात्मकता और वास्तविकता में विश्वाम करते है। और अपने विश्वासों के प्रति वे इतने दृढ है कि कोई उन्हें उनसे टिगा नहीं सकता। वंगाल के ग्राम-ग्राम में, नगर नगर में जो आज खादी का प्रचार है, उसका अधिकांश श्रेय सतीशदा को ही

है। उनके अन्दर 'व्यवस्था की यांक्त इतनी प्रवक है कि
उन्होंने बगाल ने सादी उत्पादन ने इतना प्रविक्त व्याप्त अदेर विस्कृत नर दिया था कि उसकी स्थात वन्याई में भी होनी थी। सम्मय था कि बगाल की खादी वन्याई में भी होनी थी। सम्मय था कि बगाल की खादी वन्याई की माजेंट में ऊपर सस्ती होने सुन्दर और अवजुत होने के नारण का जाती और गामीची नी विकेतीकरण की मोजना को पान्न कानता। यह समीचादा को स्वीकान नहीं था, जैसे ही उन्हें इस बात वा बामास मिखा उन्होंन 'जादी प्रतिक्वान' की बम्बई स्थित इनान वन कर दी। बात बगाल के प्रवृत्व-प्रमुख तमरों में 'बाद प्रतिक्वान' की सहती व दिनाऊ खादी मिलने नी व्यवस्था है। वरणके में तो कामाग पत्रास इन्हानों है जो नगर के विभिन्न भागों में खुली हुई है तहती विश्वाक सरवा वा बुखल सवालन सतीयादा हारा होता है।

उनका इस बात में विश्वास है कि देश की आर्थिक सम्पतना गृह-उद्योगो के अधिक-मे-अधिक प्रसार से ही सम्मद है। वे मामते हैं कि ज्योज्या धन का विवेन्द्रीकरण होगा, धन की विषमता अन्त पानी जायगी सर्वेशाधारण को खशहाल मिलेगी और देश में सम्पन्नता के दर्शन होगे। जहा तक गृह-उद्योगी का सफ व बनाने भा प्रश्न हैं, उनवा प्रयास सफल हो चना है। उन्होंने गृह उद्योगा में नवे-नवे प्रयोगो द्वारा उन्हें इनना सकत बना दिया है कि वे आसानी से देश के प्राप्तों में आरम्भ किये जा सकते है और उनके उत्पादन द्वारा आजीविना-मॉजत नी जा सकती है। गह उद्योगो के सम्बन्ध में खादी प्रतिष्ठान आध्रम, सोदपुर (बगाल) एक सक्ल निश्रण-वेन्द्र है । वहा हाय से नागत बनाना, पशु-गालन, मधुमनची-पालन, छराई, बाईडिंग तेल धानी, आदि उद्योगो की न्यालता-पूर्ण शिक्षा दी जाती है। पुराने उद्योगी में अन्होने महत्वपूर्व सुवार निधे हैं । उन्होंने छोटे-छोटे ऐसे यन्त्री का आविश्वार किया है, जिन्हे मुविधापूर्वत नृटीरी में लगाया जा सकता है और उनकी सहायता से सुन्दर यस्तुओं का शीद्य उत्पादन निया जा सकता है। हाथ से कागज बनाने की कला को उन्होंने बाफी उन्नति दी

हैं। अन्य स्थानों पर हाथ से नामज बनाने के लिए टाट और रही सामज का उपयोग निया जाता है लेबिन सोवपुर आश्रम में नामज बास से बनाया जाता हैं। शौर बहा ना बना हुआ मागज मिल से बने हुए सामज से भी अधिक मन्द्रत और सुन्दर होता है। सनीयवा के मन में कल्पना गृर-उद्योगों को लेक्प जामान भी हैं। के हम उद्योगों के आपूनिकत्त्र मनामें में विश्वास करते हैं। आज जो देश में गृह उद्योगों के जलावन के लिए लीम-अदिन समुन मही हो पामा है, उसना भृरव सामज यही है, कि गृह-उद्योगों का जलावन को किए लीम-अदिन हि, है मृह-उद्योगों का

सतीशदा जन्मजास वैज्ञानिक है । उनमें अन्वेपण की अद्मृत क्षमता है। वे विषय की गहराई में उतरते है और उसका सत्य जान लेने पर ही सन्तोप पाते है। अपनी इस प्रकृति के कारण ही वे अपने गुरु, प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्व० थी प्रफल्लचन्द्र गुप्त के प्रिय शिष्य माने जाते रहे है। सतीशदा यदि मात्र विज्ञान के क्षेत्र में होते तो नि मन्देह बाज उनका स्थान देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिको में होता। लेकिन उनकी जन-सेवा तथा उदारविस को मानविज्ञान की परिधि परिवेध्ठित न कर सकी । उन्होने अपने को यहा से हटा कर लोक-मेबा के लिए अपनी द्यक्तियों को लगा दिया। वैज्ञानिक श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त, लोकसेवक सतीघादा हो गये । सतीघादा के साय-साथ आज उनका सारा परिवार लोक-सेवा और, दलियो वे दू स निवारण में निरतर प्रवत्त है । मा हेमप्रमा वेवी, ने बगाल के ग्राम-ग्राम में जाकर अकाल और क्ष्मा-गीडित क्षेत्रा की जो सेवा की है वह चिरत्मरणीय है। अविभावित भारत के दिनों में पदिक नोआसली में साम्प्रदाधिकता ने ताण्डव-नृत्य किया तो मा हेम-प्रभादेवी ने जाकर उन्हें मानवता का वह अमर-सन्देश दिया जो कि आगे चलकर महात्मा गाधी की नोआखली यात्रा के समय एक आघार-शिला सिद्ध हुआ। श्रीमती हेमप्रभादेवी ने स्वय को पति के क्तंब्यकार्ग पर अपित कर दिया है। और वास्तविकता तो यह है कि वे आज सनीशदा के लिए एक प्रेरणा, एवं पति बन गई है। जिन लोगों को सोदपुर आश्रम में रहने और 'मा' के

जीवन-साहित्य: दिसम्बर १९५२

सम्पर्क में आने का अवसर मिला है, वे जानते हैं कि देवी हेमप्रभा समस्त आश्रमवासियों की मां है, जिन्हें सईव यह विन्ता बनी रहती है कि उनके पुत्रों को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

उनके अनुज श्री शितीशचन्द्रदास गुप्त के लिए जीदन का सबसे बड़ा आकर्षण उनके अग्रज—श्री सतीशचनद्रदास गुप्त हैं। उन्होंने भी अपना सर्वस्व सोदपुर आश्रम के लिए लगा दिया है। वे इतने मृदुभाषी और सीजन्यत-प्रिय हैं कि उनसे मिलकर लोगों को हार्दिक प्रसन्नता होती है। मधुर इतने जैसे शहद, भावुक ऐसे जैसे उच्च कोटि का किंव, सरल इतने जैसे बालक, शान्त ऐसे जैसे शरद् की नीरव रात्रि। उनका व्यक्तित्व सोदपुर के आश्रमवासियों के लिए बहुत बड़ा आकर्षण है। सोदपुर-आश्रम का अद्वितीय मधु-मक्बी-भेत्र उन्हींकी देन है।

जीवन में सत्य सतीशदा के लिए सबसे वड़ी वस्त् है। इसी सत्य की मुरक्षा के लिए उन्हें अनेक दार अपने प्रिय स्वजनों का डट कर विरोध करना पड़ा। उन्होंने नेताजी सुभापचन्द्र वोस का भी सैद्वान्तिक आधार पर विरोव किया। उन्होंने अपने मित्र सम्पादक-प्रवर श्री रामा- । नन्द चटर्जी का भी विरोध किया और शुद्र प्रान्तीय भावना का सदैव तिरस्कार किया। जिस समय उन्होंने हरिपूरा कांग्रेस के प्रश्न को लेकर नेताजी का विरोध करना पड़ा उस समय सारा बंगाल प्रान्त उनके विरुद्ध हो उठा। लेकिन उन्होंने लोकमत की अपेक्षा अपने सिद्धांतीं अर्थार विश्वामों को ही अधिक महत्व दिया । उन्होंने डट कर उन पत्रों और उन व्यक्तियों का अपनी पत्रिका द्वारा विरोध किया जो सस्ती भादकता, प्रान्तीय जीर व्यक्तिगत स्वार्यों से वशीमृत ये। 'राष्ट्रवाणी' के सम्पादक ने यह बात सिद्ध कर दी थी कि उनकी सम्पादकीय टिप्पणियां कितनी उग्र लेकिन विवेकपूर्ण

तपा तध्यपूर्ण होती भी।

सतीशदा का पत्रकार के अतिरिक्त लेखक के रूप में भी अपने क्षेत्र में अद्वितीय स्थान है। उनकी पुस्तकें 'दी काऊ' और 'होम एण्ड विल्लेज डावटर' अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक है । उन्होंने इन पुस्तकों के अतिरिक्त भी अन्य पुस्तकें लिखी है। खादी अर्थ-शास्त्र पर उनका अध्ययन, मनन और रचनात्मक-कार्य अतुलनीय है। पक्के राष्ट्रवादी श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त गांघीजी की रचनात्मक योजना के सच्चे भाष्यकार हैं। गांधीजी न क्या कहा, यह केवल उन्होंने पढ़ा, मुना या उस पर मनन ही नही किया विलक उसे मूर्तरूप भी दिया है। सतीशदा की भावनाओं की प्रतिमूर्ति उनकी 'खादी-प्रतिष्ठान' संस्था है। खादी-प्रतिष्ठान-आश्रम कल-कत्ता से दस मील दूर सोदपुर-स्टेशन के ठीक सामने है। लगभग बाबे मील वर्ग के क्षेत्र में सोदपुर-आधम वसा हुआ है। उसमें प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी तपीभूमि में प्रवेश किया हो। आश्रम में प्रसारित मुरुचि, सादगी और मृहु-भाषा का प्रभाव आगन्तुकों पर पहना अवस्यम्भावी है। यही आध्रम सतीशदा का निकेतन है।

सतीयदा की सर्वतोमुकी प्रतिभा, सत्य के प्रति निष्ठा और कर्तव्य के आगे आत्म-विसर्जन की भावना से गांधीजी अत्यिषक प्रभावित पे। सीम्य, शान्त, विद्वान, मानापमान की भावना से दूर सतीयदा, आज के श्रेष्ठ कांग्रेसमैनों के लिए आकाश-द्वीप के समान है, जिनसे उनका मार्ग आलोकित होता रहना है। गांधीजी और उनके सिद्धांत तो उनके रोम-रोम में वस गए है। गांधीजी उनका आदर करते पे और स्नेह करते पे। दंगाल-यात्रा के अवसर पर सोदपुर-आश्रम ही उनका निवास-स्थान हो गया पा और सतीयदा पर ही उनके कार्यक्रम बनाने का उत्तरदायित्व रहता था।

मनुष्य सुन्दर विचारों से सुन्दर जीवन की ओर अग्रसर होता है और सुन्दर जीवन से सर्वनिरपेक्ष सुन्दर जीवन की ओर वढ़ता है। — एलेटो

#### ञ्जात्म-विश्वास

जिसका मन स्थिर हो और बात्सा में पूर्ण विस्वाध हो वही पूर्णता को प्राप्त होता है। जिसके मन में सथय होजाता है वह भ्यमप्ती समुद्र में ही भीता लगाता रहता है। और वह जनगंज ध्यम वृद्धि को मलीन वरक उत्तरोक्षर जक्मण्यता की और बग्नुखर करता है।

गीता में लिखा है कि निश्चित को छोडवर अनिश्चित पर नहीं जाना चाहिए। जो निश्चित लक्ष्य को छोड अनिश्चित मार्ग अपनाते हैं वह निश्चित से भी वन्वित रह जाते हैं। भगवान ने यहा तक कह दिया "सर्वधर्मान परित्यज्य मामेक" कुछ की जिल्ला छोड कर नेवल मझ ही पर निर्मर कर। मै तेरे पाप, दोयों को स्वय हरूमा । तू मुझपर अध्यत रह और जो करे सो मुझे ही अपंज कर । परन्तु जबतक पूर्ण विश्वास न हो जाय और निर्भवता न आ जाये तवतक यह कैसे सम्भव हो सकता है । यद्यपि गास्त्रो, पुराणो, श्रृतियो और महान् ग्रन्थो में ऐसा उल्लेख है बिन्तु षह आदर्श के लिए हो सनता है। जब तक मनुष्य स्वय उमका अनुसव न कर ले उसे कैसे सानें। प्राय दैनिक ध्यवहार में हम देखते है कि जिसका जिसपर विश्वास जम जाता है उसके लिए फिर वह बाहे जो बरे उस पर अवि-इवास नहीं बरता है और उस विश्वास पर निर्भर करता है परन्त जो निसी का विद्वास करता है वह एक सम-झने के परचात ही करता है और जब वह एक समझ लेता है तभी उसमें निभयता आती है और जब निभयता आती है तब उसकी शकायें निर्मल हो जाती है और बह साम्य भावना से निर्मयतापूर्वक उस पर पूर्ण गरोसा करता है और जो भरोसा करता है वह ववस्य पाता है। यह अक्षरश सत्य है और पम पग का अनुसब ही इसका प्रमाण है। गोस्वामी तुल्सीदासजी ने वहा है "जापर जाकर सत्य सनेह, सो तिही मिलत न कछ सन्देह"

जिसना जिसपर सत्य सनेह हो वह उसे निरुवय ही प्राप्त होता है, यह निर्विवाद और ध्रुव सत्य है। उदाहरणार्य आये दिन भेजूबट एपलीकेयन पाईछ के

आधार पर दर दर की हाजिरी वजाते रहते हैं और हम गली मोहल्लो में धम फिर बर सिर पर टोक्री रल कर वस्तु बेचने वालो और मजदूरो की प्रसनता से हसते देखते हैं। मनुष्य में सब कुछ है। क्या नहीं है ? आवस्यनता एकमात्र आत्म विस्वास की है। जो सत्य-मार्ग पर रहते हैं उनकी आत्मा में बल होता है. वे निर्भय हैं और अपार गति से निरन्तर आगे बटते हैं। जिनको सच्ची लगन होती है वे पीछे नव हटते हैं । पीछा डोगी और बगुला भवता का आध्यम है । आत्मविद्वासी सत्पता रूपी भैरमा के सहारे सदैव सफ्छता-रूपी पर्वतो के उत्तुग शुगा पर विजयश्री फहराते रहते हैं। अग्रेजो के राज्यकाल में मुद्ठीभर हाड वाले गांधी ने कितनी निर्भयतापूर्वक कह दिया था और कह ही क्या दिया या आन्दोलन चलाया था कि अग्रेजो भारत छोडो ? उस समय यह बहुना नया साधारण बात थी। पर वह सत्यता का अन्वेपक और आत्मविद्यास का जीवित प्रमाण या । वह बार बार यह महता था कि मेरा चाहे जो कुछ छिन जाये पर यदि प्रभु विश्वास छिन गया वी मेरे में रह ही बया जायगा।

जिसके तन पर रूपोटी सन नहीं होती वह सिर पर पास ना मरोटा उठावें फिरता है और ६ जाने मागठा है। जाप उसे व जाने नह दीजिए, नारा आने नह सीचिये; नाहे साढ़े पास जाने नह सीजिए पर वह नवाचित नहीं देता नयाकि उसे विस्तास है कि उसकी ययार्थ की नमाई ना मृत्य छ जाने से बम नहीं हैं। वह दी घन्टे तरु उस मरोटे को सिर पर उठावें भीको तरु किर रूपा पर आखिर श्रा आनं की ही बेंब बर वारोगा।

एक ताने या रिक्षा वाले ना आत्म विश्वास देखिए। आप अपून स्थान से अपून स्थान तत जाने ना निरासा उससे पूरिस्ट और चार आने नम नह सीजिये, वह नहीं आयारा, नयों ? नया उसको कोई और दूसरी नमाई है। परन्तु ताला या रिक्षा नाहा नमाने वाले

## जीवन-साहित्य: दिसम्बर १९५२

को विश्वास है कि उनकी कमाई हक की है। वे कम में वयों जाये । वह एक दुकानदार की तरह दो रुपये का माल दो आने कम में नहीं दे सकता। एक सड़क के मजदूर को ही लीजिये। यदि यहां से वहां तक की मज-दूरी आठ आना है तो आप उसे कह देखिए कि सात आने ले ले । वह हर्गिज नहीं जाता । चाहे वह बेकार वैठा रहेगा । क्योंकि उसे विय्वास है कि उसका पारि-श्रमिक ययार्थ है। उसे इतना अवस्य मिलेगा और इसी सत्यता व निभंयता के बल पर वह तीन रुपये की मजदूरी तीन पैसे कम में भी नहीं करेगा । क्योंकि उसे अपनी चर्या में आत्मविश्वास है। वह निर्भय है कि यह न सही और सही। एक कारीगर यदि तीन रुपये रोज पाता है तो वह पीने तीन में कभी नही जायगा, चाहे आधे दिन निठ्ठला वैठा रहे । पर यह सब क्यों ? क्योंकि वह अपने आपमें विश्वास रखता है। उन्से अपनी सच्वाई पर गर्व है और इसीलिए विना किसी विचार किये वह सहज ही कह देता है कि इससे कम में नही होगा और आपकी रजामन्दी के उत्तर की प्रतीक्षा किये विना ही आगे वह जाता है।

आगे वह बढ़ते हैं जो मत्य पथ पर है, जिन्हें अपने आप पर विस्वास है, जो निर्भय है। जो दुनिया की आंखों में बूल झोंककर विफल प्रयास करते हैं वह अपने आपको घोना देते हैं, वह डरपोक होते है। संकल्प और विकल्प के नागर में गोते लगाते रहते हैं और भ्रमहपी मंबर में फंमे रहते हैं। उनकी कभी विजय नहीं होती। इम संसार में अटक नहीं। अटक तो मन में हैं:—

"सबे भूमि गोताल की या में अटक कहाँ। जा के मन म अटक हैं सोई अटक रहा।"

आज कल सत्कार्यों के लिए साहस करने वाले इनगिने है पर दु:साहसियों की कमी नहीं। छोटा सा लड्का सैकड़ों आदिमयों के बीच जेब कतरने की हिम्मत करता है, संगीन पहरा होते हुए भी वैकों पर टाका डाल दिया जाता है। यह आत्मविज्वास के दुरुप-योग के नजारे हैं ! कभी सत्य और धर्म के लिए लोग बलि-दान करते थे. आज ऐशोआराम व भ्रष्टाचार के लिए मरते हैं। अपनी सच्चाई के आधार पर जीने वालों ने जानें दे दी, दीवार में चुने गये, बदन में कीलें भोंक दी गई. पर विश्वास टस मे मस नहीं हुआ । इसीलिए आज भी उनकी जीवनज्योति, अखण्ड दीप-शिखा की तरह देदीप्यमान है। जिन्हें आत्मविश्वास होता है वही आगे बढ़ते है और सफलता उन्हीं के चरण चूमती हैं। जो आत्मा में विश्वास करते हैं वह कभी नहीं मरते और इस नक्वर शरीर के तेज से अपने शीर्य की अखण्ड ज्योति युग-युग के लिए प्रज्वलित कर जाते हैं।

पवंतारोही दलों को यदि इतना विय्वास अपने ऊपर न हो कि वे हिमाच्छादित उत्तुंग-श्रंगों पर विजय-पताका फहरा देंगे तो वे घर से नहीं निकल सकते ! एक यहीं क्या, किसी भी कार्य के करने पर कर्ता की आत्मा में लक्षित कार्य के प्रति दृढ़ आत्म-विय्वास. न हो तब तक उसका काम आगे नहीं वढ सकता । श्रेष्ट और मफल जीवन की कुंजी सत्य एवं निभंय रपी स्तम्भों पर आवारित आत्म-विय्वास ही है । सांसारिक कार्यों की मफलता का ओधार जहां आत्म-विय्वास है वहां आध्यात्मिक प्रकरण सहज ही समझा जा सकता है ।

अगर लोग काम को अपना ही काम कहना वन्द कर सकते तो इससे वहुत-से उपद्रवों का अन्त हो जाता।

दीप नहीं, दीप का प्रवास मुझे चाहिए ! आँत में सक् जिसे हरेक श्रीख से असम, बाट में सक् जिसे समस्त दिख में सदय, बाए कृद्र भूक कर सके जिसे न कम, न कम, दीप नहीं, दीप का प्रकास मुझे चाहिए !

जो बमें न मृन्न से, न हाल से, न पात से,
जो मूर्व न, जो सुले न रात हे, प्रवात हे,
जो बकेन, जो मुले न पुण, बारि, बात से—
फूड नहीं, जूब का सुवास मूत्रे चाहिए !
दीय नहीं, होग का सकारा बस्ते चाहिए !

पूर-पूर पी तहे पूगा-सनुव को अतल, बूब-बूद सोल ले तकक विषय ब्लूब गरल, अप्-अप्न बीन ले घरा बने बुक्षी सकल, तृष्ति नहीं, बिर अतुन्त प्यास मुने चाहिए। दीव मही, दीव का प्रकास मुने चाहिए।

> घेर को सके समय स्वर्ग, नक, भू, गयन, बाध को सरे सक्त करम, घरम, जनम, मरब, छू सके जिसे न देशकाल की यरम पवन, मूबित नहीं, मुक्त प्रेम-बाद मुसे चाहिए ! बीप नहीं, बीप का प्रकास मुझे चाहिए !

> > वेवता नहीं, मनुष्य बत मनुष्य बत रहे, अर्थना न, बच्दना म, हेय-मुक्त यन रहे, स्वर्ग नहीं, भूषि भूषि ने लिए शरण रहे, अनृत नहीं, भव्ये का विकास मुझे चाहिए ! दोच नहीं, दोच का प्रकास मुझे चाहिए !

> > > ४३५

# जीन जेक्वस रूसो

"प्रकृति की अवस्था में समानता एक वास्तविक और पिवत सत्य है", "साधारण व्यक्तियों से ही यह मानव-जाति निर्मित हुई है। जिसमें जनसाधारण नहीं वह कठिनता से विचारणीय है।"

जनसायारण के अधिकारों की आवाज को उठानेवाला जीन जेक्वस रूसो एक सायारण व्यक्ति के स्म में ही पैदा हुआ और उसी रूप में मरा। सन् १७१२ में जेनेवा में एक घड़ी बनाने वाले के घर में वह पैदा हुआ। ग्रामीण पाठशालाओं में उसने मामूली शिक्षा पाई। अपने उप्रविचारों के कारण वह गिलोटीन से वचने के लिए ६ वर्ष तक योरोप में मारा-मारा फिरा और जब सन् १७७० में वह फांस वापिस आया तो वह एक गरीब, अकेला और उपेक्षित व्यक्ति था। जो मनुष्य उसके विचारों से सर्वाधिक प्रभावित हुए वे उसे भूल गए थे। उस समय के जो प्रसिद्ध विचारक थे वे उसे पागल कहने लगे थे। आठ वर्ष तक वह मुश्किल में जीवित रहने के साधन जुटाता रहा और जब सन् १७७८ में वह मरा तब एक साधारण व्यक्ति की ही तरह मरा।

लेकिन वह एक साधारण व्यक्ति नहीं था। वह असाधारण था। वह अपने समय से बहुत आगे था। १८ वीं शताब्दी का होते हुए भी वह विचारों में २० वीं शताब्दी का था। वह मानव अधिकारों का हिमायती था। वह विचारक था, शिक्षा मुधारक था, प्राकृतिक छटा का प्रेमी था; सबसे बढ़ कर वह स्पष्ट और सत्य-वक्ता था।

एक समय था जबिक चर्च के पादिरयों, राजाओं, माल दार साहुकारों और शहजादों का ही बोल्वाला था। केवल वेही सम्मानतीय और विचारणीय व्यक्ति थे। जनसाधारण को कोई मान ही न था, उसकी कोई शावाज ही न थी। किसी को इस बात का घ्यान ही न था कि उनका भी कुछ मान हो सकता है। उनकी भी कोई आवाज हो सकती है। सरकार कौन बनावे, सरकार के क्या काम हों ? उसका उत्तर था जनसाधारण। वह जनसाधारण के हकों को; उसकी आवाज को लेकर आगे वड़ा और एक दिन १४ जुलाई १७८९ को जनसाधारण की उम-ड़ती हुई घटायें पेरिस में वेस्टिल पर छा ,गई, यद्यपि वह जनसाधारण के भाग्य के निपटारे के उस दिन को देखने के लिए वचा न था पर उसकी "सोशल कौ-ट्रैक्ट" कान्तिकारियों की गीता वन चुकी थी।

तव तक समझा जाता था कि जनसाथारण शासित होने के लिए ही हैं। वह बुरा है। उसे पार नियंत्रण के कठोर कानूनों के शिकंजे में जकड़ने की आवश्यकता है। लेकिन कसो ने कहा कि यह विचार गलत है। यह गरीवों पर अपनी प्रभुता और अपना आधिपत्य थोपने का वहाना है। सरकार छोटी-से-छोटी और कानून कम-से-कम होने चाहिए।

कोई मनुष्य बुरा नहीं है, यदि उसे गलत शिक्षा-दीक्षा न दी जाय। इस नवीन सिद्धान्त का उसने प्रति-पादन किया। प्रत्येक मनुष्य का उसके स्वाभाविक गुणों के अनुसार विकास होने दो। इस प्रकार शिक्षा पर उसके अपने विचार थे जो आगे चलकर फ्रोबेल और मोंटेसरी ग्रन्थों में प्रस्कृदित हुए।

उसके समय में मुक्त प्राकृतिक सौन्दर्य घृणा की वस्तु थी। लेकिन अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में ही रुसो ने पैदल आल्प्स को पार किया और बाद में उसने लिखा:—

"केवल मेरे आनन्ददायक दिनों में ही ऐसा था कि मैंने पैदल यात्राएं की, इससे मुझे हमेशा खुशी मिलती थी। वाद में कर्तव्यों, काम, नामान ने मुझे बाध्य कर दिया कि मैं गाड़ी का प्रयोग करूं और एक सम्भ्रान्त व्यक्ति का रूप घरूं। दुःख, चिन्तायें और परेशानियां मेरे साथ गाड़ी में घुम जाती थीं और जबकि अपनी यात्राओं में पहले मुझे एकमात्र यात्रा करने का आनन्द मिलता था, अब केवल गंतव्य स्थान तक पहुंच जाने की इच्छा पैदा होती है।"

रूसो सत्यान्वेपी था। वह सत्य को छिपाना जानता

ही न या, चाहता ही न या और अब उसने अपनी आरमक्या लिखी तो उसमें बिना छिपाच और हिच-कि बाहर यब सत्य उडेल दिये। चाहे बहु चित्रते ही छन्जा-जनक, कृतिसत अपना कर, चयो न रहे हो। वाचीची ने भी तो ऐसा ही किया या। कसी ईखेर में विस्तास करता या लेकिन चर्च में नहीं और उसने चर्च पर आपमक किया। लेकिन यह विचार इतना विच्लककारी या कि उसे अपनी रक्षा के लिए देश छोडकर मामना पद्या। स्वो मानव के अधिकारो—समानता, प्रजातन, स्वतवता में दूढ विस्वास रसता या और अपने विस्वास पर परुता भी या। उस ही ना विचार एतराटिक के उस पार अपरीकी विचान या आधार बना। उसी ने फॅन कानित स सुनन निया। समाजनार और सम-रिटवार उसी के विभिन्न रूप है। आज भी सारा ससार उसी विचार से आप्लावित है। मानव-समाज इस देन के लिए उसका विरक्षणी रहेगा।

#### रामसिंहु रावल

स्ताप्तर प्यारह वर्ष बीत चुके हैं, जब मेने फिल्पीन को निकट से देखा। यह वह समय था, जब सारे पूर्वी एशिया में एक बनोबा परिवर्तन का रहा था। वापान को ताताधाही सेनाए सारे पूर्वी एशिया पर छा चुकी थी। परिचनी सामाज्यवाद को ईंट से ईंट बन चुकी थी, और उत्तवन स्थान जापानी सम्माज्यवाद के रहा था। परन्तु एक बनोबा परिवर्तन किससे धायव जापान के नाताधाह भी परिचित थे, एशिया के सभी सेना में आ रहा था। और बहु परिवर्तन था, प्रत्येव देशों में आ रहा था। और बहु परिवर्तन था, प्रत्येव देशों में आ रहा था। और बहु परिवर्तन था, प्रत्येव देशों में आ रहा था। और बहु परिवर्तन था, प्रत्येव

फिल्मीन भी इस परिवर्तन से बधित न पह सका । बह लगमग बार सी बागों से पराधीनता के बबूल में फता हुना था। पहुँ होन की प्रजाशिक राज्य ने लगमग तीन सी वर्ष तर उत्तकों कुचला, उस समय थ? बार सिल्फन मा महा कना हुना और जब वन् १८९६ में फिल्म् पीन के जानित्वारी दल ने कागिताकों (Auginaldo) नाम के महापुर्य के नेतृत्व में स्पेन के प्रजाशिक राज्य भी जहें दिला दी तो अमरीका ने आगिताकों की सहायता वा नाम के कर पिन्छोन पर बचना अधिकार जमा लिया। परिलाम यह हुजा कि जिस जीनातकों के मानितकारी दल की, स्वतज्ञता के नाम पर, सहायता की गई पी, उसी आधिनादों को समरीका के सिर्मात की गई पी, उसी आधिनादों को समरीका के विस्त किर बाजारी का असफल मुद्ध स्वस्ता के नाम पर,

#### भारत श्रीर फिलपीन

स्वतत्रता प्राप्त करने की योजनाओं का. आगि-नाल्डो की पराजय से, अत न हुआ। शान्त और अशान्त दोनो प्रकार के साधनों से स्वतंत्रता का आदोरन बरा-बर जारी रहा। और जब सन् १९४१ में जापान ने अमरीका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, तो उस समय फिल्पीन में एक ऐसी सस्या का जोर था, जिसका नाम. कालीवापी (Kalıbapi) था। यह कालीबापी नाम की सस्या ही यी, जिसने मुझे फिल्पीन की और आर्वापत क्या। उसके झडे पर गाधीजी के चरले जैसा चरला बना हुआ या। पता लगाने से मारूम हुआ कि गायीजी का फिल्पीन की राज्यनीति पर माफी अधिक प्रभाव पडा था। चरखे को कालीवापी के नेताओं ने गहउद्योग का चिह्न स्वीकार कर, उसे अपनाया । यहा तर ही बन न था, कालीबापी के नेता लोग जनता की यह साफ साफ बहते कि हमारे वह नेता जो अमरीकी सरकार की कठपुतली बनकर हमारे अपर राज्य कर रहे है, बया वह देश की गरीबी को भूल गये है ? बया वे भारत के गाधीबी के समान मामुछी घरों में नहीं रह सकते ? क्या थे हाथ के बुने हुए सपडे नहीं पहन सनते ? कालीबापी विदेशी वस्तुओं के वायकाट पर खोर देती थी ।

वालीवापी के इसे प्रोग्राम को भारत के गांधी (आधुनिक) गुग के प्रभाव का परिणाम वहां जा सप्ता

है, वैसे भारत और फिल्पीन के आपसी सम्बन्ध शता-ब्दियों से चले आं रहे हैं। जब यूरोप पर अभी सभ्यता का उजाला भी न पड़ा था, तव भारत की सभ्यता अपना उज्ज्वल प्रकाश अपनी सीमाओं से वाहर डालने लगीं थी। पल्लव राज्य के समय भारत की सभ्यता ने महापूर्वी एशिया के सभी देशों पर अपनी धाक जमा ली र्था । जावा, सुमात्रा, स्याम, हिन्दचीन और फिलपीन पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आधिपत्य स्थापित हो चुका। यह आधिपत्य केवल भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही का न था, वास्तव में भारत के सुप्रसिद्ध उपनिवेशक, महाराजकुमार विजय ने इन सभी महा-पूर्वी-एर्झिया के देशों पर अपना राज्याधिकार जमा लिया था। परन्तु जब पल्लब-राज्य का चालूबय और चोला राज्यों की सेनाओं की मार से अंत हुआ तो महापूर्वी एशिया के इन भारतीय राज्यों में भी परिवर्तन आया । वहां अव दो वड़े राज्य स्थापित हो गये । एक तो था, सुमात्रा का श्री विजय साम्राज्य और दूसरा जांवा का मज्जापहित राज्य।

मज्जापहित राज्य का साम्प्राज्य फिलपीन तक फैला हुआ था। इस उपनिवेशिक भारतीय राज्य के कारण फिलपीन पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का और भी अधिक प्रभाव पड़ा। फिलपीन के एक प्रसिद्ध विद्वान डा० दिनिडाड पार्डों डी ट्वेरा (Dr. Trinidad Pardo de Tavera) ने लिखा है, कि भारत से केवल व्यापारी लोग ही न आए, विलक वहां से धर्म, सभ्यता और संस्कृति के दूत अधिक आए। यह भारतीय सभ्यता और बाह्मण धर्म का ही आगमन था जिस ने फिलपीन की भाषा, कला, शिलपकला, समाज-धर्म, कानून, वेष, रस्मोरिवाज पर प्रभाव द्वाला। डा० साहव लिखते हैं कि फिलपीन में मूर्य, चंद्रमा, जल, वायु, अग्न आदि की जो पूजा होती थी, वह भारतीय सभ्यता के प्रभाव का ही परिणाम थी।

फिल्पीन की भाषा और लिपि पर भी भारतीय

प्रभाव पड़ा। पुरानी लिपि पाली के अधिक निकट हैं। भाषा में अनेकों ऐसे शब्द हैं, जो संस्कृत और पाली से लिये गए हैं। जैसे मोती (मुक्ता) को 'मृत्या' कहा जाता है और भाषा को 'वाक' कहा जाता है।

फिलपीन की लोक कहानियां भी भारत की देन मालूम होती हैं। आगूसन (Agusan) प्रान्त में एक पौराणिक गाथा प्रचलित हैं, इसका सम्बन्ध रामायण की अहिल्या की कहानी के साथ है। इफूगाओ (Ifugao) प्रांत के लोगों में एक और पौराणिक कहानी प्रचलित हैं, कि बाल्टिक (Baltik) नाम के देवता ने तीर मार कर पत्थर से पानी निकाला। यह कहानी महाभारत में अर्जुन के ऐसे ही एक कार्य से मिलती जुलती है।

भारत के एक प्रसिद्ध विद्वान्, डा० धीरेन्द्रनाय राय फिलपीन यूनिर्वासटी के लिबरल आर्ट्स कालेज के फिलास्फी विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने फिलपीन के इतिहास का अच्छी तरह अध्ययन किया और मालूम किया कि फिलपीन के लोगों में कई ऐसे अंधविश्वास प्रचलित हैं, जो भारतीय जनता में भी है, जैसे कि बच्चों को रात के समय कंघी नहीं करनी चाहिए, नहीं तो उनके माता-पिता की मृत्यु का होना संभव है। यदि आकाश पर कोई तारा गिरता दिखाई दे, तो कोई मुसीवत आने वाली होती है। यदि कोई गर्भवती स्त्री जुड़वां फल खाले तो उसके जुड़वां बच्चे होंगे। जिस घर में बच्चा पैदा हो, वहां चालीस दिन तक दिया जलता रहता है।

तात्पर्य यह कि फिलपीन का भारत के साथ कई शताब्दियों से धनिष्ट सम्बन्ध चला आ रहा है। और इस पौराणिक सम्बन्ध को गांधीजी के चर्च, अनेकों द्रतों और शान्त आन्दोलन ने फिलपीन पर एक निराला प्रभाव डाल कर फिर से जीवित कर दिया है। अब इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि भारत और फिलपीन के लोग और भी एक दूसरे के निकट आ जावेंगे।

#### शकरलाल जा० परवार

मेरे आमू--नाथ न समेटो तुम इन्ह अपने रत्न हार के लिए। नम के आस्वो में नौलाख रत्ना की अनमोल श्री की आभा झएक पही है।

पुष्पों के आसुवो म विश्व सुरभितवर आत्मोत्सक की मदिर भावना विद्यमान है।

सारको के दाहक आयुवो म दाह-दामन-शक्ति तथा जडता को सचेतन करनवाली मजीवनी दमक रही है

अभक के आंसवा में मात दर्शन की आर्स-पुकार तथा मानु मिलन की तीव तृष्णा छल्क रही है।

और इन मेरे खारे आसवी में--ना, ना नाय! अविरल बरसने दो इन्हें। न गुबी तुम इन्हें अपने अनुमोल रत्नहार में।

धामिको के आमुको म कर्तव्य निष्ठा की समाधि

तथा समाधान का प्रचात तेज है। पीडितो के आसूबो में सुप्त बडवानल तथा

कान्ति की घधकती ज्वाला ऐं भडक रही है । प्रीति के आस्यों म समर्पण का विमनत मकरद

तया मागल्य का मधर निझर वह रहा है।

रयाग के आसुनो में सागर की गभीरता तथा मगाधिराज की अचल निश्चलता वास करती है।

और मेरे इन लारे बासुनी में-पापी स्वार्य, दूराचारी मोह तथा निवीम हेय-

जाने दो नाथ ! अविरल शरने दो इन्हें। न समेटी सुम अपने मौलिक रत्नहार के लिए।

× × × × ब्रार के सम्मूल के तुम्हारे पवित्र पद चिन्ह घाकर

पहवात्ताप की विशुद्ध अस्मि से वे जब तक पवित्र न होवें तवतक बरसने दो इन्हें।

लगातार बरसने दो इन्हें। न समेटो तुम अपने

रत्नहार ने लिये।



हे मत्यो । मेरे निकट न आसा । में वह ज्योति ह जिसे जरा नहीं --जिसे मरण नहीं।

किटयो सा विहसना । फलो सा विकसना । तथा समन भाडारो से सौरभ चराने वाले समीरण के साथ स्वर केलि करना ही मेरा स्वर कम है।

उर में जलती ज्वाला के निधित से धपछाह का खेल खलना तथा नवनी में करणा का विकल विकास ले प्रकास पर लट जाना ही मेरा जीवनधर्म है

मानव कल्याण के हेत् सहारक सकटो से यथाशक्ति जयना और विश्व को प्रकाश देना ही मेरे जलते जीवन का आध्यमम है।

हे मृत्यो <sup>१</sup> मुझपर न झपको । मै वह अमर ज्योति ह जिसे क्षय नही-जिसे मरण नहीं।

सुख का क्षण नही-भी दुख का युग हु। बुझने का अभियाप नही-जलने का बरदान हु। यनघोर घटाआ का वात्सत्य, अभिलाप ओ का

उन्नत अभिसार तथा अनत ना अमर अ शीर्वाद है। प्रेल्य के पश्चात् नम में नवस्थित का निर्माण

करने के हेत् अनत की मेरी आवश्यकता है। अत हे मत्यो । दूर ही रही मुझसे । मैं वह अमर-

ज्योति ह जिसे मरण नही। भास्कर की तपन में आग उगलनवाली ग्रीम का

निवास है । विद्युत की जरून में हिमवर्षी पायस विरोहित है। और मेरी जलन में निज देह सहित निज मुख-

शांति की सस्मकर महाप्रलय तथा नवनिर्माण की विराट शक्ति अवहित है।

इस विराट शक्ति से टक्स कर विश्व में अपनी हमी न कराओ मृत्यो <sup>1</sup>

कारण में वह अनश्वर जलती ज्योति हुमृत्यो, जिसे मरण नहीं, जिसे मरण नहीं।

#### नित्यानन्द 0

वाग्र संकट के बारे में हमारे नेताओं की मार्मिक अग्नीलें हमें अन्तरिवन्तन के लिए बाध्य करती हैं। अन्न को बरबाद न करने में मणे ही शिक्षित-वर्ग महायक हो मके, किन्तु खाग्र के उत्तादन में बृद्धिवीविधों की मीबी महायता कठिन हैं। ऐसी अवस्था में यह आगंका मन में घर कर लेती है कि हम खाग्र-मोर्चे पर अग्ने कर्तव्य का ईमानवारी के साथ पालन नहीं कर रहे हैं। इस विवयता को दूर करने में घरेलू साग-सिक्वयों का उत्तादन उपयोगी सिद्ध हुआ है। किर मी उन कार्य-क्ताओं के सामने यह समस्या ज्यों की त्यों है, जिनका निवास ऐसे प्रदेशों में है, जहां कि बरसात के सिवाय पानी की कमी रहनी है। ऐसे व्यक्तियों के लिए मैने कुछ ऐसी वनस्यतियों की खोज की है, जिनके पैवा करने में मामूळी पानी की जरूरत होती है और जिनको मानव-वाग्र के कम में व्यवहन करना उत्कृष्ट प्रमाणित हुआ है।

इस वनस्पति को में करीब बीस बर्ष से जानता हूं, पर पिछल तीन वर्ष में पहले इसका उपयोग दवा के रूप में ही जानता था। आयुर्वेजीय बीपवियों में इसका प्रमुख स्वान है। वे महमें जो अन्य सावनों से नहीं बनतीं, वे भी इसका पुट देने पर आसानी से बन जाती हैं  $\,
u$ पेट की वीमारियों पर इसका प्रयोग "कुमार्या*सूर्य*" के रूप में सारे हिन्दुस्तान में होता है। कुछ बीमिरियों पर यह बाहरी रूप में लगाने के काम भी आता है। पर इसका सबसे महान चमकार मैंने खाद्य के रूप में देखा । इसगर विभिन्न परीक्षण के बाद खाद्य के लिए प्रामाणिक रूप ने गंबारपाठे की अपनाने की मूचना मैने माई कियोरीलाल जी मयस्वाला को दी। उनके द्वारा विनिन्न मापाओं के "हरिजन" में यह मुचना प्रकाशित होने पर भारत के प्रायः सनी भागों से गंबार-पाठे की विशेष जानकारी के सम्बन्ध में करीब एक हजार में ऊपर पत्र मिले। कुछ को परिचय, कुछ को उपयोग-विधि और लगाने की तस्कीय एवं कुछ की नमुना भी भेजना पड़ा। कई माइयों के मनीरंजक और

विज्ञाप्रद अनुभव भी बाद में पड़ते को मिले। बन्तती-गत्वा में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि जिस प्रकार हमारे घर में चरके का होना जरूरी है, उसी प्रकार गंवारपाठा भी अनिवार्य होना चाहिए। स्वयं वापृजी ने जीवन के अन्तिम दिनों में गंवारपाठे का रस पीना युरू किया या। यदि वे अधिक दिनों ले सकते, तो इसकी प्रमंसा किये विना न रहते।

गंदारपाठा भारत के सभी प्रान्तों में होता है। कहीं कहीं इसे 'बालुंदार' या 'कुमारी' मी कहते हैं। जिस जमीन में गंदारपाठा लगाना हो, उसे खोद लें और राख डाल दें। फिर बड़े गंदारपाठे के चारों और उमे हुए छोटे-छोटे गंदारपाठों को अलग-अलग लगा दें। कहीं से एक गंदारपाठा लाकर लगाने के बाद कुछ ही दिनों में उसके चारों और छोटे गंदारपाठे अपने आप उम आते हैं। मुख्य गंदारपाठ से इनका हलका-सा सम्बन्ध रहता है। उसे हटा कर अलग-अलग स्थानों पर लगाने से भी लगने में कोई दिक्कत नहीं। इनमें अन्तर्जीवन की शक्ति इतनी अधिक है कि भृमि से उखाइने के बाद कई हफ्तों तक लापरवाही से यों ही पड़ा रहने पर जब आप लगावेंगे, लग जायेंगे। लगा कर थोड़ा पानी डाल दें।

इसकी लाद भी हमें मुफ्त मिलती है। सायारण गृहस्य के यहां भोजन बनाने के बाद लकड़ी से जो राख बनती है, वहीं इसके लिए सर्वश्रेष्ठ लाद है। अधिकतर बरों में राख को बाहर डालने की ठीक व्यवस्था नहीं रहती और वह कृड़ा-करकट में समझी जाकर गन्दगी फैंकाने का सायन बनती है। गंबारपाठे को लगाने से इस समस्या का हल निकल आयगा और घर के बारों-और सफाई रहने लग जायेगी।

घर के किसी कोने या आंगन में गंबारपाठे को लगा दें। इसकी रक्षा का कोई अंझट नहीं। इसे न पृश् स्नाते हैं और न पश्ची। इसे न तो कड़कड़ाती सर्दी नुक-सान पहुंचा सकती है और न चिलचिलाती यूप। अधिक पानी की भी जरूरत नहीं। यहां तक कि यदि आप वर्ष भर में एक बार भी पानी नहीं डालेगे, तो भी अयली बरतात के पानी से यह अपने आप हरा हो जायगा।

आयुर्वेदोक्न अधिकाश मस्में भवारपाठे से ही वननी है । इसीसे इसके गुणवाहुल्य का अनुमान किया जा सकता है। मुख बढ़ाने में तो यह बढ़ितीय है। इसका उपयोग साग के रूप में करना चाहिए। एक आदमी के लिए दो पसे पर्याप्त है । इसने पसो ना ऊपर ना छिलना चाक से छील कर, अन्दर का गुदा निकास कर छोटे-छोटे टकडे कर ले। फिर इनको नमक डाले हए पानी म पाच बार घो ले। पानी में समक अन्दाज से डाल लेने मे मुत्रिया रहेगी । हर बार घोने समय नया पानी ढाल लेना चाहिए। फिर घोडी छाछ या दही डाल कर नडी की तरह छोक लें। छाछ या दही ने विना भी छोना जा सर रा है।प नी नाम मान की ही डालवा चाहिए। इसमें पानी अपने आप ही बहुत होता है। इसकी कडवाहट को सर्वया नष्ट करने के लिए गवारपाठे के गृदे को पानी में घोने ने बदले सादे पानी में खवाल लेना चाहिए और फिर छोन ले । लेकिन इस घनार वने साग के गणी में नमी आ जाती है।

मेरा विद्यास है कि शवारपाठे ना अचार भी बाला जा सकता है। पर अभी तक उसमें सफलता मही मिळ सकी। हा, पवारपाठे की फरी का जबार अवस्य जाएकेशर और गुणवायन बनता है। आम, नीम्बू आदि को तरह ही इसकी फ़्ली का अचार वनाया जा सकता है और उन्हीं की तरह टिकाउ भी होता। इसकी फुली जाड़े में रुगती हैं।

भवारपाठे वा साम और उसकी फली वा अचार वितती ही भागा में आप क्यों म भागे, कोई नुकारत न होगा । म वारपाठे वा साम वहदमी में तो वहा प्रायदेवन्द है। मोजन के पचाने में सहायक होने के बारण जिन दिना आप इम साम वा उपयोग बरेगे, आपनी अदिर में बहा स्कृति माल्य होगी, जो कि पाल्य वा साम वाने हैं प्रतिव होगे हैं। मेरे बसाल में मंगे के दुव्जियों में वह पाल्य से भी अच्छी हैं। विशेषता यह है कि वारहो महीने मवारपाठे वा साम वानों वा सा सवता है। मप्ताह में बच-ते-सम से वा सो तो नापार-पाठे का सात जबर बनाना बाहिए।

बहा तर मेरा अनुमान है, गवारपाठे के उत्पादन में हिंवी भी वगह और निशी भी श्रेणी के व्यक्ति को कोई अनुविचा न होंगी। नयोकि एक पीचे के लिए एक टुट से विध्वन वभीन की जरूरत नहीं होती। ठवाई भी हो कीट के करीब ही होंगी है। ऐसी हारुत में मुखेक घर में गवारपाठे के हुट पीथे रुगाना विकहुल आसान है। जवनि एक पीया भी रहेगा बगी तरू आपके परिवार को हर महीने एक साग विख्या रहेगा। आफू नी तरह गवारपाठे वा मविष्य भी सागों की श्रेणी में उल्लास्ट प्रमाणित होगा।

" जिस्म - उपयोग धर्म गही है, इन्द्रिय-दमन पर्म है। झान और इच्छापूर्वक हुए इन्द्रिय-दमन से आत्मा का लाम होता है, हानि नहीं। विपयेन्द्रिय का उपयोग केवल सन्तित की उत्पत्ति के लिए ही स्वीकार किया गया है। पर जो सन्तिति का योह छोड़ देता है उनकी घारल भी यन्दता करते हैं। इस युग में विकारों की महिमा इतनी वढ गई है कि अधर्म की ही लोग पर्म मानने लग गये हैं। विकारों की वृद्धि अथवा तृत्ति में ही अगत का कत्याण है, ऐसी कल्पना करता महादोप-मय है ऐमा मेरा विद्वास है। यही घान्त्र भी कहते हैं और यही आत्मदिश्यों का स्वच्छ अनुभेत हैं। विकारों रोके नहीं जा सक्ते अथवा उन्हें रोकने में नुक्सान है, यह कपन ही अत्यन्त अहितकर है।"

0

---मो० फ० गाधी



सर्वोदय अयंशास्त्र—लेखक—श्री भगवानदास फेला, प्रकाशक—भारतीय ग्रंथमाला, इलाहाबाद, पृष्ठ ३५२, मूल्य ४)।

श्री भगवानदास केला ने अर्थ-शास्त्र, समाज-शास्त्र, आदि अनेक विषयों पर वड़ा ही उपयोगी और प्रामाणिक साहित्य प्रदान किया ह । प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने सर्वोदय की दृष्टि से अर्थशास्त्र की रूप-रेखा उपस्थित की है। पुस्तक सात खंडों में विभाजित हैं : पहले खंड में, सर्वोदय अर्थ-शास्त्र क्या है, इसका विशद विवेचन किया गया है। दूसरे में उपयोग, तीसरे में उत्पत्ति, चीथे में विनिमय, पांचवें में वितरण, छठे में अर्थ-व्यवस्था और राज्य तथा सातवें में सर्वोदय अर्थ-शास्त्र की विशेषताएं वताई गई हैं। सर्वोदय का सिद्धांत समष्टि से अधिक व्यष्टि के विकास पर ज़ोर देता है। अतः उसके अनुसार जो भी सामाजिक या आर्थिक व्यवस्था कायम होगी, उसकी वुनियाद में मानव सर्वोपरि होगा। इस पुस्तक में ऐसे ही अर्य-शास्त्र का विवरण दिया गया है। इन सिद्धांतों के जन्मदाता गांधीजी ने आंशिक रूप में ही सही, इनका सफल प्रयोग कर के दिखा दिया है और यह भी सिद्ध कर दिया है कि यदि मानव को सच्ची और स्थायी शान्ति प्राप्त करनी है तो वह इस अर्थ-प्रणाली का अनुसरण करके ही प्राप्त हो सकती है।

सर्वोदय के सिद्धांत में विश्वास रखने वाले लोगों के लिये तो यह पुस्तक काम की है ही, पर जिनका विश्वास उन सिद्धांतों में नहीं है, उनके लिये भी यह पुस्तक उपयोगी है । पुस्तक की भूमिका श्रीकृष्णदासजी जाजू ने लिखी है। छवाई साफ और शुद्ध है।

सर्वोदय अर्थ-व्यवस्था—लेखक श्री जवाहिरलाल जैन, प्रकाशक—भारतीय ग्रंथमाला, इलाहाबाद, पृष्ठ १२७, मूल्य डेंढ़ रुपये।

इस पुस्तक का विषय वहुत-कुछ श्री भगवानदास जी केळा की सर्वोदय अर्थ-शास्त्र पुस्तक से मिळता है । वस्तुतः इस विषय पर दोनों ने साथ-साथ पुस्तक लिखने का विचार किया था, और लिखने का कार्य वांट लिया था, लेकिन जब दोनों के लिखे अंश एक दूसरे के सामने आये तो उनकी भाषा-शैली आदि में बहुत अन्तर होने के कारण उन्हें स्वतन्त्र रूप से दो पुस्तकों में प्रकाशित करना उचित समझा गया। इस पुस्तक में पूंजीवादी तथा साम्यवादी अर्थ-व्यवस्थाओं के गुण-दोषों की समीक्षा की गयी है, सर्वोदय अर्थ-व्यवस्था के लक्षण और सिद्धांत का विवरण उपस्थित किया गया है और अंत में इस बात पर जोर दिया गया है कि इस नवीन अर्थ प्रणाली के द्वारा ही मानव-संस्कृति और मानव-सभ्यता की रक्षा की जा सकती है।

यह तथा केलाजी की पुस्तक सर्वोदय की अर्थ-प्रणाली को सही निगाह से देखने तथा खुले दिमाग से समझने की प्रेरणा देती हैं और साथ ही तत्सम्बन्धी प्रचुर सामग्री भी।

रक्षक और भक्षक: लेखक-श्री मन्मथनाथ गुप्त, प्रकाशक--आलोक प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ १४०, मूल्य दो रुपये।

श्री मन्मयनाथ गुप्त हिंदी के जाने-माने लेखक हैं। उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। प्रस्तुत उपन्यास हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इसमें उन्होंने दिखाया है कि रक्षक होने का दावा करने वाले लोग किस प्रकार भक्षक वन जाते हैं। इस पुस्तक के मुख्य पाय लक्ष्मणिसह एक डाक्टर हैं। वह प्रारम्भ में बहुत ही ईमानदार थे और सेवा की दृष्टि से डाक्टरी करते थे, लेकिन परिस्थितियों के दवाव के कारण वह एक वार गिरे तो ऐसे कि फिर उवर नहीं सके। गहरे गड्डे में फंस गये। वस्तुतः डाक्टर तो समाज-त्र्यापी अनेक बुराइयों का प्रतीक मात्र है। लेखक का अभिप्राय इस क्यानक द्वारा उन सब पर चोट करना है जो समाज के संरक्षण का वाना पहन कर उसे चूसते हैं। उपन्यास बढ़ा रोचक है

और समाज की कल्पता पर गहरी चौट करता है। भाषा बड़ी सरस और सैली आवर्षन हैं। लेनिन यदि इस पुस्तक को हम उपन्यास के रूप में पढ़ें तो सतीय नहीं होता । पढते-पढने लगता है कि पुस्तक एक विशय ध्येय को सामने रख कर लिखी गयी हैं। यही कारण हैं कि उसके पात्रों का सर्वांगीण चित्रण नहीं हो पाया है। फिर भी इस पुस्तक का अपना महत्व है। समाज-सेवा में हिंच रखने वाले प्रत्येक पाठक से हम इसको पढने की सिफारिश करेंगे।

#### हमारे सहयोगी

#### जिसेवाक

कानपुर के 'प्रताप' का अतीत वडा गौरवशाली रहा है। उसी पत्र ना १०४ पृष्ठ का विश्लेषाक, सियारामशरण अक, जो ४ सितम्बर १९५२ को प्रकासित हआ है । हमारे सामने हैं। विनोदाजी के शब्दो में "सियाराम-शरण जो नम्प्रताकी मृति है। नाम उनका सार्थक है। सब नारी-नरो को सीताराम-स्वरूप देख कर वे सवकी मक्ति करते हैं। उनकी कविता में जो भी रस होगा, वह इसी गुण का परिपात है।" विशेषाक में हिंदी के अनेक गण्य मान्य लेखको के सस्मरण सकल्ति किये गये हैं। उनसे सियारामजी के मध्र और खरे ब्यक्तित्व पर तो प्रकाश पडता ही है, लेखक के रूप में भी जनकी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। अक सग्रहणीय है। पर हमें एक शिकायत है कि इस अब में बहुत सी पूरानी रचनाए दे दी गई है। अच्छी चीवें कभी वासी नहीं होती, लेकिन उनका आधिक्य अखरता है। पत्र का स्प-रग भी उतना आकर्षक नहीं है। मूल्य एक रुपया है। काशी के 'संसार' का १०० पृष्ठ वा 'निर्माण-अक'

अच्छा और उपयोगी है। उसमें मुख्यन अर्थ-सम्बन्धी सामग्री दी गई है। दामोदर, भाकरा, हीराकुड आदि योजनाओं पर प्रकास हालने के साय-साय बैंक. रेल. कोयला, अवरक, इत्यादि पर भी महत्वपूर्ण सामग्री सकल्ति की गई हैं। सहयोगी के इस विशेषाक की बडी उपयोगिता है। जयपुर की दैनिक 'सोकवाणी' के 'दोपावली अडू' में दस आने में बडे आनार के ७० पृष्ठ की सचित्र सामग्री हैं। इस अक से राजस्थान के

विविध रूपो की झाकी मिल जाती हैं। इस प्रकार के जनपदीय प्रयत्न वडे लाम ने हैं, पर अधिनारा पत्र बाहर की चीजों के पीछे घर की मृत्यवान चीजों की उपेक्षा बर जाते हैं। दिल्ली वे सरकारी पत्र 'आज कल' ने 'प्रेमचन्द-अर्क' निवाल कर वडी सूत्र और साहित्या-नुराग ना परिचय दिया है। विशेषाक की सामग्री पठनीय है। सर्वे श्री जैनेंद्रकुमार, क्वहैयालाल मिश्र प्रमाकर, बनारमीदास चतुर्वेदी तथा 'नवीन' जी के लेख बहुत ही रोचक हैं। प्रेमचन्दजी के वितिषय पत्र, जीवन की विशेष घटनाओं की तिथि-त्रम-तालिका. चित्री तया रचनाओं की सूची ने विदोपाक की उपयोगिता में थार चाद लगा दिये हैं। अक समाल कर रखने योग्य है। मृत्य बाठ आना है।

#### तये पत्र

विहार से समय-समय पर हिन्दी में बडे सुम्दर पत्र निकलते रहते है । इस नवस्वर मास से वडा उज्जवल भविष्य लेकर एक नई मासिक पत्रिका निकली है-'अवन्तिका', जिसके सम्पादक श्री लक्ष्मीनारायण 'सुषाद्यु' हैं। उसकी सामग्री को देलकर पता चलता है कि पत्रिका को हिन्दी के चोटी के लेखको का सहयोग प्राप्त है और रचनाओं का चुनाव बहुत विवेक्पूर्वक किया गया है। पत्रिका के दो स्तम्भ हमें बहुत उपयोगी प्रतीत १ भारतीय वादमय २ विज्ञान-वार्ता । पहले में भारतीय भाषाओं, जैसे गुजराती, तेलुगु, बगला के साहित्य की गतिविधि का परिचय है। दूसरे में विज्ञान सम्बन्धी जानकारी । वार्षिक मृत्य १०) और एक अक का १) है। मिलने का पता है—श्री अजताप्रेस लिमिटेड, पटना ।

हिन्दी में ऐसे साहित्य का बड़ा अभाव है, जो विज्ञान और उसकी प्रगति का सरल-सुबोध भाषा में सामान्य पाठको को परिचय करा सके । हर्ष की बात है कि वौसिल बाव साइटिफिक एण्ड इडस्ट्रियल रिसर्च (नई दिल्ली) की ओर से इसी अगस्त मास से 'विज्ञान प्रयति' नामक मासिक पत्र निकरने रंगा है। पत्र का उद्देश्य है वैज्ञानिक अनुसमानो की सूचना (श्रेष प्छ ४४५ पर)

## राजेन्द्रवाव् दीर्घजीवी हों!

३ दिसम्बर को भारत के राष्ट्रपति डा. राजेंद्रप्रसाद अपने जीवन के ६ वर्ष पूरे करके ६६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस नुअवसर पर हम उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अपित करते हुए भगवान् से कामना करते हैं कि अभी वह बहुत वर्ष तक हमारे बीच वने रहें और अपने परिपक्व अनुभव और दीर्घकालीन सावना का लाभ हमें देते रहे। राजेंद्रवाव उस पुरानी पीड़ी के प्रतिनिधि है, जो समूचे भारत को एक परिवार का हप प्रदान करती थी और यही कारण है कि उनके लिए देश के करोड़ों व्यक्तियों के हदय में गहरी आत्मीयता है।

राजेंद्रवावू का संपूर्ण जीवन सेवामय रहा है। जब और जहां से नेवा की पुकार आई, अपनी मुख-मुविघा का व्यान न रख कर वह वहां पहुंचे। हम सब जानते हैं कि प्रारंभ से ही वह कितने मेघानी वालक ये और कितना प्रतिभागाली उनका विद्यार्थी-जीवन रहता था। लेकिन राष्ट्र को जब उनकी नेवाओं की आवश्यकता हुई तो सब कुछ छोड़ कर सेवा के क्षेत्र में आ कूदे । आजादी की लम्बी लड़ाई में उनका कितना भाग रहा है, यह हमसे छिपा नहीं है और देश के स्वतन्त्र होने के वाद जब कि उन्हें आराम मिलना चाहिए था, वह निरन्तर काम में जुटे ह । अवतक जितने पदों पर उन्होंने काम किया है, चाहे वह खाद्यमन्त्री के रूप में हो, अथवा विवान परिपद के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने अपने को कही भी बचाने का प्रयत्न नहीं किया, पूरी तीर पर अपने को स्वपाया है। दमे से वह प्रायः पीड़िन रहते है। लेकिन अवतक सज-वूर न हो जांय, वियाम की वह कल्पना भी नहीं कर सकते ।

आज की विषम परिस्थितियों में देश को अपने इस बुजुर्ग की आवश्यकता है। सरलता, निस्पृहना, सादगी परदु:सकातरता आदि गुणों का उनमें अद्भुत सम्मिश्रण है। हम चाहते हैं कि हमारी नई पीड़ी उनके इन गुणों को अपने जीवन में उतारे और देश के पुनर्निर्माण में उसी एक-निष्ठ लगन और तत्परता में हाथ बटावे जैसे कि इस महापुरुष ने बटाया है।

## विनोवाजी का नया कदम

विनोवाजों के भू-दान-यज्ञ से पाठक भली-भांति परिचित है। तैलंगाना में उन्होंने जिस यज्ञ का प्रारंभ किया था, वह अब उत्तरोत्तर विकसित होता जा रहा है। पहले भूमि मागी, फिर उसमें बैल-दान, हल-दान, और कूप-दान जुड़े, आगे चलकर श्रम-दान आया और अब विहार-प्रदेशीय प्रवास में उन्होंने एक नया कदम उटाया है सम्पत्ति-दान के रूप में। लोगों को आय्चर्य होता है कि एक-पर-एक नई चीज सामने आ रही है, लेकिन सच यह है कि समाज के नव-निर्माण के जिस महान् उद्देश्य को लेकर विनोवाजी ने अपना अभियान प्रारंभ किया है, उसमें ये सब बातें पहले ही से समाई हुई हैं। उन्होंने कई स्थानों पर कहा भी है कि मेरा यज्ञ गंगा की तरह है, जो निकलते समय छोटी होती है, पर बाद में बराबर फैलती जाती है।

सम्पत्ति-दान के पीछे एक क्रांतिकारी भावना है। विनोबाजी ने मांग की है कि लोग अपनी संपत्ति का छठा भाग उन्हें दे दें। 'दे दें' का अर्थ यह नहीं कि उसे उठा कर उनके पास भेज दें, बिल्क यह है कि उनके ट्रस्टी बन जायं और उसका उपयोग विनोबाजी के आदेशानुमार करे। यदि विनोबाजी का कोई आदेश प्राप्त नहीं तो अपने को उस पैने का ट्रस्टी मान कर उसका उस्तेमान करें और और उनका हिमाब अपने पास रक्ष्यें। काम बास्तव में बड़ा कठिन है और कहा नहीं जा नकता कि उसमें कितनी सफलता मिलेगी। लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि आज की विषम परिस्थिति, असमान समाज और अर्थव्यवस्था अधिक दिन नहीं चलने की और

स्पेच्छा हे क्ये पपे दान का भहत्व दक्षक हे दिये गये पैसे की अपेक्षा वई गुना होता है। इसिक्ए समय रहते ही बेद जाना श्रेयस्वर है। किनोबाजी ने खतरे की स्पटी क्या दी है और सुका दिया है कि सही रास्ता यह है। मानना, न मानना लोगों के हाल की बात है। जो मान कीं, के मुनाफ़े भे रहने और ओ नहीं मानकें, के अपनी तर स्वय कुटारामा करेंगे।

कन्द्रोल

कभी-कभी कुछ भीजें हमारे साथ ऐसी चिपक जाती हैं, कि हम चाहते हुए भी उन्हें छोड मही पाते। क्ट्रोल एक ऐसी ही चीज है। अधिकारी नहीं चाहते कि कट्टोल रहे, और देश भी इस बला से जल्दी-से-जल्दी मुक्त हो जाना चाहता है। लेक्नि दुर्भाग्य कुछ ऐसा है कि उससे पीछा नहीं छटता। सरकार की लगता है कि कट्टोल हटने पर सपन लोग अपने घरो में अनाज भर लगे और मध्यम या सामान्य श्रेणी के लोग भूको मर जायगे । सरकार वे इस डर में सचाई हो सकती है, लेकिन इस तथ्य में भी कम सचाई नहीं है जबतक कटोल रहेगा, अल की दृष्टि से देश स्वावलम्बी नहीं हो सकता। कट्रोल रखने के मानी यह है कि देश को अनाज देने की जिम्मेदारी सरकार की है। जबतक यह जिम्मेदारी लोगों के ऊपर आकर नही पडेगी, तबतक 'अधिक अन उपजाओ' के हजार नारे लगाने और उस पर करोड़ो रुपये सर्च कर देने पर भी क्छ भी नहीं होने का। देश अधिक-से-अधिक परमुखा-पेक्षी होता जायगा । मेन्द्रीय सरकार के खाद्यमन्त्री श्री रकी अहमद निदयई ने अपने एक वनतव्य में कहा है वि अन् १६४१ में बाहर से ४७ नास टन जन लाना पड़ा था। १६४२ में ३६ लास टन और अब १६४३ में कुल १५ सास टन लाना पड़ेगा। यह ठीन है कि इन आकड़ों में कभी हुई है। पर इनसे यह निस्चय नहीं होता कि हम बत्दी ही अपने पैरो पर सदें हो जायमे। अपने निधन से बुछ समय पूर्व गांगीओं ने अपने एक प्रवक्त में नहां पा कि हमारे देवा में ३ प्रतिस्तात अन नी बभी है। उसे लोग स्थाह में एक बार खाना छोड़ चर पूरी कर सकते है या साममानी वा अधिक उपयोग करके। सेलिक इस कभी को बाहर से अन सावर पूरा वरने में एक बड़ा खतरा यह है हि हम दूसरों पर निर्मर करना सीख जायगे, स्थावनमानी होने ना प्रवस्त गई। वरने। उनकी मंदियम वाणी सही निकसी।

सरकार में कड़ोल की बीजो के यातायात को बीजा करही दिया है। अब वह क्यों कड़ोल की नहीं हटा देती? नियमित भाजो पर वह क्यों कड़ोल की नहीं हटा देती? नियमित भाजों पर वह नवी नियाह एक बीर जो भी उधकी अबहेला करे, जो के लोरातारी होनी हैं और सोग वेषडक बहुते हैं कि सरकार अपनी है। इर क्या है? यातते होती हैं। ऐसी दिलाई से क्या परिणाम निक-तेवा? अत की बुटिद से देश को स्वावकार्यी बनाने वा एक ही ज्याप है और वह यह कि यह के देश कोरे निवासियों के पेट भरने की विम्मेदारी उन्हों पर डाजी आप, वियमित दायों का कहाई से पाकत कराया जाय और चीरवानारी तथा स्वयह के तिए कडी-सै-वडी सवा वी बाय । कटोल राव क्षा कर गई काम नहीं ही सकेंं। — य

#### कसौटी पर

( पुष्ठ ४४३ का रोप )

ष्टोटे-छोटे उत्पादकों को देना और अन्वेषणा ने उन चुने हुए परिणामों का संशिष्त विवरण उपस्थित वरणा, जो शीप ही, व्यवहार में लाये वा गरे। पत्र की सामी कोकोपयोगी हूँ। उसे पत्रकर स्वेक बातों की वानवारी प्राप्त हो आती हैं। पत्र के बाद में उन पारिपापिक सब्दो ने अबेनी पर्याव दिये गए हैं, जो इस कर में प्रयुक्त हुए हैं। पत्र का वाधिक मूल्य ५) और एक अरू का ॥) हैं। क्लिन का पता किसान प्रणीत', प्रीक्लेस्पन दिव्योजन, कौसिल ऑब साइटिफिक एक इहार्ट्सिक रिसर्ज, २० हुसा रोड, नई दिल्ली।

# मंडल की श्रोर से

'जीवन-साहित्य' सम्बन्धी आवश्यक सूचना

'जीवन साहित्य' की लोकप्रियता इवर वरावर वड़ रही है, साय ही उसके ग्राहकों की संख्या भी। फुटकर ग्राहकों के अतिरिक्त विहार-सरकार ने उसकी २५० प्रतियां ली हैं। इस कृपा के लिए हम अपने ग्राहक वन्युओं तथा विहार-सरकार के आभारी हैं। हमें विश्वास है कि अन्य ग्राहक तथा सरकारें भी ऐसे ही साहित्यानुराग का परिचय देंगी।

हमारे बहुत से पाठकों ने लिखा है कि 'जीवन-साहित्य' की पृष्ट-संस्था थोड़ी है। ३२ पृष्ठ से उन्हें संतोप नहीं होता। उनका आग्रह है कि पत्र में कुछ पृष्ठ और बढ़ा दिये जायेँ। उनके आग्रह को घ्यान में रख कर हमने अगले वर्ष अर्थात् जनवरी मास से 'जीवन-साहित्य' में ५ पृष्ठ और बढ़ा देने का निश्चय किया है। पर उसका मूल्य वही रहेगा, यानी ४) वार्षिक। पाठकों को ज्ञात ही है कि पत्र बराबर घाटे पर चल रहा है। विज्ञापन हम लेते नहीं। ऐसी दशा में हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि उनमें से प्रत्येक एक-एक, दो-दो ग्राहक बना दें। एक हजार ग्राहक और पिट बढ़ा सकेंगे।

## सहायक सदस्य योजना

'मण्डल' की सहायक सदस्य योजना के प्रति साहित्य-प्रेमी महानुभावों तथा संस्थाओं का ध्यान तेजी से आक-पित होता जा रहा है। इघर कई एक शिक्षा-संस्थाएं— कालेज, हाईस्कूल तथा पुस्तकालय—सदस्य वन गई हैं। मध्यभारत के शिक्षा-सचिव डा० बूलचन्दजी ने कृपा पूर्वक वहां के चारों कालेजों तथा सार्वजनिक पुस्तकालय को सदस्य बना दिया है। इसी प्रकार दिल्ली राज्य के शिक्षा-संचालक डा० ए. एन. वनर्जी के गश्ती पत्र से दिल्ली के कई हाईस्कूल सदस्य वन गये हैं। इनके अतिरिक्त नीचे लिखे महानुभावों व संस्थाओं ने सदस्य वनना स्वीकार कर लिया है:—

```
१. श्री महावीरप्रसादजी (विड्लापुर)
 २. ,, छोटेलालजी जैन (कलकत्ता)
 ३. ,, आत्मारामजी पाड़िया "
४. " रामकुमारजी वायंवाला
 ५. ,, शान्तिप्रसादजी जैन
 ६. ,, केशवराव काटन मिल
७. " माहेश्वरी विद्यालय
 प्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया
 ९., केशवप्रसादजी गोयनका (कलकत्ता)
१०. " विश्वनायजी मोर
११. " ताराचन्दजी साबू
१२. ,, रामकुमारजी सरावगी
१३. ,, आदर्श हिन्दी हाईस्कूल
१४., महावीर पुस्तकालय
१५. " दुर्गाप्रसादजी सरावगी
१६. " अर्जुनलालजी अग्रवाल
१७. " रामनिवासजी कर्वा
१८. " रामेश्वरजी पाटोदिया
२०. " प्रभुदयालजी डावड़ीवाल
२१. " हनुमानप्रसादजी पोद्दार
२२. " गजराजजी सरावगी
२३. " लक्ष्मणप्रसादजी पोहार
२४. ,, गोविन्दशरणजी गुप्त (दिल्ली)
२५. " हंसराजजी गुप्त
२६. लाला राजेन्द्रकुमार जैन
२७. अमृतसर शुगर फैक्टरी (मुजफ्फरनगर)
२८. पेपर मर्चेट्स एण्ड स्टेशनर्स एसो० दिल्ली
२६. श्रीं मदनमोहनजी तायल (हिसार)
३०. " राय अमरनायजी अग्रवाल (प्रयाग)
३१. ,, राय रामचरणजी अग्रवाल
३२. " मास्टर शिवचरणदास (दिल्ली)
३३. मेसर्स जानकीदास एण्ड संस (दिल्ली)
३४. राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति शाला
```

## हिन्दी में ऋर्थशास्त्र की एकमात्र उत्कृष्ट पत्रिका

# सम्पदा

विधिक मत्य ८)

सम्पादक--श्री कृष्णचंद्र विद्यालंकार

साहित्य, कहानी, राजनीति और समाज-सम्बन्धी अनेक हिन्दी पत्रिकाए होते हुए भी अर्थशास्त्र की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका केवल 'सम्पदा' है। आर्थिक, श्रीधोपिक, व्यापारिक विषयो पर विद्वतापूर्ण लेख और आकडो के अतिरिक्त निम्नलिखित स्तम्म पत्रिका की विशेषता है-कृषि और खाद्य

श्रमसमस्या वैक और वीमा दाजार की गतिविधि हमारे उद्योग ब्यापार और वाणिज्य अर्थवृत्त-चयन

विविध राज्यों की मार्थिक प्रवृत्तिया आपका निजी या सार्वजनिक वाचनालय 'सम्पदा' के विना अपूर्ण है। जल्दी ग्राहक बनिये।

## श्रशोक प्रकाशन मन्दिर

रोशनारा रोड, दिल्ली

भारतीय साहित्य की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका बाविक मूल्य राष्ट्रभारती एक प्रति

सम्पादक—श्री मोहनलाल भट्ट, श्री हृचीकेश रामाँ साहित्य-सस्दृति-कला प्रधान पत्रिका "राष्ट्र-भारती" प्रति मास कापको हिन्दी और मारत की विभिन्न प्रान्तीय तथा विदेशी भाषाओं की साहित्यिक-

सास्कृतिक गतिविधि का परिचय देगी। 'कोविद', 'राष्ट्रमापारल' और 'विशारद' के अध्ययनशील प्रौढ छात्रों की सहायता के लिये प्रति-मास इस पत्रिका में मुख्य-मुख्य पाठ्य-पुस्तको को लेकर समालोचनात्मक सामग्री भी प्रस्तुत की जायगी राब्दुभारती प्रत्येक मासकी १ तारीखको प्रकाशित होती है।

प्रबन्धवर्ता-"राष्ट्रभारती"

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्घा (मध्य-प्रदेश)

राप्ट्रभाषा हिंदी का सर्वित्र सास्कृतिक मासिक पत्र वापिक मूल्य विक्र म (सपादक तथा सचालक—सूर्यनारायण श्यास)

अध्यक्ष के पद से

विद्यार्थियों के लिए

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ मासिन विक्रम' ही है, जिसना राजा महाराजाओं से लेकर देश के सर्वसाधारण समाजतन समान रूप से प्रवेश हैं। स्वस्य साहित्य, शिष्ट हास्य, चुनी हुई कविता

और कहानी एव विचार प्रेरक पचामृत तथा समस्त मासिक साहित्य का सुन्दर परिचय 'विकम' की अपनी विजेपता है । सभी विद्वानी ने हिन्दी का 'मॉडर्न रिब्यू' वहकर

इसकी प्रशंसा की है। यदि बाप अवतक ग्राहक नहीं है तो अविलम्ब

ग्राहक वन जाइये, मित्रो को चनाइये। विशेष जानकारी के लिए लिखिये:

विकम कार्यालय, उज्जैन (मालवा)

नूतन वाल-शिक्षण-संघ की

वार्षिक मूल्य ४)

# हिन्दी शित्तगा-पत्रिका

एक प्रति का ।=)

'क्षाज का बालक कल का निर्माता है' यह सब मानते हैं; परन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक बनाने के लिए प्रयत्न 'हिन्दी शिक्षण-पत्रिका' करती है। यह नूतन शिक्षण के सिद्धांतों के अनुसार बालोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करती है। यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करती है। यह पत्रिका मनोविज्ञान के आचार्य श्री गिजुभाई वधेका के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति है। पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है।

हिन्दी शिक्षण-पत्रिका--५१ नंदलालपुरा लेन, इन्दौर।

# क्लप्ता (मासिक)

पहिये

जिसमें उच्चकोटि के साहित्यिकों और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी।

प्रत्येक अंक में एक रंगीन चित्र

स्यायी स्तम्भ:--

कला प्रसंग—विनोदविहारी मुकर्जी सांस्क्रतिक टिप्पणियां—दिनकर काँशिक

साहित्य घारा—इस स्तम्भ के अंतर्गत पाठकों, लेखकों

आदि द्वारा उठाये गये साहित्यिक प्रश्न आदि हैं।

पुस्तक समालोचना—कल्पना अपनी निर्मीक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध हैं।

वार्षिक मूल्य पृष्ठ संख्या ८०, एक प्रति का १२)

८३१, वेगम वाजार, हैदरावाद।

तार : हिन्दी

फोन : ५४५०

## अजन्ता

: मासिक :

प्रकाशक: हैदरावाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, हैदरावाद (दक्षिण)

मूल्य : ९-०-० भा० मु० वार्षिक

किसी भी मास से ग्राहक बना जा सकता है।

कुछ विशेषताएं :

१. उच्च कोटि का साहित्य

२. सुन्दर और स्वच्छ छपाई

३. कलापूर्ण चित्र

सम्पादक

श्री वंशीयर विद्यालंकार : श्री श्रीराम शर्मा

कुछ सम्मतियां

१. "अजन्ता का अपना व्यक्तित्व है।"—अनारसीदास चतुर्वेदी २. "अजन्ता हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पित्रकाओं में मे एक है।"— कन्हैयालाल माणेकलाल मनशी

# उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

१. वर्द्धमान १८००) पुरस्कार मूल्य ६)

२. शेरोमुखन ५००) " मूल्य ८)

२. शेरोशायरी ५००) , मृत्य ८)

४. पयचिह्न १०००) " मूल्य २)

५. वैदिक साहित्य ६००) " मूल्य ६)

६. मिलनयामिनी ५००) " मूल्य ४)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, वनारस ५

# सन् १६५२ के नवीन प्रकाशन

१. हमारे आराध्य(पं०वनारसीदास चतुर्वेदी)मू० ३)

३. रेखाचित्र (प्रेस में) ,, ,, मू०

४. रजतरिम (डा॰ रामकुमार वर्मा) मू॰ २॥)

५. आकाश के तारे : धरती के फूल (क. मिश्र) २)

६. जैन जागरण के अग्रदूत (अ०प्र०गोयलीय) मू०५)

#### देश के करोड़ो भूमिहीनो के लिए भूमि प्राप्त करने के ग्रुभ संकल्प को लेकर

## संत विनोबा

हुजारों मी र परल चल चुके हैं और उनका भूमिदान-यक्ष तेजी से आगे यह रहा है। लाखा एकड भूमि उन्हें प्राप्त हो चुकी है। उनके इन आदालन म सहायता दना हम सबका पुनीत कर्तब्य है। पर सहायता तव दे सकते हैं जब हम इस आदोलन की मूल प्ररणा को समझें और उत्तके प्रवसंतर के विचारों को जानें। इसके लिए आप

#### विनोवा - साहित्य

का

अवञ्य अध्ययन कीजिये ।

#### हिंदी में विनोबाजी की में पुस्तकों उपलब्ध है

- श गीता-प्रवचन १), १॥।) २ विनोबा के विचार (दो भाग) ३)
   स सर्वोदय विचार १० ४ भूदान यज्ञ ।)
   प राजवाट की सिनिध म ॥।० ६ घाति-याचा २॥), ३॥)
   स्वराज्य घास्त्र १) ८ ईद्यावास्यवृत्ति १)
   ईद्यावास्योगितवद ० १० स्थिनप्रकादर्शन २।
- ११ गांधीजी को श्रद्धाजिल ।२) १२ सर्वोदय-याना १।) १३ जीवन और सिक्षण २।

ये तथा अन्य पुस्तकें हमारे यहा से लीजिये

#### सस्ता साहित्य मण्डल

नई दिल्ली

लीजिये सन् १९५३ की गांधी - डायरी

तैयार है

C (पहले वर्ष की सामग्री ज्यों-की-त्यों C उतने ही पृष्ठ

C छपाई पहले से भी बढ़िया

C गत्तं की आकर्षक जिल्ह

फिर भी

C मृत्य में ग्राठ ग्राने की कमी।

जेवी व्याकार की डायरी

वारह ञ्राना कागज की कमी के कारण डायरी इस वर्ष बहुत कम छापी गई हैं।

अभी से अपने शहर के पुस्तक-विकेताओं के यहां सुरचित करा लीजिए। देर होने पर क्हीं निगरा न होना पड़े।

यदि आप जेवी डायरी सुपत मं

चाहते हों तो ' जीवन-साहित्यं के दो ग्राहक ३१ दिसम्बर तक बना कर भेज दीकिये। कहने को यह डायरी है. पर इसका मृत्य किसी भी जीवन-

अत.

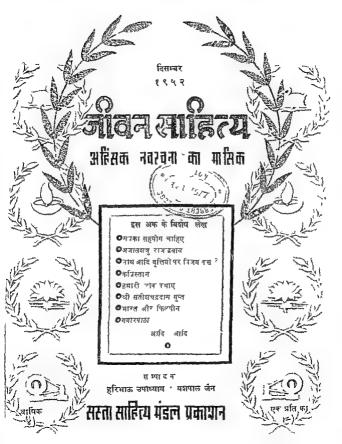
अपनी मति

निर्माणकारी पुस्तक में कम नहीं है। सना शहित्य मंडल र्न्ह दिल्ली

रवल डायरी

दो रुपया

मानैश्व इसध्यापः मही, नस्ता स्महित्य मेटवः, नहे विन्ही हारा नेमन्त्र बिटिंग वर्गने विल्ही से छणनार प्रवर्गित ।



# लेख-सूची

	1
१. पहाड़ी पर के उपवेश हजरत ईसा	४१७
२. सबका सहयोग चाहिए विनोबा	४१८
३. अजातमञ्जू राजेन्द्रवावू यशपाल जैन	४२३
४. क्रोध आदि वृत्तियों पर विजय कैसे ?	
अरविन्द	४२५
५. प्रतिरतान खलील जिन्नान	४२६
६. हमारी लोक-कथाएं	
अादर्शकुमारी यशपाल	४२८
ं. श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त शम्भुनाय सबसेना	850
८. आत्म-विस्वास कन्हैयालाल मिन्डा	४३३
५. गीत 'नीरज'	834
१०. जेन जैक्वस रुसो विष्णुबरण	४३६
११. भारत और फिलपीन रामसिंह रावल	४३७
१२. गद्य-गीत गंकरलाल जा० पुरवार	४३९
१३. गंवारपाठा नित्यानंद	४४०
१४. कसोटी पर नमालोचनाएं	४४२
१५. दया व कैसे ? सम्बादकीय	888
१६. मंडल की ओर से मंत्री	४४६

## ञ्चावश्यक सूचना

'जीवन-साहित्य' के ग्राहक नं० १००१ से २२०० तक का वार्षिक जुल्क इस अंक के साथ ममाप्त हो जाता है। इस वर्ष डाकवाने के नये नियमों के अनुसार कोई आवश्यक मूचना अथवा मनीआईर फार्म नहीं रख सकते। ग्राहकों से हमारा अनुरोध है कि वे स्वतः ही अपना आगे के वर्ष का गुल्क दिसम्बर १९५२ के अंत तक भेज देने की छुपा करें।

आगामी वर्ष का वार्षिक मूल्य भेजते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। नवीन ग्राहक मनिआईर

कूपन पर 'नवीन ग्राहक' घव्द अवस्य लिखें।

वी० पी० से भेजने का स्त्रीकृति-पत्र यदि भेजें तो अपना ग्राहक नम्बर अवस्य ित कें अन्यया भूल से आपका नाम नवीन ग्राहकों में भी लिखा जा सकता है और इस प्रकार दो स्थानों पर नाम लिख जाने से बी०पी० आपको दो बार भेजी जायगी।

'मण्डल' की जयंती के अवसर पर 'जीवन-साहित्य' का बहुत सुन्दर और उपयोगी विशेषांक प्रकाशित हो रहा है— 'प्रगति के पच्चीस वर्ष', जिसमें पिछले पच्चीस वर्ष की साहित्यिक प्रगति का विद्वानों द्वारा विवरण उपस्थित किया जायगा। यह विशेषांक विशेषांक से कहीं अधिक संदर्भ ग्रंथ होगा। पाठक कृपया इसका व्यान रक्कों।

# भारत के लोकप्रिय नेता नेहरूजी का

# विश्व इतिहास की अलक

यदि

अभी तक आपने नहीं खरीदा है तो शीघा खरीद लीजिये। ऐसे ग्रंथ जल्दी प्रकाशित नहीं होते। इस बार ही यह बारह वर्ष वाद निकला है।

वड़े आकार के लगभग ९०० पृष्ठ, सुन्दर-शुद्ध छपाई, आकर्षक एवं मजबूत जिल्द

फिर भी मूल्य केवल २१)

अवसर चूकने पर कहीं आपको निराश न होना पड़े !

सस्ता साहित्य मगडल

नई दिल्ली

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा विहार प्रादेशिक सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों व लाइने रियों तथा उत्तरप्रदेश की माम-पचायतों के लिए स्वीकृत



हजरत ईसा

#### पहाड़ी पर के उपदेश

मुवारिक है वे जो दूसरो की भलाई करने के लिये भूख प्यास सहते है, उन्हें जरूर भर पेट खाने को मिलेगा।

अगर तुम पूजा का सामान छेकर मन्दिर में पूजा के लिए जा रहे हो और तुम्हें याद आ जावे कि तुम्हारे किसी भाई को तुमसे कुछ भी दुख पहुँचा है तो उस सामान को वही छोड कर छोट जाओ, पहले जाकर अपने भाई से सुलह करो और फिर

जाकर ईंडवर की पूजा करो । कोई आदमी एक साथ दो मालिको की नौकरी नही कर सकता । या तो एक से नफरत करेगा और दूसरे से प्रेम और या एक की सेवा करेगा और दूसरे से बेपरवाही । तुम परमारमा और 'मैमन' (घन का देवता) दोनो की सेवा एक साथ

नही कर सकते।

# सबका सहयोग चाहिए

कल मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि स्त्रियों को सभा में लाइये। और यह खुशी की वात है कि कुछ स्त्रियां यहां आई हैं। लेकिन इसके आगे जो भी सभा होगी उनमें और भी अधिक तादाद में स्त्रियों को आना चाहिए । ज्ञान सीखने का मीका स्त्रियों को मिलना चाहिए। जो नाहक झगड़े की सभायें होती हैं उनमें स्त्रियां न जायें। और अगर जायें भी तो वहां पर निकम्मी वातें न होने दें, उसे रोकें। लेकिन अगर आज इतनी हिम्मत आपमें नहीं है तो वहां मत जाइये। लेकिन जहां पर ज्ञान सुनने को मिलेगा, जीवन-शृद्धि की तथा जीवन कला की वातें होंगी, जरूर जाना चाहिए। वहां स्त्रियों को सार्वजनिक सेवा के काम में शरीक होना भी वहुत आवश्यक है। बहुत से लोग मानते हैं कि स्त्रियों का काम घर तक ही महदूद है। लेकिन में यह नहीं मानता । स्त्री और पुरुष, दोनों का काम घर में भी है और घर के वाहर भी। हां, घर के काम गहरे होते हैं। वच्चों का रक्षण करना वृनियादी और कठिन काम हैं। और इस के लिए माताओं को अधिक घ्यान देना आवश्यक है। फिर भी उन्हें समाज के कामों में आना चाहिए, नहीं तो आज के जैसा वह काम पुरुषों के ही हाथ में रहेगा। और पुरुषों ने जो राह चलायी है वह खतरनाक है। आज हम देख रहे हैं कि दुनिया में पचीस सालों में दो महायुद्ध हो चुके और आज भी झगड़े और कशमकश चल रही है। कोई नहीं कह सकता कि इसमें से तीसरा महायुद्ध निर्माण होगा। पुरूषों ने जो समाज-रचना वनायी उसमें युद्ध और झगड़े ही निर्मित हुए। वे यशस्वी नहीं हुए और इसलिए स्त्रियों को उस क्षेत्र में आना चाहिए और अपने गुणों का प्रभाव वहां डालना चाहिए। स्त्रियों में दया, क्षमा, शांति और प्रेम इत्यादि गुण होते हैं। इन गुणों की आवश्यकता जिस तरह घर में है उसी तरह समाज में भी है। समाज का काम केवल पुरुषों के हाय सौंपने से ही हो सकता। आज तक हमने ऐसा

किया और नतीजा यह हुआ कि घर में तो प्रेम और शांति रही, लेकिन वाहर झगड़े रहे। अंदर की और वाहर की दुनिया का यह भयानक भेद मिट जायगा, अगर जिस प्रेम के आधार पर कुटुंव की रचना हुई है उसी के आधार पर समाज की हो जाय।

भुदान-यज्ञ के क्या मानी है यह स्त्रियां, पुरुष, वच्चे, वूढ़े सभी समझ सकते हैं। स्त्रियों के तो वह वात सीघे मन में पैठ जाती है। मैं उनसे कहना चाहता. हूं कि आप जिस तरह कुटुंब में रहते हैं, प्रेम से एक दूसरै के साथ व्यवहार करते हैं, घर की कमाई सबकी मान कर उसका सब समान उपभोग करते हैं, वैसे ही समाज में भी होना चाहिए। सारा गांव एक कुटुंब वनना चाहिए। जमीन सवकी होनी चाहिए। हमने यह देखा है कि सुख दूसरों को वांटने से बढ़ता है और दु:ख वांटने से घटता है। हम सुख बढ़ाना और दुख घटाना चाहते हैं और दोनों का इलाज एक ही है—दूसरों के साथ वंटवारा करो। मैं चाहता हूं कि गांव वाले एक-दूसरे के मुख-दुःख में हिस्सा लें। किसी को अपना सुख देने से खुद का घटता नहीं। लेकिन आजकल जो पैसे की माया चल रही है उस पर से ऐसा लगता है कि व्यक्ति अपना पैसा दूसरों को देने से खुद का कुछ नुकसान होता है यह महसूस करता है। इसका कारण यही है कि कुटुंव का न्याय समाज में नहीं चलता । इसलिए उस न्याय को समाज में लाना होगा। तब हर कोई समझेगा कि दूसरे के दुःख में हिस्सा लेने से दुःख कम होता है और अपने मुख में हिस्सा देने से मुख बढ़ता है। यह काम कितने महत्व का है इसको अगर स्त्रियां समझेंगी तो वे जमीन की माया ममता नहीं रखेंगी। और अपने पति से कहेंगी कि वावा को जमीन दे दो! उनको नीति से एक का भला तो होता ही है लेकिन उसके साय दूसरे का बुरा नहीं होता है। इसलिए उनके कहने के अनुसार छठा हिस्सा दे दो। गरीव को जमीन मिलेगी तो वह कृतज्ञ होगा। उसके मन में आपके प्रति

प्रम निर्मित होगा और आपको एन अच्छा मित्र हासिल होगा। अगर निरुषी के पास अवारह एकड अमीन हो और दसमें से वह तीन एकड जमीन दे देता है, तो उत्पत्ते उत्पत्त कुछ विषादता नही। अपने बने हुए एन्ड्रह एकड में यह ज्यादा मेहनत करेगा, जिसमें देव'का उत्पादन बडेगा। उत्प पर परयेवद को हुमा होगी। और विसे वह तीन एकड जमीन मिक्सी वह मी छुती होगा। अपने पास ज्यादा क्सीन होने से हम पूरी तरह से उचकी दिकाजत नहीं कर सकते हैं। इसलिए जमीन नम्म होजाय तो चुल विणवता नहीं, इसलिए छा हिस्सा देना सवना नतेव्य है।

कल ग्रहा पर प्रात के कार्यकर्ताओं की परिपद हुई थी। सारे प्रात से एक सौ पचास कार्यकर्ता आये थे । जन्होने तय किया कि हम सबसे छठा हिस्सा मार्गेगे । इसलिए अब बहनी को अपने पति, भाई और कटको को समझाना चाहिए कि हमारा मोह मत रखना। जमीन देने से गाव का और देश का मला होता है। पुरुष अनसर नहते हैं नि हम जमीन देंगे तो हमारी स्त्रिया क्या कहेंगी और बाल-बच्चो का कैसे पालन-पोषण होगा । इसलिए इस काम को वहनें समझ छे, तो जो प्रेम का वातावरण घर में है वह गाव में भी निर्मित हो सकता है। में बहनो को बहना चाहता ह कि आपकी ग्राममाता बनना चाहिए, तो गाव गोकुल वनेगा। इसी दनिया में बैकुठ का निर्माण होगा। जहा प्रेम होता है वही पर वैक्ट होता है। वह किसी कोने में पडा हजा नहीं रहता। यह कैलास में ही नहीं, हमारे यहाँ भी है। गाद में प्रेम का बाताबरण बने तो सबके जीवन पवित्र हरेंगे और गाव गोकूल होगा। रित्रयो इसको सहज समझ लेंगी । उन्हें यह समझने में कुछ भी कठिनाई नहीं होगी । लेकिन उन्हें सभा में आने ही नहीं दियाँ जाता । पर्दें में कंदी जैसे बद रखा जाता है। नतीजा यह होता हैं कि उनके दिल छोटे वन जाते हैं। दरवसल में उनके दिल छोटे नहीं होते । परतु घर के सकुचित वातावरण में रहने के कारण वे अपने ही बाल-बच्चो का सोचती है। लेकिन जब स्त्रियों के कानों में ज्ञान जायमा तब ऐसी हालत नहीं रहेगी। मैं बहुता हू कि हरेक सभा में

बितने पुरुष आते है उतनी ही स्त्रिया आयें, तो ही समाज में इस पर पूरा विचार होगा । अबूरे विचार से गाडी चलती नहीं। एक जाती है। स्त्री और परप. दोनो साथ-साथ चलने से समाज की गाडी चलती है। दोनों को मोक्ष का समान अधिकार हैं । स्त्रियों को मोक्ष, विद्या, ज्ञान, और वे चाहे तो धन का भी अधिकार होना चाहिए। दोनो को समान अधिकार होना चाहिए. यह बात बास्तो ने भी मानी है। मन ने कहा है कि माता को योग्यता पिता से हजार गुना बढकर है। इसका मतलब यह है कि अगर माताओं से ठीक दग से जान मिलेगा तो सारे समाज की जितनी रक्षा होगी उतनी रक्षा और किसी से होने बाली नहीं है । और इसलिए मनु ने स्तियों के सामने पवित्रता का आदर्श रहा। आज भी हम देल पहे है कि स्त्रियों ने ही समाज में पवित्रता की रक्षा की है। तिलक महाराज ने कहा है कि स्त्रियों ने धर्म की रक्षा की है। हम देखते हैं कि स्त्रिया शराब नहीं पीती । बीडी और सिगरेट से भी उन्हें नकरत है । अगर वे इस तरह का बरा काम करने लगेंगी तो सारा समाज खनम हो जायया । बाजकल समान हक की माग की जाती है। कुछ स्त्रिया कहती है कि हमें भी बीडी-सिगरेट पीने का पुरुषों के जितना ही अधिकार होना चाहिए। मै उनसे नहुगा कि, हा, नरक में जाने का दोनो का परा अधिकार है । पर मैं चाहता ह कि वे ऐसी बुरी बाते न करे। उनका काम तो पुरुषों की नरक में से छुडाना है। में चाहता हू कि हरेक पढी-लिखी स्त्री 'गीता-प्रवचन' पढे तो मेरा काम आसान होगा । स्त्री ज्ञान सपादन करेगी और गीता-माता हरेक घर में बैठ जायगी तो मेरा नाम हो जायगा।

कुछ विवाधियों में मुझसे सवाल पूछा है कि आपके भूवान-यक्ष में हम नित्त वरह से मोग दे सकते हैं। मुझे यह मुक्तर खुनी हुई कि विवाधीं इसमें दिरुवसी ले रहे हैं। कुछ लोग विवाधियों के बारे में निराध हो गए हैं। विभागत वरते हैं कि विवाधीं उटड बन गए है, उनमें नकता नहीं हैं। कुछ हद सक यह बात सही भी हो सकती हैं। केविन कुछ मिठा वर के हिन्दुस्तान का विद्याधीं-

समाज विनयश्रन्य नहीं है। अगर कसूर है तो विद्यार्थियों का नहीं, तालीम का है। सब लोग कहते हैं कि तालीम गलत है। सरदार पटेल तो यह कहते-कहते मर गये कि तालीम खराव है। हमारे डा॰ रावाकृष्णन यही कहते हैं। फिर भी तालीम में कोई बदल नहीं हो रहा है। जब हर शस्स बदलना चाहता है तब बदल क्यों नहीं हो रहा ? क्या तालीम मृत्यु के समान भगवान् के हाथ की चीज है, हमारे वस की वात नहीं है ? ऐसी कोई वात नहीं है। लेकिन हम सोचते नहीं। और सोचते हैं तो आहिसता-आहिसता । ये पड़े-लिखे लोग जितने सुस्त हैं उतने सुस्त देहात के लोग नहीं हैं। वैसे तो कुल मिला-कर हिन्दुस्तान के लोग सुस्त हैं। सब कहते हैं कि नई तालीम होनी चाहिए। पर चलाते हैं पुरानी ही रटन। स्कूलों में बाज भी वही पुराना इतिहास, पुराना भूगोल, पुराना गणित चलता है। जवतक यह नहीं वदलता है तबतक विद्यार्थियों के मन में संतोप नहीं निर्माण हो सकता । विद्यार्थी तो अखवार पढ़ते हैं । दुनिया की सभी वातें वे पढ़ते हैं, जानतें हैं और सुनते हैं। और फिर उनके दिलों में विद्या-ज्ञान प्राप्त करने की स्वाहिश होती है और वे चाहते हैं कि देश की सेवा करें, परन्तू उन्हें सूझता नहीं कि किस तरह सेवा की जाय । क्योंकि उनकी विद्या का देशसेवा से कोई ताल्लुक नहीं है। नतीजा यह होता है कि विद्यार्थी असंतुष्ट हो जाते हैं और फिर उदण्ड वन जाते हैं । लेकिन मैं चाहता हूं कि वे उदण्ड न वनें। मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान के विद्यार्थी अपनी मातृभूमि के लिए अत्यन्त पराक्रम करने के लिए उद्यत हैं। विद्यार्थियों के पास जमीन तो नहीं रहती है। लेकिन मैं चाहता हूं कि वे अध्ययन करें। जमीन का मसला क्या है, अर्थशास्त्र उस वारे में क्या कहता है, इसको वे समझ छें। हमारी वातें तो जान ही लें। लेकिन विरोधी विचारों का भी अध्ययन करें। मैं चाहता हूं कि विद्यार्थी इस विषय का पूरी तरह से अध्ययन करें।

दूसरी वात में यह चाहूंगा कि भूदान-समस्या तव हल होगी जब सारे लोग मेहनत-मजदूरी की आदत डालेंगे। आज विद्यायियों में वह आदत नहीं है। तुलसी- दासजी ने कहा है कि हमको वर्पा, हिम, मारुत, घाम सहन करने की आदत होनी चाहिए। परंतु आज की तालीम ही ऐसी है कि विद्यार्थियों में यह आदत नहीं डाली जाती है। उन्हें सब तरह से महफूज रखा जाता है। यह सारा दोप तव जायगा जव तालीम में बदल होगा। अपनी तालीम में बड़ी भारी कमी यही है। लेकिन फिर भी विद्यार्थी इस वात को समझें और खुद मेहनत करें। अकसर घरों में माताएं या नौकर कपड़े धोते हैं, लेकिन विद्यार्थी को चाहिए कि अपने कपड़े खुद घोएं। मैं चाहता हूं कि वे अपना कमरा खुद साफ करें। और भी पुरुपार्य करना चाहते हैं, तो सूत कातें और अपने लिए कपड़ा वनाएं, भाजी-तरकारी पैदा करें। शरीर को मजबूत बनाना, व्यायाम और खेलकूद की ओर ध्यान देना और ब्रह्मचर्य का पालन करना, जिससे काया, बाचा और मनसा पवित्र रह सकें, यह विद्यार्थियों का काम है। वीस साल तक शरीर बढ़ता है। उसी समय अच्छी आदतें डालनी चाहिएं। विद्यार्थी को नी वर्जे सोना चाहिए और चार वजे उठकर अध्ययन करना चाहिए। लेकिन आजकल उलटा होता है, इसलिए विद्यार्थी दोनों तरफ से खत्म होते हैं। जिसने सुवह का समय खोया वह विद्यार्थी नहीं; प्रतिभा-शून्य, निस्तत्व मनुष्य है। प्रातःकाल में त्वरित विद्या हासिल होती है, इसलिए हमारे पूर्वजों ने भी सिखाया है कि सुवह अध्ययन करो। उससे ताजगी रहती है। रात को सिनेमा देखना विलक्छ गलत है। उससे मन, अांख और नींद, तीनों विगड़ते हैं और स्वप्न आते हैं। रात को सोने के पहले तारिकाओं का दर्शन करना चाहिए। उससे बढ़कर क्या सिनेमा हो सकता है ? इस विशाल आकाश का और तारकाकुंजों का अध्ययन कर, भगवान् का चितन करके सो जायं तो अच्छा होगा। स्कूल में आगे जो काम करना है उसकी सारी तैयारी करनी चाहिए। आप भूदान-यज्ञ में धरीक होना चाहते हों तो इसके पीछे अर्थशास्त्र की जो बात है उसका अघ्ययन करें। गरीर और मन पर अंकुश रखो और ब्रह्मचर्यं का पालन करो। रात को सिनेमा मत देखो। यही में आपसे चाहता हूं। जो बड़े विद्यार्थी होते हैं

#### सबका सहयोग चाहिए : विनोबा

उनको छट्टियो के समय में देहात में जाकर भुदान-यञ्ज मा प्रचार करना चाहिए । मारे विदायीं साफ-सूबरे रहें । घर की सकाई बहनें कर लेती है, इमलिए विद्या-थियों को चाहिए कि वे बाहर की मफाई करें । विद्यार्थी प्रति दिन पद्गह मिनट भी सफाई को दें तो सारा बक्सर शहर आइने जैसा साफ होगा । घर ने अन्दर जैसी सफाई रहनी है बैसी बाहर भी होनी चाहिए । इसील्ए ष्ट्रमुने 'म्बच्छ भागन आन्दोलन' यह राब्द उठाया। म्ब्र्स में अब्दे पालाने हो और विदायीं उसकी मफाई की और ध्यान दें। मेरे मन में विद्यार्थियों के लिए प्रम हैं। मै आज तर कुछ-न-कुछ विद्याभ्यास व रता आ रहा हूं। दनिया का बाम तो चल ही रहा है। लेकिन मेरा ऐसा एक भी दिन नहीं जाता है जबनि मैंने कुछ-न-कुछ अध्ययन न किया हो। इसीलिए मै ताजा ख्ता हु। जड नहीं बनता। विद्यार्थी अगर यह करने तो हिन्दुस्तान की नीव खडी होगी।

अब मैं शहर बाले शिक्षित्रों से मुख बहना चाहता ह। इल मैने स्नाया कि मेरा नाम एव ब्रियादी काम है। हम न सिर्फ भिम का बटवारा करना चाहते हैं, विन्तः रामराज्य प्रस्थापित नरना चाहते हैं। सारे गाँव परिशद और निर्मल बनना चाहते हैं। बाज मुबह में जेल में सोघलिस्ट भाइमो से मिलने गया था । मुझे उनमें मिलकर लुगी हुई, क्योंकि व भी देश की मैवा करने का लगाल रखने हैं। मुझे इस बात का दूख है कि वे एक दिन भी जेल में रहे। उन्हें फीरन छोड़ दैना चाहिए। उससे कुछ भी विगडेगा नहीं। मैने उस निमित्त में सारा जेल देवा और मुझे बारवर्ष हुआ कि चेल में भी कातने और बुनने नी मिल सडी दर दी है। कैदियों को यत्र के सामने लड़ा रह कर काम करना पडता है। वे चोरी करने वहा यहचने हैं। और उनमें में बहुन में ऐसे होते हैं, जो साना न मिलने क नारण चौरी करते हैं। हा, उनमें से मुठ बदमाश भी होते है, जो साना मिलने पर भी बुरे नाम करते है। लेक्नि बहुत से लोग गरीत तबके के होने हैं। वहा जेल में उनको रमने का उद्देश यह है कि उनको वहा पर ऐमा उद्योग भिलावा जाय, विमसे वाहर जाकर वे अपने हुट्ब का पालन-गोपण कर सके। सगर जनको हाय में मून वातना और वुनना सिरातं तो सज्जा होगा। परतु जन्हें ह्यून्ते पर क्या मिलां में नाम मिल हरना हैं? क्या जनने रोजी मिलेगी, ऐसी कोई गारदी हैं? यह मही हो सनता है। इमिल्ए उनको हाम के उद्योग मिलाने जाहिए। केनिन बाजनन्द हम लोगों के दिमाण विचादन के चलने हैं, यह मेरी समस में नहीं आता है। क्या हुन गरीबा को यन बनाकर जनत पामुंत्रों ने जैसा नाम लेना चाहत हैं? या जनती बुद्धि विक्तित हो, वे अपने नाब की मेखा करें, अपनी मंपति बहायें, यह हम चाहते हैं हैं हमारी क्या बन्दना है, इस प्रम् जरा मोवना चाहिए।

में इम तरह सोचता हू तो आज के जेल, विचालय, राज्य-कारोबार व्यापार ये सब हैसे चले. इसकी इसरी भी मुरत हमारे नामने आती है और आजना सब कुछ भट्टा लगता है । अब हम उमक्षो मुधारना चाहने हैं । हम जो कुछ सोबते हैं उस तरह से दूसरे सोचते ही नहीं, ऐसा मेरा कहना नहीं है। लेकिन परिचम मे एक प्रवाह आया है, जिसमें हम सब वह रहे है । मै परिवम का विरोधी नही ह । परिचम की निंदा और पूर्व की स्तृति में नहीं करना चाहता। दोनो में जो अच्छी बाते हैं, उनको में लेना चाहना ह और जो वरी है , उनको छ।इना चाहना ह । उसी तरह मै प्राचीन-नाल की अच्छी बाते. इस नाल की अच्छी बाते. इस देश की अच्छी बाते, बाहर के देख की अच्छी बातें ऐना चाहना ह । लेकिन पश्चिम में आज जो अर्थ-साक्ष्र का विचार चला है और जिसने यहा बालो को भी ममाधान नहीं दिया, क्या हम उसी को यहा लाना चाहते है ? बाज क्सि देश में चैन है ? रशिया, इंग्लैंग्ड, अमेरिका, जर्मनी आदि में कही भी मुख नही है । उनके रास्ते से सुन नहीं मिलता है, लडाइया और बशाति हीं पैदा होती है, यह हम देख रहे हैं । वहां सो अच्छी चीजें रेने में कोई हब नहीं हैं। रेकिन हम दिमाग रख-कर्मोचे और काम करे, यह मैं चाहता हूं। कैदियो नो मिल में उद्योग नही सिमाये जाने । नतीजा यह होता है कि छूटने के बाद मी उनको बाहर की मिलो में

# जीवन-सहित्य: दिसम्बर १९५२

काम न मिलने के कारण चोरी करने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं रह जाता है। वह फिर से चोरी करता है ओर जेल जाता है। यह जो उसका वार-वार पुनर्जन्म होता है, 'पुनरिप जननं, पुनरिप मरणं' चलता है, उस से उसको मुक्ति कैसे मिले, यह हमें सोचना चाहिए। उसे ऐसी विद्या, ऐसी वृद्धि, ऐसी कला, ऐसा हृदय, ऐसे संस्कार वहां मिलें, जिससे कि छुटने के बाद अच्छा नागरिक वन सके। लेकिन आजकल तो हम चाहते हैं कि हमारे घर की रोटी भी फैक्टरी में बननी चाहिए। इसलिए भाइयो, जरा सोचो तो कि हम किघर जा रहे हैं। यमा हम ऐसे घर बनाना चाहते हैं, जिसमें हरेक घर के साथ कुछ जमीन हो, जिस पर उस कुट्ंब के लोग मेहनत मुशक्कत कर कुछ फल, तरकारी वगैरा पैदा कर सकें और प्रेम से रह सकें ? या हम देहातों को मिटा कर वड़े-वड़े शहर बनाना चाहते हैं, जिसमें कल-पूर्जी के कारखाने हों और सबका खाना एक जगह हो। सब एक ही कारखाने में काम करें यह हम चाहते है। अगर इस तरह की हमारी वृत्ति है तो मै कहता हूं कि यह विलकुल गलत है। हमें अपने गांव की रचना हमारी संस्कृति के आचार पर लेकिन आधुनिक विज्ञान का सहारा लेकर करनी है। कुछ लोग कहते है कि मै विज्ञान के खिलाफ हूं। यह विलकुल गलत वात है। मैं तो विज्ञान का प्रेमी हूं। लेकिन आजकल विज्ञान का एक ऐसा ढंग हो गया है कि उसके बारे में गलत तरीके से सोचा जाता है। विज्ञान तो ज्ञान का एक अंग है। आत्म-ज्ञान और विज्ञान मिलकर ज्ञान हो जाता है। और आत्म-ज्ञान का विज्ञान से याने सृष्टि के ज्ञान से निकट का सम्बन्ध है। दोनों साथ-साथ बढ़ते हैं। मुझे अपने ग्रामों में जो मिक्खयां है, जो मच्छर हैं, जो रोग है उन सबको हटाना है, तो कीन हटायेगा ? विज्ञान ही हटा सकता है। विज्ञान तो आपका दास है, बंदा है। आप चाहें तो वह एटम बम्ब बना देगा और चाहें तो अच्छी अच्छी दवाइयां और आपरेशन के साधन बनायेगा। वह सूख के साधन निर्माण कर सकता है, और दुख के साधन भी । वह हमारे लिए जीवन का इंतजाम कर सकता है, और मृत्यु का भी इंतजाम कर सकता है। वह तो शक्ति है। हम चाहे जैसा उसका उपयोग कर सकते है। मैं अधिक से अधिक विज्ञान चाहता हूं। और इसलिए अहिंसा की बात करता हूं। विज्ञान के साथ हिंसा आ जाय तो दुनिया का खातमा होगा। इसीलिए विज्ञान के साथ अहिंसा का आग्रह रखना आवश्यक है। उससे हम गांव को बैकुंठ बना सकते हैं। विज्ञान के आधार पर हमें नये गांव, नये घर बनाना है। हम विज्ञान की मदद लेना चाहते हैं, लेकिन हमारे ढंग से । हमारी समाज-रचना कैसी हो यह विज्ञान नहीं तय करेगा, समाज-शास्त्र तय करेगा । विज्ञान जीवन को आकार दे सकता है, परंतू जीवन का प्रकार क्या हो, यह नहीं कह सकता । यह तो आत्मज्ञान ही बता सकता है।

0

जव तुम दूसरों के साथ वातचीत करो तव अपने चारों ओर सजीव उपस्थित और संरक्षण को वनाये रखने के लिए वरावर सावधान रही और जितना कम वोलना सम्भव हो उतना कम वोलो।

-श्री मां

### त्र्यजातरात्रु राजेन्द्रवाव्

"बाब्जी, 'जीवन-साहित्य' ना एन विशेषाक निकाल रहे हैं। एक लेख दे दीजिये।"

"आप देख ही रहे हैं। मुझे अवनाश कहा है ?"

"जी, छोटा-मा ही दे दीजिये।"

"बन्ता, कल संबेरे वा जाइये।"

सबेरे पहुचातो पूजा कर रहे थे। पाच मिनट में समाप्त करके कातना आरम्भ करते हुए बोले, "आप लिख लेवे ?"

"जी हा।"

"अच्छा, लिखिये।"

लेख लिखा दिया । मैंने कहा, "पढकर सुना दू?" "नहीं जी, आप देख सीजिये। वहीं भाषा ठीक बरनी हो तो कर-करा लीजिये।" ,

× की पुस्तक आपने पूरी पढी है ?" "वावूजी, "नहीं।"

"उसकी भूमिका तो आपने ही लिखी है।" हा, लेखक ने कुछ अश पढकर सुनाये थे।"

"पुस्तक बहुन अच्छी नहीं है। उसके कुछ स्थल तो बहुन ही असस्कृत है।"

"हा, मैंने सुना हैं। लेखक पीछे पड गये। मुझे

लिखना पडा। गलती हो गई।"

"बाबुजी, 'मण्डल' की जयती कर रहे हैं। आपका सदेश चाहिए। उमी अवसर पर 'जीवन-साहित्य' ना विशे-पाक भी निकाल रहे हैं। उसके लिये एक लेख।"

घनी मूटों के नीचे होटो पर हल्की मुस्कराहट खेल गई। बोले "सदेश भी चाहिए और लेख भी ?"

"दोना मिल सके तो बड़ी कृपा हो। पर लेख देर से भी मिल जायगा तो चल जायगा। सदेश जल्दी चाहिए।" "ठीव है, सदेश परसो भेज दूगा। लेख वे लिए बाद में याद दिला दीजिएगा ("

में कुछ चिम है उस महापुरेप के, जो आज मारत के

सर्वोच्च पद पर बासीन हैं, हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्रवाव ने । बामनाज में घिरे रहते हैं, मलानाती आते हैं, इघर-उघर जाना-जाना पड़ना है. ऊपर से दमा समय-समय पर हैरान करता रहता है , पर क्या मजाल कि राजेन्द्र बाब किसी भी छोटे-बडे अच्छे काम के लिए इन्कार कर सके । 'हा'कर लेना प्रायः आसान होता है, पर निमाना कठित । नेविन राजेन्द्रवाब है कि जिसके लिये 'हा' बरेगे, उमे पूरा अवस्य कर देंगे।

लम्बा क्ट. श्यामल वर्ण, योडा भारी हारीर, अव्यव-स्थित महाँ, सिरपर छोटे-छोटे नाले-सफेद खिनडी बाल. जिनपर खेत सादी भी गाधी टोपी, आसे उभरी, उजन ललाट, देह पर (घर में हो तो), घोती-दूरता-वडी, (बाहर) घेरवानी चुडीदार पाजामा ।

—यह है राजेन्द्रवावृक्षी बाह्य आष्ट्रति और वेश-भूषा । चेहरे से सरलता टपक्ती है और वाणी से मुद्रता शरतो है ।

बाज के प्रतिस्पर्धी से भरे युग में ऐसे व्यक्ति मिलना कठित है जो पद, गौरव और प्रतिष्ठा नो महत्व न देकर सेवा के लिए समर्पित हा । राजद्रवाक उन्ही विरल महा-पुरपो में से हैं। आज वह भारत के सबसे ऊचे पद पर वासीन हैं ---ऐने पद पर, जहां बैठकर कोई भी मद-मस हो सकता है लेकिन राजेंद्रवाय के लिए पद चिक मह-त्वाकाक्षा की पूर्ति का साधन नहीं है, वह वहा बैठ कर भी, वैसे ही सेवापरायण है जैसे कि पहले ये । इन पविनयों के लेखक को उन्हें कई पदोषर काम करते देखने का सीमाग्य प्राप्त हुआ है-स्वाधीनता सम्राम के एक बीर नेनानी के रूप में, एवा महान राष्ट्रीय नेता के रूप में, शादमन्त्री के रूप में,विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में, गांधी स्नारक-निधि के अध्यक्ष के रूप में और अब राज्यानि के रूप मे. लेकिन एक भी ऐसा अवसर याद नहीं आता. जब कि राजेंद्र बावू ने किसी भी पद के लिए मोह प्रदर्शित किया हो, अथवा वहा बैठ कर दभ प्रकट किया हो । "प्रमृता पाइ नाहि मद नाहि" मत तुलसीदाम की इस उक्ति का यदि वही अपवाद मिलता है, वो राजेंद्रवावू में । राष्ट्रपति

का पद कुछ इतना ऊंचा है और राष्ट्रपित भवन का वायु-मंडल कुछ इतना आडम्बरयुक्त है कि सामान्य व्यक्ति तो वहां पहुंचते-पहुंचते घवरा जाता है, लेकिन जहां आप राजेंद्रवावू के सामने पहुंचेंगे, उनकी सरलता, निश्छलता और स्वाभाविक आत्मीयता से आपकी घवराहट क्षण भर में दूर हो जायगी।

अपने जिन गुणों के कारण वह इतने लोकप्रिय हैं, वे हैं उनकी विनम्नता, निरिभमानता, और प्रामाणिकता। आयु में अपने से कहीं छोटे व्यक्तियों को मैंने उन्हें कई बार 'श्रद्धेय' अथवा 'आदरणीय' लिख कर संबोधित करते देखा है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी यह विन-म्नता और श्रद्धा उनके लिए मात्र शिष्टाचार की वस्तु नहीं है, उनके स्वभाव का एक अंग है।

वह विद्वान् हैं लेकिन अपनी विद्वत्ता को वह दूसरों पर लादने का कभी प्रयत्न नहीं करते। आज के अनेक 'तथाकथित' विद्वानों की भांति शब्दों का आडम्बर उन्हें प्रिय नहीं। जो कुछ उन्हें कहना होता है, सरल, सुबोध और स्पष्ट भाषा में कह देते हैं। भाषा उनके लिए चम-त्कार की चीज नहीं है, भावों की वाहिनी है। उनकी रच-नाओं को पढ़ लीजिये, उनके भाषणों को सुन लीजिए, बातचीत में देख लीजिये, उनके विचारों में कहीं भी उलझन नहीं मिलेगी। इतने सुलझे विचार, इतनी स्पष्ट भाषा और इतने उत्कृष्ट भाव, बहुत कम लोगों में मिलेंगे।

अधिकांश नेता अपने विचारों की दृढ़ता अथवा दूसरों की मान्यताओं के प्रति अनुदार दृष्टि रखने के कारण अनेक विरोधी पैदा कर लेते हैं। बहुत से अवसरों पर विरोध शत्रुता का रूप ग्रहण कर लेता पाया जाता है। लेकिन राजेंद्रवावू में इतनी समन्वय-बृद्धि और दूसरे के विचारों के प्रति इतनी उदारता और सहिष्णुता है कि उन्हें एक प्रकार से 'अजातशत्रु' कहा जा सकता है।

लोगों की शिकायत है कि वह ढीले ढाले हैं, अपनी वात को बहुत दृढ़ता से नहीं कहते। और देशव्यापी अना--चारपूर्ण वायुमंडल को वदलने के लिए जोर नहीं लगाते । लोगों की इस शिकायत में सचाई हो सकती हैं और हैं; लेकिन हम लोग प्रायः भूल जाते हैं कि दीर्घकालीन संस्कार और परम्पराओं को तोड़ना आसान नहीं होता। जब कभी अवसर आता है, राजेंद्रवादू अपनी बात कहने से नहीं चूकते, लेकिन बुराई की जड़ जहां गहरी होती है, वहां एक व्यक्ति के कहने अथवा एक दिन के प्रयास से सुधार नहीं हो जाता।

राजेंद्रवावू गांधीजी के निष्ठावान अनुयायियों में से हैं। भले ही वह विवरणों में वहुत गहरे न उतरें या दृढ़ता न दिखावें; परन्तु जहां तक मूल मान्यताओं का सम्बन्ध है, वह चट्टान की तरह अडिग हैं।

उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। प्रथम श्रेणी के राजनेता तो वह हैं ही, उच्चकोटि के साहित्यकार भी हैं। और चूंकि प्रामाणिकता उनकी विशेपता है, अतः जो भी काम हाथ में लेते हैं, बहुत ही दक्षतापूर्वक करते हैं। अबतक जितने पदों पर उन्होंने कार्य किया है, परिस्थितियों के दवाव अथवा अन्य कारणों से भले ही उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त न हुई हो, लेकिन अपने प्रयत्न में उन्होंने कभी शैथिल्य नहीं दिखाया है और काम को आगे बढ़ाया है।

सेवा के लिए इतना निष्ठापूर्ण समर्पण बहुत कम लोगों में मिलता है। दमे की बीमारी और आयु का तकाजा है कि वह विश्वाम करें; लेकिन सेवा के लिए जब उनकी आवश्यकता है तो बीमारी का निमित्त या आयु का सहारा लेकर वह पीछे कैसे रह सकते हैं। जबतक शरीर चलता है, सेवा की पुकार को अनसुनी करना उन के स्वयं के वश की बात नहीं है।

वड़े दुर्भाग्य की वात है कि हमारी पुरानी पीड़ी धीरे-धीरे तिरोहित होती जा रही है। पर यह निश्चय ही हमारा परम सीभाग्य हैं कि राजेंद्रवावू हमारे बीच विद्यमान हैं। भगवान् से हम सबकी प्रार्थना है कि हमारे 'वाबूजी' अभी बहुत वर्ष तक हम सबके बीच बने रहें और हमारा मार्ग दर्शन करते रहें।

### कोघ आदि वृत्तियों पर विजय कैसे ?

( गतांक से आगे )

साधारण जीवन में छोग नाम, कोघ, छोभ, वासना आदि को स्वाभाविक, क्षतव्य एव उचित चीजे समझते है और उन्हें मानव प्रकृति का अग मानते हैं। बहा तक समाज इन्हे अनुरसाहित करता है अथवा इन्हे निश्चित सीमाओं के भीतर या जिंवत सबम वा सर्वादा के अधीन प्राने का आग्रह करता है वही तक लोग इन्हें सदाचार के सामाजिक मान या व्यवहार के नियम के अनुसार बदा में रखने का बतन करते हैं। इसके विपरीत, यहा तथा सब प्रकार के आध्यात्मिक जीवन में इन चीजो पर विजय तथा पूर्ण प्रमुख की माम की जाती है। यही कारण है कि यहां सघयं अति तीव अनभत होता है, इसलिए नहीं कि ये चीजें साधारण मनप्यों की अपेक्षा साधको में अधिक प्रवल रूप में चठती है वरन इसलिए कि आध्यात्मिक मन तथा प्राणिक चेप्टाओं में उत्कट सूचर्यं चलता है--आध्यारिमक मन सबम की भाग करता है और प्राणिक चेच्टायें विद्रोह गरती है तथा नये जीवन में भी पन उसी तरह बने रहना चाहसी है जिस तरह वे पराने जीवन में थी। यह जो धारणा है कि साघना इस प्रकार की चीजें उभाडती है इसमें सत्य इतना ही है कि एक तो साधारण मनुष्य में ऐसी बहुत सी बाते हैं जिनसे वह सजेतन नहीं हैं बयोंकि प्राण उन्हें मन से छिपाये रखकर तुप्त करता रहता है जबकि मन समझ ही नहीं पाता कि वह कौन सी शक्ति है जो इस कार्य को प्रेरित कर रही है। इस प्रकार, जो चीज परार्थ, परीपकार एव सेवा के निभित्त की जाती है वे अधिकतर अहरार से परिचरित होती हैं। इन वहानों के पीछे अहकार छिपा ही रहता है। योग में गुप्त प्रेरक की पर्दें के पीछे से बाहर प्रशास में लाना तथा उससे छटकारा पाना होता है। दूसरे साधारण जीवन में कुछ चीजें दवा दी जाती है, वे प्रकृति में ही दवी पड़ी रहती है पर नष्ट नहीं हुई होती। वे किसी भी दिन उमर सकती हैं अयवा वे अपने को मन या प्राण या शरीर के नाना-

स्पानीय रूपो या अन्य गडवांडयो में प्रकट कर सकती है जबकि इस बात का स्पष्ट पता नहीं जलता कि उनका असकी कारण क्या है। यह तथ्य मूरोपीय मानोंडगोनिको में अभी हाल में इद निकाला है और मानोंडशोनिको नोमक नये जिलान में इस पर बहुत वक दिया है, यहा तक कि इसका अस्पिक बडा चडा कर दर्णन किया है। यहा भी, छाभना में मनुष्य की हम इसी मृद्यायों से सचेतन होकर उन्हें निकाल फैक्सा होता है। इसे उमाहना कह करते हैं परन्तु इसका यह अर्थ मही कि इन्हें कार्यक्य में उमादना है बहिल केवल चेतना के छामने हा बकत करना है साकि अपनी सत्ता से से उनकी स्वामक की बा करें।

यह जो बात है कि कुछ लोग अपने की बदा में करने में समयं होते है और दूसरे वहा लिए जाते है। इसका कारण है स्वभाव-स्वभाव में भेद । कुछ लोग सास्थिक स्वभाव के होते हैं। और उनके लिए, कम से कम कुछ हद तक . सयम करना सुगम होता है। इसरे अधिक राजसिक होते हैं और सयम को कठिन तथा प्राय असभव अनभव करते है। कहयों का मन एवं सकल्प सबल होता है और दूसरे प्राण-प्रधान मनुष्य होते है जिनमें प्राणिक आवेग अधिक प्रवल होते है तथा अधिक कपर आये होते हैं। कुछ लोग सयम की आवश्यक नहीं समझते और अपने आपको खुला छोड देते हैं । साधना में बानसिक या नैतिक सवम के स्थान पर आध्यारिमक प्रभत्व स्थापित करना होता है । कारण, मानसिक सयम केवल आशिक होता है, वह हमें नियत्रित ही करता है न कि स्वतन एवं मुक्त । ऐसा सो केवल आन्तरात्मिक एव आध्यात्मिक सबस ही कर सकता है। इस विषय में साधारण तथा आध्यात्मिक जीवन में मुख्य भद यही है।

यौगिक, मनोमौतिक आदि आदि दृष्टियो से आक्षात्राय, हृदय और आतो में स्पूल चेतना का नही चरन प्राणिक चेप्टाओ का निवास है। यही पर प्राणी

# जीवन-साहित्य: दिसम्वर १९५२

के कोध, भय, प्रम, घृणा तथा उसकी अन्य सब मनो-वैज्ञानिक विशिष्टतायें उछलकूद मचाती हैं तथा शरीर और मन की पाचनशक्ति में गड़वड़ी पैदा कर देती है।

कोच के कारण आत्मा तमसाच्छन्न हो जाती है, विद्ध और इच्छा अक्ति शांत साक्षी आत्मा को देखना तथा उसमें स्थित होना भूल जाती है, मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप की स्मृति से भ्रण्ट हो जाता है। इस पतन से इच्छाशक्ति भी विमूह, यहां तक कि नष्ट हो जाती है। कारण, कुछ समय के लिए, हमारी निज स्मृति में इसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। यह कोच के वादल से उक जाती है। हम कोच, आवेश एवं शोक ही बन जाते हैं। और आत्मा, बुद्धि तथा इच्छाशक्ति नहीं रहनी।

वस करने की एक बात यही है कि इन प्रवृत्तियों से अपने को अलग कर लिया जाय, अपने आन्तर आत्मा को खोज निकाला जाय, उसीमें निवास किया जाय। फिर ऐसा कभी नहीं मालूम होगा कि ये सब वृत्तियां अपनी हैं, विल्क ऐसा मालूम होगा कि वाहरी प्रकृति ने आंतर आत्मा या पुरुष के ऊपर उन्हें ऊपर ही ऊपर से आरोपित कर दिया है। उस समय वड़ी आसानी से उनका त्याग किया जा सकता है या उन्हें नष्ट किया जा सकता है।

अगर तुम अपनी प्राणगत वृत्तियों पर सच्चा प्रभुत्व प्राप्त करना चाहते हो और उन्हें हपांतरित करना चाहते हो तो यह केवल तभी हो सकता है, यि तुम्हारा हृदय हृत्पुष्प. तुम्हारी अन्तरात्मा पूर्ण हप से जाग जाय, अपना राज्य स्थापित कर ले और तुम्हारी सारी सत्ता को शक्ति के स्थायी स्पर्श की ओर खोलकर अपनी स्वाभाविक विशुद्ध भिवत, अनन्य अभीप्सा और सभी भागवत वस्तुओं के प्रति होने वाले अपने अखण्ड एकनिष्ठ आवेग को तुम्हारे मन हृदय और प्राण प्रकृति पर स्थापित कर दे। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई पथ नहीं है और किसी अधिक सुगम मार्ग के लिए छटपटान से कोई लाभ नहीं। नान्यः पन्या विद्यते अयनाय। (अदिति कार्यालय के सीजन्य से)

### खलील जिव्रान 🕸

कल ही की वात है, कि मैं शहर के हो-हुल्लड़ से घवराकर खामोश खेतों की तरफ निकल गया और एक ऐसे ऊंचे पर्वत के पास पहुंच गया, जहां प्रकृति ने अत्यन्त उदारता से अपनी देन वखेर रखी थी।

में पर्वत पर चढ़ा और झुककर शहर को देखा। शहर अपने समस्त मीनारों और मन्दिरों सहित उस घूएं के घने बादलों से ढका हुआ था, जो शहर की भट्टियों और कारखानों से उठ रहा था।

में बैठ गया और सोचने लगा । मुझे आदिमियों के उद्योगयंथों का विचार आया । मुझे ऐसा अनुभव हुआ, कि उनकी यह सारी दौड़-धूप निर्थंक और निष्फल है।

मैंने अपना घ्यान मानवजाति के इन दौड़-बूप के क्षेत्रों से हटा लिया और उन खेतों पर एक दृष्टि डाली, जो ईश्वर की प्रतिष्ठा और तेज के फर्स हैं।

# कत्रिस्तान

इन खेतों में मुझे एक कविस्तान दिखाई दिया। उसमें संगमरमर की सुन्दर लेख-शिलाएं गड़ी थीं। और सहके ऊंचे-ऊंचे वृक्ष उगे हुए थे।

में जीवित मनुष्यों की वस्ती और कब्रिस्तान के वीच वैठा जीवन के अनंत संघर्ष, समाप्त न होनेवाले हो-हुल्लड़, विस्तृत खामोशी और मृत्यु की अनंत कठोरता पर विचार कर रहा था।

मुझे एक तरफ आशा और निराशा, प्रेम और घृणा, घनाद्यता और दिश्वता, और दिश्वास और अविश्वास दिखाई दिये और दूसरी तरफ मैंने मिट्टी को उस मिट्टी में मिले देखा, जिससे प्रकृति रात की गहरी खामोशी में बढ़ने और उन्नति करनेवाले हरे-भरे और रंगीन पौदे पैदा करती है।

जब मैं इस तरह से सोच विचार कर रहा था, तो एक बहुत बढ़ा जनसमूह घीरे घीरे चलता हुआ मेरी आखी के सामने आया और मैने एक ऐसा गीत मुना, जो आलोक में एक शिविष्णा उत्पन्न कर रहा था। जो शिवासों में सामने से वड़े और छोटे इसालों की भीड़ गुकरी। मनुष्प एक अरबी वा अनुक्श कर रहे थे। और रोते जिल्लाते हुए अपनी अपनी परिवाद, विलाप और कदन से आलोज को भर रहे थे। इस तरह वे नश्र तक पहुंच गये। बहु। पार्टीयों में इसके लिए

व वय तह पहुच नाय । वहा पादारया नृहक्त । लए प्राचैना की और घूर सादि जलाई । वालेवाओ ने अत्यत हुलजनक ध्वितयों में शोक के गीत गाये । सुवक्ताओं के कडे होकर वडे-जबे शब्दों में प्रवस्तापूर्ण मायण दिए और कवियों ने शोक और दुलभरों कविताए पढी । इस महार्र यह गदान समाप्त हो गया ।

फिर जब वह भीड़ कौट कर गई, तो मुझे इस स्थान पर एक शानदार लेखािवता दिखाई दी, जिसे कलाकारों ने बडी हुस्तलता से तैवार विया था और तिस पर अनगीनत फूल मालाए और गजरे पढे थे, जिन्हे नितृपा सालियों ने बनाया था।

क्षन में जनसमूह शहर में वापिस पहुन गया और मैं उन्हें दूर से देखता हुमा गहरे विचारों में दूव गया। इस वन्त मुर्च धीरे-धीरे परिचम में हव रहा था।

इस वन्त मून घार-घार पारचम म डूब रहा था। चट्टानो और वृक्षो की परछाइया लम्बी हो रही बी और वे प्रकाश की जावर को उतार रहे थे।

इस बस्त मेंने जाल उठा कर देखा, तो मुझे दो आदमी दिलाई दिये, जिन्होंने अपने कघी पर साधारण सी अपनी उठाई हुई यो और उनके पीछे एक स्थी कटे-पुराने कपडे पहने चली आ रही थी। उतकी छाती एक बाकक चित्रचा हुआ था और पान के पास एक कृता था, जो कभी स्त्री और कभी अरथी की तरक कृता था, जो कभी स्त्री और कभी अरथी की तरक देख रहा या।

इस निर्धन मनुष्य की अरथी के साथ वस इतने ही लोग वे ।

स्त्री ने खामोज्ञ आसू उसके हृदय के दुख और शोक की साक्षी दे रहे थे।

वालक केवल इसलिए चिल्ला रहा था, कि उसकी मारो रही थी। और एक स्वामीमक्त कुत्ता खामोशी और उदासी की हालत में पीछे-पीछे जा रहा था।

जब ये लोग गबिस्तान में पहने, तो दूर एक ऐसे जलन कोने में एक गढ़े में इस लाश को दफ्त विया गया को सगमरमर की बन्नो से बहुत दूर या। फिर वे अस्यन्त सामोशी और उदासी के साम वापिस लीटे!

कुत्ते की दुष्टि बार-बार अपने स्वामी के अितम विद्याम-स्वल की तरफ लौट-लौट जाती थी। जत में वे सब बुको की ओट में आखो से ओकल हो गये।

यह देखनर भैने अपनी दृष्टि शहर को तरफ उठाई और कहा, "यह सब घनवानी और शक्ति-शाकी लोगी के लिए हैं।"

और फिर मैंने कदिस्तान की सरफ मुद्द करते हुए कहा, "और यह भी धनवानो और घक्तिशाली लोगो ही के लिए हैं।"

मेंने जिल्ला कर पूछा, "परमात्मा । बता तेरे दुर्वल और निर्वन कन कहा जाए ?"

मैने यह कहकर आकाश की तरफ दृष्टि उठाकर देला, जो बूबते हुए सूरज की मुनहरी किरणों से घोमाय-बान हो रहा था। अब मुझे अपने अतरण से यह आवाज सुनाई दी, "उनका विभाग स्थान महा है, यहा।"

अन् ०--- माईदयाल जैन

क्या आप जिस प्रकार प्रतिदिन खाते पीते हैं उसी प्रकार पढ़ते जिखते भी हैं ? मन और मस्तिष्क को पुष्ट करने के लिए अच्छे ग्रंथ खरीद कर पढ़िए और याद रिलये कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है।

# हमारी लोक-कथाएं

लोककयाओं का जन्म कब हुआ, इसका कोई स्पष्ट इतिहास नहीं मिलता, लेकिन अनुमान किया जा सकता है कि जबसे सृष्टि का आरम्भ हुआ और एक दूसरे के भावों को समझने के लिए भाषा का माध्यम शुरू हुआ तभी से लोककयाओं का भी जन्म हुआ होगा। मनुष्य की प्रवृत्ति कुछ ऐसी होती है कि उसे दूसरे के बारे में कौनूहलपूर्ण बातें कहने और सुनने में बड़ा आनन्द आता है और उसी प्रवृत्ति की तृष्टि के लिए लोककयाओं की सृष्टि हुई होगी।

लोककयाओं का प्रचलन नगरों की अपेक्षा गावों में अविक है। इसका कारण यह है कि नगरों में कंच-नीच, अमीर-गरीव, पढ़े-वेपढ़े आदि का बहुत भेदमाव रखा जाता है। यहर का मेहतर एक-दो वरस के बच्चे के लिए भी 'भंगी' ही रहता है, लेकिन गांव में वह किसी का चाचा है तो किसी का ताऊ, किसी का दाडा है तो किसी का बाबा। गांव में न सिनेमाबर हैं न नाट्य-गृह, न नाचघर । पर उनके मनोरंजन का कोई साबन तो होना ही चाहिए। आइये, अब जरा मुखिया की चौपाल पर चलें। देखिये तो अधियाने के चारों ओर कैसे मस्त होकर सब कहानी मुन रहे हैं। छंगु धोबी कहानी कह रहा है और पंडित, नाई, कुम्हार, जमींदार सब आग तापते हुए कहानी मून रहे हैं। अरे, यह क्या ! यह चिलम तो अभी ठाकुर माहब के हक्के पर रखी थी, इसी की पंटिनजी ने पीना शुरू कर दिया। पंडितजी से वह देखो, रम्मू नाई के पास पहुंच गई। अरे, वह तो खिसकती ही जा रही है। हां, यह शहर नहीं है, जहां बादमी पड़ीमी को भी नहीं जानता । यहां तो सब सगे-सम्बन्धी हैं। फिर सब मिलकर बैठे हैं। तो इसमें आश्चर्य की बया बात है।

कहानी चाहे कितनी भी रोचक क्यों न हो फिर भी उनकी रोचकना अधिकांशतः कहने बाले पर निर्भर करती है। भाषा एक तरह की होने पर भी कहने का ढंग अपना-अपना निराला होता है। भाव-प्रदर्शन के विना कहानी का रस आधा रह जाता है। जरा देखिए, इस घोवी को, कभी हाथ मटकाता है तो कभी आंखें; कभी नाक सिकोड़ने लगता है तो कभी जोश में आकर आधा उठ बैठता है, और कभी डंडा इस तरह उठाता है जैसे किसी को मार ही बैठेगा। कहानी कहते समय यह सब करना आवश्यक है। यह क्या? अघियाने पर बैठे सब लोग हंगी के मारे लोट पोट हुए जा रहे हैं। कहीं कोई जल न जाय! यही है गांव के कहानी कहने के अड्डे का दृश्य।

अगर कहानी आकर्षक ढंग से कही जाय तो श्रोता यही चाहते हैं कि वह द्रीपदी के चीर की भांति बढ़ती ही चली जाय और वे मंत्र-मुग्ब होकर मुनते रहें। वे उस समय यह भूल जाते हैं कि लकड़ी का उटनखटोला, महादेव-पावंती का पिड़किया से राजकुमारी बना देना, इंद्र के घोड़ों का बाग नष्ट कर जाना आदि बातें क्या कभी संभव हो सकती हैं! ये कहानियां तर्क से परे हैं।

कहानी कहने वाला किसी भी जाति का क्यों न हो, गांव में आदर और प्रेम का पात्र वन जाता है। ये लोक कथायं इतनी सरस हैं और इतने आकर्षक हाय-भाव के साथ कही जाती हैं कि कोई विद्वान भी उस वातावरण में पहुंच जाय तो आनन्दित हुए विना नहीं रह सकता, बच्चों की तो बात ही क्या है। एक आदमी कहानी कहता है। सब मुनते हैं। एक हुंकारा देता जाता है। हुंकारे के बिना न कहने वाले को मजा आता है, न मुननेवाले को। लोक-कथाओं में निम्नलिकित गुण अवस्य पाये जाते हैं:

 रोचकता २. कौतूहल, ३. कहीं-कहीं पर अल्डोकिकता तथा ४. लोक-जीवन का चित्रण

इनमें रोचकना और कोतूहर, ये दो गृण मुख्य है। इनके विना न कहानी आगे बढ़ सकती है, न मुनने वालों को मोह सकती है।

लोक-कवाओं की अति प्राचीन परस्पराओं का

महत्व अव कुछ कम होना जा रहा है, फिर भी शायद ही नोई ऐसा जनपद होगा, जिसकी अपनी लोकक्षाए न हो । जबतक लोकजीवन है लोक-क्याओ की महत्ता नष्ट नहीं हो सनती । हमारे छोतजीवन में छोकसाहित्य खुद पनना है। एक समय था जबकि यातायात की मुविधाए नहीं थीं और लोग दूर-दूर की बाताए बहत कम कर पाते थे । उस समय भी इन लोव-कवाओं की यात्रा रुकी नहीं थी। वे निरतर एक जगह से दमरी जगह घमती रहती थी। लेकिन अब जब कि बाजा की इतनी सुविचाए हो गई है, ये वहानिया भी वडी तेजी के साथ भ्रमण करती रहती है। अतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान तथा रेडियो ने तो यह भी मभव वर दिया है कि यहा की कहानिया विदेशों में भी सुनी जा सकती है। इन्हीं सब सुविधाओं का पल यह है कि जो कहानिया हमें इज में सुनने को मिली है, वे बदेललड, बगाल, और पहाडी इलाको में भी प्रचलित है। रूप में योडा-बहत परिवर्तन हो सकता है। जब हम अनेव विदेशी लोक-कयाओं का अध्ययन करते हैं तो अनेव ऐसी वहानिया मिलती है जो हमारी भारतीय कहानियों का ही परि-वर्तित रूप है। इन क्हानियों का आरम्भ प्राय इस प्रकार होता है : एक राजा था। यह नहीं बताया जाता कि वह कहीं राज्य करता या और कव करता या? इसलिए ये कहानिया व्यक्ति, देश और काल की परिधि में नहीं दथ सकती।

मैंने कुछ बहानिया बुदेलबढ़ में मुनी थी। बही कहानिया योडे-बहुन उकटकरें में काब हमारे बन में भी नहीं जाती है और वे ही बहानिया मैंने कुछ बदल-बदल के साम अल्मोडा और नैनीताल में पहादियों से भी मुनी है। यह कोई आदयमें नीताल में पहादियों से भी मुनी है। यह कोई आदयमें नी बात नहीं, व्यॉकि बड़ छोनों में आपस में इतना सम्पर्क हैं वो नहानियों पर भी इसका प्रभाव पर्वे दिना नहीं पर सनना। नहीं-नहीं पर देवक साथा ना ही अनर है। श्री विववहांन चतुर्वेश मी 'जानपीड़े' नामर व्येच्पड़ी बहानी में रानी मी सीहा सा नाम "निदिया" है। वह हार पूरा केती है। एक कोरों का सामाद दो-चार जाती हुई बाते बता देता है और पास में मद जानपाड़ के नाम से मयहर हो जाता

हैं। राजा उसे एकड़ बुख्याता है और कहता है कि यदि वह हार ना पता न बता सका तो दूसरे दिन उसकी गर्दन करवा दो जायगी। वेषैनी के मारे कोरी को मीद नहीं आती। वह वहना है—"आजारी निदिया, तेरी मीर करेगी पिथिया।"

स्तीर ने देश ना सम्वाना करना है

"आजारी निर्दारण, तेरी भीर करनी मुठसिया "
बुदेललड़ी दायी का नाम "निदिया" है और कल
की कहानी की दासी का नाम "निदिया" है और कल
की कहानी की दासी का नाम "निदिया" । दोनो का
एक ही अर्थ है नीद । वह ने चारी गर्दन करने के दर
से हार का पाना के की बता जाती है और इस
अवार कीरी राजा से बहुत सा हनाम पाता है। इससे
लगा है कि ये कहानिया लग्ने बीच कीई दीवार

अलड और अविरक्त गति से प्रवादित होती रहती है।
जीता मेंने उपर बहुत हैं हुछ बहुतियों की घटनार्ये अस्वामादिक में जान पड़ती हैं, लिनिन लोकबचाओं की निर्वापता स्वार्थता नहीं हैं विकि मनोरकन
हैं। जैसे एक 'पतिबना' नामक बहुनी में पतिबता क्षी
अपने पति के शब को पड़ा छोडकर जीर हमोटन बैठ
जाती हैं। मह सस्मान-सी बात लगती हैं, लेकिन महि
बहु ऐसा न करे तो बहुती आने करेसे बड़े। 'क्ष्मुती में
उसके बाद ही आनन्य आता हैं।

स्वीकार नहीं करती और नदी की निर्मल घारा की भाति

हवी प्रकार कहै-एक कहानियों में शिव-पावंदी आते हैं, बायन और राश्सस मिलते हैं, परिया आती हैं, शाप रावहुमार बन जाता है, सूरण को काल दिकातें, ही उस राग का धोडा और परियाक आ जाती है, बोडा गगनवृत्ती महल की छत पलाग जाता है, जारि-आदि बांते जवस्य ही असमब उगती है, जिंकन इन सबके विना कहानियों में पूरा-पूरा रस परियाक नहीं हो। पाता। फिर ये नहानिया जित युग में निक्शो गई मी बह मुग ही अलीवन बातों में विक्शास करता था।

लेकिन आज का पाठक यदि उन वादो को छोड़-कर उनमें प्रवाहित शीवन को ही प्रहुण करे तो उसका रस खिब्दत नहीं होगा। वह युग-युग से चली आती लोक संस्कृति का सञ्चा स्वरूप पहचान सकेगा। वंगाल से वाहर श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त के सम्बन्ध में लोग बहुत कम जानते हैं। केवल सर्वसा-धारण ही नहीं, बिल्क आजकल के कांग्रेसमैन भी! और यही सतीशदा वंगाल के, विभाजन से पूर्व से वंगाल के गांधी माने जाते रहे हैं। यह वस्तुतः सत्य हैं कि यदि उन्होंने देश की राजनीति में नेता बनने की दृष्टि से भाग लिया होता, तो वे वंगाल के सर्वमान्य मुख्य-मंत्री, किसी प्रान्त के राज्यपाल या केन्द्रीय सरकार का मन्त्रित्वपद कभी का पा गये होते। यदि उनमें किचित भी प्रचार की भावना होती तो उद्योगों के सम्बन्ध में, अर्यंश्यास्त्री, पत्रकार, विख्यात डाक्टर, वैज्ञानिक, अनेक विषयों पर अधिकारपूर्वक सृजनहार लेखक के रूप में उन्होंने अद्वितीय सफलता प्राप्त कर ली होती। लेकिन मौन साधन, लोक-कल्याण और निःस्वार्थ लोक-सेवा में सदैव उनका अडिंग विख्वास रहा है।

सतीयदा के सम्बन्ध में यदि यह कहा जाय कि वे कांग्रेस की बुलन्द इमारत की नींव की इंट के समान हैं, तो किंचित भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस तरह इमारत की नींव की इंट उसकी भव्यता और विशालता की आधार होती हैं, लेकिन उसका एक अंग भी दिखलाई नहीं पड़ता, ठींक इसी प्रकार सतीशदा का सम्पर्क कांग्रेस-संस्था के माथ है। उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया कि उन्हें कोई पद मिले या किमी कार्य में ख्याति मिले और लोग उनकी प्रशंसा करें। प्रचार की, आत्म-प्रशंसा की भावना से कोसीं दूर, जैसे उन्होंने स्वयं को लोकवाद की भावना से — माना-पमान की व्यवहारिकता से बहुत ऊपर उठा लिया है, जहां उन्हें सम्मान, प्रशंसा, ईपी, द्वेप और शास-कीय-शिन का प्रलोभन छू नहीं पाता।

महात्मा गांधी को अपने रचनात्मक-कार्यक्रम की दिशा में जिन व्यक्तियों पर अट्ट विश्वास था, उनमें सतीयदा का सम्मान पूर्ण अग्निम स्थान था। महात्मा गांधी से इस रचनात्मक-कार्यक्रम को सफल बनाने

# श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त

के लिए-उनकी सत्य, अहिंसा और त्याग की परिभाषा को साकार करने के लिए ही उन्होंने सिक्रिय राजनीति में भाग नहीं लिया। गांधीजी ने कहा:

'तुम्हारा क्षेत्र रचनात्मक कार्य-क्रम है—वंगाल में, महाविनाश की तरह प्रसारित अकाल, रोग और वेकारी को दूर करने के लिए तुम अपनी योग्यता और शक्तियों का योगदान दो।'

और सतीगदा ने अपने गुरु के वचन को पूरा करने के लिए अपने जीवन की समस्त शिवतयां लगा दीं। सतीगदा ने जो त्याग, जो सेवा और जिस जन-कल्याण की भावना से बंगाल में कार्य किया है उसकी अमिट छाप वंगाल के नगरों पर ही नहीं गावों पर भी अंकित है। अपने दुर्भाग्य के झंझावातों से निरन्तर संघर्ष करने वाले वंगाल को इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि उसके शरीर में घुसे हुए हिंसा, गरीबी और रोग के कीटाणुओं को कोई मसीहा बिना नश्तर के बाहर निकाले। आज भी बंगाल में राजनीतिक नेताओं की अपेक्षा ऐसे व्यक्तियों की अधिक आवश्यकता है जो हिंसा से दूर रहकर स्थानीय गरीबी को मिटाने के लिए अपने जीवन को खपा दें। सतीशदा ने अपने प्रान्त के हित में यही किया।

लेखक को सतीशदा के सम्पर्क में आने और उनके सोदपुर (वंगाल) स्थित आश्रम में एक लम्बे अर्से तक रहने का अवसर मिला है। लेखक ने अनुभव किया है जैसे न केवल वंगाल की विल्क समस्त देश की बेकारी, मुखमरी और ग्रीवी उनके जीवन में सिक्त हो गई है। उनके दैनिक जीवन का प्रत्येक क्षण अपने लिए न होकर, दूसरों के हित के लिए होता है। वे कल्पना और भावना से अधिक रचनात्मकता और वास्तविकता में विश्वास करते हैं। और अपने विश्वासों के प्रति वे इनने दृढ़ है कि कोई उन्हें उनसे हिगा नहीं सकता। वंगाल के ग्राम-ग्राम में, नगर नगर में जो आज लादी का प्रचार है, उसका अधिकांत्र श्रेय सतीशदा को ही

है। उनके अन्दर 'व्यवस्था' की यक्ति इतनी प्रवल है कि उन्होंने बगाल के खादी उत्पादन को इतना अधिक व्यापक और विस्नृत कर दिया था कि उसकी खापत सम्बर्ध में मी होती थी। सम्मव या कि बगाल नी खादी वन्मई मी मानंदे के उत्पर सस्ती होने गुन्दर और मजबूत होने के कारण छा जाती और गायीजी की विकेन्द्रीवरण की योजना को धक्का खगता। यह सतीबादा को स्वीकार नहीं मा, जैसे ही उनहें इस बात का आभास मिला उन्होंने 'जादी प्रतिष्ठान' नी बन्बई स्थित इस्ता बन्द कर दी। आज बगाल के प्रस्कु-प्रमुख नगरों में 'खादी प्रतिष्ठान' की उन्हों के स्वाप्त का स्वाप्त के स्वाप्त का अध्या सिंहा उन्होंने 'जादी प्रतिष्ठान' की बन्द इसन बन्द कर दी। आज बगाल के प्रस्कु-प्रमुख नगरों में 'खादी प्रतिष्ठान की दुकानें हैं, जहां से विश्वद्ध यो, अच्छा बावल और सस्ती व टिकाक खादी मिलने नी स्वास्था है। वक्तन में सी लगभग पवास दुकानें हैं जो नगर के विभिन्न मागों में जुली हुई हैं। इतनी विद्याल सस्ता का दुवार होता है।

उनका इस बात में बिश्वास है कि देश की आधिक सम्पनता गृह-उद्योगो के अधिव-से-अधिक प्रसार से ही सम्भव है। वे मानते हैं कि ज्यो-ज्यो धन का विकेन्द्रीकरण होगा, धन की विषमता अन्त पाती जायगी सर्वसाघारण को खुशहाल मिलेगी और देश में सम्पनता के दर्शन होगे। जहां तन गृह-उद्योगी का सफल बनाने का प्रश्न है उनका प्रयास सफल हो चुका है। उन्होने गृह-उद्योगों में नवे-नये प्रयोगों द्वारा जन्हें इतना समन्त्र बना दिया है कि वे आसानी से देश के ग्रामो में आरम्भ किये जा सकते हैं और उनके उत्पादन द्वारा आजीविका-अजित की जा सकती है। गृह-उद्योगों के सम्बन्ध में लादी प्रतिष्ठान आश्रम, सोदपुर (बगाल) एक सफल शिक्षण केन्द्र है। वहा हाय से कागज बनाना, पद्म-पालन, मध्मनखी-पालन, छराई, वाईडिंग, तेल धानी, आदि उद्योगों की कुरालता-पूर्ण शिक्षा थी जाती है। पुराने उद्योगों में उन्होने महत्वपूर्ण सुघार किये हैं। उन्होने छोटे-छोटे ऐसे यन्त्रो का आविष्कार किया है, जिन्हे सुविघापूर्वक युटीरो में लगाया जा सकता है और उनकी सहायता से सुन्दर वस्तुओं का शीघ्र उत्पादन किया जा सकता है। हाय से कागज बनाने की कला को उन्होंने काफी उनित दी

हैं। अन्य स्थानों पर हाथ से कामज बनाने के लिए टाट और रही कामजों का उपयोग किया जाता है लेकिन सोरपुर आध्यम में कागज बात से बनाया जाता हैं। और बहा ना बना हुआ कामज मिल से बने हुए कामज से मी अधिक मजबूत और मुख्द होता है। सतीध्या के मन में कल्पना गृह-उद्योगों को लेकर आपान की हैं, वे इन उद्योगों को आधुनिकतम बनाने में विद्यास करते हैं। आज जो देश में गृह-उद्योगों के उत्पादन के लिए लोक-जब्दित का चुकन मही है। पाया है, उत्तका मुख्य कारण यहीं है, कि गृह-उद्योगों का उत्पादन लोकन मुख्य कारण यहीं है, का गृह-उद्योगों का

सतीशदा जन्मजात वैज्ञानिक है। उनमें अन्वेपण की अद्भुत क्षमता है। वे विषय की गहराई में उतरते है और उसका सत्य जान लेने पर ही सन्तोप पाते हैं । अपनी इस प्रकृति के कारण ही वे अपने गुरु, प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्व० श्री प्रफुल्लचन्द्र गुप्त के प्रिय शिप्य माने जाते रहे है। सतीशदा यदि मात्र विज्ञान के क्षेत्र में होते तो नि सन्देह आज उनका स्थान देश के प्रसिद्ध दैशानिको में होता। लेक्नि उनकी जन-सेवा तथा उदारवृत्ति को मात्रविज्ञान की परिधि परिवेष्टित न कर सकी । उन्होंने अपने को बहासे हटाकर लोन-सेवाके लिए अपनी शक्तियो को लगा दिया। वैज्ञानिक श्री सतीशचन्द्रदास गृप्त, लोकसेवक सतीशदा हो गये । सतीशदा के साय-साथ आज उनका सारा परिवार लोक-सेवा और, दुसियो के दुख निवारण में निरत्तर प्रदृत्त है। मा हेमप्रभा देवी, ने बगाल के ग्राम-ग्राम में जाकर अवाल और क्षया-पीडित क्षेत्रों की जो सेवा की है वह चिरस्मरणीय है। अविमाजित भारत के दिनों में जबिक नीआलली में साम्प्रदायिकता ने ताण्डव-नृत्य किया तो मा हेम-प्रभादेवी ने जाकर उन्हें मानवता का वह अमर-सन्देश दिया जो कि आगे चलकर महात्मा गाघी की नोआसली यात्रा के समय एक आधार-शिला सिद्ध हुआ । श्रीमती हेमप्रमादेवी ने स्वय को पति के कर्तव्यमार्ग पर अपित वर दिया है। और वास्तविकता तो यह है कि वे आज सतीशदा के लिए एक प्रेरणा, एक गति वन गई है। जिन लोगो को सोदपुर आश्रम में रहने और 'मा' के सम्पर्क में आने का अवसर मिला है, वे जानते हैं कि देवी हेमप्रभा समस्त आश्रमवासियों की मां है, जिन्हें सदैव यह चिन्ता बनी रहती है कि उनके पुत्रों को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

उनके अनुज श्री क्षितीशचन्द्रदास गुप्त के लिए जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण उनके अग्रज—श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त हैं। उन्होंने भी अपना सर्वस्व सोदपुर आश्रम के लिए लगा दिया है। वे इतने मृदुभाषी और सौजन्यत-प्रिय हैं कि उनसे मिलकर लोगों को हार्दिक प्रसन्नता होती है। मधुर इतने जैसे शहद, भावुक ऐसे जैसे उच्च कोटि का कवि, सरल इतने जैसे वालक, शान्त ऐसे जैसे शरद् की नीरव रात्रि। उनका व्यक्तित्व सोदपुर के आश्रमवासियों के लिए बहुत वड़ा आकर्षण है। सोदपुर-आश्रम का अद्वितीय मधु-मक्खी-क्षेत्र उन्हींकी देन हैं।

जीवन में सत्य सतीशदा के लिए सबसे वड़ी वस्तु हैं। इसी सत्य की सुरक्षा के लिए उन्हें अनेक बार अपने प्रिय स्वजनों का डट कर विरोध करना पड़ा। उन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का भी सैद्धान्तिक आधार पर विरोध किया। उन्होंने अपने मित्र सम्पादक-प्रवरश्री रामा-नन्द चटर्जी का भी विरोध किया और क्षुद्र प्रान्तीय भावना का सदैव तिरस्कार किया। जिस समय उन्होंने हरिपुरा कांग्रेस के प्रश्न को लेकर नेताजी का विरोध करना पड़ा उस समय सारा वंगाल प्रान्त उनके विरुद्ध हो उठा। लेकिन उन्होंने लोकमत की अपेक्षा अपने सिद्धांतों भीर विश्वासों को ही अधिक महत्व दिया । उन्होंने डट कर उन पत्रों और उन व्यक्तियों का अपनी पत्रिका द्वारा विरोध किया जो सस्ती भावुकता, प्रान्तीय और व्यक्तिगत स्वार्थों से वशीभूत थे। 'राष्ट्रवाणी' के सम्पादक ने यह वात सिद्ध कर दी थी कि उनकी सम्पादकीय टिप्पणियां कितनी उग्र लेकिन विवेकपूर्ण

तथा तथ्यपूर्ण होती थीं।

सतीशदा का पत्रकार के अतिरिक्त लेखक के रूप में भी अपने क्षेत्र में अद्वितीय स्थान है। उनकी पुस्तकें 'दी काऊ' और 'होम एण्ड विल्लेज डावटर' अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक हैं। उन्होंने इन पुस्तकों के अतिरिक्त भी अन्य पुस्तकें लिखी है। खादी अर्थ-शास्त्र पर उनका अध्ययन, मनन और रचनात्मक-कार्य अतुलनीय है। पक्के राष्ट्रवादी श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त गांधीजी की रचनात्मक योजना के सच्चे भाष्यकार हैं। गांधीजी न नया कहा, यह केवल उन्होंने पढ़ा, सुना या उस पर मनन ही नहीं किया बल्कि उसे मूर्तरूप भी दिया है। सतीशदा की भावनाओं की प्रतिमृति उनकी 'खादी-प्रतिष्ठान' संस्था है । खादी-प्रतिष्ठान-आश्रम कल-कत्ता से दस मील दूर सोदपुर-स्टेशन के ठीक सामने है। लगभग आधे मील वर्ग के क्षेत्र में सोदपुर-आश्रम वसा हुआ है। उसमें प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी तपोभूमि में प्रवेश किया हो। आश्रम में प्रसारित सुरुचि, सादगी और मृदु-भाषा का प्रभाव आगन्तुकों पर पड़ना अवस्यम्भावी है। यही आश्रम सतीशदा का निकेतन है।

सतीशदा की सर्वतोमुखी प्रतिभा, सत्य के प्रति निष्ठा और कर्तव्य के आगे आत्म-विसर्जन की भावना से गांधीजी अत्यधिक प्रभावित थे। सीम्य, शान्त, विद्वान, मानापमान की भावना से दूर सतीशदा, आज के श्रेष्ठ कांग्रेसमैनों के लिए आकाश-द्वीप के समान है, जिनसे उनका मार्ग आलोकित होता रहता है। गांधीजी और उनके सिद्धांत तो उनके रोम-रोम में वस गए हैं। गांधीजी उनका आदर करते थे और स्नेह करते थे। वंगाल-यात्रा के अवसर पर सोदपुर-आश्रम ही उनका निवास-स्थान हो गया था और सतीशदा पर ही उनके कार्यक्रम बनाने का उत्तरदायित्व रहता था।

मनुष्य सुन्दर विचारों से सुन्दर जीवन की ओर अग्रसर होता है और सुन्दर जीवन से सर्वनिरपेक्ष सुन्दर जीवन की ओर बढ़ता है। —प्लेटो जिसका मन स्थिर हो और आरसा में पूर्ण विश्वास हो नहीं पूर्णता को प्राप्त होता हैं। जिसके मन में सचय होताता हैं वह अमरणे समुद्र में हो गीता ज्याता हता है। और वह अनमंज अम बृद्धि को मजीन करके उत्तरोत्तर अक्सण्यता को और सम्रसर करता है।

गीता में लिखा है वि निश्चित को छोडकर अनिहिचत पर नहीं जानः च।हिए । जो निहिचत ल्ड्य को छोड अनिश्चित मार्ग अपनाते है वह निश्चित से भी बन्चित रह जाते हैं। भगवान ने यहा तक नह दिया-"सर्वधर्मान परित्यज्य मामेक' मुख की चिन्त। छोड कर केवल मुझ ही पर निर्भर कर। मै तेरे पाप, दोपो को स्वय हरूना । तू मुझपर आश्रित रह और जो करे सो मुझे ही अर्पण कर। परन्तु जनतक पूर्ण विश्वास न हो जाम और निभैयता न आ जाये तवतक यह कैसे सम्भव हो सक्ता है। यद्यपि चास्त्रो, पुराणी, ्थतियो और महानु प्रन्थों में ऐसा उल्लेख हैं विन्तु 'ह आदर्श के लिए हो सकता है। जब तक मनुष्य स्वय उसका अनुभव न कर ले उसे कैसे मानें। प्राय दैनिक ब्यवहार में हम देखते है कि जिसका जिसपर विश्वास जम जाता है उसके लिए फिर वह चाहे जो करे उस पर अवि-इवास नहीं करता है और उस विश्वास पर निर्मर करता है परन्तु जो किसी का बिश्वास करता है वह एक सम-शने के पश्चात ही करता है और जब यह एक समझ लेता है तभी उसमें निभैयता आती है और जब निभैयता आती है तब उसकी शकार्ये निर्मल हो जाती है और बहु साम्य भावना से निर्भयतापूर्वक उस पर पूर्ण मरोसा करता है और जो भरोसा करता है वह अवस्य पाता है। यह बक्षरश सत्य हैं और पग पग का अनुभव ही इसका प्रमाण है। गोस्वामी तुल्सीदासजी ने कहा है "जापर जाकर सत्य सनेंटू, सो तिही मिलत न वस्तु सन्देह"

जिसका जिसपर सत्य समेह हो वह उसे निश्चय ही प्राप्त होता है, यह निविवाद और ध्रृव सत्य है। उदाहरणार्य आये दिन ग्रेजूयट एपळीवेशन फाईल के आघार पर दर दर की हाजिरी वजाते रहते है और हम गली मोहल्लो में घुम फिर कर सिर पर टोकरी रल कर वस्तु बेचने वालो और मजदरो को प्रसनता से हसते देखते हैं। मनुष्य में सब कुछ है। क्या नहीं है ? बावश्यकता एकमात्र आतम विश्वास की है। जो सत्य-मार्ग पर रहते हैं उनकी आत्मा में वल होता है, वे निर्भय है और अपार गति से निरन्तर आगे बढ़ते हैं। जिनकी सच्ची लगन होती हैं वे पीछे कब हटते हैं। पीछा ढोगी और बगुला भवतो का आश्रम है। आस्मविद्वासी सरयता रूपी नैय्या के सहारे सदैव सफलता रूपी पर्वतो के उत्तुग-श्रुगो पर विजयश्री फहराते रहते है। अग्रेजा के राज्यकाल में मुद्ठीभर हाड वाले गाधी न कितनी निर्भयतापूर्वक कह दिया था और कह ही क्या दिया या आन्दोलन चलाया या कि अग्रेजो भारत छोडो ? उस समय यह वहना क्या साधारण बात थी । पर वह सत्यता का अन्वेषक और आत्मविष्वास का जीवित प्रमाण या। वह बार बार सह कहता या कि मेरा चाहे जो कुछ छिन आये पर मेदि प्रभु-विश्वास छिन गया तो भेरे में रह ही नया जायेगा ।

जिसके तन पर लगोटी तथ नहीं होनी वह सिर पर यास का मरोटा उठायें किरता है और ६ आने मागता है। आग उसे र आने कह दीजिए, बार आने कह दीजिये; बाहे साढे पात्र आने कह दीजिए पर वह बदाचित नहीं देता क्योंकि उसे विद्वास है कि उसकी ययार्थ की कमाई का मूल्य छ जाने से कम नहीं हैं। बह दो घन्टे कक उस मरोटे को सिर पर उठायें मीजे तक किर लेगा पर आसिर छ आने को ही बेंब कर आगेगा।

एक वागे या रिक्षा वाले का कात्म विश्वास देविए। बाप अमूक स्थान से असूक स्थान तक जाने का किराया उत्तरे पुष्टिए और बार आने कम कह प्रीप्रयो, वह नहीं जायगा, वये <sup>7</sup> क्या उक्को कोई और दूसरी कमाई है। परन्तु सामा या रिक्षा माडा कमाने वार्ष्ट्रेक्

# जीवन-साहित्यः विसम्बर १९५२

बाद कर मन्कायों के लिए साहम करने दांछे इनरिने है पर दुम्महरियों को कभा नहीं । छोटा मा लड़ना मैकडों आदियों के दीच जेद करले को हिन्दन करता है, चंगीन पहरा होते हुए भी देशों पर डाला डाल विया जाता है। यह कात्मविष्वास के दुरर-येंग के नदारे हैं ! कमी मूख और वर्म के लिए छोग विक बार बरने थे. बाद ऐसोबाराम व भण्याचार के लिए मरते हैं। अपनी मुच्चाई के आधार पर जीने वासी ने जारें दे दीं, दीबार में चुने गये, बदन में कीलें मींक दी गई, पर दिव्हान इस ने नस नहीं हुआ । इसीचिए बाद मी उनकी बीदनज्योति. बद्धण्ड दीप-रिहा की तरह देवीच्यमान है । जिन्हें आत्मिबन्दास होता है वहीं आगे बढ़ते हैं और सरकता उन्हीं के बरम चनती है। जो अस्ता में विश्वास करते है वह निर्मा नहीं नरते और इस नम्बर गरीर के तेल से अपने। गीर्ष की असम्ब ब्योति युग-युग के लिए प्रव्यक्ति कर बाते हैं।

पर्वतारोही वलों को यदि इतना विम्बास अपने करर न हो कि दे हिमाच्छादित उत्तुंग-सुंगों पर विदय-पनाका उहरा देंगे तो वे घर से नहीं निकल सकते ! एक वहीं क्या, किसी भी कार्य के करने पर कर्ता की करना में लिखत कार्य के प्रति वृद्ध आरम-विम्बास न हो तब तक उसका काम आगे नहीं बढ सकता । श्रेष्ठ और सफल जीवन की हुंजी सत्य एवं निर्मय क्यी स्तर्मों पर आधारित आरम-विस्वास ही हैं । सीसारित कार्यों की सफलता का आधार जहां आरम-विस्वान हैं वहां आध्यात्मिक प्रकरण सहन ही समझा जा सकता है।

 बीप नहीं, दोप का प्रवास मुसे चाहिए ! बीज में सकू जिले हरेक जात में अनम, बाट में सकू जिले समस्त विश्व में सबय, मोंग क्षुट मूक कर सके जिले क कम, व सम, बीप नहीं, दोप का प्रकास मुसे चाहिए!

> शो बये न कृत से, न डाल से, न पात से, को मुदे न, जो खुटे न रात से, प्रभात से, जो बके म, जो कुके म बूप, बारि, बात से— फूड नहीं, फूड का सुवास मुझे चाहिए। दीप नहीं, तीप का प्रकास मूसे बाहिए!

> > पूट-पूट भी सके पूजा-समृद्ध को असल, बूद-बूद सोल छे सकल विषय क्लुब यरल, अल्जुलपु बीन के बटा बने बुखी सकल, तृप्ति नहीं, विष का प्रकार प्रसे चाहिए। बीव महीं, दीय का प्रकार मुझे चाहिए!

> > > घेर की सके समग्र स्वर्ण, नके, भू, पणन, बाथ जो सके सरक करण, बरम, जनम, परण, छू तके जिते न देशकात की पण पवन, भूसित नहीं, मुस्त प्रेम-पारम पूर्व पाहिए। दोध नहीं, दोप का प्रकास मुझे बाहिए।

> > > > हैबता नहीं, मन्य्य बस मन्य्य बन पहे, अर्थना न, बन्यना न, बेन्य-मृतक भन पहे, स्वर्ग नहीं, भूमि भूमि के लिए रास्प पहे, अमृत नहीं, मस्ये का विषता मृते चाहिए ! दीप नहीं, दीप ना अकारा मृते चाहिए !

### विष्णुशरण **C**

"प्रकृति की अवस्था में समानता एक वास्तविक और पिवत्र नत्य हैं", "साधारण व्यक्तियों से ही यह मानव-जाति निर्मित हुई है। जिसमें जनसाधारण नहीं वह कठिनता से विचारणीय है।"

जनसाथारण के अधिकारों की आवाज को उठानेवाला जीन जेक्वस रूसो एक साधारण व्यक्ति के रूप में ही पैदा हुआ और उसी रूप में मरा। सन् १७१२ में जेनेवा में एक घड़ी बनाने वाले के घर में वह पैदा हुआ। ग्रामीण पाठणालाओं में उसने मामूली शिक्षा पाई। अपने उप्रविचारों के कारण वह गिलोटीन से बचने के लिए ६ वर्ष तक योरोप में मारा-मारा फिरा और जब सन् १७७० में वह फ्रांस वापिस आया तो वह एक गरीव, अकेला और उपेक्षित व्यक्ति था। जो मनुष्य उसके विचारों से सर्वाधिक प्रभावित हुए वे उसे भूल गए थे। उस समय के जो प्रसिद्ध विचारक थे वे उसे पागल कहने लगे थे। आठ वर्ष नक वह मुक्किल से जीवित रहने के साधन जुटाता रहा और जब सन् १७७८ में वह मरा नव एक साधारण व्यक्ति की ही तरह मरा।

लेकिन वह एक साधारण व्यक्ति नहीं था। वह असाधारण था। वह अपने समय मे बहुत आगे था। १८ वीं शताब्दी का होते हुए भी वह विचारों में २० वीं शनाब्दी का था। वह मानव अधिकारों का हिमायती था। वह विचारक था, शिक्षा मुधारक था, प्राकृतिक छटा का प्रेमी था; सबसे वह कर वह स्पष्ट और सत्य-वक्ता था।

एक समय था जबिक चर्च के पादरियों, राजाओं, माल दार माहुकारों और शहजादों का ही बोलवाला था। केवल बेही सम्मानतीय और विचारणीय व्यक्ति थे। जनसाधारण को कोई मान ही न था, उसकी कोई आवाज ही न थी। किसी को इस बात का व्यान ही न था कि उनका भी कुछ मान हो सकता है। उनकी भी कोई आवाज हो सकती है। सरकार कीन बनावे, सरकार के क्या काम हों? उसका उत्तर था जनसाधारण। वह जनसाधारण

# जीन जेक्वस रूसो

के हकों को; उसकी आवाज को लेकर आगे वढ़ा और एक दिन १४ जुलाई १७८९ को जनसाधारण की उम-ट्रती हुई घटायें पेरिस में वेस्टिल पर छा गई, यद्यपि वह जनसाधारण के भाग्य के निपटारे के उस दिन को देखने के लिए वच। न था पर उसकी "सोशल कौ-ट्रैक्ट" कान्तिकारियों की गीता वन चुकी थी।

तव तक ममझा जाता था कि जनसाधारण शासित होने के लिए ही है। वह बुरा है। उसे पार नियंत्रण के कठोर कानूनों के शिकंजे में जकड़ने की आवश्यकता है। लेकिन हमों ने कहा कि यह विचार गलत है। यह गरीवों पर अपनी प्रभुता और अपना आधिपत्य थोपने का बहाना है। सरकार छोटी-से-छोटी और कानून कम-से-कम होने चाहिए।

कोई मनुष्य बुरा नहीं है, यदि उसे गलत शिक्षा-दीक्षा न दी जाय। इस नवीन सिद्धान्त का उसने प्रति-पादन किया। प्रत्येक मनुष्य का उसके स्वाभाविक गुणों के अनुसार विकास होने दो। इस प्रकार शिक्षा पर उसके अपने विचार थे जो आगे चलकर फोबेल और मींटेसरी ग्रन्थों में प्रस्फुटित हुए।

उसके समय में मुक्त प्राकृतिक मौन्दर्य घृणा की वस्तु थी। लेकिन अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में ही रसो ने पैदल आल्प्स की पार किया और वाद में उसने लिखा:—

"केवल मेरे आंनन्ददायक दिनों में ही ऐसा या कि मैंने पैदल यात्राएं की, इससे मुझे हमेशा खुशी मिलती थी। बाद में कर्नव्यों, काम, सामान ने मुझे बाध्य कर दिया कि मै गाड़ी का प्रयोग कर्न और एक सम्भ्रान्त व्यक्ति का रूप घर्न। दुःच, चिन्नायं और परेशानियां मेरे साथ गाड़ी में घुस जाती थी और जबकि अपनी यात्राओं में पहले मुझे एकमात्र यात्रा करने का आनन्द मिलता था, अब केवल गंनव्य स्थान तक पहुंच जाने की इच्छा पैदा होती है।"

रुमो मत्यान्वेषी था। वह मत्य को छिपाना जानता

ही न या, चाहना ही न या और जब उसने अपनी आत्मकया छिड़ी तो उसमे जिना छिपाब और हिचकिवाहट सब सत्य उडेल दिये। चाहे वह निवर्त ही छज्बाजनक, कुस्सित अपवा बट्ट बयो न रहे हो। गायीजी ने
भी तो ऐसा ही किया था। स्मी ईकर में विश्वस पर त्या सेवा च रंप सा लेवन च चं मं नही और उसने चचं पर आपमा किया। लेकिन यह विचार दता। विष्णव को अपनी रक्षा है लिए देस छोडकर सामना पडा।

स्तो मानव के अधिवारो-सामानता, प्रजातम, स्वतावता में वृढ विस्वास रखता या और अपने विस्वास पर जनता में वृढ विस्वास रखता या और अपने विस्वास पर जनता में या । उस ही वा विवार एकटाटिक के उस पार अमरीकी विधान या आधार वना । इसी के के जानित में सूजन विचा । समाजवाद और सम-रिटबाद उसी वे विभिन्न रूप है। आज भी सारा ससार उसी विचार से आप्लावित हैं । मानव-समाज इस देन के लिए उसवा विरुक्त परिकृषी रहेता।

#### ्रामसिंह् रावल

फिल्पीन भी इस परिवर्तन से विधित न रह सका । वह छमभग चार सी वर्षो से पराधीनता ने वपूल में फसा हुआ पा। पहले स्पेत्र नो प्रजापीटक राज्य ने लगनग सीत सी वर्ष तक उत्तरों कुचला, उस समय ७१ बार विफ्लब ना झड़ा क्रमा हुआ और जब सन् १८९६ में फिल-पीन के त्रान्तिनारी दक ने लागिनास्थे (Auginaldo) नाम के महापुरप के नेतृत्व में रोच के अवापीटक राज्य की जब हिला थी वो अमरीवा ने आपिनास्थे की सहायता का नाम के बर फिल्पीन पर अपना अधिनार जमा लिया। परिणान यह हुआ कि विश्व अगिनास्थे के अगितकारी दल की, स्वतन्तता के नाम पर, सहायता को गई थी, उसी आधिनास्थे को अमरीवा ने विरुद्ध फिल अवापी का असफळ युद्ध लक्ष्मा परा। के

### भारत श्रोर फिलपीन

स्वतंत्रता प्राप्त करने की योजनाओं का, आगि-मारुडो की पराजय से, अत न हुआ। शास्त और अशास्त दोनो प्रकार के साधनों से स्वतवता का आदीलन बरा-बर जारी रहा। और जब सन् १९४१ में जापान ने अमरीका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, तो उस समय फिल्पीन में एक ऐसी सस्या का जोर था, जिसका नाम. कालीवापी ( Kalıbapı ) था । यह कालीवापी नाम की सस्या ही थी, जिसने मुझे फिल्पीन की ओर आकांवत क्या । उसके झडे पर गाधीओं के चरखे जैसा चरखा बना हुआ था। पता लगाने से मालूम हुआ कि गाधीजी का फिल्पीन की राज्यनीति पर काफी अधिक प्रभाव पडा या। चरखें को कालीबापी के नेताओं ने गहउद्योग का चिह्न स्वीकार कर, उसे अपनाया । यहा तक ही बस न था, कालीयापी के नेंसा लोग जनता की यह साफ साफ कहते कि हमारे वह नेता जो अमरीकी सरकार की कठपूतली वनकर हमारे ऊपर राज्य कर रहे है, क्या वह देश की गरीबी को मूल गये हैं? क्या वे भारत के गांधीजी के समान मामुली घरो में नहीं रह सकते ? क्या वे हाय के बुने हुए कपड़े नहीं पहन सकते ? कालीवापी विदेशी वस्तुओं के बायकाट पर जोर देती थी।

कालीबापी के इस प्रोग्राम को भारत के गाधी (आधृतिक) युगके प्रभाव का परिणाम कहा जासकता

है, वैसे भारत और फिल्पीन के आपसी सम्बन्ध शता-ब्दियों से चले आ रहे हैं। जब यूरोप पर अभी सभ्यता का उजाला भी न पड़ा था, तव भारत की सभ्यता अपना उज्ज्वल प्रकाश अपनी सीमाओं से वाहर डालने लगी थी। पल्लव राज्य के समय भारत की सभ्यता ने महापूर्वी एशिया के सभी देशों पर अपनी वाक जमा ली थी । जावा, सुमात्रा, स्याम, हिन्दचीन और फिलपीन पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आविपत्य स्थापित हो चुका। यह आधिपत्य केवल भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही का न था, वास्तव में भारत के सुप्रसिद्ध उपनिवेशक, महाराजकुमार विजय ने इन सभी महा-पूर्वी-एशिया के देशों पर अपना राज्याधिकार जमा लिया था। परन्तु जब पल्लब-राज्य का चालूबय और चोला राज्यों की सेनाओं की मार से अंत हुआ तो महापूर्वी एशिया के इन भारतीय राज्यों में भी परिवर्तन आया । वहां अव दो वड़े राज्य स्थापित हो गये । एक तो था, सुमात्रा का श्री विजय साम्राज्य और दूसरा जावा का मज्जापहित राज्य।

मज्जापहित राज्य का साम्राज्य फिलपीन तक फैला हुआ था। इस जपनिवेशिक भारतीय राज्य के कारण फिलपीन पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बीर भी अधिक प्रभाव पड़ा। फिलपीन के एक प्रसिद्ध विद्वान डा॰ ट्रिनिडाड पार्डों डी ट्वेरा (Dr. Trinidad Pardo de Tavera) ने लिखा है, कि भारत से केवल व्यापारी लोग ही न आए, विल्क वहां से धर्म, सभ्यता और संस्कृति के दूत अधिक आए। यह भारतीय सभ्यता और ब्राह्मण धर्म का ही आगमन था जिस ने फिलपीन की भाषा, कला, शिलपकला, समाज-धर्म, कानून, वेष, रस्मोरिवाज पर प्रभाव डाला। डा॰ साहव लिखते हैं कि फिलपीन में सूर्य, चंद्रमा, जल, वायु, अग्न आदि की जो पूजा होती थी, वह भारतीय सम्यता के प्रभाव का ही परिणाम थी।

फिल्मीन की भाषा और लिपि पर भी भारतीय

प्रभाव पड़ा। पुरानी लिपि पाली के अधिक निकट हैं। भाषा में अनेकों ऐसे शब्द हैं, जो संस्कृत और पाली से लिये गए हैं। जैसे मोती (मुक्ता) को 'मृत्या' कहा जाता है और भाषा को 'वाक' कहा जाता है।

फिलपीन की लोक कहानियां भी भारत की देन मालूम होती हैं। आगूसन (Agusan) प्रान्त में एक पौराणिक गाथा प्रचलित है, इसका सम्वन्य रामायण की अहिल्या की कहानी के साथ हैं। इफूगाओ (Ifugao) प्रांत के लोगों में एक और पौराणिक कहानी प्रचलित है, कि वाल्टिक (Baltik) नाम के देवता ने तीर मार कर पत्थर से पानी निकाला। यह कहानी महाभारत में अर्जुन के ऐसे ही एक कार्य से मिलती जुलती है।

भारत के एक प्रसिद्ध विद्वान्, डा॰ धीरेन्द्रनाय राय फिल्पीन यूनिवर्सिटी के लिवरल आर्टस कालेज के फिलास्फी विभाग के अध्यक्ष रह चुंके हैं। उन्होंने फिल्पीन के इतिहास का अच्छी तरह अध्ययन किया और मालूम किया कि फिल्पीन के लोगों में कई ऐसे अंघविश्वास प्रचलित हैं, जो भारतीय जनता में भी हैं, जैसे कि बच्चों को रात के समय कंघी नहीं करनी चाहिए, नहीं तो उनके माता-पिता की मृत्यु का होना संभव है। यदि आकाश पर कोई तारा गिरता दिखाई दे, तो कोई मुसीवत आने वाली होती है। यदि कोई गर्भवती स्त्री जुड़वां फल खाले तो उसके जुड़वां वच्चे होंगे। जिस घर में वच्चा पैदा हो, वहां चालीस दिन तक दिया जलता रहता है।

तात्पर्य यह कि फिलपीन का भारत के साथ कई शताब्दियों से घनिष्ट सम्बन्ध चला आ रहा है। और इस पौराणिक सम्बन्ध को गांघीजी के चरखे, अनेकों इतीं और शान्त आन्दोलन ने फिलपीन पर एक निराला प्रभाव डाल कर फिर से जीवित कर दिया है। अब इसमें तिनक भी संदेह नहीं है कि भारत और फिलपीन के लोग और भी एक दूसरे के निकट आ जावेंगे।

मेरे थाम-नाथ, न समेटी तम इन्हें अपने रतन-हार के लिए । नम ने आसनो में नौलाख रत्नो की, अनमोल भी की आभा झलक रही है।

पच्यों के आसवा में विस्व सुरक्षितकर आत्मोत्सर्व की महित्र भावजा विरामान है।

सारको के धारक आसवा में दाह रामन-रावित तया जडता को सचेतन करनवाली सजीवनी दमक रती है

अर्भक के ऑसबा में मात-दशन की आर्स-पकार तया मान-मिलन की तीय त्या छलक रही है।

और इन मेरे खारे आसवा में-ना, ना नाय! अविरल बरसने दो इन्हें। न गयो तम इन्हें अपने अनमोल एत्नहार में।

¥ × धमिको के आसूबो में क्तंब्य निष्टा की समाधि तया समाधान का प्रशात तेज है।

पीडिनो वे आसवा में सूप्त बहबानल सवा कान्ति की ध्यकती ज्वाला एँ महक रही है।

प्रीति के आसूत्रों में समर्पण का विमक्त सकरद

तया मागल्य का मध्र निक्षर वह रहा है। स्याग के आमुबो में सागर की गमीरता तथा

नगाधिराज की अवल निरंबलता वास करती है। और मेरे इन खारे जानुवो में-पापी स्वार्थ,

दुराचारी मोह, तथा निवींयं डेय-जाने दो नाथ ! अविरल झरने दो इन्हें । न समेटो तुम अपने मौलिक रत्नहार वे लिए।

× × × ×

द्वार के सम्मुख के तुम्हारे पवित्र पद चिन्ह घोन र परवात्ताप की विश्वास समिन से वे जब तक पवित्र न होवें तवतक बरसने दो इ हैं।

लगातार बरसने दो इन्हें । न समेटो तुम अपने रत्नहार वे लिये।

है मत्यों मेरे निकट न बाना । मैं वह उद्योति ह जिसे जरा नहीं ---जिसे धरण नहीं ।

बलियों सा विहसना । फुलों सा विकसना । तया समन भाडारो से सीरभ चराने वाले समीरण के साथ स्वर केलि करना ही मेरा स्वर कर्म है।

उर में अल्ती ज्वाला के निमित्त से धपछाह का खेल खेलना तथा नवनी में बच्छा का विकल विकास से विकास पर लुट जाना ही मेरा जीवनधर्म है

मानव करयाण के हेत सहारक सकटा से दयारावित जुझना और विस्थ को प्रकाश देना ही मेरे जलते जीवन का आध्यममं है।

हे मत्यो । मझपर न झपको । मैं वह अमर ज्योति ह जिसे क्षय नही-जिसे मरण नहीं।

सल का क्षण नही--मै दख का यग ह ।

बसने का अभिशाप नही-जलने का बरदान हा। घनधीर घटाओं का बास्सरंग, अभिराध को का उपत अभिसार तथा अनत का अमर आशीर्वाद है।

प्रत्य के पदचात नभ में नवसप्टि का निर्माण करने के हेत अनुत को मेरी आवश्यकता है।

बत है मृत्यों । दूर ही रही मुझसे । मैं वह अमर-ज्योति ह जिसे मरण नहीं ।

भास्त्र की तपन में आग उगलनेवाली ग्रीप्स का निवास है। विद्युत की जल्न में हिमवर्षी पावस विरोहित है।

और मेरी जलन में निज देह सहित निज स्ल-शांति की अस्पन्य महाप्रत्य तथा नवनिर्माण की विराट शक्ति अतहित है।

इस विराट् शनित से टकरा कर विरव में अपनी हसी न कराओ मृत्यो <sup>ह</sup>

नारण में बहु जनस्वर जलती ज्योति हु मृत्यो, जिसे मरण नहीं, जिसे भरण नहीं !

खाद्य संकट के बारे में हमारे नेताओं की मार्मिक अपीलें हमें अन्तिश्चिन्तन के लिए बाध्य करती हैं। अन्न को वरवाद न करने में भले ही शिक्षित-वर्ग सहायक हो सके, किन्तु खाद्य के उत्पादन में बुद्धिजीवियों की सीथी सहायता किन है। ऐसी अवस्था में यह आशंका मन में घर कर लेती है कि हम खाद्य-मोर्चे पर अपने कर्तव्य का ईमानदारी के साथ पालन नहीं कर रहे है। इस विवयता को दूर करने में घरेलू साग-सिक्जयों का उत्पादन उपयोगी सिद्ध हुआ है। फिर भी उन कार्य-कर्ताओं के सामने यह समस्या ज्यों की त्यों है, जिनका निवास ऐसे प्रदेशों में है, जहां कि वरसात के सिवाय पानी की कमी रहती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए मैने कुछ ऐसी वनस्पतियों की खोज की है, जिनको मैं मामूली पानी की जरूरत होनी है और जिनको मानव-खाद्य के हप में व्यवहत करना उत्कृष्ट प्रमाणित हुआ है।

इस वनस्पति को मैं करीव वीस वर्ष से जानता हूं, पर पिछले तीन वर्ष से पहले इसका उपयोग दवा के रूप में ही जानता था । आयुर्वेदीय औषधियों में इसका प्रमुख स्थान है। वे भस्में जो अन्य सावनों से नहीं बनतीं, वे भी इसका पुट देने पर आसानी से बन जाती हैं। पेट की वीमारियों पर इसका प्रयोग "कुमार्यासव" के रूप में सारे हिन्दुस्तान में होता है। कुछ वीमारियों पर यह बाहरी रूप में लगाने के काम भी आता है। पर इसका सबसे महान चमत्कार मैने खाद्य के रूप में देला । इसपर विभिन्न परीक्षण के बाद लाद्य के लिए प्रामाणिक रूप से गंदारपाठे को अपनाने की सूचना मैने भाई कियोरीलाल जी मशस्त्राला को दी। उनके द्वारा विभिन्न भाषाओं के "हरिजन" में यह सूचना प्रकाशित होने पर भारत के प्रायः सभी भागों से गंवार-पाठे की विशेष जानकारी के सम्बन्य में करीब एक हजार ने ऊपर पत्र मिले। कुछ को परिचय, कुछ को जपयोग-विधि और छगाने की तस्कीब एवं कुछ की नमूना भी भेजना पढ़ा। कई भाइयों के मनोरंजक और

शिक्षाप्रद अनुभव भी वाद में पढ़ने को मिले। अन्ततो-गत्वा में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि जिस प्रकार हमारे घर में चरखे का होना जरूरी है, उसी प्रकार गंवारपाठा भी अनिवार्य होना चाहिए। स्वयं वापूजी ने जीवन के अन्तिम दिनों में गंवारपाठे का रस पीना शुरू किया था। यदि वे अधिक दिनों ले सकते, तो इसकी प्रशंसा किये विना न रहते।

गंवारपाठा भारत के सभी प्रान्तों में होता है। कहीं कहीं इसे 'घीकुंवार' या 'कुमारी' भी कहते हैं। जिस जमीन में गंवारपाठा लगाना हो, उसे खोद लें और राख टाल दें। फिर वड़े गंवारपाठे के चारों और उमे हुए छोटे-छोटे गंवारपाठों को अलग-अलग लगा दें। कहीं से एक गंवारपाठा लाकर लगाने के बाद कुछ ही दिनों में उसके चारों और छोटे गंवारपाठे अपने आप उम आते हैं। मुख्य गंवारपाठे से इनका हलका-सा सम्बन्ध रहता है। उसे हटा कर अलग-अलग स्थानों पर लगाने से भी लगने में कोई दिक्कत नही। इनमें अन्तर्जीवन की धिकत इतनी अधिक है कि भूमि से उखाड़ने के बाद कई हफ्तों तक लापरवाही से यों ही पड़ा रहने पर जब आप लगावेंगे, लग जायेंगे। लगा कर थोड़ा पानी डाल दें।

इसकी खाद भी हमें मुक्त मिलती है। साघारण गृहस्य के यहां भोजन बनाने के बाद लकड़ी से जो राख वनती है, वही इसके लिए सर्वश्रेष्ठ खाद है। अधिकतर घरों में राख को बाहर टालने की ठीक व्यवस्था नहीं रहती और वह कूड़ा-करकट में समझी जाकर गन्दगी फैलाने का साधन बनती है। गंबारपाठे को लगाने से दम समस्या का हल निकल आयगा और घर के चारों- और सफाई रहने लग जायेगी।

घर के किसी कीने या आंगन में गंवारपाठे की लगा दें। इसकी रक्षा का कोई झंझट नहीं। इसे न पशु खाते हैं और न पक्षी। इसे न तो कड़कड़ाती सर्दी नुष-सान पहुंचा सकती है और न चिलचिलाती धूप। अधिक पानी की भी जरूरत नहीं। यहां तक कि यदि बाप वर्ष-भर में एक बार भी पानी नहीं डालेगे, तो भी बगली बरसात के पानी से यह अपने बाप हरा हो जायेगा।

आयर्वेदोक्त अधिनात यस्म मवारपाठे मे ही . बनती हैं। इसीसे इस्के गुणवाहत्य का अनमान किया जा सकता है। भूष बडान में तो यह बढ़िनीयहै। इसका उपयोग साम ने रूप म करना चाहिए। एक आदमी के लिए दो पत्ते पर्याप्त है। इसके पत्तो का ऊपर का छिलका चार से छील कर अन्दर का गदा निकाल कर छोटे-छोटे टकडे कर ले। फिर इनको नमक ढाले हरू पानी में पाच बार घो ले। पानी में नमक अन्दाज में टाल लेने मे मुविधा रहेगी । हर बार धोने समय नया पानी डाल लेना चाहिए। फिर धोडी छाछ या दही डाल कर कडी की तरह छोक लें। छाछ सादही के विना भी छोका जा सर ११ है। पानी नाम मात्र को ही डालना चाहिए। इसमें पानी अपने आप ही बहुत होता है। इसनी नडवाहर नी मर्वधा नष्ट करन के लिए गवारपाठे के गदे को पानी में घोने के बदले सादे पानी में उवाल छेना चाहिए और फिर छोक् छ । लेक्नि इस प्रकार वने साम के गुणो में कभी भाजाती है।

मेरा विदवान है जि भवारपाठे ना अचार भी डाला जा मनता है। पर अभी तन उनमें सफलता नहीं मिल सकी। हा, मबारपाठे की पत्नी ना अचार अवस्थ जायकेशार और गुणशायन बनना है। जाम, नीम्यू आदि की तरह ही इसकी फली वा अवार वनाया जा सबता है और उन्हीं की तरह टिकाउ भी होगा। इसकी फरी जाड़े में रुमती हैं।

गवारपाठे वा साम और उसकी फली वा अधार वितनी ही मात्रा में आप क्यों न सामें, कोई नुवमान
न होंगा । गवारपाठे वा साम वरट्जमी में ती बक्ष
प्रावदेमन्द है। मोजन के पजाने में सहायक होने के
बारण दिन दिनों आप इस साम वा उपयोग करेंगे,
आपनी दारोर में बही स्फूर्ति पालूम होंगी, जी कि पालक
वा साम साने से प्रतीत होनी हैं। मेरे त्याल में पुनी
के बृध्दिनोंच में यह पालद से भी अच्छी है। विशेषता
यह हैं कि वारही महीने गवारपाठे का साम बनाया
वा सकता है। अप्ताह में कम-से-म को बार तो गवारपाठे का साम जरूर स्वाना चारिए।

बहा तक कैए अनुमान है, ग्वारपाठे के उत्पादन में दिन्सी भी जगह और दिन्दी भी थेगी के व्यक्ति को बीहें कमृतिया, न होगी। नवांति एक पीपे के लिए एक कुट से अधिक वर्षान की करता नहीं होगी। उन्होंके को दो चीट के करीब ही होगी है। एसी हालत में उन्होंके कर में म्वारपाठे के कुट पीचे लगाना विकतुक आसान है। जबकि एक पीचा भी रहेगा बयाँ तक जपके परिवार की हर महीने एक साम किलाता रहेगा। आकृ की तहर सवारपाठे का मकिया भी सागी की थेगी में उन्हाट प्रमाणित होगा।

" इंटिय-उपयोग घर्म नहीं है, इन्दिय-उमन धर्म है। ज्ञान और इच्छापूर्वक हुए इन्द्रिय-दमन से आत्मा का लान होता है, हानि नहीं । विषयेन्द्रिय का उपयोग बेबल सन्तित की उत्पत्ति के छिए ही स्वीकार किया गया है। पर जो सन्तित का मीह छोड़ देता है उतकी शास्त मी बन्दना करते हैं। इम युग में विदारों की महिला इकती बढ़ गई है कि अधर्म को हो लोग धर्म मानने लग गये हैं। विकारों की वृद्धि अथवा वृद्धि में ही अथव का कल्याण है, ऐसी कल्पना करना महादोप-मय है ऐसा मेरा विस्वास है। यही सास्त्र भी कहते हैं और यही आत्मदाँगयों का स्वच्छ अनुभव है। " विवार रोके नहीं जा सकते अथवा उन्हें रोकने में नुक्सान है, यह कथन हो अत्यन्त अदितकर है।"

--मो० र० गायी

# TONG W

सर्वोदय अर्थशास्त्र—लेखक—श्री भगवानदास केला, प्रकाशक—भारतीय ग्रंथमाला, इलाहाबाद, पृष्ठ ३५२, मूल्य ४)।

श्री भगवानदास केला ने अर्थ-शास्त्र, समाज-शास्त्र, आदि अनेक विषयों पर बड़ा ही उपयोगी और प्रामाणिक साहित्य प्रदान किया ह । प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने सर्वोदय की दृष्टि से अर्थशास्त्र की रूप-रेखा उपस्थित की है। पुस्तक सात खंडों में विभाजित हैं : पहले खंड में, सर्वीदय अर्थ-शास्त्र क्या है, इसका विशद विवेचन किया गया है । दूसरे में उपयोग, तीसरे में उत्पत्ति, चौथे में विनिमय, पांचवें में वितरण, छठे में अर्थ-व्यवस्था और राज्य तथा सातवें में सर्वोदय अर्थ-शास्त्र की विशेषताएं बताई गर्ड हैं। सर्वोदय का सिद्धांत समप्टि से अधिक व्यप्टि के विकास पर जोर देता है। अतः उसके अनुसार जो भी सामाजिक या आर्थिक व्यवस्था कायम होगी, उसकी व्नियाद में मानव सर्वोपिर होगा। इस पुस्तक में ऐसे ही अर्थ-शास्त्र का विवरण दिया गया है। इन सिद्धांतीं के जन्मदाता गांधीजी ने आंशिक रूप में ही सही, इनका सफल प्रयोग कर के दिखा दिया है और यह भी सिद्ध कर दिया है कि यदि मानव को सच्ची और स्थायी बान्ति प्राप्त करनी है तो वह इस अर्थ-प्रणाली का अनुसरण करके ही प्राप्त हो सकती है।

सर्वोदय के सिद्धांत में विश्वास रखने वाले लोगों के लिये तो यह पुस्तक काम की है ही, पर जिनका विश्वास उन सिद्धांतों में नहीं है, उनके लिये भी यह पुस्तक उपयोगी है । पुस्तक की भूमिका श्रीकृष्णदासजी जाजू ने लिखी है। छपाई साफ और शुद्ध है।

सर्वोदय अर्य-च्यवस्या—लेखक श्री जवाहिरलाल जैन, प्रकाशक—भारतीय ग्रंथमाला, इलाहाबाद, पृष्ठ १२७, मूल्य टेंड् रुपये।

इस पुस्तक का विषय बहुत-कुछ श्री भगवानदास जी केळा की सर्वोदय अर्थ-शास्त्र पुस्तक से मिलता है। ४४२ वस्तुतः इस विषय पर दोनों ने साथ-साथ पुस्तक लिखने का विचार किया था, और लिखने का कार्य वांट लिया था, लेकिन जब दोनों के लिखे अंग एक दूसरे के सामने आये तो उनकी भाषा-शैली आदि में बहुत अन्तर होने के कारण उन्हें स्वतन्त्र रूप से दो पुस्तकों में प्रकाशित करना उचित समझा गया। इस पुस्तक में पूंजीवादी तथा साम्यवादी अर्थ-व्यवस्थाओं के गुण-दोषों की समीक्षा की गयी है, सर्वोदय अर्थ-व्यवस्था के लक्षण और सिद्धांत का विवरण उपस्थित किया गया है और अंत में इस बात पर जोर दिया गया है कि इस नवीन अर्थ प्रणाली के द्वारा ही मानव-संस्कृति और मानव-सभ्यता की रक्षा की जा सकती है।

यह तथा केलाजी की पुस्तक सर्वोदय की अर्थ-प्रणाली को सही निगाह से देखने तथा खुले दिमाग से समझने की प्रेरणा देती हैं और साथ ही तत्सम्बन्धी प्रचुर सामग्री भी।

रक्षक और भक्षक: लेखक-श्री मन्मथनाय गुप्त, प्रकाशक--आलोक प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ १४०, मूल्य दो रुपये।

श्री मन्मथनाथ गुप्त हिंदी के जाने-माने लेखन हैं। उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। प्रस्तुत उपन्यास हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इसमें उन्होंने दिखाया है कि रक्षक होने का दावा करने वाले लोग किम प्रकार भक्षक बन जाते हैं। इस पुरतक के मुख्य पात्र लदमणसिंह एक डाक्टर हैं। वह प्रारम्भ में बहुत ही ईमानदार थे और सेवा की दृष्टि से डाक्टरी करते थे, लेकिन परिस्थितियों के दवाब के कारण वह एक बार गिरे तो ऐसे कि फिर उबर नहीं सके। गहरे गट्ढे में फंस गये। वस्नुतः डाक्टर तो समाज-व्यापी अनेक बुराइयों का प्रतीक मात्र हैं। लेपक का अभिप्राय इस कथानक द्वारा उन सब पर चोट करना हैं जो समाज के संरक्षण का वाना पहन कर उसे चूसते हैं। उपन्यास बड़ा रोचक हैं

ब्रोर समान की कलुनता पर यहरी कोट वरता है। भाषा बड़ी सरस और संतो आवर्षन हैं। लेकन बरि इस पुस्तक को हम उनन्यास के रण में को तो सनोप मही होता। पवने-यड़े रणता है कि पुस्त एक विद्याप प्रेय को सामने रख कर जिल्हों गयी है। यही वारण हैं कि उसके पानो का मर्वागीण विवण नहीं हो पासा है। किर पी इस पुस्तन का स्वरूप महत्व है। समाजनेखा में कि पत्ती वाले मर्वागीण की हम इसकी पढ़ने की किसाइस करते।

#### हमारे सहयोगी

#### विशेषाक

कानपुर के 'प्रताप' का अनीत वडा गौरवसाली रहा है। उसी पत्र का १०४ पृष्ठ का विशेषाव, सियारामशरण अंक, जो ४ सितम्बर १९५२ वो प्रवाधित हुआ है। हुमारे सामने हैं । विमीताजी ने शब्दों में 'सियाराम-शरण जी नम्प्रताकी मूर्ति हैं। नाम उनना सार्यन है। सब नारी-नरो मो सीताराम-स्वरूप देख वर वे सबकी भन्ति करते हैं। उनकी कविता में जो भी रस होगा, वह इमी गुण ना परिपान है।" विशेषान में हिंदी के अनेक गण्य मान्य लेखका के सस्मरण सकल्ति क्यिंगमें हैं। उनसे सियारामजी के मनुर और खरे ब्यक्तित्व पर तो प्रकाश पहना ही है, लेखन से रूप में भी उनकी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। अक सबहणीय है। पर हमें एक शिकायत है कि इस अक में बहुत सी पुरानी रचनाए दे दी गई है। अच्छी चीनें कनी वासी नहीं होती, लेक्नि उनका आधिक्य असरता है। पत का रूप-रग भी उनना आवर्षन महीं है। मूल्य एक रपमा है।

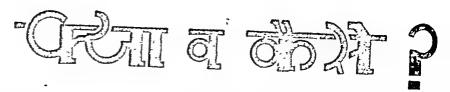
नासी के 'ससार' का १०० पुट वा 'निर्माण-अव' अच्डा और उपमोगी हैं। उसमें मुण्यत कर्म-अवन्यी सामग्री दी गई हैं। दामोग्रद, मानचा, हीचानुड आदि मोवनाओं पर प्रकास डाग्जे वे साय-गाय बेन, रेल कोचला, बबरन, इत्सादि पर भी महत्वपूर्ण सामग्री सर्वाठत की गई हैं। अस्पुर की दिनव 'सोवचाणों के जपयोगिता हैं। अस्पुर की दिनव 'सोवचाणों के प्रेमावसी अब्दु' में दंश आते में बड़े आवार के ७० पुछ वी सर्विच सामग्री हैं। इस बन से राजस्थान के

विनिध स्पा की झावी मिल जाती हैं। इस प्रवार के जनप्रीय प्रमुख्य वह लाम थे हैं, पर अधिवास पत्र वाहर वी पीजों के से स्वार के स्वार के पत्र वी मुख्यान पीजों की उपेक्षा कर जाते हैं। दिन्ती के सरकारी पत्र भाज कर्त ने 'प्रेमक्वर-अक' निवाल कर वड़ी मुझ और साहित्या नृत्या का परित्य दिया हूं। विशायक की सामधी पठनीय है। सब थी जेंनेंड्झार, कर्त्यालाल मित्र प्रमान दु बतासीक्षत चतुर्वी क्यां निवील की के कियर पत्र , जीवक की हिस्स परवाला की सामधी पठनीय है। सब थी जेंनेंड्झार, कर्त्याला की के कियर पत्र , जीवक की हिस्स पत्र की समस्त की उपयोगिता में वार बाद कमा दिये हैं। अब समाल कर रचने योग्य हैं। मुख्य आठ आगा है। अब समाल कर रचने योग्य हैं। मुख्य आठ आगा है।

#### नये पत

बिहार से समय-समय पर हिन्दी में घहे सुन्दर पत्र
निजनते रहत है। इसा नतस्वर मास से बज्ञा उज्जवन
अविष्य लेक्ट एक नई सासिक पीत्रका निकली है—
अविष्या लेक्ट एक नई सासिक पीत्रका निकली है—
अविष्या है। उनकी सामग्री को देवकर पता चन्ता है कि
पित्रका को हिन्दी के चोटी के लेक्वो का सहयोग प्राप्त
है और उनकाश का चुनाव बहुत विवेदपूर्वक किया गया
है। पित्रका के से हम्म हमें बहुत व्ययोगी प्रतीत
हुए १ आरतीय बाहम्य २ विज्ञान-वार्ती। पहले
म आरतीय आयाओ, जैसे गुजराती, तेलुगु बगका के
माहित्य की गतिविष्य का परिचय है। दूसरे में विज्ञान
साव्यायी जातवारी। वाषिक मूल्य १०) और एक जक्ष का १) है। मिलने का पता है—भी अजता प्रेस
लिमिटेट, एटना।

हिन्दी में ऐसे साहित्य का बडा क्षमाव है, थो विज्ञान और उसकी प्रमांत का सरट-मुक्कीभ भागा में सामान्य पाठनों को परिचय करा पत्ते । हमें की बात है कि कौमेल्ड आब साइटिंपिक एक्ड इस्टिइस्क रियर्च (नई दिल्ली) की ओर से इसी अगस्त गास स्व 'विज्ञान प्रमांत नामक मासिक पत्र निकल्ने लगा है। पत्र वा उद्देश्य है वैज्ञानिक अनुस्थानों यी मुचना (तीय पुष्ट ४४५ पर)



# राजेन्द्रवावू दीर्घजीवी हों!

३ दिसम्बर को भारत के राष्ट्रपित डा. राजेंद्रप्रमाद अपने जीवन के ६ वर्ष पूरे करके ६६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस मुअवसर पर हम उनके प्रति अपनी श्रद्धांजिल अपित करते हुए भगवान् से कामना करते हैं कि अभी वह बहुत वर्ष तक हमारे वीच बने रहें और अपने प्रिपक्व अनुभव और दीर्घकालीन साबना का लाभ हमें देते रहें। राजेंद्रवावू उस पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं, जो समूचे भारत को एक परिवार का हप प्रदान करती थी और यहीं कारण है कि उनके लिए देश के करोड़ों व्यक्तियों के हृदय में गहरी आत्मीयता है।

राजेंद्रवावू का संपूर्ण जीवन सेवामय रहा है। जब और जहां से सेवा की पुकार आई, अपनी सुख-सुविधा का व्यान न रख कर वह वहां पहुंचे । हम सब जानते हैं कि प्रारंभ से ही वह कितने मेघावी वालक थे और कितना प्रतिमाञाली उनका विद्यार्थी-जीवन रहता था । लेकिन राष्ट्र को जब उनकी सेवाओं की आवश्यकता हुई तो सब कुछ छोड़ कर सेवा के क्षेत्र में आ कूदे । आजादी की लम्बी लड़ाई में उनका कितना भाग रहा है, यह हमसे छिपा नहीं है और देश के स्वतन्त्र होने के वाद जब कि उन्हें आराम मिलृना चाहिए या, वह निरन्तर काम में जुटे ह । अवतक जितने पदों पर उन्होंने काम किया है, चाहे वह खाद्यमन्त्री के रूप में हो, अथवा वियान परिपद के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने अपने को कहीं भी बचाने का प्रयत्न नहीं किया, पूरी तीर पर अपने को खपाया है। दमे से वह प्रायः पीड़ित रहते हैं। लेकिन जबतक मज-वूर न हो जांय, विश्राम की वह कल्पना भी नहीं कर सकते ।

आज की विषम परिस्थितियों में देश को अपने इस बुजुर्ग की आवस्यकता है। सरलता, निस्पृहता, सादगी परदु:खकातरता आदि गुणों का उनमें अद्भुत नम्मिश्रण है। हम चाहते हैं कि हमारी नई पीढ़ी उनके इन गुणों को अपने जीवन में उतारे और देश के पुनर्निर्माण में उसी एक-निष्ठ लगन और तत्परता से हाथ बटावे जैसे कि इन महापुरुष ने बटाया है।

# विनोवाजी का नया कदम

विनोवाजी के भू-दान-यज्ञ से पाठक भली-भांति परिचित हैं। तैलंगाना में उन्होंने जिस यज्ञ का प्रारंभ किया था, वह अब उत्तरोत्तर विकसित होता जा रहा है। पहले भूमि मांगी, फिर उसमें वैल-दान, हल-दान, और कूप-दान जुड़े, आगे चलकर श्रम-दान आया और अब विहार-प्रदेशीय प्रवास में उन्होंने एक नया कदम उठाया हैं सम्पत्ति-दान के रूप में। लोगों को आश्चर्य होता है कि एक-पर-एक नई चीज सामने आ रही है, लेकिन सच यह है कि समाज के नव-निर्माण के जिस महान् उद्देश्य को लेकर विनोवाजी ने अपना अभियान प्रारंभ किया है, उसमें ये सब वातें पहले ही से समाई हुई हैं। उन्होंने कई स्थानों पर कहा भी है कि मेरा यज्ञ गंगा की तरह है, जो निकलते समय छोटी होती है, पर बाद में बराबर फैनतीं जाती है।

सम्पत्ति-दान के पीछे एक क्रांतिकारी भावना है। विनोवाजी ने मांग की है कि लोग अपनी संपत्ति का छठा भाग उन्हें दे दें। 'दे दें' का अर्थ यह नहीं कि उसे उठा कर उनके पास भेज दें, बिल्क यह है कि उनके ट्रस्टी वन जायं और उसका उपयोग विनोवाजी के आदेशानुसार करें। यदि विनोवाजी का कोई आदेश प्राप्त नहीं तो अपने को उस पैसे का ट्रस्टी मान कर उसका इस्नेमान करें और और उसका हिसाब अपने पास रक्षें। काम वास्तव में बड़ा कठिन है और कहा नहीं जा सकता कि उसमें कितनी सफलता मिलेगी। लेकिन इसमें मन्देह नहीं कि आज की विषम परिस्थिति, असमान समाज और अर्थव्यवस्था अविक दिन नहीं चलने की और

स्वेच्छा से किसे गये दान ना महत्त्व दवाव से दिये गये पैसे की अपेक्षा नई मुना होता है। इसलिए समय रहते ही पेत जाना श्रेसक्तर है। जिनोबाजी ने सतरे नी पटी बजा दो है और सुजा दिवा है कि सही रास्ता यह है। मानना, न मानना सोगो के हाय की बात है। जो मान सेंगे, वे मुनाफे से रहेग और जो नहीं मानमें, वे अपनी जह पर स्वय दुछारासात नरेंगे।

कन्द्रोल

कभी-कभी कुछ चीज हमारे साय ऐसी चिपक जाती है, कि हम चाहते हुए भी जन्हे छोड नही पाते। कट्रोल एक ऐसी ही चीज है। अधिकारी नही चाहते कि कट्रोल रहे, और देश भी इस बला से जल्दी-से-जल्दी मुक्त हो जाना चाहता है। लेकिन दुर्भाग्य कुछ ऐसा है कि उससे पीछा मही छुटता। सरकार को लगता है कि कट्रोल हटन पर सपन लोग अपने घरो में अनाज भर लेगे और मध्यम या सामान्य श्रेणी के लोग भूखो मर जायगे। सरकार के इस डर में सचाई हो सकती है, लेकिन इस तथ्य में भी कम सचाई नही है जबतक कट्रोल रहेगा, अन की दृष्टि से देश स्वावलम्बी नहीं हो सकता। बदोल रखने वे मानी यह है कि देश को अनाज देने की जिम्मेदारी सरकार की है। जबतक यह जिम्मेदारी लोगो वे ऊपर आकर नही पढेगी, तवतर 'अधिक अन उपजाओ' के हजार नारे सगाने और उस पर बरोडो रुपये खर्च कर देने पर भी कुछ भी नहीं होने का। देश अधिक-से-अधिक परसुखा-पेक्षी होता जायगा । केन्द्रीय सरकार के खादामन्त्री श्री रफी अहमद विदवई ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि तन् १६५१ में वाहर से ४७ लाख टन अप्त साना पडा या।
१६५२ में ३६ लाख टन और अब १६५३ में कुल १५
लाख टन लाना पडेगा। यह ठीन है कि इन आकरों में
नमी हुई है। पर इनते यह तिश्चम नहीं होता कि हम
जहती हो अपने पेरो पर खडे हो जायों। अपने निमन से
कुछ समय पूर्व पाधीची ने जपने एफ प्रचनन में कहा था
कि हमारे देश में ३ प्रतियत अप्त की कमी है। वसे लोग स्थाह म एक बार खाना छोड़ कर पूरी कर सकते है या
साममाजी ना अधिन उपयोग करके। लेकिन इस नमी
को बाहर से अन लाकर पूरा करने में एक बडा सतरा
बहु है कि हम इसरी पर निर्मेर करना सिक्यम्या

सरकार ने कट्रोल की चीजो के यातायात को डीला करही दिया है। अब बह क्यो कट्रोल को नहीं हटा देती? नियनिक भावों पर बह क्यो कट्रोल को नहीं हटा देती? नियनिक भावों पर बह कडी निगाह एक्से और जो भी सरकार की झांबों के सामने चौरवाजारी होती है और लोगा वधकर कहते हैं कि सरकार अपनी है। उर क्या है? दावलें होती है। ऐसी दिलाई से क्या परिणाम निव-नेया? अप्र की दृद्धि से देश को स्वायकार्यी बनाने वा एक ही उपाय है और बह यह कि यहां के २५ करोड नियासियों के पेट भरने की जिन्मेदारी उन्हों पर डाली जार, नियनिक दानों का काई से पालन कराया जाय और चौरवाजारी तथा समझ के लिए क्डी-से-कडी सजा दी जाय। कट्रोल एक कर यह काम नहीं ही सकेंगी।—य.

#### कसोटी पर

( पुटठ ४४३ मा शेय )

छोटे छोटे उत्पादको को देना और बल्वेपणो के उन चुने हुए परिणामा का सक्षित्व विवरण उपस्थित करना, जो शोध ही व्यवहार में छावे जा यहे। यन ची सामग्री जैलेगपेसोगो हैं। उसे प्रवर करेने बादो की जानकारी प्राप्त हो जाती हैं। पत्र ने बढ़ में उन पारिणाणिक खब्दो के अवेजी पर्याय दिये गए हैं जो इस अक में प्रयुक्त हुए हैं। पत्र का वार्षिक मूल्य ५) और एक अह का ॥) हैं। क्लिजने का पत्र कितान प्रतितं, पिरुकेशन दियोजन, कौसिल जोंच साइटिंपिक एन्ड इटेट्रियल-रिसर्ज, २, कौसिल और साइटिंपिक एन्ड इटेट्रियल-रिसर्ज, २, इसा रोड, नई दिल्ली।

# मंडल की ऋोर से

'जीवन-साहित्य' सम्बन्धी आवश्यक सूचना

'जीवन साहित्य' की लोकप्रियता इवर वरावर वढ़ रही है, साथ ही उसके ग्राहकों की संख्या भी। फुटकर ग्राहकों के अतिरिक्त विहार-सरकार ने उसकी २५० प्रतियां ली हैं। इस छूपा के लिए हम अपने ग्राहक वन्वुओं तथा विहार-सरकार के आभारी हैं। हमें विश्वास है कि अन्य ग्राहक तथा सरकारें भी ऐसे ही साहित्यानुराग का परिचय देंगी।

हमारे बहुत-से पाठकों ने लिखा है कि 'जीवन-साहित्य' की पृण्ट-संख्या थोड़ी है। ३२ पृण्ठ से उन्हें संतोष नहीं होता। उनका आग्रह है कि पत्र में कुछ पृण्ठ और बढ़ा दिये जायँ। उनके आग्रह को घ्यान में रख कर हमने अगले वर्ष अर्थात् जनवरी मास से 'जीवन-साहित्य' में मण्ठ और बढ़ा देने का निश्चय किया है। पर उसका मूल्य वही रहेगा, यानी ४) वार्षिक। पाठकों को जात ही है कि पत्र बराबर घाटे पर चल रहा है। विज्ञापन हम लेते नहीं। ऐसी दशा में हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि उनमें से प्रत्येक एक-एक, दो-दो ग्राहक बना दें। एक हजार ग्राहक और मिल जायें तो हमें बहुत सहारा मिलेगा और हम कुछ और पृण्ठ बढ़ा सकेंगे।

# संहायक सदस्य योजना

'मण्डल' की सहायक सदस्य योजना के प्रति साहित्य-प्रेमी महानुभावों तथा संस्थावों का घ्यान तेजी से आक-पित होता जा रहा है। इघर कई एक- शिक्षा-संस्थाएं— कालेज, हाईस्कूल तथा पुस्तकालय— सदस्य बन गई हैं। मघ्यभारत के शिक्षा-सचिव टा० बूलचन्दजी ने कृषा पूर्वक वहां के चारों कालेजों तथा सार्वजनिक पुस्तकालय को सदस्य बना दिया है। इसी प्रकार दिल्ली राज्य के शिक्षा-संचालक डा० ए. एन. बनर्जी के गञ्ती पत्र से दिल्ली के कई हाईस्कूल सदस्य बन गये हैं। इनके अतिरिक्त नीचे लिखे महानुभावों व संस्थाओं ने सदस्य बनना स्वीकार कर लिया है:—

```
१. श्री महावीरप्रसादजी (विट्लापुर)
 २. ,, छोटेलालजी जैन (कलकत्ता)
 ३. " आत्मारामजी पाड़िया
 ४. " रामकुमारजी वायंवाला
 ५. ,, शान्तिप्रसादजी जैन
 ६. ,, केशवराव काटन मिल
 ७. " माहेरवरी विद्यालय
 प्री शीचन्द्रजी रामपुरिया
 ९. .. केशवप्रसादजी गोयनका (कलकत्ता)
१०. " विश्वनायजी मोर
११. ,, ताराचन्दजी साबू
१२. ,, रामकुमारजी सरावगी
१३. ,, आदर्श हिन्दी हाईस्कूल
१४., महावीर पुस्तकालय .
१५. ,, दुर्गाप्रसादजी सरावगी
१६. " अर्जुनलालजी अग्रवाल
१७. ,, रामनिवासजी कर्वा
१८. ,, रामेश्वरजी पाटोदिया
२०. ,, प्रभुदयालजी डावड़ीवाल
२१. " हनुमानप्रसादजी पोद्दार
२२. ,, गजराजजी सरावगी
२३. ,, लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार
२४. " गोविन्दशरणजी गुप्त
                          (दिल्ली)
२५. ,, हंनराजजी गुप्त
२६. लाला राजेन्द्रकुमार जैन
२७. अमृतसर शुगरं फैक्टरी (मुजफ्फरनगर)
२८. पेपर मर्चेट्स एण्ड स्टेशनर्स एसो० दिल्ली
२६. श्री मदनमोहनजी तायन (हिसार)
२०. ,, राय अमरनाथजी अग्रवाल (प्रयाग)
३१. ,, राय रामचरणजी अग्रवाल
३२. " मास्टर शिवचरणदास (दिल्ली)
३३. मेससं जानकीदास एण्ड संस (दिल्ती)
३४. राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति शाखा
                                      -मंत्री
```

### हिन्दी में अर्थशास्त्र की एकमात्र उत्कृष्ट पत्रिका

# सम्पदा

[ वाधिक मूल्य ८)

सम्पादक--श्री कृष्णचंद्र विद्यालंकार

साहित्य, कहानी, राजनीति और समाज-सम्बन्धी अनेक हिन्दी पत्रिकाए होते हुए भी अर्पधास्त्र की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका केवल 'सम्मदा' है। आर्थिक, औद्योगिक, व्यापारिक विषयों पर विद्वत्तापूर्ण लेख और आकडो के अतिरिक्त निम्नलिखित स्तम्भ पत्रिका की विशेषता है—

वैक और बीमा श्रमसमस्या हमारे उद्योग वाजार की गतिविधि व्यापार और वाणिज्य अर्थवृत्त-चयन कृपि और खाद्य अध्यक्ष के पद से विद्यार्थियों के लिए

विविध राज्यों की आर्थिक प्रवतिया

आपका निजी या सार्वजनिक वाचनालय 'सम्पदा' के बिना अपूर्ण है। जल्दी प्राहक बनिये।

### ऋशोक प्रकाशन मन्दिर

रोशनारा रोड, दिल्ली

भारतीय साहित्य की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वार्षक मूल्य राष्ट्रभारती एक मित ()

सम्पादक-भी मोहनलाल भट्ट, भी हुपीकेश सामीं साहित्य-सहरित-कला प्रधान पत्रिका "राह-भारती" प्रति धात आपको हिन्दी और आरत की विभिन्न प्रान्तीय तथा विदेशी माराजो की साहित्यक-साहकृतिक गतिविधि का परिचय देशी 1

'कोविद', 'राष्ट्रभाषारदन' और 'विशारब' के अध्ययनशील प्रीड़ छात्रों की सहापता के लिये प्रति-मास इस पत्रिका में भूस्य-मुख्य पाठ्य-मुस्तकों को लेकर समालोवनारमक सामग्री भी प्रस्तुत की बायमी

राष्ट्रभारती प्रत्येक मास की १ तारील को प्रकाशित होती है।

प्रवन्यकर्ता--"राष्ट्रभारती" राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा (मध्य-प्रदेश) राष्ट्रभाषा हिंदी का सचित्र सास्कृतिक मासिक पत्र

वापिक मृत्य विक्रम एक प्रति

(सपादक तथा सचालक--सूर्यनारायण ध्यास) हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ मासिक 'विकम' ही है, जिसका राजा-महाराजाओं से लेकर देश के सर्वसाधारण

समान तर सवान रूप से श्वेश है। स्वस्य साहित्य, बिष्ट हास्य, चुनी हुई कविता और कहानी एवं विचार-त्रेरक पचामृत तथा समस्त मासिक साहित्य का सुन्दर परिचय 'विकम' की अपनी विविधता है।

सभी विद्वानों ने हिन्दों का 'बॉडर्न रिव्यू' कहकर इसकी प्रश्नसा की हैं।

यदि जाप अवतक ग्राहक नहीं है तो अविलम्ब ग्राहक वन जाड़में, मित्रों को बनाइयें।

विशेष जानकारी के लिए लिखिये:

विक्रम कार्यालय, उज्जैन (मालवा)

वापिक मूल्य

# हिन्दी शित्त्रगा-पत्रिका

एक प्रतिका

'आज का वालक कल का निर्माता है' यह सब मानते हैं; परन्तु उसे योग्य निर्माता और नागरिक वनाने के लिए प्रयत्न 'हिन्दी शिक्षण-पत्रिका' करती हैं। यह नूतन शिक्षण के सिद्धांतों के अनुसार वालोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करती है । यह माता-पिता और दूसरे अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करती है । यह पत्रिका मनोविज्ञान के आचार्य श्री गिजुभाई वधेका के स्वप्नों की प्रतिमूर्ति है। पत्रिका का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है।

हिन्दी शिक्षण-पत्रिका--५१ नंदलालपुरा लेन, इन्दौर ।

# कल्पना (मासिक)

पढिये

जिसमें उच्चकोटि के साहित्यिकों और कलाकारों की रचनाएं आपको मिलेंगी।

प्रत्येक अंक में एक रंगीन चित्र

स्थायी स्तम्भ:---

कला प्रसंग—विनोदविहारी मुकर्जी सांस्कृतिक टिप्पणियां--दिनकर कीशिक

साहित्य घारा-इस स्तम्भ के अंतर्गत पाठकों, लेखकों आदि द्वारा उठाये गये साहित्यिक प्रश्न आदि हैं।

पुस्तक समालोचना—कल्पना अपनी निर्भीक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध है।

वार्षिक मूल्य पुष्ठ संख्या ८०, एक प्रति का १२)

८३१, वेगम वाजार, हैदरावाद।

तार : हिन्दी

फोन: ५४५०

### श्रजन्ता

: मासिक :

प्रकाशक: हैदरावाद राज्य हिन्दी प्रचार

सभा, हैदराबाद (दक्षिण) मृल्य : ९-०-० भा० मृ० वार्षिक

किसी भी मास से ग्राहक बना जा सकता है।

कुछ विशेषताएं :

१. उच्च कोटि का साहित्य

२. सुन्दर और स्वच्छ छपाई

३. कलापूर्ण चित्र

सम्पादक

श्री वंशीघर विद्यालंकार : श्री श्रीराम शर्मा

कुछ सम्मतियां

१. "अजन्ता का अपना व्यक्तित्व है।"-वनारसीदास चतुर्वेदी २. "अजन्ता हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पित्रकाओं में से एक है।"— कन्हैयालाल

# उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

- १. वर्द्धमान १८००) पुरस्कार मृत्य ६)
- २. शेरोमुखन 400) मूल्य ८)
- ३. शेरोशायरी 400) मृल्य ८)
- मूल्य २) ४. पयचिह्न 2000)
- ५. वैदिक साहित्य ६००)
- ६. मिलनयामिनी 400) मूल्य ४)

# सन् १९५२ के नवीन प्रकाशन

- १. हमारे आराध्य(पं०वनारसीदास चतुर्वेदी)मू० ३)
- मू०३) २. संस्मरण
- ३. रेखाचित्र (प्रेस में) "
- ४. रजतरदिम (ढा० रामकुमार वर्मा) मू०२॥)
- मूल्य ६) ५. आकाश के तारे : घरती के फूल (क. मिश्र) २)
  - ६. जैन जागरण के अग्रद्त (अ०प्र०गोयलीय) मू०५)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, वनारस ५

#### देश के करोड़ो भूमिहीनों के लिए भूमि प्राप्त करने के शुभ संकल्प को लेकर

### संत विनोबा

हुजारों भील पैदल चल चुने हैं और उनना भूमिशान-यत तेजों से आगें बढ़ रहा है। लाखों एकड़ भूमि उन्हें प्राप्त हो चुकी हैं। उनने इस आदोलन म सहायता देना हम सबना पुनीत कर्तेच्य है। पर सहायता तब दें सनते हैं जब हम इन आदोलन में। मूल प्रेरणा नो समयें और उसने प्रवर्त्तक ने विचारों नो जान। इसके लिए आप

### विनोवा - साहित्य

का

जबन्य अध्ययन कीजिये ।

हिची में विनोबानी की म पुस्तकें उपलब्ध ह १), १॥।) २ विनोबाने विचार (दो भाग) ३)

१. गीता प्रवचन १), १॥।) २ विनोवा ने विचार (दो भाग) ३) ३ सर्नोदम विचार १०) ४ भूदान-यज्ञ ।)

५ राजबाटकी सनिषि में ॥।=) ६ सातिन्यात्रा ३००/२६॥) ७ स्वराज्य शास्त्र १) ८ ईशावास्यविन १)

९ ईशाबास्यापनिषद् रिंस सबोदय-यात्रा

११ गाधीजी को श्रद्धाजिल । निर्णाद्याण २)

के हमारे यहा से लीजिये ये तथा अन्य

ता साहित्य मगडल

नई दिल्ली

लीजिये सन् १९५३ की

# गांधी - डांघरी

तैयार है

- O विछ्लं वर्ष की सामग्री ज्यों-की-त्यों
  - 🖸 उतने ही पृष्ठ
    - O छपाई पहले से भी बढ़िया
      - O गत्ते की आकर्षक जिल्द

फिर भी

मृल्य में ग्राठ ग्राने की कमी।

जेवी धाकार की डायरी

वारह आना

टबल डायरी

दो रुपया कागज की कमी के कारण डायरी इस वर्ष बहुत कम छापी गई हैं।

# श्रपना प्रति

अभी से अपने शहर के पुस्तक-विक्रेताओं के यहां सुरिच्चत करा लीजिए । देर होने पर कहीं निराश न होना पड़े।

यदि आप जेबी डायरी

चाहत हों तो ' जीवन-साहित्य ' के दो ग्राहक १ दिसम्बर तक बना कर भेज दीजिये।

> कहने को यह अपरी है, पर इस निमालकारी पुस्तक सूँ मूल्य किमी भी जीवन-यस्ता गाहित्य , नहीं है।

नई 🖋 दिल्ली

मार्तण्ड उगाध्याय, मंत्री, सस्ता नाहित्य मंत्रल, पृष्टी विक्ली द्वारा नेजनल प्रिटिंग वर